

हकीकतुल वह्यी

[वह्यी (ईशवाणी) की वास्तविकता]

HAQEEQATUL WAHI



लेखक

इमरत भिक्का गुलाब अहमद ब्रादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

क्रादिर के कारोबार नमूदार हो गए
काफ़िर जो कहते थे वह गिरफ़्तार हो गए

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ۝ إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ ۝
وَإِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ۝ (सूरह साफ़ात)

وَكَفَانِي مِمَّا أُوحِيَ إِلَيَّ هَذَا الْوَحْيِ الْمُبَشِّرِ
قَالَ رَبِّكَ إِنَّهُ نَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَا يَرُضِيكَ ۖ وَمَا نَنْزِلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ مَا أُرْسِلَ نَبِيٌّ
اٰخَرٰى بِهٖ اللّٰهُ قَوْمًا لَا يُؤْمِنُوْنَ ۖ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَالَّذِيْنَ هُمْ مُحْسِنُوْنَ ۖ وَبَشِّرِ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَنْ لَهُمُ الْفَتْحُ- وَاللّٰهُ مُتِمِّتُ نُوْرِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ ۖ كُتِبَ اللّٰهُ لَا غَلِبَنَّ اَنَا وَ
رُسُلِيْ ۖ لَا تَخَفْ اِنَّنِيْ لَا يَخَافُ لَدٰى الْمُرْسَلُوْنَ

हकीकतुल वह्यी

[वह्यी (ईशवाणी) की वास्तविकता]

खुदा तआला का हजार हजार धन्यवाद कि यह नितान्त व्यापक पुस्तक
जिसमें हर प्रकार की वास्तविकताएं एवं अध्यात्म ज्ञान और बहुत से
आकाशीय निशानों का उल्लेख है मात्र उसी की कृपा और दया तथा उसी
की विशेष सामर्थ्य एवं समर्थन से लिखी गई।

प्रकाशन वर्ष 15 मई 1907 ई.

लेखक

मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी मा 'हूद अलैहिस्सलाम

II

नाम किताब	: हक्रीक़तुल वह्यी
Name of Book	: HAQEEQATUL WAHI
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम
WRITTEN BY	: HAZRAT MIRZA GHULAM AHMAD QADIANI The Promised Messiah and Mahdi ^{as}
अनुवादक	: डॉ. अन्सार अहमद, एम.ए. एम.फिल, पी.एच.डी.
Translated by	: Dr. ANSAR AHMAD, M.A. M.Phil., Ph.D.,
संख्या Quantity	: 500
संस्करण	: प्रथम (हिन्दी)
Edition	: First (Hindi)
वर्ष	: अप्रैल 2023 ई.
Year	: April 2023
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला- गुरदासपुर, पंजाब (भारत)
Publisher	: Nazārat Nashr-wa-Isha'at, Qadian
प्रेस	: फ़ज़ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian 143516 Distt- Gurdaspur, Punjab (INDIA)

टोल फ्री नं. 1800 103 2131
प्रातः 10 बजे से लेकर रात्रि 10 बजे तक

प्रकाशक की ओर से

हजरत मिर्जा गुलाम अहमद साहिब क्रादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक 'हक़ीक़तुल वह्यी' का यह हिन्दी अनुवाद आदरणीय डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और कुछ भाग आदरणीय इब्नुल मेहदी लईक़ एम् ए ने किया है। तत्पश्चात् आदरणीय शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), आदरणीय अली हसन एम. ए. आदरणीय नसीरुल हक़ आचार्य, आदरणीय इब्नुल मेहदी लईक़ एम् ए और आदरणीय मुहियुद्दीन फ़रीद एम् ए ने इसका रीव्यू आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हजरत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क्रादियान

नोट

पुस्तक के अंत में पारिभाषिक शब्दावाली दी गई है पाठकगण उसकी सहायता से पुस्तक में प्रयोग किए गए इस्लामिक शब्दों को सरलतापूर्वक समझ सकते हैं।

लेखक परिचय

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम का जन्म 1835 ई० में हिन्दुस्तान के एक कस्बे क़ादियान में हुआ। आप अपनी प्रारंभिक आयु से ही ख़ुदा की उपासना, दुआओं, पवित्र क़ुरआन और अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त रहते थे। इस्लाम जो कि उस समय चारों ओर से आक्रमणों का शिकार हो रहा था, उसकी दयनीय अवस्था को देख कर आप अलैहिस्सलाम को अत्यंत दुख होता था। इस्लाम की प्रतिरक्षा और फिर उसकी शिक्षाओं को अपने रूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए आपने 90 से अधिक पुस्तकें लिखीं और हजारों पत्र लिखे और बहुत से धार्मिक शास्त्रार्थ और मुनाज़रात किए। आपने बताया कि इस्लाम ही वह ज़िन्दा धर्म है जो मानवजाति का संबंध अपने वास्तविक सृष्टिकर्ता से स्थापित कर सकता है और उसी के अनुसरण से मनुष्य व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

छोटी आयु से ही आप सच्चे स्वप्न, कशफ़ और इल्हाम से सुशोभित हुए। 1889 ई० में आपने ख़ुदा तआला के आदेशानुसार बैअत' लेने का सिलसिला प्रारंभ किया और एक पवित्र जमाअत की नींव रखी। इल्हाम व कलाम का सिलसिला दिन प्रति दिन बढ़ता गया और आपने ख़ुदा के आदेशानुसार यह घोषणा की कि आप अंतिम युग के वही सुधारक हैं जिस की भविष्यवाणियाँ संसार के समस्त धर्मों में भिन्न-भिन्न नामों से उपस्थित हैं।

आपने यह भी दावा किया कि आप वही मसीह मौऊद व महदी माहूद हैं जिसके आने की भविष्यवाणी आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की थी। जमाअत अहमदिया अब तक संसार के 200 से अधिक देशों में स्थापित हो चुकी है।

1908 ई० में जब आप का स्वर्गवास हुआ तो उसके पश्चात पवित्र क़ुरआन

तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आपके आध्यात्मिक मिशन की पूर्णता हेतु खिलाफ़त का सिलसिला स्थापित हुआ। अतः इस समय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ आप के पंचम खलीफ़ा और विश्वस्तरीय जमाअत अहमदिया के वर्तमान इमाम हैं।

पुस्तक परिचय

हक्रीक्रतुल वह्यी

रूहानी खजायन की बाईसवीं जिल्द हज़रत सुल्तानुल क़लम मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की महान पुस्तक "हक्रीक्रतुल वह्यी" पर आधारित है।

यह पुस्तक नास्तिकता और भौतिकता के पैदा किए विषों के लिए एक विषनाशक के समान है और इस्लाम का ज़िन्दा तथा सच्चा होना सिद्ध करती है। इस पुस्तक में हुज़ूर ने जहां वह्यी, इल्हाम और सच्चे स्वप्नों की वास्तविकता वर्णन की है वहां इन बातों में स्वयं अनुभव रखने की दृष्टि से ऐसे सैकड़ों स्वप्न, कश्फ़ और इल्हाम प्रस्तुत किए हैं जो हुज़ूर के जीवन में ही प्रत्यक्षतः विरोधी परिस्थितियों के बावजूद पूर्ण होकर ख़ुदा की ओर से सिद्ध हुए। इस दृष्टि से इस पुस्तक का महत्त्व बहुत बढ़ जाता है। हुज़ूर फ़रमाते हैं :-

"स्मरण रहे कि यह पुस्तक कि जो सम्पूर्ण तर्कों और वास्तविकताओं की संग्रहीता है इस का प्रभाव केवल इस सीमा तक ही सीमित नहीं कि ख़ुदा तआला की कृपा से इस विनीत का मसीह मौऊद होना इसमें स्पष्ट तर्कों द्वारा सिद्ध किया गया है अपितु इसका यह भी प्रभाव है कि इसमें इस्लाम का ज़िन्दा और सच्चा धर्म होना सिद्ध कर दिया है।"

(हक्रीक्रतुल वह्यी, रूहानी खजायन जिल्द 22 पृष्ठ-2)

इस पुस्तक का आधारभूत विषय वह्यी और इल्हाम है। हुज़ूर फ़रमाते हैं -

"स्पष्ट हो कि मुझे इस पुस्तक के लिखने की आवश्यकता इसलिए पड़ी कि इस युग में जिस प्रकार अन्य सैकड़ों प्रकार के फ़िल्ने तथा बिदअतें पैदा हो गई हैं उसी प्रकार यह भी एक बड़ा फ़िल्नः पैदा हो गया है कि अधिकतर लोग इस बात से बेख़बर

VII

हैं कि किस श्रेणी और किस हालत में कोई स्वप्न या इल्हाम विश्वसनीय हो सकता है और किन हालतों में यह आशंका है कि वह शैतान का कलाम हो न कि खुदा का और हदीसुन्नःप्रस (मानसिक विचार) हो न कि हदीसुर्ब्ब (खुदा का कलाम)।"

(हक्रीक़तुल वह्यी, रूहानी खज़ायन जिल्द 22 पृष्ठ-3)

"इसलिए मैंने उचित समझा कि सत्य और असत्य में अन्तर करने के लिए यह पुस्तक लिखूं।"

(हक्रीक़तुल वह्यी, रूहानी खज़ायन जिल्द 22 पृष्ठ-4)

अतः वह्यी, इल्हाम और सच्चे स्वप्नों की वास्तविकता के संबंध में हुज़ूर ने चार अध्याय बनाए हैं।

अध्याय प्रथम - इसमें उन लोगों का वर्णन है जिन को कुछ सच्चे स्वप्न आते हैं या कुछ सच्चे इल्हाम होते हैं, परन्तु उनके खुदा तआला से कुछ भी संबंध नहीं और उस प्रकाश से उनको एक कण भर हिस्सा नहीं मिलता जो संबंध रखने वाले लोग पाते हैं और उनका नःप्रसानी ढांचा प्रकाश के संबंध से हज़ारों कोस दूर होता है।

(हक्रीक़तुल वह्यी, रूहानी खज़ायन जिल्द-22 पृष्ठ-7)

अध्याय द्वितीय - इसमें उन लोगों का वर्णन है जिन को कभी सच्चे स्वप्न आते हैं या सच्चे इल्हाम होते हैं और उनका खुदा तआला से कुछ संबंध भी है परन्तु बहुत अधिक संबंध नहीं और उन का नःप्रसानी ढांचा प्रकाश के शोले से जल कर नहीं मिटता यद्यपि कुछ उसके निकट आ जाता है।

(हक्रीक़तुल वह्यी, रूहानी खज़ायन जिल्द-22, पृष्ठ-13)

अध्याय तृतीय - इसमें उन लोगों का वर्णन है जो खुदा तआला से पूर्ण और शुद्ध तौर पर वह्यी पाते हैं और पूर्णरूपेण वार्तालाप और संवाद का सम्मान उनको प्राप्त है और उनको स्वप्न भी सुबह के फटने की तरह सच्चे आते हैं और खुदा तआला से सर्वांगपूर्ण तौर पर प्रेम का संबंध रखते हैं तथा खुदा की प्रेमाग्नि में दाखिल हो जाते हैं और उनका नःप्रसानी ढांचा प्रकाश के शोले से जल कर

VIII

बिल्कुल खाक हो जाता है।

(हक्रीक़तुल वह्यी रूहानी खज़ायन जिल्द-22 पृष्ठ-16)

अध्याय चतुर्थ - में यह वर्णन किया है कि अल्लाह तआला ने अपनी कृपा से आप को तीसरे वर्ग में सम्मिलित किया है जिस के सबूत में हुज़ूर ने अपने इल्हामों के संग्रह को प्रस्तुत करके उन के पूरा होने के व्यावहारिक साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं और दुआ के स्वीकार होने के बीसियों निशान, सैकड़ों भविष्यवाणियों का पूरा होना और अनेकों रूहानी और सार्वभौमिक निशानों को ख़ुदा तआला के अस्तित्व, इस्लाम की सच्चाई और अपनी सच्चाई के तौर पर प्रस्तुत किया है।

सब से महत्वपूर्ण निशान जिस के बीसियों द्योतक इस पुस्तक में दर्ज हैं हुज़ूर का अपने समय के मुसलमान उलेमा, सज्जदा नशीन, आर्यों और ईसाइयों के मुक़ाबले पर मुबाहला है जिन के विवरण को पढ़कर एक नास्तिक भी कह उठेगा कि यदि ये घटनाएं सही हैं तो फिर ख़ुदा तआला के अस्तित्व के बारे में कोई सन्देह नहीं किया जा सकता और इस्लाम तथा मसीह मौऊद की सच्चाई से इन्कार नहीं किया जा सकता।

पुस्तक 'अंजाम आथम' में हुज़ूर ने 64 से अधिक उलेमा और गद्दी नशीनों को मुबाहले के लिए बुलाया था। 'हक्रीक़तुल वह्यी' के लिखने तक उन में से केवल बीस ज़िन्दा थे और वे भी भिन्न-भिन्न प्रकार के इब्तिलाओं और ख़ुदाई क्रोध का निशाना बन कर हुज़ूर के इल्हाम **إِنِّي مُهَيِّئٌ مَنْ أَرَادَ إِهَانَتَكَ** का सत्यापन कर रहे थे इन के अतिरिक्त लेखराम और अनेकों आर्यों जॉन इलेक्ज़ेन्डर डोई और अब्दुल्लाह आथम की मौतें ख़ुदा तआला के प्रकोपी चमकार के निशान थे जिन का विवरण इस पुस्तक में मिलता है। हुज़ूर फ़रमाते हैं -

"इस में क्या रहस्य है कि बुरा और बदकार, बेईमान और महाझूठा तो मैं था परन्तु मेरे मुक़ाबले पर प्रत्येक फ़रिश्ता सीरत (भलामानस) जब आया तो वही मारा गया, जिस ने मुबाहल: किया वही तबाह हुआ, जिसने मुझ पर बद्दुआ की वह बद्दुआ उसी पर पड़ी, जिसने मुझ पर कोई मुक़द्दमा अदालत में दायर

IX

किया उसी ने पराजय खाई इसलिए खुदा के लिए सोचो कि यह उल्टा प्रभाव क्यों प्रकट हुआ, क्यों मेरे मुकाबले पर नेक मारे गए और प्रत्येक मुकाबले में खुदा ने मुझे बचा लिया। क्या इस से मेरी करामत सिद्ध नहीं होती?"

(हक्रीक़तुल वह्यी, रूहानी खज़ायन जिल्द 22 पृष्ठ-2)

हुज़ूर ने यह पुस्तक लिख कर मुसलमानों, आर्यों और ईसाइयों को अत्यन्त हमदर्दी के तौर पर इस पुस्तक के अध्ययन की दावत दी है। हुज़ूर मुसलमानों को सम्बोधित करके लिखते हैं -

"मैं अपनी प्रिय क्रौम के बड़े उलेमा और शेखों और उन सब को जो इस पुस्तक को पढ़ सकते हैं खुदा तआला की क्रसम देता हूँ कि यदि उन को यह पुस्तक पहुंचे तो अवश्य प्रारंभ से अन्त तक इस पुस्तक को ध्यानपूर्वक पढ़ लें और मैं फिर उनको उस खुदा की जिस का कोई भागीदार नहीं दोबारा क्रसम देता हूँ जिस के हाथ में प्रत्येक के प्राण हैं कि वह अपने समयों और कार्यों की हानि भी करके एक बार ध्यान और सोच-विचार कर इस पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ लें और फिर मैं तीसरी बार उस स्वाभिमानी खुदा की उनको क्रसम देता हूँ जो उस मनुष्य को पकड़ता है जो उसकी क्रसमों की परवाह नहीं करता कि अवश्य ऐसे लोग जिन को यह पुस्तक पहुंचे और उसको पढ़ सकते हों चाहे वे मौलवी हैं या शेख प्रारंभ से अन्त तक एक बार इसको अवश्य पढ़ लें।"

(हक्रीक़तुल वह्यी, रूहानी खज़ायन जिल्द 22 पृष्ठ 612)

आर्यों और हिन्दुओं को सम्बोधित करके फ़रमाते हैं -

"मैं आप लोगों को उस परमेश्वर की क्रसम देता हूँ जिस पर ईमान लाना आप लोग अपनी जीभ से व्यक्त करते हैं कि एक बार मेरी इस पुस्तक को आद्योपन्त पढ़ो और उन निशानों

पर विचार करो जो इसमें लिखे गए हैं फिर यदि अपने धर्म में इस का उदाहरण न पाओ तो खुदा से डर कर उस धर्म को छोड़ दो और इस्लाम को स्वीकार करो।"

(हक्रीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 22 पृष्ठ 616)

और ईसाइयों को इस्लाम की दावत देकर फ़रमाते हैं -

"हे पादरी साहिबान! मैं आप लोगों को उस खुदा की क़सम देता हूँ जिसने मसीह को भेजा और उस प्रेम को स्मरण कराता हूँ तथा क़सम देता हूँ जो आप लोग अपने गुमान में हज़रत यसू मसीह इब्ने मरयम से रखते हैं कि एक बार मेरी पुस्तक "हक्रीक़तुल वह्यी" को प्रारंभ से अन्त तक अक्षर-अक्षर अवश्य पढ़ लें।"

(हक्रीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 22 पृष्ठ- 620)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी पुस्तक हक्रीक़तुल वह्यी के बारे में फ़रमाते हैं -

"पुस्तक हक्रीक़तुल वह्यी में हम ने सब प्रकार की बातों को संक्षिप्त तौर पर एकत्र कर दिया है और उसमें क़सम दी है कि लोग कम से कम प्रारंभ से अन्त तक इसको पढ़ ले। दूसरे की क़सम का न मानना भी संयम के विरुद्ध है। आंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी दूसरे ईसा अलैहिस्सलाम ने भी दूसरे आदमी की क़सम को पूरा किया था। इसलिए हम एक नेक काम के लिए क़सम देते हैं कि वे बिना सोचे-समझे गालियां न दें और विरोध न करें। कम से कम हमारे तर्कों को एक बार ध्यानपूर्वक अध्ययन कर लें चाहे थोड़ा-थोड़ा करके पढ़ें। फिर उनको मालूम हो जाएगा कि सच किस बात में है।"

(मल्फूज़ात भाग-5 पृष्ठ-172)

एक और अवसर पर फ़रमाया -

"हमारी जमाअत को धार्मिक ज्ञान में फ़िकः का ज्ञान पैदा करना चाहिए परन्तु इसके वह मायने नहीं जो सामान्य मुल्ला लोगों ने समझ रखे हैं कि इस्तंजा इत्यादि के कुछ विषय समझ आ गए वे भी तक्लीदी रंग में फ़क्रीह (धर्मशास्त्री) बन बैठे। अपितु हमारा मतलब यह है कि वे कुर्आनी आयतों, नब्वी हदीसों और हमारी पुस्तकों पर विचार करें, कुर्आनी अध्यात्म ज्ञानों तथा वास्तविकताओं से अवगत हों। यदि कोई विरोधी इन पर ऐतराज करे तो उसे पर्याप्त उत्तर दे सकें। एक बार जो परीक्षा लेने का प्रस्ताव किया गया था बहुत आवश्यक था उसका अवश्य बन्दोबस्त होना चाहिए। हक़ीक़तुल वह्यी इस उद्देश्य के लिए बहुत लाभप्रद पुस्तक है। असल में मुसलमानों के लिए तो यही उत्तर पर्याप्त है कि तुम कोई ऐसा ऐतराज इस सिलसिले पर करके दिखाओ जो अन्य नबियों पर न हो सके। वे कदापि कोई ऐसा ऐतराज नहीं कर सकते।"

(मल्फूज़ात जिल्द-5 पृष्ठ 211, 212)

हक़ीक़तुल वह्यी के पढ़ने के बारे में ताकीद करते हुए फ़रमाया -

"हमारे दोस्तों को चाहिए कि हक़ीक़तुल वह्यी को प्रारंभ से अन्त तक ध्यानपूर्वक पढ़ें अपितु उसको याद कर लें। कोई मौलवी उनके सामने ठहर नहीं सकेगा क्योंकि हर प्रकार की आवश्यक बातों का इसमें वर्णन किया गया है और ऐतराजों के उत्तर दिए गए हैं।" (मल्फूज़ात जिल्द-5, पृष्ठ 235)

ख़ुदा तआला की जो क्रसमें दी गई हैं उनके बाद प्रत्येक ख़ुदा से डरने वाला मुसलमान, आर्य और ईसाई का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह संयम और ईमानदारी और पक्षपात से खाली होकर इस पुस्तक को आद्योपान्त पढ़े, तत्पश्चात् वह जिस परिणाम पर पहुंचे उसके लिए वह ख़ुदा के सामने उत्तरदायी है। हज़रत

XII

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुसलमानों, ईसाइयों और हिन्दुओं को प्रतापी खुदा की क्रसम देकर हक्रीकतुल वह्यी का अध्ययन करने की जितनी ताकीद की है उस से हम अहमदियों को अहसास होना चाहिए कि हमारे लिए इसका अध्ययन कितना आवश्यक है। वास्तविकता यह है कि खुदा तआला की हस्ती, इस्लाम की सच्चाई और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई, चमत्कार, निशान, वह्यी, इल्हाम और दुआ तथा उसके स्वीकार होने के बारे में अटल विश्वास प्राप्त करने के लिए हमारे लिए इस पुस्तक का अध्ययन बहुत ही आवश्यक है विशेष रूप से हमारी नस्ल के लिए और हमारा यह भी कर्तव्य है कि हम कोशिश करके इस पुस्तक को अपने गैर अहमदी भाइयों तक पहुंचाएं क्योंकि इस पुस्तक के तर्क, शास्त्रार्थ विद्या की बहसों से बुलन्द अखण्डनीय वास्तविकताओं और प्रमाणों पर आधारित हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 'हक्रीकतुल वह्यी के परिशिष्ट' के तौर पर 'अल-इस्तिफ़ता' को सम्मिलित किया है और उसके पहले पृष्ठ पर यह नोट लिखा है -

قد الحقنا هذه الرسالة بكتابنا حقيقة الوحي وجعلناها له
ضميمة واشعنا بعضها عليحدة

(अनुवाद - हमने यह पुस्तक अपनी हक्रीकतुल वह्यी के साथ परिशिष्ट के तौर पर सम्मिलित की है और इसकी कुछ प्रतियां अलग से भी प्रकाशित की हैं।)

अल-इस्तिफ़ता की जो प्रतियां पृथक तौर पर प्रकाशित की गई हैं उनके अन्त में हुज़ूर ने अपना वह क्रसीद: फारसी अनुवाद के साथ भी सम्मिलित किया है जो

علمی من الرحمن ذی الالاء بالله حزت الفضل لا بدهاء
से आरंभ होता है।

यह क्रसीद: वर्तमान हिन्दी संस्करण के पृष्ठ 888 से 916 तक दर्ज है।

विनीत

अब्दुल हयी

इस पुस्तक का प्रभाव क्या है?

स्मरण रहे कि यह पुस्तक जो समस्त तर्कों तथा वास्तविकताओं की संग्रहीता है इसका प्रभाव केवल इस सीमा तक ही सीमित नहीं कि खुदा तआला की कृपा से इस खाकसार का मसीह मौजूद होना इसमें स्पष्ट तर्कों द्वारा सिद्ध किया गया है अपितु इसका यह भी प्रभाव है कि इसमें इस्लाम का ज़िन्दा और सच्चा धर्म होना सिद्ध कर दिया है। यद्यपि प्रत्येक क्रौम अपने मुख से कह सकती है कि हम भी खुदा तआला को भागीदार रहित 'एक' समझते हैं जैसा कि ब्रह्म समाज वाले यही दावा करते हैं और ऐसा ही आर्य भी, बावजूद इसके कि प्राचीनता में कण-कण को खुदा तआला का भागीदार और अनादि बना रखा है, एकेश्वरवाद के मुद्दे हैं। परन्तु ये समस्त क्रौम ज़िन्दा खुदा के अस्तित्व का कोई निश्चित सबूत नहीं दे सकतीं और खुदा के अस्तित्व पर उनके दिल तसल्ली नहीं पाते।★ इसलिए उन के ये दावे कि हम खुदा तआला को भागीदार रहित 'एक' समझते हैं केवल दावे ही दावे हैं। इसलिए उन के ऐसे इक्रार वास्तविक एकेश्वरवाद का रंग उनके दिलों पर नहीं चढ़ा सकते और खुदा तआला को भागीदार रहित 'एक' मानना तो दूर वास्तव में इन लोगों को इतना भी नसीब नहीं कि निश्चित तौर पर खुदा तआला के अस्तित्व पर ईमान रखते हों अपितु उनके दिल अंधकार में पड़े हैं।

★ ईसाइयों के वर्णन की यहां आवश्यकता नहीं क्योंकि उन का खुदा उनकी दूसरी कलों और मशीनों के समान स्वयं अपना अविष्कारक है जिसका क़ानून-ए-कुदरत में कुछ पता नहीं मिलता और न उसकी ओर से 'मैं मौजूद हूँ' की आवाज़ आती है और न उसने कोई खुदाई कार्य दिखाए जो दूसरे नबी दिखला न सके और उसकी कुर्बानी के प्रभाव से एक मुर्ग की कुर्बानी का प्रभाव अधिक महसूस होता है जिसके गोश्त की यख्नी से तुरन्त एक निर्बल, कमज़ोर को ताक़त मिल सकती है। तो अफ़सोस है ऐसी कुर्बानी पर जो एक मुर्ग की कुर्बानी की अपेक्षा प्रभाव में बहुत कम है। इसी से।

XIV

स्मरण रहे कि इन्सान उस परोक्ष से परोक्ष ख़ुदा को अपनी शक्ति से कदापि नहीं पहचान सकता जब तक वह स्वयं अपने आप अपने निशानों से पहचान न कराए और ख़ुदा तआला से सच्चा संबंध कदापि पैदा नहीं हो सकता जब तक वह विशिष्ट संबंध ख़ुदा तआला के माध्यम से पैदा न हो और तामसिक वृत्ति इन्सान के भीतर से कदापि निकल नहीं सकतीं जब तक शक्तिमान ख़ुदा की ओर से एक प्रकाश दिल में दाखिल न हो। और देखो कि मैं इस चश्मदीद साक्ष्य को प्रस्तुत करता हूँ कि वह संबंध केवल पवित्र कुर्आन के अनुकरण से प्राप्त होता है। दूसरी किताबों में अब कोई जीवन की रूह नहीं और आकाश के नीचे केवल एक ही किताब है जो उस वास्तविक प्रियतम का चेहरा दिखलाती है अर्थात् पवित्र कुर्आन।

और मुझे पर जो मेरी क्रौम भिन्न-भिन्न प्रकार के ऐतराज़ करती है मुझे उनके ऐतराज़ों की कुछ भी परवाह नहीं और अत्यन्त बेईमानी होगी कि मैं उन से डर कर सच्चाई के मार्ग को त्याग दूँ। उनको स्वयं सोचना चाहिए कि एक मनुष्य को ख़ुदा ने अपनी ओर से प्रतिभा प्रदान की है और स्वयं उसका मार्ग दर्शन कर दिया है और उसको अपने वार्तालाप एवं संवादों से सम्मानित किया है और उसके सत्यापन के लिए हज़ारों निशान दिखाए हैं भला वह कैसे एक विरोधी के भ्रमों को कुछ चीज़ समझ कर उस सच्चाई के सूर्य से मुख फेर सकता है? और मुझे इस बात की भी परवाह नहीं कि आन्तरिक एवं बाह्य विरोधी मेरे दोष तलाश करने में व्यस्त हैं क्योंकि इस से मेरी करामत ही सिद्ध होती है। कारण यह कि यदि मैं हर प्रकार का दोष अपने अन्दर रखता हूँ और उनके कथनानुसार वचन भंग करने वाला, कज़़ाब, दज्जाल और मुफ़्तरी तथा बेईमान हूँ और हराम खाने वाला हूँ तथा क्रौम में फूट डालने वाला और फ़िल्तः खड़ा करने वाला हूँ और पापी तथा दुराचारी हूँ और ख़ुदा पर लगभग तीस वर्ष से झूठ गढ़ने वाला हूँ और नेकों तथा सच्चों को गालियाँ देने वाला हूँ तथा मेरी रूह में शरारत, बुराई, व्यभिचार और नफ़्स परस्ती के अतिरिक्त और कुछ नहीं और केवल दुनिया को ठगने के लिए मैंने यह एक दुकान बनाई है और नरुज़ुबिल्लाह उनके कथनानुसार

मेरा ख़ुदा पर भी ईमान नहीं और दुनिया का कोई ऐसा दोष नहीं जो मुझ में नहीं। परन्तु इन बातों के बावजूद कि समस्त संसार के दोष मुझ में मौजूद हैं और प्रत्येक प्रकार का जुल्म मेरे अन्दर भरा हुआ है और बहुत से लोगों के माल अनुचित तौर पर खा लिए हैं तथा बहुतों को मैंने (जो फरिश्तों की तरह पवित्र थे) गालियां दी हैं और प्रत्येक बदी और ठगबाज़ी में सब से अधिक भाग लिया है तो फिर इसमें क्या भेद है कि बद और बदकार, बेईमान और कज़्ज़ाब तो मैं था परन्तु मेरे मुक़ाबले पर प्रत्येक फ़िरिश्ता सीरत जब आया तो वही मारा गया, और जिसने मुबाहला किया वही तबाह हुआ, जिस ने मुझ मुझ पर बद-दुआ की वह उसी पर पड़ी, जिसने मुझ पर कोई मुक़द्दमा अदालत में दायर किया उसी ने पराजय खाई। अतः बतौर नमूना इस पुस्तक में इन बातों का सबूत भी आप देखोगे। चाहिए तो यह था कि ऐसे मुक़ाबले के समय मैं ही मारा जाता, मुझ पर ही बिजली पड़ती अपितु किसी के मुक़ाबले पर खड़े होने की भी आवश्यकता नहीं थी क्योंकि अपराधी का ख़ुदा स्वयं शत्रु है। इसलिए ख़ुदा के लिए सोचो कि यह उल्टा प्रभाव क्यों प्रकट हुआ? क्यों मेरे मुक़ाबले पर नेक मारे गए और प्रत्येक मुक़ाबले में ख़ुदा ने मुझे बचाया। क्या इस से मेरी करामत सिद्ध नहीं होती? फिर यह कृतज्ञ होने का स्थान है कि जो बुराइयां मेरी ओर सम्बद्ध की जाती हैं वे भी मेरी करामत ही सिद्ध करती हैं।

लेखक

मिर्ज़ा गुलाम अहमद
मसीह मौऊद क़ादियानी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى
خَيْرِ رُسُلِهِ مُحَمَّدٍ وَّآلِهِ وَاَصْحَابِهِ اَجْمَعِيْنَ

तत्पश्चात् स्पष्ट हो कि मुझे इस पुस्तक के लिखने की आवश्यकता इसलिए पड़ी है कि इस युग में जिस प्रकार अन्य सैकड़ों प्रकार के फ़िल्ते और धर्म में नई बातें पैदा हो गई हैं उसी प्रकार यह भी एक बड़ा फ़िल्ता पैदा हो गया है कि अधिकतर लोग इस बात से अपरिचित हैं कि किस स्तर पर और किस अवस्था में कोई स्वप्न या इल्हाम विश्वसनीय हो सकता है और किन परिस्थितियों में यह आशंका है कि वह शैतान का कलाम (वाणी) हो न कि खुदा का, और हृदय में पैदा हुई बात हो न कि रब की^① ओर से। स्मरण रखना चाहिए कि शैतान मनुष्य का बहुत बड़ा शत्रु है। वह भिन्न भिन्न प्रकार

① **हाशिया:-** जिस प्रकार जब एक तो सूर्य पर बादल छाया हुआ हो दूसरे उसके साथ मिट्टी और धूल भी उठी हुई हो तो इस स्थिति में सूर्य का प्रकाश साफ़ तौर पर पृथ्वी पर नहीं पड़ सकता। इसी प्रकार जब नफ़्स (मनोवृत्ति) पर अपना व्यक्तिगत अंधकार और शैतान का प्रभुत्व हो तो अध्यात्मिक सूर्य का प्रकाश उस पर साफ़ तौर पर नहीं पड़ेगा तथा जैसे-जैसे वह मिट्टी और धूल और बादल कम होता जाएगा प्रकाश भी साफ़ होता जाएगा। अतः यही दार्शनिकता खुदा की वह्यी (ईशवाणी) का है। शुद्ध और साफ़ वह्यी वही लोग पाते हैं जिनके हृदय साफ़ हैं और उनके तथा खुदा के बीच कोई रोक नहीं। फिर यह भी स्मरण रहे कि वह इल्हाम जिसके साथ खुदा की सहायता हो तथा उसमें आदर-सम्मान के स्पष्ट लक्षण पाए जाएं तथा स्वीकारिता के लक्षण उसमें प्रकट हों वह खुदा के मान्य लोगों के बिना किसी को नहीं हो सकता तथा शैतान के आधिपत्य से यह बाहर है कि किसी झूठे दावेदार के समर्थन और शक्ति-प्रदर्शन में कोई चमत्कार दिखलाने का कोई इल्हाम उसको करे और उसे सम्मान प्रदान करने के लिए कोई अदभुत चमत्कार और स्पष्ट भविष्यवाणी उस पर प्रकट करे ताकि उसके दावे पर साक्षी हो। इसी से।

के मार्गों से मनुष्य को तबाह करना चाहता है तथा संभव है कि एक स्वप्न सच्चा भी हो और फिर भी वह शैतान की ओर से हो और संभव है कि एक इल्हाम सच्चा हो और फिर भी वह शैतान की ओर से हो, क्योंकि यद्यपि शैतान बड़ा झूठा है परन्तु कभी सच्ची बात बता कर धोखा देता है ताकि ईमान छीन ले। हां वे लोग जो अपनी सत्य, वफ़ा और खुदा के प्रेम में कमाल की श्रेणी पर पहुंच जाते हैं उन पर शैतान अधिकार नहीं पा सकता, जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है :

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ ①

अतः उन की यह निशानी है कि उन पर खुदा की कृपा-वृष्टियां होती हैं कि और उनमें खुदा की स्वीकारिता के हजारों लक्षण और नमूने पाए जाते हैं जैसा कि खुदा ने चाहा तो हम इस किताब में चर्चा करेंगे, परन्तु खेद है कि अधिकतर लोग ऐसे हैं कि अभी शैतान के पंजे में गिरफ़्तार हैं परन्तु फिर भी अपने सपनों और इल्हामों पर भरोसा करके अपनी ग़लत आस्थाओं तथा अपवित्र धर्मों को उन स्वप्नों और इल्हामों से फ़ैलाना चाहते हैं अपितु ऐसे स्वप्नों और इल्हामों को बतौर साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं और या यह नीयत रखते हैं कि ऐसे स्वप्नों और इल्हामों को प्रस्तुत करके उनके द्वारा सच्चे धर्म का तिरस्कार करे या लोगों की दृष्टि में खुदा के पवित्र नबियों को साधारण मनुष्यों की तरह दिखाएं और या यह दिखाएं कि यदि स्वप्नों और इल्हामों के द्वारा किसी धर्म की सच्चाई सिद्ध हो सकती है तो फिर हमारे धर्म और पद्धति को सच्चा मान लिया जाए तथा कुछ ऐसे भी हैं कि जो अपने स्वप्नों और इल्हामों को अपने धर्म की सच्चाई के लिए प्रस्तुत नहीं करते। उनका ऐसे स्वप्नों और इल्हामों को वर्णन करने का उद्देश्य केवल यह होता है कि स्वप्न और इल्हाम किसी सच्चे धर्म अथवा सच्चे मनुष्य की पहचान के लिए मापदण्ड नहीं हैं और कुछ मात्र फिज़ूल और गर्व के तौर पर अपने स्वप्न सुनाते हैं तथा कुछ ऐसे भी हैं कि उनके कुछ स्वप्न या इल्हाम जो उनके निकट

सच्चे हो गए हैं उनके आधार पर वे स्वयं को इमामों, पेशवाओं या रसूलों के रूप में प्रस्तुत करते हैं, ये वे खराबियां हैं जो इस देश में बहुत बढ़ गई हैं तथा ऐसे लोगों में बजाए धार्मिकता और ईमानदारी के अनुचित अभिमान और अहंकार पैदा हो गया है। इसलिए मैंने उचित समझा कि सत्य और असत्य में अन्तर करने के लिए यह पुस्तक लिखूं। क्योंकि मैं देखता हूं कि कुछ नासमझ लोग ऐसे लोगों के कारण आजमायश में पड़ते हैं विशेषतया जब वे देखते हैं कि उदाहरणतया "जैद" अपने स्वप्न या इल्हाम पर भरोसा करके "बकर" को जो उसके मुकाबले पर एक दूसरा मुलहम है काफ़िर ठहराता है और "खालिद" जो एक तीसरा मुल्हम है दोनों पर कुफ़्र का फ़त्वा लगाता है और विचित्र यह है कि तीनों अपने स्वप्नों और इल्हामों के सच्चा होने का दावा भी करते हैं और अपनी कुछ भविष्यवाणियों के बारे में ये साक्ष्य भी प्रस्तुत करते हैं कि वे सच्चे भी हो गए तो ऐसे विरोधाभास और परस्पर झुठलाने तथा इन्कार को देखकर वे लोग सख्त ठोकर खाते हैं, क्योंकि जब ख़ुदा एक है तो क्योंकि संभव है कि वह जैद को एक इल्हाम करे और फिर बकर को उसके विपरीत कहे और फिर ख़ालिद को कुछ और ही सुना दे। इस से तो नासमझ लोगों को ख़ुदा के अस्तित्व में ही सन्देह पड़ता है। अतः ये बातें सामान्य लोगों के लिए घबराहट का स्थान है और उनकी दृष्टि में नुबुव्वत का सिलसिला संदिग्ध हो जाता है और यहां सामान्य लोगों को आश्चर्य में डालने वाली एक और बात भी है और वह यह कि कुछ कपटी, दुराचारी, व्यभिचारी, अत्याचारी, अधर्मी, चोर, कृतघ्न तथा ख़ुदा के आदेशों के विरुद्ध चलने वाले भी ऐसे देखे गए हैं कि उनको भी कभी-कभी सच्चे स्वप्न आ जाते हैं और मेरा यह व्यक्तिगत अनुभव है कि कुछ स्त्रियां, जो जाति की भंगन थीं जिनका पेशा मुर्दा जानवरों को खाना और अपराध करना था, उन्होंने हमारे समक्ष कुछ स्वप्न वर्णन किए और वे सच्चे निकले। इससे भी अदभुत यह कि कुछ व्यभिचारी स्त्रियां जाति की कंजर जिनका काम दिन-रात व्यभिचार करना था उनको देखा गया कि उन्होंने कुछ स्वप्न वर्णन किए और वे पूरे हो गए तथा कुछ

ऐसे हिन्दुओं को भी देखा कि शिर्क (अनेकेश्वरवाद) की गन्दगी में लिप्त और इस्लाम के कट्टर शत्रु हैं उनके कुछ स्वप्न जैसा कि देखा था प्रकट हो गए। अतः इस पुस्तक के ठीक लिखने के समय क़ादियान का एक हिन्दू मेरे पास आया जो जाति से खत्री था उसने वर्णन किया कि अमुक पोस्ट मास्टर को मैंने देखा था कि उसका स्थानांतरण होकर फिर स्थगित हो गया। अतः ऐसा ही हुआ तथा उस हिन्दू ने भिन्न-भिन्न समयों में मेरे पास वर्णन किया कि मेरे कई अन्य स्वप्न भी पूरे हो गए हैं। मुझे मालूम नहीं कि ऐसे बयानों से उसका क्या उद्देश्य था और वह क्यों बार-बार मुझे अपने स्वप्न सुनाता था क्योंकि वेद की दृष्टि से स्वप्न और इल्हाम तो बन्द हो गए हैं। इसी प्रकार एक बदचलन चोर और दुराचारी भी जो हिन्दू था और जेल में डाला गया था। जेल से छूट कर संयोग से मुझे मिला तथा मुझे स्मरण है कि किसी चोरी के अपराध आदि में उस को कई वर्ष का कारावास हुआ था। उसका कहना है कि जिस सुबह अदालत से कारावास के दण्ड का मुझे आदेश दिया जाना था जिस आदेश की प्रत्यक्ष में कोई आशा न थी, रात को स्वप्न में मुझ पर प्रकट किया गया कि मैं कारावास में डाला जाऊंगा। अतः ऐसा ही हुआ तथा उसी दिन मुझे कारावास में डाल दिया गया। इसी प्रकार अमरीका में एक व्यक्ति इन दिनों में मौजूद है जिसका नाम डोई है, उसका एक समाचार पत्र भी निकलता है और वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा समझता है और स्वयं को इल्यास^अ नबी का अवतार समझता है और मुल्हम अर्थात् इल्हाम होने का दावेदार है तथा लोगों के समक्ष अपने स्वप्न और इल्हाम प्रस्तुत करता है इस दावे के साथ कि सच्चे निकले हैं तथा उसकी आस्था जैसा कि मैंने वर्णन किया यह है कि वह एक असहाय व्यक्ति को समस्त लोकों का प्रतिपालक समझता है। उसके चाल-चलन के बारे में यह कहना पर्याप्त है कि उसकी मां एक व्यभिचारिणी स्त्री थी और उसे स्वयं इक्रार है कि वह ज़ारज (हरामी लड़का) है और जाति का मोची है तथा उसका एक भाई आस्ट्रेलिया में मोची का काम करता है और ये बातें मात्र दावा नहीं अपितु वे समस्त अख़बार और

पत्र हमारे पास मौजूद हैं जिनसे उसकी यह खानदानी स्थिति सिद्ध होती है।

अतः सारांश यह कि जबकि ऐसे स्वप्न तथा ऐसे इल्हाम भिन्न-भिन्न प्रकार के लोगों को होते रहते हैं अपितु प्रायः सच्चे भी हो जाते हैं और ऐसे लोग इस देश में पचास से भी अधिक हैं जो इल्हाम और वह्यी के दावेदार हैं और इन लोगों का ऐसा विशाल दायरा है कि कोई शर्त सच्चे धर्म और अच्छे आचरण की भी नहीं। अतः ऐसी स्थिति में कोई ऐसा बुद्धिमान न होगा कि इस आस्था के समाधान हेतु अपने हृदय में आवश्यकता महसूस न करे कि अन्तर क्योंकर स्थापित हो। विशेषतया जबकि इस बात का भी प्रमाण मिलता है कि धर्म और आस्थागत भिन्नता के बावजूद प्रत्येक सम्प्रदाय के लोगों को स्वप्न और इल्हाम होते हैं तथा एक-दूसरे को अपने स्वप्नों तथा इल्हामों के द्वारा झूठा भी ठहराते हैं और प्रत्येक सम्प्रदाय के कुछ स्वप्न सच्चे भी हो जाते हैं। अतः ऐसी अवस्था में प्रकट है कि सत्याभिलाषियों के मार्ग में यह एक खतरनाक पत्थर है और विशेषकर ऐसे लोगों के लिए यह एक घातक विष है जो स्वयं इल्हाम के दावेदार हैं और स्वयं को खुदा की ओर से मुल्हम समझते हैं। वास्तव में खुदा तआला से उनका कोई संबंध नहीं तथा वे इस धोखे से कि उनका कोई स्वप्न सच्चा हो जाता है स्वयं को कुछ समझते हैं तथा इस प्रकार वे सत्य की अभिलाषा से वंचित रह जाते हैं अपितु सच्चाई को तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं। अतः यही बात है जिसने मुझे इस बात पर तत्पर किया कि मैं इस अन्तर को सत्याभिलाषियों पर प्रकट करूं। अतः मैं इस पुस्तक को चार अध्यायों पर विभाजित करता हूं।

प्रथम अध्याय उन लोगों के वर्णन में जिनको कुछ सच्चे स्वप्न आते हैं या कुछ सच्चे इल्हाम होते हैं परन्तु उनका खुदा तआला से कुछ भी संबंध नहीं।

द्वितीय अध्याय उन लोगों के वर्णन में जिनको प्रायः सच्चे स्वप्न आते हैं या सच्चे इल्हाम होते हैं और उनका खुदा तआला से कुछ संबंध तो है परन्तु बड़ा संबंध नहीं।

तृतीय अध्याय उन लोगों के वर्णन में जो खुदा तआला से पूर्ण और शुद्ध तौर पर

वह्यी (ईशवाणी) पाते हैं और पूर्ण रूप से उन्हें खुदा से वार्तालाप एवं सम्बोधन का सम्मान प्राप्त है और उन्हें स्वप्न भी सूर्योदय की भांति सच्चे आते हैं और खुदा तआला से पूर्णतम शुद्ध और स्वच्छ संबंध रखते हैं जैसा कि खुदा तआला के प्रिय नबियों और रसूलों का संबंध होता है।

चतुर्थ अध्याय अपनी परिस्थितियों के वर्णन में अर्थात् इस वर्णन में कि खुदा तआला की कृपा एवं दया ने मुझे इन तीनों प्रकारों में से किस प्रकार में सम्मिलित किया है। अब हम इस लेख को निम्नलिखित प्रत्येक चारों अध्याय में लिखते हैं। अल्लाह की प्रदत्त सामर्थ्य के अतिरिक्त हमें कोई सामर्थ्य नहीं।

وما توفيقى الا بالله- ربنا هدنا صراطك المستقيم، وهب لنا
من عندك فهم الدين القويم- وَعَلَّمَنَا لَدُنْكَ عِلْمًا (آمِينَ)

हे मेरे रब्ब ! हमें सदमार्ग दिखा तथा अपनी ओर से सुदृढ़ धर्म की समझ प्रदान कर और अपनी ओर से हमें भलीभांति ज्ञान सिखा। आमीन।

प्रथम अध्याय

उन लोगों के वर्णन में जिन्हें कुछ सच्चे स्वप्न आते हैं या कुछ सच्चे इल्हाम होते हैं परन्तु उनका ख़ुदा तआला से कुछ भी संबंध नहीं तथा उस प्रकाश से उनको लेशमात्र भाग नहीं मिलता जो ख़ुदा से संबंध रखने वाले पाते हैं और उनका दिल प्रकाश से हज़ारों कोस दूर होता है।

स्पष्ट हो कि चूंकि व्यक्ति इस उद्देश्य के लिए पैदा किया गया है कि अपने पैदा करने वाले को पहचाने तथा उसके अस्तित्व और उसकी विशेषताओं पर ईमान लाने के लिए विश्वास की श्रेणी तक पहुंच सके। इसलिए ख़ुदा तआला ने मानव मस्तिष्क की रचना कुछ ऐसी रखी है कि एक ओर तो उसे बौद्धिक तौर पर ऐसी शक्तियां प्रदान की गई हैं जिन के द्वारा मनुष्य ख़ुदा तआला की बनाई हुई वस्तुओं को देखकर और संसार के कण-कण में व्याप्त ख़ुदा तआला की पूर्ण नीति के जो सूक्ष्म निशान विद्यमान हैं तथा संसार में जो सुस्पष्ट और सुदृढ़ युक्ति पाई जाती है उसकी तह तक पहुंच कर पूर्ण विवेक से इस बात को समझ लेता है कि यह पृथ्वी और आकाश का इतना बड़ा कारखाना बिना किसी रचयिता के स्वयं मौजूद नहीं हो सकता अपितु आवश्यक है कि उसका कोई स्रष्टा हो। और फिर दूसरी ओर अध्यात्मिक चेतना तथा अध्यात्मिक शक्तियां भी उसे प्रदान की गई हैं ताकि वह दोष और कमी जो ख़ुदा तआला को पहचानने में बौद्धिक (तार्किक) शक्तियों से रह जाती है, अध्यात्मिक शक्तियां उसे पूर्ण कर दें क्योंकि यह स्पष्ट है कि मात्र तार्किक शक्तियों के माध्यम से ख़ुदा तआला की पहचान पूर्ण रूप से नहीं हो सकती। कारण यह कि बौद्धिक शक्तियां जो मनुष्य को प्रदान की गई हैं उनका कार्य तो केवल उस सीमा तक है कि पृथ्वी और आकाश के एक-एक सदस्य या

उनके सुदृढ़ और मज़बूत क्रम पर दृष्टि डालते हुए यह आदेश दें कि इस वास्तविकताओं तथा नीतिपूर्ण संग्रहीता जगत का कोई स्रष्टा होना चाहिए। यह तो उनका कार्य नहीं है कि यह आदेश भी दें कि वास्तव में वह स्रष्टा मौजूद भी है परन्तु स्पष्ट है कि इसके बिना कि मनुष्य का अध्यात्म ज्ञान इस सीमा तक पहुंच जाए कि वास्तव में वह स्रष्टा मौजूद भी है केवल स्रष्टा की आवश्यकता को महसूस करना पूर्ण अध्यात्म ज्ञान नहीं कहला सकता क्योंकि यह कथन कि इन तमाम चीज़ों का कोई स्रष्टा होना चाहिए इस कथन से कदापि बराबर नहीं हो सकता कि वह स्रष्टा जिसकी आवश्यकता स्वीकार की गई है वास्तव में मौजूद भी है। अतः सत्याभिलाषियों को अपनी साधना पूर्ण करने के लिए जो पूर्ण पहचान के लिए उनके स्वभावों में अंकित है इस बात की आवश्यकता हुई कि तर्क शक्तियों के अतिरिक्त उन्हें अध्यात्मिक शक्तियां भी प्रदान हों ताकि यदि उन अध्यात्मिक शक्तियों से पूर्ण काम लिया जाए और मध्य में कोई पर्दा न हो तो वे उस वास्तविक प्रियतम का चेहरा इतना साफ़ तौर पर दिखा सके जितना केवल बौद्धिक शक्तियां उस चेहरे को दिखा नहीं सकतीं। अतः वह खुदा जो कृपालु और दयालु है जैसा कि उसने मानव प्रकृति को अपनी पूर्ण पहचान की भूख और प्यास लगा दी है। इसी प्रकार उसने उस पूर्ण पहचान तक पहुंचाने के लिए मानव प्रकृति को दो प्रकार की शक्तियां प्रदान की हैं एक तर्क शक्तियां जिन का स्रोत मस्तिष्क है और एक अध्यात्मिक शक्तियां जिनका स्रोत हृदय है और जिनकी शुद्धता हृदय की शुद्धता पर निर्भर है तथा जिन बातों को बौद्धिक शक्तियां पूर्ण रूप से ज्ञात नहीं कर सकतीं अध्यात्मिक शक्तियां उनकी वास्तविकता तक पहुंच जाती हैं तथा अध्यात्मिक शक्तियां अपने अन्दर केवल प्रभावित होने वाली शक्तियां रखती हैं अर्थात् ऐसी शुद्धता पैदा करना कि वरदान रूपी स्रोत के वरदान उनमें प्रतिबिम्बित हो सकें। अतः उनके लिए यह अनिवार्य शर्त है कि फ़ैज़ (अध्यात्म लाभ) प्राप्ति के लिए तैयार हों, पर्दा या बाधा मध्य में न हो ताकि खुदा तआला से पूर्ण पहचान का वरदान प्राप्त कर सकें और केवल उस सीमा तक उनकी पहचान सीमित न

हो कि इस नीतिपूर्ण जगत का कोई स्रष्टा होना चाहिए अपितु उस स्रष्टा से पूर्ण रूप से वार्तालाप एवं सम्बोधन का सम्मान पाकर और सीधे तौर पर उसके महान निशान देखकर उसका चेहरा देख लें और विश्वास की आंख से अवलोकन कर लें कि वास्तव में वह स्रष्टा मौजूद है परन्तु चूंकि अधिकांश मानव स्वभाव पर्दे से रिक्त नहीं तथा संसार का प्रेम और लालसा, अभिमान, अहंकार, घमंड, दिखावा, काम-लोलुपता तथा अन्य शैष्टिक खराबियाँ तथा अल्लाह और लोगों के अधिकारों की अदायगी में जान बूझ कर कमी और आलस्य, श्रद्धा और दृढ़ता की शर्तों, प्रेम की बारीकियाँ, वफ़ा से जानबूझ कर विमुख होना तथा खुदा से जानबूझ कर संबंध-विच्छेद करना अधिकांश स्वभावों में पाया जाता है। इसलिए वे स्वभाव भिन्न-भिन्न प्रकार के आवरणों, पर्दों, बाधाओं और नफ़्स की -इच्छाओं एवं कामवासनाओं के कारण इस योग्य नहीं कि खुदा के महत्त्वपूर्ण वार्तालाप एवं सम्बोधन का वरदान उतरे जिसमें स्वीकारिता के प्रकाशों का कोई भाग हो^① हां अल्लाह तआला ने जो मानव प्रकृति को नष्ट करना नहीं चाहता बीजारोपण के तौर पर अधिकांश लोगों में अपनी यह आदत जारी कर रखी है कि कभी-कभी सच्चे स्वप्न या सच्चे इल्हाम हो जाते हैं ताकि वे ज्ञात कर सकें कि उनके लिए

① स्मरण रहे कि शारीरिक इच्छाएं और काम भावनाएं नबियों और रसूलों में भी होती हैं परन्तु अन्तर यह है कि वे पवित्र लोग प्रथम खुदा तआला की प्रसन्नता-प्राप्ति के लिए समस्त इच्छाओं और काम भावनाओं से अलग हो जाते हैं और अपने नफ़्स (मनोवृत्ति) को खुदा के आगे ज़िबह कर देते हैं और फिर जो खुदा के लिए बेसुध हो जाते हैं कृपा के तौर पर उन्हें वापस दिया जाता है और उन पर सब कुछ आता है और वे निराश्रय नहीं होते, परन्तु जो लोग खुदा तआला के लिए स्वयं को ज़िबह (फ़ना करना) नहीं करते उनकी काम भावनाएं उनके लिए बतौर आवरण हो जाती हैं, अन्त में गन्दगी के कीड़े की तरह गन्दगी में मरते हैं। अतः उनका और खुदा के पवित्र लोगों का उदाहरण यह है कि जैसे एक ही कारावास में कारावास का दारोगा भी रहता है और कैदी भी रहते हैं परन्तु नहीं कह सकते कि दारोगा उन कैदियों की तरह है। इसी से।

आगे कदम रखने हेतु एक मार्ग खुला है परन्तु उनके स्वप्नों और इल्हामों में खुदा की स्वीकारिता, प्रेम तथा कृपा के कुछ लक्षण नहीं होते और न ऐसे लोग तामसिक वृत्तियों की अपवित्रताओं से शुद्ध होते हैं और स्वप्न केवल इसलिए आते हैं ताकि उन पर खुदा के पवित्र नबियों पर ईमान लाने के लिए समझाने का प्रयास पूर्ण हो, क्योंकि यदि वे सच्चे स्वप्न और सच्चे इल्हामों की वास्तविकता समझने से बिल्कुल वंचित हों तथा इस बारे में कोई ऐसा ज्ञान जिसे इल्मुल यक्रीन (ज्ञान द्वारा विश्वास) कहना चाहिए उन्हें प्राप्त न हो तो खुदा तआला के सामने उन का बहाना हो सकता है कि वे नुबुव्वत की वास्तविकता को समझ नहीं सकते थे क्योंकि इस कूचे में पूर्ण रूप से अपरिचित थे और वे कह सकते हैं कि नुबुव्वत की वास्तविकता से हम मात्र अनभिज्ञ थे और उसके समझने के लिए हमारी प्रकृति को कोई नमूना नहीं दिया गया था। अतः हम उस गुप्त वास्तविकता को क्योंकर समझ सकते। इसलिए खुदा का नियम अनादिकाल से और जब से संसार की नींव रखी गई है इस प्रकार से जारी है कि नमूने के तौर पर जन साधारण को इस से दृष्टि हटाते हुए कि वे नेक हों तथा धर्म में सच्चे हों तथा झूठा धर्म रखते हों कुछ सच्चे स्वप्न दिखाए जाते हैं या सच्चे इल्हाम भी दिए जाते हैं ताकि उनकी कल्पना और अनुमान जो मात्र पुस्तकों से और सुनने से प्राप्त है ज्ञान द्वारा विश्वास तक पहुंच जाए^① और ताकि अध्यात्मिक उन्नति के लिए उनके हाथ में कोई नमूना हो तथा खुदा ने इस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए मानव-मस्तिष्क की बनावट ही ऐसी

① ज्ञान के तीन प्रकार हैं —

- (1) 'इल्मुल यक्रीन' - (ज्ञान द्वारा विश्वास) - जैसा कि कोई दूर से धुंआ देखकर यह अनुमान करे कि उस स्थान पर अवश्य अग्नि होगी।
- (2) दूसरा 'ऐनुल यक्रीन' (देखकर विश्वास करना) जैसा कि कोई उस अग्नि को अपनी आंख से देख ले।
- (3) तीसरा 'हक्कुल यक्रीन' (वास्तविक विश्वास) जैसा कि कोई उस अग्नि में हाथ डालकर उसकी गर्मी महसूस करे। इसी से।

रखी है और उसे ऐसी आध्यात्मिक शक्तियां दी हैं कि वह कुछ सच्चे स्वप्न देख सकता है और कुछ सच्चे इल्हाम पा सकता है परन्तु वे सच्चे स्वप्न और सच्चे इल्हाम किसी प्रतिष्ठा और महानता को सिद्ध नहीं करते अपितु वह मात्र नमूने के तौर पर उन्नति के लिए कुछ मार्ग होते हैं। यदि ऐसे स्वप्नों और ऐसे इल्हामों को किसी बात पर कुछ आधार है तो केवल इस बात पर कि ऐसे मनुष्य का स्वभाव उचित है इस शर्त पर कि नफ़्स की भावनाओं के कारण परिणाम बुरा न हो और ऐसे स्वभाव से यह समझा जाता है कि यदि मध्य में बाधाएं और पर्दे न आ जाएं तो वह उन्नति कर सकता है। उदाहरणतया एक पृथ्वी है जिसके बारे में कुछ लक्षणों से हमें ज्ञात हो गया है कि उसके नीचे पानी है परन्तु वह पानी पृथ्वी की कई तहों के नीचे दबा हुआ है और कई प्रकार का कीचड़ उसके साथ मिला हुआ है तथा जब तक एक पूर्ण परिश्रम से काम न लिया जाए और पृथ्वी को बहुत दिनों तक खोदा न जाए तब तक वह पानी जो शुद्ध और मीठा तथा प्रयोग करने के योग्य है निकल नहीं सकता। अतः यह बड़ी मूर्खता, नादानी और दुर्भाग्य है कि यह समझ लिया जाए कि मानवीय कमाल केवल इसी पर समाप्त है कि किसी को कोई सच्चा स्वप्न आ जाए या सच्चा इल्हाम हो जाए अपितु मानवीय विशेषता के लिए अन्य बहुत से साधन और शर्तें हैं तथा जब तक सिद्ध न हों तब तक ये स्वप्न और इल्हाम भी अल्लाह तआला की युक्तियों में सम्मिलित हैं। खुदा उनके बुरे परिणामों से प्रत्येक साधक को सुरक्षित रखे।

यहां इल्हाम पर मुग्ध होने वाले को यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि वह्यी दो प्रकार की है —

(1) वह्यी-ए-इब्तिला

(2) वह्यी-ए-इस्तिफ़ा

वह्यी-ए-इब्तिला प्रायः विनाश का कारण हो जाती है। जैसा कि बलअम इसी कारण से तबाह हुआ परन्तु वह्यी-ए-इस्तिफ़ा वाला कभी तबाह नहीं होता। वह्यी-ए-इब्तिला भी प्रत्येक को प्राप्त नहीं होती अपितु कुछ मानव स्वभाव ऐसे भी हैं

कि जैसे शारीरिक तौर पर बहुत से लोग गूंगे, बहरे और अंधे पैदा होते हैं। इसी प्रकार कुछ लोगों की अध्यात्मिक शक्तियां बिल्कुल नहीं होतीं। जैसे अन्धे दूसरों के मार्ग-दर्शन से अपना गुजारा कर सकते हैं इसी प्रकार ये लोग भी करते हैं परन्तु सामान्य साक्ष्य के कारण जो नितान्त स्पष्ट होती है उनको इन सच्ची घटनाओं से इन्कार नहीं हो सकता और नहीं कह सकते कि अन्य समस्त लोग भी उनके समान अंधे ही हैं जैसा कि प्रतिदिन देखने में आता है कि कोई अन्धा इस बात पर झगड़ा नहीं कर सकता कि सुजाखे होने का दावा करने वाले झूठे हैं और न इस से इन्कार कर सकता है कि उसके अतिरिक्त हजारों लोगों की आंखें मौजूद हैं क्योंकि वह देखता है कि वे लोग अपनी आंखों से काम लेते हैं और वे काम कर सकते हैं जो अन्धा नहीं कर सकता। हां यदि कोई ऐसा युग आता जिसमें सब लोग अंधे ही अंधे होते और एक भी सुजाखा न होता तब इस बहस के पैदा होने के समय कि पिछले युगों में से कोई ऐसा युग भी था कि उसमें सुजाखे ही पैदा होते थे। अंधों का इन्कार, लड़ाई-झगड़े की बहुत गुंजायश थी अपितु मेरे विचार में है कि अन्ततः इस बहस में अंधों की ही विजय होती क्योंकि जो व्यक्ति केवल पिछले युग का ही उदाहरण देता है और जिन मानव शक्तियों और विशेषताओं का उसे दावा है वह किसी मनुष्य में दिखा नहीं सकता और कहता है कि वे शक्तियां और ताकतें आगे नहीं अपितु पीछे रह गई हैं। ऐसा व्यक्ति तो छान-बीन के अनुसार झूठा ही ठहरता है क्योंकि जिस स्थिति में स्वच्छन्द वदान्य ने जो कुछ मानवीय स्वभाव के शारीरिक भाग को शक्तियां प्रदान की थीं जैसे देखने की शक्ति, श्रवण शक्ति, घ्राण शक्ति, स्पर्श शक्ति, स्मरण शक्ति, विचार शक्ति इत्यादि वह अब तक मनुष्यों में पाई जाती हैं। तो फिर क्योंकर समझा जाए कि मनुष्यों में जो अध्यात्मिक शक्तियां पहले युगों में थीं, इस युग में वे समस्त शक्तियां उनके स्वभाव से लुप्त हो गई हैं हालांकि वे शक्तियां शारीरिक शक्तियों की अपेक्षा मानव मनोवृत्ति की पूर्णता के लिए अधिक आवश्यक हैं तथा क्योंकर इन्कार हो सकता है कि जिस स्थिति में कि अवलोकन सिद्ध कर रहा है कि वे लुप्त नहीं हुई। इस से स्पष्ट है कि वे धर्म

सच्चाई से कितने दूर हैं कि उन्हें यह तो इक्रार है कि मानव स्वभाव की शारीरिक और बौद्धिक शक्तियां अब भी ऐसी ही हैं जैसी कि पहले थीं। लेकिन इसके वे इन्कारी हैं कि मनुष्यों में आध्यात्मिक शक्तियाँ कि अब भी ऐसी ही पाई जाती हैं जैसा कि पहले थीं।

इस सम्पूर्ण भाषण से हमारा उद्देश्य यह है कि किसी व्यक्ति का मात्र सच्चे स्वप्नों का देखना या कुछ सच्चे इल्हामों का देखना यह बात उसकी किसी विशेषता पर प्रमाण नहीं है जब तक कि उसके साथ दूसरे लक्षण न हों जो हम खुदा ने चाहा तो तीसरे अध्याय में वर्णन करेंगे अपितु यह केवल मानसिक बनावट का एक परिणाम है। इसी कारण इसमें नेक या सत्यनिष्ठ होने की शर्त नहीं और न मोमिन तथा मुसलमान होना इसके लिए आवश्यक है और जिस प्रकार मात्र मस्तिष्क की बनावट के कारण कुछ को सच्चे स्वप्न आ जाते हैं या इल्हाम के रंग में कुछ ज्ञात हो जाता है। इसी प्रकार मस्तिष्क की रचना के कारण कुछ का स्वभाव अध्यात्म ज्ञानों तथा वास्तविकताओं से अनुकूलता रखता है और सूक्ष्म से सूक्ष्म बातें उन्हें सूझती हैं, परन्तु वास्तव में वे लोग इसी सही हदीस के चरितार्थ होते हैं कि **اَمِنْ شَعْرُهُ وَكَفَرَ قَلْبُهُ** अर्थात् उसका शेर ईमान लाया परन्तु उसका हृदय काफिर है। इसीलिए सच्चे को पहचानना प्रत्येक साधारण व्यक्ति का कार्य नहीं।

اے با ابلیس آدم روئے ہست

پس بہر دستے نباید دوست

(अनुवाद - बहुत से शैतानों की शक्ल इन्सानों जैसी होती है इसलिए हर किसी के हाथ में हाथ नहीं दे देना चाहिए। अनुवादक।)

और फिर इसके साथ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि इस स्तर के लोगों को जो स्वप्न या इल्हाम होते हैं वह बहुत से अंधकार के अन्दर होते हैं और उनमें बहुत कम ही सच्चाई की चमक होती है तथा खुदा के प्रेम एवं स्वीकारिता का कोई निशान उनके साथ नहीं होता और यदि परोक्ष की बात हो तो केवल ऐसी

होती है जिसमें करोड़ों लोग भागीदार होते हैं और प्रत्येक व्यक्ति यदि चाहे तो स्वयं छान-बीन कर सकता है कि ऐसे स्वप्नों और इल्हामों में प्रत्येक पापी, दुराचारी और नास्तिक यहां तक कि व्यभिचारिणी स्त्रियां भी भागीदार होती हैं। अतः वह व्यक्ति बुद्धिमान नहीं है जो इस प्रकार के स्वप्नों और इल्हामों पर प्रसन्न और मुग्ध हो जाए तथा बड़े धोखे में पड़ा हुआ वह व्यक्ति है जो केवल इस श्रेणी के स्वप्नों और इल्हामों का नमूना अपने अन्दर पाकर स्वयं को कुछ वस्तु समझ बैठे अपितु स्मरण रखना चाहिए कि इस श्रेणी का मनुष्य केवल उस मनुष्य के समान है जो एक अन्धकारमय रात्रि में दूर से एक अग्नि का धुंआ देखता है परन्तु उस अग्नि के प्रकाश को नहीं देख सकता और न उसकी गर्मी से अपनी सर्दी और उदासीनता दूर कर सकता है। यही कारण है कि ख़ुदा तआला की विशेष बरकतों और ने'मतों से ऐसे लोगों को कोई भाग नहीं मिलता और न उनमें कोई स्वीकारिता पैदा होती है और न ख़ुदा से लेशमात्र संबंध उत्पन्न होता है और न प्रचण्ड नूर (ज्योति) से मानव की अपवित्रताएं भस्म होती हैं। चूंकि ख़ुदा तआला को उन से सच्ची मित्रता पैदा नहीं होती इसलिए ख़ुदा से सानिध्य न होने के कारण उनके साथ शैतान रहता है और पैशाचिक विचार उन पर विजयी रहते हैं तथा जिस प्रकार बादलों के इकट्ठे होने की स्थिति में प्रायः सूर्य छुपा रहता है और कभी-कभी उसका कोई किनारा दिखाई दे जाता है। इसी प्रकार उनकी अवस्था अधिकतर अन्धकार में रहती है तथा उनके स्वप्नों एवं इल्हामों में शैतानी हस्तक्षेप बहुत होता है।

द्वितीय अध्याय

उन लोगों के वर्णन में जिन को प्रायः सच्चे स्वप्न आते हैं अथवा सच्चे इल्हाम होते हैं और उनका ख़ुदा तआला से कुछ संबंध भी है परन्तु कुछ विशेष संबंध नहीं तथा उनकी तामसिक इच्छाएँ प्रकाश की ज्वाला में जल कर मिटती नहीं यद्यपि एक सीमा तक उसके निकट आ जाता है।

संसार में कुछ ऐसे लोग भी पाए जाते हैं कि वे किसी सीमा तक संयम और पवित्रता धारण करते हैं तथा इस बात के अतिरिक्त कि उनमें स्वप्न और कश्फ़ की प्राप्ति के लिए एक स्वाभाविक योग्यता होती है और मस्तिष्क की बनावट इस प्रकार की होती है कि स्वप्न और कश्फ़ का कुछ नमूना उन पर प्रकट हो जाता है वे अपने आत्म सुधार के लिए भी किसी सीमा तक प्रयत्न करते हैं और उनमें एक सतही नेकी और ईमानदारी पैदा हो जाती है जिसके आने से एक सीमित दायरे तक सच्चे स्वप्न और सही कश्फ़ों के प्रकाश उनमें उत्पन्न हो जाते हैं परन्तु अन्धकार से रिक्त नहीं होते अपितु उनकी कुछ दुआएं भी स्वीकार हो जाती हैं परन्तु महान कार्यों में नहीं क्योंकि उनकी सच्चाई पूर्ण नहीं होती अपितु उस शुद्ध पानी की तरह होती है जो ऊपर से तो साफ़ दिखाई देता हो परन्तु उसके नीचे गोबर और गन्दगी हो और उनकी आत्म शुद्धि पूर्ण नहीं होती और उनकी श्रद्धा और निष्ठा में बहुत कुछ कमी होती है इसलिए वे किसी परीक्षा के समय ठोकर खा जाते हैं और यदि ख़ुदा तआला की दया उनके साथ हो जाए और उसकी सत्तारी उनका पर्दा सुरक्षित रखे तब तो बिना किसी ठोकर के संसार से गुज़र जाते हैं और यदि कोई आजमायश आ जाए तो भय होता है कि "बलअम बाऊर" की तरह उसका अंजाम बुरा न हो और मुल्हम बनने के बाद कुत्ते से उपमा न दिए

जाएं क्योंकि उनकी ज्ञान, कर्म और ईमान की अवस्था की कमी के कारण शैतान उनके द्वार पर खड़ा रहता है और किसी ठोकर खाने के समय तुरन्त उनके घर में प्रवेश कर जाता है। वे दूर से प्रकाश को देख लेते हैं परन्तु उस प्रकाश के अन्दर प्रवेश नहीं करते और न उसकी गर्मी से उन्हें पर्याप्त भाग मिलता है इसलिए उनकी दशा एक खतरे की दशा होती है। खुदा प्रकाश है जैसा कि उसने फ़रमाया- **اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ** (सूरत नूर आयत 36) अतः वह व्यक्ति जो केवल उस प्रकाश से संबंधित वस्तुओं को देखता है वह उस व्यक्ति के समान है जो दूर से एक धुआं देखता है परन्तु अग्नि का प्रकाश नहीं देखता। इसलिए वह प्रकाश के लाभों से वंचित है तथा उसकी गर्मी से भी जो मानवीय अपवित्राओं को जलाती है। अतः वे लोग जो केवल पुस्तकों आदि से लिए गए अथवा तर्कशास्त्र आदि से लिए गए तर्कों या काल्पनिक इल्हामों से खुदा तआला के अस्तित्व पर प्रमाण लेते हैं जिस प्रकार सांसारिक उलेमा या जैसे दार्शनिक लोग और अथवा ऐसे लोग जो केवल अपनी अध्यात्मिक शक्तियों से जो कश्फ और स्वप्नों की योग्यता है खुदा तआला के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं किन्तु खुदा के सानिध्य के प्रकाश से वंचित हैं वे उस मनुष्य के समान हैं जो दूर से अग्नि का धुआं देखता है परन्तु अग्नि के प्रकाश को नहीं देखता और केवल धुएं पर विचार करने से अग्नि के अस्तित्व पर विश्वास कर लेता है। ऐसा व्यक्ति उस विवेक से वंचित होता है जो प्रकाश के माध्यम से प्राप्त होता है, परन्तु वह व्यक्ति जो उस प्रकाश को दूर से तो देखता है किन्तु उस प्रकाश के अन्दर प्रवेश नहीं करता। उस व्यक्ति का उदाहरण यह है कि जैसे एक व्यक्ति अंधकारमय रात में अग्नि के प्रकाश को देखता है और उसके मार्ग दर्शन से सद्मार्ग भी पा लेता है परन्तु दूर होने के कारण अपनी सर्दी को उस अग्नि से दूर नहीं कर सकता और न अग्नि उसकी कामवासनाओं के ढांचे को जला सकती है। प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि एक अंधकारमय रात में और कड़ाके की सर्दी के समय दूर से अग्नि का प्रकाश दिखाई दे जाए तो केवल उस प्रकाश का देखना ही विनाश से नहीं बचा सकता अपितु विनाश से वह

बचेगा जो इतना अग्नि के निकट चला जाए कि जो पर्याप्त तौर पर उसकी सदी को दूर कर सके, परन्तु जो व्यक्ति केवल दूर से उस प्रकाश को देखता है उसकी यही निशानी है कि यद्यपि सद्मार्ग के कुछ लक्षण उसमें पाए जाते हैं परन्तु विशेष कृपा का कोई लक्षण उसमें नहीं पाया जाता और उसकी संकीर्णता जो भरोसे की कमी तथा कामवासना संबंधी इच्छाओं के कारण है दूर नहीं होती और उसकी नाफ़सानी तामसिक इच्छाएँ जल कर राख नहीं होता, क्योंकि प्रकाश की ज्वाला से बहुत दूर है और वह रसूलों और नबियों का पूर्ण तौर पर उत्तराधिकारी नहीं होता तथा उसकी कुछ आन्तरिक गन्दगियां उसके अन्दर छुपी होती हैं और उसका संबंध जो ख़ुदा तआला से है, मलिनता और दोष से खाली नहीं होता क्योंकि वह दूर से ख़ुदा तआला को अपनी धुंधली दृष्टि से देखता है किन्तु उसके आंचल में नहीं है। ऐसे लोग जो कामभावनाएं उनके अन्दर हैं प्रायः उनकी कामभावनाएं उनके स्वप्नों में अपना जोश और उत्तेजना दिखाती हैं और वे समझते हैं कि उनका यह जोश ख़ुदा तआला की ओर से है जबकि वह जोश मात्र तामसिक वृत्ति की ओर से होता है। उदाहरणतया एक व्यक्ति स्वप्न में कहता है कि मैं अमुक व्यक्ति का आज्ञापालन कदापि नहीं करूंगा, मैं उससे उत्तम हूँ। अतः इस से परिणाम निकालता है कि वास्तव में वह उत्तम है हालांकि वह कलाम मनोवृत्ति की आवेग से होता है। इसी प्रकार मनोवृत्ति के आवेग से स्वप्न अन्य कई प्रकार की बातें करता है और मूर्खता से समझता है कि जैसे वे बातें ख़ुदा की इच्छानुसार हैं और तबाह हो जाता है। चूंकि उसने ख़ुदा की ओर पूर्ण रूप से गति नहीं की और अपनी सम्पूर्ण शक्ति और समस्त श्रद्धा और समस्त निष्ठा के साथ उसे धारण नहीं किया। इसलिए ख़ुदा तआला की ओर से भी उस पर पूर्ण रूप से दया की झलक नहीं होती और वह उस बच्चे के समान होता है जिसमें प्राण तो पड़ गया है परन्तु अभी वह उस झिल्ली से बाहर नहीं आ सका जो जन्म के समय बच्चे से लिपटी होती है और अध्यात्मिक संसार के पूर्ण दृश्य से अभी उसकी आंख बन्द है तथा अभी उसने अपनी मां के चेहरे को भी नहीं देखा जिसके गर्भाशय में उसने पोषण पाया और प्रसिद्ध कहावत

कि नीम मुल्ला खतर-ए-ईमान। वह अपने अपूर्ण आत्मज्ञान के कारण खतरे की अवस्था में है। हां ऐसे लोगों को भी किसी सीमा तक कुछ अध्यात्म ज्ञान तथा कुछ वास्तविकताएं ज्ञात हो जाती हैं परन्तु उस दूध के समान जिस में कुछ मूत्र भी पड़ा हो और उस पानी के समान जिसमें कुछ गन्दगी भी हो। इस श्रेणी का मनुष्य यद्यपि अपनी प्रथम श्रेणी की तुलना में स्वप्नों और इल्हामों की अपेक्षा शैतानी हस्तक्षेप और पैशाचिक विचारों से किसी सीमा तक सुरक्षित होता है परन्तु चूंकि उसकी प्रकृति में अभी शैतान का कुछ हिस्सा शेष है इसलिए शैतानी इल्का (शैतान द्वारा अनायास मन में डाले गए विचार) से सुरक्षित नहीं रह सकता और चूंकि मन की भावनाएं भी साथ लगी हैं इसलिए "हदीसुन्नप्स" (मानसिक विचारों) से भी सुरक्षित नहीं रह सकता। मूल बात यह है कि वह्यी और इल्हाम की पूर्ण शुद्धता मनोवृत्ति की शुद्धि पर निर्भर है जिन के अंतर्मन में अभी कुछ गन्दगी शेष है उनकी वह्यी और इल्हाम में भी गन्दगी शेष है।

तीसरा अध्याय

उन लोगों के वर्णन में जो ख़ुदा तआला से पूर्णतः शुद्ध और स्पष्ट तौर पर वही पाते हैं और पूर्ण तौर पर ख़ुदा से वार्तालाप और सम्बोधन का सम्मान प्राप्त है और उन्हें स्वप्न भी प्रातः उदय होने के समान सच्चे आते हैं और ख़ुदा तआला से सर्वांगपूर्ण प्रेम का संबंध रखते हैं तथा ख़ुदा की प्रेमाग्नि में प्रवेश करते हैं तथा उनके नज़्मानी विचारों का ढांचा प्रकाश की ज्वाला से जलकर बिल्कुल राख हो जाता है।

ज्ञात होना चाहिए कि ख़ुदा तआला नितान्त कृपालु और दयालु है। जो व्यक्ति उसकी ओर श्रद्धा और निष्ठा से उसकी ओर जाता है वह उस पर उससे बढ़ कर अपनी श्रद्धा और वफ़ा उससे प्रकट करता है। उसकी ओर सच्चे हृदय से क्रदम उठाने वाला कदापि नष्ट नहीं होता। ख़ुदा तआला में बड़े-बड़े प्रेम और वफ़ादारी तथा वरदान और उपकार तथा ख़ुदाई चमत्कार दिखाने के सदाचार हैं किन्तु उन का पूर्ण रूप से वही अवलोकन करता है जो पूर्ण रूप से उसके प्रेम में लीन हो जाता है। यद्यपि वह बड़ा कृपालु एवं दयालु है परन्तु समृद्ध और निस्पृह है। इसलिए जो व्यक्ति उसके मार्ग में जान देता है वही उस से जीवन पाता है और जो उसके लिए सब कुछ खोता है उसी को आकाशीय इनाम मिलता है।

ख़ुदा तआला से पूर्ण संबंध पैदा करने वाले उस व्यक्ति से समानता रखते हैं जो पहले दूर से अग्नि का प्रकाश देखे, फिर उसके समीप हो जाए यहां तक कि उस अग्नि में स्वयं को प्रविष्ट कर दे और सम्पूर्ण शरीर जल जाए और केवल अग्नि ही शेष रह जाए। इसी प्रकार पूर्ण संबंध वाला दिन-प्रतिदिन ख़ुदा तआला के निकट होता जाता है यहां तक ख़ुदा की प्रेमाग्नि में उसका सम्पूर्ण अस्तित्व पड़ जाता है और तामसिक इच्छाओं का ढांचा प्रकाश की ज्वाला से जलकर राख हो जाता है और

उस का स्थान अग्नि ले लेती है। यह चरम सीमा उस मुबारक प्रेम की है जो खुदा से होता है। यह बात कि खुदा तआला से किसी का पूर्ण संबंध, उसका बड़ा लक्षण यह है कि उसमें खुदा की विशेषताएं पैदा हो जाती हैं और मानव के दुर्गुण प्रकाश की ज्वाला से जल कर एक नवीन अस्तित्व जन्म लेता है और एक नवीन जीवन उदय होता है जो पहले जीवन से बिल्कुल भिन्न होता है। जिस प्रकार कि लोहा जब अग्नि में डाला जाए और अग्नि उसके समस्त शरीर पर पूर्ण प्रभुत्व कर ले तो वह लोहा बिल्कुल अग्नि का रूप ले लेता है परन्तु नहीं कह सकते कि अग्नि है यद्यपि अग्नि की विशेषताएं प्रकट करता है। इसी प्रकार जिसको खुदा के प्रेम की ज्वाला सर से पैर पर अपने अन्दर लेती है, वह खुदा के नूर को प्रकट करने वाला हो जाता है प्रकट हो जाती है परन्तु नहीं कह सकते कि वह खुदा है अपितु एक बन्दा है जिसे उस अग्नि ने अपने अन्दर ले लिया है और उस अग्नि के प्रभुत्व के पश्चात् पूर्ण प्रेम के हजारों लक्षण पैदा हो जाते हैं। कोई एक लक्षण नहीं होता ताकि वह एक दक्ष और सत्याभिलाषी पर संदिग्ध हो सके अपितु वह संबंध सैकड़ों लक्षणों सहित पहचाना जाता है।^① उन लक्षणों में से एक यह भी है कि कृपालु खुदा अपनी सरस और मधुर वाणी कभी-कभी उसके मुंह पर जारी करता रहता है जो खुदाई प्रताप, उपकार और भविष्य बताने की पूर्ण शक्ति अपने अन्दर रखता है तथा उसके साथ एक प्रकाश होता है जो बताता है कि यह वास्तविक बात है काल्पनिक नहीं है तथा उसके अन्दर एक ईश्वरीय चमक होती है और मलिनताओं से पवित्र होता है और प्रायः तथा अधिकतर वह वाणी किसी शक्तिशाली भविष्यवाणी पर आधारित होती है और उसकी भविष्यवाणियों का क्षेत्र नितान्त विशाल और विश्वव्यापी होता है और वे भविष्यवाणियां क्या संख्या की दृष्टि से और क्या गुणवत्ता की दृष्टि से अद्वितीय होती हैं। कोई उनका उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकता तथा उनमें खुदा का भय भरा

① पूर्ण सम्बन्ध का एक बड़ा लक्षण यह होता है कि जिस प्रकार खुदा प्रत्येक वस्तु पर विजयी है उसी प्रकार वह प्रत्येक शत्रु और मुकाबला करने वाले पर विजयी रहता है। इसी से। **كَتَبَ اللَّهُ لَا غَلِبَ لَنَا وَرُسُلُنَا**

होता है और पूर्ण कुदरत के कारण उनमें खुदा का चेहरा दिखाई देता है और उसकी भविष्यवाणियां ज्योतिषियों की तरह नहीं होतीं अपितु उनमें प्रेम और स्वीकारिता के निशान होते हैं और खुदाई समर्थन और सहायता भरी होती हैं और कुछ भविष्यवाणियां स्वयं उसके अपने बारे में होती हैं और कुछ अपनी सन्तान के बारे में और कुछ उसके मित्रों के संबंध में और कुछ उसके शत्रुओं के संबंध में और कुछ सामान्तया समस्त संसार के लिए और कुछ उसकी पत्नियों और स्वजनों के लिए होती हैं और उस पर वे बातें प्रकट होती हैं जो दूसरों पर प्रकट नहीं होतीं और वे परोक्ष के द्वार उसकी भविष्यवाणियों पर खोले जाते हैं जो दूसरों पर नहीं खोले जाते। खुदा का कलाम उस पर उसी प्रकार उतरता है जैसा कि खुदा के पवित्र नबियों और रसूलों पर उतरता है और वह कल्पना से पवित्र और निश्चित होता है। यह सम्मान तो उसकी जीभ को दिया जाता है कि क्या संख्या की दृष्टि से और क्या गुणवत्ता की दृष्टि से ऐसा अद्वितीय कलाम उसकी जीभ पर जारी किया जाता है कि संसार उसका मुकाबला नहीं कर सकता और उसकी आंख को कश्फ़ी शक्ति दी जाती है जिस से वह गुप्त से गुप्त सूचनाओं को देख लेता है और प्रायः लिखित लेख उसकी दृष्टि के समक्ष प्रस्तुत किए जाते हैं और मुर्दों से जीवित लोगों के समान भेंट कर लेता है और कभी-कभी हजारों कोस की वस्तुएं उसकी दृष्टि के सामने ऐसी आ जाती हैं जैसे कि वे पैरों के नीचे पड़ी हैं।

इसी प्रकार उसके कान को भी ग़ैब की बातों के सुनने की शक्ति दी जाती है और प्रायः वह फ़रिश्तों की आवाज़ को सुन लेता है और व्याकुलताओं के समय उनकी आवाज़ से धैर्य पाता है और विचित्र यह कि कभी-कभी स्थूल पदार्थों, वनस्पतियों और जानवरों की आवाज़ भी उसको पहुंच जाती है -

फलसफ़ी को मुन्किरे हन्ना नः अस्त

अज़ हवासे अंबिया बेगानः अस्त

अनुवादः वह दार्शनिक जो रोने वाले खंबे (सतून) का इन्कारी है वह नबियों की भीतरी इंद्रियों से अपरिचित है। अनुवादक।

इसी प्रकार उसकी नाक को भी परोक्ष की सुगंध सूंघने की एक शक्ति दी जाती है और प्रायः वह बशारत (शुभ सन्देशों) की बातों को सूंघ लेता है और अप्रिय बातों की दुर्गन्ध उसे आ जाती है। इसी प्रकार उस के हृदय को विवेक शक्ति दी जाती है और बहुत सी बातें उसके हृदय में पड़ जाती हैं और वह सच होती हैं। इसी प्रकार शैतान उस पर अधिकार जमाने से वंचित हो जाता है क्योंकि उसमें शैतान का कोई भाग नहीं रहता और खुदा में अत्यन्त श्रेणी का लीन होने के कारण उसकी ज़बान हर समय खुदा की ज़बान होती है और उसका हाथ खुदा का हाथ होता है। यद्यपि उसको विशेष तौर पर इल्हाम भी न हो तब भी जो कुछ उसकी ज़बान पर जारी होता है वह उसकी ओर से नहीं अपितु खुदा की ओर से होता है क्योंकि उसका नफ़्सानी अस्तित्व पूर्णतया जल जाता है और नीच हस्ती पर एक मृत्यु व्याप्त होकर उसे एक नवीन और पवित्र जीवन मिलता है जिस पर हर समय खुदा के प्रकाश प्रतिबिम्बित होते रहते हैं। इसी प्रकार उसकी ललाट को एक प्रकाश प्रदान किया जाता है जो खुदा के प्रेमियों के अतिरिक्त अन्य किसी को नहीं दिया जाता और कुछ विशेष समयों में वह प्रकाश ऐसा चमकता है कि एक काफ़िर भी उसे महसूस कर सकता है, विशेषकर ऐसी अवस्था में जबकि वे लोग सताए जाते तथा खुदा की सहायता प्राप्त करने के लिए खुदा तआला की ओर ध्यान करते हैं। अतः वह खुदा के तेज के प्रकटन का समय उनके लिए एक विशेष समय होता है और खुदा का प्रकाश उनके ललाट में अपनी झलक प्रकट करता है।

इसी प्रकार उनके हाथों और पैरों में और समस्त शरीर में एक बरकत दी जाती है जिसके कारण उनका पहना हुआ कपड़ा भी शुभ (बरकत वाला) हो जाता है और प्रायः किसी व्यक्ति का स्पर्श करना या उसे हाथ लगाना उसके अध्यात्मिक या शारीरिक रोगों के निवारण का कारण ठहरता है। इसी तरह उनके रहने के मकानों में भी खुदा तआला एक बरकत रख देता है। वह मकान आपदाओं से बचा रहता है, खुदा के फ़रिश्ते उसकी रक्षा करते हैं इसी तरह उनके शहर या गाँव में भी एक विशेषता और बरकत दी जाती है। इसी तरह उस मिट्टी को भी बरकत

दी जाती है जिस पर उका कदम पड़ता है।

इसी प्रकार इस श्रेणी के लोगों की सम्पूर्ण इच्छाएं भी प्रायः भविष्यवाणी का रंग पैदा कर लेती हैं अर्थात् जब किसी वस्तु के खाने या पीने या पहनने या देखने की उनके अन्दर अत्यन्त इच्छा पैदा होती है तो वे इच्छा ही भविष्यवाणी का रूप धारण कर लेती हैं और जब समय से पूर्व व्याकुलता के साथ उनके हृदय में एक इच्छा पैदा होती है तो वह वस्तु उपलब्ध हो जाती है।

इसी प्रकार उनकी प्रसन्नता और अप्रसन्नता भी भविष्यवाणी का रंग अपने अन्दर रखती है। अतः जिस व्यक्ति पर वह अत्यधिक प्रसन्न होते हैं उसके भावी सौभाग्य के लिए यह शुभ सन्देश होता है और जिस पर वे अत्यधिक अप्रसन्न होते हैं उसके भावी पतन और विनाश पर प्रमाण होता है क्योंकि ख़ुदा में आसक्त होने के कारण वे ख़ुदा की गोद में होते हैं तथा उनकी प्रसन्नता और आक्रोश ख़ुदा की प्रसन्नता और आक्रोश होता है और मनोवृत्ति की प्रेरणा से नहीं अपितु ख़ुदा की ओर से उनमें ये अवस्थाएं पैदा होती हैं।

इसी प्रकार उनकी दुआ और उनका ध्यान भी साधारण दुआओं और ध्यानों की तरह नहीं होता अपितु अपने अन्दर एक प्रबल प्रभाव रखता है और इसमें सन्देह नहीं है कि यदि प्रारब्ध अटल न हो और उनका ध्यान अपनी समस्त शर्तों के साथ उस विपत्ति को दूर करने के लिए व्यस्त हो जाए तो ख़ुदा तआला उस विपत्ति को दूर कर देता है, यद्यपि एक अकेला व्यक्ति या कुछ अधिक सदस्यों पर वह विपत्ति आए या एक देश पर वह विपत्ति उतरे अथवा समसामयिक बादशाह पर वह विपत्ति आ जाए। इसमें मूल बात यह है कि वे अपना अस्तित्व खोकर ख़ुदा में डूब जाते हैं इसलिए प्रायः उनके इरादे का ख़ुदा तआला के इरादे से भावसाम्य हो जाता है। अतः जब बड़ी तीव्रता से उनका ध्यान किसी विपत्ति के निवारण की ओर आकृष्ट हो जाता है तथा जैसा कि तड़पते दिल के साथ ख़ुदा की ओर ध्यान की एकाग्रता चाहिए प्राप्त हो जाती है। अतः ख़ुदा का नियम इसी प्रकार से जारी है कि ख़ुदा उनकी सुनता है तथा ऐसा ही होता है कि ख़ुदा उनकी दुआ को अस्वीकार नहीं करता तथा कभी

उनका मनुष्य होना सिद्ध करने के लिए दुआ स्वीकार नहीं की जाती ताकि मूर्खों की दृष्टि में खुदा के भागीदार न ठहर जाएं। यदि ऐसा संयोग हो कि विपत्ति आ जाए जिस से मृत्यु के लक्षण प्रकट हो जाएं तो प्रायः खुदा का नियम यही है कि उस विपत्ति में विलम्ब नहीं होता तथा ऐसे समय में खुदा तआला के मान्य लोगों की शिष्टता यही है कि दुआ को छोड़ दें और धैर्य से काम लें। दुआ का उचित समय यही है कि ऐसे समय में दुआ हो जब निराशा एवं हताशा के माध्यम पूर्ण रूप से प्रकट न हों तथा ऐसे लक्षण प्रकट न हों, जिन से स्पष्ट तौर पर दिखाई देता हो कि अब विपत्ति द्वार पर है तथा एक प्रकार से विपत्ति आ चुकी है, क्योंकि प्रायः खुदा का नियम यही है कि जब खुदा तआला ने एक अज्ञात उतारने का अपना इरादा प्रकट कर दिया तो वह अपने इरादे को वापस नहीं लेता।

यह बिल्कुल सत्य है कि खुदा के मान्य लोगों की अधिकतर दुआएं स्वीकार होती हैं अपितु उनका सबसे बड़ा चमत्कार दुआ की स्वीकारिता ही है, जब उनके हृदयों में किसी विपत्ति के समय अत्यधिक व्याकुलता होती है तथा उस अत्यधिक व्याकुलता की अवस्था में वे अपने खुदा की ओर झुकते हैं तो खुदा उनकी सुनता है तथा उस समय उनका हाथ जैसे खुदा का हाथ होता है। खुदा एक गुप्त खजाने के समान है। पूर्ण मान्य लोगों के द्वारा वह अपना चेहरा दिखाता है। खुदा के निशान तभी प्रकट होते हैं जब उसके मान्य लोगों को यातना दी जाती है और उन्हें असहनीय कष्ट दिया जाता है तो समझो कि खुदा का निशान निकट है अपितु द्वार पर। क्योंकि यह वह क्रौम है कि कोई अपने प्रिय पुत्र से ऐसा प्रेम नहीं करेगा जैसा कि खुदा उन लोगों से करता है जो तन-मन से उसके हो जाते हैं। वह उनके लिए बड़े अद्भुत कार्य दिखाता है तथा अपनी ऐसी शक्ति दिखाता है कि जैसे एक सोया हुआ शेर जाग पड़ता है। खुदा गुप्त है तथा उसे प्रकट करने वाले यही लोग हैं। वह हजारों पर्दों के अन्दर है और उसका चेहरा दिखाने वाली यही क्रौम है।

यह भी स्मरण रखना चाहिए कि यह विचार कि खुदा के मान्य लोगों की प्रत्येक दुआ स्वीकार हो जाती है यह सरासर गलत है अपितु सच बात यह है कि मान्य

लोगों के साथ खुदा तआला का मित्रता का मामला है। कभी वह उनकी दुआएं स्वीकार कर लेता है और कभी वह उनसे अपनी इच्छा स्वीकार कराना चाहता है। जैसा कि तुम देखते हो कि मित्रता में ऐसा ही होता है। कभी एक मित्र अपने मित्र की बात को स्वीकार करता है और उसकी इच्छानुसार कार्य करता है और फिर दूसरा समय ऐसा भी आता है कि उस से अपनी बात स्वीकार कराना चाहता है। इसी की ओर अल्लाह तआला कुर्आन करीम में संकेत करता है जैसा कि एक स्थान पर मोमिनों की दुआ को स्वीकार करने का वादा करता है फ़रमाता है ① ^① اذْغُوْنِيْ اَسْتَجِبْ لَكُمْ अर्थात् तुम मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ स्वीकार करूंगा। और दूसरे स्थान पर अपने प्रारब्ध एवं दण्ड-विधान पर प्रसन्न और सहमत रहने की शिक्षा देता है। जैसा कि उसका कथन है :-

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ۖ
وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ۝ ②

अतः इन दोनों आयतों को मिलाकर पढ़ने से स्पष्ट तौर पर ज्ञात हो जाएगा कि दुआओं के बारे में खुदा का नियम क्या है तथा रब्ब और बन्दे का परस्पर क्या संबंध है। मैं पुनः लिखना उचित समझता हूँ कि कोई मूर्ख यह न विचार करे कि जो कुछ तृतीय श्रेणी के पूर्ण ईमान एवं पूर्ण प्रेम रखने वाले लोगों के संबंध में इस पुस्तक में उल्लेख किया गया है। इनमें से अधिकतर बातों में दूसरे लोग भी सम्मिलित हो जाते हैं, जिस प्रकार कि दूसरों को भी स्वप्न आते हैं, कशफ़ भी होते हैं, इल्हाम भी पाते हैं तो फिर इसमें अन्तर क्या हुआ।

इन भ्रमों का उत्तर यद्यपि हम अनेक बार दे चुके हैं परन्तु हम पुनः कहते हैं कि मान्य तथा अमान्य लोगों में अन्तर तो बहुत है जो एक सीमा तक इस पुस्तक में भी लिखा जा चुका है परन्तु आकाशीय निशानों की दृष्टि से एक महान अन्तर यह है कि खुदा के मान्य लोग जो खुदा के प्रकाशों में लीन किए जाते हैं तथा

① अलमोमिन - 61

② अलबक्ररह - 156,157

प्रेमाग्नि से उनकी समस्त स्वार्थपरायणता जलाई जाती है वे अपनी प्रत्येक शान में क्या अपनी मात्रा की दृष्टि से और क्या अपनी गुणवत्ता की दृष्टि से दूसरों पर विजयी होते हैं तथा असाधारण तौर पर ख़ुदा के समर्थन एवं सहयोग के निशान उनके लिए इतनी अधिकता से प्रकट होते हैं कि संसार में किसी में शक्ति नहीं होती कि उनका उदाहरण प्रस्तुत कर सके, क्योंकि जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं कि ख़ुदा जो गुप्त है उसके चेहरे का दर्शन कराने के लिए वे पूर्ण द्योतक होते हैं। वे संसार के सामने गुप्त ख़ुदा को दिखाते हैं तथा ख़ुदा उन्हें दिखलाता है।

हम यह भी वर्णन कर चुके हैं कि आकाशीय निशानों से भाग लेने वाले तीन प्रकार के लोग होते हैं -

प्रथम - वह जो कोई हुनर अपने अन्दर नहीं रखते तथा ख़ुदा तआला से उनका कोई संबंध नहीं होता, केवल मानसिक अनुकूलता के कारण उनको कुछ सच्चे स्वप्न आ जाते हैं तथा सच्चे कशफ़ प्रकट हो जाते हैं, जिनमें कोई मान्यता एवं प्रेम के लक्षण प्रकट नहीं होते तथा उनसे उनके स्वयं को कोई लाभ नहीं होता तथा हजारों दुष्ट, दुराचारी, पापी, दुश्चरित्र तथा दुर्गन्धयुक्त स्वप्नों और इल्हामों में उनके भागीदार होते हैं तथा अधिकतर देखा जाता है कि इन स्वप्नों और कशफ़ों के बावजूद उनका चरित्र प्रशंसनीय नहीं होता। कम से कम यह कि उनकी ईमानी अवस्था नितान्त कमजोर होती है, इतनी कि एक सच्ची गवाही भी नहीं दे सकते तथा संसार से जितने डरते हैं ख़ुदा से नहीं डरते, दुष्ट लोगों से सम्बन्ध-विच्छेद नहीं कर सकते तथा कोई ऐसी सच्ची गवाही नहीं दे सकते जिस से बड़े आदमी के क्रोधित हो जाने का भय हो तथा धार्मिक मामलों में उनमें नितान्त आलस्य और सुस्ती पाई जाती है तथा सांसारिक शोक एवं चिन्ताओं में डूबे रहते हैं और जानते हुए असत्य का समर्थन करते तथा सत्य को छोड़ते हैं, उनके प्रत्येक क्रदम में बेईमानी पाई जाती है और कुछ में इस से बढ़कर यह आदत भी पाई गई है कि वे पाप एवं दुराचार से भी नहीं रुकते तथा संसार-प्राप्ति के लिए प्रत्येक अवैध कार्य कर लेते हैं और कुछ की नैतिक अवस्था भी बहुत ख़राब होती है तथा ईर्ष्या,

कृपणता, अहंकार, अभिमान तथा घमंडरूपी मूर्तियां होते हैं तथा उन से प्रत्येक अधमता के कार्य जारी होते हैं तथा उनमें नाना प्रकार की लज्जनीय बुराईयाँ पाई जाती हैं और अद्भुत बात यह है कि उनमें से कुछ ऐसे हैं कि उन्हें सदैव बुरे स्वप्न ही आते हैं और वे सच्चे भी हो जाते हैं, जैसे उनके मस्तिष्क की बनावट केवल बुरे एवं अशुभ स्वप्नों के लिए सृष्टि की गई है। न अपने लिए कोई अच्छाई के स्वप्न देख सकते हैं जिस से उनका संसार ठीक हो और उन्हें अपनी मनोकामनाएं प्राप्त हों तथा न अन्य लोगों के लिए कोई शुभ सन्देश वाला स्वप्न देखते हैं। इन लोगों के स्वप्नों की दशा तीन प्रकाशों में से उस शारीरिक दृश्य के समान है जबकि एक व्यक्ति दूर से केवल एक अग्नि का धुंआ देखता है परन्तु अग्नि का प्रकाश नहीं देखता और न अग्नि का ताप महसूस करता है क्योंकि ये लोग खुदा से असंबंधित तथा अध्यात्मिक बातों से उनके भाग्य में केवल एक धुंआ है। जिससे कोई प्रकाश प्राप्त नहीं होता।

फिर दूसरी प्रकार के स्वप्न दृष्टा अथवा मुल्हम वे लोग हैं जिनका खुदा से एक सीमा तक संबंध है परन्तु पूर्ण संबंध नहीं। इन लोगों के स्वप्नों या इल्हामों की अवस्था उस भौतिक दृश्य के समान है जबकि एक व्यक्ति अंधेरी तथा नितान्त ठण्डी रात्रि में दूर से एक अग्नि के प्रकाश को देखता है। उसे देखने से उसे इतना लाभ तो प्राप्त हो जाता है कि वह ऐसे मार्ग पर चलने से बचता है जिसमें बहुत से गड़ढ़े, कांटे, पत्थर, सांप और दरिन्दे हैं किन्तु इतना सा प्रकाश उसे सर्दी एवं तबाही से बचा नहीं सकता। अतः यदि वह अग्नि के गर्म घेरे तक न पहुंच सके तो वह भी उसी प्रकार तबाह हो जाता है जिस प्रकार कि अंधकार में चलने वाला तबाह हो जाता है।

फिर तीसरी प्रकार के मुल्हम तथा स्वप्न दृष्टा वे लोग हैं जिनके स्वप्नों और इल्हामों की अवस्था उस भौतिक दृश्य के समान है जबकि एक व्यक्ति अंधकारमय एवं अत्यन्त ठण्डी-रात्रि में न केवल अग्नि का पूर्ण प्रकाश ही प्राप्त करता है तथा उसमें चलता है अपितु उसके गर्म घेरे में प्रवेश करके सर्दी की हानि से पूर्णतया

सुरक्षित हो जाता है। इस श्रेणी तक वे लोग पहुंचते हैं जो कामवासनाओं का चोला खुदा की प्रेमाग्नि में जला देते हैं और खुदा के लिए कष्टदायक जीवन धारण कर लेते हैं, वे देखते हैं कि आगे मृत्यु है तथा दौड़कर उस मृत्यु को अपने लिए पसन्द कर लेते हैं तथा प्रत्येक पीड़ा को खुदा के मार्ग में स्वीकार करते हैं और खुदा के लिए अपने नफ़्स (स्वयं को) के शत्रु होकर तथा उसके विरुद्ध कदम उठा कर ऐसी ईमानी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं कि फ़रिश्ते भी उनके इस ईमान से आश्चर्य चकित हो जाते हैं, वे अध्यात्मिक योद्धा होते हैं तथा शैतान के सम्पूर्ण आक्रमण उनकी अध्यात्मिक शक्ति के समक्ष तुच्छ ठहरते हैं, वे सच्चे वफ़ादार एवं सच्चे मर्द होते हैं न कि संसार के आनन्दों के दृश्य उन्हें गुमराह कर सकते हैं और न सन्तान का प्रेम तथा न पत्नी का संबंध उन्हें अपने सच्चे प्रियतम से दूर कर सकता है। इसलिए कोई कष्ट उन्हें भयभीत नहीं कर सकती और कोई नफ़्सानी आनंद उन्हें खुदा से रोक नहीं सकता तथा कोई संबंध खुदा के संबंध में बाधक नहीं हो सकता।

ये तीन आध्यात्मिक श्रेणियों की अवस्थाएं हैं जिनमें से प्रथम अवस्था का नाम (ज्ञान रूपी विश्वास) इल्मुलयक्रीन है तथा द्वितीय अवस्था का नाम ऐनुलयक्रीन (आंखों देखा विश्वास) है। तृतीय शुभ एवं पूर्ण अवस्था को हक़कुलयक्रीन (अटल विश्वास) की संज्ञा दी जाती है। मानवीय अध्यात्म ज्ञान पूर्ण नहीं हो सकता और न मलिनताओं से पवित्र हो सकता है जब तक “अटल विश्वास” तक नहीं पहुंचता। क्योंकि अटल विश्वास की अवस्था केवल अवलोकनों पर निर्भर नहीं अपितु यह बतौर वर्तमान परिस्थिति के मनुष्य के हृदय पर आ जाती है तथा मनुष्य खुदा के प्रेम की भड़कती हुई अग्नि में पड़कर अपने अहंकारमय अस्तित्व से बिल्कुल मिट जाता है तथा मानवीय करनी अध्यात्म ज्ञान इस श्रेणी पर पहुंच कर कथन से वर्तमान की ओर स्थानांतरण करता है और अधम जीवन भस्म होकर राख हो जाता है तथा ऐसा मनुष्य खुदा तआला के आंचल में बैठ जाता है जैसे कि एक लोहा अग्नि में पड़कर बिल्कुल अग्नि का रूप धारण कर लेता है तथा

उससे अग्नि की विशेषताएं प्रकट होना आरंभ हो जाती हैं। इसी प्रकार इस श्रेणी का व्यक्ति खुदाई विशेषताओं द्वारा प्रतिबिम्ब-स्वरूप विभूषित हो जाता है तथा स्वाभाविक तौर पर खुदाई इच्छाओं में इतना लीन हो जाता है कि खुदा में होकर बोलता है तथा खुदा में होकर देखता है तथा खुदा में होकर सुनता है और खुदा में होकर चलता है जैसे उसके रूप में खुदा ही होता है तथा उसकी मानवता खुदाई चमत्कारों के नीचे आ जाती है। अतः यह विषय संवेदनशील है तथा आसान नहीं। इसलिए हम इसे इसी जगह छोड़ते हैं।

एक अन्य शैली में हम इस तृतीय श्रेणी को जो सर्वोच्च एवं व्यापक श्रेणी है का इस प्रकार चित्रण करते हैं कि वह पूर्णतम वह्यी जो तीनों प्रकारों में से तृतीय प्रकार की वह्यी है जो सर्वगुणसम्पन्न व्यक्ति पर उतरती है उसका यह उदाहरण है कि जिस प्रकार सूर्य की धूप और किरण एक स्वच्छ दर्पण पर पड़ती है जो बिल्कुल उसके सामने पड़ा है यह तो स्पष्ट है कि यद्यपि सूर्य की धूप एक ही चीज़ है किन्तु उसके भिन्न-भिन्न प्रकटनों में अन्तर के कारण उसके प्रकटन की अवस्था में अन्तर उत्पन्न हो जाता है। अतः जब सूर्य की किरण पृथ्वी के किसी ऐसे कीचड़ के भाग पर पड़ती है जिसकी सतह पर एक स्वच्छ जल मौजूद नहीं अपितु अत्यन्त काला कीचड़ है, धूल है तथा धरातल में भी समतलता नहीं तब किरण नितान्त कमजोर होती है, विशेष तौर पर उस अवस्था में जबकि सूर्य और पृथ्वी में कोई बादल भी मध्य में आ गया हो, किन्तु जब वही किरण जिसके आगे कोई बादल न आया हो एक निर्मल जल पर पड़ती है तो एक स्वच्छ दर्पण के समान चमकता है तब वही किरण एक से दस गुना होकर प्रकट होती है जिसे आंख भी सहन नहीं कर सकती।

अतः इसी प्रकार जब साफ़ दिल पर जो सम्पूर्ण मलिनताओं से पवित्र हो जाता है वह्यी उतरती है तो उसका प्रकाश एक चमत्कार के तौर पर प्रकट होता है तथा उस दिल पर खुदाई विशेषताएं पूर्ण रूप से प्रतिबिम्बित हो जाती हैं तथा खुदा का चेहरा पूर्णतया प्रकट हो जाता है। इस बात से स्पष्ट है कि जिस प्रकार सूर्य जब

उदय होता है तो प्रत्येक पवित्र एवं अपवित्र स्थान पर उसका प्रकाश पड़ता है यहां तक कि एक मल की जगह भी जो गन्दगी से भरी है उस से भाग लेती है तथापि उस प्रकाश का पूर्ण लाभ उस उज्ज्वल दर्पण तथा स्वच्छ जल को प्राप्त होता है, जो अपनी पूर्ण शुद्धता से स्वयं सूर्य के प्रतिबिम्ब को अपने अन्दर दिखा सकता है। इसी प्रकार ख़ुदा तआला के कृपण न होने के कारण उसके प्रकाश से प्रत्येक लाभान्वित है किन्तु फिर भी वे लोग जो अपनी सांसारिक मोह माया को त्याग कर ख़ुदा के अस्तित्व का पूर्ण द्योतक हो जाते हैं तथा प्रतिबिम्ब स्वरूप ख़ुदा तआला उनके अन्दर प्रवेश कर जाता है उनकी अवस्था सब से अलग है, जैसा कि तुम देखते हो कि यद्यपि सूर्य आकाश पर है परन्तु जब वह एक अत्यन्त निर्मल जल अथवा उज्ज्वल दर्पण के सामने पड़ता है तो यों दिखाई देता है कि वह उस जल या उस दर्पण के अन्दर है, परन्तु वास्तव में वह उस जल अथवा दर्पण के अन्दर नहीं है अपितु जल या दर्पण ने अपनी नितान्त शुद्धता तथा चमक के कारण लोगों को यह दिखा दिया है कि मानो वह जल अथवा दर्पण के अन्दर है।

अतः ख़ुदा की वह्यी के प्रकाश पूर्ण रूप से वही दिल स्वीकार करता है जो सम्पूर्ण रूप से शुद्ध हो जाता है और केवल इल्हाम तथा स्वप्न की प्राप्ति किसी ख़ूबी या विशेषता को सिद्ध नहीं करती जब तक किसी आत्मा को पूर्ण शुद्धि के कारण यह प्रतिबिम्बित अवस्था प्राप्त न हो तथा वास्तविक प्रियतम का चेहरा उसकी आत्मा में प्रकट न हो जाए, क्योंकि जिस प्रकार ख़ुदा के सार्वजनिक दानशीलता ने प्रत्येक को बहुत थोड़े लोगों के अतिरिक्त भौतिक रूप में आंख, नाक, कान तथा घ्राण-शक्ति तथा अन्य समस्त शक्तियां प्रदान की हैं तथा किसी जाति से कृपणता नहीं की, इसी प्रकार आध्यात्मिक तौर पर भी उसने किसी युग तथा किसी क्रौम के लोगों को आध्यात्मिक शक्तियों के बीजारोपण से वंचित नहीं रखा। तथा जिस प्रकार तुम देखते हो कि सूर्य का प्रकाश प्रत्येक स्थान पर पड़ता है तथा कोई पवित्र या अपवित्र स्थान इससे बाहर नहीं है। यही प्रकृति का नियम आध्यात्मिक सूर्य के प्रकाश के संबंध में है कि न सूक्ष्म स्थान उस प्रकाश से वंचित रह सकता है और न स्थूल

स्थान। हां वह प्रकाश पवित्र हृदयों का प्रेमी है। जब वह आध्यात्मिक सूर्य शुद्ध वस्तुओं पर अपना प्रकाश डालता है तो उसमें अपना सम्पूर्ण प्रकाश प्रकट कर देता है, यहां तक कि उसमें अपना चेहरा प्रतिबिम्बित कर देता है। जैसा कि तुम देखते हो कि एक शुद्ध जल या उज्ज्वल दर्पण के समक्ष जब सूर्य आता है तो अपना सम्पूर्ण रूप उसमें प्रकट कर देता है यहां तक कि जिस प्रकार आकाश पर सूर्य दिखाई देता है उसी प्रकार बिना किसी अन्तर के उस शुद्ध जल अथवा दर्पण में दिखाई देता है।

अतः आध्यात्मिक तौर पर मनुष्य के लिए इस से बढ़कर कोई विशेषता नहीं कि वह अपने आपको इतनी पवित्रता धारण करे कि उसमें खुदा तआला का चेहरा खींचा जाए। इसी की ओर संकेत है जो अल्लाह तआला कुर्आन करीम में फ़रमाता है - **إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً**^① अर्थात् मैं पृथ्वी पर अपना खलीफ़ा बनाने वाला हूँ। यह स्पष्ट है कि, प्रतिबिम्ब एक वस्तु का किसी मूल रूप का खलीफ़ा अर्थात् उत्तराधिकारी होता है। यही कारण है कि जिस जिस जगह पर वास्तविक आकृति में अंग होते हैं तथा जिस प्रकार की बनावट होती है उसी-उसी स्थान पर चित्र में भी होते हैं। हदीस शरीफ़ तथा तौरात में भी है कि खुदा तआला ने मनुष्य को अपने रूप पर बनाया तथा इस रूप से अभिप्राय यही आध्यात्मिक समानता है और फिर यह भी स्पष्ट है कि जब उदाहरणतया किसी उज्ज्वल दर्पण पर सूर्य का प्रकाश पड़ता है तो केवल इतना ही नहीं होता कि सूर्य उसके अन्दर दृष्टिगोचर होता है अपितु वह दर्पण सूर्य की विशेषताएं भी प्रकट करता है और वह यह कि उसका प्रकाश प्रतिध्यात्मक रूप में दूसरे पर भी पड़ जाता है। अतः यही दशा आध्यात्मिक सूर्य के चेहरा की होती है कि जब एक पवित्र हृदय उससे एक प्रतिबिम्बित रूप स्वीकार कर लेता है तो सूर्य के समान उसमें से भी किरणें निकल कर अन्य वस्तुओं को प्रकाशित करती हैं जैसे सम्पूर्ण सूर्य अपने पूर्ण वैभव के साथ उसमें प्रवेश कर जाता है।

फिर यहां एक और रहस्य स्मरण योग्य है और वह यह कि तृतीय प्रकार के

① अलबक्ररह - 31

लोग भी जिनका खुदा तआला से पूर्ण संबंध होता है तथा पूर्ण एवं शुद्ध इल्हाम पाते हैं खुदा के वरदानों को स्वीकार करने में समान नहीं होते। उन सब की स्वाभाविक योग्यता की परिधि परस्पर समान नहीं होती अपितु किसी की स्वाभाविक योग्यता की परिधि निम्न स्तर पर विशालता रखती है तथा किसी की अधिक विशाल होती है। किसी की बहुत अधिक तथा किसी की इतनी जो विचार एवं अनुमान से श्रेष्ठ है तथा किसी का खुदा तआला से प्रेम-सम्पर्क शक्तिशाली होता है तथा किसी का अत्यधिक शक्तिशाली तथा किसी का इतना कि संसार उसे पहचान नहीं सकता तथा कोई बुद्धि उस के अन्त तक नहीं पहुंच सकती और वह अपने अनादि प्रियतम के प्रेम में इतने लीन होते हैं कि उनकी हस्ती एवं अस्तित्व का कुछ शेष नहीं रहता था इन समस्त श्रेणियों के लोग आयत ^① **كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ** के अनुसार अपनी स्वाभाविक योग्यता की परिधि से अधिक उन्नति नहीं कर सकते तथा उनमें से कोई अपनी प्रकृति की परिधि से बढ़कर कोई प्रकाश प्राप्त नहीं कर सकता और न कोई अध्यात्मिक चित्र प्रकाशमान सूर्य की अपनी प्रकृति की परिधि से बढ़कर अपने अन्दर ले सकता है तथा खुदा तआला प्रत्येक का स्वाभाविक योग्यतानुसार उसको अपना चेहरा दिखा देता है तथा स्वभावों की न्यूनाधिकता के कारण वह चेहरा कहीं छोटा हो जाता है तथा कहीं बड़ा। उदाहरणतया एक बड़ा चेहरा एक आर्सी के दर्पण में अत्यन्त छोटा मालूम होता है, किन्तु वही चेहरा एक बड़े दर्पण में बड़ा दिखाई देता है परन्तु दर्पण चाहे छोटा हो या बड़ा चेहरे के समस्त अंग तथा निशान दिखा देता है केवल अन्तर यह है कि छोटा दर्पण चेहरे को पूर्ण मात्रा में दिखा नहीं सकता। अतः जिस प्रकार छोटे और बड़े दर्पण में यह न्यूनाधिकता पाई जाती है उसी प्रकार खुदा तआला का अस्तित्व अनादि एवं अपरिवर्तनीय है किन्तु मानव-योग्यता की दृष्टि से इसमें परिवर्तन पैदा होते हैं तथा इतने अन्तर प्रकट हो जाते हैं कि जैसे विशेषताओं को प्रकट करने की दृष्टि से जो जैद का खुदा है उस से बढ़कर वह खुदा है जो बकर का खुदा है तथा उस से बढ़कर वह जो खालिद का खुदा है, परन्तु खुदा तीन नहीं, खुदा एक ही है केवल भिन्न-भिन्न झलकियों के

कारण उसके शान भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रकट होते हैं। जैसा कि मूसा^{अ.} और ईसा^{अ.} हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा^{स.अ.व.} का ख़ुदा एक ही है, तीन ख़ुदा नहीं हैं, किन्तु भिन्न-भिन्न झलकियों के अनुसार उसी एक ख़ुदा में तीन शान प्रकट हो गए। चूंकि मूसा^{अ.} का साहस केवल बनी इस्राईल तथा फ़िरऔन तक ही सीमित था, इसलिए मूसा^{अ.} पर ख़ुदा की शक्ति का प्रदर्शन उसी सीमा तक सीमित रहा। यदि मूसा^{अ.} की दृष्टि तत्कालीन युग तथा भावी युगों के समस्त लोगों पर होती तो तौरात की शिक्षा भी सीमित एवं अधूरी न होती जो अब है।

इसी प्रकार हजरत ईसा^{अ.} का साहस केवल यहूदियों के कुछ सम्प्रदायों तक सीमित था जो उनकी दृष्टि के सामने थे तथा अन्य जातियों एवं भावी युगों के साथ उनकी सहानुभूति का कुछ संबंध न था। इसलिए ख़ुदा की तजल्ली भी उनके धर्म में उसी सीमा तक सीमित रही जितना उनकी शक्ति थी तथा भविष्य में इल्हाम एवं ख़ुदा की वह्यी पर मुहर लग गई। चूंकि इंजील की शिक्षा भी केवल यहूदियों के व्यावहारिक आचरण एवं नैतिक ख़राबियों के सुधार हेतु थी, सम्पूर्ण विश्व की ख़राबियों पर दृष्टि न थी। इसलिए इंजील भी व्यापक सुधार से असमर्थ है। अपितु वह केवल उन यहूदियों की वर्तमान अनैतिकता का सुधार करती है जो दृष्टि के सामने थे तथा जो अन्य देशों के रहने वाले या भावी युग के लोग हैं उन की परिस्थितियों से इंजील को कुछ लेना-देना नहीं और यदि इंजील को समस्त सम्प्रदायों तथा विभिन्न स्वभावों का सुधार दृष्टिगत होता तो उसकी यह शिक्षा न होती जो अब मौजूद है, किन्तु खेद यह है कि एक ओर तो इंजील की शिक्षा ही अपूर्ण थी तथा दूसरी ओर स्वयं मनगढ़त ग़लतियों ने बड़ी हानि पहुंचाई या जो एक असहाय मनुष्य को अकारण ख़ुदा बनाया गया तथा कफ़्रारे की मनगढ़त आस्था प्रस्तुत करके व्यावहारिक सुधारों का द्वार सिरे से बन्द कर दिया गया। अब ईसाई जाति दोहरे-दुर्भाग्य में ग्रस्त है। एक तो उनको ख़ुदा तआला की ओर से वह्यी तथा इल्हाम के माध्यम से सहायता प्राप्त नहीं हो सकती, क्योंकि इल्हाम पर मुहर जो लग गई। दूसरा यह कि वे व्यावहारिक तौर पर आगे कदम नहीं बढ़ा सकती, क्योंकि कफ़रारा ने परिश्रमों, प्रयास एवं प्रयत्नों से

रोक दिया, परन्तु जिस पूर्ण इन्सान पर कुर्आन शरीफ़ उतरा उसकी दृष्टि सीमित न थी तथा उसकी सामान्य सहानुभूति एवं हमदर्दी में कुछ दोष न था अपितु क्या समय की दृष्टि से तथा क्या स्थान की दृष्टि से उसकी मनोवृत्ति के अन्दर पूर्ण हमदर्दी मौजूद थी, इसलिए उसे कुदरत की तजल्ली का पूर्ण भाग प्राप्त हुआ और वह खातमुल-अंबिया बने, परन्तु इन अर्थों में नहीं कि भविष्य में उस से कोई अध्यात्मिक लाभ प्राप्त नहीं होगा अपितु इन अर्थों से कि वह साहिबे खातम है। उसकी मुहर के अतिरिक्त कोई लाभ किसी को नहीं पहुंच सकता तथा उसकी उम्मत के लिए प्रलय तक वार्तालाप एवं संवाद का द्वार कभी बन्द न होगा और उसके अतिरिक्त कोई नबी साहिबे खातम नहीं एकमात्र वही है जिस की मुहर से ऐसी नुबुव्वत भी प्राप्त हो सकती है जिसके लिए उम्मती होना अनिवार्य है और उसके साहस एवं हमदर्दी ने उम्मत को अपूर्ण अवस्था में छोड़ना नहीं चाहा^① तथा उन पर वह्यी का द्वार जो खुदा को पहचानने की वास्तविक जड़ है बन्द रहना पसन्द नहीं किया। हां अपनी खतमे-रिसालत का निशान कायम रखने के लिए यह चाहा कि वह्यी का वरदान आप के अनुसरण के माध्यम से प्राप्त हो तथा जो व्यक्ति उम्मती न हो उस पर खुदा की वह्यी का द्वार बन्द हो। अतः खुदा तआला ने इन अर्थों से आप^{स.} को खातमुल

① स्वाभाविक तौर पर यहां यह प्रश्न हो सकता है कि हज़रत मूसा^{अ.} की उम्मत में बहुत से नबी गुज़रे हैं। अतः इस स्थिति में मूसा^{अ.} का सर्वश्रेष्ठ होना अनिवार्य होता है इसका उत्तर यह है कि जितने नबी गुज़रे हैं उन सबको खुदा ने सीधे तौर पर चुन लिया था, हज़रत मूसा^{अ.} का उसमें कुछ हस्तक्षेप न था, परन्तु इस उम्मत में हज़रत मुहम्मद^{स.अ.व.} के अनुसरण की बरकत से हज़ारों वली हुए हैं और एक वह भी हुआ जो उम्मती भी है और नबी भी। इस वरदान की अधिकता का किसी नबी में उदाहरण नहीं मिल सकता। इस्राईली नबियों को अलग करके शेष समस्त लोग प्रायः मूसा की उम्मत में अपूर्ण पाए जाते हैं। रहे अंबिया उनका हम वर्णन कर चुके हैं कि उन्होंने हज़रत मूसा से कुछ नहीं पाया अपितु वे सीधे तौर पर नबी बनाए गए परन्तु उम्मते मुहम्मदिया में से हज़ारों लोग मात्र अनुसरण के कारण वली किए गए। इसी से।

अंबिया ठहराया। अतः प्रलय तक यह बात क़ायम हुई कि जो व्यक्ति सच्चे अनुसरण से अपना उम्मीती होना सिद्ध न करे तथा आपके अनुसरण में अपना सम्पूर्ण अस्तित्व लीन न करे, ऐसा मनुष्य प्रलय तक न कोई पूर्ण वह्यी पा सकता है और न पूर्ण मुल्हम हो सकता है, क्योंकि ख़ुदा से बराहेरास्त नुबुव्वत मिलना हज़रत मुहम्मद मुस्ताफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर समाप्त हो गया है, परन्तु ज़िल्ली (प्रतिबिम्ब स्वरूप) नुबुव्वत जिसके अर्थ हैं कि मात्र मुहम्मदी वरदान से वह्यी पाना वह प्रलय तक शेष रहेगी ताकि मनुष्यों की पूर्णता का द्वार बन्द न हो और ताकि यह निशान संसार से मिट न जाए कि आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साहस ने प्रलय तक यही चाहा है कि ख़ुदा से वार्तालाप एवं संवाद के द्वार खुले रहें और ख़ुदा की मा'रिफ़त जो मुक्ति की धुरी है लुप्त न हो जाए।

किसी सहीह हदीस से इस बात का पता नहीं मिलेगा कि आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पश्चात् कोई ऐसा नबी आने वाला है जो उम्मीती नहीं अर्थात् आप^स के अनुसरण से लाभान्वित नहीं और यहीं से उन लोगों की ग़लती सिद्ध होती है जो अकारण हज़रत ईसा को दोबारा संसार में लाते हैं और वह वास्तविकता जो इल्यास नबी के दोबारा आने की थी जो स्वयं हज़रत ईसा के वर्णन करने से खुल गई।^① इस से कुछ सीख नहीं लेते अपितु जिस आने वाले मसीह मौऊद का हदीसों से पता लगता है उसका उन्हीं हदीसों में यह निशान दिया गया है कि वह नबी भी

① हज़रत ईसा के दोबारा आने का विचार ईसाइयों ने मात्र अपने हित के लिए गढ़ लिया था, क्योंकि उनके प्रथम आगमन में उनकी ख़ुदाई का कोई निशान प्रकट न हुआ। हर बार मार खाते रहे, कमज़ोरी दिखाते रहे। अतः यह आस्था प्रस्तुत की गई कि वह दोबारा आगमन में ख़ुदाई का जलवा दिखाएंगे और पहली कमियां दूर करेंगे ताकि इस प्रकार से प्रथम आगमन की परिस्थितियों पर आवरण डाल दिया जाए, किन्तु अब वह युग आता जाता है कि स्वयं ईसाई ऐसी आस्थाओं से विमुख होते जाते हैं। मैं विश्वास करता हूँ कि जब उनकी अक़लें खुलेंगी तो वे बड़ी सरलता से इस आस्था को त्याग देंगे तथा जैसा कि बच्चा पूर्णतः तैयार होने के बाद फिर गर्भाशय में नहीं रह सकता इसी प्रकार वे भी घोर अन्धकार और मूर्खता के पर्दे से बाहर आ जाएंगे। इसी से।

होगा और उम्मीती भी, परन्तु क्या मरयम का बेटा उम्मीती हो सकता है ? कौन सिद्ध करेगा कि उसने सीधे तौर पर नहीं अपितु आहंजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण से नुबुव्वत का स्थान पाया था ?

هَذَا هُوَ الْحَقُّ - وَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا

وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَعْنَةَ اللَّهِ عَلَى الْكَافِرِينَ

(अर्थात् यही सच है अबु अगर वे मुंह फेर लें तो कह दे कि आओ हम अपने और तुम्हारे बेटों को बुलाएं और अपनी स्त्रियों और तुम्हारी स्त्रियों को और अपने लोगों को और तुम्हारे लोगों को। फिर चलो मुबाहला करें और झूठ बोलने वालों पर अल्लाह की लानत डालें। अनुवादक) और हज़ारों प्रयास किए जाएं और व्याख्या की जाए, यह बात बिल्कुल अनुचित है कि आहंजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पश्चात् कोई ऐसा नबी आने वाला है कि जब लोग नमाज़ के लिए मस्जिदों की ओर दौड़ेंगे तो वह कलीसिया की ओर भागेगा और जब लोग कुर्आन करीम पढ़ेंगे तो वह इंजील खोल बैठेगा और जब लोग इबादत के समय काबः की ओर मुख करेंगे तो वह बैतुल मक़दस की ओर रुख करेगा, मदिरापान करेगा, सुअर का मांस खाएगा तथा इस्लाम के (वैध) एवं (अवैध) की कुछ परवाह नहीं करेगा। क्या कोई बुद्धि यह स्वीकार कर सकती है कि इस्लाम के लिए यह संकट का दिन भी आने वाला है कि आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात् कोई ऐसा नबी भी आएगा जो ख़ुदा से सीधे तौर पर नुबुव्वत पाकर आप^स की नुबुव्वत की मुहर को तोड़ देगा और आप^स की ख़ातमुल अंबिया होने की महानता को छीन लेगा और आप^स के अनुसरण से नहीं अपितु बिना माध्यम के सीधे तौर पर नुबुव्वत का स्थान प्राप्त किया होगा और उसका व्यवहारिक आचरण हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत के विपरीत होगा तथा कुर्आन करीम का स्पष्ट विरोध करके लोगों को उपद्रव में डालेगा और इस्लाम की मान-हानि का कारण होगा। निश्चय ही समझो कि ख़ुदा ऐसा कदापि नहीं करेगा।^① निःसन्देह हदीसों में मसीह

① - यह कहना कि हज़रत ईसा^अ का दोबारा संसार में आना सामूहिक आस्था है। यह पूर्णतः

मौऊद के साथ नबी का नाम मौजूद है, परन्तु उसके साथ उम्मती का नाम भी मौजूद है और यदि मौजूद न भी होता तो उपरोक्त खराबियों पर दृष्टि डालकर स्वीकार करना पड़ता है कि ऐसा कदापि नहीं हो सकता कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात् स्वतंत्र रूप से कोई नबी आए, क्योंकि ऐसे व्यक्ति का आना स्पष्ट तौर पर ख़तमे नुबुव्वत के विपरीत है और यह स्पष्टीकरण कि फिर उसे उम्मती बनाया जाएगा और वही नव मुस्लिम नबी मसीह मौऊद कहलाएगा। यह पद्धति इस्लाम की शिक्षाओं से बहुत दूर है। जिस अवस्था में हदीसों से सिद्ध है कि इसी उम्मत में से यहूदी पैदा होंगे तो खेद की बात है कि यहूदी तो पैदा हों इस उम्मत में से और मसीह बाहर से आए। क्या एक ख़ुदा से डरने वाले के लिए यह एक कठिन बात है ? जैसा कि उसकी बुद्धि इस बात पर सन्तोष धारण करती है कि इस उम्मत में कुछ लोग ऐसे पैदा होंगे जिन का नाम यहूदी रखा जाएगा। इसी प्रकार इस उम्मत में से एक व्यक्ति पैदा होगा जिसका नाम ईसा और मसीह मौऊद रखा जाएगा। क्या आवश्यकता है कि हज़रत ईसा को आकाश से उतारा जाए तथा उसकी बराहे रास्त नुबुव्वत का चोला उतार कर उम्मती बनाया जाए। यदि कहो कि यह कार्यवाही बतौर दण्ड के होगी क्योंकि उनकी उम्मत ने उन्हें ख़ुदा बनाया था तो यह उत्तर भी निरर्थक है, क्योंकि इसमें हज़रत ईसा का क्या दोष है।

मैं ये बातें अनुमान या गुमान से नहीं कहता अपितु मैं ख़ुदा तआला से वह्यी पाकर कहता हूँ और मैं उसकी क्रसम खा कर कहता हूँ कि उसी ने मुझे यह

शेष हाशिया:- मिथ्यारोप है। सहाबा^{रजि} की सर्वसम्मति केवल इस आयत पर हुई थी कि **وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ*** (आले इमरान. 145) उनके पश्चात् उम्मत में भांति-भांति के सम्प्रदाय पैदा हो गए। अतः मो'तज़िला अब तक हज़रत ईसा^अ की मृत्यु हो जाने के क्रायल (मानने वाले) हैं तथा कई महान सूफ़ी लोग भी उनकी मृत्यु हो जाने को मानते हैं तथा मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव से पूर्व यदि उम्मत में से किसी ने यह विचार भी किया कि हज़रत ईसा दोबारा संसार में आएंगे तो उन पर कोई पाप नहीं क्योंकि यह केवल सोच-विचार कर किसी बात का परिणाम सुनिश्चित करने की गलती है, जो इस्त्राईली नबियों से भी कुछ भविष्यवाणियों के समझने में होती रही है। इसी से।

सूचना दी है। समय मेरी गवाही देता है, खुदा के निशान मेरी गवाही देते हैं।

इसके अतिरिक्त जबकि कुर्आन करीम से निश्चित तौर पर ईसा का निधन हो जाना सिद्ध है तो फिर उनके दोबारा आने का विचार स्पष्ट तौर पर असत्य है, क्योंकि जो व्यक्ति आकाश पर पार्थिव शरीर के साथ जीवित मौजूद ही नहीं वह क्योंकि पृथ्वी पर दोबारा आ सकता है।

यदि कहो कि कुर्आन करीम की किन आयतों से निश्चित तौर पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु सिद्ध होती है तो मैं नमूने के तौर पर इस आयत की ओर आप का ध्यान आकृष्ट करता हूँ जो कुर्आन करीम में है। अर्थात् यह कि -

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ^①

इस स्थान पर यदि कोई "तवफ़्फ़ी" के अर्थ पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठाया जाना लिया जाए तो यह अर्थ तो स्पष्ट तौर पर मिथ्या हैं क्योंकि कुर्आन शरीफ़ की इन्हीं आयतों से स्पष्ट है कि यह प्रश्न हज़रत ईसा^{अ.} से क्रयामत (प्रलय) के दिन होगा। अतः इस से तो यह अनिवार्य होता है कि वह मृत्यु से पूर्व इस शारीरिक रफ़ा की अवस्था में ही खुदा तआला के समक्ष प्रस्तुत हो जाएंगे और फिर कभी नहीं मरेंगे। क्योंकि क्रयामत (प्रलय) के पश्चात् मृत्यु नहीं तथा ऐसा विचार स्पष्ट तौर पर मिथ्या है।

इसके अतिरिक्त क्रयामत (प्रलय) के दिन उनका यह उत्तर कि उस दिन से कि मैं पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठाया गया मुझे मालूम नहीं कि मेरे पश्चात् मेरी उम्मत की क्या दशा हुई। यह उस आस्था की दृष्टि से स्पष्ट तौर पर झूठ ठहरता है जबकि यह प्रस्तावित किया जाए कि वह प्रलय से पूर्व दोबारा संसार में आएंगे, क्योंकि जो व्यक्ति दोबारा संसार में आए तथा अपनी उम्मत की अनेकेश्वरवादी दशा को देख ले अपितु उनसे लड़ाइयां करे तथा उनकी सलीब तोड़े और उनके सुअर का वध करे, वह क्रयामत (प्रलय) के दिन क्योंकि कह सकता है कि मुझे अपनी उम्मत की कुछ भी खबर नहीं।

फिर स्वयं यह दावा कि "तवफ़्फ़ा" का शब्द जब हज़रत ईसा के बारे में कुर्आन

① अलमाइदह - 118

शरीफ़ में आता है कि तो उसके यही अर्थ होते हैं कि पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठाए जाना, किन्तु दूसरों के लिए ये अर्थ नहीं होते। यह दावा भी बड़ा विचित्र दावा है जैसे समस्त संसार के लिए तो तवफ़्फ़ी के शब्द के ये अर्थ हैं कि रूह क़ब्ज़ करना, न कि शरीर क़ब्ज़ करना। परन्तु हज़रत ईसा के लिए विशेष तौर पर ये अर्थ हैं कि पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठा लेना। ये अर्थ ख़ूब हैं जिन से हमारे सरदार एवं स्वामी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी हिस्सा प्राप्त नहीं हुआ और समस्त सृष्टि में से हज़रत ईसा के लिए ही ये अर्थ विशेष्य हैं तथा इस बात पर बल देना कि इस बात पर सर्वसम्मति हो चुकी है कि हज़रत ईसा दोबारा संसार में आएंगे। यह बड़ा विचित्र झूठ गढ़ना है जो समझ नहीं आता। यदि सहमति से अभिप्राय सहाबा की सहमति है तो यह उन पर आरोप है। उनकी तो बला को भी इस नवीन आविष्कृत आस्था की खबर नहीं थी कि हज़रत ईसा दोबारा संसार में आ जाएंगे और फिर यदि उनकी यह आस्था होती तो इस आयत के विषय पर रो-रो कर क्यों सहमति की जाती कि-

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ①

अर्थात् आंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम केवल एक मनुष्य रसूल थे, खुदा तो नहीं थे और उन से पहले सब रसूल संसार से गुज़र गए हैं। अतः यदि हज़रत ईसा आंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु तक संसार से नहीं गुज़रे थे और उन्हें उस समय तक मृत्यु का फ़रिश्ता छू भी नहीं गया था तो इस आयत के सुनने के पश्चात् सहाबा^{रज़ि.} इस आस्था को कैसे छोड़ दिया कि मानो आंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दोबारा संसार में आएंगे। प्रत्येक को ज्ञात है कि यह आयत हज़रत अबू बक्र^{रज़ि.} ने उस दिन समस्त सहाबा को मस्जिद-ए-नबवी में पढ़कर सुनाई थी, जिस दिन आंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निधन हुआ था और वह सोमवार का दिन था तथा आप अभी दफ़न नहीं किए गए थे। आप^{स.} का पवित्र शव हज़रत आइशा सिद्दीका^{रज़ि.} के घर में था कि जुदाई के भीषण ग़म के कारण कुछ सहाबा^{रज़ि.} के हृदय में यह भ्रम पैदा हुआ कि आंज़रत सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम का वास्तव में निधन नहीं हुआ अपितु लुप्त हो गए हैं और पुनः संसार में आएंगे हजरत अबू बक्र^{रजि.} ने इस फ़िल्ने को खतरनाक समझ कर उसी समय समस्त सहाबा को एकत्र किया तथा शुभ संयोग से उस दिन समस्त सहाबा^{रजि.} मदीना में मौजूद थे। तब हजरत अबू बक्र^{रजि.} मंच पर चढ़े और फ़रमाया कि मैंने सुना है कि हमारे कुछ मित्र ऐसा-ऐसा कहते हैं, किन्तु सत्य बात यह है कि आंहजरत^{स.अ.व.} मृत्यु पा चुके हैं तथा हमारे लिए यह कोई विशेष घटना नहीं है। इससे पूर्व कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसकी मृत्यु नहीं हुई। तत्पश्चात् हजरत अबू बक्र^{रजि.} ने यह आयत पढ़ी-

مَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ ۖ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ①

अर्थात् हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम केवल मनुष्य रसूल थे, ख़ुदा तो नहीं थे। ② अतः जैसे इससे पूर्व समस्त रसूल मृत्यु पा चुके हैं उसी तरह आप^{स.} भी मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं।

तब इस आयत को सुनकर समस्त सहाबा की आंखों में आंसू भर आए तथा इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ा। इस आयत ने उनके हृदयों में ऐसा प्रभाव किया कि मानो उसी दिन उतरी थी। अतः इसके पश्चात् हस्सान बिन साबित ने आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए यह मरसिया (शोक गीत) बनाया-

كنت السَّوَادَ لِنَاضِرٍ فَعَمِيَ عَلَيْكَ النَّاضِرُ
مَنْ شَاءَ بَعْدَكَ فَلْيُمِتْ فَعَلَيْكَ كُنْتُ أَحَاوِرُ

अर्थात् तू मेरी आंखों की पुतली था मैं तो तेरी मृत्यु से अंधा हो गया। अब इसके

① आले इमरान - 145

② जो व्यक्ति हजरत ईसा को आयत *قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ* से बाहर रखता है उसे इक्रार करना पड़ेगा कि ईसा मनुष्य नहीं है तथा स्पष्ट है कि इस अवस्था में हजरत अबू बक्र^{रजि.} का इस आयत से सिद्ध करना उचित नहीं ठहरता, क्योंकि जब कि हजरत ईसा आकाश पर पार्थिव शरीर के साथ जीवित मौजूद हैं तथा आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मृत्यु पा चुके तो इस आयत से सहाबा^{रजि.} को कौन सी सन्तुष्टि हो सकती थी। इसी से।

पश्चात् जो चाहे मरे, मुझे तो तेरे ही मरने का भय था। इस शैर (छन्द) में हस्सान बिन साबित ने समस्त नबियों की मृत्यु की ओर संकेत किया है। जैसे वह कहता है कि हमें इसकी क्या परवाह है कि मूसा मर गया हो या ईसा मर गया हो हमारा शोक तो इस प्रियतम नबी के लिए है जो आज हम से जुदा हो गया तथा आज हमारी आंखों से छुप गया। इस से ज्ञात होता है कि कुछ सहाबा इस ग़लत आस्था में भी ग्रस्त थे कि जैसे हज़रत ईसा दोबारा संसार में आएंगे, किन्तु हज़रत अबू बक्र^{रज़ि.} ने आयत **قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ** प्रस्तुत करके यह ग़लती दूर कर दी तथा इस्लाम में यह पहली सर्वसम्मति थी कि समस्त नबी मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं।

अतः इस मरसिया (शोकगीत) से ज्ञात होता है कि कुछ भोले-भाले सहाबी जिनकी समझ कम थी (जैसे अबू हरैरा) वे अपनी ग़लतफ़हमी से ईसा मौऊद के आने की भविष्यवाणी देख कर यह विचार करते थे हज़रत ईसा ही आ जाएंगे, जैसा कि प्रारंभ में अबू हरैरा को भी यही धोखा लगा हुआ था तथा अधिकतर बातों में अबू हरैरा अपने भोलेभालेपन के कारण ऐसे धोखों में पड़ जाया करता था। अतः एक सहाबी के अग्नि में पड़ जाने की भविष्यवाणी में भी उन्हें यही धोखा लगा था तथा आयत **وَأَنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لِيُؤْمِنُوا بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ**^① के ऐसे उल्टे अर्थ करता था जिससे सुनने वाले को हंसी आती थी, क्योंकि वह इस आयत से यह सिद्ध करना चाहते थे कि हज़रत ईसा की मृत्यु से पूर्व सब उस पर ईमान ले आएंगे, जबकि इस आयत के पढ़ने की दूसरी किरअत (शैली) में **قَبْلَ مَوْتِهِ** के स्थान पर **قَبْلَ مَوْتِهِمْ** मौजूद है और यह आस्था स्पष्ट तौर पर कुर्आन शरीफ़ के विपरीत है। कोई युग ऐसा भी आएगा कि सब लोग ईसा को स्वीकार कर लेंगे, क्योंकि अल्लाह तआला कुर्आन करीम में फ़रमाता है -

يَعِيشِي أَنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ^②

① अन्निसा-160

② आले इमरान-56

अर्थात् हे ईसा मैं तुझे मृत्यु दूंगा और फिर मृत्योपरान्त मोमिनो की भांति तुझे अपनी ओर उठाऊंगा और फिर समस्त लांछनों से तुझे बरी करूंगा और फिर क्रयामत तक तेरे अनुयायियों को तेरे विरोधियों पर विजयी रखूंगा। अतः स्पष्ट है कि यदि क्रयामत से पूर्व समस्त लोग हज़रत ईसा पर ईमान ले आएंगे तो फिर वे कौन से विरोधी हैं जो क्रयामत तक रहेंगे। फिर अल्लाह तआला एक अन्य स्थान पर फ़रमाता है -

وَالْقَائِنَاتِ بِهِمُ الْعَذَابُ وَالْبُغْضَاءُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ^①

अर्थात् यहूदियों तथा ईसाइयों में प्रलय तक शत्रुता रहेगी। अतः स्पष्ट है कि यदि समस्त यहूदी क्रयामत से पूर्व ही हज़रत ईसा पर ईमान ले आएंगे तो क्रयामत तक शत्रुता रखने वाला कौन रहेगा।

इसके अतिरिक्त ऐसा विचार कि समस्त यहूदी हज़रत ईसा पर ईमान ले आएंगे, इस प्रकार से भी निरर्थक एवं बुद्धि के विपरीत है कि यह आस्था घटनाओं के विपरीत है, क्योंकि हज़रत ईसा के युग को लगभग दो हजार वर्ष गुज़र चुके हैं तथा किसी पर यह बात गुप्त नहीं कि इस अवधि में करोड़ों यहूदी हज़रत ईसा के इन्कारी तथा उन्हें गालियां देने वाले तथा काफ़िर ठहराने वाले संसार से गुज़र गए हैं। फिर यह कथन क्योंकि सही हो सकता है कि प्रत्येक यहूदी उन पर ईमान ले आएगा। इन दो हजार वर्ष का थोड़ा योग तो करो कि इन्कार की अवस्था में कितने यहूदी मर गए। क्या उनके लिए रज़ियल्लाहो अन्हो (खुदा उन से प्रसन्न हुआ) कह सकते हैं।

अब समस्त सहाबा की सर्वसम्मति हज़रत ईसा की मृत्यु पर थी अपितु समस्त नबियों की मृत्यु पर सर्वसम्मति हो गई थी और यही प्रथम **सर्वसम्मति** थी जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु के पश्चात् हुई। इसी सर्वसम्मति के कारण समस्त सहाबा हज़रत ईसा की मृत्यु को मानते थे तथा इसी कारण हस्सान बिन साबित ने उपरोक्त मरसिया (शोकगीत) बनाया था, जिसका अनुवाद जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं यह है कि हे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तू तो मेरी आंखों की पुतली था, मैं तो तेरे मरने से अंधा हो गया, अब

① अलमाइदह-65

तेरे पश्चात् जो व्यक्ति चाहे मरे। ईसा हो या मूसा मुझे तो तेरे ही मरने का भय था। वास्तव में सहाबा^{रजि.} हजरत मुहम्मद^{स.अ.व.} के सच्चे प्रेमी थे तथा उन्हें किसी भी प्रकार से यह बात पसन्द न थी कि ईसा जिसका अस्तित्व बहुत बड़े शिर्क की जड़ ठहराया गया है जीवित हो और आप मृत्यु पा जाएं। अतः यदि आंहजरत^{स.अ.व.} की मृत्यु के समय उन्हें यह ज्ञात होता कि हजरत ईसा आकाश पर पार्थिव शरीर के साथ जीवित बैठे हैं और उनका प्रिय नबी मृत्यु पा गया तो वे शोक से मर ही जाते, क्योंकि वे यह बात कदापि सहन नहीं कर सकते थे कि कोई अन्य नबी जीवित हो और उनका प्रिय नबी क़ब्र में दफ़न हो जाए। **अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व आलिही व अस्हाबिही अजमईन।**

ख़ुदा तआला के इस कलाम से कि **بَلِّ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ**^① यह अर्थ निकालना कि हजरत ईसा पार्थिव शरीर के साथ दूसरे आकाश पर हजरत यहया के पास जा बैठे कितनी समझ की कमी तथा नादानी है। क्या महाप्रतापी ख़ुदा दूसरे आकाश पर बैठा हुआ है, तथा क्या कुर्आन में **رَفَعْنَا** इलल्लाह के ये अर्थ किसी और स्थान पर भी आए हैं कि आकाश पर पार्थिव शरीर के साथ उठा लेना तथा क्या कुर्आन करीम में इस का कोई उदाहरण है कि पार्थिव शरीर भी आकाश की ओर उठाया जाता है? इस आयत के समान दूसरी आयत भी कुर्आन शरीफ़ में मौजूद है और वह यह है कि -

يَا أَيُّهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۝ ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۝^②

अतः क्या इसके अर्थ यह हैं कि हे सात्विक वृत्ति वाले व्यक्ति! पार्थिव शरीर के साथ दूसरे आकाश पर चला आ। ख़ुदा तआला कुर्आन शरीफ़ में 'बलअम बाऊर' के बारे में फ़रमाता है कि हमने अपनी ओर उसका रफ़ा चाहा, परन्तु वह पृथ्वी की ओर झुक गया। क्या इस आयत के भी यही अर्थ हैं कि ख़ुदा तआला बलअम बाऊर को पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठाना चाहता था, किन्तु

① अन्निसा-159

② अलफ़ज्र 28-29

बलअम बाऊर ने पृथ्वी पर रहना ही पसन्द किया। खेद कि कुर्आन शरीफ़ के अर्थों में कितना परिवर्तन किया जाता है। ये लोग यह भी कहते हैं कि कुर्आन शरीफ़ में मौजूद है। इस से सिद्ध है कि हज़रत ईसा आकाश पर उठाए गए हैं, किन्तु प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि किसी व्यक्ति का न क़त्ल होना न सलीब पर मरना इस बात के लिए अनिवार्य नहीं कि वह पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठाया गया हो। अगली आयत में स्पष्ट ये शब्द मौजूद हैं कि وَلَكِنْ^① अर्थात् यहूदी क़त्ल करने में सफल नहीं हुए, परन्तु उन्हें सन्देह में डाला गया कि हमने क़त्ल कर दिया है। अतः सन्देह में डालने के लिए इस बात की क्या आवश्यकता थी कि किसी और मोमिन को सूली पर मारकर ला 'नती बनाया जाए^② या स्वयं यहूदियों में से किसी को हज़रत ईसा की शक्ल बना कर सलीब पर चढ़ाया जाए, क्योंकि इस अवस्था में ऐसा व्यक्ति स्वयं को हज़रत ईसा का शत्रु प्रकट करके अपने घर वालों के पते तथा निशान देकर एक पल में छुटकारा पा सकता था कि ईसा ने जादू से मुझे अपनी शक्ल पर बना दिया है। ये कितने मूर्खतापूर्ण भ्रम हैं। क्यों وَلَكِنْ^③ के अर्थ यह नहीं करते कि हज़रत ईसा ने सलीब पर मृत्यु नहीं पाई किन्तु उन पर बेहोशी की अवस्था छा गई थी। बाद में दो, तीन दिन तक होश में आ गए तथा मरहम-ए-ईसा के प्रयोग से (जो आज तक सैकड़ों चिकित्सा की पुस्तकों में मौजूद है जो हज़रत ईसा के लिए बनाया गया

① अन्निसा-158

② अन्निसा-158

③ यह विचित्र बात है। इस्लाम में स्वप्नफल बताने वाले इमाम जहां हज़रत ईसा को देखने की ता'बीर करते हैं वहां यह लिखते हैं कि जो व्यक्ति हज़रत ईसा को स्वप्न में देखे वह किसी विपत्ति से मुक्ति पा कर किसी अन्य देश की ओर चला जाएगा तथा एक भूभाग से दूसरे भूभाग की ओर प्रवास करेगा, यह नहीं लिखते कि वह आकाश पर चढ़ जाएगा। देखो पुस्तक 'ता'तीरुल अनाम' तथा अन्य इमामों की पुस्तकें। अतः बुद्धिमान पर वास्तविकता प्रकट होने के लिए यह भी एक पहलू है। इसी से।

था) उनके घाव भी अच्छे हो गए।

फिर एक और दुर्भाग्य है कि वे इन आयतों के अवतरण की पृष्ठभूमि को नहीं देखते। कुर्आन शरीफ़ यहूदियों तथा ईसाइयों के मतभेदों को दूर करने के लिए बतौर हक़म (न्यायक) के था ताकि उनके मतभेदों का निर्णय करे तथा उसका कर्तव्य था कि उनके विवादित मामलों का निर्णय करता। अतः उन विवादित मामलों के अतिरिक्त एक विवादास्पद मामला यह भी था कि यहूदी कहते थे कि हमारी तौरात में लिखा है कि जो व्यक्ति काठ (अर्थात् सूली) पर लटकाया जाए वह ला'नती होता है। उसकी आत्मा मृत्योपरांत खुदा की ओर नहीं जाती। चूंकि हज़रत ईसा सलीब पर मृत्यु पा गए इसलिए वह खुदा की ओर नहीं गए तथा उनके लिए आकाश के द्वार नहीं खोले गए। ईसाइयों ने जो आप^स के समय में ईसाई थे अपनी यह आस्था प्रसिद्ध की थी। अतः आज तक वही आस्था है कि हज़रत ईसा सलीब पर प्राण देकर ला'नती तो बन गए, किन्तु यह ला'नत दूसरों को मुक्ति देने के लिए उन्होंने स्वयं अपने ज़िम्मे ले ली थी और अन्ततः वह न पार्थिव शरीर के साथ अपितु एक नए और प्रतापी शरीर के साथ जो रक्त और मांस, हड्डी एवं नश्वर तत्वों से रहित था खुदा की ओर उठाए गए।^① तथा खुदा तआला ने कुर्आन शरीफ़ में इन दोनों पारस्परिक प्रतिद्वन्द्वियों के बारे में यह निर्णय दिया है कि यह बात बिल्कुल घटना के विरुद्ध है कि ईसा के सलीब पर प्राण निकले या वह क्रल्ल

① यदि आयत **بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ** के ये अर्थ हैं कि हज़रत ईसा पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठाए गए तो हमें कोई दिखाए कि कुर्आन करीम में वह आयत कहाँ है जो विवादित मामले का निर्णय करती है अर्थात् जिसमें यह लिखा है कि हज़रत ईसा का मृत्योपरान्त मोमिनों के समान खुदा की ओर रफ़ा होगा और वह मरणोपरान्त यह्या आदि नबियों के साथ जा मिलेंगे। क्या 'नऊजुबिल्लाह' खुदा को यह धोखा लगा कि यहूदियों की ओर से इन्कार तो था उनके अध्यात्मिक रफ़ा का, जो मोमिन का मृत्यु के पश्चात् होता है तथा खुदा ने कुछ का कुछ और समझ लिया। हम इस झूठ से खुदा की शरण चाहते हैं, खुदा इन सब बातों से पवित्र, उपकार करने वाला और श्रेष्ठ है। इसी से।

हुए, ताकि इससे यह परिणाम निकाला जाए कि वह तौरात के आदेशानुसार ला'नती है अपितु वह सलीबी मृत्यु से बचाया गया तथा मोमिनों की भांति खुदा की ओर उसका रफ़ा हुआ। जैसा कि मोमिन खुदा से एक प्रतापी शरीर पाकर खुदा तआला की ओर उठाया जाता है वह भी उठाए गए तथा उन नबियों में जा मिले जो उनसे पूर्व गुज़र चुके थे जैसा कि हज़रत मुहम्मद^{स.अ.व.} के उस वर्णन से समझा जाता है कि जो आप^{स.} ने मे'राज से वापस आकर वर्णन किया कि जैसे अन्य नबियों के पवित्र शरीर देखे उसी प्रकार हज़रत ईसा को भी उन्हीं के रंग में पाया और उनके साथ पाया कोई निराला शरीर नहीं देखा।

अतः यह बात कितनी साफ और स्पष्ट थी कि यहूदियों का इन्कार आध्यात्मिक रफ़ा से था क्योंकि वही रफ़ा है जो ला'नत के अर्थ के विरुद्ध है, किन्तु मुसलमानों ने मात्र अपनी अनभिज्ञता के कारण आध्यात्मिक रफ़ा को शारीरिक रफ़ा बना दिया। यहूदियों की यह आस्था कदापि नहीं कि जो व्यक्ति पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर न जाए वह मोमिन नहीं अपितु वे तो आज तक इसी बात पर बल देते हैं कि जिस का आध्यात्मिक रफ़ा न हो तथा उसके लिए आकाश के द्वार न खोले जाएं वह मोमिन नहीं होता जैसा कि कुर्आन करीम भी फ़रमाता है - لَا تُفْتَحُ ① अर्थात् काफ़िरों के लिए आकाश के द्वार नहीं खोले जाएंगे परन्तु मोमिनों के लिए फ़रमाता है - مُفْتَحَةُ ② الْأَبْوَابِ ③ अर्थात् मोमिनों के लिए आकाश के द्वार खोले जाएंगे। अतः यहूदियों का यही झगड़ा था कि **नऊज़ुबिल्लाह** हज़रत ईसा **अलैहिस्सलाम** काफ़िर हैं, इसलिए खुदा तआला की ओर उनका रफ़ा नहीं हुआ। यहूदी अब तक जीवित हैं मर तो नहीं गए। उनसे पूछ कर देख लो कि जो सलीब पर लटकाया गया, क्या उसका यह परिणाम है कि वह पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर नहीं जाता तथा उसके शरीर का खुदा तआला की ओर रफ़ा नहीं होता। अज्ञानता भी एक विचित्र विपत्ति है। मुसलमानों ने अपनी नादानी

① अलआराफ़-41

② सूरह साद-51

से कहां की बात कहां तक पहुंचा दी और एक मृत्यु प्राप्त मनुष्य के दोबारा आने की प्रतीक्षा करने लगे। हालांकि हदीसों में हजरत ईसा की आयु एक सौ बीस वर्ष निर्धारित हो चुकी है। क्या वह एक सौ बीस (120) वर्ष अब तक नहीं गुजरे।

इसी प्रकार उन्होंने अपनी नादानी से कुर्आन शरीफ़ तथा हदीसों में विरोधाभास पैदा कर दिया, क्योंकि कुर्आन शरीफ़ उस व्यक्ति को जिसका नाम हदीसों में **दज्जाल** है, शैतान ठहराता है जैसा कि वह शैतान की ओर से खोलकर वर्णन करता है -

قَالَ أَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمٍ يُبْعَثُونَ ○ قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ○^①

अर्थात् शैतान ने खुदा तआला के समक्ष कहा कि मैं उस समय तक तबाह न किया जाऊं जब तक कि वे मुझे जिनके हृदय मर गए हैं दोबारा जीवित हों। खुदा ने कहा कि मैंने तुझे उस समय तक छूट दी। अतः वह दज्जाल जिसकी हदीसों में वर्णन है वह शैतान ही है जो अन्तिम युग में वध किया जाएगा, जैसा कि दानियाल ने भी यही लिखा है तथा कुछ हदीसों में भी यही कहती हैं। चूंकि शैतान का पूर्णतम द्योतक ईसाइयत है, इसलिए सूरह फ़ातिहा में दज्जाल का तो कहीं वर्णन नहीं किन्तु ईसाइयों की उद्दण्डताओं से खुदा तआला की शरण मांगने का आदेश है। यदि दज्जाल कोई अलग उपद्रवी होता तो कुर्आन शरीफ़ में इसकी बजाए कि खुदा तआला यह फ़रमाता وَلَا الْمَالَيْنِ यह फ़रमाना चाहिए था कि لَا الدَّجَالَ तथा आयत إِلَى يَوْمٍ يُبْعَثُونَ से अभिप्राय शारीरिक प्रादुर्भाव नहीं क्योंकि शैतान केवल उस समय तक जीवित है जब तक कि लोग जीवित हैं। हां शैतान अपने तौर पर कोई कार्य नहीं करता अपितु अपने द्योतक के द्वारा करता है। अतः वे द्योतक मनुष्य को ही खुदा बनाने वाले हैं। और चूंकि वह गिरोह है इसलिए उसका नाम दज्जाल रखा गया है, क्योंकि अरबी भाषा में दज्जाल गिरोह को भी कहते हैं और यदि दज्जाल को ईसाइयत के गुमराह धर्मोपदेशकों से अलग समझा जाए तो एक भय अनिवार्य ठहरता है वह यह कि जिन हदीसों से यह ज्ञात होता है कि अन्तिम दिनों में दज्जाल समस्त विश्व पर

① अलआराफ़ 15-16

छा जाएगा उन्हीं हदीसों से यह भी ज्ञात होता है कि अन्तिम दिनों में कलीसिया की शक्ति सम्पूर्ण धर्मों पर प्रभुत्व पा जाएगी। अतः यह विरोधाभास इसके अतिरिक्त क्योंकि दूर हो सकता है कि यह दोनों एक ही वस्तु हैं।

इसके अतिरिक्त खुदा तआला जो अन्तर्यामी है, ईसाइयों के उपद्रव के बारे में कुर्आन शरीफ़ में फ़रमाता है कि निकट है कि इस से आकाश फट जाएं और पर्वत टुकड़े-टुकड़े हो जाएं परन्तु दज्जाल जो हमारे विरोधियों के कथनानुसार बड़ी धूम-धाम से खुदाई का दावा करेगा तथा संसार के समस्त उपद्रवों से उसका उपद्रव बड़ा होगा। उसके बारे में कुर्आन शरीफ़ में इतनी भी चर्चा नहीं कि उसके उपद्रव से एक छोटा पर्वत भी फट सकता है। आश्चर्य है कि कुर्आन शरीफ़ तो ईसाइयत के उपद्रव को सबसे बड़ा ठहराए तथा हमारे विरोधी किसी और दज्जाल के लिए शोर मचाएं।

ईसाई सज्जनों की ग़लती को भी देखो कि एक ओर तो हज़रत ईसा को खुदा बना दिया तथा दूसरी ओर उसके ला'नती होने का भी विश्वास है, हालांकि समस्त शब्दकोशाचार्यों की सहमति से ला'नत (अभिप्राय) एक रूहानी सज़ा है तथा मलऊन खुदा के दरबार से बहिष्कृत को कहते हैं अर्थात् जिसका रफ़ा खुदा की ओर न हो तथा जिसका खुदा से कोई हार्दिक प्रेम या आज्ञापालन का सम्बन्ध शेष न रहे और खुदा उससे अप्रसन्न हो जाए और वह खुदा से अप्रसन्न हो जाए। इसीलिए शैतान का नाम लईन (फटकारा हुआ) है। अतः क्या कोई बुद्धिमान कह सकता है कि हज़रत ईसा का हार्दिक सम्बन्ध खुदा तआला से बिल्कुल टूट गया था तथा वह उन से खिन्न हो गया था। विचित्र बात यह है कि एक ओर तो ईसाई सज्जन इंजीलों के सन्दर्भ से यह कहते हैं कि हज़रत ईसा की इस घटना को यूनस^अ तथा इस्हाक़ की घटना से समानता थी फिर स्वयं ही इस समानता के विपरीत आस्था रखते हैं। क्या वे हमें बता सकते हैं कि यूनस^अ नबी ने मछली के पेट में मुर्दा होने की अवस्था में प्रवेश किया था तथा मुर्दा होने की अवस्था में उसके पेट के अन्दर दो या तीन दिन तक रहा। अतः यूनस

से यीशू (ईसा^{अ.}) की क्या समानता हुई, जीवित को मृत से क्या समानता ? क्या ईसाई हमें बता सकते हैं कि इस्हाक़ वास्तव में जिंदा हो कर फिर जीवित किया गया था। यदि यह बात नहीं है तो फिर यीशू की घटना को इस्हाक़ की घटना से क्या समानता ?

फिर यीशू मसीह इंजील में कहता है कि यदि तुम में राई के दाने जितना भी ईमान हो तो तुम यदि पर्वत को यह कहो कि यहां से वहां चला जा तो ऐसा ही होगा, किन्तु यीशू की सारी दुआ जो अपने प्राणों की रक्षा के लिए की गई थी व्यर्थ गई। अब देखिए कि इंजील की दृष्टि से यीशू के ईमान की क्या दशा है। यह कदापि उचित नहीं है कि यीशू मसीह की यह दुआ थी कि मैं सलीब पर मर तो जाऊं, किन्तु घबराहट न हो। क्या बाग़ वाली दुआ केवल घबराहट दूर करने के लिए थी ? यदि यही बात थी तो सलीब पर लटकाए जाने के समय क्यों कहा था कि 'ईली-ईली लिमा सबक्रतनी'। क्या यह वाक्य सिद्ध करता है कि उस समय घबराहट दूर हो चुकी थी। गढ़ी हुई बात कहां तक चल सकती है। यीशू की दुआ में स्पष्टतः यह शब्द हैं कि यह प्याला मुझ से टल जाए। अतः ख़ुदा ने वह प्याला टाल दिया तथा ऐसा सामान पैदा कर दिया कि जो प्राण बच जाने के लिए पर्याप्त थे। जैसे कि यह बात कि यीशू मसीह नियमानुसार छः-सात दिन सलीब पर नहीं रखा गया अपितु उसी समय उतारा गया और उसकी हड्डियां नहीं तोड़ी गई जिस प्रकार कि अन्य लोगों की हड्डियां हमेशा तोड़ी जाती थीं तथा यह बात अनुमान के विरुद्ध है कि इतने हल्के से कष्ट से प्राण निकल जाएं।

हमारे विरोधियों की यह आस्था कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम सलीब से सुरक्षित रह कर पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चढ़ गए। यह ऐसी आस्था है जिससे कुर्आन शरीफ़ पर बहुत बड़ा ऐतराज़ पड़ता है, क्योंकि कुर्आन शरीफ़ प्रत्येक स्थान पर ईसाइयों के ऐसे दावों को जिन से हज़रत ईसा^{अ.} की ख़ुदाई सिद्ध की जाती है खण्डन करता है जैसा कि कुर्आन शरीफ़ ने हज़रत ईसा का बिना बाप पैदा होना जिस से उनकी ख़ुदाई पर प्रमाण प्रस्तुत किया जाता था) यह कह

कर खण्डन किया कि إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ ۖ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ ۖ كُنْ فَيَكُونُ^① फिर यदि हजरत ईसा वास्तव में पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चढ़ गए थे और फिर उतरने वाले हैं तो यह तो उनकी ऐसी विशेषता थी कि बिना बाप पैदा होने से अधिक धोखे में डालती थी। अतः उत्तर दो कि कुर्आन शरीफ़ ने कहाँ इसका उदाहरण प्रस्तुत करके इसका खण्डन किया है। क्या खुदा तआला इस विशेषता का खण्डन करने से असमर्थ रहा।

हम पुनः पिछले वर्णन की ओर लौटते हुए कहते हैं कि सहाबा^{रजि.} की जिस बात पर सामूहिक तौर पर आस्था थी वह यही बात थी कि समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं तथा कोई जीवित नहीं। इसी आस्था पर समस्त सहाबा^{रजि.} ने मृत्यु पाई। यह आस्था कुर्आन शरीफ़ के स्पष्ट आयतों के अनुसार थी।

तत्पश्चात् सहाबा^{रजि.} का यह दावा करना कि किसी समय इस उम्मत की इस बात पर सर्वसम्मति हुई थी^② कि हजरत ईसा पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर जीवित मौजूद हैं, इस से बड़ा कोई झूठ नहीं होगा तथा ऐसे व्यक्ति पर इमाम अहमद बिन हंबल का कथन चरितार्थ होता है कि जो व्यक्ति सहाबा के किसी मामले में सर्वसम्मति का दावा करे वह बहुत झूठा है।

अपितु वास्तविकता यह है कि तीन शताब्दियों के बाद दयनीय उम्मत तिहत्तर सम्प्रदायों में विभाजित हो गई तथा उनमें एक-दूसरे के खिलाफ़ भिन्न-भिन्न प्रकार की सैकड़ों आस्थाएं फैल गई, यहां तक कि ये आस्थाएं कि महदी प्रकट होगा तथा मसीह आएगा। इनमें भी एक बात पर सहमत नहीं रहे। अतः शियों का महदी

① आले इमरान - 60

② स्मरण रहे कि यह बात भी किसी ठोस आयत अथवा सहीह एवं मफ़ूअ-मुत्तसिल हदीस से सिद्ध नहीं कि हजरत ईसा वास्तव में पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठाए गए थे। इसलिए जिसका उठाया जाना सिद्ध नहीं उसके पुनरागमन की आशा रखना मात्र झूठी अभिलाषा है। प्रथम हजरत ईसा का आकाश पर जाना किसी प्रमाण सिद्ध आयत या सहीह, मफ़ूअ-मुत्तसिल हदीस से सिद्ध करो अन्यथा निराधार विरोध संयम से दूर है। इसी से।

तो एक गुफा में छुपा हुआ है जिसके पास असल कुर्आन शरीफ़ है, वह उस समय प्रकट होगा जबकि सहाबा भी नए सिरे से जीवित किए जाएंगे तथा वह उनसे खिलाफ़त के छीनने का प्रतिकार लेगा तथा सुन्नियों का महदी भी उनके कथनानुसार निश्चित तौर पर किसी ख़ानदान में से पैदा होने वाला नहीं और न निश्चित तौर पर ईसा^{अ.} के युग में प्रकट होने वाला है। कुछ कहते हैं कि बनी फ़ातिमा^{रजि.} (हज़रत फ़ातिमा^{रजि.} की सन्तान) में से पैदा होगा तथा कुछ का कहना है कि अब्बास की सन्तान में से होगा तथा कुछ का एक हदीस के अनुसार यह विचार है कि उम्मत में से एक व्यक्ति है, फिर कुछ कहते हैं कि महदी का आना मध्यवर्ती युग में अवश्य है तथा मसीह मौऊद उसके पश्चात् आएगा, वे इस पर हदीसों प्रस्तुत करते हैं तथा कुछ का यह कथन है कि मसीह मौऊद महदी दो अलग-अलग व्यक्ति नहीं अपितु वही मसीह-महदी है तथा इस कथन पर لامهدي الا عیلى की हदीस प्रस्तुत करते हैं। फिर दज्जाल के बारे में कुछ लोगों का विचार है कि इब्ने सय्याद ही दज्जाल^① है और वह गुप्त है, अन्तिम युग में प्रकट होगा जबकि वह बेचारा मुसलमान हो चुका था उसकी मृत्यु इस्लाम पर हुई और मुसलमानों ने उसका जनाज़ा पढ़ा। कुछ का कहना है कि दज्जाल कलीसिया में बन्दी है अर्थात् किसी गिरजे में कैद है और अन्त में उसी में से निकलेगा। यह अन्तिम कथन तो उचित था, किन्तु खेद के इसके अर्थ स्पष्ट होने के बावजूद बिगाड़ दिए गए। इस में क्या सन्देह है कि दज्जाल जिस से अभिप्राय ईसाइयत का भूत है एक अवधि तक गिरजे में कैद रहा है तथा अपने दज्जाल संबंधी कामों से रुका रहा है, परन्तु अब अन्तिम युग में उसने कैद से पूर्णतया छुटकारा पाया है, उसका मुँह खोल दिया गया है ताकि जो-जो हमले उसके सामर्थ्य में हैं कर गुज़रे। कुछ का विचार है कि दज्जाल मानव-प्रजाति में से नहीं अपितु शैतान का नाम है^② तथा कुछ हज़रत

① इब्ने सय्याद का हज करना भी सिद्ध है तथा मुसलमान भी था, किन्तु हज करने तथा मुसलमान होने के बावजूद दज्जाल के नाम से बच न सका। इसी से।

② इस शैतान का नाम दूसरे शब्दों में ईसाइयत का भूत है। यह भूत हज़रत मुहम्मद^{स.अ.व.} के युग में

ईसा के बारे में विचार रखते हैं कि वह जीवित आकाश पर मौजूद है तथा मुसलमानों के कुछ सम्प्रदाय जिन्हें मो'तजिला कहते हैं हज़रत ईसा की मृत्यु को मानते हैं और कुछ सूफ़ियों की हमेशा से यह विचारधारा है कि आने वाले मसीह से अभिप्राय कोई उम्मत मनुष्य है जो इसी उम्मत में से पैदा होगा। अब तनिक ध्यानपूर्वक गौर करके देख लो कि मसीह, महदी और दज्जाल के बारे में इस उम्मत में कितना मतभेद है तथा आयत ¹ كُلِّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ के अनुसार प्रत्येक अपनी आस्था के बारे में सर्वसम्मति का दावा कर रहा है। अतः वास्तविकता यह है कि जब किसी शरीअत में बहुत से मतभेद पैदा हो जाएं तो वही मतभेद स्वाभाविक तौर पर चाहते हैं कि उनके निर्णय के लिए कोई व्यक्ति ख़ुदा की ओर से आए, क्योंकि हमेशा से यही ख़ुदा का नियम है। जब यहूदियों में बहुत से मतभेद पैदा हुए तो उनके लिए हज़रत ईसा हक़म (न्यायक) बन कर आए और जब ईसाइयों और यहूदियों के परस्पर विवाद बढ़ गए तो उनके लिए हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ^{स.अ.व.} ख़ुदा तआला की ओर से हक़म (न्यायक) नियुक्त होकर अवतरित हुए।

अब इस युग में संसार मतभेदों से भर गया। एक ओर यहूदी कुछ कहते हैं तथा ईसाई कुछ प्रकट करते हैं तथा उम्मत मुहम्मदिया में अलग परस्पर मतभेद हैं तथा दूसरे मुश्रिक सभी के विरुद्ध रायें प्रकट करते हैं और इतने नए धर्म एवं आस्थाएं पैदा हो गई हैं कि मानो प्रत्येक मनुष्य एक विशेष धर्म रखता है। इसलिए अल्लाह तआला के विधान के अनुसार आवश्यक था कि इन सब मतभेदों का फैसला करने

ईसाई गिरजे में कैद था तथा केवल जासूसी के द्वारा इस्लामी ख़बरें मालूम करता था फिर तीन सदियों के पश्चात् नबियों की भविष्यवाणियों के अनुसार इस भूत ने छुटकारा पाया तथा प्रतिदिन अधिक शक्तिशाली होता गया। यहां तक कि तेरहवीं सदी हिज़्री में वह बड़े जोर से निकला। इसी भूत का नाम दज्जाल है जिसने समझना हो समझ ले तथा इसी भूत से ख़ुदा तआला ने सूरह फ़ातिहा के अन्त में وَلَا الضَّالِّينَ की दुआ में डराया है। इसी से।

के लिए कोई हकम आता। अतः इसी हकम का नाम मसीह मौऊद तथा महदी मसऊद रखा गया अर्थात् बाह्य विवादों का निर्णय करने की दृष्टि से उसका नाम मसीह ठहरा तथा आन्तरिक झगड़ों का निर्णय करने की दृष्टि से उसे महदी मा'हूद कहकर पुकारा गया। यद्यपि इस बारे में खुदा की सुन्नत इतनी निरन्तर थी कि कुछ आवश्यक न था कि हदीसों के द्वारा यह प्रकट किया जाता है कि एक व्यक्ति हकम होकर आएगा जिसका नाम मसीह होगा, परन्तु हदीसों में यह भविष्यवाणी मौजूद है कि वह मसीह मौऊद जो इसी उम्मत में से होगा। वह खुदा तआला की ओर से हकम होगा अर्थात् जितने बाह्य एवं आन्तरिक विवाद मौजूद हैं उन्हें दूर करने के लिए खुदा उसे भेजेगा और वही आस्था सच्ची होगी जिस पर वह क़ायम किया जाएगा क्योंकि खुदा उसे सत्य पर स्थापित करेगा और वह जो कुछ कहेगा पूर्ण विवेक से कहेगा तथा किसी सम्प्रदाय का अधिकार नहीं होगा कि अपनी आस्थाओं के मतभेद के कारण उस से बहस करे, क्योंकि उस युग में भिन्न-भिन्न आस्थाओं के कारण प्रतिलिपित मामले जिनकी कुर्आन शरीफ़ में व्याख्या नहीं संदिग्ध हो जाएंगे तथा मतभेदों की अधिकता के कारण समस्त आन्तरिक तौर पर झगड़ने वाले अथवा बाह्य तौर पर मतभेद करने वाले एक हकम के मुहताज होंगे जो आकाशीय साक्ष्य से अपनी सच्चाई प्रकट करेगा जैसा कि हज़रत ईसा के समय में हुआ। फिर इसके बार आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में हुआ अतः अन्तिम मौऊद के समय में भी ऐसा ही होगा।

यहां इस खुदा की सुन्नत को भी स्मरण रखना चाहिए कि खुदा तआला की ओर से जो कोई भविष्यवाणी किसी महान रसूल के आने के लिए होती है। उसमें अवश्य ही कुछ लोगों के लिए एक आजमाइश भी गुप्त होती है जैसा कि हज़रत ईसा के लिए यहूदियों की पुस्तकों में भविष्यवाणी की गई है कि वह उस समय आएगा जबकि इल्यास नबी दोबारा आकाश से उतरेगा। यह भविष्यवाणी मलाकी नबी की किताब में अब तक मौजूद है। अतः यह भविष्यवाणी यहूदियों के लिए बहुत बड़ी ठोकर का कारण हुई और वे अब तक प्रतीक्षा में हैं कि इल्यास नबी

आकाश से उतरेगा तथा आवश्यक है कि वह पहले उतरे और फिर उनका सच्चा मसीह आएगा, किन्तु अब तक न इल्यास दोबारा पृथ्वी पर उतरा और न ऐसा मसीह आया जो इस शर्त को पूरा करता।

इसी प्रकार हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा^{स.अ.व.} के संबंध में तौरात में यह भविष्यवाणी थी कि वह यहूदियों के खानदान अर्थात् इब्राहीम की सन्तान में से पैदा होंगे तथा उन्हीं में से और उन्हीं के भाइयों में से उनका प्रादुर्भाव होगा। समस्त नबियों ने जो बनी इस्राईल में आते रहे, इस भविष्यवाणी के यही अर्थ समझते थे कि वह अन्तिम युग का नबी बनी इस्राईल में से पैदा होगा, परन्तु वह अन्तिम नबी बनी इस्राईल में से पैदा हो गया तथा यह बात यहूदियों के लिए बड़ी ठोकर का कारण हुई। यदि तौरात में स्पष्ट तौर पर ये शब्द होते कि वह नबी बनी इस्राईल में से आएगा तथा उसका जन्म स्थान मक्का होगा और उसका नाम मुहम्मद होगा^{स.अ.व.}, तथा उसके बाप का नाम अब्दुल्लाह होगा तो यह उपद्रव यहूदियों में कदापि न होता।

इसलिए जब कि इस बात के लिए दो उदाहरण मौजूद हैं कि ऐसी भविष्यवाणियों में खुदा तआला को अपने बन्दों की कुछ परीक्षा भी अभीष्ट होती है तो फिर आश्चर्य कि किस प्रकार हमारे विरोधी बहुत से मतभेदों के बावजूद जो मसीह मौजूद के बारे में प्रत्येक सम्प्रदाय की हदीसों में पाए जाते हैं तथा सर्वसम्मति से उसे उम्मीती भी ठहरा दिया गया है, इस बात पर सन्तुष्ट हैं कि मसीह अवश्य आकाश से ही उतरेगा, हालांकि आकाश से उतरना स्वयं अनुचित तथा कुर्आन^① के स्पष्ट आदेश के विरुद्ध है। खुदा तआला फ़रमाता है -

قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيَ هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا رَسُولًا^②

① किसी सही, मफ़ू-मुत्तसिल हदीस से सिद्ध नहीं कि ईसा आकाश से उतरेगा। रहा 'नुज़ूल' (उतरना) का शब्द तो यह मान-सम्मान के लिए आता है। जैसा कि कहते हैं कि अमुक सेना अमुक स्थान पर उतरी है। इसीलिए 'नज़ील' यात्री को कहते हैं। अतः केवल नुज़ूल के शब्द से आकाश समझ लेना अधम श्रेणी की नादानी है। इसी से।

② बनी इस्राईल - 94

अतः यदि मनुष्य के पार्थिव शरीर का आकाश पर चढ़ाना खुदा के स्वभाव में सम्मिलित था। अतः यहां काफ़िर कुरैश को क्यों इन्कार के साथ उत्तर दिया गया। क्या ईसा मनुष्य नहीं था और आंज्रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मनुष्य हैं और क्या खुदा तआला को हज़रत ईसा को आकाश पर चढ़ाने के समय वह वादा स्मरण न रहा कि -

الْمُنْجَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ۝ أَحْيَاءُ وَأَمْوَاتًا ①

किन्तु आंज्रत^{स.अ.व.} के आकाश पर चढ़ने का जब प्रश्न किया गया तो वह वादा याद आ गया और जिसे खुदा की किताब का ज्ञान है वह भली भांति जानता है कि कुरआन शरीफ़ ने अपने कथन से हज़रत ईसा की मृत्यु की साक्ष्य दे दी है तथा आंज्रत^{स.अ.व.} ने अपने आध्यात्मिक अवलोकन के बाद इसी साक्ष्य को अदा कर दिया है अर्थात् वर्णन कर दिया है कि आप ने हज़रत मसीह को स्वर्गीय (मृत्यु प्राप्त) नबियों की जमाअत में देखा है। फिर इन दो साक्ष्यों के बावजूद तीसरी साक्ष्य खुदा से इल्हाम पाकर मेरी है। यदि मेरे लिए इल्हाम के निशान प्रकट नहीं हुए तथा आकाश एवं पृथ्वी ने मेरी साक्ष्य नहीं दी तो मैं झूठा हूँ, परन्तु यदि मेरे लिए खुदा के निशान प्रकट हुए हैं तथा युग ने मेरी आवश्यकता को प्रकट कर दिया है तो मेरा इन्कार तेज़ तलवार की धार पर हाथ मारना है।

मेरे ही युग में रमज़ान के महीने में सूर्य तथा चन्द्र ग्रहण हुआ, मेरे ही युग में देश पर सही हदीसों तथा कुरआन शरीफ़ और पहली पुस्तकों के अनुसार ताऊन (Plague) आई तथा मेरे ही युग में नवीन सवारी अर्थात् रेल जारी हुई और मेरे ही युग में मेरी भविष्यवाणियों के अनुसार भयानक भूकम्प आए तो फिर क्या संयम की मांग न थी कि मुझे झुठलाने पर दिलेरी न की जाती?

देखो मैं खुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूँ कि मेरे सत्यापन के लिए हज़ारों निशान प्रकट हुए हैं और हो रहे हैं तथा भविष्य में होंगे। यदि यह मनुष्य की योजना होती तो खुदा का इतना समर्थन एवं सहायता कदापि न होती तथा यह

① अलमुरसलात - 26,27

बात न्याय एवं ईमान के विपरीत है कि हज़ारों निशानों में से जो प्रकट हो चुके केवल एक या दो बातें लोगों को धोखा देने के लिए प्रस्तुत करना कि अमुक-अमुक भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। हे नादानो ! तथा बुद्धि के अंधो ! तथा न्याय एवं ईमानदारी से दूर रहने वालो ! हज़ारों भविष्यवाणियों में से यदि एक या दो भविष्यवाणियों का पूरा होना तुम्हारी समझ में नहीं आ सका तो क्या तुम इस बहाने से खुदा तआला के समक्ष विवश ठहर जाओगे।^① पापों से क्षमा मांगो कि खुदा के दिन समीप हैं तथा वे निशान प्रकट होने वाले हैं जो पृथ्वी को हिला देंगे।

यह तो खुदा के निशान हैं जो मैं प्रस्तुत करता हूं, किन्तु तुम विचार करो कि इस विरोध में तुम्हारे हाथ में कौन सा प्रमाण है इसके अतिरिक्त कि ऐसी हदीसें प्रस्तुत करते हो जिन के विपरीत कुआन शरीफ़ साक्ष्य देता है तथा जिन की विरोधी हदीसें भी मौजूद हैं तथा जिन के विपरीत घटनाएं अपना चेहरा दिखा रही हैं, वह दज्जाल कहां है ? जिस से तुम डराते हो, परन्तु لاَ الظَّالِمِينَ वाला दज्जाल दिन-प्रतिदिन संसार में उन्नति कर रहा है तथा समीप है कि आकाश तथा पृथ्वी उसके उपद्रव से फट जाएं। अतः यदि तुम्हारे हृदयों में खुदा का भय होता तो सूरह फ़ातिहा पर विचार करना ही तुम्हारे लिए पर्याप्त था। क्या यह संभव न था कि जो कुछ तुम ने मसीह मौऊद की भविष्यवाणी के अर्थ समझे हैं वे सही न हों। क्या इन ग़लतियों के नमूने यहूदियों तथा ईसाइयों में मौजूद नहीं हैं फिर तुम क्योंकर ग़लती से बच सकते हो तथा क्या खुदा का यह स्वभाव नहीं है कि कभी वह ऐसी भविष्यवाणियों से अपने भक्तों की परीक्षा भी लिया करता है, जैसा कि तौरात तथा मलाकी नबी की भविष्यवाणी से तथा इन्जील की भविष्यवाणी से यहूदियों तथा

① यदि खुदा तआला के निशानों को जो मेरे समर्थन में प्रकट हो चुके हैं। आज के दिन तक गणना की जाए तो वे तीन लाख से भी अधिक होंगे। फिर यदि इतने अधिक निशानों में से दो तीन निशान किसी विरोधी की दृष्टि में संदिग्ध हैं तो उनके बारे में शोर करना तथा इतने अधिक निशानों से लाभ न उठाना क्या उन लोगों का यही संयम है ? क्या नबियों की भविष्यवाणियों में इसका उदाहरण नहीं मिलता ? इसी से।

ईसाइयों को परीक्षा में डाला गया। इसलिए संयम की परिधि से बाहर कदम न रखो। क्या जैसा कि यहूदियों तथा उनके नबियों ने समझा था अन्तिम नबी बनी इस्त्राईल में से आया या इल्यास नबी दोबारा पृथ्वी पर आ गया ? कदापि नहीं अपितु यहूदियों ने दोनों स्थान पर गलती खाई है। अतः तुम डरो क्योंकि खुदा तआला तुम्हें सूरह फ़ातिहा में डराता है कि ऐसा न हो कि तुम यहूदी बन जाओ। यहूदी भी तुम्हारे दावे की तरह प्रत्यक्ष शब्दों को खुदा की किताब से लिया करते थे, किन्तु हकम की बात को न मानने के कारण तथा उसके निशानों से कुछ लाभ न उठाया, हिसाब-किताब की पकड़ में आ गए तथा उन का कोई बहाना न सुना गया।

यह बात भी स्मरण रखने योग्य है कि आंहज़रत^{स.अ.व.} हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से सातवीं शताब्दी ई. पर अवतरित हुए थे, क्योंकि खुदा तआला ने देखा कि सातवीं शताब्दी ई. तक ईसाइयों तथा यहूदियों में बहुत अधिक गुमराही पैदा हो गई थी। अतः खुदा तआला ने दोनों क्रौमों के लिए आंहज़रत^{स.अ.व.} को बतौर हकम अवतरित किया, परन्तु जो मुसलमानों के लिए हकम निर्धारित था उसके प्रादुर्भाव की अवधि पहली अवधि से दोगुनी की गई अर्थात् चौदहवीं सदी। यह इस बात की ओर संकेत था कि ईसाई तो केवल सातवीं शताब्दी तक बिगड़ गए परन्तु मुसलमानों की दशा में इस अवधि के दोगुने भाग में पहुंचकर खराबी आएगी तथा चौदहवीं सदी हिज्री के सर पर उनका हकम प्रकट होगा।

फिर हम अपने पहले वर्णन की ओर लौटते हुए लिखते हैं कि जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं। वह्यी के तीन प्रकारों में से सर्वोपरि वह्यी वह है जो ज्ञान के तीसरे प्रकार में सम्मिलित है जिसे पाने वाला खुदा के प्रकाशों में पूर्णरूपेण डूबा होता है और इस तीसरे प्रकार को ठोस विश्वास की संज्ञा दी जाती है। अभी हम वर्णन कर चुके हैं कि वह्यी या स्वप्न का प्रथम प्रकार केवल किसी वस्तु के अनुमान द्वारा विश्वास तक पहुंचाता है। जिस प्रकार कि एक व्यक्ति अंधकारमय रात्रि में एक धुआं देखता है तथा उस से अनुमान के तौर पर सिद्ध करता है कि

उस स्थान पर अग्नि होगी तथा वह तर्क कदापि विश्वसनीय नहीं होता, क्योंकि संभव है कि वह धुआं न हो अपितु ऐसी धूल हो जो धुएं से समानता रखती हो या धुआं तो हो किन्तु वह एक ऐसी पृथ्वी से निकलता हो जिसमें कोई अग्नितत्त्व विद्यमान हो। अतः यह ज्ञान एवं बुद्धिमान को उसके अनुमानों से छुटकारा प्रदान नहीं कर सकता अपितु केवल एक विचार है जो अपने ही मस्तिष्क में उत्पन्न होता है। अतः इस ज्ञान की सीमा तक उन लोगों के स्वप्न तथा इल्हाम जो मात्र मस्तिष्क की बनावट के कारण उनको आते हैं, उनमें कोई व्यावहारिक अवस्था मौजूद नहीं। यह तो अनुमान द्वारा विश्वास का उदाहरण है तथा जिस व्यक्ति के स्वप्न एवं इल्हाम का उद्गम यही श्रेणी है उसके हृदय पर अधिकतर शैतान का आधिपत्य रहता है और उसे गुमराह करने के लिए वह शैतान प्रायः ऐसा स्वप्न या इल्हाम प्रस्तुत कर देता है जिन के कारण वह स्वयं को क्रौम का पेशवा या रसूल कहता है तथा तबाह हो जाता है। जैसा कि जम्मू का निवासी दुर्भाग्यशाली **चिरागदीन** जो पहले मेरी जमाअत में सम्मिलित था, इसी कारण तबाह हुआ तथा उसे शैतानी इल्हाम हुआ कि वह रसूल है तथा ख़ुदा के भेजे हुएों में से है, उसे हज़रत ईसा ने एक डंडा दिया है ताकि उस से दज्जाल का वध करे और उसने मुझे दज्जाल ठहराया। अन्ततः उस भविष्यवाणी के अनुसार जो पुस्तक **“दाफ़िउल-बला व मै'आरु अहलिल इस्तिफ़ा”** में लिखित मौजूद है अपने दोनों पुत्रों सहित ताऊन से युवावस्था में मरा तथा मृत्यु के दिनों के निकट उसने यह लेख भी मुबाहले के तौर पर मेरा नाम लेकर प्रकाशित किया कि हम दोनों में से जो झूठा है ख़ुदा उस को तबाह कर दे। अतः वह स्वयं 4 अप्रैल 1906 ई. को अपने दोनों पुत्रों सहित ताऊन से मृत्यु के घाट उतर गया। अतः हे मुल्हमों के गिरोह ख़ुदा से डरो।

दूसरी अवस्था वह है कि जैसे मनुष्य अंधकारमय रात्रि के समय तथा सख्त सर्दी में दूर से एक प्रकाश को देखता है और वह प्रकाश उसे सद्मार्ग देखने में सहायता देता है किन्तु सर्दी को दूर नहीं कर सकता। इस श्रेणी का नाम आंखों द्वारा देखा विश्वास है तथा इस श्रेणी का ज्ञान रखने वाला ख़ुदा तआला से संबंध

तो रखता है, परन्तु वह संबंध पूर्णतम नहीं होता। इस उपरोक्त श्रेणी पर शैतानी इल्हामों की अधिकता होती है, क्योंकि अभी ऐसे व्यक्ति को जितना शैतान से सम्बन्ध होता है उतना खुदा तआला से संबंध नहीं होता।

तीसरी अवस्था वह है कि जब मनुष्य अंधकारमय रात्रि एवं कड़ी सर्दी में न केवल अग्नि का प्रकाश पाता है अपितु उस अग्नि के घेरे के अन्दर प्रवेश कर जाता है तथा उसे आभास हो जाता है कि वास्तव में अग्नि यह है तथा उससे अपनी सर्दी को दूर करता है। यह वह पूर्णतम श्रेणी है जिसके साथ अनुमान इकट्ठा नहीं हो सकता तथा यही वह श्रेणी है जो मानवता की सर्दी और संकीर्णता को पूरी तरह दूर करती है इस अवस्था का नाम **अनुभव द्वारा दृढ़ विश्वास** (हक्कुल् यक्कीन) है। यह श्रेणी केवल सानिध्य प्राप्त लोगों को मिलती है जो खुदा की झलकियों की परिधि के अन्दर प्रवेश कर जाते हैं तथा उनकी ज्ञान एवं व्यवहार संबंधी दोनों अवस्थाएं ठीक हो जाती हैं। इस श्रेणी से पूर्व न ज्ञान संबंधी अवस्था पूर्णता को पहुंचती है और न व्यावहारिक अवस्था पूर्ण होती है तथा इस श्रेणी को पाने वाले वही लोग होते हैं जो खुदा तआला से पूर्ण संबंध रखते हैं तथा वास्तव में वह्यी का शब्द उन्हीं की वह्यी पर बोला जाता है क्योंकि वह शैतानी हस्तक्षेप से सुरक्षित होती है तथा वह अनुमान की श्रेणी पर नहीं होती अपितु निश्चित एवं दृढ़ होती है तथा वह प्रकाश होता है जो उन्हें खुदा की ओर से मिलता है, उनके साथ हजारों बरकतें होती हैं तथा उन्हें वास्तविक विवेक प्राप्त होता है, क्योंकि वे दूर से नहीं देखते अपितु प्रकाश की परिधि के अन्दर प्रविष्ट किए जाते हैं। उनके हृदय का खुदा से एक व्यक्तिगत संबंध होता है। इसीलिए जिस प्रकार खुदा तआला अपने लिए एक बात चाहता है कि वह पहचाना जाए इसी प्रकार उनके लिए भी यही चाहता है कि उसके बन्दे उसको पहचान लें। अतः इसी उद्देश्य से वह उनके समर्थन एवं सहायता में बड़े-बड़े निशान प्रकट करता है। प्रत्येक जो उनका मुक्राबला करता है तबाह होता है, प्रत्येक जो उनसे शत्रुता करता है अन्ततः मिट्टी में मिलाया जाता है तथा खुदा उनकी प्रत्येक बात में तथा गतिविधियों में तथा उनके

लिबास में बरकतें रख देता है और उनके मित्रों का मित्र तथा उनके शत्रुओं का शत्रु बन जाता है, पृथ्वी तथा आकाश को उनकी सेवा में लगा देता है तथा जिस प्रकार पृथ्वी एवं आकाश की सृष्टियों पर दृष्टि डालकर स्वीकार करना पड़ता है कि इन सृष्टियों का एक ख़ुदा है उसी प्रकार उन समस्त सहायताओं एवं समर्थनों तथा निशानों पर दृष्टि डालकर जो उनके लिए ख़ुदा तआला प्रकट करता है स्वीकार करना पड़ता है कि वे ख़ुदा के मान्य हैं। अतः वे उन समर्थनों, सहायताओं एवं निशानों से पहचाने जाते हैं क्योंकि वे इस प्रचुरता और शुद्धता से होते हैं कि उनमें उनका कोई अन्य भागीदार हो ही नहीं सकता।

इसके अतिरिक्त जिस प्रकार ख़ुदा तआला चाहता है कि अपनी स्वाभाविक विशेषताओं से हृदयों में अपना प्रेम स्थापित कर दे इसी प्रकार उनकी स्वाभाविक विशेषताओं में इतने चमत्कारिक प्रभाव रख देता है कि हृदय उनकी ओर खिंचे चले आते हैं। वे बड़े अद्भुत लोग हैं कि मृत्योपरान्त जीवित होते हैं तथा खोने के पश्चात् पाते हैं तथा इतने जोर से श्रद्धा तथा वफ़ा के मार्गों पर चलते हैं कि उनके साथ ख़ुदा का एक अलग स्वभाव हो जाता है कि मानो उनका ख़ुदा एक अलग ख़ुदा है जिन से संसार अपरिचित है तथा उन से ख़ुदा तआला के वे व्यवहार होते हैं जो वह दूसरों से कदापि नहीं करता जैसा कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम चूंकि सच्चा एवं ख़ुदा तआला का वफ़ादार बन्दा था, इसलिए प्रत्येक परीक्षा के समय ख़ुदा ने उसकी सहायता की जबकि वह अत्याचार से अग्नि में डाला गया। ख़ुदा ने उसके लिए अग्नि को ठण्डा कर दिया तथा जब एक दुष्चरित्र राजा उनकी पत्नी से बुरा इरादा रखता था तो ख़ुदा ने उसके उन हाथों पर विपत्ति उतारी जिनके द्वारा वह अपने दूषित इरादों को पूर्ण करना चाहता था। फिर जब कि इब्राहीम^{अ.} ने ख़ुदा के आदेश से अपने प्रिय पुत्र को जो इस्माईल था ऐसी पहाड़ियों में डाल दिया जिन में न पानी न अन्न था तो ख़ुदा ने परोक्ष से उसके लिए पानी तथा भोजन का सामान पैदा कर दिया।

स्पष्ट है कि बहुत से लोग ऐसे हैं कि अत्याचारी लोग उन्हें तबाह कर देते हैं

तथा अग्नि में डालते और पानी में डुबो देते हैं तथा उन्हें खुदा की ओर से कोई सहायता नहीं पहुंचती, यद्यपि वे सदाचारी भी होते हैं तथा कई लोग ऐसे हैं कि कमीने लोग उनकी स्त्रियों से बलात्कार करते हैं तथा कई ऐसे लोग हैं जिनकी सन्तान किसी जंगल में पानी के लिए तरसते-तरसते मर जाती है तथा उनके लिए परोक्ष से कोई आबे ज़मज़म पैदा नहीं होता। अतः इससे समझा जाता है कि खुदा तआला का मामला प्रत्येक व्यक्ति से संबंध के अनुसार होता है तथा यद्यपि खुदा के प्रेमियों पर संकट भी आते हैं परन्तु खुदा की सहायता विशेष तौर पर उनके साथ होती है तथा खुदा का स्वाभिमान कदापि-कदापि सहन नहीं करता कि उनको अपमानित एवं लज्जित करे तथा उसका प्रेम सहन नहीं करता कि उनका नाम संसार से मिटा दे।

चमत्कारों का मूल भी यही है कि जब मनुष्य अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ खुदा का हो जाता है तथा उसमें और उसके रब्ब में कोई बाधा शेष नहीं रहती तथा वह वफ़ा और निष्ठा की उन समस्त श्रेणियों को पूर्ण करके दिखाता है जो बाधाओं को दूर करने वाली हैं। तब वह खुदा तथा उसकी कुदरतों का वारिस ठहराया जाता है और खुदा तआला भांति-भांति के निशान उसके लिए प्रकट करता है जो कि कुछ बुराई दूर करने के लिए होते हैं और कुछ बतौर भलाई पहुंचाने और कुछ उसके स्वयं से संबंध रखने वाले होते हैं, कुछ उसके मित्रों के संबंध में, कुछ उसके दुश्मनों के संबंध में कुछ उसके देशवासियों के संबंध में कुछ विश्वव्यापी कुछ पृथ्वी तथा कुछ आकाश के संबंध में। अतः कोई निशान ऐसा नहीं होता जो उसके लिए दिखाया नहीं जाता तथा यह स्तर कठिन नहीं। अन्य किसी बहस की यहां आवश्यकता नहीं, क्योंकि यदि वास्तव में किसी व्यक्ति को यह तीसरी श्रेणी प्राप्त हो गई है जिसका वर्णन हो चुका है तो संसार कदापि उसका मुकाबला नहीं कर सकता। प्रत्येक जो उस पर गिरेगा चूर-चूर हो जाएगा तथा जिस पर वह गिरेगा उसे टुकड़े-टुकड़े कर देगा, क्योंकि उसका हाथ खुदा का हाथ तथा उस का मुख खुदा का मुख होता है तथा उसका वह स्थान है जिस तक कोई नहीं

पहुंच सकता। यह स्पष्ट है यद्यपि रुपया-पैसा अधिकतर लोगों के पास (जो धनवान हैं) होता है, परन्तु यदि वह धृष्टता करके बादशाह का मुकाबला करें जिसके खजाने पूरब एवं पश्चिम में पड़े हुए हैं तो ऐसे मुकाबले का परिणाम अपमान के अतिरिक्त क्या होगा ? ऐसे लोग तबाह होंगे तथा उनके वे थोड़े से रुपये-पैसों पर भी कब्जा कर लिया जाएगा।

सम्मान वाला नाम खुदा का है वह अपना सम्मान किसी को नहीं देता, किन्तु उन्हें जो उसके प्रेम में खोए गए हैं। जाहिर (प्रकट) खुदा का नाम है, वह अपना प्रकटन किसी को प्रदान नहीं करता, किन्तु उन्हीं को जो उसके लिए उसके एकत्व तथा अकेला होने के स्थान पर हैं तथा उसकी मित्रता में ऐसे लीन हुए हैं जो अब उसकी विशेषताओं के स्थान पर हैं, वह उन्हें प्रकाश प्रदान करता है अपने प्रकाश में से तथा ज्ञान देता है अपने ज्ञान में से। तब वे अपने पूर्ण हृदय, समस्त प्राण तथा सम्पूर्ण प्रेम से उस अद्वितीय मित्र की उपासना करते हैं और उसकी प्रसन्नता को ऐसा चाहते हैं जैसा कि वह स्वयं चाहता है।

मनुष्य खुदा की इबादत (उपासना) का दावा करता है, परन्तु क्या उपासना केवल बहुत से सज्दों, रुकू और खड़े होने से हो सकती है या अत्यधिक बार तस्बीह के दाने फेरने वाले खुदा के उपासक कहला सकते हैं अपितु उपासना उस से हो सकती है जिसको खुदा का प्रेम उस श्रेणी पर अपनी ओर खींचे कि उसका अपना अस्तित्व मध्य से उठ जाए। प्रथम खुदा के अस्तित्व पर पूर्ण विश्वास हो और फिर खुदा की कृपा एवं उपकार पर पूर्ण अवगत हो फिर उस से ऐसा प्रेम संबंध हो कि सीने में हर समय प्रेमाग्नि मौजूद हो। यह अवस्था प्रतिपल चेहरे पर प्रकट हो तथा खुदा की श्रेष्ठता हृदय में ऐसी हो कि सम्पूर्ण संसार उसके अस्तित्व के आगे मुर्दा लगे और प्रत्येक भय उसी के अस्तित्व से सम्बद्ध हो तथा उसी के दर्द में आनन्द हो तथा उसी के एकान्त में आराम हो तथा उसके बिना हृदय को किसी के साथ चैन न हो। यदि ऐसी अवस्था हो जाए तो उसका नाम इबादत (उपासना) है परन्तु यह अवस्था खुदा की विशेष सहायता के बिना किस प्रकार पैदा हो। इसीलिए खुदा तआला ने

दुआ सिखाई **إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ** (सूरह फ़ातिहा) अर्थात् हम तेरी उपासना तो करते हैं किन्तु उपासना का हक़ कहां अदा कर सकते हैं जब तक तेरी ओर से विशेष सहायता न हो। ख़ुदा को अपना वास्तविक प्रियतम बना कर उसकी उपासना (इबादत) करना यही वलायत (वली होना) है जिस से आगे कोई श्रेणी नहीं, परन्तु यह श्रेणी बिना ख़ुदा की सहायता के प्राप्त नहीं हो सकती। उसके प्राप्त होने का यह लक्षण है कि ख़ुदा की श्रेष्ठता हृदय में बैठ जाए। ख़ुदा का प्रेम हृदय में बैठ जाए। ख़ुदा का प्रेम हृदय में बैठ जाए और हृदय उसी पर भरोसा करे और उसी को पसन्द करे तथा प्रत्येक वस्तु पर उसी को अपनाए तथा अपने जीवन का उद्देश्य उसी के स्मरण को समझे और यदि इब्राहीम की भांति अपने हाथ से अपनी प्रिय सन्तान को ज़िह्न करने का आदेश हो या स्वयं को ही अग्नि में डालने का संकेत हो तो ऐसे कठोर आदेशों का भी प्रेम के जोश से पालन करे तथा अपने दयालु स्वामी की प्रसन्नता चाहने में उस सीमा तक प्रयास करे कि उसके आज्ञा-पालन में कोई कमी शेष न रहे। यह बहुत संकीर्ण द्वार है तथा यह शरबत बहुत ही कटु शरबत है। थोड़े लोग हैं जो इस द्वार से प्रवेश करते हैं तथा इस शरबत को पीते हैं। व्यभिचार से बचना कोई बड़ी बात नहीं, किसी का अकारण वध न करना बड़ा कार्य नहीं, झूठी गवाही न देना कोई बड़ी कला नहीं, किन्तु प्रत्येक वस्तु पर ख़ुदा को अपना लेना तथा उसके लिए सच्चे प्रेम एवं सच्चे जोश से संसार की समस्त कटुताओं को धारण करना अपितु अपने हाथ से कटुताएं उत्पन्न कर लेना यह वह श्रेणी है कि सदात्माओं के अतिरिक्त किसी को प्राप्त नहीं हो सकती। यही वह इबादत है जिसे अदा करने के लिए मनुष्य आदिष्ट है। जो व्यक्ति यह इबादत अदा करता है तब तो उसके इस कर्म पर ख़ुदा की ओर से भी एक कर्म सम्पादित होता है जिस का नाम इनाम है जैसा कि ख़ुदा तआला कुर्आन शरीफ़ में फ़रमाता है अर्थात् यह दुआ सिखाता है -

إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

अर्थात् हे हमारे ख़ुदा हमें अपना सीधा मार्ग दिखा, उन लोगों का मार्ग जिन पर तू ने इनाम किया है तथा अपनी विशेष कृपाओं से विशेष्य किया है। ख़ुदा के

दरबार का यह नियम है कि जब सेवा स्वीकार हो जाती है तो उस पर अवश्य कोई इनाम सम्पादित होता है। अतः अलौकिक निशान तथा चमत्कार जिनका दूसरे लोग उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकते, ये भी खुदा तआला के इनाम हैं जो विशेष लोगों पर होते हैं।

اے گرفتار ہوا در ہمہ اوقات حیوۃ
 باجنیں نفس سیہ چوں رسدت زو غونے
 ① عجب نیست اگر غرق شود فرعونے
 گر تو آن صدق بورزی کہ بورزید کلیم

अब इस सम्पूर्ण बात का सारांश यह है कि किसी को तीसरी श्रेणी के अतिरिक्त पवित्र एवं शुद्ध वह्यी का इनाम प्राप्त नहीं कर सकता तथा इस इनाम को पाने वाले वे लोग होते हैं जो अपने अस्तित्व से मर जाते हैं तथा खुदा तआला से एक नया जीवन पाते हैं तथा अपने नफ़्स के सम्पूर्ण संबंध तोड़कर खुदा तआला से पूर्ण सम्बन्ध पैदा कर लेते हैं, तब उनका अस्तित्व खुदा की झलकियों का द्योतक हो जाता है तथा खुदा उन से प्रेम करता है तथा वे स्वयं को चाहे जितना गुप्त रखें परन्तु खुदा तआला उन्हें प्रकट करना चाहता है तथा उनसे वे चमत्कार प्रकट होते हैं जिन से सिद्ध होता है कि खुदा तआला उनसे प्रेम करता है। संसार उनसे किसी बात में मुकाबला नहीं कर सकता, क्योंकि प्रत्येक मार्ग में खुदा उनके साथ होता है तथा हर एक मैदान में खुदा का हाथ उनको सहायता देता है। हजारों निशान उनके समर्थन एवं सहायता में प्रकट होते हैं और प्रत्येक जो उनकी शत्रुता से नहीं रुकता, अन्ततः वह बड़े अपमान के साथ तबाह किया जाता है, क्योंकि खुदा के निकट उनका शत्रु खुदा का शत्रु है, खुदा गम्भीर है तथा धीमी गति से कार्य करता है, किन्तु प्रत्येक जो उनकी शत्रुता से नहीं रुकता तथा जान बूझ कर उन्हें कष्ट पहुंचाने पर कटिबद्ध है खुदा उसके विनाश के लिए ऐसा आक्रमण करता है जैसा

① अनुवाद - (1) हे वह जो सदैव लोभ-लालसा का वशीभूत है ऐसे दुराचारी प्रवृत्ति के होते हुए तुझे खुदा की सहायता कैसे मिल सकती है।

(2) हां यदि तू वैसी सच्चाई धारण करे जैसी मूसा ने धारण की थी तो फिर आश्चर्य नहीं कि कोई फिरौन डूब जाए। अनुवादक

कि एक शेरनी (जब कोई उसके बच्चे को मारने की इच्छा करे) क्रोध तथा आवेग के साथ उस पर आक्रमण करती है और छोड़ती नहीं जब तक उसके टुकड़े-टुकड़े न कर दे। ख़ुदा के प्यारे एवं मित्र ऐसे संकट के समय में ही पहचाने जाते हैं। जब कोई उन्हें कष्ट देना चाहता है और बार-बार कष्ट पहुँचाता है और नहीं रुकता तब ख़ुदा उस पर बिजली की तरह गिरता है तथा तूफान की भांति उसे अपने प्रकोप की परिधि में ले लेता है और बहुत शीघ्र प्रकट कर देता है कि वह उसके साथ है। जिस प्रकार तुम देखते हो कि सूर्य का प्रकाश तथा जुगनू के प्रकाश में कोई सन्देह नहीं हो सकता, इसी प्रकार वह प्रकाश जो उन्हें दिया जाता है तथा वे चमत्कार जो उनके लिए प्रकट किए जाते हैं तथा वे अध्यात्मिक ने'मते' जो उन्हें प्रदान की जाती हैं उनके साथ किसी का सन्देह नहीं हो सकता तथा उनका उदाहरण किसी व्यक्ति में नहीं पाया जाता। ख़ुदा उन पर उतरता है और उनका हृदय ख़ुदा का सिंहासन हो जाता है तथा वे एक और ही वस्तु बन जाते हैं जिसके मर्म तक संसार नहीं पहुँच सकता।

यह प्रश्न कि ख़ुदा उन से ऐसा सम्बन्ध क्यों पकड़ लेता है ? इस का उत्तर यह है कि ख़ुदा ने मानव-प्रकृति ऐसी रखी है कि वह एक ऐसे बर्तन के समान है जो किसी प्रकार के प्रेम से रिक्त नहीं रह सकता और शून्य अर्थात् रिक्त रहना उसमें असंभव है। अतः जब कोई हृदय ऐसा हो जाता है कि स्वार्थपरायणता, उसकी इच्छाओं तथा संसार-प्रेम एवं उसकी इच्छाओं से बिल्कुल रिक्त हो जाता है तथा तुच्छ प्रेमों की मलिनताओं से रहित हो जाता है तो ऐसे हृदय को जो ख़ुदा के अतिरिक्त के प्रेम से बिल्कुल खाली हो चुका है ख़ुदा तआला सुन्दरता एवं सौन्दर्य की झलकियों के साथ अपने प्रेम से भर देता है तब दुनिया उनसे शत्रुता करती है क्योंकि दुनिया शैतान की छाया के नीचे चलती है, इसलिए वह सत्यनिष्ठ से प्रेम नहीं कर सकता, परन्तु ख़ुदा उसे एक बच्चे की भांति अपनी सहानुभूति के आंचल में ले लेता है तथा उसके लिए शाने-ख़ुदावन्दी की शक्ति के ऐसे-ऐसे काम दिखाता है जिससे प्रत्येक देखने वाले की आंख को ख़ुदा का चेहरा दिखाई दे जाता

है। अतः उस का अस्तित्व खुदानुमा (अर्थात् खुदा को दिखाने वाला) हो जाता है, जिससे ज्ञात होता है कि खुदा विद्यमान है।

स्मरण रहे कि जैसा कि तीसरी श्रेणी के लोगों के स्वप्न नितान्त स्पष्ट होते हैं तथा उनकी समस्त भविष्यवाणियां समस्त संसार से बढ़कर सही निकलती हैं तथा वे महान बातों के संबंध में होती हैं तथा उनका इतना बाहुल्य होता है कि जैसे एक समुद्र है। इसी प्रकार उनके अध्यात्म ज्ञान तथा सच्चाइयां भी गुणवत्ता एवं संख्या में समस्त लोगों से बढ़कर होती हैं तथा खुदा के कलाम (वाणी) के सम्बन्ध में वे अध्यात्म ज्ञान सूझते हैं जो दूसरों को नहीं सूझ सकते, क्योंकि वे पवित्र आत्मा (जिब्राईल) से सहायता पाते हैं तथा जिस प्रकार उनको एक जीवित हृदय दिया जाता है उसी प्रकार उनको एक ज़बान प्रदान की जाती है तथा उनके अध्यात्म ज्ञान ताज़ा-बताज़ा झरने से निकलते हैं न मात्र कथन के गन्दे कीचड़ से। उनमें मानव-प्रकृति की समस्त उत्तम शाखाएं पाई जाती हैं तथा उसी के मुकाबले पर प्रत्येक प्रकार की सहायता भी उन्हें प्रदान की जाती है, उनके सीने खोले जाते हैं तथा उनको खुदा के मार्ग में एक असाधारण साहस प्रदान किया जाता है, वे खुदा के लिए मृत्यु से नहीं डरते और अग्नि में जल जाने से भयभीत नहीं होते, उनके दूध से एक संसार तृप्त होता है तथा निर्बल हृदय शक्ति पकड़ते हैं, खुदा की प्रसन्नता के लिए उनके हृदय कुरबान होते हैं, वे उसी के हो जाते हैं इसलिए खुदा उनका हो जाता है और जब वे अपने पूर्ण हृदय से खुदा की ओर झुकते हैं तो खुदा उसी प्रकार उनकी ओर झुकता है कि प्रत्येक को ज्ञात हो जाता है कि हर मैदान में खुदा उसकी सहायता करता है। वास्तव में खुदा के लोगों को कोई पहचान नहीं सकता परन्तु वही शक्तिशाली खुदा जिसकी हृदयों पर दृष्टि है। अतः जिस हृदय को वह देखता है कि वास्तव में उसकी ओर आ गया, उसके लिए अद्भुत से अद्भुत काम दिखाता है तथा उसकी सहायता के लिए प्रत्येक मार्ग में खड़ा हो जाता है। वह उसके लिए वे कुदरतें दिखाता है जो संसार पर गुप्त हैं तथा उसके लिए इतना स्वाभिमान हो जाता है कि कोई अपना अपने के लिए ऐसा स्वाभिमान प्रदर्शित नहीं कर सकता। अपने ज्ञान में से उसे ज्ञान

देता है तथा अपनी बुद्धि में से उसे बुद्धि प्रदान करता है तथा उसे अपने लिए ऐसा मुग्ध कर देता है कि दूसरे समस्त लोगों से उसके सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं। ऐसे लोग ख़ुदा के प्रेम में मर कर एक नया जन्म पाते हैं तथा समाप्त होकर एक नए अस्तित्व के वारिस बनते हैं। ख़ुदा उन्हें ग़ैरों की आंख से ऐसा ही गुप्त रखता है जैसा वह स्वयं गुप्त है, परन्तु फिर भी अपने चेहरे की चमक उनके मुख पर डालता है तथा अपना प्रकाश उसके मस्तक पर बरसाता है जिस से वे गुप्त नहीं रह सकते। उन पर जब कोई संकट आता है तो वे उस से पीछे नहीं हटते अपितु आगे क़दम बढ़ाते हैं, उनका आज का दिन कल के बीते दिन से अध्यात्म ज्ञान एवं प्रेम में अधिक होता है तथा प्रति क्षण उनका प्रेम संबंध उन्नति में होता है तथा उनके प्रेम की तीव्रता भरोसा तथा संयम के कारण उनकी दुआएं अस्वीकार नहीं होतीं तथा वे व्यर्थ नहीं की जातीं क्योंकि वे ख़ुदा की प्रसन्नता पाने में खो जाते हैं और अपनी प्रसन्नता त्याग देते हैं, इसलिए ख़ुदा भी उनकी दुआएँ स्वीकार करता है, वे अत्यन्त गुमनामी में होते हैं, संसार उन्हें नहीं पहचान सकता, क्योंकि वे संसार से दूर चले जाते हैं तथा उनके बारे में सरसरी राय निकालने वाले तबाह हो जाते हैं। न मित्र उनके मर्म तक पहुंच सकता है न कोई शत्रु। क्योंकि वे ख़ुदा की चादर में लिपटे होते हैं कौन उनकी पूर्ण वास्तविकता जानता है परन्तु वही जिसकी प्रेम-भावनाओं में वे बेसुध हैं। वह एक क्रौम हैं जो ख़ुदा नहीं किन्तु ख़ुदा से एक पल भी अलग नहीं, वे सर्वाधिक ख़ुदा से डरने वाले, सब से अधिक ख़ुदा से वफ़ा करने वाले, सबसे अधिक ख़ुदा के मार्ग में श्रद्धा एवं दृढ़ता दिखाने वाले, सब से अधिक ख़ुदा पर निर्भर रहने वाले, सबसे अधिक ख़ुदा की प्रसन्नता के अभिलाषी, सबसे अधिक ख़ुदा का साथ ग्रहण करने वाले, सबसे अधिक अपने प्रिय ख़ुदा से प्रेम करने वाले हैं तथा ख़ुदा से सम्बन्ध में उनकी उस स्थान तक पहुंच है जहां तक मानव-दृष्टि नहीं पहुंचती। इसलिए ख़ुदा एक ऐसी विलक्षण एवं अलौकिक सहायता के साथ उनकी ओर दौड़ता है कि मानो वह और ही ख़ुदा है तथा उनके लिए वह काम दिखाता है कि जब से संसार अस्तित्व में आया किसी ग़ैर के लिए उसने नहीं दिखाए।

चौथा अध्याय

अपनी परिस्थितियों का वर्णन अर्थात् इस बात का वर्णन कि खुदा तआला की कृपा एवं दया ने मुझे इन तीनों प्रकारों में से किस प्रकार में सम्मिलित किया है।

खुदा तआला इस बात को जानता है तथा वह प्रत्येक बात पर उत्तम साक्षी है कि वह चीज़ जो उसके मार्ग में मुझे सब से पहले दी गई वह हृदय की पवित्रता थी। अर्थात् ऐसा हृदय कि उसका वास्तविक सम्बन्ध सम्माननीय तथा प्रतापी खुदा के अतिरिक्त किसी और के साथ न था। मैं कभी जवान था और अब बूढ़ा हुआ, परन्तु मैंने आयु के किसी भाग में महान प्रतापी खुदा के अतिरिक्त किसी के साथ अपना वास्तविक संबंध न पाया मानो रूमी मौलाना साहिब ने मेरे लिए ही ये दो शेर बनाए थे -

من زمر جمعیتے نالاس شدم جفت خوشحالان و بدحالاں شدم
 هر کسے از ظنّ خود شد یار من و از درون من نجست اسرار من

(अनुवाद : मैं हर सभा में रोया और अमीरों तथा गरीबों के साथ रहा हूँ प्रत्येक व्यक्ति अपने मत के अनुसार मेरा मित्र बना, किन्तु मेरे भीतर से मेरे रहस्य नहीं खोजे गए। अनुवादक)

यद्यपि खुदा ने किसी वस्तु में मेरे साथ कमी नहीं की तथा मुझे इस स्तर तक प्रत्येक नेमत एवं आराम प्रदान किया कि मेरे दिल तथा ज़बान को बिल्कुल यह शक्ति नहीं कि उसका आभार प्रकट कर सकूँ तथापि उसने मेरी प्रकृति को ऐसा बनाया है कि मैं संसार की नश्वर चीज़ों से सदैव उचाट रहा हूँ तथा उस युग में

भी जब कि मैं इस संसार में एक नया यात्री था और मेरे व्यस्क होने के दिन अभी थोड़े थे मैं उस प्रेमाग्नि से खाली नहीं था जो महान खुदा से होनी चाहिए तथा इसी प्रेमाग्नि के कारण मैं किसी ऐसे धर्म पर कदापि सहमत नहीं हुआ जिसकी आस्थाएं खुदा तआला की श्रेष्ठता तथा एकेश्वरवाद के विरुद्ध थीं या किसी प्रकार के अपमान को सिद्ध करती थीं। यही कारण है कि ईसाई धर्म मुझे पसन्द न आया क्योंकि उसके प्रत्येक पग में महाप्रतापी खुदा का अपमान है। एक असहाय मनुष्य जो स्वयं की भी सहायता न कर सका उसे खुदा ठहराया गया और उसी को धरती एवं आकाशों का स्रष्टा समझा गया। संसार की बादशाहत जो आज है तथा कल मिट सकती है उसके साथ अपमान इकट्ठा नहीं हो सकता। फिर खुदा की वास्तविक बादशाहत के साथ इतने अपमान क्यों इकट्ठे हो गए कि वह क्रैद में डाला गया, उसे कोड़े लगाए गए तथा उसके मुंह पर थूका गया तथा अन्ततः ईसाइयों के कथनानुसार उसके भाग में एक ला'नती मृत्यु आई जिस के बिना वह अपने बन्धों को मुक्ति नहीं दे सकता था।^① क्या ऐसे कमजोर खुदा पर कुछ भरोसा

① यह बात कि उस ला'नती मृत्यु पर मसीह स्वयं सहमत हो गया था इस तर्क से खण्डित हो जाती है कि मसीह ने बाग में रो-रो कर दुआ की कि वह प्याला उस से टल जाए। फिर सलीब पर खींचने के समय चिल्ला कर कहा कि “ईली-ईली लिमा सबक्रतनी” अर्थात् हे मेरे खुदा ! हे मेरे खुदा ! तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया। यदि वह उस सलीबी मृत्यु पर सहमत था तो उसने दुआएं क्यों कीं ? तथा यह विचार कि मसीह की सलीबी मृत्यु खुदा की ओर से प्रजा पर एक दया थी तथा खुदा ने प्रसन्न होकर ऐसा कार्य किया था ताकि संसार मसीह के खून से मुक्ति पाए। यह भ्रम इस तर्क से रद्द हो जाता है कि यदि वास्तव में उस दिन खुदा की दया जोश में आई थी तो उस दिन क्यों भूकम्प आया, यहां तक कि हैकल का पर्दा फट गया तथा क्यों भीषण आंधी आई और सूर्य अंधकारमय हो गया। इससे तो स्पष्ट ज्ञात होता है कि खुदा तआला मसीह को सलीब देने पर बहुत क्रोधित था, जिसके कारण खुदा ने चालीस वर्ष तक यहूदियों का

हो सकता है तथा क्या ख़ुदा भी एक नश्वर मनुष्य की भांति मर जाता है और फिर केवल प्राणों पर ही नहीं अपितु यहूदियों ने उसके सम्मान तथा उसकी माता के सतीत्व पर भी धिनौने आरोप लगाए तथा उस ख़ुदा से कुछ भी न हो सका कि महाशक्तियों का प्रदर्शन करके अपना निर्दोष होना सिद्ध करता। अतः ऐसे ख़ुदा को स्वीकार करना बुद्धि कभी प्रस्तावित नहीं कर सकती, जो स्वयं संकटग्रस्त अवस्था में मर गया तथा यहूदियों का कुछ बिगाड़ न सका। यह कहना कि उसने स्वयं को जानबूझ कर सलीब पर चढ़ाया ताकि उसकी उम्मत के पाप क्षमा हो जाएं, इससे अधिक निरर्थक विचार कोई नहीं होगा। जिस व्यक्ति ने रात भर अपने प्राणों की रक्षा के लिए रो-रोकर एक बाग़ में दुआ की और वह भी स्वीकार न हुई और फिर उस पर इतनी घबराहट छा गई कि सलीब पर चढ़ने के समय 'ईली-ईली लिमा सबक्रतनी' कह कर अपने ख़ुदा को ख़ुदा कह कर पुकारा और उस घोर बेचैनी में बाप कहना भी भूल गया। क्या इसके संबंध में कोई व्यक्ति सोच सकता है कि उसने अपनी खुशी से प्राण दिए। ईसाइयों के इस विरोधाभासी बयान को कौन समझ सकता है कि एक ओर तो यीसू को ख़ुदा समझा जाता है फिर वही ख़ुदा किसी और ख़ुदा के आगे रो-रोकर दुआ करता है जबकि तीनों ख़ुदा यीसू के अन्दर ही मौजूद थे और वह उन सब का संग्रह था तो फिर उसने किस के आगे रो-रोकर दुआ की। इस से तो विदित होता है कि ईसाइयों के निकट उन तीन ख़ुदाओं के अतिरिक्त कोई और भी शक्तिशाली ख़ुदा है जो उनसे अलग तथा उन पर शासक है जिसके आगे तीनों ख़ुदाओं को रोना पड़ा।

फिर जिस उद्देश्य के लिए आत्महत्या अपनाई गई वह उद्देश्य भी तो पूर्ण न हुआ।^① उद्देश्य तो यह था कि यीशू के अनुयायी पाप, सृष्टि-पूजा तथा सांसारिक

पीछा न छोड़ा और वे नाना प्रकार के अज्ञाबों में ग्रस्त रहे। प्रथम कठोर ताऊन से तबाह हुए तथा अन्त में तीतूस रूमी के हाथ से हज़ारों यहूदी मारे गए। इसी से।

① खेद कि तीन सदियों के बाद कुछ मुसलमानों के सम्प्रदायों की यह विचारधारा बन गई कि मानो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम सलीब से सुरक्षित रहकर आकाश पर जीवित

लिप्साओं से रुक जाएं, परन्तु परिणाम विपरीत हुआ। इस आत्महत्या से पूर्व तो एक सीमा तक यीशू के अनुयायी खुदा के सामने भी थे परन्तु तत्पश्चात् जैसे-जैसे आत्महत्या एवं कफ़ारे की आस्था पर बल दिया गया उतना ही ईसाई जाति में सृष्टि पूजा, संसार के लोभ, सांसारिक इच्छा, मदिरापान, जुआ, पाप की दृष्टि से देखना तथा अवैध संबंध बढ़ गए कि जैसे एक भयंकर एवं तीव्र प्रवाह नदी पर जो एक बांध बनाया गया था वह बांध अचानक टूट जाए तथा आस-पास के समस्त देहात एवं भूमि को तबाह कर दे। यह भी स्मरण रहे कि मनुष्य के लिए पाप से पवित्र होना कोई विशेष गुण नहीं। हजारों कीड़े-मकोड़े, चौपाए एवं पक्षी हैं कि कोई पाप नहीं करते। अतः क्या उनके बारे में हम विचार कर सकते हैं कि वे खुदा तक पहुंच गए हैं। अतः प्रश्न यह है कि मसीह ने अध्यात्मिक विशेषताओं को प्राप्त करने के लिए कौन सा कफ़ारा दिया ? मनुष्य खुदा तआला तक पहुँचने

चले गए और अब तक वहीं पार्थिव शरीर के साथ जीवित बैठे हैं। उन पर मृत्यु नहीं आई तथा इस प्रकार इन नादान मुसलमानों ने ईसाई धर्म को बड़ी सहायता पहुंचाई है तथा यह कहते हैं कि हज़रत ईसा की मृत्यु का कुर्आन में कहीं वर्णन नहीं। हालांकि कुर्आन शरीफ़ के कई स्थानों में बड़ी स्पष्टता के साथ उनकी मृत्यु का वर्णन है। उदाहरणतया आयत **فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي** (अलमाइदह-118) कितनी स्पष्टतापूर्वक उनकी मृत्यु को सिद्ध करती है तथा कहते हैं कि आयत **مَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ** (अन्निसा-158) हज़रत ईसा के जीवित रहने को सिद्ध करती हैं। उनकी ऐसी समझ पर रोना आता है कि क्या जो व्यक्ति सलीब पर नहीं मरता तो क्या वह मरता नहीं ? मैंने बार-बार वर्णन किया है कि कुर्आन शरीफ़ में सलीब का इन्कार तथा ईसा के रफ़ा की चर्चा इसलिए नहीं कि खुदा तआला हज़रत ईसा का जीवित रहना सिद्ध करे, अपितु यह चर्चा इसलिए है ताकि यह सिद्ध करे कि ईसा लानती मौत नहीं मरा तथा मोमिनों की भांति उसका आध्यात्मिक रफ़ा हुआ है। इसमें यहूदियों का खण्डन अभीष्ट है क्योंकि वे ईसा^अ के रफ़ा होने के इन्कारी हैं। इसी से।

के लिए दो बातों का मुहताज है। प्रथम - बुराई से बचना। द्वितीय - शुभ कर्मों की प्राप्ति। केवल बुराई का त्याग करना कोई महानता नहीं है। अतः वास्तविकता यह है कि जब से मनुष्य पैदा हुआ है ये दोनों शक्तियां उसकी प्रकृति के अन्दर विद्यमान हैं। एक ओर तो कामभावनाएं उसे पाप की ओर प्रवृत्त करती हैं तथा दूसरी ओर खुदा की प्रेमाग्नि जो उसकी प्रकृति के अन्दर गुप्त है वह उस पाप के कूड़ा-कर्कट को इस प्रकार से जला देती है जैसा कि जाहिरी अग्नि जाहिरी कूड़ा-कर्कट जला देती है, किन्तु उस अध्यात्मिक अग्नि का भड़कना जो पापों को जलाती है खुदा को पहचानने पर निर्भर है क्योंकि प्रत्येक वस्तु का प्रेम एवं अनुराग उसको पहचान लेने के ज्ञान से सम्बद्ध है। जिस वस्तु की सुन्दरता एवं विशेषता का तुम्हें ज्ञान नहीं तुम उस से प्रेम नहीं कर सकते। अतः महाप्रतापी खुदा की विशेषता, सुन्दरता एवं सौन्दर्य की पहचान ही उससे प्रेम पैदा करती है तथा प्रेमाग्नि से पाप जलते हैं, परन्तु खुदा का नियम इसी प्रकार पर जारी है कि वह पहचानने का ज्ञान प्राप्त होता तथा उनके प्रकाश से वे प्रकाश प्राप्त करते हैं तथा जो कुछ उनको दिया गया वे उनके अनुसरण से सब कुछ पा लेते हैं।

किन्तु खेद कि ईसाई धर्म में खुदा की पहचान के ज्ञान का द्वार बन्द है, क्योंकि खुदा तआला के वार्तालाप पर मुहर लग गई है तथा आकाशीय निशानों की समाप्ति हो गई है, फिर ताज्जा से ताज्जा अध्यात्म ज्ञान किस माध्यम से प्राप्त हो। केवल कहानियों को ज़बान से चाटो। ऐसे धर्म को एक बुद्धिमान क्या करे जिसका खुदा ही कमजोर और असहाय है तथा जिसका पूर्ण आधार ही क्रिस्सों और कहानियों पर है।

इसी प्रकार हिन्दू धर्म जिस की एक शाखा आर्य धर्म है वह सच्चाई की दशा से बिल्कुल गिरा हुआ है। उनके निकट इस विश्व का कण-कण अनादि है, जिनका कोई स्पष्ट नहीं। अतः हिन्दुओं को उस खुदा पर ईमान नहीं जिसके बिना कोई वस्तु प्रकटन में नहीं आई तथा जिसके बिना कोई वस्तु क्रायम नहीं रह सकती। कहते हैं कि उनका परमेश्वर किसी के पाप क्षमा नहीं कर सकता मानो उसकी

नैतिक अवस्था मनुष्य की नैतिक अवस्था से भी गिरी हुई है, जबकि हम अपने पापियों के पाप क्षमा कर सकते हैं तथा हम अन्दर यह शक्ति पाते हैं कि जो व्यक्ति सच्चे हृदय से अपने दोषों को स्वीकार करे तथा अपने कर्म पर बहुत शर्मिंदा हो और भविष्य में अपने अन्दर एक परिवर्तन पैदा करे तथा विनय एवं विनम्रता से हमारे समक्ष तौबा करे तो हम प्रसन्नता-पूर्वक उसके पाप क्षमा कर सकते हैं अपितु क्षमा करने से हमारे अन्दर एक खुशी उत्पन्न होती है तो फिर क्या कारण है कि वह परमेश्वर जो खुदा होने का दावा करता है जिसके पैदा किए हुए पापी हैं और उनके पाप करने की शक्तियां भी उसी की ओर से हैं। उसमें यह उत्तम सदाचार नहीं तथा जब तक करोड़ों वर्ष तक एक पाप का दण्ड न दे प्रसन्न नहीं होता। ऐसे परमेश्वर के अधीन रह कर कोई क्योंकिर मुक्ति प्राप्त कर सकता है तथा क्योंकिर कोई उन्नति कर सकता है।

अतः मैंने बहुत ध्यानपूर्वक देखा कि दोनों धर्म सच्चाई के विरोधी हैं तथा खुदा तआला के मार्ग में इन धर्मों में जितनी बाधाएं एवं निराशा पाई जाती है मैं सब को इस पुस्तक में लिख नहीं सकता केवल सारांश के तौर पर लिखता हूं कि वह खुदा जिसे पवित्र आत्माएं ढूंढती हैं, जिसके पाने से मनुष्य इसी जीवन में सच्ची मुक्ति पा सकता है तथा उस पर खुदा के प्रकाश के द्वार खुल सकते हैं तथा उसकी पूर्णतम पहचान के द्वारा पूर्ण प्रेम पैदा हो सकता है। यह दोनों धर्म उस खुदा की ओर पथ-प्रदर्शन नहीं करते तथा विनाश के गड्ढे में डालते हैं। इसी प्रकार इनके समान संसार में अन्य धर्म भी पाए जाते हैं परन्तु ये सब धर्म उस भागीदार रहित एक खुदा तक नहीं पहुंचा सकते तथा अभिलाषी को अंधकार में छोड़ते हैं।

ये वे समस्त धर्म हैं जिनके बारे में विचार करने के लिए मैंने अपनी आयु का एक बड़ा भाग गुज़ारा तथा नितान्त ईमानदारी एवं चिन्तन से उनके सिद्धान्तों पर विचार किया, किन्तु सब को सत्य से दूर पाया। हां यह मुबारक धर्म जिसका नाम इस्लाम है वही एक धर्म है जो खुदा तआला तक पहुंचाता है तथा वही एक धर्म है जो मानव-प्रकृति की पवित्र इच्छाओं को पूर्ण करने वाला है। यह स्पष्ट है कि

मनुष्य की एक ऐसी प्रकृति है कि वह प्रत्येक बात में पूर्णता चाहता है। अतः चूंकि मनुष्य खुदा तआला की अनवरत उपासना के लिए पैदा किया गया है इसलिए वह इस बात पर सहमत नहीं हो सकता कि वह खुदा जिसके पहचानने में उनकी मुक्ति है उसी की पहचान के बारे में केवल कुछ निरर्थक क्रिस्सों पर ही निर्भर रहे। वह अंधा रहना नहीं चाहता अपितु चाहता है कि खुदा तआला की महानम विशेषताओं के संबंध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करे मानो उसके दर्शन कर ले। अतः उसकी यह अभिलाषा इस्लाम के माध्यम से ही पूर्ण हो सकती है यद्यपि कुछ की यह इच्छा कामभावनाओं के नीचे छुप गई है तथा जो लोग सांसारिक (भौतिक) आनन्दों के इच्छुक हैं तथा संसार से प्रेम करते हैं वे घोर अन्धकार में होने के कारण न खुदा की कुछ परवाह करते हैं और न खुदा तआला के मिलन के अभिलाषी हैं, क्योंकि वे सांसारिकता के आगे नतमस्तक हैं, किन्तु इसमें कुछ सन्देह नहीं कि जो व्यक्ति सांसारिकता से मुक्ति पाए तथा अनश्वर एवं सच्चे आनन्द का अभिलाषी हो वह केवल क्रिस्सों वाले धर्म पर प्रसन्न नहीं हो सकता और न उससे कुछ संतोष पा सकता है। ऐसा व्यक्ति मात्र इस्लाम में अपनी सन्तुष्टि पाएगा। इस्लाम का खुदा किसी पर अपने वरदान का द्वार बन्द नहीं करता अपितु अपने दोनों हाथों से बुला रहा है कि मेरी ओर आओ। जो लोग पूरे जोर से उसकी ओर दौड़ते हैं उनके लिए द्वार खोला जाता है।

अतः मैंने मात्र खुदा की कृपा से न अपनी किसी खूबी से इस ने'मत से पूर्ण भाग पाया है जो मुझ से पहले नबियों, रसूलों एवं खुदा के प्रिय मनोनीत लोगों को दिया गया था। मेरे लिए इस ने'मत का पाना संभव न था यदि मैं अपने सरदार व स्वामी, समस्त नबियों के गौरव, सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मार्गों का अनुसरण न करता। अतः मैंने जो कुछ पाया उस अनुसरण से पाया तथा मैं अपने सच्चे एवं कामिल ज्ञान से जानता हूं कि कोई भी मनुष्य उसी नबी^{स.अ.व.} के अनुसरण के अतिरिक्त खुदा तक नहीं पहुंच सकता और न पूर्ण अध्यात्म ज्ञान का भाग पा सकता है। मैं यह यहां भी

बताता हूँ कि वह क्या वस्तु है कि आंहज़रत^{स.अ.व.} के सच्चे एवं पूर्ण अनुसरण के पश्चात् सब बातों से पूर्व हृदय में पैदा होती है। अतः स्मरण रहे कि वह पवित्र हृदय है अर्थात् हृदय से संसार का प्रेम निकल जाता है तथा हृदय एक अनश्वर एवं अविनाशी आनन्द का अभिलाषी हो जाता है। तत्पश्चात् एक शुद्ध एवं ख़ुदा का पूर्ण प्रेम इस पवित्र हृदय के कारण प्राप्त होता है। ये समस्त ने 'मते' आंहज़रत^{स.अ.व.} के अनुसरण से बतौर विरासत (उत्तराधिकार) के प्राप्त होती हैं। जैसा कि अल्लाह तआला स्वयं फ़रमाता है - ① **قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ** अर्थात् उनको कह दे कि यदि तुम ख़ुदा से प्रेम करते हो तो आओ मेरा अनुसरण करो ताकि ख़ुदा भी तुम से प्रेम करे। अपितु एक पक्षीय प्रेम का दावा बिल्कुल एक झूठ एवं व्यर्थ है। जब मनुष्य सच्चे तौर पर ख़ुदा तआला से प्रेम करता है तो ख़ुदा भी उससे प्रेम करता है। तब पृथ्वी पर उसके लिए एक मान्यता फैलाई जाती है तथा हज़ारों लोगों के हृदयों में उसका एक सच्चा प्रेम डाल दिया जाता है तथा उसे एक आकर्षण-शक्ति प्रदान की जाती है तथा उसे एक प्रकाश दिया जाता है जो सदैव उसके साथ होता है। जब एक मनुष्य सच्चे हृदय से ख़ुदा से प्रेम करता है और सम्पूर्ण विश्व पर वह उसे अपना लेता है तथा ख़ुदा के अतिरिक्त की श्रेष्ठता एवं प्रतिष्ठा उसके हृदय में शेष नहीं रहती अपितु सब को एक मृत कीड़े से निकृष्ट समझता है। तब ख़ुदा जो उसके हृदय को देखता है, एक भारी झलक के साथ उस पर उतरता है तथा जिस प्रकार एक स्वच्छ दर्पण में जो सूर्य के सामने रखा गया है सूर्य का प्रतिबिम्ब उसमें इतने पूर्ण तौर पर पड़ता है कि अवास्तविक एवं रूपक के तौर पर कह सकते हैं कि वही सूर्य जो आकाश पर है इस दर्पण में भी मौजूद है। इसी प्रकार ही ख़ुदा उसके हृदय पर उतरता है तथा उसके हृदय को अपना सिंहासन बना लेता है। यही वह बात है जिसके लिए मनुष्य पैदा किया गया है। पहली पुस्तकों में पूर्ण सत्यनिष्ठों को जो ख़ुदा के बेटे कह कर वर्णन किया गया है। इसके भी ये अर्थ नहीं हैं कि वे वास्तव में ख़ुदा के बेटे हैं क्योंकि यह तो

कुफ़्र है तथा खुदा बेटों और बेटियों से पवित्र है अपितु ये अर्थ हैं कि उन पूर्ण सत्यनिष्ठों के स्वच्छ हृदय में प्रतिबिम्ब के तौर पर खुदा उतरा था तथा एक व्यक्ति का प्रतिबिम्ब जो दर्पण में प्रकट होता है रूपक के तौर पर मानो वह उसका बेटा होता है क्योंकि जैसा कि बेटा बाप से पैदा होता है ऐसा ही प्रतिबिम्ब अपने असल (मूल) से पैदा होता है। अतः जब कि ऐसे हृदय में जो नितान्त स्वच्छ है तथा उसमें कोई मलिनता शेष नहीं रही, खुदा की झलकियां प्रतिबिम्बित होती हैं तो वह प्रतिबिम्बित चित्र रूपक के तौर पर असल के लिए बतौर बेटे के कहा जाता है। इसी आधार पर तौरात में कहा गया है कि याकूब मेरा बेटा अपितु मेरा पहलौठा बेटा है तथा ईसा इब्ने मरयम को भी इन्जीलों में बेटा कहा गया। यदि ईसाई लोग इस सीमा तक खड़े रहते कि जैसे इब्राहीम, इस्हाक, इस्माईल, याकूब, यूसुफ़, मूसा, दाऊद तथा सुलैमान इत्यादि खुदा के ग्रन्थों में रूपक के तौर पर खुदा के बेटे कहलाए हैं इसी प्रकार ईसा भी है तो उन पर कोई आपत्ति न होती, क्योंकि जैसा कि रूपक के तौर पर उन नबियों को पूर्व नबियों की पुस्तकों में बेटा कह करके पुकारा गया है हमारे नबी^{स.अ.व.} को कुछ भविष्यवाणियों में खुदा करके पुकारा गया है तथा मूल बात यह है कि न वे समस्त नबी खुदा के बेटे हैं और न आंहज़रत^{स.अ.व.} खुदा हैं। अपितु ये सब रूपक हैं प्रेम की शैली में ऐसे शब्द खुदा तआला के कलाम में बहुत हैं। जब मनुष्य खुदा तआला के प्रेम में लीन होता है कि कुछ भी नहीं रहता तब उसी लीनता की अवस्था में ऐसे शब्द बोले जाते हैं क्योंकि उस अवस्था में उनका अस्तित्व मध्य में नहीं होता। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है -

قُلْ يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ
رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا^①

अर्थात् इन लोगों को कह दे कि हे मेरे बन्दो खुदा की दया से निराश मत हो, खुदा समस्त पाप क्षमा कर देगा।

अब देखो यहां **يَا عِبَادَ اللَّهِ** के स्थान पर **يَعْبَادِي** कह दिया गया, हालांकि लोग खुदा के बन्दे हैं न कि आंहज़रत^{स.अ.व.} के बन्दे। परन्तु यह रूपक के रंग में बोला गया। इसी प्रकार फ़रमाया -

إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ طَيِّدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ^①

अर्थात् जो लोग तेरी बैअत करते हैं वे वास्तव में खुदा की बैअत करते हैं। यह खुदा का हाथ है जो उनके हाथों पर है। इन समस्त आयतों में आंहज़रत का हाथ खुदा का हाथ ठहराया गया, किन्तु स्पष्ट है कि वह खुदा का हाथ नहीं है।

इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर फ़रमाया - **فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ** -^② अतः तुम खुदा को स्मरण करो जैसा कि तुम अपने बापों को स्मरण करते हो। यहां खुदा तआला को बाप के साथ उपमा दी और रूपक भी केवल उपमा की सीमा तक है।

इसी प्रकार खुदा तआला ने यहूदियों का एक कथन यहूदियों से, बतौर कहानी कुर्आन करीम में वर्णन किया है और वह कथन यह है - **نَحْنُ أَبْنَاءُ اللَّهِ وَأَحِبَّاؤُهُ**^③ - अर्थात् हम खुदा के बेटे तथा उसके प्रिय हैं। यह **أَبْنَاء** के शब्द का खुदा तआला ने कुछ खण्डन नहीं किया कि तुम कुफ़्र बकते हो अपितु यह फ़रमाया कि यदि तुम खुदा के प्रिय हो तो फिर वह तुम्हें क्यों अज़ाब देता है और **أَبْنَاء** की दोबारा चर्चा भी नहीं की। इस से ज्ञात हुआ कि यहूदियों की किताबों में खुदा के प्यारों को बेटा कह कर भी पुकारते थे।

अब इस सम्पूर्ण वर्णन से हमारा उद्देश्य यह है कि अल्लाह तआला ने अपना किसी के साथ प्यार करना इस बात से सम्बद्ध किया है कि ऐसा व्यक्ति आंहज़रत^{स.अ.व.} का अनुसरण करे।^④ अतः मेरा यह व्यक्तिगत अनुभव है कि

① अलफ़तह-11

② अलबक्ररह - 201

③ अलमाइदह - 19

④ यदि कोई कहे कि उद्देश्य तो शुभ कर्म करना है तो फिर मुक्ति प्राप्त और मान्य

आंहज़रत^{स.अ.व.} का सच्चे हृदय से अनुसरण करना तथा आप^{स.} से प्रेम रखना अन्ततः मनुष्य को ख़ुदा का प्रिय बना देता है, इस प्रकार से स्वयं उसके हृदय में ख़ुदा के प्रेम की एक जलन पैदा कर देता है। तब ऐसा व्यक्ति प्रत्येक वस्तु से उचाट होकर ख़ुदा की ओर झुक जाता है तथा उसका प्रेम एवं रुचि केवल ख़ुदा तआला से शेष रह जाती है। तब ख़ुदा के प्रेम की एक विशेष झलक उस पर पड़ती है तथा उसको प्रेम और अनुराग का एक पूर्ण रंग देकर दृढ़ भावना के साथ अपनी ओर खींच लेती है तब कामभावनाओं पर वह विजयी हो जाता है और उसके समर्थन एवं सहायता में प्रत्येक पहलू से ख़ुदा तआला के विलक्षण कार्य निशानों के रूप में प्रकट होते हैं।

हमने यह तो परिश्रम एवं साधना का एक उदाहरण वर्णन किया है परन्तु कुछ लोग ऐसे होते हैं कि उनकी श्रेणियों में परिश्रम, साधना, एवं तपस्या का कुछ हस्तक्षेप नहीं अपितु उनकी मां के पेट में ही एक ऐसा रचना होती है कि वे स्वाभाविक तौर पर बिना किसी परिश्रम, प्रयास एवं तपस्या के माध्यम से ख़ुदा से प्रेम करते हैं तथा उसके रसूल अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा^{स.अ.व.} के साथ उनका ऐसा अध्यात्मिक संबंध हो जाता है जिस से बढ़कर संभव नहीं। फिर उन पर जैसा-जैसा समय गुज़रता है वह ख़ुदा तआला की आन्तरिक प्रेमाग्नि बढ़ती जाती है तथा साथ ही रसूल की प्रेमाग्नि उन्नति करती है। इन समस्त बातों में ख़ुदा उनका अभिभावक तथा अधिष्ठाता होता है तथा जब यह प्रेमाग्नि पराकाष्ठा तक पहुँच जाती है तब वह अत्यन्त व्याकुलता तथा बेचैनी से चाहते हैं कि ख़ुदा का प्रताप पृथ्वी पर प्रकट हो तथा उसी में उनका आनन्द और यही उनका अन्तिम उद्देश्य

बनने के लिए अनुसरण की क्या आवश्यकता है। इसका उत्तर यह है कि शुभ कर्मों का करना ख़ुदा तआला के सामर्थ्य प्रदान करने पर निर्भर है। अतः जब कि ख़ुदा तआला ने एक को अपनी महान नीति से इमाम और रसूल नियुक्त किया और उसके अनुसरण का आदेश दिया तो जो व्यक्ति इस आदेश को पाकर अनुसरण नहीं करता उसे शुभ कर्म करने की सामर्थ्य नहीं दी जाती। इसी से।

होता है। तब उनके लिए पृथ्वी पर ख़ुदा तआला के निशान प्रकट होते हैं और ख़ुदा तआला किसी के लिए अपने महान निशान प्रकट नहीं करता तथा किसी को भावी समय की महान ख़बरें नहीं देता किन्तु उन्हीं को जो उसके प्रेम एवं अनुराग में लीन होते हैं तथा उसके एकेश्वरवाद एवं प्रताप के प्रकट होने के ऐसे अभिलाषी होते हैं जैसा कि वह स्वयं होता है। यह बात उन्हीं से विशिष्ट है कि ख़ुदा तआला के विशेष रहस्य उन पर प्रकट होते हैं तो परोक्ष (ग़ैब) की बातें उन पर बड़ी स्पष्टता के साथ प्रकट की जाती हैं। यह विशेष सम्मान किसी अन्य को नहीं दिया जाता।

कदाचित एक नादान विचार करे कि कुछ सामान्य लोगों को कभी-कभी सच्चे स्वप्न आ जाते हैं, कुछ पुरुष या स्त्रियां देखते हैं कि किसी के घर में लड़की या लड़का पैदा हुआ तो वही पैदा हो जाता और कुछ को देखते हैं कि वह मर गया तो वह मर भी जाता है या कुछ ऐसी ही छोटी-छोटी घटनाएं देख लेते हैं तो वे ऐसे ही हो जाते हैं। मैं इस भ्रम का पहले ही उत्तर दे आया हूं कि ऐसी घटनाएं कुछ वस्तु ही नहीं हैं और न इनमें किसी सौभाग्यशाली होने की शर्त है। बहुत से पापी स्वभाव तथा बदमाश भी ऐसे स्वप्न अपने लिए या किसी अन्य के लिए देख लेते हैं, परन्तु वे बातें जो विशेष तौर के परोक्ष (ग़ैब) हैं वे ख़ुदा तआला के विशेष बन्दों से विशिष्ट हैं। वे लोग सामान्य लोगों के स्वप्नों तथा इल्हामों से चार प्रकार का अन्तर रखते हैं। **एक** यह कि उनके अधिकतर कश्फ़ नितान्त स्पष्ट होते हैं तथा बहुत कम ही संदिग्ध होते हैं परन्तु दूसरे लोगों के कश्फ़ प्रायः अस्पष्ट और संदिग्ध होते हैं और बहुत कम ही कोई स्पष्ट होता है। **दूसरे** - यह कि वह सामान्य लोगों की अपेक्षा इतने अधिक प्रकट होते हैं कि यदि तुलना की जाए तो वह तुलना ऐसा अन्तर रखती है जैसे कि एक राजा और एक रंक के धन की तुलना की जाए। **तीसरे** - उन से ऐसे महान निशान प्रकट होते हैं कि कोई दूसरा व्यक्ति उन का उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकता। **चौथे** - उनके निशानों में स्वीकारिता के नमूने तथा लक्षण पाए जाते हैं तथा उनमें वास्तविक प्रियतम के प्रेम तथा सहायता के लक्षण प्रकट होते हैं तथा

स्पष्ट तौर पर दिखाई देता है कि वे उन निशानों के माध्यम से उन मान्य लोगों के सम्मान एवं सानिध्य को संसार पर प्रकट करना चाहता है तथा उनकी प्रतिष्ठा हृदयों में बिठाना चाहता है, परन्तु जिन का खुदा से पूर्ण सम्बन्ध नहीं, उनमें यह बात नहीं पाई जाती अपितु उनके कुछ स्वप्नों या इल्हामों की सच्चाई उनके लिए एक परीक्षा होती है क्योंकि इससे उनके हृदयों में अहंकार जन्म लेता है और वे अहंकार से मरते हैं और उस जड़ से विरोध पैदा करते हैं जो शाख को हरा-भरा रखने का कारण होती है। हे शाख ! यह माना कि तू हरी-भरी है और यह भी स्वीकार किया कि तुझे फूल और फल आते हैं परन्तु जड़ से अलग न हो कि इस से तू सूख जाएगी तथा समस्त बरकतों से वंचित की जाएगी क्योंकि तू एक अंश है मूल नहीं है तथा जो कुछ तुझ में है वह तेरा नहीं वह सब जड़ का वरदान है।^①

① यह बात भी स्मरण रखने योग्य है कि जब एक नबी या रसूल आकाश से नियुक्त हो कर आता है जो उस नबी की बरकत से सामान्यतया सामर्थ्यानुसार आकाश से एक प्रकाश उतरता है तथा अध्यात्मिकता का प्रसार प्रकटन में आता है तब प्रत्येक व्यक्ति स्वप्नों के देखने में उन्नति करता है तथा इल्हाम की योग्यता रखने वाले इल्हाम पाते हैं तथा अक्लें भी अध्यात्मिक बातों में तीव्र हो जाती हैं, क्योंकि जिस प्रकार कि जब वर्षा होती है तो प्रत्येक पृथ्वी उससे कुछ न कुछ भाग लेती है। इसी प्रकार उस समय होता है जब रसूल के भेजने से बहार का समय आता है, तब उन सारी बरकतों का कारण वास्तव में वह रसूल होता है और जितने लोगों को स्वप्न या इल्हाम होते हैं वास्तव में उनके खुलने का द्वार वह रसूल ही होता है क्योंकि उसके साथ संसार में एक परिवर्तन होता है तथा आकाश से सामान्यतया एक प्रकाश उतरता है जिस से प्रत्येक व्यक्ति सामर्थ्यानुसार भाग प्राप्त करता है। वही प्रकाश स्वप्न या इल्हाम का कारण हो जाता है तथा नादान सोचता है कि मेरी कला से ऐसा हुआ है परन्तु वह इल्हाम और स्वप्न का स्रोत केवल उस नबी की बरकत से संसार पर खोला जाता है तथा उसका युग एक लैलतुलक्रद्र का युग होता है, जिसमें फ़रिश्ते उतरते हैं। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: تَنْزِيلُ الْمَلَكَةِ وَالرُّؤُوفِ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ أَمْرِ ۖ سَلَامٌ (अलक्रद्र - 5,6) जब से खुदा ने संसार को पैदा किया है प्रकृति का यही नियम है। इसी से।

अब मैं आयत ① **وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ** अपने बारे में वर्णन करता हूँ कि खुदा तआला ने मुझे उस तीसरी श्रेणी में सम्मिलित करके वह नेमत प्रदान की है जो मेरे प्रयास से नहीं अपितु मां के पेट में ही मुझे प्रदान की गई है। उसने मेरे समर्थन में वे निशान प्रकट किए हैं कि आज की तिथि से जो 16 जुलाई 1906 ई. है, यदि मैं उन्हें एक-एक करके गिनूँ तो मैं खुदा तआला की क्रसम खा कर कह सकता हूँ कि वे **तीन लाख** से भी अधिक हैं और यदि कोई मेरी क्रसम का विश्वास न करे तो मैं उसे प्रमाण दे सकता हूँ। कुछ निशान इस प्रकार के हैं जिन में खुदा तआला ने प्रत्येक अवसर पर अपने वादे के अनुसार मुझे शत्रुओं के उपद्रव से सुरक्षित रखा तथा कुछ निशान इस प्रकार के हैं जिस में हर अवसर पर अपने वादे के अनुसार उसने मेरी आवश्यकताएं पूर्ण कीं तथा कुछ निशान इस प्रकार के हैं जिनमें उसने अपने वादे **إِنِّي مُهَيِّئُ مَنْ أَرَادَ إِهَانَتَكَ** के अनुसार मुझ पर आक्रमण करने वालों को लज्जित और अपमानित किया तथा कुछ निशान इस प्रकार के हैं जो मुझ पर मुकद्दमा करने वालों पर उसने अपनी भविष्यवाणियों के अनुसार मुझे विजय प्रदान की और कुछ निशान इस प्रकार के हैं जो मेरे अवतरित होने की अवधि से पैदा होते हैं, क्योंकि जब से संसार अस्तित्व में आया है यह लम्बी अवधि किसी झूठे को प्राप्त नहीं हुई और कुछ निशान युग की दशा देखने से पैदा होते हैं अर्थात् यह कि युग किसी इमाम के पैदा होने की आवश्यकता को स्वीकार करता है और कुछ निशान इस प्रकार के हैं जिन में मित्रों के पक्ष में मेरी दुआएं स्वीकार हुईं तथा कुछ निशान इस प्रकार के हैं जो उपद्रवी शत्रुओं पर मेरी बददुआ का प्रभाव हुआ और कुछ निशान इस प्रकार के हैं जो मेरी दुआ से कुछ भयंकर रोगियों ने स्वास्थ्य पाया तथा उनके स्वस्थ होने से पूर्व मुझे सूचना दी गई तथा कुछ निशान इस प्रकार के हैं कि मेरे लिए तथा मेरे सत्यापन के लिए सामान्यतया खुदा ने पृथ्वी एवं आकाशीय घटनाएं प्रकट कीं और कुछ निशान इस प्रकार के हैं जो मेरी सच्चाई के लिए बड़े-बड़े विशेष लोगों को जो प्रसिद्ध फ़कीरों में से थे स्वप्न आए, तथा आहंज़रत^{प.अ.व.} को स्वप्न में देखा। जैसे सिन्ध के साहिबुल अलम

गद्दी नशीन जिन के शिष्य एक लाख के लगभग थे, और जैसे ख्वाजा गुलाम फ़रीद साहिब चाचड़ां वाले तथा कुछ निशान इस प्रकार के हैं कि हज़ारों लोगों ने मात्र इस कारण मेरी बैअत की कि स्वप्न में उनको बताया गया कि यह सच्चा है तथा ख़ुदा की ओर से है और कुछ ने इस कारण से बैअत की कि आंहज़रत^{स.अ.व.} को स्वप्न में देखा और आप ने फ़रमाया संसार समाप्त होने को है और यह ख़ुदा का आख़िरी ख़लीफ़ा और मसीह मौऊद है। कुछ निशान इस प्रकार के हैं कि कुछ बुजुर्गों ने मेरे जन्म या व्यस्क होने से पूर्व मेरा नाम लेकर मेरे मसीह मौऊद होने की ख़बर दी। जैसे ने 'मतुल्लाह वली और मियां गुलाब शाह निवासी जमालपुर ज़िला लुधियाना। कुछ निशान इस प्रकार के हैं जिनका दामन प्रत्येक जाति के मुक़ाबले पर तथा प्रत्येक देश तक और प्रत्येक युग तक विशाल हो गया है और वह मुबाहलों का सिलसिला है जिसके बहुत से नमूने संसार ने देख लिए^① हैं और मैं पर्याप्त मात्रा देखने के पश्चात् अपनी ओर से मुबाहले की रस्म को समाप्त कर चुका हूँ परन्तु प्रत्येक जो मुझे झूठा समझता है तथा प्रत्येक जो मुझे धोखेबाज़ तथा झूठ गढ़ने वाला समझता है तथा मेरे मसीह मौऊद होने के दावे के बारे में मुझे झुठलाने वाला है और मुझे ख़ुदा तआला की ओर से जो कुछ वह्यी हुई उसे मेरा झूठ गढ़ना समझता है वह चाहे मुसलमान कहलाता हो या हिन्दू या आर्य अथवा किसी अन्य धर्म का अनुयायी हो उसे बहरहाल अधिकार है कि मुझे सामने रख कर लिखित मुबाहला प्रकाशित करे अर्थात् ख़ुदा तआला के सामने यह इक्रार (स्वीकारोक्ति) कुछ समाचारपत्रों में प्रकाशित करे कि मैं ख़ुदा तआला की क्रसम

① प्रत्येक न्यायप्रिय मौलवी गुलाम दस्तगीर क़सूरी की पुस्तक को देखकर समझ सकता है कि किस प्रकार अपने तौर पर मेरे साथ मुबाहला किया और अपनी पुस्तक “फतह रहमानी” में उसे प्रकाशित कर दिया और फिर इस मुबाहले से केवल कुछ दिन पश्चात् मृत्यु पा गया और किस प्रकार चिराग़दीन जम्मू वाले ने अपने तौर से मुबाहला किया और लिखा कि हम दोनों में से झूठे को ख़ुदा तबाह करे। इस से केवल कुछ दिनों के बाद ताऊन से अपने दोनों बेटों सहित मर गया। इसी से।

खाकर कहता हूँ कि मुझे यह पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त है कि यह व्यक्ति (यहां स्पष्ट तौर पर मेरा नाम लिखे) जो मसीह मौऊद होने का दावा करता है वास्तव में महा झूठा है और ये इल्हाम जिनमें से कुछ उसने इस पुस्तक में लिखे हैं यह खुदा का कलाम नहीं है अपितु सब उस का बनाया हुआ झूठ है और मैं उसे वास्तव में अपने पूर्ण विवेक एवं पूर्ण सोच-विचार के पश्चात् तथा पूर्ण विश्वास के साथ झूठ गढ़ने वाला, महा झूठा, तथा दज्जाल समझता हूँ। अतः हे सामर्थ्यवान् खुदा ! यदि तेरे निकट यह व्यक्ति सच्चा है तथा महा झूठा, झूठ गढ़ने वाला, काफ़िर और नास्तिक नहीं है तो मुझ पर इस झुठलाने तथा अपमान के कारण कोई कठोर अज़ाब उतार, अन्यथा उसे अज़ाबग्रस्त कर। आमीन।

प्रत्येक के लिए कोई ताज़ा निशान मांगने के लिए यह द्वार खुला है तथा मैं इक़रार करता हूँ कि यदि इस मुबाहले की दुआ के पश्चात् जिसे सामान्यतया प्रकाशित करना होगा और कम से कम तीन प्रसिद्ध समाचार पत्रों में लिखना होगा। ऐसा व्यक्ति जो इस विवरण के साथ क्रसम खाकर मुबाहला करे और आकाशीय अज़ाब से सुरक्षित रहे तो फिर मैं खुदा की ओर से नहीं हूँ। इस मुबाहले में किसी अवधि के निर्धारण की आवश्यकता नहीं। यह शर्त है कि कोई ऐसी बात घटित हो जिसे हृदय महसूस कर लें।

अब कुछ खुदाई इल्हाम अनुवाद सहित नीचे लिखे जाते हैं^① जिनके लिखने का

① इन इल्हामों के क्रम में बारम्बार की पुनरावृत्ति के कारण भिन्नता है क्योंकि खुदा की वह्यी के ये वाक्य कभी किसी क्रम से कभी किसी क्रम से मुझ पर उतरे हैं तथा कुछ वाक्य ऐसे हैं कि कदाचित् सौ-सौ बार या इस से भी अधिक बार उतरे हैं। अतः इस कारण उनका पढ़ना एक अनुक्रम में नहीं और कदाचित् भविष्य में भी यह क्रम सुरक्षित न रहे, क्योंकि खुदा का विधान इसी प्रकार से है। उसकी पवित्र वह्यी टुकड़े-टुकड़े होकर ज़बान पर जारी होती और हृदय से जोश मारती है। फिर खुदा तआला उन विभिन्न टुकड़ों का क्रम स्वयं करता है और कभी क्रम के समय पहले टुकड़े को इबारत के पीछे लगा देता है और यह आवश्यक सुन्नत है कि वे समस्त वाक्य किसी एक ही विशेष

उद्देश्य यह है कि ऐसे मुबाहला करने वाले के लिए यह आवश्यक होगा कि वह खुदा तआला की कसम खाकर मेरे उन समस्त इल्हामों को अपने उस मुबाहले के लेख में (जिन्हें प्रकाशित करे) लिखे और साथ ही यह इक्रार भी प्रकाशित करे कि ये समस्त इल्हाम मनुष्य के बनाए हुए हैं, खुदा का कलाम नहीं है तथा यह भी लिखे कि इन समस्त इल्हामों को मैंने ध्यानपूर्वक देख लिया है। मैं खुदा की कसम खाकर कहता हूँ कि मनुष्य का बनाया हुआ झूठ है अर्थात् इस व्यक्ति का बनाया हुआ झूठ है तथा इस पर खुदा तआला की ओर से कोई इल्हाम नहीं उतरा, विशेष तौर पर अब्दुल-हकीम खान नामक एक व्यक्ति जो सहायक सर्जन पटियाला है जो बैअत तोड़कर मुर्तद हो गया है विशेष तौर पर यहां सम्बोधित है।

अब हम वे इल्हाम बतौर नमूना नीचे लिखते हैं और वे ये हैं :-

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يا احمد بارك الله فيك - مَا رَمَيْتْ إِذْ رَمَيْتْ

हे अहमद ! खुदा ने तुझ में बरकत रख दी है। जो कुछ तूने चलाया वह तूने नहीं चलाया

وَلَكِنَّ اللَّهَ رَمَى - الرَّحْمَن - عَلَّمَ الْقُرْآن - لِيُنْذِرَ

अपितु खुदा ने चलाया। खुदा ने तुझे कुर्आन सिखाया अर्थात् उसके सही अर्थ तुझ पर प्रकट किए ताकि तू डराए

قَوْمًا مَّا أُنْذِرَ آبَاءَهُمْ وَلَسْتَبِينَ سَبِيلُ

उन लोगों को जिनके बाप-दादे डराए नहीं गए और ताकि अपराधियों का मार्ग स्पष्ट हो जाए अर्थात्

المجرمين - قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ -

ज्ञात हो जाए कि कौन तुझ से उद्दण्ड होता है। कह मैं खुदा की ओर से मामूर

शेष हाशिया- क्रम पर नहीं रखे जाते अपितु क्रम की दृष्टि से उन्हें विभिन्न तौर पर पढ़ा जाता है तथा कुछ वाक्य पुनः वह्यी के पहले शब्दों से कुछ परिवर्तित किए जाते हैं। यह आदत केवल खुदा तआला की विशेष है। वह अपने भेद अच्छी तरह जानता है। इसी से।

हूँ और मैं सब से पहले ईमान लाने वाला हूँ।

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا۔

कह सत्य आया और असत्य भाग गया और असत्य भागने वाला ही था।

كُلُّ بَرَكَةٍ مِنْ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ۔

प्रत्येक बरकत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर से है

فَتَبَارَكَ مَنْ عِلْمٌ وَتَعَلَّمَ۔ وَقَالُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا

अतः बड़ा मुबारक वह है जिसने शिक्षा दी और जिसने शिक्षा पाई और कहेंगे

कि यह वह्यी नहीं है। ये वाक्य तो अपनी

اختلاق۔ قُلْ اللَّهُ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ۔

ओर से बनाए हैं। उनको कह वह खुदा है जिसने ये वाक्य उतारे फिर उन्हें

खेल-कूद के विचारों में छोड़ दे।

قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ فَعَلِيَ إِجْرَامٍ شَدِيدٍ۔

उनको कह दे कि यदि ये वाक्य मेरी ओर से झूठ गढ़ना है और खुदा का

कलाम नहीं तो फिर मैं कठोर दण्ड का पात्र हूँ।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا۔

और उस व्यक्ति से अधिक कौन अन्यायी है जिसने खुदा पर सख्त झूठ बांधा।

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ

खुदा वह खुदा है जिसने अपना रसूल अपनी हिदायत और सच्चे धर्म के साथ

भेजा

لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ۔ لَا مَبْدَلَ لِكَلِمَاتِهِ۔

ताकि उस धर्म को हर प्रकार के धर्म पर विजयी करे। खुदा की बातें पूर्ण होकर

रहती हैं कोई उन्हें परिवर्तित नहीं कर सकता।

يَقُولُونَ إِنِّي لَكُ هَذَا إِنَّ هَذَا لَاقُولُ الْبَشَرِ۔

और लोग कहेंगे कि यह स्थान तुझे कहां से प्राप्त हुआ। यह जो इल्हाम करके

वर्णन किया जाता है यह तो मनुष्य का कथन है।

وإعانه عليه قومٌ آخرون - افتأتون السحر

तथा दूसरों की सहायता से बनाया गया है। हे लोगो ! क्या तुम एक छल में

وانتم تبصرون - هيهاات هيهاات لما توعدون -

जान-बूझ पर फंसते हो। यह व्यक्ति जो कुछ तुम्हें वादा देता है उसका होना कब संभव है

من هذا الذي هو مهينٌ جاهلٌ او مجنون -

फिर ऐसे व्यक्ति का वादा जो तिरस्कृत और अपमानित है। यह तो मूर्ख और दीवाना है जो बेतुकी बातें करता है।

قُلْ عِنْدِي شَهَادَةٌ مِنْ اللَّهِ فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ -

उनको कह कि मेरे पास खुदा की गवाही है। अतः क्या तुम स्वीकार करोगे या नहीं।

قُلْ عِنْدِي شَهَادَةٌ مِنْ اللَّهِ فَهَلْ أَنْتُمْ مُؤْمِنُونَ - ولقد لبثتُ

फिर उनको कह कि मेरे पास खुदा की गवाही है। अतः क्या तुम ईमान लाओगे या नहीं और मैं इससे पूर्व

فيكم عمرًا من قبله أفلا تعقلون - هذا من رحمة ربك يتم

एक अवधि तक तुम में ही रहता था। क्या तुम समझते नहीं। यह पद तेरे रबब की दया से है वह अपनी

نعمته عليك - فبشر وما انت بنعمة ربك بمجنون -

ने 'मत तुझ पर पूरी करेगा। अतः तू शुभ सन्देश दे और खुदा की कृपा से तू दीवाना नहीं है।

لك درجة في السماء وفي الذين هم يبصرون - ولك

तेरी आकाश पर एक श्रेणी और पद है और उन लोगों की दृष्टि में जो देखते हैं और तेरे लिए

نُرى آيات ونهدم ما يعمرون - الحمد لله الذي

हम निशान दिखाएंगे और जो इमारते बनाते हैं हम ध्वस्त कर देंगे। उस खुदा की

प्रशंसा है जिसने तुझे

جعلك المسيح ابن مريم - لا يُسأل عما يفعله وهم

मसीह इब्ने मरयम बनाया। वह उन कार्यों से पूछा नहीं जाता जो वह करता है

और लोग अपने कार्यों से

يُسألون^① - وقالوا اتجعل فيها من يفسد فيها

पूछे जाते हैं और उन्होंने कहा कि क्या तू ऐसे व्यक्ति को खलीफ़ा बनाता है जो

पृथ्वी पर उपद्रव करता है

قال إني أعلم ما لا تعلمون - إني مهين من اراد

① ख़ुदा तआला का पवित्र कलाम जो मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया के कुछ स्थानों में लिखा गया है उसमें ख़ुदा तआला ने व्याख्या के साथ वर्णन कर दिया है कि उसने किस प्रकार मुझे ईसा बिन मरयम ठहराया। उस किताब में पहले ख़ुदा ने मेरा नाम मरयम रखा तत्पश्चात् प्रकट किया कि उस मरयम में ख़ुदा की ओर से रूह फूँकी गई और फिर फ़रमाया कि रूह फूँकने के पश्चात् मरयमी पद ईस्वी पद की ओर स्थानान्तरित हो गया। इस प्रकार मरयम से ईसा पैदा होकर इब्ने मरयम कहलाया। फिर दूसरे स्थान में इसी पद के संबंध में फ़रमाया -

فاجاءه المخاض الى جذع النخلة - قال ياليتني

مت قبل هذا و كنت نسيًا مَنسِيًّا -

यहां ख़ुदा तआला एक रूपक के तौर पर फ़रमाता है कि जब उस मामूर में मरयमी पद से ईसवी पद का जन्म हुआ और इस दृष्टि से यह मामूर इब्ने मरयम बनने लगा तो प्रचार की आवश्यकता जो प्रजनन की पीड़ा से समानता रखती है उसे उम्मत की सूखी जड़ के सामने लाई जिनमें बोध और संयम का फल नहीं था और वे तैयार थे कि ऐसा दावा सुनकर झूठ बांधने के आरोप लगाएं और कष्ट दें तथा उसके बारे में भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें करें। अतः उसने अपने हृदय में कहा कि काश मैं इस से पूर्व मर जाता और ऐसा भूला-बिसरा हो जाता कि कोई मेरे नाम से परिचित न होता। इसी से।

उसने कहा कि उसके संबंध में जो कुछ मैं जानता हूं तुम नहीं जानते। मैं उस व्यक्ति को अपमानित करूंगा जो तेरे

اهانتك۔ اِنِّي لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُونَ۔ كتب الله

अपमान का इरादा करेगा। मेरे पास मेरे रसूल किसी शत्रु से नहीं डरा करते खुदा ने लिख छोड़ा है कि

لَا غَلِبَ لَنَا وَأَرْسَلْنَا۔ وَهُمْ مِنْ بَعْدِ غَلِبِهِمْ سَيَغْلِبُونَ^①

मैं और मेरे रसूल विजयी रहेंगे और वे पराजित होने के पश्चात् शीघ्र विजयी हो जाएंगे।

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ۔

खुदा उनके साथ है जो संयम धारण करते हैं और वे जो शुभ कर्म करने वाले हैं।

اريت زلزلة الساعة۔ اِنِّي احافظُ كُلَّ مَنْ فِي الدَّارِ۔

प्रलय के समान एक भूकम्प आने वाला है जो तुम्हें दिखाऊंगा तथा मैं प्रत्येक को जो इस घर में है उसकी रक्षा करूंगा।

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ۔ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ

हे अपराधियो ! आज तुम अलग हो जाओ। सत्य आया और असत्य

الباطل۔ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ۔

भाग गया। यह वही है जिसके बारे में तुम जल्दी करते थे

① इस खुदा की वह्यी में खुदा ने मेरा नाम रसूल रखा क्योंकि जैसा कि बराहीन अहमदिया में लिखा गया है खुदा तआला ने मुझे समस्त नबियों का द्योतक ठहराया है और सब नबियों के नाम मेरी ओर सम्बद्ध किए हैं मैं आदम हूं, मैं शीस हूं, मैं नूह हूं, मैं इब्राहीम हूं, मैं इस्हाक हूं, मैं इस्माईल हूं, मैं याकूब हूं, मैं यूसुफ हूं, मैं मूसा हूं, मैं दाऊद हूं, मैं ईसा हूं और आहंजरत के नाम का पूर्ण द्योतक करने वाला हूं अर्थात् प्रतिबिम्ब के तौर पर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हूं। इसी से।

بشارة تلقاها النبيون - أَنْتَ عَلَى بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّكَ -

यह वह शुभ सन्देश है जो नबियों को मिला था। तू खुदा की ओर से नितान्त स्पष्ट प्रमाणों के साथ प्रकट हुआ है।

كفيناك المستهزئين - هَلْ أَنْبَأَكُمْ عَلَى مَنْ تَنْزَّلُ

वे लोग जो तुझ पर उपहास करते हैं उनके लिए हम पर्याप्त हैं क्या मैं तुम्हें बताऊं कि किन लोगों पर

الشياطين - تَنْزَّلُ عَلَى كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ - وَلَا تَيْسَسُ

शैतान उतरा करते हैं। प्रत्येक महा झूठे दुराचारी पर शैतान उतरते हैं और तू खुदा की

مِنْ رُّوحِ اللَّهِ - أَلَا إِنَّ رُّوحَ اللَّهِ قَرِيبٌ - أَلَا إِنَّ نَصْرَ

दया से निराश न हो। सुनो कि खुदा की दया निकट है। सुनो! कि खुदा की सहायता

اللَّهُ قَرِيبٌ - يَأْتِيكَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ -

निकट है। वह सहायता तुझे प्रत्येक दूर के मार्ग से पहुंचेगी और ऐसे मार्गों से पहुंचेगी कि वे मार्ग लोगों

يَأْتُونَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ -

के बहुत चलने से जो तेरी ओर आएंगे गहरे हो जाएंगे। लोग इतनी अधिकता से तेरी ओर आएंगे कि जिन मार्गों पर वे

يَنْصُرُكَ اللَّهُ مِنْ عِنْدِهِ - يَنْصُرُكَ رِجَالُ نُوحٍ إِلَيْهِمْ

चलेंगे वे गहरे हो जाएंगे। खुदा अपनी ओर से तेरी सहायता करेगा। तेरी सहायता वे लोग करेंगे जिनके हृदयों में हम अपनी

مِنْ السَّمَاءِ - لَا مَبْدَلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ - قَالَ رَبِّكَ

ओर से इल्हाम करेंगे। खुदा की बातें टल नहीं सकती। तेरा रब्ब कहता है

إِنَّهُ نَازِلٌ مِنَ السَّمَاءِ مَا يَرْضِيكَ - إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ

कि आकाश से एक ऐसा निशान प्रकट होगा कि तू प्रसन्न हो जाएगा। हम एक खुली-खुली विजय तुझ को

فَتَغَا مُبِينًا- فَتَحَ الْوَلِيَّ فَتَحَ وَقَرَّبَنَا نَجِيًّا-

प्रदान करेंगे। वली की विजय एक महान विजय है और हमने उसको ऐसा

सानिध्य प्रदान किया कि अपना घनिष्ठ मित्र बना दिया

اشْجَعَ النَّاسَ- وَلَوْ كَانَ الْإِيمَانُ مَعْلَقًا بِالشَّرِيَّا

वह समस्त लोगों से अधिक बहादुर है यदि ईमान सुरैया से लटका होता तो वह

वहीं जाकर उसको ले लेता

لَنَا لَهُ- أَنَا رَأَى اللَّهَ بِرَهَانِهِ- كُنْتُ كَنْزًا مَخْفِيًّا

खुदा उसके प्रमाण को प्रकाशित करेगा। मैं एक गुप्त खज़ाना था

فَأَحْبَبْتُ أَنْ أُعْرَفَ- يَا قُمْرِيَا شَمْسُ أَنْتَ مِنِّي وَأَنَا

अतः मैं ने चाहा कि प्रकट किया जाऊं। हे चन्द्रमा और हे सूर्य ! तू मुझ से

प्रकट हुआ और मैं

مِنْكَ- إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَانْتَهَى أَمْرُ الزَّمَانِ الْيَنَّا

तुझ से। जब खुदा की सहायता आएगी और युग हमारी ओर लौटेगा तब कहा

जाएगा कि क्या

وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ- أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ- وَلَا تَصْغُرْ

यह व्यक्ति जो भेजा गया सत्य पर न था और चाहिए कि तू खुदा की सृष्टि के

मिलने के समय चिंतित न हो और चाहिए

لَخَلَقَ اللَّهُ وَلَا تَسْتَمُ مِنَ النَّاسِ- وَوَسَّعَ مَكَانَكَ-

कि तू लोगों की अत्यधिक मुलाक़ात से थक न जाए और तुझे अनिवार्य है कि

अपने मकान को विशाल करे ताकि लोग जो बहुत अधिक संख्या में आएंगे

وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ-

उनको ठहरने के लिए पर्याप्त स्थान हो और ईमान वालों को शुभ सन्देश दे कि

खुदा के समक्ष उनका क़दम सत्य पर है।

وَأَتْلُ عَلَيْهِمْ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ- أَصْحَابُ الصِّفَّةِ-

और जो कुछ तेरे रब्ब की ओर से तुझ पर वह्यी उतारी गई है वह उन लोगों

को सुना जो तेरी जमाअत में प्रवेश करेंगे।

وما ادرالك ما اصحاب الصفّة - ترى اعينهم تفيض

सुफ़ः के रहने वाले। और तू क्या जानता है कि क्या हैं सुफ़ः के रहने वाले।

तू देखेगा कि उनकी आंखों से आंसू

من الدّمع - يُصلّون عليك - ربّنا انّنا سمعنا منادياً

जारी होंगे वे तुझ पर दरूद भेजेंगे और कहेंगे कि हे हमारे ख़ुदा ! हमने एक

मुनादी करने वाले

ينادي للایمان - وداعياً الى الله وسراجاً منيراً - يا اَحْمَدُ

की आवाज़ सुनी है जो ईमान की ओर बुलाता है और ख़ुदा की ओर बुलाता है

और एक चमकता हुआ दीपक है। हे अहमद ! तेरी बातों से

فاضت الرّحمة على شفّتيك - انّك باعيننا - سمّيتك

दया जारी की गई है। तू मेरी आंखों के सामने है मैंने तेरा नाम

المتوكل - يرفع الله ذكرك ويتمّ نعمته عليك في الدنيا

मुतवक्किल (ख़ुदा पर पूर्ण विश्वास रखने वाला) रखा है। ख़ुदा तेरी चर्चा बुलन्द

करेगा और अपनी ने'मत इस लोक और परलोक में तुझ पर

والآخرة - بوركت يا احمد وكان ما بارك الله فيك

पूर्ण करेगा। हे अहमद ! तू बरकत दिया गया और जो कुछ तुझे बरकत दी गई

वह तेरा ही

حقّافيك - شانك عجيب - واجرك قريب - الارض والسماء

अधिकार था। तेरी शान अद्भुत है और तेरा प्रतिफल निकट है। आकाश और

पृथ्वी

معك كما هو معي - انت وجيه في حضرتي اخترتك

तेरे साथ हैं जैसे कि वे मेरे साथ हैं। तू मेरे दरबार में प्रतिष्ठित है। मैंने तुझे

لنفسى - سبحان الله تبارك وتعالى زاد مجدك

अपने लिए चुना। पवित्र ख़ुदा बड़ी बरकतों वाला और बड़ा महान है वह तेरी

महानता को अधिक करेगा।

ينقطع أبائك ويبدء منك^①

तेरे बाप-दादे की चर्चा समाप्त हो जाएगी और तेरे पश्चात् खानदान का
सिलसिला तुझ से आरंभ होगा।

وما كان الله ليتركك حتى يميز الخبيث من الطيب-

और खुदा ऐसा नहीं कि तुझे छोड़ दे जब तक कि पवित्र और अपवित्र में

① स्मरण रहे कि बाह्य बुजुर्गी और प्रतिष्ठा की दृष्टि से इस विनीत का खानदान बहुत ख्याति रखता था अपितु इस युग तक भी कि इस खानदान का सांसारिक वैभव पतन के बहुत निकट था। मेरे दादा के इस क्षेत्र में बयासी गांव अपने स्वामित्व के थे और इससे पूर्व वह देश के शासकों के रूप के में रहते थे और किसी हुकूमत के अधीन न थे। फिर शनैः शनैः नीति और खुदा की इच्छा से सिखों के युग में कुछ लड़ाइयों के पश्चात् सब कुछ खो बैठे और केवल छः गांव उनके अधिकार में रहे और फिर दो गांव और हाथ से जाते रहे केवल चार गांव रह गए। इस प्रकार सांसारिक वैभव जो किसी के साथ वफ़ा नहीं करता पतन हो गया। बहरहाल यह खानदान इस क्षेत्र में बहुत ख्याति रखता था परन्तु खुदा तआला ने न चाहा कि यह सम्मान सांसारिक प्रतिष्ठा तक सीमित रहे क्योंकि सांसारिक सम्मानों का अनुचित शेखी, अभिमान और अहंकार के अतिरिक्त कोई उद्देश्य नहीं। इसलिए अब खुदा अपनी पवित्र वह्यी में वादा देता है और मुझे सम्बोधित करके फ़रमाता है कि यह खानदान अपना रंग बदल लेगा और इस खानदान का सिलसिला तुम से आरंभ होगा और पहली चर्चा समाप्त हो जाएगी और इस खुदा की वह्यी में नस्ल की प्रचुरता की ओर भी संकेत है अर्थात् नस्ल बहुत हो जाएगी और जैसा कि प्रत्यक्ष तौर पर समझा है यह खानदान मुग़लिया खानदान के नाम से ख्याति रखता है। खुदा ने जो वास्तविक स्थिति का जानने वाला है बार-बार अपनी पवित्र वह्यी में प्रकट किया है कि यह फ़ारसी खानदान है और मुझे अब्नाए फ़ारस करके ही पुकारा है। जैसा कि वह मेरे संबंध में फ़रमाता है -

अन्तर न दिखा दे।

إذا جاء نصر الله والفتح وتمت كلمة ربك - هذا

और जब खुदा तआला की सहायता और विजय आएगी तथा खुदा का वादा
पूर्ण होगा तब कहा जाएगा कि यह

الذي كنتم به تستعجلون - أردت أن استخلف فخلقْتُ

वही बात है जिसके लिए तुम शीघ्रता करते थे। मैंने इरादा किया कि अपना

शेष हाशिया

ان الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله رد عليهم

رجل من فارس شكر الله سعيه

अर्थात् जो लोग काफ़िर होकर खुदा तआला के मार्ग से रोकते हैं एक फ़ारसी मूल के
व्यक्ति ने उसका खण्डन लिखा है। खुदा उसकी इस कोशिश का कृतज्ञ है। फिर वह
एक और वह्यी में मेरे बारे में फ़रमाता है

لو كان الايمان معلقاً بالثريا لئلا ناله رجل من فارس -

अर्थात् यदि ईमान सुरैया के साथ लटका हो तो एक फ़ारसी नस्ल का व्यक्ति वहां भी
उसको पा लेता। फिर अपनी एक अन्य वह्यी में मुझे सम्बोधित करके फ़रमाता है -

خذوا التوحيد التوحيد يا ابناء الفارس -

अर्थात् एकेश्वरवाद को पकड़ो, एकेश्वरवाद को पकड़ो हे फारस के बेटे !

खुदा के इन समस्त वाक्यों से सिद्ध है कि इस विनीत का खानदान फ़ारसी है न कि
मुग़लिया। न मालूम किस ग़लती से मुग़ल खानदान के साथ प्रसिद्ध हो गया और जैसा
कि हमें सूचना दी गई है मेरे खानदान की वंशावली इस प्रकार से है कि मेरे पिता का
नाम मिर्जा गुलाम मुर्तज़ा था और उनके पिता का नाम मिर्जा अता मुहम्मद, इनके पिता
मिर्जा गुल मुहम्मद, मिर्जा गुल मुहम्मद के पिता मिर्जा फ़ैज़ मुहम्मद और मिर्जा फ़ैज़
मुहम्मद के पिता मिर्जा मुहम्मद क़ायम और इनके पिता मिर्जा मुहम्मद असलम, इनके
पिता मिर्जा दिलावर, मिर्जा दिलावर के पिता मिर्जा मुहम्मद अलाहदीन इनके पिता मिर्जा

खलीफ़ा बनाऊं। अतः मैंने

أَدَمَ - دَنِي فَتَدَلِّي فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى -

इस आदम को पैदा किया। वह खुदा के निकट हुआ फिर सृष्टि की ओर झुका
तथा खुदा और प्रजा के मध्य ऐसा

يُحْيِي الدِّينَ وَيُقِيمُ الشَّرِيعَةَ - يَا أَدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ

हो गया जैसा कि दो धनुषों के मध्य की प्रत्यंचा (डोरी) होती है धर्म को जीवित
करेगा और शरीअत को स्थापित करेगा। हे आदम

وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ - يَا مَرْيَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ

शेष हाशिया

जाफ़र बेग, इनके पिता मिर्ज़ा मुहम्मद बेग, इनके पिता मिर्ज़ा अब्दुल बाक़ी इनके पिता
मिर्ज़ा मुहम्मद सुल्तान, मिर्ज़ा मुहम्मद सुल्तान के पिता मिर्ज़ा हादी बेग। मालूम होता है
कि मिर्ज़ा और बेग का शब्द किसी समय में बतौर उपाधि के उनको मिला था जिस
प्रकार ख़ान का नाम बतौर उपाधि दिया जाता है। बहरहाल जो कुछ खुदा ने प्रकट किया
है वही उचित है। मनुष्य एक तुच्छ सी डगमगाहट से ग़लती में पड़ सकता है परन्तु खुदा
भूल और ग़लती से पवित्र है। इसी से।^①

हाशिए का हाशिया

① मेरे ख़ानदान के बारे में खुदा की एक अन्य वह्यी है और वह यह है कि खुदा मेरे
बारे में फ़रमाता है - سَلَامٌ مِّنْ أَهْلِ الْبَيْتِ (अनुवाद) सलमान अर्थात् यह विनीत जो
दो सुलह की नींव डालता है हम में से है जो अहले बैत हैं। यह खुदा की वह्यी उस
प्रसिद्ध घटना की पुष्टि करती है कि इस विनीत की कुछ दादियां सादात (की नस्ल) में
से थीं तथा दो सुलह से अभिप्राय यह है कि खुदा ने इरादा किया है कि एक सुलह मेरे
हाथ से और मेरे द्वारा इस्लाम के आन्तरिक फ़िक्रों में होगी और बहुत सा मतभेद दूर हो
जाएगा और दूसरी सुलह इस्लाम के बाह्य शत्रुओं के साथ होगी कि बहुतों को इस्लाम
की सच्चाई की समझ दी जाएगी और वे इस्लाम में प्रवेश करेंगे तब अन्त होगा। इसी से।

तू और तेरे प्रिये स्वर्ग में प्रवेश करो। हे मरयम तू और तेरे मित्र स्वर्ग में प्रवेश करो।

يا احمد اسكن انت وزوجك الجنة. نُصِرْتَ

हे अहमद ! तू और तेरे मित्र स्वर्ग में प्रवेश करो। तुझे सहायता दी जाएगी।

وقالوا لات حين مناص- ان الذين كفروا

और विरोधी कहेंगे कि अब भागने का स्थान नहीं। वे लोग जो काफिर हो गए

وصدوا عن سبيل الله رد عليهم رجل من فارس

और खुदा के मार्ग के बाधक हुए उन का एक फारसी नस्ल के व्यक्ति ने खण्डन किया।

شكر الله سعيه- امر يقولون نحن جميع منتصر-

खुदा उसके प्रयास का कृतज्ञ है। यह ये लोग कहते हैं कि हम एक जबरदस्त जमाअत का विनाश करने वाले हैं।

سيهزم الجمع ويولون الدبر- انك اليوم لدينا مكين

ये सब लोग भाग जाएंगे और पीठ फेर लेंगे। तू हमारे निकट आज प्रतिष्ठित और अमानतदार है।

امين- وان عليك رحمتي في الدنيا والدين وانك

अमानतदार है और तुझ पर मेरी दया संसार और धर्म में है और तू उन लोगों में से है

من المنصورين- يحمدك الله ويمشي اليك- سبحان

जिनके साथ खुदा की सहायता होती है। खुदा तेरी प्रशंसा करता है और तेरी ओर चल रहा है। वह पवित्र हस्ती

الذي اسرى بعبد له ليلا- خلق ادم فآكرمه-

वही खुदा है जिसने एक रात में तुझे भ्रमण करा दिया। उसने इस आदम को पैदा किया और फिर उसे सम्मान दिया।

جری الله في حُلل الانبياء- بُشِّرِي لَكَ يا احمدي-

यह रसूल-ए-खुदा है नबियों की शैली में अर्थात् प्रत्येक नबी का एक विशेष गुण

उसमें मौजूद है। तुझे खुशखबरी हो हे मेरे अहमद

أَنْتَ مُرَادِي وَمَعِي - سُرْتُكَ سِرِّي - إِنِّي نَاصِرُكَ -

तू मेरी मुराद और मेरे साथ है। तेरा रहस्य मेरा रहस्य है मैं तेरी सहायता करूंगा।

إِنِّي حَافِظُكَ - إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ أَمَامًا -

मैं तेरा संरक्षक रहूंगा। मैं तुझे लोगों के लिए इमाम बनाऊंगा और तू उन का

पथ-प्रदर्शक होगा और वे तेरे अनुयायी होंगे

أَكُنْ لِلنَّاسِ عَجَبًا - قُلْ هُوَ اللَّهُ عَجِيبٌ - لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ

क्या उन लोगों को आश्चर्य हुआ। तू कह खुदा अदभुत चमत्कारों वाला है। वह

अपने कार्यों से पूछा नहीं जाता

وَهُمْ يُسْأَلُونَ - وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا يَبِينُ النَّاسُ -

और लोग पूछे जाते हैं और ये दिन हम लोगों में फेरते रहते हैं।

وَقَالُوا إِن هَذَا إِلَّا اخْتِلَاقٌ - قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ

और कहेंगे कि यह तो केवल एक बनावट है। कह यदि तुम खुदा से प्रेम रखते हो तो

اللَّهُ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ - إِذَا نَصَرَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ

आओ मेरा अनुसरण करो ताकि खुदा भी तुम से प्रेम रखे। जब खुदा तआला

मोमिन की सहायता करता है तो

جَعَلَ لَهُ الْهَاسِدِينَ فِي الْأَرْضِ - وَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ -

पृथ्वी पर उसके कई द्वेष रखने वाले पैदा कर देता है। और उसकी कृपा को

कोई रद्द नहीं कर सकता।

فَالنَّارُ مَوْعِدُهُمْ - قُلْ اللَّهُ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ -

अतः नर्क उनके वादे का स्थान है। तू कह खुदा ने यह कलाम उतारा है। फिर

उन्हें खेल-कूद संबंधी विचारों में छोड़ दे।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ امْنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ

और जब उनको कहा जाए कि ईमान लाए जैसा कि लोग ईमान लाए। कहते हैं

क्या हम

كَمَا مِنَ السُّفَهَاءِ إِلَّا أَنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَكِنْ لَا

मूर्खों के समान ईमान लाएं। सावधान हो कि वास्तव में वही लोग मूर्ख हैं परन्तु अपनी मूर्खता पर

يَعْلَمُونَ - وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا

अवगत नहीं और जब उनको कहा जाए कि पृथ्वी पर उपद्रव मत करो कहते हैं कि

أَنَّا نَحْنُ مُصْلِحُونَ - قُلْ جَاءَكُمْ نُورٌ مِّنَ اللَّهِ فَلَا تَكْفُرُوا

अपितु हम तो सुधार करने वाले हैं। कह तुम्हारे पास खुदा का प्रकाश आया है।

अतः यदि

أَن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ - أَمْرُ تَسْأَلُهُمْ مِنْ خَرَجٍ فَهُمْ مِنْ مَّعْزَمٍ

मोमिन हो तो इन्कार मत करो। क्या तू उन से कुछ कर मांगता है कि वह उस

चट्टी के कारण

مُثْقَلُونَ - بَلْ أَتَيْنَهُم بِالْحَقِّ فَهُمْ لُلْحَقِّ كَارِهِونَ - تَلْظَفْ

ईमान लाने का भार उठा नहीं सकते अपितु हमने उनको अधिकार दिया और वह

उसे लेने से घृणा करते हैं। लोगों के साथ

بِالنَّاسِ وَتَرْحَمُ عَلَيْهِمْ - أَنْتَ فِيهِمْ بِمَنْزِلَةِ مُوسَى وَاصْبِرْ

नम्रता और दयापूर्वक व्यवहार कर। तू उन से मूसा के स्थान पर है और उनकी

عَلَى مَا يَقُولُونَ - لَعَلَّكَ بِأَخِي نَفْسِكَ إِلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ -

बातों पर धैर्य कर। क्या तू स्वयं को इसलिए तबाह करेगा कि वे क्यों ईमान नहीं

लाते

لَا تَقِفْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ - وَلَا تَخَاطَبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا

उस बात के पीछे मत पड़ जिसका तुझे ज्ञान नहीं तथा उन लोगों के बारे में जो

अत्याचारी हैं मुझ से बात

أَنَّهُمْ مَغْرُقُونَ - وَاصْنَعِ الْفُلَكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا - إِنَّ

मत कर क्योंकि वे सब डुबो दिए जाएंगे और हमारी आंखों के सामने नौका

तैयार कर और हमारे संकेत से वे लोग जो

الَّذِينَ يَبَايِعُونَكَ اَتْمَا يْبَايِعُونَ اللّٰهَ-يدالله فوق ايديهم

तेरे हाथ में हाथ देते हैं वे खुदा के हाथ में हाथ देते हैं। यह खुदा का हाथ है जो उनके हाथों पर है।

واذيمكربك الذي كَفَّرَ^① - او قدلى يا هاما

और स्मरण कर वह समय जब तुझ से वह व्यक्ति छल करने लगा जिसने झुठलाया और तुझे काफ़िर ठहराया और कहा कि हे हामान

لعل اطلع على الله موسى - واني لا اظنه من الكاذبين -

मेरे लिए अग्नि भड़का ताकि मैं मूसा के खुदा पर सूचना पाऊं और मैं उसे झूठा समझता हूँ

تبت يد ابى لهبٍ ووتب^② - ما كان له ان يدخل

तबाह हो गए दोनों हाथ अबू लहब के और वह स्वयं भी तबाह हो गया। उसे नहीं चाहिए था कि इस मामले में हस्तक्षेप करता

فيها الا خائفا - وما اصابك فمن الله - الفتنة ههنا -

परन्तु डरते-डरते। और तुझे जो कुछ शोक पहुंचेगा वह तो खुदा की ओर से है।

① झुठलाने वाले से अभिप्राय मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी है क्योंकि उसने फ़त्वा लिख कर नज़ीर हुसैन के सामने प्रस्तुत किया और इस देश में काफ़िर कहने की अग्नि भड़काने वाला नज़ीर हुसैन ही था। इसी से।

② यहां अबू लहब से अभिप्राय एक देहलवी मौलवी है जो मृत्यु पा चुका है और यह भविष्यवाणी पच्चीस वर्ष की है जो बराहीन अहमदिया में लिखी है और यह उस युग में प्रकाशित हो चुकी है जबकि मेरे बारे में कुफ़्र का फ़त्वा भी इन मौलवियों की ओर से न निकला था। कुफ़्र के फ़त्वे का प्रवर्तक भी वही देहली का मौलवी था जिसका नाम खुदा तआला ने अबू लहब रखा और कुफ़्र से एक लम्बे समय पूर्व यह सूचना दे दी जिसका बराहीन अहमदिया में उल्लेख है। इसी से।

यहां एक उपद्रव फैलेगा।

فاصبر كما صبر اولو العزم - الا انها فتنة من الله -

अतः धैर्य कर जैसा कि दृढ़ संकल्प नबियों ने धैर्य किया। वह उपद्रव खुदा तआला की ओर से होगा।

ليحب حبًّا جَمًّا - حُبًّا من الله العزيز الاكْرَم - شاتان

ताकि वह तुझ से प्रेम करे। वह उस खुदा का प्रेम है जो बहुत प्रभुत्वशाली और महान है। दो बकरियां

تذبحان - وكل من عليها فان - ولا تهنوا ولا تحزنوا -

जिबह की जाएंगी और प्रत्येक जो पृथ्वी पर है अन्ततः वह फ़ना होगा। तुम कुछ शोक मत करो और चिन्ताग्रस्त न हो

اليس الله بكافٍ عبده - الم تعلم ان الله على

क्या खुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं। क्या तू नहीं जानता कि खुदा प्रत्येक

كُلِّ شَيْءٍ قدير - وان يتخذونك الا هزوا -

वस्तु पर समर्थ है और तुम्हें उन्होंने उपहास का स्थान बना रखा है

أَهَذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ - قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ

वे हंसी के मार्ग से कहते हैं क्या यही है जिसे खुदा ने अवतरित किया। उनको कह कि मैं तो एक मनुष्य हूँ।

يُوحَىٰ إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِلَّهِ سُوءُ ظَنٍّ فِي الْقُرْآنِ -

मेरी ओर यह वह्यी हुई है कि तुम्हारा खुदा एक खुदा है और समस्त भलाई और नेकी कुर्आन में है।

لَا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ - قُلْ إِن هَدَىٰ اللَّهُ

किसी अन्य पुस्तक में नहीं। उसके रहस्यों तक वही पहुंचते हैं जो पवित्र हृदय हैं। कह हिदायत वास्तव में खुदा की हिदायत

الهُدَى - وَقَالُوا لَوْلَا نَزَّلَ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّن قُرَيْشٍ

ही है। और कहेंगे कि यह खुदा की वह्यी किसी बड़े व्यक्ति पर क्यों नहीं उतरी

जो दो शहरों में से

عظیم^① - وقالوا اني لك هذا - ان هذا المکر مکر تموه

किसी एक शहर का निवासी है और कहेंगे कि तुझे यह पद कहां से प्राप्त हो गया। यह तो एक छल है जो तुम लोगों ने

في المدينة - ينظرون اليك وهم لا يبصرون -

मिलकर बनाया। ये लोग तेरी ओर देखते हैं परन्तु तू उन्हें दिखाई नहीं देता।

قل ان كنتم تحبون الله فاتبعوني يحببكم الله - على

उनको कह कि तुम खुदा से प्रेम करते हो तो आओ मेरा अनुसरण करो ताकि खुदा भी तुम से प्रेम करे। खुदा आया

ربكم ان يرحمكم - وان عدتم عدنا - وجعلنا جهنم

है ताकि तुम पर दया करे और यदि तुम फिर उपद्रव की ओर लौटोगे तो हम भी अज़ाब देने की ओर

للكافرين حصيرا - وما أُرسلناك إلا رحمة للعالمين -

लौटेंगे। हमने नर्क को काफ़िरों के लिए कैद खाना बनाया है और हमने तुझे समस्त विश्व पर दया करने के लिए बनाया है।

قل اعملوا على مكانتكم اني عامل فسوف تعلمون -

उनको कह कि तुम अपनी जगहों पर अपने तौर पर अमल करो और मैं अपने तौर पर अमल कर रहा हूँ फिर थोड़ी देर के बाद तुम देख लोगे कि

لا يُقبل عملٌ مثقال ذرة من غير التقوى - ان الله مع

खुदा किस की सहायता करता है। कोई कर्म बिना संयम के लेशमात्र भी स्वीकार नहीं हो सकता। खुदा उनके साथ होता है

① अर्थात् इस व्यक्ति को महदी मौऊद होने का दावा है जो पंजाब के एक छोटे से गांव क्रादियान का रहने वाला है। महदी मा 'हूद क्यों मक्का या मदीना में अवतरित न हुआ जो इस्लाम की केन्द्र भूमि है। इसी से।

الذین اتقوا والذین هم محسنون۔ قل ان افتریتہ
जो संयम धारण करते हैं और उनके साथ जो शुभ कर्मों में व्यस्त हैं। कह यदि
मैंने झूठ बांधा है तो मेरी

فعلی اجرامی۔ ولقد لبثت فیکم عمرا من قبلہ افلاتعقلون۔
गर्दन पर मेरा पाप है और मैं इस से पहले एक अवधि तक तुम में ही रहता था
क्या तुम्हें समझ नहीं।

الیس اللہ بکافٍ عبده۔ ولنجعلہ آیۃ للناس ورحمة
क्या खुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं। और हमे उसे लोगों के लिए एक
निशान और एक नमूना

منا وکان امرًا مقضیاً۔ قول الحق الذی فیہ تمترون۔
दया का बनाएंगे और यह आरंभ से प्रारब्ध था। यह वही बात है जिसमें तुम
सन्देह करते थे।

سلام علیک جعلت مبارکاً۔ انت مبارک فی الدنیا
तुझ पर सलाम, तू मुबारक किया गया तू संसार और आखिरत में मुबारक
والآخرة۔ امراض الناس وبرکاته۔
है। तेरे माध्यम से रोगियों पर बरकत उतरेगी^①

بخرام کہ وقتِ تو نزدیک رسید وپائے محمدیان برمنار بلند تر محکم افتاد
अब उठ खड़ा हो तेरा समय निकट है, और अब वह समय आ रहा है, जब मुसलमान

हाशिया

① यह खुदा का कथन है कि तेरे द्वारा रोगियों पर बरकत उतरेगी। रूहानी और शारीरिक (अध्यात्मिक तथा भौतिक) दोनों प्रकार के रोगियों पर आधारित है। अध्यात्मिक तौर पर इसलिए कि मैं देखता हूँ कि मेरे हाथ पर हज़ारों बैअत करने वाले ऐसे हैं कि पहले उनकी व्यावहारिक हालतें खराब थीं और फिर बैअत करने के बाद उनकी व्यावहारिक हालतें सही हो गईं और उन्होंने भिन्न-भिन्न प्रकार के पापों से तौब: की और नमाज़ की पाबन्दी की। मैं ऐसे सैकड़ों लोग अपनी जमाअत में पाता हूँ कि जिन के हृदयों में यह तड़प और तपन पैदा हो गई है कि वह कामवासना संबंधी

गड्ढे में से निकाले जाएंगे, और ऊंचे और दृढ़ गुम्मत पर अपना पांव रखेंगे।

پاک محمد مصطفیٰ نبیوں کا سردار۔ خدا تیرے سب کام درست کر دے گا۔

पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा नबियों का सरदार। खुदा तेरे सब कार्य ठीक कर देगा।

اور تیری ساری مرادیں تجھے دے گا۔ رَبُّ الْاَفْوَاجِ اس طرف توجہ کرے گا

और तेरी समस्त मनोकामनाएं तुझे देगा। सेनाओं का रब्ब इस ओर ध्यान देगा

اس نشان کا مدعا یہ ہے کہ قرآن شریف خدا کی کتاب اور میرے منہ کی باتیں ہیں

इस निशान का उद्देश्य यह है कि कुर्आन करीम खुदा की किताब और मेरे मुंह की बातें हैं

يا عيسى اِنِّى متوفيك ورافعت الى وجاعل الذين

शेष हाशिया

भावनाओं से कैसे पवित्र हों और शारीरिक रोगों के बारे में मैंने अनेकों बार देखा है कि अधिकतर खतरनाक रोगों वाले मेरी दुआ और ध्यान से स्वस्थ हुए हैं। मेरा पुत्र मुबारक अहमद लगभग दो वर्ष की आयु में ऐसा बीमार हुआ कि निराशा की हालत प्रकट हो गई और अभी मैं दुआ कर रहा था कि किसी ने कहा कि लड़का मर गया है अब बस करो दुआ का समय नहीं परन्तु मैंने दुआ करना बन्द न किया। और जब मैंने उसी हालत में खुदा की ओर ध्यान करने में लड़के के शरीर पर हाथ रखा तो सहसा मुझे लड़के का सांस आना महसूस हुआ और अभी मैंने हाथ उससे हटाया नहीं था कि स्पष्ट तौर पर लड़के में जान महसूस हुई और कुछ मिनट के बाद होश में आकर बैठ गया।

फिर तारुन के दिनों में जबकि क़ादियान में तारुन जोर पर थी मेरा लड़का शरीफ़ अहमद बीमार हुआ और एक तीव्र ज्वर चढ़ा जिस से लड़का बिलकुल बेहोश हो गया और बेहोशी में दोनों हाथ मारता था मुझे विचार आया कि यद्यपि मनुष्य को मौत से इन्कार नहीं परन्तु यदि लड़का इन दिनों में जबकि तारुन का जोर है मर गया तो समस्त शत्रु इस ज्वर को तारुन ठहराएंगे और खुदा तआला की उस पवित्र वही को झुठलाएंगे कि जो उसने फ़रमाया है اِنِّى احافظ كل من فى الدار अर्थात् मैं प्रत्येक को जो तेरे घर की चार दीवार के अन्दर है तारुन से बचाऊंगा। इस विचार से मेरे हृदय पर वह सद्मा पहुंचा कि मैं वर्णन नहीं कर सकता। लगभग रात के बारह बजे का समय था कि जब

हे ईसा मैं तुझे मृत्यु दूंगा और तुझे अपनी ओर उठाऊंगा और मैं तेरे

اتبعوك فوق الذين كفروا الى يوم القيامة-

अनुयायियों को तेरे इन्कार करने वालों पर प्रलय तक विजयी रखूंगा।

ثَلَاثَةٌ مِنَ الْاَوَّلِينَ وَثَلَاثَةٌ مِنَ الْاٰخِرِينَ- میں اپنی چکار

उनमें से एक प्रथम गिरोह होगा और एक पिछला। मैं अपनी चमकार

دکھلاؤں گا۔ اپنی قدرت نمائی سے تجھ کو اٹھاؤں گا-

दिखाऊंगा। अपनी ईश्वरीय शक्ति से तुझे उठाऊंगा।

دنیا میں ایک نذیر آیا پر دنیا نے اُس کو قبول نہ کیا لیکن

शेष हाशिया

लड़के की हालत बहुत खराब हो गई और हृदय में डर पैदा हुआ कि यह साधारण ज्वर नहीं कोई और ही बला है। तब मैं क्या वर्णन करूं कि मेरे हृदय की क्या हालत थी कि खुदा न करे यदि लड़का मर गया तो अत्याचारी स्वभाव लोगों को सच छुपाने के लिए बहुत सा सामान हाथ आ जाएगा। इसी हालत में मैंने वुजू किया और नमाज़ के लिए खड़ा हो गया और खड़े होने के साथ ही तुरन्त मुझे वह हालत प्राप्त हो गई जो दुआ की स्वीकारिता के लिए एक खुली-खुली निशानी है। और मैं उस खुदा की क्रसम खाकर कहता हूं जिसके क़ब्जे में मेरी जान है कि अभी मैं शायद तीन रकअत पढ़ चुका था कि मुझ पर कश्फ़ी हालत छा गई और मैंने कश्फ़ी दृष्टि से देखा कि लड़का बिल्कुल स्वस्थ है। तब वह कश्फ़ी हालत जाती रही और मैंने देखा कि लड़का होश के साथ चारपाई पर बैठा है और पानी मांगता है। और मैं चार रकअत पूरी कर चुका था। परन्तु उसे पानी दिया और शरीर पर हाथ लगाकर देखा कि ज्वर का नामोनिशान नहीं। और अनर्थक बात, बेचैनी और बेहोशी बिल्कुल दूर हो चुकी थी तथा लड़के की हालत बिल्कुल स्वस्थ थी। मुझे उस खुदा की कुदरत के दृश्य ने खुदा की शक्तियां और दुआ स्वीकार होने पर एक ताज़ा ईमान प्रदान किया।

फिर एक लम्बे समय के पश्चात् ऐसा संयोग हुआ कि नवाब सरदार **मुहम्मद अली खान रईस मालेर कोटला** का लड़का क़ादियान में बहुत बीमार हो गया और निराशा और नाउम्मीदी के लक्षण प्रकट हो गए उन्होंने मुझ से दुआ के लिए याचना की। मैंने अपने बैतुद्दुआ में जाकर उनके लिए

संसार में एक डराने वाला आया परन्तु संसार ने उसे स्वीकार न किया परन्तु

خدا اُسے قبول کرے گا اور بڑے زور اور حملوں سے

खुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली आक्रमणों से

اُس کی سچائی ظاہر کر دے گا۔ انت منی بمنزلۃ توحیدی

उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा। तू मुझ से ऐसा है जैसा कि मेरा एकेश्वरवाद

وتفریدی۔ فحان ان تُعان وتعرف بین الناس۔

और एकत्व। अतः वह समय आता है कि तू सहायता दिया जाएगा और संसार

शेष हाशिया

दुआ की। और दुआ के बाद मालूम हुआ कि जैसे अटल प्रारब्ध है और इस समय दुआ करना बेकार है। तब मैंने कहा - हे मेरे खुदा ! यदि दुआ स्वीकार नहीं होती तो मैं सिफ़ारिश करता हूँ कि मेरे लिए इसको अच्छा कर दे। ये शब्द मेरे मुँह से निकल गए, परन्तु बाद में मैं बहुत शर्मिदा हुआ कि ऐसे मैंने क्यों कहा और साथ ही मुझे खुदा की ओर से यह वह्यी हुई **مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ** अर्थात् किस की मजाल है कि खुदा के आदेश के बिना सिफ़ारिश करे। मैं उस वह्यी को सुनकर चुप हो गया और अभी एक मिनट नहीं गुजरा होगा कि फिर खुदा की यह वह्यी हुई कि **إِنَّكَ أَنْتَ الْمَجَاز** अर्थात् तुझे सिफ़ारिश करने की इजाजत दी गई। बाद में मैंने फिर दुआ पर जोर दिया और मुझे महसूस हुआ कि अब यह दुआ खाली नहीं जाएगी। अतः उसी दिन अपितु उसी समय लड़के की हालत स्वास्थ्य की ओर लौट आई। जैसे वह क्रब्र से निकला। मैं निस्सन्देह जानता हूँ कि हजरत ईसा अलैहिस्सलाम के मुर्दे ज़िन्दा करने के चमत्कार इस से बढ़कर न थे। मैं खुदा का कृतज्ञ हूँ कि इस प्रकार के मुर्दों को ज़िन्दा करना बहुत से मेरे हाथ से प्रकटन में आ चुके हैं। और एक बार मेरा लड़का **बशीर अहमद** आंखों के रोग से रोगी हो गया और लम्बे समय तक उपचार होता रहा कुछ लाभ न हुआ। तब उसकी व्याकुल हालत देखकर मैंने खुदा के दरबार में दुआ की तो यह इल्हाम हुआ **بَرَقَ طِفْلِي بِشِير** अर्थात् मेरे लड़के बशीर ने आंखें खोल दीं तब उसी दिन खुदा तआला की कृपा से उसकी आंखें अच्छी हो गईं। और एक बार मैं स्वयं बीमार हो गया यहां तक कि मौत के करीब समझकर मुझे तीन बार सूरह यासीन सुनाई गई। परन्तु खुदा ने मेरी

में प्रसिद्ध किया जाएगा।

انت مَنِّي بمنزلة عرشي - انت مَنِّي بمنزلة ولدي^①

तू मुझ से मेरे अर्श के स्थान पर है तू मुझ से मेरे पुत्र के स्थान पर है।

انت مَنِّي بمنزلة لا يعلمها الخلق - نحن اولياءكم

तू मुझ से उस अत्यन्त सानिध्य के स्थान पर है जिसे संसार नहीं जान सकता।

हम तुम्हारे अभिभावक और

في الحَيوة الدُّنيا وَ الآخرة - اذا غَضِبْتَ غَضِبْتُ

शेष हाशिया

दुआ को स्वीकार करके किसी दवा के माध्यम के बिना मुझे शिफा दी। और जब मैं प्रातः काल उठा तो बिल्कुल ठीक था और साथ ही खुदा की यह वही हुई। **وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا** अर्थात् यदि इस रहमत के बारे में सन्देह में हो जो हमने अपने बन्दे पर उतारी तो इस शिफा का कोई उदाहरण प्रस्तुत करो। इसी प्रकार बहुत सी परिस्थितियाँ आईं जो केवल दुआ और ध्यान से खुदा तआला ने बीमारों को अच्छा कर दिया जिन की गणना करना दुष्कर है। अभी 8 जुलाई 1906 के दिन से जो पहली रात थी मेरा लड़का मुबारक अहमद खसरे के रोग से घबराहट और बेचैनी में था। एक रात तो शाम से सुबह तक तड़प-तड़प कर उसने गुजारी और एक पल के लिए भी नींद न आई, और दूसरी रात में उससे कठिनतम लक्षण प्रकट हुए और बेहोशी में अपनी बोटियाँ तोड़ता था और निरर्थक बातें करता था और शरीर में एक सख्त खुजली थी। उस समय मेरा दिल दुखी हुआ और इल्हाम हुआ **أَدْعُونِي اسْتَجِبْ لَكُمْ** तब तुरन्त ही दुआ

हाशिया

① खुदा तआला बेटों से पवित्र है और वह वाक्य बतौर रूपक के है। चूँकि इस युग में मूर्ख ईसाइयों ने ऐसे-ऐसे शब्दों से हजरत ईसा को खुदा बना रखा है इसलिए खुदा की नीति ने यह चाहा कि उस से बढ़कर शब्द इस विनीत के लिए प्रयोग करे ताकि ईसाइयों की आंखें खुलें और वे समझें कि वे शब्द जिनसे मसीह को खुदा बनाते हैं इस उम्मत में भी एक है जिसके बारे में उस से बढ़कर ऐसे शब्द प्रयोग किए गए हैं। इसी से।

अभिभावक इस लोक और परलोक में हैं। जिस पर तू क्रोधित हो मैं क्रोधित होता हूँ।

وَكَلَّمَا أَحْبَبْتُ أَحْبَبْتُ مِنْ عَادَى وَلِيَّائِي فَقَدْ اذْنَتْهُ

और जिन से तू प्रेम करे मैं भी प्रेम करता हूँ और जो व्यक्ति मेरे वली से शत्रुता रखे मैं लड़ने के लिए

لِلْحَرْبِ- إِنِّي مَعَ الرَّسُولِ اقْوَمِ- وَالْوَمِنْ يَلُومِ-

उसे चेतावनी देता हूँ। मैं इस रसूल के साथ खड़ा हूँगा और उस व्यक्ति की भर्त्सना करूँगा जो उसकी भर्त्सना करे।

وَأُعْطِيكَ مَا يَدُومُ- يَأْتِيكَ الْفَرَجُ- سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ

शेष हाशिया

के साथ मुझे कश्फ़ी हालत में मालूम हुआ कि उसके बिस्तर पर चूहों के रूप में बहुत से जानवर पड़े हैं और वे उसे काट रहे हैं। एक व्यक्ति उठा और उसने वह तमाम जानवर इकट्ठे करके एक चादर में बांध दिए और कहा कि इसको बाहर फेंक आओ। और फिर वह कश्फ़ी हालत जाती रही और मैं नहीं जानता कि पहले वह कश्फ़ी हालत दूर हुई या पहले रोग दूर हो गया और लड़का आराम से फ़ज्र तक सोया रहा और चूंकि ख़ुदा तआला ने अपनी ओर से मुझे यह विशेष चमत्कार प्रदान किया है। इसलिए मैं निश्चित तौर पर कहता हूँ कि इस रोगों की शिफ़ा के चमत्कार के बारे में समस्त पृथ्वी पर कोई मनुष्य मेरा मुकाबला नहीं कर सकता। और यदि मुकाबले का इरादा करे तो ख़ुदा उसे शर्मिदा करेगा क्योंकि यह ख़ुदा की बख़्शिश विशेष तौर पर मुझे मिली है जो चमत्कारपूर्ण निशान दिखाने के लिए प्रदान की गई है। परन्तु इसके यह मायने नहीं कि प्रत्येक बीमार अच्छा हो जाएगा अपितु इसके ये मायने हैं कि अधिकांश रोगियों को मेरे हाथ पर शिफ़ा होगी। और यदि कोई चालाकी और धृष्टता से इस चमत्कार में मेरा मुकाबला करे। और यह मुकाबला इस ढंग से किया जाए कि जैसे कुरआ डालकर बीस रोगी मेरे सुपुर्द किए जाएं और बीस उसके सुपुर्द किए जाएं तो ख़ुदा तआला उन रोगियों को जो मेरे हिस्से में आए रोग मुक्ति में व्यापक तौर पर दूसरे सदस्य के रोगियों से अधिक रखेगा और स्पष्ट चमत्कार होगा। अफ़सोस कि इस संक्षिप्त पुस्तक में गुंजाइश नहीं अन्यथा उदाहरण के तौर पर बहुत सी अदभुत घटनाएं वर्णन की जातीं। इसी से।

और तुझे वह वस्तु दूंगा जो सदैव रहेगी। समृद्धि तुझे प्राप्त होगी। इस इब्राहीम
पर सलाम

صافيناه و نَجِّيناهُ مِنَ الْغَمِّ - تَفَرَّدْنَا بِذَلِكَ - فَاتَّخِذُوا
हमने उससे शुद्ध मित्रता की और शोक से मुक्ति प्रदान की हम इस बात में
अकेले हैं। अतः तुम

من مقام ابراهيم مُصَلِّي - اِنَّا نَزَلْنَاهُ قَرِيبًا مِّنَ الْقَادِيَانِ
इस इब्राहीम के स्थान से इबादत का स्थान बनाओ अर्थात् उस आदर्श पर चलो।
हमने उसे क़ादियान के निकट उतारा है।

و بِالْحَقِّ اَنْزَلْنَاهُ وَ بِالْحَقِّ نَزَلَ - صَدَقَ اللَّهُ وَ رَسُولُهُ -
और सरासर आवश्यकता के समय उतरा है। खुदा और उसके रसूल की
भविष्यवाणी पूर्ण हुई

وَ كَانَ اَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا - الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي جَعَلَكَ الْمَسِيحَ
और खुदा का इरादा पूर्ण होना ही था। उस खुदा की प्रशंसा है जिसने तुझे मसीह
ابن مريم - لَا يُسْئَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَ هُمْ يَسْئَلُونَ - اَثَرَ
इब्ने मरयम बनाया है। वह अपने कामों से पूछा नहीं जाता तथा लोग पूछे जाते
हैं। खुदा ने तुझे

اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ آسَمَانٌ سَ كُنَّ تَحْتَ اُتْرے پر تیرا
प्रत्येक वस्तु में से चुन लिया। संसार में कई तख्त उतरे परन्तु तेरा
تَحْتَ سَبِّ سَ اُوپر بچाया گیا - يَرِيدُونَ اَنْ يَطْفُؤُوا
तख्त सब से ऊपर बिछाया गया। इरादा करेंगे कि खुदा के नूर को
نور الله - اِلَّا اَنْ حَزَبَ اللَّهُ هُمُ الْغَالِبُونَ - لَا تَخَفْ ط
बुझा दें। सावधान हो कि अन्त में खुदा की जमाअत ही विजयी होगी। कुछ भय
मत कर

اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلَى - لَا تَخَفْ ط اِنِّي لَا يَخَافُ لَدِي

तू ही विजयी होगा। कुछ भय मत कर कि मेरे रसूल मेरे सानिध्य में किसी से
 المرسلون- يريدون ان يطفئوا نور الله بافواههم-
 नहीं डरते। शत्रु इरादा करेंगे कि अपने मुंह की फूँकों से ख़ुदा के प्रकाश को बुझा दें
 والله متمننوره ولو كره الكفرون- نُزِّلُ عَلَيْكَ
 और ख़ुदा अपने प्रकाश को पूर्ण करेगा यद्यपि काफ़िर घृणा ही करें। हम
 आकाश से तुझ पर कई
 اسرار امن السَّمَاءِ- ونمّزق الاعداء كل ممزق-
 गुप्त बातें उतारेंगे और शत्रुओं की योजनाओं को टुकड़े-टुकड़े कर देंगे
 ونرى فرعون وهامان وجنودهما ما كانوا يحذرون-
 तथा फिरऔन और हामान और उनकी सेना को वह हाथ दिखा देंगे जिस से वे
 डरते हैं
 فلا تحزن على الذي قالوا- ان ربك لبالمرصاد-
 अतः उनकी बातों से कुछ चिन्ता न कर कि तेरा ख़ुदा उन की घात में है।
 ما أرسل نبيًّا الا اخزى به الله قَوْمًا لا يؤمنون-
 कोई नबी नहीं भेजा गया जिसके आने के साथ ख़ुदा ने उन लोगों को अपमानित
 नहीं किया जो उस पर ईमान नहीं लाए थे।
 سننجيك- سنعليك- ساكرمك اكرامًا عجبا- اريحك
 हम तुझे मुक्ति देंगे, हम तुझे विजयी करेंगे, और मैं तुझे ऐसी बड़ाई दूंगा जिससे
 लोग आश्चर्य में पड़ेंगे, मैं तुझे आराम दूंगा।
 ولا أجحك وأخرج منك قومًا- ولك نرى آيات
 और तेरा नाम नहीं मिटाऊंगा और तुझ से एक बड़ी क्रौम पैदा करूंगा और तेरे
 लिए हम बड़े-बड़े निशान दिखा देंगे।
 ونهدم ما يعمرون- انت الشيخ المسيح الذي لا يُضَاء
 और हम उन इमारतों को ध्वस्त कर देंगे जो बनाई जाती हैं तू वह महान मसीह
 है जिस का समय नष्ट नहीं किया

وقتہ۔ کمثلک دُرُّ لا یضاء۔ لک درجۃ فی السَّمائی
 जाएगा और तुझ जैसा मोती नष्ट नहीं हो सकता। आकाश पर तेरी बड़ी प्रतिष्ठा है तथा
 وفي الذین هم یبصرون۔ یدى لک الرحمن شیئاً
 उन लोगों की दृष्टि में जिन्हें आंखें दी गई हैं तेरे लिए खुदा अपनी कुदरत का
 एक चमत्कार प्रकट करेगा उस से इन्कारी लोग
 یخړون علی المساجد۔ یخړون علی الاذقان۔ ربنا اغفر لنا
 सज्दहगाहों में गिर पड़ेंगे और अपनी ठोढ़ियों पर गिर पड़ेंगे यह कहते हुए कि हे
 हमारे खुदा
 ذنوبنا انا کنا خاطئين۔ تالله لقد اثرک الله علينا
 हमारे पाप क्षमा कर हम गलती पर थे और फिर तुझे सम्बोधित करके कहेंगे कि
 खुदा की क्रसम खुदा ने हम सब में से
 وان کنا لالخاطئين۔ لا تثریب علیکم الیوم۔ یغفر الله
 तुझे चुन लिया और हमारी गलती थी जो हम खिन्न रहे। तब कहा जाएगा कि
 आज जो तुम ईमान लाए तुम पर कुछ डांट-डपट नहीं खुदा ने तुम्हारे
 لکم وهو ارحم الراحمین۔ یعصمک الله من العدا
 पाप क्षमा कर दिए और वह बहुत बड़ा दयालु है। खुदा तुझे शत्रुओं के षड़यंत्र
 से सुरक्षित रखेगा।
 ویسطو بکل من سَطَا۔ ذالک بما عصوا وکانوا یعتدون۔
 और उस व्यक्ति पर आक्रमण करेगा जो तुझ पर आक्रमण करता है क्योंकि वे
 लोग सीमा से निकल गए हैं और अवज्ञा के मार्गों पर क्रदम रखा है।
 الیس الله بکافی عبده۔ یا جبال اوّی معه والطیر۔
 क्या खुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं। हे पर्वतो, हे पक्षियो! मेरे इस बन्दे
 के साथ आत्म-विस्मृति और आर्द्रता से मुझे स्मरण करो
 سلامٌ قولاً من ربّ رحیم۔ وامتاز والیوم ایها المجرمون۔
 तुम सब पर उस खुदा का सलाम जो दयालु है और हे अपराधियो ! आज तुम

अलग हो जाओ।

إِنِّي مَعَ الرُّوحِ مَعَكَ وَمَعَ أَهْلِكَ - لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَيَّ
 मैं और रूहुल कुदुस तेरे और तेरे घर वालों के साथ हैं। मत डर मेरे सानिध्य में मेरे
 المرسلون - ان وعد الله آتي وركل وركي فطوبى لمن
 रसूल नहीं डरते, खुदा का वादा आया और पृथ्वी पर एक पैर मारा और सृष्टि
 का सुधार किया। अतः मुबारक वह
 وجد ورأى - امريسرنا لهم الهدى - وامحق
 जिसने पाया और देखो, कुछ ने हिदायत पाई और कुछ अज़ाब के
 عليهم العذاب - وقالوا لست مرسل - قل كفى بالله
 पात्र हो गए और कहेंगे कि यह खुदा का भेजा हुआ नहीं। कह मेरी सच्चाई पर खुदा
 شهيد ابيني وبينكم ومن عنده علم الكتاب - ينصركم
 साक्ष्य दे रहा है और वे लोग साक्ष्य देते हैं जो अल्लाह की किताब का ज्ञान
 रखते हैं। खुदा एक प्रिय
 الله في وقت عزيز - حكم الله الرحمن لخليفة الله
 समय में तुम्हारी सहायता करेगा। कृपालु खुदा का आदेश है उसके खलीफ़ा के
 लिए जिसकी आसामनी
 السلطان - يُؤْتِي لَهُ الْمَلِكُ الْعَظِيمُ - وتفتح على يده^①
 बादशाहत है। उसे महान देश दिया जाएगा तथा उसके लिए

① किसी भावी युग के बारे में यह भविष्यवाणी है जैसा कि आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ में कश्फ़ी रंग में चाबियां दी गई थीं परन्तु उन कुंजियों का प्रकटन हज़रत उमर फ़ारूक के द्वारा हुआ। खुदा जब अपने हाथ से एक क्रौम बनाता है तो पसन्द नहीं करता कि लोग उन्हें हमेशा पैरों के नीचे कुचलते रहें। अन्त में कुछ बादशाह उनकी जमाअत में सम्मिलित हो जाते हैं और इस प्रकार वे अत्याचारियों के हाथ से मुक्ति पाते हैं जैसा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिए हुआ। इसी से।

الخزائن- ذالك فضل الله- وفي اعينكم عجب- قل يأيُّهَا
 खजाने खोले जाएंगे। यह खुदा की कृपा है और तुम्हारी आंखों में अद्भुत, कह हे
 الكُفَّارِ اِنِّي مِنَ الصّٰدِقِيْنَ- فانتظروا اِيَّايَّ حَتَّىٰ حِيْنَ- سَنُرِيْهِمْ
 इन्कार करने वालो! मैं सच्चों में से हूँ। अतः तुम मेरे निशानों की एक समय तक
 प्रतीक्षा करो। हम शीघ्र ही

اَيَّا تَنَافَى الْاَفَاقِ وَفِيَا نَفْسِهِمْ- حُجَّةٌ قَائِمَةٌ وَفَتْحٌ مُّبِينٌ- اِنَّ اللّٰهَ
 उनको अपने निशान उनके आस-पास और उनके अस्तित्वों में दिखाएंगे उस
 दिन समझाने का प्रयास पूर्ण होगा और स्पष्ट विजय हो जाएगी। खुदा उस दिन
 يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ- اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ- وَوَضَعْنَا
 तुम में फैसला कर देगा। खुदा उस व्यक्ति को सफल नहीं करता जो सीमा से
 बढ़ा हुआ और झूठा है और हम वह भार
 عَنْكَ وَزَرَكَ الَّذِي اَنْقَضَ ظَهْرَكَ- وَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ
 तेरा उठा लेंगे जिसने तेरी कमर तोड़ दी और हम उस क्रौम को जड़ से काट
 देंगे जो एक

لَا يُؤْمِنُوْنَ^①- قُلْ اَعْمَلُوا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ اَعْمَلُ فِىْ سُوْفٍ
 सच्ची बात पर ईमान नहीं लाते। उनको कह कि तुम अपने तौर पर अपनी
 सफलता के लिए कार्य में व्यस्त रहो और मैं भी कार्य में व्यस्त हूँ फिर देखोगे
 تَعْلَمُوْنَ- اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَالَّذِيْنَ هُمْ مُحْسِنُوْنَ-
 कि किस के कार्य में स्वीकारिता उत्पन्न होती है। खुदा उनके साथ होगा जो
 संयम ग्रहण करते हैं और उनके साथ जो शुभ कर्मों में व्यस्त हैं।
 هَلْ اَتَاكَ حَدِيْثُ الزَّلٰزَلَةِ- اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زَلٰلٰهَا-

① यह इस बात की ओर संकेत है कि वह समय आने वाला है कि सत्य स्पष्ट हो जाएगा
 और समस्त झगड़ों का निर्णय हो जाएगा और यह निर्णय आकाशीय निशानों के साथ
 होगा। पृथ्वी बिगड़ गई है, अब आकाश उसके साथ युद्ध करेगा। इसी से।

क्या तुझे आने वाले भूकम्प की सूचना नहीं मिली। स्मरण कर जबकि पृथ्वी को बहुत जोर से हिलाया जाएगा

واخرجت الارض اثقالها- وقال الانسان مالها- يومئذٍ

और पृथ्वी जो कुछ उसके अन्दर है बाहर फेंक देगी और मनुष्य कहेगा कि पृथ्वी को क्या हो गया है कि यह असाधारण विपत्ति उसमें उत्पन्न हो गई

تحدثت اخبارها- بان ربك اوحى لها- احسب الناس

उस दिन पृथ्वी अपनी बातें वर्णन करेगी कि उस पर क्या गुजरा। खुदा उसके लिए अपने रसूल पर वह्यी उतारेगा कि यह संकट आया है। क्या लोग

ان يتركوا- وما يأتهم الا بغتة- يسئلونك احق هو-

विचार करते हैं कि यह भूकम्प नहीं आएगा, अवश्य आएगा और ऐसे समय आएगा कि वे बिल्कुल असावधान होंगे और प्रत्येक अपने सांसारिक कार्य में व्यस्त होगा कि भूकम्प उनको पकड़ लेगा। तुझ से पूछते हैं कि क्या ऐसे भूकम्प का आना सत्य है ?

قل اي ورثي انه لحق- ولا يرد عن قوم يعرضون- الرخي

कह कि खुदा की क्रसम इस भूकम्प का आना सत्य है और खुदा से भागने वाले किसी स्थान में उससे बच नहीं सकते अर्थात् कोई स्थान

يدور وينزل القضاء- لم يكن الذين كفروا من

उनको शरण नहीं दे सकता अपितु यदि घर के द्वार में भी खड़े हैं तो सामर्थ्य नहीं पाएंगे कि उससे बाहर हो जाएं परन्तु अपने कर्म से।

اهل الكتاب والمشرकिन منفكين حتى تأتيمهم البينة-

एक चक्की चक्कर में आएगी और मृत्यु उतरेगी। जो लोग अहले किताब और खुदा के साथ भागीदार बनाने वालों में से सत्य के इन्कारी हो गए वे उस महान निशान के अतिरिक्त

اگر خدا ايانہ کرتا تو دنیا میں اندھیر پڑ جاتا۔ اُرِيْكَ زلْزَلَةُ السَّاعَةِ -

रुकने वाले न थे। यदि खुदा ऐसा न करता तो संसार में अंधेर पड़ जाता मैं तुझे

क्रयामत वाला भूकम्प दिखाऊंगा।

يرىكم الله زلزلة الساعة - لمن الملك اليوم لله الواحد

खुदा तुझे क्रयामत वाला भूकम्प दिखाएगा। उस दिन कहा जाएगा आज किसका शासन है ? क्या उस खुदा का शासन नहीं जो

القهار - چک دکھلاؤں گا تم کو اس نشان کی بیخ بار -

सब पर प्रभुत्व रखता है और मैं उस भूकम्प के निशान की चमक तुम्हें पांच बार दिखाऊंगा।

اگر چاہوں تو اُس دن خاتمہ - ① انی احافظ کل من فی الدار

- اریک مائرضیک - رفیقوں کو کہہ دو کہ

यदि चाहूँ तो उस दिन विश्व का अन्त कर दूँ। मैं प्रत्येक को जो तेरे घर में होगा उसकी रक्षा करूँगा और मैं तुझे कुदरत का वह चमत्कार दिखाऊँगा जिस से तू प्रसन्न हो जाएगा। मित्रों को कह दो कि

عجائب در عجائب کام دکھلانے کا وقت آگیا ہے -

अद्भुत से अद्भुत कार्य दिखाने का समय आ गया है।

انافتحنالك فتحا مبينًا - ليغفر لك الله ما تقدم من ذنبك

मैं तुझे एक महान विजय प्रदान करूँगा जो बहुत स्पष्ट होगी ताकि तेरा खुदा

① इस खुदा की व्हयी से ज्ञात होता है कि पांच भूकम्प आएंगे और पहले चार भूकम्प कुछ हल्के होंगे और लोग उसे साधारण समझेंगे और फिर पांचवां भूकम्प क्रयामत का नमूना होगा कि लोगों को पागल और दीवाना कर देगा। यहां तक कि वे चाहेंगे कि वे उस दिन से पूर्व मर जाते। अब स्मरण रहे कि खुदा की इस व्हयी के पश्चात् उस समय तक जो 22 जुलाई 1906 ई. है इस देश में तीन भूकम्प आ चुके हैं। अर्थात् 28 फ़रवरी 1906 ई., 20 मई 1906 ई., 21 जुलाई 1906 ई. परन्तु शायद खुदा के निकट ये भूकम्पों में सम्मिलित नहीं हैं क्योंकि बहुत ही हल्के हैं। कदाचित पहले चार भूकम्प ऐसे होंगे जैसा कि 4 अप्रैल 1905 का भूकम्प था और पांचवां क्रयामत का नमूना होगा। इसी से।

तेरे समस्त गुनाह क्षमा कर दे जो पहले हैं।

وما تأخر-^① انا التَّوَّاب- من جَاءَكَ جَاءَنِي- سلام

और पिछले हैं। मैं तौबा स्वीकार करने वाला हूँ। जो व्यक्ति तेरे पास आएगा वह मानो मेरे पास आएगा। तुम पर

عليكم طيبتم- نحمدك ونصلي- صلوة العرش الى الفرش-

सलाम तुम पवित्र हो। हम तेरी प्रशंसा करते हैं और तुझ पर दरूद भेजते हैं अर्श से फ़र्श तक तुझ पर दरूद है

نَزَلْتُ لَكَ وَلَكَ نُرِي آيَاتِ- الْأَمْرَاضُ تُشَاءُ وَالنُّفُوسُ

मैं तेरे लिए उतरा हूँ और तेरे लिए अपने निशान दिखाऊंगा, देश में रोग फैलेंगे और बहुत से प्राण

تُضَاءُ- وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُغَيِّرَ مَا يَقُومُ حَتَّى يُغَيِّرَ وَمَا

नष्ट होंगे और खुदा ऐसा नहीं है जो अपने प्रारब्ध को परिवर्तित कर दे जो एक जाति पर उतारा जब तक वह जाति अपने हृदयों के विचारों

بِأَنْفُسِهِمْ- إِنَّهُ أَوَى الْقَرْيَةِ^②- لَوْلَا الْأَكْرَام- لَهْلَكَ الْمَقَام-

① जालिम इन्सान का नियम है कि वह खुदा के नबियों और रसूलों पर हजारों मीन मेख करता है और उनमें भिन्न-भिन्न प्रकार के दोष निकालता है जैसे दुनिया के समस्त दोषों, खराबियों, पापों और बेईमानियों का वही संग्रहीता है तब इन भ्रमों का कहां तक उत्तर दिया जाए जो नफ़्स की शरारत के साथ मिले हुए हैं। इसलिए यह अल्लाह तआला का नियम है कि अन्त में इन समस्त झगड़ों को अपने हाथ में ले लेता है और कोई ऐसा महान निशान प्रकट करता है जिस से उस नबी का बरी होना सिद्ध होता है। तो لِيُغْفِرَ لَكَ اللَّهُ (अलफ़तह-3) के यही मायने हैं। इसी से।

② اوى का शब्द अरबी भाषा में उस अवसर पर प्रयोग होता है जब कुछ हद तक कष्ट के बाद किसी व्यक्ति को अपनी शरण में लिया जाए। जैसा कि खुदा तआला फ़रमाता اَوَيْنَهُمَا إِلَى رُبُوعٍ है (अज्जुहा-7) और जैसा कि फ़रमाता اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَى (अलमोमिनून-51) ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ

को परिवर्तित न करे। वह उस क्रादियान को एक सीमा तक संक्रामक रोग के पश्चात् अपनी शरण में लेगा। यदि मुझे तेरे सम्मान का ध्यान न होता तो इस सारे गांव का विनाश कर देता

انی احافظ کُلَّ من فی الدار۔ ما کان اللہ ليعذبهم

मैं प्रत्येक को जो इस घर की चार दीवारी के अन्दर है बचा लूंगा कोई उनमें से प्लेग या भूकम्प से नहीं मरेगा। खुदा ऐसा नहीं है।

وانت فیهم۔ امن است در مکان محبت سرائے ما۔ بھونچال

कि जिनमें तू है उनको अज़ाब दे। हमारे प्रेम का घर अमन का घर है। एक भूकम्प

آیا اور شدّت سے آیا۔ زمین تہ و بالا کر دی۔ یوم تائی السماء

आएगा और बड़ी तीव्रता से आएगा और पृथ्वी को उथल-पुथल कर देगा उस दिन आकाश से

بدخان مبین^①۔ وترى الارض یومئذٍ خامدة

एक खुला-खुला धुंआ उतरेगा और उस दिन पृथ्वी पीली पड़ जाएगी अर्थात् भयंकर अकाल के लक्षण प्रकट होंगे

مصفرة۔ اکر مک بعد تو هینک^②۔ ژیریدون ان لا یتم

मैं इसके पश्चात् जो विरोधी तेरा अपमान करें तुझे सम्मान दूंगा और तेरा सत्कार

① अर्थात् भूकम्प के लिए जो प्रलय का नमूना होगा ये लक्षण हैं कि उससे कुछ दिन पूर्व अकाल पड़ेगा और पृथ्वी सूख जाएगी। मालूम नहीं उसके पश्चात् तुरन्त या कुछ समय पश्चात् भूकम्प आएगा। इसी से।

② अर्थात् वे बड़े निशान जो संसार में प्रकट होंगे। आवश्यक है कि उन से पूर्व अपमान किया जाए और नाना प्रकार की बुरी बातें की जाएं और आरोप लगाए जाएं तब इसके पश्चात् आकाश से भयावह निशान प्रकट होंगे। यही खुदा का नियम है कि प्रथम नौबत इन्कार करने वालों की होती है और दूसरी खुदा की। इसी से।

करूंगा। वे इरादा करेंगे कि तेरा काम अपूर्ण रहे।

امرک۔ واللہ یا ابی الا ان یتّم امرک۔ انی انا الرحمن۔ سأجعل

और खुदा नहीं चाहता कि तुझे छोड़ दे जब तक तेरे समस्त कार्य पूर्ण न करे।

मैं कृपालु हूँ। प्रत्येक बात

لک سهولة فی کلّ امر۔ أریک برکات من کلّ طرف۔

मैं मैं तुझे आसानी दूंगा, प्रत्येक ओर से मैं तुझे बरकतें दिखाऊंगा।

نزلت الرحمة علی ثلاث العین وعلی الأخریین۔ تردّ الیک

मेरी दया तेरे तीन अंगों पर उतरी है। एक आंखें तथा दो और अंग हैं अर्थात्

उन्हें सुरक्षित रखूंगा और जवानी के प्रकाश

انوار الشباب۔ ترى نسلًا بعيدًا^①۔ انا نبشّرک بغلام مظهر

तेरी ओर लौटेंगे और तू अपनी एक दूर की नस्ल को देख लेगा। हम एक लड़के की तुझे खुशखबरी देते हैं जिसके साथ

الحق والعلی۔ کأنّ الله نزل من السماء۔ انا نبشّرک بغلامٍ

सत्य का प्रकटन होगा मानो आकाश से खुदा उतरेगा। हम एक लड़के की तुझे खुशखबरी देते हैं।

نافلةً لک۔ سبّحک الله ورافاک۔ وعلمک ما لم تعلم

जो तेरा पोता होगा। खुदा ने प्रत्येक दोष से तुझे पवित्र किया और तुझ से सहमति की और तुझे वे अध्यात्म ज्ञान सिखाए जिन का तुझे ज्ञान न था।

انه کریم تمشی امامک وعادی لک من عادی۔ وقالوا ان هذا

वह कृपालु है, वह तेरे आगे-आगे चला और वह तेरे शत्रुओं का शत्रु हुआ तथा कहेंगे कि यह तो

الا اختلاق۔ الم تعلم ان الله علی کلّ شیءٍ قدير۔ یلقى الروح

एक बनावट है। हे आरोपक ! क्या तू नहीं जानता कि खुदा प्रत्येक बात पर समर्थ है जिस पर अपने बन्दों में से

① यह खुदा की वह्यी अर्थात् ترى نسلًا بعيدًا लगभग तीस वर्ष पुरानी है। इसी से।

عَلَىٰ مِنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ - كُلِّ بَرَكَةٍ مِنْ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

चाहता है अपनी रूह डालता है अर्थात् उसे नुबुव्वत का पद प्रदान करता है और यह तो समस्त बरकत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से है।

فَتَبَارَكَ مَنْ عَلَّمَ وَتَعَلَّمَ - خُدا کی فیلگ اور خدا کی

अतः बहुत बरकतों वाला है जिसने इस बन्दे को शिक्षा दी और बहुत बरकतों वाला है जिसने शिक्षा पाई। खुदा ने समय की आवश्यकता महसूस की।

مہر نے کتنا بڑا کام کیا۔^① اُنّی معک ومع اهلك

और उसके महसूस करने और नुबुव्वत की मुहर ने जिसमें अत्यधिक शक्ति का वरदान है बड़ा काम किया अर्थात् तेरे अवतरित होने के दो कारण हैं (1) खुदा का आवश्यकता को महसूस करना (2) आंजूरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत की मुहर का वरदान

ومع کلّ من احبّک - تیرے لئے میرा नाम चका-

मैं तेरे और तेरे घर वालों के साथ हूँ और प्रत्येक के साथ जो तुझ से प्रेम करता

① हाशिया - यह खुदा की वही कि खुदा की फीलिंग और खुदा की मुहर ने कितना बड़ा काम किया। इसके यह अर्थ हैं कि खुदा ने इस युग में महसूस किया कि यह ऐसा खराब युग आ गया है जिसमें एक महान सुधारक की आवश्यकता है और खुदा की मुहर ने यह काम किया कि आंजूरत^{स.अ.व.} का अनुसरण करने वाला इसी श्रेणी को पहुंचा कि एक पहलू से वह उम्मीती है और एक पहलू से नबी क्योंकि अल्लाह तआला ने आंजूरत^{स.अ.व.} को साहिबे खातम बनाया। अर्थात् आपको खूबी के नाम पहुंचने के लिए मुहर दी जो किसी अन्य नबी को कदापि नहीं दी गई। इस कारण से आप कानाम खातमुन्नबियीन ठहरा। अर्थात् आपका अनुकरण नुबुव्वत की खूबियां प्रदान करता है और आपका रूहानी ध्यान नबी बनाता है और यह कुव्वत--ए-कुदसिया किसी बनी इस्राईल के नबी को नहीं मिली। यही अर्थ इस हदीस के हैं - علماء امتی کانبیاء بنی اسرائیل - अर्थात् मेरी उम्मत के उलेमा बनी इस्राईल के नबियों के समान होंगे और बनी इस्राईल में यद्यपि

है। तेरे लिए मेरे नाम ने चमक दिखाई
 روحانی عالم تیرے پر کھولا گیا۔ فبصرک الیوم حدید۔
 तुझ पर अध्यात्मिक संसार खोला गया। अतः आज तेरी दृष्टि तीव्र है।
 اطل الله بقاءك۔ انی یا اسپر پانچ چار زیادہ یا پانچ چار کم۔
 खुदा तेरी आयु लम्बी करेगा। अस्सी वर्ष या पांच चार अधिक या पांच चार कम
 میں تجھے بہت برکت دوں گا یہاں تک کہ بادشاہ تیرے
 में तुझे बहुत बरकत दूंगा यहां तक कि बादशाह तेरे
 کپڑوں سے برکت ڈھونڈیں گے۔ تیرے لئے میرا نام

शेष हाशिया

बहुत नबी आए परन्तु उनकी नुबुव्वत मूसा के अनुकरण का परिणाम न थी अपितु वे नुबुव्वतें सीधे तौर पर खुदा का एक दान थीं। हजरत मूसा के अनुसरण का उसमें लेशमात्र हस्तक्षेप न था। इसी कारण मेरी तरह उनका यह नाम न हुआ कि एक पहलू से नबी और एक पहलू से उम्मीती। अपितु वे नबी स्थायी नबी कहलाए। और उनको सीधे तौर पर नुबुव्वत का पद मिला। और उन को छोड़कर जब और बनी इस्राईल का हाल देखा जाए तो ज्ञात होगा कि उन लोगों को हिदायत, सलाह और संयम से बहुत कम भाग मिला था और हजरत मूसा तथा हजरत ईसा की उम्मत खुदा के वलियों के अस्तित्व से सामान्यता वंचित रही थी और शायद ही उनमें कोई हुआ तो वह न होने का आदेश रखता है अपितु उनमें से बहुधा उद्दण्ड, पापी, दुष्कर्मी, दुनिया के पुजारी होते रहे हैं और इसी कारण उनके बारे में हजरत मूसा या हजरत ईसा की प्रभाव-शक्ति का तौरात और इंजील में संकेत तक नहीं है। तौरात में जगह-जगह हजरत मूसा के सहाबा का नाम एक उद्दण्ड, जालिम, पापी और उपद्रवी क्रौम लिखा है जिन की अवज्ञाओं के बारे में पवित्र कुर्आन में भी वर्णन है कि एक लड़ाई के अवसर पर उन्होंने हजरत मूसा को यह उत्तर दिया था فَادْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هُنَا قَاعِدُونَ (अलमाइदह-25) अर्थात् तू और तेरा रब्ब दोनों जाकर शत्रुओं से लड़ाई करो हम तो इसी जगह बैठेंगे। यह हाल था उनकी फ़रमाबरदारी का। परन्तु आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा के दिलों में खुदा के प्रेम का वह जोश पैदा हुआ और आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र ध्यान का यह प्रभाव उनके दिलों में प्रकट हुआ कि उन्होंने खुदा के मार्ग में भेड़ों और

कपड़ों से बरकत दूँगे। तेरे लिए मेरा नाम
 चमका-पचास या साठ निशान और दिखाऊंगा। खुदा के मान्य लोगों
 में قبولित के नमूने और علامतें होती हैं और उन की تعظیم
 में स्वीकारिता के नमूने और लक्षण होते हैं और उनका सम्मान
 मुक और डुयु البروت करते हैं और वे سلامتی के

शेष हाशिया

बकरियों की तरह सर कटाए। क्या कोई पहली उम्मत में हमें दिखा सकता है या निशान दे सकता है कि उन्होंने भी श्रद्धा और निष्ठा दिखाई। यह तो हजरत मूसा के सहाबा का हाल था अब हजरत मसीह के सहाबा का हाल सुनो कि एक ने तो जिसका नाम यहूदा इस्क्रियूती था तीस रुपए लेकर मसीह को गिरफ्तार करा दिया और पतरस हवारी जिसको स्वर्ग की कुंजियां दी गई थीं उसने हजरत मसीह के सामने उन पर लानत भेजी और शेष जितने हवारी थे वह संकट का समय देखकर भाग गए और एक ने भी दृढ़ता न दिखाई और कायम न रहे तथा कायरता उन पर छा गई और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा ने तलवारों के नीचे वे दृढ़ताएं दिखाई और इस प्रकार मरने पर राजी हुए कि जिनके जीवन चरित्र पढ़ने से रोना आता है। वह क्या चीज़ थी जिसने उनमें ऐसी प्रेमियों जैसी रूह फूंक दी और वह कौन सा हाथ था जिसने उन में इतना परिवर्तन कर दिया। या तो असभ्यता के युग में उनकी वह हालत थी कि वे दुनिया के कीड़े थे और कोई पाप और अत्याचार का प्रकार न था जो उनसे प्रकट नहीं हुआ था और या इस नबी के अनुसरण के बाद खुदा की तरफ ऐसे खींचे गए कि जैसे खुदा उनके अन्दर निवास कर गया। मैं सच-सच कहता हूँ कि यह उस पवित्र नबी का वही ध्यान था जो उन लोगों को घटिया जीवन से एक पवित्र जीवन की ओर खींचकर ले आया और जो समूह के समूह इस्लाम में दाखिल हुए उसका कारण तलवार नहीं थी बल्कि वह उस तेरह वर्ष के रोने दुआ करने और विनय करने का प्रभाव था जो मक्का में आंहुजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम करते रहे और मक्का में आंहुजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम करते रहे और मक्का की ज़मीन बोल उठी कि मैं उस मुबारक क़दम के नीचे हूँ जिसके दिल ने एकेश्वरवाद का इतना शोर डाला कि उसके रोने से आसमान भर गया खुदा निस्पृह है उसको किसी हिदायत या

बादशाह और प्रतिष्ठावान करते हैं और वे सलामती
 شهزادے کہلاتے ہیں۔ فرشتوں کی کھنچی ہوئی تلوار
 के राजकुमार कहलाते हैं। फ़रिश्तों की खिंची हुई तलवार
 تیرے آگے ہے۔☆ پر تو نے وقت کو نہ پہچانا نہ دیکھا
 तेरे सामने है परन्तु तूने समय को न पहचाना न देखा
 نہ جانہ۔ برہمن اوتار سے مقابلہ کرنا اچھا نہیں۔

शेष हाशिया

गुमराही की परवाह नहीं। अतः यह प्रकाश जो विलक्षण तौर पर अरब के प्रायद्वीप में प्रकटन में आया और फिर दुनिया में फैल गया। यह आहंजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हार्दिक तपन का प्रभाव था। प्रत्येक क्रौम एकेश्वरवाद से दूर और अलग हो गयी, परन्तु इस्लाम में एकेश्वरवाद का झरना जारी रहा। ये समस्त बरकतें आहंजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआओं का परिणाम था। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ (अश्शुअरा-4) अर्थात् क्या तू इस ग़म में स्वयं को मार देगा कि ये लोग ईमान नहीं लाते। तो पहले नबियों की उम्मत में इस श्रेणी की भलाई और संयम पैदा न हुआ उसका यही कारण था कि इस श्रेणी का ध्यान और हमदर्दी उम्मत के लिए उन नबियों में नहीं थी। खेद कि वर्तमान के मूर्ख मुसलमानों ने अपने उस आदर्शीय नबी की कुछ कद्र नहीं की और प्रत्येक बात में ठोकर खाई। वे ख़तम नुबुव्वत के ऐसे मायने करते हैं जिस से आहंजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निन्दा निकलती है न कि प्रशंसा। मानो आहंजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पवित्र नफ़्स में यश पहुंचाने और नफ़्सों को पूर्ण करने के लिए कोई शक्ति न थी और वह केवल खुशक शरीअत को सिखाने आए थे। हालांकि اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ صِرَاطَ الَّذِينَ هَدَيْتَ عَلَيْنَا (अलफ़ातिहा-6,7) फिर यह उम्मत यदि पहले नबियों की वारिस नहीं और उस

☆ यह भविष्यवाणी एक ऐसे व्यक्ति के बारे में है जो मुरीद बन कर फिर मुर्तद हो गया और बहुत अशिष्टताएं दिखाई, गालियां दीं और गालियां देने में आगे से आगे बढ़ा। तो खुदा फ़रमाता है कि क्यों आगे बढ़ता है क्या तू फ़रिश्तों की तलवारें नहीं देखता। इसी से।

न जाना। ब्राह्मण अवतार से मुकाबला करना अच्छा नहीं।

ربّ فرق بين صادق وكاذب۔ انت ترى كلّ مصلح

हे खुदा झूठे और सच्चे में अन्तर करके दिखा। तू प्रत्येक सुधारक और सच्चे

وصادق۔ ربّ كلّ شيءٍ خادمك۔ ربّ فاحفظني وانصرني

को जानता है। हे मेरे खुदा ! प्रत्येक वस्तु तेरी सेवक है। हे मेरे खुदा उपद्रवी के उपद्रव से मुझे सुरक्षित रख और मेरी

وارحمي۔ خدا قائل تو باد۔ و مرا از شر تو محفوظ دارد۔

सहायता कर और मुझ पर दया कर। हे शत्रु तू जो तबाह करने का इरादा रखता है खुदा तुझे तबाह करे और तेरी बुराई से मुझे सुरक्षित रखे अर्थात्

زلزلہ آیا اٹھو نمازیں پڑھیں اور قیامت کا نمونہ دیکھیں۔

वह भूकम्प जो वादा दिया गया है शीघ्र आने वाला है उस समय खुदा के बन्दे

शेष हाशिया

इनाम में से उन को कुछ हिस्सा नहीं तो यह दुआ क्यों सिखाई गई। खेद कि मूर्खता और पक्षपात के जोश से कोई इस आयत में विचार नहीं करता। बड़ी रुचि रखते हैं कि हज़रत ईसा आकाश से उतरे। परन्तु खुदा का कलाम पवित्र कुर्आन गवाही देता है कि वह मर गया और उसकी क़ब्र श्रीनगर कश्मीर में है जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है - **وَأَوَيْنَهُمَا إِلَى رُبُوعٍ ذَاتِ قُرَارٍ وَوَعَيْنٍ** - (अलमोमिनून-51) अर्थात् हमने ईसा और उसकी मां को यहूदियों के हाथों से बचाकर एक ऐसे पहाड़ पर पहुंचा दिया जो आराम और समृद्धि का स्थान था और निर्मल जल के झरने उसमें जारी थे तो वही कश्मीर है। इसी कारण से हज़रत मरयम की क़ब्र शाम की ज़मीन में किसी को मालूम नहीं। और कहते हैं कि वह भी हज़रत ईसा के समान अज्ञात है। यह कितना अन्याय है जो मूर्ख मुसलमानों की आस्था है कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत खुदा के वार्तालाप एवं संबोधन से वंचित है और स्वयं हदीसों पढ़ते हैं जिन से सिद्ध होता है कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में बनी इस्राईल के नबियों के समान लोग पैदा होंगे और एक ऐसा होगा कि एक पहलू से नबी होगा और एक पहलू से उम्मती। वही मसीह मौऊद कहलाएगा। इसी से।

प्रलय का नमूना देख कर नमाजें पढ़ेंगे

☆ **يظهرك الله ويثني عليك - لولاك لما خلقت الافلاك**

खुदा तुझे विजयी करेगा और तेरी प्रशंसा लोगों में फैला देगा। यदि मैं तुझे पैदा न करता तो आसमानों को पैदा न करता।

ادعوني استجب لكم - دست تو دعائے تو ترحم زخدا-

मुझ से मांगो मैं तुम्हें दूंगा। तेरा हाथ है और तेरी दुआ और खुदा की ओर से दया है

زلزله کا دھکا - عفت الديار محلها ومقامها

भूकम्प का धक्का जिससे इमारत का एक भाग मिट जाएगा। रहने का स्थायी स्थान और अस्थायी स्थान सब मिट जाएंगे।

تتبعها الرادفة - پھر بہار آئی خدا کی بات پھر پوری ہوئی

तत्पश्चात् एक और भूकम्प आएगा। बसन्त ऋतु जब दोबारा आएगी तो फिर एक और भूकम्प आएगा

پھر بہار آئی تو آئے تلخ کے آنے کے دن - رب آخر وقت

फिर जब तीसरी बार बसन्त ऋतु आएगी तो उस समय संतोष के दिन आ जाएंगे और उस समय तक खुदा कई निशान प्रकट करेगा और हे सम्मान वाले खुदा भूकम्प के प्रकटन

هذا - اخره الله الى وقت مسي - ① ترى نصراً عجيباً

① पहले खुदा की यह वह्यी हुई थी कि वह भूकम्प जो क्रयामत का नमूना होगा शीघ्र आने वाला है और उसके लिए यह निशान दिया गया था कि पीर मंजूर मुहम्मद लुधियानवी की पत्नी मुहम्मदी बेगम को लड़का पैदा होगा और वह लड़का उस भूकम्प के लिए एक निशान होगा इसलिए उसका नाम बशीरुद्दौला होगा। क्योंकि वह हमारे सिलसिला की तरक्की के लिए शुभ समाचार देगा। इसी प्रकार उस का नाम आलम कबाब होगा क्योंकि यदि लोग तौब: नहीं करेंगे तो संसार में बड़ी-बड़ी आपदाएं आएंगी। इसी प्रकार उसका नाम कलिमतुल्लाह और कलिमतुल

☆ प्रत्येक महान सुधारक के समय में रूहानी तौर पर नया आकाश और नई धरती बनाई जाती है अर्थात् फ़रिश्तों को उसके उद्देश्यों की सेवा में लगा दिया जाता है और धरती पर (सच्चाई को स्वीकार करने के लिए) तत्पर स्वभाव के लोग पैदा किए जाते हैं। अतः यह इसी की ओर संकेत है। इसी से।

में एक सीमा तक विलम्ब कर दे। खुदा प्रलय के नमूने रूपी भूकम्प के प्रकटन में एक निर्धारित समय तक विलम्ब कर देगा, तब तू एक अद्भुत सहायता देखेगा।

وَيَخْرُونَ عَلَى الْأَذْقَانِ - رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كَانَّا

और तेरे विरोधी ठोढ़ियों के बल गिरेंगे यह कहते हुए कि हे खुदा हमें क्षमा कर और हमारे पाप हमें माफ़ कर कि हम

خَاطِئِينَ - يَا نَبِيَّ اللَّهِ كُنْتَ لَا أَعْرِفُكَ - لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمْ الْيَوْمَ

गलती पर थे और पृथ्वी कहेगी कि हे खुदा के नबी मैं तुझे नहीं पहचानती थी।

शेष हाशिया- अजीज होगा क्योंकि वह खुदा का कलिमा होगा जो समय पर प्रकट होगा तथा उसके लिए अन्य नाम भी होंगे। परन्तु इसके बाद मैंने दुआ की कि उस क्रयामत के नमूने वाले भूकम्प में कुछ विलम्ब डाल दिया जाए। इस दुआ का अल्लाह तआला ने इस वह्यी में स्वयं वर्णन किया और उत्तर भी दिया है जैसा कि वह फ़रमाता है **اٰخِرُ وَاقْتِ هٰذَا - اٰخِرُ وَاقْتِ هٰذَا** अर्थात् खुदा ने दुआ स्वीकार करके उस भूकम्प को किसी अन्य समय पर डाल दिया है और यह खुदा की वह्यी लगभग चार माह पूर्व अखबार बद्र और अलहकम में छप कर प्रसारित हो चुकी है और चूंकि क्रयामत के नमूने का भूकम्प आने में विलम्ब हो गया इसलिए अवश्य था कि लड़का पैदा होने में भी विलम्ब होता। इसलिए पीर मंज़ूर मुहम्मद के घर में 17 जुलाई 1906 ई. में दिन मंगलवार लड़की पैदा हुई और यह दुआ की स्वीकारिता का एक निशान है तथा खुदा की वह्यी की सच्चाई का एक निशान है जो लड़की पैदा होने से लगभग चार माह पहले प्रकाशित हो चुकी थी परन्तु यह अवश्य होगा कि हल्के स्तर के भूकम्प आते रहेंगे तथा निश्चित है कि पृथ्वी क्रयामत के नमूने वाले भूकम्प से रुकी रहे जब तक वह मौऊद लड़का पैदा न हो। याद रहे कि यह खुदा तआला की बड़ी रहमत की निशानी है कि लड़की पैदा करके भविष्य में बला अर्थात् क्रयामत के नमूने के भूकम्प के बारे में तसल्ली दे दी कि इसमें वादे के अनुसार **اٰخِرُ وَاقْتِ هٰذَا** अभी देर है और यदि अभी लड़का पैदा हो जाता तो प्रत्येक भूकम्प तथा प्रत्येक आपदा के समय सख्त ग़म और सन्देह होता कि शायद वह समय आ गया और विलम्ब का कुछ विश्वास न होता और अब तो विलम्ब एक शर्त के साथ प्रतिबंधित होकर निश्चित हो गया है। इसी से।

हे गलती करने वालो ! आज तुम पर कोई भर्त्सना नहीं।

يغفر الله لكم - وهو ارحم الراحمين - تَلَطَّفَ بِالنَّاسِ وَتَرَحَّمْ
खुदा तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा वह बहुत बड़ा दयालु है। लोगों के साथ नम्रता और सत्कार से

عليهم - انت فيهم بمنزلة موسى - يَأْتِي عَلَيْكَ زَمْنٌ
व्यवहार कर। तू मुझ से मूसा के समान है। तुझ पर मूसा के युग
كَمِثْلَ زَمَنِ مُوسَى - إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا
की तरह एक युग आएगा। हमने तुम्हारी ओर एक रसूल भेजा है उसी रसूल
عليكم كما أرسلنا إلى فرعون رسولًا - آسمان سے بہت دودھ
के समान जो फिरौन की ओर भेजा गया था। आकाश से बहुत दूध
اُترا ہے محفوظ رکھو - اِنِّي اَنرْتُكَ وَاخْتَرْتُكَ - تیری
उतरा है अर्थात् अध्यात्म ज्ञान और वास्तविकता का दूध। मैंने तुझे प्रकाशित
किया और चुन लिया और तेरे

خوش زندگی کا سامان ہو گیا - وَاللَّهُ خَيْرٌ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ - عِنْدِي حَسَنَةٌ
ही ख़ैर मंजिल - بہت سے سلام میرے تیرے پر ہوں -
प्रसन्नतापूर्ण जीवन का सामान हो गया है। खुदा प्रत्येक वस्तु से उत्तम है। मेरे
सानिध्य में एक नेकी है जो एक पर्वत से अधिक है तुझ पर मेरे अत्यधिक सलाम
إِنَّا عَطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ - إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اهْتَدَوْا وَالَّذِينَ هُمْ
हैं। हमने तुझे प्रचुरता के साथ दिया है। खुदा उनके साथ है जो सद्मार्ग अपनाते
हैं और

صَادِقُونَ - إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ -
जो सच्चे हैं खुदा उनके साथ है जो संयम धारण करते हैं और नेकी करने वाले हैं
إِرَادَ اللَّهِ أَنْ يَبْعَثَكَ مَقَامًا مَحْمُودًا - دُو نشان ظاہر ہونگے -
खुदा ने इरादा किया है कि तुझे वह स्थान प्रदान करे जिसमें तू प्रशंसा किया
जाएगा। दो निशान प्रकट होंगे।

وامتازوا اليوم ايها المجرمون- يكاد البرق يخطف
और हे अपराधियो ! आज तुम अलग हो जाओ। खुदा के निशानों की बिजली
उनकी आंखें उचक कर

ابصارهم- هذا الذي كنتم به تستعجلون- يا احمد
ले जाएगी। यह वही बात है जिसके लिए तुम जल्दी करते थे। हे अहमद !
فاضت الرحمة على شفتيك- كلام أفصحت
तेरे होठों पर रहमत जारी है। तेरा कलाम खुदा की ओर से
من لدن رب كريم- در کلام تو چیزے ست کہ شعرار اور ان
सरस-सुबोध किया गया। तेरे कलाम (वाणी) में एक बात है जिसमें कवि कोई
و غلبيست- رب علمني ما هو خير عندك- يعصمك الله من
हस्तक्षेप नहीं कर सकते। हे मेरे खुदा ! मुझे वह सिखा जो तेरे निकट अच्छा
है। तुझे खुदा शत्रुओं से

العدا ويسطو بکل من سطا- برزما عندهم من الرماح- اني
बचाएगा और आक्रमण करने वालों पर आक्रमण कर देगा। उन्होंने जो कुछ
हथियार उनके पास थे सब प्रकट कर दिए

سأخبره في آخر الوقت- انك لست على الحق- ان الله رءوف
मैं मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी को अन्तिम समय में खबर दे दूंगा कि तू
सत्य पर नहीं है। खुदा बहुत मेहरबान

رحيم- انا الثالث الحديد- اني مع الافواج اتيك بغتة-
और दयालु है। हमने तेरे लिए लोहे को नरम कर दिया। मैं सेनाओं के साथ
अचानक आऊंगा।

اني مع الرسول أجيب أخطي وأصيب-^① وقالوا اني لك

① हाशिया - उस खुदा की वही के प्रत्यक्ष शब्द ये अर्थ रखते हैं कि मैं गलती भी करूंगा और ठीक भी अर्थात् मैं जो चाहूंगा कभी करूंगा कभी नहीं और कभी मेरा इदारा पूर्ण होगा और कभी नहीं। खुदा तआला के कलाम में ऐसे शब्द आ जाते हैं जैसा कि

मैं रसूल के साथ होकर उत्तर दूंगा अपने इरादे को कभी छोड़ भी दूंगा और कभी इरादा पूरा करूंगा और कहेंगे कि तुझे यह पद कहां

هَذَا قُلْ هُوَ اللَّهُ عَجِيبٌ - جَاءَنِي أَيْلٌ^① وَاخْتَارَ - وَادَارَ اصْبَعَهُ

से प्राप्त हुआ ? कह खुदा अद्भुत चमत्कार वाला है मेरे पास आईल आया और उसने मुझे चुन लिया और अपनी उंगली को हरकत दी

وَإِشَارَ - إِنْ وَعَدَ اللَّهُ أَتَى - فَطَوَّلِي لِمَنْ وَجَدَ رَأْيَ - الْأَمْرَاضِ

और यह संकेत किया कि खुदा का वादा आ गया। अतः मुबारक वह जो उसे पाए और देखे। भिन्न-भिन्न प्रकार के रोग

تَشَاءُ وَالنَّفُوسُ تَضَاءُ - إِنْ مَعَ الرَّسُولِ أَقُومَ

फैलाए जाएंगे और कई आपदाओं से प्राणों की क्षति होगी मैं अपने रसूल के साथ खड़ा हूंगा।

وَأَفْطَرُوا صُومَ -^② وَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ إِلَى الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ -

शेष हाशिया:- हदीसों में लिखा है कि मैं मोमिन की रूह निकालते समय असमंजस में पड़ता हूँ हालांकि खुदा असमंजस से पवित्र है। इसी प्रकार यह खुदा की वह्यी है कि कभी मेरा इरादा ग़लत हो जाता है और कभी पूरा हो जाता है। इसके अर्थ ये हैं कि कभी मैं अपनी तक्रदीर और इरादे को मंसूख (स्थगित) कर देता हूँ और कभी वह इरादा जैसा कि चाहा, होता है। इसी से।

① यहां खुदा तआला ने जिब्राईल का नाम आईल रखा है इसलिए कि बार-बार लौटता है।

② स्पष्ट है कि खुदा रोज़ा रखने और इफ़्तार करने से पवित्र है और ये शब्द अपने मूल अर्थों के अनुसार उसकी ओर सम्बद्ध नहीं हो सकते। अतः यह केवल एक रूपक है। इसका तात्पर्य यह है कि कभी मैं अपना आक्रोश उतारूंगा और कुछ छूट दूंगा उस व्यक्ति के समान जो कभी खाता है और कभी रोज़ा रख लेता है और स्वयं को खाने से रोकता है। इस प्रकार के रूपक खुदा की किताबों में बहुत हैं जैसा कि एक हदीस में है कि प्रलय को खुदा कहेगा कि मैं बीमार था, मैं भूखा था मैं नंगा था अन्त तक। इसी से।

मैं रोज़ा खोलूंगा और रोज़ा भी रखूंगा और एक निर्धारित समय तक मैं इस पृथ्वी से अलग नहीं हूंगा।

واجعل لك انوار القدوم - واقصدك واروم - واعطيك

और तेरे लिए अपने आने के प्रकाश प्रदान करूंगा और तेरी ओर का इरादा करूंगा और तुझे वह वस्तु दूंगा जो

مايدوم - انا نرث الارض ناكلها من اطرافها - نقلوا الى

तेरे साथ हमेशा रहेगी हम पृथ्वी के उत्तराधिकारी होंगे और किनारों से उसे खाते आएंगे। कई लोग क़ब्रों की ओर

المقابر - ظفر من الله وفتح مبين - ان ربّي قوئى قدیر -

स्थानांतरण करेंगे। उस दिन ख़ुदा की ओर से खुली-खुली विजय होगी। मेरा प्रतिपालक ज़बरदस्त कुदरत वाला है।

انه قوئى عزیز - حلّ غضبه على الارض - انى صادق

और वह शक्तिशाली और प्रभुत्वशाली है। उसका आक्रोश पृथ्वी पर उतरेगा। मैं सच्चा हूँ।

انى صادق ويشهد الله لى - اے ازلى ابدى خدا بیڑیوں کو

मैं सच्चा हूँ। मैं सच्चा हूँ और ख़ुदा मेरी गवाही देगा। हे अजर-अमर ख़ुदा मेरी

پکڑ کے آضاقت الارض بمارحبت - ربّ انى مغلوب فانتصر

सहायता के लिए आ। पृथ्वी बावजूद विशाल होने के मुझ पर तंग हो गई है। हे मेरे ख़ुदा मैं पराजित हूँ मेरा प्रतिशोध शत्रुओं से

فسحقهم تسحيفا - زندگی کے فیشن سے دور جا پڑے ہیں -

ले। अतः उन्हें पीस डाल कि वे जीवन-पद्धति से दूर जा पड़े हैं

انما امرک اذا اردت شیئا ان تقول له کن فیکون - تو در منزل ماچو بار بار آئی

तू जिस बात का इरादा करता है वह तेरे आदेश से तुरन्त हो जाती है। हे मेरे बन्दे चूँकि तू मेरे विश्राम गृह में

خدا ابر رحمت باریدینے۔ انا امتنا اربعة عشر دوابا۔

बार-बार आता है इसलिए अब तू स्वयं देख ले कि तुझ पर दया वृष्टि हुई अथवा नहीं। हमने चौदह चौपायों को तबाह कर दिया

ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَاكَانُوا يَعْتَدُونَ۔ سرانجام جاہل جہنم بود

क्योंकि वे अवज्ञा में सीमा से गुज़र गए थे। मूर्ख का अन्जाम नर्क है।

کہ جاہل کو عاقبت کم بود۔ میری فتح ہوئی میرا غلبہ ہوا۔

मूर्ख का अच्छा अन्त कम होता है। मेरी विजय हुई मेरा प्रभुत्व हुआ

اِنِّیْ اُمِرْتُ مِنَ الرَّحْمٰنِ فَاَتُوْنِیْ۔ اِنِّیْ حَمِی الرَّحْمٰنِ۔ اِنِّیْ لَا جَد

मैं खुदा की ओर से खलीफ़ा किया गया हूँ। अतः तुम मेरी ओर आ जाओ। मैं खुदा की चरागाह हूँ और मुझे खोए हुए

ریح یوسف لولا ان تفندون۔ الم تر کیف فعل

यूसुफ़ की सुगंध आई है यदि तुम यह न कहो कि यह व्यक्ति बहक रहा है क्या तू ने नहीं देखा कि तेरे

رَبِّكَ بِاصْحَابِ الْفِيلِ۔ الم یجعل کیدهم فی تضلیل۔

रब्ब ने हाथी वालों के साथ क्या किया। क्या उसने उनकी युक्ति को उलटा कर उन्हीं पर नहीं मारा।

وہ کام جو تم نے کیا خدا کی مرضی کے موافق نہیں ہوگا۔^①

वह काम जो तुम ने किया खुदा की इच्छानुसार नहीं होगा।

اِنَّا عَفَوْنَا عَنْكَ۔ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِيَدْرِوَانَتِمْ اِذْ لَئِيْ

हमने तुझे क्षमा किया। खुदा ने बद्र में अर्थात् चौदहवीं सदी में तुम्हें अपमान में पाकर तुम्हारी सहायता की

وَقَالُوا اِنْ هٰذَا اِلَّا اخْتِلَافٌ۔ قُلْ لَوْ كَانُ مِنَ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ

और कहेंगे कि यह तो एक बनावट है उनको कह कि यदि यह कारोबार खुदा के अतिरिक्त किसी अन्य का होता

① इसकी व्याख्या नहीं की गई अल्लाह ही बेहतर जानता है। इसी से।

لوجدتم فيه اختلافا كثيرا - قل عندى شهادة من الله
तो उसमें तुम बहुत मतभेद देखते। उनको कह कि मेरे पास खुदा की गवाही है।
فهل انتم مؤمنون - يأتي قمر الانبياء - وامرك يتاتي
अतः क्या तुम ईमान लाओगे या नहीं। नबियों का चन्द्रमा आएगा और तेरा काम
पूर्ण हो जाएगा।

وامتازوا اليوم ايها المجرمون - بونچال आया اور भुत्त आया
और आज हे अपराधियो ! तुम अलग हो जाओ। बहुत तेज भूकम्प आया
زمين ته و بالا کر دی - هذا الذى كنتم به تستعجلون -
धरती को तहस नहस कर दिया।^① यह वही वादा है जिसकी तुम जल्दी करते थे।

① इस संबंध में खुदा तआला ने मुझे खबर दी है जैसा कि यशयाह के समय में हुआ कि इस नबी की भविष्यवाणी के अनुसार पहले एक अलिमा नामक महिला को लड़का पैदा हुआ। फिर उसके बाद हिजक्रियाह बादशाह ने फ़िक्रा★ पर विजय प्राप्त की। उसी प्रकार इस भूकंप से पीर मन्ज़ूर मुहम्मद लुधियानवी की पत्नी को जिस का नाम मुहम्मदी बेगम है पुत्र पैदा होगा और वह पुत्र इस महान भूकंप के लिए संकेत होगा जो क़यामत का नमूना होगा। परन्तु आवश्यक है कि इस से पूर्व और भूकंप आएंगे। इस लड़के के निम्नलिखित नाम होंगे: (1) बशीरुद्दौला क्योंकि वह हमारी विजय का निशान होगा। (2) कलिमतुल्लाह खान अर्थात् ईशवाणी। (3) आलम कबाब (4) वरड़ (5) शादी खां, (6) कलिमतुल अजीज आदि क्योंकि वह खुदा का वचन (वाणी) होगा जिसके द्वारा सत्य की जीत होगी। समस्त संसार खुदा के ही वचन हैं। इसलिए उसका नाम कलिमतुल्लाह रखना कोई असामान्य बात नहीं है। वह लड़का, अब की बार वह लड़का पैदा नहीं हुआ क्योंकि खुदा तआला ने फ़रमाया: اخّر الله الى وقت مسيحي: अर्थात् वह زلزلة الساعة जिस के लिए वह लड़का चिन्ह होगा हमने उसको एक दूसरे समय पर डाल दिया। इसी से।

★ बाइबल के अनुवाद में इसे फ़िकह लिखा है। यशयाह अध्याय - 7

اِنِّ اُحَافِظُ كُلَّ مَنْ فِي الدَّارِ - سَفِينَةٌ وَسَكِينَةٌ -

मैं प्रत्येक को जो इस घर में है इस भूकम्प से बचाऊंगा। नौका है और आराम है।

اِنِّ مَعَكَ وَمَعَ اَهْلِكَ - اَرِيدُ مَا تَرِيدُونَ - پهلے بنگالہ کی نسبت جو کچھ

मैं तेरे साथ और तेरे घर वालों के साथ हूँ। मैं वही इरादा करूंगा जो तुम्हारा इरादा है। बंगाल के बारे में भविष्यवाणी है जो बंगाल विभाजन से बंगाल वालों

علم جاری کیا گیا تھا۔ اب اُن کی دلجوئی ہوگی۔

का हृदय दुखाया गया है। खुदा फ़रमाता है कि फिर वह समय आता है कि पुनः किसी रूप में बंगाल वालों से सहानुभूति की जाएगी।

الحمد لله الذى جعل لكم الصهر والنسب - ① الحمد لله الذى اذهب

उस खुदा की प्रशंसा है जिसने दामादी और वंश की दृष्टि से तुझ पर उपकार किया और खुदा के लिए प्रशंसा है जिसने मेरा

عنى الحزن - وَاَتَانِي مَا لَمْ يَأْتِ أَحَدٌ مِنَ الْعَالَمِينَ - یس۔ انک

शोक दूर किया और मुझे वह वस्तु दी जो इस युग के लोगों में से किसी को नहीं दी गई। हे सरदार तू खुदा का

لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ - عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ - تنزيل العزيز الرحيم - اردت

भेजा हुआ है। सद्मार्ग पर उस खुदा की ओर से जो विजयी और दयावान है मैंने इरादा

ان استخلف فخلقت آدم - يُحْيِي الدِّينَ وَيُقِيمُ الشَّرِيعَةَ -

किया कि इस युग में अपना खलीफ़ा नियुक्त करूँ। अतः मैंने आदम को पैदा किया। वह धर्म को जीवित करेगा और शरीअत को स्थापित करेगा।

① अर्थात् खुदा ने तुझ पर यह उपकार किया कि एक सभ्य और सम्मानित और ख्याति प्राप्त और प्रतिष्ठित खानदान से तुझे पैदा किया और दूसरे यह उपकार किया कि देहली के एक प्रतिष्ठित सय्यद वंश से तेरी पत्नी आई। इसी से।

چو دورِ خسروی^① آغاز کر دند مسلمان را مسلمان باز کردند

जब मसीह बादशाह का समय आरंभ किया गया तो मुसलमानों को जो केवल रस्मी मुसलमान थे नए सिरे से मुसलमान बनाने लगे।

ان السموات والارض كانتا رتقا ففتقناهما۔ قرب اجلك

आकाश और पृथ्वी एक गठरी के समान बंधे हुए थे हमने उन दोनों को खोल दिया अर्थात् पृथ्वी ने अपनी पूरी शक्ति प्रकट की और आकाश ने भी। अब तेरी

المقدر۔ ان ذا العرش يدعوك۔ ولانبقى لك من المخزيات

मृत्यु का समय निकट आ गया। अर्श वाला (अर्थात् खुदा तआला) तुझे बुलाता है और हम तेरे लिए कोई अपमान वाली बात नहीं छोड़ेंगे

ذكر۔ قلّ ميعاد ربك۔ ولانبقى لك من المخزيات شيئاً۔

तेरे रब का वादा थोड़ा रह गया है और हम तेरे लिए कोई बात अपमान करने वाली शेष नहीं छोड़ेंगे।

بہت تھوڑے دن رہ گئے ہیں اُس دن خدا کی طرف سے

जीवन के दिन बहुत थोड़े रह गए हैं उस दिन खुदा की ओर से

سب پر اُسی چھا جائے گی۔ یہ ہوگا۔ یہ ہوگا۔ یہ ہوگا۔

सब पर उदासी छा जाएगी। यह होगा, यह होगा, यह होगा

پھر تیرا واقعہ ہوگا۔ تمام عجائبات قدرت دکھانے کے

फिर तेरी घटना घटित होगी। कुदरत के कई चमत्कार दिखाने के बाद

بعد تمہارا حادثہ آئے گا۔ جَاء وقتك۔ ونبقى لك الايات باہرات۔

फिर तुम्हारी मृत्यु की घटना होगी। तेरा समय आ गया है और हम तेरे लिए प्रकाशमान निशान छोड़ेंगे।

① खुदा तआला की किताबों में अन्तिम युग के मसीह को बादशाह के नाम से स्मरण किया गाय है इस से अभिप्राय आसमानी बादशाही है अर्थात् वह भावी सिलसिले का एक बादशाह होगा और बड़े-बड़े बुजुर्ग उसके अनुयायी होंगे। इसी से।

جَاءَ وَقْتُكَ - وَبَقِيَ لَكَ الْآيَاتُ بَيِّنَاتٌ -

तेरा समय आ गया है और हम तेरे लिए खुले-खुले निशान शेष रखेंगे।

رَبِّ تَوْفَّنِي مُسْلِمًا وَالْحَقَّنِي بِالصَّالِحِينَ - آمِينَ

हे मेरे ख़ुदा इस्लाम पर मुझे मृत्यु दे और मुझे नेक लोगों के साथ मिला दे।
आमीन।



समाप्ति

कुछ आपत्तिकर्ताओं की आपत्तियों के उत्तर

चूँकि इस उपद्रव से भरे युग में मुसलमानों में ऐसे लोग भी पैदा हो गए हैं जो आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाना तथा आप का अनुसरण करना मुक्ति के लिए आवश्यक नहीं समझते और केवल खुदा तआला को एक एवं भागीदार रहित मानना स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए पर्याप्त समझते हैं। और कुछ ऐसे हैं कि मात्र झूठ गढ़ने तथा अन्याय के तौर पर या अपने बोधभ्रम से मुझ पर नाना प्रकार की अनुचित आपत्तियाँ (ऐतराज) करते हैं जिन से कुछ का तात्पर्य तो यह मालूम होता है ताकि लोगों को इस समुदाय से विमुख करें तथा कुछ ऐसे भी हैं कि धर्म की बारीकियों को समझने में उन के स्वभाव असमर्थ हैं तथा उनके स्वभाव में उपद्रव नहीं, परन्तु विवेकशील भी नहीं और न पूर्ण ज्ञान है जिससे वे स्वयं वास्तविक स्थिति ज्ञात कर सकें। इसलिए मैंने समय और अवस्था के अनुकूल यह हितकारी समझा कि इस समाप्ति में उन सब के सन्देहों का निवारण किया जाए।

कुछ आवश्यक न था कि मैं उन सन्देहों का निवारण करने के लिए ध्यान देता क्योंकि मेरी बहुत सी पुस्तकों के विभिन्न स्थानों में इन निरर्थक आरोपों का उत्तर दिया गया है, परन्तु इन दिनों में अब्दुल हकीम खान नामक एक व्यक्ति जो रियासत पटियाला में सहायक सर्जन है जो इस से पूर्व हमारी बैअत के सिलसिले में सम्मिलित था, किन्तु भेंट तथा संगति की कमी के कारण धार्मिक बारीकियों से अनभिज्ञ मात्र तथा वंचित था और अहंकार, अनभिज्ञता, किसी बात को गलत जानते हुए उस पर विश्वास रखना, घमण्ड तथा कुधारणा के रोग में ग्रस्त था। अपने दुर्भाग्य से मूर्तद होकर इस सिलसिले का शत्रु हो गया है तथा उस से जहाँ

तक हो सका ख़ुदा के प्रकाश को मिटाने के लिए अपने मूर्खतापूर्ण लेखों में अपनी विषाक्त फूँकों से काम ले रहा है ताकि उस दीपक को बुझा दे जो ख़ुदा के हाथ का प्रकाश है। इसलिए उचित समझा गया कि संक्षेप की दृष्टि से उसके कुछ ऐसे आरोपों का उत्तर लिख दिया जाए जो लोगों को सूचित करने के लिए उत्तर देने योग्य हैं क्योंकि लोगों पर यह बात लापरवाही तथा सांसारिक व्यस्तता के कारण कठिन है कि मेरी समस्त पुस्तकों को खोज कर उनमें से उत्तर ज्ञात कर लें।

अतः पहले वह बात उल्लेखनीय है जिसके कारण अब्दुल हकीम खां हमारी जमाअत से अलग हुआ है और वह यह है कि उसकी यह आस्था है कि आखिरत में मोक्ष प्राप्त करने के लिए आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने की आवश्यकता नहीं अपितु प्रत्येक जो ख़ुदा को एक और भागीदार रहित जानता है (यद्यपि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठलाता है) वह मोक्ष पाएगा। इस से स्पष्ट है कि उसके निकट एक व्यक्ति इस्लाम से मुर्तद होकर भी मोक्ष पा सकता है तथा उसे मुर्तद होने का दण्ड देना अन्याय है। उदाहरणतया निकट समय में ही एक अब्दुल ग़फ़ूर नामक व्यक्ति मुर्तद होकर आर्य समाज में सम्मिलित हुआ तथा धर्मपाल नाम रखा गया। वह आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनादर करने तथा झूठा कहने में दिन-रात कटिबद्ध है वह भी अब्दुल हकीम के निकट सीधा स्वर्ग में जाएगा, क्योंकि आर्य लाग मूर्ति-पूजा से अलग हैं परन्तु प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि ऐसी आस्था की दृष्टि से नबियों का आना केवल व्यर्थ एवं निरर्थक कार्य ठहरेगा, क्योंकि जब एक व्यक्ति नबियों को झुठला कर तथा मानो शत्रु हो कर भी ख़ुदा को 'एक' जानने से मोक्ष पा सकता है तो फिर इस अवस्था में मानो नबी केवल व्यर्थ तौर पर भेजे गए^①, अन्यथा

① यदि यह बात सच है कि वे लोग जो अंबिया अलैहिस्सलाम को झुठलाने वाले तथा उनके शत्रु हैं केवल अपने काल्पनिक एकेश्वरवाद से मोक्ष पा जाएंगे तो बजाए इसके कि उन काफ़िरों को प्रलय के दिन कोई अज़ाब हो, अंबिया स्वयं एक प्रकार के अज़ाब में ग्रसित हो जाएंगे, जबकि वे अपने कट्टर शत्रुओं, झूठा कहने वालों तथा अनादर करने

उनके बिना भी काम चल सकता था तथा उनके होने की कोई बड़ी आवश्यकता न थी। और यदि यह सच था कि केवल ख़ुदा को 'एक' एवं भागीदार रहित कहना ही पर्याप्त है तो मानो यह भी अनेकेश्वरवाद का एक प्रकार है कि **ला इलाहा इल्लल्लाह** के साथ मुहम्मद रसूलुल्लाह अनिवार्य तौर पर मिलाया गया तथा वास्तव में इस विचार के लोग मुहम्मद रसूलुल्लाह कहना शिर्क (ख़ुदा का भागीदार बनाना) ही समझते हैं तथा ख़ुदा तआला का पूर्ण एकेश्वरवाद इसी में समझते हैं कि उसके साथ किसी का नाम न मिलाया जाए तथा उनके निकट इस्लाम धर्म से विमुख होना मोक्ष का बाधक नहीं। और यदि उदाहरणतया एक ही दिन में सब के सब मुसलमान आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत से इन्कार करके पथभ्रष्ट दार्शनिकों की भांति केवल एकेश्वरवाद को पर्याप्त समझें तथा स्वयं को कुर्आन एवं रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण से निस्पृह समझें तथा झुठलाने वाले हो जाएं तो उनके निकट ये सब लोग मुर्तद होने के बावजूद मोक्ष पा जाएंगे तथा निःसन्देह स्वर्ग में प्रवेश करेंगे।

परन्तु यह बात किसी अल्प बुद्धि वाले पर भी गुप्त नहीं कि सहाबा^{रजि.} के युग से हमारे इस युग तक समस्त इस्लामी सम्प्रदायों की इस बात पर सहमति है कि इस्लाम की वास्तविकता यही है कि जैसा कि एक व्यक्ति ख़ुदा तआला को भागीदार रहित 'एक' समझता है तथा उसकी हस्ती और अस्तित्व तथा एकेश्वरवाद पर ईमान लाता है ऐसा ही उसके लिए आवश्यक है कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत पर ईमान लाए तथा जो कुछ कुर्आन शरीफ़ में लिखा हुआ है सब पर ईमान रखे। यही वह बात है जो प्रारंभ से मुसलमानों के मस्तिष्क में अंकित कर दी गई है और इसी पर दृढ़ आस्था रखने के कारण सहाबा^{रजि.} ने

शेष हाशिया

वालों को स्वर्ग के तख़्तों पर बैठा हुआ देखेंगे तथा अपने समान उनको हर प्रकार की ने'मत में पाएंगे और संभव है कि उस समय भी वे लोग उपहास करते हुए नबियों से कहें कि तुम्हें झुठलाने तथा तुम्हारा अनादर करने ने हमारा क्या बिगाड़ लिया। तब नबियों का स्वर्ग में रहना कष्टदायक हो जाएगा। इसी से।

अपने प्राण दिए और कई सच्चे मुसलमान जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में काफ़िरों के हाथ में गिरफ़्तार हो गए थे उन को बार-बार कहा गया था कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इन्कारी हो जाओ तो तुम हमारे हाथ से छुटकारा पाओगे, परन्तु उन्होंने इन्कार न किया तथा उसी मार्ग में प्राण दे दिए। ये बातें इस्लामी घटनाओं में ऐसी प्रसिद्ध हैं कि जो व्यक्ति इस्लामी इतिहास से थोड़ा सा भी परिचित होगा उसे हमारे इस वर्णन से इन्कार नहीं होगा।

और फिर यह भी स्मरण रहे कि यद्यपि इस्लामी युद्ध प्रतिरक्षा के तौर पर थे अर्थात् उनका आरंभ काफ़िरों की ओर से था तथा अरब के काफ़िर अपने आक्रमणों से नहीं हटते थे इस भय से कि कदाचित् इस्लाम धर्म अरब द्वीप में फैल जाए। इसी कारण आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनके साथ लड़ने का आदेश हुआ था ताकि अत्याचार से पीड़ित लोगों को उन फ़िराओं के अत्याचार से मुक्ति दिलाएं, परन्तु इसमें भी कुछ सन्देह नहीं कि फिर भी यदि काफ़िरों को यह सन्देश दिया जाता कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत का मानना आवश्यक नहीं तथा आप^ﷺ पर ईमान लाना मोक्ष की कोई शर्त नहीं केवल अपने तौर पर खुदा को एक तथा भागीदार रहित समझो यद्यपि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झूठा कहने वाले तथा विरोधी और शत्रु रहो और इस बात की आवश्यकता नहीं कि उन्हें अपना सरदार और पेशवा समझ लो, तो इससे इतने रक्तपात की नौबत न आती। विशेष तौर पर यहूदी जो खुदा को एक तथा भागीदार रहित समझते थे **क्या कारण** कि उनसे युद्ध किए गए, यहां तक कि कुछ अवसरों पर कई हजार यहूदी बन्धक बनाकर एक ही दिन में क़त्ल किए गए। इस से बिल्कुल स्पष्ट है कि यदि मोक्ष के लिए केवल एकेश्वरवाद पर्याप्त था तो यहूदियों से अकारण युद्ध करना तथा उनमें से हजारों को क़त्ल करना यह कार्य सरासर अवैध और अनुचित था। फिर स्वयं आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह कार्य क्यों किया? क्या आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़ुरआन का ज्ञान न था ?

यदि ख़ुदा तआला की समस्त किताबों को ध्यानपूर्वक देखा जाए तो ज्ञात होगा कि **समस्त नबी** यही शिक्षा देते आए हैं कि ख़ुदा तआला को भागीदार रहित 'एक' स्वीकार करो तथा इसके साथ हमारे रसूल होने पर भी ईमान लाओ। इसी कारण इस्लामी शिक्षा का इन दो वाक्यों में **सारांश** सम्पूर्ण उम्मत को सिखाया गया कि ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह।

यह भी स्मरण रहे कि ख़ुदा के **अस्तित्व** का पता देने वाले तथा उसके एक एवं भागीदार रहित होने का ज्ञान लोगों को सिखाने वाले केवल नबी हैं। यदि ये पुनीत लोग संसार में न आते तो सद्मार्ग का निश्चित तौर पर पाना एक निषेधक एवं दुर्लभ बात थी, यद्यपि पृथ्वी और आकाश पर विचार करके, उनके उत्तम तथा सुदृढ़ अनुक्रम पर दृष्टि डालकर एक शालीन स्वभाव तथा सद्बुद्धि रखने वाला मनुष्य मालूम कर सकता है कि इस बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवस्था का कोई निर्माता 'अवश्य होना चाहिए' और इस वाक्य में कि वास्तव में 'वह मौजूद है', बहुत अन्तर है। वास्तविक अस्तित्व पर सूचना देने वाले केवल नबी हैं, जिन्होंने हजारों निशानों एवं चमत्कारों से संसार पर सिद्ध कर दिखाया कि वह हस्ती जो गुप्त से गुप्त तथा समस्त शक्तियों की संग्रहीता है वास्तव में मौजूद है। और सच तो यह है कि इतनी बुद्धि भी कि विश्व-व्यवस्था को देखकर वास्तविक स्रष्टा की आवश्यकता महसूस हो बुद्धि की यह श्रेणी भी नुबुव्वत की किरणों से ही लाभान्वित है। यदि नबियों का अस्तित्व न होता तो इतनी बुद्धि भी किसी को प्राप्त न होती। इस का उदाहरण यह है कि यद्यपि पृथ्वी के नीचे जल भी है परन्तु उस जल की अनश्वरता एवं अस्तित्व आकाशीय जल से सम्बद्ध है। जब कभी ऐसा संयोग होता है कि आकाश से पानी नहीं बरसता तो पृथ्वी के पानी भी सूख जाते हैं और जब आकाश से पानी बरसता है तो पृथ्वी में भी पानी जोश मारता है, इसी प्रकार नबियों के आने से अक़लें तीव्र हो जाती हैं और बुद्धि जो पृथ्वी रूपी पानी है अपनी अवस्था में उन्नति करती है और फिर जब इस बात पर एक लम्बी अवधि गुज़रती है कि कोई नबी नहीं भेजा जाता तो अक़लों का पृथ्वी रूपी पानी मलिन एवं कम

होना आरंभ हो जाता है तथा संसार में मूर्तिपूजा तथा शिर्क तथा हर प्रकार की बुराई फैल जाती है। अतः जिस प्रकार आंख में एक प्रकाश है और वह बावजूद इस प्रकाश के फिर भी सूर्य की मुहताज है, इसी प्रकार संसार की अकलें जो आंख के समान हैं हमेशा नुबुव्वत रूपी सूर्य की मुहताज रहती हैं तथा जब भी वह सूर्य अस्त हो जाए उनमें तुरन्त मलिनता और अंधकार पैदा हो जाता है। क्या तुम केवल आंख से कुछ देख सकते हो ? कदापि नहीं। इसी प्रकार तुम नुबुव्वत के प्रकाश के बिना भी कुछ नहीं देख सकते।

अतः चूंकि अनादि काल से और जब से कि संसार ने जन्म लिया है **खुदा को पहचानना** नबी को पहचानने से सम्बद्ध है। इसलिए यह स्वयं असंभव तथा दुर्लभ है कि नबी के माध्यम के बिना एकेश्वरवाद मिल सके। नबी खुदा की शकल देखने का दर्पण होता है, इसी प्रकार दर्पण द्वारा खुदा का चेहरा दिखाई देता है। जब खुदा स्वयं को संसार पर प्रकट करना चाहता है तो नबी को जो उसकी कुदरतों का द्योतक है संसार में भेजता है तथा उस पर अपनी वह्यी उतारता है तथा अपनी प्रतिपालन-शक्तियां उसके द्वारा प्रदर्शित करता है, तब संसार को पता लगता है कि खुदा मौजूद है। अतः जिन लोगों का अस्तित्व आवश्यक तौर पर खुदा के अनादि कानून के अनुसार खुदा को पहचानने के लिए माध्यम नियुक्त हो चुका है उन पर ईमान लाना एकेश्वरवाद का एक भाग है तथा उस ईमान के बिना एकेश्वरवाद पूर्ण नहीं हो सकता क्योंकि संभव नहीं कि उन आकाशीय निशानों तथा कुदरत दिखाने वाले चमत्कारों के बिना जो नबी दिखाते हैं तथा अध्यात्म ज्ञान तक पहुंचाते हैं, वह शुद्ध एकेश्वरवाद जो पूर्ण विश्वास के स्रोत से पैदा होता है प्राप्त हो सके। वही एक क्रौम है जो खुदा को दिखाने वाली है जिनके माध्यम से वह खुदा जिसका अस्तित्व सूक्ष्म से सूक्ष्म तथा गुप्त से गुप्त एवं परोक्ष से परोक्ष है, प्रकट होता है और सदैव से वह गुप्त खजाना जिसका नाम खुदा है नबियों के द्वारा ही पहचाना गया है अन्यथा वह एकेश्वरवाद जो खुदा के निकट एकेश्वरवाद कहलाता है जिस पर क्रियात्मक रंग पूर्ण रूप से चढ़ा हुआ होता है नबी के माध्यम के बिना उसका

प्राप्त होना जैसा कि बुद्धि के विपरीत है वैसा ही साधकों के अनुभव के विपरीत है।

कुछ नादानों को जो यह भ्रम होता है कि मानो मोक्ष के लिए केवल एकेश्वरवाद पर्याप्त है नबी पर ईमान लाने की आवश्यकता नहीं, जैसे वे आत्मा (रूह) को शरीर से अलग करना चाहते हैं। यह भ्रम पूर्णतः हृदय के अंधेपन पर आधारित है। बिल्कुल स्पष्ट है कि जब वास्तविक एकेश्वरवाद का अस्तित्व ही नबी के माध्यम से होता है तथा इसके बिना निषेध एवं दुर्लभ है तो वह नबी पर ईमान लाने के बिना क्योंकर प्राप्त हो सकता है। यदि नबी को जो एकेश्वरवाद की जड़ है ईमान लाने में अलग कर दिया तो एकेश्वरवाद (तौहीद) क्योंकर क्रायम रहेगा। एकेश्वरवाद का कारण तथा एकेश्वरवाद का पैदा करने वाला तथा एकेश्वरवाद का जनक और एकेश्वरवाद का उद्गम और एकेश्वरवाद का पूर्णतम द्योतक केवल नबी ही होता है। उसी के द्वारा ख़ुदा का गुप्त चेहरा दिखाई देता है और पता लगता है कि **ख़ुदा** है। बात यह है कि एक ओर तो एक ख़ुदा का अस्तित्व असीम स्तर की निस्पृहता एवं स्वच्छन्दता में निहित है, उसे किसी की हिदायत और गुमराही की परवाह नहीं, तथा दूसरी ओर वह स्वाभाविक तौर पर यह भी मांग करता है कि वह पहचाना जाए और उसकी अनादि दया से लोग लाभान्वित हों। वह ऐसे हृदय पर जो पृथ्वी पर रहने वाले समस्त हृदयों में से प्रेम, सानिध्य तथा सुब्हानहू की प्राप्ति के लिए अपने अन्दर उच्च कोटि की शक्ति रखता है तथा लोगों से उच्च श्रेणी की सहानुभूति उसकी प्रकृति में है, झलक दिखाता है तथा उस पर अपनी हस्ती तथा अजर-अमर विशेषताओं के प्रकाश प्रकट करता है और इस प्रकार वह विशेष तथा उच्च प्रकृति का मानव जिसे दूसरे शब्दों में **नबी** कहते हैं उसकी ओर खींचा जाता है। फिर वह नबी अपने हृदय में लोगों से उच्च श्रेणी का जोश रखने के कारण अपने अध्यात्मिक ध्यान एवं गिड़गिड़ाहट एवं विनम्रता द्वारा यह चाहता है कि वह ख़ुदा जो उस पर प्रकट हुआ है दूसरे लोग भी उसे पहचानें और मोक्ष पाएं तथा हार्दिक तौर पर ख़ुदा तआला के समक्ष अपने अस्तित्व की कुर्बानी प्रस्तुत करता है और इस कामना से कि लोग जीवित हो जाएं अपने लिए कई मौतें स्वीकार कर लेता

है और बड़े कठोर परिश्रमों एवं तपस्याओं में स्वयं को डालता है जैसा कि इस आयत में संकेत है- ^① لَعَلَّكَ بِاِحْوَ نَفْسِكَ الْاَيْكُونُوا مُؤْمِنِينَ तब यद्यपि खुदा सृष्टि से निष्पृह तथा स्वच्छन्द है पर उसके अनश्वर शोक, संताप, व्याकुलता, बेचैनी, विनम्रता दरिद्रता तथा असीम श्रेणी की सत्यता एवं विशुद्धता पर दृष्टि डालकर सृष्टि के तैयार हृदयों पर अपने निशानों के साथ अपना चेहरा प्रकट कर देता है तथा उसकी जोशपूर्ण प्रेरणा से जो आकाश पर एक पीड़ादायक शोर डालती हैं, खुदा तआला के निशान पृथ्वी पर वर्षा के समान बरसते हैं तथा संसार के लोगों को महा विलक्षण निशान दिखाए जाते हैं जिन से संसार देख लेता है कि खुदा है, तथा खुदा का चेहरा दिखाई दे जाता है, परन्तु यदि वह पवित्र नबी इतनी दुआ, गिड़गिड़ाहट, तथा रो-रो कर खुदा की ओर ध्यान न करता तथा खुदा के चेहरे की चमक संसार पर प्रकट करने के लिए अपनी कुर्बानी न देता और प्रत्येक क्रदम में सैकड़ों मौतें स्वीकार न करता तो खुदा का चेहरा संसार पर कदापि प्रकट न होता, क्योंकि खुदा तआला व्यक्तिगत निस्पृहता के कारण स्वच्छन्द है जैसा कि उसका कथन है -

إِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ^②
وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ^③

अर्थात् खुदा तो समस्त संसार से निस्पृह है तथा जो लोग हमारे मार्ग में कठिन परिश्रम करते हैं और हमारी अभिलाषा में प्रयास को चरम सीमा तक पहुंचा देते हैं उन्हीं के लिए हमारा प्रकृति का यह नियम है कि हम उन्हें अपना मार्ग प्रदर्शित कर दिया करते हैं। अतः खुदा के मार्ग में सर्वप्रथम कुर्बानी देने वाले नबी हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए प्रयास करता है परन्तु अंबिया^अ दूसरों के लिए प्रयास करते हैं।

① (अनुवाद) अर्थात् क्या तू इस शोक में स्वयं को तबाह कर देगा कि ये काफ़िर लोग क्यों ईमान नहीं लाते। अश्शुअरा-26/4 इसी से।

② (अनुवाद) निस्संदेह अल्लाह समस्त संसार से बे-परवाह है। आले इमरान - 3/98

③ (अनुवाद) और वे लोग जो हमारे बारे में प्रयत्न करते हैं हम अवश्य उनका अपनी राहों की ओर मार्गदर्शन करेंगे। अलअनकबूत - 70

लोग सोते हैं तथा वे उनके लिए जागते हैं, लोग हंसते हैं तथा वे उनके लिए रोते हैं तथा संसार की मुक्ति के लिए प्रत्येक संकट को प्रसन्नतापूर्वक अपने ऊपर ले लेते हैं। यह सब इसलिए करते हैं ताकि ख़ुदा तआला कुछ ऐसी आभा प्रदर्शित करे कि लोगों पर सिद्ध हो जाए कि ख़ुदा मौजूद है तथा तत्पर हृदयों पर उसकी हस्ती एवं उसका एकेश्वरवाद प्रकट हो जाए ताकि वे मोक्ष पाएं। अतः वह प्राणों के शत्रुओं की सहानुभूति में मरे जाते हैं। जब उनकी पीड़ा चरम सीमा पर पहुंचती है तथा उनकी पीड़ात्पादक आहों से (जो लोगों की मुक्ति के लिए होती हैं) आकाश भर जाता है, ख़ुदा तआला अपने चेहरे की चमक दिखाता है तथा शक्तिशाली निशानों के साथ अपने अस्तित्व तथा अपना एकेश्वरवाद लोगों पर प्रकट करता है। अतः इसमें सन्देह नहीं कि एकेश्वरवाद तथा ख़ुदा को पहचानने की पूंजी रसूल के दामन से ही संसार को प्राप्त होती है, इसके बिना कदापि प्राप्त नहीं हो सकती। इस बात में सर्वश्रेष्ठ आदर्श हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिखाया कि एक क्रौम जो गन्दगी पर बैठी हुई थी उनको गन्दगी से उठाकर मनोहर वाटिका में पहुंचा दिया तथा वे जो आध्यात्मिक भूख-प्यास से मरने लगे थे, उनके आगे उच्च कोटि के आध्यात्मिक भोजन तथा मधुर शरबत रख दिए, उनको जंगली अवस्था से मानव बनाया फिर साधारण मानव से सभ्य मानव बनाया फिर सभ्य मानव से पूर्ण मानव बनाया तथा उनके लिए इतने अधिक चमत्कार दिखाए कि उनको ख़ुदा दिखा दिया तथा उनमें ऐसा परिवर्तन पैदा कर दिया कि उन्होंने फ़रिश्तों से हाथ जा मिलाए। यह प्रभाव किसी अन्य नबी से अपनी उम्मत के बारे में प्रकट नहीं हुआ, क्योंकि उनके संगत प्राप्त अपूर्ण रहे। अतः मैं सदैव आश्चर्य की दृष्टि से देखता हूं कि यह अरबी नबी जिसका नाम **मुहम्मद** है (हज़ारों दरूद और सलाम उस पर) यह **किस उच्च श्रेणी का नबी** है। उस के उच्च स्थान की सीमा ज्ञात नहीं हो सकती तथा उसके पुनीत प्रभाव का अनुमान लगाना मनुष्य का कार्य नहीं।^① खेद कि उसे यथायोग्य पहचाना

① यह विचित्र बात है कि दुनिया समाप्त होने को है परन्तु इस कामिल नबी की दानशीलता की किरणें अब तक समाप्त नहीं हुईं। यदि ख़ुदा का कलाम पवित्र कुर्आन रोक न होता तो केवल

नहीं गया। वह एकेश्वरवाद जो संसार से लुप्त हो चुका था वही एक पहलवान है जो उसे दोबारा संसार में लाया, उसने खुदा से असीम प्रेम किया तथा लोगों की असीम सहानुभूति में उसके प्राण निकले। इसलिए खुदा ने जो उसके हृदय के भेद से परिचित था उसे समस्त अंबिया तथा समस्त अगलों और पिछलों पर श्रेष्ठता प्रदान की तथा उसकी मनोकामनाएं उसको उसके जीवन में प्रदान कीं। वही है जो उद्गम प्रत्येक वरदान का है तथा वह व्यक्ति जो उसके वरदान का इक्रार किए बिना किसी श्रेष्ठता का दावा करता है वह मानव नहीं है अपितु शैतान की सन्तान है क्योंकि प्रत्येक श्रेष्ठता की कुंजी उसको दी गई है और प्रत्येक अध्यात्म ज्ञान का खजाना उसको प्रदान किया गया है जो उसके माध्यम से नहीं पाता वह अनादि तौर पर वंचित है। हम क्या वस्तु हैं तथा हमारी वास्तविकता क्या है। हम ने 'मत के कृतघ्न होंगे यदि इस बात का इक्रार न करें कि हमने वास्तविक एकेश्वरवाद इसी नबी के माध्यम से पाया, तथा जीवित खुदा की पहचान हमें इसी पूर्ण नबी के द्वारा तथा उसके प्रकाश से प्राप्त हुई है। खुदा के वार्तालाप एवं संवादों का सम्मान भी जिस से हम उसके चेहरे का दर्शन करते हैं इसी महान नबी के द्वारा हमें प्राप्त हुआ है। इस हिदायत रूपी सूर्य की किरण धूप के समान हम पर पड़ती है तथा हम उसी समय तक प्रकाशमान रह सकते हैं जब तक कि हम उसके सामने खड़े हैं।

वे लोग जो इस ग़लत विचार पर दृढ़ हैं कि जो व्यक्ति आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान न लाए या मुर्तद हो जाए और एकेश्वरवाद पर दृढ़ हो

शेष हाशिया

यही नबी था जिसके बारे में हम कह सकते थे वह अब तक पार्थिव शरीर के साथ जीवित आकाश पर मौजूद है, क्योंकि हम उसकी ज़िन्दगीके स्पष्ट लक्षण पाते हैं उसका धर्म जीवित है उस का अनुकरण करने वाला जीवित हो जाता है और उसके माध्यम से जीवित खुदा मिल जाता है। हमने देख लिया है कि खुदा उससे और उसके धर्म से और उसके प्रेमी से प्रेम करता है। स्मरण रहे कि वास्तव में वह जीवित है और आकाश पर उसका स्थान सर्वोच्च है परन्तु यह पार्थिव शरीर जो नश्वर है यह नहीं है अपितु एक और नूरानी शरीर के साथ जो अपतनशील है अपने शक्तिमान खुदा के पास आकाश पर है। इसी से।

तथा खुदा को एक एवं भागीदार रहित मानता हो वह भी मोक्ष पा जाएगा। ईमान न लाने या मर्तद होने से उसकी कुछ हानि न होगी, जैसा कि अब्दुल हकीम खान का मत है। ऐसे लोग वास्तव में एकेश्वरवाद की वास्तविकता से ही अनभिज्ञ हैं। हम बारम्बार उल्लेख कर चुके हैं कि यों तो शैतान भी खुदा तआला को एक एवं भागीदार रहित समझता है किन्तु केवल 'एक' समझने से मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती अपितु मोक्ष तो दो बातों पर आधारित है:-

(1) प्रथम - यह कि पूर्ण विश्वास के साथ खुदा तआला के अस्तित्व तथा एकेश्वरवाद पर ईमान लाए।

(2) द्वितीय - यह कि खुदा तआला का ऐसा पूर्ण प्रेम हृदय में समाया हो कि जिसके आधिपत्य एवं प्रभुत्व का परिणाम यह हो कि खुदा तआला का आज्ञापालन उसके प्राणों के लिए सरासर आराम हो जिसके बिना वह जीवित ही न रह सके, तथा उसका प्रेम दूसरे समस्त लोगों के प्रेमों को पैरों से कुचल कर समाप्त कर दे। यही वास्तविक एकेश्वरवाद है जो हमारे सरदार एवं स्वामी हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त प्राप्त हो ही नहीं सकता। क्यों प्राप्त नहीं हो सकता ? इसका उत्तर यह है कि खुदा का अस्तित्व अगोचर से अगोचर, दूर से दूर तथा अत्यन्त गुप्त है जिसे मानव-अक्लें मात्र अपनी शक्ति से ज्ञात नहीं कर सकतीं तथा कोई बौद्धिक तर्क उसके अस्तित्व पर कोई ठोस प्रमाण नहीं हो सकता, क्योंकि बुद्धि की दौड़-धूप केवल इस सीमा तक है कि इस संसार के बनावट पर दृष्टि डालकर स्रष्टा की आवश्यकता महसूस करे, परन्तु आवश्यकता का महसूस करना और बात है तथा उस श्रेणी के ठोस विश्वास तक पहुंचना कि जिस खुदा की आवश्यकता स्वीकार की गई है वह वास्तव में मौजूद भी है, यह और बात है। चूंकि बुद्धि का मार्ग दोषपूर्ण, अपूर्ण तथा अस्पष्ट है, इसलिए प्रत्येक दार्शनिक मात्र बुद्धि के माध्यम से खुदा को नहीं पहचान सकता अपितु अधिकतर ऐसे लोग जो मात्र बुद्धि के माध्यम से खुदा तआला का पता लगाना चाहते हैं, अन्ततः नास्तिक बन जाते हैं तथा पृथ्वी और आकाश की संरचना पर विचार करना

उन्हें कुछ भी लाभ नहीं पहुंचा सकता तथा खुदा तआला के सानिध्यप्राप्त लोगों पर उपहास करते हैं और उनका तर्क यह है कि संसार में हजारों ऐसी वस्तुएं पाई जाती हैं जिन के अस्तित्व का हम कोई लाभ नहीं देखते और जिनमें हमारे बौद्धिक अनुसंधान से कोई ऐसी कारीगरी सिद्ध नहीं होती जो स्रष्टा को सिद्ध करे अपितु केवल व्यर्थ एवं मिथ्या तौर पर उन वस्तुओं का अस्तित्व पाया जाता है। खेद ! वे नादान नहीं जानते कि किसी वस्तु के बारे में ज्ञान का अभाव उस वस्तु के न होने की दलील नहीं होता। इस प्रकार के कई लाख लोग इस युग में पाए जाते हैं जो स्वयं को प्रथम श्रेणी के बुद्धिमान तथा दार्शनिक समझते हैं तथा खुदा तआला के अस्तित्व के घोर इन्कारी हैं। अतः स्पष्ट है कि यदि उन्हें कोई शक्तिशाली बौद्धिक तर्क मिलता तो वे खुदा तआला के अस्तित्व का इन्कार न करते और यदि खुदा तआला के अस्तित्व पर कोई निश्चित बौद्धिक तर्क उनको दोषी ठहराता तो वे बड़ी निर्लज्जता एवं उपहासपूर्वक खुदा तआला के अस्तित्व के इन्कारी न हो जाते। अतः कोई व्यक्ति दार्शनिकों की नौका पर बैठ कर सन्देहों के तूफान से मुक्ति नहीं पा सकता अपितु अवश्य ही डूबेगा तथा उसे एकेश्वरवाद का शरबत कदापि, कदापि प्राप्त नहीं होगा। अतः सोचो कि यह विचार कितना असत्य पर आधारित तथा दुर्घन्धयुक्त है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माध्यम के बिना एकेश्वरवाद प्राप्त हो सकता है और इस से मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर सकता है। हे अज्ञानियो ! जब तक खुदा के अस्तित्व पर पूर्ण विश्वास न हो उसके एकेश्वरवाद पर क्योंकि विश्वास हो सकता है। अतः निश्चित ही समझो कि निश्चित एकेश्वरवाद केवल नबी के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अरब के नास्तिकों तथा अधर्मियों को हजारों आकाशीय निशान (चमत्कार) दिखा कर खुदा तआला के अस्तित्व का मानने वाला बना दिया तथा अब तक आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चा एवं पूर्ण अनुसरण करने वाले उन निशानों को नास्तिकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। बात यही सत्य है कि जब तक जीवित खुदा की जीवित शक्तियों को मनुष्य नहीं देखता

शैतान उसके हृदय में से नहीं निकलता और न सच्चा एकेश्वरवाद उसके हृदय में प्रवेश करता है और न निश्चित तौर पर खुदा के अस्तित्व को स्वीकार कर सकता है। यह पवित्र एवं पूर्ण एकेश्वरवाद केवल आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा ही प्राप्त होता है।

वे शक्तिशाली निशान जो नबी के माध्यम से प्रकट होते हैं जैसा कि वह खुदा तआला के अस्तित्व एवं एकेश्वरवाद को सिद्ध करते हैं उसी प्रकार खुदा तआला की सौन्दर्य संबंधी तथा प्रतापी विशेषताओं को पूर्णरूपेण सिद्ध करके उसकी श्रेष्ठता तथा प्रेम को हृदयों में बिठाते हैं और जब उन निशानों से जिन की जड़ शक्तिशाली एवं अधिकारिक भविष्यवाणियां हैं खुदा तआला के अस्तित्व, एकेश्वरवाद तथा उसकी सौम्य एवं प्रतापी विशेषताओं पर विश्वास हो जाता है तो उसका अनिवार्य परिणाम यह होता है कि मनुष्य खुदा तआला को उसके अस्तित्व और सम्पूर्ण विशेषताओं में एक अकेला तथा भागीदार रहित जानता है तथा उसके गुणों एवं अध्यात्मिक सुन्दरता तथा सौन्दर्य पर दृष्टि डालकर उससे डरता रहता है। इस प्रकार वह दिन-प्रतिदिन खुदा तआला की ओर खींचा जाता है, यहां तक कि समस्त अधम संबंध तोड़कर रूह मात्र रह जाता है तथा उसका सम्पूर्ण वक्ष खुदा के प्रेम से भर जाता है और खुदा के अस्तित्व के अवलोकन से उसके अपने अस्तित्व पर एक मृत्यु आ जाती है और वह मृत्यु के पश्चात् एक नया जीवन पाता है। तब उस तल्लीनता की अवस्था में कहा जाता है कि उसे एकेश्वरवाद प्राप्त हो गया है। अतः जैसा कि हम उल्लेख कर चुके हैं वह पूर्ण एकेश्वरवाद जो मोक्ष का उद्गम है सिवाए पूर्ण नबी के अनुसरण के प्राप्त हो ही नहीं सकता।

अतः इस लेख से स्पष्ट है कि खुदा के रसूल को मानना एकेश्वरवाद के मानने के लिए अनिवार्य कारण के समान है तथा उनके परस्पर ऐसे सम्बन्ध हैं कि एक-दूसरे से अलग हो ही नहीं सकते तथा जो व्यक्ति रसूल का अनुसरण किए बिना एकेश्वरवाद का दावा करता है उसके पास केवल एक शुष्क हड्डी है जिसमें मस्तिष्क नहीं तथा उसके हाथ में केवल एक बुझा हुआ दीपक है जिसमें प्रकाश

नहीं है। ऐसा व्यक्ति जो यह सोचता है कि यदि कोई व्यक्ति खुदा को एक एवं भागीदाररहित जानता है तथा आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को न मानता हो वह मोक्ष पाएगा। निश्चय ही समझो कि उसका हृदय **कोढ़ी** है तथा वह अंधा है और उसे एकेश्वरवाद का कुछ भी ज्ञान नहीं कि क्या वस्तु है। ऐसे एकेश्वरवाद के इक्रार में शैतान उस से उत्तम है क्योंकि यद्यपि शैतान पापी एवं अवज्ञाकारी है किन्तु वह इस बात पर तो विश्वास रखता है कि खुदा मौजूद है^①, परन्तु उस व्यक्ति को खुदा पर विश्वास भी नहीं।

सारांश यह है कि जो लोग ऐसी आस्था रखते हैं कि इसके बिना कि कोई आंहजरत^{स.अ.व.} पर ईमान लाए केवल एकेश्वरवाद के इक्रार से उसे मोक्ष प्राप्त हो जाएगा, ऐसे लोग गुप्त मुर्तद हैं तथा वास्तव में वे इस्लाम के शत्रु हैं और अपने लिए इस्लाम से विमुख होने का एक मार्ग निकालते हैं, उनका समर्थन करना किसी धार्मिक व्यक्ति का कार्य नहीं है। खेद कि हमारे विरोधी ज्ञानी एवं मौलवी कहलाने के बावजूद उन लोगों की ऐसी गतिविधियों से प्रसन्न होते हैं। वास्तव में ये बेचारे हमेशा इसी खोज में रहते हैं कि कोई ऐसा कारण पैदा हो जाए कि जिससे मेरा अपमान एवं अपयश हो, किन्तु अपने दुर्भाग्य से अन्ततः असफल ही रहते हैं। प्रथम इन लोगों ने मुझ पर कुफ्र का फ़त्वा तैयार किया तथा संभवतः दो सौ मौलवियों ने उस पर मुहरें लगाईं और हमें काफ़िर ठहराया गया। इन फ़त्वों में यहां

① **हाशिया** - यदि कोई कहे कि जिस दशा में शैतान को खुदा के अस्तित्व एवं एकेश्वरवाद पर विश्वास है तो फिर वह खुदा तआला की अवज्ञा क्यों करता है। इसका उत्तर यह है कि उसकी अवज्ञा मनुष्य की अवज्ञा की भांति नहीं है अपितु वह इसी स्वभाव पर मनुष्य के लिए पैदा किया गया है तथा यह एक रहस्य है जिसका विवरण मनुष्य को नहीं समझाया गया और मनुष्य की विशेषता प्रायः यही है कि वह खुदा तआला के संबंध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने से मार्गदर्शन पा लेता है जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है **إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ** (फ़ातिर-29) जो लोग शैतानी प्रकृति रखते हैं वे इस नियम से बाहर हैं। इसी से।

तक कठोरता की गई कि कुछ उलेमा ने यह भी लिखा है कि ये तो कुफ्र में यहूदियों और ईसाइयों से भी अधिक निकृष्ट हैं तथा सामान्यतया ये भी फ़त्वे दिए कि इन लोगों को मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफ़न नहीं करना चाहिए तथा इन लोगों के साथ सलाम और हाथ नहीं मिलाना चाहिए तथा इन काफ़िरों के पीछे नमाज़ पढ़ना उचित नहीं अपितु चाहिए कि ये लोग मस्जिदों में प्रवेश न करने पाएं क्योंकि काफ़िर है, इनके प्रवेश से मस्जिदें अपवित्र हो जाती हैं और यदि प्रवेश करें तो मस्जिद को धो डालना चाहिए, इन का धन चुराना उचित है, ये लोग क़त्ल करने योग्य हैं क्योंकि ख़ूनी महदी के आने के इन्कारी तथा जिहाद के भी इन्कारी हैं, किन्तु इन फ़त्वों के बावजूद हमारा क्या बिगाड़ा। जिन दिनों में यह फ़त्वा देश में प्रकाशित किया गया उन दिनों में दस आदमी भी मेरी बैअत में न थे, परन्तु आज ख़ुदा तआला की कृपा से तीन लाख से भी अधिक हैं तथा सत्य के अभिलाषी बड़ी तीव्रता से इस जमाअत में प्रवेश कर रहे हैं। क्या मोमिनों की तुलना में ख़ुदा काफ़िरों की ऐसी ही सहायता किया करता है ? फिर इस झूठ को तो देखो कि हम पर यह आरोप लगाते हैं कि मानो हमने बीस करोड़ मुसलमानों तथा कलिमा पढ़ने वालों को काफ़िर ठहराया हालांकि हमारी ओर से काफ़िर ठहराने में कोई पहल नहीं हुई। इनके उलेमा ने स्वयं ही हम पर कुफ्र के फ़त्वे लिखे तथा समस्त पंजाब और हिन्दुस्तान में शोर मचाया कि यह लोग काफ़िर हैं तथा नादान लोग इन फ़त्वों से हम से ऐसी घृणा करने लगे कि हम से सीधे मुंह से कोई नम्रतापूर्वक बात करना भी उनके निकट पाप हो गया। क्या कोई मौलवी या कोई अन्य विरोधी या कोई सज्जादःनशीन यह प्रमाण दे सकता है कि पहले हम लोगों ने इनको काफ़िर ठहराया था। यदि कोई ऐसा कागज़, विज्ञापन या पत्रिका हमारी ओर से लोगों के कुफ्र के फ़त्वे से पूर्व प्रकाशित हुई है, जिसमें हमने विरोधी मुसलमानों को काफ़िर ठहराया हो तो वह प्रस्तुत करें अन्यथा स्वयं विचार कर लें कि यह कितनी बड़ी बेईमानी, है कि काफ़िर तो स्वयं ठहराएं और फिर हम पर यह आरोप लगाएँ कि मानो हमने समस्त मुसलमानों को काफ़िर ठहराया है इतनी बेईमानी,

झूठ तथा घटना के विपरीत कितनी कष्टप्रद बात है। प्रत्येक बुद्धिमान विचार कर सकता है। फिर जबकि हमें अपने फ़त्वों के द्वारा काफ़िर ठहरा चुके तथा स्वयं ही इस बात को स्वीकार भी करने लगे कि जो व्यक्ति मुसलमान को काफ़िर कहे तो कुफ़्र उलट कर उसी पर पड़ता है। अतः इस परिस्थिति में क्या हमें अधिकार न था कि उन्हीं के इक्रार के अनुसार हम उनको काफ़िर कहते।

अतः इन लोगों ने कुछ दिनों तक इस झूठी प्रसन्नता से अपना हृदय प्रसन्न कर लिया कि ये लोग काफ़िर हैं और जब वह प्रसन्नता पुरानी हो गई और ख़ुदा ने हमारी जमाअत को सम्पूर्ण देश में फैला दिया तो फिर किसी अन्य योजना को बनाने में तत्पर हुए।

तब उन्हीं दिनों में मेरी भविष्यवाणी के अनुसार आर्य समाज के पंडित लेखराम का निश्चित अवधि के अन्दर किसी ने वध कर दिया, परन्तु खेद कि किसी मौलवी को यह विचार न आया कि भविष्यवाणी पूर्ण हुई और इस्लामी निशान प्रकट हुआ अपितु उनमें से कुछ ने बार-बार सरकार का ध्यानाकर्षित किया कि सरकार भविष्यवाणी करने वाले को क्यों नहीं पकड़ती, परन्तु इस कामना में भी असफल रहे। फिर कुछ दिनों के पश्चात् पादरी मार्टिन क्लार्क ने मुझ पर एक क़त्ल का मुक़द्दमा कर दिया। फिर क्या कहना था, इन लोगों को इतनी प्रसन्नता हुई कि फूले न समाते थे तथा कुछ लोग मस्जिदों में सज्दे करके मेरे लिए इस मुक़द्दमे में फांसी आदि का दण्ड चाहते थे। इस कामना में उन्होंने रो-रो कर इतने सज्दे किए कि उनकी नाकें भी घिस गईं परन्तु अन्ततः ख़ुदा तआला के वादे के अनुसार जो पहले प्रकाशित किया गया था मैं बड़े सम्मान के साथ बरी किया गया और अनुमति दी गई कि यदि चाहो तो इन ईसाइयों पर दावा करो। संक्षेप में यह कि इस इरादे में भी हमारे विरोधी मौलवी और उनके साथी निराश एवं असफल ही रहे।

फिर कुछ दिनों के पश्चात् करमदीन नामक एक मौलवी ने गुरदासपुर में मेरे नाम एक फौजदारी मुक़द्दमा दायर कर दिया तथा मेरे विरोधी मौलवियों ने उसके समर्थन में आत्माराम एक्सट्रा असिसटेंट कमिश्नर की अदालत में जाकर गवाहियां

दीं तथा एड़ी-चोटी का जोर लगाया और उन्हें बड़ी आशा हुई कि इस बार अवश्य सफल होंगे तथा उन्हें झूठी प्रसन्नता पहुंचाने के लिए ऐसा संयोग हुआ कि आत्माराम ने इस मुकद्दमे में अपनी मूर्खता के कारण पूर्ण रूप से विचार न किया और मुझे कैद का दण्ड देने के लिए तत्पर हो गया। उस समय खुदा ने मुझ पर प्रकट किया कि वह आत्माराम को उसकी सन्तान के शोक में शोकग्रस्त करेगा। अतः मैंने यह कशफ अपनी जमाअत को सुना दिया और फिर ऐसा हुआ कि लगभग बीस-पच्चीस दिनों की अवधि में उसके दो बेटे मृत्यु का शिकार हो गए और अन्ततः यह संयोग हुआ कि आत्माराम मुझे कारावास का दण्ड तो न दे सका, यद्यपि निर्णय लिखने में उसने कैद करने का आधार भी बनाया किन्तु अन्त में खुदा तआला ने उसे इस बात से रोक दिया, तथा उसने सात सौ रुपए जुर्माना किया। तत्पश्चात् डिवीजनल जज की अदालत से मुझे सम्मानपूर्वक बरी किया गया^① और करमदीन पर दण्ड कायम रहा तथा मेरा जुर्माना वापस हुआ परन्तु आत्माराम के दो बेटे वापस न आए।

अतः करमदीन के मुकद्दमे में जिस प्रसन्नता प्राप्ति की हमारे विरोधी मौलवियों की अभिलाषा थी वह पूर्ण न हो सकी और खुदा तआला की उस भविष्यवाणी के अनुसार जो मेरी पुस्तक 'मवाहिबुर्रहमान' में पहले से प्रकाशित हो चुकी थी मैं बरी किया गया तथा मेरा जुर्माना वापस किया गया तथा जुर्माना प्रस्तावित करने वाले अधिकारी के आदेश को निरस्त करने के साथ यह चेतावनी दी गई कि उसने यह

① डिवीजनल जज अमृतसर ने जो एक अंग्रेज था इस मुकद्दमे पूर्ण छान-बीन से काम लिया और जैसा कि न्याय का उद्देश्य है वह फैसला किया जो पूर्ण जांच-पड़ताल और न्याय की दृष्टि से चाहिए था तथा अपने फैसले में अपने शब्दों में लिखा कि जो शब्द अपीलैण्ड दण्डाधिकारी ने उत्तरदायी दावेदार करमदीन के पक्ष में प्रयोग किए थे जो मानहानि का कारण समझे गए अर्थात् महा झूठा और कमीना के शब्द यदि अपील करने वाला इन शब्दों से बढ़कर करमदीन के पक्ष में प्रयोग करता तो भी करमदीन उन शब्दों के योग्य था। इसी से।

आदेश अनुचित दिया, परन्तु करमदीन को जैसा कि मैं “मवाहिबुर्हमान” में प्रकाशित कर चुका था दण्ड मिल गया तथा अदालत की राय से उसके महा झूठे होने पर मुहर लग गई और हमारे समस्त विरोधी मौलवी अपने उद्देश्यों में विफल रहे। खेद कि मेरे विरोधियों को निरन्तर इतनी असफलताओं के बावजूद मेरे बारे में किसी समय आभास नहीं हुआ कि इस व्यक्ति के साथ गुप्त तौर पर एक हाथ है जो उनके प्रत्येक आक्रमण से उसकी रक्षा करता है। यदि दुर्भाग्य न होता तो उनके लिए यह चमत्कार था कि उनके प्रत्येक आक्रमण के समय खुदा ने मुझे उन की उद्दण्डता से बचाया और न केवल बचाया अपितु इस से पूर्व सूचना भी दे दी कि वह बचाएगा तथा प्रत्येक बार और प्रत्येक मुकद्दमे में खुदा तआला मुझे सूचना देता रहा कि मैं तुझे बचाऊंगा। अतः वह अपने वादे के अनुसार मुझे सुरक्षित रखता रहा।^① ये हैं खुदा की सत्ता के निशान कि एक ओर सम्पूर्ण विश्व हमें मारने के लिए एकत्र है तथा एक ओर वह सामर्थ्यवान खुदा है जो उनके प्रत्येक आक्रमण से मेरी रक्षा करता है।

फिर प्रसन्नता का एक और अवसर हमारे विरोधियों के हाथ लगा कि जब चिरागदीन जम्मू वाला जो मेरा मुरीद था मुर्तद हो गया। उसके मुर्तद होने के पश्चात् मैंने “दाफ़िउल बला व मै'यार अहलिल इस्तिफ़ा” पुस्तक में उसके बारे में खुदा तआला से यह इल्हाम पाकर प्रकाशित किया कि वह खुदाई प्रकोप में ग्रसित होकर मृत्यु के घाट उतरेगा तो कुछ मौलवियों ने केवल मेरे विरोध के कारण उससे मित्रता की और उसने एक पुस्तक लिखी, जिसका नाम ‘मनारतुल मसीह’ रखा और उसमें मुझे दज्जाल ठहराया तथा अपना यह इल्हाम प्रकाशित किया कि मैं रसूल हूँ और खुदा के भेजे हुए रसूलों में से एक रसूल हूँ और हज़रत ईसा ने मुझे एक डंडा दिया है ताकि मैं उस डंडे से उस दज्जाल का (अर्थात् मेरा) वध करूँ। अतः ‘मनारतुल मसीह’ पुस्तक में लगभग आधी के लगभग यही वर्णन है कि यह

① ये समस्त भविष्यवाणियां समय-समय पर प्रकाशित होती रही हैं। हमारे विरोधियों को खुदा के सामने यह उत्तर देना होगा कि वे क्यों इन समस्त निशानों को भूल गए। इसी से

व्यक्ति दज्जाल है तथा मेरे हाथ से तबाह होगा तथा वर्णन किया कि यही सूचना खुदा ने और ईसा ने भी दी है, किन्तु अन्ततः जो हुआ लोगों ने सुना होगा कि यह व्यक्ति 4 अप्रैल 1906 ई. को अपने दोनों बेटों सहित प्लेग से मृत्यु पाकर मेरी भविष्यवाणी को सत्यापित कर गया तथा बड़ी निराशा के साथ अपने प्राण त्यागे और मृत्यु से कुछ दिन पूर्व उसने मुबाहले का एक कागज़ लिखा जिसमें अपना और मेरा नाम लिखकर खुदा तआला से दुआ की कि हम दोनों में से जो झूठा है वह तबाह हो। खुदा की क़ुदरत कि वह कागज़ अभी लिपिक के हाथ में ही था और वह कापी लिख रहा था कि चिराग़दीन अपने दोनों बेटों के साथ उसी दिन सदैव के लिए चल बसा।^① **فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِيَ الْأَبْصَارِ** ये हैं इल्हामों का दावा करने वाले मेरे विरोधी जो मुझे दज्जाल ठहराते हैं। कोई व्यक्ति उनके अंजाम पर विचार नहीं करता। तात्पर्य यह कि मौलवी लोग चिराग़दीन मुर्तद का साथ देकर भी अपने गन्तव्य को न पहुँच सके।

तत्पश्चात् एक अन्य चिराग़दीन पैदा हुआ अर्थात् डाक्टर अब्दुल हकीम खान। यह व्यक्ति भी मुझे दज्जाल ठहराता है और पहले चिराग़दीन की भांति स्वयं को रसूलों में से गिनता है परन्तु ज्ञात नहीं कि पहले चिराग़दीन की भांति मुझे क़त्ल करने के लिए इस को भी हज़रत ईसा ने डंडा दिया है या नहीं।^② अभिमान एवं

① अनुवाद: अतः हे आँख रखने वालो! सबक लो। अलहश्र-3

② **हाशिया** - हज़रत ईसा ने मुझे क़त्ल करने के लिए चिराग़दीन को जो डंडा दिया कि यह उन्माद और आक्रोश उनके हृदय में क्यों भड़का। यदि इसलिए नाराज़ हो गए कि मैंने उनका मरना संसार में प्रकाशित किया है तो यह उनकी ग़लती है, यह मैंने प्रकाशित नहीं किया अपितु उसने प्रकाशित किया है जिसकी सृष्टि हमारे समान हज़रत ईसा भी हैं यदि सन्देह हो तो यह आयत देखें - **وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ ۖ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ** (आले इमरान-145) तथा यह आयत **فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ** (अलमाइदह-118) और आश्चर्य है कि जिसको वह मेरा वध करने के लिए डंडा देते हैं वह स्वयं ही मृत्यु का शिकार हो जाता है। यह बड़ा अच्छा डंडा है। सुना है कि दूसरे चिराग़दीन अर्थात् अब्दुल हकीम खान ने भी मेरी मृत्यु के

अहंकार में तो पहले चिराग़दीन से भी बहुत बढ़कर है तथा गालियां देने में भी उससे अधिक अभ्यस्त है और झूठ गढ़ने में उससे आगे है। इस उन्मादी प्रकृति वाले तुच्छ व्यक्ति के मर्तद होने से भी हमारे विरोधी मौलवियों को बड़ी प्रसन्नता हुई मानो एक ख़जाना मिल गया, परन्तु उनको चाहिए कि इतने प्रसन्न न हों तथा पहले चिराग़दीन को याद करें। वह ख़ुदा जिसने हमेशा उनको ऐसी प्रसन्नताओं से वंचित रखा है, वही ख़ुदा अब भी है तथा उसकी भविष्यवाणी ने जैसा कि पहले **चिराग़दीन के अंजाम के बारे में सूचना** दी थी, इसी प्रकार उस सर्वज्ञ तथा सब की ख़बर रखने वाले ख़ुदा ने इस दूसरे चिराग़दीन अर्थात् अब्दुल हकीम के अंजाम की सूचना दी है। फिर प्रसन्नता का क्या स्थान है तनिक धैर्य करें और अन्जाम देखें। आश्चर्य की बात है कि एक नादान मर्तद के धर्म से विमुख होने से इतनी प्रसन्नता क्यों होती है। ख़ुदा तआला की हम पर कृपा है कि यदि दुर्भाग्य से एक व्यक्ति मर्तद होता है तो उसके स्थान पर हजार व्यक्ति आते हैं।

फिर इसके अतिरिक्त क्या किसी व्यक्ति के धर्म से विमुख होने से यह परिणाम निकल सकता है कि वह सिलसिला जिसमें से यह मर्तद बाहर हुआ सत्य नहीं है। क्या हमारे विरोधी उलेमा को ज्ञान नहीं कि कई दुर्भाग्यशाली हज़रत मूसा के समय में उससे मर्तद हो गए थे, फिर कई लोग हज़रत ईसा से मर्तद हुए और फिर कई दुर्भाग्यशाली हमारे नबी^{स.अ.व.} के युग में आप से मर्तद हो गए। अतः मुसैलिमा कज़़ाब भी मर्तद होने वालों में से एक था। अतः अब्दुल हकीम के मर्तद (धर्म से विमुख) होने से प्रसन्न होना तथा उसे सच्चे सिलसिले के मिथ्या होने का प्रमाण ठहराना उन लोगों का कार्य है जो मूर्ख मात्र हैं। हां ये लोग कुछ दिनों के लिए एक झूठी प्रसन्नता का कारण अवश्य हो जाते हैं परन्तु वह प्रसन्नता बहुत शीघ्र ही समाप्त हो जाती है।

यह वही अब्दुल हकीम खान है जिसने अपनी पुस्तक में मेरा नाम लेकर यह

बारे में कोई भविष्यवाणी पहले चिराग़दीन की भांति की है, परन्तु मालूम नहीं कि उसमें किसी डंडे की भी चर्चा है अथवा नहीं। इसी से।

लिखा है कि एक व्यक्ति उनके मसीह मौऊद होने के दावे से इन्कारी था तब मुझे स्वप्न में दिखाया गया कि यह इन्कारी प्लेग से मर जाएगा। अतः वह प्लेग से मर गया। परन्तु अब स्वयं धृष्टतापूर्वक मुर्तद होकर गालियां देता तथा अपशब्द निकालता, झूठे आरोप लगाता है। क्या अब प्लेग का समय चला गया ?!

यह तो हम वर्णन कर चुके कि वह बात जिस का नाम एकेश्वरवाद है तथा जो मोक्ष का आधार है तथा जो शैतानी एकेश्वरवाद से एक अलग बात है वह इसके अतिरिक्त कि समय के नबी अर्थात् आंहज़रत^{स.अ.व.} पर ईमान लाया जाए तथा उनका आज्ञापालन किया जाए प्राप्त नहीं किया जा सकता और केवल शुष्क एकेश्वरवाद रसूल के अनुसरण के बिना कुछ भी नहीं वरन् उस मुर्दे के समान है जिसमें आत्मा नहीं। अब यह वर्णन करना शेष रहा कि क्या कुर्आन शरीफ़ ने हमारे वर्णन के अनुसार मानव-मोक्ष को रसूल के अनुसरण के साथ सम्बद्ध किया है या इसके विपरीत कुर्आन की शिक्षा है। अतः इस वास्तविकता को समझाने के लिए हम निम्नलिखित आयतें प्रस्तुत करते हैं -

(1) अल्लाह तआला का कथन है -

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ (भाग-18, सूरह नूर-55)

(अनुवाद) वह कि खुदा की आज्ञा का पालन करो तथा रसूल की आज्ञा का पालन करो तथा यह मान्य एवं व्यापक बात है कि खुदा के आदेशों की अवहेलना करना पाप तथा नर्क में प्रवेश करने का कारण है और इस स्थान पर खुदा जिस प्रकार अपने आज्ञा पालन का आदेश देता है इसी प्रकार रसूल का आज्ञापालन करने का आदेश देता है। अतः जो व्यक्ति उसके आदेश से विमुख होता है वह ऐसा अपराध करता है जिसका दण्ड नर्क है।

(2) अल्लाह तआला का कथन है -

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْدِمُوا بَيْنَ يَدَيِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ

إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ (भाग 26, सूरह हुजुरात-2) ○

(अनुवाद) हे ईमान वाले खुदा और रसूल के आदेश से बढ़कर कोई बात न

करो अर्थात् खुदा और रसूल के आदेशों का उचित तौर पर अनुसरण करो तथा अवज्ञा में खुदा से डरो। खुदा सुनता भी है और जानता भी है। अतः स्पष्ट है कि जो व्यक्ति केवल अपने शुष्क एकेश्वरवाद पर भरोसा करके (जो वास्तव में एकेश्वरवाद भी नहीं) रसूल से स्वयं को निस्पृह समझता है तथा रसूल से संबंध विच्छेद करता है और स्वयं को उससे बिल्कुल अलग कर लेता है और धृष्टतापूर्वक आगे कदम बढ़ाता है, वह खुदा का अवज्ञाकारी है तथा मोक्ष से वंचित।

(3) खुदा का कथन है -

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ

اللَّهُ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ ○ (भाग-1, सूरह अलबक्ररह-99)

(अनुवाद) अर्थात् जो व्यक्ति खुदा, उसके फ़रिश्तों, उसके पैगम्बरों तथा जिब्राईल और मीकाईल का शत्रु हो तो खुदा ऐसे काफ़िरों का स्वयं शत्रु है। अब स्पष्ट है कि जो व्यक्ति शुष्क एकेश्वरवाद को तो मानता है किन्तु आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठलाता है, वह वास्तव में आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शत्रु है अतः इस आयत के अनुसार खुदा उसका शत्रु है और वह खुदा के निकट काफ़िर है तो उसका मोक्ष क्योंकर हो सकता है।

(4) अल्लाह तआला का कथन है -

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ عَلَى رُسُلِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي أَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ طُومَنْ يَكْفُرَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ○ (सूरह निसा-137)

(अनुवाद) हे लोगो जो ईमान लाए हो! खुदा पर ईमान लाओ और उसके रसूल पर और उसके उस ग्रन्थ पर जो उसके रसूल पर उतरा है अर्थात् पवित्र कुर्आन पर और उस ग्रन्थ पर ईमान लाओ जो पहले उतारा गया अर्थात् तौरात इत्यादि पर। और जो व्यक्ति खुदा पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसके रसूलों पर तथा आखिरत के दिन पर ईमान नहीं लाएगा वह सच्चाई से बहुत दूर जा पड़ा अर्थात् मोक्ष से वंचित रहा।

(5) खुदा तआला का कथन है -

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ
الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ ۚ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُبِينًا ۝
(भाग-22, सूरह अहज़ाब-37)

(अनुवाद) किसी मोमिन पुरुष या मोमिन स्त्री के लिए वैध नहीं कि जब खुदा और उसका रसूल कोई आदेश दे तो उन्हें उस आदेश को अस्वीकार करने का अधिकार हो और जो व्यक्ति खुदा और उसके रसूल की अवज्ञा करे वह सत्य से बहुत दूर जा पड़ा है अर्थात् मोक्ष से वंचित रहा क्योंकि मोक्ष खुदा वालों के लिए है।

(6) खुदा का कथन -

وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا
فِيهَا ۖ وَلَهُ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝ (भाग-4, सूरह अन्निसा-15)

(अनुवाद) जो व्यक्ति खुदा और रसूल की अवज्ञा करे तथा उसकी सीमाओं का अतिक्रमण करे खुदा उसे नर्क में प्रविष्ट करेगा तथा वह नर्क में हमेशा रहेगा और उस पर अपमानित करने वाला अज़ाब आएगा।

अब देखिए कि रसूल से संबंध-विच्छेद करने में इससे बढ़कर और क्या होगा कि अल्लाह का कथन है कि जो व्यक्ति रसूल की अवज्ञा करे उसके लिए शाश्वत नर्क का वादा है परन्तु मियां अब्दुल हकीम कहते हैं कि जो व्यक्ति नबी करीम^{स.अ.व.} को झुठलाने वाला और अवज्ञाकारी हो। यदि वह एकेश्वरवाद पर दृढ़ हो तो वह निःसन्देह स्वर्ग में जाएगा। मुझे ज्ञात नहीं कि उनके अन्तःकरण में किस प्रकार का एकेश्वरवाद है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का विरोध करने एवं अवज्ञा के बावजूद जो एकेश्वरवाद का उदगम है स्वर्ग तक पहुंच सकता है। झूठों पर खुदा की ला'नत।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ

(भाग-5, सूरह अन्निसा-65)

(अनुवाद) - अर्थात् प्रत्येक नबी हम ने इसलिए भेजा है ताकि खुदा के आदेश

से उसका पालन किया जाए। अतः स्पष्ट है जबकि इस आयत के आशय के अनुसार नबी का आज्ञापालन करना अनिवार्य है। अतः जो व्यक्ति नबी की आज्ञा का पालन न करे वह क्योंकि मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

(8) खुदा का कथन है -

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ
لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ
وَالرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ۝

(भाग-3 आले इमरान 32,33)

(अनुवाद) - उनको कह कि यदि तुम खुदा से प्रेम करते हो तो आओ और मेरा अनुसरण करो ताकि खुदा भी तुम से प्रेम करे और तुम्हारे पाप क्षमा कर दे और खुदा बहुत क्षमा करने वाला और बारम्बार दया करने वाला है। उनको कह कि खुदा और रसूल का अनुसरण करें। अतः यदि वे आज्ञापालन करने से मुख फेर लें तो खुदा काफ़िरी को मित्र नहीं बनाता। इन आयतों से स्पष्ट तौर पर प्रकट होता है कि पापों का क्षमा करना तथा खुदा तआला का प्रेम आहंज़रत^{स.अ.व.} पर ईमान लाने से सम्बद्ध है और जो लोग ईमान नहीं लाते वे काफ़िर हैं।

(9) खुदा का कथन है -

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ
وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۚ وَيُرِيدُونَ أَنْ يَتَّخِذُوا بَيْنَ
ذَلِكَ سَبِيلًا ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا ۖ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا
مُهِينًا ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ
أُولَٰئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ أَجُورَهُمْ ۖ ط (भाग-6, सूरह अन्निसा 151-153)

(अनुवाद) - वे लोग जो खुदा और रसूल के इन्कारी हैं तथा इरादा रखते हैं कि खुदा और रसूलों में फूट डाल दें और कहते हैं कि कुछ पर हम ईमान लाएंगे और कुछ पर नहीं अर्थात् केवल खुदा का मानना या केवल रसूलों पर ईमान लाना

पर्याप्त है। यह आवश्यक नहीं कि खुदा के साथ रसूल पर भी ईमान लाएं अथवा समस्त नबियों पर ईमान लाएं और चाहते हैं कि खुदा की हिदायत को छोड़कर मध्य-मध्य धर्म अपनाएं वही पक्के काफ़िर हैं और हमने काफ़िरों के लिए अपमानित करने वाला अज़ाब उपलब्ध कर रखा है तथा वे लोग जो खुदा और रसूल पर ईमान लाते हैं और खुदा और उसके रसूलों में फूट नहीं डालते अर्थात् यह मतभेद नहीं करते कि केवल खुदा पर ईमान लाएं परन्तु उसके रसूलों पर ईमान न लाएं और न यह मतभेद प्रिय समझते हैं कि कुछ रसूलों पर तो ईमान लाएं और कुछ से अप्रसन्न रहें। इन लोगों को खुदा उनका प्रतिफल प्रदान करेगा।

अब कहाँ हैं मियां अब्दुल हकीम खान मुरतद जो मेरे इस लेख से मुझसे अप्रसन्न हो गया। चाहिए कि अब आंख खोलकर देखे कि किस प्रकार खुदा ने अपने अस्तित्व पर ईमान लाना रसूलों पर ईमान लाने से सम्बद्ध किया है। इसमें रहस्य यह है कि मानव में एकेश्वरवाद स्वीकार करने की योग्यता उस अग्नि की भांति रखी गई है जो पत्थर में निहित होती है तथा रसूल का अस्तित्व चुम्बकीय पत्थर के समान है जो उस पत्थर पर ध्यान की चोट लगाकर उस अग्नि को बाहर निकालता है। अतः कदापि संभव नहीं कि रसूल के चुम्बकीय पत्थर के अभाव में एकेश्वरवाद की अग्नि किसी हृदय में पैदा हो सके। एकेश्वरवाद को केवल रसूल पृथ्वी पर लाता है तथा उसी के माध्यम से यह प्राप्त होता है। खुदा गुप्त है तथा वह चेहरा रसूल के द्वारा दिखाता है।^①

① **हाशिया** - एक बार ऐसा संयोग हुआ कि दरूद शरीफ़ पढ़ने में अर्थात् आहज़रत^{स.अ.व.} पर दरूद भेजने में एक समय तक मुझे बड़ी तल्लीनता रही क्योंकि मेरा विश्वास था कि खुदा तआला के मार्ग नितान्त सूक्ष्म मार्ग हैं वे नबी करीम^{स.अ.व.} के माध्यम के बिना प्राप्त नहीं हो सकते। जैसा कि खुदा भी कहता है **وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ** (अलमाइदह-36) तब एक समय के पश्चात् कश्फ़ी अवस्था में मैंने देखा कि दो सक्क्रे अर्थात् दो भिंती आए। एक अन्दर के मार्ग से तथा एक बाह्य मार्ग से मेरे घर में प्रविष्ट हुए तथा उनके कंधों पर अध्यात्म प्रकाश की मशकें हैं और कहते हैं कि यह वही है जो तूने मुहम्मद^{स.} पर दरूद भेजा। इसी से।

(10) खुदा का कथन है -

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ مِنْ رَبِّكُمْ فَأَمِنُوا خَيْرًا لَكُمْ ط
وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ط وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ○
(भाग-6, सूरह अन्निसा-171)

(अनुवाद) - हे लोगो ! तुम्हारे पास रसूल सत्य के साथ आया है। अतः तुम उस रसूल पर ईमान लाओ। तुम्हारे लिए उचित यही है और यदि तुम कुफ्र ग्रहण करो तो खुदा को तुम्हारी क्या परवाह है। पृथ्वी और आकाश सब उसी का है और सब ही उसका आज्ञापालन कर रहे हैं तथा खुदा सर्वज्ञ एवं सब की खबर रखने वाला है।

(11) खुदा का कथन है -

كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ○
قَالُوا بَلَى قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ ؕ
(भाग-29, सूरह अलमुल्क 9-10)

(अनुवाद) - और जब नर्क में काफ़िरों का कोई समूह डाला जाएगा तो जो फ़रिश्ते नर्क पर नियुक्त हैं वे नारकियों से कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था ? वे कहेंगे कि हां आया तो था परन्तु हम ने उसे झुठलाया तथा हमने कहा कि खुदा ने कुछ नहीं उतारा। अब देखिए इन आयतों से स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि नारकी नर्क में इसलिए जाएंगे कि वे समय के नबियों को स्वीकार नहीं करेंगे।

(12) खुदा का कथन है -

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا
(भाग-26, सूरह अलहुजरात-16)

(अनुवाद) - निस्सन्देह मोमिन केवल वे लोग हैं जो खुदा और रसूल पर ईमान लाए। तत्पश्चात् ईमान पर दृढ़ रहे तथा सन्देह एवं शंकाओं में नहीं पड़े। देखिए इन आयतों में खुदा तआला ने अवलंबन कर दिया है कि खुदा के निकट वही लोग हैं

कि जो केवल खुदा पर ईमान नहीं लाते अपितु खुदा और रसूल दोनों पर ईमान लाते हैं। फिर रसूल पर ईमान लाए बिना मोक्ष क्योंकर प्राप्त हो सकता है तथा रसूल पर ईमान लाने के बिना केवल एकेश्वरवाद किस काम आ सकता है।

(13) खुदा का कथन है -

وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ

(भाग-10, सूरह तौब - 54)

(अनुवाद) - अर्थात् इस बात का कारण कि काफ़िरो के दान स्वीकार नहीं किए जाते केवल यह है कि वे खुदा और उसके रसूल के इन्कारी हैं। अतः देखिए इन आयतों से स्पष्ट है कि जो लोग रसूल पर ईमान नहीं लाते उनके कर्म नष्ट हो जाते हैं, खुदा उनको स्वीकार नहीं करता। फिर जब कर्म नष्ट हुए तो मोक्ष क्योंकर होगा।^①

(14) खुदा का कथन है -

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآمَنُوا بِمَا نُزِّلَ عَلَى مُحَمَّدٍ
وَهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝

(भाग-26, सूरह मुहम्मद-3)

(अनुवाद) - जो लोग ईमान लाए तथा शुभ कर्म किए तथा वह कलाम (पुस्तक) जो हज़रत मुहम्मद^{स.अ.व.} पर उतरा उस पर ईमान लाए तथा वही सच है। खुदा ऐसे लोगों के पाप क्षमा कर देगा और उनके हृदयों का सुधार करेगा।

अब देखिए कि आहज़रत^{स.अ.व.} पर ईमान लाने के कारण खुदा तआला अपनी कितनी प्रसन्नता प्रकट करता है कि उनके पाप क्षमा करता है तथा उनकी आत्मा

① ये समस्त आयतें उन लोगों के बारे में हैं जिन्होंने रसूल की सूचना पाई तथा रसूल का निमंत्रण उन्हें पहुंच गया और जो लोग रसूल के अस्तित्व से बिल्कुल अनभिज्ञ रहे और न उन्हें निमंत्रण पहुंचा उनके बारे में हम कुछ नहीं कह सकते। उनकी परिस्थितियों का ज्ञान खुदा को है, उनसे वह ऐसा व्यवहार करेगा जो उसकी दया और न्याय का की मांग है। इसी से।

की शुद्धि का स्वयं अभिभावक होता है। फिर कैसा दुर्भाग्यशाली वह व्यक्ति है जो कहता है कि मुझे आहंजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने की आवश्यकता नहीं तथा अभिमान एवं अहंकार से स्वयं को कुछ समझता है। शैख सा'दी^{रह} ने सच कहा है :-

(1) محال است سعدی کہ راہِ صفا تو اس رفت جز در پیِ مصطفیٰ

(2) برد مہر آل شاہ سوئے بہشت حرام است بر غیر بوئے بہشت

(अनुवाद) हे सय्यदी यह संभव नहीं कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुसरण किए बिना सच्चाई तथा वफ़ा का मार्ग प्राप्त हो जाए।

इस दोनों लोकों के बादशाह की मुहब्बत स्वर्ग की ओर ले जाती है। किसी दूसरे पर स्वर्ग की सुगंध भी हराम (अवैध) है।

(15) खुदा का कथन है -

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّهُ مَنْ يُحَادِدِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَأَنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ط

ذَلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ ○ (भाग-10, सूरह अत्तौबह-63)

(अनुवाद) - क्या से लोग नहीं जानते कि जो व्यक्ति खुदा और रसूल का विरोध करे खुदा उसे नर्क में डालेगा और वह उसमें हमेशा रहेगा यह एक बहुत बड़ा अपमान है।

अतः मियां अब्दुल हकीम खान बताएं कि उनकी क्या राय है ? क्या खुदा के इस आदेश को स्वीकार करेंगे या वीरता से इन आयतों के दण्ड को अपने सर पर ले लेंगे ?

(16) खुदा का कथन है -

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْتُكُمْ مِنْ كَثِيرٍ وَحِكْمَةٍ تُمْرَّ بَيْنَ يَدَيْكُمْ رَسُولٌ

مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنْصُرُنَّهُ ط قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلَىٰ

ذِكْمِ أَصْرِي ط قَالُوا أَأَقْرَرْنَا ط قَالَ فَاشْهَدُوا ○ وَأَنَا مَعَكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ ○

(भाग-3, सूरह आले इमरान-82)

(अनुवाद) - और स्मरण करो जब खुदा ने समस्त रसूलों से वचन लिया कि

जब मैं तुम्हें किताब और हिकमत (युक्ति) दूंगा और फिर तुम्हारे पास अन्तिम युग में मेरा रसूल आएगा जो तुम्हारी किताबों का सत्यापन करेगा, तुम्हें उस पर ईमान लाना होगा और उसकी सहायता करनी होगी तथा कहा कि क्या तुमने इकरार कर लिया और इस वचन (प्रण) पर दृढ़ हो गए। उन्होंने कहा कि हमने इकरार कर लिया। तब खुदा ने कहा कि अब अपने इकरार (स्वीकारोक्ति) के साक्षी रहो तथा मैं भी तुम्हारे साथ इस बात का साक्षी हूँ।

अतः स्पष्ट है कि अंबिया तो अपने-अपने समय पर मृत्यु पा गए थे यह आदेश प्रत्येक नबी की उम्मत के लिए है कि वह रसूल प्रकट हो तो उस पर ईमान लाओ अन्यथा पकड़ होगी। अतः बताएं मियां अब्दुल हकीम खान, नीम मुल्ला खतर-ए-ईमान (अर्थात् अधूरा ज्ञान ईमान के लिए खतरा होता है, अनुवादक) ! यदि केवल खुशक एकेश्वरवाद से मोक्ष हो सकता है तो फिर खुदा तआला ऐसे लोगों की क्यों पकड़ करेगा जो यद्यपि आहज़रत^{स.अ.व.} पर ईमान नहीं लाते परन्तु खुदा के एकेश्वरवाद को मानते हैं।

इसके अतिरिक्त तौरात इस्तिस्ना अध्याय-18 में एक यह वचन मौजूद है कि जो व्यक्ति उस अन्तिम युग के नबी को नहीं मानेगा, मैं उससे पूछूंगा। अतः यदि केवल एकेश्वरवाद ही पर्याप्त है तो यह मांग क्यों होगी ? क्या खुदा अपनी बात को भूल जाएगा ? मैंने कम संख्या में कुर्आन शरीफ़ में से ये आयतें लिखी हैं अन्यथा कुर्आन शरीफ़ इस प्रकार की आयतों से भरा हुआ है अतः कुर्आन शरीफ़ इन्हीं आयतों से आरंभ होता है जैसा कि वह कहता है - إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝ (सूरह फ़ातिहा -6,7) अर्थात् हे हमारे रब ! हमें^① صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

① हाशिया - यह इस बात की ओर संकेत है कि जब मनुष्य सच्चे धर्म पर हो तो शुभ कर्म करने पर खुदा की ओर से एक इनाम पाता है। इसी प्रकार खुदा की सुन्नत है कि सच्चे धर्म वाला केवल उस सीमा तक नहीं ठहराया जाता जिस सीमा तक वह अपने प्रयास से चलता है और वह अपने परिश्रम से क्रदम रखता है अपितु जब उस का प्रयास

रसूलों और नबियों के मार्ग पर चला जिन पर तेरा इनाम और सम्मान हुआ है।

अब इस आयत से जो पांच समय की नमाजों में पढ़ी जाती है। स्पष्ट है कि खुदा का अध्यात्मिक इनाम जो अध्यात्म ज्ञान तथा खुदा का प्रेम है केवल रसूलों और नबियों के माध्यम से ही मिलता है न किसी अन्य माध्यम से। हमें ज्ञात नहीं कि मियां अब्दुल हकीम खान नमाज भी पढ़ते हैं या नहीं, यदि पढ़ते होते तो संभव न था कि इन आयतों के अर्थों से अपरिचित रहते, किन्तु जब उनके निकट केवल एकेश्वरवाद ही पर्याप्त है तो फिर नमाज की क्या आवश्यकता है। नमाज तो रसूल का बताया हुआ इबादत का एक ढंग है जिसका रसूल के अनुसरण से कुछ मतलब नहीं। उसे नमाज से क्या मतलब है। उसके निकट तो एकेश्वरवादी ब्रह्मसमाजी भी मुक्ति प्राप्त हैं क्या वे नमाजें पढ़ते हैं। जबकि उसके निकट एक व्यक्ति इस्लाम से मुर्तद होकर भी अपने नीरस एकेश्वरवाद के कारण मुक्ति पा सकता है^① तथा

शेष हाशिया :- सीमा तक पहुंच जाता है तथा मानवीय शक्तियों का कार्य समाप्त हो जाता है तब खुदा की कृपा उसके अस्तित्व में अपना काम करती है तथा खुदा का मार्ग-दर्शन उसे उस श्रेणी तक ज्ञान, कर्म तथा अध्यात्म ज्ञान में उन्नति प्रदान करता है, जिस श्रेणी तक वह अपने प्रयास द्वारा नहीं पहुंच सकता था जैसा कि एक अन्य स्थान पर भी अल्लाह तआला का कथन है **وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا** (अल अन्कबूत-70) अर्थात् जो लोग हमारे मार्ग में कठोर परिश्रम करते हैं तथा जो कुछ उन से और उनकी शक्तियों से हो सकता है, करते हैं तब खुदा तआला की कृपा उन का हाथ पकड़ती है तथा जो कार्य उन से नहीं हो सकता था वह स्वयं कर दिखाती है। इसी से।

① अब्दुल हकीम खान के निकट जहां तक उसकी इबारत से समझा जा सकता है मुर्तद होने के लिए यह भी एक बहाना है कि जिस व्यक्ति को अपनी राय में इस्लाम की सच्चाई के पर्याप्त तर्क नहीं मिले वह इस्लाम से मुर्तद होकर भी मुक्ति पा सकता है क्योंकि इस्लाम की सच्चाई पर उसकी सन्तुष्टि नहीं हुई किन्तु उसे वर्णन करना चाहिए था कि उसके निकट किस सीमा तक अकाट्य एवं निर्णायक तर्क प्रस्तुत करना चाहिए। इसी से।

ऐसा व्यक्ति भी मुक्ति पा सकता है जो यहूदी, ईसाई या आर्यों में से एकेश्वरवादी है यद्यपि इस्लाम को झुठलाने वाला तथा आहंजरत^{स.अ.व.} का शत्रु है तो फिर उसकी यही राय होगी कि नमाज़ और रोज़ा व्यर्थ है परन्तु एक मोमिन के लिए तो केवल यही आयत पर्याप्त है, जिस से ज्ञात होता है कि आध्यात्मिक दौलत के स्वामी केवल नबी और रसूल हैं तथा प्रत्येक को उनके अनुसरण से भाग मिलता है।

फिर सूरह बक्रह के प्रारंभ में ये आयतें हैं -

ذَٰلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ
بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۝ وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ
بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ ۚ وَبِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ۝
أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

(अलबक्रह - 3 से 6)

अनुवाद - यह किताब जो सन्देह एवं शंकाओं से रहित है संयमियों के लिए मार्ग-दर्शन है तथा संयमी (मुत्तकी) वे लोग हैं जो ख़ुदा पर (जिस का अस्तित्व गुप्त से गुप्ततर है) ईमान लाते हैं और नमाज़ को क़ायम करते हैं तथा अपने मालों में से ख़ुदा के मार्ग में कुछ देते और उस किताब पर ईमान लाते हैं जो तुझ पर उतरी तथा उन किताबों पर ईमान लाते हैं जो तुझ से पूर्व उतरीं। वही लोग ख़ुदा की ओर से सन्मार्ग पर हैं और वही हैं जो मुक्ति पाएंगे।

अब उठो और आंख खोलो हे मियां अब्दुल हकीम मुर्तद ! ख़ुदा तआला ने इन आयतों में निर्णय कर दिया है तथा मुक्ति पाना केवल इस बात पर निर्भर कर दिया है कि लोग ख़ुदा तआला की किताबों पर ईमान लाएं और उसकी इबादत करें। ख़ुदा तआला के कलाम में विरोधाभास और मतभेद नहीं हो सकता। अतः जबकि अल्लाह तआला ने आहंजरत^{स.अ.व.} के अनुसरण से मुक्ति को सम्बद्ध कर दिया है तो फिर बेईमानी है कि इन ठोस तर्कपूर्ण आयतों की अवहेलना करके अस्पष्ट आयतों की ओर दौड़ें। अस्पष्ट आयतों की ओर वही लोग दौड़ते हैं जिन के हृदय फूट डालने के रोग से रोगग्रस्त होते हैं।

इन आयतों में जो अध्यात्म ज्ञान का रहस्य छुपा है वह यह है कि उपरोक्त आयतों में खुदा तआला ने यह फ़रमाया है कि

الَّذِي هَدَىٰ لِلْمُتَّقِينَ ۚ ذَٰلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ ۚ

(अलबक्रह - 2,3)

अर्थात् यह वह किताब है जो खुदा के ज्ञान से प्रकटन में आई है और चूंकि इस का ज्ञान भूल-चूक से पवित्र है, इसलिए यह किताब प्रत्येक सन्देह एवं शंका से रिक्त है और चूंकि खुदा तआला का ज्ञान मनुष्यों की पूर्णता के लिए अपने अन्दर एक पूर्णतम शक्ति रखता है, इसलिए यह किताब संयमियों के लिए एक पूर्णतम हिदायत है^① तथा उनको उस स्थान तक पहुंचाती है जो मानव प्रकृति की

① **हाशिया** - जब तक किसी पुस्तक के चार कारण पूर्ण न हों वह किताब पूर्ण नहीं कहला सकती। इसलिए खुदा तआला ने इन आयतों में कुर्आन शरीफ़ के चारों कारणों का वर्णन कर दिया है और वे चार (1) निमित्त कारण (2) भौतिक कारण (3) आकारिक कारण (4) प्रयोजन कारण। और चारों पूर्णतम श्रेणी पर हैं। अतः **الَّذِي** निमित्त कारण की ओर संकेत करता है जिसके अर्थ हैं - **أَنَا اللَّهُ أَعْلَمُ** अर्थात् कि मैं जो अंतर्दामी खुदा हूं, मैंने इस किताब को उतारा है। अतः चूंकि खुदा इस किताब का निमित्त कारण है इसलिए इस किताब का कर्त्ता प्रत्येक कर्त्ता से शक्तिशाली और पूर्ण है तथा भौतिक कारण की विशेषता की ओर संकेत करता है। यह वाक्य कि **ذَٰلِكَ الْكِتَابُ** अर्थात् यह वह किताब है जो खुदा के ज्ञान से अस्तित्व में आई है। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि खुदा का ज्ञान समस्त ज्ञानों से पूर्णतम है। आकारिक कारण की विशेषता की ओर संकेत करता है यह वाक्य कि **لَا رَيْبَ فِيهِ** अर्थात् यह किताब प्रत्येक ग़लती, सन्देह तथा शंका से पवित्र है तथा इसमें क्या सन्देह है कि जो किताब खुदा तआला के ज्ञान से निकली है वह अपने उचित तथा प्रत्येक दोष से मुक्त होने में अद्वितीय एवं अनुपम है तथा सन्देह रहित होने में पूर्णतम है। और प्रयोजन कारण की ओर संकेत करता है यह वाक्य कि **هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ** अर्थात् यह किताब संयमियों के लिए पूर्ण हिदायत है

उन्नति के लिए अन्तिम स्थान है और खुदा इन आयतों में फ़रमाता है कि संयमी वे लोग हैं जो अगम अगोचर खुदा पर ईमान लाते हैं और नमाज़ को क़ायम करते हैं तथा अपने मालों में से कुछ खुदा के मार्ग में देते हैं और कुर्आन शरीफ़ तथा पहली पुस्तकों पर ईमान लाते हैं। वही हिदायत के सर पर हैं तथा वही मुक्ति पाएंगे। इन आयतों से ज्ञात हुआ कि नबी करीम (स.अ.व.) पर ईमान लाए बिना तथा उसके नमाज़ इत्यादि के आदेशों का पालन किए बिना मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। तथा झूठे हैं वे लोग जो नबी करीम का दामन छोड़ कर मात्र खुशक एकेश्वरवाद से मुक्ति ढूंढते हैं परन्तु यह आस्था समाधानयोग्य रही कि जबकि वे लोग ऐसे सत्यनिष्ठ हैं कि गुप्त खुदा पर ईमान लाते तथा नमाज़ भी अदा करते और रोज़ा भी रखते हैं तथा अपने मालों में से खुदा के मार्ग में कुछ देते हैं और कुर्आन शरीफ़ तथा पूर्व पुस्तकों पर ईमान भी रखते हैं तो फिर यह फ़रमाना कि هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ अर्थात् उनको यह किताब हिदायत देगी इसके क्या अर्थ हैं, वह तो इन समस्त बातों का पालन करके पूर्व ही से हिदायत प्राप्त कर चुके हैं तथा प्राप्त का प्राप्त कराना यह तो एक व्यर्थ बात मालूम होती है।

इस का उत्तर यह है कि वे लोग ईमान तथा शुभ कर्मों के बावजूद पूर्ण दृढ़ता एवं पूर्ण उन्नति के मुहताज हैं जिस का मार्ग-दर्शन केवल खुदा ही करता है मानव प्रयास का इसमें हस्तक्षेप नहीं। दृढ़ता से अभिप्राय यह है कि हृदय में ऐसा ईमान रच जाए कि किसी परीक्षा के समय ठोकर न खाएं तथा शुभ कर्म ऐसे ढंग तथा प्रकार से किए जाएं कि उनमें आनन्द पैदा हो तथा परिश्रम एवं कटुता का आभास न हो तथा उनके अभाव में जीवित ही न रह सकें मानो वे कर्म आत्मा का भोजन हो जाएं अर्थात् उसकी रोटी बन जाएं, उसका मधुर जल बन जाए कि उसके बिना जीवित न रह सके। अतः दृढ़ता के बारे में ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो जाएं जिन्हें मनुष्य अपने प्रयास से पैदा नहीं कर सकता अपितु जैसा कि आत्मा का खुदा की

शेष हाशिया

तथा जहां तक मानव-प्रकृति के लिए अधिकाधिक हिदायत (मार्गदर्शन) हो सके वह इस किताब के माध्यम से होती है। इसी से।

ओर से वरदान होता है वह विलक्षण दृढ़ता भी खुदा की ओर से पैदा हो जाए।

और उन्नति से अभिप्राय यह है कि वह इबादत और ईमान जो मानव-प्रयासों की चरम सीमा है, इसके अतिरिक्त वे परिस्थितियां उत्पन्न हो जाएं जो मात्र खुदा तआला के हाथ से उत्पन्न हो सकती हैं। यह बात स्पष्ट है कि खुदा तआला पर ईमान लाने के बारे में मानव प्रयास एवं बुद्धि केवल इस सीमा तक मार्ग-दर्शन करती है कि उस गुप्त खुदा पर जिस का चेहरा नहीं देखा गया ईमान लाया जाए। इसी कारण शरीअत जो मनुष्य को उसकी सामर्थ्य से अधिक कष्ट देना नहीं चाहती, इस बात के लिए विवश नहीं करती कि मनुष्य अपने सामर्थ्य से परोक्ष पर ईमान लाने से बढ़कर ईमान प्राप्त करे। हां सत्यनिष्ठों को इसी आयत **هُدًى** **لِّلْمُتَّقِينَ** में वादा दिया गया है कि जब वे परोक्ष पर ईमान लाकर दृढ़ हो जाएं तथा वे जो कुछ अपने प्रयास से कर सकते हैं कर लें, तब खुदा उन्हें ईमान की अवस्था से अध्यात्म ज्ञान (इरफ़ान) की अवस्था तक पहुंचा देगा तथा उनके ईमान में एक और रंग पैदा कर देगा। कुर्आन शरीफ़ की सच्चाई की यह एक निशानी है कि वे जो उसकी ओर आते हैं उनको ईमान तथा कर्म की उस श्रेणी पर रखना नहीं चाहता जो वे अपने प्रयास से अपनाते हैं, क्योंकि यदि ऐसा हो तो कैसे ज्ञात हो कि खुदा मौजूद है अपितु वह मानव-प्रयासों पर अपनी ओर से एक फल देता है जिसमें खुदाई चमक और खुदाई हस्तक्षेप होता है। उदाहरणतया जैसा कि मैंने वर्णन किया मनुष्य खुदा पर ईमान लाने के बारे में इससे अधिक क्या कर सकता है कि वह उस अगम अगोचर खुदा पर ईमान लाए जिसके अस्तित्व पर ब्रह्माण्ड का कण-कण साक्षी है, परन्तु मनुष्य का यह सामर्थ्य ही नहीं है कि मात्र अपने ही कदमों, अपने ही प्रयासों तथा अपने ही बल से खुदा के खुदाई प्रकाशों पर सूचित हो तथा ईमानी अवस्था से इरफ़ानी अवस्था तक पहुंच जाए और अपने अन्दर अवलोकन एवं देखने की अवस्था उत्पन्न कर ले।

इसी प्रकार मानव प्रयास एवं प्रयत्न नमाज़ अदा करने में इस से अधिक क्या कर सकता है कि यथासंभव पवित्र और शुद्ध होकर तथा ध्यान भटकाने वाली

चीजों से बचते हुए नमाज़ अदा करें तथा प्रयास करें कि नमाज़ एक गिरी हुई अवस्था में न रहे और उसकी जितनी मूल बातें खुदा की स्तुति, प्रशंसा, पापों से पश्चाताप, दुआ तथा दरूद हैं वे हार्दिक प्रसन्नता के साथ पूर्ण की जाएं, परन्तु यह तो मनुष्य के अधिकार में नहीं है कि एक विलक्षण व्यक्तिगत प्रेम, व्यक्तिगत विनय एवं तल्लीनता से भरपूर अभिरुचि तथा प्रत्येक मलिनता से रिक्त एकाग्रता नमाज़ में पैदा हो जाए मानो वह खुदा को देख ले। स्पष्ट है कि नमाज़ में जब तक यह अवस्था पैदा न हो वह हानि से खाली नहीं। इसी कारण खुदा तआला ने फ़रमाया - कि संयमी वे हैं जो नमाज़ को खड़ा करते हैं और खड़ा उसी वस्तु को किया जाता है जो गिरने के लिए तत्पर हो। अतः आयत **يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ** के अर्थ ये हैं कि उनसे जहां तक हो सकता है नमाज़ को क़ायम करने का प्रयास करते हैं, कष्ट और तप से काम लेते हैं, किन्तु मानव-प्रयास खुदा की कृपा के अभाव में व्यर्थ हैं। इसलिए उस कृपालु-दयालु खुदा का कथन है - **هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ** - अर्थात् यथासंभव वे संयम के मार्ग से नमाज़ को खड़ा करने का प्रयास करें फिर यदि वे मेरे कलाम पर ईमान लाते हैं तो मैं उनको केवल उन्हीं के प्रयास तथा प्रयत्न पर नहीं छोड़ूंगा अपितु मैं स्वयं उनकी सहायता करूंगा। तब उनकी नमाज़ एक और रूप धारण कर लेगी तथा उनमें एक और अवस्था पैदा हो जाएगी जो उनकी कल्पना में भी नहीं थी। यह कृपा मात्र इसलिए होगी कि वह खुदा तआला के कलाम कुर्आन शरीफ़ पर ईमान लाए तथा उनसे जहां तक संभव हो सका उसके आदेशों के अनुसार कर्मों में व्यस्त रहे। अतः नमाज़ के संबंध में जिस अतिरिक्त हिदायत का वादा है वह यही है कि इतना स्वाभाविक जोश, व्यक्तिगत प्रेम, विनय तथा पूर्ण एकाग्रता प्राप्त हो जाए कि मनुष्य की आंख अपने वास्तविक प्रियतम के देखने के लिए खुल जाए तथा खुदा की सुन्दरता के अवलोकन की एक विलक्षण अवस्था प्राप्त हो जाए जो अध्यात्मिक आनन्दों से सरासर परिपूर्ण हो तथा सांसारिक अधमताएं एवं नाना प्रकार के कथन कर्म देखने तथा सुनने संबंधी पापों से हृदय में घृणा उत्पन्न कर दे। जैसा कि खुदा तआला का कथन है

إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ^①

इसी प्रकार मनुष्य जितनी धन संबंधी इबादत (उपासनाएं) अपने प्रयास से कर सकता है वह केवल इतनी है कि अपने प्रिय धनों में से कुछ ख़ुदा के लिए दे जैसा कि अल्लाह तआला ने इसी सूरह में कहा है - ^② وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ और जैसा कि एक अन्य स्थान पर कहा है - ^③ لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ परन्तु स्पष्ट है कि यदि मनुष्य धन संबंधी इबादत उतनी ही करे कि अपने प्रिय धनों में से कुछ ख़ुदा के मार्ग में दे तो कुछ विशेषता नहीं है। विशेषता तो यह है कि ख़ुदा के अतिरिक्त से पूर्णरूप से अलग हो जाए और जो कुछ उसका है वह उसका नहीं अपितु ख़ुदा का हो जाए, यहां तक कि प्राण भी ख़ुदा तआला के मार्ग में न्योछावर करने के लिए तैयार हो क्योंकि वह भी ^④ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ में सम्मिलित है। ख़ुदा तआला का उद्देश्य उसके कथन ^④ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ से केवल रुपया-पैसा नहीं है अपितु यह बड़ा व्यापक शब्द है जिसमें प्रत्येक वह ने'मत सम्मिलित है जो मनुष्य को प्रदान की गई है।

अतः यहां भी ^④ هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ से ख़ुदा तआला का आशय यह है कि मनुष्य को जो कुछ प्रत्येक प्रकार की ने'मत उदाहरणतया उसके प्राण, स्वास्थ्य, शक्ति तथा धन आदि में से दिया गया है उसकी अपेक्षा मनुष्य अपने प्रयास से केवल ^④ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ तक अपनी निष्ठा प्रकट कर सकता है तथा इससे बढ़कर मानव-शक्तियां सामर्थ्य नहीं रखतीं, परन्तु ख़ुदा तआला का कुर्आन शरीफ़ पर ईमान लाने वाले के लिए यदि वह ^④ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ की सीमा तक अपनी निष्ठा प्रकट करेगा तो आयत ^④ هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ के अनुसार यह वादा है कि ख़ुदा तआला इस प्रकार की इबादत में भी उसे चरम सीमा तक पहुंचा देगा और चरम

① हूद - 115

② अलबक्ररह - 4

③ आले इमरान - 93

④ अलबक्ररह - 3

सीमा यह है कि उसको एक यह त्याग की शक्ति प्रदान की जाएगी^① कि वह हार्दिक प्रफुल्लता के साथ यह समझ लेगा कि जो कुछ उसका है वह खुदा का है तथा कभी किसी को आभास नहीं कराएगा कि ये वस्तुएं उसकी थीं जिसके द्वारा उसने मनुष्यों की सेवा की। उदाहरणतया उपकार के द्वारा कभी मनुष्य किसी को आभास कराता है कि उसने अपना धन दूसरे को दिया, परन्तु यह अपूर्ण अवस्था है क्योंकि वह तभी महसूस करेगा जब उस वस्तु को अपनी वस्तु समझेगा। अतः जब आयत **هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ** के अनुसार खुदा तआला कुर्आन शरीफ़ पर ईमान लाने वाले को उस स्थान से उन्नति प्रदान करेगा तो वह यहां तक अपनी समस्त वस्तुओं को खुदा की वस्तुएं समझ लेगा कि महसूस कराने का रोग भी उसके हृदय से जाता रहेगा और मनुष्यों के लिए उसके हृदय में एक मां के जैसी हमदर्दी पैदा हो जाएगी अपितु इससे बढ़कर। तथा कोई वस्तु उसकी अपनी नहीं रहेगी अपितु सब खुदा की हो जाएगी और यह तब होगा जब वह सच्चे हृदय से कुर्आन शरीफ़ तथा नबी करीम^ﷺ पर ईमान लाएगा इस के बिना नहीं। अतः कितने पथ भ्रष्ट हैं वे लोग जो कुर्आन शरीफ़ तथा रसूले करीम^ﷺ के अनुसरण के बिना केवल खुशक एकेश्वरवाद को मुक्ति का कारण ठहराते हैं अपितु अवलोकन सिद्ध कर रहा है कि ऐसे लोग न खुदा पर सच्चा ईमान रखते हैं न संसार के लालचों एवं इच्छाओं से पवित्र हो सकते हैं कहां यह कि वे किसी पराकाष्ठा तक उन्नति करें तथा यह बात भी

① **हाशिया** - इसका कारण यह है कि मानवीय कमजोरी के कारण मनुष्य की प्रकृति में एक कृपणता भी है कि उसके पास सोने का एक पर्वत भी हो तब भी कृपणता का एक भाग उसके अन्दर होता है तथा नहीं चाहता कि अपना समस्त धन अपने हाथ से छोड़ दे, परन्तु जब आयत **هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ** की एक प्रदत्त-शक्ति उसके साथ हो जाती है तो फिर हृदय की ऐसी प्रफुल्लता हो जाती है कि समस्त कृपणता तथा हृदय की क्षुद्रता दूर हो जाती है तब खुदा की प्रसन्नता प्रत्येक धन से अधिक प्रिय लगती है तथा वह नहीं चाहता कि पृथ्वी पर नश्वर खजाने एकत्र करे अपितु आकाश पर अपना धन एकत्र करता है। इसी से।

बिल्कुल गलत तथा अन्धविश्वास है कि मनुष्य स्वयं एकेश्वरवाद की नेमत प्राप्त कर सकता है अपितु एकेश्वरवाद खुदा के कलाम द्वारा प्राप्त होता है। अपनी ओर से जो कुछ समझता है वह अनेकेश्वरवाद से रिक्त नहीं। इसी प्रकार खुदा तआला की किताबों पर ईमान लाने के बारे में मानव-प्रयास केवल इस सीमा तक है कि मनुष्य संयम धारण करके उसकी किताब पर ईमान लाए तथा धैर्यपूर्वक उसका अनुसरण करे, इससे अधिक मनुष्य में शक्ति नहीं, परन्तु खुदा तआला ने आयत **هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ** में यह वादा किया है कि यदि कोई उसकी किताब तथा रसूल पर ईमान लाएगा तो वह अवश्य मार्ग-दर्शन का अधिकारी होगा तथा उसके नेत्र खोलेगा और अपने वार्तालाप संवादों से सम्मानित करेगा^① तथा उसे बड़े-बड़े निशान दिखाएगा, यहां तक वह इसी संसार में उसको देख लेगा कि उसका खुदा मौजूद है तथा पूर्ण संतोष पाएगा। खुदा का कलाम कहता है कि यदि तू मुझ पर पूर्ण ईमान लाए तो मैं तुझ पर उतरूंगा इसी कारण हज़रत इमाम अबू जा'फ़र सादिक^{रज़ि.} कहते हैं कि मैंने इस निश्छल, प्रेम तथा रुचि से खुदा के कलाम को पढ़ा कि वह इल्हामी रंग में मेरी मुँह पर भी जारी हो गया, किन्तु खेद कि लोग इस बात को नहीं समझते कि खुदा के वार्तालाप क्या वस्तु हैं तथा किस अवस्था में कहा जाएगा कि खुदा किसी व्यक्ति से वार्तालाप करता है अपितु अधिकांश नादान लोग शैतानी विचारों को भी खुदा का कलाम समझने लगते हैं और उन्हें शैतानी और खुदाई इल्हाम में अन्तर करने की समझ नहीं। अतः स्मरण रहे कि खुदाई इल्हाम तथा वह्यी के लिए प्रथम शर्त यह है कि मनुष्य केवल खुदा का हो जाए तथा शैतान का कोई भाग उसमें न रहे क्योंकि जहां मुर्दा है आवश्यक है वहां कुत्ते भी एकत्र हो जाएं। इसीलिए अल्लाह तआला फ़रमाता है

هَلْ أَنْبِئُكُمْ عَلَىٰ مَنْ تَنْزَلُ الشَّيْطَانُ ۖ تَنْزَلُ عَلَىٰ كُلِّ آفَاقٍ أَثِيمٍ ۝

① वास्तव में पूर्ण अनुसरण यही है कि वही रंग ग्रहण कर ले तथा हृदय पर वही प्रकाश उतरें। मैंने अग्नि में प्रवेश किया यहां तक मैं स्वयं अग्नि हो गया। इसी से।

② अश्शो'रा' - 222,223

परन्तु जिसमें शैतान का भाग नहीं रहा और वह अधम जीवन से ऐसा दूर हुआ कि जैसे मर गया तथा सच्चा और वफ़ादार मनुष्य बन गया और ख़ुदा की ओर आ गया उस पर शैतान आक्रमण नहीं कर सकता जैसा कि ख़ुदा का कथन है -

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ^①

जो शैतान के हैं तथा अपने अन्दर शैतानी आदतें रखते हैं शैतान उन्हीं की ओर दौड़ता है क्योंकि वे शैतान के शिकार हैं।

स्मरण रहे कि ख़ुदा के वार्तालाप अपने अन्दर एक विशेष बरकत, प्रताप तथा आनंद रखते हैं और चूंकि ख़ुदा बहुत सुनने वाला, सर्वज्ञ और दयालु है, इसलिए वह अपने संयमी, सच्चे एवं वफ़ादार लोगों को उनके प्रश्नों का उत्तर देता है तथा यह प्रश्नोत्तर कई घण्टों तक लम्बे हो सकते हैं। जब बन्दा विवशता एवं विनयपूर्वक एक प्रश्न करता है तत्पश्चात् कुछ मिनटों तक उस पर एक ऊंघ सी छाकर उस ऊंघ के पर्दे में उसे उत्तर प्राप्त हो जाता है। तत्पश्चात् बन्दा यदि प्रश्न करता है तो फिर देखते-देखते उस पर एक और ऊंघ फिर छा जाती है और नियमानुसार उसके पर्दे में उत्तर मिल जाता है। ख़ुदा ऐसा कृपालु, दयालु तथा सहनशील है कि यदि हजार बार भी एक बन्दा यदि प्रश्न करे तो उत्तर मिल जाता है परन्तु चूंकि ख़ुदा तआला निस्पृह भी है तथा नीति एवं हित को भी दृष्टिगत रखता है इसलिए कुछ प्रश्नों के उत्तर में प्रकटन अभीष्ट नहीं होता। यदि यह पूछा जाए कि क्योंकर ज्ञात हो कि वे उत्तर ख़ुदा तआला की ओर से हैं न कि शैतान की ओर से। इसका उत्तर हम अभी दे चुके हैं।

इसके अतिरिक्त शैतान गूंगा है अपनी भाषा में सरसता तथा प्रवाह नहीं रखता। और गूंगे की भांति सरस तथा अधिकतर बातों पर समर्थ नहीं हो सकता केवल एक दुर्गन्धयुक्त शैली में एक दो वाक्य हृदय में डाल देता है। उसे अनादिकाल से यह सामर्थ्य ही नहीं दिया गया कि आनन्दमय और वैभवपूर्ण कलाम कर सके या कुछ घन्टों तक वार्तालाप के प्रश्नों के उत्तर का क्रम जारी रख सके। वह बहरा

① वास्तव में, जो मेरे बंदे (हैं) उन पर तेरा कोई प्रभुत्व नहीं होगा अलहिज़्र - 43

भी है, प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता और वह असमर्थ भी है अपने इल्हामों में कोई शक्ति तथा उच्चकोटि की भविष्यवाणी का नमूना प्रदर्शित नहीं कर सकता^①

① यह प्रश्न कि क्या शैतानी स्वप्न या इल्हाम में कोई परोक्ष की खबर हो सकती है अथवा नहीं ? इसका उत्तर यह है कि शैतानी स्वप्न या इल्हाम में जैसा कि कुर्आन शरीफ़ से प्रकट होता है कि कभी परोक्ष की खबर तो हो सकती है परन्तु वह अपने साथ तीन लक्षण रखती है (1) प्रथम यह कि वह परोक्ष कोई प्रभुत्व रखने वाला परोक्ष नहीं होता जैसा कि खुदा तआला के कलाम में इस प्रकार के परोक्ष होते हैं कि अमुक व्यक्ति जो उद्दण्डताओं से नहीं रुकता हम उसे तबाह करेंगे तथा अमुक व्यक्ति जिसने निष्ठा प्रदर्शित की हम उसे ऐसा-ऐसा सम्मान देंगे तथा हम अपने नबी के समर्थक के लिए अमुक-अमुक निशान दिखाएंगे कि उनका कोई मुकाबला नहीं कर सकेगा तथा हम इन्कार करने वालों पर अमुक अज़ाब लाएंगे तथा मोमिनों को इस प्रकार की विजय और सहायता देंगे। ये प्रभुत्वशाली परोक्ष हैं जो अपने अन्दर सत्ता की शक्ति रखते हैं। ऐसी भविष्यवाणियां शैतान नहीं कर सकता। (2) द्वितीय यह कि शैतानी स्वप्न या इल्हाम कृपण की भांति होता है, उसमें परोक्ष का आधिक्य नहीं होता तथा खुदाई मुल्हम के सामने से ऐसा व्यक्ति भाग जाता है क्योंकि खुदाई मुल्हम के समक्ष उसका परोक्ष मात्रा में इतना कम होता है जैसा कि समुद्र के समक्ष एक बूंद। (3) तृतीय उस पर प्रायः झूठ का प्रभुत्व होता है परन्तु खुदाई स्वप्न या इल्हाम पर सत्य का प्रभुत्व होता है अर्थात् यदि समस्त इल्हामों को देखा जाए तो खुदाई इल्हाम में सत्य का आधिक्य होता है तथा शैतानी में इसके विपरीत। हमने समस्त का शब्द खुदाई स्वप्नों या इल्हामों के बारे में इसलिए प्रयोग नहीं किया कि उनमें भी कुछ इल्हाम या स्वप्न अस्पष्ट रूप में होते हैं या उनके विवेचन में ग़लती हो जाती है और नादान तथा मूर्ख ऐसी भविष्यवाणियों को झूठ समझ लेते हैं तथा उनका होना केवल परीक्षाओं के लिए होता है तथा कुछ खुदाई भविष्यवाणियां अज़ाब के वादे के तौर पर होती हैं जिनका विलम्ब वैध होता है। स्मरण

तथा उसका गला भी बैठा हुआ है, वैभवपूर्ण एवं उच्च स्वर में बोल नहीं सकता। नपुंसकों की भांति उसकी आवाज़ धीमी है। इन्हीं लक्षणों से शैतानी वह्यी को पहचान लोगे, किन्तु खुदा तआला गूंगे, बहरे तथा विवश के समान नहीं। वह सुनता है और बराबर उत्तर देता है तथा उसके कलाम में वैभव और रोब तथा स्वर में बुलन्दी होती है तथा कलाम प्रभावी और आनन्ददायक होता है तथा शैतान का कलाम धीमा, स्त्रियों जैसा तथा अस्पष्ट रूप में होता है, उसमें रोब-दबदबा, वैभव तथा उच्चता नहीं होती और न वह बहुत देर तक चल सकता है मानो शीघ्र थक जाता है तथा उसमें भी कमजोरी और कायरता टपकती है, किन्तु खुदा का कलाम थकने वाला नहीं होता तथा अपने अन्दर हर प्रकार की शक्ति रखता है तथा बड़ी-बड़ी परोक्ष की बातों एवं प्रभुत्वशाली वादों पर आधारित होता है तथा उससे खुदाई प्रताप, श्रेष्ठता, शक्ति तथा नितान्त पवित्रता की गंध आती है तथा शैतान के कलाम में यह विशेषता नहीं होती और खुदा तआला का कलाम अपने अन्दर एक शक्तिशाली प्रभाव रखता है तथा हृदय में एक लोहे के खूँटे के समान धंस जाता है तथा हृदय पर एक पवित्र प्रभाव डालता है तथा हृदय को अपनी ओर आकर्षित करता है तथा जिस पर उतरता है उसे महारथी बना देता है, यहां तक कि यदि उसे तेज़ तलवार के साथ टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाए या उसे फांसी दे दी जाए या प्रत्येक प्रकार का कष्ट जो संसार में संभव है पहुंचाया जाए तथा हर प्रकार का अपमान एवं अनादर किया जाए या भड़कती हुई अग्नि में बैठाया जाए या जलाया जाए, वह कभी नहीं कहेगा कि यह खुदा का कलाम नहीं जो मुझ पर उतरता है क्योंकि खुदा उसे पूर्ण विश्वास प्रदान कर देता है तथा अपने चेहरे का प्रेमी बना देता है तथा तन, मन, धन एवं सम्मान उसके निकट ऐसा होता है जैसे कि एक तिनका। वह खुदा का दामन नहीं छोड़ता यद्यपि समस्त संसार उसको अपने पैरों

शेष हाशिया

रहे कि शैतानी इल्हाम पापी एवं अपवित्र व्यक्ति से अनुकूलता रखता है परन्तु खुदाई इल्हामों की अधिकता केवल उनको होती है जो पवित्र हृदय रखते हैं तथा खुदा तआला के प्रेम में लीन हो जाते हैं। इसी से।

के नीचे कुचल डाले तथा भरोसा, वीरता एवं दृढ़ता में अद्वितीय होता है परन्तु शैतान से इल्हाम पाने वाले यह शक्ति नहीं पाते, वे कायर होते हैं क्योंकि शैतान कायर है।

अन्ततः हम यह भी प्रकट करना चाहते हैं कि वह बात जो अब्दुल हकीम खान की पथ-भ्रष्टता का कारण हुई है जिसके कारण उसे यह विचार आया है कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण की आवश्यकता नहीं। वह पवित्र कुर्आन की एक आयत का बोधभ्रम है जो अल्प ज्ञान तथा अल्प चिन्तन के कारण उस से घटित हुआ और वह आयत यह है -

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالطَّغْيَىٰ وَالصَّابِئِينَ مَنْ
آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ
رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ①

(अनुवाद) अर्थात् जो लोग इस्लाम में प्रवेश कर चुके हैं तथा जो लोग यहूदी, ईसाई तथा नक्षत्र-पूजक हैं, जो व्यक्ति उनमें से अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान लाएगा तथा शुभ कर्म करेगा खुदा उसे नष्ट नहीं करेगा तथा ऐसे लोगों का प्रतिफल उनके रब्ब के पास है तथा उनको कोई भय नहीं होगा और न शोक।^②

यह आयत है जिस से नादानी एवं मूर्खता के कारण यह परिणाम निकाला गया है कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने की कुछ आवश्यकता नहीं, नितान्त खेद का स्थान है कि यह लोग अपनी तामसिक वृत्ति के अनुयायी

① अलबक्ररह - 63

② यदि इस आयत से यह निकलता है कि केवल एकेश्वरवाद पर्याप्त है तो फिर निम्नलिखित आयत से यह सिद्ध होगा कि अनेकेश्वरवाद इत्यादि सब पाप बिना पश्चाताप के क्षमा किए जाएंगे और वह आयत यह है - قُلْ يٰعِبَادِىَ الَّذِينَ اسْرَفُوا عَلٰى اَنْفُسِهِمْ - لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا (अज़्ज़ुमर-54) जबकि ऐसा कदापि नहीं। इसी से

होकर कुर्आन की स्पष्ट आयतों एवं आदेशों का विरोध करते हैं तथा इस्लाम से बाहर होने के लिए अस्पष्ट आयतों की शरण ढूंढते हैं। उन्हें स्मरण रहे कि वे इस आयत से कुछ लाभ प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि अल्लाह और आखिरत पर ईमान लाने के लिए यह नितान्त अनिवार्य है कि पवित्र कुर्आन तथा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाया जाए। कारण यह है कि ख़ुदा तआला ने अल्लाह के नाम की पवित्र कुर्आन में यह परिभाषा की है कि अल्लाह वह अस्तित्व है जो समस्त लोकों का प्रतिपालक, बिन मांगे देने वाली तथा बार-बार दया करने वाला है, जिसने पृथ्वी और आकाश को छः दिन में बनाया तथा आदम को पैदा किया, रसूल भेजे, किताबें भेजीं तथा सब के अन्त में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पैदा किया जो ख़ातमुल अंबिया तथा समस्त रसूलों में श्रेष्ठ हैं तथा अन्तिम दिवस कुर्आन करीम के अनुसार यह है जिसमें मुर्दे जीवित किए जाएंगे फिर एक वर्ग को स्वर्ग में प्रवेश दिया जाएगा जो शारीरिक और आध्यात्मिक ने'मत का स्थान है तथा एक वर्ग को नर्क में प्रवेश दिया जाएगा जो आध्यात्मिक एवं शारीरिक अज़ाब का स्थान है। ख़ुदा तआला पवित्र कुर्आन में फ़रमाता है कि इस अन्तिम दिवस पर वही लोग ईमान लाते हैं जो इस किताब पर ईमान लाते हैं।

अतः जबकि अल्लाह तआला ने स्वयं शब्द अल्लाह का अन्तिम दिवस बड़ी स्पष्टता के साथ ऐसे अर्थ कर दिए हैं जो इस्लाम से विशिष्ट हैं। तो जो व्यक्ति अल्लाह पर तथा अन्तिम दिवस पर ईमान लाएगा, उसके लिए यह बात अनिवार्य होगी कि पवित्र कुर्आन तथा आंहज़रत पर ईमान लाए और किसी का अधिकार नहीं है कि इन अर्थों को परिवर्तित कर दे और हम इस बात का अधिकार नहीं रखते कि अपनी ओर से कोई ऐसे अर्थ आविष्कृत करें जो पवित्र कुर्आन के वर्णित अर्थों से अलग तथा विपरीत हों। हमने प्रारंभ से अन्त तक पवित्र कुर्आन को ध्यानपूर्वक देखा है तथा बार-बार देखा और उसके अर्थों पर भलीभांति विचार किया है। हमें स्पष्ट तौर पर यह ज्ञात हुआ है कि पवित्र कुर्आन में ख़ुदा की जितनी विशेषताओं तथा कार्यों का वर्णन है उन समस्त विशेषताओं का विशेष्य अल्लाह

का नाम ठहराया गया है। उदाहरणतया कहा गया है **الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ** ○ ऐसा ही इस प्रकार की और बहुत सी आयतें हैं जिनमें यह वर्णन है कि अल्लाह वह है जिसने कुर्आन उतारा। अल्लाह वह है जिसने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजा। अतः जब कि कुर्आनी पारिभाषिक शब्दावली में अल्लाह के अर्थ में यह सम्मिलित है कि अल्लाह वह है जिसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजा है। इसलिए यह आवश्यक है कि जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान लाए उसका ईमान तभी विश्वसनीय तथा उचित समझा जाएगा जबकि आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए। खुदा तआला ने इस आयत में यह नहीं कहा कि **مَنْ آمَنَ بِالرَّحْمَنِ** (जो रहमान पर ईमान लाए) या **مَنْ آمَنَ بِالرَّحِيمِ** (जो रहीम पर ईमान लाए) या **مَنْ آمَنَ بِالكَرِيمِ** (जो करीम पर ईमान लाए) अपितु यह फ़रमाया **مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ** (जो अल्लाह पर ईमान लाए) तथा अल्लाह से अभिप्राय वह अस्तित्व है जो समस्त पूर्ण विशेषताओं का संग्रहीता है तथा उसकी एक महान विशेषता यह है कि उसने पवित्र कुर्आन को उतारा। इस स्थिति में हम केवल ऐसे व्यक्ति के संबंध में कह सकते हैं कि वह अल्लाह पर ईमान लाया जबकि वह आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी ईमान लाया हो तथा पवित्र कुर्आन पर भी ईमान लाया हो। यदि कोई कहे कि फिर **إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا** के क्या अर्थ हुए। तो स्मरण रहे कि उसके अर्थ ये हैं कि जो लोग केवल खुदा तआला पर ईमान लाते हैं उनका ईमान विश्वसनीय नहीं है, जब तक कि खुदा के रसूल पर ईमान न लाएं अथवा जब तक उस ईमान को पूर्ण न करें। इस बात को स्मरण रखना चाहिए कि पवित्र कुर्आन में मतभेद नहीं है। अतः यह क्योंकर हो सकता है कि सैकड़ों आयतों में तो खुदा तआला यह कहे कि केवल तौहीद (एकेश्वरवाद) पर्याप्त नहीं है अपितु उसके नबी पर ईमान लाना मोक्ष के लिए आवश्यक है इस स्थिति के अतिरिक्त कि कोई उस नबी से अपरिचित रहा हो तथा फिर किसी एक आयत में इसके विपरीत यह बताए कि केवल एकेश्वरवाद से ही मोक्ष की प्राप्ति

① अलफ़ातिहा 2,3

हो सकती है, पवित्र कुर्आन तथा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने की कुछ आवश्यकता नहीं और फिर विचित्र यह कि इस आयत में अद्वैतवाद का वर्णन भी नहीं। यदि ऐकेश्वरवाद अभिप्राय होता तो यों कहना चाहिए था कि **مِنَ اٰمَنٍ بِاللّٰهِ** परन्तु आयत का तो यह शब्द है कि **مِنَ اٰمَنٍ بِاللّٰهِ** का वाक्य हम पर यह अनिवार्य करता है कि हम इस बात पर विचार करें कि पवित्र कुर्आन में अल्लाह का शब्द किन अर्थों में आता है। हमारी ईमानदारी की यह मांग होनी चाहिए कि जब हमें स्वयं कुर्आन से ही ज्ञात हुआ कि अल्लाह के अर्थ में यह सम्मिलित है कि अल्लाह वह है जिसने कुर्आन भेजा तथा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजा तो हम उस अर्थ को स्वीकार कर लें जो पवित्र कुर्आन ने वर्णन किए तथा स्वेच्छाचार को ग्रहण न करें।

इसके अतिरिक्त हम वर्णन कर चुके हैं कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य खुदा तआला के अस्तित्व पर पूर्ण विश्वास पैदा करे और न केवल विश्वास अपितु अनुसरण के लिए भी कटिबद्ध हो जाए तथा उसके प्रसन्न करने के मार्गों को पहचाने। जब से यह संसार पैदा हुआ है ये दोनों बातें केवल खुदा तआला के रसूलों के द्वारा ही प्राप्त होती आई हैं फिर यह कितना व्यर्थ विचार है कि एक व्यक्ति ऐकेश्वरवादी तो हो परन्तु खुदा तआला के रसूल पर ईमान नहीं लाता वह भी मोक्ष पाएगा। हे बुद्धि के अंधे एवं मूर्ख ! ऐकेश्वरवाद रसूल के माध्यम के बिना कब प्राप्त हो सकता है ? इसका उदाहरण तो ऐसा है कि जैसे एक व्यक्ति प्रकाशमान दिन से तो घृणा करे तथा उस से भागे और फिर कहे कि मेरे लिए सूर्य ही पर्याप्त है दिन की क्या आवश्यकता है। वह मूर्ख नहीं जानता कि क्या सूर्य दिन से अलग भी होता है। खेद ! ये नादान लोग नहीं समझते कि खुदा तआला की हस्ती तो अगम से अगमतर, परोक्ष से भी परोक्ष तथा दूर से दूर है। कोई बुद्धि उसे ज्ञात नहीं कर सकती जैसा कि स्वयं उसका कथन है -

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ

अर्थात् भौतिक आंखें तथा हृदय की आंखें (प्रतिमा) उसको पा नहीं सकतीं और वह उनके अन्त को जानता है तथा उन पर विजयी है। अतः उसका ऐकेश्वरवाद मात्र बुद्धि के माध्यम से असंभव है क्योंकि ऐकेश्वरवाद की वास्तविकता यह है कि जैसा कि मनुष्य सांसारिक मिथ्य उपास्यों से दूर रहता है अर्थात् मूर्तियों, मनुष्यों या सूर्य तथा चन्द्रमा की उपासना से अलग होता है इसी प्रकार अपने हृदय के अन्दर छुपे हुए उपास्यों से बचे अर्थात् अपनी आध्यात्मिक-शारीरिक शक्तियों पर भरोसा करने से, उनके द्वारा अहंकार के रोग से ग्रसित होने से स्वयं को बचाए। अतः इस अवस्था में स्पष्ट है अहंकार को त्याग कर तथा रसूल का दामन पकड़े बिना पूर्ण ऐकेश्वरवाद प्राप्त नहीं हो सकता।

जो व्यक्ति अपनी किसी शक्ति को खुदा का भागीदार ठहराता है वह ऐकेश्वरवादी क्योंकर कहला सकता है। यही कारण है कि पवित्र कुर्आन ने अनेकों स्थान पर पूर्ण ऐकेश्वरवाद को रसूल के अनुसरण से सम्बद्ध किया है क्योंकि पूर्ण ऐकेश्वरवाद एक नवीन जीवन है तथा इसके बिना मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता, जब तक खुदा के रसूल का अनुयायी होकर अपने अधम जीवन पर मृत्यु को न लाए। इसके अतिरिक्त पवित्र कुर्आन में इन नादानों के कथनानुसार विरोधाभास अनिवार्य हो जाता है क्योंकि एक ओर तो वह जगह-जगह यह फ़रमाता है कि रसूल के माध्यम के बिना ऐकेश्वरवाद प्राप्त नहीं हो सकता और न मोक्ष प्राप्त हो सकता है फिर दूसरी ओर मानो वह यह कहता है प्राप्त हो सकता है। हालांकि ऐकेश्वरवाद और मोक्ष का सूर्य तथा उसे प्रकट करने वाला केवल रसूल ही होता है, उसी के प्रकाश से ऐकेश्वरवाद प्रकट होता है। अतः ऐसा विरोधाभास खुदा के कलाम की ओर सम्बद्ध नहीं हो सकता।

इस नादान की बड़ी ग़लती यह है कि उसने ऐकेश्वरवाद के यथार्थ को बिल्कुल नहीं समझा। ऐकेश्वरवाद एक प्रकाश है जो सांसारिक एवं अपने स्वयं के अन्दर के उपास्यों के इन्कार के पश्चात् हृदय में पैदा होता है तथा अस्तित्व के कण-कण में समा जाता है। अतः वह खुदा और उसके रसूल के माध्यम के अतिरिक्त मात्र

अपनी शक्ति से क्योंकर प्राप्त हो सकता है। मनुष्य का केवल यह कार्य है कि अपने अभिमान को मारे, उस शैतानी अहंकार को त्याग दे कि मैं विद्याओं में पोषण प्राप्त हूँ और स्वयं को एक असभ्य की भांति समझे तथा दुआ में व्यस्त रहे। तब खुदा की ओर से उस पर एकेश्वरवाद का प्रकाश उतरेगा और एक नया जीवन उसको प्रदान करेगा।

अन्त में हम यह वर्णन करना भी आवश्यक समझते हैं कि यदि हम कष्ट कल्पना के तौर पर यह मान लें कि अल्लाह का शब्द सामान्य अर्थों पर आधारित है जिसका अनुवाद खुदा है तथा उन अर्थों की उपेक्षा कर दें जो कुर्आन करीम पर विचार-दृष्टि डालकर ज्ञात होते हैं अर्थात् यह कि अल्लाह के अर्थ में यह सम्मिलित है कि वह, वह अस्तित्व है जिसने पवित्र कुर्आन भेजा तथा आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अवतरित किया, तब भी यह आयत विरोधी को लाभ नहीं पहुंचा सकती, क्योंकि इस का यह अर्थ नहीं है कि केवल अल्लाह तआला को मानना मोक्ष के लिए पर्याप्त है अपितु इसका अर्थ यह है कि जो व्यक्ति अल्लाह पर जो खुदा तआला का सर्वश्रेष्ठ नाम (इस्मे आ'ज़म) है तथा खुदा तआला के सम्पूर्ण गुणों का संग्रहीता है, ईमान लाएगा तो खुदा उसे नष्ट नहीं करेगा और धीरे-धीरे उसे इस्लाम की ओर ले आएगा क्योंकि एक सच्चाई दूसरी सच्चाई में प्रवेश करने के लिए सहायता देती है तथा अल्लाह तआला पर शुद्ध ईमान लाने वाले अन्ततः सच्चाई को पा लेते हैं।

पवित्र कुर्आन में यह वादा है कि जो व्यक्ति सच्चे हृदय से खुदा तआला पर ईमान लाएगा खुदा उसे नष्ट नहीं करेगा तथा उस पर सच्चाई को स्पष्ट कर देगा तथा उसे सद्मार्ग दिखाएगा। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है -

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَهُمْ صُبُلَنَا ۖ

अतः इस आयत के ये अर्थ हुए कि अल्लाह तआला पर ईमान लाने वाला नष्ट नहीं किया जाता। अन्ततः अल्लाह तआला उसका पूर्ण मार्ग-दर्शन कर देता है।

अतः सूफियों ने इसके सैकड़ों उदाहरण लिखे हैं कि कुछ गैर क्रौमों के लोग जब पूर्ण निष्ठा के साथ से खुदा तआला पर ईमान लाए तथा शुभ कर्मों में व्यस्त हुए तो खुदा तआला ने उनको उनकी निष्ठा का यह प्रतिफल दिया कि उनके नेत्र खोल दिए तथा विशेष तौर पर अपनी सहायता से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई उन पर प्रकट कर दी। यही अर्थ इस आयत के अन्तिम वाक्य के हैं ^① فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ॥ खुदा तआला का प्रतिफल जब तक संसार में प्रकट नहीं होता आखिरत (परलोक) में भी प्रकट नहीं होता। अतः संसार में खुदा तआला पर ईमान लाने का यह प्रतिफल मिलता है कि ऐसे व्यक्ति को खुदा तआला पूर्ण मार्ग-दर्शन प्रदान करता है। तथा नष्ट नहीं करता। इसी की ओर यह आयत भी संकेत करती है -

وَأَنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لِيُؤْمِنُوا بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ ②

अर्थात् वे लोग जो वास्तव में अहले किताब हैं तथा सच्चे हृदय से खुदा और उसकी किताबों पर ईमान लाते और पालन करते हैं वे अन्ततः इस नबी पर ईमान ले आएंगे। अतः ऐसा ही हुआ। हां पापी मनुष्य जिन्हें अहले किताब नहीं कहना चाहिए वे ईमान नहीं लाते। इसी प्रकार इस्लामी इतिहास में इसके बहुत से उदाहरण पाए जाते हैं जिससे ज्ञात होता है कि खुदा तआला ऐसा कृपालु तथा दयालु है यदि कोई एक कण भर भी नेकी करे तब भी उसके प्रतिफल में इस्लाम में उसे सम्मिलित कर देता है जैसा कि एक हदीस में भी है कि किसी सहाबी ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में कहा कि मैंने कुफ़्र की अवस्था में केवल खुदा को प्रसन्न करने के लिए बहुत सा धन असहायों को दिया था। क्या इसका पुण्य भी मुझे मिलेगा तो आप^स ने फ़रमाया कि वही दान-पुण्य हैं जो तुझे इस्लाम की ओर खींच लाए। अतः इसी प्रकार जो व्यक्ति किसी अन्य धर्म में खुदा तआला

① तो उनके लिए उनका बदला उनके रब के पास है। अलबक्ररह - 275

② और अहल-ए-किताब में से कोई (पक्ष नहीं मगर उस की मौत से पहले निश्चित रूप से उस पर ईमान ले आएगा। अन्निसा - 160

को एक तथा भागीदार रहित समझता है और उससे प्रेम करता है। तो खुदा तआला आयत ① **فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ** के अनुसार अन्ततः उसे इस्लाम में सम्मिलित कर देता है। यही मामला बाबा नानक के सामने आया जब उसने बड़ी निष्ठा से मूर्ति पूजा को छोड़कर एकेश्वरवाद को अपनाया और खुदा तआला से प्रेम किया तो वही खुदा जिसने उपरोक्त आयत में फ़रमाया है - **فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ** - उस पर प्रकट हुआ तथा अपने इल्हाम से इस्लाम की ओर उसका मार्ग-दर्शन किया। अतः वह मुसलमान हो गया और हज भी किया।

किताब बहरुलजवाहिर में लिखा है कि अबुलखैर नामक एक यहूदी था जो संयमी और सत्यनिष्ठ व्यक्ति था तथा खुदा तआला को एक एवं भागीदार रहित जानता था। एक बार वह बाज़ार में चला जा रहा था तो एक मस्जिद से उसे आवाज़ आई कि एक लड़का पवित्र कुर्आन की यह आयत पढ़ रहा था -

الَّذِينَ أَحْسَبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ②

अर्थात् क्या लोग यह सोचते हैं कि वे यों ही मोक्ष पा जाएंगे केवल इतना कहने से कि हम ईमान लाए और अभी खुदा के मार्ग में उन की परीक्षा नहीं ली गई कि क्या उनमें ईमान लाने वालों के समान दृढ़ता, निष्ठा एवं वफ़ा भी मौजूद है या नहीं ? इस आयत ने अबुल खैर के हृदय पर बड़ा प्रभाव किया तथा उसके हृदय को द्रवित कर दिया। तब वह मस्जिद की दीवार के साथ खड़ा होकर बिलख-बिलख कर रोया, रात्रि को सय्यिदिना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके स्वप्न में आए और फ़रमाया -

يا ابا الخير اعجبنى ان مثلك مع كمال فضلك ينكر بنبوتى-

अर्थात् हे अबुलखैर ! मुझे आश्चर्य हुआ कि तुझ जैसा मनुष्य अपने गुण, प्रतिष्ठा एवं महानता के बावजूद मेरी नुबुव्वत से इन्कार करे। अतः सुबह होते ही

① तो उनके लिए उनका बदला उनके रब के पास है। अलबक्ररह - 275

② क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि केवल यह कह देने पर कि हम ईमान रखते हैं, वे छोड़ दिये जायेंगे और उनकी परीक्षा नहीं ली जायेगी? अलअनकबूत - 2,3

अबुल खैर मुसलमान हो गया तथा अपने इस्लाम की घोषणा कर दी।

सारांश यह है कि मैं इस बात को बिल्कुल नहीं समझ सकता कि एक व्यक्ति खुदा तआला पर ईमान लाए तथा एक एवं भागीदाररहित समझे और खुदा उसे नर्क से तो मुक्ति दे परन्तु अंधेपन से मुक्ति न दे हालांकि मुक्ति की जड़ खुदा को पहचानने का ज्ञान है। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है -

مَنْ كَانَ فِي هَذِهِ أَعْمَى فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَى وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۝

अर्थात् जो व्यक्ति इस संसार में अंधा है वह परलोक में भी अंधा ही होगा या उस से भी निकृष्टतम। यह बात बिल्कुल सच है कि जिसने खुदा के रसूलों को नहीं पहचाना, उसने खुदा को भी नहीं पहचाना। खुदा के चेहरे का दर्पण उसके रसूल हैं। प्रत्येक व्यक्ति जो खुदा को देखता है उसी दर्पण के द्वारा देखता है। अतः यह किस प्रकार की मुक्ति है कि एक व्यक्ति संसार में जीवन पर्यन्त आहंजगत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठलाने वाला तथा इन्कारी रहा और पवित्र कुर्आन का इन्कार करता रहा। खुदा तआला ने उसे आंखें नहीं दीं और न हृदय दिया तथा वह अन्धा ही रहा और अन्धा ही मर गया और फिर मुक्ति भी पा गया। यह विचित्र मुक्ति है। हम देखते हैं कि खुदा तआला जिस व्यक्ति पर दया करना चाहता है पहले उसे आंखें प्रदान करता है तथा अपनी ओर से उसे ज्ञान प्रदान करता है। हमारी जमात में सैकड़ों लोग ऐसे होंगे कि वे केवल स्वप्न या इल्हाम के माध्यम से हमारी जमाअत में सम्मिलित हुए हैं। खुदा अत्यन्त दयावान है। यदि कोई उसकी ओर एक क़दम आता है तो वह दो क़दम आता है और जो व्यक्ति उसकी ओर शीघ्रता से चलता है तो वह उसकी ओर दौड़कर आता है तथा अंधे की आंखें खोलता है, फिर क्योंकि स्वीकार किया जाए कि एक व्यक्ति उसके अस्तित्व पर ईमान लाया तथा सच्चे हृदय से एक एवं भागीदार रहित समझा और उससे प्रेम किया तथा उसके वलियों में सम्मिलित हुआ फिर खुदा ने उसको अंधा

① और जो इस लोक में (आध्यात्मिक रूप से) अंधा है वह परलोक में भी अंधा होगा और रास्ते के मामले में सबसे ज्यादा भटका हुआ है। बनी इस्राईल - 73

रखा और ऐसा अंधा रहा कि खुदा के नबी को न पहचान सका। इसी के समर्थन में यह हदीस है कि

من مات ولم يعرف امام زمانه فقد مات ميتة جاهلية

अर्थात् जिसने अपने युग के इमाम को नहीं पहचाना वह मूर्खता की मौत मर गया तथा सद्मार्ग से वंचित रहा।

अब हम कुछ उन भ्रमों का उत्तर देते हैं जिन का उत्तर कुछ सत्याभिलाषियों ने मुझ से पूछा है। उनमें से अधिकांश वे भ्रम हैं जो अब्दुल हकीम खान सहायक सर्जन पटियाला ने लिखित अथवा मौखिक तौर पर लोगों के हृदयों में डाले तथा अपने मुर्तद होने पर ऐसी मुहर लगा दी कि अब संभवतः उसका अन्त इसी पर होगा। मैंने उन कुछ भ्रमों का उत्तर मुन्शी बुरहानुल हक साहिब शाहजहांपुरी के आग्रह पर लिखा है जो उन्होंने नितान्त विनम्रतापूर्वक अपने पत्र में प्रकट किया है। अतः मैं नीचे मुन्शी बुरहानुलहक के पत्र की मूल इबारत प्रत्येक प्रश्न में लिख कर उसका उत्तर देता हूँ। खुदा के सामर्थ्य के साथ।

प्रश्न - 1

‘तिरयाकुल कुलूब’ के पृष्ठ 157 में (जो मेरी पुस्तक है) लिखा है - यहां किसी को यह भ्रम न गुजरे कि मैंने इस लेख में स्वयं को हज़रत मसीह पर श्रेष्ठता दी है क्योंकि यह एक आंशिक श्रेष्ठता है जो ग़ैर नबी को एक नबी पर हो सकती है। फिर रीव्यू भाग प्रथम नं. 6 पृष्ठ 257 में लिखा है - ख़ुदा ने इस उम्मत में से मसीह मौऊद को भेजा जो उस पहले मसीह से अपनी सम्पूर्ण शान में बहुत बढ़कर है। फिर रीव्यू पृष्ठ 478 में लिखा है - मुझे क्रसम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं यदि मसीह इब्ने मरयम मेरे युग में होता तो वह कार्य जो मैं कर सकता हूँ वह कदापि न कर सकता और वे निशान जो मुझ से प्रकट हो रहे हैं वह कदापि न दिखा सकता। आरोप का सारांश यह कि इन दोनों इबारतों में विरोधाभास है।

उत्तर - स्मरण रहे कि इस बात को अल्लाह तआला भली भांति जानता है कि मुझे इन बातों से न कोई प्रसन्नता है न कुछ उद्देश्य कि मैं मसीह मौऊद कहलाऊँ या स्वयं को मसीह इब्ने मरयम से श्रेष्ठ ठहराऊँ। ख़ुदा ने मेरी अन्तरात्मा की अपनी उस पवित्र वह्यी में स्वयं ही सूचना दी है जैसा कि वह फ़रमाता है -

قُلْ أَجْرُ نَفْسِي مِنْ ضَرْبِ الْخَطَابِ.

अर्थात् उनको कह दे कि मेरी तो यह दशा है कि मैं अपने लिए किसी उपाधि को नहीं चाहता अर्थात् मेरा उद्देश्य तथा अभिप्राय इन विचारों से ऊपर है तथा कोई उपाधि देना यह ख़ुदा का काम है। मेरा इसमें हस्तक्षेप नहीं है। शेष रही यह बात कि ऐसा क्यों लिखा गया तथा कलाम में यह विरोधाभास क्यों पैदा हो गया। अतः इस बात को ध्यानपूर्वक समझ लो कि यह उसी प्रकार का विरोधाभास है जैसे बराहीन अहमदिया में मैंने यह लिखा था कि मसीह इब्ने मरयम आकाश से उतरेगा किन्तु बाद में यह लिखा कि आने वाला मसीह मैं ही हूँ। इस विरोधाभास का भी यही कारण था कि यद्यपि ख़ुदा तआला ने बराहीन अहमदिया में मेरा नाम

ईसा रखा और यह भी मुझे कहा कि तेरे आने की सूचना खुदा और रसूल ने दी थी, परन्तु चूंकि मुसलमानों का एक वर्ग इस आस्था पर दृढ़ था और मेरी भी यही आस्था थी कि हजरत ईसा आकाश से उतरेंगे। इसलिए मैंने खुदा की वह्यी को प्रत्यक्ष पर चरितार्थ करना न चाहा अपितु उस वह्यी की व्याख्या की और अपनी आस्था वही रखी जो सामान्य मुसलमानों की थी तथा उसी को बराहीन अहमदिया में प्रकाशित किया। परन्तु इसके पश्चात् इस बारे में खुदा की वह्यी वर्षा की भांति उतरी कि वह आने वाला मसीह मौऊद तू ही है तथा इसके साथ सैकड़ों निशान प्रकट हुए तथा पृथ्वी एवं आकाश दोनों मेरे सत्यापन के लिए खड़े हो गए और खुदा के चमकते हुए निशान मुझे बलपूर्वक इस ओर ले आए कि अन्तिम युग में आने वाला मसीह मैं ही हूँ अन्यथा मेरी आस्था तो वही थी जिसका मैंने बराहीन अहमदिया में उल्लेख कर दिया था। तत्पश्चात् मैंने इसी को पर्याप्त न समझकर कुर्आन करीम को दृष्टिगत रखते हुए इस वह्यी पर विचार किया तो नितान्त ठोस एवं अटल आयतों से सिद्ध हुआ कि वास्तव में इब्ने मरयम मृत्यु पा चुका है तथा अन्तिम खलीफ़ा मसीह मौऊद के नाम पर इसी उम्मत में से आएगा और जैसा कि जब दिन चढ़ जाता है तो कोई अन्धकार शेष नहीं रहता इसी प्रकार सैकड़ों निशानों, आकाशीय साक्ष्यों, पवित्र कुर्आन की ठोस आयतों तथा हदीसों से स्पष्ट आदेशों ने मुझे इस बात के लिए विवश कर दिया कि मैं स्वयं को मसीह मौऊद मान लूं। मेरे लिए केवल यह पर्याप्त था कि वह मुझ पर प्रसन्न हो। मुझे इस बात की कदापि इच्छा न थी। मैं एकान्तवास में था तथा मुझे कोई न जानता था और न मुझे अभिलाषा थी कि कोई मुझे पहचाने। उस (खुदा तआला) ने मुझे ज़बरदस्ती एकान्तवास से निकाला। मैंने चाहा कि मैं गुप्त रहूं और गुप्त ही मरूं, परन्तु खुदा ने कहा कि मैं तुझे सम्पूर्ण विश्व में सम्मान के साथ प्रसिद्धि प्रदान करूंगा। अतः यह उस खुदा से पूछो कि ऐसा तू ने क्यों किया ? मेरा इसमें क्या दोष है। इसी प्रकार प्रारंभ में मेरी यही आस्था थी कि मेरी मसीह इब्ने मरयम से क्या तुलना है वह नबी है और खुदा के महान सानिध्य प्राप्त लोगों में से है। यदि कोई बात मेरी

श्रेष्ठता के संबंध में प्रकट होती तो मैं उसे आंशिक श्रेष्ठता ठहराता था, किन्तु बाद में जब ख़ुदा तआला की वह्यी वर्षा की भांति मुझ पर उतरी तो उसने मुझे इस आस्था पर क़ायम न रहने दिया तथा स्पष्ट तौर पर मुझे नबी की उपाधि दी गई किन्तु इस प्रकार से कि एक दृष्टि से नबी तथा एक दृष्टि से उम्मत।^① जैसा कि मैंने नमूने के तौर पर ख़ुदा तआला की वह्यी की कुछ इबारतों का इस पुस्तक में भी उल्लेख किया है उन से भी स्पष्ट होता है कि मसीह इब्ने मरयम की तुलना में ख़ुदा तआला मेरे बारे में क्या कहता है। मैं ख़ुदा तआला की तेईस वर्ष की निरन्तर वह्यी को क्योंकर अस्वीकार कर सकता हूँ। मैं उसकी इस पवित्र वह्यी पर ऐसा ही ईमान लाता हूँ जैसा कि मैं ख़ुदा की उन समस्त वह्यों पर ईमान लाता हूँ जो मुझ से पहले हो चुकी हैं और मैं यह भी देखता हूँ कि मसीह इब्ने मरयम मूसा अलैहिस्सलाम का अन्तिम ख़लीफ़ा है और मैं अन्तिम ख़लीफ़ा उस नबी का हूँ जो रसूलों में सर्वश्रेष्ठ है इसलिए ख़ुदा ने चाहा कि मुझे उस से कम में न रखे। मैं भली-भांति जानता हूँ कि ये शब्द उन लोगों के लिए असहनीय होंगे जिनके

① स्मरण रहे कि बहुत से लोग मेरे दावे में नबी का नाम सुनकर धोखा खाते हैं तथा विचार करते हैं कि मानो मैंने उस नुबुव्वत का दावा किया है जो पूर्व युगों में सीधे तौर पर नबियों को मिली है परन्तु वे इस विचार में गलती पर हैं, मेरा ऐसा दावा नहीं है अपितु ख़ुदा के हित एवं दूरदर्शिता ने आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आध्यात्मिक दानशीलता का चरमसीमा सिद्ध करने के लिए यह श्रेणी प्रदान की है कि आप के वरदान की बरकत से मुझे नुबुव्वत के स्थान तक पहुंचाया। इसलिए मैं केवल नबी नहीं कहला सकता अपितु एक दृष्टि से नबी और एक दृष्टि से उम्मत। मेरी नुबुव्वत आहज़रत का प्रतिबिम्ब है न कि असली नुबुव्वत। इसी कारण हदीस तथा मेरे इल्हाम में जैसा कि मेरा नाम नबी रखा गया ऐसा ही मेरा नाम उम्मत भी रखा है ताकि ज्ञात हो कि प्रत्येक कमाल मुझे आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण तथा आप के माध्यम से मिला है। इसी से।

हृदय में हज़रत मसीह का प्रेम उपासना की सीमा तक पहुंच गया है किन्तु मैं उनकी परवाह नहीं करता। मैं क्या करूं और ख़ुदा का आदेश किस प्रकार छोड़ सकता हूं तथा उस प्रकाश से किस प्रकार जो मुझे दिया गया है अंधकार में आ सकता हूं। सारांश यह कि मेरी बातों में कुछ भी विरोधाभास नहीं। मैं तो ख़ुदा की वह्यी का अनुसरण करने वाला हूं। जब तक मुझे इसका ज्ञान न हुआ मैं वही कहता रहा जो प्रारंभ में मैंने कहा और जब मुझे ख़ुदा की ओर से ज्ञान हुआ तो मैंने उस प्रारंभिक कथन के विपरीत कहा। मैं मनुष्य हूं, मुझे अन्तर्यामी होने का दावा नहीं। बात यही है जो मनुष्य चाहे स्वीकार करे या न करे। मैं नहीं जानता कि ख़ुदा ने ऐसा क्यों किया। हां मैं इतना जानता हूं कि आकाश पर ख़ुदा तआला का स्वाभिमान ईसाइयों के मुकाबले पर बड़े आवेग में है, उन्होंने आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान के विरुद्ध वे अपमानजनक शब्द प्रयोग किए हैं कि निकट है कि उन के कारण आकाश फट जाएं। अतः ख़ुदा दिखाता है कि इस रसूल के तुच्छ सेवक इस्राईली मसीह इब्ने मरयम से बढ़कर हैं। जो व्यक्ति इस वाक्य से क्रोधित एवं आक्रोशित हो उसे अधिकार है कि वह अपने क्रोध से मर जाए, किन्तु ख़ुदा ने जो चाहा है किया और ख़ुदा जो चाहता है, करता है क्या मनुष्य में शक्ति है कि वह आरोप खड़ा करे कि ऐसा तूने क्यों किया।

यहां यह भी स्मरण रहे कि जब कि सम्पूर्ण संसार के सुधार के लिए एक सेवा मेरे सुपुर्द की गई है इस कारण से कि हमारा स्वामी सम्पूर्ण संसार के लिए आया था तो इस महान सेवा की दृष्टि से मुझे वे शक्तियां भी दी गई हैं जो इस दायित्व को पूर्ण करने के लिए आवश्यक थीं तथा वे आध्यात्म ज्ञान एवं चमत्कार भी दिए गए हैं जिनका दिया जाना अकाट्य एवं निर्णायक तर्क प्रस्तुत करने के लिए अनुकूल समय था, परन्तु आवश्यक न था कि हज़रत ईसा को वे आध्यात्म ज्ञान और चमत्कार दिए जाते।^① क्योंकि उस समय उनकी आवश्यकता न थी, इसलिए

① **हाशिया** - यदि कोई कहे कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मुर्दे जीवित करते थे। यह कितना बड़ा चमत्कार उन्हें दिया गया। इसका उत्तर यह है कि वास्तविक तौर पर मृतक

हजरत ईसा की प्रकृति को केवल वे शक्तियां दी गईं जो यहूदियों के एक छोटे से सम्प्रदाय के सुधार के लिए आवश्यक थीं। और हम पवित्र कुर्आन के उत्तराधिकारी हैं जिसकी शिक्षा समस्त विशेषताओं से परिपूर्ण है तथा समस्त संसार के लिए है, किन्तु हजरत ईसा केवल तौरात के उत्तराधिकारी थे जिसकी शिक्षा अपूर्ण तथा एक विशेष जाति के लिए है। इसी कारण इंजील में उन्हें वे बातें आग्रहपूर्वक वर्णन करना पड़ीं जो तौरात में गुप्त रूप में थीं, परन्तु हम कोई बात पवित्र कुर्आन से अधिक वर्णन नहीं कर सकते क्योंकि उसकी शिक्षा प्रत्येक दृष्टि से सर्वांगपूर्ण है तथा वह तौरात की भांति किसी इंजील का मुहताज नहीं।

फिर जिस अवस्था में यह बात अत्यन्त स्पष्ट है कि हजरत ईसा अलैहिस्सलाम को उतनी ही आध्यात्मिक शक्तियां दी गईं थीं जो यहूदियों के लिए पर्याप्त थीं। अतः निसन्देह उनके कमाल भी उसी स्तर के अनुसार होंगे। जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है -

وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنْزِلُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ①

अर्थात् हमारे पास प्रत्येक वस्तु के भंडार हैं परन्तु हम उन्हें आवश्यकता से अधिक नहीं उतारते। अतः यह खुदा की नीति के विरुद्ध है कि एक नबी को उम्मत के सुधार के लिए वे ज्ञान दिए जाएं जिन ज्ञानों से वह उम्मत अनुकूलता ही नहीं रखती अपितु पशुओं में भी खुदा तआला का यही नियम है। उदाहरणतया घोड़े को खुदा ने इस उद्देश्य से पैदा किया है कि दूरी तय करने में उत्तम तौर पर काम करे तथा प्रत्येक क्षेत्र में दौड़ने से अपने सवार का समर्थक एवं सहायक हो। इसलिए एक बकरी इन गुणों में उसकी समानता नहीं कर सकती, क्योंकि वह इस

का जीवित होना पवित्र कुर्आन की शिक्षा के विपरीत है। हां जो मुर्दे के तौर पर रोग ग्रस्त थे यदि उन्हें जीवित किया तो यहां भी ऐसे मुर्दे जीवित किए जा चुके हैं और पूर्व नबी भी करते रहे हैं जैसे इल्यास नबी। परन्तु महान चमत्कार और हैं जिन्हें खुदा प्रकट कर रहा है और करेगा। इसी से।

उद्देश्य के लिए पैदा नहीं की गई। इसी प्रकार खुदा ने जल को प्यास बुझाने के लिए पैदा किया है। इसलिए अग्नि उसका स्थानापन्न नहीं हो सकती। मानव स्वभाव की बहुत सी शाखाएं हैं तथा खुदा ने उसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की अनेकों शक्तियां रखी हैं, परन्तु इंजील ने केवल एक ही शक्ति क्षमा एवं माफ़ करने पर बल दिया है मानो मानव रूपी वृक्ष की सैकड़ों शाखाओं में से केवल एक शाखा इंजील के हाथ में है। अतः इससे हज़रत ईसा के ज्ञान की वास्तविकता मालूम होती है कि वह कहां तक है, परन्तु हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अध्यात्म ज्ञान मानव-प्रकृति की चरम सीमा तक पहुंचा हुआ है। इसलिए पवित्र कुर्आन पूर्ण रूप में उतरा। यह कुछ भी बुरा मानने की बात नहीं अल्लाह तआला स्वयं कहता है कि ^① فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ अर्थात् कुछ नबियों को हमने कुछ पर श्रेष्ठता दी है। हमें आदेश है कि हम समस्त आदेशों में, शिष्टाचार में, उपासनाओं में आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुसरण करें। अतः यदि हमारे स्वभाव को वे शक्तियां न दी जातीं जो आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की समस्त विशेषताओं को प्रतिबिम्ब के तौर पर प्राप्त कर सकतीं तो हमें यह आदेश कदापि न दिया जाता कि उस महान नबी का अनुसरण करो क्योंकि खुदा तआला किसी को उसके सामर्थ्य से अधिक कष्ट नहीं देता, जैसा कि स्वयं उसका कथन है -

لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا (अलबक्रह - 287)

और चूंकि वह जानता था कि आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समस्त नबियों की विशेषताओं के संग्रहीता हैं, इसलिए उसने हमारी पांच समय की नमाज़ में हमें यह दुआ पढ़ने का आदेश दिया कि -

إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝^②

अर्थात् हे हमारे खुदा! हम से पहले जितने नबी और रसूल, सत्यनिष्ठ तथा शहीद गुज़र चुके हैं सबी की विशेषताएं हमारे अन्दर एकत्र कर। अतः इस दयनीय उम्मत

① अलबक्रह - 254

② सूरह फ़ातिहा - 6,7

के उच्च स्वभाव का इस बात से अनुमान हो सकता है कि उसे आदेश हुआ है कि पहले समस्त विभिन्न विशेषताओं को अपने अन्दर एकत्र करो। यह तो सामान्य आदेश है तथा विशेष लोगों की विशेष श्रेणियां इसी से ज्ञात हो सकती हैं। इसी कारण इस उम्मत के गुण सम्पन्न सूफ़ी लोग इस गुप्त वास्तविकता तक पहुंच गए हैं कि मानव स्वभावों की विशेषताओं की परिधि को इसी उम्मत ने पूर्ण किया है। बात यह है कि जिस प्रकार एक छोटा सा बीज पृथ्वी में बोया जाता है तथा शनैः शनैः वह अपनी पूर्णता को पहुंचकर एक बड़ा वृक्ष बन जाता है, इसी प्रकार मानव-श्रृंखला विकसित होती गई और मानव-शक्तियां अपने विशेषताओं में बढ़ती गई यहां तक कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में वे अपनी पूर्ण पराकाष्ठा तक पहुंच गईं।

निष्कर्ष यह कि चूंकि मैं एक ऐसे नबी का अनुयायी हूं जो मानवता की समस्त विशेषताओं का संग्रहीता था तथा उसकी शरीअत (धर्म-विधान) सर्वांगपूर्ण थी तथा समस्त संसार के सुधार के लिए थी। इसलिए मुझे वे शक्तियां प्रदान की गईं जो समस्त संसार के सुधार के लिए आवश्यक थीं। तो फिर इस बात में क्या सन्देह है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को वे स्वाभाविक शक्तियां नहीं दी गईं जो मुझे दी गईं, क्योंकि वह एक विशेष क्रौम के लिए आए थे और यदि वह मेरे स्थान पर होते तो अपनी उस प्रकृति के कारण वह कार्य पूर्ण न कर सकते जो ख़ुदा की कृपा ने मुझे पूर्ण करने की शक्ति दी। यह ख़ुदा की कृपा एवं ने'मत की चर्चा है अभिमान की बात नहीं। जैसा कि स्पष्ट है कि यदि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्थान पर आते तो इस कार्य को सम्पन्न न कर सकते तथा यदि पवित्र कुर्आन के स्थान पर तौरात उतरती तो इस कार्य को कदापि पूर्ण न कर सकती जो पवित्र कुर्आन ने किया। मानव श्रेणियां परोक्ष के आवरण में हैं। अतः इस बात में बिगड़ना और क्रोधित होना उचित नहीं। क्या जिस सर्वशक्तिमान ख़ुदा ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को पैदा किया वह ऐसा ही एक और मनुष्य या उससे अच्छा पैदा नहीं कर सकता?① यदि पवित्र कुर्आन की किसी

① हाशिया - ख़ुदा तआला के कार्यों का कोई अन्त नहीं पा सकता। बनी इस्राईल में

हजरत मूसा अलैहिस्सलाम महान नबी गुज़रे हैं जिन को खुदा तआला ने तौरात दी तथा जिनकी महानता एवं प्रतिष्ठा के कारण बलअम बाऊर भी उनका मुक़ाबला करके तिरस्कृत हुआ तथा खुदा ने उसकी उपमा कुत्ते से दी। वही मूसा है जिसको एक देहाती व्यक्ति के आध्यात्मिक ज्ञानों के सामने लज्जित होना पड़ा तथा उन परोक्ष के भेदों का कुछ पता न लगा जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है - **فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَا آتَيْنَاهُ - رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِثْلَ الَّذِي أَعْلَمَا** (अलकहफ़-66) इसी से।

माध्यम से अपना प्रताप प्रकट करेगा तथा अपने दर्शन कराएगा। कुफ़्र और अनेकेश्वरवाद का अधिक प्रभुत्व रहा और वह खामोश रहा तथा एक गुप्त खजाने की भांति हो गया। अब चूंकि अनेकेश्वरवाद और मानव-उपासना का प्रभुत्व चरमोत्कर्ष तक पहुंच गया तथा इस्लाम उसके पैरों के नीचे कुचला गया। इसलिए खुदा तआला ने कहा कि मैं पृथ्वी पर आऊंगा और वे प्रकोपपूर्ण निशान दिखाऊंगा कि जब से आदम की नस्ल ने जन्म लिया है कभी नहीं दिखाए। इस में नीति यह है कि प्रतिरक्षा शत्रु के आक्रमण के अनुसार होती है। अतः मनुष्य की उपासना करने वालों की जितनी अनेकेश्वरवाद में अतिशयता है तथा वह अतिशयता भी चरम सीमा तक पहुंच गई है इसलिए अब खुदा स्वयं लड़ेगा। वह मनुष्य को कोई तलवार नहीं देगा और न कोई जिहाद होगा हां अपना हाथ दिखाएगा। यहूदियों की यह आस्था है कि दो मसीह प्रकट होंगे तथा अन्तिम मसीह (जिस से इस युग का मसीह अभिप्राय है) पहले मसीह से श्रेष्ठ होगा तथा ईसाई एक ही मसीह को मानते हैं परन्तु कहते हैं कि वही मसीह इब्ने मरयम जो पहले प्रकट हुआ, पुनरागमन में बड़ी शक्ति और प्रताप के साथ प्रकट होगा तथा संसार के धर्मों का निर्णय करेगा। इसके अतिरिक्त यह भी कहते हैं कि इतने प्रताप और तेज के साथ प्रकट होगा कि प्रथम आगमन की इस से कोई तुलना नहीं।

बहरहाल ये दोनों धर्म मानते हैं कि आने वाला मसीह जो अन्तिम युग में आएगा अपने प्रताप और शक्तिशाली चमत्कारों की दृष्टि से प्रथम मसीह अथवा प्रथम आगमन से श्रेष्ठ है तथा इस्लाम ने भी अन्तिम मसीह का नाम हकम रखा है और समस्त संसार के धर्मों का निर्णय करने वाला तथा मात्र अपनी फूंक से काफ़िरों का वध करने वाला ठहराया है, जिसके अर्थ ये हैं कि खुदा उसके साथ होगा उसका ध्यान और दुआ विद्युत के समान कार्य करेगी और वह अकाट्य एवं निर्णायक तर्क इस प्रकार पूर्ण करेगा कि मानो मार देगा। अतः न अहले किताब (यहूदी, ईसाई) न मुसलमान इस बात को स्वीकार करते हैं कि प्रथम मसीह आने वाले मसीह से श्रेष्ठ है। यहूदी तो दो मसीह ठहरा कर अन्तिम मसीह को नितान्त

श्रेष्ठ समझते हैं और जो लोग अपने बोधभ्रम से केवल एक ही मसीह मानते हैं वे भी द्वितीय आगमन को नितान्त प्रतापी आगमन ठहराते हैं तथा प्रथम आगमन को उसकी तुलना में कुछ भी नहीं समझते। फिर जबकि खुदा और उसके रसूल ने तथा समस्त नबियों ने अन्तिम युग के मसीह को उसके कारनामों के कारण श्रेष्ठ कहा है तो फिर यह शैतानी भ्रम है कि यह कहा जाए कि तुम मसीह इब्ने मरयम से स्वयं को श्रेष्ठ क्यों ठहराते हो। प्रिय सज्जनो ! जब मैंने यह सिद्ध कर दिया कि मसीह इब्ने मरयम मृत्यु पा चुका है तथा आने वाला मसीह मैं हूँ। तो इस अवस्था में जो व्यक्ति पहले मसीह को श्रेष्ठ समझता है उसे हदीस और कुर्आन के नितान्त स्पष्ट आदेशों से सिद्ध करना चाहिए कि आने वाला मसीह कुछ वस्तु ही नहीं, न नबी कहला सकता है न हकम जो कुछ है पहला मसीह है। खुदा ने अपने वादे के अनुसार मुझे भेज दिया। अतः अब खुदा से लड़ो। हां मैं केवल नबी नहीं अपितु एक पहलू से नबी और एक पहलू से उम्मीती भी ताकि आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र शक्ति और वरदान की विशेषता सिद्ध हो।

प्रश्न - 2

आप ने सैकड़ों अपितु हजारों स्थान पर लिखा है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने धर्म के प्रसार के लिए तलवार नहीं उठाई किन्तु अब्दुल हकीम को जो पत्र लिखा है उसमें यह वाक्य है कि आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम धर्म के प्रचार के लिए पृथ्वी में रक्त की नहरें बहा दीं। इस का क्या अर्थ है ?

उत्तर - मैं अब भी कहता हूँ कि आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम धर्म को बल प्रयोग से नहीं फैलाया और जो तलवार उठाई गई वह इसलिए नहीं थी कि धमकी देकर इस्लाम स्वीकार कराया जाए अपितु इस में दो बातें दृष्टिगत थीं -

(1) एक तो ये लड़ाइयां प्रतिरक्षा के तौर पर थीं क्योंकि जब काफ़िरों ने आक्रमण करके तलवार के द्वारा इस्लाम को समाप्त करना चाहा तो इसके अतिरिक्त कोई चारा न था कि अपनी सुरक्षा के लिए तलवार उठाई जाती।

(2) पवित्र कुर्आन में इन लड़ाइयों से एक समय पूर्व यह भविष्यवाणी की गई

थी कि जो लोग इस रसूल को नहीं मानते खुदा उन पर अज़ाब उतारेगा चाहे तो आकाश से और चाहे तो पृथ्वी से और चाहे तो कुछ को कुछ की तलवार का स्वाद चखा दे। इसी प्रकार इस विषय से संबंधित और भी भविष्यवाणियां थीं जो अपने समय पर पूर्ण हुईं। अतः ज्ञात होना चाहिए कि जो पत्र मैंने अब्दुल हकीम खान को लिखा था उसमें मेरा आशय यही था कि यदि रसूल का मानना अनिवार्य नहीं है तो खुदा तआला ने इस रसूल के लिए यह अपना स्वाभिमान क्यों दिखाया कि काफ़िरो के रक्त की नहरें बहा दीं। यह सत्य है कि इस्लाम के लिए बल-प्रयोग नहीं किया गया, परन्तु चूंकि पवित्र कुर्आन में यह वादा मौजूद है कि जो लोग इस रसूल को झूठा कहने वाले तथा इन्कारी हैं वे अज़ाब से तबाह किए जाएंगे। अतः उनको दण्डित करने के लिए यह कारण सामने आया कि स्वयं उन काफ़िरो ने लड़ाइयों के लिए पहल की। अतः जिन लोगों ने तलवार उठाई वे तलवार ही से मारे गए। यदि रसूल का इन्कार करना खुदा के निकट सहज बात थी तथा इन्कार के बावजूद मोक्ष प्राप्त हो सकता था तो फिर इस अज़ाब को उतारने की क्या आवश्यकता थी जो ऐसे ढंग से उतरा कि संसार में उसका उदाहरण नहीं मिलता। अल्लाह तआला का कथन है - **إِنَّ يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ وَإِنْ يَكُ صَادِقًا يُصِيبْكُمْ** - **بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ** ① यदि यह रसूल झूठा है तो स्वयं तबाह हो जाएगा परन्तु यदि सच्चा है तो तुम्हारे बारे में जो अज़ाब के कुछ वादे किए गए हैं वे पूरे होंगे ②

अतः विचार करने का स्थान है कि यदि खुदा के रसूल पर ईमान लाना अनावश्यक है तो ईमान न लाने पर अज़ाब का वादा क्यों दिया गया। स्पष्ट है कि बलपूर्वक अपना धर्म स्वीकार कराना और तलवार के बल पर मुसलमान बनाना यह और बात है किन्तु उस व्यक्ति को दण्ड देना जो सच्चे रसूल की अवज्ञा करता

① अलमोमिन - 29

② 'कुछ' का शब्द इसलिए प्रयोग किया गया है कि अज़ाब का भय दिलाने वाली भविष्यवाणियों में यह आवश्यक नहीं कि वे समस्त ही पूर्ण हो जाएं अपितु कुछ का अंजाम क्षमा के साथ भी हो सकता है। इसी से।

है, मुकाबला करता है और कष्ट देता है यह और बात है। दण्ड देने के लिए यह बात शर्त नहीं है कि कोई व्यक्ति मुसलमान हो जाए अपितु इन्कार करते हुए मुकाबला करने वाले क़त्ल के पात्र हो चुके थे। फिर ख़ुदा तआला की ओर से उन्हें यह छूट दी गई थी कि इस्लाम स्वीकार कर लें तो वह दण्ड क्षमा कर दिया जाएगा। पुनः एक अन्य स्थान पर ख़ुदा तआला का कथन है -

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ

(भाग-3, सूरह आले इमरान-5)

अर्थात् जो लोग ख़ुदा तआला की आयतों के इन्कारी हो गए उनके लिए कठोर अज़ाब मुकद्दर है तथा ख़ुदा प्रभुत्वशाली बदला लेने वाला है। अतः नितान्त स्पष्ट है कि इस आयत में भी इन्कार करने वालों के लिए अज़ाब का वादा है इसलिए आवश्यक था कि उन पर अज़ाब आए। अतः ख़ुदा तआला उन पर तलवार का अज़ाब लाया। पुनः पवित्र कुर्आन में एक अन्य स्थान पर ख़ुदा का कथन है -

إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِنْ خِلَافٍ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ذَلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ○

(भाग-6, अलमाइदह-34)

अर्थात् उन लोगों का बदला जो ख़ुदा और उसके रसूल से लड़ते हैं और धरती में उपद्रव फैलाते हैं इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि वे क़त्ल किए जाएं या फांसी दिए जाएं या उनके हाथ एवं पैर विपरीत दिशाओं से काटे जाएं या देश से निष्कासित करके बन्दी बनाए जाएं। उनका यह अपमान इस संसार में है तथा परलोक (आखिरत) में बहुत बड़ा अज़ाब है। अतः यदि ख़ुदा तआला के निकट हमारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अवज्ञा और उसका मुकाबला कुछ वस्तु नहीं था तो ऐसे इन्कार करने वालों को जो अद्वैतवादी थे (जैसे कि यहूदी) इन्कार और मुकाबला करने के कारण इतना कठोर दण्ड अर्थात् भांति-भांति के अज़ाबों से मृत्यु दण्ड देने के लिए ख़ुदा के ग्रन्थ में क्यों आदेश लिखा गया

तथा क्यों ऐसे कठोर दण्ड दिए गए क्योंकि दोनों ओर अद्वैतवादी थे। इस ओर भी तथा उस ओर भी और किसी गिरोह में कोई अनेकेश्वरवादी न था तथा इसके बावजूद यहूदियों पर बिल्कुल दया नहीं आई। उन एकेश्वरवाद लोगों को केवल इन्कार तथा रसूल का मुकाबला करने के कारण बुरी तरह क्रल्ल किया गया, यहां तक कि एक बार दस हजार^① यहूदी एक ही दिन में क्रल्ल किए गए जबकि उन्होंने केवल अपने धर्म की रक्षा के लिए इन्कार तथा मुकाबला किया था तथा अपने विचार में पक्के अद्वैतवादी थे और खुदा को एक समझते थे।

हां यह बात अवश्य स्मरण रखने योग्य है कि निःसन्देह हजारों यहूदी क्रल्ल किए गए परन्तु इस उद्देश्य से नहीं कि ताकि वे मुसलमान हो जाएं अपितु केवल इस उद्देश्य से कि खुदा के रसूल का मुकाबला किया। इसलिए वे खुदा के निकट दण्ड के पात्र हो गए तथा उनका रक्त पानी के समान पृथ्वी पर बहाया गया। अतः स्पष्ट है कि यदि एकेश्वरवाद ही पर्याप्त होता तो यहूदियों का कोई अपराध न था, वे भी तो अद्वैतवादी थे। वे केवल इन्कार तथा रसूल का मुकाबला करने के कारण क्यों खुदा के निकट दण्ड के पात्र ठहरे?

प्रश्न - 3

मान्यवर ! आपने अब्दुल हकीम को जो पत्र लिखा है कि स्वाभाविक ईमान एक ला 'नती वस्तु है। इस का अर्थ भी समझ में नहीं आया।

① यहूदी कबीला बनू कुरैजा के जो युवा एक दिन में क्रल्ल किए गए थे, इतिहासों में उनकी संख्या भिन्न-भिन्न वर्णन की गई है। कुछ ने चार सौ, कुछ ने सात सौ, कुछ ने आठ सौ कुछ ने नौ सौ लिखी है तथा संभव है कि कोई वर्णन इससे अधिक का भी हो। इसलिए विदित होता है कि हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यहां दस सौ अंकों में लिखा था जिसे लिपिक ने दस हजार समझ लिया और इस पृष्ठ की अन्तिम पंक्ति में जो हजारों का वर्णन है उन से अभिप्राय वे बहुसंख्यक यहूदी हैं जो विभिन्न युद्धों तथा भिन्न-भिन्न समयों में क्रल्ल हुए। उचित बात तो खुदा ही जानता है। (संशोधक)

उत्तर - मेरे पत्र का सारांश और उद्देश्य यह है कि जो ईमान ख़ुदा तआला के रसूल के माध्यम से प्राप्त नहीं होता और मात्र मानव स्वभाव से ख़ुदा तआला के अस्तित्व की आवश्यकता महसूस करता है जैसा कि दार्शनिकों का विश्वास है इसका अन्तिम परिणाम प्रायः ला'नत ही होता है क्योंकि ऐसा ईमान अंधकार से खाली नहीं होता। इसलिए वे लोग शीघ्र ही अपने ईमान से फिसल कर नास्तिक बन जाते हैं। प्रथम तो स्वभाव एवं प्रकृति के नियम पर बल देते हैं परन्तु चूंकि नबूवत रूपी दीपक का प्रकाश साथ नहीं होता शीघ्र अंधकार में पड़कर पथ भ्रष्ट हो जाते हैं। शुभ एवं खतरे से सुरक्षित वह ईमान है जो ख़ुदा के रसूल के द्वारा प्राप्त होता है, क्योंकि वह ईमान केवल उस सीमा तक नहीं होता कि ख़ुदा के अस्तित्व की एक आवश्यकता है वरन् सैकड़ों आकाशीय निशान उसे इस सीमा तक पहुंचा देते हैं कि वास्तव में वह ख़ुदा मौजूद है। अतः वास्तविकता यह है कि ख़ुदा पर ईमान को सुदृढ़ करने के लिए अंबिया^अ पर ईमान लाना कीलों (के धंसने) की तरह है और ख़ुदा पर उस समय तक ईमान क़ायम रह सकता है जब तक कि रसूल पर ईमान हो और जब रसूल पर ईमान न रहे तो ख़ुदा पर ईमान लाने में भी कोई विपत्ति आ जाती है। और शुष्क एकेश्वरवाद शीघ्र गुमराही में डालता है। इसीलिए मैंने कहा कि स्वाभाविक ईमान ला'नती है जिसका आधार केवल स्वभाव है, जिसकी नींव अकेले स्वभाव पर है रसूल के प्रकाश से प्राप्त नहीं अन्ततः वह ला'नती विचार तक पहुंचा देता है। इसलिए ख़ुदा के रसूल और उसके चमत्कारों को छोड़कर जिसका ईमान केवल स्वभाव की दृष्टि से है वह एक रेत की दीवार है वह आज भी तबाह हुआ और कल भी। ईमान वास्तव में वही ईमान है जो ख़ुदा के रसूल को पहचानने के पश्चात् प्राप्त होता है। उस ईमान का पतन नहीं होता तथा उस का अंजाम बुरा नहीं होता। हां जो व्यक्ति सरसरी तौर पर रसूल का अनुयायी हो गया और उसे नहीं पहचाना और उसके प्रकाशों से अवगत नहीं हुआ, उसका ईमान भी कुछ ईमान नहीं अन्ततः वह अवश्य मुर्तद होगा जैसा कि मुसैलिमा कज़़ाब और अब्दुल्लाह बिन अबी सरह तथा अबैदुल्लाह बिन जहश आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में और यहूदा इसक्रियूती तथा पांच सौ अन्य ईसाई हज़रत ईसा^अ के युग में तथा चिराग़दीन जम्मूनी एवं अब्दुल हकीम खान हमारे इस युग में मुर्तद हुए।

प्रश्न - 4

पूर्व पुस्तकों “इज़ाला औहाम” इत्यादि में लिखा है कि ये भी कोई भविष्यवाणियां हैं कि भूकम्प आएंगे, संक्रामक रोग फैलेंगे, युद्ध होंगे, अकाल पड़ेंगे किन्तु अब कई लेखों में देखा गया है कि उन्हीं भविष्यवाणियों को जनाब ने महान भविष्यवाणियां ठहराया है।

उत्तर - यह बात उचित नहीं है कि मैंने उन्हीं भविष्यवाणियों को महान ठहराया है। प्रत्येक वस्तु की श्रेष्ठता अथवा निम्नता उसकी मात्रा, विवरण तथा उसकी विशेष अथवा सामान्य परिस्थितियों से प्रकट होती है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने जिस देश में ताऊन और भूकम्पों की सूचना दी थी वह देश ऐसा है कि उस में प्रायः ताऊन का चक्र रहता है तथा कश्मीर की भांति उसमें भूकम्प भी आते रहते हैं, अकाल भी पड़ते हैं तथा युद्धों का सिलसिला भी जारी रहा है और हज़रत मसीह की भविष्यवाणी में न किसी विलक्षण भूकम्प का वर्णन है और न किसी विलक्षण और अद्भुत ताऊन या संक्रामक रोग का। इस अवस्था में कोई बुद्धिमान ऐसी भविष्यवाणियों को मान-सम्मान की दृष्टि से नहीं देख सकता।^①

परन्तु जिस देश के लिए^② मैंने ताऊन की सूचना दी तथा भयानक भूकम्पों की

① हां यह भी संभव है कि मूल भविष्यवाणियों में अक्षरांतरण हो गया हो जब कि एक इंजील की बीसियों इन्जीलों बन गई हैं। तो किसी इबारत में अक्षरांतरण होना कौन सी ऐसी बात है जो बुद्धि से दूर हो सकती है परन्तु हमारी मौजूदा इंजील पर आपत्ति है तथा खुदा ने इन इंजीलों को अक्षरांतरित और परिवर्तित ठहराकर हमें इन आरोपों का अवसर दिया है। इसी से।

② यह भी स्मरण रखना चाहिए कि हज़रत मसीह की भविष्यवाणियों में जो इंजीलों में पाई जाती हैं केवल साधारण और नर्म शब्द हैं किसी भयंकर एवं भयावह भूकम्प या ताऊन का उनमें वर्णन नहीं है, किन्तु मेरी भविष्यवाणियों में इन दोनों घटनाओं के बारे में ऐसे शब्द हैं जो उन्हें विलक्षण ठहराते हैं। इसी से।

सूचना दी है वे इस देश की स्थिति की दृष्टि से वास्तव में महान भविष्यवाणियां हैं, क्योंकि यदि इस देश के सैकड़ों वर्ष के इतिहास पर दृष्टि डाली जाए तब भी सिद्ध नहीं होता कि कभी इस देश में ताऊन पड़ी है, कहां ऐसी ताऊन जिसने थोड़े ही समय में लाखों मनुष्यों का विनाश कर दिया। अतः ताऊन के संबंध में मेरी भविष्यवाणियों के शब्द ये हैं - कि देश का कोई भाग ताऊन से सुरक्षित नहीं रहेगा और बड़ी भयंकर तबाही आएगी और वह तबाही लम्बे समय तक रहेगी। अतः क्या कोई सिद्ध कर सकता है कि जिस प्रकार कि अब भविष्यवाणी के अनुसार भयंकर विनाशलीला प्रकट हुई इस देश में पहले कभी प्रकट हुई थी, कदापि नहीं। रहा भूकम्प तो वह भी मेरी ओर से कोई साधारण भविष्यवाणी नहीं थी वरन् भविष्यवाणी में ये शब्द थे कि इससे देश का एक भाग का तबाह हो जाएगा जैसा कि स्पष्ट है कि वह विनाश जो इस भूकम्प से कांगड़ा और भागसू खास ज्वालामुखी में हुआ दो हजार वर्ष तक इसका उदाहरण नहीं मिलता कि कभी भूकम्प से ऐसी हानि हुई। अतः अंग्रेज अन्वेषकों ने भी यही गवाही दी है। अतः ऐसी अवस्था में मुझ पर आपत्ति करना मात्र जल्दबाजी है।

प्रश्न - 5

मान्यवर ने भिन्न-भिन्न तौर पर बहुत से विज्ञापनों में लिखा है कि धर्म की खराबी के कारण संसार में अज्ञाब नहीं आता वरन् उद्दण्डता, चपलता तथा रसूलों के साथ उपहास करने के परिणामस्वरूप अज्ञाब आता है। आज सैनफ्रांसिस्को इत्यादि में जो भूकंप आए हैं आपने उनको अपने सत्यापन का निशान ठहराया है। यह बात समझ में नहीं आती कि ये भूकम्प आप को झुठलाने के कारण आए हैं ?

उत्तर - मैंने कभी नहीं कहा कि समस्त भूकम्प सैनफ्रांसिस्को आदि स्थानों में आए हैं ये केवल मुझे झुठलाने के कारण आए हैं और किसी अन्य बात का इसमें हस्तक्षेप नहीं। हां मैं कहता हूं कि हां मुझे झुठलाना इन भूकम्पों के प्रकटन का कारण हुआ है। बात यह है कि खुदा तआला के समस्त नबी इस बात पर सहमत हैं कि सदैव से खुदा का नियम इसी प्रकार से जारी है कि जब संसार हर प्रकार

के पाप करता है तथा उसके पापों का घड़ा भर जाता है तब उस युग में खुदा अपनी ओर से किसी को अवतरित करता है तथा संसार का कोई भाग उसको झुठलाता है। तब उसका प्रादुर्भाव दूसरे उद्दण्ड लोगों को दण्ड देने के लिए जो पहले अपराधी हो चुके हैं एक प्रेरक बन जाता है तथा जो व्यक्ति अपने पहले पापों का दण्ड पाता है उस के लिए इस बात का ज्ञात होना आवश्यक नहीं कि इस युग में खुदा की ओर से कोई नबी या रसूल भी मौजूद है। जैसा कि खुदा तआला का कथन है - (अनुवाद- और हम कदापि अज़ाब नहीं देते जब तक कि कोई रसूल न भेज दें) अतः इस से अधिक मेरा उद्देश्य न था कि इन भूकम्पों का कारण मुझे झुठलाना हो सकता है। आदिकाल से यही खुदा का नियम है जिस से किसी को इन्कार नहीं हो सकता। अतः सैनफ्रांसिस्को इत्यादि स्थानों के रहने वाले जो भूकम्प तथा अन्य आपदाओं से तबाह हो गए हैं, यद्यपि उन पर अज़ाब आने का मूल कारण उनके पहले पाप थे, परन्तु उनको तबाह करने वाले ये भूकम्प मेरी सच्चाई का एक निशान थे, क्योंकि खुदा के अनादि नियम के अनुसार उद्दण्ड लोग किसी रसूल के आगमन के समय तबाह किए जाते हैं तथा इस कारण से कि मैंने बराहीन अहमदिया तथा अपनी बहुत सी पुस्तकों में यह सूचना दी थी कि मेरे युग में संसार में बहुत से असाधारण भूकम्प आएंगे तथा अन्य आपदाएं भी आएंगी और उनसे एक संसार तबाह हो जाएगा। अतः इसमें क्या सन्देह है कि मेरी भविष्यवाणियों के पश्चात् संसार में भूकम्पों एवं अन्य आपदाओं का क्रम आरंभ हो जाना मेरी सच्चाई के लिए एक निशान है। स्मरण रहे कि खुदा के रसूल को पृथ्वी के किसी भी क्षेत्र में झुठलाया जाए परन्तु उस झुठलाने के समय दूसरे अपराधी भी पकड़े जाते हैं जो अन्य देशों के रहने वाले जिनको इस रसूल की सूचना भी नहीं। जैसा कि नूह के समय में हुआ कि एक क्रौम के झुठलाने से एक संसार पर अज़ाब आया वरन् पशु-पक्षी भी उस अज़ाब से बाहर न रहे।

अतः खुदा का नियम इसी प्रकार से जारी है कि किसी सच्चे को सीमा से अधिक झुठलाया जाए या उसे कष्ट दिया जाए तो संसार में नाना प्रकार की विपत्तियां आती हैं। खुदा तआला की समस्त किताबें यही वर्णन करती हैं और पवित्र कुर्आन भी यही कहता जैसा कि हज़रत मूसा को झुठलाने के कारण मिस्र देश पर नाना प्रकार की आपदाएं आईं, जुओं की वर्षा हुई, मेंढक बरसे, रक्त बरसा तथा दुर्भिक्ष पड़ा। हालांकि मिस्र देश के दूर-दूर रहने वालों को हज़रत मूसा^अ की खबर भी नहीं थी और न उनका इसमें कुछ पाप था और न केवल यह अपितु समस्त मिस्रियों के पलौटे बच्चे मारे गए तथा फिरौन एक अवधि तक उन आपदाओं से सुरक्षित था तथा जो अपरिचित मात्र थे वे मारे गए और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के युग में जिन लोगों ने हज़रत ईसा को सलीब से क्रल्ल करना चाहा था उनका तो बाल बांका भी न हुआ तथा वे आराम से जीवन व्यतीत करते रहे, किन्तु चालीस वर्ष के पश्चात् जब उस शताब्दी का अन्त होने वाला था तो तीतूस रूमी के हाथ से हज़ारों यहूदी क्रल्ल किए गए और ताऊन भी फैली और पवित्र कुर्आन से सिद्ध है कि यह अज़ाब केवल हज़रत ईसा के कारण था।

इसी प्रकार आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में सात वर्ष का अकाल पड़ा और इस अकाल में प्रायः निर्धन ही मारे गए, बड़े-बड़े दुःख देने वाले उपद्रवी सरदार बहुत समय तक अज़ाब से बचे रहे। सारांश यह कि खुदा का नियम इसी प्रकार से जारी है कि जब कोई खुदा की ओर से आता है और उसे झुठलाया जाता है तो आकाश से भिन्न-भिन्न प्रकार की आपदाएं आती हैं जिनमें प्रायः ऐसे लोग पकड़े जाते हैं जिनका इस झुठलाने से कोई संबंध नहीं। फिर शनैः शनैः कुफ़्र के सरदार पकड़े जाते हैं। सब से अन्त में उद्दण्ड लोगों का समय आता है। इसी की ओर अल्लाह तआला ने इस आयत में संकेत दिया है -

أَنَا أَنَا فِي الْأَرْضِ نَقُصُّهَا مِنْ أَطْرَافِهَا^①

अर्थात् हम शनैः शनैः पृथ्वी की ओर आते जाते हैं। मेरे इस बयान में कुछ उन

नादानों के आरोपों का उत्तर आ गया है जो कहते हैं कि काफ़िर तो मौलवियों ने कहा था परन्तु निर्धन लोग ताऊन से मारे गए तथा कांगड़ा और भागसू के पर्वत के रहने वाले सैकड़ों लोग भूकम्प से तबाह हो गए उन का क्या दोष था, उन्होंने कौन सा झुठलाया था। अतः स्मरण रहे कि जब ख़ुदा के किसी भेजे हुए को झुठलाया जाता है चाहे उसे कोई क्रौम विशेष झुठलाए या किसी विशेष भू भाग में हो परन्तु ख़ुदा तआला का स्वाभिमान सार्वजनिक अज़ाब उतारता है तथा आकाश से सामान्यतया विपत्तियां आती हैं और प्रायः ऐसा होता है कि वास्तविक उद्दण्ड लोग बाद में पकड़े जाते हैं जो उपद्रव के मूल स्रोत होते हैं जैसा कि उन प्रकोपी निशानों से जो हज़रत मूसा ने फ़िरऔन के सामने दिखाए, फ़िरऔन की कुछ हानि न हुई केवल निर्धन लोग मारे गए परन्तु अन्ततः ख़ुदा ने फ़िरऔन को उसकी सेना सहित डुबो दिया। यह अल्लाह का नियम है जिस से कोई बुद्धिमान इन्कार नहीं कर सकता।

प्रश्न - 6

मान्यवर ने हज़ारों स्थानों पर उल्लेख किया है कि कलिमा पढ़ने वाले तथा अहले क़िब्ला का काफ़िर कहना किसी प्रकार उचित नहीं है। इससे स्पष्ट है कि उन मोमिनों के अतिरिक्त जो आप को काफ़िर कह कर काफ़िर बन जाएं केवल आप के न मानने से कोई काफ़िर नहीं हो सकता परन्तु आप अब्दुल हकीम खान को आप लिखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति जिसको मेरा निमंत्रण पहुंचा है और उसने मुझे स्वीकार नहीं किया वह मुसलमान नहीं है। इस बयान तथा पहली पुस्तकों के बयान में विरोधाभास है अर्थात् पहले आप “तिरयाकुल कुलूब” इत्यादि में लिख चुके हैं कि मेरे न मानने से कोई काफ़िर नहीं होता और अब आप लिखते हैं कि मेरे इन्कार से काफ़िर हो जाता है।

उत्तर - यह बड़ी आश्चर्यजनक बात है कि आप काफ़िर कहने वाले और न मानने वाले को दो प्रकार के मनुष्य ठहराते हैं हालांकि ख़ुदा के निकट एक ही प्रकार है क्योंकि जो व्यक्ति मुझे नहीं मानता वह इसी कारण नहीं मानता कि वह मुझे झूठ

गढ़ने वाला ठहराता है, किन्तु अल्लाह तआला का कथन है कि खुदा पर झूठ बनाने वाला सब काफ़िरों से अधिक काफ़िर है। जैसा कि अल्लाह तआला कहता है -

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۖ^①

अर्थात् बड़े काफ़िर दो ही हैं - एक खुदा पर झूठ गढ़ने वाला^② - दूसरा खुदा के कलाम को झुठलाने वाला। अतः जबकि मैंने एक झुठलाने वाले के निकट खुदा पर झूठ गढ़ा है। ऐसी स्थिति में न केवल मैं काफ़िर अपितु बड़ा काफ़िर हुआ और यदि मैं झूठ गढ़ने वाला नहीं तो निःसन्देह वह कुफ़र उस पर पड़ेगा जैसा कि अल्लाह तआला ने इस आयत में स्वयं कहा है। इसके अतिरिक्त जो मुझे नहीं मानता वह खुदा और रसूल को भी नहीं मानता क्योंकि मेरे बारे में खुदा तथा रसूल की भविष्यवाणी मौजूद है अर्थात् रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूचना दी थी कि अन्तिम युग में मेरी उम्मत में से ही मसीह मौजूद आएगा तथा आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी सूचना दी थी कि मैं मे'राज की रात में मसीह इब्ने मरयम को उन नबियों में देख आया हूँ जो इस संसार से गुज़र गए हैं और यह्या शहीद के पास उन्हें दूसरे आसमान में देखा है तथा खुदा तआला ने पवित्र कुर्आन में ख़बर दी कि मसीह इब्ने मरयम मृत्यु पा चुका है और खुदा तआला ने मेरी सच्चाई की गवाही के लिए तीन लाख से अधिक आकाशीय निशान प्रकट किए तथा आकाश पर रमज़ान के महीने में सूर्य एवं चन्द्र-ग्रहण हुआ। अतः जो व्यक्ति खुदा और रसूल के बयान को नहीं मानता और कुर्आन को झुठलाता है तथा जान-बूझ कर खुदा तआला के निशानों को अस्वीकार करता है तथा सैकड़ों

① अलआराफ़ - 38

② ज़ालिम से अभिप्राय यहां काफ़िर है। इस पर संदर्भ यह है कि झूठ गढ़ने वाले की तुलना में खुदा की पवित्र किताब कुर्आन को झुठलाने वाले को ज़ालिम ठहराया है तथा निःसन्देह वह व्यक्ति जो खुदा तआला के कलाम को झुठलाता है काफ़िर है। अतः जो व्यक्ति मुझे नहीं मानता वह मुझे झूठ गढ़ने वाला ठहरा कर मुझे काफ़िर ठहराता है। इसलिए मुझे काफ़िर ठहराने के कारण स्वयं काफ़िर बनता है। इसी से।

निशानों के बावजूद मुझे झूठ गढ़ने वाला ठहराता है तो वह मोमिन क्योंकर हो सकता है। यदि वह मोमिन है तो मैं झूठ गढ़ने के कारण काफ़िर ठहरा क्योंकि मैं उनकी दृष्टि में झूठ गढ़ने वाला हूँ। अल्लाह तआला का पवित्र क़ुर्आन में कथन है -

قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوا وَلَكِنْ قُولُوا

أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ^①

अर्थात् अरब के देहाती लोग कहते हैं कि हम ईमान लाए। उनसे कह दो कि तुम ईमान नहीं लाए। हां यों कहो कि हमने अनुसरण ग्रहण कर लिया है और ईमान अभी तुम्हारे हृदयों में प्रविष्ट नहीं हुआ। अतः जबकि खुदा अनुसरण करने वालों का नाम मोमिन नहीं रखता, फिर वे लोग खुदा के निकट मोमिन क्योंकर हो सकते हैं जो स्पष्ट तौर पर खुदा के कलाम को झुठलाते हैं तथा खुदा तआला के हज़ारों निशान देखकर जो पृथ्वी और आकाश में प्रकट हुए फिर भी मुझे झुठलाने से पीछे नहीं हटते। वे स्वयं इस बात का इक्रार करते हैं कि यदि मैं झूठ गढ़ने वाला नहीं तथा मोमिन हूँ तो ऐसी स्थिति में वे मुझे झूठा और काफ़िर कहने के पश्चात् काफ़िर हुए और मुझे काफ़िर ठहरा कर अपने कुफ़्र की मुहर लगा दी। यह एक शरीअत से संबंध रखने वाला विषय है कि मोमिन को काफ़िर कहने वाला अन्ततः काफ़िर हो जाता है। अतः जब कि दो सौ मौलवियों ने मुझे काफ़िर ठहराया और मुझ पर कुफ़्र का फ़त्वा लिखा गया और उन्हीं के फ़त्वे से यह बात सिद्ध है कि मोमिन को काफ़िर कहने वाला काफ़िर हो जाता है और काफ़िर को मोमिन कहने वाला भी काफ़िर हो जाता है। अतः इस बात का सरल उपाय है कि यदि दूसरे लोगों में सच्चाई और ईमान का बीज है और वे कपटाचारी नहीं हैं तो उन्हें चाहिए कि इन मौलवियों के बारे में एक लम्बा विज्ञापन प्रत्येक मौलवी के नाम के विवरण के साथ प्रकाशित कर दें कि ये सब काफ़िर हैं

क्योंकि उन्होंने एक मुसलमान को काफ़िर बनाया। तब मैं उनको मुसलमान समझ लूंगा इस शर्त पर कि उनमें किसी कपटाचार का सन्देह न पाया जाए तथा खुदा के स्पष्ट चमत्कारों को झुठलाने वाले न हों अन्यथा अल्लाह तआला का यह कथन है - ^① إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرَجَةِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ अर्थात् कपटाचारी नर्क के सबसे निचली तह में डाले जाएंगे तथा हदीस में यह भी कि ^② مَا زَنَا زَانٍ وَهُوَ مُؤْمِنٌ وَمَا سَرَقَ سَارِقٌ وَهُوَ مُؤْمِنٌ अर्थात् कोई व्यभिचारी व्यभिचार की अवस्था में तथा कोई चोर चोरी की अवस्था में मोमिन नहीं होता फिर कपटाचारी कपटाचार की अवस्था में मोमिन क्योंकर हो सकता है। यदि यह बात ठीक नहीं है कि किसी को काफ़िर कहने से मनुष्य स्वयं काफ़िर हो जाता है तो मुझे अपने मौलवियों का फ़तवा दिखा दें मैं स्वीकार कर लूंगा। और यदि काफ़िर हो जाता है तो दौ सौ मौलवियों के नामों से संबंधित एक विज्ञापन प्रकाशित कर दें। इसके पश्चात् हराम होगा कि मैं उनके इस्लाम में संदेह करूं इस शर्त के साथ कि उनमें कोई पाखंड न पाया जाए।^③

① अन्निसा - 146

② सही बुखारी में इसी अर्थ की रिवायत का इस प्रकार उल्लेख है لَا يَزْنِي الزَّانِي حِينَ يَزْنِي وَهُوَ مُؤْمِنٌ وَلَا يَسْرِقُ حِينَ يَسْرِقُ وَهُوَ مُؤْمِنٌ

③ जैसा कि मैंने उल्लेख किया काफ़िर को मोमिन घोषित करने से इन्सान काफ़िर हो जाता है क्योंकि जो व्यक्ति वास्तव में काफ़िर है वो उसके कुफ़्र का इन्कार करता है और मैं देखता हूँ कि जितने लोग मुझ पर ईमान नहीं लाते वे सब के सब ऐसे हैं कि उन सभी लोगों को वह मोमिन कहते हैं जिन्होंने मुझे काफ़िर ठहराया है। अतः मैं अब भी क़िबला वालों को काफ़िर नहीं कहता परन्तु जिन लोगों में स्वयं उन्हीं के हाथ से कुफ़्र का कारण पैदा हो गया है उनको कैसे मोमिन कह सकता हूँ। इसी से।

प्रश्न - 7

दावत (इस्लाम का संदेश) पहुंच जाने से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर - दावत (अर्थात् इस्लाम का सन्देश) पहुंचाने में दो बातें आवश्यक होती हैं।

प्रथम - यह कि वह व्यक्ति जो खुदा की ओर से भेजा गया है वह लोगों को सूचना दे दे कि मैं खुदा की ओर से भेजा गया हूं तथा उन्हें उनकी गलतियों पर सतर्क करे कि अमुक-अमुक आस्था में तुम गलती पर हो अथवा अमुक-अमुक क्रियात्मक दशा में तुम दोषी हो।

द्वितीय - यह कि आकाशीय निशानों तथा बौद्धिक एवं पुस्तकीय तर्कों द्वारा अपना सच्चा होना सिद्ध करे। खुदा का नियम इस प्रकार से जारी है कि प्रथम अपने नबियों और रसूलों को इतनी छूट देता है कि संसार के बहुत से भाग में उनका नाम फैल जाता है तथा उनके दावे से लोग अवगत हो जाते हैं तथा फिर आकाशीय निशानों एवं बौद्धिक एवं पुस्तकीय तर्कों द्वारा लोगों पर अकाट्य एवं निर्णायक तर्क पूर्ण कर देता है और संसार में विलक्षण तौर पर ख्याति देना और प्रकाशमान निशानों के साथ अकाट्य एवं निर्णायक तर्क को पूर्ण करना खुदा तआला के निकट असंभव नहीं। जिस प्रकार तुम देखते हो कि एक पल में आकाश के एक किनारे से बिजली चमकती और दूसरे किनारे तक फैल जाती है। इसी प्रकार खुदा के आदेश से खुदा के रसूलों को ख्याति दी जाती है तथा खुदा के फ़रिश्ते पृथ्वी पर उतरते हैं और सौभाग्यशाली लोगों के हृदयों में डालते हैं कि जिन मार्गों को तुम ने धारण कर रखा है वे सही नहीं हैं। अतः ऐसे लोग सद्मार्ग की खोज में लग जाते हैं और दूसरी ओर खुदा तआला ऐसे साधन उत्पन्न कर देता है कि उसके समय के इमाम की सूचना उन लोगों तक पहुंच जाती है। विशेष तौर पर यह युग तो वह युग है कि कुछ दिनों में एक प्रसिद्ध डाकू की भी बदनामी के साथ सम्पूर्ण संसार में प्रसिद्धि हो सकती है तो क्या खुदा तआला के बन्दे जिनके साथ हर समय खुदा है वे इस संसार में प्रसिद्धि नहीं पा सकते और गुप्त रहते हैं

और खुदा उनकी प्रसिद्धि पर समर्थ नहीं होता।^① मैं देखता हूँ कि खुदा तआला की कृपा इस प्रकार से मेरे साथ है कि मेरे अकाट्य और निर्णायक तर्क पूर्ण करने के लिए तथा अपने नबी करीम^स के धर्म-प्रचार के लिए खुदा तआला ने वे साधन निर्धारित कर रखे हैं जो इस से पूर्व किसी नबी को प्राप्त नहीं हुए थे। अतः मेरे समय में विभिन्न देशों के परस्पर संबंध सवारी, रेल, तार तथा डाक-व्यवस्था जल-थल यात्रा के कारण व्यवस्था इतनी विकसित हो गई है कि मानो अब समस्त देश एक ही देश बन गए हैं अपितु एक ही शहर बन गए हैं। यदि एक व्यक्ति भ्रमण करना चाहे तो थोड़े समय में समस्त संसार का भ्रमण करके आ सकता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकों का लिखना इतना सरल हो गया है कि छापने की ऐसी-ऐसी मशीनें आविष्कृत हो गई हैं कि जिस किसी मोटी पुस्तक की कुछ जिल्दें सौ

① आज से पच्चीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में खुदा तआला का यह इल्हाम मेरे बारे में मौजूद है। यह उस युग का इल्हाम है जबकि मैं एक अज्ञात जीवन व्यतीत करता था और मेरे पिता श्री तथा उनके कुछ परिचित लोगों के अतिरिक्त मुझे कोई जानता तक न था। वह इल्हाम यह है - *انت مئی بمنزلة توحیدی و تفریدی - فحان ان تعان و* - अर्थात् तू मुझ से मेरे एकेश्वरवाद एवं एकत्व के स्थान पर है। अतः वह समय आ गया है कि तुझे हर प्रकार की सहायता दी जाएगी और संसार में तू सम्मान के साथ प्रसिद्धि दिया जाएगा और प्रसिद्धि देने के वादे को एकेश्वरवाद एवं एकत्व के साथ वर्णन करना इस रहस्य की ओर संकेत है कि प्रताप और प्रतिष्ठा के साथ प्रसिद्धि पाना भागीदार रहित एक खुदा का वास्तविक अधिकार है। अतः जिस पर खुदा तआला की विशेष कृपा हो वह अपनी असीम तल्लीनता के कारण खुदा के एकेश्वरवाद का स्थानापन्न हो जाता तथा उसके तथा खुदा के बीच प्रथकता का भाव जाता रहता है तब खुदा तआला उसको उसी प्रकार सम्मान, प्रताप तथा श्रेष्ठता के साथ प्रसिद्धि प्रदान करता है जिस प्रकार कि वह स्वयं को प्रसिद्धि देता है क्योंकि एकेश्वरवाद एवं एकत्व यह अधिकार देता है कि वह ऐसा ही सम्मान प्राप्त करे। इसी से।

वर्ष में भी नहीं लिख सकते थे उसकी कई लाख प्रतियां एक-दो वर्ष में लिख सकते हैं और सम्पूर्ण देश में प्रकाशित हो सकती हैं तथा प्रत्येक दृष्टि से प्रचार के लिए भी इतनी आसानियां हो गई हैं कि हमारे देश में आज से सौ वर्ष पूर्व उनका नाम तथा निशान तक न था। और आज से पूर्व यदि पचास वर्षों पर दृष्टिपात किया जाए तो सिद्ध होगा कि अधिकतर लोग अनपढ़ और अशिक्षित थे, परन्तु अब स्कूलों की अधिकता के कारण जो देहात में भी स्थापित किए गए हैं कि लोगों में ज्ञान की इतनी योग्यता प्राप्त हो गई है कि वे धार्मिक पुस्तकों को बड़ी सरलता पूर्वक समझ सकते हैं। मेरी ओर से प्रचार की कार्यवाही यह हुई है कि मैंने पंजाब तथा हिन्दुस्तान के कुछ शहरों जैसे अमृतसर, लाहौर, जालन्धर, सियालकोट, देहली और लुधियाना इत्यादि में बड़े-बड़े समूहों में स्वयं जाकर खुदा तआला के सन्देश को पहुंचाया है तथा हजारों लोगों के समक्ष इस्लामी शिक्षा की विशेषताएं प्रस्तुत की हैं तथा सत्तर के लगभग पुस्तकें अरबी, फ़ारसी, उर्दू तथा अंग्रेज़ी भाषा में इस्लाम की सच्चाई के बारे में जिनकी प्रतियां एक लाख के लगभग होंगी लिख कर इस्लामी देशों में प्रसारित की हैं और इसी उद्देश्य के लिए कई लाख विज्ञापन प्रकाशित किए हैं ^① और खुदा तआला की कृपा तथा उस के मार्ग-दर्शन से तीन लाख से अधिक लोग मेरे हाथ पर अपने पापों से आज तक तौबा कर चुके हैं तथा यह कार्यवाही इतनी तीव्रता के साथ जारी है कि हर महीने सैकड़ों लोग बैअत में सम्मिलित हो जाते हैं तथा हमारे सिलसिले से अन्य देशों के लोग अनभिज्ञ नहीं हैं अपितु अमरीका तथा यूरोप के सुदूर देशों तक हमारा सन्देश पहुंच

① एक बार सोलह हजार विज्ञापन इस्लाम की सच्चाई के बारे में अंग्रेज़ी में अनुवाद करा के मैंने यूरोप और अमरीका के देशों में प्रकाशित कराए थे जो कई अंग्रेज़ी समाचार पत्रों में भी प्रकाशित हो गए थे और वे विज्ञापन यूरोप और अमरीका के उन स्थानों में पहुंचाए गए थे जहां लोग इस्लामी विशेषताओं से अनभिज्ञ थे तथा एक अमरीका का रहने वाला अंग्रेज़ 'विब' नामक जो अभी उन दिनों में मुसलमान नहीं हुआ था उसे भी वे विज्ञापन पहुंचे थे जिनके पश्चात् वह मुसलमान हो गया और अब तक वह मुसलमान है। इसी से।

गया है यहां तक कि अमरीका में कई लोग हमारी जमाअत में प्रवेश कर चुके हैं और उन्होंने स्वयं असाधारण भूकम्पों की भविष्यवाणियों को हमारे निशानों का प्रमाण देने के लिए अमरीका के सुविख्यात समाचारपत्रों में प्रकाशित कराया है तथा यूरोप के कुछ लोग भी हमारी जमाअत में सम्मिलित हैं। इस्लामी देशों का तो क्या वर्णन करें कि अब तक जैसा कि अभी मैंने वर्णन किया है तीन लाख से कुछ अधिक इस जमाअत में प्रवेश कर चुके हैं लोग हज़ारों निशानों से और अवगत हो चुके हैं तथा उनमें से अधिकतर सदाचारी एवं सौभाग्यशाली हैं।^①

① **हाशिया** - खेद कि हमारी जमाअत की ईमानदारी और निष्ठा पर आपत्ति करने वाले सच्चाई और ईमानदारी से काम नहीं लेते। इस जमाअत में कुछ लोगों ने अपनी दृढ़ता के वे आदर्श स्थापित किए हैं जिनका इस युग में उदाहरण मिलना कठिन है। उदाहरणतया एक खुदा से डरने वाले तथा न्याय प्रिय व्यक्ति को मौलवी साहिबज़ादा अब्दुल-लतीफ़ साहिब शहीद की दृढ़ता पर न्यायसंगत दृष्टि डालनी चाहिए और विचार करना चाहिए कि क्या इस से बढ़कर कोई व्यक्ति संसार में दृढ़ता का नमूना प्रदर्शित कर सकता है। आदरणीय मौलवी साहिब एक प्रतिष्ठित अरबी ज्ञानों के प्रकाण्ड विद्वान थे तथा सारा जीवन हदीस और तफ़्सीर का पाठ देते हुए व्यतीत किया था, उन्हें इल्हाम भी होता था तथा पचास हज़ार के लगभग उनके अनुयायी और शिष्य थे तथा सांसारिक प्रतिष्ठा भी बहुत थी, यहां तक कि काबुल के सरदारों की दृष्टि में एक महान बुजुर्ग और समय के शैख के तौर पर मान्य थे तथा अंग्रेज़ी सरकार तथा रियासत में जागीर के स्वामी थे। उन्होंने मुझे सच्चा स्वीकार करने के परिणाम स्वरूप अपने प्राण दे दिए। उन्हें बहुत समझाया गया कि मेरा इन्कार कर दें किन्तु उन्होंने कहा कि मैं मूर्ख नहीं हूं। मैं भली भांति सोच-विचार करके ईमान लाया हूं मैं उन्हें त्याग नहीं सकता परन्तु प्राण त्याग दूंगा। वहां के अमीर (शासक) ने उन्हें कई बार समझाया कि आप हमारे महान बुजुर्ग हैं, लोग उपद्रव करते हैं समय की मांग को समझें। उन्होंने कहा - मैं धर्म को संसार से सर्वोपरि मानता हूं, मैं अपना ईमान नष्ट करना नहीं चाहता। मैं जानता हूं कि जिससे मैंने बैअत

प्रश्न - 8

यद्यपि हमारा ईमान है कि केवल शुष्क अद्वैतवाद मोक्ष का आधार नहीं हो सकता तथा आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण से अलग होकर कोई कर्म करना मनुष्य को मोक्ष पाने वाला नहीं बना सकता। किन्तु हार्दिक सन्तुष्टि के लिए

शेष हाशिया:- की है वह सच पर है और समस्त संसार के उत्तम हैं तथा आने वाला मसीह यही है ईसा की मृत्यु हो चुकी है, तब मौलवियों ने शोर मचाया कि काफ़िर हो गया क्यों न इसका वध किया जाए परन्तु अमीर ने फिर भी वध करने में विलम्ब किया। अन्त में यह तर्क प्रस्तुत किया कि ये लोग जिहाद के इन्कारी हैं कि अब ग़ैर क्रौमों से धर्म के लिए तलवार के साथ नहीं लड़ना चाहिए। अतः मौलवी साहिब ने इस आरोप से इन्कार न किया और कहा कि यही वादा है कि मसीह को खुदा आकाश से सहायता प्रदान करेगा। अब जिहाद निषिद्ध है। तत्पश्चात् वह बड़ी निर्दयता से संगसार (पत्थरों से मार कर वध) किए गए तथा उनके घर वालों को गिरफ़्तार करके रियासत काबुल के किसी सुदूर इलाके में पहुंचा दिए गए। उनकी जमाअत के लोग इस सिलसिले में सम्मिलित हो गए। अतः अब लज्जा और शर्म से विचार करना चाहिए कि एक महान एवं प्रतिष्ठित विद्वान से जो संसार और धर्म में सम्मान रखता था, जिसने मेरे लिए प्राण दिए अब्दुल हकीम की उस से क्या तुलना ! यदि वह मुर्तद हो गया तो ऐसे व्यक्ति के मुर्तद होने से जो अरबी ज्ञानों से बिल्कुल वंचित है धर्म को क्या हानि पहुंची ? इसी प्रकार इमादुद्दीन जो मौलवी कहलाता था मुर्तद होकर ईसाई हो गया था उसने इस्लाम का क्या बिगाड़ा था ताकि यह सोचें कि यह भी कुछ बिगाड़ेगा। इसी प्रकार धर्मपाल जो उन्हीं दिनों में इस्लाम से मुर्तद हो गया उसने क्या बिगाड़ा।

درکارخانہ عشق از کفر ناگزیر است آتش کربسو زد گر بولهب نباشد

अनुवाद :- प्रेम के कारखाने में कुफ़र ज़रूरी है, आग किसको जलाएगी यदि अबू लहब ही न होगा। इसी से।

विनती करते हैं कि अब्दुल हकीम खान ने जो आयतें लिखी हैं उनका क्या तात्पर्य है। उदाहरणतया **إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّالِينَ وَالصَّالِينَ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ** और जैसा कि यह आयत **وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ**^① और जैसा कि यह आयत **بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ**^② **تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا**^③ **بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ**

उत्तर - स्पष्ट हो कि पवित्र कुर्आन में इन आयतों का वर्णन करने से यह तात्पर्य नहीं है कि रसूल पर ईमान लाए बिना मोक्ष हो सकता है अपितु तात्पर्य यह है कि भागीदार रहित एक खुदा और क्रयामत के दिन पर ईमान लाए बिना मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता^④ तथा खुदा पर पूर्ण ईमान तभी हो सकता है कि जब उसके रसूलों पर ईमान लाए। कारण यह कि वे उसकी विशेषताओं के द्योतक हैं तथा किसी वस्तु का अस्तित्व उसकी विशेषताओं के अभाव में प्रमाण तक नहीं पहुंचता। इसलिए अल्लाह तआला की विशेषताओं के ज्ञान के बिना खुदा तआला को

① अलबक्ररह - 63

② अलबक्ररह - 113

③ आले इमरान - 65

④ पवित्र कुर्आन में अल्लाह का नियम है कि किसी स्थान पर विवरण होता है तथा कुछ स्थानों पर संक्षेप से काम लिया जाता है तथा पाठक के लिए आवश्यक होता है कि संक्षिप्त आयतों को इस प्रकार से अर्थ करे कि कथित आयतों से विपरीत न हो जाएं। उदाहरण के तौर पर खुदा तआला ने स्पष्ट तौर पर यह कह दिया कि शिर्क (अनेकेश्वरवाद) क्षमा नहीं किया जाएगा, किन्तु पवित्र कुर्आन की यह आयत कि **إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا** (अज्जुमर - 54) इस आयत के विरुद्ध ज्ञात होती है जिसमें लिखा है कि शिर्क क्षमा नहीं किया जाएगा। अतः यह नास्तिकता होगी कि इस आयत के वे अर्थ किए जाएं कि जो सुदृढ़ एवं नितान्त स्पष्ट आयतों के विपरीत हैं। इसी से।

पहचानने का ज्ञान अपूर्ण रह जाता है क्योंकि उदाहरणतया अल्लाह तआला की ये विशेषताएं कि वह बोलता है, सुनता है, गुप्त बातों को जानता है, दया या अज़ाब लाने पर समर्थ है बिना इसके कि रसूल के द्वारा उन का पता लगे उन पर क्योंकि विश्वास पैदा हो सकता है और यदि ये विशेषताएं अवलोकन के रूप में सिद्ध न हों तो खुदा तआला का अस्तित्व ही सिद्ध नहीं होता। अतः इस अवस्था में उस पर ईमान लाने के क्या अर्थ होंगे। जो व्यक्ति खुदा पर ईमान लाए, आवश्यक है कि वह उसकी विशेषताओं पर भी ईमान लाए और यह ईमान उसे नबियों पर ईमान लाने के लिए विवश करेगा, क्योंकि उदाहरण के तौर पर खुदा का कलाम करना और बोलना खुदा के कलाम के प्रमाण के अभाव में क्योंकि समझ में आ सकता है तथा इस कलाम को प्रमाण सहित प्रस्तुत करने वाले केवल उसके नबी हैं।

अतः यह भी स्पष्ट हो कि पवित्र कुर्आन में दो प्रकार की आयतें हैं - एक दृढ़ और नितान्त स्पष्ट आयतें जैसा कि यह आयत -

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُولُوا نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَنْ يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا ۖ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ۝^①

अर्थात् जो लोग ऐसा ईमान लाना नहीं चाहते कि खुदा पर भी ईमान लाएं और उसके रसूलों पर भी, बल्कि चाहते हैं कि खुदा को उस के रसूलों से अलग कर दें तथा कहते हैं कि कुछ पर हम ईमान लाते हैं और कुछ पर नहीं अर्थात् खुदा पर ईमान रखते हैं और रसूलों पर नहीं या कुछ रसूलों पर ईमान लाते हैं और कुछ पर नहीं और चाहते हैं कि बीच का मार्ग अपना लें। यही लोग वास्तविक तौर पर काफ़िर तथा पक्के काफ़िर हैं और हमने काफ़िरों के लिए अपमानित करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। ये तो स्पष्ट आयतें हैं जिनका हम विस्तृत विवरण अभी उल्लेख कर चुके हैं।

① अन्सि - 151, 152

द्वितीय प्रकार की आयतें गूढ़ हैं जिन के अर्थ बहुत मर्मपूर्ण होते हैं तथा जो लोग ज्ञान में प्रवीण हैं उन लोगों को उनका ज्ञान दिया जाता है तथा जिन लोगों के हृदयों में कपटाचार का रोग है वे गूढ़ आयतों की कुछ परवाह नहीं करते तथा अस्पष्ट आयतों का अनुसरण करते हैं। स्पष्ट आयतों का लक्षण यह है कि ये आयतें खुदा के कलाम में बहुलता के साथ मौजूद हैं और खुदा तआला का कलाम इन से भरा हुआ होता है तथा इन के अर्थ बहुत स्पष्ट होते हैं और इनके न मानने से खराबी पैदा होती है। उदाहरणतया इसी स्थान पर देख लो कि जो व्यक्ति केवल खुदा तआला पर ईमान लाता है तथा उसके रसूलों पर ईमान नहीं लाता, उसे खुदा तआला की विशेषताओं से इन्कारी होना पड़ता है। जैसे हमारे युग में ब्रह्म समाज जो एक नया सम्प्रदाय है जो दावा करते हैं कि हम खुदा तआला को मानते हैं किन्तु नबियों को नहीं मानते, वे खुदा के कलाम के इन्कारी हैं। स्पष्ट है कि यदि खुदा तआला सुनता है तो बोलता भी है। इसलिए यदि उसका बोलना सिद्ध नहीं तो सुनना भी सिद्ध नहीं। इस प्रकार से ऐसे लोग खुदा तआला की विशेषताओं का इन्कार करके नास्तिकों के समान हो जाते हैं। खुदा तआला की विशेषताएं जैसे अनादि हैं वैसे अनश्वर भी हैं और इनका अवलोकन कराने वाले अंबिया^अ हैं तथा खुदा की विशेषताओं का इन्कार उसके अस्तित्व का इन्कार है। इस छान बीन से सिद्ध होता है कि अल्लाह तआला पर ईमान लाने के लिए नबियों पर ईमान लाना कितना आवश्यक है कि उनको छोड़कर खुदा पर ईमान लाना दोषपूर्ण तथा अपूर्ण रह जाता है। स्पष्ट आयतों का एक यह भी लक्षण है कि उनकी गवाही न केवल आयतों की अधिकता से अपितु क्रियात्मक रूप से भी मिलती है अर्थात् उनके बारे में खुदा के नबियों की निरन्तर गवाही पाई जाती है, जैसा कि जो व्यक्ति खुदा तआला के कलाम पवित्र कुर्आन तथा दूसरे नबियों की पुस्तकों को देखेगा तो उसे ज्ञात होगा कि नबियों की पुस्तकों में जिस प्रकार खुदा पर ईमान लाने पर बल दिया गया है उसी प्रकार उसके रसूलों पर ईमान लाने पर भी बल दिया गया है।

गूढ़ आयतों की पहचान यह है कि उनके ऐसे अर्थ मानने से जो स्पष्ट आयतों के विपरीत हैं, विकार अनिवार्य आता है तथा दूसरी आयतों से जो बड़ी प्रचुरता के साथ हैं विरुद्ध पड़ती हैं। खुदा तआला के कलाम में विरोधाभास संभव नहीं। इसलिए जो कम है उसे अधिक के अधीन करना पड़ता है। मैं उल्लेख कर चुका हूँ कि 'अल्लाह' के शब्द पर विचार करना इस भ्रम को मिटा देता है क्योंकि खुदा तआला के कलाम में उसके अपने वर्णन में 'अल्लाह' के शब्द की यह व्याख्या है कि अल्लाह वह है जिसने पुस्तकें भेजी हैं तथा नबी भेजे और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजा कि वह पदों और श्रेणियों को प्राप्त कर लें जो रसूले करीम^स के अनुसरण से लोगों को मिलेंगे क्योंकि जिन गन्तव्यों तक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रकाश के अनुसरणकर्ता पहुंच सकते हैं मात्र अंधे नहीं पहुंच सकते और यह खुदा की कृपा है जिस पर चाहे करे। जबकि खुदा तआला ने 'अल्लाह' के नाम को अपनी सम्पूर्ण विशेषताओं एवं कर्मों का विशेष्य ठहराया है तो 'अल्लाह' शब्द के अर्थ करते समय इस आवश्यक बात को क्यों न दृष्टिगत रखा जाए। हमें इससे कोई मतलब नहीं कि पवित्र कुर्आन से पूर्व अरब के लोग 'अल्लाह' शब्द को किन अर्थों में प्रयोग करते थे, परन्तु हमें इस बात का पालन करना चाहिए कि अल्लाह तआला ने पवित्र कुर्आन में आद्योपान्त 'अल्लाह' शब्द को इन्हीं अर्थों के साथ वर्णन किया है कि वह रसूलों, नबियों तथा पुस्तकों (धार्मिक ग्रन्थों) को भेजने वाला तथा पृथ्वी और आकाश का स्रष्टा और अमुक-अमुक विशेषता से विशिष्ट तथा अकेला है जिसका कोई भागीदार नहीं। हां जिन लोगों को खुदा तआला का कलाम नहीं पहुंचा और बिल्कुल अनभिज्ञ हैं उन से उन के ज्ञान, बुद्धि एवं विवेक के अनुसार हिसाब-किताब होगा, किन्तु यह कदापि संभव नहीं कि वह उन पदों और श्रेणियों को पा लें जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण द्वारा लोगों को प्राप्त होंगे क्योंकि जिन गन्तव्यों तक आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रकाश के अनुसरणकर्ता पहुंच सकते हैं मात्र अंधे नहीं पहुंच सकते और यह खुदा की

कृपा है जिस पर चाहे करे।^①

फिर इस अन्याय को तो देखो कि बावजूद इसके कि पवित्र कुर्आन की सैकड़ों आयतें उच्च स्वर में कह रही हैं कि केवल एकेश्वरवाद मोक्ष का कारण नहीं हो सकता अपितु उसके साथ रसूले करीम^स पर ईमान लाना शर्त है, फिर भी मियां अब्दुल हकीम खान इन आयतों की कुछ भी परवाह नहीं करते और यहूदियों की भांति एक-दो आयत जो संक्षिप्त रूप में हैं उनके विपरीत अर्थ करके बार-बार प्रस्तुत करते हैं। प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि यदि इन आयतों के यही अर्थ हैं जो अब्दुल हकीम प्रस्तुत करता है तो इस्लाम संसार से समाप्त हो जाता है और जो कुछ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदेश जैसे नमाज़, रोज़ा इत्यादि सिखाए हैं, वह सब कुछ निरर्थक, व्यर्थ और बेकार ठहरता है क्योंकि यदि यही बात है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने काल्पनिक एकेश्वरवाद से मोक्ष पा सकता है तो फिर नबी को झुठलाना कुछ पाप नहीं और न मुर्तद होना किसी का कुछ बिगाड़ सकता है। अतः स्मरण रहे कि पवित्र कुर्आन में ऐसी कोई भी आयत नहीं जो नबी करीम^स की आज्ञाकारिता से बेपरवाह करती हो और यदि मान भी लें कि वे दो, तीन आयतें उन सैकड़ों आयतों के विपरीत होतीं तब भी चाहिए था कि अल्प को अधिक के अधीन किया जाता न कि अधिक की बिल्कुल उपेक्षा करके इस्लाम से विमुखता धारण कर लें। यहां ख़ुदा के कलाम की आयतों में कोई विरोधाभास भी नहीं केवल अपनी समझ का अन्तर तथा अपने स्वभाव का अंधकार है। हमें चाहिए कि अल्लाह के शब्द के वे अर्थ करें जो ख़ुदा तआला ने स्वयं किए हैं न कि अपनी ओर से यहूदियों की भांति अन्य अर्थ बनाएं।

इसके अतिरिक्त ख़ुदा तआला के कलाम तथा उसके रसूलों का सदैव से यह नियम रहा है कि प्रत्येक उद्दण्ड तथा कठोर इन्कारी को इस ढंग से मार्ग-दर्शन किया

① यदि इस संक्षिप्त आयत के ये अर्थ किए जाएं तो क्या कारण है कि इस दूसरी संक्षिप्त आयत अर्थात् **إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا** (अज़्ज़ुमर-54) के अनुसार आस्था न रखी जाए कि शिर्क भी क्षमा किया जाएगा। इसी से।

करते हैं कि तुम उचित और शुद्ध तौर पर ख़ुदा पर ईमान लाओ, उससे प्रेम करो, उसे एक एवं भागीदाररहित समझो तो तुम्हारा मोक्ष हो जाएगा। इस कलाम का अभिप्राय यह होता है कि यदि वह पूर्ण रूप से ख़ुदा पर ईमान लाएंगे तो ख़ुदा उनको इस्लाम स्वीकार करने का सामर्थ्य प्रदान कर देगा। ये लोग पवित्र कुर्आन को नहीं पढ़ते। उसमें स्पष्ट तौर पर लिखा है कि ख़ुदा पर सच्चा ईमान लाना, उसके रसूल पर ईमान लाने के लिए कारण बन जाता है तथा ऐसे व्यक्ति का सीना इस्लाम स्वीकार करने के लिए खोला जाता है। इसलिए मेरा भी यही नियम है कि जब कोई आर्य या ब्रह्म समाजी, ईसाई या यहूदी, सिख या इस्लाम का इन्कारी उल्टा-सीधा वाद-विवाद करता है और किसी प्रकार नहीं रुकता तो अन्ततः कह दिया करता हूँ कि तुम्हारी इस बहस से तुम्हें कुछ लाभ नहीं होगा। तुम ख़ुदा पर पूर्ण निष्कपटता के साथ ईमान लाओ। इस से वह तुम्हें मुक्ति देगा, किन्तु इस से मेरा तात्पर्य यह नहीं होता कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुकरण किए बिना मोक्ष प्राप्त हो सकता है वरन् मेरा यह उद्देश्य होता है कि जो व्यक्ति पूर्ण निष्ठा से ख़ुदा पर ईमान लाएगा ख़ुदा उसे सामर्थ्य प्रदान करेगा तथा अपने रसूल पर ईमान लाने के लिए उसका सीना (दिल) खोल देगा। इसी प्रकार मैंने अनुभव करके देखा है कि एक नेकी दूसरी नेकी की सामर्थ्य प्रदान करती है तथा एक शुभ कार्य दूसरे शुभ कार्य को करने की शक्ति दे देता है। “तज़किरतुल औलिया” पुस्तक में यह एक अदभुत वृत्तान्त लिखा है कि महान वली कहते हैं कि एक बार ऐसा संयोग हुआ कि कुछ दिन वर्षा होती रही और बहुत मेंह बरसा। मेह रुकने के पश्चात् मैं अपने कोठे पर किसी काम के लिए चढ़ा, मेरा पड़ोसी एक वृद्ध अग्निपूजक था। वह अपने कोठे पर अनाज के बहुत से दाने डाल रहा था। मैंने इसका कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया कि कुछ दिनों से निरन्तर वर्षा होने के कारण पक्षी भूखे हैं मुझे उन पर दया आई। इसलिए मैं ये दाने उनके लिए डाल रहा हूँ ताकि मुझे पुण्य प्राप्त हो। मैंने कहा कि हे बूढ़े ! तेरा यह विचार ग़लत है तू मुश्रिक^① है और मुश्रिक को कोई पुण्य प्राप्त नहीं होता क्योंकि तू

① मुश्रिक - ख़ुदा का भागीदार बनाने वाला (अनुवादक)

अग्निपूजक है। यह कह कर मैं नीचे उतर आया। कुछ समयोपरान्त मुझे हज करने का संयोग हुआ और मैं पवित्र मक्का पहुंचा। जब मैं तवाफ़^① कर रहा था तो मेरे पीछे से एक तवाफ़ करने वाले ने मेरा नाम लेकर आवाज़ दी। जब मैंने पीछे की ओर मुड़कर देखा तो वही वृद्ध था जो मुसलमान होकर तवाफ़ कर रहा था। उसने मुझे कहा कि क्या उन दानों का जो मैंने पक्षियों के लिए डाले थे मुझे पुण्य प्राप्त हुआ या नहीं ? अतः जब पक्षियों को दाना डालना अन्ततः खींचकर इस्लाम की ओर ले आता है तो फिर जो व्यक्ति उस सच्चे वास्तविक बादशाह पर ईमान लाए तो क्या वह इस्लाम से वंचित रहेगा। कदापि नहीं।

عاشق که شد که یار بحال نظر نہ کرد اے خواجہ درد نیست و گرنہ طیب ہست

(अनुवाद :- कौन का ऐसा महबूब है जिसने किसी को अपना आशिक बना कर उसकी हालत की ओर ध्यान न दिया हो। (सच तो यह है) हज़रत कि दर्द ही नहीं है अन्यथा चिकित्सक तो मौजूद है। अनुवादक)

स्मरण रखना चाहिए कि प्रथम तो एकेश्वरवाद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण के बिना पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हो सकता, जैसा कि अभी हम वर्णन कर चुके हैं कि खुदा तआला की विशेषताएं जो उसके अस्तित्व से अलग नहीं हो सकतीं, नुबुव्वत की वह्यी के दर्पण के बिना दिखाई नहीं दे सकतीं, उन विशेषताओं को अवलोकन के रूप में दिखाने वाला केवल नबी होता है। इसके अतिरिक्त यदि कष्ट कल्पना के तौर पर उनकी अपूर्ण रूप से प्राप्ति हो जाए तो वह शिर्क की अपवित्रता से रिक्त नहीं जब तक कि खुदा उसके मिलावटी सामान को स्वीकार करके इस्लाम में सम्मिलित न करे, क्योंकि मनुष्य को जो कुछ खुदा तआला से उसके रसूल के माध्यम से प्राप्त होता है वह एक आकाशीय जल है। उसमें अपने गर्व और अभिमान का कुछ हस्तक्षेप नहीं परन्तु मनुष्य अपने प्रयास से जो कुछ प्राप्त करता है उसमें अवश्य कोई शिर्क की अपवित्रता उत्पन्न हो जाती है। अतः यही नीति थी कि एकेश्वरवाद की शिक्षा देने के लिए रसूल भेजे गए तथा

① तवाफ़ - का'बा की परिक्रमा करना (अनुवादक)

मनुष्यों को मात्र बुद्धि पर नहीं छोड़ा गया ताकि ऐकेश्वरवाद शुद्ध रहे तथा उसमें मानव अहंकार का शिकं न मिल जाए। इसी कारण पथभ्रष्ट दार्शनिकों को शुद्ध ऐकेश्वरवाद प्राप्त नहीं हुआ क्योंकि वे अहंकार, अभिमान तथा अहं से ग्रसित रहे। शुद्ध ऐकेश्वरवाद नास्ति को चाहता है तथा जब तक मनुष्य सच्चे हृदय के साथ यह न समझे कि मेरे प्रयास का कुछ हस्तक्षेप नहीं यह मात्र ख़ुदा का इनाम है नास्ति प्राप्त नहीं हो सकती। उदाहरणतया एक व्यक्ति रात भर जाग कर तथा स्वयं को संकट में डालकर अपने खेत की सिंचाई कर रहा है और दूसरा व्यक्ति रात भर सोता रहा। एक बादल आया और उसके खेत को जलमग्न कर दिया। अतः मैं पूछता हूँ कि क्या वे दोनों ख़ुदा का धन्यवाद करने में समान होंगे ? कदापि नहीं अपितु वह अधिक धन्यवाद करेगा जिसके खेत को उसके परिश्रम के बिना पानी दिया गया। इसीलिए ख़ुदा तआला के कलाम में बार-बार आया है कि उस ख़ुदा का धन्यवाद करो जिसने रसूल भेजे और तुम्हें ऐकेश्वरवाद की शिक्षा दी।

प्रश्न - 9

जो लोग सद्भावना रखते हुए आहंजतर का विरोध करते हैं अर्थात् आप^स की रिसालत के इन्कारी हैं और ख़ुदा के ऐकेश्वरवाद को मानते हैं, शुभ कर्म करते हैं तथा दुष्कर्मों से बचते हैं उनके बारे में क्या आस्था रखी जाए ?

उत्तर - मनुष्य की सद्भावना सन्तुष्टि पाने पर सिद्ध होती है। अतः जबकि इस्लाम के अतिरिक्त किसी धर्म में सन्तुष्टि प्राप्त नहीं हो सकती तो सद्भावना का प्रमाण क्या हुआ। उदाहरणतया ईसाई धर्म की यह दशा है कि वह स्पष्ट तौर पर एक मनुष्य को ख़ुदा बना रहे हैं तथा मनुष्य भी वह कि विपत्तियों में फंसा हुआ है^① और आर्य समाज वाले अपने परमेश्वर के अस्तित्व पर कोई प्रमाण नहीं लाए

① क्या कोई अन्तर्आत्मा या हृदय का प्रकाश इस बात को स्वीकार कर सकता है कि एक असहाय मनुष्य जो पहले नबियों से बढ़कर एक कण भर कोई काम नहीं दिखा सका अपितु निर्लज्ज यहूदियों से मारें खाता रहा, वही ख़ुदा और वही पृथ्वी तथा आकाश का स्रष्टा तथा अपराधियों को दण्ड देने वाला है। क्या कोई बुद्धि स्वीकार कर सकती

क्योंकि उनके निकट वह स्रष्टा नहीं ताकि सृष्टि पर दृष्टि डालकर स्रष्टा की पहचान हो तथा उनके धर्मानुसार खुदा तआला चमत्कार नहीं दिखाता और न वेद के युग में दिखाए ताकि चमत्कारों के द्वारा परमेश्वर के अस्तित्व का प्रमाण मिले तथा उनके पास इस बात पर कोई प्रमाण नहीं कि जो विशेषताएं परमेश्वर से सम्बद्ध की जाती हैं वास्तव में उनमें मौजूद हैं जैसे परोक्ष का ज्ञान, सुनना, बोलना, सामर्थ्य रखना तथा दयालु होना। अतः उनका परमेश्वर केवल काल्पनिक परमेश्वर है। यही दशा ईसाइयों की है। उनके खुदा के इल्हाम पर भी मुहर लग गई है (अर्थात् बन्द हो गया है)। अतः ऐसे परमेश्वर या खुदा पर ईमान लाने से सन्तुष्टि कैसे हो। जो व्यक्ति अपने खुदा पर पूर्ण विश्वास नहीं रखता वह पूर्णरूपेण खुदा से क्योंकर प्रेम कर सके और क्योंकर शिर्क से रिक्त हो सके। खुदा ने अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम द्वारा समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने में कोई कमी नहीं रखी। वह एक सूर्य के समान आया तथा प्रत्येक दृष्टि से अपना प्रकाश प्रकट किया। अतः जो व्यक्ति उस वास्तविक सूर्य से विमुख होता है उसकी खैर नहीं। हम उसे ईमानदार नहीं कह सकते। क्या जो व्यक्ति कुष्ठ रोगी हो तथा कुष्ठ रोग ने उसके अंग खा लिए हों वह कह सकता है कि मैं कुष्ठरोगी नहीं या है कि शक्तिमान खुदा अपनी असीम शक्तियों के बावजूद किसी अन्य की सहायता का मुहताज रहे। हमें कुछ समझ नहीं आता कि ईसा कैसा खुदा था कि जो अपनी रिहाई के लिए पूरी रात रो-रोकर दुआ करता रहा, आश्चर्य है कि जब तीनों खुदा उसके अन्दर थे तो वह चौथा खुदा कौन था जिसके समक्ष उसने रो-रो कर रात भर दुआ की और फिर वह दुआ स्वीकार भी न हुई। ऐसे खुदा से क्या आशा रखी जाए जिस पर निर्लज्ज यहूदी विजयी हुए और उस का पीछा न छोड़ा जब तक सूली पर न चढ़ा दिया। आर्यों का तो मानो खुदा ही नहीं अनादि जो हुए। क्या यह मार्ग-दर्शन मनुष्य को कुछ सन्तुष्टि दे सकता है, किन्तु इस्लाम वह खुदा प्रस्तुत करता है जिस पर मनुष्य की प्रकृति तथा समस्त नबियों की सहमति है जो इस्लाम के पूर्ण उपासकों पर अपनी शक्तियां प्रकट करता है। इसी से।

मुझे उपचार की आवश्यकता नहीं और यदि कहे तो क्या हम उसे ईमानदार कह सकते हैं। इसके अतिरिक्त यदि काल्पनिक तौर पर संसार में कोई ऐसा व्यक्ति हो कि वह पूर्ण रूप से ईमानदार होने तथा ऐसे पूर्ण प्रयास के बावजूद जैसा कि वह संसार प्राप्ति के लिए करता है इस्लाम की सच्चाई तक नहीं पहुंच सका तो इसका हिसाब खुदा के पास है, परन्तु हमने जीवन पर्यन्त ऐसा कोई व्यक्ति नहीं देखा^①, इसलिए हम इस बात को निश्चित तौर पर दुर्लभ समझते हैं कि कोई व्यक्ति बुद्धि और न्याय की दृष्टि से किसी अन्य धर्म को इस्लाम पर प्राथमिकता दे सके। नादान और मूर्ख लोग तामसिक वृत्ति के सिखाने से एक बात सीख लेते हैं कि केवल एकेश्वरवाद पर्याप्त है, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण की आवश्यकता नहीं, परन्तु स्मरण रहे कि एकेश्वरवाद की मां नबी ही होता है जिस से एकेश्वरवाद जन्म लेता है तथा खुदा के अस्तित्व का पता लगता है और समझाने के अन्तिम प्रयास को खुदा तआला से अधिक कौन जानता है। उसने अपने नबी करीम की सच्चाई को सिद्ध करने के लिए पृथ्वी-आकाश को निशानों से भर दिया है और अब इस युग में भी खुदा ने इस तुच्छ सेवक को भेजकर आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सत्यापन के लिए हजारों निशान प्रकट किए हैं जो वर्षा की भांति बरस रहे हैं तो फिर समझाने के अन्तिम प्रयास में कौन सी कमी शेष है। जो व्यक्ति विरोध करने की बुद्धि रखता है वह मैत्री की बात को क्यों नहीं सोच सकता, जो रात को देखता है उसे प्रकाशमान दिन में क्यों दिखाई नहीं देता हालांकि झुठलाने के मार्गों की अपेक्षा सत्यापन का मार्ग बहुत सरल है। हां जो व्यक्ति हतबुद्धि के समान है तथा उसे मानव शक्तियों से बहुत कम भाग मिला है उसका हिसाब खुदा के सुपुर्द करना चाहिए, उसके बारे में हम आपत्ति नहीं कर

① इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो मानव प्रकृति के अनुकूल है कि उसकी सच्चाई एक असभ्य और अशिक्षित हिन्दू को भी दो मिनट में समझ आ सकती है क्योंकि जो कुछ उसकी तुलना में अन्य क्रौमों ने स्वीकार किया हुआ है वे समस्त आस्थाएं लज्जाजनक तथा एक शोकग्रस्त व्यक्ति को हंसाने का साधन हैं। इसी से।

सकते। वह उन मनुष्यों की भांति है जो अल्पायु एवं बाल्यवस्था में मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं परन्तु एक उद्दण्ड एवं झूठा कहने वाला यह बहाना नहीं कर सकता कि मैं ईमानदारी से झुठलाता हूँ। देखना चाहिए कि उसकी ज्ञानेन्द्रियां इस योग्य हैं या नहीं कि एकेश्वरवाद और रिसालत के विषय को समझ सके, यदि ज्ञात होता है कि समझ सकता है परन्तु उद्दण्डता से झुठलाता है तो वह असमर्थ क्योंकर रह सकता है। यदि कोई सूर्य के प्रकाश को देखकर यह कहे कि दिन नहीं अपितु रात्रि है तो क्या हम उसे असमर्थ समझ सकते हैं। इसी प्रकार जो लोग जान बूझ कर उल्टा-सीधा वाद-विवाद करते हैं तथा इस्लाम के तर्कों का खण्डन नहीं कर सकते। क्या हम सोच सकते हैं कि वे असमर्थ हैं। इस्लाम तो एक जीवित धर्म है। जो व्यक्ति जीवित और मृत में अन्तर कर सकता है वह इस्लाम को क्यों छोड़ता तथा मृत धर्म को स्वीकार करता है।^① खुदा तआला इस युग में भी इस्लाम के समर्थन में बड़े-बड़े निशान प्रकट करता है और जैसा कि इस बारे में मैं स्वयं अनुभव रखता हूँ तथा मैं देखता हूँ कि यदि मेरे मुकाबले संसार की समस्त क्रौमें इकट्ठी हो जाएं तथा इस बात की आमने-सामने परीक्षा हो कि खुदा किसे ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरें देता है तथा किस की दुआएं स्वीकार करता है और किस की सहायता करता है और किस के लिए बड़े-बड़े निशान प्रदर्शित करता है तो मैं खुदा की क्रसम खाकर कहता हूँ कि मैं ही विजयी रहूंगा। क्या कोई है ?!! कि इस परीक्षा में मेरे मुकाबले पर आए। खुदा ने हज़ारों निशान मुझे केवल इसलिए दिए हैं ताकि शत्रु समझ ले कि इस्लाम धर्म सच्चा है। मैं अपना कोई सम्मान नहीं चाहता अपितु उसका सम्मान चाहता हूँ जिसके लिए मैं भेजा गया हूँ। कुछ नादान कहते हैं कि अमुक, अमुक भविष्यवाणी पूर्ण नहीं हुई तथा अपनी मूर्खता से एक-दो भविष्यवाणियों का वर्णन

① जो व्यक्ति बिना प्रमाण एक मनुष्य को खुदा बनाता है या प्रमाण रहित खुदा के स्रष्टा होने से इन्कार करता है। क्या वह इस्लाम की सच्चाई के स्पष्ट प्रमाण समझ नहीं सकता। इसी से।

करते हैं कि वे पूर्ण नहीं हुई जैसा कि उद्दण्ड व्यक्ति पूर्व नबियों के समय में ऐसा ही करते आए हैं, परन्तु वे सूर्य पर थूकना चाहते हैं तथा अपने झूठ एवं झूठ गढ़ने से अपनी बात को सुन्दर बना कर लोगों को धोखा देते हैं। वे अल्लाह तआला के नियम से अवगत नहीं, उनको खुदा तआला के ग्रन्थों का ज्ञान नहीं या किसी को ज्ञान तो है परन्तु मात्र उद्दण्डता से ऐसा कहता है। उनके निकट तो जैसे यूनस नबी भी झूठा था जिसकी निश्चित भविष्यवाणी जिसके साथ कोई शर्त न थी पूरी न हुई परन्तु मेरी दो भविष्यवाणियां जिन्हें वे बार-बार प्रस्तुत करते हैं अर्थात् आथम तथा अहमद बेग के दामाद के बारे में, वह अपनी शर्तों के अनुसार पूर्ण हो गई हैं क्योंकि उनके साथ शर्तें थीं, उन शर्तों के अनुसार विलम्ब हुआ। इन लोगों को ज्ञात नहीं कि अज़ाब के वादे की भविष्यवाणियों में आवश्यक नहीं होता कि वे पूरी हो जाएं। इस पर समस्त नबियों की सहमति है। मैं इस बारे में अधिक लिखना नहीं चाहता, क्योंकि इसके विवरण से मेरी पुस्तकें भरी हुई हैं। आथम तो भविष्यवाणी के अनुसार मृत्यु पा गया और अहमद बेग भी भविष्यवाणी के अनुसार मृत्यु पा गया। अब उसके दामाद के बारे में रोते हैं तथा अज़ाब के वादे पर आधारित भविष्यवाणियों के संबंध में जो अल्लाह का नियम है उसे भूल जाते हैं। यदि शर्म, लज्जा और न्याय है तो दो रजिस्टर बना कर एक में वे भविष्यवाणियां लिखें जो उनके विचार में पूर्ण नहीं हुई और दूसरे रजिस्टर में वे भविष्यवाणियां हम लिखेंगे जिन से कोई इन्कार नहीं कर सकता। तब उन्हें ज्ञात होगा कि वे एक दरिया के सामने जो नितान्त शुद्ध और निर्मल है एक बूंद प्रस्तुत करते हैं जो उनके निकट शुद्ध नहीं।

अतः यह बात विचारणीय है कि केवल दो भविष्यवाणियों पर उनका इतना मातम और रोना है परन्तु यहां हजारों भविष्यवाणियां पूर्ण हो चुकी हैं तथा कई लाख लोग इनके साक्षी हैं, यदि उन्हें खुदा का भय है तो क्यों उनसे लाभ प्राप्त नहीं करते। इस प्रकार तो यहूदी भी अब तक लिखते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की अधिकांश भविष्यवाणियां पूर्ण नहीं हुई जैसा कि बारह हवारियों के बारह तख्तों

की भविष्यवाणी और उसी युग में उनके दोबारा आने की भविष्यवाणी इत्यादि।^①

सारांश यह कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समझाने का अन्तिम प्रयास संसार पर पूर्ण हो चुका है तथा आप के प्रकाश सूर्य से अधिक चमक रहे हैं फिर इन्कार के साथ ईमानदारी कैसे इकट्ठी हो सकती है। जो व्यक्ति यह दुष्कार्य करे कि एक खुली-खुली सच्चाई का खण्डन करे उसके बारे में हम कैसे कह सकते हैं कि वह शुभ कर्म करता है। तेरह सौ वर्ष से यह मुनादी हो रही है और हज़ारों मुजद्दिद और वली लोग अपने-अपने युग में समझाने के अन्तिम प्रयास पूर्ण कर गए हैं। क्या अब तक समझाने का यह अन्तिम प्रयास पूर्ण नहीं हुआ। इन्कारी एक सीमा तक असमर्थ होने के योग्य होता है न कि हज़ारों विलक्षण चमत्कार, विलक्षण निशान तथा ख़ुदा के निशान देख कर तथा शिक्षा को श्रेष्ठ पाकर और इस्लाम में^② शुद्ध अद्वैतवाद देखकर फिर कहता जाए कि अभी मेरी

① हज़रत मूसा की तौरात में यह भविष्यवाणी थी कि वह बनी इस्राईल को शाम देश में जहां दूध और शहद की नहरें बहती हैं पहुंचाएंगे किन्तु यह भविष्यवाणी पूर्ण न हुई। हज़रत मूसा का भी मार्ग में निधन हुआ और बनी इस्राईल भी मार्ग में मृत्यु को प्राप्त हुए केवल उनकी सन्तान वहां गई। इसी प्रकार हज़रत ईसा की भविष्यवाणी कि उनके हवारियों को बारह तख़्त मिलेंगे वह भविष्यवाणी भी ग़लत निकली। अतः अब मूसा और ईसा दोनों की नबुव्वत से अलग हो जाओ। सय्यद अब्दुल क़ादिर जैलानी का कथन है **قدیوعدولایوفی** अर्थात् कभी वादा दिया जाता है उसे पूर्ण नहीं किया जाता। फिर अज़ाब के वादे की शर्त वाली भविष्यवाणियों पर इतना शोर मचाना कितनी अधिक मूर्खता को सिद्ध करता है। इसी से।

② खेद कि अब्दुल हकीम खान एक और खुली-खुली गुमराही में फंसा हुआ है कि वह कहता है कि इस्लाम के अर्थ में यह बात सम्मिलित नहीं है कि कोई व्यक्ति आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए हालांकि समस्त मुसलमानों की सर्वसहमति से इस्लाम पूर्ण नहीं होता जब तक आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान न

सन्तुष्टि नहीं हुई।^①

अन्ततः हम इस समापन में कुछ आवश्यक बातें वर्णन करके इस पुस्तक को समाप्त करते हैं। इन में से एक बात यह कि डाक्टर अब्दुल हकीम खान अपनी पुस्तक “अलमसीहुद्दज्जाल” इत्यादि में मुझ पर यह आरोप लगाता है कि मानो मैंने अपनी पुस्तक में लिखा है कि जो व्यक्ति मुझ पर ईमान नहीं लाएगा, यद्यपि कि वह मेरे नाम से भी परिचित न होगा तथा वह ऐसे देश में होगा जहां तक मेरा सन्देश नहीं पहुंचा तब भी वह काफ़िर हो जाएगा और नर्क में जाएगा। यह कथित डाक्टर का सरासर स्वयं निर्मित झूठ है। मैंने किसी पुस्तक या किसी विज्ञापन में ऐसा नहीं लिखा। उस का कर्तव्य है कि वह मेरी ऐसी कोई पुस्तक प्रस्तुत करे जिसमें यह लिखा है। स्मरण रखना चाहिए कि उसने मात्र चतुराई से

शेष हाशिया :- लाया जाए। इसी कारण पवित्र कुर्आन में आता है कि प्रत्येक उम्मत में उनके नबी के द्वारा यह प्रतिज्ञा ली गई थी कि जब हज़रत ख़ातमुल अंबिया पैदा हों तो उन पर ईमान लाना तथा उनकी सहायता करना। फिर इस पर एक अन्य तर्क है कि आप^स ने उस समय के ईसाई बादशाहों की ओर इस्लाम की ओर निमंत्रण देने के जो पत्र लिखे थे अर्थात् कैसर, मकूकश और हबश के बादशाह की ओर उसमें **أَسْلِمُ تَسْلِم** का शब्द था। अर्थात् इस्लाम ला इससे तू सुरक्षित रहेगा, हालांकि उन ईसाई बादशाहों में से कुछ अद्वैतवादी थे, तीन ख़ुदाओं को नहीं मानते थे। यह प्रमाणित बात है तथा यहूदी भी तीन ख़ुदाओं को नहीं मानते थे फिर उनको इस्लाम की ओर बुलाने का क्या मतलब, वे तो पहले ही इस्लाम में सम्मिलित थे।

① यूरोप वालों को हम अनभिज्ञ क्योंकर कह सकते हैं कि जिन्होंने कुर्आन करीम के अनुवाद करके प्रकाशित किए और स्वयं व्याख्याएं लिखीं और हदीस की बड़ी-बड़ी पुस्तकों के अनुवाद किए तथा अरबी शब्दकोश की बड़ी-बड़ी किताबें लिखीं अपितु सत्य तो यह है कि इस्लाम के जितने पुस्तकालय यूरोप में विद्यमान हैं उतनी वे पुस्तकें मुसलमानों के पास नहीं। इसी से।

जैसा कि उसकी आदत है यह मुझ पर झूठ बांधा है। यह तो ऐसी बात है जो इतनी स्पष्ट है कि कोई बुद्धि इसे स्वीकार नहीं कर सकती। जो व्यक्ति पूर्णरूपेण मेरे नाम से भी अपरिचित है उसकी पकड़ क्योंकर हो सकती है। हां मैं यह कहता हूं कि चूंकि मैं मसीह मौऊद हूं और खुदा ने सामान्यतया मेरे लिए आकाश से निशान प्रकट किए हैं। अतः जिस व्यक्ति पर मेरे मसीह मौऊद होने के बारे में खुदा के निकट समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो चुका है तथा वह मेरे दावे से सूचित हो चुका है वह गिरफ्त योग्य होगा क्योंकि खुदा के भेजे हुए लोगों से जान-बूझ कर मुख फेरना ऐसी बात नहीं है कि उस पर कोई पकड़ न हो। इस पाप का न्याय चाहने वाला मैं नहीं हूं अपितु एक ही है जिसके समर्थन के लिए मुझे भेजा गया अर्थात् **हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम**। जो व्यक्ति मुझे नहीं मानता वह मेरा नहीं अपितु उसका अवज्ञाकारी है जिसने मेरे आने की भविष्यवाणी की।

इसी प्रकार आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने के बारे में मेरी आस्था भी यही है कि जिस व्यक्ति को आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सन्देश पहुंच चुका है तथा वह आप के प्रादुर्भाव से अवगत हो चुका है, खुदा तआला के निकट आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत के बारे में उस पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो चुका है, यदि उसकी मृत्यु कुफ़्र पर हुई तो हमेशा के नर्क का पात्र होगा।

और समझाने के अन्तिम प्रयास पूर्ण हो जाने का ज्ञान केवल खुदा तआला को है। हां बुद्धि इस बात को चाहती है कि चूंकि लोग भिन्न-भिन्न योग्यताओं तथा भिन्न-भिन्न समझ के अनुसार पैद किए गए हैं इसलिए समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण होना भी केवल एक ही पद्धति से नहीं होगा। अतः जो लोग ज्ञान संबंधी योग्यता के कारण खुदा के प्रमाणों एवं निशानों तथा इस्लाम धर्म की विशेषताओं को बहुत सरलतापूर्वक समझ सकते हैं तथा पहचान सकते हैं वे लोग यदि खुदा के रसूल का इन्कार करें तो वे कुफ़्र की प्रथम श्रेणी पर होंगे और जो लोग इतनी

समझ और इतना ज्ञान नहीं रखते किन्तु खुदा के निकट उन पर भी उन की समझ के अनुसार समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो चुका है। उनसे भी रसूल के इन्कार की पकड़ होगी परन्तु पहले इन्कार करने वालों की अपेक्षा कम। बहरहाल किसी के कुफ्र और उस पर समझाने के अन्तिम प्रयास के पूर्ण होने के बारे में एक-एक का हाल ज्ञात करना हमारा कार्य नहीं है। यह उसका कार्य है जो अन्तर्यामी है। हम इतना कह सकते हैं कि खुदा के निकट जिस पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो चुका है और खुदा के निकट जो इन्कारी ठहर चुका है वह दण्ड के योग्य होगा। हां चूंकि शरीअत की नींव प्रत्यक्ष पर है, इसलिए हम इन्कार करने वालों को मोमिन नहीं कह सकते और न यह कह सकते हैं कि वह दण्ड से मुक्त है तथा काफ़िर इन्कार करने वाले को ही कहते हैं, क्योंकि काफ़िर का शब्द मोमिन शब्द का विलोम है तथा कुफ्र के दो प्रकार हैं -

(प्रथम) एक यह कुफ्र कि एक व्यक्ति इस्लाम का ही इन्कारी है तथा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खुदा का रसूल नहीं मानता।

(द्वितीय) दूसरे यह कुफ्र कि उदाहरणतया वह मसीह मौऊद को नहीं मानता तथा समझाने के अन्तिम प्रयास पूर्ण होने के बावजूद उसे झूठा समझता है। जिसके मानने और सच्चा जानने के बारे में खुदा और रसूल ने बल दिया है तथा पूर्व नबियों की पुस्तकों में भी इस बारे में बल दिया गया है। अतः इसलिए कि वह खुदा और रसूल के आदेश का इन्कारी है, काफ़िर है और यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो ये दोनों प्रकार के कुफ्र एक ही प्रकार में सम्मिलित हैं क्योंकि जो व्यक्ति पहचान लेने के बावजूद खुदा और रसूल के आदेश को नहीं मानता वह कुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों के अनुसार खुदा और रसूल को भी नहीं मानता। इसमें सन्देह नहीं कि जिस पर खुदा तआला के निकट प्रथम प्रकार का कुफ्र या द्वितीय प्रकार के कुफ्र के बारे में समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो चुका है वह प्रलय के दिन दण्ड का पात्र होगा और जिस पर खुदा के नज़दीक समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण नहीं हुआ तथा वह झुठलाने वाला और इन्कार करने वाला है तो यद्यपि

शरीअत ने (जिस की नींव प्रत्यक्ष पर है) उसका नाम काफ़िर ही रखा है और हम भी उसे शरीअत के अनुसरण में काफ़िर के नाम से ही पुकारते हैं परन्तु फिर भी वह ख़ुदा के नज़दीक आयत **لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا** (अलबक्रह-287) के अनुसार दण्डनीय नहीं होगा। हां हम इस बात का अधिकार नहीं रखते कि हम उसके बारे में मोक्ष का आदेश दें। उसका मामला ख़ुदा के साथ है। हमें इसमें अधिकार नहीं। जैसा कि अभी वर्णन कर चुका हूँ यह ज्ञान केवल ख़ुदा तआला को है कि उसके निकट बौद्धिक, उद्धरित तर्कों तथा उत्तम शिक्षा और आकाशीय निशानों के बावजूद किस पर अभी तक समझाने के अन्तिम प्रयास पूर्ण नहीं हुआ। हमें दावे के साथ नहीं कहना चाहिए कि अमुक व्यक्ति पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण नहीं हुआ। हमें किसी के अन्तःकरण का ज्ञान नहीं है और चूंकि प्रत्येक पहलू के तर्क प्रस्तुत करने तथा निशान प्रदर्शित करने से ख़ुदा तआला के प्रत्येक रसूल की यही इच्छा रही है कि वह अपने समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करे तथा इस बारे में ख़ुदा भी उसका समर्थक रहा है। इसलिए जो व्यक्ति यह दावा करता है कि मुझ पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण नहीं हुआ^① वह अपने इन्कार का उत्तरदायी स्वयं है तथा इस बात को सिद्ध करना उसी का दायित्व है और वही

① यहां यह भी तो देखना चाहिए कि जिस धर्म को ऐसा व्यक्ति अपना रहा है वह धर्म इस्लाम की तुलना में ख़ुदा तआला का किस प्रकार का अद्वैतवाद एवं श्रेष्ठता प्रस्तुत करता है। विचित्र बात यह है कि ऐसे लोग जिन के धर्म में न ख़ुदा की कोई श्रेष्ठता है, न ख़ुदा का अद्वैतवाद, न ख़ुदा की पहचान का कोई मार्ग। वे क्योंकर कह सकते हैं कि हम पर इस्लाम धर्म का समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण नहीं हुआ। एक ईसाई जो केवल एक असहाय मनुष्य को ख़ुदा मानता है या एक आर्य जिसके निकट न ख़ुदा स्रष्टा है, न ताज़ा निशानों से अपना प्रमाण दे सकता है वह किस मुख से कह सकता है कि इस्लाम की अपेक्षा मेरा धर्म अच्छा है। क्या वह अपने धर्म की विशेषता दिखाने के लिए नियोग को प्रस्तुत करेगा, जिसमें एक स्त्री के पति के जीवित होने के बावजूद दूसरा व्यक्ति उससे संभोग कर सकता है। इसी से।

इस बात का उत्तरदायी होगा कि बौद्धिक एवं उद्धरित तर्कों तथा उत्तम शिक्षा एवं आकाशीय निशानों तथा हर प्रकार के मार्ग-दर्शन के बावजूद उस पर क्यों समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण नहीं हुआ। यह विवाद मात्र व्यर्थ एवं सरासर निरर्थक है कि जिस पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण नहीं हुआ वह इसके बावजूद कि इस्लाम से परिचित हुआ इन्कार की अवस्था में मोक्ष पा जाएगा अपितु ऐसी बातों में खुदा का अपमान है क्योंकि जिस सामर्थ्यवान एवं शक्तिमान खुदा ने अपने रसूल को भेजा इसमें उसका अपमान है तथा वादा खिलाफी अनिवार्य ठहरती है कि इसके बावजूद कि उसने यह वादा भी किया कि मैं अपने समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करूंगा फिर भी वह झुठलाने वालों पर अपने समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण न कर सका तथा उन्होंने उसके रसूल को झुठलाया भी और फिर मोक्ष भी पा गए। हम जब खुदा के निशानों को देखते हैं जो उसने इस्लाम धर्म के लिए प्रकट किए और फिर हम बौद्धिक एवं पुस्तकीय तर्कों को देखते तथा इस्लाम में हजारों विशेषताएं पाते हैं जो अन्य क्रौमों के धर्मों में नहीं और खुदा तआला की ओर उन्नति करने का द्वार केवल इस्लाम में ही खुला देखते हैं तथा अन्य धर्मों को ऐसी दशा में पाते हैं कि वे या तो सृष्टि पूजा में लिप्त हैं या खुदा को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का स्रष्टा, स्रोत तथा सम्पूर्ण वरदानों का उद्गम नहीं मानते तो हमें ऐसे लोगों पर खेद होता है जो इन व्यर्थ बातों को संसार में फैलाते हैं कि जो व्यक्ति इस्लाम के बारे में ज्ञान तो रखता हो किन्तु उस पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण न हो वह मोक्ष प्राप्त करेगा। अतः स्पष्ट है कि सही घटनाओं को न मानना यद्यपि जानबूझ कर न हो तब भी वह हानिकारक होता है। उदाहरणतया वैद्यों ने यह विज्ञापन दिया है कि उपदंश से पीड़ित (आतिशक वाली) स्त्री के पास मत जाओ तथा एक व्यक्ति ने ऐसी स्त्री से संभोग किया। अतः उसका यह कहना व्यर्थ होगा कि मैं वैद्यों के इस विज्ञापन से अनभिज्ञ था, मुझे क्यों आतिशक हो गया। बाबा नानक ने सत्य कहा है - मन्दे^① कम्मीं नानका जद कद मन्दा हो

① अर्थात् हे नानक! बुरे कामों से अन्ततः बुराई ही सामने आती है। (इसी से)

हे नादानो ! जबकि खुदा ने अपने नियमानुसार अपने सुदृढ़ धर्म के प्रमाण को पूर्ण कर दिया। अतः अब इसमें सन्देहों को स्थान देना तथा खुदा की ओर से समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के बावजूद अनर्थक बातों को प्रस्तुत करने की क्या आवश्यकता है। यदि वास्तव में खुदा तआला के ज्ञान में कोई ऐसा होगा कि उस पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण नहीं हुआ तो उसका मामला खुदा के साथ है। हमें इस बहस की आवश्यकता नहीं। हां जो व्यक्ति इस्लाम से बिल्कुल अनभिज्ञ है यदि अपनी अनभिज्ञता में मृत्यु पा जाए जैसे अव्यस्क बच्चे और पागल या किसी ऐसे देशवासी जहां इस्लाम नहीं पहुंचा वे असमर्थ हैं।

इनमें से यह बात उल्लेखनीय है कि अब्दुल हकीम खान ने अपने अन्य सहपंथियों का अनुसरण करके मुझ पर ये आरोप लगाए हैं कि मैं झूठ बोलता रहा हूं और मैं दज्जाल हूं, हरामखोर हूं, ग़बन करने वाला हूं। और अपनी पुस्तक 'अलमसीहुद्दज्जाल' में मेरे भांति-भांति के दोष गिनाए हैं। अतः मेरा नाम पेट-पुजारी, काम लोलुप, अहंकारी, दज्जाल, शैतान, असभ्य, पागल, झूठा, आलसी, कृतघ्न, वादाखिलाफ़ी करने वाला, बेईमान रखा है तथा अन्य कई दोष लगाए हैं जो उसकी पुस्तक असमसीहुद्दज्जाल में लिखे हुए हैं और यही समस्त दोष हैं जो अब तक यहूदी हज़रत ईसा पर लगाते हैं। अतः यह प्रसन्नता की बात है कि इस उम्मत के यहूदियों ने भी मुझ पर वही दोष लगाए हैं किन्तु मैं नहीं चाहता कि इन समस्त आरोपों और गालियों का उत्तर दूं अपितु मैं इन समस्त बातों को खुदा के सुपुर्द करता हूं। यदि मैं ऐसा ही हूं जैसा कि अब्दुल हकीम तथा उसके सहपंथियों ने मुझे समझा है तो फिर खुदा तआला से बढ़कर मेरा शत्रु और कौन होगा और यदि मैं खुदा तआला के निकट ऐसा नहीं हूं तो फिर मैं यही उचित समझता हूं कि इन बातों का उत्तर खुदा तआला पर छोड़ दूं। अल्लाह की नियति सदैव इसी प्रकार से जारी है कि जब कोई निर्णय पृथ्वी पर नहीं हो सकता तो उस मुकद्दमे को जो उसके किसी रसूल के बारे में होता है, खुदा तआला अपने हाथ में ले लेता है तथा स्वयं निर्णय करता है और यदि विरोधियों में से कोई विचार करे तो उनके आरोपों

से भी मेरा चमत्कार ही सिद्ध होता है क्योंकि जबकि मैं एक ऐसा अत्याचारी और दुष्ट व्यक्ति हूँ कि एक ओर तो पच्चीस वर्ष से खुदा तआला पर झूठ बोल रहा हूँ और रात को अपनी ओर से दो चार बातें बनाता हूँ तथा प्रातः कहता हूँ कि खुदा का यह इल्हाम है और फिर दूसरी ओर खुदा की सृष्टि पर यह अत्याचार करता हूँ कि उनका हज़ारों रुपया बेईमानी से खा लिया है। वादा तोड़ता करता हूँ, झूठ बोलता हूँ, अपनी कामलोलुपता के लिए उनको हानि पहुंचा रहा हूँ तथा सम्पूर्ण विश्व के दोष अपने अन्दर रखता हूँ फिर भी खुदा के प्रकोप के स्थान पर मुझ पर उसकी दया उतरती है। प्रत्येक योजना जो मेरे विरुद्ध बनाई जाती है खुदा शत्रुओं को उसमें विफल रखता है तथा उन हज़ारों पापों और झूठों, अन्याय तथा कृतघ्नताओं के कारण न मुझ पर बिजली गिरती है और न मैं पृथ्वी में धंसाया जाता हूँ अपितु समस्त शत्रुओं के विरुद्ध मुझे सहायता मिलती है। अतः उनके कई आक्रमणों के बावजूद मेरी रक्षा की गई^① तथा हज़ारों बाधाओं के बावजूद खुदा ने

① कप्तान डगलस साहिब डिप्टी कमिश्नर की अदालत में मुझ पर क़त्ल का मुकद्दमा चलाया गया, मैं उससे बचाया गया अपितु मुक्त होने की सूचना पहले से मुझे दे दी गई तथा डाक-क़ानून के विरुद्ध कार्य करने का मुझ पर मुकद्दमा चलाया गया, जिसका दण्ड छः माह का कारावास था उससे भी मैं बचाया गया तथा बरी होने की सूचना मुझे पहले से दे दी गई। इसी प्रकार मिस्टर डोई डिप्टी कमिश्नर की अदालत में मुझ पर एक फौजदारी मुकद्दमा चलाया गया। अन्ततः उसमें भी खुदा ने बरी किया और शत्रु अपने उद्देश्य में असफल रहे। इसकी भी मुझे पहले से सूचना दी गई। तत्पश्चात् एक मुकद्दमा फौजदारी करमदीन नामक एक व्यक्ति ने जेहलम के एक मजिस्ट्रेट संसारचन्द की अदालत में चलाया उससे भी मुझे बरी किया गया तथा बरी होने की सूचना खुदा ने मुझे पहले ही दे दी। फिर एक मुकद्दमा इसी करमदीन ने फौजदारी में गुरदासपुर अदालत में मुझ पर चलाया। उसमें भी मैं बरी किया गया, इस की सूचना भी खुदा ने मुझे पहले से दे दी। इसी प्रकार मेरे शत्रुओं ने मुझ पर आठ आक्रमण किए और आठ

मेरी जमाअत कई लाख तक पहुँचा दी। यदि यह चमत्कार नहीं तो और क्या है? यदि इसका कोई उदाहरण विरोधियों के पास मौजूद है तो वे प्रस्तुत करें अन्यथा इसके अतिरिक्त क्या कहें कि झूठों पर खुदा की ला'नत। क्या उनके पास पच्चीस वर्ष से निरन्तर खुदा पर झूठ बनाने वाले का कोई उदाहरण है जिसे झूठ गढ़ने की इस लम्बी अवधि के बावजूद समर्थन और सहायता के सैकड़ों निशान दिए गए हों और वह शत्रुओं के प्रत्येक आक्रमण से सुरक्षित रहा हो। यदि तुम सच्चे हो तो इसका कोई उदाहरण ले आओ।

सारांश यह कि अब हमारा और विरोधियों का विवाद चरम सीमा तक पहुँच गया है तथा अब इस मुकद्दमे का निर्णय वह स्वयं करेगा, जिसने मुझे भेजा है। यदि मैं सच्चा हूँ तो आवश्यक है कि आकाश मेरे लिए एक शक्तिशाली साक्ष्य दे जिससे शरीर कांपने लगें। यदि मैं पच्चीस वर्ष से अपराधी हूँ जिसने इतने लम्बे समय तक खुदा पर झूठ बांधा तो मैं क्योंकर बच सकता हूँ। इस अवस्था में यदि तुम सब मेरे मित्र भी बन जाओ तब भी मैं वधित हूँ क्योंकि खुदा का हाथ मेरे विरुद्ध है। हे लोगो ! तुम्हें स्मरण रखना चाहिए कि मैं झूठा नहीं अपितु पीड़ित हूँ तथा झूठ बनाने वाला नहीं अपितु सच्चा हूँ। मेरे पीड़ित होने पर एक युग बीत गया है। यह वही बात है कि आज से पच्चीस वर्ष पूर्व खुदा ने कही जो बराहीन अहमदिया में प्रकाशित हुई अर्थात् खुदा का यह इल्हाम कि **दुनिया में एक नज़ीर (डराने वाला) आया पर दुनिया से उसे स्वीकार न किया परन्तु खुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली आक्रमणों से उसकी सच्चाई को प्रकट कर देगा।** यह उस समय का इल्हाम है जबकि मेरी ओर से न कोई निमंत्रण था न कोई इन्कारी था, केवल भविष्यवाणी के रूप में ये शब्द थे जो विरोधी मौलवियों ने पूर्ण किए। अतः उन्होंने जो चाहा किया। अब इस भविष्यवाणी के

में ही असफल रहे और खुदा की वह भविष्यवाणी पूर्ण हुई जो आज से पच्चीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में लिखी है अर्थात् यह कि **ينصرك الله في موطن** (अल्लाह बहुत से मैदानों में तेरी सहायता करेगा) क्या यह चमत्कार नहीं ? इसी से

दूसरे वाक्य के प्रकट होने का समय है अर्थात् यह वाक्य कि 'परन्तु खुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली आक्रमणों द्वारा उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।'

खेद कि खुदा तआला के जो निशान स्पष्ट तौर पर प्रकट हुए उन से उन्होंने कुछ लाभ प्राप्त नहीं किया तथा कुछ निशान जो समझ में नहीं आए उनको आरोप का कारण बना दिया। इसलिए मैं जानता हूँ कि अब इस निर्णय में विलम्ब नहीं। आकाश के नीचे यह बड़ा अत्याचार हुआ कि खुदा के एक मामूर से उन लोगों ने जो चाहा किया और जो चाहा लिखा तथा यह विचित्र बात है कि अब्दुल हकीम खान अपनी पुस्तक 'ज़िकरुल हकीम' के पृष्ठ पैंतालीस (45) में मेरे बारे में लिखता है -

“मुझे आप की ओर से कोई डगमगाहट नहीं वही ईमान है कि आप मसीले मसीह हैं, मसीह हैं, मसीले अंबिया हैं।” फिर इसी पुस्तक के पृष्ठ-12 में पंक्ति 15 से लेकर पंक्ति 20 तक मेरी पुष्टि में उसकी अपनी इबारत यह है जो मोटी कलम से लिखी जाती है - “एक मौलवी मुहम्मद हसन बेग मेरे मौसेरे भाई थे हुज़ूर के (अर्थात् मेरे) कट्टर विरोधी थे उनके बारे में स्वप्न में मुझे ज्ञात हुआ कि यदि वह युग के मसीह के विरोध में अड़ा रहा तो प्लेग से मर जाएगा। उसका निवास भी शहर के बाहर एक हवादार विशाल मकान में था। यह स्वप्न मैंने उसके सगे भाई, चाचा और अन्य संबंधियों को सुना दिया था। एक वर्ष के पश्चात् वह प्लेग से ही मरा।” देखिए अब्दुल हकीम खान की पुस्तक 'ज़िकरुल हकीम' पृष्ठ-12 ।

अब देखो कि एक ओर तो यह व्यक्ति मेरे मसीह मौऊद होने का इक्रार करता है और न केवल इक्रार अपितु मेरी पुष्टि के बारे में एक स्वप्न भी प्रस्तुत करता है जो सच्चा निकला।

फिर इसी पुस्तक के अन्त में तथा अपनी पुस्तक 'अल मसीहुद्दज्जाल' में मेरा नाम दज्जाल और शैतान भी रखता है तथा मुझे बेईमान, कृतघ्न और महा

झूठा ठहराता है। यह बड़ी विचित्र बात है कि अब्दुल हकीम खान ने अपने इन दोनों विरोधाभासी वर्णनों में कुछ दिनों का भी अन्तर नहीं रखा। एक ओर तो मुझे मसीह मौऊद कहा तथा अपने स्वप्न के साथ मेरी पुष्टि की और फिर साथ ही दज्जाल और झूठा भी कह दिया। मुझे इस बात की परवाह नहीं कि ऐसा क्यों किया, परन्तु प्रत्येक को विचार करना चाहिए कि इस व्यक्ति की दशा एक हतबुद्धि मनुष्य की है जो अपने कलाम में एक स्पष्ट विरोधाभास रखता है। एक ओर तो मुझे सच्चा मसीह कहता है अपितु मेरी पुष्टि में एक सच्चा स्वप्न प्रस्तुत करता है जो पूर्ण हो गया और दूसरी ओर मुझे समस्त काफ़िरों से निकृष्ट समझता है। क्या इस से बढ़कर कोई अन्य विरोधाभास होगा। जिन दोषों को वह मुझ से सम्बद्ध करता है उसे स्वयं विचार करना चाहिए था कि जब स्वप्न के अनुसार मेरी सच्चाई की उसे पुष्टि हो चुकी थी अपितु मेरे सत्यापन के लिए खुदा ने हसन बेग को प्लेग से मार भी दिया था^① तो क्या एक दज्जाल के लिए खुदा ने उसे मारा और क्या खुदा को वह दोष ज्ञात न थे जो बीस वर्ष के पश्चात् उसे ज्ञात हो गए^② और उसका यह बहाना स्वीकार नहीं किया जाएगा कि मुझे शैतानी स्वप्न आते होंगे और यह भी एक शैतानी स्वप्न था, क्योंकि हम यह तो स्वीकार कर सकते हैं कि उसे स्वाभाविक अनुकूलता के कारण शैतानी स्वप्न आते हैं

① अब अब्दुल हकीम के लिए अनिवार्य है कि मुहम्मद हसन बेग की क्रब्र पर जा कर रोए कि हे भाई तू झुठलाने में सच्चा था और मैं झूठा। मेरा पाप क्षमा कर और खुदा से मालूम करके मुझे बता कि एक झूठे और दज्जाल के लिए उसने क्यों तुझे मार दिया। इसी से

② यह बात भी विचार करने योग्य है कि जो व्यक्ति बीस वर्ष तक लेख और भाषण द्वारा मेरा समर्थन करता और विरोधियों के साथ झगड़ता रहा। अब बीस वर्ष के पश्चात् उसे कौन सी नई बात मालूम हुई। जो दोष उसने लिखे हैं वे तो वही हैं जिनका उत्तर वह स्वयं दिया करता था। (इसी से)

तथा शैतानी इल्हाम भी होते होंगे^① किन्तु यह हम स्वीकार नहीं कर सकते कि यह शैतानी स्वप्न है क्योंकि शैतान को किसी को मारने की शक्ति नहीं दी गई। हां शैतानी स्वप्न और शैतानी इल्हाम वे हैं जो अब उसे मेरे विरोध की अवस्था में होते हैं क्योंकि उनके साथ खुदा की शक्ति का कोई नमूना नहीं। अतः उसे प्रयास करना चाहिए कि शैतान उससे दूर हो जाए।

उन उल्लेखनीय बातों में से एक यह है कि अब्दुल हकीम खान ने अपनी पुस्तक 'अलमसीहुद्दज्जाल' में दूसरे विरोधियों की भांति जन साधारण को यह धोखा देना चाहा है कि मानो मेरी भविष्यवाणियां गलत निकलती रही हैं। अतः जो भविष्यवाणी अब्दुल्लाह आथम के बारे में थी, जो भविष्यवाणी अहमद बेग के बारे में थी और जो एक भविष्यवाणी मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी तथा उनके कुछ साथियों के बारे में थी। इन सब का वर्णन करके यह दावा किया है कि वे पूरी

① यह भी अब्दुल हकीम के हत बुद्धि होने का लक्षण है कि उसे अपने स्वप्न को जिसमें मुहम्मद हसन बेग की मृत्यु बताई गई थी तथा उसके अनुसार हसन बेग मर भी गया था एक शैतानी स्वप्न ठहराता है। मालूम होता है कि विरोध के उन्माद ने इस व्यक्ति की बुद्धि भ्रष्ट कर दी है। जिस स्वप्न को घटनाओं ने सच्चा करके दिखा दिया और उसने खुदा की ओर से होने पर मुहर लगा दी वह क्योंकि झूठा हो सकता है। झूठे और मनगढ़त स्वप्न तो वे हैं जो अब उसके विपरीत आते हैं जिन पर कोई सच्चाई की मुहर नहीं, परन्तु इस स्वप्न में शैतान का लेशमात्र भी हस्तक्षेप नहीं क्योंकि यह एक भयावह घटना के साथ पूर्ण हो गया। मुह्यी और मुमीत (जीवित करने वाला तथा मारने वाला) तो खुदा का नाम है शैतान का नाम नहीं। हां इस सच्चे स्वप्न से अब्दुल हकीम की कोई श्रेष्ठता सिद्ध नहीं होती क्योंकि हजरत यूसुफ़ के समय में फिरौन को भी सच्चा स्वप्न आ गया था तथा बड़े-बड़े काफ़िरों को भी कभी-कभी सच्चे स्वप्न आ जाते हैं। खुदा के मान्य लोग परोक्ष के ज्ञान की अधिकता तथा एक विशेष ने'मत से पहचाने जाते हैं न कि केवल एक दो स्वप्न से। इसी से।

नहीं हुई, किन्तु मैं इन भविष्यवाणियों के संबंध में बहुत बार लिख चुका हूँ कि खुदा के नियम के अनुसार पूर्ण हो चुकी हैं। मैं अब्दुल्लाह आथम के संबंध में तथा अहमद बेग और उसके दामाद के संबंध में सैकड़ों बार वर्णन कर चुका हूँ कि ये दोनों भविष्यवाणियां अपने साथ शर्त रखती थीं। अब्दुल्लाह आथम के बारे में भविष्यवाणी के ये शब्द थे कि वह पन्द्रह महीने में मरेगा इस शर्त पर कि सच्चाई की ओर न लौटे, ये शब्द नहीं थे कि शर्त के साथ वह प्रत्यक्ष तौर पर मुसलमान भी हो जाए। रुजू (सत्य की ओर लौटना) एक ऐसा शब्द है जो हृदय के साथ संबंध रखता है।^① अतः उस ने उसी सभा में जिसमें साठ-सत्तर या कुछ कम या अधिक लोग मौजूद थे भविष्यवाणी सुनने के पश्चात् रुजू (पश्चाताप) के लक्षण प्रकट किए अर्थात् जब मैंने भविष्यवाणी सुनाकर उसे कहा कि तुम ने हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी पुस्तक में दज्जाल कहा है तो उसके दण्डस्वरूप यह भविष्यवाणी है कि पन्द्रह माह के अन्दर तुम्हारे जीवन का अन्त होगा। तब उसका रंग पीला पड़ गया तथा उसने अपनी जीभ बाहर निकाली और दोनों हाथ कानों पर रखे तथा उच्च स्वर में कहा कि मैंने आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम दज्जाल कदापि नहीं रखा^②। इस सभा में मुसलमानों में से एक रईस अमृतसर के भी मौजूद थे जिनका नाम संभवतः यूसुफ़ शाह था तथा बहुत से ईसाई और मुसलमान थे। विशेषकर ईसाइयों में से डाक्टर मार्टिन क्लार्क भी था, जिस ने बाद में मुझ पर क्रतल का मुकद्दमा भी चलाया था। इन सब को शपथ देकर पूछना चाहिए कि क्या यह घटना हुई थी या नहीं। यदि वास्तव में ये

① यदि किसी के बारे में यह भविष्यवाणी हो कि वह पन्द्रह महीने तक कोढ़ी जो जाएगा। अतः यदि वह पन्द्रह के स्थान पर बीसवें महीने में कोढ़ी हो जाए तथा नाक एवं समस्त अंग गिर जाएं तो क्या वह अधिकार रखेगा कि यह कहे कि भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। मूल घटना पर दृष्टि होनी चाहिए। इसी से।

② इन शब्दों से स्पष्ट है कि अब्दुल्लाह आथम ने दज्जाल कहने से पश्चाताप कर लिया था और पेशगोई का असल यही कारण था। इसी से

शब्द अब्दुल्लाह आथम के मुख से निकले थे जो अब स्वयं विचार करना चाहिए कि क्या ये चपलता तथा उद्दण्डता करने के शब्द थे या नम्रता एवं विनय तथा अपनी पहली बात से लौटने के शब्द थे। मैंने तो इस प्रकार के विनय एवं नम्रता के शब्द अपनी समस्त आयु में किसी ईसाई के मुख से नहीं सुने अपितु उनकी पुस्तकें अधिकतर आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में गालियों से भरी हुई देखी हैं। फिर जबकि एक विरोधी व्यक्ति ने ठीक शास्त्रार्थ के समय इतनी नम्रता के साथ दज्जाल कहने से इन्कार किया और बाद में वह पन्द्रह महीने तक खामोश रहा अपितु रोता रहा तो फिर क्या वह ख़ुदा तआला के निकट इस बात का अधिकार न रखता था कि ख़ुदा तआला शर्त के अनुसार उसे लाभ पहुंचाता।^① फिर बहुत समय तक भी वह जीवित नहीं रहा अपितु कुछ माह पश्चात् ही मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसने उसके पश्चात् कोई चपलता नहीं दिखाई और जो कुछ उसकी ओर सम्बद्ध किया जाता है वह ईसाइयों का अपना करतब है। अतः मूल भविष्यवाणी तो उसकी मृत्यु थी उसके अनुसार वह मेरे जीवन में ही मर गया। ख़ुदा ने मेरी आयु बढ़ा दी और उसके जीवन का अन्त कर दिया। अब इसी बात पर बल देना कि वह निर्धारित समय सीमा के अन्दर नहीं मरा कितना अन्याय और द्वेष है। हे मूर्ख

① **हाशिया** - यह बिन्दू स्मरण रखने योग्य है कि अब्दुल्लाह आथम के बारे में भी मृत्यु की भविष्यवाणी थी और लेखराम के बारे में भी मृत्यु की भविष्यवाणी थी परन्तु अब्दुल्लाह आथम ने विनम्रता का प्रदर्शन किया इसलिए उसकी मृत्यु में निर्धारित अवधि में कुछ माह का विलम्ब हो गया और लेखराम ने भविष्यवाणी सुनने के पश्चात् शेखी का प्रदर्शन किया तथा बाजारों और सभाओं में हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियां देता रहा। इसलिए इससे पूर्व कि उसकी निर्धारित अवधि भी पूर्ण होती वह पकड़ा गया तथा अभी एक वर्ष शेष रहता था कि वह मारा गया। अब्दुल्लाह आथम से ख़ुदा तआला ने अपनी जमाली (करुणामयी) विशेषता को प्रकट किया और लेखराम से प्रतापी विशेषता को। वह सामर्थ्यवान है कम भी कर सकता है और अधिक भी। इसी से।

! क्या तू यूनस के क्रिस्से से भी अज्ञान है जिसका वर्णन पवित्र कुर्आन में मौजूद है। यूनस की भविष्यवाणी में कोई शर्त भी नहीं थी तब भी पश्चाताप और क्षमायाचना से उसकी क़ौम सुरक्षित रही, हालांकि उसकी क़ौम के बारे में ख़ुदा तआला का ठोस वादा था कि वह चालीस दिन के अन्दर अवश्य नष्ट हो जाएगी, किन्तु क्या वह इस भविष्यवाणी के अनुसार चालीस दिन के अन्दर नष्ट हो गई ? यदि चाहो तो “दुर्रें मन्सूर” में उनका क्रिस्सा देख लो अथवा यूना नबी की किताब भी देख लो। सीमा से बढ़कर क्यों दुष्टता का प्रदर्शन करते हो, क्या एक दिन मरना नहीं है? अहंकार और बेईमानी ईमान के साथ एकत्र नहीं हो सकते।

अहमद बेग के दामाद के बारे में भी हम बारम्बार लिख चुके हैं कि यह भविष्यवाणी भी शर्त के साथ थी तथा शर्त के शब्द जो हम विज्ञापनों में पहले ही प्रकाशित कर चुके हैं ये थे -

ایہا المرأۃ توی توی فان البلاء علی عقبک

ये इल्हामी शब्द हैं और इसमें सम्बोधन उस स्त्री की नानी को किया गया है जिस के बारे में यह भविष्यवाणी है। एक बार मैंने यह इल्हाम मौलवी अब्दुल्लाह साहिब की सन्तान में एक सदस्य को समय से पूर्व होशियारपुर में सुनाया था। संभवतः उनका नाम अब्दुरहीम या अब्दुल वाहिद था। इस इल्हामी इबारत का अनुवाद यह है, हे स्त्री तौबा कर, तौबा कर, क्योंकि तेरी लड़की और लड़की की लड़की पर एक विपत्ति आने वाली है। इस भविष्यवाणी में अहमद बेग और उसके दामाद की सूचना दी गई थी। अतः अहमद बेग निर्धारित समय सीमा के अन्दर मृत्यु पा गया^① तथा उस स्त्री की लड़की पर विपत्ति आ गई क्योंकि वह अहमद

① **हाशिया** - आश्चर्य है कि जो लोग अहमद बेग के दामाद की बार-बार चर्चा करते हैं वे कभी मुँह पर यह नहीं लाते कि इस भविष्यवाणी का एक भाग पूर्ण हो चुका है क्योंकि अहमद बेग का निर्धारित समय-सीमा के अन्दर निधन हो चुका है यदि इनमें कुछ ईमानदारी होती तो ऐसे वर्णन करना चाहिए था कि इस भविष्यवाणी के दो हिस्सों में से एक हिस्सा पूरा हो चुका है और दो टांगों में से एक टांग टूट गई है परन्तु द्वेष भी एक

बेग की पत्नी थी। और अहमद बेग की मृत्यु से उसके परिजनों पर भय का आतंक छा गया, यहां तक कि उनमें से कुछ लोगों ने मुझे विनम्रतापूर्वक पत्र भी लिखे कि दुआ करो। अतः खुदा ने उनके इस भय तथा इतने विनय के कारण भविष्यवाणी के घटित होने में विलम्ब कर दिया और जो कुछ मौलवी मुहम्मद हुसैन और उनके साथियों के बारे में भविष्यवाणी खुदा तआला के इल्हाम में लिखी गई थी उसके बारे में कोई तिथि निर्धारित न थी, केवल मेरी दुआ में अपने शब्द थे, इल्हामी शब्द न थे तथा केवल मेरी ओर से दुआ थी कि इतने समय में ऐसा हो। खुदा तआला अपनी वह्यी का पाबन्द होता है उस पर अनिवार्य नहीं कि जो अपनी ओर से याचना की जाए बिल्कुल उसे ही दृष्टिगत रखे। इसलिए भविष्यवाणी में जो अरबी भाषा में प्रकाशित हो चुकी है कोई समय सीमा निर्धारित नहीं है कि अमुक महीने या वर्ष में अपमानित किया जाएगा। यह तो ज्ञात है कि अज़ाब के वादे से संबंधित भविष्यवाणियों में खुदा तआला अधिकार रखता है कि उनको किसी के विनय एवं विनम्रता से या अपनी ओर से स्थगित कर दे। समस्त अहले सुन्नत अपितु समस्त अंबिया अलैहिमुस्सलाम की इस पर सहमति है क्योंकि अज़ाब के वादे की भविष्यवाणी खुदा तआला की ओर से एक विपत्ति किसी के लिए निश्चित होती है जो दान-पुण्य तथा पश्चाताप एवं क्षमा-याचना से टल सकती है, अन्तर केवल इतना है कि यदि खुदा तआला इस विपत्ति को केवल अपने ज्ञान में रखे तथा अपनी वह्यी के माध्यम से अपने किसी रसूल पर प्रकट न करे तब तो वह केवल मुकद्दर विपत्ति कहलाती है जो खुदा तआला की इरादे में छुपी होती है और यदि अपनी वह्यी के माध्यम से अपने किसी रसूल को उस विपत्ति की सूचना दे दे तब वह भविष्यवाणी हो जाती है तथा संसार की समस्त क़ौमों इस बात पर सहमति रखती हैं कि आने वाली विपत्तियां चाहे वे भविष्यवाणी के रूप में प्रकट की जाएं और चाहे केवल खुदा तआला की इरादे में छुपी हों वे दान-पुण्य, पश्चाताप एवं क्षमा-याचना से टल सकती हैं। तभी तो लोग संकट के समय में

विचित्र विपत्ति है कि न्याय के शब्द को मुँह-पर नहीं आने देता। (इसी से)

दान-पुण्य किया करते हैं अन्यथा व्यर्थ कार्य कौन करता है। समस्त नबियों की इस पर सहमति है कि दान-पुण्य तथा पश्चाताप एवं क्षमा-याचना से विपत्ति का निवारण होता है और मेरा यह व्यक्तिगत अनुभव है कि प्रायः खुदा तआला मेरे या मेरी सन्तान के बारे में या मेरे किसी मित्र के बारे में एक आने वाली विपत्ति की सूचना देता है और जब उसके निवारण के लिए दुआ की जाती है तो फिर दूसरा इल्हाम होता है कि हम ने उस विपत्ति को दूर कर दिया। अतः यदि इस प्रकार से अज़ाब के वादे की भविष्यवाणी का घटित होना आवश्यक है तो मैं बीसियों बार झूठा बन सकता हूँ और यदि हमारे विरोधियों एवं अशुभचिन्तकों को इस प्रकार से झुठलाने की रुचि है, यदि वे चाहें तो मैं उन्हें इस प्रकार की कई भविष्यवाणियाँ और फिर उनके स्थगन की सूचना दे दिया करूँ। हमारी इस्लामी तफ़्सीरों (व्याख्याओं) में तथा बाइबल में भी लिखा है कि एक बादशाह के बारे में समय के नबी ने भविष्यवाणी की थी कि उसकी आयु पन्द्रह दिन रह गई है, परन्तु वह बादशाह रात भर रोता रहा, तब उस नबी को दोबारा इल्हाम हुआ कि हमने पन्द्रह दिन को पन्द्रह वर्ष के साथ बदल दिया है। यह क्रिस्सा जैसा कि मैंने लिखा है हमारी पुस्तकों तथा यहूदियों और ईसाइयों की पुस्तकों में भी मौजूद है। अतः क्या तुम यह कहोगे कि वह नबी जिसने बादशाह की आयु के बारे में केवल पन्द्रह दिन बताए थे और पन्द्रह दिन के पश्चात् मृत्यु की सूचना दी थी वह अपनी भविष्यवाणी में झूठा निकला। यह खुदा तआला की दया है कि दण्ड देने के वादे की भविष्यवाणियों में निरस्त होने का मामला खुदा की ओर से जारी है, यहां तक कि जो नर्क में हमेशा रहने का वादा पवित्र कुर्आन में काफ़िरों के लिए है वहां भी यह आयत मौजूद है -

إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ^①

अर्थात् काफ़िर हमेशा नर्क में रहेंगे सिवाए इसके कि तेरा रब्ब चाहे। क्योंकि वह जो चाहता है उसके करने पर समर्थ है परन्तु स्वर्ग वासियों के लिए ऐसा नहीं

कहा क्योंकि वह वादा है दण्ड की धमकी नहीं है।^①

अन्त में मैं बहुत बल देकर और बड़े, दावे से और बड़ी बुद्धिमत्ता से यह कहता हूँ कि मेरी भविष्यवाणियों पर जो-जो आरोप डॉ. अब्दुल हकीम खान और उसके सहपंथी मौलवियों ने किए हैं मैं दिखा सकता हूँ कि दृढ़संकल्प नबियों में से कोई ऐसा नबी नहीं जिसकी किसी भविष्यवाणी पर इन्हीं आरोपों के समान कोई आरोप न हो और मैं केवल यूनस^{अ.} की घटना प्रस्तुत नहीं करूँगा अपितु हज़रत मूसा और हज़रत मसीह और समस्त नबियों के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों में या खुदा की वाणी में उसका उदाहरण दिखाऊँगा, किन्तु मैं यह सुनना चाहता हूँ कि क्या इस समय ये समस्त लोग इन सब नबियों को छोड़ने के लिए तैयार हैं और क्या वे इस बात के लिए तत्पर बैठे हैं कि इस प्रमाण के प्रस्तुत करने के पश्चात् जिस प्रकार वे मुझे गालियाँ देते हैं उन्हें भी गालियाँ देंगे और जिस प्रकार कि मुझे झूठा ठहराया है उन्हें भी झूठा ठहराएंगे? हे नादानो ! और आंखों के अन्धो ! अपना अंजाम खराब करते हो। खेद तुम क्यों जानबूझ कर अग्नि में गिरते हो और तुम क्यों संयम और ईमान से इतने दूर चले गए कि तुम्हारे हृदय में यह भय भी नहीं रहा कि यह आरोप किस-किस किस पवित्र और पुनीत नबी पर आएंगे। अल्लाह तआला का पवित्र कुर्आन में कथन है-

① पवित्र कुर्आन में काफ़िरों और मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) के दण्ड के लिए बार-बार नर्क का वर्णन है तथा बार-बार कहा है **خُلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا** (अन्निसा-170 और फिर इसके बावजूद कि पवित्र कुर्आन में नारकियों के बारे में **إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ** (हूद-108) भी मौजूद है और हदीस में भी है - **يَأْتِي عَلَى جَهَنَّمَ زَمَانٌ لَيْسَ فِيهَا أَحَدٌ وَنَسِيمُ الصَّبَا** - अर्थात् नर्क पर एक ऐसा समय आएगा कि उसमें कोई भी न होगा और प्रातः की शीतल समीर उसके किवाड़ों को हिलाएगी। कुछ पुस्तकों में फ़ारसी भाषा में यह हदीस लिखी है - **این مُشْتِ غاک را گرنه بختم چه کنم** - (अनुवाद- इस मुट्ठी भर खाक को यदि मैं क्षमा न करूँ तो क्या करूँ।) इसी से।

إِنْ يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۖ وَإِنْ يَكُ صَادِقًا يُصِيبْكُمْ بَعْضُ
الَّذِي يَعِدُكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ①

अर्थात् यदि यह नबी झूठा है तो स्वयं तबाह हो जाएगा क्योंकि खुदा झूठे के कार्य को गन्तव्य तक नहीं पहुंचाता। कारण यह कि इससे सच्चे और झूठे का मामला परस्पर संदिग्ध हो जाएगा और यदि यह रसूल सच्चा है तो उसकी कुछ दण्ड के वादे से सम्बद्ध भविष्यवाणियां अवश्य घटित होंगी। अतः इस आयत में जो “कुछ” का शब्द है स्पष्ट तौर पर उसमें यह संकेत है कि सच्चा रसूल जो दण्ड के वादे से संबंधित भविष्यवाणियां करता है तो यह आवश्यक नहीं है कि वे सभी प्रकट हो जाएं। हां यह आवश्यक है कि उनमें से कुछ प्रकट हो जाएं जैसा कि इस आयत में है **يُصِيبْكُمْ بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ** अतः आंख खोलकर देखो कि वे अज़ाब की कुछ भविष्यवाणियां जो मेरी ओर से प्रकाशित हुई थीं उनमें से किस शक्ति और प्रतिष्ठा के साथ लेखराम के बारे में भविष्यवाणी पूरी हुई जिसके सम्बन्ध में यह भी बताया गया था कि वह साधारण मृत्यु से नहीं मरेगा अपितु खुदा का प्रकोप किसी प्रहार से उसका अन्त करेगा तथा यह भी बताया गया था कि ईद के समीप उसकी मृत्यु की घटना होगी तथा यह भी संकेत किया गया था कि उसकी घटना के पश्चात् देश में तारुन फैलेगी तथा यह भी बताया गया था कि यह केवल भविष्यवाणी नहीं अपितु यह घटना मेरी बद्दुआ का एक परिणाम होगा क्योंकि उसके अपशब्द बहुत बढ़ गए थे। अतः वह खुदा जो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्मान एवं प्रतिष्ठा को नष्ट करना नहीं चाहता उसका प्रकोप लेखराम पर उतरा और उसे भयानक अज़ाब के साथ तबाह किया।

अतः विचार करना चाहिए कि अहमद बेग के बारे में जो मुझे झुठलाने के लिए कटिबद्ध था और दिन-रात उपहास करता था, किस स्पष्टता से भविष्यवाणी ने अपना प्रकटन किया और वह निर्धारित समय सीमा के अन्दर टायफायड से होशियारपुर के अस्पताल में मृत्यु का शिकार हो गया, उसके परिजनों में उसकी

मृत्यु से कोलाहल मच गया। यह वही अहमद बेग है जिसके दामाद के बारे में हमारे विरोधी अब तक मातम और शोक मना रहे हैं कि क्यों नहीं मरता। नहीं जानते कि दाईं टांग तो इस भविष्यवाणी की अहमद बेग ही था, जिसने अचानक युवावस्था की मौत मरने से सिद्ध कर दिया कि भविष्यवाणी सच्ची है और फिर जैसा कि भविष्यवाणी में उल्लेख था कि अहमद बेग की मृत्यु के निकट उसके परिजनों की और मौतें भी होंगी। यह बात भी घटित हो गई तथा अहमद बेग का एक लड़का और दो बहनें उन्हीं दिनों में मृत्यु का शिकार हो गए। अब हमारे विरोधी बताएं कि आयत **يُصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ** का वाक्य इस पर चरितार्थ हुआ या नहीं। अतः जबकि मेरी कुछ अज्ञाब की भविष्यवाणियों के संबंध में उन्हें स्वयं इक्रार करना पड़ता है कि पूर्ण स्पष्टता के साथ पूरी हो गई तो फिर मुसलमान होने का दावा करने के बावजूद क्यों यह आयत उनकी दृष्टि में नहीं रहती अर्थात् **يُصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ** क्या गुप्त तौर पर इस्लाम से विमुखता की तैयारी तो नहीं ? और यह कहना कि भविष्यवाणी के पश्चात् अहमद बेग की लड़की के निकाह के लिए प्रयास किया गया तथा लालच दिया गया और पत्र लिखे गए। ये बड़े विचित्र आरोप हैं। सत्य है मनुष्य द्वेष की तीव्रता के कारण अन्धा हो जाता है। कोई मौलवी इस बात से अनभिज्ञ न होगा कि यदि खुदा की वह्यी किसी बात को बतौर भविष्यवाणी प्रकट कर दे तथा संभव हो कि मनुष्य किसी उपद्रव एवं अवैध या अनुचित ढंग के बिना उसे पूरा कर सके। तो अपने हाथ से उस भविष्यवाणी का पूरा करना न केवल वैध अपितु मसनून^① है तथा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का स्वयं अपना कर्म इसके प्रमाण के लिए पर्याप्त है और फिर हज़रत उमर^{रज़ि} का एक सहाबी को कड़े पहनाना दूसरा प्रमाण है तथा इस्लाम की उन्नति के लिए भी पवित्र कुर्आन में एक भविष्यवाणी थी फिर क्यों इस्लाम की उन्नति के लिए भरसक प्रयास किया गया था, यहां तक कि लोगों

① हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम द्वारा अपनाया गया या करके दिखाया गया ढंग या कार्य शैली। (अनुवादक)

के हृदयों को आकृष्ट करने के लिए कई लाख रुपया दिया गया और यहां तो भूमि आदि के लिए मूल प्रेरणा स्वयं अहमद बेग की ओर से थी।

फिर विचार करना चाहिए कि एक ओर तो ये दो तीन भविष्यवाणियां हैं जो हमारे विरोधी अपने अंधेपन के कारण बार-बार प्रस्तुत करते हैं जिनकी झूठी गन्दगी अब्दुल हकीम को भी खानी पड़ी। दूसरी ओर मेरे समर्थन में खुदा तआला के निशानों का एक दरिया बह रहा है जिस से ये लोग अपरिचित नहीं हैं और शायद ही कोई महीना ऐसा गुजरता होगा कि जिसमें कोई निशान प्रकट न हो। उन निशानों को कोई नहीं देखता और न यह देखते हैं कि खुदा क्या कह रहा है। एक ओर प्लेग व्यवहारिक रूप से से कह रही है कि प्रलय के दिन निकट हैं तथा दूसरी ओर अद्भुत एवं विलक्षण भूकम्प जो कभी इस प्रकार से इस देश में नहीं आए थे सूचित कर रहे हैं कि पृथ्वी पर खुदा का प्रकोप भड़क रहा है तथा प्रतिदिन ऐसी नवीन से नवीन आपदाएं आ रही हैं कि जिन से विदित होता है कि संसार के ढंग परिवर्तित हो गए हैं तथा प्रकट होता है कि खुदा तआला कोई बड़ी आपदा प्रदर्शित करना चाहता है। और प्रत्येक आपदा जो आती है मुझे पहले से उसकी सूचना दी जाती है और मैं समाचार पत्र, पत्रिकाओं या विज्ञापन के द्वारा उसे प्रकाशित कर देता हूं। इसलिए मैं बार-बार कहता हूं कि पश्चाताप करो कि पृथ्वी पर इतनी आपदाएं आने वाली हैं कि जैसे सहसा एक काली आंधी आती है और जैसा कि फिरौन के युग में हुआ कि पहले थोड़े निशान दिखाए गए और अन्ततः वह निशान दिखाया गया जिसे देख कर फिरौन को भी कहना पड़ा कि -

اٰمَنْتُ اِنَّهٗ لَا اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْ اٰمَنْتُ بِهٖ بَنُوۡا۟ السَّرٰۤیِلَ ①

खुदा चार तत्त्वों में से प्रत्येक तत्त्व में निशान के तौर पर एक तूफान पैदा करेगा और संसार में बड़े-बड़े भूकम्प आएंगे, यहां तक कि वह भूकम्प आ जाएगा जो प्रलय का नमूना है। तब प्रत्येक क्रौम में मातम पड़ेगा क्योंकि उन्होंने अपने समय को नहीं पहचाना। यह अर्थ खुदा के इस इल्हाम के हैं कि -

दुनिया में एक डराने वाला (नज़ीर) आया पर दुनिया ने उसे स्वीकार न किया परन्तु खुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली आक्रमणों से उसकी सच्चाई को प्रकट कर देगा। यह पच्चीस वर्ष पूर्व का इल्हाम है जिसका बराहीन अहमदिया में उल्लेख किया गया है तथा इन दिनों में पूरा होगा जिसके कान सुनने के हैं वह सुने।^①

यह तो हमने उन दो-तीन भविष्यवाणियों का उल्लेख किया है जिन पर हमारे विरोधी मौलवी और उन्हीं का नया शिष्य अब्दुल हकीम खान बार-बार आरोप लगाते हैं। अब हम उनके मुकाबले पर यह दिखाना चाहते थे कि खुदा तआला के आकाशीय निशान हमारी गवाही के लिए कितने हैं परन्तु खेद कि यदि वे सभी लिखे जाएं तो हजार भागों की पुस्तक में भी उनकी गुंजायश नहीं हो सकती। इसलिए हम केवल नमूने के तौर पर उनमें से एक सौ चालीस निशानों का उल्लेख करते हैं। उनमें से कुछ वे पूर्व नबियों की भविष्यवाणियां हैं जो मेरे पक्ष में पूरी हुईं, कुछ इस उम्मत के महापुरुषों की भविष्यवाणियां हैं, कुछ खुदा तआला के वे निशान हैं जो मेरे द्वारा प्रकट हुए। चूंकि मेरी भविष्यवाणियों पर उन भविष्यवाणियों को सामयिक प्राथमिकता है इसलिए उचित समझा गया कि लिखित तौर पर भी उन्हीं को प्राथमिकता दी जाए। ये समस्त भविष्यवाणियां एक ही श्रृंखला में क्रमानुसार लिखी जाएंगी और वे ये हैं :-

① खुदा तआला ने मुझे केवल यही सूचना नहीं दी कि पंजाब में भूकम्प आदि आपदाएं आएंगी क्योंकि मैं केवल पंजाब के लिए नहीं भेजा गया अपितु जहां तक संसार की आबादी है उन सब के सुधार के लिए भेजा गया हूं। अतः मैं सच-सच कहता हूं कि ये आपदाएं तथा ये भूकम्प केवल पंजाब से विशिष्ट नहीं हैं वरन् समस्त संसार इन आपदाओं से हिस्सा लेगा और जैसा कि अमरीका इत्यादि के बहुत से भागों का विनाश हो चुका है यही समय किसी दिन यूरोप पर आएगा, फिर यह भयंकर दिन पंजाब और हिन्दुस्तान तथा एशिया के प्रत्येक भाग के लिए प्रारब्ध है। जो व्यक्ति जीवित रहेगा वह देख लेगा। (इसी से)

(1) पहला निशान :- قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان الله يبعث لهذه الامة على رأس كل مائة سنة من يجدد لها دينها۔ رواه ابو داود
 अर्थात् ख़ुदा प्रत्येक शताब्दी हिज्री के सर पर इस उम्मत के लिए एक व्यक्ति का भेजेगा जो उसके लिए धर्म को ताज़ा करेगा और अब इस शताब्दी हिज्री का चौबीसवां वर्ष समाप्त होने जा रहा है, संभव नहीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वादा भंग हो। यदि कोई कहे कि यह हदीस सही है तो बारह शताब्दियों के मुजद्दिदों के नाम बताएं।

इसका उत्तर यह है कि यह हदीस उम्मत के उलेमा में मान्य चली आ रही है। अब यदि मेरे दावे के समय इस हदीस को बनावटी हदीस भी कहा जाए तो उन मौलवी लोगों से यह भी सत्य है कि कुछ बड़े-बड़े मुहद्दसीन ने अपने-अपने युग में स्वयं मुजद्दिद होने का दावा किया है। कुछ ने किसी दूसरे को मुजद्दिद बनाने का प्रयास किया है और यदि यह हदीस सही नहीं तो उन्होंने ईमानदारी से काम नहीं लिया तथा हमारे लिए यह आवश्यक नहीं कि समस्त मुजद्दिदों के नाम याद हों। सभी ज्ञानों पर व्याप्त होने की विशेषता तो ख़ुदा तआला की है, हमारा अर्न्तयामी होने का दावा नहीं परन्तु उतना ही जितना ख़ुदा बताए। इसके अतिरिक्त यह उम्मत विश्व के एक बड़े भाग में फैली हुई है और ख़ुदा की नीति कभी किसी देश में मुजद्दिद पैदा करती है और कभी किसी देश में। अतः ख़ुदा के कार्यों का पूर्ण ज्ञान कौन रख सकता है और कौन उसके ग़ैब (परोक्ष) को परिधि में ले सकता है। भला यह तो बताओ कि हज़रत आदम से लेकर आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक प्रत्येक क्रौम में कितने नबी गुज़रे हैं। यदि तुम यह बता दोगे तो हम मुजद्दिद भी बता देंगे। स्पष्ट है कि ज्ञान के अभाव से किसी वस्तु का अभाव अनिवार्य नहीं होता। यह बात भी अहले सुन्नत में सर्व सम्मत है कि इस उम्मत का अन्तिम मुजद्दिद मसीह मौऊद है जो अन्तिम युग में प्रकट होगा। अब समीक्षा योग्य बात यह है कि यह अन्तिम युग है अथवा नहीं ? यहूदी और ईसाई दोनों क्रौमों इस पर सहमत हैं या नहीं कि यह अन्तिम युग है यदि चाहो तो पूछ कर

देख लो। प्लेग फैल रही है भूकम्प आ रहे हैं हर प्रकार के विलक्षण विनाश आरंभ हैं क्या यह अन्तिम युग नहीं ? इस्लाम के सदाचारी लोगों ने भी इस युग को अन्तिम युग ठहराया है तथा चौदवहीं शताब्दी हिज्री में से भी तेईस वर्ष गुज़र गए हैं। अतः यह ठोस तर्क इस बात पर है कि यही समय मसीह मौऊद के प्रकट होने का है और मैं ही वह एकमात्र व्यक्ति हूँ जिसने इस शताब्दी हिज्री के प्रारंभ होने से पूर्व दावा किया और मैं ही वह एकमात्र व्यक्ति हूँ जिस के दावे पर पच्चीस वर्ष गुज़र गए और अब तक जीवित हूँ और मैं ही वह एक हूँ जिसने ईसाइयों तथा अन्य जातियों को ख़ुदा के निशानों के साथ दोषी किया। अतः जब तक मेरे इस दावे के मुकाबले पर इन्हीं विशेषताओं के साथ कोई दूसरा दावेदार प्रस्तुत न किया जाए तब तक मेरा यह दावा प्रमाणित है कि वह मसीह मौऊद जो अन्तिम युग का मुजद्दिद है वह मैं ही हूँ। युग में ख़ुदा तआला ने नौबतें (बारियां) रखी हैं। एक वह समय था कि ख़ुदा के सच्चे मसीह को सलीब ने तोड़ा तथा उसे घायल किया था और अन्तिम युग में यह निर्धारित था कि मसीह सलीब को तोड़ेगा अर्थात् आकाशीय निशानों से क़फ़ारः की आस्था को संसार से समाप्त कर देगा। प्रतिफल के लिए शिकायत नहीं।

(2) दूसरा निशान - सही दार-ए-कुत्ली में यह एक हदीस है कि इमाम मुहम्मद बाकर कहते हैं -

اِنَّ لِمَهْدِيْنَا اَيْتِيْنَ لَمْ تَكُنَا مِنْ ذٰلِكَ خَلْقَ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ يَنْكَسِفُ
القَمَرُ لَآوْلَ لَيْلَةٍ مِنْ رَمَضَانَ وَتَنْكَسِفُ الشَّمْسُ فِي النِّصْفِ مِنْهُ۔

अनुवाद - हमारे महदी के लिए दो निशान हैं और जब से कि धरती और आकाश को ख़ुदा ने पैदा किया ये दो निशान किसी अन्य मामूर और रसूल के समय में प्रकट नहीं हुए उनमें से एक यह है कि प्रतिज्ञात महदी के युग में रमज़ान के महीने में चन्द्रमा का ग्रहण उसकी प्रथम रात्रि में होगा अर्थात् तेरहवीं तिथि में और सूर्यग्रहण उसके दिनों में से बीच के दिन में होगा अर्थात् उसी रमज़ान की अट्ठाईसवीं तिथि को तथा ऐसी घटना संसार के प्रारंभ से किसी रसूल या नबी के समय में कभी प्रकट

नहीं हुई केवल महदी मा'हूद के समय उसका होना निर्धारित है। अब समस्त अंग्रेजी और उर्दू अखबार तथा समस्त खगोल शास्त्री इस बात के साक्षी हैं कि मेरे युग में ही जिस को लगभग बारह वर्ष का समय बीत चुका है। इस प्रकार का चन्द्र एवं सूर्य-ग्रहण रमज़ान के महीने में लगा है और जैसा कि एक अन्य हदीस में वर्णन किया गया है। यह ग्रहण दो बार रमज़ान में लग चुका है। प्रथम इस देश में, द्वितीय अमरीका में तथा दोनों बार इन्हीं तिथियों में लगा है जिनकी ओर हदीस संकेत करती है। चूंकि इस ग्रहण के समय में मेरे अतिरिक्त महदी मा'हूद होने का दावेदार संसार में कोई नहीं था और न किसी ने मेरे समान इस ग्रहण को अपने महदी होने का निशान ठहरा कर सैकड़ों विज्ञापन, पत्रिकाएं, उर्दू और फ़ारसी तथा अरबी में विश्व भर में प्रकाशित कीं। इसलिए यह आसमानी निशान मेरे लिए निर्धारित हुआ। इस पर दूसरा तर्क यह है कि इस निशान के प्रकट होने से बारह वर्ष पूर्व मुझे सूचना दी थी कि ऐसा निशान प्रकट होगा तथा वह सूचना बराहीन अहमदिया में दर्ज होकर इस से पूर्व कि यह निशान प्रकट हो लाखों लोगों में प्रसारित हो चुकी थी।

बड़े खेद की बात है कि हमारे विरोधी सर्वथा द्वेष से यह ए'तिराज़ करते हैं। प्रथम - यह कि हदीस के शब्द ये हैं कि चन्द्र-ग्रहण प्रथम रात्रि में होगा और सूर्य ग्रहण मध्य के दिन में, परन्तु ऐसा नहीं हुआ अर्थात् उनके विचार के अनुसार "चन्द्र-ग्रहण हिलाल की रात्रि को होना चाहिए था जो चन्द्र माह की प्रथम रात्रि है और सूर्य-ग्रहण चन्द्र माह के पन्द्रहवें दिन को होना चाहिए था जो महीने का मध्य दिन है", परन्तु इस विचार में सर्वथा उन लोगों की नादानी है क्योंकि संसार जब से पैदा हुआ है चन्द्र-ग्रहण के लिए ख़ुदा तआला के क़ानून-ए-कुदरत में तीन रातें निश्चित हैं अर्थात् तेरहवीं, चौदहवीं, पन्द्रहवीं तथा चन्द्र-ग्रहण की प्रथम रात्रि जो ख़ुदा तआला के प्रकृति के नियमानुसार है वह चन्द्र माह की तेरहवीं रात्रि है और सूर्य-ग्रहण के लिए तीन दिन ख़ुदा के क़ानून-ए-कुदरत में निर्धारित हैं अर्थात् चन्द्र माह का सत्ताईसवां, अट्ठाईसवां और उन्तीसवां दिन। सूर्य ग्रहण के तीन दिनों में से चन्द्र माह के अनुसार मध्य का दिन अर्थात् अट्ठाईसवां दिन है। इसलिए

इन्हीं तिथियों में बिल्कुल हदीस के आशय के अनुसार सूर्य और चन्द्रमा को रमज़ान के महीने में ग्रहण लगा अर्थात् चन्द्र-ग्रहण रमज़ान की तेरहवीं रात्रि में लगा और सूर्य-ग्रहण उसी रमज़ान की अट्ठाईसवें दिन को लगा।

अरब के मुहावरे में प्रथम रात्रि का चन्द्रमा क्रमर कभी नहीं कहलाता अपितु तीन दिन तक उसका नाम हिलाल होता है तथा कुछ के निकट सात दिन का हिलाल कहलाता है। दूसरा आरोप यह है कि यदि हम मान लें कि चन्द्रमा की प्रथम रात्रि से अभिप्राय तेरहवीं रात है और सूर्य की मध्य दिन से अभिप्राय अट्ठाईसवां दिन है तो इसमें विलक्षण और अद्भुत बात क्या हुई ? क्या रमज़ान के महीने में कभी चन्द्र ग्रहण तथा सूर्य-ग्रहण नहीं हुआ ? इसका उत्तर यह है कि इस हदीस का यह अभिप्राय नहीं है कि रमज़ान के महीने में कभी ये दोनों ग्रहण इकट्ठे नहीं हुए अपितु अभिप्राय यह है कि किसी नबी या रसूल के दावेदार के समय में ये दोनों ग्रहण कभी एकत्र नहीं हुए जैसा कि हदीस के प्रत्यक्ष शब्द इसी को सिद्ध कर रहे हैं। यदि किसी का यह दावा है कि किसी नुबुव्वत या रिसालत के दावेदार के समय में ये दोनों ग्रहण रमज़ान के महीने में कभी किसी युग में इकट्ठे हुए हैं तो उसका कर्तव्य है कि इसका प्रमाण प्रस्तुत करे। विशेष कर यह बात किस को ज्ञात नहीं कि इस्लामी सन् अर्थात् तेरह सौ वर्ष में कई लोगों ने केवल झूठे तौर पर महदी मौऊद होने का दावा भी किया अपितु लड़ाइयां भी कीं, परन्तु कौन सिद्ध कर सकता है कि उनके समय में चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण रमज़ान के महीने में दोनों इकट्ठे हुए थे और जब तक यह प्रमाण प्रस्तुत न किया जाए तब तक निःसन्देह यह घटना विलक्षण और अद्भुत है क्योंकि विलक्षण उसी को कहते हैं कि उसका उदाहरण संसार में न पाया जाए और केवल हदीस ही नहीं अपितु पवित्र कुर्आन ने भी इस की ओर संकेत किया है। देखिए आयत ۞ ^① خَسَفَ الْقَمَرُ ۝ وَجُمُعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۝ (अलक्रियामत - 9,10)

① खुदा तआला ने संक्षिप्त शब्दों में कह दिया कि अन्तिम युग की निशानी यह है कि एक ही महीने में सूर्य एवं चन्द्र-ग्रहण इकट्ठे होंगे तथा इसी आयत के अगले भाग में

तीसरा यह आरोप प्रस्तुत किया जाता है कि यह हदीस मर्फूअ मुत्तसिल नहीं है केवल इमाम मुहम्मद बाकिर^{रजि.} का कथन है। इसका उत्तर यह है कि अहले बैत के इमामों की यही पद्धति थी कि वे अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा के कारण हदीस के क्रम में नामों के क्रम को आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुंचाना आवश्यक नहीं समझते थे। उनकी यह आदत प्रसिद्ध और परिचित है। अतः शिया मत में इस प्रकार की सैकड़ों हदीसों मौजूद हैं और स्वयं इमाम दारे कुल्ती ने इसे हदीसों के क्रम में लिखा है। इसके अतिरिक्त यह हदीस एक ग़ैबी (परोक्ष) बात पर आधारित है जो तेरह सौ वर्ष के उपरान्त प्रकट हुई, जिसका सारांश यह है कि जिस समय महदी मौऊद प्रकट होगा उसके युग में रमज़ान के महीने में चन्द्र-ग्रहण तेरहवीं रात्रि को होगा तथा उसी महीने में सूर्य-ग्रहण अट्ठाईसवें दिन होगा और ऐसी घटना महदी मा'हूद के युग के अतिरिक्त किसी दावेदार के युग में नहीं होगी। स्पष्ट है कि ऐसी खुली-खुली परोक्ष की बात बताना नबी के अतिरिक्त अन्य किसी का काम नहीं है। पवित्र कुर्आन में अल्लाह तआला का कथन है -

فَلَا يُظْهِرُ عَلَى غَيْبِهِ أَحَدًا ۝ إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ مِنْ رَسُولٍ

अर्थात् खुदा अपने ग़ैब (परोक्ष) पर अपने भेजे हुए रसूलों के अतिरिक्त किसी को सूचित नहीं करता। अतः जबकि यह भविष्यवाणी अपने अर्थों की दृष्टि से पूर्ण रूप से घटित हो चुकी तो अब ये कच्चे बहाने हैं कि हदीस कमज़ोर है या इमाम मुहम्मद बाकिर का कथन है। बात यह है कि ये लोग कदापि नहीं चाहते कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कोई भविष्यवाणी पूरी हो या कोई पवित्र कुर्आन की भविष्यवाणी पूरी हो। संसार समाप्त होने तक पहुंच गया परन्तु कहा कि उस समय झुठलाने वाले को भागने का स्थान नहीं मिलेगा। जिससे स्पष्ट है कि वह सूर्य और चन्द्र ग्रहण महदी मा'हूद के समय में होगा। सारांश यह है कि चूंकि वे दोनों ग्रहण खुदा की भविष्यवाणी के अनुसार घटित होंगे, इसलिए झुठलाने वालों पर अकाट्य और निर्णायक तर्क पूर्ण हो जाएगा। इसी से।

उनके कथनानुसार अब तक अन्तिम युग के संबंध में कोई भविष्यवाणी पूर्ण नहीं हुई तथा इस हदीस से अधिक और कौन सी हदीस सही होगी जिस के सर पर मुहद्दसीन की समीक्षा का भी उपकार नहीं अपितु अपने सही होने को स्वयं प्रदर्शित कर दिया कि वह सत्यता की उच्च श्रेणी पर है।^① खुदा के निशानों को स्वीकार करना यह और बात है अन्यथा यह महानतम निशान है जो मुझ से पूर्व हजारों उलेमा तथा मुहद्दसीन इस के घटित होने के प्रतीक्षक थे तथा मंचों पर चढ़-चढ़कर तथा रो-रो कर उसे याद दिलाय करते थे। अतः सब से अन्त में मौलवी मुहम्मद लखूके वाले इसी युग में इसी ग्रहण के बारे में अपनी पुस्तक “अहवालुल आखिरत” में एक शे’र लिख गए हैं जिसमें महदी मौऊद का समय बताया गया है और वह यह है -

“तेरहवीं चन्द सतीहवीं^② सूरज ग्रहन होसी उस साले

अन्दर माह रमजाने लिख्या हिक रिवायत वाले”

फिर एक अन्य बुजुर्ग जिनका शे’र सैकड़ों वर्षों से प्रसिद्ध चला आता है। वह लिखते हैं :-

¹³¹¹
दरसने गाशी हिज्री दो किरान ख्वाहिद बुवद

अज पए महदी व दज्जाल निशां ख्वाहिद बुवद

अर्थात् चौदहवीं सदी हिज्री के अन्दर जब चन्द्रमा और सूर्य को एक ही महीने में ग्रहण लगेगा तब वह महदी मा’हूद तथा दज्जाल के प्रकट होने का एक लक्षण लगेगा। इस शे’र में चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण का वर्ष ठीक प्रकार से लिखा गया है।

3. तीसरा निशान : पुश्चल तारा का निकलना है जिसके उदय होने का युग

① (अलहज्ज-47) فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَكِنْ تَعْمَى الْقُلُوبَ الَّتِي فِي الصُّدُورِ

② शे’र में सत्ताईसवीं का शब्द लिपिक की भूल है या स्वयं मौलवी साहिब से मानव होने के नाते भूल हो गई अन्यथा जिस हदीस का यह शे’र अनुवाद है उसमें सत्ताईस की बजाए अट्ठाईसवीं तिथि है। (इसी से)

मसीह मौऊद के प्रकट होने का समय निर्धारित था और एक लम्बा समय हुआ कि वह उदय हो चुका है। उसी को देख कर ईसाइयों के कुछ समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुआ था कि अब मसीह के आने का समय आ गया।

4. चौथा निशान - एक नवीन सवारी का आविष्कार है जो मसीह मौऊद के प्रकट होने का विशेष लक्षण है। जैसा कि पवित्र कुर्आन में उल्लेख है - وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ^① अर्थात् अन्तिम युग वह है जब ऊंटनियां बेकार हो जाएंगी तथा ऐसा ही मुस्लिम की हदीस में है - وَلَيَتْرُكَنَّ الْقُلَاصَ فَلَا يَسْعَى عَلَيْهَا - अर्थात् उस युग में ऊंटनियां बेकार हो जाएंगी और उन पर कोई यात्रा नहीं करेगा। हज के दिनों में मक्का से मदीना की ओर ऊंटनियों पर यात्रा होती है। अब वह समय बहुत निकट है कि इस यात्रा के लिए रेल तैयार हो जाएगी तब उस यात्रा पर यह चरितार्थ होगा कि وَلَيَتْرُكَنَّ الْقُلَاصَ فَلَا يَسْعَى عَلَيْهَا -

5. पांचवां निशान - हज का बन्द होना है जो सही हदीस में आ चुका है कि मसीह मौऊद के समय में हज करना किसी अवधि तक बन्द हो जाएगा। अतः प्लेग के कारण 1899-1900 ई. इत्यादि में यह निशान भी प्रकट हो गया।

6. छठा निशान - पुस्तकों एवं लेखों का बड़ी अधिकता से प्रकाशित होना। जैसा कि आयत وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ^② से ज्ञात होता है क्योंकि छापने की मशीनों के कारण जितनी प्रचुरता के साथ पुस्तकों का प्रकाशन इस युग में हुआ है उसे वर्णन करने की आवश्यकता नहीं।

7. सातवां निशान - बड़ी अधिकता के साथ नहरों का जारी किया जाना जैसा कि आयत وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ^③ से प्रकट होता है। अतः इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस युग में इतनी प्रचुरता के साथ नहरें जारी हुई हैं जिन की प्रचुरता से नदियां शुष्क हुई जाती हैं।

① अत्तक्वीर - 5

② अत्तक्वीर - 11

③ अत्तक्वीर - 7

8. आठवां निशान - मनुष्यों के परस्पर संबंधों का बढ़ना और मिलने-जुलने का मार्ग सरल हो जाना जैसा कि आयत ^① وَإِذَا التُّفُوسُ زُوِّجَتْ से प्रकट है। अतः रेल और तार के द्वारा यह बात प्रकट हो चुकी है कि मानो संसार ही परिवर्तित हो गया है।

9. नौवां निशान - भूकम्पों का निरन्तर आना और उनका बहुत भयंकर होना है जैसा कि आयत ^② يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۖ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ से स्पष्ट है। अतः संसार में असाधारण भूकम्प आ रहे हैं।

10. दसवां निशान - भिन्न-भिन्न प्रकार की आपदाओं से इस युग में लोगों का बड़ी अधिकता से तबाह होना है जैसा कि पवित्र क़ुरआन की इस आयत का अभिप्राय है -

وَأِنْ مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَمَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا ^③

अनुवाद - कोई ऐसी बस्ती नहीं जिसे हम महाप्रलय से कुछ समय पूर्व तबाह नहीं करेंगे या किसी सीमा तक उस पर अज़ाब नहीं लाएंगे। अतः यही वह युग है क्योंकि प्लेग और भूकम्प, तूफान, ज्वालामुखी पर्वतों के फटने तथा परस्पर युद्धों से लोग तबाह हो रहे हैं, इसके अतिरिक्त इस युग में विनाश के इतने कारण एकत्र हुए हैं तथा इतनी अधिकता से घटित हुए हैं कि इस सामूहिक अवस्था का उदाहरण किसी पूर्वकाल में नहीं पाया जाता।

11. ग्यारहवां निशान - दानियाल नबी की किताब में मसीह मौऊद के प्रकट होने का समय वही लिखा है जिस में ख़ुदा ने मुझे अवतरित किया और भेजा है तथा लिखा है कि “उस समय बहुत से लोग पवित्र किए जाएंगे और सफ़ेद किए जाएंगे और उनकी परीक्षा ली जाएगी किन्तु दुष्ट दुष्टता करते रहेंगे तथा दुष्टों में से कोई नहीं समझेगा परन्तु बुद्धिमान समझेंगे तथा जिस समय से स्थायी क़ुरबानी

① अत्तक्वीर - 8

② अन्नाज़िआत - 7-8

③ बनी इस्राईल - 59

रोक दी जाएगी और अप्रिय वस्तु जो ख़राब करती है स्थापित की जाएगी। एक हजार दो सौ नव्वे दिन होंगे^① मुबारक वह जो प्रतीक्षा करता है और एक हजार तीन सौ पैंतीस दिन तक आता है।” इस भविष्यवाणी में मसीह मौऊद की सूचना है जो अन्तिम युग में प्रकट होने वाला था। अतः दानियाल नबी ने इसका यह लक्षण बताया है कि उस समय से जो यहूदी अपनी सोख़नी^② नामक कुर्बानी को छोड़ देंगे और दुराचारों में लिप्त हो जाएंगे। एक हजार दो सौ नव्वे वर्ष होंगे जब

① दिन से अभिप्राय दानियाल की किताब में वर्ष है और यहां वह नबी हिज़्री वर्ष की ओर संकेत करता है जो इस्लाम की विजय और अधिकार का प्रथम वर्ष है। इसी से

② **हाशिया** - यहूदी अपनी किताबों की शिक्षानुसार सोख़नी कुर्बानी (बलि) के पाबन्द थे, जो हैकल के आगे बकरे ज़िबह करके अग्नि में जलाते थे। इसमें उनकी शरीअत (धार्मिक विधान) का रहस्य यह था कि इसी प्रकार मनुष्य को ख़ुदा के आगे अपनी आत्मा की बलि देनी चाहिए तथा कामभावनाओं और दुष्टताओं को भस्म कर देना चाहिए। यहूदियों ने इस कुर्बानी का पालन करना क्या प्रत्यक्ष तौर पर और क्या अप्रत्यक्ष तौर पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र युग में त्याग दिया था और दूसरी अप्रिय बातों में ग्रस्त हो गए थे जैसा कि ज़ाहिर है अतः जब वास्तविक सोख़नी कुर्बानी यहूदियों ने त्याग दी जिस से अभिप्राय ख़ुदा के मार्ग में अपनी आत्मा को कुर्बान करना तथा काम-भावनाओं को भस्म कर देना है। तब ख़ुदा तआला के आक्रोशात्मक अज़ाब ने भौतिक कुर्बानी से भी उन्हें वंचित कर दिया। अतः यहूदियों की पूर्ण दुष्चरित्रता का वह युग था जब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजा गया। इसी युग में यहूदियों का पूर्ण रूप से उन्मूलन हुआ तथा इस्लामी कुर्बानियां जो हज में काबः के सामने की जाती हैं यह वस्तुतः में उन्हीं कुर्बानियों के स्थान पर हैं जो यहूदी बैतुल मक़दस के सामने करते थे। अन्तर केवल यह है कि इस्लाम में यह सोख़नी कुर्बानी नहीं। यहूदी एक उद्दण्ड जाति थी उनके लिए कामभावनाओं को भस्म करना आवश्यक समझ कर यह निशान प्रत्यक्ष कुर्बानी में रखा गया था, इस्लाम के लिए इस निशान की आवश्यकता नहीं, केवल स्वयं को ख़ुदा के मार्ग में बलिदान कर देना पर्याप्त है। इसी से।

मसीह मौऊद प्रकट होगा। अतः इस विनीत के प्रकट होने का यही समय था क्योंकि मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया मेरे मामूर और अवतरित होने के केवल कुछ वर्ष पश्चात् प्रकाशित हुई है और बड़ी विचित्र बात है और मैं इसे खुदा तआला का एक निशान समझता हूँ कि ठीक बारह सौ नव्वे हिज्री में खुदा तआला की ओर से यह विनीत खुदा के वार्तालाप एवं सम्बोधन से सम्मान पा चुका था। फिर सात वर्ष पश्चात् पुस्तक बराहीन अहमदिया जिसमें मेरा दावा लिखा है पूरी हो कर प्रकाशित की गई कि मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया के मुख पृष्ठ पर यह दोहा लिखा है -

अज बस कि यह मगफिरत का दिखलाती है राह
तारीख भी या ¹²⁹⁷गफूर निकली वह-वाह

अतः दानियाल नबी की किताब में मसीह मौऊद के प्रकट होने के लिए जो बारह सौ नव्वे वर्ष का उल्लेख है इस पुस्तक बराहीन अहमदिया में मेरी ओर से मामूर और खुदा की ओर से होने की घोषणा है इस तिथि से केवल सात वर्ष अधिक हैं जिन के बारे में मैं अभी वर्णन कर चुका हूँ कि खुदा से वार्तालाप का क्रम इन सात वर्षों से पूर्व का है अर्थात् बारह सौ नव्वे का। फिर इस मसीह मौऊद का अन्तिम युग दानियाल नबी तेरह सौ पैंतीस वर्ष लिखता है जो खुदा तआला के इस इल्हाम के समान है जो मेरी आयु के बारे में वर्णन किया है और यह भविष्यवाणी काल्पनिक नहीं हैं क्योंकि हज़रत ईसा की भविष्यवाणी जो मसीह मौऊद के बारे में इंजील में है उस की इससे पुनरावृत्ति हो गई है और वह भी मसीह मौऊद का यही युग ठहराता है। अतः उसमें मसीह मौऊद के युग के ये लक्षण लिखे हैं कि उन दिनों में प्लेग फैलेगी, भूकम्प आएंगे, युद्ध होंगे, चन्द्रमा और सूर्य को ग्रहण लगेगा। अतः इसमें कुछ सन्देह नहीं कि जिस युग के लक्षण इंजील प्रकट करती है दानियाल भी उसी युग की सूचना देता है तथा इंजील की भविष्यवाणी दानियाल की भविष्यवाणी को बल देती है क्योंकि वे समस्त बातें इस युग में पूरी हो चुकी हैं और इसके साथ ही यहूदियों तथा ईसाइयों की वह

भविष्यवाणी जो बाइबल में से ली गई है इसकी समर्थक है और वह यह कि मसीह मौऊद आदम की जन्म तिथि से छठे हजार के अन्त में पैदा होगा। अतः चन्द्रमा के हिसाब से जो अहले किताब का मूल हिसाब है मेरा जन्म छठे हजार के अन्त में था और छठे हजार के अन्त में मसीह मौऊद का पैदा होना प्रारंभ से खुदा के इरादे में निर्धारित था क्योंकि मसीह मौऊद खातमुल खुलफ़ा है और अन्त की आदि से एक अनुकूलता होनी आवश्यक है। चूंकि हज़रत आदम भी छठे दिन के अन्त में पैदा किए गए हैं इसलिए अनुकूलता की दृष्टि से आवश्यक था कि अन्तिम खलीफ़ा जो अन्तिम आदम है वह भी छठे हजार के अन्त में पैदा हो। कारण यह कि खुदा के सात दिनों में से प्रत्येक दिन हजार वर्ष के बराबर है जैसा कि स्वयं अल्लाह तआला का कथन है कि -

إِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ (अलहज्ज-48)

अनुवाद :- निःसन्देह तेरे रब्ब के पास ऐसा भी दिन है जो तुम्हारी गणनानुसार एक हजार वर्ष का है।

और सही हदीसों से भी सिद्ध है कि मसीह मौऊद छठे हजार में पैदा होगा। इसीलिए अहले कश्फ़ (जिन्हें कश्फ़ होते हैं) मसीह मौऊद का युग निर्धारित करने में छठे हजार वर्ष से बाहर नहीं गए और उनके प्रादुर्भाव का समय अधिक से अधिक चौदहवीं सदी हिज़्री लिखा है।^① मुसलमानों के अहले कश्फ़ लोगों ने मसीह मौऊद को जो अन्तिम खलीफ़ा और खातमुलखुलफ़ा है केवल इस बात में ही आदम के समान नहीं ठहराया कि आदम छठे दिन के अन्त में पैदा हुआ और

① खुदा तआला ने मुझ पर प्रकट किया है कि सूरह 'अलअस्र' के अक्षर जमल (विद्या) के हिसाब से आदम के प्रारंभ से लेकर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक जितने वर्ष गुज़रे हैं उनकी संख्या प्रकट करते हैं। अतः कथित सूरह की दृष्टि से जब इस युग तक हिसाब लगाया जाए तो ज्ञात होगा कि अब सातवां हजार लग गया है और इसी हिसाब के अनुसार मेरा जन्म छठे हजार में हुआ है, क्योंकि मेरी आयु 68 इस समय लगभग अड़सठ वर्ष की है। इसी से।

मसीह मौऊद छठे हज़ार के अन्त में पैदा होगा अपितु इस बात में भी समान ठहराया है कि आदम की भांति वह भी शुक्रवार के दिन पैदा होगा तथा उसका जन्म भी जुड़वां के तौर पर होगा अर्थात् जैसा कि आदम जुड़वां के तौर पर पैदा हुआ था पहले आदम और बाद में हव्वा। इसी प्रकार मसीह मौऊद भी जुड़वां के तौर पर पैदा होगा। अतः खुदा की प्रशंसा और उपकार कि सूफ़ियों की इस भविष्यवाणी का पात्र मैं हूँ। मैं भी जुमा (शुक्रवार) के दिन प्रातः काल जुड़वां पैदा हुआ था। अन्तर केवल यह हुआ कि पहले लड़की पैदा हुई थी जिसका नाम जन्नत था और वह कुछ दिनों के पश्चात जन्नत (स्वर्ग) में चली गई, उसके पश्चात् मैं पैदा हुआ। इस भविष्यवाणी को शैख़ मुहियुद्दीन इब्ने अरबी ने भी अपनी पुस्तक “फ़ुसूस” में लिखा है, और लिखा है कि वह सीनी मूल से होगा।^① बहरहाल ये तीनों भविष्यवाणियां एक दूसरे को बल देती हैं और प्रत्यक्ष तौर पर विश्वसनीयता के स्तर तक पहुंच गई हैं जिन का कोई बुद्धिमान इन्कार नहीं कर सकता।

12. बारहवां निशान - हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की प्लेग और भूकम्पों की भविष्यवाणी जैसा कि अभी उल्लेख किया जा चुका है कि मसीह मौऊद^② का इस

① इस से तात्पर्य यह है कि उसके वंश में तुर्क का रक्त मिला हुआ होगा। हमारा खानदान जो अपनी प्रसिद्धि की दृष्टि से मुगलों का खानदान कहलाता है इस भविष्यवाणी का चरितार्थ है क्योंकि यद्यपि सत्य वही है जो खुदा ने कहा कि यह खानदान फारसी मूल है परन्तु यह तो निश्चित और देखी हुई बात है कि अधिकतर माताएं और दादियां हमारी मुगल खानदान से हैं और वे सीनी मूल हैं अर्थात् चीन की रहने वाली। इसी से।

देखो हुजजुल किरामा - लेखक - नवाब सिद्दीक हसन खान साहिब (भोपाल) इसी से।

② एक पादरी साहिब लिखते हैं कि प्लेग और भूकम्पों का आना मसीह मौऊद होने के लिए कोई तर्क नहीं है क्योंकि इतिहास से ज्ञात होता है कि ऐसे भूकम्प और ऐसी प्लेग हमेशा संसार में प्रकट होते रहे हैं। इसका उत्तर यह है कि ये भूकम्प और यह प्लेग निःसन्देह पंजाब और हिन्दुस्तान में असाधारण हैं। सैकड़ों वर्षों तक भी इस का पता नहीं लगता तथा क्या गणना की दृष्टि से और क्या गुणवत्ता की दृष्टि से यह प्लेग और भूकम्प

समय प्रकट होना आवश्यक है।

13. तेरहवां निशान - छः हजार वर्ष के अन्त पर मसीह मौऊद के प्रकट होने की भविष्यवाणी जो बाइबल से ली गई है।

14. चौहदवां निशान - मेरे बारे में ने 'मतुल्लाह वली की भविष्यवाणी जिसके पद्य मैंने अपनी पुस्तक "निशान-ए-आसमानी" में नक़ल किए हैं।

15. पन्द्रहवां निशान - मेरे बारे में गुलाब शाह जमालपुरी की भविष्यवाणी जिसे मैंने "इज़ाला औहाम" में विस्तारपूर्वक लिखा है।

16. सोहलवां निशान - मेरे बारे में पीर साहिब अलअलम सिन्धी ने जिसके एक लाख मुरीद (आस्थावान) थे और वह अपने क्षेत्र में ख्याति प्राप्त बुजुर्ग थे। स्वप्न में देखा था कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि वह सच्चा है और हमारी ओर से है। इस स्वप्न को मैं "तुहफ़ा गोलड़विया" में प्रकाशित कर चुका हूँ इसलिए विस्तार की आवश्यकता नहीं।

17. सत्रहवां निशान - मौलवी साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ शहीद का इल्हाम कि यह मनुष्य सत्य पर है, मसीह मौऊद भी है। इसके साथ कई निरन्तर स्वप्न थे जिन्होंने आदरणीय मौलवी साहिब को वह दृढ़ता प्रदान की कि अन्ततः उन्होंने मेरी पुष्टि के लिए काबुल देश में काबुल के अमीर (शासक) के आदेश से प्राण त्याग दिए। उनसे अमीर ने कई बार कहा कि यदि उस व्यक्ति की बैअत को त्याग दो तो तुम्हें पहले से भी अधिक सम्मान दिया जाएगा, किन्तु उन्होंने कहा कि मैं प्राण को

विलक्षण हैं। यदि पादरी साहिब को इन्कार है तो इसका कोई उदाहरण प्रस्तुत करें। इसके अतिरिक्त यदि पहले संसार में प्लेग फैलती रही है और भूकम्प आते रहे हैं और युद्ध होते रहे हैं तो उस समय मसीह मौऊद होने का कोई दावेदार मौजूद न था। इसलिए जबकि ऐसे असाधारण भूकम्पों एवं प्लेग से पूर्व एक मसीह होने का दावेदार पैदा हो गया तत्पश्चात् ये सब लक्षण इंजील के अनुसार प्रकट हुए, तो इससे क्योंकि इन्कार किया जाए। हां आकाश के सितारे पृथ्वी पर नहीं गिरे। तो इसका उत्तर खगोलशास्त्रियों से पूछ लो कि क्या सितारों के गिरने से मनुष्य और अन्य जीवधारी जीवित रह सकते हैं ? इसी से।

ईमान पर प्राथमिकता नहीं दे सकता। अन्ततः उन्होंने इस मार्ग में प्राण दिए और कहा - कि इस मार्ग में खुदा तआला की प्रसन्नता के लिए प्राण देना पसन्द करता हूं। तब वह पत्थरों से संगसार किए गए और उन्होंने ऐसी दृढ़ता दिखाई कि उनके मुख से एक आह भी न निकली और उनका शव चालीस दिनों तक पत्थरों में पड़ा रहा। फिर एक अहमद नूर नामक मुरीद ने उनका शव दफन किया। वर्णन किया गया है कि उनकी क़ब्र से अब तक कस्तूरी की सुगंध आती है और उनका एक बाल यहाँ पर पहुँचाया जिससे अब तक कस्तूरी की सुगंध आती है और हमारे बैतुद्दुआ के एक कोने में एक शीशे में लटका हुआ है। स्पष्ट है कि यदि यह कार्य किसी झूठे का होता था तो स्वर्गीय शहीद को इतनी अधिक दूरी पर क्यों मेरी सच्चाई के बारे में इल्हाम हुए और क्यों निरन्तर स्वप्न आए। वह तो मेरे नाम से भी अपरिचित थे, केवल खुदा ने उनको मेरी सूचना दी कि पंजाब में मसीह मौऊद पैदा हो गया। अतः उन्होंने पंजाब की सूचनाओं की छान-बीन आरंभ की और जब यह पता मिल गया कि वास्तव में एक व्यक्ति क़ादियान पंजाब से संबंधित ज़िला गुरदासपुर में मसीह मौऊद होने का दावा करता है, तब सब कुछ छोड़ कर मेरी ओर भागे और लगभग दो माह यहाँ रहे और फिर वापसी पर दुष्ट मुखबिरों की मुखबरी से बन्धक बनाए गए और जब बन्धक बनाने के पश्चात् कहा गया कि अपनी पत्नी और बच्चों से मुलाक़ात कर लो तो कहा कि अब मुझे उन से मुलाक़ात की आवश्यकता नहीं। मैं उन्हें खुदा के सुपुर्द करता हूँ। जब आदेश सुनाया गया कि आप को संगसार (पत्थरों द्वारा वध करना) किया जाएगा तो कहा कि मैं चालीस दिन से अधिक मुर्दा नहीं रहूँगा। यह इस बात की ओर संकेत था कि जो खुदा की किताबों में लिखा गया कि मोमिन मरने के कुछ दिनों के पश्चात् या चालीस दिन के अन्त तक जीवित किया जाता तथा आकाश की ओर उठाया जाता है। यह वही विवाद है जो अब तक हम में और हमारे विरोधियों में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के रफ़ा (उठाए जाने) के बारे में चला आता है। हम खुदा की किताब के अनुसार उनके आध्यात्मिक रफ़ा को मानते हैं और हमारे विरोधी खुदा की पवित्र किताब कुर्आन के आदेश के विपरीत

और खुदा के आदेश ^① قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا رَّسُولًا को पैरों के नीचे रख कर शारीरिक रूप से उठाए जाने को मानते हैं तथा मुझे कहते हैं कि यह दज्जाल है क्योंकि लिखा है कि तीस दज्जाल आएंगे। वे विचार नहीं करते कि यदि तीस दज्जाल आने वाले थे तो इस हिसाब के अनुसार प्रत्येक दज्जाल के मुकाबले पर तीस मसीह भी होने चाहिए थे। यह कैसा अन्याय है कि दज्जाल तो तीस आ गए किन्तु मसीह एक भी न आया। यह उम्मत कैसी दुर्भाग्यशाली है कि उसके भाग में दज्जाल ही रह गए तथा सच्चे मसीह के दर्शन अब तक नहीं हुए, हालांकि इस्राईली सिलसिले में तो सैकड़ों नबी आए थे।

फलतः जिस सिलसिले में खुदा ने अब्दुल लतीफ़ शहीद जैसे सत्यनिष्ठ और मुल्हम पैदा किए जिन्होंने इस मार्ग में प्राण भी न्यौछावर कर दिए और खुदा से इल्हाम पा कर मेरी पुष्टि की, ऐसे सिलसिले पर आरोप लगाना क्या संयम है। एक पवित्र स्वभाव सदाचारी विद्वान का एक झूठे मनुष्य के लिए इतना प्रेमावेग कब हो सकता है।

کس بہر کسے سرنہد جان نشاند
عشق است کہ ایں کاربصد صدق کناند

अनुवाद - कोई किसी के लिए सिर नहीं कटवाता न प्राणों की बलि देता है।
प्रेम ही है जो यह कार्य बड़ी वफ़ादारी से करा देता है।

عشق است کہ در آتش سوزاں بنشاند
عشق است کہ بر خاکِ مذلت غلطاند

अनुवाद - प्रेम ही है जो भड़कती हुई अग्नि में बिठा देता है, प्रेम ही है जो अपमान की धूल पर लिटा देता है।

بے عشق دے پاک شود من نیزیرم
عشق است کز ایں دام یکدم برہاند

अनुवाद - मैं स्वीकार नहीं कर सकता कि प्रेम के बिना हृदय पवित्र हो सकता

है। प्रेम ही है जो तुरन्त उस क़ैद से मुक्ति दिला देता है।

साहिबज़ादा मौलवी अब्दुल लतीफ़ शहीद ने अपने रक्त के साथ सच्चाई की गवाही दी الاستقامت فوق الكرامت परन्तु आजकल के अधिकतर उलेमा का यह नियम है कि दो-दो रुपए में उनके फ़त्वे बदल जाते हैं तथा उनकी बातें ख़ुदा के भय से नहीं अपितु मनोवृत्ति के आवेग से होती हैं परन्तु स्वर्गीय अब्दुल लतीफ़ शहीद ख़ुदा का वह सच्चा और संयमी पुरुष था जिसने ख़ुदा के मार्ग में न अपनी पत्नी के परवाह की न अपने बच्चों की और न अपने प्रिय प्राण की। ये लोग हैं जो ख़ुदा के सच्चे उलेमा हैं जिनके कथन एवं कर्म अनुकरणीय हैं जिन्होंने अन्त तक ख़ुदा के मार्ग में अपनी निष्ठा निभा दिया।

از بند گانِ نفسِ رو آں یگانِ میرس
هر جا که گردِ خاست سوارے دران بگو

अनुवाद - ख़ुदा तआला का मार्ग नफ़्स के गुलामों से न पूछ, जहां धूल उड़ती हो वहीं सवार की खोज कर।

آں کس کہ هست از پیِ آن یار بے قرار
رو صحبتش گزین و قرارے دران بگو

अनुवाद - जो व्यक्ति उस मित्र के लिए व्याकुल है, (तो) जा उसकी संगत ग्रहण कर और उस से सन्तुष्टि प्राप्त कर।

بر آستان آنکه زخود رفت بهر یار
چون خاکِ باش و مرضی یارے دران بگو

अनुवाद - उस व्यक्ति की चौखट पर तू धूल होकर पड़ा रह जिसने यार के लिए स्वयं को फ़ना कर रखा है और उसी प्रकार यार की इच्छा मालूम कर।

مردان تلخِ کامی و حرقت بدورسند
حرقت گزین و فتحِ حصارے دران بگو

अनुवाद - बहादुर कटुता एवं तपन सह कर उस तक पहुंचते हैं तू भी तपन ग्रहण कर और उसमें विजय दूँड।

بر مند غرور نشستن طریق نیست
این نفس دون بسوز و نگارے دران بجو

अनुवाद - अभिमान के बिस्तर पर बैठना उचित नहीं तू उस निर्लज्ज प्रवृत्ति को जला दे और फिर खुदा को ढूंढ।

18. अठारहवां निशान खुदा तआला का यह कथन है -

① وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ الْأَقَاوِيلِ ۚ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ۚ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۚ

अर्थात् यदि यह नबी हम पर झूठ बांधता तो हम इसे दाएं हाथ से पकड़ लेते फिर उसकी वह धमनी काट देते जो प्राण धमनी है। यह आयत यद्यपि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में उतरी है परन्तु इसके अर्थों में व्यापकता है जैसा कि सम्पूर्ण कुर्आन करीम में भी मुहावरा है कि प्रत्यक्षतः आदेश-निषेध के सम्बोधित आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम होते हैं परन्तु उन आदेशों में दूसरे भी सम्मिलित होते हैं या वे आदेश दूसरों के लिए ही होते हैं जैसा कि यह आयत فَلَا تَقُلْ لَهُمْ أَوْفٍ وَلَا تَنْهَرْهُمْ ۚ وَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا ② अर्थात् अपने माता-पिता को अप्रसन्नता से कोई बात मत कह और उनसे ऐसी बातें न कर जिनमें उनकी प्रतिष्ठा दृष्टिगत न हो। इस आयत के सम्बोध्य तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं परन्तु वास्तव में इस बात का सम्बोधन उम्मत की ओर है क्योंकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पिता और माता का निधन आप की अल्पायु में ही हो गया था। इस आदेश में एक रहस्य भी है और वह यह है कि इस आयत से एक बुद्धिमान समझ सकता है कि जबकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करके कहा गया है कि तू अपने माता-पिता का सम्मान कर तथा प्रत्येक बोलचाल में उनके प्रतिष्ठित पद का ध्यान रख तो फिर दूसरों को अपने माता-पिता का कितना सम्मान करना चाहिए। इसी की ओर यह

① अलहाक्रह - 45 से 47

② बनी इस्राईल - 24

दूसरी आयत संकेत करती है - وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ ۖ إِحْسَانًا^① अर्थात् तेरे रब ने चाहा है कि तू केवल उसी की उपासना कर तथा माता-पिता से उपकार का व्यवहार कर।

इस आयत में मूर्ति-उपासकों को जो मूर्तियों की पूजा करते हैं समझाया गया है कि मूर्तियां कुछ भी नहीं हैं और मूर्तियों का तुम पर कुछ उपकार नहीं है। उन्होंने तुम्हें पैदा नहीं किया और तुम्हारी छोटी आयु में वे तुम्हारे अभिभावक नहीं थे और यदि ख़ुदा वैध रखता कि उसके साथ किसी अन्य की भी उपासना की जाए तो यह आदेश देता कि तुम माता-पिता की भी उपासना करो क्योंकि वे भी लाक्षणिक अर्थ में रब हैं और प्रत्येक व्यक्ति स्वाभाविक तौर पर यहां तक कि हिंसक पशु भी अपनी सन्तान को उनकी लघु आयु में नष्ट होने से बचाते हैं। अतः ख़ुदा के प्रतिपालन के उपरान्त उनका भी एक प्रतिपालक है तथा वह प्रतिपालन का आवेग भी ख़ुदा तआला की ओर से है।

इस मूल विषय से असंबद्ध वाक्य के पश्चात् हम पुनः अपने मूल विषय की ओर लौटते हुए कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में जो कहा गया है कि यदि वह हम पर कुछ झूठ गढ़ता हो तो हम उस का वध कर देते। इस का तात्पर्य यह नहीं है कि केवल ख़ुदा तआला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में अपना यह स्वाभिमान प्रकट करता है कि आप यदि झूठ गढ़ने वाले होते तो आप का वध कर देता परन्तु दूसरों के लिए यह स्वाभिमान नहीं है तथा चाहे ख़ुदा पर कैसा ही झूठ बोलें तथा झूठे इल्हाम बना कर ख़ुदा की ओर सम्बद्ध कर दिया करें उनके बारे में ख़ुदा का स्वाभिमान जोश नहीं मारता। यह विचार जहां अनुचित है वहां ख़ुदा के समस्त धर्म ग्रन्थों के विपरीत भी है तथा अब तक तौरात में भी यह वाक्य मौजूद है कि जो व्यक्ति ख़ुदा पर झूठ गढ़ेगा तथा नुबुव्वत का झूठा दावा करेगा वह तबाह किया जाएगा। इसके अतिरिक्त प्राचीन काल से इस्लाम के उलेमा आयत لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا को ईसाइयों

① बनी इस्राईल - 24

और यहूदियों के सम्मुख आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई के लिए बतौर प्रमाण प्रस्तुत करते रहे हैं। स्पष्ट है कि जब तक किसी बात में व्यापकता न हो वह प्रमाण का काम नहीं दे सकती। भला यह क्या प्रमाण हो सकता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यदि ख़ुदा पर झूठ बांधते तो तबाह किए जाते और समस्त काम बिगड़ जाता परन्तु यदि कोई अन्य झूठ बांधे तो ख़ुदा क्रोधित नहीं होता अपितु उससे प्रेम करता है और उसे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी अधिक छूट देता है तथा उनकी सहायता और समर्थन करता है। इसका नाम तो प्रमाण नहीं रखना चाहिए वरन् यह तो एक दावा है जो स्वयं प्रमाण का मोहताज है। खेद कि मेरी शत्रुता के लिए इन लोगों की कहां तक नौबत पहुंच गई कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई के निशानों पर भी आक्रमण करने लगे। चूंकि इन लोगों को ज्ञात है कि मेरे इस वह्यी और इल्हाम के दावे पर पच्चीस वर्ष से अधिक समय हो चुका है जो कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अवतरित होने के समय से भी अधिक हैं क्योंकि वे तेईस वर्ष थे और ये तीस वर्ष के लगभग। अभी मालूम नहीं कि ख़ुदा के ज्ञान में मेरे द्वारा इस्लाम के प्रचार का समय कहां तक है। इसलिए ये लोग मौलवी कहलाने के बावजूद यह कहते हैं कि एक ख़ुदा पर झूठ गढ़ने वाला और झूठा इल्हाम का दावेदार अपने झूठ गढ़ने के प्रारंभ से तीस वर्ष तक भी जीवित रह सकता है और ख़ुदा उसकी सहायता और समर्थन कर सकता है और उसका कोई उदाहरण प्रस्तुत नहीं करते। हे दुष्ट लोगो ! झूठ बोलना और मल खाना एक समान है। ख़ुदा ने जो कुछ अपनी दया और कृपा से मेरे साथ व्यवहार किया यहां तक कि इस लम्बी अवधि^① में प्रत्येक दिन मेरे लिए

① यह स्मरण रहे कि यदि मुझ पर इल्हाम होने को उस तिथि से लिया जाए जब बराहीन अहमदिया का प्रथम भाग लिखा गया था तब तो उस वर्ष से मेरे इल्हाम के समय को सत्ताईस वर्ष के लगभग होते हैं और जब बराहीन अहमदिया के चतुर्थ भाग से गणना की जाए तो पच्चीस वर्ष गुज़र गए हैं और जब वह समय लिया जाए कि जब पहला इल्हाम आरंभ हुआ तो तीस वर्ष होते हैं। इसी से।

उन्नति का दिन था और प्रत्येक मुकद्दमा जो मुझे तबाह करने के लिए उठाया गया ख़ुदा ने शत्रुओं को अपमानित किया। यदि इस अवधि और इस समर्थन और सहायता का तुम्हारे पास कोई उदाहरण है तो प्रस्तुत करो अन्यथा आयत **لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا** (सूरत अलहाक्रः:45) के अनुसार यह निशान भी सिद्ध हो गया और तुम से इसके विषय में पूछा जाएगा।

19. उन्नीसवां निशान - यह है कि ख़्वाजा गुलाम फ़रीद साहिब ने जो नवाब बहावलपुर के पीर थे मेरे सत्यापन के लिए एक स्वप्न देखा जिसके कारण ख़ुदा तआला ने उनके हृदय में मेरा प्रेम डाल दिया। इसी कारण से पुस्तक “इशारात-ए-फ़रीदी” में जो आदरणीय ख़्वाजा साहिब के प्रवचन हैं अनेकों स्थान पर ख़्वाजा साहिब मेरा सत्यापन करते हैं। ब्रह्मलीनों की यह आदत होती है कि वे जाहिरी बातों में बहुत कम पड़ते हैं और जो कुछ उन्हें ख़ुदा तआला की ओर से स्वप्न, कश्फ़ या इल्हाम के माध्यम से ज्ञात होता है उस पर ईमान लाते हैं। चूंकि ख़्वाजा गुलाम फ़रीद साहिब पीर विद्वान की भांति पवित्र हृदय रखते थे, इसलिए ख़ुदा ने उन पर मेरी सच्चाई की वास्तविकता खोल दी तथा कई मौलवी जैसे मौलवी गुलाम दस्तगीर ख़्वाजा साहिब को मुझे झुठलाने वाला बनाने के लिए आपके गांव में पहुंचे, जैसा कि पुस्तक “इशारात-ए-फ़रीदी” में ख़्वाजा साहिब ने स्वयं यह हालात वर्णन किये हैं तथा कुछ ग़ज़नवियों का भी आदरणीय ख़्वाजा साहिब के पास पत्र पहुंचा किन्तु आप ने किसी की भी परवाह नहीं की तथा उन शुष्क मुल्लाओं को ऐसे मुंहतोड़ उत्तर दिए कि वे ख़ामोश हो गए तथा ख़ुदा तआला की कृपा से उनका अन्त सत्यापनकर्ता की अवस्था में हुआ। अतः वे पत्र जो आपने मुझे लिखे उन से भी प्रकट होता है कि ख़ुदा तआला ने उनके हृदय में मेरा कितना प्रेम डाल दिया था और अपनी असीम कृपा से उनको मेरे बारे में ज्ञान प्रदान कर दिया था। ख़्वाजा साहिब ने अपनी पुस्तक “इशारात-ए-फ़रीदी” में विरोधियों के आक्रमणों का अनेकों स्थान पर उत्तर दिया है। जैसा कि “इशारात-ए-फ़रीदी” में एक स्थान पर लिखा है कि किसी ने ख़्वाजा साहिब की सेवा में कहा कि आथम निश्चित अवधि के बाद

मरा उन्होंने मेरा नाम लेकर कहा कि इस बात की क्या परवाह है। मैं जानता हूँ कि आथम उन्हीं की फूँक से मरा है अर्थात् उन्हीं के ध्यान और साहस की प्रतिज्ञा ने आथम का अन्त कर दिया।^① किसी ने मेरे संबंध में आप को कहा कि हम उन्हें महदी मा'हूद क्योंकि स्वीकार कर लें क्योंकि महदी मौऊद के समस्त लक्षण जो हदीसों में लिखे हैं उनमें नहीं पाए जाते। तब ख्वाजा साहिब इस बात पर अप्रसन्न हुए और कहा कि यह तो बताओ कि समस्त निर्धारित लक्षण जो लोगों ने पहले से समझ रखे थे किस नबी या रसूल में सब के सब पाए गए। यदि ऐसा ही घटित होता तो क्यों कुछ लोग काफ़िर रहते और कुछ ईमान लाते। यही खुदा का नियम है कि भविष्यवाणियों में किसी आने वाले नबी के बारे में जो-जो लक्षण लिखे जाते

① मैं बार-बार लिख चुका हूँ कि आथम के बारे में जो भविष्यवाणी थी वह अपने अर्थों के अनुसार पूरी हो गई। यदि आथम लोगों के सम्मुख जो साठ-सत्तर थे दज्जाल कहने से न रुकता तो उस समय कह सकते थे कि भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई परन्तु जबकि आथम अपने कथन से रुक चुका था तो आवश्यक था कि वह शर्त का लाभ उठाता अपितु यदि आथम इस सीमा तक अपने कथन से लौटने के बावजूद कि उसने अपने मान-सम्मान की कुछ परवाह न करते हुए ईसाइयों की सभा में ही अपने पूर्व कथन से पलटने का इक़रार कर लिया फिर भी पन्द्रह महीने के अन्दर मर जाता तो खुदा तआला के वादे पर आरोप आता। तब कह सकते थे कि भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई परन्तु अब पश्चाताप के बावजूद फिर आरोप लगाना उन लोगों का कार्य है जिनको धर्म और ईमानदारी से कुछ मतलब नहीं। हां जब आथम पन्द्रह माह गुज़रने के पश्चात् निर्लज्ज हो गया और खुदा तआला के उपकार का कृतज्ञ न रहा, तब एक अन्य भविष्यवाणी के अनुसार मेरे अन्तिम विज्ञापन से पन्द्रह माह के अन्दर मर गया। बहरहाल उसकी मृत्यु पन्द्रह माह से बाहर न निकल सकी। अतः एक बुद्धिमान ने ईसाई होने के बावजूद इक़रार किया है कि आथम के बारे में जो भविष्यवाणी थी वह नितान्त स्पष्टता से पूरी हो गई तथा इन्कार हठधर्मी है। इसी से।

हैं वे समस्त बातें अपने प्रत्यक्ष शब्दों के साथ कदापि पूर्ण नहीं होतीं। कुछ स्थानों पर रूपक होते हैं, कुछ स्थानों पर स्वयं अपनी समझ में अन्तर आ जाता है तथा कुछ स्थानों पर पुरानी बातों में अक्षरांतरण हो जाता है इसलिए संयम का मार्ग यह है कि जो बातें पूर्ण हो जाएं उन से लाभ प्राप्त करें तथा समय एवं आवश्यकता को दृष्टिगत रखें और यदि समस्त निर्धारित लक्षणों को अपनी समझ के अनुसार करना आवश्यक होता तो समस्त नबियों को छोड़ना पड़ता तथा उसका अंजाम दुर्भाग्य और बेईमानी के अतिरिक्त कुछ न होता क्योंकि कोई भी ऐसा नबी नहीं गुजरा जिस पर समस्त निर्धारित लक्षण प्रत्यक्ष तौर पर चरितार्थ हो गए हों, कोई न कोई कमी रह गई है। यहूदी पहले मसीह के बारे में अर्थात् हज़रत ईसा के बारे में कहते थे कि वह उस समय आएगा जब उस से पहले इल्यास नबी दोबारा पृथ्वी पर आ जाएगा। अतः क्या इल्यास आ गया ? इसी प्रकार यहूदियों का इस बात पर आग्रह था कि आने वाला ख़ातमुलअंबिया बनी इस्राईल में से प्रकट होगा तो क्या वह बनी इस्राईल में से प्रकट हुआ ? फिर जबकि यहूदियों के विचार के अनुसार जिस पर उनके समस्त नबियों की सहमति थी ख़ातमुलअंबिया बनी इस्राईल में से नहीं आया। फिर यदि महदी मौऊद फ़ातिमी अथवा अब्बासी ख़ानदान से प्रकट न हुआ तो इसमें कौन सी आश्चर्य की बात है। ख़ुदा की भविष्यवाणी में कई रहस्य गुप्त होते हैं तथा परीक्षा भी अभीष्ट होती है।^①

① हदीसों को भलीभांति विचार करके पढ़ो। वह महदी मा'हूद के बारे में इतना अधिक मतभेद रखती हैं कि मानो विरोधाभासों का भण्डार है। कुछ हदीसों में लिखा है कि महदी फ़ातिमी होगा और कुछ में लिखा है कि अब्बासी होगा और कुछ में लिखा है कि मेरी उम्मत का एक व्यक्ति होगा। इब्ने माजा की हदीस ने इन सब रिवायतों पर पानी फेर दिया है क्योंकि उस हदीस के शब्द ये हैं - **لا مهدي الا عيسى** - अर्थात् ईसा ही महदी है उसके अतिरिक्त अन्य कोई महदी नहीं। फिर महदी की हदीसों की यह दशा है कि कोई भी प्रतिप्रश्न से रिक्त नहीं और किसी को सही हदीस नहीं कह सकते। अतः जिस रूप में भविष्यवाणी प्रकट हुई और जो कुछ मौऊद (प्रतिज्ञात) हक़म ने निर्णय किया वही उचित है। इसी से।

अतः जब कि यहूदी अपने विचारों पर बल देने के कारण वंचित रहे तो मुसलमानों के लिए यह शिक्षा ग्रहण करने का स्थान है क्योंकि सही हदीस में आया है कि अन्तिम युग में मुसलमानों में से कुछ लोग यहूदी हो जाएंगे अर्थात् यहूदियों की आदत ग्रहण करेंगे तथा उनके पद चिन्हों पर चलेंगे जैसा कि लिखा है कि यदि किसी यहूदी ने अपनी मां से दुष्कर्म किया होगा तो वे भी करेंगे। अतः कितने भय का स्थान है कि अधिकतर यहूदियों ने केवल इस कारण हज़रत ईसा तथा आंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को स्वीकार नहीं किया कि इस बात को उन्होंने अपना कर्तव्य समझा कि जब तक समस्त लक्षण और समस्त निशान उनमें अपने विचारानुसार पूर्ण होते न देख लें तब तक स्वीकार करना अवैध है। अन्ततः कुफ़्र के गढ़ में गिर गए तथा अब तक इस बात पर अड़े रहे कि पहले इल्यास आना चाहिए और फिर मसीह तथा ख़ातमुलअंबिया बनी इस्राईल में से आना चाहिए। अतः ख़्वाजा गुलाम फ़रीद साहिब को ख़ुदा तआला ने यह अन्तःकरण का प्रकाश प्रदान किया था कि वह एक ही दृष्टि में सच्चे और झूठे में अन्तर कर लेते थे। ख़ुदा उन पर अपनी दया करे और अपने सानिध्य में स्थान दे। आमीन।

20. बीसवां निशान - लगभग तीस वर्ष का समय हुआ है कि मुझे ख़ुदा की ओर से इल्हाम हुआ था कि तू एक दूर की नस्ल को देखेगा। इस इल्हाम के सैकड़ों साक्षी हैं और कई बार प्रकाशित हो चुका है। अब इसके अनुसार प्रकट हुआ कि मैंने वह सन्तान देखी जो भविष्यवाणी के समय मौजूद न थी और फिर औलाद की औलाद देखी और अभी मालूम नहीं कि इस भविष्यवाणी का कहां तक प्रभाव है।

21. इक्कीसवां निशान - यह है कि लगभग तीस वर्ष का समय हुआ है कि मेरे पिता श्री ख़ुदा उन्हें क्षमा करे अपनी अन्तिम आयु में बीमार हुए तो जिस दिन उन की मृत्यु प्रारब्ध थी दोपहर के समय मुझे इल्हाम हुआ وَالسَّمَاءُ وَالطَّارِقُ और साथ ही हृदय में डाला गया कि यह उनकी मृत्यु की ओर संकेत है और इसके ये अर्थ हैं कि क्रसम है आकाश की और क्रसम है उस घटना की जो सूर्य-अस्त होने

के पश्चात् घटित होगी। वास्तव में यह खुदा तआला की ओर से अपने बन्दे को मृत्युशोक पर धैर्य बंधाना था। तब मैंने समझ लिया कि मेरे पिता श्री का सूर्यास्त के पश्चात् निधन हो जाएगा। कई अन्य लोगों को इस इल्हाम की सूचना दी गई। मुझे क्रसम है अल्लाह तआला की जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं, जिस पर झूठ बोलना एक शैतान और ला'नती का कार्य है कि इल्हाम के अनुसार ही प्रकट हुआ तथा उस दिन मेरे पिता श्री का मूल रोग जो गुर्दे की पीड़ा थी दूर हो चुकी थी केवल थोड़ी सी पेचिश शेष थी तथा स्वयं ही बिना किसी सहारे के शौचादि के लिए जाते थे। जब सूर्य-अस्त हुआ तथा वह शौचादि से आकर चारपाई पर बैठे तो बैठते ही प्राण निकलने (चन्द्रा) की अवस्था आरंभ हुई और उसी अवस्था में उन्होंने मुझे कहा कि देखा यह क्या है और फिर लेट गए। इससे पूर्व मुझे कभी इस बात को देखने का संयोग नहीं हुआ कि कोई व्यक्ति चन्द्रा की अवस्था में बोल सके और इतनी सुस्पष्टता एवं दृढ़ता से बात कर सके। तत्पश्चात् ठीक उस समय जबकि सूर्य अस्त हुआ वह इस नश्वर संसार से कूच कर गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। यह उन सब इल्हामों से प्रथम इल्हाम और प्रथम भविष्यवाणी थी जो खुदा ने मुझ पर प्रकट की। दोपहर के समय खुदा ने मुझे इसकी सूचना दी कि ऐसा होने वाला है और सूर्यास्त के पश्चात् यह सूचना पूर्ण हो गई तथा मेरे लिए गर्व का स्थान है और मैं इस बात को नहीं भूलूंगा कि मेरे पिता श्री के निधन के समय खुदा तआला ने मृत्यु शोक पर ढारस दिया बन्धाया मेरे पिता के निधन की क्रसम खाई जिस प्रकार कि आकाश की क्रसम खाई। जिन लोगों में शैतानी आत्मा उत्तेजित हो रही है वे आश्चर्य करेंगे कि ऐसा क्योंकर हो सकता है कि खुदा किसी को इतना सम्मान दे कि उसके पिता के निधन को एक महान आघात ठहरा कर उसकी क्रसम खाए, किन्तु मैं पुनः उस प्रभुत्वशाली एवं प्रतापी खुदा की क्रसम खा कर कहता हूं कि यह घटना सत्य है और वह खुदा ही था जिसने मातमपुरसी के तौर पर मुझे सूचना दी और कहा कि **وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ** और इसी के अनुसार प्रकट हुआ। इस पर खुदा की हर प्रकार से प्रशंसा।

22. बाईसवां निशान - यह है कि जैसा कि मैं अभी लिख चुका हूं, जब मुझे यह सूचना दी गई कि मेरे पिता श्री का सूर्य अस्त होने के पश्चात् निधन हो जाएगा तो मानव होने के नाते मुझे इस सूचना के सुनने से दुख पहुंचा और चूंकि हमारी आजीविका के अधिकांश साधन उन्हीं के जीवन से सम्बद्ध थे तथा वह अंग्रेजी सरकार से पेन्शन पाते थे तथा एक बड़ी धनराशि इनाम की पाते थे जो उनके जीवित रहने तक ही थी। इसलिए मन में यह विचार आया कि उनकी मृत्योपरांत क्या होगा। हृदय में भय उत्पन्न हुआ कि कदाचित हम पर दरिद्रता और कष्ट के दिन आएंगे और यह विचार विद्युत की चमक की भांति एक सेकण्ड से भी कम समय में हृदय में गुजर गया। तब उसी समय ऊंघने की अवस्था छा गई और यह दूसरा इल्हाम हुआ **اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ** अर्थात् क्या खुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं है। खुदा के इस इल्हाम के साथ हृदय ऐसा सुदृढ़ हो गया कि जैसे एक अत्यन्त पीड़ादायक घाव किसी मरहम से तुरन्त ही ठीक हो जाता है। वास्तव में यह बात अनेक बार अनुभव में आ चुकी है कि खुदा की वह्यी में हार्दिक सांत्वना देने के लिए एक व्यक्तिगत विशेषता है और इस विशेषता का मूल वह विश्वास है जो खुदा की वह्यी पर हो जाता है। खेद उन लोगों के कैसे इल्हाम हैं कि इल्हाम के दावे के बावजूद यह भी कहते हैं कि ये हमारे इल्हाम काल्पनिक बातें हैं न मालूम ये शैतानी हैं या रहमानी अर्थात् खुदा की ओर से। ऐसे इल्हामों की हानि उनके लाभ से अधिक है परन्तु मैं खुदा तआला की क्रसम खाकर कहता हूं कि मैं इन इल्हामों पर उसी प्रकार ईमान लाता हूं जैसा कि पवित्र कुर्आन पर तथा खुदा की अन्य किताबों पर और जिस प्रकार मैं पवित्र कुर्आन को निश्चित एवं अटल तौर पर खुदा की वाणी (कलाम) जानता हूं उसी प्रकार इस कलाम को भी जो मुझ पर उतरता है खुदा की वाणी विश्वास करता हूं क्योंकि इसके साथ खुदा की झलक और प्रकाश देखता हूं और उसके साथ खुदा की शक्तियों के नमूने देखता हूं। अतः जब मुझे यह इल्हाम हुआ कि **اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ** तो मैंने उसी समय समझ लिया कि खुदा मुझे नष्ट नहीं करेगा। अतः मैंने मलावामल नामक एक हिन्दू खत्री को जो क्रादियान

का निवासी है और अभी तक जीवित है वह इल्हाम लिख कर दिया और उसे सारा वृत्तान्त सुनाया और उसे अमृतसर भेजा ताकि हकीम मौलवी मुहम्मद शरीफ कलानौरी के माध्यम से किसी नगीने में खुदवाकर और मुहर बनवा कर ले आए। और मैंने उस हिन्दू को इस कार्य के लिए केवल इस उद्देश्य से चुना ताकि वह इस महानतम भविष्यवाणी का साक्षी हो जाए तथा मौलवी मुहम्मद शरीफ भी साक्षी हो जाए। अतः उपरोक्त मौलवी साहिब के द्वारा वह अंगूठी पांच रुपए के व्यय पर तैयार होकर मेरे पास पहुंच गई जो अब तक मेरे पास मौजूद है जिसका निशान यह है-  यह उस युग में इल्हाम हुआ था जबकि हमारी आजीविका तथा आराम का सम्पूर्ण आधार हमारे पिता श्री की एक छोटी सी आय पर निर्भर था तथा बाहरी लोगों में से एक व्यक्ति भी मुझे नहीं जानता था और मैं एक अज्ञात व्यक्ति था जो क़ादियान जैसे वीरान गांव में एक अज्ञात कोने में पड़ा हुआ था। तत्पश्चात् खुदा ने अपनी भविष्यवाणी के अनुसार एक संसार को मेरी ओर फेर दिया और लगातार ऐसी विजयों से आर्थिक सहायता प्रदान की कि जिसका आभार प्रकट करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं। मुझे अपनी स्थिति पर दृष्टि डाल कर इतनी भी आशा न थी कि दस रुपए मासिक भी आएंगे परन्तु खुदा तआला जो निर्धनों को धूल में से उठाता तथा अभिमानीयों को धूल में मिलाता है। उसी ने मेरी ऐसी सहायता की कि मैं निश्चय ही कह सकता हूं कि अब तक तीन लाख के लगभग धनराशि आ चुकी है^① और कदाचित इससे अधिक हो तथा इस आय को इस बात से विचार कर लेना चाहिए कि वर्षों से केवल लंगरखाना का मासिक डेढ़ हजार रुपया तक खर्च हो जाता है अर्थात् औसत की दृष्टि से तथा व्यय की अन्य शाखाओं की अर्थात् मदरसा इत्यादि तथा पुस्तकों का प्रकाशन इस से अलग है। अतः देखने की आवश्यकता

① **हाशिया** - यद्यपि मनी आर्डरों के द्वारा हजारों रुपए आ चुके हैं परन्तु इससे अधिक वे हैं जो स्वयं निष्कपट लोगों ने आकर दिए और जो नोट पत्रों के अन्दर आए तथा कुछ निष्कपट लोगों ने नोट या सोना इस प्रकार भेजा कि अपना नाम भी प्रकट न किया और मुझे अब तक ज्ञात नहीं कि उनके नाम क्या हैं। इसी से।

है कि यह भविष्यवाणी अर्थात् اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ किस स्पष्टता, दृढ़ता और शान से पूर्ण हुई। क्या यह किसी झूठ गढ़ने वाले का कार्य है या शैतानी भ्रम हैं। कदापि नहीं, अपितु यह उस खुदा की वाणी है जिसके अधिकार में मान और अपमान, उत्थान और पतन है। यदि मेरे इस बयान का विश्वास न हो तो बीस वर्ष के सरकारी रजिस्ट्रों को देखो ताकि मालूम हो कि इस समस्त अवधि में आय का द्वार कितना खोला गया है, जबकि यह आय केवल डाक द्वारा तक सीमित नहीं रही अपितु हजारों रुपए की आय इस प्रकार ही होती है कि लोग स्वयं क्रादियान में आकर देते हैं तथा ऐसी आय जो लिफ़ाफ़ों में नोटों द्वारा भेजी जाती है।

23. तेईसवां निशान - डिप्टी अब्दुल्लाह आथम के बारे में भविष्यवाणी है जो बड़ी स्पष्टता से पूर्ण हो गई है और वास्तव में यह दो भविष्यवाणियां थीं। **प्रथम** - यह कि वह 15 महीनों के अन्दर मर जाएगा। दूसरी यह कि यदि वह अपनी उन बातों से रुक जाएगा जो उसने प्रकाशित कीं कि (हम खुदा की शरण चाहते हैं) आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दज्जाल थे तो पन्द्रह^① माह के अन्दर नहीं

① इस बात की सूचना हजारों लोगों को होगी कि जब आथम को इल्हाम की शर्त के अनुसार ढील दी गई तो उसने इस ढील की कोई कृतज्ञता प्रकट न की अपितु यह समझ कर कि विपत्ति सर से टल गई सत्य को छुपाने का काम किया और कहा कि मैं नहीं डरा तथा क्रसम खाने से भी इन्कार किया। हालांकि ईसाई धर्म के समस्त बुजुर्ग क्रसम खाते आए हैं और इंजील से सिद्ध है कि हज़रत मसीह ने स्वयं क्रसम खाई, पौलूस ने क्रसम खाई पतरस ने क्रसम खाई। इसलिए उसके इस सत्य को छुपाने के पश्चात् खुदा ने मुझ पर प्रकट किया कि वह अब शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होगा। तब मैंने इस बारे में एक विज्ञापन प्रकाशित किया। यह बड़ी विचित्र बात है कि इस विज्ञापन की तिथि से जो मैंने इस दूसरे इल्हाम के अनुसार उसकी मृत्यु के बारे में प्रकाशित किया था वह पन्द्रह महीने के अन्दर मर गया। अतः खुदा ने आथम के लिए जबकि उसने सत्य का मार्ग त्याग दिया और सत्य को गुप्त रखा, वही पन्द्रह महीने क़ायम रखे जिसके बारे में हमारे विरोधियों के घरों में मातम है। इसी से।

मरेगा और जैसा कि मैं लिख चुका हूँ मृत्यु की भविष्यवाणी इस आधार पर थी कि आथम ने अपनी एक पुस्तक “अन्दरूना बाइबल” में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दज्जाल कहा था। यह सत्य है कि भविष्यवाणी में आथम की मृत्यु के लिए पन्द्रह माह की समय सीमा थी, परन्तु इसके साथ ही यह शर्त थी कि जिसके शब्द ये थे कि “बशर्ते कि सत्य की ओर न लौटे”। परन्तु आथम ने उसी सभा में तथा नितान्त विनयपूर्वक जीभ निकालकर और दोनों हाथ कानों पर रखकर दज्जाल कहने से खेद प्रकट किया। इस बात के साक्षी एक-दो व्यक्ति नहीं अपितु साठ⁶⁰—या सत्तर⁷⁰ लोग हैं जिनमें से आधे के लगभग ईसाई हैं और आधे के लगभग मुसलमान। मैं समझता हूँ कि उनमें से अब तक लगभग पचास⁵⁰ लोग जीवित होंगे जिनके सम्मुख आथम दज्जाल कहने से लौटा, पश्चाताप किया और फिर मरते समय तक ऐसा शब्द मुख पर नहीं लाया। अतः विचार करना चाहिए कि कैसी कृतघ्नता, दुष्टता तथा बेईमानी है कि उसके स्पष्ट तौर पर अपने पूर्व वाक्यों से लौटने के इक्रार के बावजूद जो आथम ने साठ⁶⁰—सत्तर⁷⁰ लोगों के सम्मुख किया फिर भी कहा जाए कि उसने अपने पूर्व अपशब्दों से लौटने का इक्रार नहीं किया। ख़ुदा के समस्त प्रकोप का आधार तो दज्जाल के शब्द पर था और इसी आधार पर यह भविष्यवाणी थी तथा उसी शब्द से रुजू करना शर्त थी। मुसलमान होने की भविष्यवाणी में कोई चर्चा नहीं थी। अतः जब उसने नितान्त विनयपूर्वक अपने पूर्व अपशब्दों से लौटने का इक्रार किया तो ख़ुदा भी दया दृष्टि के साथ उसकी ओर प्रवृत्त हुआ। ख़ुदा के इल्हाम का तो यह उद्देश्य नहीं था कि जब तक आथम इस्लाम न लाए तबाह होने से नहीं बचेगा क्योंकि इस्लाम के इन्कार में तो समस्त ईसाई सम्मिलित हैं। ख़ुदा इस्लाम को स्वीकार करने के लिए किसी पर बल-प्रयोग नहीं करता तथा ऐसी भविष्यवाणी सर्वथा अनुचित है कि अमुक व्यक्ति यदि इस्लाम को स्वीकार न करे तो अमुक समय तक मृत्यु को प्राप्त होगा। संसार इस प्रकार के लोगों से भरा पड़ा है जो इस्लाम के इन्कारी हैं जैसा कि मैं बारम्बार लिख चुका हूँ कि मात्र इस्लाम का इन्कार करने से संसार में किसी पर कोई अज़ाब नहीं आ

सकता अपितु उस पाप की पूछ-ताछ केवल प्रलय के दिन होगी। फिर आथम की इसमें कौन सी विशेषता थी कि इस्लाम के इन्कार के कारण उसकी मृत्यु की भविष्यवाणी की गई तथा दूसरों के लिए नहीं की गई अपितु भविष्यवाणी का कारण यह था कि उसने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दज्जाल कहा था, जिस से उसने साठ-सत्तर लोगों के सम्मुख अपने पूर्व अपशब्दों से लौटने का इक्रार किया, जिनमें से अधिकतर सभ्य और प्रतिष्ठित लोग थे जो उस सभा में मौजूद थे। अतः जबकि उसने इस अपशब्द से लौटने का इक्रार किया अपितु इसके पश्चात् रोता रहा तो खुदा के समक्ष दयनीय हो गया परन्तु केवल इतना कि उसकी मृत्यु में कुछ माह का विलम्ब हो गया तथा मेरे जीवन में ही मृत्यु को प्राप्त हुआ तथा वह बहस जो एक मुबाहले के रूप में थी उसके अनुसार वह अपनी मृत्यु के कारण झूठा सिद्ध हुआ। अतः क्या अब तक वह भविष्यवाणी पूर्ण नहीं हुई ? निःसन्देह पूर्ण हो गई और नितान्त स्पष्टता से पूर्ण हो गई। ऐसे हृदयों पर खुदा की ला'नत है कि ऐसे स्पष्ट निशानों पर आरोप लगाने से नहीं रुकते। यदि वे चाहें तो आथम के पूर्व कहे अपशब्दों से लौटने के इक्रार पर मैं चालीस⁴⁰ लोग बतौर गवाह प्रस्तुत कर सकता हूँ और यही कारण है कि उसने क्रसम भी न खाई, हालांकि समस्त ईसाई क्रसम खाते आए हैं तथा हज़रत मसीह ने स्वयं क्रसम खाई। हमें इस विवाद को लम्बा करने की आवश्यकता नहीं। आथम अब जीवित मौजूद नहीं। ग्यारह¹¹ वर्ष से अधिक समय गुज़रा कि वह मृत्यु को प्राप्त हो चुका है।

24. चौबीसवां निशान - 30 जून 1899 ई. में मुझे यह इल्हाम हुआ। पहले बेहोशी फिर मूर्च्छा, फिर मृत्यु। इसके साथ ही यह समझाया गया कि यह इल्हाम एक निष्ठावान मित्र के संबंध में है जिसकी मृत्यु से हमें शोक पहुंचेगा। अतः अपनी जमाअत के बहुत से लोगों को यह इल्हाम सुनाया गया तथा 'अलहकम' 30 जून 1899 ई. में यह प्रकाशित किया गया। फिर अन्तिम जुलाई 1899 ई. में हमारे एक नितान्त निष्ठावान मित्र डाक्टर मुहम्मद बूड़े खां सहायक सर्जन का अकस्मात् मृत्यु से क्रसूर (नामक स्थान पर) देहान्त हुआ। पहले बेहोश रहे, फिर

यकायक मूर्च्छावस्था छा गयी फिर इस नश्वर संसार से कूच किया। उनकी मृत्यु और इस इल्हाम में केवल बीस²⁰-बाईस²² दिन का अन्तर था।

25. पच्चीसवां निशान - करमदीन जेहलमी के साथ उस फौजदारी मुकद्दमे के बारे में भविष्यवाणी है जो उसने जेहलम में मुझ पर दायर किया था, जिस भविष्यवाणी के ये शब्द खुदा तआला की ओर से थे -

رَبِّ كُلِّ شَيْءٍ خَادِمُكَ - رَبِّ فَاحْفَظْنِي وَأَنْصُرْنِي وَأَرْحَمْنِي

तथा अन्य इल्हाम भी थे जिन में बरी होने का वादा था। अतः खुदा तआला ने मुझे इस मुकद्दमे से बरी कर दिया।

26. छब्बीसवां निशान - करमदीन जेहलमी के उस फौजदारी मुकद्दमे में मेरा बरी होना है जो गुरदासपुर में चन्दू लाल और आत्मा राम मजिस्ट्रेट की अदालत में मेरे विरुद्ध किया गया था तथा भविष्यवाणी में बताया गया था कि अन्ततः बरीयत होगी। अतः मैं बरी हुआ।

27. सत्ताइसवां निशान - करमदीन जेहलमी के दण्डित होने के बारे में भविष्यवाणी है जिसके अनुसार अन्ततः वह दण्ड पा गया। देखिए मेरी पुस्तक “मवाहिबुर्हमान” पृष्ठ-129, पंक्ति-8 ये तीनों भविष्यवाणियां बड़े विस्तार के साथ “मवाहिबुर्हमान” में लिखी हैं तथा यह पुस्तक उस समय लिख कर प्रकाशित की गई थी जबकि भविष्यवाणी का कोई परिणाम ज्ञात न था। भविष्यवाणी की इबारत यह है जो कथित पुस्तक में प्रकाशित हुई -

وَمِنْ آيَاتِي مَا أَنْبَأَنِي الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ فِي أَمْرِ رَجُلٍ لَّيْمٍ - وَبَهْتَانِهِ الْعَظِيمِ
وَأَوْحَى إِلَيَّ أَنَّهُ يَرِيدُ أَنْ يَتَخَطَّفَ عَرْضُكَ - ثُمَّ يَجْعَلُ نَفْسَهُ غَرَضُكَ - وَارَانِي
فِيهِ رُؤْيَا ثَلَاثَ مَرَّاتٍ - وَارَانِي أَنَّ الْعَدُوَّ أَعْدَلَ لَذَلِكَ ثَلَاثَةَ حُمَاةٍ لِتَوْهِينٍ وَ
اعْنَاتٍ وَرَأَيْتُ كَأَنِّي أَحْضَرْتُ مُحَاكَمَةَ كَالْمَاخُوزِينَ وَرَأَيْتُ أَنَّ أَخْرَامِي
نَجَاتٍ بِفَضْلِ رَبِّ الْعَلَمِينَ - وَلَوْ بَعْدَ حِينٍ - وَبُشِّرْتُ أَنَّ الْبَلَاءَ يَرُدُّ عَلَى عَدُوِّ
الْكَذَّابِ الْمُهِينِ - فَاشْعَتْ كُلَّمَا رَأَيْتُ وَالْهَمْتُ قَبْلَ ظُهُورِهِ فِي جَرِيدَةٍ يَسْمَى

الحكم وفي جريدة اخرى يُسمى البدر. ثم قعدت كالمنتظرين. وما مرّ على
مارئيت إلا سنة فاذا اظهر قدر الله على يد عدوّ مبين اسمه كرم الدين...
وقد ظهر بعض انباءه تعالى من اجزائ هذه القضية فيظهر بقيتها كما وعد
من غير الشك والشبهة.

अनुवाद - मेरे सारे निशानों में से एक यह है जो सर्वज्ञ एवं नीतिवान खुदा ने एक कमीने व्यक्ति के बारे में तथा उसके महा झूठे आरोप के बारे में मुझे सूचना दी और मुझे अपनी व्हयी द्वारा सूचित किया कि यह व्यक्ति मुझे अपमानित करने के लिए आक्रमण करेगा और अन्ततः मेरा निशाना स्वयं बन जाएगा। खुदा ने तीन स्वप्नों में यह वास्तविकता मुझ पर प्रकट कर दी और स्वप्न में मुझ पर प्रकट किया कि यह शत्रु अपनी सफलता के लिए तीन समर्थक नियुक्त करेगा ताकि किसी प्रकार अपमानित करे और कष्ट पहुंचाए तथा मुझे स्वप्न में दिखाया गया कि मानो मैं किसी अदालत में कैदियों की भांति उपस्थित किया गया हूं तथा मुझे दिखाया गया कि इन परिस्थितियों का परिणाम मेरी मुक्ति तथा निर्दोष होना है यद्यपि कुछ समयोपरान्त हो और मुझे शुभ-संदेश दिया गया कि इस महा झूठे, तिरस्कृत पर विपत्ति लौटाई जाएगी। अतः इन समस्त स्वप्नों और इल्हामों को मैंने समय से पूर्व प्रकाशित कर दिया तथा जिन समाचार पत्रों में प्रकाशित किया, उनमें से एक का नाम “अलहकम” है और दूसरे का नाम “अलबद्र”। फिर मैं प्रतीक्षा करता रहा कि ये भविष्यवाणी की बातें कब प्रकट होंगी। अतः जब एक वर्ष गुज़रा तो यह प्रारब्ध बातें करमदीन के हाथ से प्रकट हो गई, (अर्थात् उसने अकारण मुझ पर फौजदारी मुकद्दमे किए)। अतः उसके मुकद्दमे दाइर करने से भविष्यवाणी का एक भाग तो पूर्ण हो गया तथा जो शेष भाग है अर्थात् मेरा उसके मुकद्दमों से मुक्ति पाना और अन्ततः उसका दण्डित होना। यह भी शीघ्र ही पूर्ण हो जाएगा।

इस इबारात के भाग से स्पष्ट है कि इस पुस्तक के प्रकाशित होने के समय तक न मुझे करमदीन के मुकद्दमों से मुक्ति मिली थी और न वह दण्डित हुआ था

अपितु यह सब कुछ भविष्यवाणी के तौर पर लिखा गया था।^① यह अनुवाद है उस भविष्यवाणी का जो ऊपर अरबी भाषा में लिखी गई है जिसमें बताया गया है कि करमदीन मुझे दण्ड दिलाने के लिए फौजदारी में मुकद्दमे चलाएगा और कई समर्थक उसकी सहायता करेंगे। अन्ततः वह स्वयं दण्ड पाएगा और खुदा मुझे उसकी दुष्टता से मुक्ति देगा। अतः ऐसा ही प्रकट हुआ। अब विचार करना चाहिए कि यह भविष्यवाणी कितने अधिक परोक्ष पर आधारित है। क्या किसी मनुष्य या शैतान का कार्य है कि ऐसी भविष्यवाणी करे जो मेरे सम्मान और शत्रु के अपमान का आदेश देती है।

28. अट्ठाईसवां निशान - आत्माराम की सन्तान की मृत्यु के बारे में भविष्यवाणी। अतः बीस दिन में उसके दो पुत्र मर गए। इस भविष्यवाणी के साक्षी वे जमाअत के लोग हैं जो गुरदासपुर में मेरे साथ मुकद्दमे में उपस्थित थे।

29. उन्तीसवां निशान - लाला चन्दूलाल मजिस्ट्रेट अतिरिक्त सहायक मजिस्ट्रेट गुरदासपुर की अवनति के संबंध में भविष्यवाणी। अतः वह गुरदासपुर से स्थानांतरित होकर मुलतान मुन्सिफ्री पर चला गया।

30. तीसवां निशान - डोई नामक एक व्यक्ति अमरीका का रहने वाला था। उसने पैगम्बर (अवतार) होने का दावा किया था तथा इस्लाम का कट्टर विरोधी था। उसका विचार था कि मैं इस्लाम का समूल विनाश करूंगा। हज़रत ईसा को खुदा मानता था। मैंने उसकी ओर लिखा था कि मेरे साथ मुबाहला करे। इसके साथ यह भी लिखा था कि यदि वह मुबाहला नहीं करेगा तब भी खुदा उसको

① करमदीन के संबंध में जिन मुकद्दमों का जेहलम और गुरदासपुर की अदालत से निर्णय हुए उनकी तिथि से भी स्पष्ट है कि करमदीन का दण्डित होना तथा मेरा बरी होने की भविष्यवाणी उन मुकद्दमों के निर्णय से पूर्व मेरी पुस्तक 'मवाहिबुर्हमान' प्रकाशित हो चुकी थी। जो व्यक्ति चाहे अदालत में जाकर उन निर्णयों की तिथियां देख ले। इस भविष्यवाणी के पूर्ण होने के साक्षी मौलवी सनाउल्लाह अमृतसरी और मौलवी मुहम्मद इत्यादि जो आत्माराम की अदालत में उपस्थित हुए ये हैं। इसी से।

तबाह कर देगा। अतः यह भविष्यवाणी अमरीका के कई अखबारों में प्रकाशित की गई और अपनी अंग्रेजी पत्रिका में भी प्रकाशित की गई। अन्ततः इस भविष्यवाणी का परिणाम यह हुआ कि कई लाख रुपए की सम्पत्ति से उसे हाथ धोने पड़े और बड़े अपमान का सामना करना पड़ा तथा स्वयं लक़्वा (पक्षाघातों में ग्रस्त हो गया, ऐसा कि अब वह एक पग भी स्वयं नहीं चल सकता। प्रत्येक स्थान पर उठा कर ले जाते हैं। अमरीका के डाक्टरों ने परामर्श दिया है कि अब यह उपचार योग्य नहीं, कदाचित कुछ माह तक मर जाएगा।

31. इक्तीसवां निशान - मेरे बरी होने के बारे में डाक्टर मार्टिन क्लार्क के मुकद्दमे में भविष्यवाणी थी जो उसने मुझ पर खून करने का मुकद्दमा किया था। अतः इस भविष्यवाणी के अनुसार मैं बरी हो गया।

32. बत्तीसवां निशान - टैक्स के मुकद्दमे के बारे में भविष्यवाणी है जो कुछ दुष्ट लोगों ने अंग्रेजी सरकार में मेरे बारे में यह सूचना दी थी कि इनकी हज़ारों रुपए की आय है टैक्स लगाना चाहिए। खुदा तआला ने मुझे प्रकट किया कि इसमें वे लोग विफल रहेंगे। अतः ऐसा ही प्रकट हुआ।

33. तैंतीसवां निशान - मिस्टर डोई साहिब डिप्टी कमिशनर गुरदासपुर के यहां मेरे बारे में दण्ड दिलाने की नीयत से फौजदारी में पुलिस ने एक मुकद्दमा बनाया था। उसके संबंध में खुदा तआला ने मुझे बताया कि ऐसा प्रयास करने वाले असफल रहेंगे। अतः ऐसा ही हुआ। इस विषय में खुदा तआला ने मुझे कहा -

انا تَجَالِدُنَا فَاَنْقُطِ الْعَدُوَّ وَاسْبَابَهُ

अर्थात् हमने तलवार के साथ युद्ध किया। अतः परिणाम यह हुआ कि शत्रु तबाह हो गया और उस का सामान भी तबाह हुआ। यहां शत्रु से अभिप्राय एक डिप्टी इन्स्पेक्टर है जिसने अकारण शत्रुता से मुकद्दमा बनाया था। अन्ततः प्लेग से मरा।

34. चौंतीसवां निशान - यह है कि मेरा एक लड़का मृत्यु को प्राप्त हो गया था तथा विरोधियों ने जैसा कि उनका स्वभाव है, उस लड़के की मृत्यु पर बड़ी

प्रसन्नता प्रकट की थी तब खुदा ने मुझे शुभ सन्देश देकर कहा कि इसके बदले में शीघ्र एक लड़का पैदा होगा जिसका नाम महमूद होगा तथा मुझे उस का नाम एक दीवार पर लिखा हुआ दिखाया गया। तब मैंने एक हरे रंग के विज्ञापन में हजारों समर्थकों और विरोधियों में यह भविष्यवाणी प्रकाशित की तथा अभी सत्तर दिन पहले लड़के की मृत्यु पर नहीं गुजरे थे कि यह लड़का पैदा हो गया और उसका नाम महमूद अहमद रखा गया।

35. पैंतीसवां निशान - यह है कि पहले लड़के महमूद अहमद के जन्म के पश्चात् मेरे घर में एक और लड़का पैदा होने की मुझे शुभ सूचना दी तथा उसका विज्ञापन भी लोगों में प्रकाशित किया गया। अतः दूसरा लड़का पैदा हुआ और उसका नाम बशीर अहमद रखा गया।

36. छत्तीसवां निशान - यह है कि बशीर अहमद के पश्चात् खुदा ने मुझे एक और लड़का पैदा होने की शुभ सूचना दी। अतः वह शुभ सूचना भी विज्ञापन द्वारा लोगों में प्रकाशित की गई। तत्पश्चात् तीसरा लड़का पैदा हुआ और उसका नाम शरीफ अहमद रखा गया।

37. सैंतीसवां निशान - यह है कि इसके पश्चात् खुदा तआला ने गर्भ के दिनों में एक लड़की की शुभ सूचना दी तथा उसके बारे में कहा - **تُنَشَّأُ فِي الْحِلْيَةِ** - अर्थात् आभूषण में पालन पोषण होगा। अर्थात् न छोटी आयु में मृत्यु होगी और न दरिद्रता देखेगी। अतः इसके पश्चात् लड़की पैदा हुई जिसका नाम मुबारका बेगम रखा गया तथा उसके जन्म से सात दिन गुजरे तो अक्रीके के दिन यह सूचना आई कि पंडित लेखराम भविष्यवाणी के अनुसार किसी के हाथ से मारा गया। तब एक ही समय में दो निशान पूरे हुए।

38. अड़तीसवां निशान - यह है कि लड़की के पश्चात् मुझे एक और बेटे की शुभ सूचना दी गई। अतः वह शुभसूचना पहले की तरह प्रकाशित कर दी गई और फिर लड़का पैदा हुआ उसका नाम मुबारक अहमद रखा गया।

39. उन्तालीसवां निशान - यह है कि मुझे खुदा की वह्यी के द्वारा बताया

गया कि एक और लड़की पैदा होगी परन्तु उसकी मृत्यु हो जाएगी। अतः वह इल्हाम समय से पूर्व बहुत से लोगों को बताया गया। तत्पश्चात् वह लड़की पैदा हुई और कुछ माह पश्चात् उसका निधन हो गया।

40. चालीसवां निशान - यह है कि उस लड़की के पश्चात् एक और लड़की की शुभ सूचना दी गई जिसके शब्द ये थे कि - **دُخْتِ كَرَامٍ** अतः वह इल्हाम 'अलहकम' और 'अलबद्र' अखबारों में और कदाचित इन दोनों में से किसी एक में प्रकाशित किया गया। तत्पश्चात् लड़की पैदा हुई जिसका नाम **अमतुल हफ़ीज़** रखा गया और वह अब तक जीवित है।

41. इकतालीसवां निशान - यह है कि बीस या इक्कीस वर्ष का समय गुज़रा है कि मैंने एक विज्ञापन प्रकाशित किया था जिसमें लिखा था कि खुदा ने मुझे से वादा किया है कि मैं चार लड़के दूंगा जो आयु पाएंगे। इसी भविष्यवाणी की ओर 'मवाहिबुर्हमान' पृष्ठ-139 में संकेत है अर्थात् उस इबारत में - **الحمد لله الذي وهب لي على الكبر أربعة من البنين وانجز وعده من الاحسان** अर्थात् अल्लाह की प्रशंसा एवं स्तुति है जिसने वृद्धावस्था में मुझे चार लड़के दिए और अपना वादा पूरा किया (कि मैं चार लड़के दूंगा) अतः वे चार लड़के ये हैं - महमूद अहमद¹, बशीर अहमद², शरीफ़ अहमद³, मुबारक अहमद⁴ जो जीवित मौजूद हैं।

42. बयालीसवां निशान - यह है कि खुदा ने नाफ़िल (अतिरिक्त) के तौर पर पांचवें लड़के का वादा किया था, जैसा कि इसी पुस्तक 'मवाहिबुर्हमान' के पृष्ठ-139 में यह भविष्यवाणी इस प्रकार से लिखी है -

وبشرني بخامسٍ في حين من الاحيان

अर्थात् पांचवां लड़का जो चार के अतिरिक्त बतौर नाफ़िला (इनाम स्वरूप) पैदा होने वाला था खुदा ने उसकी मुझे सूचना दी कि वह किसी समय अवश्य पैदा होगा तथा उसके बारे में एक और इल्हाम भी हुआ जो अखबार 'अलबद्र' 'अलहकम' में बहुत पहले प्रकाशित हो चुका है और वह यह है कि **اَنَّا نَبَشِّرُكَ** अर्थात् हम तुझे एक और लड़के की शुभसूचना - **بغلامٍ نافلهً لك. نافلهً من عندي.**

देते हैं कि जो नाफ़िला (अतिरिक्त) होगा अर्थात् लड़के का लड़का। यह नाफ़िला हमारी ओर से है। अतः लगभग तीन माह का समय हुआ है कि मेरे लड़के महमूद अहमद के घर में लड़का पैदा हुआ जिसका नाम नसीर अहमद रखा गया। यह भविष्यवाणी साढ़े चार वर्ष के पश्चात् पूरी हुई।

43. तेंतालीसवां निशान - यह है कि मैंने अपनी पुस्तक “किश्ती नूह” में यह भविष्यवाणी की थी कि प्लेग के समय में हमें टीका लगवाने की आवश्यकता नहीं होगी। खुदा हमारी और उन सब की जो हमारे घर में हैं स्वयं रक्षा करेगा तथा अपेक्षाकृत कुशलता हमारे साथ रहेगी परन्तु कुछ टीका लगवाने वाले प्राणों की क्षति उठाएंगे। अतः ऐसा ही हुआ। कुछ लोगों ने टीके से से इतनी क्षति उठाई कि उनकी दृष्टि जाती रही तथा कुछ के अन्य अवयवों में विकार आ गया और सर्वाधिक यह कि मल्कोवाल ज़िला - गुजरात में एक ही बार में उन्नीस लोग टीका लगवाने से मर गए।

44. चवालीसवां निशान - यह है कि सरदार नवाब मुहम्मद अली खान साहिब^① रईस मालेरकोटला का पुत्र अब्दुर्रहमान खान तीव्र टायफायड के रोग से रोगग्रस्त हो गया था तथा बचने का कोई उपाय दिखाई नहीं देता था मानो कि वह मृतक के रूप में था। उस समय मैंने उसके लिए दुआ की तो ज्ञात हुआ कि प्रारब्ध अटल के समान है। तब मैंने खुदा के समक्ष विनती की कि हे मेरे उपास्य ! मैं इसके लिए सिफ़ारिश करता हूँ। इसके उत्तर में खुदा तआला ने कहा - من ذا الذى يشفع عنده الا باذنه अर्थात् किस में शक्ति है कि खुदा की आज्ञा के बिना किसी की सिफ़ारिश कर सके। तब मैं खामोश हो गया। तत्पश्चात् बिना विलम्ब यह इल्हाम हुआ - انك انت المجاز अर्थात् तुझे सिफ़ारिश करने की अनुमति दी गई। तब मैंने बड़े विनय एवं गिड़गिड़ाकर दुआ की तो खुदा तआला ने मेरी दुआ स्वीकार की और लड़का मानो क्रब्र में से निकल कर बाहर आ गया तथा स्वस्थ होने के

① आदरणीय नवाब साहिब पांच वर्ष से अपनी रियासत से प्रवास करके क़ादियान में निवास रखते हैं तथा त्याग और बलिदान में आगे निकल जाने वालों में से हैं। इसी से।

लक्षण प्रकट हुए। वह इतना दुर्बल हो गया था कि एक लम्बे समय के पश्चात् वह अपनी पूर्व अवस्था पर आया तथा स्वस्थ हो गया और जीवित मौजूद है।

45. पैतालीसवां निशान - यह है कि मेरे प्रिय मित्र मौलवी नूरदीन साहिब के एक लड़के का निधन हो गया था और वही एकमात्र लड़का था। उसके निधन पर कुछ नादान शत्रुओं ने बहुत प्रसन्नता प्रकट की। इस विचार से कि मौलवी साहिब निर्वश रह गए। तब मैंने उनके लिए बहुत दुआ की। दुआ के पश्चात् खुदा तआला की ओर से मुझे यह सूचना मिली कि तुम्हारी दुआ से एक लड़का पैदा होगा तथा इस बात का निशान कि वह केवल दुआ के द्वारा पैदा किया गया है यह बताया गया कि उसके शरीर पर बहुत से फोड़े निकल आएंगे। अतः वह लड़का पैदा हुआ जिसका नाम अब्दुल हयी रखा गया। उसके शरीर पर बहुत से असाधारण फोड़े निकले जिन के दाग अब तक मौजूद हैं। ये फोड़ों का निशान लड़के के जन्म से पूर्व विज्ञापन द्वारा प्रकाशित किया गया था।

46. छियालीसवां निशान - यह है कि उस युग में जबकि पंजाब के समस्त जिलों में एक स्थान के अतिरिक्त प्लेग का नामो निशान न था। खुदा तआला ने मुझे सूचना दी कि समस्त पंजाब में प्लेग फैल जाएगी तथा प्रत्येक स्थान प्लेग से ग्रस्त हो जाएगा तथा बहुत मौतें होंगी और हजारों लोग प्लेग का शिकार हो जाएंगे और कई गांव निर्जन हो जाएंगे। मुझे दिखाया गया कि प्रत्येक स्थान एवं प्रत्येक जिले में प्लेग के काले वृक्ष लगाए गए हैं। अतः यह भविष्यवाणी कई हजार विज्ञापनों तथा पत्रिकाओं के द्वारा मैंने इस देश में प्रकाशित की। पुनः कुछ समयोपरान्त प्रत्येक जिले में प्लेग फूट पड़ी। अतः अब तक लगभग तीन लाख प्राणों की क्षति हुई और हो रही है तथा खुदा तआला ने कहा कि अब इस देश से प्लेग कभी दूर नहीं होगी जब तक ये लोग अपने अन्दर परिवर्तन न करें।

47. सैंतालीसवां निशान - यह है कि चिरागदीन नामक एक व्यक्ति निवासी जम्मू मेरे मुरीदों में सम्मिलित हुआ था फिर मुर्तद (विमुख) हो गया और रसूल होने का दावा किया तथा कहा कि मैं ईसा का रसूल हूं। उस ने मेरा नाम दज्जाल

रखा और कहा कि हजरत ईसा ने मुझे डंडा दिया है ताकि इस दज्जाल को इस डंडे से क़त्ल करूं। मैंने उसके बारे^① में यह भविष्यवाणी की वह खुदा के प्रकोप से रोग अर्थात् प्लेग से मरेगा और खुदा उसका विनाश करेगा। अतः वह 4 अप्रैल 1906 ई. को अपने दोनों पुत्रों सहित मर गया।

48. अड़तालीसवां निशान - यह है कि मैंने मिर्ज़ा अहमद बेग होशियारपुरी के बारे में भविष्यवाणी की थी कि वह तीन वर्ष के अन्दर मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा। अतः वह तीन वर्ष की अवधि के अन्दर मृत्यु को प्राप्त हो गया।

49. उन्चासवां निशान - यह है कि मैंने भूकम्प के बारे में भविष्यवाणी की थी जो अखबार 'अलहकम' और 'अलबद्र' में प्रकाशित हो गई थी कि एक भयंकर भूकम्प आने वाला है जो पंजाब के कुछ भागों में एक बड़े विनाश का कारण होगा। भविष्यवाणी की पूर्ण इबारत यह है :- भूकम्प का धक्का عفت الديار محلها ومقامها अतः वह भविष्यवाणी 4 अप्रैल 1905 को पूरी हुई।

50. पचासवां निशान - यह है कि मैंने फिर एक भविष्यवाणी की थी कि इस भूकम्प के पश्चात् बसंत के दिनों में पुनः एक और भूकम्प आएगा। इस इल्हामी भविष्यवाणी की एक इबारत यह थी - “फिर बहार आई खुदा की बात फिर पूरी हुई।” अतः 28 फ़रवरी 1905 ई. को वह भूकम्प आया और पर्वतीय स्थानों में धन एवं प्राणों के विनाश द्वारा बहुत क्षति हुई।

51. इक्यावनवां निशान - यह है कि फिर मैंने एक और भविष्यवाणी की थी कि कुछ समय तक भूकम्प निरन्तर आते रहेंगे, उनमें से चार भूकम्प बड़े होंगे और पांचवां भूकम्प प्रलय का नमूना होगा। अतः भूकम्प अब तक आते हैं तथा ऐसे दो महीने कम गुज़रते हैं जिनमें कोई भूकम्प नहीं आ जाता और निश्चय ही स्मरण रखना चाहिए कि इसके पश्चात् भयंकर भूकम्प आने वाले हैं, विशेष तौर पर पांचवां भूकम्प जो प्रलय का नमूना होगा। खुदा ने मुझे सम्बोधित करके कहा कि ये सब तेरी सच्चाई के लिए निशान हैं।

① देखिए पुस्तक “दाफ़िउल बला व मै'यारु अहलिल इस्तिफ़ा” इसी से।

52. बावनवां निशान - यह कि पंडित दयानन्द जो आर्यों के लिए बतौर गुरु के था, जब उसका फ़िल्ता सीमा से बढ़ गया तो मुझे दिखाया गया कि अब उसके जीवन का अन्त है। अतः उसी वर्ष में उसका निधन हो गया। मैंने शरमपत नामक एक आर्य को जो क्रादियान निवासी है यह भविष्यवाणी घटित होने से पूर्व बता दी थी और वह अब तक जीवित है।

53. तिरेपनवां निशान - यह है कि इसी शरमपत का एक भाई विशंबर दास एक फौजदारी मुकद्दमे में शायद डेढ़ वर्ष के लिए कैद हो गया था। तब शरमपत ने अपनी व्याकुलता की अवस्था में मुझ से दुआ की विनती की अतः मैंने उसके बारे में दुआ की। तो मैंने उसके पश्चात् स्वप्न में देखा कि मैं उस आफ़िस में गया हूँ जहाँ कैदियों के नामों के रजिस्टर थे तथा उन रजिस्ट्रों में प्रत्येक कैदी की कैद की अवधि लिखी थी। तब मैंने वह रजिस्टर खोला जिसमें विशम्बर दास की कैद के बारे में लिखा था कि इतनी कैद है। मैंने अपने हाथ से उसकी कैद की आधी अवधि काट दी। जब उसकी कैद के बारे में चीफ़ कोर्ट में अपील की गई तो मुझे दिखाया गया कि मुकद्दमे का परिणाम यह होगा कि मुकद्दमे की मिस्ल ज़िले में वापस आएगी तथा विशम्बर दास की आधी कैद कम की जाएगी किन्तु बरी नहीं होगा। और मैंने वे समस्त परिस्थितियाँ उसके भाई लाला शरमपत को मुकद्दमे का परिणाम घोषित होने से पूर्व बता दी थीं और अन्ततः ऐसा ही हुआ जो मैंने कहा था।

54. चव्वनवां निशान - मौलवी साहिबज़ादा अब्दुल-लतीफ़ शहीद के क़त्ल होने के बारे में भविष्यवाणी है जो बराहीन अहमदिया में लिखी है।

55. पचपनवां निशान - मियाँ अब्दुल्लाह सिन्नौरी की एक असफलता के बारे में भविष्यवाणी है। इस भविष्यवाणी के पूरा होने का साक्षी स्वयं मियाँ अब्दुल्लाह सिन्नौरी है।

56. छप्पनवां निशान - यह है कि मैंने देहली में अपनी शादी के बारे में भविष्यवाणी की थी। यह इल्हाम मैंने बहुत से लोगों को बताया था जो अब तक जीवित मौजूद हैं तथा इस के बारे में बराहीन अहमदिया में एक यह इल्हाम है

जिस से यह प्रकट होता था कि वह रिश्ता सादात में होगा। اذکر نعمتی ریت

① خدیجی

57. सत्तावनवां निशान - मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी के बारे में “बराहीन अहमदिया” में यह भविष्यवाणी है कि वह मुझे काफ़िर ठहराने के लिए प्रयास करेगा और कुफ़्र का फ़त्वा लिखेगा।

58. अट्ठावनवां निशान - मौलवी नज़ीर हुसैन देहलवी के बारे में ‘बराहीन अहमदिया’ में यह भविष्यवाणी है कि वह कुफ़्र का फ़त्वा देगा।

59. उनसठवां निशान - शैख मेहर अली होशियारपुरी के बारे में भविष्यवाणी। अर्थात् मैंने स्वप्न में देखा कि उसके घर में आग लग गई और फिर मैंने उसे बुझाया। यह इस बात की ओर संकेत था कि अन्ततः मेरी दुआ से छुटकारा प्राप्त होगा। यह पूर्ण भविष्यवाणी से मैंने पत्र द्वारा शैख मेहर अली को सूचित किया। तत्पश्चात् भविष्यवाणी के अनुसार उस पर क्रैद की विपत्ति आई और फिर क्रैद के पश्चात् भविष्यवाणी के दूसरे भाग के अनुसार उसने मुक्ति पाई।

60. साठवां निशान - इसके बाद शैख मेहर अली के बारे में एक और भविष्यवाणी की गई थी कि वह एक और भयानक विपत्ति में ग्रस्त होगा अतः इसके पश्चात् वह लक़्वा (पक्षाघात) के रोग का शिकार हो गया और फिर उसका हाल ज्ञात नहीं।

61. इकसठवां निशान - अपने भाई स्वर्गीय मिर्ज़ा गुलाम क़ादिर की मृत्यु के बारे में भविष्यवाणी है जिसमें मेरे एक बेटे की ओर से किसी दूसरे के क्रिस्से के तौर पर मुझे यह इल्हाम हुआ -

اے عتی بازئ خویش کر دی
و مرا افسوس بسیار داوی۔

① हज़रत ख़दीजा रज़ि. सादात की नानी है। अतः इस इल्हाम में एक तो यह संकेत था कि तुम्हारी पत्नी सय्यद क़ौम में से होगी और दूसरी भविष्यवाणी यह थी कि उसकी सन्तान से एक बड़ी नस्ल पैदा होगी। इसी से।

यह भविष्यवाणी भी उसी शरमपत आर्य को समय पूर्व बताई गई थी तथा इस इल्हाम का अर्थ यह था कि मेरे भाई की असमय और अचानक मृत्यु होगी जो शोक का कारण होगी। जब यह इल्हाम हुआ तो उस दिन या उससे एक दिन पूर्व कथित शरमपत के घर में एक लड़के ने जन्म लिया जिसका नाम उसने अमीनचन्द रखा तथा उसने मुझे आकर बताया कि मेरे घर में लड़का पैदा हुआ है। मैंने जिसका नाम अमीनचन्द रखा है मैंने कहा कि मुझे अभी इल्हाम हुआ है कि اے مٹی بازی خویش کر دی و مرا افسوس بسیار دای (अनुवाद : ऐ मेरे चाचा तूने अपने प्राण दे दिए और मुझे अफ़सोस में छोड़ गया) और अभी मुझ पर इस इल्हाम के अर्थ नहीं खुले। मैं डरता हूँ कि इससे अभिप्राय तेरा लड़का अमीनचन्द ही न हो क्योंकि मेरे पास तेरा आना-जाना बहुत है तथा इल्हामों में कभी ऐसा संयोग हो जाता है कि किसी संबंध रखने वाले व्यक्ति के बारे में इल्हाम होता है। वह यह बात सुनकर भयभीत हो गया। उसने घर पहुंचते ही अपने लड़के का नाम परिवर्तित कर दिया अर्थात् अमीनचन्द के स्थान पर गोकुलचन्द नाम रख दिया। वह लड़का अब तक जीवित है तथा इन दिनों किसी ज़िले के बन्दोबस्त में मिस्ल रीडर है। तत्पश्चात् मुझ पर स्पष्ट किया गया कि यह इल्हाम मेरे भाई की मृत्यु की ओर संकेत है। अतः मेरा भाई दो-तीन दिन के पश्चात् आकस्मिक तौर पर मृत्यु को प्राप्त हो गया तथा मेरे उस लड़के को उसकी मृत्यु का शोक पहुंचा और इस चक्र में आकर कथित शरमपत जो कट्टर पक्षपाती कट्टर आर्य है साक्षी बन गया। यदि कहो कि खुदा के इल्हाम के अर्थ उसी समय क्यों न खोले गए तो इसके उत्तर में मैं कहता हूँ कि कुर्आन के कुछ मुक़त्तिआत शब्दों के अर्थ अब तक नहीं खोले गए। कौन जानता है कि طه^① (ता हा) क्या है? और ن (अलक़लम आयत-2) नून क्या चीज़ है? तथा كَهَيَعَص (सूर: मरियम आयत-2) क्या चीज़ है और आयत سَيُزْمَرُ الْجَمْع (अलक़मर आयत 46) के बारे में हदीस में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि अब तक मुझे इसके अर्थ ज्ञात

① ताहा - 2

नहीं तथा ²आप ने कहा कि मुझे स्वर्ग के अंगूर का गुच्छा दिया गया कि यह अबू जहल के लिए है, मैं इसकी ताबीर समझ न सका जब तक उसका बेटा इकरमा मुसलमान न हुआ और ³मुझे हिजरत (प्रवास) की भूमि बताई गई और मैं समझ न सका कि वह मदीना है। अतः ऐसे आरोप अल्लाह के कानून कुदरत का ज्ञान न होने के कारण दिलों में उत्पन्न होते हैं।

62. बासठवां निशान - रोम कॉन्सुलेट के विनाश के बारे में भविष्यवाणी है जिसका विस्तृत वर्णन मेरी पुस्तकों में लिखा है।

63. तिरेसठवां निशान - बराहीन अहमदिया में मेरे बारे में खुदा तआला की यह भविष्यवाणी है कि क्रल्ल इत्यादि के षड्यंत्रों से मैं बचाया जाऊंगा। अतः आज तक अनेकों आक्रमणों के बावजूद खुदा तआला ने शत्रुओं के षड्यंत्रों से मेरी रक्षा की।

64. चौंसठवां निशान - बराहीन अहमदिया में यह भविष्यवाणी है कि मुझ पर जितने मुकद्दमे किए जाएंगे मेरी विजय होगी। अतः प्रत्येक मुकद्दमे में मुझे विजय प्राप्त होती रही।

65. पैंसठवां निशान - बराहीन अहमदिया में यह भविष्यवाणी है कि मेरे पास इतने लोग आएंगे कि निकट होगा कि मैं उनकी मुलाकातों की अधिकता से थक जाऊं। अतः कई लाख लोग मेरे पाए आए।

66. छियासठवां निशान - बराहीन अहमदिया में अस्हाब-ए-सुफ़्फ़ा के बारे में भविष्यवाणी है। अतः कई निष्ठावान लोग अपने स्थानों से प्रवास करके मेरे मकान के कुछ भागों में सपरिवार निवास रखते हैं, जिनमें सर्वप्रथम मौलवी हकीम नूर दीन साहिब हैं।

67. सरसठवां निशान - बराहीन अहमदिया में यह भविष्यवाणी है कि तुझे अरबी भाषा में सरस सुबोध भाषा शैली प्रदान की जाएगी^① जिसका कोई मुकाबला

① इस बारे में खुदा तआला की ओर से यह इल्हाम हुआ था - **كلام افصح من لدن** - और जो मैंने अब तक अरबी भाषा में किताबें लिखी हैं जिनमें से कुछ गद्य **رب كريم** -

नहीं कर सकेगा। अतः अब तक कोई मुकाबला न कर सका।

68. अड़सठवां निशान - बराहीन अहमदिया में शाहिद निजाअ की भविष्यवाणी जिसका पूरा होना बराहीन अहमदिया में विस्तार पूर्वक लिखा है।

69. उनहत्तरवां निशान - 'हमामतुल बुशरा' में जो प्लेग फैलने से कई वर्ष पूर्व प्रकाशित की थी मैंने यह लिखा था कि मैंने प्लेग फैलने के लिए दुआ की है। अतः वह स्वीकार होकर देश में प्लेग फैल गई।

70. सत्तरवां निशान - बराहीन अहमदिया में मुझे झुठलाने के कारण प्लेग का रोग पैदा होने के लिए मुझे सूचना दी थी। अतः पच्चीस²⁵ वर्ष के पश्चात् पंजाब में प्लेग फैल गई।

71. इकहत्तरवां निशान - पुस्तक सिरूलखिलाफ़ह के पृष्ठ-62 में मैंने लिखा है वह यह है कि विरोधियों पर प्लेग पड़ने के लिए मैंने दुआ की थी अर्थात् ऐसे विरोधी जिन के भाग्य में हिदायत प्राप्त करना नहीं। अतः इस दुआ के कई वर्ष पश्चात् इस देश में प्लेग का आधिपत्य हुआ और कुछ कट्टर विरोधी इस संसार से गुज़र गए और वह दुआ यह थी :-

وخذرب من عادى الصلاح ومفسداً ونزل عليه الرجز حقاً ودمراً
و فرج كربى يا كريمى و نجنى ومزق خصمى يا الهى وعقر

में हैं और कुछ पद्य में जिसका सदृश विरोधी उलेमा प्रस्तुत नहीं कर सके। उनका विवरण यह है :- पुस्तक अंजाम-ए-आथम¹ से संलग्न पृष्ठ-73 से 282 तक, अत्तब्लीग़ आईना कमालाते इस्लाम² से संलग्न - करामातुस्सादिकीन³ - हमामतुल बुशरा⁴ - सीरतुल अब्दाल⁵ - नूरुलहक़⁶ भाग प्रथम - नूरुलहक़⁷ भाग द्वितीय - तुहफ़ा बग़दाद⁸ - एजाज़ुल मसीह⁹ - इत्मा मुल हुज्जह¹⁰ - हुज्जतुल्लाह¹¹ - सिरूलखिलाफ़ह¹² - मवाहिबुर्हमान¹³ - एजाज़-ए-अहमदी¹⁴ - खुत्बा इल्हामिया¹⁵ - अलहुदा¹⁶ - अलामातुल मुकर्रबीन¹⁷ संलग्न तज़किरतुशहादतैन तथा वे पुस्तकें जो अरबी में लिखी जा चुकी हैं, परन्तु अभी प्रकाशित नहीं हुईं ये हैं :- तर्गीबुलमोमिनीन¹⁸ - लुज्जतुन्नूर¹⁹ - नज्मुल हुदा²⁰। इसी से।

अनुवाद - हे मेरे खुदा ! जो व्यक्ति सद्मार्ग और शुभ कर्म का शत्रु है तथा उपद्रव करता है उसे पकड़ और उस पर प्लेग का अज़ाब उतार तथा उसे तबाह कर दे।

और मेरी बेचैनियां दूर कर और मुझे चिन्ता और शोक से मुक्ति दे। हे मेरे दयालु खुदा ! मेरे शत्रु के टुकड़े-टुकड़े कर दे तथा मिट्टी में मिला दे।

यह भविष्यवाणी उस समय की गई थी जबकि इस देश के किसी भाग में प्लेग का नामो निशान न था। (देखिए मेरी पुस्तक 'सिरूलखिलाफ़ह') इसी से।

और फिर पुस्तक एजाज़-ए-अहमदी में यह भविष्यवाणी थी -

إذا ما غضبنا غاضب الله صائلاً على معتدي يؤذى وبالسوء يجهر

जब हम क्रोधित हों तो खुदा उस व्यक्ति पर क्रोधित होता है जो सीमा का अतिक्रमण करता है और खुली-खुली बुराई पर तत्पर होता है।

ويأتي زمان كاسر كل ظالم وهل يهلك اليوم إلا المدمر

और वह युग आ रहा है कि प्रत्येक अत्याचारी को तोड़ेगा तथा वही लोग तबाह होंगे जो अपने पापों के कारण तबाह हो चुके हैं।

واني لشر الناس ان لم يكن لهم جزاء اهانتهم صغار يصغر

और मैं सब लोगों से निकृष्ट हूंगा यदि उनके लिए निन्दा का प्रतिफल निन्दा न हो।

قضى الله ان الطعن بالطعن بيننا فذالك طاعون اتاهم ليصروا

खुदा ने यह निर्णय किया है कि व्यंग एवं कटाक्ष (ता'न) का प्रतिफल व्यंग और कटाक्ष है। अतः वही ताऊन है जो उनको पकड़ेगी।

ولما طغى الفسق المبيد بسيله تمنيت لو كان الوباء^① المتبر

और जब तबाह करने वाला पाप सीमा से अधिक बढ़ गया तो मैंने चाहा कि अब विनाशकारी ताऊन^① चाहिए।

तत्पश्चात् यह इल्हाम हुआ -

① यह भविष्यवाणी 'हमामतुल बुश्रा' में है। इसी से।

اے بسا خانہ دشمن کہ تو ویران کر دی۔

(अनुवाद- तूने कई शत्रुओं के घर वीरान कर दिए)

यह अखबार 'अलहकम' और 'अलबद्र' में प्रकाशित किया गया। और फिर उपरोक्त दुआएं जो शत्रुओं की कठोर यातनाओं के पश्चात् की गईं। खुदा के दरबार में स्वीकार होकर भविष्यवाणियों के अनुसार प्लेग का अज्ञात उन पर अग्नि की भांति बरसा तथा कई हजार शत्रु जो मुझे झूठा कहते थे तथा बुराई से नाम लेते थे तबाह हो गए, किन्तु यहां हम नमूने के तौर पर कुछ कट्टर विरोधियों का वर्णन करते हैं। अतः सर्वप्रथम मौलवी **रुसुल बाबा** अमृतसरी उल्लेखनीय हैं जिसने मेरे खण्डन में पुस्तक लिखी और अपशब्दों का प्रयोग किया तथा इस नश्वर जीवन से प्रेम करके झूठ बोला। अन्ततः खुदा के वादे के अनुसार प्लेग से तबाह हुआ। तत्पश्चात् एक व्यक्ति **मुहम्मद बख्श** नामक जो डिप्टी इन्स्पेक्टर बटाला था, शत्रुता और कष्ट पहुंचाने पर कटिबद्ध हुआ, वह भी प्लेग से तबाह हुआ। तदोपरान्त **चिरागदीन** नामक व्यक्ति निवासी जम्मू उठा जो रसूल होने का दावा करता था जिसने मेरा नाम दज्जाल रखा था तथा कहता था कि हज़रत ईसा ने मुझे स्वप्न में डंडा दिया है ताकि मैं ईसा के डंडे से इस दज्जाल का वध करूं। अतः वह भी मेरी भविष्यवाणी के अनुसार जो विशेष तौर पर उसके पक्ष में पुस्तक "दाफ़िउल बला व मै'यार अहलिल इस्तिफ़ा" में उसके जीवन में ही प्रकाशित की गई थी 4 अप्रैल 1906 ई. को अपने दोनों बेटों सहित प्लेग से मर गया। कहा गया ईसा का डंडा जिसके द्वारा मेरा वध करता था ? और कहा गया उसका इल्हाम **اِنِّیْ لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ** खेद ! अधिकांश लोग आत्म शुद्धि से पूर्व हृदय में आई हुई बात को ही इल्हाम कहते हैं। इसलिए अन्ततः अपमान और अपयश से उनकी मृत्यु होती है तथा उनके अतिरिक्त और भी कई लोग हैं जो कष्ट देने तथा निन्दा में सीमा का अतिक्रमण कर चुके थे तथा खुदा के आक्रोश से नहीं डरते थे तथा दिन-रात उपहास और अपशब्दों का प्रयोग करना उन की दिनचर्या थी। अन्ततः प्लेग का शिकार हो गए। जैसा कि मुन्शी महबूब आलम साहिब अहमदी लाहौर से लिखते हैं कि एक मेरा चाचा था जिसका नाम नूर अहमद था। वह ग्राम भिड़ी

चट्टा तहसील हाफ़िज़ाबाद का निवासी था। उसने एक दिन मुझ से कहा कि मिर्ज़ा साहिब अपने मसीह होने के दावे पर क्यों कोई निशान नहीं दिखाते। मैंने कहा कि उनके निशानों में से एक निशान प्लेग है जो भविष्यवाणी के पश्चात् आई और संसार को खाती जाती है। इस बात पर वह बोल उठा कि प्लेग हमें नहीं छुएगी अपितु यह प्लेग मिर्ज़ा साहिब को ही तबाह करने के लिए आई है^① तथा उसका प्रभाव हम पर कदापि नहीं होगा मिर्ज़ा साहिब पर ही होगा। इतने ही वार्तालाप पर बात समाप्त हो गई। जब मैं लाहौर पहुंचा तो एक सप्ताह के पश्चात् मुझे सूचना प्राप्त हुई कि चाचा नूर अहमद प्लेग से मर गए तथा उस गांव के बहुत से लोग इस वार्तालाप के साक्षी हैं तथा यह ऐसी घटना है कि गुप्त नहीं रह सकती।

मियां मे 'राजुद्दीन साहिब लाहौर से लिखते हैं कि मौलवी ज़ैनुल आबिदीन जो मौलवी फ़ाज़िल और मुंशी फ़ाज़िल की परीक्षाएं पास कर चुका था तथा मौलवी गुलाम रसूल क़िले वाले के परिजनों में से था तथा धार्मिक शिक्षा को पूर्ण कर चुका था तथा अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर का एक प्रिय शिक्षक था। उसने हुज़ूर की सच्चाई के बारे में मौलवी मुहम्मद अली सियालकोटी से कश्मीरी बाज़ार में एक दूकान पर खड़े होकर मुबाहला किया। फिर कुछ दिनों के पश्चात् प्लेग ग्रस्त होकर मृत्यु का शिकार हो गया, न केवल वह अपितु उसकी पत्नी भी प्लेग का शिकार हो गई तथा उसका दामाद भी जो एकाउन्टेन्ट जनरल विभाग में कार्यरत था प्लेग का शिकार हुआ। इसी प्रकार उस के घर के सत्रह लोग मुबाहले के पश्चात् प्लेग का शिकार हो गए।

यह विचित्र बात है। क्या कोई इस रहस्य को समझ सकता है कि उन लोगों के विचार में झूठा, झूठ गढ़ने वाला और दज्जाल तो मैं ठहरा। परन्तु मुबाहले के समय में यही लोग मरते हैं। क्या नाऊजुबिल्लाह (हम खुदा की शरण चाहते हैं) खुदा से भी कोई बोध भ्रम हो जाता है ? ऐसे सदाचारी लोगों पर यह खुदा का अज़ाब क्यों आता है, कि मृत्यु भी होती है और फिर अपमान और बदनामी भी।

① ये शब्द खुदा के निकट बतौर मुबाहला के थे। इसी से

मियां मे 'राजुद्दीन लिखते हैं कि इसी प्रकार करीम बख्श नामक व्यक्ति लाहौर में एक ठेकेदार था वह हुजूर के पक्ष में बड़ी असभ्यता और धृष्टता किया करता था और प्रायः करता ही रहता था। मैंने कई बार उसे समझाया परन्तु वह नहीं रुका, अन्ततः युवावस्था में ही मृत्यु का शिकार हो गया।

सय्यद हामिद शाह साहिब सियालकोटी लिखते हैं कि हाफ़िज़ सुल्तान सियालकोटी हुजूर का कट्टर विरोधी था। यह वही व्यक्ति था जिसने इरादा किया था कि सियालकोट में आप की सवारी गुज़रने पर आप पर राख डाले। अन्ततः वह भयंकर प्लेग से इसी 1906 ई. में मृत्यु का शिकार हुआ तथा उसके घर के नौ या दस लोग भी प्लेग से मरे। इसी प्रकार सियालकोट शहर में यह बात सर्वविदित है कि हकीम मुहम्मद शफ़ी जो बैअत करके मुर्तद हो गया था जिसने “मदरसा अलकुर्आन” की नींव रखी थी आप का कट्टर विरोधी था। यह अभाग्य अपनी कामेच्छाओं के कारण बैअत पर क़ायम न रह सका तथा सियालकोट के मुहल्ला लोहारों के लोग जो कट्टर विरोधी थे, शत्रुता एवं विरोध में उनका भागीदार हो गया। अन्ततः वह भी प्लेग का शिकार हुआ तथा उसकी पत्नी और मां तथा उसका भाई सब एक-एक करके प्लेग से मरे तथा उसके मदरसे की जो लोग सहायता करते थे वे भी मृत्यु का शिकार हुए।

इसी प्रकार मिर्ज़ा सरदार बेग सियालकोटी जो अपने अपशब्दों और अपनी दुष्टता में बहुत बढ़ गया था तथा हर समय उपहास उसका कार्य था तथा प्रत्येक बात व्यंग और कटाक्ष से करता था वह भी भयंकर प्लेग में ग्रसित होकर मरा। एक दिन उसने धृष्टतापूर्वक जमाअत के एक व्यक्ति को कहा कि क्यों प्लेग, प्लेग करते हो हम तो तब जानें कि हमें प्लेग हो। अतः इस बात के दो दिन बात प्लेग से मर गया।

72. बहत्तरवां निशान - कुछ कट्टर विरोधी जिन्होंने मुबाहले के तौर पर “झूठों पर खुदा की ला'नत” कहा था। वे खुदा के अज़ाब में ग्रसित होकर मृत्यु को प्राप्त हुए जैसा कि मौलवी रशीद अहमद गंगोही पहले अंधा हुआ और फिर

सांप के काटने से मर गया तथा कुछ लोग पागल होकर मर गए जैसा कि मौलवी शाहदीन लुधियानवी और मौलवी अब्दुल अजीज, मौलवी मुहम्मद तथा मौलवी अब्दुल्लाह लुधियानवी जो प्रथम श्रेणी के विरोधी थे तीनों मर गए। इसी प्रकार अब्दुर्रहमान मुहियुद्दीन लखूके वाले अपने उस इल्हाम के पश्चात् कि झूठे पर ख़ुदा का अज़ाब उतरेगा मृत्यु के घाट उतरे।

73. तिहत्तरवां निशान - इसी प्रकार मौलवी गुलाम दस्तगीर कसूरी ने अपने तौर पर मुझ से मुबाहला किया और अपनी पुस्तक में दुआ की कि जो झूठा है ख़ुदा उसे तबाह करे। फिर इस दुआ से कुछ दिन पश्चात् स्वयं ही मृत्यु का शिकार हो गया। यह विरोधी मौलवियों के लिए यदि वे समझते तो कितना बड़ा निशान था।

74. चौहत्तरवां निशान - इसी प्रकार मौलवी मुहम्मद हसन भैंवाला मेरी भविष्यवाणी के अनुसार मरा जैसा कि मैंने विस्तारपूर्वक अपनी पुस्तक 'मवाहिबुर्रहमान' में लिखा है।

75. पचहत्तरवां निशान - मैंने अपनी पुस्तक नूरुलहक़ के पृष्ठ 35 से 38 तक यह भविष्यवाणी लिखी है कि ख़ुदा ने मुझे यह सूचना दी है कि रमज़ान में जो चन्द्र एवं सूर्य ग्रहण हुआ। यह भावी अज़ाब की एक भूमिका है। अतः इस भविष्यवाणी के अनुसार देश में ऐसी प्लेग फैली कि अब तक तीन लाख के लगभग लोगों की मृत्यु हो गई।

76. छिहत्तरवां निशान - बराहीन अहमदिया में मेरे बारे में ख़ुदा तआला की यह भविष्यवाणी है *القيت عليك محبة مني ولتصنع علي عيني* अर्थात् ख़ुदा तआला का कथन है कि मैं लोगों के हृदय में तेरा प्रेम डालूंगा और मैं अपनी आंखों के सामने तेरा पोषण करूंगा। यह उस समय का इल्हाम है कि जब एक व्यक्ति भी मेरे साथ संबंध नहीं रखता था। फिर एक समय के पश्चात् यह इल्हाम पूरा हुआ और ख़ुदा ने हजारों लोग ऐसे पैदा किए कि जिन के हृदयों में उसने मेरा प्रेम भर दिया। कुछ ने मेरे लिए प्राणों का बलिदान कर दिया तथा कुछ ने मेरे लिए अपना

आर्थिक विनाश स्वीकार कर लिया तथा कुछ मेरे लिए अपने घरों से निकाले गए तथा कष्ट दिए गए और सताए गए तथा हजारों ऐसे लोग हैं कि वे अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर मुझे प्राथमिकता देकर अपने प्रिय धन मेरे सम्मुख रखते हैं^① तथा मैं देखता हूँ कि उनके हृदय प्रेम से परिपूर्ण हैं तथा बहुत से ऐसे लोग हैं कि यदि मैं कहूँ कि वे अपने धन से पूर्णतया अलग हो जाएं या अपने प्राणों को मेरे लिए अर्पण कर दें तो वे तैयार हैं। जब मैं इस स्तर की श्रद्धा एवं निष्ठा अपनी जमाअत के अधिकतर लोगों में देखता हूँ तो सहसा मुझे कहना पड़ता है कि हे मेरे सामर्थ्यवान ख़ुदा ! वास्तव में कण-कण पर तेरा अधिकार है, तूने इन हृदयों को ऐसे उपद्रवों से भरपूर युग में मेरी ओर आकृष्ट किया और उन्हें ऐसी दृढ़ता प्रदान की। यह तेरी शक्ति का महानतम चमत्कार है।

① **हाशिया** - मैं अपने लेख में इस स्थान पर पहुंचा था और यह वाक्य लिख चुका था कि उसी समय एक निष्कपट सत्यनिष्ठ का पत्र आया जो मेरी जमाअत में सम्मिलित है। चूंकि वह पत्र इस वाक्य के बिल्कुल लिखने के समय आया तथा उसके यथानुकूल था इसलिए उसे नीचे लिखता हूँ और वह यह है :- मेरी यह बड़ी इच्छा है कि प्रलय में आपकी छत्रछाया में शुभ जमाअत में सम्मिलित हूँ जैसा कि अब हूँ आमीन। मान्यवर ! ख़ुदा तआला उचित तौर पर जानता है कि विनीत को उच्चतम गुणों से परिपूर्ण आप के अस्तित्व से इतना प्रेम है कि मेरा सम्पूर्ण धन, तन आप पर बलिदान है तथा मैं हजार प्राणों से आप पर न्यौछावर हूँ। मेरे भाई और माता-पिता आप पर न्यौछावर हों। ख़ुदा मेरा अन्त आप के प्रेम और आज्ञाकारिता की स्थिति में करे। आमीन।

می پریدم سوئے کوئے تو مدام من اگر میداشتم بال و پرے

(यदि मेरे पंख होते तो मैं हमेशा तेरे ही कूचे में उड़ता रहता) विनीत - सय्यद नासिर शाह ओवरसीयर - स्थान बारामूला कश्मीर - 15 अगस्त 1906 ई.। वास्तव में यह निष्ठावान नौजवान नितान्त निष्कपट भावना रखता है और दो हजार रुपए के लगभग या इससे अधिक अपने प्रेमावेग से दे चुका है। इस पत्र के साथ भी पचास रुपये पहुंचे। इसी से।

77. सतत्तरवां निशान - मेरा लड़का बशीर अहमद आंखों के रोग से ऐसा रोग ग्रस्त हुआ कि कोई औषधि लाभप्रद नहीं हो सकती थी तथा दृष्टि जाने का भय था। जब रोग भयंकर अवस्था को पहुंच गया तब मैंने दुआ की तो इल्हाम हुआ **بَرَقَ طِفْلِي بِشِيرٍ** अर्थात् मेरा पुत्र बशीर देखने लगा। अतः उसी दिन या दूसरे दिन वह स्वस्थ हो गया। यह घटना भी लगभग सौ लोगों को मालूम होगी।

78. अठत्तरवां निशान - जब मैंने छोटी मस्जिद का निर्माण किया जो हमारे घर के साथ एक कूचः पर है। तब मुझे विचार आया कि इसकी कोई तिथि चाहिए तब खुदा तआला की ओर से इल्का हुआ -

مبارك ومبارك وكل امرٍ مبارك¹³⁰⁰ يجعل فيه

यह एक भविष्यवाणी थी और इसी से मस्जिद की नींव की तिथि निकलती है।

79. उनासीवां निशान - बराहीन अहमदिया में इस जमाअत की उन्नति के बारे में यह भविष्यवाणी है -

كزرع اخرج شطأه فازره فاستغلظ فاستوى على سوقه-

अर्थात् पहले एक बीज होगा जो अपनी हरियाली निकालेगा फिर मोटा होगा फिर अपने तने पर खड़ा होगा। यह एक बड़ी भविष्यवाणी थी जो इस जमाअत के पैदा होने से पूर्व तथा उसके विकास के बारे में आज से पच्चीस वर्ष पूर्व की गई थी। ऐसे समय में कि न उस समय जमाअत थी और न किसी का मुझसे बैअत का संबंध था अपितु उनमें से कोई मेरे नाम से भी परिचित न था। तत्पश्चात् खुदा तआला की कृपा ने यह जमाअत पैदा कर दी, जो अब तीन लाख से भी कुछ अधिक है। मैं एक छोटे से बीज की भांति था जो खुदा तआला के हाथ से बोया गया। फिर मैं एक समय तक गुप्त रहा, फिर मेरा प्रकटन हुआ और बहुत सी शाखाओं ने मेरे साथ संबंध स्थापित किया। अतः यह भविष्यवाणी केवल खुदा तआला के हाथ से पूरी हुई।

80. अस्सीवां निशान - बराहीन अहमदिया में यह भविष्यवाणी है

يُريدون ان يطفئوا نور الله بافواههم والله متمن نورهم ولو كره الكافرون-

अर्थात् विरोधी चाहेंगे कि खुदा के प्रकाश को अपने मुख की फूँकों से बुझा दें, पर खुदा अपने प्रकाश को पूर्ण करेगा यद्यपि इन्कारी लोग पसन्द ही न करें। यह उस समय की भविष्यवाणी है जब कि कोई विरोधी न था अपितु कोई मेरे नाम से भी परिचित न था। तत्पश्चात् भविष्यवाणी के अनुसार संसार में सम्मान के साथ मेरी प्रसिद्धि हुई तथा हजारों लोगों ने मुझे स्वीकार किया तब इतना अधिक विरोध हुआ कि मक्का से, मक्का वालों के सम्मुख वास्तविकता के विरुद्ध बातें वर्णन करके मेरे लिए कुफ़्र के फ़त्वे मंगाए गए और मुझे काफ़िर कह कर संसार में एक शोर डाला गया। वध करने के फ़त्वे दिए गए, शासकों को उकसाया गया, जन साधारण को मुझ से और मेरी जमाअत से विमुख किया गया। अतः प्रत्येक प्रकार से मुझे मिटाने के लिए प्रयास किए गए परन्तु खुदा तआला की भविष्यवाणी के अनुसार ये समस्त मौलवी और उनके सहपंथी अपने प्रयासों में असफल रहे। खेद है विरोधी कितने अंधे हैं इन भविष्यवाणियों की श्रेष्ठता को नहीं समझते कि किस युग की हैं और किस प्रतिष्ठा और शक्ति के साथ पूरी हुई। क्या यह खुदा तआला के अतिरिक्त किसी अन्य का कार्य है ? यदि है तो इसका उदाहरण प्रस्तुत करो। विचार नहीं करते कि यदि यह मनुष्य का कारोबार होता और खुदा की इच्छा के विपरीत होता तो वे अपने प्रयासों में असफल न रहते। उनको किसने असफल रखा ? उसी खुदा ने जो मेरे साथ है।

81. इक्यासीवां निशान - बराहीन अहमदिया में एक यह भी भविष्यवाणी है **يَعَصِمُكَ اللَّهُ مِنْ عِنْدِهِ وَلَوْ لَمْ يَعَصِمِكَ النَّاسُ** अर्थात् खुदा तुझे समस्त विपत्तियों से बचाएगा यद्यपि लोग नहीं चाहेंगे कि तू विपत्तियों से बच जाए। यह उस युग की भविष्यवाणी है जबकि मैं एक गुमनामी में पड़ा था तथा मुझ से न कोई बैअत का संबंध रखता था न शत्रुता। तत्पश्चात् जब मैंने मसीह मौऊद होने का दावा किया तो समस्त मौलवी और उनके सहपंथी अग्नि के समान हो गए। उन ही दिनों में एक पादरी डाक्टर मार्टिन क्लार्क ने मुझ पर एक खून का मुकद्दमा किया। उस मुकद्दमे में मुझे यह अनुभव हुआ कि पंजाब के मौलवी मेरे रक्त के प्यासे हैं और

मुझे एक ईसाई से भी जो आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शत्रु है और गालियां निकालता है निकृष्ट समझते हैं क्योंकि कुछ मौलवियों ने इस मुकद्दमे में मेरे विरुद्ध अदालत में उपस्थित होकर उस पादरी के गवाह बनकर गवाहियां दीं और कुछ इस दुआ में लगे रहे कि पादरी लोग विजयी हों। मैंने विश्वस्त सूत्रों से सुना है कि वे मस्जिदों में रो-रोकर दुआएं करते थे कि हे ख़ुदा ! इस पादरी की सहायता कर, उसे विजयी कर। परन्तु सर्वज्ञ ख़ुदा ने उनकी एक न सुनी। न साक्ष्य देने वाले अपनी साक्ष्य में सफल हुए और न दुआ करने वालों की दुआएं स्वीकार हुईं। ये उलेमा हैं धर्म के समर्थक, और यह क्रौम है जिसके लिए लोग क्रौम-क्रौम पुकारते हैं। इन लोगों ने मुझे फांसी दिलाने के लिए अपने समस्त षडयन्त्रों द्वारा जोर लगाया तथा एक ख़ुदा और उसके रसूल के शत्रु की सहायता की। यहां स्वाभाविक तौर पर हृदयों में एक विचार आता है कि जब ये क्रौम के समस्त मौलवी तथा उनके अनुयायी मेरे प्राणों के शत्रु हो गए थे फिर किस ने मुझे उस भड़कती अग्नि से बचाया हालांकि मुझे अपराधी बनाने के लिए आठ-नौ गवाह गुजर चुके थे। इसका उत्तर यह है कि उसी ने बचाया जिसने पच्चीस वर्ष पूर्व यह वादा दिया था कि तेरी क्रौम तो तुझे नहीं बचाएगी तथा प्रयास करेगी कि तू मारा जाए परन्तु मैं तुझे बचाऊंगा, जैसा कि उसने पहले से कहा था कि जो बराहीन अहमदिया में आज से पच्चीस वर्ष पूर्व लिखा जा चुका है और वह यह है -

فَبَرَأَ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا

अर्थात् ख़ुदा ने उसे उस आरोप से बरी किया जो उस पर लगाया गया था और वह ख़ुदा के निकट प्रतापवान है।

82. बयासीवां निशान - यह भविष्यवाणी है जो अनेकों बार मेरी पत्रिकाओं में लिखी जा चुकी है-

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغَيِّرُ مَا بَقِيَتْ حَتَّىٰ يَغَيِّرَ أَمْرًا بِأَنفُسِهِمْ إِنَّهُ أَوَى الْقَرْيَةِ-

अर्थात् ख़ुदा इस तारुन को उस क्रौम से दूर नहीं करेगा और अपना इरादा परिवर्तित नहीं करेगा जब तक लोग अपने हृदयों की दशा न बदलें और ख़ुदा

अन्ततः इस गांव को अपनी शरण में ले लेगा। और कहा कि **لولا الاكرام لهلك المقام** - अर्थात् यदि मैं तुम्हारे सम्मान को दृष्टिगत न रखता तो मैं उस सम्पूर्ण गांव का सर्वनाश कर देता तथा उन में से एक भी न छोड़ता। पुनः कहा कि **وما كان الله -** और **ليعذبهم وانت فيهم** हालांकि तू उन्हीं में रहता है।

स्मरण रहे कि खुदा तआला का यह वाक्य कि **ان الله اوى القرية** इसके अर्थ यह हैं कि खुदा तआला एक सीमा तक अज़ाब देने के बाद इस गांव को अपनी शरण में ले लेगा। ये अर्थ नहीं हैं कि इसमें ताऊन कदापि नहीं आएगी। आवा (**اوى**) का शब्द अरबी भाषा में उस शरण देने को कहते हैं कि जब कोई व्यक्ति किसी सीमा तक आपदा ग्रस्त होकर पुनः अमन में आ जाता है। जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है **الْمَرْجُوكُ يَتِيْمًا فَاوَى** ^① - अर्थात् खुदा ने तुझे अनाथ पाया तथा तुझे अनाथों के संकटों में ग्रसित देखा फिर शरण दी और जैसा कि पुनः कहा **اَوْيْنَاهُمَا اِلَى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ** ^② - अर्थात् हमने ईसा और उसकी मां को जब यहूदियों ने हज़रत ईसा पर अत्याचार किया और उन्हें सूली पर चढ़ाकर मारना चाहा तो हमने ईसा तथा उसकी मां को शरण दी और दोनों को एक ऐसे पर्वत पर पहुंचा दिया जो सब पर्वतों से ऊंचा था अर्थात् कश्मीर का पर्वत जिसमें ठण्डा और मीठा पानी था तथा बड़ा आरामदायक स्थान था और जैसा कि सूरह कहफ़ में यह आयत है **فَاَوْا اِلَى الْكُهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ** ^③ अर्थात् गुफ़ा की शरण में आ जाओ। इस प्रकार से खुदा तुम पर अपनी दया करेगा अर्थात् तुम अत्याचारी बादशाह के आतंकों से मुक्ति पाओगे। अतः आवा का शब्द हमेशा उस स्थान पर आता है जब एक व्यक्ति किसी सीमा तक कोई कष्ट उठा कर फिर अमन में लाया जाता है। यही भविष्यवाणी क़ादियान के सम्बन्ध में है। अतः केवल

① अज़ज़ुहा - 7

② अलमोमिनून - 51

③ अलकहफ़ - 17

एक बार कुछ तीव्रता के साथ ताऊन क्रादियान में आई। इसके पश्चात् कम होती गई यहां तक कि इस वर्ष में क्रादियान में एक व्यक्ति भी ताऊन से नहीं मरा, जबकि आस-पास के गांवों में सैकड़ों लोग ताऊन का शिकार हुए।

83. तिरासीवां निशान - एक बार मैं अपने उस चौबारे में बैठा हुआ था जो छोटी मस्जिद से लगा हुआ है जिसका नाम खुदा तआला ने 'बैतुल फ़िक्र' रखा है तथा मेरे पास मेरा एक सेवक हामिद अली पैर दबा रहा था, इतने में मुझे इल्हाम हुआ **ترى فخذ اليما** अर्थात् तू एक कष्टप्रद जांग देखेगा। मैंने हामिद अली से कहा कि इस समय मुझे यह इल्हाम हुआ है। उसने मुझे यह उत्तर दिया कि आप के हाथ पर एक फुन्सी है शायद इसी की ओर संकेत हो। मैंने उससे कहा कि कहां हाथ और कहां जान। यह विचार व्यर्थ और अनुचित है फिर फुंसी तो दर्द भी नहीं करती तथा इल्हाम के ये अर्थ हैं कि तू देखेगा न कि अब देख रहा है। तत्पश्चात् हम दोनों चौबारे से उतरे ताकि बड़ी मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ें। नीचे उतर कर मैंने देखा कि दो व्यक्ति घोड़े पर सवार मेरी ओर आ रहे हैं। दोनों बिना काठी के दो घोड़ों पर सवार थे और दोनों बीस वर्ष से कम आयु के थे। वे मुझे देख कर वहीं ठहर गए तथा उनमें से एक ने कहा यह मेरा भाई जो दूसरे घोड़े पर सवार है रान के दर्द से बहुत बीमार है और बहुत विवश है इसलिए हम आए हैं कि इसके लिए आप कोई दवा बताएं। तब मैंने हामिद अली से कहा कि खुदा की प्रशंसा और आभार कि मेरा इल्हाम इतनी शीघ्र पूरा हो गया कि मात्र इतनी ही देर लगी कि जितनी सीढ़ी से उतरने में लगी है। शैख हामिद अली अब तक मौजूद है जो गांव 'थह' गुलाम नबी का निवासी है तथा इन दिनों मेरे पास है। कोई व्यक्ति दूसरे के लिए अपने ईमान को नष्ट नहीं कर सकता अपितु यदि बीच में मुरीदी का सम्बन्ध हो और कोई व्यक्ति अपने मुरीद को यह कहे कि मैंने अपने लिए एक झूठा चमत्कार बनाया है तू मेरे लिए साक्ष्य दे। तो वह अपने हृदय में अवश्य कहेगा कि यह तो एक धोखेबाज़ तथा बुरा व्यक्ति है। मैंने अकारण इसके हाथ में हाथ दिया है। इसी प्रकार मैंने इस पुस्तक में जितनी भविष्यवाणियां लिखी हैं मेरे

हजारों मुरीद (शिष्य) उनकी सच्चाई के साक्षी हैं। एक मूर्ख कहेगा कि मुरीद की गवाही का क्या विश्वास है। मैं कहता हूँ कि इस गवाही जैसी कोई गवाही ही नहीं, क्योंकि यह सम्बन्ध मात्र धर्म के लिए होता है और मनुष्य उसी का मुरीद बनता है जिसे वह अपने विवेक में समस्त संसार से अधिक पवित्र स्वभाव, संयमी और सत्य बोलने वाला समझता है। अतः जब मुर्शिद (पथ-प्रदर्शक) की यह दशा हो कि सैकड़ों झूठी भविष्यवाणियां अपनी ओर से बना कर मुरीदों के सम्मुख हाथ जोड़ता है कि मेरे लिए झूठ बोलो और किसी प्रकार झूठ बोल कर मुझे वली बना दो। उसे उसके मुरीद एवं अनुयायी सदाचारी और अच्छा व्यक्ति क्योंकर कह सकते हैं और कैसे तन-मन से उसकी सेवा कर सकते हैं। अपितु उसे तो एक शैतान कहेंगे और उससे खिन्न हो जाएंगे और मैं तो ऐसे अनुयायी पर ला'नत भेजता हूँ जो मेरी ओर झूठे चमत्कार सम्बद्ध करे तथा ऐसा मुर्शिद भी ला'नती है जो झूठे चमत्कार बनाए।

84. चौरासीवां निशान - 5 अगस्त 1906 ई. को एक बार मेरे शरीर का नीचे का आधा भाग सुन्न हो गया और एक पग भी चलने की शक्ति न रही और चूंकि मैंने यूनानी चिकित्सा-पद्धति की पुस्तकों का एक-एक पाठ पढ़ा था इसलिए मुझे विचार आया कि ये पक्षाघात (फालिज) के लक्षण हैं, इसके साथ ही बहुत दर्द था, हृदय में घबराहट थी कि करवट बदलना कठिन था। रात्रि के समय जब मैं बहुत कष्ट में था तो मुझे शत्रुओं की गालियों का विचार आया परन्तु केवल धर्म के लिए न किसी अन्य कार्य के लिए। अतः मैंने खुदा के दरबार में दुआ की कि मृत्यु तो एक अनिवार्य बात है परन्तु तू जानता है कि ऐसी मृत्यु और कुसमय मृत्यु में शत्रुओं की गालियां हैं। तब मुझे थोड़ी सी ऊंच के साथ यह इल्हाम हुआ -

إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ - إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْزِي الْمُؤْمِنِينَ -

अर्थात् खुदा सर्वशक्तिमान है और खुदा मोमिनों को अपमानित नहीं किया करता। अतः उसी दयालु खुदा की मुझे सौगंध है जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं, जो इस समय भी देख रहा है कि मैं उस पर झूठ गढ़ता हूँ या सच बोलता हूँ कि इस

इल्हाम के साथ ही सम्भवतः आधे घंटे तक नींद आ गई। फिर सहसा जब आंख खुली तो मैंने देखा कि रोग का कोई नामोनिशान नहीं रहा। समस्त लोग सोए हुए थे और मैं उठा और आजमाने के लिए चलना आरंभ किया तो सिद्ध हुआ कि मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ। तब मुझे अपने सामर्थ्यवान खुदा की महान शक्ति को देखकर रोना आया कि हमारा खुदा कैसा सामर्थ्यवान है और हम कैसे सौभाग्यशाली हैं कि उसकी वाणी अर्थात् पवित्र कुरआन पर ईमान लाए और उसके रसूल का अनुसरण किया और कितने दुर्भाग्यशाली वे लोग हैं जो इस चमत्कारों से परिपूर्ण खुदा पर ईमान नहीं लाए।

85. पचासीवां निशान - एक बार मैं आंतों की पेचिश से बहुत बीमार हुआ और सोलह दिन गुदा मार्ग से रक्त आता रहा तथा बहुत दर्द था जो वर्णन से बाहर है। उन्हीं दिनों में स्वर्गीय शैख रहीम बख्श साहिब मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब के पिता श्री बटाला से मेरे रोग का हाल पूछने आए तथा उन्होंने मेरी गंभीर स्थिति को देखा और मैंने सुना कि वह कुछ लोगों को कह रहे थे कि आजकल यह रोग संक्रामक रोग की भांति फैल रहा है। बटाला में मैं अभी एक जनाजा पढ़कर आया हूँ जो इसी रोग से निधन हुआ है तथा ऐसा संयोग हुआ कि मुहम्मद बख्श नामक एक नाई क्रादियान का रहने वाला उसी दिन इसी रोग से रोगग्रस्त हुआ और आठवें दिन चल बसा। जब सोलह दिन मेरे रोग पर गुजरे तो निराशा के लक्षण प्रकट हो गए तथा मैंने देखा कि मेरे कुछ परिजन दीवार के पीछे रोते थे और सुन्नत के तौर पर तीन बार सूरह यासीन (یس) सुनाई गई। जब मेरा रोग इस सीमा तक पहुंच गया तो खुदा तआला ने मेरे हृदय पर इल्का किया कि अन्य उपचार त्याग दो और नदी की रेत जिसके साथ पानी भी हो तस्वीह (सुब्हान अल्लाह) और दरूद के साथ अपने शरीर पर मलो। अतः शीघ्र ही नदी से ऐसी रेत मंगवाई गई और मैंने इस वाक्य के साथ कि “सुब्हान अल्लाह व बिहम्दिही सुब्हान अल्लाहिल अज्जीम” तथा दरूद शरीफ के साथ उस रेत को शरीर पर मलना आरंभ किया। हर बार जब शरीर पर वह रेत पहुंचती थी तो मानो मेरा शरीर

अग्नि में से मुक्ति पाता था। प्रातः काल तक वह रोग दूर हो गया तथा प्रातः काल ही इल्हाम हुआ -

وان كنت في ريبٍ مما نزلنا على عبدنا فأتوا بشفاءٍ من مثله -

86. छियासीवां निशान - एक बार मुझे दांत में बहुत पीड़ा हुई। बिल्कुल चैन न था। किसी व्यक्ति से मैंने पूछा कि इसका कोई उपचार है ? उसने कहा - علاج (कि दांत का उपचार दांत निकालना है) दांत निकालने से मेरा हृदय भयभीत हुआ। उस समय मुझे ऊँघ आ गई और मैं पृथ्वी पर व्याकुलता की स्थिति में बैठा हुआ था और चारपाई की पायंती पर अपना सर रख दिया और थोड़ी सी नींद आ गई। जब मैं जागा तो दर्द का नामोनिशान न था तथा मुँह पर यह इल्हाम जारी था :-

اذا مرضت فهو يشفی

अर्थात् जब तू रोगग्रस्त होता है तो वह तुझे रोगमुक्त करता है। इस पर खुदा का आभार।

87. सतासीवां निशान - यह भविष्यवाणी है कि मेरी उस शादी के बारे में जो देहली में हुई थी, खुदा तआला की ओर से मुझे यह इल्हाम हुआ था - الحمد لله الذي جعل لكم الصهر والنسب - अर्थात् उस खुदा की प्रशंसा है जिसने तुम्हें दामादी और वंश दोनों ओर से सम्मान दिया अर्थात् तुम्हारे वंश को भी सभ्य बनाया तथा तुम्हारी पत्नी भी सादात (सय्यदों) में से आएगी। यह इल्हाम शादी के लिए एक भविष्यवाणी थी जिस से मुझे यह चिन्ता हुई कि शादी के व्यय को मैं क्योंकर पूर्ण करूंगा। उस समय मेरे पास कुछ भी नहीं था तथा मैं सदैव के लिए इस भार को कैसे उठा सकूंगा। अतः मैंने खुदा के दरबार में दुआ की कि इन खर्चों को उठाने की मुझ में शक्ति नहीं। तब यह इल्हाम हुआ -

ہر چہ باید نو عروسی را ہمہ سماں کنم
و آنچه درکار شما باشد عطاء آں کنم

अर्थात् जो कुछ तुम्हें शादी के लिए आवश्यकता होगी, सम्पूर्ण व्यवस्था मैं स्वयं

करूंगा और जो कुछ तुम्हें समय-समय पर आवश्यकता होती रहेगी स्वयं देता रहूंगा।

अतः ऐसा ही हुआ। शादी के लिए मुझे जो रुपया चाहिए था उन आवश्यक खर्चों के लिए मुन्शी अब्दुल हक़ साहिब एकाउन्टेन्ट लाहौर ने मुझे पांच सौ रुपया बतौर क़र्ज़ दिया तथा एक अन्य सज्जन हकीम मुहम्मद शरीफ़ नामक निवासी कलानौर जो अमृतसर में यूनानी उपचार करते थे दो सौ या तीन सौ रुपया मुझे बतौर क़र्ज़ दिया। उस समय मुन्शी अब्दुल हक़ साहिब एकाउन्टेन्ट ने मुझ से कहा कि हिन्दुस्तान में शादी करना ऐसा है जैसा कि हाथी को अपने द्वार पर बांधना।

मैंने उन्हें उत्तर दिया कि इन खर्चों का ख़ुदा ने स्वयं वादा कर दिया है। अतः शादी करने के पश्चात् सफलताओं का क्रम प्रारंभ हो गया और या वह समय था कि आजीविका के विभिन्न माध्यमों के कारण पांच-सात लोगों का खर्च भी मुझ पर एक भार था और या अब वह समय आ गया कि औसत के हिसाब से तीन सौ लोग अपने परिवार सहित तथा इसके साथ अन्य कई निर्धन और भिक्षु प्रतिदिन इस लंगर खाना में भोजन करते हैं। यह भविष्यवाणी लाला शरमपत आर्य तथा मलावामल आर्य निवासी क़ादियान को भी समय से पूर्व सुनाई गई थी तथा शैख़ हामिद अली तथा अन्य परिचितों को इसकी सूचना दी गई थी तथा मुन्शी अब्दुल हक़ एकाउन्टेन्ट लाहौर यद्यपि इस समय विरोधी वर्ग में हैं परन्तु मैं आशा नहीं रखता कि वह इस सच्ची साक्ष्य का इन्कार करें। अल्लाह बहुत जानने वाला है।

88. अट्ठासीवां निशान - जब दिलीप सिंह के बारे में अख़बारों में बार-बार वर्णन किया गया था कि वह पंजाब में आएगा। तब मुझे दिखाया गया कि वह कदापि नहीं आएगा अपितु उसे रोका जाएगा। मैंने लगभग पांच सौ लोगों को इस भविष्यवाणी से अवगत किया था तथा एक विज्ञापन में भी जो दो पृष्ठों पर आधारित था संक्षिप्त तौर पर इस भविष्यवाणी को लिखा था। अतः अन्ततः ऐसा ही प्रकटन में आया।

89. नवासीवां निशान - मैंने सर सय्यद अहमद खां के बारे में भविष्यवाणी की थी कि अन्तिम आयु में उन्हें कुछ कष्टों का सामना होगा तथा उनकी आयु

के थोड़े दिन शेष हैं। यह लेख विज्ञापनों में प्रकाशित कर दिया गया था। अतः इसके पश्चात् एक दुष्ट हिन्दू द्वारा धन गबन करने के कारण अन्तिम आयु में उन्हें बहुत शोक और आघात उठाना पड़ा। तदोपरान्त थोड़े दिन ही जीवित रहे तथा इसी शोक ओर आघात से उनका निधन हो गया।

90. नब्बेवां निशान - एक बार डाक विभाग के कानून की अवज्ञा का मुकद्दमा मुझ पर चलाया गया जिसका दण्ड पांच सौ रुपया जुर्माना या छः माह का कारावास था। प्रत्यक्ष तौर पर बरी होने का कोई मार्ग दिखाई नहीं देता था। अतः दुआ के पश्चात् स्वप्न में खुदा तआला ने मुझ पर प्रकट किया कि वह मुकद्दमा समाप्त कर दिया जाएगा। इस मुकद्दमे का चलाने वाला अमृतसर का एक ईसाई वकील रलियाराम था। मैंने स्वप्न में यह भी देखा कि उसने मेरी ओर एक सांप भेजा है और मैंने उस सांप को मछली की भांति तल कर उसकी ओर वापस भेज दिया है। चूंकि वह वकील था। इसलिए मेरे मुकद्दमे का उदाहरण मानो उसके लिए काम आने वाला था तथा तली हुई मछली का काम देता था। अतः वह मुकद्दमा पहली पेशी में ही खारिज हो गया।

91. इकानवेवां निशान - बराहीन अहमदिया में जो आज से पच्चीस वर्ष पूर्व समस्त देशों में प्रकाशित हो चुकी है अर्थात् पंजाब और हिन्दुस्तान के प्रत्येक भाग में तथा अरब देशों, शाम, काबुल और बुखारा आदि। अतः समस्त इस्लामी देशों में पहुंचाई गई है। इसमें यह एक भविष्यवाणी है - *رب لا تذرنی فردًا وانت خیر الوارثین* - अर्थात् खुदा की वह्यी में मेरी ओर से यह दुआ थी कि हे मेरे खुदा ! मुझे अकेला मत छोड़ जैसा कि अब मैं अकेला हूं और तुझ से अच्छा कौन वारिस है अर्थात् यद्यपि मैं इस समय सन्तान भी रखता हूं, पिता भी और भाई भी किन्तु आध्यात्मिक तौर पर अभी अकेला ही हूं तथा तुझ से ऐसे लोग चाहता हूं जो आध्यात्मिक तौर पर मेरे वारिस हों। यह दुआ उस भावी बात की भविष्यवाणी थी कि खुदा तआला आध्यात्मिक संबंध रखने वालों की एक जमाअत मेरे साथ कर देगा जो मेरे हाथ पर तौबा करेंगे। अतः खुदा का आभार है कि वह भविष्यवाणी नितान्त स्पष्टता से

पूरी हुई। पंजाब और हिन्दुस्तान से हज़ारों सदाचारियों ने मेरे हाथ पर बैअत की है और इसी प्रकार काबुल देश से बहुत से लोग मेरी बैअत में सम्मिलित हुए हैं तथा मेरे लिए यह प्रक्रिया पर्याप्त है कि हज़ारों लोगों ने मेरे हाथ पर अपने भिन्न-भिन्न प्रकार के पापों से तौबा की है और हज़ारों लोगों में बैअत करने के पश्चात् मैंने ऐसा परिवर्तन पाया है कि जब तक ख़ुदा का हाथ किसी को शुद्ध न करे ऐसा शुद्ध कदापि नहीं हो सकता और मैं क्रसम खाकर कह सकता हूँ कि मेरे हज़ारों सच्चे एवं वफ़ादार मुरीद बैअत करने के पश्चात् ऐसा पवित्र परिवर्तन प्राप्त कर चुके हैं कि उनमें से एक-एक सदस्य एक-एक निशान के तौर पर है। यद्यपि यह उचित है कि उनके स्वभाव में पहले ही से एक तत्त्व हिदायत और कल्याण का गुप्त था, परन्तु वह पूर्ण स्पष्टता के साथ प्रकट नहीं हुआ जब तक उन्होंने बैअत नहीं की। अतः ख़ुदा की साक्ष्य से सिद्ध है कि पहले मैं अकेला था और मेरे साथ कोई जमाअत न थी और अब कोई विरोधी इस बात को गुप्त नहीं रख सकता कि अब हज़ारों लोग मेरे साथ हैं। अतः ख़ुदा की भविष्यवाणियां इस प्रकार की होती हैं जिनके साथ ख़ुदा का समर्थन और सहयोग होता है। मुझे इस बात में कौन झुठला सकता है कि जब ये भविष्यवाणी ख़ुदा तआला ने की और बराहीन अहमदिया में दर्ज होकर प्रकाशित की गई। उस समय जैसा कि ख़ुदा ने कहा - मैं अकेला था और ख़ुदा के अतिरिक्त मेरे साथ कोई न था। मैं अपने स्वजनों की दृष्टि में तिरस्कृत था क्योंकि उनके मार्ग और थे तथा मेरा मार्ग और था तथा क़ादियान के समस्त हिन्दू भी कट्टर विरोध के बावजूद यह साक्ष्य देने के लिए विवश होंगे कि मैं वास्तव में उस युग में एक अज्ञात अवस्था में समय व्यतीत करता था और इस बात का कोई लक्षण मौजूद न था कि इतनी श्रद्धा और प्रेम और पूर्ण प्रयत्न का संबंध रखने वाले मेरे साथ सम्मिलित हो जाएंगे। अब बताइए कि क्या यह भविष्यवाणी चमत्कार नहीं है ? क्या मनुष्य इस पर समर्थ है ? यदि समर्थ है तो वर्तमान या भूतकाल में से इसका कोई उदाहरण प्रस्तुत करो -

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا

النَّاسُ وَالْجَارَةُ ۖ أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ۝^①

92. बानवेवां निशान - वह मुबाहला है जो अब्दुल हक गज़नवी के साथ अमृतसर में किया गया था जिसको आज ग्यारह वर्ष हो गए हैं वह भी खुदा तआला का एक निशान है। अब्दुल हक ने मुबाहले के लिए बहुत आग्रह किया था और मुझे उसके साथ मुबाहला करने में संकोच था। क्योंकि जिस व्यक्ति का शिष्य होने की ओर वह स्वयं को सम्बद्ध करता था वह मेरे विचार में एक सदाचारी व्यक्ति था अर्थात् स्वर्गीय मौलवी अब्दुल्लाह साहिब गज़नवी। यदि वह मेरे युग को पाता तो मैं विश्वास करता हूँ कि वह मुझे मेरे दावे के साथ स्वीकार करता तथा अस्वीकार न करता। परन्तु वह सदाचारी मनुष्य मेरी दा'वत से पूर्व ही मृत्यु पा गया तथा जो कुछ आस्था में दोष था वह पकड़योग्य नहीं क्योंकि किसी बात का चिन्तन-मनन द्वारा निष्कर्ष निकालने की गलती क्षमा की श्रेणी में आती है और पकड़ या हिसाब-किताब का कार्य खुदा के सन्देश या निमंत्रण पहुंचने तथा समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण होने के पश्चात् आरंभ होता है किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि वह संयमी और सत्यनिष्ठ था तथा संसार-त्याग की भावना का उस पर प्रभुत्व था तथा सदाचारी लोगों में से था। मैंने उसकी मृत्यु के पश्चात् एक बार उसे स्वप्न में देखा तथा उसे कहा कि मैंने स्वप्न में देखा है कि मेरे हाथ में एक तलवार है जिसकी मूठ मेरे हाथ में है और नोंक आकाश में है और मैं उस तलवार को दाएं-बाएं चलाता हूँ और प्रत्येक वार से हजारों विरोधी मरते हैं। इसकी ता'बीर क्या है ? तब उन्होंने कहा कि यह समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण होने की तलवार है ऐसा तर्क जो पृथ्वी से आकाश तक पहुंचेगा तथा उसे कोई रोक नहीं सकेगा। यह जो देखा कि कभी दाहिनी ओर तलवार चलाई जाती है और कभी बाईं ओर। इससे अभिप्राय दोनों प्रकार के तर्क हैं जो आप को दिए जाएंगे अर्थात् एक बुद्धि और नक्कल के तर्क दूसरे खुदा तआला के ताज्जा निशानों के तर्क। अतः इन दोनों मार्गों से संसार पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण होगा और विरोधी लोग इन तर्कों के समक्ष अन्ततः खामोश हो जाएंगे मानो मर जाएंगे। पुनः कहा

कि जब मैं संसार में था तो मैं आशान्वित था कि ऐसा कोई मनुष्य पैदा होगा। ये शब्द हैं जो उनके मुख से निकले। झूठों पर खुदा की ला'नत।

जब वह जीवित थे एक बार खैरदी के स्थान पर दूसरी बार अमृतसर में उनसे मेरी भेंट हुई। मैंने उन्हें कहा कि आप मुल्हम हैं, हमारा एक उद्देश्य है इसके लिए आप दुआ करें परन्तु मैं आपको नहीं बताऊंगा कि क्या उद्देश्य है। उन्होंने कहा -

درپوشیده داشتن برکت است و من انشاء الله دعا
خواهم کرد و الهام امر اختیاری نیست۔

अनुवाद :- छिपे रहने में ही बरकत है और इन्शाअल्लाह मैं प्रार्थना करूंगा। इल्हाम वैकल्पिक नहीं है।

और मेरा उद्देश्य यह था कि मुहम्मद^स का धर्म दिन-प्रतिदिन पतन की अवस्था में है खुदा उसका सहायक हो, तत्पश्चात् मैं क्रादियान चला आया। कुछ दिनों के पश्चात् डाक द्वारा उनका पत्र मुझे मिला जिसमें यह लिखा था कि -

”ایں عاجز برائے شادعا کرد ہ بود القاشد۔ وَاَنْصُرْنَا عَلَی الْقَوْمِ الْكَافِرِیْنَ۔ فقیر اکم
اتفاق ے افتد کہ بدیں جلدی القاشود ایں از اخلاص شامے بینم۔“

अनुवाद :- इस विनीत ने आपके लिए प्रार्थना की तो खुदा तआला की ओर से इल्का (इल्हाम) हुआ وَاَنْصُرْنَا عَلَی الْقَوْمِ الْكَافِرِیْنَ फ़कीर को बहुत कम यह अवसर प्राप्त होता है कि इतना शीघ्र इल्का हो। यह आपकी विनम्रता के कारण प्रतीत होता है।

अतः अब्दुल हक ग़ज़नवी के अत्यन्त आग्रह के पश्चात् मैंने उसकी ओर लिखा कि मैं किसी मुसलमान कलिमा पढ़ने वाले से मुबाहला करना नहीं चाहता। उसने उत्तर दिया कि जब हम ने तुम पर कुफ़्र का फ़त्वा दे दिया तो तुम्हारे निकट हम काफ़िर हो गए तो फिर मुबाहले में क्या आपत्ति। अतः उसके बहुत आग्रह के पश्चात् मैं मुबाहले के लिए अमृतसर में आया और चूंकि मुझे स्वर्गीय मौलवी अब्दुल्लाह साहिब से हार्दिक प्रेम था और मैं उनको अपने इस पद के लिए बतौर इरहास (पथप्रदर्शक) के समझता था जैसा कि यह्या ईसा के पहले प्रकट हुआ।

इसलिए मेरे हृदय ने अब्दुल हक के लिए किसी बददुआ को प्रिय नहीं समझा अपितु मेरी दृष्टि में वह दयनीय था क्योंकि वह नहीं जानता था कि किसे बुरा कहता है। वह अपने विचार में इस्लाम के लिए एक स्वाभिमान प्रदर्शित करता था और नहीं जानता था कि इस्लाम के समर्थन में खुदा का क्या इरादा है। बहरहाल मुबाहले में उसने जो चाहा कहा परन्तु मेरी दुआ का अभीष्ट मेरी ही आत्मा थी और मैं खुदा के दरबार में यही विनती कर रहा था कि यदि मैं झूठा हूँ तो झूठों के समान तबाह किया जाऊँ और यदि मैं सच्चा हूँ तो खुदा मेरी सहायता करे। इस बात पर ग्यारह वर्ष गुज़र गए जब यह मुबाहला हुआ था, तत्पश्चात् खुदा ने जिस प्रकार मेरी सहायता की मैं इस संक्षिप्त पुस्तक में उसका वर्णन नहीं कर सकता। यह बात किसी पर गुप्त नहीं कि जब मुबाहला किया गया तो मेरे साथ केवल कुछ लोग थे जो उंगलियों पर गिने जा सकते थे और अब तीन लाख से भी कुछ अधिक हैं जो मेरी बैअत कर चुके हैं। आर्थिक संकट इतने थे कि बीस रुपए मासिक भी नहीं आते थे और कर्ज़ा लेना पड़ता था और अब मेरी जमाअत की समस्त शाखाओं से लगभग तीन हजार रुपए मासिक आय है तथा खुदा ने इसके पश्चात् बड़े-बड़े शक्तिशाली निशान दिखाए। जिसने मुकाबला किया अन्ततः वह तबाह हुआ। जैसा कि उन निशानों के देखने से जो मात्र नमूने के तौर पर यहां लिखे गए हैं। स्पष्ट होगा कि खुदा ने मेरी कैसी-कैसी सहायता की। ऐसे ही हजारों निशान खुदा की सहायता से प्रकट हो चुके हैं जो उनमें से केवल बतौर नमूना यहां उल्लेख किए गए परन्तु किसी व्यक्ति में लज्जा और न्याय हो तो उसके लिए ये निशान मेरी सच्चाई के लिए पर्याप्त हैं।

यह तर्क प्रस्तुत करना कि आथम निर्धारित समय सीमा के अन्दर नहीं मरा तथा यह कि ईसाइयों ने बहुत गालियां दीं और बहुत डींगें मारीं। अतः समझना चाहिए कि क्या ईसाई आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियां नहीं देते, उपहास नहीं करते और क्या आप^स के अपमान में हजारों अपितु लाखों पुस्तकें अब तक नहीं लिख चुके तथा उपहास एवं व्यंग को चरम सीमा तक नहीं पहुंचा

दिया। तो क्या इन दुर्भाग्यशाली लोगों के इन कृत्यों से आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत संदिग्ध हो गई या आप की इससे कुछ बदनामी हुई ? अल्लाह तआला का कथन है -

يَحْزَنُ عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ^①

अर्थात् कोई ऐसा रसूल नहीं आया जिस से असभ्य लोगों ने उपहास नहीं किया। देखना तो यह चाहिए कि क्या उपहास करने में वे सत्य पर थे या मात्र पैशाचिक वृत्ति और चपलता थी। यह बात प्रमाणित है कि आथम भविष्यवाणी के अनुसार कुछ ही दिनों तक जीवित रहा और फिर भविष्यवाणी के अनुसार पन्द्रह माह के अन्दर मर गया। उसकी मृत्यु में विलम्ब उसकी पहली बात से तौब करने के कारण था। इस बात को सभी लोग जानते हैं कि आथम ने लगभग सत्तर लोगों की उपस्थिति में दज्जाल कहने से रुजू किया। इसलिए खुदा ने कुछ माह तक उसकी मृत्यु में विलम्ब कर दिया और फिर थोड़े दिनों के पश्चात् उसे इस संसार से उठा भी लिया। क्योंकि दूसरी भविष्यवाणी में यह भी था कि यद्यपि विलम्ब किया गया, परन्तु फिर भी आथम की पन्द्रह महीने के अन्दर मृत्यु हो जाएगी। अतः ग्यारह वर्ष व्यतीत हो गए कि वह मर गया और मैं अब तक जीवित हूँ। क्या आथम ने लगभग सत्तर लोगों के सम्मुख दज्जाल कहने से नहीं रुका ? फिर आवश्यक नहीं था कि उसे कुछ छूट दी जाती ? मैं यह सोचकर आश्चर्य में डूब जाता हूँ कि इस स्पष्ट और साफ भविष्यवाणी का क्यों इन्कार करते हैं। अन्ततः कहना पड़ता है कि जिन हृदयों पर पर्दे हैं वे सीधी बात को भी नहीं समझते तथा मुसलमान कहलाकर फिर ईसाइयों को सहायता पहुँचाते हैं और झूठों पर खुदा की ला'नत के दण्ड के वादे से नहीं डरते। कोई मनुष्य झूठ एवं झूठ गढ़ने से सफल नहीं हो सकता। झूठ बोलने वाले का अंजाम अपमान और अपयश है और अन्ततः सत्य की विजय है।

अब्दुल हक़ ग़जनवी के साथ मुबाहला करने के पश्चात् खुदा के समर्थन और

सहयोग के जितने इल्हाम मुझे हुए और जिस प्रकार श्रेष्ठता एवं प्रताप से वे पूर्ण हुए वह सारे हालात मेरी पुस्तकों में भरे पड़े हैं जो मुबाहले के उपरान्त लिखी गई हैं, जो चाहे देख ले, मुझे बार-बार पुनरावृत्ति करने की आवश्यकता नहीं। मैं केवल संक्षिप्त तौर पर कहता हूँ कि मैं केवल मुबाहला करके अपने मकान पर आया, उसी समय खुदा के समर्थन और सहयोग के इल्हाम आरंभ हो गए^① तथा खुदा ने मुझे निरन्तर शुभ संदेश दिए और मुझे सम्बोधित करके कहा कि मैं संसार में तुझे एक बड़ा सम्मान दूँगा, तुझे एक बड़ी जमाअत बनाऊँगा और तेरे लिए बड़े-बड़े चमत्कार दिखाऊँगा और तुझ पर समस्त बरकतों का द्वार खोलूँगा। अतः इन भविष्यवाणियों के अनुसार कई लाख लोग मेरी जमाअत में सम्मिलित हुए, जो इस मार्ग में अपने प्राण न्यौछावर करते हैं तथा उस समय से आज तक दो लाख से भी अधिक रुपया आया तथा चारों ओर से इतने उपहार आए कि यदि वे सब एकत्र किए जाते तो उनसे कई कमरे भर जाते। विरोधी लोगों ने मेरे विरुद्ध मुकद्दमें खड़े किए और मुझे तबाह करना चाहा किन्तु सब के मुख काले हुए तथा प्रत्येक मुकद्दमा में अन्ततः मेरा सम्मान और सफलता और उनकी निराशा और विफलता थी। मुबाहले के पश्चात् मेरे यहां तीन लड़कों ने भी जन्म लिया तथा खुदा ने मुझे सम्मानपूर्वक इसी संसार में ख्याति प्रदान की कि हज़ारों प्रतिष्ठित लोग मेरी जमाअत में सम्मिलित हुए। निश्चय ही स्मरण रखो कि प्रत्येक व्यक्ति जिसे इस बात का ज्ञान होगा कि मुबाहले से पूर्व मेरा सम्मान क्या था और मेरी जमाअत कितनी थी और मेरी आय क्या थी तथा मेरी कितनी सन्तान थी। तत्पश्चात् कितनी उन्नति हुई। चाहे वह कैसा ही शत्रु हो उसे स्वीकार करना पड़ेगा कि मुबाहले के पश्चात् खुदा ने बरकत पर बरकत देकर मेरी सच्चाई की साक्ष्य दी। अब अब्दुल हक़ से पूछना चाहिए कि उसे मुबाहले के पश्चात् कौन सी बरकत मिली। मैं सच-सच कहता हूँ कि यह एक खुला-खुला चमत्कार है तथा निकट है कि उसे

① यदि किसी को सन्देह हो तो मुबाहले के पश्चात् जो इल्हाम मैंने प्रकाशित किए उनको मेरी पुस्तकों और अखबारों में देख ले। इसी से।

अन्धा भी देख ले किन्तु खेद उन लोगों पर कि जो रात को देखते हैं और दिन को अन्धे हो जाते हैं। मुबाहले के दिन से आज तक मुझ पर कृपा-वृष्टि हो रही है और जैसा कि खुदा ने मुझे सम्बोधित करके कहा था कि देख मैं तेरे लिए आकाश से बरसाऊँगा और पृथ्वी से निकालूँगा। अतः उसने ऐसा ही मेरे साथ किया और इतनी ने 'मैं' दीं और इतने चमत्कार दिखाए कि मैं उनकी गणना नहीं कर सकता और वह सम्मान दिया कि कई लाख लोग मेरे पैरों पर गिर रहे हैं।

93. तिरानवेवां निशान - अपने विरासत के मामलों से संबंधित एक भविष्यवाणी है और वह यह है कि कुछ अधिकार रहित पैतृक भागीदारों ने जो क्रादियान की सम्पत्ति में हमारे भागीदार थे अधिकार प्राप्ति के लिए गुरदासपुर की अदालत में दावा किया। तब मैंने दुआ की कि वे अपने मुकद्दमे में असफल रहें। इसके उत्तर में खुदा तआला ने कहा -

أَجِيبُ كُلَّ دُعَائِكَ إِلَّا فِي شُرَكَائِكَ

अर्थात् मैं तेरी समस्त दुआएं स्वीकार करूँगा परन्तु भागीदारों के बारे में नहीं।^① तब मुझे ज्ञात हुआ कि इसी अदालत में अथवा किसी अन्य अदालत में वादी सफल होंगे। यह इल्हाम इतने जोर से हुआ था कि मैंने समझा कि कदाचित् मुहल्ले के निकट के लोगों तक आवाज़ पहुँची होगी और मैं खुदा की इस इच्छा से अवगत होकर घर में गया, उस समय मेरे स्वर्गीय भाई मिर्जा गुलाम क्रादिर जीवित थे। मैंने घर के समस्त लोगों के समक्ष सारा वृत्तान्त कह दिया। उन्होंने उत्तर दिया कि अब तक हम मुकद्दमः में बहुत कुछ व्यय कर चुके हैं यदि पहले से कहते तो हम मुकद्दमा न करते, किन्तु उनका यह कहना मात्र सरसरी तौर पर था तथा उन्हें अपनी सफलता और विजय पर विश्वास था। अतः प्रथम अदालत में तो उनको

① उर्दू में भी इल्हाम हुआ था जो यही वाक्य है। इस इल्हाम में खुदा ने अपने इस असहाय बन्दे को जितना सम्मान दिया है वह स्पष्ट है। ऐसा वाक्य प्रेम के अवसर पर प्रयोग होता है तथा विशेष व्यक्ति के लिए प्रयोग होता है प्रत्येक के लिए प्रयोग नहीं होता। इसी से।

सफलता मिल गई परन्तु चीफ़ कोर्ट में वादी सफल हो गए और समस्त अदालतों का खर्च हम पर डाल दिया गया। इसके अतिरिक्त वे रुपए जो मुकद्दमा की पैरवी के लिए स्वयं क़र्ज लिया था वह भी देना पड़ा। इस प्रकार से कई हजार रुपयों की हानि हुई तथा मेरे भाई को इस से बहुत कष्ट पहुँचा क्योंकि मैंने उन्हें कई बार कहा था कि भागीदारों ने अपना भाग मिर्जा आ'ज़म बेग लाहौरी के पास विक्रय किया है आपका पड़ोसी होने का अधिकार है रुपया देकर ले लो, किन्तु उन्होंने इस बात को स्वीकार नहीं किया और समय हाथ से जाता रहा। इसलिए इस बात पर पश्चाताप करते रहे कि हमने क्यों खुदा के इल्हाम पर अमल नहीं किया। यह घटना इतनी प्रसिद्ध है कि लगभग पचास लोग इस घटना को जानते हैं क्योंकि यह इल्हाम बहुत से लोगों को सुनाया गया था, जिनमें से कुछ हिन्दू भी हैं।

94. चौरानवे वां निशान - एक बार मैं लुधियाना से क़ादियान के लिए रेलगाड़ी में चला आ रहा था तथा मेरे साथ शेख़ हामिद अली मेरा सेवक तथा कुछ अन्य लोग भी थे। जब हम कुछ दूरी तय कर चुके तो थोड़े सी ऊँघ हो कर मुझे इल्हाम हुआ -

نصف ترانصف عماليق را

और साथ ही हृदय में डाला गया कि यह विरासत का भाग है जो किसी वारिस की मृत्यु से हमें मिलेगा तथा हृदय में डाला गया कि अमालीक (عماليق) से अभिप्राय मेरे चचेरे भाई हैं जो विरोध भी रखते थे और क्रोध के भी लम्बे थे, जैसे खुदा ने मुझे मूसा ठहराया और उन्हें मूसा के विरोधी। जब मैं क़ादियान में पहुँचा तो ज्ञात हुआ कि हमारे भागीदारों में से इमाम बीबी नामक एक स्त्री अतिसार से रोगग्रस्त है। अतः उसका कुछ दिनों के पश्चात् निधन हो गया तथा हम दोनों पक्षों के अतिरिक्त उसका कोई वारिस नहीं था। इसलिए उसकी भूमि में से आधी तो हमारे भाग में आई और आधी भूमि हमारे चचेरे भाइयों के भाग में गई। इस प्रकार से वह भविष्यवाणी पूर्ण हो गई जिसके पूर्ण होने तथा वर्णन करने पर एक जमाअत साक्षी है तथा शेख़ हामिद अली भी जो जीवित मौजूद है।

95. पचानवे वां निशान - एक बार मुझे लुधियाना से पटियाला जाने का संयोग हुआ और मेरे साथ वही शेख हामिद अली तथा दूसरा व्यक्ति फ़तह खान नामक निवासी एक गांव टांडा से सम्बद्ध ज़िला होशियारपुर तथा तीसरा अब्दुरहीम नामक निवासी अम्बाला छावनी था तथा कुछ और भी थे जो याद नहीं रहे। जिस सुबह हमने रेल पर सवार होना था मुझे इल्हाम द्वारा बताया गया था कि इस यात्रा में कुछ हानि होगी तथा कुछ कष्ट भी। मैंने अपने उन समस्त सहयात्रियों को कहा कि नमाज़ पढ़ कर दुआ कर लो क्योंकि मुझे यह इल्हाम हुआ है। अतः सबने दुआ की और फिर हम रेल पर सवार हो कर हर प्रकार से सकुशल पटियाला पहुंच गए। जब हम स्टेशन पर पहुँचे तो रियासत के प्रधानमंत्री का खलीफ़ा मुहम्मद हसन अपने रियासत के समस्त कर्मचारियों सहित जो संभवतः अठारह गाड़ियों पर सवार होंगे स्वागत के लिए उपस्थित थे। जब आगे बढ़े तो लगभग सात हजार के लगभग शहर निवासी सामान्य एवं विशेष भेंट करने के लिए मौजूद थे। इस सीमा तक तो सब कुछ ठीक रहा। न कोई हानि हुई और न कोई कष्ट, किन्तु जब वापस आने का इरादा हुआ तो वही मंत्री जी अपने भाई सय्यद मुहम्मद हुसैन साहिब सहित जो कदाचित इन दिनों काउंसिल के सदस्य हैं मुझे रेल पर सवार करने के लिए स्टेशन पर मेरे साथ गए तथा उनके साथ स्वर्गीय नवाब अली मुहम्मद खान साहिब झज्जर वाले भी थे। जब हम स्टेशन पर पहुँचे तो रेल के चलने में कुछ देर थी। मैंने इरादा किया कि अस्त्र की नमाज़ यहीं पढ़ लूँ। इसलिए मैंने चोगा उतार कर वुजू करना चाहा और चोगा मंत्री जी के एक कर्मचारी को पकड़ा दिया और फिर चोगा पहन कर नमाज़ पढ़ ली। उस चोगे में मार्ग के लिए कुछ रुपए थे और उसी में रेल का किराया भी देना था। जब टिकट लेने का समय आया तो मैंने जेब में हाथ डाला ताकि टिकट के लिए रुपए दूँ तो मालूम हुआ कि वह रुमाल जिसमें रुपए थे वह खो गया। मालूम होता है कि चोगा उतारते समय कहीं गिर पड़ा। परन्तु मुझे खेद के स्थान पर प्रसन्नता हुई कि भविष्यवाणी का एक भाग पूरा हो गया। फिर हम टिकट का प्रबंध करके रेल पर सवार हो गए।

जब दोराहा स्टेशन पहुँचे तो कदाचित उस समय रात्रि के दस बजे का समय था और वहां रेल मात्र पांच मिनट के लिए ठहरती थी मेरे एक सहयात्री शेख अब्दुरहीम ने एक अंग्रेज से पूछा कि क्या लुधियाना आ गया? उसने चपलता से या अपनी किसी स्वार्थपरता से उत्तर दिया कि हां आ गया। तब हम अपने समस्त सामान के साथ शीघ्रता से उतर आए। इतने में रेल रवाना हो गई। उतरने के साथ ही एक निर्जन स्टेशन देख कर पता लग गया कि हमें धोखा दिया गया। वह ऐसा निर्जन स्टेशन था कि बैठने के लिए चारपाई भी नहीं मिलती थी और न खाने का प्रबन्ध हो सकता था किन्तु इस विचार से कि इस कष्ट के आने से भविष्यवाणी का दूसरा भाग भी पूरा हो गया। मुझे इतनी प्रसन्नता हुई कि जैसे इस स्थान में किसी ने हमें भोजन पर बुलाया है जैसे हर प्रकार का स्वादिष्ट भोजन हमें प्राप्त हो गया। तत्पश्चात् स्टेशन मास्टर अपने कमरे से निकला। उसने खेद जताया कि किसी ने व्यर्थ में शरारत से आपको कष्ट पहुँचाया और कहा कि आधी रात को एक मालगाड़ी आएगी, यदि गुंजायश हुई तो मैं उसमें आप को बैठा दूँगा। तब हम आधी रात को सवार होकर लुधियाना पहुँच गए। जैसे यह यात्रा उसी भविष्यवाणी के लिए थी।

96. छियानवे वां निशान - एक बार स्वर्गीय नवाब अली मुहम्मद खान रईस लुधियाना ने मुझे पत्र लिखा कि मेरे कुछ आजीविका संबंधी मामले बन्द हो गए हैं आप दुआ करें ताकि वे यथावत् हो जाएं। जब मैंने दुआ की तो मुझे इल्हाम हुआ कि खुल जाएंगे। मैंने पत्र द्वारा उन्हें यह सूचना दे दी। अतः केवल दो चार दिनों के पश्चात् वे आजीविका संबंधी मामले खुल गए और उन्हें बड़ी दृढ़ आस्था हो गई। फिर एक बार उन्होंने अपने कुछ गुप्त उद्देश्यों के संबंध में मेरी ओर एक पत्र प्रेषित किया तथा जिस पल उन्होंने वह पत्र डाक के सुपुर्द किया उसी पल मुझे इल्हाम हुआ कि इस विषय का पत्र उनकी ओर से आने वाला है। मैंने अविलम्ब उन्हें यह पत्र लिखा कि इस विषय का पत्र आप प्रेषित करेंगे। दूसरे दिन वह पत्र आ गया। जब मेरा पत्र उन्हें मिला तो वह आश्चर्यचकित रह गए कि यह

परोक्ष की सूचना किस प्रकार मिल गई क्योंकि मेरे इस रहस्य की सूचना किसी को न थी। उनका विश्वास इतना बढ़ा कि वह प्रेम और निष्ठा में लीन हो गए तथा उन्होंने एक छोटी सी संस्मरण नोट बुक में वे दोनों उपरोक्त निशान लिख दिए तथा हमेशा उन्हें अपने पास रखते थे। जब मैं पटियाला गया और जैसा ऊपर उल्लेख किया गया है जब मंत्री सय्यद मुहम्मद हसन साहिब की भेंट हुई तो संयोग से वार्तालाप के समय मंत्री जी और नवाब साहिब की मेरे अद्भुत एवं विलक्षण चमत्कारों के सम्बन्ध में चर्चा हुई तो स्वर्गीय नवाब साहिब ने एक छोटी सी नोट बुक अपनी जेब से निकाल कर मंत्री जी के समक्ष प्रस्तुत कर दी और कहा कि मेरे ईमान और श्रद्धा का कारण तो ये दो भविष्यवाणियाँ हैं जो इस नोट बुक में लिखी हैं। कुछ समय के पश्चात् उनकी मृत्यु से कुछ दिन पूर्व जब मैं उनकी बीमारी का हाल पूछने के लिए लुधियाना में उनके मकान पर गया तो वह बवासीर के रोग से बहुत दुर्बल हो चुके थे तथा रक्त बहुत आ रहा था। इसी अवस्था में वह उठ बैठे और अपने अन्दर के कमरे में चले गए और वही छोटी नोट बुक ले आए और कहा कि यह मैंने बतौर प्राण रक्षा कवच के तौर पर रखी है तथा इसको देखने से मैं सन्तोष पाता हूँ तथा वे स्थान दिखाए जहाँ दोनों भविष्यवाणियाँ लिखी हुई थीं। फिर जब अर्ध रात्रि के लगभग या कुछ अधिक गुज़री तो उनका देहावसान हो गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। मैं विश्वास रखता हूँ कि वह नोट बुक अब तक उनके पुस्तकालय में होगी।

97. सतानवे वां निशान - यह एक भविष्यवाणी है जो अखबार 'अलहकम' और 'अलबद्र' में प्रकाशित हो चुकी है कि -

تخرج الصدور إلى القُبُور

इस के अर्थों का बोध खुदा तआला की ओर से यह हुआ था कि पंजाब के सदर नशीन मौलवी जो अपने-अपने स्थान पर मुफ्ती समझे जाते हैं जो अधीनस्थ मौलवियों के गुरु और शैख हैं वे इस इल्हाम के पश्चात् कब्रों की ओर स्थानांतरित होंगे। अतः इस के पश्चात् समस्त मौलवियों के धर्माचार्य मौलवी नज़ीर हुसैन

देहलवी इस संसार से कूच कर गए। वही मेरे बारे में सर्वप्रथम फ़त्वा देने वाले थे जिन्होंने मेरे कुफ़्र का फ़त्वा दिया था और वही मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी के गुरु थे। उन्होंने मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी के फ़त्वा माँगने पर ये शब्द मेरे बारे में लिखे थे कि ऐसा व्यक्ति पथभ्रष्ट, पथभ्रष्ट करने वाला तथा इस्लाम से बाहर है तथा ऐसे लोगों को मुसलमानों की क़ब्रों में दफ़न नहीं करना चाहिए। इस मौलवी ने ये फ़त्वे देकर समस्त पंजाब में अग्नि भड़का दी थी और लोग इतने भयभीत हो गए थे कि हम से हाथ मिलाना भी अप्रिय समझते थे कि कदाचित् इतने संबंध से भी हम काफ़िर हो जाएंगे। फिर मौलवी गुलाम दस्तगीर क़सूरी वह बुजुर्ग थे जिन्होंने मेरे कुफ़्र के लिए मक्का से कुफ़्र के फ़त्वे मंगाए थे। वह भी अपने एक पक्षीय मुबाहले के पश्चात् मृत्यु को प्राप्त हो गए। खेद कि मक्का वालों को उनकी इस मृत्यु की सूचना नहीं हुई ताकि अपने फ़त्वे वापस लेते। फिर लुधियाना के मुफ़्ती मौलवी मुहम्मद, मौलवी अब्दुल्लाह, मौलवी अब्दुल अज़ीज़ जिन्होंने कई बार मुबाहले के रूप में “ला'नतुल्लाहे अललकाज़िबीन” कहा था। वे भी इस इल्हाम के पश्चात् चल बसे। फिर अमृतसर के मुफ़्ती रुसुल बाबा थे वह भी कूच कर गए। इसी प्रकार बहुत से पंजाब के मौलवी तथा कुछ हिन्दुस्तान के मौलवी इस इल्हाम के पश्चात् इस संसार से चल बसे। यदि यहां इन सब की सूची का उल्लेख किया जाए तो वह भी एक पुस्तक बन जाएगी। यहाँ जितना उल्लेख किया गया है वह भविष्यवाणी की सच्चाई प्रकट करने के लिए पर्याप्त है। यदि कोई इतने पर तृप्त न हों तो हम एक लम्बी सूची दे सकते हैं।

98. अट्ठानवे वां निशान - कुछ वर्ष हुए हैं कि सेठ अब्दुर्रहमान साहिब व्यापारी मद्रास जो जमाअत के प्रथम श्रेणी के निष्कपट व्यक्ति हैं क़ादियान में आए थे। उनके व्यापारिक मामलों में कुछ फ़साद और संकट आ गया था। उन्होंने दुआ के लिए दरख्वास्त की तब यह इल्हाम हुआ जो निम्नलिखित है -

क़ादिर है वह बारग़ह टूटा काम बनावे
बना बनाया तोड़ दे कोई उसका भेद न पावे।

इस इल्हामी इबारत का अर्थ यह था कि खुदा तआला टूटा हुआ काम बना देगा, किन्तु कुछ समयोपरान्त बना बनाया तोड़ देगा। अतः यह इल्हाम क़ादियान में ही सेठ साहिब को सुनाया गया तथा थोड़े दिन ही गुज़रे थे कि खुदा तआला ने उनके व्यापारिक मामलों में चमक-दमक पैदा कर दी तथा परोक्ष से ऐसे साधन उत्पन्न हुए कि आर्थिक सफलताएं आरंभ हो गईं फिर कुछ समयोपरान्त वह बना बनाया काम टूट गया।

99. नित्यानवे वां निशान - एक बार फ़ज़्र के समय इल्हाम हुआ कि आज हाजी अरबाब मुहम्मद लश्कर खान के निकटस्थ का रुपया आता है। अतः मैंने दो आर्यों शरमपत और मलावामल निवासी क़ादियान को प्रातः अर्थात् डाक आने से बहुत पहले यह भविष्यवाणी बता दी, परन्तु इन दोनों आर्यों ने धार्मिक विरोध के कारण इस बात पर आग्रह किया कि हम तब मानेंगे कि जब हम में से कोई डाकखाने जाए। संयोग से डाकखाने का सब पोस्ट मास्टर भी हिन्दू ही था। मैंने उनके अनुरोध को स्वीकार कर लिया और जब डाक आने का समय हुआ तो उन दोनों में से मलावामल आर्य डाक लेने के लिए गया और एक पत्र लाया जिसमें लिखा था कि सरवर खान ने 10 रुपए भेजे हैं। अब यह नया विवाद सामने आया कि सरवर खान कौन है, क्या वह मुहम्मद लश्कर खान का कोई निकटस्थ है या नहीं तथा आर्यों का अधिकार था कि इसका निर्णय किया जाए ताकि मूल वास्तविकता ज्ञात हो। तब मुन्शी इलाही बख़्श एकाउंटेंट लेखक “असा-ए-मूसा” की ओर जो उस समय हूती मर्दान में थे और अभी विरोधी नहीं थे पत्र लिखा गया कि यहां यह विवाद है तथा ज्ञात करने योग्य बात यह है कि सरवर खान का मुहम्मद लश्कर खान से कुछ निकट संबंध है अथवा नहीं। कुछ दिनों के पश्चात् मुन्शी इलाही बख़्श साहिब का हूती मर्दान से उत्तर आया, जिसमें लिखा था कि सरवर खान अरबाब लश्कर खान का बेटा है। तब दोनों आर्य निरुत्तर रह गए। अब देखिए कि यह इस प्रकार का परोक्ष-ज्ञान है कि बुद्धि स्वीकार नहीं कर सकती कि खुदा के अतिरिक्त कोई इस पर सामर्थ्यवान हो सके। इस भविष्यवाणी में दोनों

ओर विरोधियों की साक्ष्य है अर्थात् एक ओर तो दो आर्य हैं जिन के बारे में मेरा कहना है कि उन्हें यह भविष्यवाणी मैंने सुनाई थी तथा उनमें से एक पत्र लाने के लिए डाकखाने गया था और दूसरी ओर मुन्शी इलाही बख्श साहिब एकाउन्टेण्ट हैं जो इन दिनों लाहौर में हैं जिन्होंने मेरे विरोध में अपनी पुस्तक “असा-ए-मूसा” प्रकाशित की और मेरे बारे में जो चाहा लिखा। हां मैं इतना कहता हूं कि इस भविष्यवाणी की पुष्टि के लिए इन दोनों ओर के साक्षियों से क्रसम लेकर पूछना चाहिए न मात्र साधारण तौर पर कहने से क्योंकि मलावामल तथा शरमपत वे धार्मिक पक्षपात रखने वाले आर्य हैं जिन्होंने मेरे विरोध में विज्ञापन दिए और मुन्शी इलाही बख्श साहिब हैं जिन्होंने मेरे विरोध में “असा-ए-मूसा” पुस्तक लिख कर बहुत से लोगों को धोखा दिया है। अतः शपथ के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं तथा यह भविष्यवाणी बहुत से दूसरे लोगों को भी मालूम है और यह भी मालूम है कि मुन्शी साहिब की सेवा में पत्र भेजा गया था, उनका उपरोक्त उत्तर आया था। इसलिए किसी प्रकार संभव नहीं कि हर दो आर्य इस भविष्यवाणी से इन्कार कर दें या मुन्शी इलाही बख्श साहिब पत्र भेजने से इन्कार करें और यदि इन्कार भी करें तो इस बात का तो अब भी निर्णय हो सकता है कि सरवर खान का अरबाब लशकर खान से कोई संबंध है या नहीं।

100. सौवां निशान - बराहीन अहमदिया की वह भविष्यवाणी है जो उसके पृष्ठ 241 (हाशिए) में लिखी है और भविष्यवाणी की इबारत यह है -

لَا تَيْئَسْ مِنْ رُوحِ اللَّهِ - إِلَّا أَنْ رُوحَ اللَّهِ قَرِيبٌ إِلَّا أَنْ نَصَرَ اللَّهُ قَرِيبَ - يَأْتِيكَ
مِنْ كُلِّ فِجٍّ عَمِيقٍ - يَأْتُونَ مِنْ كُلِّ فِجٍّ عَمِيقٍ - يَنْصُرُكَ اللَّهُ مِنْ عِنْدِهِ - يَنْصُرُكَ
رَحَالُ نَوْحِي إِلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ - وَلَا تَصْغُرْ لَخَلْقِ اللَّهِ وَلَا تَسْتَمِ مِنَ النَّاسِ

देखिए पृष्ठ 241 (हाशिया) बराहीन अहमदिया प्रकाशित 1881, 1882 ई. मुद्रक सफ़ीर हिन्द प्रेस अमृतसर।

(अनुवाद) खुदा की कृपा से निराश मत हो और यह बात सुन रख कि खुदा की कृपा निकट है। सावधान! कि खुदा की सहायता निकट है। वह सहायता तुझे

प्रत्येक मार्ग से पहुँचेगी और प्रत्येक मार्ग से लोग तेरे पास आएंगे इतनी अधिक संख्या में आएंगे कि वे मार्ग जिन पर वे चलेंगे गहरे हो जाएंगे, खुदा अपने पास से तेरी सहायता करेगा, तेरी सहायता वे लोग करेंगे जिनके हृदयों में हम स्वयं इल्का करेंगे, किन्तु चाहिए कि तू खुदा के बन्दों से जो तेरे पास आएंगे दुःशीलता न करे और चाहिए कि तू उनका आधिक्यता देख कर उनके भेंट करने से थक न जाए।

इस भविष्यवाणी पर आज पच्चीस वर्ष हो गए, जब यह बराहीन अहमदिया में प्रकाशित हुई थी और यह उस युग की भविष्यवाणी है जबकि मैं एक गुमनामी में पड़ा था तथा उनमें से जो आज मेरे साथ हैं मुझे कोई भी नहीं जानता था तथा मैं उन लोगों में से नहीं था जिन की किसी प्रतिष्ठा के कारण संसार में चर्चा की जाती है। निष्कर्ष यह कि कुछ भी नहीं था और मैं लोगों में से मात्र एक सामान्य व्यक्ति था और मैं अज्ञात था और एक व्यक्ति भी मुझ से संबंध नहीं रखता था किन्तु कुछ एक-दो लोग जो मेरे खानदान से पूर्व से ही परिचय रखते थे। यह वह घटना है कि क्रादियान निवासियों में से कोई भी व्यक्ति इस के विपरीत साक्ष्य नहीं दे सकता। तत्पश्चात् खुदा तआला ने इस भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए अपने बन्दों को मेरी ओर आकृष्ट किया और समूह के समूह क्रादियान में आए और आ रहे हैं तथा नक़द और वस्तुओं के रूप में हर प्रकार के उपहार लोगों ने इतनी प्रचुर मात्रा में दिए और दे रहे हैं जिन की मैं गणना नहीं कर सकता और यद्यपि कि मौलवियों की ओर से बाधाएं डाली गईं, और उन्होंने एड़ी-चोटी का जोर लगाया कि लोग न आएँ, यहां तक कि मक्का तक से भी फ़त्वे मंगवाए गए और लगभग दो सौ मौलवियों ने मुझ पर कुफ़्र के फ़त्वे दिए वरन् वध योग्य होने के भी फ़त्वे प्रकाशित किए गए परन्तु वे अपने समस्त प्रयासों में असफल रहे और परिणाम यह हुआ कि मेरी जमाअत पंजाब के समस्त शहरों तथा देहात में फैल गई और हिन्दुस्तान में भी अनेकों स्थानों में बीजारोपण हो गया वरन् यूरोप और अमरीका के कुछ अंग्रेज़ भी मुसलमान होकर इस जमाअत में सम्मिलित हुए तथा

लोगों के समूह के समूह क्रादियान में आए कि यक्कों की अधिकता से कई स्थानों पर क्रादियान की सड़क टूट गई। इस भविष्यवाणी पर ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए कि यदि यह भविष्यवाणी खुदा की ओर से न होती तो यह विरोध का तूफान जो उठा था तथा समस्त पंजाब और हिन्दुस्तान के लोग मुझे से ऐसे बिगड़ गए थे कि मुझे पैरों के नीचे कुचलना चाहते थे अवश्य था कि वे लोग अपने अनथक प्रयासों में सफल हो जाते और मुझे तबाह कर देते, परन्तु वे सब के सब असफल रहे। मैं जानता हूँ कि उन का इतना शोर तथा मुझे तबाह करने के भरसक प्रयत्न तथा यह भीषण तूफान जो मेरे विरोध में पैदा हुआ, यह इसलिए नहीं था कि खुदा ने मुझे तबाह करने का इरादा किया था वरन् इसलिए था ताकि खुदा तआला के निशान प्रकट हों और ताकि सामर्थ्यवान खुदा जिसे कोई पराजित नहीं कर सकता, उन लोगों के मुकाबले पर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करे तथा अपनी शक्ति का चमत्कार प्रकट करे। अतः उसने ऐसा ही किया। कौन जानता था और किस के ज्ञान में यह बात थी कि जब मैं एक छोटे से बीज की भाँति बोया गया, तत्पश्चात् हजारों पैरों के नीचे कुचला गया तथा आंधियाँ चलीं, तूफान आए, विद्रोह का शोर एक बाढ़ के समान मेरे इस छोटे से बीज पर फिर गया। मैं फिर भी इन आघातों से बच जाऊँगा। अतः वह बीज खुदा की कृपा से नष्ट नहीं हुआ वरन् बढ़ा और फूला और आज वह एक बड़ा वृक्ष है जिसकी छाया के नीचे तीन लाख मनुष्य आराम कर रहे हैं। ये खुदा के कार्य हैं, मानव शक्तियाँ जिनको समझने से असमर्थ हैं। वह किसी से पराजित नहीं हो सकता। हे लोगो! कभी तो खुदा से शर्म करो! क्या इसका उदाहरण किसी झूठ गढ़ने वाले के आचरणों में प्रस्तुत कर सकते हो? यदि यह कारोबार मनुष्य का होता तो कुछ भी आवश्यकता न थी कि तुम विरोध करते और मुझे मारने के लिए इतना कष्ट उठाते अपितु मुझे मारने के लिए खुदा ही पर्याप्त था। जब देश में ताऊन फैली तो कई लोगों ने दावा करके कहा कि यह व्यक्ति ताऊन से मारा जाएगा परन्तु खुदा की विचित्र कुदरत है कि वे सब लोग स्वयं ही ताऊन से तबाह हो गए तथा खुदा ने मुझे सम्बोधित करके कहा कि मैं

तेरी रक्षा करूँगा और ताऊन तेरे निकट नहीं आएगी अपितु मुझ से यह भी कहा कि मैं लोगों को यह कहूँ कि अग्नि से (अर्थात् ताऊन से) हमें मत डराओ। 'अग्नि हमारी गुलाम अपितु गुलामों की गुलाम है'। तथा पुनः कहा कि मैं तेरे इस घर की रक्षा करूँगा और प्रत्येक जो इस चारदीवारी के अन्दर है वह ताऊन से बचा रहेगा। अतः ऐसा ही हुआ। इस क्षेत्र में सब को ज्ञात है कि ताऊन के आक्रमण से गाँव के गाँव नष्ट हो गए और हमारे आस पास प्रलय का नमूना रहा परन्तु खुदा ने हमें सुरक्षित रखा।

101. एक सौ एक वां निशान - जब मैं 1904 ई. में करमदीन के फौजदारी मुकद्दमे के कारण जेहलम जा रहा था तो मार्ग में मुझे इल्हाम हुआ -

أُرِيكَ بَرَكَاتٍ مِنْ كُلِّ طَرَفٍ

अर्थात् प्रत्येक पहलू से तुझे बरकतें दिखाऊँगा। यह इल्हाम उसी समय सम्पूर्ण जमाअत को सुना दिया गया अपितु अखबार 'अलहकम' में लिख कर प्रकाशित किया गया और यह भविष्यवाणी इस प्रकार से पूरी हुई^① कि मैं जब जेहलम के निकट पहुँचा तो लगभग दस हजार से अधिक लोग होंगे जो मुझ से मिलने के लिए पूरी सड़क पर थे। ऐसी विनम्रता की अवस्था में थे कि जैसे सज्दे करते थे, फिर ज़िला-कचहरी के चारों ओर लोगों की इतनी अधिक भीड़ थी कि अधिकारी लोग आश्चर्यचकित रह गए। ग्यारह सौ¹¹⁰⁰ लोगों ने बैअत की और और लगभग

① **हाशिया:-** मार्ग में लाहौर से आगे गुजरांवाला तथा वज़ीराबाद और गुजरात इत्यादि स्टेशनों पर इतने अधिक लोग भेंट करने के लिए आए कि स्टेशनों पर व्यवस्था को ठीक बनाए रखना कठिन हो गया। प्लेटफार्म टिकट समाप्त होने के कारण लोग बिना टिकट प्लेटफार्म पर चले गए और कुछ स्थानों पर भीड़ के कारण अधिक समय तक ठहराया गया और बड़ी नम्रतापूर्वक दर्शनार्थियों को रेल विभाग के कर्मचारियों ने गाड़ी से अलग किया। कुछ स्थानों पर लोग कुछ दूरी तक गाड़ी को पकड़े हुए साथ चले गए। भय था कि कोई व्यक्ति न मर जाए। इन घटनाओं को विरोधी अखबारों ने भी बड़ी दृढ़ता से प्रकाशित किया था। इसी से।

दो सौ²⁰⁰ स्त्रियाँ बैअत करके जमाअत में सम्मिलित हुई तथा करमदीन का मुकद्दम: जो मेरे विरुद्ध था खारिज किया गया तथा बहुत से लोगों ने श्रद्धा और विनय पूर्वक भेंटें और उपहार प्रस्तुत किए। इस प्रकार हम चारों ओर से बरकतों से धन-धान्य हो कर क़ादियान वापस आए। ख़ुदा तआला ने नितान्त स्पष्टता से वह भविष्यवाणी पूरी की।

102. एक सौ दो वां निशान- बराहीन अहमदिया में एक यह भविष्यवाणी है -

سُبْحَانَ اللَّهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى زَادَ مَجْدَكَ - يَنْقُطِعُ أَبَاكَ وَيَبْدُؤُكَ

देखिए बराहीन अहमदिया पृष्ठ 490

अनुवाद - ख़ुदा हर प्रकार से दोष रहित और बहुत बरकतों वाला है वह तेरी प्रतिष्ठा में वृद्धि करेगा, तेरे बाप-दादे की चर्चा समाप्त हो जाएगी^① तथा ख़ुदा तआला इस खानदान की प्रतिष्ठा की नींव तुझ से डालेगा।।

यह उस समय की भविष्यवाणी है कि जब किसी प्रकार की श्रेष्ठता मेरी ओर सम्बद्ध नहीं होती थी तथा मैं एक ऐसे अज्ञात की भाँति था जैसे कि मैं संसार में नहीं था वह युग जब यह भविष्यवाणी की गई इस पर अब लगभग तीस वर्ष गुज़र गए। अतः देखना चाहिए कि यह भविष्यवाणी कितनी स्पष्टता से पूर्ण हुई कि इस समय हज़ारों लोग मेरी जमाअत में सम्मिलित हैं तथा इससे पूर्व कौन जानता था कि मेरी प्रतिष्ठता संसार में इतनी अधिक फैलेगी। अतः खेद उन पर जो ख़ुदा के निशानों पर विचार नहीं करते। फिर इस भविष्यवाणी में जिस नस्ल की वृद्धि का वादा था उसकी नींव भी डाली गई, क्योंकि इस भविष्यवाणी के पश्चात् चार लड़के, दो लड़कियाँ और एक पोता मेरे घर में पैदा हुए जो उस समय मौजूद न थे।

① हाशिया:- इस इल्हाम में यह भी संकेत था कि आजीविका के पैतृक समस्त साधन बन्द हो जाएंगे तथा ख़ुदा तआला नवीन बरकतें प्रदान करेगा। अतः हमारे पिता श्री के आजीविका के साधन कुछ तो सरकार ने ले लिए गए तथा कुछ भागीदारों को मिल गए और हम ख़ाली हाथ रह गए। तत्पश्चात् ख़ुदा तआला ने सब कुछ स्वयं उपलब्ध किया। इसी से।

103. एक सौ तीन वां निशान - एक बार ताऊन के जोर के दिनों में जब क़ादियान में भी ताऊन थी मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए. को बड़ा तीव्र ज्वर हो गया तथा उनको पूरा विश्वास हो गया कि यह ताऊन है। अतः उन्होंने मरने वालों के समान वसीयत कर दी और मुफ़्ती मुहम्मद सादिक को सब कुछ समझा दिया, वह मेरे घर के एक भाग में रहते थे, जिस घर के बारे में ख़ुदा तआला का यह इल्हाम है -

إِنِّي أَحَافِظُ كُلَّ مَنْ فِي الدَّارِ

तब मैं उनका हाल पूछने गया तथा उन्हें परेशान तथा घबराहट में देखकर मैंने उनसे कहा कि यदि आपको ताऊन हो गई है तो फिर मैं झूठा हूँ और मेरा इल्हाम का दावा झूठा है। यह कहकर मैंने उनकी नाड़ी पर हाथ लगाया। ख़ुदा की शक्ति का यह अद्भुत नमूना देखा कि हाथ लगाने के साथ ही शरीर ऐसा शीतल पाया कि तप का नामो निशान न था।

104. एक सौ चार वां निशान - एक बार मेरा छोटा लड़का मुबारक अहमद बीमार हो गया। मूर्च्छा पर मूर्च्छा पड़ रही थी और मैं उसके निकट मकान में दुआ में व्यस्त था तथा कई स्त्रियाँ उसके पास बैठी थीं कि एक बार एक स्त्री ने आवाज़ देकर कहा कि अब बस करो, क्योंकि लड़का मर गया। तब मैं उसके पास आया और उसके शरीर पर हाथ रखा और ख़ुदा तआला की ओर ध्यान किया तो दो-तीन मिनट के पश्चात् लड़के को सांस आना आरंभ हो गया तथा नाड़ी-स्पन्दन भी महसूस हुआ और लड़का जीवित हो गया। तब मुझे विचार आया कि ईसा अलैहिस्सलाम का मुर्दों को जीवित करना भी इसी प्रकार का था और फिर नादानों ने इस पर हाशिए चढ़ा दिए।

105. एक सौ पांचवां निशान - एक बार मेरे भाई स्वर्गीय मिर्ज़ा गुलाम क़ादिर साहिब के बारे में मुझे स्वप्न में दिखाया गया कि उनके जीवन के थोड़े दिन रह गए हैं जो अधिकाधिक पन्द्रह दिन हैं। बाद में वह एक बार बहुत बीमार हो गए यहां तक कि केवल हड्डियाँ शेष रह गई तथा इतने निर्बल हो गए कि

चारपाई पर बैठे हुए मालूम नहीं होते थे कि कोई उस पर बैठा हुआ है या चारपाई खाली है। शौचादि ऊपर ही निकल जाता था तथा बेहोशी की अवस्था रहती थी। मेरे स्वर्गीय पिता श्री मिर्जा गुलाम मुर्तजा साहिब बड़े कुशल वैद्य थे। उन्होंने कह दिया कि अब यह अवस्था निराशा नाउम्मीदी की है केवल कुछ दिनों की बात है। मुझे में उस समय जवानी की शक्ति मौजूद थी तथा कठिन तपस्या की शक्ति थी तथा मेरी प्रकृति ऐसी है कि मैं प्रत्येक बात पर खुदा को सामर्थ्यवान जानता हूँ तथा वास्तव में उसकी कुदरतों का अन्त कौन पा सकता है। उसके आगे कोई बात असंभव और अनहोनी नहीं सिवाए उन बातों के जो उसके वादे के विपरीत या उसकी पवित्र शान के विरुद्ध तथा उसके अद्वैतवाद के विपरीत हैं। इसलिए मैंने इस अवस्था में भी उनके लिए दुआ आरंभ की। तथा मैंने हृदय में यह निश्चय कर लिया कि इस दुआ में मैं तीन बातों में अपना अध्यात्म ज्ञान बढ़ाना चाहता हूँ।

प्रथम - यह कि मैं देखना चाहता हूँ कि क्या मैं खुदा के दरबार में इस योग्य हूँ कि मेरी दुआ स्वीकार हो जाए।

द्वितीय - यह कि क्या स्वप्न जो अज्ञाब के वादे के रूप में आते हैं उनमें विलम्ब भी हो सकता है अथवा नहीं ?

तृतीय - यह कि क्या इस स्तर का रोगी जिसकी मात्र हड्डियाँ शेष हैं दुआ के द्वारा ठीक हो सकता है अथवा नहीं।

अतः मैंने इसी आधार पर दुआ आरंभ की। मुझे क्रसम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं कि दुआ के साथ ही परिवर्तन आरम्भ हो गया तथा इसी के मध्य एक अन्य स्वप्न में मैंने देखा कि वह जैसे अपने आंगन में अपने कदमों से चल रहे हैं और स्थिति यह थी कि दूसरा व्यक्ति करवट बदलता था। जब दुआ करते-करते पन्द्रह दिन हो गए तो उनमें स्वस्थ होने के कुछ बाह्य लक्षण उत्पन्न हो गए तथा उन्होंने इच्छा प्रकट की कि मेरा हृदय चाहता है कि कुछ कदम चलूँ। अतः वह कुछ सहारा लेकर उठे और डंडा पकड़ कर चलना आरंभ किया और फिर वह डंडा भी छोड़ दिया। कुछ दिनों तक पूर्णरूप से स्वस्थ हो गए। तत्पश्चात्

पन्द्रह वर्ष तक जीवित रहे और फिर स्वर्गवासी हो गए, जिससे विदित हुआ कि ख़ुदा ने उनके जीवन के पन्द्रह दिन पन्द्रह वर्ष में परिवर्तित कर दिए हैं। यह है हमारा ख़ुदा जो अपनी भविष्यवाणियों को परिवर्तित करने पर भी समर्थ हैं परन्तु हमारे विरोधी कहते हैं कि समर्थ नहीं।

106. एक सौ छः वां निशान - एक बार दृष्टान्त के तौर पर मुझे ख़ुदा तआला के दर्शन हुए और मैंने अपने हाथ से कई भविष्यवाणियाँ लिखीं जिनका उद्देश्य यह था कि ऐसी घटनाएं होनी चाहिए। अतः मैंने वह कागज़ हस्ताक्षर कराने के लिए ख़ुदा तआला के सम्मुख प्रस्तुत किया और ख़ुदा तआला ने बिना किसी संकोच के लाल क़लम से उस पर हस्ताक्षर कर दिए तथा हस्ताक्षर करने के समय क़लम को छिड़का जैसा कि जब क़लम पर अधिक स्याही आ जाती है तो इसी प्रकार झाड़ देते हैं और फिर हस्ताक्षर कर दिए। उस समय मुझ पर अत्यन्त आर्द्रता की अवस्था थी इस विचार से कि ख़ुदा तआला की मुझ पर कितनी कृपा और उपकार है कि मैंने जो कुछ चाहा अविलम्ब अल्लाह तआला ने उस पर हस्ताक्षर कर दिए। उसी समय मेरी आंख खुल गई। उस समय मियाँ अब्दुल्लाह सिन्नौरी मस्जिद के कमरे में मेरे पैर दबा रहा था कि उसके सामने परोक्ष से लाल स्याही की बूंदें मेरे कुर्ते और उसकी टोपी पर भी गिरीं तथा अद्भुत बात यह है कि उस लाल स्याही की बूंदें गिरने तथा क़लम को झाड़ने का समय एक ही था, एक सेकण्ड का भी अन्तर न था। एक ग़ैर व्यक्ति इस रहस्य को नहीं समझेगा तथा सन्देह करेगा क्योंकि उसे एक स्वप्न का मामला महसूस होगा परन्तु जिसे आध्यात्मिक बातों का ज्ञान हो वह इसमें सन्देह नहीं कर सकता। इसी प्रकार ख़ुदा नास्ति से आस्ति कर सकता है। अतः मैंने यह वृत्तान्त मियाँ अब्दुल्लाह को सुनाया, उस समय मेरी आँखों से आँसू जारी थे। अब्दुल्लाह जो एक चश्मदीद गवाह है उस पर बहुत प्रभाव हुआ तथा उसने मेरा कुर्ता बतौर तबरूक (बरकत के तौर पर) अपने पास रख लिया जो अब तक उसके पास मौजूद है।

107. एक सौ सातवां निशान - कई बार भूकम्पों से पूर्व अखबारों में मेरी

ओर से प्रकाशित हो चुका है कि संसार में बड़े-बड़े भूकम्प आएंगे यहां तक कि पृथ्वी उलट-पुलट हो जाएगी। अतः वे भूकम्प जो सानफ्रांसिस्को तथा फारमूसा इत्यादि में मेरी भविष्यवाणी के अनुसार आए वे तो सर्वविदित हैं किन्तु अभी जो 16 अगस्त 1906 ई. को अमरीका के दक्षिणी भाग में अर्थात् चिल्ली के प्रान्त में एक भयंकर भूकम्प आया वह पहले भूकम्पों से कम न था, जिससे पन्द्रह छोटे-बड़े शहर और कस्बे बरबाद हो गए तथा हजारों लोग मर गए और दस लाख लोग अब तक बेघर हैं। कदाचित नादान लोग कहेंगे कि यह निशान क्योंकर हो सकता है, ये भूकम्प तो पंजाब में नहीं आए, परन्तु वे नहीं जानते कि ख़ुदा समस्त विश्व का ख़ुदा है, न केवल पंजाब का। उसने समस्त विश्व के लिए ये सूचनाएं दी हैं न कि केवल पंजाब के लिए। यह दुर्भाग्य है कि ख़ुदा तआला की भविष्यवाणियों को अकारण टाल देना और ख़ुदा की वाणियों को ध्यानपूर्वक न पढ़ना तथा प्रयत्न करते रहना कि किसी प्रकार सत्य छुप जाए, परन्तु इस प्रकार झुठलाने से सच्चाई छुप नहीं सकती।

स्मरण रहे कि ख़ुदा ने मुझे व्यापक तौर पर भूकम्पों की सूचना दी है। अतः निश्चय समझो कि जिस प्रकार भविष्यवाणी के अनुसार अमरीका में भूकम्प आए, उसी प्रकार यूरोप में भी आए तथा एशिया के विभिन्न स्थानों में आएंगे और उनमें से कुछ प्रलय के सदृश्य होंगे और इतनी मौतें होंगी कि रक्त की नहरें चलेंगे। इस मृत्यु से पशु-पक्षी भी बाहर नहीं होंगे और पृथ्वी पर इतनी भयंकर विनाश-लीला आएगी कि उस दिन से कि जब से मनुष्य पैदा हुआ ऐसी विनाशलीला कभी नहीं आई होगी तथा अधिकतर स्थान उथल-पुथल हो जाएंगे कि जैसे मानो उनमें कभी आबादी नहीं थी। इसके साथ पृथ्वी और आकाश में अन्य भयानक आपदाएं भी जन्म लेंगी, यहां तक कि प्रत्येक बुद्धिमान की दृष्टि में वे बातें असाधारण हो जाएंगी तथा खगोल शास्त्र और दर्शनशास्त्र की पुस्तकों के किसी पृष्ठ में उनका पता नहीं मिलेगा, तब मनुष्यों में व्याकुलता पैदा होगी कि यह क्या होने वाला है तथा बहुत से लोग मुक्ति पाएंगे और बहुत से तबाह हो जाएंगे। वे दिन निकट हैं अपितु मैं

देखता हूँ कि द्वार पर हैं कि संसार एक प्रलय का दृश्य देखेगा और न केवल भूकम्प अपितु और भी भयावह आपदाएं प्रकट होंगी, कुछ आकाश से तथा कुछ पृथ्वी से। यह इसलिए कि मनुष्य ने अपने खुदा की उपासना को त्याग दिया है तथा सम्पूर्ण हृदय, सम्पूर्ण साहस एवं सम्पूर्ण विचारों से संसार पर ही गिर गए हैं। यदि मैं न आया होता तो इन विपत्तियों में कुछ विलम्ब हो जाता, परन्तु मेरे आने के साथ खुदा के प्रकोप के वे गुप्त इरादे जो एक लम्बे समय से गुप्त थे प्रकट हो गए। जैसा कि खुदा का कथन है -

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا^①

और तौबा एवं पश्चाताप करने वाले सुरक्षा पाएंगे और वे जो विपत्ति से पहले डरते हैं उन पर दया दृष्टि की जाएगी। क्या तुम विचार करते हो कि तुम इन भूकम्पों से सुरक्षित रहोगे या तुम अपनी युक्तियों से स्वयं को बचा सकते हो ? कदापि नहीं। मानव-कार्यों का उस दिन अन्त होगा। यह मत विचार करो कि अमरीका आदि में भयंकर भूकम्प आए और तुम्हारा देश उससे सुरक्षित है। मैं तो देखता हूँ कि कदाचित् उन से अधिक संकट का मुख देखोगे। हे यूरोप तू भी अमन में नहीं और हे एशिया तू भी सुरक्षित नहीं और हे द्वीप समूहों के रहने वालो! कोई कृत्रिम खुदा तुम्हारी सहायता नहीं करेगा। मैं शहरों को गिरते देखता हूँ और आबादियों को निर्जन पाता हूँ। वह एक और अद्वितीय खुदा एक समय तक खामोश रहा तथा उसकी आँखों के सामने निकृष्ट कार्य किए गए और वह मौन रहा किन्तु अब वह रोब के साथ अपना चेहरा दिखाएगा। जिसके कान सुनने के हों सुने कि वह समय दूर नहीं। मैंने प्रयास किया कि खुदा की सुरक्षा के नीचे सब को एकत्र करूँ परन्तु आवश्यक था कि प्रारब्ध के लेख पूरे होते। मैं सच-सच कहता हूँ कि इस देश की बारी भी निकट आती जाती है। नूह का युग तुम्हारी आँखों के सामने आ जाएगा और लूट की ज़मीन की घटना तुम स्वयं अपनी आँखों से देख लोगे। किन्तु खुदा प्रकोप में धीमा है, पश्चाताप करो ताकि तुम पर दया

① बनी इस्राईल - 16

की जाए। जो खुदा को त्यागता है वह एक कीड़ा है न कि मनुष्य और जो उस से नहीं डरता वह मुर्दा है न कि जीवित।

108. एक सौ आठवां निशान - जिसका उल्लेख बराहीन अहमदिया में है यह है -

أَرَدْتُ أَنْ أَسْتَخْلِفَ فَخَلَقْتُ آدَمَ

अर्थात् मैंने इरादा किया कि खलीफ़ा बनाऊँ अतः मैंने आदम को खलीफ़ा बनाया। यह इल्हाम पच्चीस वर्ष की अवधि से बराहीन अहमदिया में लिखा हुआ है। यहाँ बराहीन अहमदिया में खुदा तआला ने मेरा नाम आदम रखा और यह एक भविष्यवाणी है जो इस बात की ओर संकेत करती है कि जिस प्रकार फ़रिश्तों ने आदम पर दोष मढ़े थे और उसको रद्द कर दिया था परन्तु अन्ततः खुदा ने उसी आदम को खलीफ़ा बनाया और सब को उसके सम्मुख नत-मस्तक होना पड़ा। इसलिए खुदा तआला का कहना है कि यहां भी ऐसा ही होगा। अतः मेरे विरोधी उलेमा तथा उन के सहपंथियों ने दोष निकालने में कमी न की तथा विनाश करने के लिए छल-प्रपंच का कोई उपाय नहीं छोड़ा जो न किया हो परन्तु अन्ततः खुदा ने मुझे विजयी किया तथा इसी पर बस नहीं करेगा जब तक झूठ को अपने पैरों के नीचे न कुचले।

109. एक सौ नौवां निशान - जो बराहीन अहमदिया में दर्ज होकर प्रकाशित हो चुका है यह है -

وَكَذَلِكَ مَنَّا عَلَى يُوسُفَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ
لِنُنْذِرَ قَوْمًا مَّا أُنْذِرَ آبَاءَهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ-

देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 555।

अनुवाद - और इसी प्रकार हमने अपने निशानों के साथ इस यूसुफ़ पर उपकार किया ताकि जो बुराई और दोष उसकी ओर सम्बद्ध किए जाएंगे उन से हम उसे सुरक्षित रखें और ताकि तू उन निशानों की प्रतिष्ठा के कारण इस योग्य हो कि लापरवाह लोगों को डराए क्योंकि वास्तव में उन्हीं लोगों को डराए क्योंकि वास्तव

में उन्हीं लोगों की नसीहत हृदयों पर प्रभाव डालती है जिन्हें खुदा अपनी ओर से प्रतिष्ठा और विशेषता प्रदान करता है। यहाँ खुदा तआला ने मेरा नाम यूसुफ़ रखा तथा यह एक भविष्यवाणी है जिसका अर्थ यह है कि जिस प्रकार यूसुफ़ के भाइयों ने अपनी मूर्खता से यूसुफ़ को बहुत कष्ट दिया था और उसे मारने में कमी नहीं छोड़ी थी। खुदा का कथन है कि यहां भी ऐसा ही होगा तथा संकेत किया है कि ये लोग भी जो जातीय भाईचारा रखते हैं मारने और तबाह करने के लिए बड़े-बड़े धोखे देंगे परन्तु अन्ततः वे असफल रहेंगे और खुदा उन पर स्पष्ट कर देगा कि जिस व्यक्ति को तुम ने अपमानित करना चाहा था मैंने उसे सम्मान का ताज पहनाया। तब बहुत से लोगों पर स्पष्ट हो जाएगा कि हम ग़लती पर थे जैसा कि वह एक अन्य इल्हाम में कहता है -

يَخْرُونَ عَلَى الْأَذْقَانِ سَجْدًا - رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا إِنَّكَ خَاطِئِينَ -

تَاللّٰهِ لَقَدْ أَثَرَكِ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا لَخَاطِئِينَ - لَا تَشْرِبْ

عَلَيْكُمْ الْيَوْمَ - يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ - وَهُوَ رَحِيمٌ -

अर्थात् वे लोग अपनी ठोड़ियों पर सजदह करते हुए तथा यह कहते हुए गिरेंगे कि हे हमारे खुदा! हमें क्षमा कर हम ग़लती पर थे। और तुझे संबोधित करके कहेंगे - खुदा की क्रसम खुदा ने हम सब में से तुझे चुन लिया और हम ग़लती पर थे। तब खुदा इन ग़लतियों से पश्चाताप करने वालों से कहेगा कि आज तुम पर कोई डांट-फटकार नहीं क्योंकि तुम ईमान लाए। खुदा तुम्हें तुम्हारी पहली ग़लतियाँ क्षमा कर देगा कि वह दया करने वालों में सर्वाधिक दयालु है।

इसलिए इस भविष्यवाणी में परोक्ष की दो बातों का वर्णन है

(1) प्रथम यह कि भविष्य में क्रौम में कट्टर विरोधी पैदा हो जाएंगे तथा उन में ईर्ष्या की ज्वाला ऐसी उत्तेजित होगी जैसे कि यूसुफ़ के भाइयों में उत्तेजित हुई थी। अतः वह कट्टर शत्रु बन जाएंगे तथा तबाह करने और मारने के लिए नाना प्रकार की योजनाएं बनाएं तथा जाति में से विरोधी पैदा हो जाएंगे और बड़े-बड़े उपद्रव करेंगे। यह एक भविष्यवाणी है क्योंकि यह सूचना बराहीन अहमदिया में

लिखित है जिस पर पच्चीस वर्ष का समय व्यतीत हो गया है। उस समय क्रौम में से कोई मेरा विरोधी न था क्योंकि अभी तो बराहीन अहमदिया भी प्रकशित नहीं हुई थी, फिर विरोध की क्या आवश्यकता थी। अतः निस्सन्देह यह सूचना कि किसी युग में ऐसे जानी दुश्मन पैदा हो जाएंगे जो पूर्व में इस्लामी भ्रातृभाव के कारण भाइयों के समान थे। यह एक ग़ैब (परोक्ष) की बात है जिसे ख़ुदा ने घटना-पूर्व प्रकट किया और बराहीन अहमदिया में लिखी गई।

(2) द्वितीय परोक्ष की बात इस भविष्यवाणी में यह है कि इस विरोध का यह अंजाम बता दिया है कि अन्ततः वे शत्रु निराशा और घाटे में रहेंगे तथा उनमें से बहुत से यूसुफ़ के भाइयों की भांति तौबा करके लौटेंगे। उस समय ख़ुदा इस विनीत (मुझे) को यूसुफ़ के समान सम्मान का ताज पहनाएगा तथा वह प्रतिष्ठा और प्रताप प्रदान करेगा जिसकी किसी को आशा न थी। अतः इस भविष्यवाणी का अधिकांश भाग पूर्ण हो चुका है क्योंकि ऐसे शत्रु पैदा हो गए जो मेरा समूल विनाश चाहते हैं। वास्तव में ये लोग अपने बुरे इरादों में यूसुफ़ के भाइयों से भी अधम हैं। इसलिए ख़ुदा ने कई लाख लोग मेरे अधीन करके और मुझे एक विशेष सम्मान और प्रतिष्ठा प्रदान करके उन्हें अपमानित किया और वह समय आता है कि ख़ुदा तआला इस से बढ़कर मेरी प्रतिष्ठा प्रकट करेगा तथा महा विरोधियों में से जो सदाचारी हैं उन्हें कहना पड़ेगा -

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا إِنَّكَ أَكْثَرُ خَاطِئِينَ-

और कहना पड़ेगा कि -

تَاللّٰهِ لَقَدْ أَثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا

110. एक सौ दसवां निशान - बराहीन अहमदिया की यह भविष्यवाणी -

إِنَّا عَاطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ- ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ وَثَلَاثَةٌ مِنَ الْآخِرِينَ-

(देखिए बराहीन अहमदिया पृष्ठ 556)

अनुवाद - हम एक बहुत बड़ी जमाअत तुझे प्रदान करेंगे। प्रथम - एक पहला गिरोह जो आपदाओं के आने से पूर्व ईमान लाएंगे। द्वितीय - दूसरा गिरोह जो ख़ुदा

के प्रकोपी निशानों के पश्चात् ईमान लाएंगे। हम बारम्बार लिख चुके हैं कि बराहीन अहमदिया में जितनी भविष्यवाणियाँ हैं उन पर पच्चीस वर्ष हो गए हैं तथा उस समय की भविष्यवाणियाँ हैं जब कि मेरे साथ एक व्यक्ति भी न था। यदि यह बात ग़लत है तो मानो मेरा सारा दावा असत्य है। अतः स्पष्ट हो कि यह भविष्यवाणी भी बराहीन अहमदिया में लिखित है जो उस एकान्तवास और निराश्रयता के समय में एक ऐसे युग की सूचना देती है कि हज़ारों लोग मेरी बैअत में सम्मिलित हो जाएंगे। अतः इस युग में यह भविष्यवाणी पूरी हुई। परोक्ष की सूचना देना खुदा के अतिरिक्त किसी के अधिकार में नहीं। परोक्ष का ज्ञान खुदा की विशेषता है किन्तु अब तो हमारे विरोधियों की दृष्टि में परोक्ष का ज्ञान भी खुदा की विशेषता नहीं। देखते हैं कि कहां तक उन्नति करेंगे।

111. एक सौ ग्यारहवां निशान - बराहीन अहमदिया में एक भविष्यवाणी यह है - मैं अपनी चमकार दिखाऊँगा, अपने शक्ति-प्रदर्शन द्वारा तुझे उठाऊँगा। संसार में एक डराने वाला आया परन्तु संसार ने उसे स्वीकार न किया किन्तु खुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा। इस भविष्यवाणी पर पच्चीस वर्ष गुज़र गए। यह उस समय की है जबकि मैं कुछ भी नहीं था। इस भविष्यवाणी का निष्कर्ष यह है कि बाह्य और आन्तरिक घोर विरोध के कारण कोई प्रत्यक्ष आशा नहीं होगी कि यह सिलसिला स्थापित हो सके, किन्तु खुदा अपने चमकदार निशानों द्वारा संसार को इस ओर आकृष्ट कर लेगा और मेरी सच्चाई के लिए शक्तिशाली आक्रमण प्रदर्शित करेगा। अतः उन्हीं आक्रमणों में से एक ताऊन है जिसकी बहुत समय पूर्व सूचना दी गई थी और उन्हीं आक्रमणों में भूकम्प हैं जो संसार में आ रहे हैं और न मालूम अभी क्या-क्या आक्रमण होंगे। इस में कोई सन्देह नहीं कि जैसा कि इस भविष्यवाणी में वर्णन किया है खुदा ने मात्र अपने शक्ति-प्रदर्शन से इस जमाअत को स्थापित कर दिया है अन्यथा क्रौम के इतने अधिक विरोध के बावजूद यह बात दुर्लभ बातों में से थी कि इतनी शीघ्रता से कई लाख लोग मेरे साथ हो जाएं तथा विरोधियों ने बहुत

प्रयास किए परन्तु खुदा तआला की इच्छा के समक्ष उनका कुछ वश न चला।

112. एक सौ बारहवां निशान - हमारा एक मुकद्दमः तहसील बटाला जिला गुरदासपुर में कुछ पैतृक किसानों पर था। मुझे स्वप्न में बताया गया कि इस मुकद्दमः में डिग्री होगी। मैंने कुछ लोगों के सम्मुख वह स्वप्न वर्णन किया। उन सब में एक हिन्दू भी था जो मेरे पास आता-जाता रहता था, उसका नाम शरमपत है जो जीवित मौजूद है। मैंने उसके पास भी यह भविष्यवाणी वर्णन कर दी थी कि इस मुकद्दमः में हमारी विजय होगी। तत्पश्चात् ऐसा संयोग हुआ कि जिस दिन इस मुकद्दमे का अन्तिम आदेश सुनाया जाना था हमारी ओर से कोई व्यक्ति उपस्थित न हुआ तथा दूसरा पक्ष जो कदाचित् पन्द्रह या सोलह लोग थे उपस्थित हुए। उन सब ने अस्त्र के समय वापस आकर बाज़ार में वर्णन किया कि मुकद्दमा खारिज हो गया। मैंने कहा कि किसने वर्णन किया? उसने उत्तर दिया कि सारे प्रतिपक्ष आ गए हैं और बाज़ार में वर्णन कर रहे हैं। यह सुनते ही मैं आश्चर्य में पड़ गया क्योंकि सूचना देने वाले पन्द्रह लोगों से कम न थे तथा उनमें से कुछ मुसलमान थे तथा कुछ हिन्दू थे। तब जो कुछ मुझे चिन्ता और शोक हुआ मैं वर्णन नहीं कर सकता। वह हिन्दू तो यह बात कहकर प्रसन्न होता हुआ बाज़ार की ओर चला गया जैसे उसे इस्लाम पर आक्रमण करने का एक और अवसर प्राप्त हो गया परन्तु जो कुछ मेरी दशा हुई उसका वर्णन करना मेरी शक्ति से बाहर है। अस्त्र का समय था, मैं मस्जिद के एक कोने में बैठ गया। हृदय बहुत व्याकुल था कि अब यह हिन्दू हमेशा यह कहता रहेगा कि कितने प्रबल दावे से डिग्री होने की भविष्यवाणी की थी और वह झूठी निकली, इतने में परोक्ष से आवाज़ गूंजती हुई आई तथा आवाज़ इतनी ऊंची थी कि मैंने सोचा कि बाहर से किसी व्यक्ति ने आवाज़ दी है। आवाज़ के शब्द ये थे - डिग्री हो गई है मुसलमान है! अर्थात् क्या तू विश्वास नहीं करता तब मैंने उठकर मस्जिद के चारों ओर देखा तो कोई व्यक्ति न पाया। अतः मुझे विश्वास हो गया कि फ़रिश्ते की आवाज़ है। मैंने उस हिन्दू को फिर उसी समय बुलाया और फ़रिश्ते की आवाज़ के बारे में उसे अवगत

किया, किन्तु उसे विश्वास न हुआ। सुबह मैं स्वयं बटाला तहसील में गया तथा हाफ़िज़ हिदायत अली नामक तहसीलदार था। वह उस समय अभी तहसील में नहीं आया था। उस का रीडर मथुरादास नामक एक हिन्दू मौजूद था। मैंने उस से पूछा कि क्या हमारा मुकद्दमा खारिज हो गया? उसने कहा कि नहीं अपितु डिग्री हो गई। मैंने कहा कि प्रतिपक्ष (विरोधी पक्ष ने क्रादियान में जाकर यह प्रसिद्ध कर दिया है कि मुकद्दमः खारिज हो गया है। उसने कहा कि एक प्रकार से उन्होंने भी सत्य कहा है। बात यह है कि जब तहसीलदार फैसला लिख रहा था तो मैं एक आवश्यक कार्य के लिए उसकी पेशी से उठकर चला गया था। तहसीलदार नया था। उसे मुकद्दमा की आगे पीछे की बातों का ज्ञान न था। प्रतिपक्ष ने एक फैसला उसके समक्ष प्रस्तुत किया पैतृक किसानों को स्वामी की आज्ञा के बिना अपने-अपने खेतों से वृक्ष काटने का अधिकार दिया गया था। तहसीलदार ने उस फैसले को देख कर मुकद्दमा खारिज कर दिया और उन्हें वापस भेज दिया। जब मैं आया तो तहसीलदार ने वह फैसला मुझे दिया कि मिस्ल के साथ लगा दो। जब मैंने उसे पढ़ा तो मैंने तहसीलदार से कहा कि यह तो आपने बड़ी भारी भूल की है क्योंकि जिस फैसले के आधार पर आपने यह आदेश लिखा है वह तो अपील की अदालत से निरस्त हो चुका है। प्रतिपक्ष ने चपलता से आपको धोखा दिया है। मैंने उसी समय अपील की अदालत का फैसला जो मिस्ल से संलग्न था उनको दिखा दिया। तब तहसीलदार ने अविलम्ब अपना पहला फैसला फाड़ दिया और डिग्री कर दी। यह एक भविष्यवाणी है कि एक हिन्दुओं की जमाअत और कई मुसलमान उसके साक्षी हैं और वही शरमपत इसका साक्षी है जो बहुत प्रसन्नता से यह ख़बर लेकर मेरे पास आया था कि मुकद्दमा खारिज हो गया। इस पर खुदा की हर प्रकार से प्रशंसा और आभार। खुदा के कार्य विचित्र ढंग से प्रकट होते हैं। इस भविष्यवाणी की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा इस से पैदा हुई कि हमारी ओर से कोई उपस्थित न हुआ और तहसीलदार ने प्रतिपक्ष को ग़लत फैसला सुना दिया। वास्तव में यह सब कुछ खुदा तआला ने किया। यदि ऐसा न होता तो इस भविष्यवाणी में

यह विशेष प्रतिष्ठा एवं महानता कदापि पैदा न होती।

113. एक सौ तेरहवां निशान - बराहीन अहमदिया की यह भविष्यवाणी है कि

شَاتَانُ تُذْبِكَا وَكُلٌّ مِنْ عَلَيْهَا فَا

अर्थात् दो बकरियाँ ज़िबह की जाएंगी और प्रत्येक जो पृथ्वी पर है अन्ततः मृत्यु को प्राप्त होगा।

यह भविष्यवाणी बराहीन अहमदिया में लिखित है आज से पच्चीस वर्ष पूर्व प्रकाशित हो चुकी है। मुझे बहुत समय तक इसके अर्थ मालूम न हुए अपितु अन्य-अन्य स्थान को मात्र विवेचना से इसका चरितार्थ ठहराया किन्तु जब स्वर्गीय मौलवी साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ और उनके भाग्यशाली शिष्य शैख़ अब्दुर्रहमान काबुल के अमीर के अनीतिपूर्ण अत्याचार से क्रल्ल किए गए तब सर्वथा स्पष्ट हो गया कि इस भविष्यवाणी के चरितार्थ यही दोनों बुजुर्ग हैं, क्योंकि 'शात' का शब्द नबियों की किताबों में केवल सदाचारी मनुष्य पर बोला गया है और हमारी सम्पूर्ण जमाअत में अभी तक इन दोनों बुजुर्गों के अतिरिक्त कोई शहीद नहीं हुआ। जो लोग हमारी जमाअत से बाहर तथा धर्म एवं ईमानदारी से वंचित हैं उन पर 'शात' का शब्द चरितार्थ नहीं हो सकता। फिर इस पर अतिरिक्त अनुकूलता यह है कि इस इल्हाम के साथ यह दूसरा वाक्य है कि -

لَا تَهْنُؤُوا وَلَا تَحْزَنُوا

जिस से सिद्ध होता है कि ये ऐसी मौतें होंगी जो हमारे शोक एवं संताप का कारण होंगी। स्पष्ट है कि शत्रु की मृत्यु से कोई शोक नहीं हो सकता और जब साहिबज़ादा मौलवी अब्दुल लतीफ़ शहीद इसी स्थान क़ादियान में थे उस समय भी उनके बारे में यह इल्हाम हुआ था -

قَتْلُ خِيَةِ وَزَيْدِ هَيْبَةِ

अर्थात् विरोधियों से निराश होने की अवस्था में क्रल्ल किया जाएगा और उस का मारा जाना बहुत भयावह होगा।

114. एक सौ चौदह वां निशान - ताऊन के फैलने के बारे में मुझे इल्हाम

हुआ -

الامراض تشاء والنفوس تصناء

अर्थात् रोग फैलाए जाएंगे और प्राणों की क्षति होगी। अतः जो व्यक्ति चाहे देख ले कि मैंने इस इल्हाम को ताऊन के फैलने से पूर्व अखबार 'अलहकम' और 'अलबद्र' में प्रकाशित कर दिया था। तत्पश्चात् पंजाब में ताऊन का इतना अधिक जोर हुआ कि हजारों घर मौतों से निर्जन हो गए।

115. एक सौ पन्द्रह वां निशान - पुस्तक सिराज-ए-मुनीर में ताऊन आने के बारे में यह एक भविष्यवाणी है -

يَا مَسِيحُ الْخَلْقِ عَدُوْنَا

अर्थात् हे वह मसीह जो प्रजा के लिए भेजा गया हमारी ताऊन की खबर ले। तत्पश्चात् भयंकर ताऊन पड़ी हजारों लोग ताऊन से भयभीत होकर मेरी ओर दौड़े जैसे उनके मुख पर यही वाक्य था कि -

يا مسيح الخلق عدوانا

और यह भविष्यवाणी जिस प्रकार मेरी पुस्तक सिराज-ए-मुनीर में लिखित है उसी प्रकार सैकड़ों लोगों को घटना-पूर्व इस से सूचित कर दिया गया था।

116. एक सौ सोलह वां निशान - एक बार प्रातः काल ख़ुदा की वह्यी से मेरी ज़बान पर जारी हुआ - अब्दुल्लाह ख़ान डेरा-ए-इस्माईल ख़ान और समझाया गया कि इस नाम का एक व्यक्ति आज कुछ रुपया भेजेगा। मैंने कुछ हिन्दुओं के पास जो वह्यी के क्रम के जारी रहने के इन्कारी हैं और वेद पर बहुत कुछ समाप्त कर बैठे हैं इस ख़ुदाई इल्हाम की चर्चा की तथा मैंने वर्णन किया कि यदि आज यह रुपया न आया तो मैं सत्य पर नहीं इनमें से एक हिन्दू बिशन दास नामक जाति ब्राह्मण जो आजकल एक स्थान का पटवारी है बोल उठा कि मैं इस बात की परीक्षा लूंगा और मैं डाकखाने में जाऊंगा। उन दिनों क़ादियान में डाक दोपहर के पश्चात् दो बजे आती थी। वह उसी समय डाक खाने गया और अत्यन्त आश्चर्यग्रस्त होकर उत्तर लाया कि वास्तव में अब्दुल्लाह ख़ान नामक एक व्यक्ति

ने जो डेरा इस्माईल खान में अतिरिक्त सहायक है कुछ रुपया भेजा है। वह हिन्दू आश्चर्य चकित और हैरान होकर मुझ से बार-बार पूछता था कि यह बात आपको किस ने बताई और उसके चेहरे से हैरानी और स्तब्धता के लक्षण प्रकट होते थे। तब मैंने उससे कहा कि उसने बताया जो गुप्त भेदों को जानता है। वही खुदा है जिसकी हम उपासना करते हैं। चूँकि हिन्दू लोग उस जीवित खुदा से अपरिचित मात्र हैं जो हमेशा अपनी शक्ति और इस्लाम पर सच्चाई के नमूने प्रकट करता रहता है। इसलिए सामान्यतया हिन्दुओं की यह प्रकृति है कि प्रथम तो खुदा तआला के चमत्कारिक निशानों का इन्कार करते हैं और जब कोई ऐसा व्यक्ति उन्हें मिल जाए कि परोक्ष की गुप्त बातें उसके द्वारा प्रकट हों तब हैरत और आश्चर्य के सागर में डूब जाते हैं। यही दशा लाला शरमपत की हुई थी। जैसा कि मैं पहले लिख चुका हूँ कि उसका भाई विशम्बर दास तथा खुशहाल नामक एक अन्य व्यक्ति किसी अपराध में जेल में चले गए थे और शरमपत ने परीक्षा की दृष्टि से न कि किसी आस्था से मुझ से मालूम किया था कि इस मुकद्दमः का परिणाम क्या होगा और दुआ की भी याचना की थी। अतः मैं कई दिन तक उसके लिए दुआ करता रहा अन्ततः वह खुदा जो अन्तर्यामी है उसने रात्रि के समय यह गुप्त बात मुझ पर स्पष्ट कर दी कि मुकद्दमः का परिणाम यह होगा कि विशम्बर दास की आधी कैद समाप्त कर दी जाएगी जैसा कि मैंने अपनी कशफ़ की अवस्था में देखा था कि उसकी आधी कैद मैंने स्वयं अपने कलम से काट दी है, किन्तु मुझ पर प्रकट किया गया कि खुशहाल को पूरी कैद भुगतनी पड़ेगी। एक दिन भी कम नहीं किया जाएगा तथा विशम्बर दास की आधी कैद रह जाना केवल दुआ के प्रभाव से होगा। परन्तु दोनों में से कोई भी बरी नहीं होगा और संभव है कि मिस्ल ज़िले में वापस आए और परिणाम वह हो जो वर्णन किया गया। मुझे स्मरण है कि जब ये सब बातें पूरी हो गईं तो शरमपत आश्चर्य में पड़ गया और हमारे खुदा की शक्तियों ने उसे बहुत हैरान कर दिया। उसने मेरी ओर पत्र लिखा कि ये सब बातें आप के सौभाग्य के कारण पूरी हो गईं। खेद कि उस ने फिर भी इस्लाम के

प्रकाश से कुछ भी लाभ न उठाया तथा आजकल वह आर्य है तथा मार्ग दर्शन तो एक ओर मुझे तो इन लोगों पर इतनी भी आशा नहीं कि सच्ची साक्ष्य दे सकें। यद्यपि प्रत्यक्ष में यही व्यर्थ बातें हैं कि सच्चाई का समर्थन करना चाहिए परन्तु उस का पालन नहीं करते। हां मैं विश्वास रखता हूँ कि यदि ऐसे साक्षी अर्थात् शर्मपत को शपथ दी जाए और शपथ में झूठ बोलने की अवस्था में सन्तान पर प्रभाव पड़ने का इक्रार कराया जाए तो अवश्य सच बोल देगा। मेरी कई भविष्यवाणियों की साक्ष्यें उसके पास हैं। संभव है कि पीछा छुड़ाने के लिए यह कह दे कि मुझे याद नहीं। किन्तु शपथ एक ऐसी वस्तु है कि उससे अवश्य याद आ जाएगा और यदि झूठ बोलेगा तो निश्चय ही स्मरण रखो कि मेरा ख़ुदा उसे दण्ड देगा और यह भी एक निशान होगा कि वह खुले-खुले नौ निशानों का साक्षी है।

मैं सामर्थ्यवान ख़ुदा का आभारी हूँ कि मेरे निशानों के केवल मुसलमान ही साक्षी नहीं अपितु संसार में जितनी भी कौमें हैं वे सब मेरे निशानों की साक्षी हैं। इस पर ख़ुदा की भूरि-भूरि प्रशंसा एवं आभार।

117. एक सौ सत्रह वां निशान - एक बार एक आर्य मलावामल नामक क्षयरोग ग्रस्त हो गया और निराशा के लक्षण प्रकट होते जाते थे तथा उसने स्वप्न में देखा कि एक विषधारी सांप ने उसे काटा। वह अपने जीवन से निराश होकर एक दिन मेरे पास आकर रोया। मैंने उस के लिए दुआ की तो उत्तर मिला -

قُلْنَا يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا

अर्थात् हम ने ज्वर की अग्नि को कहा कि शीतल और सुरक्षा वाली हो जा। अतः तत्पश्चात् वह एक सप्ताह में अच्छा हो गया और अब तक जीवित मौजूद है। देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-227। परन्तु विश्वास है कि उसकी साक्ष्य लेने के लिए भी शपथ की आवश्यकता पड़ेगी।

118. एक सौ अठारह वां निशान - एक बार जब मैं एक फ़ौजदारी मुकद्दमः के कारण (जो करमदीन जेहलमी ने मुझ पर किया था) गुरदासपुर में मौजूद था मुझे इल्हाम हुआ -

يَسْأَلُونَكَ عَنْ شَأْنِكُمْ قُلْ اللَّهُ تَزِرُ وَهُوَ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ

अर्थात् तेरी शान के बारे में पूछेंगे कि तेरी क्या शान और क्या पद है। कह वह खुदा है जिस ने यह पद मुझे प्रदान किया है फिर उनको खेल और मनोविनोद में छोड़ दे। मैंने यह इल्हाम अपनी उस जमाअत को जो गुरदासपुर में मेरे साथ थी जो चालीस लोगों से कम न होगी सुना दिया जिनमें मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए. और ख्वाजा कमालुद्दीन साहिब बी.ए. प्लीडर भी थे। तत्पश्चात् जब हम कचहरी में गए तो करमदीन के वकील ने मुझ से यही प्रश्न किया कि क्या आप की शान और आप का पद ऐसा है जैसा कि पुस्तक “तिरयाकुल कुलूब”^① में लिखा है। मैंने उत्तर दिया कि हां खुदा की कृपा से यही पद है। उसी ने यह पद मुझे प्रदान किया है। अतः वह इल्हाम जो खुदा की ओर से प्रातः काल हुआ था लगभग अस्त्र के समय पूरा हो गया और हमारी समस्त जमाअत के ईमान में वृद्धि का कारण हुआ।

119. एक सौ उन्नीस वां निशान - सन् 1900 ई. में ऐसा संयोग हुआ कि मेरे चचेरे भाइयों में से इमामुद्दीन नामक एक कट्टर विरोधी था। उसने एक उपद्रव पैदा किया कि हमारे घर के आगे एक दीवार खड़ी कर दी तथा दीवार ऐसे अवसर

① हाशिया:- यह भूल से लिखा गया है अभिप्राय “तोहफ़ा गोलड़विया” है क्योंकि हज़रत से प्रश्न “तोहफ़ा गोलड़विया” के बारे में पूछा गया था। हमारे पास मुकद्दमः की मिस्ल मुकद्दमः हकीम फ़ज़लदीन बनाम मौलवी अबुलफ़ज़ल मुहम्मद करमुद्दीन दबीर पुत्र नामालूम निवासी गांव भैं तहसील चकवाल, ज़िला जेहलम की सत्यापित नक़ल मौजूद है उसमें ये शब्द लिखित हैं - “तोहफ़ा गोलड़विया” मेरी पुस्तक है। 1, सितम्बर 1902 ई. को प्रकाशित हुई। पीर महरअली के मुकाबले पर लिखी है। यह पुस्तक सैफ़ चिशतियाई के उत्तर में नहीं लिखी गई।

प्रश्न - जिन लोगों की चर्चा का पृष्ठ 48 से 50 में उल्लेख है उसके चरितार्थ आप ही हैं ?

उत्तर - खुदा की कृपा और दया से मैं उसका चरितार्थ हूँ।” (संशोधक)

पर खड़ी की कि मस्जिद में आने-जाने का मार्ग अवरुद्ध हो गया और जो मेहमान मेरे बैठने के स्थान पर मेरे पास आते थे या मस्जिद में आते थे वे भी आने से रुक गए तथा मुझे और मेरी जमाअत को बहुत कष्ट पहुंचा जैसे कि हम घेराबन्द हो गए। विवश होकर दीवानी में मुन्शी खुदा बख्श साहिब ज़िला जज के यहां मुकद्दमा किया गया। जब मुकद्दमा किया जा चुका तो बाद में ज्ञात हुआ कि यह मुकद्दमा विजय-योग्य नहीं है और उसमें ये कठिनाइयाँ हैं कि जिस भूमि पर दीवार बनाई गई है उसके बारे में किसी पूर्व समय की मिस्ल के अनुसार सिद्ध होता है कि प्रतिपक्ष इमामुद्दीन हमेशा से उस पर कब्ज़ा रखता है तथा वास्तव में यह भूमि किसी अन्य भागीदार की थी जिसका नाम गुलाम जीलानी था, उसके अधिकार से निकल गई थी। अतः उसने इमामुद्दीन को उस भूमि का अधिकार रखने वाला समझ कर गुरदासपुर में दीवानी में मुकद्दमा किया था परन्तु विरोधी कब्ज़े के प्रमाण के कारण वह मुकद्दमा खारिज हो गया था। उस समय से इमामुद्दीन का कब्ज़ा चला आता है। अब इसी भूमि पर इमामुद्दीन ने दीवार बना दी है कि यह मेरी भूमि है। अतः मुकद्दमः के पश्चात् एक पुरानी मिस्ल के देखने से यह ऐसी न सुझलने वाली गुथी हमारे सामने आ गई थी जिस से स्पष्ट तौर पर विदित होता था कि हमारा दावा खारिज किया जाएगा क्योंकि जैसा कि मैंने वर्णन किया है एक पुरानी मिस्ल से यही सिद्ध होता था कि उस भूमि पर इमामुद्दीन का कब्ज़ा है। इस बड़ी कठिनाई को देखकर हमारे वकील ख्वाजा कमालुद्दीन ने हमें यह भी परामर्श दिया था कि उचित होगा कि इस मुकद्दमः में संधि की जाए अर्थात् इमामुद्दीन को स्वयं कुछ रुपया देकर सहमत कर लिया जाए। इसलिए मैंने विवश होकर इस प्रस्ताव को पसन्द कर लिया था किन्तु वह ऐसा मनुष्य नहीं था जो राज़ी होता उसे मुझ से बल्कि इस्लाम धर्म से एक व्यक्तिगत द्वेष था और उसे ज्ञात हो गया था कि उन पर मुकद्दमा चलाने का द्वार सर्वथा बन्द है, इसलिए वह अपनी चलपता में और भी बढ़ गया। अन्ततः हमने इस बात को खुदा तआला पर छोड़ दिया परन्तु जहां तक हमने और हमारे वकील ने विचार किया, सफलता

का कोई मार्ग न था क्योंकि पुरानी मिस्ल से इमामुद्दीन का ही कब्ज़ा सिद्ध होता था और इमामुद्दीन की नीयत यहां तक खराब थी कि हमारे घर के आगे जो मैदान था जिसमें हमारी जमाअत के यक्के ठहरते थे वहां हर समय झगड़ा करता और गालियाँ निकालता था और न केवल यह अपितु उसने यह भी इरादा किया था कि हमारा मुकद्दमा खारिज होने के पश्चात् हमारे घर के दरवाजों के सामने एक लम्बी दीवार बना दे ताकि हम क़ैदियों की भांति घेरे में आ जाएं और घर से बाहर न निकल सकें और न बाहर जा सकें। ये दिन बड़ी बेचैनी के दिन थे। यहां तक कि हम -

صَافَتْ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ^①

के चरितार्थ हो गए और बैठे-बैठे एक संकट सामने आ गया। अतः ख़ुदा के आगे दुआ की गई और उस से सहायता मांगी गई तब दुआ के पश्चात् निम्नलिखित इल्हाम हुआ तथा ये इल्हाम अलग-अलग समयों के नहीं अपितु एक ही बार और एक ही समय में हुआ। मुझे स्मरण है कि उस समय सय्यद फ़ज़ल शाह साहिब लाहौरी बिरादर सय्यद नासिर शाह साहिब ओवरसियर बारामूला, कश्मीर मेरे पैर दबा रहा था तथा दोपहर का समय था कि दीवार के मुकद्दमः के बारे में यह इल्हाम का क्रम आरंभ हुआ। मैंने सय्यद साहिब को कहा कि यह दीवार के मुकद्दमः के बारे में इल्हाम है। जैसे-जैसे यह इल्हाम होता जाए आप लिखते जाएं। अतः उन्होंने क़लम-दवात और कागज़ ले लिया। ऐसा हुआ कि हर बार ऊंघ की अवस्था होकर ख़ुदा की वह्यी का एक-एक वाक्य जैसा कि ख़ुदा का नियम है ज़बान पर उतरता था^② और जब एक वाक्य हो जाता तथा लिखा जाता था तो फिर

① सूरह अत्तौबः - 118

② हाशिया - ख़ुदा की वह्यी के उतरने के समय की ऊंघ भी एक विलक्षण बात है। यह शरीर के स्वाभाविक कारणों से उत्पन्न नहीं होती अपितु जहां तक आवश्यकताओं का सामान हो प्रत्येक आवश्यकता और दुआ के समय केवल ख़ुदा की कुदरत से तंद्रावस्था उत्पन्न हो जाती है। भौतिक साधनों का इसमें कुछ भी हस्तक्षेप नहीं होता।

ऊँघ की अवस्था हो जाती थी तो खुदा की वह्यी का दूसरा वाक्य ज़बान पर जारी होता था, यहां तक कि खुदा की वह्यी पूर्ण रूप से उतर कर सय्यद फ़ज़ल शाह साहिब लाहौरी की क़लम से लिखी गई तथा उसमें बोध हुआ कि यह उस दीवार के बारे में है जो इमामुद्दीन ने खड़ी की है जिसका मुकद्दमः अदालत में प्रस्तुत है और यह भी बोध हुआ कि अन्ततः इस मुकद्दमः में विजय होगी। अतः मैंने अपने बहुत से लोगों को खुदा की वह्यी सुना दी तथा उसके अर्थ और उसके उतरने के कारण से भी अवगत कर दिया, अखबार अलहकम में प्रकाशित कर दिया तथा सब को कह दिया कि यद्यपि मुकद्दमः अब खतरनाक और निराशा की अवस्था में है किन्तु अन्ततः खुदा तआला कुछ ऐसे साधन उत्पन्न कर देगा जिससे हमारी विजय होगी क्योंकि खुदा की वह्यी का सारांश यही था। अब हम खुदा की वह्यी को नीचे अनुवाद सहित लिखते हैं और वह यह है -

الرحى- تدورينزل القضاء- ان فضل الله لا ت وليس لا حدان يرد ما تي^①
 قل اي وربى انه لحق لا يتبدل ولا يخفى- وينزل ما تعجب منه وحى من
 رب السموات العلى- ان ربى لا يضل ولا ينسى- ظفر مبين- وانا يؤخرهم الى
 اجل مسسى- انت معى وانا معك- قل الله ثم ذره فى غيبه يتمطى- انه معك و
 انه يعلم السر وما يخفى- لا اله الا هو- يعلم كل شئ ويرى- ان الله مع الذين

शेष हाशिया - अतः इस से आर्य समाज वालों के धर्म का असत्य होना सिद्ध होता है क्योंकि वे मानव जीवन एवं समस्त रोगों का क्रम भौतिक कारणों तक ही सीमित रखते हैं, इसीलिए वे नास्ति से आस्ति होने को नहीं मानते तथा उनके निकट प्रत्येक वस्तु के प्रकट होने के लिए भौतिक साधनों का मौजूद होना आवश्यक है। अतः उससे यह भी सिद्ध होता है कि वे खुदा की वह्यी के भी इन्कारी हैं। इसी से

① बड़ी विचित्र बात है कि इल्हाम में शुभ-सन्देश फ़ज़ल (कृपा) के शब्द से आरंभ होता है तथा वह्यी के उतरने के समय जिसके हाथ से लिखाई गई थी उसका नाम भी फ़ज़ल है। इसी से।

اتَّقُوا وَالَّذِينَ هُمْ يَحْسِنُونَ الْحَسَنَى - اَنَا ارسلنا احمد الى قومه فاعرضوا و
قالوا كذابا شر - وجعلوا يشهدون عليه ويسيلون اليه كماء منهم - ان حبي
قريب - انه قريب مستتر -

अनुवाद - चक्की फिरेगी, खुदा की ओर से निश्चित प्रारब्ध उतरेगा अर्थात् मुकद्दमः का रूप परिवर्तित हो जाएगा जिस प्रकार कि चक्की जब घूमती है तो चक्की का सामने वाला भाग घूमने के कारण पर्दे में आ जाता है और वह भाग जो पर्दे में होता है वह सामने आ जाता है। तात्पर्य यह कि मुकद्दमः की वर्तमान स्थिति में मुकद्दमः की जो स्थिति निर्णयकर्ता की दृष्टि के सामने है जो हमारे लिए हानिकर एवं हानिप्रद है यह स्थिति क्रायम नहीं रहेगी तथा एक दूसरी स्थिति उत्पन्न हो जाएगी जो हमारे लिए लाभप्रद है। जैसा कि चक्की को घुमाने से चक्की का जो भाग मुख के सामने होता है वह पीछे चला जाता है और पीछे का भाग मुख के सामने आ जाता है इसी प्रकार जो बातें गुप्त और पर्दे में हैं वे सामने आ जाएंगी और प्रकट हो जाएंगी और जो प्रकट हैं वे गौण और गुप्त हो जाएंगी तत्पश्चात् कहा कि यह खुदा की कृपा है जिसका वादा दिया गया है यह अवश्य आएगी तथा किसी में शक्ति नहीं कि उसे रोक सके अर्थात् आकाश पर यह निर्णीत बात है कि मुकद्दमः की यह वर्तमान स्थिति जिस से निराशा और हताशा टपकती है सहसा उठा दी जाएगी तथा एक अन्य स्थिति प्रकट हो जाएगी जो हमारी सफलता के लिए लाभप्रद है जिसका अभी तक किसी को ज्ञान नहीं। पुनः कहा कि कह मुझे मेरे खुदा की सौगंध है कि यही बात सत्य है। इस बात में न कुछ अन्तर आया और न यह बात गुप्त रहेगी तथा एक बात पैदा हो जाएगी जो तुझे आश्चर्य में डालेगी। यह उस खुदा की वही है जो उच्च आकाशों का खुदा है। मेरा रब्ब उस सद्मार्ग को नहीं छोड़ता जो अपने चुने हुए बन्दों से अपना स्वभाव रखता है और वह अपने उन बन्दों को विस्मृत नहीं करता जो सहायता के योग्य हैं। इसलिए तुम्हें इस मुकद्दमः में स्पष्ट तौर पर विजय होगी किन्तु इस निर्णय में उस समय तक विलम्ब है जो खुदा ने निर्धारित कर रखा है। तू मेरे साथ है और मैं तेरे साथ हूँ। तू कह कि

प्रत्येक बात मेरे खुदा के अधिकार में है फिर उस विरोधी को उसकी पथभ्रष्टता और उसके अहंकार में छोड़ दे (यह वाक्य खुदा की वह्यी का एक सांत्वना देने का वाक्य है) क्योंकि जब हमारी नालिश के पश्चात् अधिकांश कानूनविद समझ गए थे यह दावा निराधार है अवश्य खारिज हो जाएगा तथा इमामुद्दीन प्रतिपक्ष को प्रत्येक दृष्टि से ये सूचनाएं मिल गई थीं कि कानून की दृष्टि से हमारी सफलता का मार्ग बन्द है। इस कारण उसका अहंकार बहुत बढ़ गया था तथा वह दावे के साथ कहता था कि वह मुकद्दमः शीघ्र ही खारिज हो जाएगा अपितु यही समझो कि खारिज हो गया। उपद्रवी लोगों ने उसका साथ दिया। अतः यह बात लगभग समस्त गावों में प्रसिद्ध हो गई थी कि इस मुकद्दमः को हमारे विरोधियों ने ऐसा समझ लिया है कि जैसे मुकद्दमः का फैसला उनके पक्ष में हो गया है। इसलिए यहां खुदा तआला कहता है कि क्यों इतने गर्व एवं उद्दण्डता का प्रदर्शन कर रहे हो। प्रत्येक बात खुदा तआला के अधिकार में है और वह प्रत्येक वस्तु पर समर्थ है, जो चाहे कर सकता है। पुनः मुझे सम्बोधित करके कहा कि वह सामर्थ्यवान तेरे साथ है उसे गुप्त बातों का ज्ञान है अपितु जो नितान्त गुप्त बातें हैं जो मानव-बोध से उच्चतर हैं उसे वे भी ज्ञात हैं। इस वह्यी के वाक्य का निष्कर्ष यह है कि यहां भी एक गुप्त बात है जो अब तक न मुझे ज्ञात है और न तुम्हारे वकील को और न उस निर्णय करने वाले को जिसकी अदालत में यह मुकद्दमः है। पुनः कहा कि वही खुदा वास्तविक उपास्य है उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। मनुष्य के लिए यह उचित नहीं है कि किसी अन्य पर भरोसा करे कि जैसे वह उसका उपास्य है। एक खुदा ही है जो अपने अन्दर यह विशेषता रखता है। वही है जिसे प्रत्येक वस्तु का ज्ञान है और जो प्रत्येक वस्तु को देख रहा है और वह खुदा उन लोगों के साथ होता है जो संयम से काम लेते हैं और उस से डरते हैं और जब कोई शुभ कार्य करते हैं तो वे शुभ कार्य को उसकी समस्त सूक्ष्मताओं के साथ अदा करते हैं, सरसरी तौर पर शुभ कर्म नहीं करते और न अपूर्ण तौर पर अपितु उस की सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों का पालन करते हैं तथा उसे भली भांति पूर्ण करते हैं इसलिए खुदा उन्हीं की

सहायता करता है क्योंकि वे उसके प्रिय मार्गों के सेवक होते हैं और उन पर चलते हैं और चलाते हैं। पुनः कहा कि हमने अहमद को अर्थात् इस विनीत को उसकी क्रौम की ओर भेजा। अतः क्रौम उस से विमुख हो गई तथा उन्होंने कहा कि यह तो महा झूठा है सांसारिक लोभ में ग्रस्त है अर्थात् ऐस-ऐसे बहानों से संसार प्राप्त करना चाहता है। उन्होंने अदालतों में उस पर साक्ष्यें दीं ताकि उसे गिरफ्तार करा दें और वे एक भीषण सैलाब की भांति जो ऊपर से नीचे की ओर आता है उस पर अपने आक्रमणों के साथ गिर रहे हैं परन्तु वह कहता है कि मेरा प्रिय मुझ से बहुत निकट है। वह निकट तो है किन्तु विरोधियों की दृष्टि से गुप्त है। यह भविष्यवाणी है जो उस समय की गई थी जबकि विरोधी दावे के साथ कहते थे कि निश्चय ही मुकद्दमा खारिज हो जाएगा तथा मेरे बारे में कहते थे कि हम उनके घर के समस्त दरवाजों के सामने दीवार बना कर वह दुःख देंगे कि जैसे वे जेल में बन्द हो जाएंगे। जैसा कि मैं अभी लिख चुका हूँ खुदा ने इस भविष्यवाणी में सूचना दी कि मैं एक ऐसी बात प्रकट करूँगा जिस से जो पराजित है वह विजयी और जो विजयी है वह पराजित हो जाएगा। यह भविष्यवाणी इतनी अधिक प्रकाशित की गई थी कि हमारी जमाअत के कुछ लोगों ने इसे कंठस्थ कर लिया था और सैकड़ों लोग इस से अवगत थे तथा आश्चर्य करते थे कि यह कैसे होगा। अतः कोई इस से इन्कार नहीं कर सकता कि यह भविष्यवाणी समय से पूर्व अपितु फैसले से कई माह पूर्व सार्वजनिक तौर पर प्रकाशित हो चुकी थी तथा अखबार 'अलहकम' में प्रकाशित होकर देश के सुदूर इलाकों में रहने वाले लोगों तक इस की सूचना पहुँच चुकी थी। तत्पश्चात् फैसले का दिन आया। उस दिन हमारे विरोधी बहुत प्रसन्न मुद्रा में थे कि आज मुकद्दमः को खारिज करने का आदेश सुनाया जाएगा तथा कहते थे कि आज से हर प्रकार का कष्ट देने का अवसर हमारे हाथ आ जाएगा। वही दिन था जिसमें भविष्यवाणी के अर्थ खुलने थे कि वह एक बात गुप्त है जिस से मुकद्दमः उलट जाएगा और अन्त में वह प्रकट की जाएगी। अतः संयोग ऐसा हुआ कि उस दिन हमारे वकील ख्वाजा कमालुद्दीन को विचार आया कि पुरानी मिस्ल का इन्डेक्स

देखना चाहिए अर्थात् परिशिष्ट (जमीमः) जिसमें आवश्यक आदेशों का सारांश होता है। जब वह देखा गया तो उसमें वह बात निकली जिसके निकलने की आशा न थी अर्थात् जज का सत्यापित यह आदेश निकला कि उस भूमि पर न केवल इमामुद्दीन का अधिकार है अपितु मिर्जा गुलाम मुर्तजा अर्थात् मेरे पिता जी भी कब्जा रखते हैं। अतः यह देखने से मेरे वकील ने समझ लिया कि हमारा मुकद्दमः विजयी हो गया। जज के पास यह वर्णन किया गया। उसने तुरन्त वह इन्डेक्स मंगाया और चूंकि देखते ही उस पर वास्तविकता खुल गई। इसलिए उसने अविलम्ब इमामुद्दीन पर भूमि के मुकद्दमः की खर्च सहित डिग्री कर दी। यदि वह कागज प्रस्तुत न होता तो अधिकृत जज इसके अतिरिक्त क्या कर सकता था कि मुकद्दमः को खारिज करता और अशुभचिन्तक शत्रु के हाथ से हमें कष्ट उठाने पड़ते। ये खुदा के कार्य हैं वह जो चाहता है करता है। यह भविष्यवाणी वास्तव में एक भविष्यवाणी नहीं वरन् दो भविष्यवाणियाँ हैं क्योंकि एक तो इसमें विजय का वादा है दूसरे एक गुप्त बात के प्रकट करने का वादा है जो सबकी दृष्टि से गुप्त था। और हम यहां बड़े हर्ष तथा खुदा की कृतज्ञता के साथ कहते हैं कि खुदा तआला के प्रारब्ध ने अधिकृत जज को भी इस भविष्यवाणी की सच्चाई का साक्षी बना दिया है जिस साक्ष्य से वह स्वयं को अलग नहीं कर सकता। यद्यपि हमारा धार्मिक विरोधी है अर्थात् शैख खुदा बरख्श ज़िला जज। क्योंकि वह साक्ष्य दे सकता है कि हमारे वकील ने कई पेशियों के बावजूद इस ठोस एवं शक्तिशाली तर्क को प्रस्तुत नहीं किया, केवल मुकद्दमः के अन्तिम समय पर मात्र खुदा की कृपा से यह गुत्थी खुली। अतः प्रत्येक व्यक्ति जो शैख खुदा बरख्श के फैसले को देखेगा उस पर तुरन्त प्रकट हो जाएगा कि एक लम्बे समय तक हमारा प्लीडर मात्र सुनी हुई साक्ष्यों से काम लेता रहा जो एक न्यायिक फैसले के सामने बहुत तुच्छ थीं क्योंकि इमामुद्दीन प्रतिपक्ष ने अपना विशेषाधिकार सिद्ध करने के लिए जिस मिस्ल को प्रस्तुत किया था उसमें तो केवल इमामुद्दीन का नाम था मेरे पिता श्री का नाम न था। इसमें रहस्य यह था कि भूमि के मूल स्वामी गुलाम जीलानी ने इमामुद्दीन पर ही

मुकद्दम: किया था तथा उसकी याचना पर प्रतिपक्ष केवल इमामुद्दीन ही लिखा था और फिर सूचना पाने के पश्चात् मेरे पिताश्री ने अपने मुख्तार के द्वारा प्रतिपक्ष में अपना नाम भी लिखवा दिया था, जिसका तात्पर्य यह था कि हम दोनों कब्जा रखते हैं। वे कागज़ किसी संयोग से नष्ट हो गए थे और दावे की याचना पर केवल इमामुद्दीन का नाम शेष रह गया था जिस से यह समझा जाता था कि भूमि पर केवल इमामुद्दीन का कब्जा है। अतः यही गुप्त रहस्य था जो हमें ज्ञात न था और जब खुदा तआला ने चाहा तो इन्डेक्स की सहायता से वह गुप्त वास्तविकता प्रकट हो गई। और जैसा कि भविष्यवाणी में है एक पल में चक्की घूम गई। स्पष्ट है कि चक्की के घूमने से चक्की का जो भाग आंख से छुपा होता है वह आंख के सामने आ जाता है और जो सामने होता है वह छुप जाता है। अतः यही हाल इस मुकद्दम: का हुआ अर्थात् इससे पूर्व जो कारण जज की दृष्टि के सामने थे अर्थात् यह कि दावेदार (वादी) गुलाम जीलानी ने अपने दावे को प्रस्तुत करने में केवल इमामुद्दीन का कब्जा प्रकट किया है। इन्डेक्स आने से ये कारण सर्वथा आधारहीन हो गए और चक्की की गुप्त ओर की भांति नवीन कारण दृष्टि के सामने आ गए। जिस गुप्त बात के प्रति इस भविष्यवाणी में खुदा तआला ने वादा किया था कि अन्ततः मैं प्रकट कर दूँगा वह प्रकट हो गया। बात यह है कि गुलाम जीलानी के वाद का मुकद्दम: एक पुराने समय का था जिस पर लगभग चालीस वर्ष गुज़र चुके थे, वह मुकद्दम: मेरे पिता श्री के समय का था। मुझे इसका कुछ ज्ञान न था और चूँकि वादी के वाद की लिखित याचना में केवल इमामुद्दीन का नाम प्रतिपक्ष लिखा गया था और शेष कागज़ नष्ट हो चुके थे तथा तीस वर्ष हो चुके थे जबकि मेरे पिता श्री तथा उनके पश्चात् मेरे बड़े भाई भी स्वर्गवासी हो चुके थे इसलिए इन गुप्त बातों की मुझे कुछ खबर न थी।

अतः विचार करना चाहिए कि यह कितनी महानतम भविष्यवाणी है जो खुदा की सहायता से की गई है। अब जो व्यक्ति ऐसी भविष्यवाणियों को भी झुठलाएगा तो हमें उसके इस्लाम का कुछ भला दिखाई नहीं देता। खेद कि ये लोग खुदा तआला

की सहायता को भी महत्त्व नहीं देते। एक वह युग था कि पादरी लोग केवल अपनी ईर्ष्या से ये व्यर्थ बातें करते थे कि पवित्र कुर्आन में कोई भविष्यवाणी नहीं और मुसलमान उलेमा उत्तर तो देते थे किन्तु सच बात तो यह है कि भविष्यवाणियों तथा विलक्षण चमत्कारों के इन्कारी का उत्तर देना उसी व्यक्ति का काम है जो भविष्यवाणी दिखा भी सके अन्यथा मात्र बातों से यह विवाद निर्णय नहीं पाता। अतः जबकि पादरियों द्वारा झुठलाया जाना चरम सीमा को पहुँच गया तो खुदा ने मुहम्मदी तर्कों को पूर्ण करने के लिए मुझे भेजा। अब कहां हैं पादरी ताकि मेरे मुकाबले पर आएँ। मैं कुसमय नहीं आया। मैं उस समय आया हूँ कि जब इस्लाम ईसाइयों के पैरों तले कुचला गया। हे आंखों के अन्धो ! तुम्हें सच्चाई का विरोधी बनना किस ने सिखाया ! धर्म नष्ट हो गया तथा बाह्य आक्रमणों तथा आन्तरिक विद्वत्तों ने धर्म के समस्त अंग घायल कर दिए और शताब्दी हिज्री में से भी तेईस वर्ष गुज़र गए तथा कई लाख मुसलमान इस्लाम छोड़ कर खुदा और रसूल के शत्रु बन गए किन्तु तुम कहते हो कि इस समय कोई खुदा की ओर से तो नहीं आया। हां दज्जाल आया। भला कोई पादरी तो मेरे समक्ष लाओ जो यह कहता हो कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई भविष्यवाणी नहीं की। स्मरण रखो कि वह युग मुझ से पूर्व ही गुज़र गया अब वह युग आ गया जिसमें खुदा यह प्रकट करना चाहता है कि वह रसूल **मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम** जिसे गालियां दी गईं जिसके नाम को अपमानित किया गया, जिसको झुठलाने में दुर्भाग्यशाली पादरियों ने इस युग में कई लाख पुस्तकें लिख कर प्रकाशित कर दीं। **वही सच्चा और सच्चों का सरदार है।** उसे स्वीकार करने में अत्यधिक इन्कार किया गया, किन्तु अन्ततः उसी रसूल को सम्मान के ताज से विभूषित किया गया। उसके दासों^① एवं

① इसके बारे में एक इल्हामी शे'र भी है जो यह है -

बरतर गुमानो वहम से अहमद^{म्} की शान है
जिसका गुलाम देखो मसीहुज्जमान है।

इसी से।

सेवकों में से एक मैं हूँ, जिससे खुदा वार्तालाप और सम्बोधन करता है तथा जिस पर खुदा के परोक्षों एवं चमत्कारों का द्वार खोला गया है। हे नादानो ! तुम कुफ़्र कहो या कुछ और कहो। तुम्हारे काफ़िर कहने की उस व्यक्ति को क्या परवाह है जो खुदा के आदेशानुसार धर्म की सेवा में व्यस्त है तथा स्वयं पर खुदा की अनुकम्पाओं को वर्षा के समान होते हुए देखता है। वह खुदा जो मरयम के बेटे के हृदय पर उतरा था, वही मेरे हृदय पर भी उतरा है किन्तु अपनी आभा और झलक में उस से अधिक। वह भी मनुष्य था और मैं भी मनुष्य हूँ। जिस प्रकार धूप दीवार पर पड़ती है किन्तु दीवार नहीं कह सकती कि मैं सूर्य हूँ। इसलिए हम दोनों इन झलकियों से स्वयं का कोई व्यक्तिगत सम्मान नहीं निकाल सकते, क्योंकि वह वास्तविक सूर्य कह सकता है कि मुझ से अलग होकर फिर देख कि तुझ में कौन सा सम्मान है। इसी प्रकार ईसा ने एक समय में तो यह कहा कि मैं खुदा का बेटा हूँ और दूसरे समय ईसाइयों के कथनानुसार शैतान के पीछे-पीछे फिरता रहा। यदि उस में वास्तविक प्रकाश होता तो यह आजमायश उसके सामने न आती। क्या शैतान खुदा की भी आजमायश कर सकता है। अतः चूँकि ईसा मनुष्य था इसलिए मानवीय आजमायशें उसके समक्ष आईं। ईसा की दुआओं में भी कोई शक्ति न थी केवल मनुष्य की भांति ही खुदा के दरबार में विनती एवं प्रार्थना थी। यही कारण है कि बाग़ वाली दुआ में वह इतना रोया कि उसके कपड़े आंसुओं से तर हो गए किन्तु इसके बावजूद ईसाई कहते हैं कि फिर भी वह दुआ स्वीकार न हुई परन्तु हम कहते हैं कि वह स्वीकार हो गई तथा खुदा ने उसको सलीब से बचा लिया और केवल यूनस की भांति क्रब्र में प्रविष्ट हुआ और यूनस की भांति जीवित ही प्रवेश किया और जीवित ही निकला। उसका रोना तथा उसकी आत्मा का आर्द्र होना मृत्यु के समान था। ऐसी दुआएं स्वीकार होती हैं जैसी इब्ने मरयम ने बाग़ में कीं।^①

① मुझे मालूम होता है कि हज़रत ईसा ने अपने सूली दिए जाने के बारे में कोई स्वप्न देखा होगा। इसलिए उनके हृदय में यह भय बैठ गया कि यदि मैं सूली दिया गया तो उपद्रवी यहूदी ला'नती होने का आरोप मुझ पर लगाएंगे। अतः इसी कारण उन्होंने

इस दरगाह बुलन्द में आसों नहीं दुआ
जो मंगे सो मर रहे मरे सो मंगन जा

120. एक सौ बीसवां निशान - अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर के बारे में खुदा ने मेरे लिए एक निशान प्रकट किया था। चूँकि इस निशान के प्रथम साक्षी मुफ्ती मुहम्मद सादिक साहिब एडीटर अखबार 'बद्र' हैं। इसलिए उन्हीं के हाथ का लिखा पत्र नीचे लिखा जाता है और वह यह है :-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

हज़रत अक़दस हमारे मुर्शिद और महदी मसीह मौऊद व महदी मा 'हूद वस्सलातो वस्सलाम अलैकुम वरहमतुल्लाहे व बरकातुहू

मान्यवर ! मुझे जो कुछ मालूम है सेवा में प्रस्तुत करता हूँ और वह यह कि जब पुस्तक "उम्माहातुल मोमिनीन" ईसाइयों की ओर से अप्रैल 1898 ई. में प्रकाशित हुई थी तो अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर के सदस्यों ने सरकार में इस विषय का मैमोरियल भेजा था कि इस पुस्तक का प्रकाशन बन्द किया जाए तथा उसके लेखक से जिसने ऐसी गन्दी पुस्तक लिखी है पूछ-ताछ हो। उन दिनों में यह विनीत लाहौर में एकाउन्टेण्ट जनरल के कार्यालय में कर्मचारी था तथा दो-चार दिन के लिए किसी अवकाश पर क़ादियान आया हुआ था जबकि आपकी सेवा में उनके मैमोरियल की चर्चा की गई। मुझे भली प्रकार स्मरण है कि आप बहुत से लोगों के साथ जिनमें हज़रत मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए. भी थे बाग़ की ओर सैर करने जा रहे थे, तब आपने कहा कि यह बात अंजुमन ने ठीक नहीं की। हम इस मैमोरियल के कठोर विरोधी हैं। अतः आप ने इस विरोध को

गिड़गिड़ाकर दुआ की और वह दुआ स्वीकार हो गई और खुदा ने उस प्रारब्ध को इस प्रकार परिवर्तित कर दिया कि कहने के लिए सूली पर चढ़ाए गए, क़ब्र में भी प्रविष्ट किए गए परन्तु यूनस की भांति जीवित ही क़ब्र में दाखिल हुए और जीवित ही निकले। नबी बहादुर होते हैं। निर्लज्ज यहूदियों का उन्हें भय न था। इसी से

अपने एक पत्र में जो मैमोरियल के रूप में सरकार की सेवा में भेजा था। स्पष्ट तौर पर 4 मई 1898 ई. को प्रकाशित भी कर दिया था जिस पर अंजुमन वालों ने बहुत शोर मचाया तथा अखबारों में आपके विरुद्ध लेख प्रकाशित किए। उन्हीं दिनों में जब आप सैर करने गए तो आपने कहा था कि हमें अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर की इस कार्यवाही के सम्बन्ध में इल्हाम हुआ है कि -

سَتَذْكُرُونَ مَا أَقُولُ لَكُمْ - وَأَفْوُضُ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ

और उसके अनुवाद एवं समझने में आपने कहा कि शीघ्र ही अंजुमन वाले मेरी बात को स्मरण करेंगे कि इस उपाय को करने में असफलता है तथा जिस बात को हमने अपनाया है अर्थात् विरोधियों के आरोपों का खण्डन करना तथा उनका उत्तर देना। इस बात को खुदा तआला को सौंपता हूँ अर्थात् खुदा मेरे काम का रक्षक होगा किन्तु वह इरादा जो अंजुमन वालों ने किया है कि “उम्माहातुल मोमिनीन” के लेखक को दण्ड दिलाएं। इसमें उन्हें कदापि सफलता न होगी तथा बाद में उन्हें याद आएगा कि जो समय से पूर्व बताया गया था वह यथार्थ और उचित था। उस इल्हाम को सुनने के एक-दो दिन पश्चात् जब मैं वापस लाहौर गया तो सामान्यतः मस्जिद गुम्टी बाजार लाहौर में एक जल्सा किया गया। उस जल्से में यह विनीत अपनी क्रादियान-यात्रा की रिपोर्ट सुना रहा था। अतः आपका यह इल्हाम और उसकी व्याख्या लोगों के बहुत बड़े समूह को सुनाई गई और अभी मैं सुना ही चुका था कि एक व्यक्ति ने सूचना दी कि अंजुमन को लेफ्टीनेन्ट गवर्नर की ओर से उत्तर आ गया है तथा उनका मैमोरियल अस्वीकृत हुआ है तथा कथित लेखक “उम्माहातुल मोमिनीन” किसी कानून की पकड़ में नहीं आ सकता। अतः इस सूचना का सुनना समस्त उपस्थित लोगों के लिए ईमान में वृद्धि का कारण हुआ और सब ने खुदा तआला के अद्भुत कार्यों पर उसकी प्रशंसा की।

(लेखक) आपकी जूतियों का दास - मुहम्मद सादिक

121. एक सौ इक्कीसवां निशान - जिन दिनों में 4 अप्रैल 1905 ई. का भूकम्प आया था, उस समय चूँकि खुदा तआला की ओर से मुझे सूचना मिली थी

कि इसी भूकम्प पर बस नहीं और भी भूकम्प आएंगे। इसलिए मैं हित को दृष्टिगत रखते हुए परिवार तथा अपनी जमाअत के अधिकतर लोगों सहित बाग़ में चला गया था तथा वहां एक बड़े मैदान में दो तम्बू लगा कर हम गुज़ारा करते थे। उन्हीं दिनों में मेरे घर के लोग बहुत बीमार हो गए थे। किसी समय भी ज्वर नहीं छोड़ता था तथा खांसी साथ थी। मेरे वफादार मित्र मौलवी हकीम नूरदीन साहिब उपचार करते थे किन्तु लाभ महसूस न होता था। नौबत यहाँ तक पहुँची उठने-बैठने से असमर्थ हो गया चारपाई पर बैठाकर सायंकाल स्त्रियाँ तम्बू में ले जाती थीं और प्रातःकाल चारपाई पर बाग़ में ले आती थीं। और दिन प्रतिदिन शरीर निर्बल होता जाता था। अन्ततः मैंने पूरी तल्लीनता से दुआ की तब इल्हाम हुआ -

اِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِيْنِ

अर्थात् मेरा रब्ब मेरे साथ है वह मुझे शीघ्र बता देगा कि रोग क्या है और उपचार क्या है। इस इल्हाम के कुछ मिनट पश्चात् ही मेरे हृदय में डाला गया कि यह रोग यकृत की गर्मी के कारण है तथा हृदय में डाला गया कि पुस्तक “शिफ़ाउल इस्क्राम” का नुस्खा इसके लिए लाभप्रद होगा। अतः वह नुस्खा बनाया गया और वे गोलियाँ थीं। जब तीन चार गोलियाँ खाई गईं तो एक दिन प्रातः काल मैंने स्वप्न में देखा कि अब्दुर्हमान नामक एक व्यक्ति हमारे मकान में आया है और वह खड़ा होकर कहता है कि ज्वर टूट गया। खुदा की यह अद्भुत शक्ति है कि एक ओर यह स्वप्न देखा तथा दूसरी ओर जब मैंने नाड़ी देखी ते ज्वर का नामोनिशान न था। फिर यह इल्हाम हुआ -

تو در منزل ما چو بار بار آئی

خدا ابر رحمت ببارید یانے

अनुवाद - ऐ मेरे बन्दे ! तू मेरी बारगाह में बार-बार आता है इसलिए अब तू स्वयं देख ले कि तुझ पर दया की बारिश हुई या नहीं।

इस भविष्यवाणी की भी एक जमाअत साक्षी है जिसकी इच्छा हो ज्ञात कर ले।

122. एक सौ बाईस वां निशान - तीस वर्ष के लगभग समय हुआ है कि

एक बार मैंने स्वप्न में देखा कि एक ऊँचा चबूतरा है जो दूकान जैसा है और कदाचित्त उस पर छत भी है। उसमें एक अत्यन्त सुन्दर लड़का बैठा है जो लगभग सात वर्ष की आयु का था। मेरे हृदय में विचार आया कि यह फ़रिश्ता है। उसने मुझे बुलाया या मैं स्वयं गया यह याद नहीं परन्तु जब मैं उसके चबूतरे के पास जाकर खड़ा हुआ तो उसने एक नान जो बहुत उत्तम था और चमक रहा था और बहुत बड़ा था जैसे चार नान के बराबर था अपने हाथ में पकड़ कर मुझे दिया और मुझे कहा कि यह नान लो। यह तुम्हारे लिए और तुम्हारे साथ के दरवेशों के लिए है। अतः दस वर्ष के पश्चात् इस स्वप्न का प्रकटन हो गया। यदि कोई हृदय की शुद्धता से कोई क्रादियान में आकर रहे तो उसे मालूम होगा कि वही रोटी जो फ़रिश्ते ने दी थी दो समय हमें ख़ुदा से मिलती है। कई परिवार वाले दो समय यहां से रोटी खाते हैं, कई अंधे और विकलांग और दरिद्र दो समय इस लंगरखाना से रोटी ले जाते हैं तथा हर ओर से अतिथि आते हैं तथा प्रतिदिन रोटी खाने वालों की औसत संख्या दो सौ, कभी तीन सौ और कभी अधिक होती है जो दो समय इस लंगर से रोटी खाते हैं तथा अतिथि सत्कार के अन्य व्यय अलग हैं और औसत व्यय बहुत मितव्ययता के साथ पन्द्रह सौ रुपए मासिक होता है किन्तु अन्य भी कई फुटकर व्यय हैं जो इसके अतिरिक्त हैं। यह ख़ुदा का चमत्कार मैं बीस वर्ष से देख रहा हूँ कि हमें ख़ुदा से वह रोटी मिलती है और नहीं मालूम होता कि कल कहां से आएगी परन्तु आ जाती है। हज़रत ईसा के हवारियों की तो यह दुआ थी कि हे ख़ुदा! हमें आज जी रोटी दे परन्तु दयालु ख़ुदा हमें बिना दुआ के प्रतिदिन की रोटी दे रहा है और जैसा कि फ़रिश्ते ने कहा था कि यह रोटी तुम्हारे लिए और तुम्हारे साथ के दरवेशों के लिए है। इसी प्रकार दयालु ख़ुदा मुझे और मेरे साथ के दरवेशों को प्रतिदिन अपनी ओर से यह दा'वत भेजता है। अतः प्रतिदिन उसकी नई दा'वत हमारे लिए एक नया निशान है।

123. एक सौ तेईसवां निशान - एक हिन्दू सज्जन क्रादियान में मेरे पास

आए जिनका नाम स्मरण नहीं^① रहा और कहा कि मैं एक धार्मिक अधिवेशन^② करना चाहता हूँ। आप भी अपने धर्म की विशेषताओं के बारे में कुछ निबंध लिखें ताकि इस महोत्सव में पढ़ा जाए। मैंने विवशता प्रकट की परन्तु उसने बहुत आग्रह किया कि आप अवश्य लिखें। चूँकि मैं जानता हूँ मैं अपनी व्यक्तिगत शक्ति से कुछ भी नहीं कर सकता वरन् मुझ में कोई शक्ति नहीं। मैं खुदा के बुलाए बिना बोल नहीं सकता और उसके दिखाने के बिना देख नहीं सकता। इसलिए मैंने खुदा के दरबार में दुआ की कि वह मुझे ऐसे विषय का इल्का करे (मेरे हृदय में डाले - अनुवादक) जो इस महोत्सव के समस्त व्याख्यानों से श्रेष्ठ रहे। मैंने दुआ के पश्चात् देखा कि मेरे अन्दर एक शक्ति फूंक दी गई है। मैंने उस आकाशीय शक्ति की एक गति अपने अन्दर महसूस की तथा मेरे मित्रगण जो उस समय उपस्थित थे जानते हैं कि मैंने इस विषय का कोई मसौदा नहीं लिखा। जो कुछ लिखा केवल बिना सोचे समझे लिखा था और मैं ऐसी शीघ्रता से लिखता जाता था कि नक़ल करने वाले के लिए कठिन हो गया कि इतनी शीघ्र उसकी नक़ल लिखे। जब मैं लेख समाप्त कर चुका तो खुदा तआला की ओर से यह इल्हाम हुआ कि लेख श्रेष्ठ रहा। निष्कर्ष यह कि जब वह लेख उस महोत्सव में पढ़ा गया तो उसके पढ़ने के समय श्रोतागण बेसुध थे तथा हर ओर से प्रशंसा की आवाज़ थी, यहां तक कि एक हिन्दू सज्जन जो उस महोत्सव के अध्यक्ष पद पर विराजमान थे उनके मुख से भी निःसंकोच निकल गया कि यह लेख^③ समस्त लेखों से श्रेष्ठ रहा और

① याद आया उसका नाम स्वामी शिवगुण चन्द्र था। इसी से।

② इस अधिवेशन का नाम “धर्म महोत्सव” जल्सा-ए-आज़म मज़ाहिब प्रसिद्ध किया गया था। इसी से।

③ लेख चूँकि विज्ञापन में दिए पांच प्रश्नों के प्रत्येक पहलू के बारे में था इसलिए उसे पढ़ने के लिए निर्धारित समय पर्याप्त न था। इसलिए समस्त उपस्थित सज्जनों के हार्दिक अनुरोध पर उसे पढ़ने के लिए एक दिन और बढ़ाया गया। यह भी सार्वजनिक मान्यता का निशान है। इसी से।

सिविल एण्ड मिलिट्री गजट जो लाहौर से अंग्रेजी में एक अखबार निकलता है। उसने भी साक्ष्य के तौर पर प्रकाशित किया कि यह लेख सर्वश्रेष्ठ रहा और कदाचित बीस के लगभग ऐसे उर्दू अखबार भी होंगे जिन्होंने यही साक्ष्य दी तथा इस महोत्सव में कुछ ईर्ष्यालु लोगों के अतिरिक्त समस्त लोगों के मुहों पर यही था कि यही लेख विजयी हुआ। आज तक सैकड़ों ऐसे लोग मौजूद हैं जो यही साक्ष्य दे रहे हैं। अतः प्रत्येक सम्प्रदाय की साक्ष्य तथा अंग्रेजी अखबारों की साक्ष्य से मेरी भविष्यवाणी पूरी हो गई कि लेख श्रेष्ठ रहा। यह मुकाबला उस मुकाबले के सदृश था जो मूसा नबी को जादूगरों के साथ करना पड़ा था क्योंकि इस महोत्सव में भिन्न-भिन्न विचारधारा रखने वाले लोगों ने अपने-अपने धर्म के बारे में व्याख्यान दिए थे, जिन में से कुछ ईसाई थे, कुछ सनातन धर्म के हिन्दू कुछ आर्य समाज के हिन्दू कुछ ब्रह्म, कुछ सिख और कुछ हमारे विरोधी मुसलमान थे। सबने अपनी-अपनी लाठियों के काल्पनिक सांप बनाए थे, परन्तु जब ख़ुदा ने मेरे हाथ से इस्लामी सच्चाई का असा (डंडा) एक पवित्र एवं आध्यात्म ज्ञानों से भरपूर व्याख्यायित शैली में उनके मुकाबले पर छोड़ा तो वह अजगर बनकर सब को निगल गया तथा लोगों में आज तक मेरे उस व्याख्यान की प्रशंसा के साथ चर्चा है जो मेरे मुख से निकली थी। इस पर ख़ुदा की प्रशंसा एवं आभार।

124. एक सौ चौबीसवां निशान - बराहीन अहमदिया लिखने के समय में जबकि लोगों का मेरी ओर आने में कुछ रुझान न था और न संसार में ख्याति थी। रुपयों की नितान्त आवश्यकता का सामना था। इसके लिए मैंने दुआ की तो यह इल्हाम हुआ -

दस दिन के पश्चात् मैं मौज दिखाता हूँ

أَلَا إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ - فِي شَأْنِ مَقْيَاسٍ

Then will you go to Amritsar

अर्थात् दस दिन के पश्चात् रुपया अवश्य आएगा इस से पूर्व कुछ नहीं आएगा। ख़ुदा की सहायता निकट है तथा जिस प्रकार ऊँटनी बच्चा जनने के लिए जब पूँछ

उठाती है तब उसके बच्चे का प्रजनन निकट होता है इसी प्रकार खुदा की सहायता भी निकट है। (फिर अंग्रेजी वाक्य में यह कहा कि) दस दिन के पश्चात् जब रुपया आएगा तब तुम अमृतसर भी जाओगे। मैंने यह भविष्यवाणी तीन हिन्दुओं अर्थात् शरमपत, मलावामल तथा बिशन दास को जो आर्य हैं, सुना दी और उन्हें कह दिया कि स्मरण रखो कि यह रुपया डाक द्वारा आएगा और दस दिन तक डाक के द्वारा कुछ भी नहीं आएगा तथा इन हिन्दुओं के अतिरिक्त अन्य बहुत से मुसलमानों को यह भविष्यवाणी समय से पूर्व सुना दी और भली भांति प्रसिद्ध कर दी, क्योंकि इस भविष्यवाणी में दो पहलू बहुत विचित्र थे। एक यह कि निश्चित तौर पर आदेश दिया गया था कि दस दिन तक कुछ नहीं आएगा और ग्यारहवें दिन अविलम्ब रुपया आएगा। दूसरा विचित्र पहलू यह था कि रुपया आने के साथ ही ऐसा संयोग होगा कि तुम्हें अमृतसर जाना होगा। अतः खुदा की कुदरत का यह विचित्र नमूना प्रकट हुआ कि इल्हाम के दिन से दस दिन तक एक पैसा भी न आया और उपरोक्त आर्य लोग प्रतिदिन डाकखाने जाकर पूछ-ताछ करते रहे तथा उन दिनों डाकखाने का सब पोस्टमास्टर भी हिन्दू था। जब ग्यारहवां दिन आया तो इन आर्यों के लिए एक विचित्र तमाशे का दिन था और वे बड़ी प्रसन्नता से इस बात के इच्छुक थे कि यह भविष्यवाणी झूठी निकले। अतः उनमें से कुछ डाकखानों में गए और शोकग्रस्त मुद्रा लिए वापस लौटे और वर्णन किया कि आज मुहम्मद अफ़ज़ल खान नामक एक बन्दोबस्त सुप्रिन्टेन्डेन्ट रावलपिण्डी ने एक सौ दस रुपए भेजे हैं और इसी प्रकार एक अन्य व्यक्ति ने बीस रुपए भेजे। निष्कर्ष यह कि उस दिन एक सौ तीस रुपए आए, जिन से वह कार्य पूर्ण हो गया जिसके लिए आवश्यकता थी और उसी दिन जबकि यह रुपया आया अमृतसर की निचली अदालत से एक गवाही देने के लिए मेरे नाम सम्मन आ गया और जैसा कि मैंने वर्णन किया इस भविष्यवाणी के पूर्ण होने का एक समूह साक्षी है तथा उसकी इस प्रकार भी पुष्टि हो सकती है कि क्रादियान के डाकखाने का रजिस्टर देखा जाए तो जिस दिन यह एक सौ तीस रुपए आए हैं उस दिन से दस दिन पूर्व की तिथियों

में रजिस्टर में एक पैसे का मनीआर्डर भी मेरे नाम नहीं पाओगे। और फिर यदि उसी अमृतसर की निचली अदालत की तिथि के दफ्तर में तलाश करोगे तो उसमें एक व्यक्ति पादरी रजब अली नाम के मुकद्दमे में मेरा इकरार मिसिल के साथ पाओगे। यह 1884 ई. का निशान है। इसी पते से डाकखाने का रजिस्टर देखा जा सकता है और इसी पते से अमृतसर की निचली अदालत में मेरे इकरार का पता लग सकता है और यदि हिन्दू गवाह इन्कार करें तो शपथ देने से वे सच-सच वर्णन कर सकते हैं और जबकि यह भविष्यवाणी बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 469 तथा पृष्ठ 470 में लिखित है और इन आर्यों का हवाला दिया गया है। अतः बुद्धिमान विचार कर सकता है कि यदि वे लोग इस भविष्यवाणी के चश्मदीद गवाह नहीं थे तो कट्टर विरोधी होने के बावजूद इस समय तक उनका खामोश रहना बुद्धि स्वीकार नहीं कर सकती। वे उस युग से कि जब ईस्वी सन् 1884 था इस जमाना तक कि अब 1906 ई. है बावजूद इस बात का ज्ञान होने के कि बार बार पुस्तकों एक विज्ञापन में उनके नाम बतौर साक्ष्य होने के हम लिख रहे हैं क्यों खामोश रहो। उनका अधिकार था कि उन समस्त साक्ष्यों को झुठलाते जो बराहीन अहमदिया में उनके बारे में लिखी हैं। याद रहे कि तीन हिन्दुओं की गवाहियां बराहीन-ए-अहमदिया में भविष्यवाणियों के विषय में उल्लेखित हैं। सर्वप्रथम लाला शरमपत खत्री दूसरा लाला मलावामल खत्री तीसरा विशनदास ब्राह्मण है। बराहीन अहमदिया की प्रत्येक इबारत के आर्यों से अभिप्राय यही लोग हैं। अन्य स्थानों पर कुछ और भी हैं। इस भविष्यवाणी में एक अंग्रेजी वाक्य है वह भी मेरे लिए बतौर निशान के है क्योंकि मैं अंग्रेजी बिल्कुल नहीं जानता। अतः इस भविष्यवाणी को खुदा तआला ने उर्दू, अरबी और अंग्रेजी में वर्णन करके हर प्रकार से उसके उद्देश्य को स्पष्ट कर दिया है और यह एक बड़ा निशान है किन्तु उनके लिए जिन के नेत्रों पर धार्मिक पक्षपात का आवरण नहीं।

125. एक सौ पच्चीसवां निशान - स्पष्ट हो कि भयावह और वैभवशाली निशानों में से एक पंडित लेखराम की मृत्यु का निशान है जिस की आधारभूत

भविष्यवाणी का उद्गम मेरी पुस्तकें बरकातुद्दुआ, करामातुस्सादिक्रीन तथा आईना कमालात-ए-इस्लाम हैं, जिन में घटना पूर्व सूचना दी गई थी कि लेखराम क्रल्ल द्वारा छः वर्ष के अन्दर इस संसार से कूच कर जाएगा। उसके क्रल्ल का दिन ईद से दूसरा दिन होगा अर्थात् शनिवार का दिन और यह इसलिए निर्धारित किया गया ताकि ईद का दिन जो जुमा था इस बात को प्रमाणित करे कि जिस दिन मुसलमानों के घर में दो ईदें होंगी, उससे दूसरे दिन आर्यों के घर में दो मातम (शोक) होंगे।^① यह भविष्यवाणी न केवल मेरी पुस्तकों में लिखित है अपितु लेखराम ने स्वयं अपनी पुस्तक में नकल करके अपनी जाति में इस भविष्यवाणी को समय से पूर्व ख्याति दे दी थी और इस भविष्यवाणी के मुकाबले पर उसने अपनी पुस्तक में मेरे बारे में यह लिखा कि मेरे परमेश्वर ने मुझे यह इल्हाम किया है कि यह व्यक्ति (अर्थात् यह विनीत) तीन वर्ष के अन्दर हैजा से मर जाएगा, क्योंकि महा झूठा है।^② लेखराम का यह तीन वर्षीय इल्हाम ऐसा ही था जैसा कि अब मेरी मृत्यु के बारे में अब्दुल हकीम खान का तीन वर्षीय इल्हाम प्रकाशित किया है। अतः मेरी यह भविष्यवाणी लेखराम के मुकाबले पर थी और बतौर मुबाहला के थी। और लेखराम की वे पुस्तकें अब तक मौजूद हैं और आर्यों में बहुत प्रसिद्ध हैं जिन में लेखराम ने अपने परमेश्वर की ओर सम्बद्ध करके वह भविष्यवाणी लिखी है। इसी प्रकार मेरी भविष्यवाणी भी जिसमें लेखराम की मृत्यु के बारे में छः वर्ष निर्धारित

① लेखराम शनिवार के दिन क्रल्ल किया गया था और जुमा के दिन ईदुल फित्र थी और जुमा स्वयं इस्लाम में ईद का दिन है मानो यह इस बात की ओर संकेत था कि लेखराम के क्रल्ल से पहले दिन मुसलमानों की दो ईदें होंगी और उन दो ईदों के दूसरे दिन आर्यों के घर में दो मातम होंगे। एक यह कि उनका लीडर मारा गया दूसरे यह कि हमारी भविष्यवाणी पूर्ण होकर उनके धर्म का असत्य होना सिद्ध हुआ। इसी से।

② देखो 'तक्रज़ीब बराहीन अहमदिया पृष्ठ 307 तथा 311 और 'कुल्लियात आर्य मुसाफिर' पृष्ठ 501 जिसमें यह भी लिखा है कि तीन वर्ष के अन्दर आप का अन्त होगा और आपकी सन्तान में से कोई शेष न रहेगा। इसी से।

किए गए थे, कई लाख लोगों में प्रसिद्धि पा चुकी थी। अतः पुस्तक 'करामातुस्सादिकीन' प्रकाशित माह सफर 1311 हिज्री में यह भविष्यवाणी लिखी गई और वह अरबी पुस्तक है जिसका अनुवाद यह है कि लेखराम के बारे में मेरी दुआ स्वीकार करके मुझे यह सूचना दी है कि वह छः वर्ष के अन्दर मृत्यु का शिकार होगा और उस का अपराध यह है कि वह खुदा के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियाँ देता था और बुरे शब्दों के साथ अपमान करता था। यह पुस्तक लेखराम की मृत्यु से पांच वर्ष पूर्व पंजाब और हिन्दुस्तान में खूब प्रकाशित हो गई थी और फिर 22 फरवरी 1893 ई. के विज्ञापन में जो मेरी पुस्तक "आईना कमालात-ए-इस्लाम" के साथ संलग्न है लेखराम की मृत्यु से कई वर्ष पूर्व स्पष्ट तौर पर मैंने यह भविष्यवाणी की थी कि लेखराम सामिरी के गाय के बछड़े के समान टुकड़े-टुकड़े किया जाएगा। इसमें यह संकेत था कि जैसा कि सामिरी का गाय का बछड़ा शनिवार के दिन टुकड़े-टुकड़े किया गया था यही हाल लेखराम का होगा और यह उसके वध की ओर संकेत था। अतः लेखराम शनिवार के दिन वध किया गया। और उन दिनों में शनिवार से पहले जुमा के दिन मुसलमानों की ईद हुई थी। इसी प्रकार सामिरी का बछड़ा भी शनिवार के दिन टुकड़े-टुकड़े किया गया था और वह यहूदियों की ईद का दिन था। और सामिरी के बछड़े के टुकड़े-टुकड़े करने के पश्चात् जलाया गया था, ऐसा ही लेखराम टुकड़े-टुकड़े करने के पश्चात् जलाया गया, क्योंकि प्रथम वध करने वाले ने उसकी आंतों को टुकड़े-टुकड़े किया, फिर डाक्टर ने उसके घाव को और अधिक खोला और अन्ततः जलाया गया और फिर सामिरी के बछड़े की भांति उसकी हड्डियाँ दरिया में डाली गईं और खुदा तआला ने सामिरी के बछड़े से उसको उपमा इसलिए दी कि वह बछड़ा केवल निर्जीव था और इस युग के उन खिलौनों की भांति था जिन का बटन दबाने से आवाज़ निकलती है। इसी प्रकार उस बछड़े में से एक आवाज़ निकलती थी। अतः खुदा तआला का कथन है कि वास्तव में लेखराम निष्प्राण था, उसमें आध्यात्मिक जीवन नहीं आया था और उसकी आवाज़ सामिरी के बछड़े

की भांति थी, सच्चा ज्ञान और खुदा तआला से सच्चा सम्बन्ध एवं सच्चा प्रेम उसे प्राप्त नहीं था। यह आर्यों का दोष था कि उस निष्प्राण को जिसमें आध्यात्मिक आत्मा न थी और निष्प्राण मात्र था उस स्थान पर खड़ा कर दिया जिस पर कोई जीवित मनुष्य खड़ा होना चाहिए था। इसलिए उसका अन्त सामिरी के बछड़े की भांति हुआ।

इस भविष्यवाणी के समय कुछ अखबार वालों ने भी मुझ पर आक्रमण किए। अतः अखबार अनीस हिन्द मेरठ दिनांक 25 मार्च 1893 ई. में कथित अखबार के एडीटर ने भी एक आक्रमण किया और वह यह था कि यदि लेखराम को थोड़ा सा सिर दर्द या ज्वर आया तो कह दिया जाएगा कि भविष्यवाणी पूरी हो गई। मैंने इसके उत्तर में “बरकातुद्दुआ” में लिखा कि यदि ऐसी कोई साधारण बात हुई तो मैं दण्डनीय ठहरूँगा किन्तु यदि भविष्यवाणी इस प्रकार से प्रकट हुई कि जिस में खुदा के महा प्रकोप का निशान साफ-साफ दिखाई दे तो फिर समझो कि खुदा तआला की ओर से है। यह उत्तर “बरकातुद्दुआ” के प्रथम पृष्ठ में ही प्रकाशित किया गया था। चाहो तो देख लो।

और यह बात कि किन भविष्यवाणियों से सिद्ध होता है कि वह वध किया जाएगा। अतः स्पष्ट हो कि वे तीन हैं -

प्रथम - एक भविष्यवाणी कि जो पुस्तक ‘बरकातुद्दुआ’ में लेखराम के जीवन में ही प्रकाशित की गई थी वह उस के वध की स्पष्ट तौर पर सूचना देती है और वह यह है -

عجلُ جسدُ خوارٍ له نصبٌ وعذاب

अर्थात् लेखराम सामिरी का बछड़ा है जो निष्प्राण है और उसमें एक आवाज़ मात्र है जिसमें आध्यात्मिकता नहीं। इसलिए उसे वह अज्ञाब दिया जाएगा जो सामिरी के बछड़े को दिया गया था और प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि सामिरी का बछड़ा टुकड़े-टुकड़े किया गया था और फिर जलाया गया और फिर दरिया में डाला गया था। अतः इस भविष्यवाणी में अत्यन्त स्पष्ट तौर पर लेखराम के वध

की ओर संकेत है क्योंकि उसके लिए वह अज्ञात निर्धारित किया गया है जो सामिरी के बछड़े के लिए निर्धारित किया गया था।

द्वितीय - भविष्यवाणी जो लेखराम के वध की सूचना देती है वह एक कश्फ़ है जो पुस्तक 'बरकातुद्दुआ' के हाशिए पर लिखी गई है। उसकी इबारत यह है कि 2 अप्रैल 1893 ई. को मैंने देखा कि एक व्यक्ति शक्तिशाली देवकाय भयावह रूप वाला जैसे उसके चेहरे से रक्त टपकता है मानो वह मनुष्य नहीं वरन् महाक्रूर और कठोरतम व्यवहार करने वाले फ़रिश्तों में से है वह मेरे सामने आकर खड़ा हो गया, उसका भय हृदयों पर व्याप्त था। मैं उसे देखता था कि एक खूनी व्यक्ति के रूप में है। उसने मुझ से पूछा कि लेखराम कहां है तथा एक अन्य व्यक्ति का नाम लिया और कहा वह कहां है ?^① तब मैंने समझ लिया कि यह व्यक्ति लेखराम और उस दूसरे को दण्ड देने के लिए नियुक्त किया गया है। देखिए 'बरकातुद्दुआ' का टाइटल पेज प्रकाशित अप्रैल 1893 ई.। तत्पश्चात् 6 मार्च 1897 ई. में लेखराम का वध द्वारा अन्त हुआ और उसकी मृत्यु से लगभग पांच वर्ष पूर्व यह कश्फ़ पुस्तक 'बरकातुद्दुआ' में प्रकाशित किया गया था। स्मरण रहे कि लेखराम के मारे जाने की भविष्यवाणी केवल भविष्यवाणी नहीं थी अपितु मैंने उसके तबाह होने के लिए दुआ की थी और मुझे ख़ुदा तआला की ओर से उत्तर मिला था कि वह छः वर्ष के अन्दर तबाह किया जाएगा। यदि वह हद से ज़्यादा गाली गलौज न करता और सार्वजनिक तौर पर हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियां न देता तो छः वर्ष पूरे करके मरता किन्तु उसकी गालियों ने वह अवधि भी पूर्ण न

① अब तक मुझे ज्ञात नहीं कि वह दूसरा व्यक्ति कौन है। उस खूनी फ़रिश्ते ने उस का नाम तो लिया किन्तु मुझे स्मरण न रहा। काश यदि मुझे याद होता तो उसे मैं सतर्क करता ताकि यदि हो सकता तो मैं उसे प्रवचन और उपदेश द्वारा पश्चाताप की ओर प्रवृत्त करता परन्तु लक्षणों से ज्ञात होता है कि वह व्यक्ति भी लेखराम का रूप या यों कहो कि उसका प्रतिबिम्ब है तथा अपमान करने और गालियां देने में उसका समरूप है। अधिक तो ख़ुदा ही जानता है। इसी से।

होने दी और अभी एक वर्ष शेष था कि वह मौत के पंजे में फंस गया। इसके विपरीत डिप्टी अब्दुल्लाह आथम ने नमी का ढंग अपनाया, यहां तक कि जब मैं उस शास्त्रार्थ के लिए डॉक्टर मार्टिन क्लार्क की कोठी पर जाता था तो मुझे देखकर वह आदर पूर्वक खड़ा हो जाता था और कमीना स्वभाव रखने वाले ईसाई उसे मना करते थे किन्तु वह उस आदर करने से नहीं रुकता था और न केवल इतना अपितु वह दज्जाल कहने से सार्वजनिक जल्से में अपने कथन से लौटा भी तथा ईसाइयों की कुछ भी परवाह न की। इसलिए खुदा तआला ने निर्धारित अवधि से उसे छूट दे दी। लेखराम वह था जो अपनी चपलताओं के कारण मूल अवधि भी पूरी न कर सका और अब्दुल्लाह आथम वह था जो अपने आदर और विनयपूर्वक व्यवहार के कारण निर्धारित अवधि के पन्द्रह माह तक और जीवित रहा और बहरहाल पन्द्रह माह के अन्दर मृत्यु प्राप्त हो गया। खुदा ने उसे छूट भी दे दी और अपनी बात को भी न छोड़ा अर्थात् बहरहाल उसकी मृत्यु के लिए पन्द्रह महीने क्रायम रहे।

मैंने सय्यद अहमद खां को सम्बोधित करके अपनी पुस्तक 'बरकतुद्दुआ' में लिखा था कि लेखराम की मृत्यु के लिए मैंने दुआ की है और वह दुआ स्वीकार हो गई है। अतः आपके लिए जो दुआ की स्वीकारिता के इन्कारी हैं दुआ के स्वीकार हो जाने का यह नमूना पर्याप्त है परन्तु मेरे इस लेख पर उपहास किया गया, क्योंकि लेखराम अभी जीवित और हर प्रकार से स्वस्थ और इस्लाम को अपमानित करने में कटिबद्ध था और मैंने इस उद्देश्य से कि लोग भविष्यवाणी को स्मरण कर लें शे'रों में सय्यद अहमद खां को सम्बोधित किया। और वे शे'र ये हैं जो मेरी पुस्तक 'बरकतुद्दुआ' में लिखे हैं और उस समय प्रकाशित किए गए जब लेखराम जीवित मौजूद था।

सय्यद अहमद खां साहिब सी. एस. आई. की ओर कविता में एक पत्र,
जो दुआ की स्वीकारिता का इन्कारी था

روئے دلبراز طلبگار ان نمیدارد حجاب
می درخشد درخوری تاباندر مانتاب

अनुवाद - प्रियतम का चेहरा अभिलाषियों से छुपा नहीं है वह सूर्य में भी चमकता है और चन्द्रमा में भी।

لیکن آن رُوئے حسین از غافلاں ماند نہاں
عاشقے باید کہ بردارند از بہر ش نقاب

अनुवाद - किन्तु वह सुन्दर चेहरा गाफिलों से छुपा हुआ है। सच्चा प्रेमी हो तो उसके लिए पर्दा उठाया जाए।

دامن پاکش ز نخوت ہانمی آید بدست
ہیچ راہے نیست غیر از عجز و درد و اضطراب

अनुवाद - उसका पवित्र दामन अभिमान से नहीं मिलता उसके लिए दर्द और व्याकुलता के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है।

بس خطرناک است راہِ کوچہ یارِ قدیم
جاں سلامت بایدت از خود رویہا سربتاب

अनुवाद - उस अनादि प्रियतम का मार्ग बहुत सूक्ष्म और कठिन है यदि तुझे प्राण की सुरक्षा चाहिए तो अहंकार का परित्याग कर दे।

تا کلامش عقل و فہم ناسزایاں کم رسد
ہر کہ از خود گم شود او یابد آں راہِ صواب

अनुवाद - मूर्ख लोगों की बुद्धि उसके कलाम के मर्म तक नहीं पहुँच सकती जो अहंकार त्याग देता है उसे ही वह सद्मार्ग प्राप्त होता है।

مشکل قرآن نہ از ابنائے دنیا حل شود
ذوق آں میدان آں مستے کہ نوشد آں شراب

अनुवाद - कुर्आन समझने की समस्या का समाधान सांसारिक लोगों से नहीं हो सकता। उस शराब का स्वाद वही जानता है जो उस शराब को पीता है।

ایکہ آگاہی ندا ندت ز انوارِ دروں
در حق ماہر چہ گوئی نیستی جائے عتاب

अनुवाद - हे वह मनुष्य जिसे आन्तरिक नूरों का कुछ ज्ञान नहीं। तू जो कुछ भी हमारे पक्ष में कहे घृणा का कारण नहीं।

از سر وعظ و نصیحت این سخنها گفته ایم
تا مگر زین مرے بہ گردد آں زخم خراب

अनुवाद - हमने नसीहत और भलाई के तौर पर ये बातें कही हैं ताकि वह विकृत घाव इस मरहम से अच्छा हो जाए।

از دعا کن چارہ آزارِ انکار دعا
چوں علاجِ مے ز مے وقتِ خمار و التهاب

अनुवाद - दुआ के इन्कार के रोग का उपचार दुआ से ही कर, जैसे नशे के समय शराब का उपचार शराब से ही किया जाता है।

ایکہ گوئی گر دعاہارا اثر بودے کجاست
سوئے من بشتاب بنائم تراچوں آفتاب

अनुवाद - हे वह मनुष्य जो यह कहता है कि यदि दुआओं में प्रभाव है तो दिखाओ कहाँ है। अतः मेरी ओर दौड़ ताकि मैं तुझे सूर्य के समान दुआ का प्रभाव दिखाऊँ। अर्थात् लेखराम की मृत्यु की दुआ।

ہاں مکن انکار زین اسرارِ قدرتہائے حق
قصہ کوتہ کن بہیں از مادعائے مستجاب^①

अनुवाद - सावधान! खुदा की कुदरतों के रहस्यों का इन्कार न कर निराशा की बात समाप्त कर और हम से स्वीकार होने वाली दुआ देख ले।

यह कुल नक़ल मूल इबारात के अनुसार है और इसमें यह व्याख्या लिखी है कि यह दुआ लेखराम की मृत्यु के लिए की गई थी और पुस्तक 'करामातुस्सादिक्रीन' में एक शेर लिखा गया है कि लेखराम की मृत्यु ईद के निकट के दिन होगी। अतः ईद जुमा को हुई और लेखराम शनिवार के दिन मारा गया। और वह शेर यह है -

① देखो पृष्ठ 2, 3, 4 टायटल पेज 'बरकातुद्दुआ'। इसी से।

وَبَشِّرْنِي رَبِّي وَقَالَ مُبَشِّرًا
سَتَعْرِفُ يَوْمَ الْعِيدِ وَالْعِيدُ أَقْرَبُ

अर्थात् मुझे लेखराम की मृत्यु के बारे में खुदा तआला ने शुभ सूचना दी और कहा कि तू इस घटना को ईद के दिन में पहचान लेगा और ईद उस से निकट होगी।

यह भविष्यवाणी कि लेखराम की मृत्यु ईद के दिन के निकट होगी कुछ आर्य समाज वालों के समाचार पत्रों में प्रकाशित हो चुकी है जैसा कि समाचार में स्पष्ट हो कि लेखराम की मृत्यु के बारे में भविष्यवाणी अटल विश्वास तक पहुँच गई है और जो व्यक्ति इस भविष्यवाणी के बारे में पूर्णरूपेण जानकारी प्राप्त करना चाहे उसे चाहिए कि प्रथम मेरी पुस्तक 'आईना कमालात-ए-इस्लाम' वाला विज्ञापन पढ़े फिर मेरी पुस्तक 'बरकातुद्दुआ' की वह इबारत ध्यानपूर्वक पढ़े जिसमें मैंने सय्यद अहमद खां को लिखा था कि आप सुन रखें कि मैंने लेखराम की मृत्यु के लिए दुआ की थी। अतः तुम निश्चय ही स्मरण रखो कि वह अवधि के अन्दर मर जाएगा। अतः सत्याभिलाषी को चाहिए कि इसके पश्चात् वह पुस्तक 'आईना कमालात-ए-इस्लाम' के विज्ञापन में मेरा वह नोट पढ़े जिस में मैंने आर्यों को सम्बोधित करके लिखा है कि लेखराम की मृत्यु के बारे में मेरी दुआ स्वीकार हो चुकी है। अब यदि तुम्हारा धर्म सच्चा है तो अपने परमेश्वर से प्रार्थना और दुआ करो कि वह इस अटल मृत्यु से बच जाए और इसी प्रकार सत्याभिलाषी को चाहिए कि बरकातुद्दुआ के अन्त में मेरे उस कशफ़ को पढ़े जिस में मैंने लिखा है कि मैंने एक फ़रिश्ता देखा जिसकी आंखों से खून टपकता था। उसने मुझे आकर कहा कि लेखराम कहां है^① तथा एक और व्यक्ति का भी नाम लिया कि वह कहां है। और फिर चाहिए कि सत्याभिलाषी करामातुस्सादिक्रीन में वह शेर पढ़े जिसमें लिखा है कि लेखराम ईद के दिन के निकट मारा जाएगा और फिर चाहिए कि सत्याभिलाषी 'आईना कमालात-ए-इस्लाम' का इल्हाम पढ़े जिसमें

① खूनी फ़रिश्ते के इस कथन से यह संकेत था कि लेखराम का वध किया जाएगा। इसी से।

लेखराम के बारे में लिखा है -

عَجْلُ جَسَدُ لَهْ خُوار لَهْ نَصَب و عَذَاب
یعنی لَهْ کَمثلہ نَصَب و عَذَاب

अनुवाद - यह गाय का निर्जीव बछड़ा है जिसमें आध्यात्मिकता की आत्मा नहीं केवल आवाज़ ही आवाज़ है अतः वह सामिरी के गाय के बछड़े की भांति टुकड़े-टुकड़े किया जाएगा। स्मरण रहे कि इबारत **لَهْ نَصَب و عَذَاب** की व्याख्या खुदा के बोध कराने के अनुसार यह है कि

لَهْ کَمثلہ نَصَب و عَذَاب

और ऐसा ही घटित हुआ और **जैसा कि मैं वर्णन कर चुका हूँ** लेखराम का वध किए जाने के बारे में तीन इल्हाम हैं - **प्रथम** - खूनी फ़रिश्ता जो मुझे पर प्रकट हुआ और उसने पूछा कि लेखराम कहां है? **द्वितीय** - यही इल्हाम अर्थात्

عَجْلُ جَسَدُ لَهْ خُوار-لَهْ نَصَب و عَذَاب

अर्थात् लेखराम सामिरी की गाय का बछड़ा है और सामिरी के बछड़े के समान वह टुकड़े-टुकड़े किया जाएगा। **तृतीय** - वह शे'र जो खुदा तआला की ओर से इल्हाम हुआ और घटना पूर्व अर्थात् लेखराम की मृत्यु से पांच वर्ष पूर्व प्रकाशित किया गया और वह शे'र यह है -

अला ए दुश्मने नादाँ व बेराह
बतर्स अज़ तेग-ए-बुराने मुहम्मद।

अर्थात् हे लेखराम! तू क्यों हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियाँ देता है तू मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उस तलवार से जो तुझे टुकड़े-टुकड़े कर देगी क्यों नहीं डरता।

अब हम वे समस्त शे'र यहां लिख देते हैं जिनमें उपरोक्त इल्हामी शे'र है और उनके नीचे लेखराम पेशावरी के शव का वह चित्र दे देंगे जो आर्य लोगों ने स्वयं प्रकाशित किया। हमें उस दुर्भाग्यशाली लेखराम की दशा पर नितान्त खेद होता है कि इस्लाम पर कुछ दिन गाली-गलौज करके अन्ततः उसने जवानी की आयु में

प्राण गंवाए और वह लगभग दो माह तक मेरे पास क्रादियान में भी रहा था और पहले उसका ऐसा स्वभाव नहीं था किन्तु उद्दण्ड लोगों ने उसके स्वभाव को खराब कर दिया। उसने बड़ी इच्छा के साथ यह स्वीकार किया था कि यदि मुझे ज्ञात हुआ कि इस्लाम एक ऐसा धर्म है कि उसमें खुदा तआला के निशान प्रकट होते हैं और परोक्ष की बातें प्रकट होती हैं तो मैं इस्लाम स्वीकार कर लूँगा किन्तु क्रादियान के कुछ उद्दण्ड और उपद्रवी लोगों ने उनके हृदय को खराब कर दिया और मेरे बारे में भी उन मूर्ख हिन्दुओं ने बहुत कुछ झूठी बातें उसे सुनाई ताकि वह मेरी संगत से घृणा करने लगे। अतः इन बुरी संगतों के कारण दिन-प्रतिदिन वह खराब स्थिति की ओर गिरता गया परन्तु जहां तक मेरा विचार है प्रारंभ में उसकी ऐसी खराब दशा न थी केवल धार्मिक आवेग था जो प्रत्येक धर्मावलम्बी अधिकार रखता है कि अपने धर्म की पाबन्दी में सत्य और न्याय को दृष्टिगत रखते हुए बहस करे। वह एक बार अपने वध से एक वर्ष पूर्व लाहौर के स्टेशन पर एक छोटी सी मस्जिद में मुझे मिला मैं वुजू कर रहा था और वह नमस्ते करके कुछ मिनट खड़ा रहा और फिर चला गया। मुझे खेद है कि उस समय नमाज़ के कारण मैं उस से बात न कर सका और मुझे बड़ा खेद है कि उसे क्रादियान के हिन्दुओं ने मेरी बात सुनने का अवसर न दिया और केवल झूठ बना कर उसे जोश दिलाया। मैं निश्चित तौर पर जानता हूँ कि यह खून उनकी गर्दन पर है कि वह इतने अधिक जोश के बावजूद अपने स्वभाव में एक सादगी भी रखता था क्योंकि उपद्रवी लोगों की बातों से बिना जांच-पड़ताल और छान-बीन के प्रभावित हो जाता था। इसी कारण खुदा तआला ने उसे एक बछड़े से उपमा दी। बहरहाल हम उसकी अकस्मात् मृत्यु से खेद किए बिना नहीं रह सकते, किन्तु क्या किया जाए कि जो खुदा तआला की ओर से प्रारब्ध था वह पूर्ण होना अनिवार्य था। हम उन शेरों के नीचे जो हम लिखेंगे पंडित लेखराम के उस शव का चित्र दिखाएंगे जो आर्यों ने प्रकाशित किया है। यह उस समय का चित्र है जब कि वह वध होने के पश्चात् अर्थी पर रखा गया था और लोगों का एक बड़ा समूह उसके साथ था। यह चित्र

इस पुस्तक में हमने इसलिए प्रकाशित किया है ताकि यदि संभव हो तो कोई इस से सीख प्राप्त करे। और धार्मिक शास्त्रार्थों में वह पद्धति न अपनाए जो खुदा को पसन्द नहीं। इस बात को खुदा जानता है कि मुझे किसी से द्वेष नहीं है यद्यपि मैं लेखराम के मामले में इस बात से तो प्रसन्न हूँ कि खुदा तआला की भविष्यवाणी पूर्ण हुई किन्तु दूसरे पहलू से मैं शोक ग्रस्त हूँ कि बिल्कुल जवानी की अवस्था में उसकी मृत्यु हुई। यदि वह मेरी ओर आता तो मैं उसके लिए दुआ करता ताकि यह विपत्ति टल जाती। उसके लिए आवश्यक न था कि इस विपत्ति को समाप्त कराने के लिए मुसलमान हो जाता अपितु आवश्यक केवल इतना था कि गालियों और अपशब्दों से अपने मुख को रोक लेता। उसकी ओर से यह स्पष्ट अन्याय था कि वह हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बिना पूर्ण ज्ञान और व्यापक जानकारी के झूठा और झूठ गढ़ने वाला कहता था। और दूसरे समस्त नबियों को भी गालियां देता था और जो खुदा का भेजा हुआ नबी ऐसे समय में आया कि जब समस्त अरब, फारस, शाम, रोम और समस्त यूरोपियन देश सृष्टि-पूजा में ग्रस्त थे और पंडित दयानन्द के इक्रार के अनुसार उस युग में सम्पूर्ण आर्यवर्त भी मूर्ति पूजा में डूबा हुआ था और किसी भी भूभाग में खुदा का एकेश्वरवाद स्थापित नहीं रहा था और उसी नबी ने प्रकट होकर एकेश्वरवाद को नए सिरे से स्थापित किया और पृथ्वी पर खुदा के प्रताप और श्रेष्ठता का सिक्का जमाया और हज़ारों निशानों एवं चमत्कारों से अपनी सच्चाई प्रकट की और उसके चमत्कार अब तक प्रकट हो रहे हैं। अतः क्या यह शालीनता और सभ्यता का ढंग था कि ऐसे महान नबी को जो खुदा के प्रताप को पृथ्वी पर प्रकट करने वाला तथा मूर्ति-पूजा का उन्मूलन करने वाला और एकेश्वरवाद को नए सिरे से स्थापित करने वाला था, गन्दी गालियों से याद किया जाए ? और यह सिलसिला कभी भी समाप्त न किया जाए ? बाज़ारों में गालियां दें ? सामान्य सभाओं में गालियां दें ? प्रत्येक गली-कूचे में गालियां दें ? खुदा प्रकोप में धीमा है और नितान्त कृपालु एवं दयालु है किन्तु अन्ततः उद्दण्ड और निर्लज्ज को पकड़ता है। परलोक का मामला

अभी गुप्त है परन्तु ऐसे धर्म को अवश्य ख़ुदा की ओर से कहना पड़ता है जो जीवित ख़ुदा के जीवित निशान दिखाता हो। मनुष्य प्रत्येक उत्तम शिक्षा की नक़ल उतार सकता है परन्तु ख़ुदा के निशानों की नक़ल नहीं उतार सकता। अतः इस मापदण्ड के दृष्टि से आज समस्त पृथ्वी पर जीवित धर्म केवल इस्लाम है परन्तु इसके बावजूद हम नहीं कह सकते कि हिन्दुओं के पेशवा और अवतार झूठे और धोखेबाज़ थे और न (हम ख़ुदा से क्षमा चाहते हैं) हम उनको गालियाँ देते हैं अपितु ख़ुदा तआला ने हमें यह शिक्षा दी है कि कोई आबाद बस्ती और देश नहीं जिसमें उसने कोई नबी न भेजा हो। जैसा कि वह स्वयं कहता है -

وَإِنَّ مِنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ①

अर्थात् कोई ऐसी उम्मत (जाति) नहीं जिसमें ख़ुदा का कोई नबी (अवतार) न आया हो, किन्तु हम इस आस्था को समझ नहीं सकते कि ख़ुदा के विशाल देशों और महद्वीपों के बावजूद कि सभी उसके मार्ग दर्शन के मुहताज हैं और सब उसकी प्रजा हैं फिर भी ख़ुदा तआला का अनादि काल से आर्यवर्त से ही संबंध रहा और अन्य जातियां उसके सीधे तौर पर मार्ग-दर्शन से वंचित रहीं हैं। ख़ुदा का वर्तमान कानून भी हम इसके विपरीत देखते हैं वह दूसरे देशों में अब भी अपनी वही और इल्हाम से अपने अस्तित्व का पता देता है। अपने बंदों के प्रति ख़ुदा की ओर से यह पक्षपात उसके अस्तित्व की ओर सम्बद्ध नहीं हो सकता। जो व्यक्ति उसकी ओर तन-मन से प्रवृत्त हो वह भी उससे दमादृष्टि का व्यवहार करना है चाहे वह हिन्द का हो चाहे अरब का, वह किसी को नष्ट करना नहीं चाहता। उसकी दया सार्वजनिक है किसी विशेष देश से सीमित नहीं। हम देखते हैं कि भौतिक तौर पर भी ख़ुदा तआला की नेमतें प्रत्येक स्थान पर पाई जाती हैं, प्रत्येक देश में पानी मौजूद है जैसा कि आर्यवर्त में मौजूद है। प्रत्येक देश में अनाज मौजूद है जैसा कि आर्यवर्त में मौजूद है, प्रत्येक देश में वे नेमतें मौजूद हैं जैसी कि आर्यवर्त में मौजूद हैं। अतः जबकि ख़ुदा ने भौतिक तौर पर अपने

वरदान में किसी जाति और देश से अन्तर नहीं किया तो क्या कोई समझ सकता है कि आध्यात्मिक तौर पर उसने अन्तर किया है। सब उसकी प्रजा हैं। क्या काले और क्या गोरे और क्या हिन्दी और क्या अरबी। अतः यह असीमित विशेषताओं वाला खुदा किसी संकीर्ण दायरे में सीमित नहीं हो सकता और उसे सीमित करना नीचता और मूर्खता है।

अब हम वह पंक्तियाँ नीचे लिखते हैं जिनमें लेखराम का वध किए जाने की भविष्यवाणी है और जैसा कि हम पूर्व में ही लिख चुके हैं ये शेर उसके मारे जाने से पांच वर्ष पूर्व प्रकाशित होकर समस्त पंजाब और हिन्दुस्तान में प्रसारित हो चुके हैं और वे ये हैं और उनके अन्त में लेखराम के शव का चित्र दिया गया है -



अश्आर

عجب نورے است در جان محمد
عجب لعلیت در کان محمد

अनुवाद - मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अन्दर एक अद्भुत प्रकाश है। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खान में एक विचित्र ला'ल है।

زظلمت ها دلے آنگه شود صاف
که گردد از مجبان محمد

अनुवाद - हृदय उस समय अन्धकारों से पवित्र होता है जब वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मित्रों में सम्मिलित हो जाता है।

عجب دارم دل آن ناکسان را
که رُو تابند از خوان محمد

अनुवाद - मैं उन मूर्खों के हृदयों पर आश्चर्य करता हूँ जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से से मुख फेरते हैं।

ندانم هیچ نفی در دو عالم
که دارد شوکت و شان محمد

अनुवाद - दोनों लोकों में मैं किसी व्यक्ति को नहीं जानता जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सी प्रताप और प्रतिष्ठा रखता हो।

خدا زان سینه بیزارست صمدار
که هست از کینه داران محمد

अनुवाद - खुदा उस व्यक्ति से पूर्णतः विमुख है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ईर्ष्या द्वेष रखता है।

خدا خود سوزد آن کرم دنی را
که باشد از عدوان محمد

अनुवाद - खुदा स्वयं उस तिरस्कृत कीड़े को जला देता है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शत्रुओं में से हो।

اگر خواہی نجات از مستیء نفس
بیا در ذیل مستانِ محمدؐ

अनुवाद - यदि तू हृदय की मदोन्मत्ता से मुक्ति चाहता है तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मस्तानों में से हो जा।

اگر خواہی کہ حق گوید ثنایت
بشو از دل ثنا خوانِ محمدؐ

अनुवाद - यदि तू चाहता है कि खुदा तेरी प्रशंसा करे तो हृदय की गहराइयों से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रशंसक बन जा।

اگر خواہی دلیے عاشقش باش
محمدؐ ہست بُرہانِ محمدؐ

अनुवाद - यदि तू उसकी सच्चाई का प्रमाण चाहता है तो उसका प्रेमी बन जा क्योंकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही स्वयं मुहम्मद का प्रमाण है।

سرے دارم فدائے خاکِ احمدؐ
دلِ ہر وقت قربانِ محمدؐ

अनुवाद - मेरा सर अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चरणों की धूल पर न्योछावर है और मेरा हृदय हर समय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कुर्बान रहता है।

بگیسوئے رسول اللہ کہ ہستم
نثارِ رُوئے تابانِ محمدؐ

अनुवाद - रसूलुल्लाह के केशों की सौगंध कि मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रकाशमान चेहरे पर न्योछावर हूँ।

درین رہ گر کشدَم در بسوزند
نتابم رُو زایوانِ محمدؐ

अनुवाद - इस मार्ग में यदि मुझे कत्ल कर दिया जाए या जला दिया जाए तो फिर भी मैं मुहम्मद के दरबार से मुख नहीं मोड़ूँगा।

بے سہل است از دنیا بُریدن
بیادِ حُسن و احسانِ محمدؐ

अनुवाद - संसार से संबंध-विच्छेद करना नितान्त सरल है मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सद्गुणवहार और उपकार को स्मरण करके।

فدا شد در رهش هر ذرّۀ من
که دیدم حُسنِ پنهانِ محمدؐ

अनुवाद - उसके मार्ग में मेरा हर कण कुरबान है क्योंकि मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आंतरिक सौन्दर्य देख लिया है।

دگر اُستاد را نامۀ ندانم
که خواندم در دبستانِ محمدؐ

अनुवाद - मैं अन्य किसी गुरु का नाम नहीं जानता, मैं तो केवल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्कूल का पढ़ा हुआ हूँ।

بدیگر دلبرے کارے ندارم
که ہستم کشتہ آںِ محمدؐ

अनुवाद - अन्य किसी प्रियतम से मेरा संबंध नहीं, मैं तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाज़ व अदा का शिकार हूँ।

مرا آن گوشہ چشمی بباید
نخواهم جز گلستانِ محمدؐ

अनुवाद - मुझे तो उसी नज़र की कृपादृष्टि की आवश्यकता है। मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाग़ के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहता।

دلِ ذارم بہ پہلویم مجوئید
که بستیمش بدامانِ محمدؐ

अनुवाद - मेरे घायल हृदय को मेरे पहलू में न ढूंढो कि उसे तो हमने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दामन से बांध दिया है।

من آں خوش مرغ از مرغانِ قدسم
که دارد جا بہ بُستانِ محمدؐ

अनुवाद - मैं स्वर्ग के पक्षियों में से वह श्रेष्ठ पक्षी हूँ जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाग में बसेरा रखता है।

تو جانِ ما منور کردی از عشق
فدایت جانم اے جانِ محمدؐ

अनुवाद - तूने प्रेम के कारण हमारे प्राण को प्रकाशित कर दिया। हे मुहम्मद ! तुझ पर मेरे प्राण न्योछावर हों।

دریغا گردهم صد جاں دریں راه
نباشد نیز شایانِ محمدؐ

अनुवाद - यदि इस मार्ग में सौ प्राणों से बलिदान हो जाऊँ तो भी खेद रहेगा कि यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रतिष्ठा के यथायोग्य नहीं।

چه ییبت با بداوند ایں جواں را
که ناید کس به میدانِ محمدؐ

अनुवाद - इस जवान को कितना रोब व दबदबा दिया गया है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मैदान में कोई भी (मुकाबले पर) नहीं आता।

ره مولی که گم کردند مردم
بجو در آل و اعوانِ محمدؐ

अनुवाद - खुदा के इस मार्ग को जिसे लोगों ने विस्मृत कर दिया है तू मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सन्तान और सहायकों में ढूँढो।

الا اے دشمن نادان و بے راه
بترس از تیغ بُرانِ محمدؐ

अनुवाद - हे मूर्ख और पथ भ्रष्ट शत्रु सावधान हो जा और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की काटने वाली तलवार से डर।

الا اے منکر از شانِ محمدؐ
هم از نور نمایانِ محمدؐ

अनुवाद - सावधान हो! हे वह व्यक्ति जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान तथा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चमकते हुए प्रकाश का इन्कारी है।

کرامت گرچہ بے نام و نشان است
بیا بگر ز غلام محمد^①☆

अनुवाद - यद्यपि चमत्कार अब दुर्लभ हैं परन्तु तू -आ और उसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दासों में देख ले।

126. एक सौ छब्बीसवां निशान - लुधियाना में एक सज्जन मीर अब्बास अली नामक थे जो बैअत करने वालों में सम्मिलित थे। कुछ वर्षों तक उन्होंने निष्कपटता में ऐसी उन्नति की कि उनको वर्तमान स्थिति की दृष्टि से एक बार इल्हाम हुआ -

أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ

①☆ लेखराम ने बार बार मुझे लिखा था कि मैं चमत्कार देखना चाहता हूँ और अपनी पुस्तकों में भी बार बार लिखा था कि मुझे चमत्कार दिखलाओ परन्तु खुदा तआला जो युक्तिवान है और प्रत्येक को उसकी परिस्थिति अनुसार चमत्कार दिखाता है। अतः जबकि लेखराम की ज़बान हमारे नबी स.अ.व को गालियाँ देने में छुरी के समान चलती थी और अपनी ज़बान से हजारों दिल उसने ज़ख्मी कर दिए थे। इसलिए खुदा ने छुरी का ही निशान दिखलाया और उसकी बद्जबानी एक साक्षात् छुरी बनकर उसके अन्दर घुसी और आँतों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया। यही खुदा का प्रकोपी निशान है जो सुन सकता है वह सुने। और जब वह ज़िन्दा था यह भी कहता था कि मैं कुबूल नहीं करूँगा जब तक कि कोई सितारा आसमान से न गिरे। अतः चूँकि वह अपने आपको आर्यों का सितारा समझता था और क्रौम भी उसको सितारा कहती थी। इसलिए वह सितारा गिरा और आर्यों के लिए उसका गिरना बहुत कष्टप्रद हुआ। जिससे हर एक घर में मातम छा गया। इसी से।

इस इल्हाम का अभिप्राय मात्र इतना था कि उस युग में यह दृढ़ निश्चय रखते थे तथा इसी प्रकार उन्होंने उस युग में ऐसे लक्षण प्रकट किए कि उनके लिए मेरी चर्चा के अतिरिक्त और कोई दर्द न था और मेरे प्रत्येक पत्र को नितान्त बरकत वाला समझ कर अपने हाथ से उसकी नक़ल करते थे और लोगों को प्रवचन देते और नसीहत करते थे और यदि भोजन के थाल का एक खुश्क टुकड़ा भी बचा हो तो शुभ समझ कर खा जाते थे और लुधियाना से सर्वप्रथम वह ही क़ादियान आए थे। एक बार मुझे ख़ुदा की ओर से दिखाया गया कि अब्बास अली ठोकर खाएगा और उद्दण्ड हो जाएगा। मेरा वह पत्र भी उन्होंने मेरे प्रवचनों में लिख लिया। तत्पश्चात् जब उन से भेंट हुई तो उन्होंने मुझ से कहा कि मुझे उस कश्क़ से जो मेरे बारे में हुआ बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि मैं तो आपके लिए मरने को तैयार हूँ। मैंने उत्तर दिया कि जो कुछ आपके लिए प्रारब्ध है वह पूरा होगा। इसके उपरान्त जब वह समय आया कि मैंने मसीह मौऊद होने का दावा किया तो वह दावा उन्हें अप्रिय लगा। प्रथम तो हृदय में क्रोधित होते रहे तत्पश्चात् मुबाहसे के समय कि जो मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब से मेरी ओर से लुधियाना में हुआ था उस आयोजन से उनको कुछ दिन विरोधियों की संगत भी प्राप्त हो गई तो प्रारब्ध का लिखा प्रकट हो गया और सर्वथा बिगड़ गए। फिर ऐसे बिगड़े कि वह हार्दिक विश्वास और वह मुँह का प्रकाश सब जाता रहा और बिमुखता का अंधकार प्रकट हो गया। मुर्तद होने के पश्चात् एक दिन वह लुधियाना में पीर इफ़्तिख़ार अहमद साहिब के मकान पर मुझे मिले और कहने लगे कि आपका और हमारा इस प्रकार से मुकाबला हो सकता है कि हम दोनों एक कोठरी में बन्द किए जाएं और दस दिन तक बन्द रहें फिर जो झूठा होगा मर जाएगा। मैंने कहा - मीर साहिब ऐसी शरीअत के विरुद्ध परीक्षाओं की क्या आवश्यकता है किसी नबी ने ख़ुदा की परीक्षा नहीं ली परन्तु मुझे और आपको ख़ुदा देख रहा है वह सामर्थ्यवान है कि वह स्वयं झूठे को सच्चे के सामने तबाह कर दे। ख़ुदा के निशान वर्षा के समान बरस रहे हैं यदि आप सच्चे अभिलाषी हैं तो क़ादियान में मेरे साथ चलें। उत्तर दिया कि मेरी

पत्नी बीमार है, मैं जा नहीं सकता और कदाचित्त यह उत्तर दिया कि किसी जगह गई हुई है याद नहीं रहा। मैंने कहा कि अब बस खुदा के निर्णय की प्रतीक्षा करो फिर उसी वर्ष उनकी मृत्यु हो गई और किसी कोठरी में बन्द किए जाने की आवश्यकता न रही। अतः यह भय का स्थान है कि अन्ततः अब्बास अली का क्या अंजाम हुआ और इतनी उन्नति के पश्चात् एक ही क्षण में अवनति के गड्ढे में जा गिरा। उसकी परिस्थितियों से यह अनुभव हुआ कि यदि किसी व्यक्ति के बारे में किसी प्रसन्नता का भी इल्हाम हो तो प्रायः प्रसन्नता भी किसी विशेष समय तक होती है^① अर्थात् जब तक कि कोई प्रसन्नता के कार्य करे जैसा कि खुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में काफ़िरों पर अनेकों स्थानों पर क्रोध प्रकट करता है और जब उन में से कोई मोमिन हो जाता है तो साथ ही वह क्रोध दया के साथ परिवर्तित हो जाता है। और इसी तरह कभी दया प्रकोप से बदल जाती है इसी कारण हदीस में आया है कि एक व्यक्ति पुन्यात्माओं के कार्यों का अनुसरण करता है यहां तक कि उस में और स्वर्ग में थोड़ा सा अन्तर रह जाता है और वस्तुतः प्रतिफल में वह नारकी होता है तो अन्ततः कोई ऐसा कार्य या कोई ऐसी आस्था उससे हो जाती है कि वह नर्क में डाला जाता है। इसी प्रकार एक व्यक्ति स्वर्गीय (स्वर्ग में जाने वाला) होता है और नर्क वाले कार्य करता है यहां तक कि उसमें और नर्क में केवल थोड़ा सा अन्तर रह जाता है और अन्ततः उसका प्रारब्ध विजयी हो जाता है और फिर वह शुभ कार्य करना आरंभ करता है और उसी पर उसकी मृत्यु होती है और स्वर्ग में प्रविष्ट किया जाता है। इस भविष्यवाणी की सच्चाई का यह प्रमाण है जिस से कोई

① इसीलिए हर समय नमाज़ में खुदा तआला ने यह दुआ सिखाई है (और अनिवार्य कर दी है कि उसके बिना नमाज़ नहीं हो सकती है) कि

غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ

अर्थात् ऐसा न हो कि हम इनाम पाने वाले वर्ग में से होने के पश्चात् उस वर्ग में हो जाएं जिन पर खुदा का प्रकोप हुआ। अतः हमेशा खुदा तआला की निस्पृहता से डरते रहना चाहिए। इसी से।

विरोधी इन्कार नहीं कर सकता कि मीर अब्बास अली की वह पुस्तक जिसमें उसने अपने हाथ से मेरी यह भविष्यवाणी लिखी है (जो पूर्ण हो गई) वह अब तक मौजूद है और मैंने उसकी मृत्यु के पश्चात् उसे एक बार स्वप्न में देखा कि काले कपड़े पहने हुए है (जो सर से पैर तक काले हैं) और मुझ से लगभग सौ कदम की दूरी पर खड़ा है और मुझ से सहायता के तौर पर कुछ मांगता है। मैंने उत्तर दिया कि अब समय गुजर गया। अब हम में और तुम में बहुत दूरी है तू मुझ तक नहीं पहुँच सकता।

127. एक सौ सत्ताईसवां निशान - सहजराम नामक एक व्यक्ति अमृतसर की कमिशनरी में हैड क्लर्क था और पहले वह जिला सियालकोट में डिप्टी कमिशनर का हैड क्लर्क था और वह मुझ से सदैव धार्मिक बहस किया करता था तथा इस्लाम धर्म से स्वाभाविक तौर पर वैर रखता था। संयोग ऐसा हुआ कि मेरे एक बड़े भाई थे जिन्होंने तहसीलदारी की परीक्षा दी थी और परीक्षा में सफल हो गए थे। वह अभी घर में क्रादियान में थे और नौकरी के प्रत्याशी थे। एक दिन मैं अस्त्र के समय अपने चौबारे में पवित्र कुर्आन पढ़ रहा था, जब मैंने पवित्र कुर्आन का दूसरा पृष्ठ उलटना चाहा तो उसी अवस्था में मेरी आंख कश्मीरी रंग धारण कर गई और मैंने देखा कि सहजराम काले कपड़े पहने हुए और विनय करने वालों के समान दांत निकाले मेरे सामने आ खड़ा हुआ जैसे कि कोई कहता है कि मुझ पर दया करा दो। मैंने उसे कहा कि अब दया का समय नहीं और साथ ही खुदा तआला न मेरे हृदय में डाला कि यह व्यक्ति इसी समय मृत्यु पा गया है और कुछ खबर न थी। तत्पश्चात् मैंने नीचे उतरा और मेरे भाई के पास छः सात लोग बैठे हुए थे और उनकी नौकरी के बारे में बातें कर रहे थे। मैंने कहा कि यदि पंडित सहजराम की मृत्यु हो जाए तो वह पद भी अच्छा है। वे सब मेरी बात सुनकर अट्टहास लगाकर हंसे और कहा कि अच्छे-भले को मारते हो। दूसरे या तीसरे दिन सूचना आ गई कि उसी पल सहजराम अकस्मात् मृत्यु से इस संसार से कूच कर गया।

128. एक सौ अट्ठाईसवां निशान - 11, फरवरी 1906 ई. को बंगाला के

बारे में एक भविष्यवाणी की गई थी जिसके शब्द ये थे - “पहले बंगाला के बारे में जो कुछ आदेश जारी किया गया था अब उनको सांत्वना दी जाएगी।” उसका विवरण यह है कि जैसा कि सर्व विदित है कि सरकार ने बंगाला विभाजन के बारे में आदेश जारी किया था और यह आदेश बंगालियों का इतना अधिक हृदय तोड़ने वाला हुआ था कि जैसे उनके घरों में मातम छा गया था और उन्होंने बंगाल-विभाजन को रोकने के बारे में बहुत प्रयास किया परन्तु असफल रहे अपितु इसके विपरीत परिणाम यह हुआ कि सरकारी अफसरों ने उनका कोलाहल पसन्द न किया तथा उनके बारे में अफसरों की ओर से जो कुछ कार्यवाहियां हुईं हमें यहां उसका विवरण देने की भी आवश्यकता नहीं। विशेष तौर पर फुल्लर लेफ्टीनेन्ट गवर्नर को उन्होंने अपने लिए मृत्यु का फ़रिश्ता (यमराज) समझा और संयोग ऐसा हुआ कि उन दिनों में बंगाली लोग अपने अफसरों के हाथ से दुख उठा रहे थे और सर फुल्लर के प्रबंध से जान होठों पर थी मुझे उपरोक्त इल्हाम हुआ अर्थात् यह कि पहले बंगाल के बारे में जो कुछ आदेश जारी किया गया था अब उनको हमदर्दी होगी अतः मैंने इस भविष्यवाणी को उन्हीं दिनों में प्रकाशित कर दिया तो यह भविष्यवाणी इस प्रकार से पूरी हुई कि बंगाल का लेफ्टीनेन्ट गवर्नर फुल्लर जिसके हाथ से बंगाली लोग तंग आ गए थे और इतने शिकायतकर्ता थे कि उनकी आहें आकाश तक पहुंच गई थीं ने अचानक त्यागपत्र दे दिया। परन्तु वे पेपर प्रकाशित नहीं किए गए जिनके कारण त्यागपत्र दिया गया। परन्तु फुल्लर साहिब के त्यागपत्र पर जितनी खुशी बंगालियों ने अभिव्यक्त की है जैसा कि बंगाली अखबारों से स्पष्ट है वह सबसे बढ़कर गवाह इस बात पर है कि बंगालियों ने फुल्लर के अलग होने पर अपनी हमदर्दी महसूस की है और फुल्लर के त्यागपत्र देने से उनकी खुशी के जल्से और सामान्य तौर पर खुशी के नारे इस बात की गवाही दे रहे हैं कि वास्तव में फुल्लर की अलगता से उनकी हमदर्दी हुई है अपितु पूर्ण रूप से हमदर्दी हो गई है और यह कि उन्होंने फुल्लर की अलगता को अपने लिए सरकार का बड़ा उपकार समझा है। अतः फुल्लर के त्यागपत्र में जिस उद्देश्य को अपने किसी हित

से सरकार ने छुपाया है वह उद्देश्य बंगालियों की असीम खुशियों से प्रकट हो रहा है और इससे बढ़कर भविष्यवाणी के पूर्ण होने का और क्या प्रमाण होगा कि बंगालियों ने उस कार्यवाही में अपनी सांत्वना स्वयं स्वीकार कर ली और सरकार के प्रति अत्यन्त कृतज्ञता प्रकट की है। मेरी यह भविष्यवाणी केवल हमारी पत्रिका रीव्यू आफ रिलीजन्स में ही प्रकाशित नहीं हुई थी बल्कि पंजाब के बहुत से समाचार-पत्रों ने उसे प्रकाशित किया था, यहां तक कि स्वयं बंगाल के कुछ प्रसिद्ध समाचार-पत्रों ने इस भविष्यवाणी को प्रकाशित कर दिया था।

इस बात पर एक अन्य प्रमाण कि यह भविष्यवाणी पूर्ण हो गई यह है कि - 'अमृत बाजार पत्रिका' कलकत्ता का अंग्रेजी अखबार जो बंगालियों का सर्वाधिक प्रसिद्ध अखबार है लिखा है जिसके निम्नलिखित वाक्य को अखबार सिविल एण्ड मिलिट्री गज़ट लाहौर के 22, अगस्त 1906 ई. के प्रकाशन में लिखा है और वह यह है - "अधिक अनुमान यह है कि उसका अर्थात् फिल्लर का उत्तराधिकारी (नया लेफ्टीनेन्ट गवर्नर) विशेष तौर पर सांत्वना की नीति अपनाएगा। इसमें सन्देह नहीं कि यह सर्वथा हमारे उद्देश्य के अनुकूल है।"

कथित अखबार के इस वाक्य से भी प्रकट है कि उसने इस बारे में अपना सन्तोष व्यक्त किया है कि लेफ्टीनेन्ट गवर्नर का अवश्य ही यह कर्तव्य होगा कि बंगालियों को सांत्वना देता रहे। अतः कथित अखबार भी भविष्यवाणी के पूर्ण होने की एक साक्ष्य है।

फिर अन्त में हम इस भविष्यवाणी के पूर्ण होने पर एक और शक्तिशाली प्रमाण का उल्लेख करते हैं और वह यह कि एक अंग्रेज़ अफ़सर जो पचास वर्ष सरकार के एक प्रतिष्ठित पद पर रहा अखबार सिविल एण्ड मिलिट्री गज़ट लाहौर दिनांक 24, अगस्त 1906 ई. में एक लम्बे पत्र के मध्य में जिसमें यह प्रकट किया गया है कि सर फ़ुल्लर का त्याग-पत्र सर्वथा बंगाली बाबुओं की इच्छानुकूल है लिखता है - इस में कुछ सन्देह नहीं कि उसके अर्थात् फिल्लर के उत्तराधिकारी को यह आदेश (उच्चाधिकारियों से) प्राप्त हुआ है और उसने उसे स्वीकार किया है कि

उपद्रवी बाबुओं के साथ सांत्वना की पद्धति का पालन करे।

अब देखो कि कितनी स्पष्टता से यह भविष्यवाणी पूरी हो गई। खुदा ताज़ा से ताज़ा अपने निशान दिखाता जाता है। खेद! कैसे असावधान हृदय हैं कि फिर स्वीकार नहीं करते हम इन निरन्तर निशानों से ऐसे विश्वास से भर गए हैं जैसे कि सागर जल से भरा हुआ है किन्तु खेद कि हमारे विरोधियों को इस अमृत से एक बूंद भी प्राप्त नहीं हुई। इस दुर्भाग्य का अनुमान नहीं हो सकता।

कोई क्रौम नहीं जिसमें मेरे निशान प्रकट नहीं हुए और कोई सम्प्रदाय नहीं जो मेरे निशानों का गवाह नहीं। यदि इन निशानों के गवाह दस करोड़ भी कहें तो कुछ अतिशयोक्ति नहीं होगी किन्तु विरोधियों की दशा पर रोना आता है कि उन्होंने कुछ लाभ प्राप्त न किया। यदि ये निशान जो उनको दिखाए गए हज़रत ईसा बिन मरयम के समय में यहूदियों को दिखाए जाते तो वे

ضربت عليهم الذلة

के चरितार्थ न होते और यदि लूट की क्रौम इन निशानों को देखती तो वह एक भारी भूकम्प से पृथ्वी के नीचे न दबाई जाती किन्तु खेद उन हृदयों पर कि वे पत्थर से भी अधिक कठोर सिद्ध हुए और प्रत्येक अन्धकार से अधिक उन के हृदय का अन्धकार बढ़ गया। वास्तविकता यह है कि जैसा कि युग ने प्रत्येक सांसारिक सामान में उन्नति की वैसी ही बेईमानी और कुफ्र में भी उन्नति की। अतः यह उन्नति प्राप्त कुफ्र चाहता है कि उन पर कोई साधारण अज़ाब न आए अपितु वह अज़ाब आए जो संसार के प्रारंभ से आज तक कभी नहीं आया। बहरहाल हम खुदा का हज़ार-हज़ार आभार प्रकट करते हैं कि जिस प्रकाश को विरोधियों ने स्वीकार नहीं किया और अंधे ही रहे वही प्रकाश हमारी दृष्टि और आध्यात्मिक ज्ञान की वृद्धि का कारण हो गया।

شَرِبْنَا مِنْ عَيْنِ اللَّهِ مَاءً

بِوَحْيٍ مُّشْرِقٍ حَتَّى رَوَيْنَا

हमने खुदा के झरनों से एक पानी पिया जो प्रकाशमान वह्यी का पानी है यहां

तक कि हम तृप्त हो गए।

رَأَيْنَا مِنْ جَلَالِ اللَّهِ شَمْسًا
فَأَمَّنَّا وَصَدَّقْنَا بِبَيِّنَاتٍ

हमने खुदा की महानता का एक सूर्य देखा। अतः हम ईमान लाए और विश्वास के साथ सत्यापन किया।

تَجَلَّتْ مِنْهُ آيٌ فِي قَطِيعِي
وَأُخْرِى فِي عَشَائِرِ كَافِرِينَا

उसके एक प्रकार के निशान तो मेरी जमाअत में प्रकट हुए और दूसरी प्रकार के निशान काफ़िरो के गिरोह में प्रकट हुए।

129. एक सौ उन्तीसवां निशान - मौलवी रुसुल बाबा अमृतसरी जिसने मेरे मुकाबले पर केवल निरर्थक एवं व्यर्थ तौर पर पुस्तक 'हयातुल मसीह' लिखी थी उसका यह कथन था कि यदि यह ताऊन मसीह मौऊद की सच्चाई का निशान है तो मुझे क्यों ताऊन नहीं होती। अतः वह ताऊन ग्रस्त हुआ और उस के ताऊन ग्रस्त होने के दिनों में जुमा के दिन मुझे इल्हाम हुआ

يُمُوتُ قَبْلَ يَوْمِي هَذَا

अर्थात् जुमा (शुक्रवार) से पूर्व मृत्यु का शिकार होगा। अतः वह अगले जुमा से पूर्व 8 दिसम्बर 1902 ई. को साढ़े पांच बजे प्रातः इस नश्वर संसार से कूच कर गया। और मेरा यह इल्हाम उस की मृत्यु से पूर्व प्रकाशित किया गया था और अलहकम में भी प्रकाशित हो चुका है। फिर साथ ही मुझे यह इल्हाम हुआ -

سَلَامٌ عَلَيْكَ يَا إِبْرَاهِيمَ سَلَامٌ عَلَى أَمْرِكَ - صِرْتَ فَائِزًا

अर्थात् हे इब्राहीम! तुझ पर सलाम तू सफल हो गया।

130. एक सौ तीसवां निशान - मैंने अपनी पुस्तक 'अंजाम-ए-आथम' में बहुत से विरोधी मौलवियों का नाम लेकर उन्हें मुबाहले के लिए आमंत्रित किया था और पृष्ठ 66 पर मैंने यह लिखा था कि यदि कोई इन में से मुबाहला करे तो

मैं यह दुआ करूँगा कि उनमें से कोई अंधा हो जाए और कोई लक्वाग्रस्त और कोई पागल और किसी की मृत्यु सांप के काटने से हो और कोई असमय मृत्यु का शिकार हो और कोई अपमानित हो और किसी को आर्थिक क्षति पहुँचे। फिर यद्यपि समस्त विरोधी मौलवी योद्धा बन कर मुबाहले के लिए उपस्थित न हुए किन्तु पीठ पीछे गालियां देते रहे और झुठलाते रहे। अतः उनमें से रशीद अहमद गंगोही ने केवल झूठों पर ख़ुदा की ला'नत हो नहीं कहा अपितु अपने एक विज्ञापन में मुझे शैतान के नाम से सम्बोधित किया है। अन्ततः इस का परिणाम यह हुआ कि समस्त सामने वाले मौलवियों में से जो बावन (52) थे आज तक केवल बीस जीवित हैं और वे भी किसी न किसी विपत्ति में ग्रस्त। शेष सब मृत्यु का शिकार हो गए। मौलवी रशीद अहमद अन्धा हुआ और फिर सांप के काटने से मर गया जैसा कि मुबाहला की दुआ में था। मौलवी शाहदीन पागल होकर मरा, मौलवी गुलाम दस्तगीर स्वयं अपने मुबाहले से मर गया और जो जीवित हैं उनमें से कोई भी कथित विपत्ति से रिक्त नहीं, हालांकि अभी उन्होंने मसनून तौर (नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पद्धति) पर मुबाहला नहीं किया था।

131. एक सौ इकत्तीसवां निशान - पाठक मेरी इस पुस्तक में पढ़ेंगे कि एक बार मैंने बिशम्बर दास बिरादर शरमपत खत्री के बारे में एक भविष्यवाणी की थी कि वह इस फौजदारी के मुकद्दमे से जो उस पर बना था बरी तो नहीं होगा परन्तु आधी कैद रह जाएगी। तत्पश्चात् ऐसा संयोग हुआ कि जब बिशम्बर दास आधी कैद काट कर छूट गया जैसा कि पहले से भविष्यवाणी में बताया गया था तो उसके वारिसों ने घटना के विपरीत यह प्रसिद्ध कर दिया कि बिशम्बर दास बरी हो गया। रात का समय था और मैं अपनी बड़ी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए गया था। जब एक अली मुहम्मद नामक व्यक्ति मुल्ला निवासी क्रादियान ने मस्जिद में आकर यह वर्णन किया कि बिशम्बर दास बरी हो गया है और बाज़ार में उसे बधाइयां मिल रही हैं। अतः मुझे यह सूचना सुनते ही बहुत आघात पहुँचा और हृदय में बेचैनी पैदा हुई कि धार्मिक पक्षपाती हिन्दू इस बात पर प्रहार करेंगे कि

तुमने यह सूचना दी थी कि बिशम्बर दास बरी नहीं होगा, अब देखो वह तो बरी हो गया। मुझे इस शोक से नमाज़ की एक-एक रकअत एक-एक वर्ष के बराबर हो गई और जब मैं नमाज़ में किसी रकअत के पश्चात् सज्दे में गया तो उस समय मेरी व्याकुलता चरम सीमा को पहुँच गई थी। तब सज्दे की अवस्था में ही उच्च स्वर में ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित करके कहा -

لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَى

अर्थात् कुछ चिन्ता न कर तू ही विजयी है। अतः मैं प्रतीक्षा करता रहा कि यह भविष्यवाणी किस प्रकार पूरी होगी, किन्तु कोई निशान प्रकट न हुआ। मैं बार-बार उसी शरमपत से पूछता था कि क्या यह सत्य है कि बिशम्बर दास बरी हो गया? तो वह यही उत्तर देता था कि वह वास्तव में बरी हो गया है मुझे झूठ बोलने की क्या आवश्यकता थी और इस गांव में जिससे मैं पूछता वह यही कहता था कि हम ने भी सुना है कि वह बरी हो गया है। इस प्रकार लगभग छः माह गुज़र गए या कुछ कम अथवा अधिक और उद्दण्ड लोग हंसी-ठट्ठा करते थे जैसी कि उनकी सदैव से आदत है किन्तु शरमपत ने कोई उपहास नहीं किया जिस से मुझे विश्वास हुआ कि अब तो उस ने मुझ से शालीनता का व्यवहार किया है, किन्तु फिर भी मैं उसके समक्ष लज्जित होता था कि मैंने इतने जोर से उसके भाई के बरी न होने की सूचना दी थी और अब यह स्थिति सामने है। तथापि अपने ख़ुदा पर मेरा अटल विश्वास था और मुझे विश्वास था कि ख़ुदा कुदरत का कोई चमत्कार दिखाएगा और संभव है कि बरी होने के पश्चात् फिर क्रैद हो जाए, किन्तु मुझे यह सूचना न थी कि स्वयं यह सूचना ही एक बनावट है। तत्पश्चात् ऐसा संयोग हुआ प्रातः आठ बजे के निकट बटाला का एक हाफिज़ हिदायत अली नामक तहसीलदार जिसकी पूर्व भी चर्चा हो चुकी है दौरे पर क़ादियान में आया क्योंकि क़ादियान तहसील बटाला से सम्बद्ध है, और वह हमारे मकान पर आ गया और अभी घोड़े पर से नहीं उतरा था कि कुछ हिन्दू जैसा कि उनकी परम्परा है उसे सलाम करने के लिए आ गए और उनमें बिशम्बर दास भी था। तब तहसीलदार

ने बिशम्बर दास को देखकर कहा कि बिशम्बर दास हम इस से प्रसन्न हुए कि तुम ने क्रैद से मुक्ति पाई किन्तु खेद कि तुम बरी न हुए। मैंने तो इस बात को सुनते ही धन्यवाद का सज्दह किया और तुरन्त शरमपत को बुलाया कि तू किसलिए इतने समय तक मुझ से झूठ बोलता रहा कि बिशम्बर दास बरी हो गया और मुझे व्यर्थ में कष्ट पहुँचाया। उसने उत्तर दिया कि एक विवशता के कारण यह झूठ बोलना पड़ा और वह यह है कि हमारी कौम में रिश्तों-नातों के समय छोटी-छोटी बातों में आलोचनाएं होती हैं और किसी दुराचार के सिद्ध होने से लड़कियां मिलना कठिन हो जाता है। अतः इसी विवशता से मैं घटना के विपरीत कहता रहा और घटना के विपरीत उसे प्रख्याति भी दी।

132. एक सौ बत्तीस वां निशान - मैं पहले लिख चुका हूँ कि 4 अप्रैल 1905 ई. के भूकम्प के समय हम अपने समस्त परिवार के साथ बाग में चले गए थे और हमारी ज़मीन का एक मैदान जिसमें पांच हजार लोगों की क्षमता थी हम ने सोने के लिए उचित समझा और उसमें दो तम्बू लगाए और इर्द-गिर्द कनातों से पर्दा कराया। किन्तु फिर भी चोरों का खतरा था क्योंकि जंगल था। इसके निकट ही कुछ देहात में प्रसिद्ध चोर रहते हैं जो कई बार दण्ड पा चुके हैं। एक बार रात को मैंने स्वप्न में देखा कि मैं पहर के लिए घूम रहा हूँ। जब मैं कुछ क्रदम गया तो मुझे एक व्यक्ति मिला। उसने कहा कि आगे फ़रिश्तों का पहरा है अर्थात् तुम्हारे पहर के कुछ आवश्यकता नहीं। तुम्हारे तम्बूओं के चारों ओर फ़रिश्ते पहर दे रहे हैं। तत्पश्चात् इल्हाम हुआ -

امن است در مقام محبت سرائے ما

अनुवाद :- हमारी मुहब्बत का घर अमन (शांति) का घर है।

फिर कुछ दिनों के पश्चात् ऐसा संयोग हुआ कि आस-पास के देहात में से एक गांव का रहने वाला जो प्रसिद्ध चोर था चोरी के इरादे से हमारे बाग में आया और उसका नाम बिशन सिंह था। रात का पिछला पहर था जब उसने इस इरादे से बाग में प्रवेश किया किन्तु अवसर न मिलने से एक प्याज़ के खेत में बैठ गया और

उसने बहुत सी प्याज़ तोड़ी और एक ढेर लगा दिया। फिर किसी ने देख लिया। तब वहां से दौड़ा और इतना देवकाय और शक्तिशाली था कि उसे दस लोग भी न पकड़ सकते यदि खुदा की भविष्यवाणी ने पहले से उसे पकड़ा हुआ न होता। दौड़ते समय उसका एक पैर गढ़े में जा पड़ा, फिर भी वह संभल कर उठा किन्तु आगे-पीछे से लोग पहुँच गए। इस प्रकार सरदार ब्रिशन सिंह अपने कठिन प्रयास के बावजूद पकड़े गए और अदालत में जाते ही दण्ड पा गए। तत्पश्चात् हमारे रहने के मकान में से जो बाग़ में है जिसमें हम दिन के समय रहते थे एक बड़ा सांप निकला जो एक ज़हरीला सांप था और बड़ा लम्बा था, वह भी उस चोर की भाँति अपने दण्ड को पहुँचा और इस प्रकार हमें फ़रिश्तों की रक्षा का प्रमाण हाथों हाथ मिल गया।^①

133. एक सौ तेतीसवां निशान - मैं अंग्रेज़ी से सर्वथा अनभिज्ञ हूँ तथापि खुदा तआला ने कुछ भविष्यवाणियों को उपहार स्वरूप अंग्रेज़ी में मुझ पर प्रकट किया है जैसा कि बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 480, 481, 483, 484 एवं पृष्ठ 522 में यह भविष्यवाणी है जिस पर पच्चीस वर्ष गुज़र गए और वह यह है -

I love you. I am with you. Yes I am happy. Life of pain. I shall help you. I can, what I will do. We can, what we will do. God is coming by his army. He is with you to kill enemy. The days shall come when God shall help you. Glory be to the Lord. God maker of earth and heaven.^②

① इस भविष्यवाणी के साक्षी मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब और मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए. और समस्त जमाअत के लोग हैं जो बाग़ में मेरे साथ थे। इसी से।

② चूँकि यह ग़ैर भाषा में इल्हाम है और खुदा के इल्हाम में एक तीव्रता होती है। इसलिए संभव है कि कुछ शब्दों के अदा करने में कुछ अन्तर हो और यह भी देखा गया है कि कुछ स्थानों पर खुदा तआला मानवीय मुहावरों का पाबन्द नहीं होता किसी अन्य युग के त्याज्य मुहावरों को अपनाता है और यह भी देखा गया है कि वह कुछ स्थानों पर

अनुवाद - मैं तुम से प्रेम करता हूँ। मैं तुम्हारे साथ हूँ। हां मैं प्रसन्न हूँ। जीवन दुःख का (अर्थात् वर्तमान जीवन तुम्हारा कष्टों का जीवन है) मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। मैं कर सकता हूँ जो चाहूँगा, हम कर सकते हैं जो चाहेंगे। खुदा तुम्हारी ओर एक सेना के साथ चला आता है। वह शत्रु को मारने के लिए तुम्हारे साथ है। वे दिन आते हैं कि खुदा तुम्हारी सहायता करेगा।

خدائے ذو الجلال آفریننده زمین و آسمان

यह वह भविष्यवाणी है कि अंग्रेज़ी में उस खुदा ने की जो एक है जिसका कोई भागीदार नहीं। हालांकि मैं अंग्रेज़ी नहीं जानता और इस भाषा से पूर्णतः अनभिज्ञ हूँ किन्तु खुदा ने चाहा कि अपने भावी वादों को इस देश की समस्त प्रसिद्ध भाषाओं में प्रकाशित करे। अतः इस भविष्यवाणी में खुदा तआला प्रकट करता है कि जो तुम्हारी वर्तमान स्थिति दुःख और कष्ट की है मैं उसे दूर करूँगा और मैं तुम्हारी सहायता करूँगा तथा एक सेना के साथ तुम्हारे पास आऊँगा और शत्रु का विनाश करूँगा। इस भविष्यवाणी का बहुत सा भाग पूरा हो चुका है और खुदा तआला ने प्रत्येक ने'मत का द्वार मुझ पर खोल दिया है और हजारों लोग तन-मन से मेरी बैअत में सम्मिलित हो गए हैं। इस भविष्यवाणी के समय कौन जानता था कि किस समय इतनी अधिक सहायता आएगी। अतः यह अद्भुत भविष्यवाणी है जिसके शब्द भी एक निशान हैं अर्थात् अंग्रेज़ी इबारात और अर्थ भी निशान हैं क्योंकि इन में भविष्य की सूचना है।

134. एक सौ चौंतीसवां निशान - बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 523 में इस निशान की विस्तृत चर्चा है। सारांश यह है कि एक बार मुझे इल्हाम हुआ कि :

शेष हाशिया :- मानवीय व्याकरण के अधीन नहीं चलता। इसके उदाहरण पवित्र कुर्आन में बहुत पाए जाते हैं। उदाहरणतया यह आयत अर्थात् -

إِنْ هَذَا لَسِحْرٌ (सूरह ताहा:64)

मानवीय व्याकरण की दृष्टि से **إِنْ هَذَا** होना चाहिए। इसी से।

بست ویک

(अर्थात् इक्कीस रुपए) आने वाले हैं। अतः यह इल्हाम भी उन्हीं आर्यों को बताया गया, जिनकी कई बार चर्चा हो चुकी है और इल्हाम में यह बोध हुआ था कि वह रुपया आज ही आएगा। अतः उस दिन वजीर सिंह नामक एक रोगी ने आकर मुझे एक रुपया दिया। फिर मुझे विचार आया कि शेष बीस रुपए कदाचित् डाक द्वारा आएंगे। अतः डाकखाने में अपना एक विश्वासपात्र व्यक्ति भेजा गया। वह उत्तर लाया कि डाक मुन्शी कहता है कि मेरे पास केवल पांच रुपए डेरा गाजी खान से आए हैं जिनके साथ एक कार्ड भी है। इस सूचना को सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ, क्योंकि मैं आर्यों को इस भविष्यवाणी की सूचना दे चुका था कि आज इक्कीस रुपए आएंगे। उन्हें मालूम था कि एक रुपया आ चुका है और मुझे डाक मुन्शी की इस सूचना से इतनी अधिक व्याकुलता हुई जिसको वर्णन नहीं किया जा सकता, क्योंकि उसकी इस सूचना से केवल पांच रुपए डेरा गाजी खान से आए हैं। अधिक रुपयों से बिल्कुल निराशा हो गई और मुझे लक्षणों से ज्ञात हुआ कि आर्य लोग जिन्हें यह सूचना दी गई थी हृदय में बहुत प्रसन्न हुए हैं कि आज हमें झुठलाने का अवसर मिल गया। मैं नितान्त व्याकुलता में था कि अचानक मुझे यह इल्हाम हुआ - बस्त व यक (इक्कीस) आए हैं इसमें सन्देह नहीं। मैंने आर्यों को यह इल्हाम सुनाया। वह और भी अधिक उपहास का कारण हुआ क्योंकि एक सरकारी कर्मचारी ने जो सब पोस्टमास्टर था स्पष्ट तौर पर कह दिया था कि केवल पांच रुपए आए हैं। तत्पश्चात् संयोगवश उन आर्यों में से एक आर्य डाकखाने गया और उसे डाक मुन्शी ने उसके पूछने पर या स्वयं कहा कि वास्तव में बीस रुपए आए हैं और पहले यों ही मेरे मुख से निकल गया था कि पांच रुपए आए हैं और इसके साथ मुन्शी इलाही बख्श साहिब एकाउंटेंट का एक कार्ड भी था। यह रुपया 6 सितम्बर 1883 ई. को पहुँचा था जिस दिन यह इल्हाम हुआ। अतः इस शुभ दिन को स्मरण रखने तथा आर्यों को साक्षी बनाने के लिए एक रुपए की मिठाई बांटी गई जिसे एक आर्य लाया और आर्यों तथा अन्य लोगों को दी गई ताकि यदि यों नहीं तो मिठाई खा कर ही इस निशान को याद रखें।

135. एक सौ पैंतीसवां निशान - एक बार मधुमेह के रोग के कारण जो लगभग बीस वर्ष से मुझे लगा हुआ है, आंखों की दृष्टि के बारे में बहुत भय हुआ क्योंकि ऐसे रोगों में आँखों में पानी उतरने का बहुत खतरा रहता है। तब खुदा तआला ने अपनी कृपा-दृष्टि से मुझे अपनी जिस वह्यी से धैर्य, सन्तोष और अराम प्रदान किया। वह वह्यी यह है -

نزلت الرِّحْمَةُ عَلَى ثَلَاثِ الْعَيْنِ وَعَلَى الْآخَرَيْنِ

अर्थात् तीन अंगों पर दयादृष्टि उतारी गई। एक आंखें तथा दो अन्य अंग। इनको स्पष्ट नहीं किया। और मैं खुदा तआला की क्रसम खा कर कहता हूँ कि जैसी कि पन्द्रह बीस वर्ष की आयु में मेरी दृष्टि थी ऐसी ही इस आयु में भी जो लगभग सत्तर वर्ष तक पहुँच गई है वही दृष्टि है। अतः यह वही दया है जिसका वादा खुदा तआला की वह्यी में दिया गया था।

136. एक सौ छत्तीस वां निशान - मुझे मानसिक कमजोरी और सर चकराने के कारण बहुत अधिक कमजोरी हो गई थी यहां तक कि मुझे यह भय हुआ कि अब मेरी दशा लिखने के योग्य बिल्कुल नहीं रही और ऐसी कमजोरी थी कि जैसे शरीर में जान नहीं थी। इस स्थिति में मुझे इल्हाम हुआ -

تُرْذِلُكَ أَنْوَارُ الشَّيْبَابِ

अर्थात् जवानी के प्रकाश तेरी ओर वापस लौटाए गए। तत्पश्चात् कुछ दिनों में ही मुझे महसूस हुआ कि मेरी खोई हुई शक्तियाँ पुनः वापस आती जाती हैं और थोड़े दिनों के पश्चात् ही मुझ में इतनी शक्ति आ गई कि मैं प्रतिदिन दो-दो भाग नई पुस्तक के अपने हाथ से लिख सकता हूँ और न केवल लिखना अपितु सोचना-विचार करना जो नई पुस्तक के लिए आवश्यक है पूर्णरूप से प्राप्त हो गया। हां दो रोग मेरे साथ लगे हुए हैं। एक शरीर के ऊपरी भाग में और दूसरा शरीर के निचले भाग में। ऊपर के भाग में सर का चकराना है और नीचे के भाग में पेशाब की अधिकता है और यह दोनों रोग उसी युग से हैं जिस युग से मैंने खुदा की ओर से मामूर (अर्थात् सुधारक) होने का दावा प्रकाशित किया है। मैंने उनके लिए

दुआएं भी कीं किन्तु उत्तर नकारात्मक पाया। मेरे हृदय में इल्का किया गया कि प्रारंभ से मसीह मौऊद के लिए यह निशान निर्धारित है कि वह दो जर्द चादरों के साथ दो फ़रिश्तों के कंधों पर हाथ रखे हुए उतरेगा। अतः ये वही दो चादरें हैं जो मेरी शारीरिक स्थिति के साथ सम्मिलित की गईं। नबियों की सर्व सम्मति से जर्द चादर की ताबीर रोग है। दो जर्द चादरें दो रोग हैं जो शरीर के दो भागों पर लगे हुए हैं तथा मुझ पर भी ख़ुदा तआला की ओर से यही स्पष्ट किया गया है कि दो जर्द चादरों से अभिप्राय दो रोग हैं और आवश्यक था कि ख़ुदा तआला का कथन पूरा होता।

स्मरण रहे कि मसीह मौऊद के विशेष लक्षणों में से यह लिखा है कि (1) वह दो जर्द चादरों के साथ उतरेगा।

(2) अतः यह कि दो फ़रिश्तों के कंधों पर हाथ रखे हुए उतरेगा।

(3) अतः यह कि काफ़िर उसकी दम से मरेंगे।

(4) अतः यह कि वह ऐसी अवस्था में दिखाई देगा कि जैसे स्नान करके स्नान गृह से निकला है और उसके सिर से पानी की बूंदें मोतियों की तरह टपकती दिखाई देंगी।

(5) अतः यह कि वह दज्जाल के मुकाबले पर काबा का तवाफ़ (परिक्रमा) करेगा।

(6) अतः यह कि वह सलीब को तोड़ेगा।

(7) अतः यह कि वह सुअर का वध करेगा।

(8) अतः यह कि वह विवाह करेगा तथा उसकी सन्तान होगी।

(9) अतः यह कि वही है जो दज्जाल का क्रांतिल होगा।

(10) अतः यह कि मसीह मौऊद का वध नहीं किया जाएगा अपितु उसकी स्वाभाविक मृत्यु होगी और आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क्रब्र में दफ़न किया जाएगा।

ये पूरे दस लक्षण हैं।

अतः दो जर्द चादरों के बारे में हम वर्णन कर चुके हैं कि वे दो रोग हैं जो बतौर लक्षण मसीह-मौऊद के शरीर से पहले दिन से निर्धारित थे ताकि उसका असाधारण स्वास्थ्य भी एक निशान हो।

और दो फ़रिश्तों से अभिप्राय उसके लिए दो प्रकार के आकाशीय समर्थन हैं जिनके द्वारा समझाने का अन्तिम प्रयास आधारित है।

(1) एक ईश्वर प्रदत्त ज्ञान - जो बौद्धिक और उदाहृत प्रमाणों के साथ निर्णायक तर्क प्रस्तुत करना जो बिना किसी परिश्रम और प्रयास के उसे प्रदान किया जाएगा।

(2) दूसरा- निशानों के साथ समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण करना जो मानव हस्तक्षेप के बिना खुदा की ओर से उतरेंगे। और दो फ़रिश्तों के कंधों पर उस का हाथ रख कर उतरना इस बात की ओर संकेत है कि उसकी उन्नति के लिए अलौकिक साधन उपलब्ध होंगे तथा उनके सहारे से काम चलेगा। मैं इससे पूर्व एक स्वप्न वर्णन कर चुका हूँ कि मैंने देखा कि मेरे हाथ में एक तलवार दी गई है जिसका दस्ता तो मेरे हाथ में है और उसकी नोक आकाश में है और मैं उसे दोनों ओर चलाता हूँ और हर ओर चलाने से सैकड़ों लोग क्रल्ल होते जाते हैं जिसकी ताबीर स्वप्न ही में एक सदाचारी पुरुष ने यह वर्णन की कि यह तर्कों की अकाट्य और निर्णायक तलवार है और दाएं ओर से तात्पर्य वह निर्णायक तर्क है जो आसमानी निशानों के द्वारा होगा। और बायीं ओर वह निर्णायक तर्क अभिप्राय है जो बौद्धिक और उदाहृत प्रमाणों द्वारा होगा और यह दोनों प्रकार के निर्णायक तर्क बिना मानवीय प्रयासों के प्रकटन में आएगा।

और काफ़िरों को अपने दम से मारना इस से यह अभिप्राय है कि मसीह मौऊद के नफ़्स से अभति उसके ध्यान से काफ़िर हलाक होंगे। और मसीह मौऊद का ऐसा दिखाई देना मानो वह स्नानगृह से नहाकर निकला है और मोतियों के दानों के समान स्नान के जल की बूंदे उस के सिर पर से टपकती हैं इस कशफ़ का अर्थ है कि मसीहे मौऊद अपनी बार-बार की तौबा और गिड़गिड़ाहट से अपनी इस निकटता को जो उसको खुदा के साथ है ताज्जा करता

रहेगा अथवा वह हर समय स्नान करता है और उस पवित्र स्नान की पवित्र बूंदें मोतियों के समान उस के सिर से टपकती हैं यह नहीं कि मानव प्रकृति के विपरीत इस में कोई अलौकिक कार्य है कदापि नहीं, कदापि नहीं। क्या लोगों ने इस से पूर्व अलौकिक कार्य का ईसा बिन मरयम में परिणाम नहीं देख लिया जिस ने करोड़ों लोगों को नर्क की अग्नि का ईंधन बना दिया तो क्या अब भी यह रूचि शेष है कि मानवीय स्वभाव के विपरीत ईसा आकाश से उतरे फ़रिश्ते भी साथ हों और अपने मुँह की फ़ूंक से लोगों का वध करे और उसके शरीर से मोतियों की भांति बूंदें टपकती हों। निष्कर्ष यह कि मसीह मौऊद के शरीर से मोतियों की भांति बूंदें टपकने के अर्थ जो मैंने लिखे हैं वे उचित हैं। आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने हाथों में सोने के कड़े देखे तो क्या उस से कड़े ही अभिप्राय थे ? इसी प्रकार आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गायें ज़िबह होते देखीं तो क्या इस से गायें ही अभिप्राय थीं ? कदापि नहीं अपितु उनके अर्थ और थे। अतः इसी प्रकार मसीह मौऊद को आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इस रूप में देखना जैसे वह स्नान करके आता है और स्नान की बूंदें उसके सर से मोतियों की भांति टपकती हैं। इसके यही अर्थ हैं कि वह बहुत तौबा करने वाला और ख़ुदा की ओर झुकने वाला होगा और उसका संबंध ख़ुदा तआला से सदैव ताज़ा से ताज़ा रहेगा जैसे वह हर समय स्नान करता है और ख़ुदा से पवित्र संबंध की पवित्र बूंदें पवित्र मोतियों की भांति उसके सिर से टपकती हैं। एक अन्य हदीस में भी ख़ुदा की ओर लौटने को स्नान से समरूपता दी है। जैसा कि नमाज़ की विशेषताओं के बारे में आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा है कि यदि किसी के घर के द्वार के आगे नहर हो और वह पांच समय उस नहर में स्नान करे तो क्या उसके शरीर पर मैल रह सकता है ? सहाबा ने कहा कि नहीं। तब आप^स ने कहा कि इसी प्रकार जो व्यक्ति पांच समय नमाज़ पढ़ता है (जो तौबा, क्षमा-याचना, दुआ, विनय, अनुरोध, स्तुति और ख़ुदा की पवित्रता की संग्रहीता है) उस पर भी पापों का मैल नहीं रह सकता

जैसे वह पांच समय स्नान करता है। इस हदीस से स्पष्ट है कि मसीह मौऊद के स्नान के भी यही अर्थ हैं अन्यथा शारीरिक स्नान में कौन सा कोई विशेष गुण है। इस प्रकार तो हिन्दू भी प्रतिदिन प्रातः स्नान करते हैं और स्नान की बूंदें भी टपकती हैं। खेद कि शारीरिक विचार रखने वाले लोग प्रत्येक आध्यात्मिक बात को शारीरिक बातों की ओर ही खींच ले जाते हैं और यहूदियों की भांति रहस्यों और वास्तविकताओं से अपरिचित हैं।

और यह बात कि मसीह मौऊद दज्जाल के मुकाबले पर काबा का तवाफ़ करेगा अर्थात् दज्जाल भी काबा का तवाफ़ करेगा और मसीह मौऊद भी। इसके अर्थ स्वयं स्पष्ट हैं कि उस तवाफ़ से प्रत्यक्ष तवाफ़ अभिप्राय नहीं अन्यथा यह स्वीकार करना पड़ेगा कि दज्जाल काबे में प्रवेश करेगा या यह कि मुसलमान हो जाएगा। ये दोनों बातें हदीस के स्पष्ट आदेशों के विपरीत हैं। अतः बहरहाल यह हदीस व्याख्या योग्य है और उसका वह अर्थ जो खुदा ने मुझ पर स्पष्ट किया है वह यह है कि अन्तिम युग में एक गिरोह पैदा होगा जिस का नाम दज्जाल है। वह इस्लाम का कट्टर शत्रु होगा और वह इस्लाम को मिटाने के लिए जिस का केन्द्र काबा है चोर की भांति उसके चारों ओर तवाफ़ करेगा ताकि इस्लाम की इमारत को समूल नष्ट कर दे तथा उसके मुकाबले पर मसीह मौऊद भी इस्लाम के केन्द्र का तवाफ़ करेगा जिसका ज़ाहिरी रूप काबा है और इस तवाफ़ से मसीह मौऊद का उद्देश्य यह होगा कि उस चोर को पकड़े जिसका नाम दज्जाल है और उसके हस्तक्षेपों से इस्लाम के केन्द्र को सुरक्षित रखे। यह बात स्पष्ट है कि रात्रि के समय चोर भी घर वालों को तबाह करता है और चौकीदार भी। चोर का उद्देश्य तवाफ़ से यह होता है कि सेंध लगाए और घरवालों को तबाह करे और चौकीदार का उद्देश्य तवाफ़ से यह होता है कि चोर को पकड़े और उसे कठोर दण्ड के कारावास में प्रवेश कराए ताकि उसकी बुराई से लोग अमन में आ जाएं। अतः इस हदीस में इसी मुकाबले की ओर संकेत है कि अन्तिम युग में वह चोर जिसे दज्जाल की संज्ञा दी गई है नाखूनों

तक जोर लगाएगा कि इस्लाम के भवन को ध्वस्त कर दे^① तथा मसीह मौऊद भी इस्लाम की सहानुभूति में अपने नारे आकाश तक पहुँचाएगा और समस्त फ़रिश्ते उसके साथ हो जाएंगे ताकि इस अन्तिम युद्ध में उसकी विजय हो। वह न थकेगा और न शिथिल होगा और न ही सुस्त और नाखूनों तक जोर लगाएगा ताकि उस चोर को पकड़े और जब उसकी विनय चरम सीमा तक पहुँच जाएगी तब खुदा उसके हृदय को देखेगा कि वह इस्लाम के लिए कहां तक पिघल गया। तब वह कार्य जो पृथ्वी नहीं कर सकती आकाश करेगा और वह विजय जो मानवीय हाथों से नहीं हो सकती वह फ़रिश्तों के हाथों से प्राप्त हो जाएगी।

इस मसीह के अन्तिम दिनों में कठोर विपत्तियाँ आएंगी, भयंकर भूकम्प आएंगे और समस्त संसार से अमन जाता रहेगा। ये विपत्तियाँ केवल उस मसीह की दुआ से उतरेंगी तब इन निशानों के पश्चात् उसकी विजय होगी। वही फ़रिश्ते हैं जो रूपक के तौर पर लिखा गया है कि मसीह मौऊद उनके कंधों पर उतरेगा। आज कौन सोच सकता है

① खुदा तआला ने सूरह फ़ातिहा में हमें यह शिक्षा दी है कि वह दज्जाल जिससे डराया गया है वह अन्तिम युग के पथभ्रष्ट पादरी हैं जिन्होंने हज़रत ईसा का मार्ग त्याग दिया है क्योंकि उसने पवित्र सूरह में यही दुआ सिखाई है कि हम खुदा से चाहते हैं कि ऐसे यहूदी न बन जाएं जिन पर हज़रत ईसा की अवज्ञा और शत्रुता से प्रकोप उतरा था और न ऐसे ईसाई बन जाएं जिन्होंने हज़रत ईसा की शिक्षा को छोड़ कर उसे खुदा बना दिया था और एक ऐसा झूठ अपनाया जो समस्त झूठों से बढ़कर है और उसके समर्थन में अत्यधिक धोखा एवं छल प्रयोग में लाए। इसलिए आकाश पर उनका नाम दज्जाल रखा गया। यदि कोई अन्य दज्जाल होता तो इस आयत में उस से शरण मांगनी आवश्यक थी अर्थात् सूरह फ़ातिहा में **وَالْقَائِلِينَ** के स्थान पर **وَالَدَّجَّالِينَ** होना चाहिए था और यही अर्थ घटनाओं ने प्रकट किए हैं, क्योंकि जिस अन्तिम उपद्रव से डराया गया था युग ने उसी उपद्रव को प्रस्तुत किया है जो तीन खुदाओं की विचारधारा पर अतिशयोक्ति करने का उपद्रव है। इसी से।

कि यह दज्जाली उपद्रव जिस से अभिप्राय अन्तिम युग के पथभ्रष्ट व्यवसायी पादरियों की योजनाएं हैं मानव-प्रयासों से दूर हो सकती हैं। कदापि नहीं, अपितु आकाश का खुदा स्वयं इस उपद्रव को दूर करेगा। वह बिजली की भांति गिरेगा और तूफान की भांति आएगा और एक भीषण आंधी के समान संसार को हिला देगा, क्योंकि उसके प्रकोप का समय आ गया किन्तु वह निस्पृह है। कुदरत के पत्थर की अग्नि मानव-विनय की चोट की मुहताज है। आह ! क्या कठिन कार्य है, आह ! क्या कठिन कार्य है। हम ने एक कुरबानी देनी है जब तक हम वह कुरबानी अदा न करें सलीब नहीं टूटेगी। ऐसी कुरबानी को जब तक किसी नबी ने अदा नहीं किया उसकी विजय नहीं हुई और उसी कुरबानी की ओर इस पवित्र आयत में संकेत है -

وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ①

अर्थात् नबियों ने स्वयं को तपस्या की अग्नि में डालकर विजय चाही, फिर क्या था प्रत्येक अत्याचारी उद्दण्ड तबाह हो गया और इसी की ओर इस शेर में संकेत है -

تا دل مرد خدا نادرود
بچ قومه را خدا رسوا نه کرد

अनुवाद :- जब तक किसी अल्लाह वाले का दिल नहीं दुखता खुदा किसी क्रौम को अपमानित नहीं करता।

और सलीब के तोड़ने से यह समझना कि सलीब की लकड़ी या सोने-चांदी की सलीबें तोड़ी जाएंगी यह बड़ी भारी भूल है। इस प्रकार की सलीबें तो हमेशा इस्लामी युद्धों में टूटती रही हैं अपितु इस का अर्थ यह है कि मसीह मौऊद सलीबी आस्था को तोड़ देगा। तत्पश्चात् संसार में सलीबी आस्था का पोषण नहीं होगा। ऐसी टूटेगी कि फिर प्रलय तक उसको जोड़ा नहीं जा सकेगा। मानवीय हाथ उसे नहीं तोड़ेंगे अपितु वह खुदा जो समस्त कुदरतों का स्वामी है। जिस प्रकार उसने इस उपद्रव को पैदा किया था उसी प्रकार उस का विनाश करेगा। उसकी आंख प्रत्येक को देखती

है और प्रत्येक सच्चा और झूठा उसकी दृष्टि के सामने है। वह ग़ैर को यह सम्मान नहीं देगा किन्तु उसके हाथ का बनाया हुआ मसीह यह सम्मान पाएगा। जिसे खुदा सम्मान दे कोई नहीं जो उसे अपमानित कर सके। वह मसीह एक महान कार्य के लिए पैदा किया गया है। अतः वह कार्य उसके हाथ पर विजय प्राप्त करेगा उसका उत्थान सलीब के पतन का कारण होगा और सलीबी आस्था की आयु उसके प्रादुर्भाव से पूर्ण हो जाएगी और लोगों के विचार स्वयं ही सलीबी आस्था से अलग होते चले जाएंगे, जैसा कि आज-कल यूरोप में हो रहा है और जैसा कि स्पष्ट है कि इन दिनों में ईसाइयत का कार्य केवल वेतन प्राप्त पादरी चला रहे हैं और बुद्धिमान इस आस्था का परित्याग करते जाते हैं। अतः यह एक वायु है जो सलीबी आस्था के विपरीत यूरोप में चल पड़ी है तथा प्रतिदिन तीव्र से तीव्र होती चली जाती है। यही मसीह मौऊद के प्रकट होने के लक्षण हैं क्योंकि वही दो फ़रिश्ते जो मसीह मौऊद के साथ उतरने वाले थे सलीबी आस्था के विपरीत कार्य कर रहे हैं और संसार अंधकार से प्रकाश की ओर आता जाता है और वह समय निकट है कि दज्जाली जादू खुले तौर पर टूट जाए क्योंकि आयु पूरी हो गई है।

और यह भविष्यवाणी कि सुअर का वध करेगा यह एक अपवित्र और अपशब्दों का प्रयोग करने वाले शत्रु को पराजित करने की ओर संकेत है और इस बात की ओर संकेत है कि ऐसा शत्रु मसीह मौऊद की दुआ से तबाह किया जाएगा।

और यह भविष्यवाणी कि मसीह मौऊद की सन्तान होगी। यह इस बात की ओर संकेत है कि खुदा उस की नस्ल से एक ऐसे व्यक्ति को पैदा करेगा जो उसका उत्तराधिकारी होगा और इस्लाम धर्म का समर्थन करेगा जैसा कि मेरी कुछ भविष्यवाणियों में यह सूचना आ चुकी है।

और यह भविष्यवाणी कि वह दज्जाल का वध करेगा। इसके अर्थ यह है कि उसके प्रकट होने से दज्जाली उपद्रव कमजोर पड़ जाएगा और स्वयं ही कम होता जाएगा तथा बुद्धिमानों के हृदय एकेश्वरवाद की ओर पलटेंगे। स्पष्ट हो कि दज्जाल शब्द की दो व्याख्याएं की गई हैं - एक यह कि दज्जाल उस गिरोह को कहते हैं

जो झूठ का सहायक हो और धोखे और छल से काम चलाए।

दूसरी - यह कि दज्जाल शैतान का नाम है जो प्रत्येक झूठ और उपद्रव का जनक है। अतः वध करने के अर्थ यह है कि उस शैतानी उपद्रव का ऐसा उन्मूलन करेगा कि फिर प्रलय तक कभी उसका विकास नहीं होगा जैसे उस अन्तिम युद्ध में शैतान का वध किया जाएगा।

और यह भविष्यवाणी कि मसीह मौऊद मृत्योपरान्त आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क्रब्र में प्रवेश करेगा। इसके यह अर्थ करना कि नऊजुबिल्लाह आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क्रब्र खोदी जाएगी यह भौतिक विचारधारा रखने वाले लोगों की गलतियाँ हैं जो धृष्टता और असभ्यतापूर्ण बातें हैं अपितु इसके अर्थ यह है कि मसीह मौऊद सानिध्य के स्थान में आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इतना निकट होगा कि मृत्योपरान्त वह उस पद को पाएगा कि आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सानिध्य का पद उसे प्राप्त होगा और उसकी आत्मा आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आत्मा से जा मिलेगी। जैसे एक ही क्रब्र में हैं। वास्तविक अर्थ यही है जिसका मन चाहे दूसरे अर्थ करे। इस बात को आध्यात्मिक लोग जानते हैं कि मृत्योपरान्त शारीरिक सानिध्य कुछ वास्तविकता नहीं रखता अपितु प्रत्येक जो आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आध्यात्मिक सानिध्य रखता है उसकी आत्मा आपकी आत्मा से निकट की जाती है जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है -

فَادْخُلِي فِي عَبْدِي ۝ وَاَدْخُلِي جَنَّتِي ①

और यह भविष्यवाणी कि वह वध नहीं किया जाएगा। इस बात की ओर संकेत है कि खातमुल खुलफ़ा का वध होना इस्लाम के अपमान का कारण है। इसी कारण आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वध से सुरक्षित रखे गए।

137. एक सौ सैंतीसवां निशान - यह महान निशान लेखराम का मुबाहला है। स्पष्ट हो कि मैंने 'सुर्मा चश्म आर्य' की समाप्ति पर कुछ आर्य सज्जनों को

① अल फ़त्र - 30, 31

मुबाहले के लिए बुलाया था और लिखा था कि जो शिक्षा वेद की ओर सम्बद्ध की जाती है उचित नहीं है और आर्य लोग पवित्र कुर्आन को जो झुठलाते हैं उस में वे झूठे हैं। यदि उन्हें दावा है कि वह शिक्षा जो वेद की ओर सम्बद्ध की जाती हैं यदि सच्ची है और या (खुदा से क्षमा चाहते हैं) पवित्र कुर्आन खुदा की ओर से नहीं है तो वे मुझ से मुबाहला कर लें। और लिखा गया था कि सर्वप्रथम मुबाहले के लिए लाला मुरलीधर^① साहिब हैं जिन से होशियारपुर के स्थान पर बहस हुई थी। तत्पश्चात् हमारे संबोधित लाला जीवनदास सेक्रेटरी आर्य समाज लाहौर हैं और फिर कोई और दूसरे सज्जन आर्यों में से जो प्रतिष्ठित और विद्वान माने गए हों सम्बोधित किए जाते हैं।

मेरे इस लेख पर पंडित लेखराम ने अपनी पुस्तक 'खन्त-ए-अहमदिया' में जो 1888 ई. में उसने प्रकाशित की थी जैसा कि इस पुस्तक के अन्त में यह तिथि लिखी हुई है मेरे साथ मुबाहला किया। अतः वह मुबाहले के लिए अपनी पुस्तक खन्त-ए-अहमदिया के पृष्ठ 344 में बतौर भूमिका यह इबारत लिखी है -

चूँकि हमारे आदरणीय मास्टर मुरलीधर साहिब तथा मुन्शी जीवन दास साहिब सरकारी काम की अधिकता के कारण फुर्सत नहीं है इस कारण अपने उत्साह और उनकी आज्ञा से इस सेवा को भी विनीत ने अपने दायित्व में लिया। अतः किसी बुद्धिमान के इस कथन पर कि -

① स्पष्ट है कि मुबाहले की दो चार पंक्तियों के लिए किसी फुर्सत की आवश्यकता न थी। मुबाहले का सारांश तो मात्र यह वाक्य है कि अपना और दूसरे पक्ष का नाम लेकर खुदा तआला से यह दुआ करें कि हम में से जो व्यक्ति झूठा है वह तबाह हो। अतः क्या मास्टर मुरलीधर और मुन्शी जीवनदास को इतनी कम फुर्सत थी कि ये दो पंक्तियां भी नहीं लिख सकते थे अपितु वास्तविकता यह है कि वे दोनों सत्य के मुकाबले पर भयभीत हो गए और लेखराम अपने दुर्भाग्य से धृष्ट और अंधा व्यक्ति था उसने अपनी स्वाभाविक धृष्टता से उनकी विपत्ति अपने ऊपर ले ली। अन्ततः मुबाहले के पश्चात् 6 मार्च, 1897 ई. दिन शनिवार इस संसार से कूच कर गया। इसी से।

دروغ گو را تا بدروازه باید رسانید

कि झूठे को उसके दरवाजे पर पहुँचा कर कार्यरत होकर मिर्जा साहिब की इस अन्तिम विनती को (अर्थात् मुबाहले को) भी स्वीकार करता हूँ और मुबाहले को यहां छपवाकर प्रसिद्ध (करता हूँ)

मुबाहला का लेख

मैं विनीत लेखराम पुत्र पंडित तारा सिंह साहिब शर्मा 'तकजीब बराहीन अहमदिया' तथा इस पुस्तक का लेखक, अपने पूरे होश व हवास में सही इक्रार करके कहता हूँ कि मैंने प्रारंभ से अन्त तक पुस्तक 'सुर्मा चश्म आर्य' को पढ़ लिया और एक बार नहीं अपितु कई बार उसके तर्कों को भली भाँति समझ लिया बल्कि उनके खण्डन को सत्य धर्म की दृष्टि से इस पुस्तक में प्रकाशित किया। मेरे हृदय में मिर्जा जी के प्रमाणों ने कुछ भी प्रभाव नहीं डाला और न वे सच्चाई से सम्बन्धित हैं। मैं अपने जगत पिता परमेश्वर को साक्षी जान कर इक्रार करता हूँ कि जैसा कि चारों पवित्र वेदों में मार्गदर्शन का आदेश आधार है, इस पर मैं अटल विश्वास रखता हूँ कि मेरी रूह और समस्त रूहों को कभी नास्ति अर्थात् पूर्ण नाश नहीं है और न कभी हुआ और न होगा। मेरी रूह (आत्मा) को किसी ने नास्ति से आस्ति नहीं किया (अर्थात् मेरी आत्मा का कोई स्रष्टा नहीं अपितु अनादिकाल से स्वयंभू है) अपितु हमेशा से परमात्मा की अनादि कुदरत में रहा और रहेगा^① इसी प्रकार मेरा शरीरिक तत्त्व अर्थात् प्रकृति या परमाणु भी अनादि परमात्मा की कुदरत के अधिकार में मौजूद हैं कभी समाप्त नहीं होंगे और सम्पूर्ण जगत का सृजनहार एक ही करतार है दूसरा कोई नहीं। मैं परमेश्वर की भाँति समस्त

① **हाशिया** - यह कैसा व्यर्थ वाक्य है कि हमेशा से परमात्मा की अनादि कुदरत में रहा और रहेगा। स्पष्ट है कि जब कि आत्माएं आर्य समाज के कथनानुसार अपनी समस्त शक्तियों और कुदरतों के साथ अनादि काल से स्वयंभू हैं तो फिर उनका परमेश्वर की कुदरत के साथ संबंध ही क्या है। इन शक्तियों को न परमेश्वर बढ़ा

संसार का स्वामी या स्रष्टा नहीं हूँ और न सर्वव्यापक हूँ और न अन्तर्यामी अपितु उस महाशक्तिमान का एक तुच्छ सेवक हूँ किन्तु उसके ज्ञान और शक्ति में हमेशा से हूँ, समाप्त कभी नहीं हुआ और न कहीं कोई समाप्ति घर है अपितु किसी वस्तु को समाप्ति नहीं। ऐसा ही वेद की उस न्यायपूर्ण शिक्षा को भी मैं मानता हूँ कि मुक्ति अर्थात् मोक्ष कर्मों के अनुसार महाकल्प तक मिलती है (अर्थात् मोक्ष अनश्वर नहीं

शेष हाशिया

सकता है न घटा सकता है और न उनमें किसी प्रकार का हस्तक्षेप कर सकता है। वे समस्त आत्माएं तो आर्यों के कथनानुसार अपने-अपने अस्तित्व की स्वयं ही परमेश्वर हैं और उस पर इंच मात्र भी उपकार नहीं। अतः स्मरण रहे कि यह कथन लेखराम और उसके अन्य सहपंथियों का कि आत्माएं परमात्मा की अनादि कुदरत में रहती हैं और रहेंगी। यह केवल अपने धर्म की गलत बातों को ढकने के लिए बोला जाता है क्योंकि मनुष्य की अन्तरात्मा उसे हर समय ऐसी व्यर्थ आस्थाओं पर दोषी ठहराती है। यदि खुदा आत्माओं और उनकी शक्तियों तथा संसार के कण-कण और उनकी शक्तियों का स्रष्टा नहीं तो फिर वह उन का खुदा भी नहीं हो सकता तथा यह कहना कि यद्यपि हम आत्माओं को उनके अकेले होने की स्थिति में खुदा के बन्दे और सृष्टि नहीं कह सकते क्योंकि उसने उनको नहीं बनाया, परन्तु जब परमेश्वर आत्माओं को शरीरों में डालता है तो केवल इतनी कार्यवाही से उनका परमेश्वर बन जाता है। यह विचार भी गलत है क्योंकि जिस परमेश्वर ने आत्माओं और परमाणु को उनकी समस्त शक्तियों के साथ सृष्टि नहीं किया, इस बात पर कोई तर्क स्थापित नहीं हो सकता कि वह उनके जोड़ने पर समर्थ है और मात्र कुछ का कुछ से जोड़ना उसे परमेश्वर बनने का अधिकार प्रदान नहीं कर देता अपितु इस स्थिति में तो वह उस रोटी पकाने वाले की भांति है जिसने आटा बाज़ार से लिया और लकड़ी किसी लकड़ी विक्रेता से और अग्नि पड़ोसी से, और फिर रोटी पकाई। इस स्थिति में परमेश्वर के अस्तित्व पर कोई भी प्रमाण नहीं, क्योंकि यदि आत्माएं अपनी सम्पूर्ण शक्तियों के साथ अनादि काल से

केवल एक निर्धारित समय के लिए है) तत्पश्चात् परमात्मा के न्याय के अनुसार फिर मानव शरीर धारण करना पड़ता है। सीमित कर्मों का असीमित फल नहीं (कर्म तो सीमित हैं किन्तु वफ़ादार उपासक की नीयत सीमित नहीं होती तथा कर्म का सीमित होना उसकी अपनी इच्छा से नहीं)

मैं वेदों की इन सब शिक्षाओं को हार्दिक विश्वास के साथ मानता हूँ और मैं

शेष हाशिया

स्वयं भी हैं तो फिर इस पर क्या तर्क है कि आत्माओं और परमाणुओं का मिलना और अलग होना भी अनादिकाल से स्वयं नहीं जैसा कि नास्तिकों का विचार है। इसलिए आर्य समाज वाले अपने परमेश्वर के अस्तित्व पर कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सकते और न उनके पास कोई प्रमाण है। यह है सार वेद के ज्ञान का जिस पर गर्व किया जाता है। यह बात स्पष्ट है कि खुदा तआला के अस्तित्व पर दो प्रकार के तर्क स्थापित हो सकते हैं। प्रथम इस स्थिति में तर्क स्थापित होता है कि जब उस के अस्तित्व को समस्त वरदानों का उद्गम मान लिया जाए और उसे प्रत्येक अस्तित्व का स्रष्टा समझ लिया जाए तो ऐसी स्थिति में चाहे संसार के कणों पर दृष्टि डालें या आत्माओं पर अथवा शरीरों पर। आवश्यक तौर पर स्वीकार करना पड़ेगा कि इन समस्त उत्पादों का एक रचयिता है।

दूसरा मार्ग खुदा तआला को पहचानने का उसके ताज्जा से ताज्जा निशान हैं जो अंबिया एवं औलिया के माध्यम से प्रकट होते हैं। अतः आर्य समाज वाले उनके भी इन्कारी हैं। इसलिए उनके पास अपने परमेश्वर के अस्तित्व पर कोई भी तर्क नहीं।

विचित्र बात यह है कि आर्य लोग यों तो बात-बात में अपने परमेश्वर को पिता-पिता करके पुकारते हैं जैसा कि अभी लेखराम ने अपने मुबाहले के लेख में लिखा है परन्तु मालूम नहीं कि किस प्रकार का पिता है। क्या इस प्रकार का पिता जैसा कि एक दत्तकपुत्र एक अजनबी व्यक्ति को अपना पिता कह देता है या ऐसा पिता

यह भी मानता हूँ कि परमेश्वर पापों को बिल्कुल क्षमा नहीं करता (विचित्र परमेश्वर है) मेरा किसी अनुशंसा या सिफारिश पर भरोसा नहीं (अर्थात् किसी की दुआ किसी के पक्ष में स्वीकार नहीं होती) मैं खुदा को राशी (रिश्वत लेने वाला) या अन्याय करने वाला नहीं जानता (शब्द मुर्तशी है जिस के अर्थ हैं रिश्वत लेने वाला राशी शब्द नहीं है। लेखराम के ज्ञान का यह नमूना है कि मुर्तशी के स्थान पर राशी लिखता है) और मैं वेद की दृष्टि से इस बात पर पूर्ण और सही विश्वास

शेष हाशिया

जो नियोग के द्वारा काल्पनिक तौर पर बनाया जाता है और एक आर्य स्त्री अपने सतीत्व को धूल में मिलाकर दूसरे से अपना मुख काला कराती है और इस प्रकार उस स्त्री का पति उस बच्चे का पिता बन जाता है जो नियोग के द्वारा प्राप्त किया जाता है। अतः यदि आर्यों का परमेश्वर ऐसा ही पिता है तब तो हमें बात करने की गुंजायश ही नहीं, किन्तु यदि इस प्रकार का पिता है कि आत्माओं और संसार के कण अपनी समस्त शक्तियों सहित उसके हाथ से निकले हैं और उसी से अस्तित्व प्राप्त हैं तो यह बात आर्यों के सिद्धान्तों के विरुद्ध है। यदि पूछो कि क्यों उनके सिद्धान्त के विरुद्ध है तो स्पष्ट हो कि आर्यों के सिद्धान्त के अनुसार समस्त आत्माएं परमेश्वर की अनादि भागीदार हैं जो उससे अस्तित्व प्राप्त नहीं हुई तो फिर हम परमेश्वर को उनका पिता क्योंकर कह सकते हैं वे तो स्वयंभू हैं जैसे कि परमेश्वर स्वयंभू। किन्तु यह सिद्धान्त गलत है। आध्यात्मिक ज्ञान की दृष्टि से देखने वाले ज्ञात कर सकते हैं जैसा कि पिता में शक्तियां, विशेषताएं और आदतें होती हैं वैसे ही पुत्र में भी पाई जाती हैं। अतः इसी प्रकार चूंकि आत्माएं खुदा तआला के हाथ से निकली हैं उनमें प्रतिबिम्ब के तौर पर वह रंग पाया जाता है जो खुदा के अस्तित्व में पाया जाता है और जैसे-जैसे खुदा के बन्दे उसके प्रेम और उपासना के द्वारा शुद्धता और पवित्रता में उन्नति करते हैं वह रंग तीव्र होता जाता है, यहां तक कि प्रतिबिम्ब के तौर पर ऐसे लोगों में खुदा के प्रकाश प्रकट होने आरंभ हो जाते हैं स्पष्ट रूप से हमें दिखाई देता है कि मानव स्वभाव में खुदा के पवित्र

रखता हूँ कि चारों वेद अवश्य ईश्वर का ज्ञान है उनमें तनिक भी गलती, झूठ या कोई क्रिस्सा-कहानी नहीं। उनको हमेशा हर नई दुनिया में परमात्मा जगत के सार्वजनिक मार्ग-दर्शन के लिए प्रकाश किया करता है। इस सृष्टि के प्रारंभ में जब मानव-सृष्टि आरंभ हुई, परमात्मा ने वेदों को श्री अग्नि, श्री वायु, श्री आदित, श्री अंगिरा जीव चारों ऋषियों की आत्माओं में इल्हाम दिया, किन्तु जिब्राईल या किसी और पत्रवाहक के माध्यम से नहीं अपितु स्वयं ही^① क्योंकि वह आसमान या अर्श

① शारीरिक व्यवस्था पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि मनुष्य वायु के द्वारा सुनता है और सूर्य के माध्यम से देखता है। फिर शारीरिक व्यवस्था में ये दो पत्रवाहक क्यों नियुक्त किए गए, हालांकि खुदा का शारीरिक आध्यात्मिक कानून परस्पर अनुकूल होना चाहिए। खेद वेद का ज्ञान प्रत्येक स्थान पर प्रकृति के ग्रन्थ के प्रतिकूल है तथा कौन कहता है कि खुदा प्रत्येक स्थान पर मौजूद नहीं अपितु वह प्रत्येक स्थान पर भी है और सिंहासन वाला भी है। मूर्ख इस आध्यात्मिक ज्ञान के रहस्य को नहीं समझता। यह बात विचारणीय है कि यद्यपि इस संसार में सब कुछ खुदा तआला के आदेश से होता है किन्तु फिर भी उसने अपने प्रारब्ध को जारी करने के माध्यम रखे हैं।

शेष हाशिया

आचरण छुपे हुए हैं जो आत्मशुद्धि से प्रकट हो जाते हैं। उदाहरणतया खुदा दयालु है ऐसा ही मनुष्य भी आत्मशुद्धि के पश्चात् दया की विशेषता से भाग प्राप्त करता है। खुदा अत्यन्त दानी है ऐसा ही मनुष्य भी आत्म शुद्धि के पश्चात् दान की विशेषता से भाग प्राप्त करता है। इसी प्रकार खुदा दोषों पर पर्दा डालने वाला है खुदा कृपालु है, खुदा क्षमा करने वाला है और मनुष्य भी आत्मशुद्धि के पश्चात् इन समस्त विशेषताओं से भाग प्राप्त करता है। अतः किसने ये उत्तम गुण मानव-आत्मा में रख दिए हैं। यदि खुदा ने रखे हैं तो इससे सिद्ध है कि वह आत्माओं (रूहों) का स्रष्टा है और यदि कोई यह कहे कि स्वयंभू हैं तो इसका यही उत्तर पर्याप्त है कि झूठों पर खुदा की ला'नत। इसी से।

पर नहीं बल्कि सर्वव्यापक है। मैं यह भी मानता हूँ कि वेद ही सब से पूर्ण और पवित्र ज्ञान की पुस्तक हैं। आर्यावर्त से ही समस्त संसार ने श्रेष्ठता सीखी। आर्य लोग ही सब के प्रथम गुरु हैं। आर्यवर्त से बाहर जो मुसलमानों के कथनानुसार एक लाख चौबीस हजार पैगम्बर (अवतार) पांच-छः हजार वर्ष से आए हैं तथा तौरात, ज़बूर, इंजील, कुर्आन इत्यादि ग्रन्थ लाए हैं मैं हार्दिक विश्वास से उन पुस्तकों का अध्ययन करने और समझने से... उनको समस्त धार्मिक निर्देशों को बनावटी, और जाली वास्तविक इल्हाम को बदनाम करने वाला लेख समझता हूँ... उनकी सच्चाई का प्रमाण लोभ, मूर्खता या तलवार के अतिरिक्त उनके पास कोई नहीं... और जिस प्रकार मैं और सच्चाई के विपरीत बातों को ग़लत समझता

शेष हाशिया: उदाहरणतया एक विष जो मनुष्य को मार देता है और एक विषनाशक जो लाभ पहुँचाता है क्या हम सोच सकते हैं कि ये दोनों स्वयं ही मानव शरीर में प्रभाव डालते हैं ? कदापि नहीं अपितु वह खुदा के आदेश से प्रतिकूल या अनुकूल प्रभाव करते हैं। अतः वे भी एक प्रकार के फ़रिश्ते हैं वरन् संसार का कण-कण जिस से नाना प्रकार के परिवर्तन होते रहते हैं, ये सब खुदा के फ़रिश्ते हैं और एकेश्वरवाद पूर्ण नहीं होता जब तक हम कण-कण को खुदा तआला के फ़रिश्ते न मान लें, क्योंकि यदि हम समस्त प्रभावकारी वस्तुओं को जो संसार में पाई जाती हैं खुदा के फ़रिश्ते स्वीकार न करें तो फिर हमें इक्रार करना पड़ेगा कि ये काम समस्त मानव शरीर में परिवर्तनों तथा समस्त संसार में खुदा तआला के ज्ञान, इरादे और इच्छा के बिना स्वयं हो रहे हैं और इस स्थिति में खुदा को मात्र निलंबित एवं अनभिज्ञ मानना पड़ेगा। अतः फ़रिश्तों पर ईमान लाने का यह रहस्य है कि इसके बिना एकेश्वरवाद स्थापित नहीं रह सकता और प्रत्येक वस्तु को तथा प्रत्येक प्रभाव को खुदा तआला के इरादे से मानना पड़ता है तथा फ़रिश्ते का अर्थ तो यही है कि वे वस्तुएं हैं जो खुदा तआला के इरादे से कार्य कर रही हैं। अतः जब कि यह कानून आवश्यक और मान्य है तो फिर जिब्राईल और मीकाईल से क्यों इन्कार किया जाए। इसी से।

हूँ ऐसा ही कुर्आन और उसके सिद्धान्तों और शिक्षाओं को जो वेद के विपरीत हैं उनको ग़लत और झूठा जानता हूँ (झूठों पर खुदा की लानत) परन्तु मेरा प्रतिपक्षी मिर्ज़ा गुलाम अहमद है वह कुर्आन को खुदा का कलाम जानता और उसकी समस्त शिक्षाओं को उचित और सही समझता है तथा जिस प्रकार मैं कुर्आन इत्यादि को पढ़कर ग़लत समझता हूँ वैसे ही वह उम्मी मात्र संस्कृत और नागरी से सर्वथा वंचित वेदों को बिना पढ़े या बिना देखे ग़लत समझता है।^①

हे परमेश्वर हम दोनों समूहों में सच्चा निर्णय कर क्योंकि झूठा सच्चे के समान कभी तेरे दरबार में सम्मान नहीं पा सकता।

लेखक आपका अनादि बन्दा - लेखराम शर्मा

सभासद आर्य समाज पेशावर

वर्तमान एडिटर 'आर्य गज़ट' फ़ीरोज़पुर (पंजाब)

अब मुबाहले की इस दुआ के पश्चात् जो पंडित लेखराम ने अपनी पुस्तक ख़बले अहमदिया के पृष्ठ 344 से 347 तक लिखी है जो कुछ खुदा ने आकाश से

① यदि मैंने वेद नहीं पढ़े भला यह तो अच्छा है कि लेखराम ने चारों वेद कंठस्थ कर लिए थे। यहां भी झूठों पर ला'नत के अतिरिक्त क्या कह सकते हैं। बहस सिद्धान्तों पर होती है जबकि आर्यसमाज वालों ने अपने हाथ से वेद के सिद्धान्त प्रकाशित कर दिए तो उन पर बहस करना प्रत्येक बुद्धिमान का अधिकार है और यह सर्वथा ग़लत है कि मैंने वेद नहीं पढ़ा। मैंने वेद के वे अनुवाद जो देश में प्रकाशित हुए आरंभ से अंत तक देखे हैं। पंडित दयानन्द का वेद भाष्य भी देखा है और लगभग पच्चीस वर्ष से निरन्तर आर्यों से मेरे शास्त्रार्थ होते रहे हैं। फिर यह कहना कि वेद की मुझे कुछ भी खबर नहीं कितना बड़ा झूठ है। यदि आर्य सज्जनों के पंडित अब भी लेखराम को वेद का आचार्य स्वीकार कर चुके हैं तो मैं वह प्रमाण-पत्र देखना चाहता हूँ अपितु लेखराम का पद लेशमात्र भी इस से अधिक नहीं जो खुदा ने उसके लिए कहा - **عَجَلْ جَسْدُهُ - خُور** इसी से।

निर्णय किया है और जिस प्रकार उसने झूठे का निरादर प्रकट किया और सच्चे का आदर, वह यह है जो 6 मार्च 1897 ई. शनिवार को दिन के चार बजे के पश्चात प्रकट हुआ।



देखो यह ख़ुदा का निर्णय है जिस निर्णय को लेखराम ने अपने परमेश्वर से मांगा था ताकि सच्चे और झूठे में अन्तर स्पष्ट हो जाए।



यह बात स्मरण रहे कि यहां एक निशान नहीं अपितु दो निशान हैं। (1) एक यह कि लेखराम के मारे जाने की एक महान भविष्यवाणी है जिसमें उसके मारे जाने का दिन बताया गया। मृत्यु का प्रकार बताया गया है, अवधि बताई गई, समय बताया गया।

(2) दूसरा यह कि हजारों प्रयत्नों एवं प्रयासों के बावजूद वध करने वाले का कुछ भी पता नहीं लगा जैसे वह आकाश पर चढ़ गया या पृथ्वी के अन्दर छुप गया। यदि वध करने वाला पकड़ा जाता और फांसी मिल जाती तो भविष्यवाणी का यह महत्त्व न रहता अपितु उस समय प्रत्येक कह सकता था कि जैसे लेखराम मारा गया वध करने वाला भी मारा गया, किन्तु वध करने वाला ऐसा लुप्त हुआ कि मालूम नहीं कि वह मनुष्य था या फ़रिश्ता था जो आकाश पर चढ़ गया।

138. एक सौ अड़तीस वां निशान - स्मरण रहे कि ख़ुदा के बन्दों की मान्यता पहचानने के लिए दुआ का स्वीकार होना भी एक बड़ा निशान होता है अपितु दुआ की स्वीकारिता के समान अन्य कोई भी निशान नहीं, क्योंकि दुआ की स्वीकारिता से सिद्ध होता है कि एक बन्दे को ख़ुदा के दरबार में कितना महत्त्व और सम्मान है। यद्यपि दुआ का स्वीकार हो जाना हर स्थान पर अनिवार्य बात नहीं। कभी-कभी महान और प्रतापी ख़ुदा अपनी इच्छा भी अपनाता है परन्तु इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि ख़ुदा के मान्य लोगों के लिए यह भी एक निशानी है कि दूसरों की अपेक्षा उनकी दुआएं बड़ी अधिक मात्रा में स्वीकार होती हैं और दुआ की स्वीकारिता की श्रेणी में कोई उनका मुकाबला नहीं कर सकता और मैं ख़ुदा तआला की क्रसम खाकर कह सकता हूँ कि मेरी हजारों दुआएं स्वीकार हुई हैं। यदि मैं सब को लिखूँ तो एक बड़ी पुस्तक बन जाए। मैं एक सीमा तक पूर्व में भी लिख चुका हूँ और यहां भी कुछ दुआओं के स्वीकार होने का उल्लेख करता हूँ। अतः उनमें से दुआ के स्वीकार होने का एक निशान यह है कि मेरे एक निष्कपट सय्यद नासिर शाह नामक जो अब बारामूला, कश्मीर में ओवरसीयर हैं वह अपने अफ़सरों के अधीन बहुत दुःखी थे और कई व्यक्ति उनकी उन्नति में

बाधक थे बल्कि उनकी नौकरी खतरे में थी। एक बार उन्होंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि मैं त्याग पत्र दे देता हूँ ताकि इस प्रतिदिन के कष्ट से मुक्ति पाऊँ। मैंने उन्हें मना किया किन्तु वह नौकरी से इतने तंग हो चुके थे कि उन्होंने बार-बार नितान्त विनय और नम्रतापूर्वक निवेदन किया कि मुझे अनुमति दी जाए कि मेरे प्राण एक विपत्ति में फंसे हुए हैं। उन्होंने बहुत अधिक आग्रह किया और कहा कि मेरे लिए पदोन्नति का मार्ग बन्द है अपितु ऐसा न हो कि किसी अत्याचारी के द्वारा मुझे मेरी सामर्थ्य से अधिक हानि पहुँच जाए। तब मैंने उनसे कहा कि कुछ दिन धैर्य से काम लो। मैं तुम्हारे लिए दुआ करूँगा। यदि फिर भी कठिनाइयाँ दूर न हुईं तो फिर आपको अधिकार है। तत्पश्चात् मैंने खुदा के आगे उनके लिए दुआ की और खुदावन्द से उनकी सफलता की कामना की, जिसका परिणाम यह हुआ कि कहां उनकी पहली नौकरी भी खतरे में थी और कहां अप्रत्याशित तौर पर उन्नति हो गई। अतः हम नीचे सय्यद नासिर शाह साहिब का पत्र नक़ल करते हैं जिससे ज्ञात होगा कि दुआ ने उनकी दशा पर क्या प्रभाव किया और वह यह है-

बहुजूर अक़दस हज़रत पीर व मुर्शिद आपकी छाया सदैव रहे

विनीत अधम सय्यद नासिर शाह अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू के पश्चात् सेवा में प्रस्तुत करता है कि आप जैसे महान व्यक्ति की दुआ ने यह प्रभाव दिखाया कि हुजूर की दुआ की बरकत से पदोन्नति एवं वेतन में वृद्धि हो गई। हुजूर के वे शब्द विनीत को भली भाँति स्मरण हैं जब इस विनीत ने दुःखी हृदय के साथ विनती की थी कि अब नौकरी छोड़ दूंगा, किन्तु हुजूर ने बड़ी कृपा और दयापूर्वक कहा था कि घबराना नहीं चाहिए हम दुआ करेंगे, खुदा सामर्थ्यवान है कि उन्हीं शत्रुओं को तुम्हारा मित्र बना देगा। अतः मान्यवर! खुदा का आभार कि हुजूर ने जो-जो शब्द कहे थे उसी प्रकार प्रकट हो गया और वही अशुभचिन्तक बाद में मेरे लिए मित्र और अनुशंसक बन गए। खुदा ने हुजूर की दुआ से उनका हृदय मेरी ओर फेर दिया। एक अन्य बड़ा चमत्कार हुजूर की बरकत से यह हुआ

कि उच्च सदस्यों की ओर से मुझ पर आरोप हुआ था कि नासिर शाह ने कालेज को पास नहीं किया और न किसी परीक्षा का प्रमाण-पत्र है इसलिए पदोन्नति का पात्र कैसे हो सकता है। इधर यह आरोप था और दूसरी ओर से हुजूर का पत्र आया कि हमने यथासंभव बहुत दुआ की है। अतः मेरे हुजूर वही दिन था जबकि मेरे बारे में कौंसिल में पेपर प्रस्तुत हुए और साहिब बहादुर ने मेरे लिए बहुत बल देकर कहा और अद्भुत यह कि वही विरोधी मेरे लिए अनुशंसा करने वाले थे और हार्दिक मित्रता और शुभ चिन्तक बन कर मेरी उन्नति के इच्छुक थे। परिणाम यह हुआ कि बिना किसी आपत्ति के मेरी उन्नति के लिए प्रस्ताव पास हो गया। इस पर खुदा की हर प्रकार से प्रशंसा। मेरे हुजूर! परसों की डाक में इस खाकसार ने पचास रुपए हुजूर की सेवा में भेजे हैं स्वीकार करें और दुआ करें कि खुदा तआला युग की आपदाओं से सुरक्षित रखे और अंजाम शुभ करे। आमीन!

विनयकार - खाकसार सय्यद नासिर शाह

ओवरसीयर, स्थान बारामूला, कश्मीर

139. एक सौ उन्तालीस वां निशान - एक बार निजामुद्दीन नामक मिस्त्री हमारी जमाअत के एक व्यक्ति ने अपने निवास स्थान सियालकोट से मुझे पत्र लिखा कि एक खतरनाक फ़ौजदारी का मुकद्दमा मुझ पर दायर हो गया है और मुक्ति का कोई मार्ग दिखाई नहीं देता। बहुत भय लगा हुआ है और शत्रु चाहते हैं कि मैं उसमें फंस जाऊँ। वे बहुत प्रसन्न हो रहे हैं और मैंने इस समय प्रत्यक्ष साधनों से निराश होकर यह पत्र लिखा है और मैंने अपने हृदय में मन्नत मानी है कि यदि मैं इस मुकद्दमे से छुटकारा पा जाऊँ तो पचास रुपए खुदा तआला के धन्यवाद के तौर पर आपकी सेवा में भेजूंगा।

तब उसका वह पत्र कई लोगों को दिखाया गया और बहुत दुआ की गई और उसे सूचना दी गई। कुछ दिन गुज़रने के पश्चात् उस का पुनः पत्र पचास रुपयों सहित आया और लिखा कि खुदा ने मुझे उस विपत्ति से मुक्ति दे दी।

पुनः कुछ सप्ताह के पश्चात् एक और पत्र आया जिसमें लिखा था कि सरकारी

वकील ने पुनः वह मुकद्दमा उठाया है इस आधार पर कि फैसले में गलती है और डिप्टी-कमिशनर ने वकील की बात स्वीकार करके फैसले को अंग्रेजी में अनुवाद करा के सिफारिश लिखा कर साहिब कमिशनर बहादुर की सेवा में भेज दिया है। इसलिए यह आक्रमण पहले से अधिक खतरनाक और बहुत चिन्ताजनक है और मैंने इस व्याकुलता की अवस्था में पुनः यह भेंट अपने ज़िम्मे निर्धारित की है कि यदि अबकी बार मैं इस आक्रमण से बच जाऊँ तो पचास रुपए पुनः बतौर धन्यवाद अदा करूँगा। मेरे लिए बहुत दुआ की जाए यह सारांश दोनों पत्रों का है, जिनके पश्चात् दुआ की गई।

तत्पश्चात् शायद एक-दो सप्ताह ही गुज़रे थे कि फिर मिस्त्री निज़ामुद्दीन का पत्र आया जो यथावत् नीचे लिखा जाता है -

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नहमदुहू व नुसल्लिहिल करीम

हमारे मसीह एवं महदी पृथ्वी पर अल्लाह के भेजे हुए सुधारक

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातोहू

अल्लाह तआला ने हुज़ूर के लिए दोबारा ख़ाकसार पर दया की और विरोधी सदस्य की अपील कमिशनर साहिब लाहौर ने अस्वीकार करके कल वापिस कर दी। ख़ुदा की प्रशंसा और उपकार। ख़ाकसार दो सप्ताह के अन्दर हुज़ूर की सेवा में पचास रुपए बतौर भेंट जो पहले मानी हुई है लेकर उपस्थित हूँगा।

हुज़ूर का तुच्छ सेवक

ख़ाकसार निज़ामुद्दीन मिस्त्री शहर सियालकोट

डाकखाना से संलग्न।

140. एक सौ चालीसवां निशान - सरदार खान बिरादर हकीम शाह नवाज़ खान निवासी रावलपिण्डी हैं। मेरी ओर लिखते हैं कि एक मुकद्दमे में उनके भाई शाहनवाज़ खान की एक विरोधी सदस्य के साथ अदालत में ज़मानत ली गई थी जिसमें हज़रत साहिब से अर्थात् मुझ से अपील के पश्चात् दुआ कराई गई थी और दोनों समूहों ने अपील की थी। अतः दुआ की बरकत से शाहनवाज़ की अपील

स्वीकार हो गई और दूसरे समूह की अपील खारिज हो गई। वकील लोग कहते थे कि अपील करना व्यर्थ है क्योंकि मुकाबले पर जमानतें हैं। यह दुआ का प्रभाव था कि शत्रु की जमानत क्रायम रही और शाहनवाज़ जमानत से बरी किया गया।

141. एक सौ इकतालीस वां निशान - मियां नूर अहमद शिक्षक मदरसा इम्दादी बस्ती वरियाम कुमलाना डाकखाना डब कलां तहसील शोरकोट जिला झंग के निरन्तर पत्र मेरे नाम आए थे कि उनके प्रिय मित्र क़ासिम, रुस्तम और लाल इत्यादि पर एक झूठा मुकद्दमा पठानां कुमलाना नामक व्यक्ति ने किया हुआ है और मुकद्दमा खतरनाक हो गया है दुआ की जाए। अतः जब बड़ी अधिकता और निरन्तरता से विनयपूर्वक दुआ के लिए उनका आग्रह हुआ तब मेरा हृदय को उस ओर झुक गया क्योंकि मैंने निश्चित तौर पर उनकी दशा को दयनीय पाया। इसलिए बहुत दुआ की गई। अन्ततः दुआ स्वीकार हुई। अतः 12 सितम्बर 1906 ई. को उसी मियां नूर अहमद का पत्र मुझे डाक द्वारा जो मुकद्दमे में सफल हो जाने के बारे में था पहुँचा जो नीचे लिखा जाता है और वह यह है:-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली व अला रसूलिहिल करीम

हमारे हज़रत मुर्शिद एवं हमारे स्वामी जनाब मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू

विनम्रतापूर्वक आदर और सम्मान के पश्चात विनती है कि पठानां कुमलाना ने जो झूठा मुकद्दमा हमारे ग़रीब मित्र क़ासिम, रुस्तम और लाल इत्यादि पर किया था वह मुकद्दमा ख़ुदा की कृपा से, आपकी दुआओं की बरकत से 31, अगस्त 1906 ई. को हम जीत गए। आपको मुबारक हो सुब्हान अल्लाह पवित्र ख़ुदा ने अपने प्यारे इमाम की दुआओं को स्वीकार किया और गौरवान्वित किया और हमारे ईमान में वृद्धि हुई। हम उस महान न्यायिक ख़ुदा की कृपाओं का धन्यवाद अदा नहीं कर सकते।

लेखक दास - नूर अहमद शिक्षक मदरसा इम्दादी बस्ती वरियाम कुम्लाना
डाकखाना-डबकलां, तहसील-शोरकोट
ज़िला - झंग

142. एक सौ ब्यालीसवां निशान - मेरे एक सच्चे मित्र और नितान्त वफ़ादार जिन का नाम सेठ अब्दुर्रहमान ताजिर मद्रास है, उनकी ओर से एक तार आया कि वह कारबंकल अर्थात् सरतान के रोग से जो एक घातक फोड़ा होता है रोग ग्रस्त हैं। चूंकि आदरणीय सेठ साहिब प्रथम श्रेणी के निष्कपट लोगों में से हैं। इसलिए उनके रोग के कारण बड़ी चिन्ता और दुविधा हुई। लगभग दिन के नौ बजे का समय था कि मैं शोक और चिन्ता में बैठा हुआ था कि सहसा ऊंघ की अवस्था होकर मेरा सिर नीचे की ओर झुक गया और उसी समय महाप्रतापी खुदा की ओर से वह्यी हुई कि **आसारे ज़िन्दगी** तत्पश्चात् एक और तार मद्रास से आया कि हालत अच्छी है कोई घबराहट नहीं। परन्तु फिर एक और पत्र आया कि जो उनके भाई सालिह मुहम्मद (स्वर्गीय) के हाथ का लिखा हुआ था जिस का विषय यह था कि इससे पूर्व सेठ साहिब को मधुमेह का भी रोग था। चूंकि मधुमेह का कारबंकल अच्छा होना लगभग असंभव है इसलिए दोबारा शोक और चिन्ता ने प्रभुत्व जमा लिया और शोक चरम सीमा तक पहुँच गया और यह शोक इसलिए हुआ कि मैंने सेठ अब्दुर्रहमान को बहुत ही निष्कपट पाया था और उन्होंने व्यावहारिक तौर पर अपनी निष्कपटता का प्रथम श्रेणी का प्रमाण दिया था और हार्दिक निष्कपटता से हमारे लंगरखाना के लिए कई हजार रुपए से सहायता करते रहे थे जिसमें खुदा की प्रसन्नता के अतिरिक्त अन्य कोई उद्देश्य न था और वह सदैव श्रद्धा और निष्ठापूर्वक एक बड़ी राशि मासिक तौर पर हमारे लंगरखाना के लिए भेजा करते थे और प्रेम से ओत-प्रोत इतनी आस्था रखते थे जैसे प्रेम और निष्कपटता में लीन थे और उनका अधिकार था कि उनके लिए दुआ की जाए। अन्ततः हृदय ने उनके लिए अत्यन्त जोश मारा जो विलक्षण प्रकार का था और क्या रात और क्या दिन मैं बहुत ध्यान से दुआ में लगा रहा, तब खुदा तआला ने

भी विलक्षण परिणाम दिखाया और ऐसे घातक रोग से सेठ अब्दुर्रहमान साहिब को मुक्ति दी जैसे उनको नए सिरे से जीवित किया। अतः वह अपने पत्र में लिखते हैं कि खुदा तआला ने आपकी दुआ से एक बड़ा चमत्कार दिखाया अन्यथा जीवन की कोई भी आशा न थी। आप्रेशन के पश्चात् घाव भरना आरंभ हो गया और उसके निकट एक नया फोड़ा निकल आया था जिसने पुनः भय और खलबली में डाल दिया था किन्तु बाद में ज्ञात हुआ कि वह कारबंकल नहीं। अन्ततः कुछ माह के पश्चात् पूर्ण रूप से रोग का निवारण हो गया। मैं निश्चित तौर पर जानता हूँ कि यही मुर्दे का जीवित होना है। कारबंकल और फिर उसके साथ मधुमेह और फिर वृद्धावस्था। इस भयावह स्थिति को डाक्टर लोग भली भाँति जानते हैं कि इस का ठीक होना कितना असंभव है। हमारा खुदा बड़ा कृपालु और दयालु है और उसकी विशेषताओं में से एक जीवित करने की भी विशेषता है। गत वर्ष अर्थात् 11, अक्टूबर 1905 ई. को हमारे एक निष्कपट मित्र अर्थात् मौलवी अब्दुल करीम साहिब (स्वर्गीय) इस रोग कारबंकल अर्थात् सरतान से मृत्यु पा गए थे, उनके लिए भी मैंने बहुत दुआ की थी किन्तु उनके लिए एक भी इल्हाम सन्तोषजनक न था अपितु बार-बार ये इल्हाम होते रहे कि कफ़न^① में लपेटा गया - सैंतालीस वर्ष^② की आयु इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन।

إِنَّ الْمَنَائِلَ لَا تَطِيَّشُ سَهَامُهَا^③

अर्थात् मौतों के तीर लक्ष्य से नहीं चूकते। जब इस पर भी दुआ की गई तब इल्हाम हुआ -

يَا أَيُّهَا النَّاسُ عِبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ - تَوَثَّرُونَ^④ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا

अर्थात् हे लोगो! तुम उस खुदा की उपासना करो जिसने तुम्हें पैदा किया है अर्थात् उसी को अपने बिगड़े कार्यों का बनाने वाला समझो और उस पर भरोसा रखो। क्या तुम सांसारिक जीवन को अपनाते हो। इसमें यह संकेत था कि उसी के अस्तित्व को ऐसा अवश्य समझना कि उसके मरने से बहुत भारी क्षति होगी। एक शिर्क है और उसके जीवन पर अत्यन्त जोर लगा देना एक प्रकार की उपासना है।

तत्पश्चात् मैं खामोश हो गया और समझ लिया कि उसकी मृत्यु अटल है। अतः वह 11, अक्टूबर 1905 ई. को बुधवार के दिन अपरान्ह (अस्त्र) के समय इस नश्वर संसार से गुजर गए। वह दर्द जो उनके लिए दुआ करने में मेरे हृदय में पैदा हुआ था खुदा ने उसे विस्मृत न किया और चाहा कि उस असफलता का एक अन्य सफलता के साथ उसका निवारण करे। अतः इस निशान के लिए सेठ अब्दुर्हमान को चुन लिया। यद्यपि खुदा ने अब्दुल करीम को हम से ले लिया तो अब्दुर्हमान को दोबारा हमें दे दिया। वही रोग उनको लग गया। अन्ततः वह इसी बन्दे की दुआओं से स्वस्थ हो गए। इस पर खुदा की प्रशंसा। मेरा सैकड़ों बार का अनुभव है कि खुदा ऐसा कृपालु एवं दयालु है कि जब अपने किसी कारणवश एक दुआ को स्वीकार नहीं करता तो उसके बदले में कोई और दुआ स्वीकार कर लेता है जो उसी के समान होती है जैसा कि उसका कथन है -

مَا نَسَخْ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِنْهَا أَوْ مِثْلَهَا
 أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

143. एक सौ तैंतालीस वां निशान - तत्पश्चात् खुदा तआला ने एक और प्रसन्नता का निशान मुझे प्रदान किया और वह यह है कि मैंने उन दिनों में एक बार दुआ की थी कि खुदा तआला मुझे कोई ताज्जा निशान दिखाए। तब जैसा कि 30, अगस्त 1906 ई. के अखबार बद्र में प्रकाशित हो चुका है मुझे यह इल्हाम हुआ: **आजकल कोई निशान प्रकट होगा** अर्थात् शीघ्र ही कोई निशान प्रकट होने वाला है। अतः वह निशान इस प्रकार प्रकट हुआ कि मैंने कई बार ऐसे डरावने स्वप्न देखे जिनमें स्पष्ट तौर पर यह बताया गया था कि मीर नासिर नवाब जो मेरे ससुर हैं उन के परिवार के बारे में कोई संकट आने वाला है। अतः एक बार मैंने घर में बकरे की एक रान लटकाई हुई देखी जो किसी की मृत्यु को सिद्ध करती थी और एक बार मैंने देखा कि डाक्टर अब्दुल हकीम खान सहायक सर्जन उस चौबारे के पास बाहर की ओर चौखट के साथ लगकर खड़ा है जिसमें मैं रहता

① अलबक्ररह - 107

हूँ। तब किसी व्यक्ति ने मुझ से कहा कि अब्दुल हकीम खान को इस्हाक की मां ने घर के अन्दर बुलाया है। (इस्हाक की मां मीर नासिर नवाब साहिब की पत्नी हैं और इस्हाक उन का लड़का है) और वे सब हमारे घर में ही रहते हैं। तब मैंने यह बात सुनकर उत्तर दिया कि मैं अब्दुल हकीम खान को अपने घर में कदापि नहीं आने दूँगा। इसमें हमारा अपमान है। तब वह आंखों के सामने से लुप्त हो गया, अन्दर प्रवेश नहीं किया।

स्मरण रहे कि स्वप्नफल विद्या में स्वप्नफलविदों ने यह लिखा है जिसका अनेकों बार अनुभव हो चुका है कि यदि किसी के घर में शत्रु प्रवेश कर जाए तो उस घर में कोई संकट या मृत्यु आती है और चूंकि आजकल अब्दुल हकीम खान साहिब हमारे प्राणों का कट्टर शत्रु और हमारे पतन की दिन रात प्रतीक्षा में है इसलिए खुदा तआला ने उसी को स्वप्न में दिखाया कि जैसे वह हमारे घर में प्रवेश करना चाहता है और इस्हाक की मां मीर नासिर नवाब साहिब की पत्नी उसको बुलाती हैं। बुलाने की ताबीर यह लिखी है कि ऐसा व्यक्ति केवल अपनी धार्मिक असावधानियों के कारण जिन का ज्ञान खुदा तआला को है संकट को अपने घर में बुलाता है अर्थात् उसकी वर्तमान अवस्था इस बात को चाहती है कि कोई विपत्ति आए। यह स्पष्ट है कि मनुष्य पापों और गुनाहों से खाली नहीं और मानव प्रकृति विशेष लोगों के अतिरिक्त भूल से सुरक्षित नहीं रह सकती और वह भूल चाहती है कि कोई चेतावनी आए इसमें समस्त संसार सम्मिलित है। अतः इस स्वप्न के यही अर्थ थे कि उनकी किसी भूल ने शत्रु को घर में बुलाना चाहा किन्तु अभिस्ताव (शफ़ाअत) ने रोक लिया। मैंने स्वप्न में अब्दुल हकीम खान को घर के अन्दर प्रवेश करने से रोक दिया अर्थात् वह खुदा तआला की कृपा जो मेरे साथ है उस ने शत्रु को हंसी उड़ाने का अवसर देने से रोका। अतः जब मुझे इस सीमा तक इल्हाम हुए जिन से मुझ पर निश्चित तौर पर स्पष्ट हो गया कि मीर साहिब की पत्नी पर कोई संकट आने वाला है तो मैं दुआ में लग गया और वह संयोग से अपने बेटे इस्हाक और अपने घर के लोगों के साथ लाहौर जाने को थे। मैंने उन्हें

ये स्वप्न सुना दिए और लाहौर जाने से रोक दिया। उन्होंने कहा मैं आपकी आज्ञा के बिना कदापि नहीं जाऊँगा। जब दूसरे दिन की सुबह हुई तो मीर साहिब के बेटे इस्हाक को तेज़ ज्वर चढ़ गया और बहुत घबराहट आरंभ हो गई तथा दोनों ओर रान की जड़ में गिल्टियां निकल आईं तथा विश्वास हो गया कि ताऊन है क्योंकि इस ज़िला के कुछ गांवों में ताऊन फूट पड़ी है। तब ज्ञात हुआ कि उपरोक्त स्वप्नों की ताबीर यही थी। हृदय में बहुत शोक पैदा हुआ और मैंने मीर साहिब के घर वालों को कह दिया कि मैं तो दुआ करता हूँ आप तौबा और क्षमा-याचना बहुत करें क्योंकि मैंने स्वप्न में देखा है कि आप ने शत्रु को अपने घर में बुलाया है और यह किसी भूल की ओर संकेत है और यद्यपि मैं जानता था कि मृत्यु सदैव से एक प्रकृति का नियम है किन्तु यह विचार आया कि यदि खुदा न करे हमारे घर में कोई ताऊन से मर गया तो हमारे झुठलाने में एक प्रलय का शोर मच जाएगा। फिर यद्यपि मैं हजार निशान भी प्रस्तुत करूँ तब भी इस आक्षेप के मुकाबले पर उनको कुछ भी प्रभाव नहीं होगा क्योंकि मैं सैकड़ों बार लिख चुका हूँ और प्रकाशित कर चुका हूँ और हजारों लोगों में वर्णन कर चुका हूँ कि हमारे घर के समस्त लोग ताऊन की मृत्यु से बचे रहेंगे। अतः उस समय मेरे हृदय की जो दशा थी उसे मैं वर्णन नहीं कर सकता। मैं तुरन्त दुआ में व्यस्त हो गया और दुआ के पश्चात् प्रकृति का अद्भुत दृश्य देखा कि दो-तीन घंटे में विलक्षण तौर पर इस्हाक का ज्वर उतर गया और गिल्टियों का नामो निशान न रहा और वह उठकर बैठ गया और न केवल इतना अपितु चलना, फिरना, खेलना, दौड़ना आरंभ कर दिया जैसे कभी कोई रोग नहीं हुआ था। यही है मुर्दों को जीवित करना। मैं कसम खाकर कहता हूँ कि हज़रत ईसा का मुर्दों को जीवित करने में इस से लेशमात्र भी कुछ अधिक न था। अब लोग जो चाहें उनके चमत्कारों पर हाशिए चढ़ाएं किन्तु वास्तविकता यही थी। जो व्यक्ति वास्तविक तौर पर मृत्यु पा जाता है और इस संसार से गुज़र जाता है और मृत्यु का फ़रिश्ता उसकी आत्मा को निकाल लेता है और कदापि वापस नहीं आता। देखो पवित्र कुर्आन में खुदा तआला का कथन है -

فَيُمْسِكُ الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ ①

144. एक सौ चवालीस वां निशान - मौलवी इस्माईल अलीगढ़ का मूल निवासी वह व्यक्ति था जो सर्वप्रथम शत्रुता पर कटिबद्ध हुआ और जैसा कि मैंने अपनी पुस्तक 'फ़तह इस्लाम' में लिखा है उसने लोगों में मेरे संबंध में यह प्रसिद्ध किया कि यह व्यक्ति रमल (पासा फेंकना) और नक्षत्रों से भविष्यवाणियां बताता है और इसके पास नक्षत्रों से संबंधित उपकरण हैं। मैंने उसके बारे में झूठों पर खुदा की लानत कहा और उसके लिए खुदा तआला का अज़ाब चाहा जैसा कि पुस्तक 'फ़तह इस्लाम' के लिखते समय उसके जीवन में ही मैंने यह प्रकाशित किया था और यह लिखा

تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ

وَأَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَعْنَةَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ

अतः इस मुबाहलः पर लगभग एक वर्ष गुज़रा होगा कि अचानक एक असमय रोगग्रस्त होकर मृत्यु का शिकार हो गया। उसने अपनी पुस्तक में जो उसने मेरे मुकाबले पर और मेरे खंडन में प्रकाशित की थी यह लिखा था कि

جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ

अतः खुदा ने लोगों पर स्पष्ट कर दिया कि सच कौन सा है जो स्थापित रहा और असत्य कौन सा था जो भाग गया। लगभग सोलह वर्ष हो गए कि वह उस मुबाहले के बाद मृत्यु को प्राप्त हुआ।^②

145. ③ एक सौ पैंतालीसवां निशान - मौलवी गुलाम दस्तगीर क्रसूरी ने अपनी पुस्तक 'फ़तह रहमानी' में जो 1315 हिज्री को मेरे विरोध में अहमदी प्रेस लुधियाना

① अज़्ज़ुमर - 43

② मौलवी इस्माईल ने अपनी एक पुस्तक में मेरी मृत्यु के लिए बद दुआ की थी इस बद दुआ के पश्चात् वह शीघ्र ही मृत्यु का शिकार हो गया और उसकी बद दुआ उसी पर पड़ गई। इसी से।

③ अतिरिक्त व्याख्या के लिए दोबारा लिखा गया है। इसी से।

में छपवा कर प्रकाशित की गई मुबाहला के रूप में मुझ पर एक बद-दुआ की थी जैसा कि उपरोक्त पुस्तक के पृष्ठ 26, 27 में उनकी यह बद-दुआ थी -

اللَّهُمَّ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ يَا مَالِكِ الْمُلْكِ

जैसा कि तू ने एक खुदाई विद्वान हज़रत मुहम्मद ताहिर लेखक 'मज्मअ बिहारुल अन्वार' की दुआ और प्रयास से उस झूठे महदी और कृत्रिम मसीह का बेड़ा नष्ट किया था (जो उनके युग में पैदा हुआ था) वैसा ही दुआ और याचना इस फ़कीर कसूरी

كَانَ اللَّهُ لَهُ

से है जो सच्चे हृदय से तेरे गंभीर धर्म के समर्थन में यथाशक्ति प्रयासरत है कि तू मिर्जा कादियानी और उसके हवारियों को सच्ची तौबा की सामर्थ्य प्रदान कर और यदि यह निर्णीत नहीं तो उन्हें क़ुर्आन की इस आयत का पात्र बना -

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ○

انک علی کل شیء قدير۔ وبالاجابة حدير۔ آمین

अर्थात् जो लोग अत्याचारी हैं वे जड़ से काटे जाएंगे और खुदा के लिए प्रशंसा है। तू प्रत्येक वस्तु पर समर्थ है और दुआ स्वीकार करने वाला है। आमीन और फिर कथित पुस्तक के पृष्ठ 26 के हाशिए में कथित मौलवी ने मेरे बारे में लिखा है

تَبَّالَهُ وَلَا تَبَاعَهُ

अर्थात् वह और उसके अनुयायी तबाह हो जाए। अतः खुदा तआला की कृपा से मैं अब तक जीवित हूँ और मेरे अनुयायी उस युग से लगभग पचास गुना अधिक हैं और स्पष्ट है कि मौलवी गुलाम दस्तगीर ने मेरी सच्चाई या झूठ का निर्णय आयत-

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا (अलअनआम-46)

पर छोड़ा था जिसके इस स्थान पर ये अर्थ हैं कि जो अत्याचारी होगा उसकी जड़ काट दी जाएगी और यह बात किसी ज्ञानी पर गुप्त नहीं कि कथित आयत का भावार्थ सामान्य है जिस का उस व्यक्ति पर प्रभाव होता है जो अत्याचारी है।

अतः आवश्यक था कि अत्याचारी उसके प्रभाव से तबाह किया जाता। इसलिए चूंकि गुलाम दस्तगीर खुदा तआला की दृष्टि में अत्याचारी था इसलिए उसे इतनी भी छूट नहीं मिली कि वह अपनी उस पुस्तक के प्रकाशित होने को देख लेता, इसके पूर्व ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। सब को ज्ञात है कि वह इस दुआ से कुछ और दिन पश्चात् ही मृत्यु का शिकार हो गया।

कुछ मूर्ख मौलवी लिखते हैं कि गुलाम दस्तगीर ने मुबाहला नहीं किया केवल अत्याचारी पर बद-दुआ की थी, किन्तु मैं कहता हूँ कि जब कि उसने मेरे मरने के साथ खुदा से निर्णय^① चाहा था और मुझे अत्याचारी ठहराया था तो फिर वह बद-दुआ उस पर क्यों पड़ गई और खुदा ने ऐसे संवेदनशील समय में जबकि लोग खुदा के निर्णय की प्रतीक्षा में थे गुलाम दस्तगीर को ही क्यों तबाह कर दिया और जबकि वह अपनी दुआ में मेरा तबाह होना चाहता था ताकि संसार पर यह बात सिद्ध कर दे कि जैसा कि मुहम्मद ताहिर की बद-दुआ से झूठा महदी और झूठा मसीह तबाह हो गया था, मेरी बद-दुआ से यह व्यक्ति तबाह हो गया तो इस दुआ का विपरीत प्रभाव क्यों हुआ। यह तो सच है कि मुहम्मद ताहिर की बद-दुआ से झूठा महदी और झूठा मसीह तबाह हो गया था और उसी मुहम्मद ताहिर की नक़ल से गुलाम दस्तगीर ने मुझ पर बद-दुआ की थी। अतः अब यह विचार करना चाहिए कि मुहम्मद ताहिर की बद-दुआ का क्या प्रभाव हुआ और गुलाम दस्तगीर की

① गुलाम दस्तगीर ने मेरे बारे में यह इरादा किया था कि उसकी बद-दुआ से मैं मर जाऊँ और इस बात का प्रमाण हो कि मैं झूठा एवं झूठ गढ़ने वाला हूँ और मुहम्मद ताहिर की भांति गुलाम दस्तगीर का चमत्कार सिद्ध हो। इस ओर मेरे खुदा ने मुझे सम्बोधित करते हुए कहा कि

إِنِّي مُهَيِّئُ مَنْ أَرَادَ إِهَانَتَكَ

अर्थात् जो व्यक्ति तेरा अपमान चाहता है मैं उसे अपमानित करूँगा। अन्ततः खुदा के निर्णय से गुलाम दस्तगीर तबाह हो गया और मैं खुदा की कृपा से अब तक जीवित हूँ और यह एक महान निशान है। इसी से।

दुआ का क्या प्रभाव हुआ। यदि कहो कि गुलाम दस्तगीर संयोग से मर गया तो फिर यह भी कहो वह झूठा महदी भी संयोग से मर गया था, मुहम्मद ताहिर का कोई चमत्कार न था। झूठों पर खुदा की ला'नत।

इस समय गुलाम दस्तगीर की मृत्यु पर लगभग ग्यारह वर्ष गुज़र गए हैं जो अत्याचारी था खुदा ने उसे तबाह किया और उसका घर वीरान कर दिया। अब न्याय की दृष्टि से कहो कि किस की जड़ काटी गई और किस पर यह दुआ पड़ी। अल्लाह तआला कहता है -

يَتَرَبَّصُّ بِكُمُ الدَّوَّائِرُ عَلَيْهِمُ دَائِرَةُ السَّوْءِ ①

अर्थात् हे नबी तुझ पर ये अकुलीन शत्रु भिन्न-भिन्न प्रकार की आपत्तियां चाहते हैं। उन्हीं पर आपत्तियां पड़ेगी। अतः इस पवित्र आयत की दृष्टि से यह अल्लाह का नियम है कि जो व्यक्ति सच्चे पर कोई बद-दुआ करता है वही बद-दुआ उस पर पड़ती है। खुदा का यह नियम कुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों से प्रकट है। अतः अब बताओ कि गुलाम दस्तगीर इस बद-दुआ के पश्चात् मर गया है या नहीं। इसलिए बताओ कि इसमें क्या रहस्य है कि मुहम्मद ताहिर की बद-दुआ से तो एक झूठा मसीह मर गया और मुझ पर बद-दुआ करने वाला स्वयं मर गया। खुदा ने मेरी आयु तो बढ़ा दी कि ग्यारह वर्ष से अब तक मैं जीवित हूँ और गुलाम दस्तगीर को एक माह की भी छूट न दी।

146. एक सौ छियालीस वां निशान - नवाब मुहम्मद हयात खां जो डिवीज़नल जज था किसी फौजदारी के आरोप में निलंबित हो गया था और उसकी मुक्ति का कोई मार्ग दिखाई नहीं देता था, तब उसने मुझ से दुआ की विनती की और मैंने दुआ की। अतः खुदा ने मुझ पर प्रकट किया कि वह बरी हो जाएगा। यह सूचना उसे तथा अन्य बहुत से लोगों को समय से पूर्व सुना दी गई जैसा कि बराहीन अहमदिया में विस्तारपूर्वक उल्लेख है। अन्ततः वह खुदा तआला की कृपा से बरी हो गया।

147. एक सौ सैंतालीस वां निशान - एक बार मार्च 1905 ई. में लंगरखाना

में आय की कमी के समय खर्चों में बहुत कठिनाई हुई क्योंकि मेहमानों के आगमन की अधिकता थी और उसकी अपेक्षा रुपयों की आय कम थी। इसलिए दुआ की गई। 5 मार्च 1905 ई. को मैंने स्वप्न में देखा कि एक व्यक्ति जो फरिश्ता मालूम होता था मेरे सामने आया और उसने बहुत सा रुपया मेरे दामन में डाल दिया। मैंने उसका नाम पूछा उसने कहा नाम कुछ नहीं। मैंने कहा आखिर नाम तो कुछ होगा। उसने कहा मेरा नाम है टीची, टीची। पंजाबी भाषा में निर्धारित समय को कहते हैं अर्थात् बिल्कुल आवश्यकता के समय आने वाला। तब मेरी आंख खुल गई। तत्पश्चात् खुदा तआला की ओर से क्या डाक के माध्यम से और क्या सीधे तौर पर लोगों के माध्यम से आर्थिक सफलताएं इतनी हुईं जिनकी कल्पना तक न थी और कई हजार रुपया आ गया। अतः जो व्यक्ति इसकी पुष्टि के लिए केवल डाकखाना के रजिस्टर ही 5 मार्च 1905 ई. से वर्ष के अन्त तक देखे उसे ज्ञात हो जाएगा कि कितना रुपया आया था।

स्मरण रहे कि मुझे से खुदा तआला का यह स्वभाव है कि जो रुपया नक़द आने वाला हो या अन्य वस्तुएं उपहार स्वरूप हों तो प्रायः उनकी सूचना समय से पूर्व इल्हाम के माध्यम से या स्वप्न द्वारा मुझे दे देता है और इस प्रकार के निशान पचास हजार से कुछ अधिक होंगे।

148. एक सौ अड़तालीस वां निशान - एक बार ऐसा संयोग हुआ कि मैं नेमतुल्लाह वली का वह 'क्रसीदा' देख रहा था जिसमें उसने मेरे आने की बतौर भविष्यवाणी सूचना दी है और मेरा नाम भी लिखा है और बताया है कि तेरहवीं शताब्दी हिज्री के अन्त में वह मसीह मौऊद प्रकट होगा और मेरे बारे में यह शेर लिखा है कि -

महदी-ए-वक़््त व ईसा दौरां

हर दो रा शहसवार मी बीनम

अर्थात् वह आने वाला महदी भी होगा और ईसा भी होगा। दोनों नामों का चरितार्थ होगा और दोनों प्रकार के दावे करेगा।

अतः इस बीच कि मैं यह शेर पढ़ रहा था ठीक उसी समय मुझे यह इल्हाम हुआ-

از پئے آن محمد احسن را
تارک روزگار می بینم

अर्थात् मैं देखता हूँ कि मौलवी सय्यद मुहम्मद अहसन अमरोही इसी उद्देश्य के लिए अपनी नौकरी से जो रियासत भोपाल में थी अलग हो गए ताकि खुदा के मसीह मौऊद के पास उपस्थित हों और उसके दावे के समर्थन के लिए सेवा करें। यह एक भविष्यवाणी थी जो बाद में नितान्त स्पष्टता से प्रकट हुई, क्योंकि मौलवी साहिब ने कटिबद्ध होकर मेरे दावे के समर्थन में बहुत सी पुस्तकें लिखीं और लोगों से शास्त्रार्थ किए और अब तक इसी कार्य में व्यस्त हैं। खुदा उनके कार्य में बरकत दे और इस सेवा का उन्हें प्रतिफल प्रदान करे। आमीन।

149. एक सौ उनन्चास वां निशान - बराहीन अहमदिया पृष्ठ 522 में यह भविष्यवाणी है -

بخرام کہ وقت تو نزدیک رسید
وپائے محمدیان برمنار بلند تر محکم افتاد

उस युग पर पच्चीस वर्ष से भी अधिक हो गए जब प्रतापी खुदा की यह भविष्यवाणी बराहीन अहमदिया में प्रकाशित हुई थी जिस का अभिप्राय यह था कि तेरे उत्थान के दिन आने वाले हैं जो मुहम्मद^स के धर्म की प्रतिष्ठा और सम्मान में वृद्धि करेंगे और उस युग में जैसा कि सब लोग जानते हैं मैं एक अज्ञात कोने में छुपा हुआ और गुप्त था और मेरे साथ एक भी व्यक्ति न था और न किसी को आशा थी कि मुझे यह पद मिलेगा अपितु मैं स्वयं इस भावी वैभव और प्रतिष्ठा से अज्ञान था और सत्य तो यह है कि मैं कुछ भी न था। बाद में खुदा ने मात्र अपनी कृपा से न कि मेरी किसी कला से मुझे चुन लिया, मैं गुमनाम था मुझे प्रसिद्धि दी और इतनी शीघ्रता से प्रसिद्धि दी कि जैसे बिजली एक ओर से दूसरी ओर अपनी चमक प्रकट कर देती है और मैं नादान था मुझे अपनी ओर से ज्ञान

दिया और मैं कोई धनाढ्य व्यक्ति नहीं रखता था। उसने कई लाख रुपए की मुझे सफलताएं दीं और मैं अकेला था उसने कई लाख लोगों को मेरे अधीन कर दिया तथा पृथ्वी-आकाश दोनों में से मेरे लिए निशान प्रकट किए। मैं नहीं जानता कि उसने मेरे लिए यह क्यों किया क्योंकि मैं अपने अन्दर स्वयं में कोई विशेषता नहीं पाता और मैं शैख सा'दी रहमतुल्लाह अलैहि के इस शेर को खुदा के दरबार में पढ़ना अपने यथायोग्य पाता हूँ।

پسندید گانے بجائے رسد
 زما کہ ترانت چه آمد پسند

मेरे खुदा ने प्रत्येक पहलू से मेरी सहायता की प्रत्येक जो शत्रुता के लिए उठा उसे नीचे गिराया। प्रत्येक ने जो दण्ड दिलाने के लिए अदालतों में मुझे खींचा, उन सब मुकद्दमों में मेरे खुदा ने मुझे विजय प्रदान की, प्रत्येक ने जो मुझ पर बद-दुआ की, मेरे स्वामी ने वह बद-दुआ उसी पर डाल दी जैसा कि दुर्भाग्यशाली लेखराम ने अपनी झूठी प्रसन्नताओं पर भरोसा करके मेरे बारे में प्रकाशित किया था कि वह तीन वर्ष के अन्दर अपने समस्त पुत्रों सहित मर जाएगा। अन्ततः परिणाम यह हुआ कि स्वयं ही मेरी भविष्यवाणी के अनुसार निःसंतान मर गया और संसार में उसका कोई वंश न रहा। इसी प्रकार अब्दुल हक गज़नवी उठा और उसने मुबाहला करके अपनी बद-दुआओं से मेरा समूल विनाश चाहा। अतः प्रत्येक दृष्टि से मुझे जितनी उन्नति हुई उस के मुबाहले के बाद हुई। कई लाख लोग अधीन हो गए, कई लाख रुपया आया। लगभग समस्त विश्व में सम्पूर्णक मेरी ख्याति हो गई, यहां तक कि दूसरे देशों के लोग मेरी जमाअत में सम्मिलित हुए और कई लड़के बाद में पैदा हुए किन्तु अब्दुल हक की नस्ल कट गई जो मरने के आदेश में है^① और एक कण के बराबर खुदा तआला की ओर से उसे बरकत

① अब्दुलहक गज़नवी को मुबाहले के पश्चात मैंने अपनी पुस्तक 'अन्वारुल इस्लाम' में बार-बार सम्बोधित करके लिखा है कि यदि तुम अपनी दुआ से मुबाहला के प्रभाव से बच सकते हो तो प्रयास करो कि तुम्हारे घर में कोई लड़का पैदा हो जाए

न मिली और न बाद में उसने कोई सम्मान पाया और

إِنَّ شَانِكَ هُوَ الْأَبْتَرُ

का पूरा चरितार्थ हो गया। फिर मौलवी गुलाम दस्तगीर क्रसूरी उठा और उसे शौक हुआ कि मुहम्मद ताहिर की भांति मुझ पर बद-दुआ करके क्रौम में सम्मान प्राप्त करे अर्थात् जिस प्रकार मुहम्मद ताहिर ने एक झूठे मसीह और झूठे महदी पर बद-दुआ की थी और वह तबाह हो गया था उसी प्रकार अपनी बद-दुआ से मुझे तबाह करे किन्तु उस बद-दुआ के पश्चात् वह स्वयं ही इतनी शीघ्रता से मृत्यु का शिकार हुआ जिसका उदाहरण नहीं पाया जाता। कोई मौलवी उत्तर नहीं देता कि यह क्या रहस्य है कि मुहम्मद ताहिर ने तो अपने युग के झूठे मसीह पर बद-दुआ करके उसे तबाह कर दिया और गुलाम दस्तगीर अपने युग के मसीह पर बद-दुआ करके स्वयं ही संसार से कूच कर गया। यह तो आन्तरिक ख़ुदाई सहायता है बाह्य तौर पर ख़ुदा तआला ने मुझे वह रोब एवं दबदबा प्रदान किया है कि मेरे मुकाबले पर कोई पादरी नहीं आ सकता। या तो वह समय था कि वे लोग बाज़ारों में चिल्ला-चिल्ला कर कहते थे कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से कोई चमत्कार नहीं हुआ तथा पवित्र कुर्आन में कोई भविष्यवाणी नहीं और या ख़ुदा तआला ने उन पर ऐसा रोब डाला कि इस ओर मुख नहीं करते जैसे वे सब इस संसार से कूच कर गए। मुझे क्रसम है उस हस्ती की कि जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं कि यदि कोई पादरी इस मुकाबले के लिए मेरी और मुख करे तो ख़ुदा उसे बहुत अपमानित करेगा और उस अज़ाब में ग्रस्त करेगा जिसका उदाहरण नहीं होगा और उसे शक्ति नहीं होगी कि जो कुछ मैं दिखाता हूँ वह अपने काल्पनिक ख़ुदा की शक्ति और बल से दिखा सके। ख़ुदा मेरे लिए आकाश से भी निशानों की वर्षा करेगा और पृथ्वी से भी। मैं सच-सच कहता हूँ

ताकि तुम निःसन्तान न रहो जो मुबाहले का प्रभाव समझ जाएगा। अतः इतने आग्रह पर उसने अवश्य मुबाहले के पश्चात् दुआएं की होंगी। अन्ततः निःसन्तान रहा। इससे अधिक और क्या निशान होगा। इसी से।

कि यह बरकत अन्य कौमों को नहीं दी गई। अतः क्या सम्पूर्ण संसार में पूरब से लेकर पश्चिम तक कोई पादरी है जो मेरे मुकाबले पर खुदा के निशान दिखा सके। हमने मैदान जीत लिया है किसी में शक्ति नहीं जो हमारे मुकाबले पर आए। अतः यह वही बात है जो खुदा तआला ने आज से पच्चीस वर्ष पूर्व बतौर भविष्यवाणी कही है

بِخَرَامِ كِه وَقْتِ تُو نَزْدِيكِ رَسِيْدِ
وِپَايَ مُحَمَّدِيَانِ بَرْمَنَارِ بَلَنْدِ تَرِ مَحْكَمِ اَوْفَاْدِ

खुदा की क्रसम कि हम मुहम्मदी आज बुलन्द मीनार पर हैं और प्रत्येक व्यक्ति हमारे पैरों के नीचे है।

150. एक सौ पचास वां निशान^① - मेरी पुस्तक 'नूरुलहक़' भाग द्वितीय के पृष्ठ 35 से 38 तक जो तारुन के फूटने से पूर्व देश में प्रकाशित की गई थी, तारुन के बारे में यह भविष्यवाणी है -

إِعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ نَفَثَ فِي رَوْعِي أَنْ هَذَا الْخُسُوفُ وَالْكَسُوفُ فِي رَمَضَانَ أَيَّتَانِ
مَخَوْفَتَانِ لِقَوْمٍ اتَّبَعُوا الشَّيْطَانَ وَلَكِنَّ أَبْوَافًا الْعَذَابِ قَدْ حَانَ
देखो पृष्ठ 35 से 38 तक पुस्तक 'नूरुलहक़'

अनुवाद - खुदा ने अपने इल्हाम के साथ मेरे हृदय में फूँका है कि चन्द्र और सूर्य-ग्रहण एक अज़ाब की भूमिका है अर्थात् तारुन की जो निकट है। अतः खुदा के लिए वह मेरी पुस्तक अर्थात् 'नूरुलहक़' भाग द्वितीय ध्यानपूर्वक पढ़ो और देखो कि तारुन से कितने लम्बे समय पूर्व उसमें तारुन के आने की भविष्यवाणी मौजूद है। क्या मनुष्य का सामर्थ्य है कि अपनी ओर से ऐसी भविष्यवाणी करे। खुदा तआला कहता है -

لَا يُظْهِرُ عَلَى غَيْبِهِ أَحَدًا ۚ إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ مِنْ رَسُولٍ ۚ ②

अर्थात् ग़ैब (परोक्ष) का ऐसा द्वार किसी पर खोलना कि जैसे वह ग़ैब पर

1 अत्यधिक व्याख्या हेतु फनः लिखा गया। इसी से।

② अलजिन्न - 27, 28

विजयी और ग़ैब उस के अधिकार में है। ग़ैब के ज्ञान में यह अधिकार ख़ुदा के चुने हुए रसूलों के अतिरिक्त अन्य किसी को नहीं दिया जाता कि क्या गुणवत्ता की दृष्टि से और क्या संख्या की दृष्टि से परोक्ष (ग़ैब) के द्वार उस पर खोले जाएं। हां अपवाद के तौर पर साधारण लोगों को कोई सच्चा स्वप्न आ सकता है या सच्चा इल्हाम हो सकता है और वह भी अंधकार से शुद्ध नहीं होता किन्तु परोक्ष के द्वार उन पर नहीं खुलते। यह केवल ख़ुदा के चुने हुए रसूलों के लिए होती है।

151. एक सौ इक्यावन वां निशान - जब मैंने अपनी पुस्तक बराहीन अहमदिया लिखी जो मेरी प्रथम रचना है तो मुझे यह कठिनाई आई कि उसे छापने के लिए मेरे पास कोई धन राशि न थी और मैं एक संज्ञाहीन व्यक्ति था। मेरा किसी से परिचय न था। तब मैंने ख़ुदा तआला के दरबार में दुआ की तो यह इल्हाम हुआ-

هُزَّالِيكَ بِجَذْعِ النَّخْلَةِ - تَسَاقُطُ عَلَيْكَ رَطْبًا جَنِيًّا

देखो बराहीन अमहदिया पृष्ठ 226

अनुवाद - खजूर के तने को हिला तुझ पर ताज़ा से ताज़ा खजूरें गिरेंगी। अतः मैंने इस आदेश का पालन करने के लिए सर्व प्रथम खलीफ़ा सय्यद मुहम्मद हसन साहिब वज़ीर रियासत, पटियाला को पत्र लिखा अतः ख़ुदा ने जैसा कि उसने वादा किया था उनको मेरी ओर आकृष्ट कर दिया और उन्होंने अविलम्ब अढ़ाई सौ रुपए भेज दिए और फिर दूसरी बार अढ़ाई सौ रुपए दिए तथा कुछ अन्य लोगों ने रुपयों से सहायता की और इस प्रकार वह पुस्तक निराशा के बावजूद प्रकाशित हो गई और वह भविष्यवाणी पूर्ण हो गई। ये घटनाएं ऐसी हैं कि केवल एक दो लोग इनके साक्षी नहीं अपितु एक बड़ी जमाअत साक्षी है, जिसमें हिन्दू भी हैं। यहां एक बात स्मरण रखने योग्य है कि ख़ुदा की यह वह्यी कि

هُزَّالِيكَ بِجَذْعِ النَّخْلَةِ

यह हज़रत मरयम^① को पवित्र कुआन में सम्बोधन है जब लड़का पैदा होने

① इस पुस्तक की मूल इबारत में ऊपर लिख चुका हूँ कि पुस्तक बराहीन अहमदिया

से वह बहुत कमजोर हो गई थीं और भोजन के लिए वह खुदा तआला की सहायता की मोहताज थीं। इस प्रकार बराहीन अहमदिया मेरे लिए बतौर बच्चे के थी जो पैदा हुआ, और यह बात प्रत्येक जानता है कि पुस्तकों के बारे में यह सामान्य मुहावरा है कि उनको स्वाभाविक परिणाम कहते हैं अर्थात् मन की प्रेरणा से उत्पन्न बच्चे। और जबकि बराहीन अहमदिया मेरा बच्चा सिद्ध हुआ जो पैदा हुआ तो उसके पैदा होने के समय मैं भी अपनी आर्थिक स्थिति में कमजोर था जैसा कि मरयम

में पहले खुदा ने मेरा नाम मरयम रखा और फिर कहा कि मैंने इस मरयम में सच्चाई की रूह फूंकने के पश्चात् उसका नाम ईसा रख दिया मानो मरयमी अवस्था से ईसा पैदा हो गया और इस प्रकार मैं खुदा के कलाम में इब्ने मरयम कहलाया। इस बारे में पवित्र कुर्आन में भी एक संकेत है और वह मेरे लिए बतौर भविष्यवाणी के है अर्थात् अल्लाह तआला पवित्र कुर्आन में इस उम्मत के कुछ लोगों को मरयम से उपमा देता है और फिर कहता है कि वह मरयम ईसा को गर्भ में लिए गर्भवती हो गई और अब स्पष्ट है कि इस उम्मत में मेरे अतिरिक्त किसी ने इस बात का दावा नहीं किया कि खुदा ने मेरा नाम मरयम रखा और फिर इस मरयम में ईसा की रूह फूंक दी है और खुदा का कलाम मिथ्या नहीं। अवश्य है कि इस उम्मत में कोई इसका चरितार्थ हो। भली भांति विचार करके देख लो और संसार में ढूंढ लो कि पवित्र कुर्आन की इस आयत का मेरे अतिरिक्त संसार में कोई चरितार्थ नहीं। अतः यह भविष्यवाणी सूरह 'तहरीम' में विशेष तौर पर मेरे लिए है और वह आयत यह है -

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُوحِنَا
(अत्तहरीम - 13)

अनुवाद - और दूसरा उदाहरण इस उम्मत के लोगों का मरयम इमरान की पुत्री है जिस ने अपने सतीत्व को सुरक्षित रखा। तब हमने उसके पेट में अपनी कुदरत से रूह फूंक दी अर्थात् ईसा की रूह। अब स्पष्ट है कि इस आयत की

कमज़ोर थी और अपने तौर पर इस बच्चे के पोषण के लिए अर्थात् उसके प्रकाशन के लिए संसाधन प्राप्त नहीं कर सकता था तो मुझे भी मरयम की भांति यही आदेश हुआ कि

هُزَّالِيكَ بِجَذْعِ النَّخْلَةِ

अतः इस भविष्यवाणी के अनुसार पुस्तक की पूंजी एकत्र हो गई और भविष्यवाणी पूरी हो गई और इस रूप का आना सर्वथा अप्रत्याशित था क्योंकि मैं गुमनाम व्यक्ति था और यह मेरी प्रथम रचना थी। यह रहस्य भी स्मरण रखने योग्य है कि ख़ुदा तआला ने बराहीन अहमदिया में मुझे ईसा के नाम से नामित करने से पूर्व मेरा नाम मरयम रखा और एक समय तक ख़ुदा के निकट मेरा नाम यही रहा। फिर ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित करके कहा कि हे मरयम! मैंने तुझ में सच्चाई की रूह (आत्मा) फूंक दी मानो यह मरयम सच्चाई की रूह से गर्भवती हुई और फिर ख़ुदा

शेष हाशिया: दृष्टि से इस उम्मत की मरयम को पहली मरयम के साथ तब समानता पैदा होती है कि इसमें भी ईसा की रूह फूंक दी जाए, जैसा कि ख़ुदा ने स्वयं रूह फूंकने का वर्णन भी इस आयत में कर दिया है और अवश्य है कि ख़ुदा का कलाम पूरा हो। अतः इस सम्पूर्ण उम्मत में वह मैं ही हूँ मेरा ही नाम ख़ुदा ने बराहीन अहमदिया में पहले मरयम रखा, तत्पश्चात् मेरे ही बारे में यह कहा कि हम ने इस मरयम में अपनी ओर से रूह फूंक दी और फिर रूह फूंकने के पश्चात् मुझे ही ईसा ठहराया। अतः इस आयत का चरितार्थ मैं ही हूँ। मेरे अतिरिक्त तेरह सौ वर्ष में किसी ने यह दावा नहीं किया कि पहले ख़ुदा ने मेरा नाम मरयम रखा और मरयम में अपनी ओर से रूह फूंक दी जिस से मैं ईसा बन गया। ख़ुदा से डरो, इस में विचार करो। जिस युग में ख़ुदा ने बराहीन अहमदिया में यह कहा उस समय तो मैं इस रहस्य से स्वयं अनभिज्ञ था जैसा कि मैंने बराहीन अहमदिया में अपनी आस्था भी प्रकट कर दी कि ईसा आकाश से आने वाला है। यह मेरी आस्था इस बात पर साक्षी है कि मेरी ओर से कोई झूठ नहीं बनाया गया और मैं ख़ुदा तआला के समझाने से पूर्व कुछ नहीं समझ सका। इसी से।

ने बराहीन अहमदिया के अन्त में मेरा नाम ईसा रख दिया, जैसे वह सच्चाई की रूह जो मरयम में फूँकी गई थी प्रकट होकर ईसा के नाम से नामित हो गई। अतः इस प्रकार से मैं खुदा के कलाम में इब्ने मरयम कहलाया और यही अर्थ खुदा की वह्यी के हैं कि الحمد لله الذى جعلك المسيح ابن مريم (अर्थात् हर प्रकार की स्तुति उस खुदा के लिए है जिसने तुझे मसीह इब्ने मरयम बनाया।)

آنکه گوید ابن مریم چون شدی
هست او غافل ز رازِ ایزدی

(1) अनुवाद - जो व्यक्ति यह कहता है कि तू इब्ने मरयम कैसे बन गया, वह खुदा के भेद से लापरवाह है।

آن خدائے قادر و ربّ العباد
در براہین نام من مریم نہاد

(2) अनुवाद - उस सामर्थ्यवान खुदा और लोगों के रब्ब ने बराहीन अहमदिया में मेरा नाम मरयम रखा था।

مدّے بودم برنگد مریمی
دست ناداده بہ پیرانِ زمی

(3) अनुवाद - मैं एक समय तक मरयम के रंग पर रहा अर्थात् युग के शैखों के हाथों में हाथ नहीं दिया।

بچو بکرے یافتم نشو و نما
از رفیقِ راه حق نا آشنا

(4) अनुवाद - मैंने एक कुंवारी लड़की की भांति पोषण पाया और किसी पूर्ण वली से मेरा परिचय न था।

بعد ازان آن قادر و ربّ مجید
روح عیسیٰ اندران مریم ومید

(5) अनुवाद - तत्पश्चात् उस सामर्थ्यवान और पूज्य खुदा ने उसी मरयम में ईसा की रूह फूँक दी।

پس بہ نفخش رنگ دیگر شد عیان
زاد زان مریم مسیح این زمان

(6) अनुवाद - फिर उस फूंकने के उपरान्त एक और रूप प्रकट हुआ अर्थात् उस मरयम से उस युग का मसीह पैदा हुआ।

زین سبب شد ابن مریم نام من
زانکه مریم بود اول گام من

(7) अनुवाद - मेरा नाम इब्ने मरयम इसलिए हुआ कि मरयम बनना मेरा पहला कदम था।

بعد ازان از نفخ حق عیسی شدم
شد ز جائے مریمی بر تر قدم

(8) अनुवाद - फिर मैं खुदा की फूंक के कारण ईसा हो गया और मरयमी स्थान से मेरा कदम ऊंचा हो गया।

این همه گفت است رب العالمین
گر نمی دانی براین راهیں

(9) अनुवाद - ये समस्त बातें समस्त लोकों के प्रतिपालक की कही हुई हैं। यदि तुझे ज्ञान नहीं तो बराहीन अहमदिया को देख।

حکمت حق رازها وارد بے
نکتہ مستور کم فہم کسے

(10) अनुवाद - खुदा की नीति में बहुत भेद होते हैं इन सूक्ष्म रहस्यों को लोग कम समझते हैं।

فہم را فیضان حق باید نخست
کار بے فیضان نمی آید درست

(11) अनुवाद - किसी बात के बोध के लिए खुदा के वरदान की आवश्यकता है। खुदा के वरदान के अभाव में कोई कार्य ठीक नहीं बैठता।

گرنداری فیضِ رحمان را پناه
ظلمتے در ہر قدم داری براہ

(12) अनुवाद - यदि तू कृपालु खुदा के वरदान की शरण नहीं रखता तो तेरे मार्ग के प्रत्येक कदम पर अंधकार ही अंधकार है।

فیضِ حق را با تضرع کن تلاش
ہاں مرو چوں تو سنے آہستہ باش

(13) तू रोना-धोना करके खुदा का वरदान ढूंढ। घोड़े के समान भागा न चला जा, धीरे चल।

اے پئے تکفیر ما بستہ کمر
خانہ ات ویران تو در فکرِ دگر

(14) अनुवाद - हे वह व्यक्ति जो हमें काफ़िर कहने पर कटिबद्ध है, तेरा अपना घर तो बरबाद हो रहा है किन्तु तू अन्य की चिन्ता में है।

صد ہزاران کفر در جانت نہاں
رو چہ نالی بہر کفرِ دیگران

(15) अनुवाद - लाखों कुफ़्र तो तेरे अपने ही प्राण में छुपे हुए हैं दूर हो तू अन्य लोगों के कुफ़्र पर क्या रोता है।

خیز و اولِ خویشتن را کن درست
نکتہ چین را چشم می باید نخست

(16) अनुवाद - उठ और प्रथम स्वयं को ठीक कर। आलोचक की स्वयं अपनी आंख पहले ठीक होनी चाहिए।

لعنتی گر لعنتے بر ماکند
او نہ بر ما خویش را رسوا کند

(17) अनुवाद - कोई धिक्कृत व्यक्ति हम पर ला'नत करे, वह ला'नत हम पर नहीं पड़ती वरन् वह स्वयं को बदनाम करता है।

لعنت اہل جفا آسان بود

لعنت آن باشد کہ از رحمان بود

(18) अनुवाद - अत्याचारियों की लानत और निन्दा का सहन करना आसान है। वास्तविक ला'नत तो वह है जो रहमान की ओर से आती है।

152. एक सौ बावन वां निशान - खुदा तआला ने मुझे सामान्य तौर पर सम्बोधित करके कहा था कि

إِنِّي مُهَيِّنٌ مِّنْ أَرَادَ إِهَانَتَكَ

अर्थात् मैं उसे अपमानित करूंगा जो तुझे अपमानित करने का इरादा करेगा। सैकड़ों शत्रु इस भविष्यवाणी के चरितार्थ हो गए हैं। इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक लिखने की गुंजायश नहीं। उनमें से अधिकतर ऐसे हैं जिन्होंने मेरे बारे में यह कहा कि यह झूठ गढ़ने वाला है, ताऊन से मरेगा। खुदा की कुदरत कि वे स्वयं ताऊन से मृत्यु के घाट उतर गए और अधिकांश लोग ऐसे हैं कि अपना यह इल्हाम प्रस्तुत करते थे कि हमें खुदा ने बताया है कि यह व्यक्ति शीघ्र मर जाएगा। खुदा की शान कि वे अपने ऐसे इल्हामों के पश्चात् स्वयं शीघ्र मर गए और कुछ ने मुझ पर बद-दुआएं की थीं कि वह शीघ्र तबाह हो जाए वे स्वयं शीघ्र तबाह हो गए मौलवी मुहयुद्दीन लखूके वाले का इल्हाम लोगों को स्मरण होगा, जिन्होंने मुझे काफ़िर ठहराया या फिरऔन से उपमा दी और मुझ पर अज़ाब उतरने के संबंध में इल्हाम प्रकाशित किए। अन्ततः स्वयं ही तबाह हो गए। कई वर्ष हो गए कि वह इस संसार से गुज़र गए। इसी प्रकार गुलाम दस्तगीर क्रसूरी भी मुझे गालियाँ देने में अतिक्रमण कर गया था, जिसने मक्का से मेरे पर कुफ़्र के फ़त्वे मंगवाए थे। वह भी उठते-बैठते मुझ पर बद-दुआ करता था और झूठों पर खुदा की ला'नत उसका जाप था। और इसी पर बस नहीं की अपितु जैसा कि मैं अभी लिख चुका हूँ उसे भी रुचि हुई कि शैख मुहम्मद ताहिर साहिब 'मज्मउल बिहार' की भांति मुझ पर बद-दुआ करे ताकि उसका भी चमत्कार सिद्ध हो क्योंकि मज्मउल बिहार के लेखक के युग में कुछ अपवित्र

स्वभाव रखने वाले लोगों ने केवल झूठ गढ़ने के तौर पर मसीह और महदी होने का दावा किया था और चूंकि वे झूठ पर थे इसलिए ख़ुदा तआला ने मुहम्मद ताहिर की दुआ स्वीकार करके उनको मुहम्मद ताहिर के जीवन में ही मृत्यु दे दी। अतः इस क्रिस्से को पढ़कर गुलाम दस्तगीर को भी रुचि पैदा हुई कि आओ मैं भी इस झूठे मसीह और झूठे महदी पर दुआ करूँ ताकि उसकी मृत्यु से मेरा चमत्कार भी सिद्ध हो किन्तु उसे शैख सा'दी का यह शे'र याद न रहा -

ہر بیشہ گماں مبرکہ خالی است
شاید کہ پتنگ خفته باشد

अनुवाद:- हर कछार के बारे में यह मत सोचो कि वह खाली है। हो सकता है कि उसमें कोई चीता सोया हुआ हो।

अगर मैं झूठा होता तो निःसन्देह ऐसी दुआ से कि नितान्त ध्यान और हार्दिक दर्द से की गई थी अवश्य तबाह हो जाता और मियां गुलाम दस्तगीर मुहम्मद ताहिर द्वितीय समझा जाता, परन्तु चूंकि मैं सच्चा था इसलिए गुलाम दस्तगीर ख़ुदा तआला की वह्यी **إِنِّي مَهِينٌ مِّنْ أَرَادَاهَانْتَلِكُ** का शिकार हो गया और वह सदैव का अपमान जिसे उसने मेरे लिए चाहा था उसी पर पड़ गया।

यदि कोई मौलवी ख़ुदा से डरने वाला हो तो इस एक ही स्थान से उसकी असावधानी का पर्दा दूर हो सकता है। प्रत्येक सत्याभिलाषी पर अनिवार्य है कि इस बात पर विचार करे कि यह क्या रहस्य है कि मुहम्मद ताहिर की दुआ से तो झूठा मसीह और झूठा महदी मर गया और जब मियां गुलाम दस्तगीर ने उसकी नक़ल करके अपितु समरूपता प्रकट करने के लिए अपनी पुस्तक 'फ़तह रहमानी' में इस का वर्णन भी करके मुझ पर बद-दुआ की और बद-दुआ करते समय अपनी उसी पुस्तक में मेरे बारे में यह शब्द लिखे कि

تَبَّالَهُ وَلَا تَبَاعَهُ

जिसके अर्थ यह हैं कि मैं और मेरे अनुयायी सब तबाह हो जाएं। तब वह कुछ सप्ताह के अन्दर स्वयं ही मृत्यु का शिकार हो गया और जिस अपमान को

मेरी मृत्यु मांगकर मेरे लिए चाहता था वह अपमान का धब्बा हमेशा के लिए उसी के भाग्य में आया। कोई सज्जन मुझे उत्तर दें कि क्या यह संयोग की बात है या खुदा तआला के इरादे से प्रकट हुआ। मैं अब तक खुदा तआला की कृपा से जीवित हूँ किन्तु गुलाम दस्तगीर की मृत्यु पर ग्यारह वर्ष से अधिक समय हो गया। अब आप लोगों का क्या विचार है। क्या खुदा तआला को मुहम्मद ताहिर के युग का झूठा मसीह और झूठा महदी बुरा मालूम होता था और उस से खुदा शत्रुता रखता था किन्तु गुलाम दस्तगीर के युग में जो झूठा मसीह पैदा हुआ उसे खुदा ने प्रेम की दृष्टि से देखा और उसे सम्मान दिया कि गुलाम दस्तगीर को उसके सामने तबाह कर दिया और गुलाम दस्तगीर की बद-दुआ को उसी के मुंह पर मार कर उसी को मृत्यु का प्याला पिला दिया और प्रलय तक यह अपमान का दाग उस पर रखा। यदि मैं गुलाम दस्तगीर की बद-दुआ से मर जाता और गुलाम दस्तगीर अब तक जीवित रहता तो क्या मेरे शत्रु अपितु इस्लाम धर्म के शत्रु संसार में हजारों विज्ञापन जारी करके प्रलय का कोलाहल न मचा देते और क्या मेरा झूठा होना नगाड़े की चोट पर प्रसिद्ध न किया जाता? तो फिर अब क्रौम के विद्वान मौन क्यों हैं? क्या उन लोगों का यही संयम और खुदा का भय है तथा यह कहना कि यह मुबाहला नहीं। मान लिया यह मुबाहला नहीं किन्तु मुहम्मद ताहिर का अनुसरण करके बद-दुआ तो है जिसके मुकाबले पर मेरा इल्हाम है कि **إِنِّي مُهِينٌ مِّنْ أَرَادَ إِهَانُكَ** अतः यह क्या हुआ कि इस बद-दुआ से मेरा तो कुछ न बिगड़ा परन्तु खुदा तआला के इल्हाम **إِنِّي مُهِينٌ** ने स्पष्ट प्रभाव दिखा दिया और उसी बद-दुआ को आयत (सूर: तौबा: 98) **عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ** गुलाम दस्तगीर पर उतार दिया और जो व्यक्ति मुहम्मद ताहिर द्वितीय बनना चाहता था उसे खुदा ने झूठे मसीह का द्वितीय बना दिया और उसकी मृत्यु के पश्चात् मुझ पर बरकत पर बरकत उतारी गई। कई लाख लोग मुरीद हो गए और उसकी मृत्यु के पश्चात् तीन बेटों ने जन्म लिया और कई लाख रुपया आया और लगभग समस्त संसार में सम्मान के साथ

खुदा ने मुझे प्रसिद्ध कर दिया। कदाचित हमारे विरोधी अब यह कहेंगे कि वह झूठे मसीह और झूठा महदी जो मुहम्मद ताहिर की बद-दुआ से मर गया था वह भी एक संयोग की मृत्यु थी मुहम्मद ताहिर की दुआ का प्रभाव न था। अतः ऐसी बातों का हम कहां तक उत्तर दे सकते हैं। चाहें तो वे नास्तिक बन जाएं और यह कह दें कि गुलाम दस्तगीर की मृत्यु भी संयोग है प्रत्यक्ष में लक्षण तो यह ही विदित होते हैं।

क्यों नहीं लोगो तुम्हें हक़ का ख्याल,
दिल में उठता है मेरे सौ सौ उबाल।
इस क्रूर कीनो तअस्सुब बढ़ गया,
जिस से कुछ ईमां जो था वह सड़ गया।
क्या यही तक्वा यही इस्लाम था,
जिसके बायस से तुम्हारा नाम था।

अतः खुदा का यह इल्हाम कि -

إِنِّي مُهَيِّئُ مَنْ أَرَادَ إِهْلَاقَكَ

सैकड़ों स्थानों पर बड़े जोर से प्रकट हुआ और प्रकट हो रहा है इसमें क्या रहस्य है कि वह सामर्थ्यवान खुदा मेरा इतना अधिक समर्थन करता है। यही रहस्य है कि वह नहीं चाहता कि उसका प्रेमी नष्ट हो

چہ شیرین منظری اے دلستا
چہ شیرین خصلتی اے جانِ جانم

(1) अनुवाद - हे मेरे प्रियतम तू कैसा सुन्दर है और हे मेरे खुदा तू कैसा मधुर स्वभाव है।

چو دیدم رُوئے تو دل در تو بستم
نمانده غیر تو اندر جهانم

(2) अनुवाद - जब मैंने तेरा मुख देखा तो तुझ से हृदय लगा लिया और संसार

में तेरे अतिरिक्त मेरा कोई न रहा।

توان برداشتن دست از دو عالم
مگر هجرت بسوزد استخوانم

(3) अनुवाद - दोनों लोकों से अलगता संभव है किन्तु तेरी जुदाई मेरी हड्डियां तक जला देती है।

در آتش تن بآسانی توان داد
ز هجرت جان رود با صد فغانم

(4) अनुवाद - अग्नि के अन्दर शरीर आसानी से डाला जा सकता है यदि तेरी जुदाई (अलगता) से मेरे प्राण चीखते-चिल्लाते हुए निकलते हैं।

153. एक सौ तिरेपनवां निशान - मौलवी मुहम्मद हसन भीं वाले ने मेरी पुस्तक 'ऐजाज़ अहमदी'^① के हाशिया पर لعنت الله على الكاذبين लिख कर स्वयं मुबाहले के पृष्ठ पर डाल दिया इसलिए इस तहरीर (लेखन) पर एक वर्ष भी नहीं बीता था कि बड़े दुःख के साथ इस संसार से चला गया और मृत्यु को प्राप्त हो गया उसी के हाथ द्वारा लिखा हुआ मुबाहला हमारे पास मौजूद है जो चाहे देख ले।

154. एक सौ चव्वनवां निशान - पीर मेहर अली शाह गोलड़ी ने अपनी पुस्तक 'सैफ़ चिश्ताई' में मुझे चोर कहा था अर्थात् उसके विचार में मैंने दूसरों की पुस्तकों से लेख चुरा कर लिखा है ख़ुदा ने इस झूठ का उसको यह दण्ड दिया कि अदालत में करमदीन के मुकद्दमे में वह स्वयं मुहम्मद हसन भीं के नोट्स का चोर साबित हुआ। अतः अदालत में इस विषय में हल्फ़ी गवाहियां हुईं तब उस पर भी इल्हाम اِنِّیْ مُهْمِیْنٌ مِّنْ اَرَادَ اِهَانَتَكَ पूरा होकर ख़ुदा तआला का निशान ज़ाहिर हुआ।

155. एक सौ पचपनवां निशान - ख़ुदा तआला का एक यह भी निशान था

① लेखन की ग़लती प्रतीत होती है। ऐजाज़ुल मसीह होना चाहिए क्योंकि मौलवी मुहम्मद हसन ने 'ऐजाज़ुल मसीह' के हाशिया पर ही لعنت الله على الكاذبين लिखा था। (प्रकाशक)

कि उसने 1882 ई. के पश्चात् बराहीने अहमदिय्या का शेष भाग 23 वर्ष की अवधि तक प्रकाशित होने से रोक दिया। अतः उसका यह कथन पूरा हुआ कि मैं बराहीन अहमदिय्या को एक निशान (प्रतीक) बनाऊंगा क्योंकि इसमें ऐसी बहुत सी भविष्यवाणियां थीं जिनकी पूर्ती लंबित थी और उसमें मेरे प्रति ऐसे वादे थे जिनका प्रकटन अभी नहीं हुआ था और आवश्यक था कि उन सभी निशानों तथा सभी वादों का उसी पुस्तक में पूरा होना दिखाया जाता ताकि किताब बराहीन अहमदिय्या अपने नाम के अनुरूप सिद्ध हो जाती। यदि उन भविष्यवाणियों की पूर्ती से पहले बराहीन अहमदिय्या समाप्त हो जाती तो यह एक दोषपूर्ण पुस्तक होती इसलिए खुदा ने जिसके सभी कार्य ज्ञान तथा युक्ति पर आधारित हैं यह चाहा कि बराहीन अहमदिय्या के शेष भाग का छपना तथा प्रकाशित होना उस समय तक रोक दिया जाए जब तक वह भविष्यवाणिया पूर्ण न हो जाएं जो बराहीन अहमदिय्या में लिखी गई हैं क्योंकि वह किताब जैसा कि उसका नाम बराहीन अहमदिय्या है इसलिए संकलित की गई है कि ताकि जो इस्लाम की दलीलें हैं उनको ज़ाहिर करे और बराहीन अहमदिय्या में सबसे बढ़कर आकाशीय निशान हैं जिसमें मानव शक्ति का कोई हस्तक्षेप नहीं इसलिए निश्चित था कि इसमें इतने आकाशीय निशान लिखे जाते कि दुश्मन पर हुज्जत पूरी करने के लिए पर्याप्त होते जैसा कि बराहीन अहमदिया में यह वचन दिया गया था कि इसमें तीन सौ निशान लिखे जाएंगे। इसलिए खुदा ने चाहा कि वह बातें पूरी हों यद्यपि मुखालिफ़ (विरोधी) अपनी अज्ञानता से शोर मचाते रहे और मुझ पर यह झूठ बोला गया कि मानो मैंने दुर्भावना से लोगों का रूपया हज़म करने के लिए बराहीन अहमदिया का प्रकाशन भविष्य में सदैव के लिए बन्द कर दिया है लेकिन बराहीन अहमदिया के देरी से छपने में यही हिकमत थी जिसका मैंने उल्लेख किया है और मुझे विश्वास है कि कोई बुद्धिमान इससे इन्कार नहीं करेगा सिवाए उन् लोगों के जिनका धर्म तथा ईमानदारी से कोई संबंध नहीं है।

وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ (अश्शुअरा आयत 228)

अल्लाह तआला कुर्आन शरीफ में फ़रमाता है :-

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً وَاحِدَةً ۖ
كَذَلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ (अलफ़ुरक़ान : 33)

अर्थात् काफ़िर कहते हैं कि कुर्आन एक बार में ही पूरा क्यों नहीं उतरा। ऐसा ही होना चाहिए था ताकि समय-समय पर हम तेरे दिल को तसल्ली देते रहें और ताकि वह अध्यात्म ज्ञान तथा ज्ञान जो समय से संबंधित हैं अपने समय पर ही प्रकट हों क्योंकि समय से पूर्व किसी विषय को समझना कठिन हो जाता है। अतः युक्ति द्वारा ख़ुदा ने कुर्आन शरीफ़ को तेईस वर्ष तक उतारा ताकि उस अवधि तक कथित निशान भी प्रकट हो जाएं। अतः मुझे विश्वास है कि किताब बराहीन अहमदिय की देरी पर अभी तेईसवां वर्ष समाप्त नहीं होगा कि इसका पांचवा भाग देश में प्रकाशित किया जाएगा और ख़ुदा तआला ने बराहीन अहमदिया में तेईस वर्ष की ओर संकेत भी दिया है जैसा कि वह ख़ुदा फ़रमाता है

يا احمدبارك الله فيك۔ الرحمن علم القرآن۔ لتنذر قومًا ما انذر آباءهم ولتستبين سبيل
المجرمين۔ قل انى امرت وانا اول المؤمنين۔

हे अहमद ! (यह ज़िल्ली अर्थात् प्रतिरूप के तौर पर इस विनीत का नाम है) ख़ुदा ने तुझ में बरकत (आशीर्वाद) रख दी है वह रहमान ख़ुदा जिसने तुझे कुर्आन सिखाया है अर्थात् इस युग के लोगों में से किसी का तुझ पर उपकार नहीं। ख़ुदा तेरा शिक्षक है और ख़ुदा ने तुझे इसलिए कुर्आन सिखाया कि ताकि तू उन लोगों को डराए (सचेत करे) जिन के बाप-दादा नहीं डराए गए और ताकि ख़ुदा की हुज्जत पूरी हो जाए और दोषियों का मार्ग स्पष्ट हो जाए और उन्हें बता दे कि मैं ख़ुदा की ओर से नियुक्त (आदेशित) हूँ और सर्वप्रथम इस बात पर ईमान लाता हूँ। और इससे पहले क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में कुर्आन करीम की शिक्षा तेईस वर्ष तक समाप्त हुई इसलिए आवश्यक था कि अब भी उसी समानता को दर्शाने के लिए कुर्आन करीम की शिक्षा की अवधि तेईस वर्ष ही निर्धारित की जाती ताकि वह सारे निशान प्रकट हो जाएं जिनका वादा किया

गया था। रूमी साहिब ने भी इसी विषय में फ़रमाया है :-

مدتے ایں مثنوی تا خیر شد سالہا بائیسیت تا خون شیر شد

अनुवाद :- एक लंबे समय तक इस मसनवी में विलम्ब हो गया अतः रक्त को दूध बनने में सालों चाहिए होते हैं।

156. एक सौ छप्पनवां निशान - इस संकेत को इस से पूर्व मैंने अपनी पुस्तक 'तज़किरतुल शहादतैन' के अंत में लिखा है और वह यह है कि अक्टूबर 1903 ई. को मैंने इरादा किया था कि साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ और शेख़ अब्दुर्रहमान साहिब की शहादत के विषय में जो बहुत बेरहमी से क्रतल कर दिए गए थे एक पुस्तक लिखूं जिस का नाम 'तज़किरतुल शहादतैन' प्रस्तावित किया था लेकिन संयोग से मुझे गुर्दे की पीड़ा शुरू हो गई और मेरा इरादा था कि 16 अक्टूबर 1903 ई. तक वह पुस्तक समाप्त कर दूं क्योंकि 16 अक्टूबर 1903 ई. को एक फ़ौजदारी मुक़द्दमे के लिए जो एक मुखालिफ़ की ओर से मुझ पर दायर था, गुर्दासपुर जाना आवश्यक था तब मैंने खुदा के समक्ष प्रार्थना की कि या इलाही मैं शहीद स्वर्गीय अब्दुल लतीफ़ के लिए पुस्तक लिखना चाहता हूं और गुर्दे का दर्द आरंभ हो गया है मुझे स्वस्थ कर दे। और इससे पूर्व मुझे दस दिन निरन्तर गुर्दे का दर्द रहा था और इस कारण मैं मृत्यु के निकट हो गया था। अब की बार भी वही भय लग गया। मैंने अपने घर के लोगों को कहा कि मैं प्रार्थना करता हूं तुम आमीन कहो। तब मैंने अपने स्वास्थ्य के लिए इस कष्टदायक स्थिति (गंभीर पीड़ा) में प्रार्थना की और उन्होंने आमीन कहा। अतः मैं खुदा तआला की क़सम खा कर कहता हूं कि जिसकी क़सम हर गवाही से अधिक भरोसे योग्य है कि अभी मैंने प्रार्थना समाप्त नहीं की थी कि मुझे ऊंघ आई और इल्हाम हुआ: **سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبِّ رَحِيمٍ** मैंने उसी क्षण यह इल्हाम अपने घर के लोगों और उन सभी को जो उपस्थित थे सुनाया और खुदा जानता है कि सुबह छः बजे से पहले मैं बिल्कुल स्वस्थ हो गया और उसी दिन मैंने आधी किताब लिख ली।

देखो तज़किरतुल शहादतैन का अंतिम भाग।

157. एक सौ सत्तावनवां निशान - साहिबजादा मौलवी अब्दुल लतीफ़ की शहादत भी मेरे सच्चे होने का एक निशान है क्योंकि जब से खुदा ने दुनिया की बनाई है कभी ऐसा संयोग नहीं हुआ कि कोई व्यक्ति जान-बूझकर एक झूठे मक्कार के लिए अपने प्राण दे और अपनी पत्नी को विधवापन के संकट में डाल दे और अपने बच्चों का अनाथ होना पसंद करे और अपने लिए संगसारी की मृत्यु (पत्थर मार कर मार डालना) को स्वीकार करे यूं तो सैकड़ों आदमी अत्याचार पूर्वक मार दिए जाते हैं परन्तु मैं जो इस जगह साहिबजादा अब्दुल लतीफ़ साहिब की शहादत को एक महान निशान मानता हूँ, वह इस कारण नहीं कि वह अत्याचार पूर्वक क्रतुल और शहीद किए गए अपितु इस कारण है कि शहीद होने के समय उन्होंने वह दृढ़ता दिखाई कि उस से बढ़कर कोई करामत नहीं हो सकती। उनको तीन बार अमीर ने विभिन्न समयों में नरमी से समझाया कि क्रादियान में जो व्यक्ति मसीह मौऊद होने का दावा करता है उसकी बैअत तोड़ दो तो आप को छोड़ दिया जाएगा अपितु पहले से भी अधिक आपका सम्मान होगा अन्यथा संगसार किए जाओगे। उन्होंने हर बार यही उत्तर दिया कि मैं ज्ञानी हूँ मैंने दुनिया देखी है मैंने बहुत सोच विचार कर बैअत की है। मैं उसको पूरी दुनिया से श्रेष्ठ समझता हूँ। कई दिन उनको हिरासत में रखा गया और बहुत कष्ट दिए गए और एक भारी जंजीर उन पर डाली गई जो सिर से पाँव तक थी और बार-बार समझाया और बैअत छोड़ने पर सम्मानित करने का वचन दिया गया क्योंकि उनके क्राबुल की रियासत से पुराने संबंध थे तथा रियासत में उनकी सेवाएं थीं परन्तु उन्होंने बार-बार कहा कि मैं पागल नहीं मैंने सच्चाई को पा लिया है। मैंने स्पष्ट रूप से देख लिया है कि आने वाला मसीह यही है जिस के हाथ पर मैंने बैअत की है। तब निराश होकर उनके नाक में रस्सी डाल कर पैरों में जंजीर के साथ संगसारी के मैदान में ले गए और संगसार करने से पहले उन्हें अमीर ने फिर समझाया कि अब भी समय है आप बैअत तोड़ दो और इन्कार कर दो। तब उन्होंने कहा ऐसा कभी नहीं होगा अब मेरा समय निकट है। मैं सांसारिक जीवन को धर्म पर प्राथमिकता कभी नहीं

दूंगा। कहा जाता है कि उनकी दृढ़ता को देख कर सैकड़ों लोगों के शरीर थराने लगे और उनके दिल कांप उठे कि यह कैसा मजबूत ईमान आदमी है, ऐसा हमने कभी नहीं देखा। और कई लोगों ने कहा कि यदि वह व्यक्ति जिसकी बैअत की गई है खुदा की ओर से न होता तो साहिबजादा अब्दुल लतीफ़ यह दृढ़ता कभी न दिखा सकता। तब उस पीड़ित को पत्थरों से शहीद किया गया और उसने आह न की और चालीस दिन उनकी लाश पत्थरों में पड़ी रही। उनके अंतिम वाक्य यह थे कि मैं छः दिन से अधिक मुर्दा नहीं रहूंगा तो अमीर ने उनकी संगसारी के स्थान पर एक पहरा लगा दिया कि शायद यह भी धोखा होगा मगर इस वाक्य से तात्पर्य यह था कि छः दिन तक मेरी आत्मा एक नए शरीर के साथ आकाश पर उठाई जाएगी।

अब ईमान तथा न्याय के साथ सोचना चाहिए कि जो सिलसिला छल, धोखे और झूठ पर आधारित हो उस सिलसिले के लोग ऐसी दृढ़ता और साहस दिखला सकते हैं ? कि इस मार्ग में पत्थरों से कुचला जाना स्वीकार करें और अपने बच्चों और पत्नी की कुछ परवाह न करें और ऐसी मर्दानगी के साथ जान दें और बैअत को छोड़ने की शर्त पर बार-बार रिहाई का वादा दिया जाए परन्तु फिर भी इस मार्ग को न छोड़ें। इसी प्रकार शैख अब्दुर्रहमान भी काबुल में क़त्ल किए गए और साहस न छोड़ा और यह न कहा कि मुझे छोड़ दो मैं बैअत को तोड़ता हूं और यही सच्चे धर्म और सच्चे ईमान की निशानी है कि जब किसी को उसका पूरा ज्ञान प्राप्त हो जाता है और और ईमान की मिठास दिल व जान में रच-बस जाती है तो ऐसे लोग इसके रास्ते में मरने से नहीं डरते। हां जो सतही (कमजोर) ईमान रखते हैं और ईमान उनके रगों में प्रवेश नहीं करता यहूदा इसकरायूती के समान थोड़े से लालच से मुर्तद हो सकते हैं, ऐसे नापाक मुर्तदों के भी हर एक नबी के समय में बहुत से उदाहरण हैं। अतः खुदा का शुक्र (धन्यवाद) है कि ईमानदारों की एक भारी जमाअत (समूह) मेरे साथ है और उनमें से प्रत्येक मेरे लिए एक निशान है यह मेरे खुदा की कृपा है।

ربّ انک جنتی ورحمتک جنتی وایاتک غذائی وفضلک ردائی۔

लेखक की ओर से क़सीदा

إِنِّي مِنَ الرَّحْمَنِ عَبْدٌ مُكْرَمٌ
سَمَّيَ مُعَادَاتِي وَ سَمِيَّ أَسْلَمَ

(1) अनुवाद - मैं दयालु ख़ुदा की ओर से एक सम्मान प्राप्त बन्दा हूँ मेरी शत्रुता विष है और मुझ से मैत्री सुरक्षा प्रदान करने वाली है।

إِنِّي أَنَا الْبُسْتَانُ بُسْتَانُ الْهُدَى
أَنِّي صَدُوقٌ مُصْلِحٌ مَتَرْدَمٌ

(2) मैं वह बाग़ हूँ जो सद्मार्ग का बाग़ है, मैं सत्यवादी और सुधारक हूँ और सुधार करने वाला हूँ। लेखक की ओर से क़सीदा

مَنْ فَرَّ مِنِّي فَرَّ مِنْ رَبِّ الْوَرَى
أَنِّي أَنَا النِّهَجُ السَّلِيمُ إِلَّا قَوْمٌ

(3) जो व्यक्ति मुझ से भागा वह ख़ुदा से भागा, मैं सुरक्षा का मार्ग तथा सन्मार्ग हूँ।

رُوحِي لِتَقْدِيسِ الْعِلَى حَمَامَةٍ
أَوْ عِنْدَلِيبِ غَارِدٍ مَتَرْنَمِ

(4) मेरी रूह ख़ुदा की पवित्रता के लिए एक कबूतरी है या एक बुलबुल है जो मधुर स्वर में बोल रही है।

مَا جِئْتُمْ فِي غَيْرِ وَقْتٍ عَابَثَا
قَدْ جِئْتُمْ وَ الْوَقْتُ لَيْلٌ مُظْلَمٌ

(5) मैं तुम्हारे पास असमय और व्यर्थ नहीं आया। मैं उस समय आया जबकि युग अंधेरी रात के समान था।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتْرَكُوا أَهْوَاءَكُمْ
تُوبُوا وَإِنَّ اللَّهَ رُبٌّ رَحِيمٌ

(6) हे लोगो! अपने लोभ-मोह को त्याग दो तौबा करो, खुदा बहुत क्षमा करने वाला और दया करने वाला है।

رَبُّ كَرِيمٌ غَافِرٌ لِمَنِ اتَّقَى
طُوبَى لِمَن بَعْدَ الْمَعَاصِي يَنْدَمُ

(7) रब कृपालु है, वह डरने वाले को क्षमा कर देता है। क्या सौभाग्यशाली है वह व्यक्ति जो पाप करने के पश्चात् पश्चाताप करता है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا أَجَالَكُمْ
إِنَّ الْمَنِيَا لَا تُرَدُّ وَتَهْجُمُ

(8) हे लोगो! अपनी मौतों को स्मरण करो, जब मौतें आती हैं तो वापस नहीं जातीं और अचानक पकड़ लेती हैं।

يَا لَأَتَمُّ إِنِّ الْمَكَارِمُ كُلُّهَا
فِي الصِّدْقِ فَاسْلُكْ نَهْجَ صِدْقٍ تَرْحَمُ

(9) हे मेरी भर्त्सना करने वाले! समस्त बड़ाइयां सच्चाई में हैं। अतः सत्य को अपना, सुरक्षित रहेगा।

السَّعْيُ لِلتَّوْحِيدِ أَمْرٌ بَاطِلٌ
إِنَّ الْمُقَرَّبَ لَا يُهَانُ وَ يُكْرَمُ

(10) अपमान के लिए प्रयत्न करना मिथ्या है और जो व्यक्ति खुदा का सानिध्य प्राप्त होता है खुदा उसे अपमानित नहीं करता।

جَاءَتْكَ آيَاتِي فَانْتَ تُكْذِّبُ
شَاهَدْتَ سُلْطَانِي فَانْتَ تَحْكُمُ

(11) मेरे निशान तेरे पास आए और तू झुठलाता है और मेरे प्रमाण तूने देखे और फिर तू बल दिखाता है।

هل جئتُك الابراء من ربِّ الوری
ام هل رئت العیش لا يتصرم

(12) क्या खुदा तआला से बरी होने की सूचना तुझे पहुँच गई या तूने देख लिया कि तेरा जीवन कभी समाप्त नहीं होगा।

ان كنت از معت النّضال فانّا
ناتی كما یاتی لصید ضیغم

(13) और यदि तू युद्ध का इरादा करता है तो हम उसी प्रकार आएंगे जिस प्रकार शिकार के लिए शेर आता है।

لا نتقی حرب العدا و نضالهم
والقلب عند الحرب لا يتجمجم

(14) हम शत्रुओं के युद्ध और उनके तीर चलाने से नहीं डरते और हृदय युद्ध के समय चिन्तित नहीं होता।

انظر الی عبد الحکیم و غیہ
یعوی کسر حان ولا یتکلم

(15) डाक्टर अब्दुल हकीम खान और उसकी पथ भ्रष्टता की ओर देख, भेड़िए के समान चिल्ला रहा है न यह कि बात कर रहा है।

کبر یُسعر نفسه بضرامه
مأمّد هذا الکبر الا الدرهم

(16) अहंकार अपने ईंधन के साथ उनको उत्तेजित करता है और यह अहंकार धन के कारण उत्पन्न हुआ है।

الفخر بالمال الكثير جهالة
غيم قليل الماء لا يتلوم

(17) धन की अधिकता के साथ गर्व करना मूर्खता है यह वह बादल है जिसमें पानी कम है जो ठहर नहीं सकता।

جهد المخالف باطل في امرنا
سيف من الرحمن لا يثلم

(18) विरोधी के प्रयास हमारे मामले में मिथ्या हैं। यह ख़ुदा की वह तलवार है जो कभी चूकती नहीं होगी।

في وجهنا نور المهيمن لائئ
ان كان فيكم ناظر متوسم

(19) हमारे मुख पर ख़ुदा का प्रकाश प्रकाशित है, यदि तुम में कोई देखने वाला हो।

ما قُلْتُ يا عبد الحكيم بجنبنا
الا كخذف عند سيف يصرم

(20) हे अब्दुल हकीम! तूने हमारे मुकाबले पर जो बातें की हैं तो वह एक रोड़े के समान है जो चलाया जाता है उस तलवार के सामने जो काटती है।

وَاللّٰهُ لَا يُخْزِيْ عَزِيْزَ جَنَابِهِ
وَاللّٰهُ لَا تُعْطَى الْعِلَاءُ وَ تُرْجَمُ

(21) ख़ुदा की क्रसम कि ख़ुदा तआला का प्रिय अपमानित नहीं होगा। और ख़ुदा की क्रसम तू विजयी नहीं होगा और अस्वीकार किया जाएगा।

هَذَا مِنَ الرَّحْمَنِ نَبَأٌ مُحْكَمٌ
فَاسْمِعْ وَ يَأْتِي وَقْتَهُ الْمُتَحْتَمُّ

(22) यह ख़ुदा की ओर से पक्की ख़बर है, दृढ़ है। अतः सुन रख और इसका

निर्धारित समय आ रहा है।

وَاللّٰهُ يُنْقِضُ كُلَّ خِيَطٍ مَّكَائِدَ
لَيْنٍ سَحِيلٍ اَوْ شَدِيدٍ مَّيْرَمٍ

(23) और खुदा की क्रसम प्रत्येक छल का धागा तोड़ दिया जाएगा चाहे वह छल छोटा है या बड़ा छल है।

كُفِّرُوا مَا التَّكْفِيرُ مِنْكَ بَبْدَعَةٍ
رَّسْمٍ تَقَادِمٍ عَهْدِهِ الْمُتَقَدِّمِ

(24) मुझे काफ़िर कह और तेरा काफ़िर कहना कोई नई बात नहीं। एक प्राचीन रस्म सदैव से चली आती है।

قَدْ كُفِّرْتُ مِنْ قَبْلِ صَحْبِ نَبِيِّنَا
قَالُوا لَنَامُ كُفْرَةً وَ هُمْ هُمْ

(25) इससे पूर्व हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा को लोगों ने काफ़िर ठहराया और कहा कि ये कमीने और काफ़िर हैं और इनकी शान जो है वह है।

تَبَّ مِنْ كَلَامٍ قُلْتُ وَ احْفَدُ تَائِبًا
وَالْعَفْوُ خَلَقِي اِيَّهَا الْمُتَوَهَّمِ

(26) हे भ्रमों में लिप्त ! तू ने जो कुछ कहा है उस से तौबा कर और मेरी ओर दौड़, और क्षमा कर देना मेरा स्वभाव है।

اِنْ كُنْتَ تَتَمَنَّى الْوَغَا فَفُحَارِبُ
بَارِزٍ فَانِّي حَاضِرٌ مَتَخِيْمٌ

(27) यदि तू लड़ना चाहता है तो हम लड़ेंगे। बाहर मैदान में आ कि मैं तम्बू लगाए हुए उपस्थित हूँ।

نطقی کسیفِ قاطع یردی العدا
قولی کعالیة القنا او لهزم

(28) मेरा कलाम करना काटने वाली तलवार के समान है जो शत्रुओं का विनाश करती है। मेरी बात भाले की नोक की भांति है या जबड़े की हड्डी की भांति है।

کم من قلوب قد شققتُ غلافها
کم من صدور قد کلمتُ واکلم

(29) बहुत हृदय हैं जिन के आवरण मैंने फाड़ दिए बहुत सीने हैं जो मैंने घायल किए और करता हूँ।

حاربْتُ کلَّ مُکذِّبٍ و بآخرٍ
للحرب دائرةٌ علیک فتعلم

(30) मैंने प्रत्येक झुठलाने वाले से लड़ाई की है अब अन्तिम बारी में लड़ाई के चक्र में तू आ गया। अतः शीघ्र ही जान जाएगा।

لی فیک من ربِّ قدیرِ ایه
ان کنت لا تدری فانا نعلم

(31) तुझ में मेरे ख़ुदा की ओर से एक निशान है। यदि तू नहीं जानता तो हम जानते हैं।

قد قلتَ دجَّالٌ وقلتَ قد افتری
تهذی وفي صف الوغی تتجشم

(32) तूने कहा कि यह व्यक्ति दज्जाल है और ख़ुदा तआला पर झूठ बांधता है। तू बकवास कर रहा है और लड़ाई में कष्ट कर रहा है।

والحکم حکم الله یا عبد الهوی
یُبدیک یومًا ماتسرو تکتّم

(33) और न्याय खुदा का न्याय है हे लोभ के दास! एक दिन वह तुझे बता देगा जो कुछ तू गुप्त तौर पर करता है।

الحق درع عاصم فيصونى
فاحذر فانى فارس مُسْتَلْجِمُ

(34) सत्य एक सच्चाई वाला कवच है जो मुझे बचाएगा। अतः भयभीत हो कि मैं एक पीछा करने वाला सवार हूँ।

158. एक सौ अट्ठावन वां निशान - स्पष्ट हो कि मौलवी साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ साहिब के शहीद होने के पश्चात् जो कुछ काबुल में प्रकट हुआ वह भी मेरे लिए खुदा की ओर से एक निशान है, क्योंकि अत्याचार पीड़ित शहीद स्वर्गीय के क्रत्ल से मेरा घोर अपमान किया गया, इसलिए खुदा के प्रकोप ने काबुल पर आक्रोश की तलवार खींची। उस पीड़ित शहीद के क्रत्ल के पश्चात काबुल में भयंकर हैजा फूटा और वे लोग जो शहीद पीड़ित के क्रत्ल के परामर्श दाताओं में सम्मिलित थे अधिकांश हैजा के शिकार हो गए और स्वयं अमीर काबुल के घरों में कुछ मौतों से मातम मच गया और कई हजार लोग जो इस क्रत्ल से प्रसन्न थे मौत का शिकार हो गए और हैजा के संक्रामक रोग का ऐसा भयंकर तूफ़ान आया कि कहते हैं काबुल में ऐसा हैजा पिछले युगों में बहुत कम देखने में आया है। और इल्हाम **إِنِّي مَهِيْنٌ مِّنْ أَرَادَ إِهَانَتَكَ** यहां भी पूरा हुआ।

بَکَر که خونِ ناحق پروانه شمع را
چندان امان نہ داد کہ شب را سحر کند

अनुवाद:- देखो परवाने के अकारण खून ने दीपक को इतनी मोहलत न दी कि रात को सुबह में बदल ले।

159. एक सौ उनसठ वां निशान - मेरी पुस्तक 'अंजाम-ए-आथम' के पृष्ठ 58 में एक यह भविष्यवाणी थी जो मौलवी अब्दुल हक गज़नवी के मुक़ाबले पर लिखी गई थी जिसकी इबारत यह है कि अब्दुल हक के मुबाहला

के पश्चात् खुदा तआला ने मुझे प्रत्येक प्रकार से उन्नति प्रदान की, हमारी जमाअत को हजारों तक पहुँचा दिया, हमारे ज्ञान के बारे में लाखों लोगों को स्वीकार करा दिया और इल्हाम के अनुसार मुबाहला के पश्चात् हमें एक लड़का प्रदान किया, जिसके पैदा होने से तीन लड़के हो गए और फिर एक चौथे लड़के के लिए मुझे निरन्तर इल्हाम हुआ। और हम अब्दुल हक्र को विश्वास दिलाते हैं कि वह नहीं मरेगा जब तक इस इल्हाम को पूरा होते न सुन ले। अब उसे चाहिए कि यदि वह कुछ वस्तु है तो दुआ से इस भविष्यवाणी को टाल दे। देखो मेरी पुस्तक 'अन्जाम-ए-आथम' पृष्ठ 58 पर यह भविष्यवाणी है जो चौथे लड़के के बारे में की गई थी। फिर इस भविष्यवाणी से ढाई वर्ष पश्चात् चौथा लड़का अब्दुल हक्र के जीवन में ही पैदा हो गया जिसका नाम मुबारक अहमद रखा गया जो खुदा तआला की कृपा से अब तक जीवित मौजूद है। यदि मौलवी अब्दुल हक्र ने उस लड़के का पैदा होना अब तक नहीं सुना तो अब हम सुनाए देते हैं। यह कितना महान निशान है कि दोनों पहलुओं से सच्चा निकला। अब्दुल हक्र भी लड़के के जन्म तक जीवित रहा और लड़का भी पैदा हो गया और फिर यह कि इस बारे में अब्दुल हक्र की कोई बद-दुआ स्वीकार न हुई और वह अपनी बद-दुआ से मेरे इस मौजूद लड़के का पैदा होना रोक न सका अपितु एक लड़के के स्थान पर तीन लड़के पैदा हुए और दूसरी ओर अब्दुल हक्र की यह दशा हुई कि मुबाहला के पश्चात् अब्दुल हक्र के घर में बारह वर्ष गुज़रने के बावजूद आज तक एक बच्चा भी पैदा न हुआ। स्पष्ट है कि मुबाहला के पश्चात् वंश का कट जाना और बारह वर्ष गुज़रने के बावजूद एक बच्चा भी न होना और बिल्कुल निःसन्तान रहना, यह भी खुदा का प्रकोप है और मृत्यु के समान है जैसा कि खुदा तआला का कथन है -

إِنَّ شَأْنَكُمْ هُوَ الْآبَسَرُ स्मरण रहे कि इसी गाली गलौज के कारण अब्दुल हक्र के घर में कोई लड़का पैदा न हुआ वरन् निःसन्तान एवं पुरुष सन्तान और उस बरकत से सर्वथा वंचित रहा तथा भाई मर गया और मुबाहला के पश्चात् लड़का

पैदा होने की बजाए प्रिय भ्राता भी मौत का शिकार हो गया।^①

यहां न्यायकर्ता विचार करें और खुदा तआला से डर कर सोचें कि क्या यह परोक्ष का ज्ञान किसी मनुष्य की शक्ति में है कि स्वयं झूठ बना कर कहे कि मेरे घर में अवश्य लड़का पैदा होगा और अवश्य है कि अमुक व्यक्ति उस समय तक जीवित रहेगा, फिर ऐसा ही प्रकट भी हो। क्या संसार में इसका कोई उदाहरण मौजूद है कि खुदा ने किसी झूठ गढ़ने वाले का ऐसा समर्थन किया कि दोनों पहलुओं से उसे सच्चा करके दिखा दिया अर्थात् चौथा लड़का भी दे दिया और उस समय तक उसके शत्रु को भविष्यवाणी के अनुसार जीवित रहने दिया। स्मरण रहे कि यह मुबाहला की सैकड़ों बरकतों में से एक यह बरकत है जो मुझे दी गई कि खुदा ने मुबाहले के पश्चात् मुझे तीन लड़के दिए अर्थात् शरीफ अहमद, मुबारक अहमद, नसीर अहमद। अब हम यदि अब्दुल हक के निःसन्तान एवं पुरुष सन्तान से वंचित होने के सम्बन्ध में ग़लती करते हैं तो वह बताए कि मुबाहला के उपरान्त उसके घर में कितने लड़के पैदा हुए और वे कहां हैं अन्यथा कोई पहला लड़का ही हमें दिखा दे।^② यदि यह ला'नत का प्रभाव नहीं तो और क्या है तथा मैं बार-बार लिख चुका हूँ कि जैसा कि अब्दुल हक मुबाहला के पश्चात् प्रत्येक बरकत से वंचित रहा, इसी प्रकार उसके मुकाबले पर मुझ पर खुदा की वह कृपा

① मैंने अपनी पुस्तक 'अन्वारुल इस्लाम' में बतौर भविष्यवाणी अब्दुल हक पर यह भी स्पष्ट किया था कि वह सन्तान से वंचित रहेगा। उसे चाहिए कि हर प्रकार से प्रयास करके हमारी इस भविष्यवाणी का खण्डन कर दे और मुबाहले के प्रमाण को टाल दे, परन्तु वह अब तक सन्तान से वंचित है और इस तिथि तक कि 28 सितम्बर 1906 ई. है, तेरह वर्ष गुज़रने के बावजूद मुबाहला के दिन से अब तक सन्तान से वंचित है। इसी से।

② इस भविष्यवाणी के अनुसार जो 'अन्वारुल इस्लाम' में प्रकाशित हो चुकी है अब्दुल हक के घर में आज तक कोई लड़का पैदा नहीं हुआ क्योंकि 'अन्वारुल इस्लाम' में मैंने स्पष्ट तौर पर यह भविष्यवाणी की है कि अब्दुल हक यद्यपि हजार प्रयास करे, दुआ करे पुरुष सन्तान से वंचित रहेगा। अतः ऐसा ही हो गया। इसी से।

हुई कि कोई संसार और धर्म की कोई ने'मत नहीं जो मुझे नहीं मिली। सन्तान में बरकत हुई कि दो की बजाए पांच हो गए, धन में बरकत हुई कि कई लाख रुपया आया, सम्मान में बरकत हुई कि कई लाख लोगों ने मेरी बैअत की, खुदा के समर्थन में बरकत हुई कि सैकड़ों निशान मुझ पर प्रकट हुए।

160. एक सौ साठ वां निशान - इस समय मौलवी अब्दुर्रहमान मुहियुद्दीन लखूके वाले का अपने क़लम से लिखा हुआ एक पत्र मेरे हाथ में है जिसे इसी समय मेरे मित्र प्रकाण्ड विद्वान मौलवी हकीम नूरदीन साहिब ने मुझे दिया है और मैं अपने खुदा तआला का एक निशान समझता हूँ। इसलिए उनका हस्ताक्षर किया मूल पत्र की नक़ल नीचे लिखता हूँ और बाद में स्पष्ट करूँगा कि वह मेरे लिए क्योंकर निशान है और वह पत्र यह है -

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हामिदन व मुसल्लियन के पश्चात्

अब्दुर्रहमान मुहियुद्दीन और समस्त मुसलमानों की ओर से विनती यह है कि इस ख़ाक़सार ने दुआ की कि हे समस्त बातों की ख़बर रखने वाले खुदा ! मुझे सूचना दे कि मिर्ज़ा का क्या हाल है। स्वप्न में यह इल्हाम हुआ

إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَاطِئِينَ - وَإِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ^①

हाशिया

बहुत से लोग अपने स्वप्नों को न समझने के कारण भी तबाह हो जाते हैं। मौलवी अब्दुर्रहमान मुहियुद्दीन साहिब की यह दुआ इस कारण थी कि मिर्ज़ा को जो मौलवी नज़ीर हुसैन देहलवी और उनके शिष्य मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी और उनकी शेष सेनाओं ने काफ़िर ठहरा दिया है। क्या वह यथार्थ में काफ़िर है। खुदा के निकट उस की क्या दशा है तब उसके उत्तर में (यदि हम मुहियुद्दीन के इल्हाम को सच्चा समझ लें) खुदा ने कहा -

إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَاطِئِينَ -

अतः हम इस इल्हाम के ये अर्थ करेंगे कि इस इल्हाम में खुदा तआला ने दो, मौलवियों को जो कुफ़्र का फ़त्वा लगाने के प्रवर्तक थे फिरऔन और हामान ठहराया

मिर्जा की ओर से उत्तर आया कि यह इल्हाम संदिग्ध अर्थ रखता है। इसमें मेरा नाम नहीं और बड़े जोर^① दावा किया मेरे नाम से इल्हाम प्रदान नहीं किया जाएगा। दोनों उपरोक्त इल्हाम माहे सफर में हुए थे जब मिर्जा का उत्तर आ गया, तत्पश्चात् माहे सफर में स्वप्न में यह इल्हाम हुआ 'मिर्जा साहिब फिरऔन' इस पर खुदा की प्रशंसा। अब मिर्जा का दावा भी ग़लत हो गया और मिर्जा साहिब उद्देश्य को पहुँच गए। मुझे जिस समय प्रथम इल्हाम हुआ था जागते ही हृदय में यह ताबीर आई कि फिरऔन मिर्जा साहिब हैं और हामान नूरदीन। मुझे मुसलमानों की भलाई के लिए सूचना देनी आवश्यक थी।

हुन तू भी हक़ कहन दे उते लक बिन्हीं भिरावा
अहले निफ़ाक़ बलाएं बुरयां लोकां दीं भुलावा
दास

अब्दुर्हमान मुहियुद्दीन लखूँके अपनी कलम से दिनांक 21 रबीउल अव्वल 1312 हिज्री

शेष हाशिया

और कहा कि वे दोनों और उनके अनुयायी काफ़िर कहने में ग़लती पर थे और रूपक के रूप में सर्व प्रथम कुफ़्र का फ़त्वा देने वाले को फिरऔन ठहराया और जिसने फ़त्वा लिखा था उसे हामान ठहरा दिया और शेष हजारों मौलवी इत्यादि जो पंजाब और हिन्दुस्तान में उनके इस कुफ़्र के फ़त्वे में अनुयायी हुए उन्हें उनकी सेना ठहराया। यदि मौलवी मुहियुद्दीन दुर्भाग्यशाली न होता तो यह अर्थ बहुत स्पष्ट थे क्योंकि फिरऔन और हामान का मार्ग उन्हीं लोगों ने अपनाया था जो बिना किसी जांच-पड़ताल के मुझे मिटाने पर कटिबद्ध हो गए और मेरे विरुद्ध एक तूफ़ान मचा दिया था। इस पर एक अन्य तर्क यह है कि बराहीन अहमदिया में आज से छब्बीस वर्ष पूर्व इन दोनों सज्जनों को बतौर भविष्यवाणी फिरऔन और हामान कहा गया है। अतः बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 510 और 511 में यह इबारत है -

① जोर के शब्द के आगे शब्द 'से' चाहिए था जो कि लिखने वाले के लेख में नहीं इसलिए नहीं लिखा गया। इसी से

यह पत्र है मौलवी अब्दुरहमान मुहियुद्दीन का और नक़ल के पश्चात् आदरणीय मौलवी हकीम नूरदीन साहिब को वापस किया गया। आदरणीय मौलवी साहिब उसे सुरक्षित रखेंगे, जिस का मन चाहे देख ले। इस इल्हाम में उन्होंने अपने विचार में मुझे फिरौन ठहरा दिया है जैसा कि स्वयं उन्होंने इस पत्र में इस की व्याख्या की है परन्तु आश्चर्य कितने बड़े सम्मान से खुदा ने मुझे पुकारा है कि मिर्जा ने नहीं कहा अपितु मिर्जा साहिब कहा है। चाहिए कि ये लोग खुदा तआला से सभ्यता सीखें। फिर दूसरा आश्चर्य यह कि इसके बावजूद कि मेरी ओर से यह अनुरोध था कि इल्हाम में मेरा नाम प्रकट किया जाए किन्तु फिर भी खुदा को मेरा नाम लेने से लज्जा आ गई और लज्जा के प्रभुत्व ने मेरा नाम जीभ पर लाने से उसे रोक दिया। क्या मेरा नाम मिर्जा साहिब है? क्या संसार में और कोई मिर्जा साहिब के नाम से पुकारा नहीं जाता। फिर तीसरा

शेष हाशिया

واذیکم ربک الذی کفر^①

او قَدْ بَيَّنَّا لِيَا هَامَانَ لَعَلَّيْ اُطْلِعَ عَلَى الْاَلِه مُوسَى وَاِنِّي لَا ظَنُّهُ مِنَ الْكَافِرِينَ۔ تَبَّتْ
يَدَايْ لِهَب وَتَب۔ مَا كَانَ لَهُ اَنْ يَدْخُلَ فِيهَا اِلَّا خَائِفًا۔ وَمَا صَابَتْكَ فَمِنْ اَللّٰهِ
الْفِتْنَةُ هُؤَنًا فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُو الْعِزْمِ۔ اِلَّا اِنَّهَا فِتْنَةٌ مِنَ اَللّٰهِ۔ لِيَحَبَّ حَبًّا
جَمًّا۔ حَبًّا مِنْ اَللّٰهِ الْعَزِيزِ الْاَكْرَمِ عَطَاءً غَيْرِ مُجْذُوزٍ۔

देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 510, 511

① हाशिए का हाशिया:- स्मरण रहे कि इस खुदा की वही में दोनों क़िरातें हैं 'कफ़रा' भी और 'कफ़़रा' भी। और यदि कफ़रा की क़िरात की दृष्टि से अर्थ किए जाएं तो ये अर्थ होंगे कि पहले फ़त्वा पूछने वाला व्यक्ति मुझ पर आस्था रखता होगा और आस्था रखने वालों में सम्मिलित होगा और फिर बाद में विमुख एवं इन्कारी हो जाएगा। यह अर्थ मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी पर बहुत चरितार्थ हैं जिन्होंने बराहीन अहमदिया के रीव्यू में मेरे बारे में ऐसी आस्था प्रकट की कि अपने मां-बाप भी मुझ पर न्योछावर कर दिए। इसी से।

आश्चर्य यह कि मैं तो इल्हाम की दृष्टि से फ़िरऔन ठहरा और मुहियुद्दीन साहिब मूसा के स्थान पर हुए। अतः चाहिए था कि मूसा के जीवन में मैं मर जाता न कि मूसा ही मर जाता। मुहियुद्दीन साहिब की बद-दुआओं का क्रम जारी था और मेरी तबाही के लिए वह कई इल्हाम भी देख चुके थे, फिर यह क्या हुआ कि वे सब इल्हाम उन्हीं पर पड़ गए और मेरी बजाए वह मर गए। क्या यह आश्चर्यजनक बात नहीं कि जिसे उन्होंने फ़िरऔन ठहराया था वह तो अब तक जीवित है जो बोल रहा है। बल्कि उन्नति पर उन्नति कर रहा है परन्तु वह जो मूसा के समान अपने को समझता था वह कई वर्ष हो गए कि इस दुनिया से गुज़र गया और अब उसका धरती पर

शेष हाशिया

अनुवाद - स्मरण करो वह युग जबकि एक फ़िरऔन तुझे काफ़िर ठहराएगा और अपने मित्र हामान को कहेगा कि तू कुफ़्र की अग्नि भड़का दे अर्थात् ऐसा भयानक फ़त्वा लिख कि लोग उस फ़त्वे को देख कर उस व्यक्ति के प्राणों के शत्रु हो जाएं और काफ़िर समझने लगे ताकि मैं देखूँ कि उस मूसा का ख़ुदा उसकी कुछ सहायता करता है या नहीं और मैं तो उसे झूठा समझता हूँ। अब लहब के दोनों हाथ तबाह हो गए जिन से उसने फ़त्वा लिखा था और वह स्वयं भी तबाह हो गया। उसे नहीं चाहिए था कि इस मामले में हस्तक्षेप करता परन्तु डरते-डरते और तुझे जो कष्ट पहुँचेगा वह तो ख़ुदा की ओर से है। इस फ़त्वे से तुझ पर एक उपद्रव खड़ा हो जाएगा। अतः धैर्य से काम ले जैसा कि दृढ़ संकल्प नबियों ने धैर्य से काम लिया। स्मरण रख कि यह कुफ़्र का उपद्रव ख़ुदा की ओर से प्रकट होगा ताकि वह तुझ से बहुत प्रेम करे। यह उस कृपालु का प्रेम है जो प्रभुत्वशाली और महान है और यह वह अनुदान है जो कभी वापस नहीं लिया जाएगा। अब यहां आंख खोलकर देख लो कि ख़ुदा ने मुझे यहां मूसा ठहराया और फ़त्वा पूछने वाले और फ़त्वा देने वाले को फ़िरऔन और हामान ठहराया और मौलवी मुहियुद्दीन ने तो यह इल्हाम 1312 हिज्री में प्रकट किया जैसा कि उनके पत्र की तिथि से प्रकट होता है। अतः प्रसिद्ध कहावत के अनुसार कि **الفضل للمتقدم** अधिक विश्वसनीय यही इल्हाम है। फिर इसके समर्थन में मेरी पुस्तक 'इज़ालतुल

कोई चिन्ह नहीं वह कैसा मूसा था कि फिरऔन के सामने ही इस दुनिया को छोड़ गया फिर दूसरी भविष्यवाणी मोहियुद्दीन साहिब की यह भी थी कि إِنَّ شَانِكَ هُوَ الْأَبْتَرُ अर्थात् तेरा बुरा चाहने वाला नष्ट किया जाएगा और बिना सन्तान के रहेगा और बिना संतान के मरेगा। इस भविष्यवाणी में उन के विचार में मेरी मृत्यु और तबाही और बिना संतान के मरने की ओर संकेत है। ☆ अल्हमदुलिल्लाह कि अभी तक जीवित हूँ। मियां मोहियुद्दीन साहिब दस

☆ मुबाहिले का केवल यही प्रभाव नहीं कि मौलवी मोहियुद्दीन साहिब अपनी इस दुआ के पश्चात् कि إِنَّ شَانِكَ هُوَ الْأَبْتَرُ स्वयं मृत्यु प्राप्त कर गए और एक पुत्र अठारह वर्ष मर

शेष हाशिया

औहाम' के पृष्ठ 855 में एक और खुदा की वह्यी है और वह यह है -

نريدان ننزل عليك اسراراً من السماء ونمزق الاعداء كل ممزق ونرى
فرعون وهامان وجنودهما ما كانوا يحذرون

अर्थात् हम इरादा करते हैं कि तुझ पर आकाशीय निशान उतारेंगे और उनसे शत्रुओं को हम पीस डालेंगे तथा फिरऔन और हामान और उनकी सेनाओं को हम अपनी कुदरत के वे चमत्कार दिखाएंगे जिनके प्रकट होने से वे डरते थे। अब देखो यहां भी खुदा तआला ने प्रथम कुफ़्र का फ़त्वा लगाने वाले का नाम फिरऔन और हामान रखा और यह पुस्तक 1891 ई. में छपी है। अतः यह इल्हाम भी मुहियुद्दीन के इल्हाम से चार वर्ष पूर्व का है क्योंकि उनके पत्र में जिस में यह इल्हाम है 1312 हिज्री लिखा है और 1891 ई. में है। अतः जो पहले है उसकी रियायत पहले है और मौलवी मुहियुद्दीन के पत्र में स्पष्ट तौर पर मौजूद है कि उन्होंने मुझे फिरऔन ठहराया है और बिरादरम हकीम नूरदीन साहिब को हामान ठहराया है। आप मूसा की विशेषताओं वाले बने हैं किन्तु यह आश्चर्य की बात है कि फिरऔन और हामान तो अब तक जीवित हैं और मूसा इस संसार से गुज़र गया। चाहिए था कि इल्हामी उपमा को पूरा करने के लिए हमें तबाह करके मरते, किन्तु यह क्या हुआ कि स्वयं ही मृत्यु का शिकार हो गए। क्या कोई इसका उत्तर दे सकता है। इसी से।

वर्ष हुए हैं कि मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं और उन की इस भविष्यवाणी के पश्चात् मेरे तीन पुत्र और हो गए हैं और यदि इस भविष्यवाणी के उपरान्त मोहियुद्दीन साहिब के घर में भी कोई पुत्र हुआ है जो जीवित है तो मैं वादा करता हूं कि उन की पत्नि को मैं 100 रुपए नक़द दूंगा अन्यथा यह प्रकट है कि यह भविष्यवाणी उन पर ही पूरी हुई है। मैंने तो विश्वसनीय सूत्रों से यह सुना है कि इस भविष्यवाणी के उपरान्त कोई पुत्र नहीं हुआ बल्कि एक युवा पुत्र मृत्यु प्राप्त कर गया और केवल एक जीवित रहा। अर्थात् यह कि उन की यह भविष्यवाणी जो चुनौती के रंग में थी उन पर ही पड़ी और जो अर्थ उस के घटनाओं ने प्रकट किए वह यही हैं कि जो पहले नष्ट होने वाला है वह ही फिराऊन है और जो मूसा का कार्यकारी है उस के लिए दूसरी भविष्यवाणी कि **إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ** जिस का यह अर्थ है कि दुश्मन उन की ज़िन्दगी में ही बिना संतान के मरेगा और प्रत्येक आशीर्वाद और वृद्धि से वंचित रहेगा और उस की पूर्ण रूप से जड़ काट दी जाएगी। यदि यह दोनों भविष्यवाणियां मौलवी अब्दुल रहमान मोहियुद्दीन साहिब प्रकाशित न करते और जैसे कि उन के पत्र के आरम्भ में ही उन का मेरे संबंध में भाव न होता कि पूरे इस्लामिक संसार की नज़र में अस्वीकृत न किया जाऊँ और मुझे सभी लोग फिराऊन समझ लें और मेरी मृत्यु के पश्चात् मुझे धोखेबाज़ और झूठा कह कर मुझ पर श्राप भेजते रहें तो ख़ुदा तआला उन को शीघ्र नष्ट न करता लेकिन उन्होंने तो भविष्यवाणी सुना कर पूरी दुनिया को अपनी भविष्यवाणी के द्वारा से यह प्रेरणा दी कि वह

शेष हाशिया:- गया बल्कि मैंने कुछ औरतों को उन के घर भेज कर पता करवाया है कि उनकी पत्नि स्वयं अपनी जुबान से कहती है कि इस बुरी दुआ के पश्चात् उन के घर का तख़्ता उलट गया। मौलवी मुहियुद्दीन शीघ्र ही मक्का मदीना के रास्ते में मृत्यु को प्राप्त कर गए और इतनी आपदा और कठिनाई साथ लग गई कि अब केवल भीख माँगने पर गुज़ारा है। कुछ गाँव से भीख माँग कर आटा लाते हैं तब उस से पेट भरते हैं और जिस दिन आटा न आए उस दिन खाली। उन की पत्नि कहती थी कि अब हम पर रात पड़ गई है।

मुझे काफ़िर और धोखेबाज़ और लानत के योग्य समझ लें और मैं उनके जीवन में अपने पुत्रों के साथ मर जाऊँ और मेरा सारा कारोबार बिगड़ जाए और वह साधु और करामाती सिद्ध हो जाए और स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला एक सच्चे के लिए ऐसा निरादर निरन्तर नहीं रखता और नहीं चाहता कि एक सच्चा सिलसिला नष्ट हो जाए क्योंकि इस स्थिति में वह स्वयं अपना दुश्मन होगा इसलिए ख़ुदा तआला को यही फ़ैसला पसंद आया कि स्वयं उन्हीं को नष्ट और विनाश कर दिया और इस दुआ के बाद कोई पुत्र उन के घर पैदा नहीं हुआ बल्कि पहला एक पुत्र भी मृत्यु प्राप्त कर गया। और हजारों लोगों को यह सूचना है कि मैंने ख़ुदा तआला की ओर से यह इल्हाम प्रकाशित किया हुआ है कि **إِنِّي مُهَيِّنٌ مِنْ** **أَرَادَ أَهْلَانِكَ** इसलिए इस में क्या संदेह है, यह अब्दुल रहमान मोहियुद्दीन ने मुझे अपमानित करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी मुझे फ़िरऔन बनाया मेरे तिरस्कार के लिए भविष्यवाणी की मेरी संतान के मरने की ख़बर दी कि सब मर जाएगी। इस कारण यदि मैं पहले उस से मर जाता तो इसमें क्या संदेह था कि इस के सभी मित्र मेरी मृत्यु को उस का चमत्कार बनाते और यदि मेरी संतान मर भी जाती तो दो चमत्कार उन के प्रसिद्ध हो जाते परन्तु ख़ुदा तआला ने उन के इस इल्हाम के पश्चात् तीन पुत्र मुझे और दिए और अपने वादा के अनुसार **إِنِّي مُهَيِّنٌ مِنْ** **أَرَادَ أَهْلَانِكَ** कि मोहियुद्दीन को मेरे जीवन में ही मृत्यु देकर उसकी रुसवाई कर दी और न केवल इतना ही बल्कि उस के इल्हाम **إِنَّ** **شَانِكَ هُوَ الْآبَتَر** के पश्चात् मुझे तीन पुत्र दिए बल्कि यह भी किया कि उस की पत्नि को बिना संतान के रखा और इस प्रकार मेरे आदर का प्रमाण दुनिया पर प्रकट किया। ख़ुदा तआला से अधिक अपने निष्ठावान सहायकों के लिए कौन ग़ैरत रख सकता है उस ने मेरे लिए ग़ैरत दिखाई। खेद है कि अब्दुल रहमान मोहियुद्दीन ने मौलवी और ज्ञानी कहलाने के बावजूद भी ख़ुदा का भय न किया और चेतावनी

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ (37: इस्राईल बनी)

से कुछ न डरा। क्योंकि अब्दुल रहमान मोहियुद्दीन ज्ञानी परिवार से था और हजारों लोगों पर उस का प्रभाव था और इस के अतिरिक्त वह पीरजादगी और इल्हाम का भी दावा करता था और उस क्षेत्र में एक बड़ा प्रसिद्ध और प्रभावशाली व्यक्ति था। इसलिए खुदा तआला ने न चाहा कि उस के शब्द से लोग नष्ट हों। इस कारण यही भेद है कि इस के इल्हाम के पश्चात् जिस के अनुसार वह मेरे विनाश और तबाही का इच्छुक था खुदा ने उसी को नष्ट कर दिया और मुझ पर हजारों आशीर्वाद प्रकट किए और इल्हाम **إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ** के पश्चात् उसी पर नस्ल का द्वार बंद कर दिया और मुझे उस इल्हाम के पश्चाते तीन पुत्र और दिए। कहा गया उसका इल्हाम **إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ** कौन इस में संदेह कर सकता है कि यदि यह इल्हाम उस का पूरा हो जाता और वह जीवित रहता और मैं मर जाता और उसकी सन्तान होती और मैं निःसंतान रह हो जाता तो वह लाखों लोगों में चमत्कारी प्रसिद्ध हो जाता। पहले ही उनका पीरों वाला परिवार था ही, और इस चमत्कार से लखूखे वाला के नाम से प्रसिद्ध हो जाता और लाखों लोग लखूखे वाले की ओर जाते। इस प्रकार खुदा ने पंजाबी की कहावत के अनुरूप 'लख तों कख' कर दिया और हज करना भी उसको लाभदायक न हुआ। और मक्का व मदीना के रास्ते में ही मृत्यु को प्राप्त कर गया क्योंकि खाना काबा ज़ालिम को बचा नहीं सकता।

खुदा तआला की मुझे से यह आदत रही है कि जो व्यक्ति मुझे ज़लील करने के इरादा को चरम तक पहुंचा देता है अन्ततः वह उसको पकड़ता है या उसके मुक़ाबले पर किसी अन्य रूप में मेरे लिए निशान प्रकट कर देता है और दोनों बातों में से एक बात अवश्य कर देता है या दोनों पहलुओं से अपनी कुदरत का निशान दिखाता है। अतः चूंकि अब्दुर्रहमान मुहियुद्दीन ने मुझे अपमानित करने के लिए पंजाब के समस्त मुसलमानों की ओर एक सामान्य सरकुलर जारी किया और कहा यह झूठ बनाने वाला है, महा झूठा है, कपटाचारी है, काफ़िर है, फ़िराँन है और न केवल इतना ही अपितु साथ ही यह इल्हाम भी जड़ दिया कि खुदा उसे

तबाह करेगा, वध करेगा, उसकी सन्तान भी मर जाएगी और उनमें से कोई नहीं रहेगा। इसलिए वह अपनी डींग से इस योग्य हो गया कि खुदा का इल्हाम

إِنِّي مُهَيِّنٌ مِّنْ أَرَادَاهَا نَتَكْ

उस का अपमान प्रकट करे अतः इस से अधिक क्या अपमान होगा कि वह मेरे जीवन में ही मृत्यु का शिकार हो गया। यदि मैं उसके इल्हाम के अनुसार फिरौन था तो चाहिए था कि मैं उसके सामने मृत्यु पाता न कि वह। इसके अतिरिक्त उसके इल्हाम में यह था कि मैं निःसन्तान रहूंगा। खुदा ने उसकी मृत्योपरान्त तीन लड़के मुझे और दिए। अतः इसमें भी उसका अपमान है कि उसके इल्हाम के विपरीत प्रकटन में आया।

और मैंने यह जो लिखा है कि जब कोई मुझे अपमानित करने का इरादा करता है तो कभी किसी अन्य रूप में भी खुदा मेरा निशान प्रकट करता है। इसका उदाहरण यह है कि जब आथम निर्धारित समय सीमा के पश्चात् मरा तो मूर्ख लोगों ने शोर मचाया कि वह समय सीमा के अन्दर नहीं मरा हलांकि उसने इल्हाम की शर्त पूरी कर दी थी, क्योंकि उसने साठ या सत्तर लोगों के सामने दज्जाल कहने से पीछे हटा और शर्त को पूरा कर दिया था, किन्तु फिर भी जिनकी प्रकृति पवित्र नहीं थी आरोप से नहीं रुके। तब खुदा तआला ने मेरी सहायता और समर्थन के लिए लेखराम के मारे जाने का निशान दिखाया।

इसी प्रकार जब मेरा पहला लड़का मृत्यु को प्राप्त हुआ तो मूर्ख मौलवियों, उनके मित्रों, ईसाइयों तथा हिन्दुओं ने उसके मरने पर बहुत प्रसन्नता प्रकट की। उनको बार-बार कहा गया कि 20 फरवरी 1886 ई. में यह भी एक भविष्यवाणी है कि कुछ लड़कों की मृत्यु भी होगी। अतः अवश्य था कि कोई लड़का अल्पायु में स्वर्गवासी हो जाता तब भी वे लोग आरोप से नहीं रुके। तब खुदा तआला ने एक अन्य लड़के की मुझे शुभ सूचना दी। अतः मेरे सब्ज (हरे) विज्ञापन के सातवें पृष्ठ में उस दूसरे लड़के के पैदा होने के बारे में यह शुभ संदेश है: दूसरा बशीर दिया जाएगा जिसका दूसरा नाम महमूद है। वह यद्यपि अब तक जो 1, सितम्बर

1888 ई. है, पैदा नहीं हुआ परन्तु खुदा के वादे के अनुसार अपनी समय सीमा के अन्दर अवश्य पैदा होगा। पृथ्वी-आकाश टल सकते हैं परन्तु उसके वादों का टलना संभव नहीं। यह है सब्ज विज्ञापन के पृष्ठ 7 की इबारत, जिसके अनुसार जनवरी 1889 ई. में लड़का पैदा हुआ जिसका नाम महमूद रखा गया और खुदा की कृपा से अब तक जीवित मौजूद है और सत्रहवें वर्ष में है।

161. एक सौ इकसठ वां निशान - जब लेखराम का वध हुआ तो आर्यों को मेरे बारे में सन्देह पैदा हो गया कि इनके किसी मुरीद ने वध किया है। अतः मेरे घर की तलाशी भी ली गई और कुछ मौलवियों ने अपनी शत्रुता के कारण अपनी पत्रिकाओं में यह प्रकाशित किया कि भविष्यवाणी करने वाले से लेखराम के वध के बारे में पूछना चाहिए। उस समय खुदा अताला की ओर से मुझे यह इल्हाम हुआ -

سلامت بر تو اے مرد سلامت

और वह विज्ञापन जिसमें यह इल्हाम था प्रकाशित कर दिया गया। तब विरोधियों के नितान्त प्रयास के बावजूद खुदा तआला ने शत्रुओं के आरोपों से मुझे बचा लिया तथा उनके छल-प्रपंच और षड्यंत्रों से मुझे सुरक्षित रखा। इस पर खुदा की प्रशंसा और आभार। मेरी जमाअत के बहुत से लोग इस के साक्षी हैं।

162. एक सौ बासठ वां निशान - जब मुझ पर मार्टिन क्लार्क की ओर से खून का मुकद्दमा किया गया, उस मुकद्दमे के बारे में एक तो यह निशान था कि खुदा ने उस गुप्त विपत्ति से मुझे सूचित किया कि ऐसा मुकद्दमा होने वाला है और फिर यह भी सूचना दे दी कि अन्ततः बरी होना है। जब इस भविष्यवाणी के अनुसार वह विपत्ति प्रकट हो गई और डाक्टर मार्टिन क्लार्क ने मुझ पर खून का मुकद्दमा दायर कर दिया और गवाहों ने प्रमाण दे दिया और मुकद्दमा का रूप खतरनाक हो गया तो मुझे इल्हाम हुआ - **विरोधियों में फूट और हांफ़ने वाले व्यक्ति का अपमान और निराशा** अतः खुदा तआला की कृपा से ऐसा संयोग हुआ कि विरोधियों में फूट पड़ गई और अब्दुल हमीद जो खून करने की

खबर देने वाला था और मेरे बारे में यह आरोप लगाता था कि मुझे खून करने के लिए भेजा है। उसने दूसरे विरोधियों से अलग होकर परिस्थितियों का सच-सच वर्णन कर दिया, जिस से मैं बरी किया गया और वादी के एक सम्मानित साक्षी को कचहरी में अपमान और अनादर भी देखना पड़ा और इस प्रकार यह भविष्यवाणी पूरी हो गई। धन्यवाद का स्थान है कि इस भविष्यवाणी और बरी होने की भविष्यवाणी के तीन सौ से अधिक गवाह हैं।

163. एक सौ तिरेसठ वां निशान - एक मौलवी ने पुस्तक निबरास लेखक साहिब जमरुद का हाशिया लिखते हुए मेरे पक्ष में इन शब्दों में बद-दुआ की मिर्जा गुलाम अहमद और उसकी जमाअत

کسرهم الله تعالی

अर्थात् खुदा उस व्यक्ति मिर्जा गुलाम अहमद और उसकी जमाअत को तोड़ दे। अतः अभी हाशिया समाप्त नहीं कर पाया था कि वह मौलवी नूर अहमद अपने सहायक भाई नूर मुहम्मद के साथ जो दोनों मौलवी खुदायार के पुत्र थे मर गया मुझे खुदा ने तीन बेटे और दिए।

164. एक सौ चौंसठ वां निशान - एक व्यक्ति शियों में से जो स्वयं को शैख नजफ़ी के नाम प्रसिद्ध करता था, एक बार लाहौर में आकर मेरे मुकाबले पर आकर शोर मचाने लगा और निशान का अभिलाषी हुआ। मैंने 1, फरवरी 1897 ई. के विज्ञापन द्वारा उसे यह वादा दिया कि चालीस दिन तक खुदा तआला मेरा कोई निशान दिखाएगा अतः अभी चालीस दिन पूरे नहीं हुए थे कि 6 मार्च 1897 ई. को लेखराम के वध का निशान प्रकट हो गया। तब तो शैख नजफ़ी ऐसा लुप्त हुआ कि उसका निशान तक न मिला कि कहाँ गया। देखो मेरा विज्ञापन 1, फरवरी 1897 ई.।

165. एक सौ पैंसठ वां निशान - 11, अप्रैल 1900 ई. को ईदुल अज़हा के दिन प्रातः मुझे इल्हाम हुआ कि आज तुम अरबी में भाषण दो, तुम्हें शक्ति दी गई। तथा यह इल्हाम हुआ -

کلام افصح من لَـدُن رَّبِّ کریم

अर्थात् इस कलाम में खुदा की ओर से सरसता प्रदान की गई। अतः इस इल्हाम को उसी समय बिरादरम मौलवी अब्दुल करीम साहिब (स्वर्गीय) और बिरादरम हकीम मौलवी नूरदीन साहिब और शैख रहमतुल्लाह साहिब, मुफ्ती मुहम्मद सादिक साहिब, मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए., मास्टर अब्दुर्रहमान साहिब, मास्टर शेर अली साहिब बी.ए. और हाफ़िज़ अब्दुल अली साहिब तथा अन्य बहुत से मित्रों को सूचना दी गई। तब मैं ईद की नमाज़ के पश्चात् ईद का खुत्बा अरबी भाषा में पढ़ने के लिए खड़ा हो गया और खुदा तआला जानता है कि परोक्ष से मुझे एक शक्ति दी गई और वह सरस एवं सुबोध भाषण अरबी में बिना किसी प्रयास के स्वयं मेरे मुख से निकल रहा था कि मेरी शक्ति से सर्वथा बाहर था और मैं सोच नहीं सकता कि ऐसा भाषण जिसका विस्तार कई भागों तक था ऐसी सरसता एवं सुबोधता के साथ बिना इसके कि प्रथम किसी कागज़ पर लिखा जाए कोई व्यक्ति संसार में बिना किसी खुदाई इल्हाम के वर्णन कर सके। जिस समय यह अरबी भाषण जिसका नाम खुत्बा इल्हामिया रखा गया लोगों में सुनाया गया उस समय दर्शकों की संख्या कदाचित दो सौ के लगभग होगी। सुब्हान अल्लाह उस समय एक गैबी झरना फूट रहा था, मुझे मालूम नहीं कि मैं बोल रहा था या मेरी ज़बान से कोई फ़रिश्ता कलाम कर रहा था, क्योंकि मैं जानता था कि उस कलाम में मेरा अधिकार न था। स्वतः ही बने बनाए वाक्य मेरे मुख से निकलते जाते थे और प्रत्येक वाक्य मेरे लिए एक निशान था। अतः समस्त वाक्य छपे हुए मौजूद हैं जिनका नाम 'खुत्बा इल्हामिया' है। इस पुस्तक को पढ़ने से विदित होगा कि क्या मनुष्य की सामर्थ्य में है कि इतना लम्बा भाषण बिना सोच-विचार किए खड़े होकर अरबी भाषा में केवल मौखिक तौर पर स्वयं वर्णन कर सके। यह एक ज्ञानात्मक चमत्कार है जो खुदा ने दिखाया और कोई इसका उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकता।

166. एक सौ छियासठ वां निशान - मुझे लम्बे समय से दो रोग थे। एक तीव्र सिर दर्द, जिससे मैं नितान्त व्याकुल हो जाता था और भयावह परिस्थितियां

पैदा हो जाती थीं और यह रोग लगभग पच्चीस वर्ष तक लगा रहा, इसके साथ ही सिर को चक्कर आना भी आरंभ हो गया तथा वैद्यों ने लिखा कि इन रोगों का अन्तिम परिणाम मिर्गी होता है। अतः मेरे बड़े भाई मिर्जा गुलाम क्रादिर लगभग दो माह तक इसी रोग से रोग ग्रस्त होकर अन्तिम रोग मिर्गी में ग्रस्त हो गए और इसी से उनका देहावसान हो गया। अतः मैं दुआ करता रहा कि खुदा तआला इन रोगों से मुझे सुरक्षित रखे। एक बार कशफ की अवस्था में मुझे दिखाई दिया एक विपत्ति काले रंग के चौपाए के रूप में जिस का आकार भेड़ के आकार के सदृश था, बड़े-बड़े बाल थे, बड़े-बड़े पंजे थे मुझ पर आक्रमण करने लगी और मेरे हृदय में डाला गया कि यह मिर्गी है। तब मैंने अपना दायां हाथ जोर से उसके सीने पर मारा और कहा कि दूर हो, तेरा मुझ में कोई भाग नहीं। तब खुदा तआला जानता है कि इसके पश्चात् वह खतरनाक रोग जाते रहे और वह तीव्र सिर दर्द बिल्कुल जाता रहा, केवल सिर का चक्कर आना कभी-कभी होता है ताकि दो ज़र्द चादरों की भविष्यवाणी में विघ्न न आए। दूसरा रोग मधुमेह लगभग बीस वर्ष से है जो मुझे लगा हुआ है जैसा कि इस निशान की पहले भी चर्चा हो चुकी है और अभी तक बीस बार के लगभग प्रतिदिन पेशाब आता है और जांच में पेशाब में शक्कर पाई गई। एक दिन मुझे विचार आया कि डाक्टरों के अनुभव की दृष्टि से मधुमेह का अन्तिम परिणाम या तो पानी उतरना होता है और या कारबंकल अर्थात् केन्सर का फोड़ा निकलता है जो घातक होता है। अतः उसी समय पानी उतरने के बारे में मुझे इल्हाम हुआ

نزلت الرحمة على ثلاث العين وعلى الآخرين

अर्थात् तीन भागों पर दया उतारी गई। आंख तथा दो अन्य अंगों पर। फिर जब कारबंकल का विचार मेरे मन में आया तो इल्हाम हुआ अस्सलामो अलैकुम। अतः एक आयु गुज़र गई मैं इन विपत्तियों से सुरक्षित हूँ। इस पर समस्त प्रशंसा खुदा के लिए।

167. एक सौ सड़सठ वां निशान - लगभग तेरह वर्ष हुए कि जब मुझे

सा 'दुल्लाह नव मुस्लिम लुधियानवी के बारे में इल्हाम हुआ था

اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ

देखो 'अन्वारुल इस्लाम' दो हजार के इनामी विज्ञापन के पृष्ठ 12 में। उस समय सा 'दुल्लाह का एक बेटा पन्द्रह या सोलह वर्ष का मौजूद था। इस वह्यी के पश्चात् तेरह वर्ष गुजरने के बावजूद उसके घर में एक बच्चा भी पैदा नहीं हुआ और उसका पहला लड़का उस इल्हाम के अनुसार इस योग्य नहीं कि उस से वंश चल सके। अतः निःसन्तान की भविष्यवाणी का प्रमाण स्पष्ट है और नस्ल कटने के लक्षण मौजूद।^①

168. एक सौ अड़सठ वां निशान - मुझ पर खुदा तआला ने प्रकट किया था कि अत्यंत वर्षाएं होंगी और घरों में नदियां चलेंगी। तत्पश्चात् भयंकर भूकम्प आएंगे। अतः इन वर्षाओं से पूर्व वह खुदा की वह्यी अखबार 'अलहकम' और बद्र में प्रकाशित कर दी गई थी। और प्रकट भी वैसा ही हुआ और वर्षा की अधिकता के कारण कई गांव उजड़ गए और वह भविष्यवाणी पूरी हो गई किन्तु उस भविष्यवाणी का दूसरा भाग अर्थात् भयंकर भूकम्पों की अभी प्रतीक्षा है। अतः प्रतीक्षा करनी चाहिए।

① यदि सा 'दुल्लाह का प्रथम पुत्र नामर्द नहीं है जो इल्हाम اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ से पहले पैदा हो चुका था जिसकी आयु लगभग तीस वर्ष है तो क्या कारण है कि इतनी आयु गुजरने और शक्ति रखने के बावजूद अब तक उसका विवाह नहीं हुआ और न उसके विवाह की कोई चिन्ता है। इस से स्पष्ट होता है कि दाल में कुछ काला है। सा 'दुल्लाह का कर्तव्य है कि इस भविष्यवाणी को असत्य सिद्ध करने के लिए या तो अपने घर में सन्तान पैदा करके दिखा दे और या पहले लड़के का विवाह करके तथा सन्तान प्राप्त करा के उसका मर्द होना सिद्ध करे। स्मरण रहे कि इन दोनों बातों में से उसे कोई बात कदापि प्राप्त न होगी क्योंकि खुदा के कलाम ने उसका नाम अब्तर (निःपुत्र) रखा है तथा संभव नहीं कि खुदा का कलाम असत्य हो। निश्चय ही वह बिना पुरुष सन्तान के मरेगा जैसा कि लक्षणों ने भी प्रकट कर दिया है। इसी से।

169. एक सौ उनहत्तर वां निशान - जब हम बसन्त ऋतु में 1905 ई. में बाग़ में थे तो मुझे अपनी जमाअत के लोगों में से जो बाग़ में थे किसी एक के बारे में यह इल्हाम हुआ था कि खुदा का इरादा ही न था कि उसको अच्छा करे किन्तु अपने इरादे को कृपा से परिवर्तित कर दिया। इस इल्हाम के पश्चात् ऐसा संयोग हुआ कि सय्यद महदी हुसैन साहिब जो हमारे बाग़ में थे और हमारी जमाअत में सम्मिलित हैं उनकी पत्नी बहुत बीमार हो गई। वह पहले भी ज्वर और सूजन से जो मुख और दोनों पैरों और समस्त शरीर पर थी, रोगी थी और बहुत कमजोर थी, गर्भवती थी। फिर बच्चे के जन्म जो बाग़ में हुआ के पश्चात् उसकी दशा बहुत गंभीर हो गई और निराशा के लक्षण प्रकट हो गए और मैं उसके लिए दुआ करता रहा। अन्ततः खुदा तआला की कृपा से उसे दोबारा जीवन प्राप्त हुआ। इस बात के साक्षी बिरादरम हकीम मौलवी नूरदीन साहिब, मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए. मुफ्ती मुहम्मद सादिक साहिब और स्वयं महदी हुसैन साहिब और समस्त वे मित्र हैं जो मेरे साथ बाग़ में थे। दुआ के पश्चात् दूसरे दिन सय्यद महदी हुसैन की पत्नी की ज़बान पर खुदा की ओर से यह इल्हाम जारी हुआ तू अच्छी तो न होती किन्तु हज़रत साहिब की दुआ का कारण है कि अब तू अच्छी हो जाएगी।

170. एक सौ सत्तर वां निशान - अखबार बद्र नं. 24 जिल्द 2, में यह भविष्यवाणी लिखी हुई है जैसा कि मैंने अभी लिखा है समय से पूर्व अखबार बद्र में प्रकाशित हो चुकी है और बाद में उसी प्रकार से प्रकट हुई और वह यह है कि -

रात के समय 28 जून 1903 ई. के दिन के पश्चात् की रात थी अर्थात् वह रात जिसके पश्चात् सोमवार था और 29 जून 1903 ई. था। मेरे विचार पर इस बात का प्रभुत्व हो गया कि ये मुक़द्दमे जो करमदीन की ओर से मुझ पर हैं या मेरी जमाअत की ओर से करमदीन पर हैं उनका परिणाम क्या होगा। अतः इसी विचार के प्रभुत्व के समय मेरी अवस्था खुदा की वही की ओर परिवर्तित की गई और मुझ पर खुदा का यह कलाम उतरा जो उन अर्थों के साथ ही जो अखबार अलबद्र

में प्रकाशित की गई थी निम्नलिखित है और वह यह है -

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ فِيهِ آيَاتٌ لِلْسَّائِلِينَ

इसके यह अर्थ समझाए गए कि इन दोनों समूहों में से खुदा उसके साथ होगा और उसे विजय और सहायता प्रदान करेगा जो कि संयम धारण करने वाले हैं अर्थात् झूठ नहीं बोलते, अन्याय-अत्याचार नहीं करते, आरोप नहीं लगाते, धोखा, छल, कपट और बेईमानी से अकारण खुदा के बन्दों को नहीं सताते तथा प्रत्येक बुराई से बचते, सत्य और न्याय को अपनाते हैं तथा खुदा से डर कर उसकी प्रजा के साथ हमदर्दी और सहानुभूति तथा नेकी का व्यवहार करते हैं और मानव के सच्चे शुभ चिन्तक हैं। उनमें दरिदगी, अत्याचार और बुराई का आवेग नहीं अपितु सामान्यतः प्रत्येक के साथ वे नेकी करने के लिए तत्पर हैं। अतः परिणाम यह है कि उन के पक्ष में निर्णय होगा। तब वे लोग जो पूछते हैं कि इन दोनों वर्गों में से सत्य पर कौन है उनके लिए एक निशान अपितु कई निशान प्रकट होंगे। सलामती हो उस पर जिसने हिदायत का अनुसरण किया। देखो अखबार अलबद्र नं. 24, जिल्द 2.

तत्पश्चात् वे मुकद्दमें जो करमदीन की ओर से थे खारिज होकर उसे दण्ड दिया गया और खुदा तआला की भविष्यवाणी इस प्रकार से पूर्ण हुई कि खुदा तआला के निर्धारित लक्षण जो विजयी होने वाले के लिए इस भविष्यवाणी में हैं वे हमारे भाग्य में आए। इस पर खुदा की प्रशंसा।

171. एक सौ इकहत्तर वां निशान - आज की डाक में 26 सितम्बर 1906 ई. को बुधवार के दिन गांव दुलमियाल, जिला जेहलम से मुझे पत्र आया है जिसमें एक बड़े निशान की चर्चा है। इस पत्र के लेखक हकीम करमदाद साहिब हैं जो जिला जेहलम में एक प्रतिष्ठित जमींदार हैं और गांव दुलमियाल जिला जेहलम, तहसील पिंड दादनखान में रहते हैं उन्होंने इस पत्र के साथ मिर्जा नामक एक फ़कीर का इकरारनामा मुबाहला के तौर पर भेजा है जिसमें उनकी मेरे मरने के बारे में एक भविष्यवाणी लिखी है जिस पर गांव के नम्बरदारों इत्यादि की बहुत

सी साक्ष्यें लिखी हैं। अतः प्रथम हकीम करमदाद साहिब का पत्र लिखा जाता है और बाद में कथित फ़क़ीर का पत्र जो स्वयं को खुदा का एक महान वली बताता है लिखा जाएगा और अन्त में यह चर्चा है कि फ़क़ीर साहिब की वह भविष्यवाणी क्यों कर पूरी हुई। चूंकि इस घटना को गांव दुलमियाल के समस्त लोग जानते हैं, इसलिए प्रत्येक को अधिकार है कि यदि इस घटना पर उसे पूरी संतुष्टि न हो तो गांव दुलमियाल में जाकर प्रत्येक व्यक्ति से खुदा तआला की शपथ देकर पूछ ले। किसी में शक्ति नहीं कि ख्याति प्राप्त घटनाओं को गुप्त रख सके। अब हम नीचे हकीम करमदाद साहिब का पत्र लिखते हैं और बाद में फ़क़ीर मिर्ज़ा का इकरारनामा और अन्तिम परिणाम उस भविष्यवाणी का लिखेंगे और हम शक्तिशाली एवं दयालु खुदा के कृतज्ञ हैं जो प्रत्येक मैदान में हमें विजय प्रदान करता है -

हकीम करमदाद साहिब का पत्र

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली व अला रसूलिहिल करीम

सेवा में जनाब मसीह मौऊद व महदी मा'हूद हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम! अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू!

अल्लाह तआला ने हुज़ूर की सच्चाई के दो बड़े निशान हमारे गांव में प्रकट किए हैं जिनको इस गांव के बच्चे भी जानते हैं। उनमें से प्रथम निशान यह है कि यहां मिर्ज़ा नामक एक व्यक्ति स्वयं को इल्हाम और कश्फ़ वाला समझता था। वह 7 रमज़ान 1312 हिज़्री में एक दिन प्रातः काल अपनी मस्जिद के पन्द्रह-बीस लोग साथ लेकर हाफ़िज़ शहबाज़ साहिब अहमदी के घर पर आया और कहने लगा कि मैं तुम्हारे मुकाबले के लिए आया हूँ और ये लोग मेरे साक्षी हैं। विनीत अर्थात् इस पत्र के लेखक ने नहा फ़क़ीर साहिब! आप किस बात में मुकाबला करना चाहते हैं। फ़क़ीर साहिब : क्या तुम मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी को महदी मसीह मौऊद मानते हो? लेखक : हां। फ़क़ीर साहिब : वह इस दावे में झूठा है। लेखक : उनको झूठा समझने में आप के पास क्या तर्क है? फ़क़ीर साहिब : तर्क यह है कि

मैं इल्हाम वाला हूँ मुझे इल्हाम होते हैं और मुझे अनेकों बार आंखरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दर्शन हो चुके हैं और मुझे बताया गया कि तू अन्तिम युग में प्रकट होने वाले महदी के निष्ठावानों में प्रथम श्रेणी पर है। चूंकि मिर्जा साहिब के दावे को बहुत समय गुजर चुका है और मैं अब तक विरोधी हूँ। इसलिए मैं अपने इल्हाम के आधार पर उस व्यक्ति को झूठा समझता हूँ तथा मुझे महदी के निकलने के समय का एक निशान भी दिखाया गया है कि पूरब दिशा से एक प्रकाश उदय हुआ है जो पश्चिम में जाकर फैल गया। अतः यह प्रकाश भी मैंने अब तक नहीं देखा कि मैं मिर्जा साहिब को मान लूं।

लेखक : फ़कीर साहिब का यह इल्हाम और कश्फ़ी दृश्य तो हज़रत मिर्जा साहिब के दावे की पुष्टि करने वाला और समर्थक है फिर आप उनको झूठा क्यों समझते हैं क्योंकि आप के इल्हाम से सिद्ध होता है कि महदी का प्रादुर्भाव पंजाब में होगा अन्यथा आप प्रथम श्रेणी के निष्कपट लोगों में क्योंकर सम्मिलित हो सकते हैं। यदि महदी का प्रादुर्भाव अरब में माना जाए तो ऐसी अवस्था में आप का नम्बर बहुत पीछे रह जाता है या आप महदी की चर्चा सुनकर पश्चिम में जाएंगे या आपका इल्हामी आकर्षण महदी को पंजाब में लाएगा। दोनों अवस्थाओं में आप प्रथम श्रेणी प्राप्त नहीं कर सकते और आप ने जो प्रकाश देखा है उसका अर्थ यह है कि क़ादियान पूरब की ओर है और जनाब मिर्जा साहिब की शिक्षा से पश्चिमी देशों में इस्लामी एकेश्वरवाद का प्रकाश फैल रहा है। अतः आप को मिर्जा साहिब के वफ़ादारों एवं निष्कपट लोगों में सम्मिलित होना चाहिए। फ़कीर साहिब - मैं सम्मिलित नहीं होता क्योंकि आज रात्रि को मैंने देखा है कि मैं ख़ुदा के अर्श (सिंहासन) के पास खड़ा हूँ और मुझे कहा गया कि इस रमज़ान की 27, तारीख तक मिर्जा गुलाम अहमद क़ादियानी पर एक भयंकर आपदा उतरेगी। मैं नहीं समझता इस आपदा से अभिप्राय मृत्यु या कोई अपमान है जिससे उसका कार्य अस्त-व्यस्त होकर उस का नामो निशान मिट जाएगा और समस्त संसार इस स्थिति को देखेगा। यदि मेरी यह भविष्यवाणी ग़लत निकली तो मैं प्रत्येक प्रकार का दण्ड स्वीकार करने

को तैयार हूँ। तुम मेरी इस भविष्यवाणी को अखबार बद्र या अलहकम में प्रकाशित करा दो और मुझ से इकरारनामा लिखवा लो। यदि तुम ऐसा नहीं करते तो इस सभा के सभी उपस्थित लोग सुनते हैं कि तुम लोग एक झूठे व्यक्ति का अनुसरण कर रहे हो। लेखक विनीत ने इस इल्हाम वाले फ़कीर से सभा में उपस्थित अन्य लोगों के कहने से इकरारनामा लिखा लिया और वह इकरारनामा यह है -

फ़कीर मिर्ज़ा का इकरारनामा जिस में भविष्यवाणी है

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

मैं^① कि मिर्ज़ा पुत्र फ़ैज़ बख़्श क्रौम अवान निवासी दुलमियाल क्षेत्र कहून तहसील पिंड दादनखां ज़िला - जेहलम का हूँ। मैं इस इकरार को निम्नलिखित लोगों के समक्ष लिख देता हूँ कि मैंने अनेकों बार जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को स्वप्न में देखा और स्वयं सर्वोच्चतम अर्श तक मैं पहुंचा और मुझ पर यह प्रकट किया गया कि मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अपने दावे में झूठे हैं और इल्हाम के द्वारा मुझे भली-भांति बताया गया कि मिर्ज़ा गुलाम साहिब का सिलसिला 27 रमज़ानुल मुबारक 1321 हिज़्री तक टूट-फूट जाएगा और बड़े भयंकर स्तर का अपमान आएगा जिसे समस्त संसार देखेगा। यदि यह भविष्यवाणी पूर्ण न हुई अर्थात् मिर्ज़ा का यह सिलसिला और उत्थान 27, रमज़ान 1321 हिज़्री तक स्थापित रहा या उन्नति की तो मैं हर प्रकार का दण्ड स्वीकार करने को तैयार हूँ। निम्नलिखित लोगों को अधिकार है कि चाहे मुझे पत्थर मार-मार कर क़त्ल करें या कोई अन्य दण्ड निर्धारित करें मुझे कदापि इन्कार न होगा

① यह फ़कीर मिर्ज़ा के हस्ताक्षर किया हुआ मूल इकरारनामा जिसमें विश्वस्त एवं प्रतिष्ठित लोगों की गवाहियां, मुहरें और अंगूठे लगे हुए हैं। हकीम करमदाद साहिब ने मेरे पास भेज दिया है जो यहां सुरक्षित रखा गया है ताकि प्रत्येक सन्देह करने वाले को दिखाया जाए। इसी से।

और न मेरे वारिसों को अधिकार है कि मेरे दण्ड में किसी प्रकार का तर्क प्रस्तुत करके मेरे दण्ड देने वालों के बाधक हों। अतः मैं ये कुछ पंक्तियां बतौर इकरारनामा लिख देता हूं कि प्रमाण रहे और कल मुझे इन्कार की गुंजायश न रहे तथा समस्त संसार में सत्य एवं असत्य में अन्तर हो जाए और खुदा की प्रजा इस घटना से एक शिक्षा ग्रहण करे। विशेषतः मेरे शहर वालों को नितान्त लाभप्रद शिक्षाप्रद दृश्य है। अतः एक माह में यह निर्णय प्रकट हो जाएगा।

7, रमजानुल मुबारक 1321 हिज्री को लिखा गया

दास

फ़कीर मिर्जा पुत्र मलिक फ़ैज़ बख़्श निवासी दुलमियाल

निशान अंगूठा

करीम बख़्श

- * हाफ़िज़ शहबाज़ हस्ताक्षर नि. दुलमियाल
- * मलिक शेर पुत्र कुतुब हस्ताक्षर निवासी दुलमियाल
- * मलिक फ़तह मुहम्मद हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल बकलम खुद
- * करीम बख़्श हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल
- * हवालदार मुहम्मद ख़ान हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल
- * मलिक समन्दर ख़ान पुत्र मुहम्मद ख़ान, हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल
- * मलिक दोस्त मुहम्मद पुत्र शकूर, हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल
- * मलिक सख़ी दित्ता पुत्र मलिक लाल हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल
- * मलिक खुदा बख़्श पुत्र इमाम, हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल
- * मलिक घीबा पुत्र बख़्तावर हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल
- * मलिक अल्लाह दित्ता पुत्र उमर, हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल
- * मलिक गुलाम मुहम्मद पुत्र दौला हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल
- * मलिक नूर मुहम्मद पुत्र दुराब, हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल
- * मलिक बहादुर पुत्र करम, हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल

- * मलिक गुलाम मुहम्मद पुत्र सूबेदार अहमद जान हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल
 - * मलिक आ'ज़म बक़लम ख़ुद, निवासी दुलमियाल मलिक नूर मुहम्मद पुत्र दुराब हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल
 - * मलिक मुहम्मद अली पुत्र बहाउ बख़्श, हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल
 - * मलिक मुहम्मद बख़्श पुत्र जलाल हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल
 - * राजा नम्बरदार हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल
 - * मलिक अब्दुल्लाह पुत्र शाहूली हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल
 - * बहाऊला नम्बर दार दुलमियाल इत्यादि
 - * मलिक मदद पुत्र माअजुल्लाह दुलाह हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल
 - * करमदाद अहमदी हस्ताक्षर, निवासी दुलमियाल उफ़िया अन्हो
- दुलमियाल के निवासी
मुहर

समस्त गवाहों के समक्ष

सत्य और असत्य में निर्णय हो गया

झूठे इल्हाम के दावेदार को अल्लाह तआला संसार से बहुत शीघ्र उठा लेता है और यह एक ऐसा ख़ुदा का नियम है जो कभी परिवर्तित नहीं होता। इस इक्रारनामा का इक्रारकर्ता नाम - मिर्ज़ा जो अपने कशफ़ पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम को झुठलाकर उनके विनाश की भविष्यवाणी कर चुका था, पूरे एक वर्ष के पश्चात् रमज़ान की उसी तिथि 7, रमज़ान 1322 हिज़्री में जिसमें इक्रारनामा लिखा गया ताऊन के अज़ाब से मौत के घाट उतर गया। इस से पूर्व उसकी पत्नी की भी मृत्यु हो गई और स्वयं उसके घर का सिलसिला तबाह हो गया। इसलिए हमारे देहात वालों को उस घटना से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए और हज़रत अक्रदस की सच्चाई को स्वीकार करें।

7, रमज़ान 1322 हिज़्री को लिखा गया।

लेखक विनीत ने इस इकरारनामा को प्रकाशित होने के उद्देश्य से दारुल अमान क़ादियान में बाबू मुहम्मद अफ़ज़ल साहिब (स्वर्गीय) एडीटर अलब्रद की सेवा में भेज दिया। उन्होंने यह लिखकर कि हम ऐसे लेखों को अपने अख़बार में नहीं लिखते वापस कर दिया। आस-पास के क्षेत्र में भी यह भविष्यवाणी प्रसिद्ध हो गई और लोग कहने लगे कि देखना चाहिए कि कौन जीतता है। मिर्ज़ा क़ादियानी या मिर्ज़ा दुलमियाली। विरोधी लोग नमाज़ के पश्चात् अपने फ़क़ीर मिर्ज़ा की सफलता की दुआएं मांगने लगे। एक दिन एक हिन्दू सारजेण्ट फ़क़ीर साहिब को सिराजुल अख़बार पढ़कर सुना रहा था कि हकीम फ़ज़लदीन बहुत बीमार हैं चारपाई पर उठाकर गुरदासपुर की अदालत में लाए हैं। इस सूचना के सुनने से इल्हाम वाले फ़क़ीर प्रसन्न होकर कहने लगे कि अब मिर्ज़ा क़ादियानी की तबाही का समय आ गया है और उसके लक्षण प्रकट होने लगे हैं परन्तु बेचारे को क्या मालूम कि उधर मेरी ही तबाही की तैयारियां हो रही हैं। थोड़ा ही समय गुज़रा कि इलाक़े में ताऊन की सेना ने डेरे लगा दिए। फ़क़ीर साहिब को अपने इल्हामों पर इतना गर्व था कि मेरे कारण मेरा समस्त मुहल्ला सुरक्षित रहेगा। जब दूसरा रमज़ान आया तो उसके मुहल्ले में ताऊन आरंभ हो गई। उस समय ये चार लोग घर में मौजूद थे, एक इल्हाम वाला फ़क़ीर, दूसरे उसकी पत्नी, तीसरी लड़की चौथी लड़के की पत्नी। प्रथम फ़क़ीर की पत्नी की ताऊन से मृत्यु हो गई फिर स्वयं फ़क़ीर साहिब पांच या छः रमज़ान 1322 हिज़्री सायंकाल भयंकर ताऊन से रोग ग्रस्त हो गए साथ ही ज़बान बन्द हो गई। सूजन की अधिकता और श्वास अवरुद्ध होने के कारण ऐसा प्रतीत होता था जैसे आंखों से रक्त टपक रहा है। अन्ततः पूरे एक वर्ष के पश्चात् जिस दिन भविष्यवाणी की गई थी अर्थात् 7, रमज़ान 1322 हिज़्री को मृत्यु हो गई। दो लड़कियां जो पीछे रह गई थीं वे भी थोड़े दिनों के पश्चात् बीमार हो गईं। लेखक (खाकसार) को उपचार के लिए बुला कर ले गए। मैं उनकी दशा देखकर डर गया। उपचार कराने वालों को कहा कि इस घर में ख़ुदा का प्रकोप उतर रहा है तुम अपनी बहन को घर ले जाओ। वे घर में ले गए और वह कुछ

दिन के पश्चात् ठीक हो गई। जो फ़कीर साहिब की लड़की थी वह उसी घर में दूसरे दिन पिता से जा मिली और 27, रमज़ान की बजाए 7, रमज़ान को हज़रत मिर्ज़ा साहिब क़ादियानी के सिलसिले के बदले में मिर्ज़ा दुलमियाली के घर का सिलसिला तबाह हो गया।

दूसरा निशान - यह है कि सूबेदार गुलाम मुहम्मद ख़ान के लड़के अता मुहम्मद को एक पागल कुत्ते ने काटा और यह लड़का उस कुत्ते के विष से रोग्रस्त होकर मर गया। उसी पागल कुत्ते ने लेखक के लड़के अब्दुलहमीद को भी काटा था। संयोग कुछ ऐसा हुआ कि यहां के रहने वाले एक सय्यद साहिब को ले आए कि यह कड़ा डालकर ताऊन को रोकेगा। विनीत इस कड़ा में सम्मिलित न हुआ। दूसरे दिन प्रातः काल विनीत का लड़का अब्दुल हमीद बीमार हो गया। थोड़ी सी आवाज़ और आहट से शरीर में इतनी अकड़न होती थी कि ख़ुदा की पनाह। श्वासतंत्र के अकड़ने से सांस अवरुद्ध होकर चेहरा नीला पड़ जाता था और यही प्रतीत होता कि अब सांस समाप्त होती है। चूंकि सब लोग सूबेदार साहिब के लड़के की दशा देख चुके थे, इसलिए प्रत्येक यही कहता कि यह लड़का थोड़ी देर का मेहमान है। विनीत लेखक भी उपचार की दृष्टि से अब्दुल हमीद को मुर्दा समझ चुका। उधर विरोधियों के कटाक्षों को देखा। बुजुर्गों के न मानने और कड़ा में सम्मिलित न होने का यह परिणाम है। अतः इस आघात ने मेरे हृदय को द्रवित कर दिया। तब सज्दे में गिर कर दुआ करने लगा कि हे असहायों एवं निराश्रय लोगों के सहायक और पापियों पर दया करने वाले दयालु ख़ुदा तू जानता है कि आज मेरे विरोधी मात्र इस कारण प्रसन्न हो रहे हैं कि मैं तेरे भेजे हुए रसूल हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब को मसीह मौऊद और महदी मा'हूद मानता हूं। अतः हे मेरे ख़ुदा तू इस लड़के को स्वास्थ्य प्रदान कर ताकि यह मुर्दा जीवित हो कर मसीह-ए-मुहम्मदी की सच्चाई पर एक निशान हो। इस दुआ के पश्चात् उन भयावह लक्षणों में कमी आने लगी, यहां तक कि कुछ दिनों के पश्चात् लड़का बिल्कुल स्वस्थ हो गया। सब प्रशंसा ख़ुदा के लिए।

इस निशान को हमारे गांव के समस्त लोगों ने देखा है। विरोधी से विरोधी भी इस से इन्कार नहीं कर सकते कि वास्तव में वे समस्त लक्षण जो इस रोग में पाए जाते हैं प्रिय अब्दुल हमीद के रोग में विद्यमान थे। पागल कुत्ते का काटना और फिर सूबेदार साहिब के लड़के का उस कुत्ते के विष से उन्हीं लक्षणों के साथ मृत्यु पा जाना, ये सब कुछ हमारे गांव के लोग अपनी आंखों से देख चुके हैं किन्तु द्वेष और हठधर्मी का सर्वनाश हो फिर भी लोग विरोध करने से नहीं रुकते। हे ख़ुदा के प्यारे रसूल! अल्लाह तआला ने मुझ पापी पर बड़ी दया की है और मात्र अपनी कृपा से इस विनीत को मुर्दे के जीवित होने का चमत्कार अपने घर में दिखा दिया। दुआ कीजिए अल्लाह तआला हमें और हमारे दूसरे भाइयों को आपकी आज्ञाकारिता में मृत्यु दे और मुर्दों के जीवित हो उठने वाले दिन (महा प्रलय) में हम आपके साथ हों। आमीन

लेखक - आपका दास करमदाद, दुलमियाल

ज़िला - जेहलम

172. एक सौ बहत्तर वां निशान - एक बार कश्फ़ की अवस्था में मुझ पर प्रकट किया गया कि कोई सरकारी सम्मन मेरे नाम आया है। मुझे किसी कचहरी में किसी गवाही के लिए बुलाया है और मैं उस कचहरी में गया हूं और जज अंग्रेज़ है। तब उसने बिना शपथ के जैसा कि कानून है मेरा बयान लिखना आरंभ किया और वह पूरा बयान बिना शपथ के ही लिखा गया। तत्पश्चात् कश्फ़ की अवस्था जाती रही और मैंने अपना यह कश्फ़ अपने बहुत से मित्रों को उसी समय सुना दिया। अतः उनमें से ख़्वाजा कमालुद्दीन बी.ए. प्लीडर, बिरादरम मौलवी हकीम नूरदीन साहिब, मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब और मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए. हैं। फिर उसी दिन या दूसरे तीसरे दिन मुल्तान के साहिब डिप्टी कमिशनर का सम्मन एक गवाही के लिए मेरे नाम आ गया। जब मैं गवाही के लिए साहिब डिप्टी कमिशनर की कचहरी में उपस्थित हुआ तो साहिब डिप्टी कमिशनर ने मेरा बयान लिखना आरंभ किया और शपथ देना भूल गए। जब पूरा

बयान लिखा जा चुका तो बाद में शपथ देना याद आया। इस दूसरे भाग के गवाह शेख रहमतुल्लाह साहिब ताजिर, और मौलवी रहीम बख्श साहिब प्राईवेट सेक्रेट्री नवाब साहिब भोपाल और कई लोग हैं।

173. एक सौ तिहत्तर वां निशान - चिरागदीन निवासी जम्मू जब मेरी बैअत से मुर्तद होकर विरोधियों से जा मिला तो उसने केवल गालियों पर ही बस नहीं की अपितु अपने इल्हाम और वह्यी का भी दावा किया तथा सामान्यतः लोगों में प्रचारित किया कि खुदा तआला की वह्यी से मुझे इल्हाम हुआ है कि यह व्यक्ति अर्थात् यह विनीत दज्जाल है। अतः मैंने अपनी पुस्तक “दाफ़िउल बला व मै'यार अहलिल इस्तिफ़ा” के पृष्ठ 23 के हाशिए पर वह इल्हाम प्रकाशित किया जो मुझे चिरागदीन के बारे में हुआ और वह यह है -

إني اذيب من يريب

और उर्दू में उसके बारे में यह इल्हाम हुआ -

मैं फ़ना कर दूंगा, मैं तबाह कर दूंगा, मैं प्रकोप उतारूंगा।

यदि उसने चिरागदीन ने सन्देह किया और मेरे मसीह मौऊद होने पर ईमान न लाया और खुदा की ओर से मामूर होने के दावे से तौब: न की। यह भविष्यवाणी चिरागदीन की मृत्यु से तीन वर्ष पूर्व की गई थी जैसा कि पुस्तक “दाफ़िउल बला” के प्रकाशित होने की तिथि से स्पष्ट है। मुझे इस समय स्मरण नहीं कि मैं पहले भी इस भविष्यवाणी को लिखा आया हूँ या नहीं यदि पहले लिखी गई है तो यह निशान इस पुस्तक में गुज़र चुका है और यहां इस निशान की पुनरावृत्ति दूसरी भविष्यवाणी के लिए आवश्यक थी। बहरहाल इस भविष्यवाणी से तीन वर्ष पश्चात् चिरागदीन मृत्यु को प्राप्त हो गया और खुदा के प्रकोप के रोग से अर्थात् ताऊन के रोग से उसकी मृत्यु हुई और यही कारण है कि ताऊन की पुस्तक में भी अर्थात् ‘दाफ़िउल बला’ में यह भविष्यवाणी लिखी है और इस भविष्यवाणी के मुक्राबले का निशान चिरागदीन का स्वयं अपना मुबाहला है। इसलिए हम वह निशान अलग तौर पर इस भविष्यवाणी के साथ ही नीचे लिखते हैं और वह यह है -

174. एक सौ चौहत्तर वां निशान - यह निशान चिरागदीन के मुबाहला का निशान है। इसका विवरण यह है कि जबकि चिरागदीन को यह शैतानी इल्हाम मेरे बारे में बार-बार हुए कि यह व्यक्ति दज्जाल है और अपने बारे में यह इल्हाम हुआ कि वह इस दज्जाल को मिटाने के लिए खुदा तआला की ओर से आया है तथा हज़रत ईसा ने उसे अपना डंडा दिया है ताकि उस डंडे से इस दज्जाल का क़त्ल करे। अतः उसका अहंकार बहुत बढ़ गया। उसने एक पुस्तक लिखी और उसका नाम 'मनारतुल मसीह' रखा और उसमें बार-बार इसी बात पर बल दिया कि जैसे मैं वास्तव में कथित दज्जाल हूँ। फिर जब 'मनारतुल मसीह' के लिखने पर एक वर्ष गुज़र गया तो उसने मुझे दज्जाल सिद्ध करने के लिए एक और पुस्तक लिखी और लोगों को बार-बार स्मरण कराया कि यह वही दज्जाल है जिस के आने की सूचना हदीसों में है। चूंकि खुदा के प्रकोप का समय उसके लिए निकट आ गया है। इसलिए उसने इस दूसरी पुस्तक में मुबाहला की दुआ लिखी और खुदा के दरबार में दुआ करके मेरी तबाही चाही और मुझे एक उपद्रवी ठहराकर खुदा तआला से दुआ की कि तू इस उपद्रवी को इस संसार से समाप्त कर दे। यह खुदा की बड़ी अद्भुत कुदरत तथा शिक्षा ग्रहण करने का स्थान है कि जब मुबाहला का लेख उसने लिपिक के सुपुर्द किया तो वे कापियां अभी पत्थर पर नहीं जमीं थी कि उसके दोनों पुत्र जो केवल दो ही थे ताऊन ग्रस्त होकर मर गए और अन्ततः 4, अप्रैल 1906 ई. को पुत्रों की मृत्यु से दो तीन दिन पश्चात् वह भी ताऊनग्रस्त होकर इस संसार से कूच कर गया तथा लोगों पर प्रकट कर गया कि सच्चा कौन है और झूठा कौन। जो लोग उस समय उपस्थित थे, उनके द्वारा सुना गया है कि वह अपनी मृत्यु के निकट कहता था कि "अब खुदा मेरा शत्रु हो गया है।" चूंकि उसकी वह पुस्तक प्रकाशित हो गई है जिसमें वह मुबाहला है। इसलिए हम लोगों के लिए जो खुदा तआला से डरते हैं वह मुबाहला की दुआ नीचे लिखते हैं और यह मात्र इस उद्देश्य से है कि यदि इस निशान से एक व्यक्ति भी मार्ग-दर्शन पाए तब भी खुदा ने चाहा तो हमें पुण्य प्राप्त होगा। चूंकि चिरागदीन के मुबाहला के

मूल मसौदे पर जो उसके कलम से लिखा हुआ है लिपिक से आग्रहपूर्वक कहा गया है कि यह मुबाहला की दुआ मोटे कलम से लिखी जाए। इसलिए यद्यपि हम उसकी दूसरी बातों के विरोधी हैं तथापि उसकी इस विनती को स्वीकार करके मुबाहला की दुआ मोटे कलम से लिखवा देते हैं क्योंकि वह वसीयत मृत्यु से एक दिन पूर्व की गई है। अतः कोई आपत्ति नहीं है कि हम उसकी वसीयत को स्वीकार कर लें और वह मुबाहला की दुआ यह है -

दुआ

हे मेरे खुदा, हे मेरे खुदा! मैं सच्चे हृदय से गवाही देता हूँ कि पृथ्वी, आकाश तथा इन दोनों के अतिरिक्त जो कुछ भी है उसका तू ही अकेला स्रष्टा, स्वामी और अन्नदाता है तथा आकाश, पृथ्वी और उन दोनों के अतिरिक्त प्रत्येक कण पर तेरा ही आदेश जारी और लागू है और तू सब का प्रारंभ, अंत, प्रत्यक्ष एवं आन्तरिक जानता और सब की आवाज़ सुनता और उनकी आवश्यकताएं पूर्ण करता तथा आकाश और पृथ्वी के मध्य तेरी आज्ञा के बिना एक कण भी टल नहीं सकता तथा अंबिया, औलिया, राजा और रंक, फ़रिश्ते और शैतान बल्कि समस्त मौजूद वस्तुएं तेरी ही सृष्टि और तेरी ही मुहताज हैं, जो तेरी दया की प्रत्याशी तथा तेरे क्रोध से कंपायमान हैं और तू ही अकेला इस सम्पूर्ण पार्थिव और आकाशीय, प्रत्यक्ष और आन्तरिक, आध्यात्मिक और भौतिक सृष्टि का स्रष्टा, स्वामी एवं उपास्य है और तेरे अतिरिक्त आकाश और पृथ्वी तथा इन दोनों के अतिरिक्त के मध्य उपासनाएं, खुदा पर भरोसा, या प्रेम के योग्य अन्य कोई उपास्य नहीं। लोगों ने जितने की उपास्य बनाए हुए हैं चाहे वे मूर्तियां हैं, या आत्माएं या फ़रिश्ते या शैतान या आकाशीय ग्रह या पार्थिव शरीर वे सब मिथ्या हैं और तेरी ही सृष्टि और तेरे ही मुहताज हैं। उनमें से एक भी उपासना, भरोसे तथा प्रेम के योग्य नहीं, अपितु आकाश और पृथ्वी एवं इन दोनों के अतिरिक्त के मध्य उपासना, भरोसे और प्रेम के योग्य तू ही एक खुदा ही जो अजर, अमर और जीवित खुदा है। तेरा न कोई पिता है न पुत्र और न कोई पत्नी है, न साथी, न कोई

परामर्शदाता न सहायक बल्कि तू अकेला ही सब का स्रष्टा स्वामी और प्रभुत्व रखने वाला खुदा है जो सम्पूर्ण विशेषताओं का स्रोत और समस्त दोषों से पवित्र है। इसलिए समस्त स्तुतियां, पवित्रता और प्रशंसा एवं स्तुति के योग्य तू ही एक खुदा है और हमारी यह शारीरिक, आध्यात्मिक या प्रत्यक्ष या आन्तरिक समस्त ने 'मतें तेरी ही ओर से हैं और हम तेरे ही लिए हैं। और मैं गवाही देता हूं कि तेरे सब पैगम्बर (अवतार) तथा समस्त आकाशीय ग्रंथ सामान्यतः और तेरा सच्चा और प्रिय मित्र खातमुन्नबिय्यीन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम और तेरी पवित्र वाणी कुर्आन करीम विशेषतः सत्य है तथा मोक्ष इस्लाम में सीमित। और मैं गवाही देता हूं कि प्रलय और प्रतिफल एवं दण्ड, हिसाब और न्याय, नर्क और स्वर्ग और खुदा से भेंट आदि सब सत्य और उचित हैं और हम सब मृत्योपरान्त जीवित हो उठेंगे और अपने ही कर्मों के अनुसार प्रतिफल और दण्ड के भागीदार होंगे।

अब हे मेरे खुदा! मैं तेरे पुनीत और उच्च दरबार में नितान्त विनय, नम्रता, गिड़गिड़ाने के साथ सादर निवेदन करता हूं कि तू जानता है कि मैं वही व्यक्ति हूं जिसे तूने बिना पात्रता के केवल अपनी ही कृपा एवं अनुकम्पा से अपनी इच्छा और इरादे के अनुसार जो अनादि काल ही से निर्धारित किया गया था अपने पवित्र और सच्चे धर्म इस्लाम की सेवा और सहायता के लिए संसार के लोगों में से चुन लिया और इस कार्य के लिए विशेष्य किया है और तूने ही मेरे हाथ से वह आध्यात्मिक मीनार जिस पर इब्ने मरयम का उतरना प्रारब्ध था तैयार करा दिया है और तूने ही मुझ से ईसा के उतरने की मुनादी करने और ईसाइयों पर इस्लाम की सच्चाई सिद्ध करने की सेवा पर नियुक्त किया है और तू ने ही मुझे अपनी अनुकम्पा के खजाने से वह ज्ञान प्रदान किया है जिस से ईसाई, मुसलमान या कुर्आन एवं इंजील का परस्पर मतभेद दूर हो कर एकता और अनुकूलता पैदा हो सकती है। हां वह इब्ने मरयम का उतरना एक आध्यात्मिक रहस्य था जो लम्बे समय से संसार के लोगों पर गुप्त रहा और विशेषतः इसी युग के लिए अमानत के तौर पर रखा गया था और

इसी से तू अपनी सृष्टि पर इस्लाम की सच्चाई सिद्ध करेगा और इस्लाम को समस्त धर्मों पर विजयी कर देगा। अतः हे मेरे खुदा तू जानता और देख रहा है कि मैं तेरे इस आज्ञापालन को तेरे ही निर्देशों के अनुसार पूर्ण कर रहा हूँ और तेरी इच्छानुसार इब्ने मरयम के उतरने के इस गुप्त रहस्य को संसार में प्रकट करके समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण कर रहा हूँ, किन्तु हे मेरे खुदा तू भली भाँति जानता और देख रहा है कि संसार में एक व्यक्ति नबी और रसूल तथा मसीह होने का दावेदार मौजूद है जो कहता है कि खातमुलअंबिया मैं हूँ तथा भविष्यवाणियों के अनुसार इब्ने मरयम के उतरने का चरितार्थ भी मेरा ही अस्तित्व है और कहता है कि मेरे लिए आकाश और पृथ्वी से चमत्कार प्रकट होते हैं अपितु ताऊन एवं भूकम्प भी मेरे ही समर्थन में प्रकट हुए हैं ताकि मेरे विरोधियों का सर्वनाश कर दें^① और कहता है कि मैं खुदा की साक्षात् कुदरत हूँ और मोक्ष मेरी ही पद्धति में सीमित है और जो मुझे नहीं पहचानता वह काफ़िर और धिक्कृत तथा उसके शुभ कर्म अमान्य और वह संसार में दण्डनीय और परलोक में ला'नती होगा, और कहता है कि अब की बसन्त ऋतु या किसी अन्य बसन्त ऋतु में एक भयंकर भूकम्प आएगा जिस से पृथ्वी पर एक क्रान्ति जन्म लेगी और संसार के लोग महदी की जमाअत में सम्मिलित होने के लिए तैयार हो जाएंगे। इसलिए हे मेरे खुदा संसार वालों के हृदय असमंजस में हैं और सच्चाई प्रकट नहीं हो सकती तथा तेरी प्रजा असत्य की उपासना में लिप्त है और तेरे धर्म में गड़बड़ी पड़ रही है और तेरे प्रिय मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तिरस्कार किया जा रहा है और नबी और रसूल का पद छीन लिया गया तथा इस्लाम को निरस्त और निष्प्रभावी ठहराया गया और नवीन धर्म का नींव डाली गई अर्थात् मिर्जा कादियानी के नबी और रसूल होने पर ईमान लाए बिना कोई

① यह बड़ा विचित्र वाक्य चिरागदीन के मुख से मेरे बारे में निकला है कि खुदा मेरे विरोधियों को ताऊन और भूकम्प से विनाश करेगा। अतः चिरागदीन अपने इस वाक्य के अनुसार ताऊन से मर गया और क्या आश्चर्य कि भविष्य में कोई विरोधी भूकम्प से भी तबाह हो। लेखक की ओर से।

मुसलमान चाहे वह कैसा ही निष्कपट, संयमी और ईमानदार हो मुसलमान नहीं रह सकता और दीन (इस्लाम) के लिए उसके प्रयास निरर्थक एवं व्यर्थ हैं और^① ऐसा ही हे मेरे ख़ुदा तेरे पवित्र नबी मसीह इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम का भी पद छीन लिया गया है और उसकी प्रतिष्ठा का तिरस्कार किया जा रहा है और कहा जाता है कि वह कलिमतुल्लाह और रूहुल कुदुस पापी था और मैं उससे श्रेष्ठ हूँ। अतः हे मेरे ख़ुदा अब तू आकाश पर से दृष्टि कर और अपने इस्लाम धर्म तथा अपने पवित्र एवं पुनीत पुरुषों के सम्मान की रक्षा कर और उनकी सहायता के लिए अपनी सेवा का हाथ प्रकट कर और इस उपद्रव को संसार से दूर कर^② तथा संसार को सत्य की ओर आकृष्ट कर और उन्हें अनुसरण की सामर्थ्य प्रदान कर तथा नुबुव्वत के दावेदार की सूक्ष्म और गूढ़ रहस्यों को जानने के लिए उनकी अक्रलों को तेज़ कर तथा संसार को समस्त पार्थिव एवं आकाशीय आपदाओं से अर्थात् ताऊन एवं भूकम्पों इत्यादि से सुरक्षित रख और उन्हें हर प्रकार से अमन और शान्ति प्रदान कर क्योंकि तू सामर्थ्यवान और क्षमा करने वाला एवं दयालु है तथा अपनी प्रजा के दोषों को क्षमा करना तेरा ही कार्य है। और हम असहाय, निर्बल मनुष्य हैं, भूल-चूक से सुरक्षित नहीं, हम तो हर समय भूल करते हैं और तेरी ही क्षमा के प्रत्याशी। तत्पश्चात् हे मेरे ख़ुदा मैं यह भी निवेदन करता हूँ और मेरी आत्मा तेरे श्रेष्ठ और उच्चतम दरबार में विनती कर रही है और मेरे नेत्र तेरी सहायता की प्रतीक्षा में तेरी ही ओर लगे हुए हैं कि तू इस सिलसिले की सच्चाई को जो तेरी ही आज्ञा एवं इच्छा के अनुसार तेरे पवित्र धर्म तथा इस्लाम की सहायता में और तेरे पुनीत नबियों की सच्चाई प्रकट करने के लिए जारी किया गया है संसार पर प्रकट कर दे और उनके विवेकों को प्रकाशित कर और उन्हें सत्य का अनुसरण करने की शक्ति प्रदान कर ताकि तेरा प्रताप प्रकट हो और तेरी इच्छा जैसी कि आकाश पर है पृथ्वी पर भी प्रकट हो क्योंकि हे मेरे ख़ुदा तू जानता और देखता है कि मैं एक असहाय, और कमज़ोर

① नक़ल मूल के अनुसार।

② अर्थात् उस व्यक्ति को जो मसीह मौऊद होने का दावा करता है तबाह कर। इसी से।

मनुष्य हूं, तेरी सहायता के बिना कुछ कह नहीं सकता तथा हृदयों को प्रभावित करना और सत्य की पहचान में उनके विवेकों को खोलना तेरा ही कार्य है, इसलिए यदि मेरे साथ तेरी सहायता न होगी तो मैं असफल रह जाऊंगा जैसा कि झूठे रह जाते हैं। अतः हे मेरे ख़ुदा तू इस सिलसिले की सहायता में अपनी शक्ति का हाथ प्रकट कर और जिस उद्देश्य के लिए यह जारी किया गया है उसे पूर्ण कर और सच्चाई के अन्य धर्मावलम्बियों पर सामान्यतः और मुसलमानों पर विशेषतः खोल दे और उन्हें इसके अनुसरण की सामर्थ्य प्रदान कर क्योंकि तू सामर्थ्यवान है तथा आकाश और पृथ्वी के प्रत्येक कण पर तेरा ही आदेश लागू है। क्या संभव कि तेरे आदेश के बिना एक कण भी गति कर सके। इसलिए तू जो चाहता है करता है, तेरे आगे कोई बात अनहोनी और असंभव नहीं तथा तेरे वादे सच्चे और तेरा इरादा अपरिवर्तनीय है और तेरी अनुकम्पा अमर और तेरी कुदरत पूर्ण है, तेरे ही आदेश से आकाश और पृथ्वी स्थापित हैं और तू ही रात्रि के अंधकार के पश्चात् प्रातः के प्रकाश को उदय कर देता है तथा सूर्य को पश्चिम से पूरब की ओर खींच लाता है, तू ही संसार में क्रान्ति को जन्म देता, किसी को राजा के सिंहासन पर और किसी को राख के ढेर पर बैठा देता है और तू ही सत्य और असत्य में निर्णय कर सकता है। तू ही इस बात में हमारी सहायता कर तथा सच्चाई प्रकट कर और प्रजा को पथभ्रष्टता की मृत्यु से बचा और उनका सद्मार्ग की ओर मार्ग दर्शन कर। आमीन पुनः आमीन !

यह है चिरागदीन के मुबाहला की इबारत, जिसमें वह मुझे अपना विरोधी पक्ष ठहरा कर तथा मुझे दज्जाल कह कर ख़ुदा तआला का निर्णय चाहता है और मुझे एक उपद्रव ठहराकर मेरे उठाए जाने की विनती करता है और मेरा विनाश मांगता है तथा दुआ करता है कि हे ख़ुदा अपनी कुदरत का हाथ प्रकट कर। अतः ख़ुदा की प्रशंसा कि इस मुबाहला के एक दिन पश्चात् ख़ुदा तआला ने कुदरत का हाथ दिखा दिया तथा अभी इस मुबाहला की कापी पत्थर पर नहीं जमाई गई थी कि 4 अप्रैल 1906 ई. को ताऊन ने उस अत्याचारी को उसके दोनों बेटों सहित तबाह कर दिया। ये हैं ख़ुदा के कार्य, ये हैं ख़ुदा के चमत्कार, यह है ख़ुदा की कुदरत

का हाथ। अतः हे आंखों वालो नसीहत और शिक्षा ग्रहण करो।

175. एक सौ पचहत्तर वां निशान - एक बार पंडित शिवनरायन अग्निहोत्री साहिब एडीटर पत्रिका 'बिरादर-ए-हिन्द' का एक पत्र लाहौर से आने वाला था, जिसमें उन्होंने यह लिखा था कि मैं बराहीन अमहदिया के तृतीय भाग का खण्डन लिखूंगा जिसमें इल्हाम हैं। संयोग ऐसा हुआ कि खुदा तआला ने उस पत्र के पहुंचने से पूर्व उसी दिन बल्कि उसी क्षण जबकि वह लाहौर में अपना पत्र लिख रहे थे, मुझे उस पत्र से कश्फ़ द्वारा खुदा ने सूचना दी और वह पत्र कश्फ़ी तौर पर मेरे सामने आ गया। मैंने उसे पढ़ा। उस समय उन आर्यों को जिनकी कई बार चर्चा आ चुकी है इस पत्र के लेख से उसी दिन पत्र आने से पूर्व सूचित कर दिया। और दूसरे दिन उनमें से एक आर्य डाकखाने पत्र लेने गया और उस की उपस्थिति में डाक के थैले से वह पत्र निकला और जब पढ़ा गया तो बिना न्यूनधिकता के वही लेख था जो मैंने वर्णन किया था तब वे आर्य लोग नितान्त आश्चर्य और अचम्भे में रह गए। वे अब तक जीवित मौजूद हैं तथा क्रसम देने से सच-सच वर्णन कर सकते हैं।

176. एक सौ छिहत्तर वां निशान - पुस्तक "ऐजाजुलमसीह" जब मैंने सुबोध और सरस अरबी भाषा में लिखी तो खुदा तआला से इल्हाम पाकर मैंने यह घोषणा प्रकाशित की कि इस अलंकारिकता और वाग्मिता के साथ कोई मौलवी इस पुस्तक का उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकेगा। तब एक व्यक्ति पीर मेहर अली नामक व्यक्ति निवासी गोलड़ा ने यह व्यर्थ बातें प्रसिद्ध कीं कि जैसे वह ऐसी ही पुस्तक लिख कर दिखाएगा। उस समय खुदा तआला की ओर से मुझे इल्हाम हुआ

منعه مانع من السماء

अर्थात् एक रोकने वाले ने आकाश से उसे उस पुस्तक का सदृश प्रस्तुत करने से रोक दिया। तब वह ऐसा मौन एवं निरुत्तर हो गया कि यद्यपि सामान्य लोगों की भांति उर्दू में बकवास करता रहा परन्तु अरबी पुस्तक का सदृश आज तक न लिख सका।

177. एक सौ सत्तर वां निशान - मेरे मकान के साथ दो मकान थे, जो मेरे अधिकार में नहीं थे तथा मकान के छोटा होने के कारण मकान को विशाल करने की आवश्यकता थी। एक बार मुझे कश्मीरी तौर पर दिखाया गया कि इस ज़मीन पर एक बड़ा चबूतरा है तथा मुझे स्वप्न में दिखाया गया कि इस स्थान पर एक लम्बा दालान बन जाए तथा मुझे दिखाया गया कि इस ज़मीन के पूर्वी भाग ने हमारी इमारत के निर्माण के लिए दुआ की है तथा पश्चिमी भाग की पड़ी हुई ज़मीन ने आमीन (तथास्तु) कहा है। अतः तुरन्त ही यह कश्मीर अपनी जमाअत के सैकड़ों लोगों को सुनाया गया तथा अखबारों में निकाला गया। तत्पश्चात् ऐसा संयोग हुआ कि वे दोनों मकान क्रय द्वारा तथा उत्तराधिकारी द्वारा हमारे भाग में आ गए तथा उनके कुछ भागों में अतिथियों के लिए मकान बनाए गए। हालांकि उन सब का हमारे अधिकार में आना असंभव था तथा कोई सोच भी नहीं सकता था कि ऐसा घटित हो जाएगा। देखिए अखबार 'अलहकम' नम्बर 46, 47 जिल्द 7^①, तथा 'अलहकम' नम्बर 3, जिल्द 8 ।

178. एक सौ अठत्तरवां निशान-एक बार खलीफ़ा सय्यद मुहम्मद हसन साहिब मंत्री रियासत पटियाला ने अपनी किसी बेचैनी एवं कठिनाई के समय मेरी ओर पत्र लिखा कि मेरे लिए दुआ करें। चूंकि उन्होंने कई बार हमारे सिलसिले में सेवा की थी। इसलिए उनके लिए दुआ की गई। खुदा की ओर से इल्हाम हुआ-
चल रही है नसीम रहमत की,
जो दुआ कीजिए कुबूल है आज।

इस दुआ के पश्चात् खुदा तआला ने अपनी कृपा से उनकी वे कठिनाइयां दूर कर दीं तथा उन्होंने कृतज्ञता प्रकट करते हुए पत्र लिखा। इस घटना का वही पत्र साक्षी है जो मेरे किसी बस्ते में मौजूद होगा तथा कई अन्य लोग साक्षी हैं अपितु उस समय सैकड़ों लोगों में मेरा यह इल्हाम ख्याति पा गया था तथा स्वर्गीय नवाब अली मुहम्मद खान रईस झज्जर ने भी अपनी स्मृति में लिख लिया था।

① असल में जिल्द का नम्बर नहीं लिखा था अब लिख दिया गया है। (प्रकाशक)

179. एक सौ उनासी वां निशान - मौलवी करमदीन के मुकद्दमे में जो गुरदासपुर में था कथित करमदीन इस बात पर बल देता था कि 'लईम' शब्द का अर्थ 'जारज' (हरामी बच्चा) है और कज़्जाब के ये अर्थ हैं कि जो हमेशा झूठ बोलता हो। यही अर्थ पहली अदालत ने स्वीकार किए। उन दिनों में खुदा तआला की ओर से मुझे इल्हाम हुआ

معنی دیگر نہ پسندیم ما

जिसका बोध यह हुआ कि दूसरी अदालत में ये अर्थ क्रायम नहीं रहेंगे। अतः ऐसा ही हुआ और अपील की अदालत में साहिब डिवीजनल जज ने इन समस्त बहानों का खण्डन कर दिया और लिखा कि 'कज़्जाब' और 'लईम' के शब्द करमदीन के यथायोग्य हैं अपितु वह इस से बढ़कर शब्दों का भी पात्र है। अतः साहिब डिवीजनल जज ने करमदीन द्वारा वे बनावटी अर्थ पसन्द न किए जो पहली अदालत में पसन्द किए गए थे। देखें अखबार अलहकम नम्बर 17, जिल्द 8, 24 मई 1904 ई. जिसमें यह इल्हाम मौजूद है।

180. एक सौ अस्सी वां निशान - एक बार 1902 ई. में मुझे इल्हाम हुआ -

يُرِيدُونَ أَن يُطْفِئُوا نُورَكَ - وَيَتَخَفُوا عِرْضَكَ - وَإِنِّي مَعَكَ وَمَعَ أَهْلِكَ

अर्थात् "शत्रु लोग इरादा करेंगे कि तेरे प्रकाश को बुझो दें और तेरा अनादर करें। किन्तु मैं तेरे साथ हूंगा और उनके साथ जो तेरे साथ हैं।" और उन्हीं दिनों में मैंने देखा कि मैं एक कूचे में हूँ जो आगे से बन्द है और बहुत संकीर्ण कूचा है कि उसमें से बड़ी कठिनाई के साथ एक व्यक्ति गुज़र सकता है। मैं उस बन्द कूचे के अन्तिम भाग में जिसके आगे कोई मार्ग न था, दीवार के साथ खड़ा हो गया और जो वापस जाने का मार्ग था उसकी ओर जब दृष्टि उठाकर देखा तो क्या देखता हूँ कि तीन मोटे और शक्तिशाली सांड वहां खड़े हैं जो खूनी हैं और गुज़रने का मार्ग अवरुद्ध कर रखा है। उनमें से एक आक्रमण करता हुआ मेरी ओर दौड़ा। उसे मैंने हाथ से हटा दिया, फिर दूसरा आक्रमणकारी हुआ मैंने उसे भी हाथ से हटा दिया फिर तीसरा इतनी तीव्रता और जोश के साथ आया कि उसे

देख कर विश्वास होता था कि अब बचाव का कोई मार्ग नहीं परन्तु जब मेरे निकट आया तो दीवार के साथ लग कर खड़ा हो गया और मैं उसके साथ रगड़ कर उसके पास से गुज़र गया। इसी बीच अल्लाह तआला की ओर से कुछ वाक्य मेरे हृदय में डाले गए जिन्हें मैं पढ़ता जाता और दौड़ता जाता था और वे ये हैं -

رَبِّ كُلِّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِي وَأَنْصُرْنِي وَأَرْحَمْنِي

इस घटना को देखने के साथ ही मुझे यह बोध कराया गया कि कोई शत्रु मुकद्दमा चलाएगा और उसके तीन वकील होंगे तथा यह इल्हाम और कश्फ़ इस के प्रकट होने से पूर्व अखबार 'अलहकम' 1902 ई. अर्थात् अलहकम नम्बर 24 में प्रकाशित किया गया। बाद में करमदीन ने जेहलम में मुझ पर मुकद्दमा किया, मुझे वहां बुलाया गया वह मुकद्दमा फौजदारी और खतरनाक मुकद्दमा था और जैसा कि कश्फ़ी अवस्था में प्रकट किया गया उसके तीन वकील थे। अन्ततः खुदा के वादे के अनुसार उसका वह मुकद्दमा खारिज हुआ। देखो अखबार 'अलहकम' 1902 ई. संख्या 24, जिल्द 6^①

① मौलवी करमदीन के बारे में एक भविष्यवाणी विस्तारपूर्वक अखबार अलहकम में समय से पूर्व प्रकाशित हो चुकी है जिसका सारांश यह है कि एक फौजदारी मुकद्दमे में निचली अदालत मेरे विरुद्ध निर्णय करेगी फिर उच्च अदालत से मुझे बरी कर दिया जाएगा। अतः करमदीन ने जब मुझ पर गुरदासपुर में मुकद्दमा किया तो निचली अदालत अर्थात् आत्माराम की अदालत से मुझ पर पांच सौ रुपया जुर्माना हुआ। फिर उच्च अदालत अर्थात् साहिब डिवीज़नल जज की अदालत से वह आदेश निरस्त होकर सम्मानपूर्वक मुझे बरी किया गया और जज ने लिखा कि शब्द कज़ाब और लईम जो करमदीन के बारे में प्रयोग किए गए हैं वे यथायोग्य हैं और करमदीन इन शब्दों का पात्र है अपितु यदि इन शब्दों से बढ़कर और कठोर शब्द करमदीन के बारे में लिखे जाते तब भी वह उन शब्दों के योग्य था। ऐसे शब्दों से करमदीन की कोई मान-हानि नहीं हुई। यह भविष्यवाणी समय से बहुत पहले प्रकाशित की गई थी। इसी से।

181.^① एक सौ इक्यासी वां निशान - खुदा तआला ने मुझे सूचना दी कि तुम्हारे घर में एक लड़की जन्म लेगी और उसकी मृत्यु हो जाएगी और उसका नाम 'गासिक्र' रखा अर्थात् अस्त होने वाली। यह इस बात की ओर संकेत था कि बचपन में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाएगी। अतः इस भविष्यवाणी के अनुसार लड़की पैदा हुई और भविष्यवाणी के अनुसार बाल्यकाल में ही मृत्यु को प्राप्त हुई। देखो अखबार अलहकम संख्या 4, जिल्द 7

182. एक सौ ब्यासी वां निशान - मौलवी मुहम्मद फ़ज़ल साहिब अहमदी स्थान-चंगा, तहसील-गुजरखां, ज़िला-रावलपिण्डी से लिखते हैं कि एक दिन मई सन 1904 ई. को जब कि मैं कुछ लोगों के साथ जिनमें कुछ अहमदी और कुछ ग़ैर अहमदी थे। जुमा की नमाज़ अदा करके मस्जिद में बैठा हुआ था तो फ़ज़लदाद खां नम्बरदार नामक व्यक्ति निवासी चंगा जो मेरा सजातीय तथा परिजन में से था, एक व्यक्ति के बहकाने से मस्जिद में आकर मुझे अन्य अहमदियों सहित बुरा भला कहने लगा और कहा कि तुम लोग मस्जिद में नमाज़ न पढ़ा करो, मस्जिद को भ्रष्ट कर दिया है। तत्पश्चात् आंशिक समस्याओं का जो अहमदियों और ग़ैर अहमदियों में विवादित हैं चर्चा छेड़कर मेरे साथ वाद-विवाद प्रारंभ कर दिया मैंने उसे बौद्धिक एवं प्रमाणिक तर्कों द्वारा समझाया और भलीभांति दोषी ठहराया किन्तु वह झुठलाने पर हठधर्मी करता रहा और उसके बहकाने से प्रजा को मैंने अहमदियों के विरुद्ध उत्तेजित पाया तथा देखा कि वह व्यक्ति उपद्रव और लोगों में बिगाड़ पैदा करने से नहीं रुकता। उस समय मेरे हृदय में अत्यधिक बेचैनी एवं व्याकुलता पैदा हुई कि हे खुदा अब इस बात का क्या उपचार हो। इस व्यक्ति के द्वारा बहुत बड़ा उपद्रव होने वाला है। तब मैंने उसे अपना सम्बोध्य बना कर कहा कि यदि जिन समस्याओं का मैं वर्णन कर रहा हूँ उनमें झूठा हूँ तो खुदा तआला तुझ से पूर्व मुझे मृत्यु दे और यदि तू झूठा है तो खुदा तआला तुझे मृत्यु दे। अतः फ़ज़लदाद खां ने मुझे इन शब्दों के

① यह निशान पहले भी लिखा जा चुका है किन्तु अब यहां अतिरिक्त व्याख्या हेतु पुनः लिखा गया। इसी से।

साथ उत्तर दिया कि खुदा तुझे मृत्यु दे। फिर मैं उसी समय मस्जिद से बाहर आ गया और लोग चले गए। फिर कुछ दिनों के पश्चात् कथित व्यक्ति (अर्थात् फ़जलदाद खां) पेट दर्द की भयंकर पीड़ा से रोगग्रस्त हो गया और दस माह के अन्दर 24, मार्च 1906 ई. को मृत्यु के घाट उतर गया और अपनी मृत्यु से जमाअत अहमदिया की सच्चाई का निशान बतौर स्मृति छोड़ गया। कुछ समय तक मुबाहला में उपस्थित लोगों में उसकी मृत्यु से एक भय और दबदबा फैल गया था तथा मैंने अपने कुछ विरोधियों से भी अपने कानों से यह चर्चा सुनी कि इस व्यक्ति की मृत्यु बतौर निशान हुई है।

सेवक

विनीत मुहम्मद फ़जल अहमदी, स्थान-चंगा, तहसील-गूजरखान
ज़िला-रावलपिण्डी, 30, सितम्बर 1906 ई.

साक्षी मुबाहला व मृत्यु

साक्षी

साक्षी

फ़जल दाद खान
निजामुद्दीन दर्जी निशान अंगूठा

फ़जलखान बक्रलम खुद
उपरोक्त बयान सही है।

शाह वली खान बक्रलम खुद
उपरोक्त बयान सही है।

183. एक सौ तिरासी वां निशान - वही मुहम्मद फ़जल साहिब अहमदी स्थान-चंगा से लिखते हैं कि एक सज्जन करीमुल्लाह जो गूजरखान क्षेत्र के डाक विभाग के इन्स्पेक्टर थे। जून माह 1904 ई. को स्थान चंगा में मियां गुलाम नबी सब पोस्ट मास्टर चंगा के मकान पर उतरे। मैं उनको सम्मानित और शिक्षित समझ कर उनके पास गया। तब उन्होंने मुझे देखकर खुदा तआला के चुने हुए पवित्र इंसान अर्थात् हज़रत मसीह मौरुद अलैहिस्सलाम के बारे में कुछ तिरस्कारपूर्ण शब्द कहने प्रारंभ किए और फिर आप अलैहिस्सलाम के बारे में आरोपों में बड़े गन्दे शब्दों का प्रयोग किया और मेरे साथ मुबाहसा प्रारंभ कर दिया। गांव के बहुत से लोग एकत्र हो गए। मैंने उसकी बातों का सभ्यतापूर्वक उत्तर दिया, उसने हज़रत आप अलैहिस्सलाम के बारे में व्यंग एवं अपहास करना आरंभ कर दिया और मुझे कहा कि चालीस दिन के अन्दर तुम्हें भारी हानि पहुंचेगी और बड़ी क्षति होगी और सब

लोग देखेंगे। मैंने उत्तर दिया कि तुम्हारी भविष्यवाणी निरर्थक है। मेरा खुदा रक्षक है किन्तु स्मरण रखो कि मसीह मौऊद के मुकाबले पर जो मनुष्य धृष्टता करता है खुदा उसे दण्ड देगा। मैं यह कह कर उस गन्दी सभा से उठ कर चला आया। थोड़े दिनों के पश्चात् सुना गया कि उस इन्स्पेक्टर के घर में सेंध लगी और उस का बहुत सा प्रिय धन चोरी हो गया। तत्पश्चात् गूजरखान के क्षेत्र में प्रजा ने उसकी शिकायतें आरंभ कर दीं। अतः वह इसके पश्चात् एक सीमांत क्षेत्र में उसका स्थानांतरण किया गया।

सेवक

मुहम्मद फ़जल अहमदी स्थान-चंगा, तहसील गूजरखान, ज़िला रावलपिण्डी

साक्षी

साक्षी

साक्षी

फ़जल दाद खान

फ़जलखान बक़लम खुद

शाह वली खान बक़लम खुद

निज़ामुद्दीन दर्जी

शाह वली खान बक़लम खुद फ़जल खान बक़लम खुद

184. एक सौ चौरासी वां निशान - एक बार मेरी पत्नी के सगे भाई सय्यद मुहम्मद इस्माईल का (जो इस समय सहायक सर्जन हैं) पटियाला से पत्र आया जिसमें लिखा था कि मेरी मां का निधन हो गया है और पत्र के अन्त में यह भी लिखा था कि मेरा छोटा भाई इस्हाक़ का भी देहान्त हो गया है और बल दिया था कि पत्र को देखते ही तुरन्त चले आएँ। संयोग ऐसा हुआ कि वह पत्र ऐसे समय में पहुंचा कि जब स्वयं मेरे घर के लोग तीव्र ज्वर की अवस्था में थे और मुझे भय था कि यदि उनको इस पत्र की सूचना दी जाएगी तो प्राण का ख़तरा है। तब मेरा हृदय अत्यधिक व्याकुल हो गया। उस व्याकुलता की अवस्था में मुझे खुदा तआला की ओर से सूचना दी गई कि मृत्यु की यह सूचना सही नहीं है। मैंने इस इल्हाम से स्वर्गीय अब्दुल करीम साहिब, शैख़ हामिद अली एवं बहुत से लोगों को अवगत किया। तत्पश्चात् शैख़ हामिद अली को जो मेरा कर्मचारी है पटियाला में भेजा तो ज्ञात हुआ कि वास्तविकता इसके विपरीत थी। विचार करने का स्थान है कि खुदा के बिना किसी को परोक्ष की बातों का ज्ञान नहीं होता और यह खुदा तआला ने एक

ऐसी परोक्ष की सूचना दी जिसने पत्र के लेख का खण्डन कर दिया।

185. एक सौ पचासी वां निशान - कुछ निशान इस प्रकार के होते हैं कि उनके प्रकट होने में एक मिनट का भी विलम्ब नहीं होता कि तुरंत प्रकट हो जाते हैं और उन में साक्षी का पैदा होना बहुत कम ही उपलब्ध हो पाता है। इसी प्रकार का यह एक निशान है कि एक दिन प्रातः काल की नमाज़ के पश्चात् मुझ पर कशफ़ की अवस्था छा गई। मैंने उस कशफ़ की अवस्था में देखा कि मेरा पुत्र मुबारक अहमद बाहर से आया है और मेरे निकट जो एक चटाई पड़ी हुई थी उसके साथ पैर फिसल कर गिर पड़ा है और उसे बहुत चोट लगी है तथा पूरा कुर्ता रक्त से भर गया है। मैंने उस समय मुबारक अहमद की मां के पास जो उस समय मेरे पास खड़ी थीं यह कशफ़ वर्णन किया तो अभी मैं वर्णन ही कर पाया था कि मुबारक अहमद एक ओर से दौड़ता हुआ आया। चटाई के पास पहुँचा तो चटाई से पैर फिसल कर गिर पड़ा और बड़ी चोट लगी और पूरा कुर्ता रक्त से भर गया और एक मिनट के अन्दर ही यह भविष्यवाणी पूर्ण हो गई। एक मूर्ख कहेगा कि अपनी पत्नी की साक्ष्य का क्या विश्वास है तथा नहीं जानता कि प्रत्येक व्यक्ति स्वाभाविक तौर पर अपने ईमान की रक्षा करता है और नहीं चाहता कि खुदा तआला की शपथ खाकर फिर झूठ बोले। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अधिकतर चमत्कारों के साक्षी आप के मित्र और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियां थीं। ऐसी स्थिति में वे चमत्कार भी असत्य ठहरते हैं और अधिकतर चमत्कारों के देखने वाले यही लोग होते हैं, क्योंकि हर समय साथ रहने का संयोग उन्हीं को होता है, शत्रुओं को कहां प्राप्त हो सकता है कि वे इन निशानों को देख सकें जो एक ओर भविष्यवाणी द्वारा बताए जाते तथा दूसरी ओर अविलम्ब पूर्ण हो जाते हैं। शत्रु का तो हृदय भी दूर होता है और शरीर भी दूर।

186. एक सौ छियासी वां निशान - इसी प्रकार लगभग तीन वर्ष का समय हुआ है कि प्रातः काल कशफ़ी तौर पर मुझे दिखाया गया कि मुबारक अहमद बहुत चकित तथा हतबुद्धि होकर मेरे पास दौड़ा आया है और बहुत व्याकुल है और होश

उड़े हुए हैं और कहता है कि अब्बा पानी अर्थात् मुझे पानी दो! यह कश्फ़ मैंने न केवल घर के लोगों को अपितु बहुत से लोगों को सुना दिया था क्योंकि उसके घटित होने में लगभग दो घंटे शेष थे। तत्पश्चात् उसी समय हम बाग़ में गए और लगभग प्रातः 8 बजे का समय था और मुबारक अहमद भी साथ था तथा वह कई दूसरे छोटे बच्चों के साथ बाग़ के एक कोने में खेलता था और आयु लगभग चार वर्ष की थी। उस समय मैं एक वृक्ष के नीचे खड़ा था। मैंने देखा कि मुबारक अहमद जोर से मेरी ओर दौड़ता चला आता है और बहुत हतबुद्धि हो रहा है। मेरे सामने आकर उसके मुख से मात्र इतना निकला कि अब्बा पानी। तत्पश्चात् अर्धमूर्छित अवस्था में हो गया और वहां से कुआं लगभग पचास क़दम की दूरी पर था। मैंने उसे गोद में उठा लिया और मुझ से जहां तक हो सका मैं बड़ी तीव्रता से कुएं तक पहुँचा और उसके मुख में पानी डाला। जब उसे होश आया और कुछ आराम आया तो मैंने उस से इस घटना का कारण पूछा तो उसने कहा कि कुछ बच्चों के कहने से मैंने बहुत सा पिसा हुआ नमक फाँक लिया और मस्तिष्क पर ज्वर चढ़ गया तथा सांस रुक गई और गला घोंटा सा गया। अतः इस प्रकार से ख़ुदा ने उसे स्वस्थ किया और कश्फ़ी भविष्यवाणी पूर्ण की।

187. एक सौ सतासी वां निशान - मेरे बड़े भाई जिनका नाम मिर्ज़ा गुलाम कादिर था, कुछ समय तक रोग्रस्त रहे जिससे अन्ततः उनका स्वर्गवास हुआ। जिस दिन उनकी मृत्यु प्रारब्ध थी प्रातः मुझे इल्हाम हुआ कि “जनाज़ा”, यद्यपि कि उनकी मृत्यु के कुछ लक्षण न थे किन्तु मुझे समझाया गया कि वह आज मृत्यु पा जाएंगे। मैंने अपने विशेष साथियों को इस भविष्यवाणी की सूचना दे दी जो अब तक जीवित हैं। सायंकाल के निकट मेरे भाई का निधन हो गया।

इन समस्त भविष्यवाणियों में जो यहां लिखी गई हैं, मैंने संक्षेप को दृष्टिगत रखते हुए बहुत कम गवाहों की चर्चा की है किन्तु ख़ुदा तआला की कृपा से कई हजार लोग गवाह हैं जिनके सामने भविष्यवाणियां की गईं और पूर्ण हुईं।

मेरा इरादा था कि इन निशानों को इस पुस्तक में तीन सौ तक लिखूं और वे

समस्त निशान जो मेरी पुस्तक “नुजूलुल मसीह” और “तिरयाकुलकुलूब” इत्यादि में लिखे गए हैं तथा अन्य नए निशान इसमें इतने लिख दूँ कि तीन सौ की संख्या पूर्ण हो गई परन्तु तीन दिनों से मैं बीमार हो गया हूँ और आज 29, सितम्बर 1906 ई. को रोग की गंभीरता तथा अत्यंत कमजोरी है कि मैं लिखने से असमर्थ हो गया हूँ। यदि खुदा ने चाहा तो बराहीन अहमदिया के पंचम भाग में तीन सौ निशान या इससे कुछ अधिक लिखे जाएंगे। अन्ततः इतना लिखना आवश्यक समझता हूँ कि यदि इन निशानों से किसी की हार्दिक संतुष्टि न हो और ऐसा व्यक्ति उन लोगों में से हो जो इल्हाम और वह्यी का दावा करते हैं तो उसके लिए यह दूसरा मार्ग खुला है कि वे मेरे मुकाबले पर अपने इल्हाम अपनी जाति के दो समाचारपत्रों में एक वर्ष तक प्रकाशित करता रहे और दूसरी ओर मैं वे समस्त परोक्ष की बातें जो मुझे खुदा की ओर से ज्ञात हों अपनी जमाअत के दो अखबारों में प्रकाशित करूँ तथा दोनों पक्षों के लिए शर्त यह है कि जो इल्हाम अखबारों में लिखा जाए वे ऐसे हों कि उनमें से प्रत्येक परोक्ष के मामलों पर आधारित हो और वे परोक्ष के ऐसे मामले हों जो मानव-शक्तियों से श्रेष्ठतर हों और फिर एक वर्ष के पश्चात् कुछ न्यायविदों के द्वारा देखा जाएगा कि किस ओर प्रभुत्व और अधिकता है और किस पक्ष की भविष्यवाणियां पूर्ण हो गई हैं तथा इस परीक्षा के पश्चात् यदि विरोधी पक्ष का प्रभुत्व रहा और मेरा प्रभुत्व न हुआ तो मैं झूठा ठहरूंगा अन्यथा लोगों पर अनिवार्य होगा खुदा से भयभीत होकर भविष्य में झुठलाने और इन्कार करने के मार्ग को त्याग दें तथा खुदा के भेजे हुए का मुकाबला करके अपनी आखिरत को खराब न करें। स्मरण रहे कि जो आपत्तियां वे प्रस्तुत करते हैं यदि उन से कुछ सिद्ध होता है तो केवल यही सिद्ध होता है कि उनके हृदय द्वेष के अंधकार से भर गए हैं और उनके नेत्रों पर द्वेष और ईर्ष्या के आवरण आ गए हैं। उदाहरणतया बार-बार यह प्रस्तुत करना कि डिप्टी आथम के बारे में भविष्यवाणी पूर्ण नहीं हुई क्या यह ईमानदारी का आरोप है कि आथम के बारे में भविष्यवाणी पूर्ण नहीं हुई। क्या यह सत्य नहीं है कि ग्यारह वर्ष से भी अधिक समय हो चुका है कि आथम

की मृत्यु हो गई और अब पृथ्वी पर उस का नाम व निशान नहीं और उसका अपनी बातों से लौटना लगभग सत्तर लोगों की साक्ष्य से सिद्ध है जब कि उसने आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुबाहसा (शास्त्रार्थ) की सभा में दज्जाल कहने से पश्चाताप किया और फिर पन्द्रह महीने तक रोता रहा। यह भविष्यवाणी शर्त वाली थी जैसा कि भविष्यवाणी के ये शब्द थे कि इस शर्त पर कि सच्चाई की ओर न लौटे। फिर जब कि उसने अपने कथनों से वापसी की ओर उन गवाहों के समक्ष अपने पूर्व कथनों से लौटा जिनमें से बहुत से अब तक जीवित हैं, फिर अब तक आरोप खड़े करने से न रुकना क्या किसी पवित्र आचरण वाले व्यक्ति का लक्षण है।

इसी प्रकार केवल द्वेष और मूर्खतावश यह अपत्ति खड़ी करते हैं कि अहमद बेग के दामाद के संबंध में भी भविष्यवाणी पूर्ण नहीं हुई और ईमानदारी की दशा यह है कि इस आपत्ति के समय अहमद बेग का नाम भी नहीं लेते कि उस पर कैसी वास्तविकता गुजरी तथा केवल बेईमानी से भविष्यवाणी की एक टांग (भाग) गुप्त रख कर दूसरी टांग प्रस्तुत कर देते हैं और जान-बूझ कर लोगों को धोखा देते हैं। वास्तविकता यह है कि इस भविष्यवाणी की दो शाखाएं थीं। एक शाखा अहमद बेग से संबद्ध और दूसरी अहमद बेग के दामाद से सम्बद्ध। अतः अहमद बेग भविष्यवाणी के अनुसार निर्धारित समय सीमा के अन्दर मृत्यु पा गया और उसकी मृत्यु से उसके वारिसों के हृदयों को बहुत आघात पहुंचा और भयभीत हो गए और यह तो मानव-प्रकृति है कि जब दो व्यक्ति एक ही विपत्ति में (जो आने वाली हो) ग्रस्त हों और उन में से एक उस विपत्ति के आने से मृत्यु का शिकार हो जाए तो जो व्यक्ति अभी जीवित है वह और उसके वारिस बहुत भय और शंका में पड़ जाते हैं। चूंकि यह भविष्यवाणी अपने अन्दर शर्त रखती थी^① जैसा कि आथम की भविष्यवाणी सशर्त थी, इसलिए जब अहमद

① इस भविष्यवाणी में इल्हाम की शर्त यह थी जो उसी समय में प्रकाशित हो चुकी है

أَيُّهَا الْمَرَأَةُ تَوَيُّ تَوَيُّ فَإِنَّ الْبَلَاءَ عَلَى عَقِبِكَ۔

बेग की मृत्यु से वे लोग बहुत भय और संशय में पड़ गए तथा दुआएं कीं और दान भी दिए और कुछ के विनय और करुणा से भरे हुए पत्र मेरे पास आए जो अब तक मौजूद हैं इसलिए खुदा तआला ने अपनी शर्त को पूर्ण करने के लिए इस भविष्यवाणी में विलम्ब डाल दिया। खेद तो यह है कि ये लोग जो अहमद बेग के दामाद के बारे में स्थान-स्थान पर शोर मचाते हैं और सैकड़ों पत्रिकाओं और अखबारों में उसकी चर्चा करते हैं। कभी एक बार भी सभ्यता एवं ईमानदारी की दृष्टि से पूर्णरूप से भविष्यवाणी की चर्चा नहीं करते और कभी किसी पत्रिका में नहीं लिखते कि इस भविष्यवाणी की दो शाखाएं थीं। उनमें से एक शाखा निर्धारित समय के अन्दर पूर्ण हो चुकी है अर्थात् अहमद बेग की मृत्यु अपितु हमेशा और प्रत्येक स्थान एवं प्रत्येक अवसर और प्रत्येक सभा में, प्रत्येक पत्रिका, प्रत्येक समाचार पत्र में अहमद बेग के दामाद को ही रोते हैं और जो मृत्यु का शिकार हो गया उस पर नहीं रोते। यह सभ्यता और ईमानदारी इस युग के मौलवियों के ही भाग में आ गई है।

इसी प्रकार एक आपत्ति यह भी करते हैं कि एक भविष्यवाणी में मौलवी मुहम्मद हुसैन और उसके मित्रों के बारे में अपमान की सूचना दी गई थी उसका कुछ अपमान नहीं हुआ। खेद! कि इन लोगों को ज्ञात नहीं कि प्रत्येक वर्ग का अपमान अलग रूप में होता है। क्या मौलवी मुहम्मद हुसैन वही नहीं हैं जिन्होंने कहा था कि “मैंने ही इस व्यक्ति को ऊंचा किया और फिर मैं ही गिराऊंगा”। अतः क्या उन्होंने गिरा दिया? क्या मौलवी मुहम्मद हुसैन वही नहीं हैं जिन्होंने कहा था कि उनको अरबी भाषा की थोड़ी सी भी व्याकरण नहीं आती। जब मैं बीस के लगभग अरबी पद्य और गद्य में

अर्थात् हे स्त्री तौबा कर तौबा कर क्योंकि विपत्ति तेरी पुत्री और पुत्री की पुत्री पर आने वाली है। अतः उसकी पुत्री पर तो विपत्ति आई कि उसका पति मिर्जा अहमद बेग मृत्यु का शिकार हो गया, परन्तु अहमद बेग की मृत्यु के उपरान्त भय, दुआ और दान-पुण्य के कारण पुत्री की पुत्री उस विपत्ति के आने से उस समय तक बचाई गई जो खुदा तआला के ज्ञान में है। इसी से।

पुस्तकों की रचना की और उन्हें इसके मुक़ाबले पर लिखने के लिए आमंत्रित किया गया तो वह मेरे मुक़बले पर एक पुस्तक भी न लिख सके। क्या मौलवी मुहम्मद हुसैन वही नहीं, जिनको मैंने इस बात के लिए आमंत्रित किया? कि वह मेरे सामने एक साथ बैठकर पवित्र कुर्आन की तफ़्सीर (व्याख्या) अरबी भाषा में लिखें तो वह इस मुक़ाबले से असमर्थ हो गए। इसी प्रकार उनकी घरेलू आन्तरिक कटुताएं एवं अपमान ऐसे हैं जिनको लिखना हम उचित नहीं समझते। अतः इन समस्त बातों के बावजूद उनका कोई अपमान नहीं हुआ और न मालूम भविष्य में क्या प्रारब्ध है क्योंकि अज़ाब की भविष्यवाणी में किसी समय का दृष्टिगत होना आवश्यक नहीं होता वरन् तौबा और क्षमा याचना से टल भी सकती है।^①

इसके अतिरिक्त यह भी स्मरण रखना चाहिए कि ये कुछ भविष्यवाणियां जो तीन-चार से अधिक नहीं, जिनके लिए हमारे विरोधी मौलवी शोर मचाते हैं। ये अज़ाब की भविष्यवाणियां हैं और अज़ाब की भविष्यवाणियों का पूर्ण होना कुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों के अनुसार आवश्यक नहीं, क्योंकि वे किसी विपत्ति के आने की सूचना देती हैं तथा एक लाख चौबीस हजार नबियों की सर्व सहमति के अनुसार प्रत्येक विपत्ति दान-पुण्य, दुआ, गिड़गिड़ाने और ख़ुदा के आगे रोने से टल सकती

① अल्लाह तआला का पवित्र कुर्आन में कथन है -

وَإِنْ يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۖ وَإِنْ يَكُ صَادِقًا يُصِبْكُمْ
بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ ۖ (अलमोमिन - 29)

अर्थात् यदि यह नबी झूठा है तो स्वयं तबाह हो जाएगा और यदि सच्चा है तो उसकी अज़ाब की कुछ भविष्यवाणियां तुम पर पूरी हो जाएंगी। यहां यह नहीं कहा कि सभी पूरी हो जाएंगी। अतः यहां ख़ुदा ने स्पष्ट तौर पर कहा है कि अज़ाब की समस्त भविष्यवाणियों का पूर्ण होना आवश्यक नहीं अपितु कुछ टल भी सकती है और यदि ऐसा इरादा न होता तो ख़ुदा तआला यह कहता -

وَإِنْ يَكُ صَادِقًا يُصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ

परन्तु ऐसा नहीं कहा। इसी से।

है। यह बात एक कम बुद्धि वाला मनुष्य भी समझ सकता है कि जब एक विपत्ति जिसे उतारने का खुदा ने इरादा किया है खुदा के ज्ञान तक ही सीमित रहे और किसी नबी को उस से अवगत न किया जाए तो केवल विपत्ति का नाम दिया जाता है और जब नबी को उस विपत्ति की सूचना दी जाए तो फिर वही विपत्ति अज्ञाब की भविष्यवाणी कहलाती है। अतः यदि अज्ञाब की भविष्यवाणी का पूर्ण होना बहरहाल आवश्यक है तो इस से स्वीकार करना पड़ता है कि विपत्ति का आना बहरहाल आवश्यक है।^① हालांकि अभी हम वर्णन कर चुके हैं कि दान-पुण्य, और दुआ इत्यादि से विपत्ति टल सकती है और इस बात पर समस्त नबियों की सर्वसम्मति है। अतः ये लोग मौलवी कहला कर मुझ पर ऐसे नीचतापूर्ण आक्रमण करते हैं यह बड़ी आश्चर्य की बात है और हैरानी होती है कि क्या ये लोग कभी कुर्आन भी नहीं पढ़ते और क्या कभी हदीसों को नहीं देखते? क्या इनको यूनस नबी की भविष्यवाणी भी स्मरण नहीं जिसका विस्तृत वृत्तान्त पुस्तक “दुर्रे मन्सूर” में भी लिखा गया है जिसके साथ कोई शर्त मौजूद न थी किन्तु फिर भी तौबा करने से वे सब लोग अज्ञाब से बचाए गए और यूनस इसके बावजूद कि वह खुदा का नबी था जब उसके हृदय में आया कि मेरी भविष्यवाणी क्यों पूरी नहीं हुई और क्यों वे लोग तबाह नहीं किए गए तो चेतावनी के तौर पर उस पर अज्ञाब उतारा गया तथा उस ने इस आपत्ति के कारण बहुत बड़े कष्ट उठाए और फिर जबकि उस पवित्र हृदय रखने वाले नबी ने इस

① जिस विपत्ति से अल्लाह तआला किसी नबी अथवा रसूल या मुहद्दिस के द्वारा सूचना देता है वह ऐसी विपत्ति से अधिक रद्द होने योग्य होती है जिसकी सूचना नहीं दी जाती, क्योंकि सूचना देने से समझा जाता है कि खुदा तआला का यह इरादा है कि यदि कोई व्यक्ति तौबा, क्षमा याचना, दुआ या दान करे तो वह विपत्ति टाल दी जाए और यदि अज्ञाब की भविष्यवाणी टल नहीं सकती तो यह कहना पड़ेगा कि विपत्ति टल नहीं सकती और यह बात धार्मिक आस्थाओं के विपरीत है तथा इस अवस्था में यह आस्था रखनी पड़ेगी कि विपत्ति के आते समय दान-पुण्य, तौबा और दुआ सब व्यर्थ है। इसी से।

आपत्ति के कारण इतने कष्ट उठाए तो उन लोगों की क्या दशा होगी जो शर्त वाली भविष्यवाणियों के संबंध में बारम्बार आपत्ति खड़ी करते हैं और रुकते नहीं। यदि उनके हृदयों में खुदा का भय होता तो यूनस की भविष्यवाणी से कोई शिक्षा ग्रहण करते तथा इतने अपशब्द और चपलता का प्रदर्शन न करते और यदि उनके अन्दर संयम का कुछ तत्त्व होता तो ये लोग विचार करते कि जिन भविष्यवाणियों पर उन्होंने आपत्ति की है वे तो मात्र दो तीन हैं और उनकी तुलना में वे भविष्यवाणियां जो अपनी सच्चाई दिखा कर उनके मुख पर थप्पड़ मार रही हैं तो वे सैकड़ों अपितु हज़ारों और लाखों तक पहुँच गई हैं। यह तो विचार करने का स्थान था कि अधिकता किस ओर है।^① क्या वे इस बात का प्रमाण प्रस्तुत कर सकते हैं कि उन्होंने जिस प्रकार की

① हमने इस पुस्तक में खुदा तआला के 187 निशान लिखे हैं। ये वे निशान हैं जो कोई काल्पनिक बात नहीं अपितु प्रायः ये भविष्यवाणियां घटनापूर्व अखबारों और पुस्तकों में प्रकाशित की गई हैं और उनके गवाह हज़ारों की संख्या में अब तक मौजूद हैं। ये सब वे बातें हैं जो मानव-शक्ति से श्रेष्ठतर हैं। यदि खुदा के चमत्कारों और भविष्यवाणियों का सम्पूर्ण भण्डार किसी पूर्वकालीन इस्राईली नबी की किताबों में ढूँढा जाए तो मैं दावे के साथ कहता हूँ कि किसी इस्राईली नबी की जीवनी में इसका उदाहरण नहीं मिलेगा और यदि मान भी लें तो उन निशानों के देखने वाले गवाह कहां से लाएंगे? और सूचना आंखों देखी बात के समरूप नहीं हो सकती। ईसाई बार-बार हज़रत मसीह के मुर्दों को जीवित करने के चमत्कार प्रस्तुत करते हैं परन्तु प्रमाण एक का भी नहीं। न किसी मुर्दे ने आकर परलोक (आखिरत) का वृत्तान्त सुनाया या स्वर्ग-नर्क का यथार्थ प्रकट किया या परलोक के आंखों देखे चमत्कारों के बारे में कोई पुस्तक प्रकाशित की या अपनी साक्ष्य से फ़रिश्तों के अस्तित्व का प्रमाण दिया अपितु मुर्दों से अभिप्राय वे लोग हैं जो आध्यात्मिक या शारीरिक तौर पर मुर्दों के समान थे, फिर जैसे दुआ के माध्यम से नया जीवन पाया। यही हाल हज़रत ईसा के पक्षी बनाने का है। यदि वह वास्तविक पक्षी बनाते तो एक संसार उनकी ओर उमड़ पड़ता, फिर सलीब तक क्यों नौबत पहुँचती और क्या संभव था कि ईसाई लोग जो हज़रत ईसा के खुदा बनाने पर लोलुप हैं वे ऐसे बड़े खुदा के निशान को छोड़ देते अपितु वे तो एक

कोई आपत्ति उन भविष्यवाणियों के बारे में या किसी विवेचना के निष्कर्ष में ग़लती के बारे में की है दूसरे नबियों की भविष्यवाणियों में उसका उदाहरण नहीं पाया जाता? क्या वे नहीं जानते कि दूसरे नबियों को छोड़ कर स्वयं हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो समस्त नबियों से श्रेष्ठतम एवं ख़ातमुल अंबिया थे इस प्रकार की विवेचनात्मक ग़लती से सुरक्षित नहीं रहे। क्या हुदैबिया की यात्रा विवेचना की ग़लती नहीं थी ? क्या यमामा या हिजर को अपने प्रवास का स्थान समझना विवेचना की ग़लती न थी क्या और भी विवेचना की ग़लतियां न थीं जिनका उल्लेख करना विस्तार का कारण है। अतः इस प्रकार के नीचतापूर्ण आक्रमण जिनकी परिधि में आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी आ जाते हैं किसी मुसलमान का कार्य नहीं अपितु उन लोगों का कार्य है जो वास्तव में इस्लाम के शत्रु हैं।

फिर एक अन्य मूर्खता यह है कि अशिक्षित एवं असभ्य लोगों को भड़काने के लिए कहते हैं कि इस व्यक्ति ने नबी होने का दावा किया है। हालांकि यह उनका सर्वथा गढ़ा हुआ झूठ है अपितु जिस नुबुव्वत का दावा करना पवित्र कुर्आन की दृष्टि से निषेध ज्ञात होता है ऐसा कोई दावा नहीं किया गया। केवल यह दावा है कि एक पहलू से मैं उम्मत हूँ और एक पहलू से मैं आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नुबुव्वत के वरदान के कारण नबी हूँ तथा नबी से अभिप्राय केवल यह है कि ख़ुदा तआला से बड़ी प्रचुरता के साथ वार्तालाप एवं सम्बोधन का सम्मान पाता हूँ। बात यह है कि जैसा कि मुजद्दिद सरहिन्दी साहिब ने अपने पत्रों में लिखा है कि यद्यपि इस उम्मत के कुछ लोग ख़ुदा के वार्तालाप एवं सम्बोधनों से विशेष्य हैं और प्रलय तक विशेष्य रहेंगे परन्तु जिस व्यक्ति को बड़ी प्रचुरता के साथ वार्तालाप एवं सम्बोधन से सम्मानित किया जाए और उस पर बड़ी प्रचुरता के साथ परोक्ष की बातें प्रकट की जाएं वह नबी

शेष हाशिया:- तिनके का पहाड़ बना देते। इस से स्पष्ट है यह घटना जो पवित्र कुर्आन में लिखी है अपने प्रत्यक्ष अर्थों पर चरितार्थ नहीं अपितु इससे कोई हल्की बात अभिप्राय है जो अपने अन्दर बहुत महत्त्व नहीं रखती। इसी से।

कहलाता है। अतः स्पष्ट हो कि हदीसों में यह भविष्यवाणी की गई है कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में से एक व्यक्ति पैदा होगा जो ईसा और इब्ने मरयम कहलाएगा और उसे नबी का नाम दिया जाएगा अर्थात् उसे इस प्रचुरता से वार्तालाप एवं सम्बोधन का सम्मान प्राप्त होगा और उस पर इस प्रचुरता से परोक्ष की बातें प्रकट होंगी कि नबी के अतिरिक्त किसी अन्य पर प्रकट नहीं हो सकतीं। जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है -

فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبَةٍ أَحَدًا ۝ إِلَّا مَن ارْتَضَىٰ مِن رَّسُولٍ^①

अर्थात् खुदा अपने ग़ैब (परोक्ष) पर किसी को पूर्ण सामर्थ्य प्रभुत्व नहीं देता जो प्रचुरता और स्पष्टतापूर्वक प्राप्त हो सकता है सिवाए उस व्यक्ति के जो उसका चुना हुआ रसूल हो और यह बात एक प्रमाण है कि खुदा तआला ने जितनी अधिकता के साथ मुझ से वार्तालाप और सम्बोधन किया है और जितनी परोक्ष की बातें मुझ पर प्रकट की हैं तेरह सौ वर्ष हिज्री में किसी व्यक्ति को आज तक मेरे अतिरिक्त यह ने'मत प्रदान नहीं की गई। यदि कोई इन्कारी हो तो प्रमाण का भार उसकी गर्दन पर है।

निष्कर्ष यह कि खुदा की इस प्रचुरता के साथ वह्यी एवं परोक्ष की बातों में इस उम्मत में मैं ही एक व्यक्ति विशेष्य हूं और मुझ से पूर्व जितने वली, अब्दाल और कुतुब इस उम्मत में हुए हैं उन्हें इस ने'मत का यह प्रचुर भाग प्रदान नहीं किया गया। अतः इस कारण नबी का नाम पाने के लिए मैं ही विशेष्य किया गया और अन्य समस्त लोग इस नाम पाने के अधिकारी नहीं, क्योंकि वह्यी की प्रचुरता तथा परोक्ष की बातों की अधिकता इस में शर्त है और वह शर्त उनमें नहीं पाई जाती। अवश्य था कि ऐसा होता कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी स्पष्टतापूर्वक पूर्ण हो जाती क्योंकि यदि दूसरे सुधारक जो मुझ से पूर्व गुज़र चुके हैं वे भी इतनी प्रचुर मात्रा में खुदा के वार्तालाप एवं सम्बोधन तथा

① अलजिन्न - 27, 28

परोक्ष की बातों से भाग पा लेते तो वे नबी कहलाने के अधिकारी हो जाते^① तो अतः इस अवस्था में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी में एक विघ्न पड़ जाता। इसलिए ख़ुदा तआला की नीति ने उन महानुभावों को इस ने'मत को पूर्ण रूप से पाने से रोक दिया। जैसा कि सही हदीसों में आया है कि ऐसा व्यक्ति एक ही होगा वह भविष्यवाणी पूरी हो जाए। स्मरण रहे कि हमने केवल उदाहरण स्वरूप इस पुस्तक में कुछ भविष्यवाणियों का उल्लेख किया है किन्तु वास्तव में वे भविष्यवाणियां कई लाख हैं जिन का क्रम अभी तक समाप्त नहीं हुआ और ख़ुदा की वाणी मुझ पर इतनी प्रचुर मात्रा में उतरी है कि उस सब का उल्लेख किया जाए तो बीस भाग से कम नहीं होगी। अब हम इसी पर पुस्तक को समाप्त करते हैं और ख़ुदा तआला से चाहते हैं कि इसमें अपनी ओर से बरकत डाले तथा लाखों हृदयों को इसके द्वारा हमारी ओर आकृष्ट करे। तथास्तु !

واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين

समाप्तम

① ख़ुदा की वाणी में यह बात निश्चित थी कि इस उम्मत का दूसरा भाग वह होगा जो मसीह मौऊद की जमाअत होगी। इसलिए ख़ुदा तआला ने इस जमाअत को दूसरों से अलग करके वर्णन किया है जैसा कि उसका कथन है

والآخرين منهم لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ (अलजुमा-4)

अर्थात् मुहम्मद^स की उम्मत में से एक अन्य वर्ग भी है जो बाद में अन्तिम युग में आने वाले हैं और सही हदीस में है कि इस आयत के उतरने के समय आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना हाथ सलमान फ़ारसी की पीठ पर मारा और कहा -

لو كان الايمان معلقاً بالثريالنا له رجلٌ من فارس

और यह मेरे बारे में भविष्यवाणी थी, जैसा कि ख़ुदा तआला ने बराहीन अहमदिया में इस भविष्यवाणी के सत्यापन के लिए वही हदीस बतौर वह्यी मुझ पर उतारी तथा वह्यी के अनुसार मुझ से पूर्व इसका कोई चरितार्थ निश्चित न था और ख़ुदा की वह्यी ने मुझे निश्चित कर दिया। प्रत्येक प्रशंसा ख़ुदा के लिए है। इसी से।

नज़्म

چوں مرا حکم از پئے قوم مسیحی داده اند
مصلحت را ابن مریم نام من بناده اند

अनुवाद - जब मुझे ईसाई जाति के सुधार के लिए आदेश दिया गया है, तो इसी कारण से मेरा नाम भी इब्ने मरयम रखा गया है।

آسمان بارو نشان الوقت می گوید زمین
این دو شاهد از پئے تصدیق من استاده اند

आकाश से निशानों की वर्षा हो रही है और पृथ्वी कह रही है कि यही समय है। ये दोनों गवाह मेरे सत्यापन के लिए खड़े हैं।*

بے ضرورت نامدم نے آدم در غیر وقت
در من از جہل و تعصب قوم من افتاده اند

न तो मैं आवश्यकता के बिना आया हूँ और न असमय। मेरी क्रौम अनभिज्ञता के और द्वेष के कारण मुझ से झगड़ा कर रही है।

سوئے من اے بدگمان از بدگمانی هابمین
فتنه هابنکرچه قدر اندر ممالک زاده اند

हे कुधारणा रखने वाले, कुधारणा से मेरी ओर न देख, उपद्रवों की ओर देख कि प्रत्येक देश में कितने अधिक पैदा हो गए हैं।

چون زمیں بکشود یاران صد در فسق و فساد
پس درے از بهر آن از آسمان بکشاده اند

हे मित्रो जब पृथ्वी ने सैकड़ों उपद्रवों के द्वार खोल दिए तो एक द्वार आकाश से भी खोला गया है।

विनीत

गुलाम मोहम्मद कातिब अमृतसर 1 अक्टूबर 1906 ई

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुह व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

खुदा सच्चे का समर्थक हो

तथास्तु (आमीन)

इस बात से अधिकांश लोग परिचित होंगे कि डाक्टर अब्दुल हकीम खान साहिब जो लगभग बीस वर्ष तक मेरे मुरीदों में से थे कुछ दिनों से मुझ से अवज्ञाकारी होकर कट्टर विरोधी हो गए हैं और अपनी पुस्तक 'अलमसीहुद्दज्जाल' में मेरा नाम महाझूठा, धोखेबाज़, शैतान, दज्जाल, चपल, कृतघ्न रखा है और मुझे बेईमान और स्वार्थी, भोग-विलासी, उपद्रवी, झूठ गढ़ने वाला तथा खुदा पर झूठ बांधने वाला ठहरा दिया है और कोई ऐसा दोष नहीं है जो मुझ पर नहीं लगाया। मानो जब से संसार की सृष्टि हुई है इन समस्त बुराइयों का पात्र मेरे अतिरिक्त कोई नहीं गुज़रा। फिर इसी पर बस नहीं की अपितु पंजाब के बड़े-बड़े शहरों का भ्रमण करके मेरे दोषों के बारे में भाषण दिए तथा लाहौर, अमृतसर, पटियाला तथा अन्य स्थानों में नाना प्रकार की बुराइयां सार्वजनिक सम्मेलनों में मुझ पर लगाईं तथा मेरे अस्तित्व को संसार के लिए एक खतरनाक और शैतान से निकृष्ट प्रकट करके प्रत्येक भाषण में मेरा उपहास किया। निष्कर्ष यह कि हमने उसके द्वारा वे कष्ट उठाया जिसको वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। और फिर मियां अब्दुल हकीम साहिब ने इसी को पर्याप्त नहीं किया अपितु प्रत्येक भाषण के साथ यह भविष्यवाणी भी कई लोगों में प्रकाशित की कि "मुझे खुदा ने इल्हाम किया है कि यह व्यक्ति तीन वर्ष के समय में नष्ट हो जाएगा और इस का जीवन समाप्त हो जाएगा क्योंकि झूठा और धोखेबाज़ है" मैंने उस की इन भविष्यवाणियों पर धैर्य किया परन्तु आज जो 14 अगस्त 1906 है फिर उस का एक पत्र हमारे मित्र मौलवी नूरुद्दीन साहिब के नाम आया है और इसमें भी मेरी ओर कई प्रकार की बुराइयों और गालियों के बाद लिखा है कि 12 जुलाई 1906 ई. को खुदा तआला ने इस व्यक्ति के नष्ट होने की मुझे सूचना दी है कि इस तिथि से तीन वर्ष के समय में नष्ट हो जाएगा जब इस सीमा तक

स्थिति पहुंच गई तो अब मैं भी इस बात में कोई हानि नहीं देखता कि जो कुछ खुदा ने उस के प्रति मेरे पर प्रकट किया है मैं भी प्रकाशित करूं और वास्तव में इस में क्रौम की भलाई है क्योंकि यदि वास्तव में मैं खुदा तआला के निकट झूठा हूँ और 25 वर्ष से खुदा पर धोखा दे रहा हूँ और उस महानता व महिमा से निर्भय होकर उस पर झूठ बांधता हूँ और उस की प्रजा के साथ भी मेरा यह व्यवहार है कि मैं लोगों का धन बेईमानी और हरामखोरी के ढंग से खाता हूँ और खुदा की प्रजा को अपने बुरे आचरण और अहंकार के जोश से दुख देता हूँ तो इस अवस्था में समस्त दुष्चरित्र लोगों से अधिक दण्डयोग्य हूँ ताकि लोग मेरे उपद्रव से मुक्ति पाएं और यदि मैं ऐसा नहीं हूँ जैसा कि मियां अब्दुल हकीम खान ने समझा है तो मैं आशा रखता हूँ कि खुदा मुझे ऐसी अपमान की मृत्यु नहीं देगा, कि मेरे आगे भी ला'नत हो और मेरे पीछे भी। मैं खुदा की आंख से गुप्त नहीं। मुझे कौन जानता है किन्तु वही। इसलिए मैं इस समय दोनों भविष्यवाणियां अर्थात् मियां अब्दुल हकीम खान की मेरे बारे में भविष्यवाणी और उसके मुक्राबले पर खुदा ने जो मुझ पर प्रकट किया नीचे लिखता हूँ और उसका निर्णय शक्तिमान खुदा पर छोड़ता हूँ और वे ये हैं -

मियां अब्दुल हकीम खान साहिब सहायक सरजन पटियाला की मेरे बारे में भविष्यवाणी -

जो बिरादरम मौलवी नूरदीन साहिब की ओर अपने पत्र में लिखते हैं। उनके अपने शब्द ये हैं :-

मिर्जा के विरुद्ध 12, जुलाई 1906 ई. को ये इल्हाम हुए हैं। मिर्जा अपव्ययी, महाझूठा और धोखेबाज़ है। सच्चे के सामने चपल का अन्त हो जाएगा और उसकी अवधि तीन वर्ष बताई गई है।^①

इसके मुक्राबले पर वह भविष्यवाणी हैं जो खुदा तआला की ओर से मियां अब्दुल हकीम खां साहिब असिसटेन्ट सर्जन पटियाला के बारे में मुझे ज्ञात हुई

① इसमें मियां अब्दुल हकीम खां ने खुदा के मूल शब्द वर्णन नहीं किए अपितु यह कहा कि तीन वर्ष अवधि बताई गई। इसी से।

जिसके शब्द ये हैं :-

खुदा के मान्य लोगों में मान्यता के नमूने और लक्षण होते हैं तथा वे अमन के शहजादे कहलाते हैं^① उन पर कोई विजयी नहीं हो सकता। फ़रिश्तों की खींची हुई तलवार तैरे आगे है।^② परन्तु तू ने समय को न पहचाना, न देखा, न जाना^③

رَبِّ فَرَّقْ بَيْنَ صَادِقٍ وَكَاذِبٍ أَنْتَ تَرَى كُلَّ مُصْلِحٍ وَصَادِقٍ^④

विज्ञापनकर्ता - मिर्जा गुलाम अहमद मसीह मौरुद क़ादियानी

16, अगस्त 1906 ई. मुताबिक 24 जमादिउस्सानी 1324 हिज्री

प्रकाशक अन्वार अहमदिया प्रेस क़ादियान दारुल अमान

① खुदा तआला का यह वाक्य कि वे सलामती के शहजादे कहलाते हैं यह खुदा तआला की ओर से अब्दुल हकीम खां के उस वाक्य का खण्डन है कि जो मुझे झूठा और चपल ठहरा कर कहता है कि सच्चे के सामने चपल का अन्त हो जाएगा, जैसे मैं झूठा हूँ और वह सच्चा और वह सदाचारी पुरुष है और मैं चपल। खुदा तआला उसके खण्डन में कहता है कि खुदा के जो विशेष लोग हैं वे सलामती (अमन) के शहजादे कहलाते हैं, उन्हें अपमान की मृत्यु और अपमान जनक अज़ाब नहीं मिलेगा। यदि ऐसा हो तो संसार तबाह हो जाए तथा सच्चे और झूठे में विलक्षणता वाली कोई बात न रहे। इसी से।

② इस वाक्य में अब्दुल हकीम खां सम्बोधित है और फ़रिश्तों की खींची हुई तलवार से आसमानी अज़ाब अभिप्राय है कि जो मानवीय हाथों के माध्यम के बिना प्रकट होगा।

③ अर्थात् तूने यह विचार न किया कि इस युग और इस संवेदनशील समय में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत के लिए किसी दज्जाल की आवश्यकता है या किसी सुधारक अथवा मुजद्दिद की?

④ अर्थात् हे मेरे खुदा सच्चे और झूठे में अन्तर करके दिखा। तू जानता है कि सच्चा और सुधारक कौन है। इस इल्हामी वाक्य में अब्दुल हकीम खां के उस कथन का खण्डन है जो वह कहता है कि सच्चे के सामने चपल का अन्त हो जाएगा। अतः चूँकि वह स्वयं को सच्चा ठहराता है तथा खुदा का कथन है कि तू सच्चा नहीं है। मैं सच्चे और झूठे में अन्तर करके दिखाऊंगा। इसी से।

(۱) درمیان عبادت او توکل یا محبت کے لائق اور

۳۹ الدعاء

یہ عکس ہے اس مبادلہ کی عبارت کا جو چراغ دین
ساکن جوں نے اپنے ہاتھ سے لکھی تھی۔ اور
یہ اسی کے دستخط ہیں جن کا عکس لیا گیا۔

خدا ای میری خدا ای میری خدا بین صدق دل سے گواہی دیتا ہوں کہ آسمان
وزمین اور مابین ان کا تو ہی اکیلا خالق اور مالک اور رازق ہے
اور آسمان اور زمین و مابین ان کا پروردگار ہے پر تیرا ہی حکم جاری اور
نافذ ہے اور تیرے تو سب کا ابتداء اور انتہا ظاہر اور باطن جانتا اور سب
آواز مستند اور اس کی جتنی خواہتیں بر ملا آواز آسمان
وزمین کے درمیان تیرے حکم بغیر ایک ذرہ بھی ہل نہیں سکتا اور انبیاء
اولیاء شاہ اور گناہ مدد کیا اور شایطین بلکہ جمیع موجودات تیری ہی مخلوق
ہے اور محتاج ہے جو تیری رحمت کے امیدور ہے اور تیری غفرت کے لڑان
ہیں اور تو ہی اکیلا اس تمام ارضی اور سماوی ظاہری اور باطنی اور
اور جسمانی خالق مالک اور معبود ہے اور تیری سوا آسمان اور زمین
و مابین ان کے درمیان عبادت اور توکل یا محبت کے لائق اور
معبود نہیں اور حقد معبود لوگوں نے پہلے ہی میں خورہ وہ
بت ہیں یا روح یا فرشتے یا شیاطین یا آسمانی اور زمینی
اجسام وہ سب باطل ہیں اور تیری ہی مخلوق اور محتاج ہیں
ان میں سے ایک ہر شے اور توکل اور محبت کے لائق نہیں بلکہ
آسمان اور زمین اور مابین ان کے درمیان عبادت اور توکل اور

(۲)

اور محبت کے لائق تو ہی ایک خدا ہے جو ازل و ابدی زندہ خدا ہے تیرا نہ کوئی
 باپ اور نہ بیٹا اور نہ کوئی چور ہے نہ صاحب اور نہ کوئی مسیر ہے نہ معاون
 ملک اور ایک ہی سب کا خالق مالک اور غالب خدا ہے جو عام خوب و خیر کا منبع
 اور جمیع مخلوق کے مقرر ہے اس لئے تمام کائنات کا مدد و تقابل ہے اور ستائش
 اور توفیق و لائق تو ہی ایک خدا ہے اور ہماری یہ تمام جسمانی اور روحانی باتیں
 اور باطنی تمام نعمتیں تیری ہی طرف سے ہیں اور ہم تیرے ہی ہیں
 اور میں گورہی دیتا ہوں کہ تیری سب بیٹا میرا چلہ کتب کا وہ بالعموم
 اور تیرا سچا اور سچا ہے خاتم النبیین محمد رسول اللہ صلعم اور تیری پاک
 کلام قرآن شریف و قرآن کرمہ بالحق حق ہے اور بیت اسلام میں
 محدود اور میں گورہی دیتا ہوں کہ قیامت اور جزا و سزا اور میزان
 دونوں اور بخت و قدر وغیرہ سب حق اور درست ہیں اور ہم تیرے سچے
 جی ایسکے اور اپنے ہی اعمال و مطابق جزا اور سزا دینی جائیگا
 اب اکی میری خدا میں تیری بارگاہ تقدس و تعالیٰ میں نماز
 عجز اور انکسرت و تفرع و اتہال کے ماتہ موذیہ نہ التماس کرتا ہوں
 کرتا جانتا ہے کہ میں وہی شخص ہوں جسکو تو سب بلد کے اسحقاق
 مقرر اپنی ہی عقل و کرم سے اپنی مشیت اور ارادہ کے مطابق جوارل
 ہی سے مقرر کیا گیا تھا اپنے مقدس اور سچے دین اسلام کی خدمت اور

[illegible]

(۲)

ابن مرم کا مصداق ہی میرا ہی وجود ہے اور کتا ہے کہ میری لئے آسمان اور زمین سے
لشکرِ ظاہر و باطن ہیں بلکہ طاعون اور زلزلہ بھی میری ہی تائید میں ظاہر ہوا ہے
تاکہ میری مخلوق کو ہلاک اور تباہ کر دیں اور یہ ہے کہ میں خدا کی رحمتِ قدس
قدرت ہوں اور نجاتِ مہمک ہی طاق میں محدود ہے اور جو مجھے حق پہنچا ہے
وہ کافر اور مدہم اور کجی ہے اس کے اعجاز و مقدر اور وہ
دنیا میں معذب اور آخرت میں ملعون ہوگا اور کتا ہے کہ اب کی حکم
بہارِ باکے اور عوالمِ بیار میں ایک سخت زلزلہ ظاہر ہوگا جو زمین کو
تہ و بالہ کر دیگا اور قیامت کا نمونہ دکھائے گا اور وقتِ دنیا میں ایک عام
انتداب پیدا ہوگا اور اہل دنیا میری سلسلہ میں داخل ہونے کے لیے
تیار ہو جائیں گے اس لئے ای میری خداوندانہ سے دل تذبذب میں نہ آئے
حق ظاہر نہیں ہو سکتا اور تیری مخلوق بالظن پرستی میں مبتلا ہو ہے
اور تیری دین میں گڑ بڑ پڑ رہی ہے اور وہ میری عیب و سولہ
مسلح کی ہتھکڑی جا رہی ہے اور آج کتاب کا مضربِ نبوت و رسالت
چھین لیا گیا اور اسلام کو منسوخ اور بی اثر ٹھہرایا گیا اور دیکھئے
دین کی بنیاد ڈالی گئی ہے یہی مرزا قادیانی پہ سچا کی نبوت
اور رسالت پڑھائی گئی ہے لہذا کہ بغیر کوئی مسلمان خورہ وہ کیسا ہوا
مجلسِ مفتی ایماندار ہو مسلمان نہیں رہ سکتا اور دین کے لئے
ن کر نشینِ عبت اور دیکھئے میں ادا یا ہی میری خدا تری

(۵)

مقدس نبی ابن مریم علیہ السلام کا یہاں منصب چین لیا گیا ہے اور اسکے شان کی کھیر کی جارہی ہے اور کہا جاتا ہے کہ وہ ملکہ الہیہ و ربیع الہیہ گذر رہا ہے اور مہینہ اکیسے ہفتہ ہوں پس ای میری خدا اب تو آسمان پر سے نظر آ رہا ہے اور اپنے دین اسلام اور اپنے عقائد کی عزت بجا اور انکی نفرت کے لئے اپنی قدرت کا ماتہ ظاہر کر اور اس عقدہ کو دنیا پر سے اٹھا اور اہل دنیا کو حق کی طرف توجہ دلا اور انکو اتباع حق کی توفیق عنایت کر اور مدعی نبوت کی دقیق عمیق پالیسی دریافت کرنے کے لئے انکی بصیرتوں کو تیز کر اور اہل دنیا کو تمام ارضی و سماوی آفات یعنی طاعون و زلزلہ وغیرہ سے محفوظ رکھ اور انکو ہر طرح سے امن اور چین عطا فرما کیونکہ تو قادر اور مغفور اور رحیم اور اپنے بندوں کی خطائیں معاف فرما کر رہا ہے اور ہم عاجز ضعیف و ذلیل ہوتے ہیں چوں کہ سے محفوظ نہیں ہم تو ہر وقت خطا کا رہیں اور تیری ہی بخشش امیدوار اسکے بعد ای میری خدا میں یہ بھی اٹھاس کو تا ہوں اور میری تیری عالی و مقدس جناب میں انتہا کر رہی ہے اور میری آنکھیں تیری نفرت کی اشعار چھوٹیں تیری ہی طرف ہیں کہ تو اسی سلسلہ کی صداقت کو جو میری ہی حکم اور مشاء کی مطابق تھا میری مقدس خیمہ دین اسلام کی نفرت سے ادا تیری مقدس بیوں کی حق سچائی ظاہر کرنے کے لئے جاری کیا گیا ہے اس دنیا پر ظاہر کر دی اور انکی بصیرتوں کو روشن کر اور انکو اتباع حق کا

۴۴

(۶)

توفیق سے جس کو تاکہ تیرا بلی ظاہر ہو اور تیری مرض بھی کہ آسمان
 پر ہے زمین پر ہی مجھے ظاہر ہو کیونکہ اے میری خدا تو جانتا اور دیکھتا
 زمین اے عاقل اور ضعیف انسان سمجھتے تیری مدد سے وہ کچھ کر سکتے
 سکتا اور دونوں ہر اثر ڈالتا اور حق کی پہچان میں انھی بلیوں کو
 کھولنا تیرا ہی کام ہے اسلئے اگر تیری امداد میری شامل حال نہ ہوگی
 تو میں تاکا مایاب رہ جاؤنگا جیسا کہ چھوٹے رہ جاتے ہیں پسای میری خدا
 تو اس مدد کی بڑت میں اپنی قدرت عطا ظاہر فرما اور جس غرض کے لئے یہ
 جاری کیا گیا ہے اسکو انجام دے اور اسکی صداقت کو مستاہبیر
 مقتدر و نامور عموماً افعال معلوم ہر عموماً کہوں دے اور انکو اسکی اتباع
 کی توفیق عنایت کر لے کیونکہ تو قادر ہے اور آسمان و زمین کا ہر ایک ذرہ
 پر تیرا ہی حکم جاسچہ کیا ممکن نہ تیری حکم کے بغیر ایک ذرہ بھی حرکت
 کر سکے اے تو جو چاہتا ہے کرتا ہے تیری آئے کوئی جلت رہنمائی اور
 محال نہیں اور تو جسکو تیری مدد کا سچے اور تیرا مدد فرما دے
 ہے اور تیری نکت ابری اور تیری قدرت کامل ہے تیری ماحول
 آسمان اور زمین قائم ہیں اور تو ہی رات کی تاریکی کے بعد صبح کی روشن
 کو نمودار کرتا ہے اے آفتاب کو مروجے مشرق کی طرف پہنچاتا ہے
 اور تو ہی دشا میں القلوب جالتا کیسکو شاہی تخت پر اور کیسکو قودہ
 پہاڑ پر بسا دتا ہے اور تو ہی حق اور باطل میں فیصلہ کر سکتا ہے تو ہمارے
 اور زمین ہماری نجات داتا اور حق ظاہر کر دے مخلوق کو کہو اے کی موت نے بچا اور ملو
 ہر اہم مقام کی طرف راہ غائی کہ آئین ہم زمین جیہ

सच्चाई की घोषणा नम्बर - 1

ताऊन (प्लेग) का उपचार



पंजाब और हिन्दुस्तान के लोगों पर यह बात गुप्त नहीं कि इन कुछ वर्षों के अन्दर ताऊन के संक्रामक रोग ने इस देश में क्या कुछ क्रान्ति कर दिखाई है। जिस शहर या गांव में क़दम रखती है सफाई किए बिना नहीं छोड़ती। इसके भयावह आक्रमणों के दृश्य से दिल काँपते और शरीरों पर भय आता है। और यह आकाशीय विद्युत की भांति संसार को खाती जाती है। लोग अपने शहरों और घरों को छोड़कर भागते जाते हैं, प्रियजनों और परिजनों में फूट पड़ रही है।

चेतावनी - स्पष्ट हो कि चिराग़दीन के विज्ञापन को केवल इस उद्देश्य से पुस्तक हकीक़तुल वह्यी के साथ संलग्न किया जाता है ताकि प्रत्येक न्यायप्रिय स्वभाव रखने वाला व्यक्ति मालूम कर ले कि यह व्यक्ति जो अपने कर्मों का दण्ड पा चुका है पहले मेरा सत्यापन करता था और फिर तामसिक वृत्ति के आकर्षण से कुछ पादरियों से सहमत होकर मुर्तद हो गया और मुझे दज्जाल आदि नामों से पुकारा तथा मेरे विरुद्ध पुस्तक 'मिनारतुलमसीह' और 'एजाज़-ए-मुहम्मदी' लिखी। अब प्रत्येक न्यायप्रिय स्वयं न्याय की दृष्टि से देख सकता है कि यह वही चिराग़दीन है जिसने मेरे समर्थन में यह विज्ञापन लिखा था तथा जिस समय तक यह मुझे सच्चे कहने वालों में रहा ख़ुदा ने इसे ताऊन आदि से सुरक्षित रखा। फिर जब वह मुर्तद होकर तिरस्कार और अपमान करने पर कटिबद्ध हुआ तो पकड़ा गया और मेरी भविष्यवाणी के अनुसार तथा अपने मुबाहले की दृष्टि से तबाह हुआ। इस पर ख़ुदा की कोटि कोटि प्रशंसा।

① मैं यहां इस बात को भी स्पष्ट करना उचित समझता हूँ कि मेरी यह घोषणा मेरी अपनी ओर से नहीं अपितु ख़ुदा तआला की ओर से है क्योंकि उसने मुझे युग

संसार में साहस नहीं रहा। प्रजा अपनी सुरक्षा के विभिन्न उपायों में व्यस्त है किन्तु खेद कि उसकी वास्तविकता से अपरिचित मात्र है।

मेरे हृदय में प्रजा की हमदर्दी का एक जोश है क्योंकि खुदा तआला ने इसका वास्तविक, ठोस एवं निश्चित उपचार इस विनीत पर प्रकट किया है। इसलिए मेरा हृदय, ईमान तथा प्रजा की सहानुभूति मुझे विवश कर रही है कि मैं उस मूल उपचार को जो इस महामारी के निवारण के लिए पर्याप्त और संतोषजनक है,

शेष हाशिया

का इमाम मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई और आपके उस मंगलकारी युग की वास्तविक परिस्थितियों पर गवाही देने के लिए मामूर किया है, जैसा कि सूरह बुरुज की आयत **وَالْيَوْمَ الْمَوْعُودِ وَشَahِدٍ وَمَشْهُودٍ** के अर्थ से सिद्ध है, क्योंकि **يوم الموعود** यही युग है और मशहूद से अभिप्राय हज़रत मसीह मौऊद युग के इमाम हैं और शाहिद वे लोग हैं जो खुदा तआला की ओर से जो उनकी सच्चाई पर गवाही देंगे। इसलिए मैं अपने सच्चे हृदय से खुदा को उपस्थित एवं दृष्टा समझ कर यह गवाही देता हूँ कि निःसन्देह हज़रत अक़दस मिर्ज़ा साहिब खुदा तआला की ओर से इस युग के लिए मामूर होने की हैसियत से इमाम के पद पर सम्मानित हैं और आप का अनुसरण खुदा की प्रसन्नता का कारण तथा विरोध उसके प्रकोप^① एवं क्रोध का कारण है। अतः संसार के अधिक संतोष के लिए मैं अपने कुछ स्वप्न और कश्फ़ों को भी संक्षिप्त रूप में लिख देना उचित समझता हूँ। अतः पाठकों पर स्पष्ट हो कि लगभग बारह वर्ष का समय हुआ होगा कि एक सच्चे स्वप्न में इस विनीत ने देखा कि एक प्रकाश स्तम्भ के रूप में आया और उसने मुझे अपने अन्दर ढक लिया और मेरी दशा को परिवर्तित कर दिया और मेरी ज़बान पर एकेश्वरवाद का वाक्य जारी कर दिया। तत्पश्चात् एक वर्ष से अधिक समय तक मैं खुदा तआला के दर्शन करता रहा और जब वह दशा कम होने लगी तो एक रात्रि मैंने स्वप्न की अवस्था में खुदा तआला को देखा और मैं

① इतना ज्ञान रखने के बावजूद फिर भी विरोध करने से नहीं डरा।

जिसके अन्दर लोगों की सुरक्षा के साधन मौजूद हैं प्रजा पर प्रकट करूं ताकि जिनके भाग्य में इस सौभाग्य से हिस्सा पाना मुकद्द है, मुक्ति पाएं।

अतः स्पष्ट हो कि अल्लाह तआला लगभग एक वर्ष की अवधि से इस विनीत पर कशफ़ के तौर पर प्रकट कर रहा है कि यह युग आध्यात्मिक प्रलय अर्थात् मैत्री एवं सुधार के युग की भूमिका और प्रारंभ है जिसे मुसलमानों की बोलचाल में

शेष हाशिया

उसमें सर्वथा मुग्ध और संलग्न हो गया। अतः पूरा दिन उस का आनन्द और उल्लास मेरे हृदय पर व्याप्त रहा। तत्पश्चात् आज से लगभग सात वर्ष पूर्व एक सच्चे स्वप्न में इस विनीत ने एक बहुसंख्यक जमाअत को एक स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रतीक्षा में खड़े तथा आकाश की ओर ताकते हुए देखा कि जैसे अभी ही हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम उतरेंगे तथा यह भी देखा कि मसीह के उतरने के लिए एक मीनार बनाने की दुविधा में पड़े हुए हैं। और उस समय मुझे एक इल्हामी किताब में लिखा हुआ दिखाया गया कि वह मीनार जिस पर मसीह उतरेगा चिरागदीन अर्थात् इस विनीत के हाथ से बनाया जाएगा। इसके साथ ही मुझ पर यह भी प्रकट हुआ कि जैसे संसार में इस मीनार के बनाने के लिए कोई दूसरा व्यक्ति मेरा हमनाम नहीं है और फिर लगभग तीन वर्ष के पश्चात् स्वप्न की अवस्था में सम्पूर्ण विश्व की क्रौमें पक्षियों के समान कोलाहल करती हुई मुझे दिखाई गई और जब मैं उनके दृश्य को देख रहा था तो खुदा तआला की ओर से मुझे यह इल्हाम हुआ (उनको कहो कि इस ओर चली आए ताकि उनको आराम मिले) तत्पश्चात् मैंने एक बार स्वप्न में देखा कि सदाचारी लोगों के एक अधिवेशन का आयोजन हुआ है और इस विनीत को उसमें सम्मिलित किया गया और लोग मुझे मुबारकबाद देते हैं फिर एक बार मैंने देखा कि हज़रत अक्रदस के निष्कपट सेवकों के जल्से का आयोजन हो रहा है और इस विनीत को इस सेवा पर नियुक्त किया गया कि मैं लोगों को हज़रत अक्रदस मसीह की बैअत के लिए उच्च स्वर में बुलाऊं और जो आए उसे हज़रत अक्रदस की सेवा में उपस्थित

इस्लाम की विजय और ईसाइयों के निकट मसीह के प्रतापी रूप में उतरने तथा उसकी बादशाहत की ओर सम्बद्ध किया जाता है और वह ऐसा युग है जिसमें शैतानी अधिकार और दज्जाली उपद्रव संसार से समाप्त किया जाएगा और पृथ्वी चमकते हुए दिन के समान ख़ुदा के प्रताप की पहचान से आबाद होगी तथा संसार में वास्तविक ख़ुदा की उपासना, अनश्वर सच्चाई, अमन और शान्ति स्थापित होगी तथा

शेष हाशिया

करूं। अब एक वर्ष पूर्व होने को है कि मैंने एक स्वप्न में देखा कि पश्चिम की ओर से एक प्रकाश आया जिसकी लम्बाई कोसों दूर तक और ऊंचाई आकाश से मिली हुई थी। वह प्रकाश सीधा मेरी ओर आया और जितना निकट आता था कम होता जाता था यहां तक कि जब मेरे निकट पहुँचा तो मैंने प्रकाश के स्थान पर केवल एक व्यक्ति को देखा, जिसके दोनों हाथों में दो जूतों के रूप में दो वस्तुएं पकड़ी हुई थीं और जब उनको हिलाता था तो उनके अन्दर से वह प्रकाश निकलता था। अतः उस व्यक्ति ने मेरे निकट आकर नितान्त भावुक होकर पुकारा कि रोगियों को उपस्थित करो। उसके कहने पर मैं उसके सम्मुख नतमस्तक हो गया और उसने उस वस्तु के साथ जो उसके हाथ में थी मेरे सिर को स्पर्श किया और मैं देखता हूँ कि मेरे गले में क्रैदियों की भांति लोहे की एक जंजीर पड़ी है जिसे मैं अपने दोनों हाथों से खोल रहा हूँ। अतः इसके कुछ दिन पश्चात् फिर पूर्व की भांति मुझ पर कशफ़ी अवस्था व्याप्त हो गई और मेरे हृदय पर ऐसी मस्ती छा गई जैसे मैं बादशाह हूँ। अतः इसी मस्ती और जोश की अवस्था में एक दिन कशफ़ी तौर पर मैं ख़ुदा के समक्ष पहुँचाया गया और उस समय मसीही शिक्षा अर्थात् इंजील की वास्तविकता मुझ पर खोली गई और मसीहियों के बोध भ्रम से मुझे अवगत किया गया और उसके साथ यह बात भी प्रकट की गई कि जैसे अब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम (अर्थात् इस उम्मत का मसीह) अपने प्रतापी रूप में उतरने पर है और इस खाकसार को उसके उतरने की मुनादी करने और क्रौमों को उसकी बादशाहत में सम्मिलित होने का शुभ सन्देश देने के लिए नियुक्त किया। फिर इस

क्रौम क्रौम से तथा राजा राजा से युद्ध न करेंगे। धार्मिक विरोध समस्त विश्व से समाप्त हो जाएंगे तथा संसार के लोग एक ही मार्ग एवं धर्म में होकर मैत्री और सुधार का पूर्ण आदर्श प्रकट करेंगे और क्रौमों भौतिक एवं आध्यात्मिक वरदानों से धन-धान्य होकर नितान्त अमन और शान्ति की अवस्था में अपना जीवन व्यतीत करेंगी और समस्त लड़ाई-झगड़े, उपद्रव-फ़साद, द्वेष-वैर, कुफ़्र-पाप, शोक-संताप

शेष हाशिया

के कुछ दिनों के पश्चात् एक स्वप्न में मुझे दिखाया गया कि आकाश से अर्धचन्द्र के रूप में प्रकाशीय ग्रह तैरते हुए उतर रहे हैं और मैं अपने हाथों को फैला कर हज़रत इमामुज्ज़मान (युग के इमाम) के लिए उन्हें पकड़ रहा हूँ। अतः इसी स्वप्न के क्रम में फिर क्या देखता हूँ कि एक स्थान पर यूरोपीय लोगों के लिए बहुत से घर तैयार हुए हैं। उनके एक ओर एक महापुरुष अर्थात् हज़रत अक़दस विराजमान हैं और आप के इर्द-गिर्द एक पर्दा खड़ा है जिसके कारण आप बाहर की ओर से दिखाई नहीं देते और उस पर्दे के अन्दर से बड़े जोर के साथ उन लोगों को जो निर्माणकार्य में व्यस्त हैं डांट रहे हैं कि जल्दी करो। यदि कल तक यह कार्य तैयार न होगा तो तुम्हारा ठेका निरस्त कर दिया जाएगा। इसी बीच संयोग से एक ऐसी वायु चली जिस से वह पर्दा जिसके अन्दर आप विराजमान थे गिर गया और आप का प्रकाशमान अस्तित्व सूर्य के समान चमकता हुआ दृष्टिगोचर होने लगा और इस विनीत ने देखा कि आपका चेहरा नितान्त सुन्दर प्रकाशित है जैसे कि आपके चेहरे से प्रकाश टपक रहा है और इसके साथ ही यह भी देखा कि आप का लिबास सिर से पैर तक नितान्त सफ़ेद और उज्ज्वल है। अतः मैंने आगे बढ़कर सलाम किया और आपने इतनी सहानुभूति एवं प्रेम के साथ व्यवहार किया कि मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि अब मैं आप का कृपा पात्र होकर सेवा के अवसर से सम्मानित किया गया हूँ। यहां तक कि मैं क्या देखता हूँ कि मेरा लिबास भी आप के लिबास की भांति अत्यन्त सफ़ेद और उज्ज्वल हो गया है और इस प्रकार एक महापुरुष ने ध्यान करने के पश्चात् इस विनीत के उपलक्ष में एक स्वप्न देखा था

संसार से समाप्त किए जाएंगे यहां तक कि शेर और बैल, भेड़ और भेड़िया अब एक ही घाट से पानी पीएंगे। इस का प्रमाण पवित्र कुर्आन और पवित्र ग्रन्थों में मौजूद है।

अब मैं इस बात को भी प्रकट कर देता हूं कि वह मंगलमय युग जिसकी प्रशंसा की गई है संसार की आयु में सातवां हजार है जो सब्त की भांति खुदा की

शेष हाशिया

कि एक तालाब है उसके मध्य एक पक्की इमारत है जिसके अन्दर से प्रकाश की एक ज्योति निकल रही है। वह महापुरुष कहता है कि मैं इस छानबीन के लिए कि यह प्रकाश किस वस्तु से प्रकट हो रहा है उस मकान के द्वार पर गया तो उसके अन्दर इस विनीत को पाया। निष्कर्ष यह कि ऐसे ही और भी बहुत से स्वप्न और कश्फ़ हैं जिनका उल्लेख विस्तार का कारण है परन्तु यह बात भली भांति स्मरण रखने योग्य है कि खुदा तआला ने अपने स्वप्न और कश्फ़ आदि को माध्यम से इस विनीत पर अच्छी तरह प्रकट एवं सिद्ध कर दिया है कि मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आध्यात्मिक सहायकों में से एक हूं। जैसा कि हुज़ूर को मसीह होने के दावे के प्रारंभ में एक स्वप्न में दो सहायक दिखाए गए थे जिसकी पुष्टि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस से होती है कि मसीह मौऊद दो फ़रिशतों या पुरुषों के कंधों पर हाथ रखकर उतरेंगे। अतः मेरा स्वप्न या कश्फ़ जिनकी चर्चा संक्षिप्त रूप में पहले की गई है इस बात को भली भांति सिद्ध करते हैं कि इन दो सहायकों में से जिन की चर्चा हदीस और हज़रत अक्रदस के मुबारक स्वप्न में है। एक का चरितार्थ यह विनीत है। इस कारण कि प्रथम तो मुझे एक इल्हामी किताब में लिखा हुआ दिखाया गया कि वह मीनार जिस पर मसीह उतरेगा इस विनीत के हाथ से बनाया जाएगा। द्वितीय कश्फ़ की अवस्था में खुदा ने मुझे मसीह के प्रतापी रूप में उतरने की मुनादी करने तथा क्रौमों को उसकी बादशाहत में सम्मिलित होने का शुभ सन्देश देने के लिए नियुक्त किया। तृतीय - खुदा तआला ने अपने इल्हाम के द्वारा मुझे क्रौमों को ताऊन से मुक्ति की

बादशाहत अर्थात् मैत्री और योग्यता के लिए विशिष्ट और निर्धारित है और मुझ पर यह बात भी सिद्ध हो चुकी है क यह सदी छठे हजार का अन्त है। अतः आध्यात्मिक प्रलय की तैयारी के लिए जो कुछ क्रान्ति आने वाली है इस सदी में पूर्ण की जाएगी। अतः इस पूर्ण और महान आध्यात्मिक क्रान्ति की तैयारी के लिए ख़ुदा तआला ने दो प्रकार की व्यवस्था की है। एक जमाली दूसरी प्रतापी। जमाली

शेष हाशिया

ओर बुलाने का आदेश दिया। चतुर्थ - आकाश से प्रकाशित ग्रह निशान के तौर पर ख़ुदा तआला ने हज़रत इमामुज़्ज़मान के समर्थन में इस विनीत के हाथ पर उतारे। पंचम - हुज़ूर की ओर से आप की सेवा और कर्मचारी का पद प्रदान हुआ। षष्ठम - हुज़ूर की बैअत के लिए कौमों को बुलाने की सेवा प्रदान की गई।

अतः इन स्पष्ट तर्कों के पश्चात् सन्देह करने का कौन सा स्थान है कि मैं हुज़ूर के सहायकों में से जिनकी चर्चा हदीस और स्वप्न में है एक का पात्र न बनूँ कदापि नहीं। हां यह बात अवश्य है कि मैं अभी तक अपने अन्दर आर्थिक या ज्ञान संबंधी क्षमता नहीं देखता जिससे मैं स्वयं को उचित तौर पर आप का सहायक ठहर सकूँ क्योंकि यह विनीत इन दोनों बातों में अभी तक खाली हाथ है किन्तु ख़ुदा तआला के उन वादों और प्रोत्साहनों पर जो मुझे दिए गए हैं विश्वास रखता हूँ कि वह अवश्य ऐसा ही करेगा अपितु मैं पूर्ण विश्वास से कहता हूँ कि जब तक वह सेवा जो इस विनीत के भाग में निर्धारित है पूर्ण न हो इस संसार से उठाया न जाऊंगा क्योंकि ख़ुदा तआला के वादे टल नहीं जाते तथा उसका इरादा रुक नहीं सकता। इसलिए मैं दावे से कहता हूँ कि मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रतापी तौर पर उतरने का सन्देश वाहक हूँ। और वह यह है कि अब तक हज़रत मसीह मौऊद का जमाली (सौम्य) तौर पर उतरना था और अब से प्रतापी (रौद्र) उतरना आरंभ होगा अर्थात् पहले लोगों को नमी के साथ समझाया जाता था किन्तु अब ख़ुदा तआला अपने प्रतापी और प्रकोपी प्रहार के साथ सतर्क करेगा और इसी बात की मुनादी के लिए मैं नियुक्त हूँ। इसी से।

तो यह है कि उसने अपने अनादि नियम के अनुसार जैसा कि वह प्रत्येक युग में संसार के मार्गदर्शन और सुधार के लिए अपने बन्दों में से कुछ को मामूर एवं अवतरित करता रहा है। इस युग में भी अपने एक विशेष बन्दे को जिनका नाम **हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी** है मार्गदर्शक का पद प्रदान करके मामूर एवं अवतरित किया है ताकि संसार आप की छत्र-छाया में मार्गदर्शन एवं आज्ञाकारिता में रह कर उस पवित्र आध्यात्मिक परिवर्तन का प्रकाश जिस की प्राप्ति आध्यात्मिक प्रलय की तैयारी के लिए आवश्यक है अपने अन्दर पैदा करे और ख़ुदा तआला की उस शान्तिपूर्ण एवं मंगलकारी बादशाहत में जिस की चर्चा की गई है तथा जिसमें अपवित्र एवं उद्दण्ड नहीं जा सकता वह प्रवेश करने और सम्मिलित होने के योग्य ठहरे।

ख़ुदा तआला की दूसरी व्यवस्था प्रतापी एवं प्रकोपी प्रहार, जिस से अभिप्राय ताऊन और अकाल है ताकि जो लोग उस सौम्य व्यवस्था से न सुधरे इस प्रतापी प्रहार से तबाह या सतर्क किए जाएं जैसा कि सदैव से अल्लाह तआला का नियम चला आता है कि प्रत्येक आध्यात्मिक क्रान्ति के लिए पहले पैग़म्बर आते रहे हैं और लोग जब उनको काफ़िर और झूठा कहने में हद से बढ़ जाते थे तो उन पर अज़ाब आता रहा जिसके उदाहरण कुर्आन करीम और पवित्र ग्रन्थों में बड़ी प्रचुरता के साथ मौजूद हैं। अतः इसी प्रकार अब भी हुआ कि जब हज़रत अक़दस ने प्रचार और समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण किया और अपने मामूर होने के दावे को प्रत्येक दृष्टि से यथायोग्य सिद्ध कर दिखाया परन्तु संसार उनको काफ़िर और झूठा कहने से न रुका तो ख़ुदा तआला ने अपनी अनादि सुन्नत के अनुसार इस युग के लोगों के लिए आकाश से यह निर्णय जारी किया कि नबियों के विरोधियों की भांति आपको झूठा कहने वालों के लिए भी एक विपत्ति उतारी। अतः वह यही ताऊन है जो संसार को खा जाने वाली अग्नि की भांति भस्म करती जाती है। देखो हदीस में स्पष्ट उल्लेख है कि मसीह मौऊद के युग में ताऊन इतनी अधिकता के साथ पड़ेगी कि पृथ्वी मुर्दों से भर जाएगी। पवित्र इंजील किताब

‘मुकाशिफ़ात’ अध्याय-16 में लिखा है कि मसीह के उतरने के युग में सृष्टि बुरे और दूषित फोड़े की विपत्ति से जिस से अभिप्राय ताऊन है, तबाह होगी। इसके अतिरिक्त पवित्र कुर्आन बड़ा जोर देकर अन्तिम युग में क्रौमों के विनाश की सूचना देता है जैसा कि उसका कथन है -

وَإِنْ مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَمَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا
عَذَابًا شَدِيدًا ۖ كَانَ فِي ذَلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ①

और ऐसा ही सूरह ‘दुखान’ में कहा -

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُبِينٍ ۚ يَغْشى النَّاسُ ۚ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ②
तथा कहा

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى ۚ إِنَّا مُنتَقِمُونَ ③

अर्थात् प्रतीक्षा करो उस दिन की जिस दिन आकाश पर एक खुला-खुला धुआं प्रकट होगा जो सब लोगों पर छा जाएगा और यह कष्टदायक अज़ाब होगा। और जिस दिन हम कठोरता के साथ पकड़ेंगे और हम बदला लेने पर समर्थ हैं।

और इसी प्रकार सूरह ‘अलक्रियामत’ में कहा -

فَإِذَا بَرِقَ الْبَصْرُ ۚ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۚ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۚ يَقُولُ
الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَلَمْ أَفِرُّ ۚ كَلَّا لَا وَزَرَ ۚ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ④

अर्थात् चन्द्रमा एवं सूर्य को जब एक ही महीने अर्थात् रमज़ान में ग्रहण होगा तत्पश्चात् लोग भागने का स्थान ढूँढ़ेंगे। और न पायेंगे। इसके अतिरिक्त पवित्र तौरात में भी इस युग के बारे में बहुत सी भविष्यवाणियां मौजूद हैं। देखो यसइयाह अध्याय 4, 66/15 और ज़बूर अध्याय 50, आयत 3 और दानियाल अध्याय 12, हिज़क़ील अध्याय 37, आयत 15 से 28, हबकूक अध्याय 3, सफ़नीयाह अध्याय

① बनी इस्राईल - 59

② अददुखान - 11, 12

③ अददुखान - 17

④ अलक्रियामत - 8 से 13

3, मीकाय: अध्याय 4, मती अध्याय 13, आयत 40 तथा अध्याय 24, आयत 15 से 31, मुकाशिफात अध्याय 15, 16 इन पुस्तकों में इस युग का पूर्ण चित्रण विद्यमान है।

हां यदि प्रश्न यह हो कि हम क्योंकर स्वीकार करें कि यह अज़ाब युग के इमाम के विरोध के कारण हम पर आया है। तो इसका उत्तर निम्नलिखित आयतों से देते हैं। जिस प्रकार कि कहा -

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمَمٍ رَسُولًا^①

अर्थात् हम किसी बस्ती को भी तबाह नहीं करते जब तक उनके बीच कोई रसूल न भेजें। दूसरे स्थान पर कहा -

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَسُولٌ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ^②

अर्थात् प्रत्येक क़ौम के लोगों का निर्णय उसी समय होता है जबकि उनके पास रसूल आता है। अतः जब एक ओर एक रसूल अर्थात् हज़रत इमामुज़्ज़मान मौजूद हैं जो संसार को सत्य और सच्चाई की ओर बुला रहे हैं और दूसरी ओर उन का इन्कार बड़े जोर के साथ हो रहा है और तीसरी ओर एक भयावह अज़ाब भी द्वार पर खड़ा है। तो क्या समझ में नहीं आता कि यह वही हमारा विरोध और उपद्रव जो ख़ुदा के एक पैगंबर के साथ कर रहे हैं अज़ाब के रूप में साकार होकर हमारे सामने आ गया है या यों कहो कि इस अज़ाब का मूल कारण वही इन्कार और झुठलाना है जो संसार के विनाश का कारण हुआ -

وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ^③

अर्थात् उन्हें उस चीज़ ने घेर लिया जो वे उसके साथ उपहास करते थे। हमने तो अपनी आंखों^④ से देखा और कानों से सुना कि विरोधी लोग युग के इमाम

① अलक्रसस - 60

② यूनस - 48

③ हूद - 9

④ ख़ुदा जाने बाद में आंखों को क्या हो गया।

अलैहिस्सलाम की उस भविष्यवाणी पर जो इसी ताऊन के बारे में आज से चार वर्ष पूर्व प्रकाशित की गई थी कि पंजाब में ताऊन पड़ेगी उपहास एवं अपहास करते थे कि ताऊन कहां है। इसके अतिरिक्त जब इसके सैकड़ों उदाहरण पवित्र कुर्आन और बाइबल में मौजूद हैं कि पिछले युगों में खुदा की ओर से आने वाले प्रत्येक मामूर को झुठलाने वालों का परिणाम विनाश ही होता रहा तथा प्रत्येक उम्मत पर पृथक् रूप में अज़ाब आता रहा। अतः इस स्थिति में हमें इस बात को स्वीकार करने में कि यह अज़ाब उसी विरोध का परिणाम है कौन सी वस्तु बाधक हो सकती है। कदापि नहीं। निःसन्देह यह खुदा तआला का वही प्रतापी और प्रकोपी प्रहार है जो सदैव से उसके सच्चे रसूलों के विरोधियों की तबाही के लिए मौजूद होता रहा है।

अतः जब इसका कारण ज्ञात हो गया तो उपचार का प्रयास करना चाहिए और वह यह है कि युग के सुधारक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मामूर होने के दावे को स्वीकार करके, सच्चे दिल से उनकी आज्ञा-पालन करके तथा हार्दिक श्रद्धा के साथ आप के मार्ग-दर्शन के अधीन रह कर एक पवित्र और जीवित आध्यात्मिक परिवर्तन अपने अंदर पैदा किया जाए जो हर प्रकार के पाप और विद्रोह से पवित्र है। अतः जो व्यक्ति या घराना या क्रौम या शहर वाले ऐसा कर लेंगे तो निश्चय ही खुदा की कृपा से इस विपत्ति से मुक्ति पाएंगे क्योंकि अभी स्वीकार करने का द्वार खुला है। इसलिए जो व्यक्ति सच्चे हृदय से तौबा करेगा स्वीकार होगी किन्तु एक समय ऐसा भी आने वाला है कि लोग तौबा करेंगे, परन्तु स्वीकार न होगी। क्रौमों खुदा के आगे चिल्लाएंगी परन्तु उनकी कोई बात सुनी नहीं जाएगी। संसार खुदा की ओर लौटेगा किन्तु उसका परिणाम निराशा होगी। जैसा कि उसका कथन है -

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ- أَنَّى لَهُمُ الذِّكْرَى
وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ۝

और वह समय ऐसा होगा कि यह विपत्ति सम्पूर्ण पृथ्वी पर सार्वजनिक होगी। कोई शहर या बस्ती 'सिवाए इसके जो खुदा चाहे' इससे खाली न रहेगी अपितु दरियाओं और जंगलों में भी ताऊन होगी। उस समय लोग भागने का स्थान ढूँढ़ेंगे। किन्तु स्थान नहीं मिलेगा जैसा कि उसका कथन है -

يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفْرُجُ ۚ كَلَّا لَا وَزَرَ ①

क्योंकि यह खुदा के प्रकोप की अग्नि है जब तक अपना कार्य पूर्ण न कर ले और खुदा के विरोधियों से बदला न ले ले, समाप्त न होगी। इसलिए मैं लोगों की सहानुभूति के तौर पर जो मेरे हृदय में जोश मारती है लोगों को सतर्क करता हूँ कि इससे पूर्व कि यह विपत्ति विश्वव्यापी होकर जंगलों और दरियाओं को भी अपने विषाक्त प्रभाव से तबाह करे तथा इस से पूर्व कि खुदा के प्रकोप की यह अग्नि संसार को भस्म करने के लिए पूर्ण रूप से तैयार हो, तौबा करो। तथा अपने बचाव की तदबीर में व्यस्त हो जाओ और वह यह है:- **प्रथम** खुदा को एक मानो और समस्त शिर्क, कुफ्र, गुनाह से तौबा करो तथा अपने हृदयों को समस्त बाह्य एवं आंतरिक मूर्तियों तथा सहारों को तोड़कर एक ही खुदा पर भरोसा करो।

द्वितीय - उसके समस्त सच्चे नबियों, समस्त आकाशीय ग्रन्थों पर सामान्यतः और अरबी नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा पवित्र कुर्आन पर विशेषतः ईमान लाओ। अपने सच्चे हृदय से खुदा तआला के जीवित तथा पूर्ण धर्म इस्लाम के अनुसरण में व्यस्त हो।

तृतीय - हज़रत अक्रदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मामूर होने के दावे को सच्चे हृदय से स्वीकार करके और आप की मुबारक जमाअत में सम्मिलित होकर अपने आध्यात्मिक जीवन के उस पूर्ण प्रकाश को जो इस विपत्ति और खुदा के अज़ाब से मुक्तिदायक है, प्राप्त करो।

चतुर्थ - प्रत्येक व्यक्ति अपने सच्चे हृदय से खुदा के सम्मुख तौबः करके प्रत्येक पाप और अवज्ञा को जिसे उसने किया है त्याग दे तथा पांच समय की

① अलक्रियामत - 11, 12

नमाज़, दुआ, पापों की क्षमा याचना करने में व्यस्त रहे और मृत्यु को सदैव स्मरण रखे तथा खुदा के अधिकारों एवं लोगों के अधिकारों को अदा करने के प्रति तन-मन से व्यस्त रहे तथा यथासामर्थ्य निर्बलों, निर्धनों और असहायों पर दया करे। जहां तक संभव हो अपने प्राणों तथा धनों को खुदा तआला का आज्ञा-पालन करने में, उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने तथा प्रजा की सहानुभूति के प्रति समर्पित कर दे।

पंचम - अपने हृदय की निष्कपटता से उपकारी सरकार की आज्ञाओं का पालन करे तथा आभारी रहे और किसी प्रकार से शान्ति भंग करने तथा विद्रोह आदि बातों का विचार तक अपने हृदय में न आने दे।

षष्ठम - प्रत्येक शहर और बस्ती के लोग रोज़ा रखें और समूह के समूह जंगलों और मौदानों में निकल कर गिड़गिड़ा कर खुदा तआला से इस विपत्ति के निवारण के लिए दुआ करें और उसके समस्त नबियों, अवतारों और सुधारकों को सामान्यतः और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा युग के इमाम मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को विशेषतः उसके दरबार में अनुशंसक बनाएं।

सप्तम - प्रत्येक कौम और प्रत्येक वर्ग अपने सच्चे हृदय से तौब: करके खुदा और उसके गौरखशाली रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और समय के इमाम पर ईमान लाकर अपनी निष्कपट याचनाओं के द्वारा युग के इमाम अलैहिस्सलाम से इस विपत्ति के निवारण के लिए दुआ कराएं। अतः यदि लोग मेरी इस विनती के अनुसार कार्य करेंगे तो मैं पूर्ण विश्वास के साथ कहता हूं कि यह अज़ाब उस विशेष व्यक्ति, घर, कौम, शहर या देश के उस विशेष भाग से जिसमें पवित्र परिवर्तन का आदर्श स्थापित किया जाए खुदा की कृपा से दूर होगा क्योंकि इस का मूल कारण पाप और युग के इमाम का विरोध है। इसलिए जब तक मूल कारण का निवारण न हो खुदा के प्रकोप की यह अग्नि जो विरोध और पाप के कारण भड़क रही है बुझ न जाए यह अज़ाब संसार से दूर न होगा। परन्तु मैं डरता हूं कि दुनिया मेरी इस विनती को एक सरसरी दृष्टि से अनदेखा करके उस समय की प्रतीक्षा न करती रहे जबकि दुआ की स्वीकारिता का दामन हाथ से छूट जाए

और तौबा का द्वार बन्द हो जाए क्योंकि ऐसे समय में जब कि उपद्रव चरमसीमा को पहुंच जाता है और अटल फैसले का समय आ जाता है तो विरोधियों के पक्ष में नबियों की भी दुआ स्वीकार नहीं होती। देखो हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने तूफ़ान के समय अपने पुत्र किनआन के लिए जो काफ़िरों और इन्कार करने वालों से दुआ की, जो स्वीकार नहीं हुई। (देखो सूरह हूद रुकू 2) और इसी प्रकार जब फ़िराऊन डूबने लगा तो ख़ुदा पर ईमान लाया परन्तु स्वीकार न हुआ।

हां उस विशेष समय से पूर्व यदि ख़ुदा की ओर लौटा जाए (पश्चाताप किया जाए) तो ज़रूर स्वीकार होता है -

وَلْيَذِيقْنَهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ①

अर्थात् जब अज़ाब के हल्के से लक्षण प्रकट हों तो उस समय की तौबा स्वीकार होती है। इसलिए मैं बार-बार कहता हूं कि अभी ख़ुदा के उस अज़ाब का संसार में केवल आरंभ ही हुआ है, इसका अन्त नितान्त कठोर है। इसलिए लोगों को चाहिए कि उस विशेष विनाश के समय से पूर्व ख़ुदा की ओर प्रवृत्त हों और ख़ुदा, रसूल तथा युग के इमाम की आज्ञा का पालन करें, तौबा, पापों का त्याग, दुआ तथा क्षमा-याचना के साथ उसका निवारण चाहें और अपने अन्दर एक नेक एवं पवित्र परिवर्तन उत्पन्न करें ताकि इस भयावह अज़ाब से सुरक्षित रहें क्योंकि ख़ुदा तआला का यह दृढ़ वादा है कि वह ऐसे समय में सदैव मोमिनों ही को मुक्ति दिया करता है जैसा कि उसका कथन है -

كَذَٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنَاجِ الْمُؤْمِنِينَ ②

अब हम इस लेख को इस दुआ पर समाप्त करते हैं कि ख़ुदा तआला हमारी और समस्त मोमिनों की इस विपत्ति से रक्षा करे और सद्मार्ग की ओर मार्ग-दर्शन करे तथा परस्पर मैत्री और सुधार की शक्ति प्रदान करे। आमीन, पुनः आमीन।

अब मैं अपनी जमाअत के आध्यात्मिक भ्राताओं की सेवा में विनती करता हूं

① असज्दह - 22

② यूनस - 104

कि ख़ुदा के प्रकोप की इस अग्नि तथा भयावह अज़ाब से बचने के लिए हमारे पास दो साधन हैं- प्रथम- ईमान, द्वितीय- संयम।

ईमान तो यह है कि हम अपने पूर्ण विश्वास से जान लें कि हमारे पास इस ख़ुदा के अज़ाब से बचने के लिए अपने मार्ग-दर्शक युग के इमाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर पूर्णरूप से ईमान लाने और निष्कपट भावना से अनुसरण के बिना कोई चारा नहीं यदि हम बचेंगे तो उनके ही निष्कपट अनुसरण के कारण और यदि मरेंगे तो उनका ही विरोध करने के कारण। जैसे कि हमारा जीवन और मरण उनके अनुसरण और विरोध पर निर्भर है^① और संयम यह है कि हम इस बात से हर समय डरते तथा अपनी समस्त गतिविधियों को देखते रहें कि हम किसी बात में अपने पथ-प्रदर्शक के निर्देशों और उनकी शान्तिप्रद आज्ञाकारिता से बाहर न जाएं ताकि अकस्मात् ख़ुदाई अज़ाब का शिकार न बनें क्योंकि उस अज़ाब से बचने के लिए शान्ति और शरण अहमदियत की आज्ञाकारिता के अतिरिक्त नहीं जो उसके अन्दर रहेगा निश्चय ही बच जाएगा क्योंकि हमारा इस बात पर पूर्ण विश्वास है कि यह अज़ाब जो अब संसार को तबाह करके मृत्यु का मार्ग दिखा रहा है केवल युग के इमाम अलैहिस्सलाम का विरोध करने के कारण है। इसलिए यह बात ख़ुदा के नियम के विपरीत है कि यह अज़ाब हज़रत अक्रदस के शुद्ध अनुयायियों पर भी किसी प्रकार का प्रभाव डाले। जैसा कि पवित्र कुर्आन के सैकड़ों उदाहरणों से यह प्रमाणित सच्चाई है कि पिछले युगों में नबियों के निष्कपट सत्यनिष्ठ लोग ख़ुदा के अज़ाब के समय मुक्ति पाते रहे हैं और यह बात केवल पहले ही नहीं थी अपितु अब भी है जैसा कि कथन है -

كَذَلِكَ حَقَّ عَلَيْنَا نَجِ الْمُؤْمِنِينَ^②

परन्तु निष्कपट मोमिन बनना शर्त है क्योंकि यदि मोमिन न होगा तो वह हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की पत्नी और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के पुत्र की भांति

① उसकी यह बात सर्वथा सच सिद्ध हो गई।

② यूनुस - 104

केवल शारीरिक निकटता या सम्बन्ध के कारण बच नहीं सकता। इसलिए प्रत्येक मोमिन अहमदी भाई को अनिवार्य है कि हज़रत इमामुज़्ज़मान के छोटे और बड़े विरोध से भयभीत होता हुआ तथा कांपता हुआ हर समय पापों की क्षमा-याचना और दुआ में व्यस्त रहे ताकि सूक्ष्म-सूक्ष्म बातों में मूर्खतावश हम से प्रायः विरोध हो जाता है उसका कफ़ारा होता रहे और खुदा तआला उसके प्रतिशोध के लिए अपनी पकड़ से सुरक्षित रखे और जहां तक हमारी जानकारीयां हैं प्रत्येक बात में अपने मार्ग-दर्शक युग के इमामुज़्ज़मान अलैहिस्सलाम की अवज्ञा से बचना चाहिए क्योंकि यह अज़ाब विरोधियों के लिए तबाही और हमारे लिए चेतावनी एवं शिक्षा है। अतः प्रत्येक भाई को चाहिए कि दूसरों के दृश्य से अपने लिए शिक्षा-ग्रहण करे (فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِيَ الْأَبْصَارِ) और इस अज़ाब से बचने के लिए प्रयासरत रहे क्योंकि यह बात मुझ पर स्पष्ट की गई है कि हमारी जमाअत का कोई निष्कपट भाई इस रोग से तबाह न होगा सिवाए उसके जो कपटपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। इसलिए हमारी जमाअत में से जो व्यक्ति इस विपत्ति की पकड़ में आ जाए तो समझ लेना चाहिए^① कि उसकी ईमानी और व्यावहारिक स्थिति अच्छी न थी जिसका दण्ड उसे दिया गया क्योंकि खुदा तआला अपने निष्कपट मोमिनो को विरोधियों के अज़ाब में सम्मिलित नहीं करता।

أَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا لَا يَسْتَوُونَ ②

इसलिए प्रत्येक मोमिन को डरना चाहिए कि किसी प्रकार के विरोध के कारण खुदा के अज़ाब की इस विपत्ति में ग्रसित होकर पापियों में सम्मिलित न होना पड़े।

इसके अतिरिक्त मैं अपने उच्च साहस रखने वाले भ्राताओं की सेवा में इतना अधिक निवेदन करता हूं कि जिन सज्जनों के पास यह विज्ञापन पहुंचे वे अपने पथ-प्रदर्शक व स्वामी, सच्चे इमाम अलैहिस्सलाम के समर्थन तथा प्रजा की सहानुभूति का अधिकार अदा करने के प्रति तन-मन से इसको प्रकाशित करने

① (अलअन्आम - 131) وَشَهِدُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا الْكَافِرِينَ

② अस्सज्दह - 19

का प्रयास करें और यदि संभव हो सके तो अपने-अपने शहर की जमाअत के चन्दे से उसे पुनः प्रकाशित करा के देहात और कस्बों में भी भेजें क्योंकि हठधर्म और ईर्ष्यालु लोगों को छोड़कर शेष सरल स्वभाव रखने वाले लोग मात्र अनभिज्ञता और असावधानी की अवस्था में इस अज्ञाब का शिकार हो रहे हैं। इसलिए हमारी जमाअत का कर्तव्य है कि इस समय लोगों को सद्मार्ग की ओर प्रेरित करने और इस घातक अज्ञाब से बचाने के लिए प्रयास करे ताकि इस **पवित्र जमाअत** का अस्तित्व संसार के कल्याण और सुधार के लिए लाभप्रद सिद्ध हो तथा खुदा तआला के निकट महान प्रतिफल पाने के पात्र ठहरें। सामर्थ्य देना खुदा पर निर्भर है।

अधिक सलाम

विज्ञापन दाता

विनीत - चिरागुद्दीन अहमदी, जम्मू

9 फरवरी, 1902 ई.

मुफ़ीद-ए-आम प्रैस,

सियालकोट

(۱۹)

(عکس خط لکھی عبد الرحمن محی الدین لکھو مکے والے متعلق نشان نمبر ۱۶)

بسم اللہ الرحمن الرحیم حامد و صلیا

اما بعد از عبد الرحمن محی الدین بحسب اہل اللع

عرض ہے کہ اس عاجز نے دعا کی کہ یا خیر

اخیرتی مرزا کا کتا حال ہے خواب میں یہ

الہام ہوا ان فرعون و خود ہما کافا

خطی بن و ان متانتک ہو لا بتر مرزا کا

طرف کے جواب آیا یہ الہام محتمل تھا ہیں انہیں میرا

نام نہیں اور بڑی زور دے دی کیا کہ میری نام

الہام نہ جیسا جا سکا پر دو الہام تہ کویر کم ہسٹر کو

جب مرزا کا جواب آ گیا ہائی ۲۴ ماہ صفر کریم الہام

خواب میں ہوا مرزا صاحب فرعون احمد علی

مرزا کا کتا لکھی غلط ہو گیا اور مرزا صاحب کو کویر کم ہسٹر کو

(۲۰)

اور جیہ وقت مجھ کو پہنک اہام ہوا تھا خواب میں
 بیدار ہوتے تھے یہ تعبیر دلائل آئی کہ
 فرعون مرزا جنت اور لامان نور دین
 مجھے اہل اسلام کے خیر خواہی کیلئے
 اطلاع دینی ضرورت تھی میں تو یہی
 حق کس دی اتنی بیک بہر لوار
 ایہ اہل نفاق بلائیں برمان لوکان دین
 یہ العبد عبد الرحیم العبد لکھنؤ کے
 تقیم تاریخ ۱۴ ماہ ربیع الاول ۱۳۱۴ھ

परिशिष्ट हकीकतुल वह्यी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमुदुह व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

इस पुस्तक को समाप्त करने के पश्चात् ऐसी आवश्यक बातें ज्ञात हुईं जिन का इस पुस्तक के साथ संलग्न करना पुस्तक की पूर्णता के लिए अनिवार्य है। अतः वे बातें निम्नलिखित हैं :-

(1) चिरागदीन जम्मू वाले का मुबाहला जिसका इस पुस्तक में उल्लेख हो चुका है। यद्यपि वह ऐसा निशान है कि जो व्यक्ति बुद्धि, न्याय एवं ईमान का पालन करने वाला हो और खुदा के भय के मार्ग को हाथ से न छोड़े वह केवल इसी एक निशान पर विचार करने से समझ सकता है कि मैं खुदा तआला की ओर से तथा सच्चाई पर हूँ। परन्तु एक कुधारणा रखने वाले के हृदय में यह सन्देह गुजर सकता था कि चूंकि चिरागदीन प्लेग से मृत्यु पा चुका है इसलिए संभव है कि यह मुबाहला उसकी ओर से न हो अपितु उसकी मृत्यु के पश्चात् अपनी ओर से मुबाहला की इबारत बना कर लिखी गई हो। इसलिए मैंने इस पुस्तक का प्रकाशन उस समय तक स्थगित कर दिया जब तक कि चिरागदीन के वारिस या मित्र उसकी उस पुस्तक को प्रकाशित कर दें जिसमें मुबाहला की यह इबारत लिखी है। अतः खुदा की कृपा से उन लोगों के हृदय में यह पड़ गया कि वह पुस्तक जिसमें मुबाहला का लेख है प्रकाशित कर दी जाए। अतः फिर कुछ ही सप्ताह में उन्होंने उस पुस्तक को प्रकाशित कर दिया और उस पुस्तक का नाम 'एजाज़-ए-मुहम्मदी' रखा और नितान्त कृतज्ञता की बात यह है कि कठोर विरोध के बावजूद वह मुबाहला के लेख को 'एजाज़-ए-मुहम्मदी' पुस्तक से पृथक न कर सके। मालूम होता है कि चिरागदीन ने अपने जीवन में इस इरादे को सार्वजनिक तौर पर प्रकट

कर दिया था कि मैं मुबाहला के तौर पर लेख लिखूंगा ताकि वह व्यक्ति जो झूठा है तबाह हो जाए। उसने नितान्त धृष्टता एवं अहंकार से मेरा नाम **दज्जाल** रखा था और अपनी पुस्तक 'मनारतुल मसीह' में यह लिखा था कि वादे वाला कथित दज्जाल आने वाला यही व्यक्ति है तथा लिखा था कि स्वप्न में हज़रत ईसा ने मुझे असा (डंडा) दिया है ताकि इस से मैं इस दज्जाल का वध करूं और फिर जब अपनी पुस्तक 'एजाज़-ए-मुहम्मदी' में जिसके लिखने के साथ ही वह प्लेग ग्रस्त हो गया उसने मुबाहला की इबारत लिखी तो यद्यपि वह अपनी पुस्तक को अपने जीवन में प्रकाशित न कर सका परन्तु मुबाहला का इरादा प्रकाशित कर चुका था और मुबाहला का लेख कई लोगों को दिखा चुका था तथा लिखने के लिए लिपिक को वह लेख दे चुका था। इसलिए उसके मित्रों को घोर विरोध के बावजूद यह साहस न हो सका कि मुबाहला का वह लेख पुस्तक में से निकाल दें। वास्तव में यह खुदा तआला का कार्य है कि उसने उन लोगों को इस ओर ध्यान देने से रोक दिया कि वे यह सोचते कि मुबाहला का लेख प्रकाशित होने से चिराग़दीन का झूठा होना सिद्ध हो जाएगा क्योंकि चिराग़दीन ने जब मुबाहला का लेख लिखने के लिए लिपिक को दिया तो उसी दिन उसके दो लड़के जो दो ही थे प्लेगग्रस्त होकर मृत्यु का शिकार हो गए और अभी वह लेख पत्थर पर नहीं जमाया गया था कि चिराग़दीन ने प्लेग का शिकार होकर अपनी मृत्यु से इस विवाद का स्वयं ही फ़ैसला कर दिया जो मेरे और उसके मध्य था। अतः मुबाहला का लेख एक ख्याति प्राप्त घटना हो चुकी थी। यही कारण था कि वह लेख बाहरहाल उसके मित्रों ने 'एजाज़-ए-मुहम्मदी' में प्रकाशित कर दिया। जब वह लेख प्रकाशित किया गया तो हमने भी उस पुस्तक की बहुत सी प्रतियां खरीद लीं ताकि लोगों को मालूम हो कि जिस मुबाहला के लेख को हमने अपनी पुस्तक '**हकीक़तुल वह्यी**' में प्रकाशित किया है, वह इसी चिराग़दीन का लेख है।

यद्यपि पब्लिक के सन्तोष के लिए इतना ही पर्याप्त प्रमाण था किन्तु फिर भी मुझे विचार आया कि मुबाहला का मूल लेख जो चिराग़दीन ने अपने हाथ से लिखा

था मिल जाए और उसका फोटो लिया जाए तो यह प्रमाण सोने पर सुहागा हो जाएगा। अतः इस उद्देश्य के लिए बहुत प्रयास किया गया। अन्ततः वह लेख 'एजाज़-ए-मुहम्मदी' के लिपिक से उस पुस्तक के प्रकाशित होने के पश्चात् मिल गया अपितु उस पुस्तक का पूर्ण मसौदा मिल गया। अतः मैंने प्रयास किया कि किसी प्रकार उस लेख का फोटो लिया जाए। अतः **बिरादरम मौलवी मुहम्मद अली** साहिब एम.ए. के माध्यम से कलकत्ता, बम्बई और मद्रास में उन कारखानों की ओर पत्र लिखे गए जहां लेखों के फोटो लिए जाते हैं। यद्यपि इतना अधिक मूल्य वर्णन किया गया कि पचास रुपये प्रति पृष्ठ फोटो लेने की मांग की गई तथापि हम ने सब कुछ स्वीकार कर लिया। यही कारण था कि पुस्तक 'हकीक़तुल वह्यी' के प्रकाशित होने में बहुत विलम्ब हो गया। अन्ततः खुदा तआला की कृपा से उस लेख का फोटो लेने में हम सफल हुए। अतः वह फोटो इस परिशिष्ट के साथ संलग्न कर दिया गया है और चिराग़दीन का मूल लेख जो मुबाहला की इबारात है अपितु उस की हस्तलिखित पूर्ण पुस्तक हमारे पास सुरक्षित है जिस का मन चाहे देख ले तथा जो व्यक्ति चिराग़दीन के लेख को पहचानता है उसके लिए आवश्यक नहीं कि वह इस लेख को जो चिराग़दीन का हस्तलिखित हमारे पास सुरक्षित है देखे अपितु वह केवल उसका फोटो देखकर सन्तुष्ट हो जाएगा।

(2) दूसरी बात जो इस परिशिष्ट में लिखने योग्य है वह कुछ भविष्यवाणियां हैं जो पुस्तक हकीक़तुल वह्यी को पूर्ण करने के पश्चात् पूरी हुईं। एक उनमें से वह भविष्यवाणी भी है कि जो पूर्व युग का एक निशान है और निशानों को लिखने के समय उसका लिखना याद नहीं रहा था इसलिए अब परिशिष्ट में लिखा गया है क्योंकि वह एक बड़ा निशान है तथा प्रायः इस लेखक (विनीत) के कट्टर शत्रु एवं विरोधी साक्षी हैं। इसलिए मैं ने उचित समझा कि इस निशान को भी इन निशानों के साथ इस परिशिष्ट में लिख दूं और वे यह हैं :-

प्रथम - उन निशानों में से निशान यह है कि नवाब मुहम्मद अली खान साहिब रईस मलेर कोटला के बारे में मुझ पर खुदा तआला ने यह प्रकट किया कि उनकी

पत्नी शीघ्र ही मृत्यु पा जाएगी तथा मृत्यु की सूचना देकर यह भी कहा कि पीड़ादायक कष्ट और पीड़ादायक घटना। मैंने इस सूचना से सर्वप्रथम अपने घर के लोगों को सूचित किया और फिर दूसरों को और फिर अखबार बद्र और अलहकम में यह भविष्यवाणी प्रकाशित करा दी। यह उस युग में खुदा तआला ने मुझे सूचना दी थी जबकि आदरणीय नवाब साहिब की पत्नी हर प्रकार से स्वस्थ और ठीक थी। फिर लगभग छः माह के पश्चात् नवाब मुहम्मद अली खान साहिब की पत्नी को सिल (टी.बी.) का रोग हो गया और जहां तक संभव था उनका उपचार किया गया। अन्ततः रमजान 1324 हिज्री में वह स्वर्गीया उसी रोग से इस अस्थायी संसार से चल बसीं। इस भविष्यवाणी से नवाब साहिब को भी समय से पूर्व सूचित किया गया था और हमारे प्रकाण्ड विद्वान मित्र हकीम मौलवी नूरदीन साहिब, मौलवी सय्यद मुहम्मद अहसन साहिब तथा इस जमाअत के अधिकांश सम्मानित लोग इस भविष्यवाणी से परिचित हैं। अल्लाह तआला का पवित्र क़ुर्आन में कथन है -

فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ أَحَدًا ۖ إِلَّا مَن ارْتَضَىٰ مِن رَّسُولٍ ۚ

अर्थात् खुदा तआला बहुत साफ़ और बहुत स्पष्ट ग़ैब (परोक्ष) अपने रसूलों के अतिरिक्त किसी पर प्रकट नहीं करता और स्पष्ट है कि किसी भविष्यवाणी के दावे के साथ उसकी पूर्ण व्याख्या प्रकाशित करना और फिर उसका उसी प्रकार पूर्ण स्पष्टता के साथ पूरा होना, इस से अधिक प्रकाशमान निशान का और क्या लक्षण हो सकता है।

(2) उन निशानों में से दूसरा निशान यह है कि मुझे 30, जुलाई 1906 ई. में तथा इसके पश्चात् अन्य कई तिथियों में खुदा की वह्यी के द्वारा बताया गया कि इस जमाअत में से एक व्यक्ति एक क्षण में इस संसार से कूच कर जाएगा और पेट फट जाएगा तथा शा'बान के महीने में वह मृत्यु को प्राप्त होगा। अतः इस भविष्यवाणी के अनुसार शा'बान 1324 हिज्री मियां साहिब नूर मुहाजिर जो

साहिबजादा मौलवी अब्दुल लतीफ साहिब की जमाअत में से था सहसा एक पल में पेट फटने के साथ मर गया और मालूम हुआ कि उसके पेट में कुछ समय से रसौली थी परन्तु कुछ महसूस नहीं करता था तथा युवा, बलवान और शक्तिशाली था। एक बार पेट में दर्द हुआ उसका अन्तिम वाक्य यह था कि उसने तीन बार कहा कि मेरा पेट फट गया, तत्पश्चात् मृत्यु हो गई और जैसा कि भविष्यवाणी में था शा'बान के महीने में एक पल में उसके प्राण निकल गए। यह भविष्यवाणी प्रकट होने से पूर्व अखबार 'बद्र' और 'अलहकम' में प्रकाशित करा दी गई थी।

(3) उन निशानों में से एक निशान सा'दुल्लाह लुधियानवी की मृत्यु है जो भविष्यवाणी के अनुसार प्रकट हुई। उसका विवरण यह है कि जब मुन्शी सा'दुल्लाह लुधियानवी गाली गलौज और बुराई करने में सीमा से बढ़ गया तथा अपनी पद्य और गद्य में उसने मुझे इतनी अधिक गालियां दीं कि मेरा विचार है कि पंजाब के तमाम बुराभला कहने वाले लोगों में से वह प्रथम श्रेणी का गन्दी गालियां देने वाला विरोधी था। अतः मैंने उसकी मृत्यु के लिए खुदा के आगे दुआ की कि वह मेरे जीवन में ही निराश रह कर तबाह हो और अपमान की मृत्यु से मरे^①। इस दुआ का कारण उसकी गालियां नहीं थीं अपितु बड़ा कारण यह था कि वह मेरी मृत्यु चाहता था तथा मेरे लिए अपनी पद्य और गद्य में बद-दुआएं करता था तथा अपनी मूर्खता और मूढ़ता से हार्दिक तौर पर मेरा विनाश और मेरी मृत्यु चाहता था और झूठों पर खुदा की ला'नत मेरे पक्ष में उसका विरुद्ध (जप) था और चाहता था कि मैं उसके जीवन में तबाह हो जाऊं और मृत्यु का शिकार हो जाऊं और यह सिलसिला पतनशील हो जाए और इस कारण मैं झूठा ठहरूं और लोगों की

① जैसा कि मैं आगे वर्णन करूंगा इस व्यक्ति अर्थात् सा'दुल्लाह ने मेरी मृत्यु की भविष्यवाणी की थी तथा प्रकाशित किया था कि मैं उसके जीवन में ही अपमान के साथ मृत्यु पाऊंगा और मैंने प्रकाशित किया था कि वह मेरे जीवन में मृत्यु पाएगा। अन्ततः मेरे खुदा ने मुझे सच्चा सिद्ध किया और वह जनवरी 1907 ई. के पहले सप्ताह में ही मृत्यु पा गया और अपमान एवं उत्कंठा साथ ले गया। इसी से।

फटकार का लक्ष्य बनूं। यद्यपि यह इच्छा प्रत्येक शत्रु में पाई जाती है कि वे मेरी मृत्यु देखें और उनके जीवन में मेरी मृत्यु हो किन्तु यह व्यक्ति सब से अग्रसर हो गया था और प्रत्येक बुराई के लिए जब दुर्भाग्यशाली विरोधी संकल्प करते थे तो वह उस योजना में पूर्णरूप से भाग लेता था और मैं स्वीकार नहीं कर सकता कि जब से संसार की सृष्टि हुई है किसी व्यक्ति ने किसी नबी या रसूल को ऐसी गन्दी गालियां दी हों जैसी कि उसने मुझे दीं। अतः जिस व्यक्ति ने उसकी विरोधात्मक पद्यों एवं गद्यों तथा विज्ञापनों को देखा हो उसे ज्ञात होगा कि मेरी मृत्यु और मेरे विनाश के लिए एवं मेरा अपमान और असफलता देखने के लिए कितना लोलुप था तथा मेरे विरोध में उस का हृदय किस सीमा तक गन्दा हो गया था। अतः इन समस्त बातों के कारण मैंने उसके बारे में यह दुआ की कि उसे मेरे जीवन में असफलता और अपमान की मृत्यु प्राप्त हो। इसलिए खुदा ने ऐसा ही किया और जनवरी 1907 ई. के प्रथम सप्ताह में कुछ ही घंटों में प्लेग के न्यूमोनिया से इस नश्वर संसार से सहस्त्रों उत्कंठाओं के साथ कूच कर गया।

अतः अखबार अहले हदीस के एडीटर मौलवी सनाउल्लाह साहिब ने अपने अखबार के पृष्ठ-4 में सा'दुल्लाह की उत्कंठा एवं शोकपूर्ण मृत्यु की ओर इन शब्दों में संकेत किया है कि उसके पुत्र की सगाई हाजी अब्दुरहीम की पुत्री से हो चुकी थी और शीघ्र ही विवाह होने वाला था कि सा'दुल्लाह संसार से कूच कर गया और सा'दुल्लाह को यह भी सौभाग्य प्राप्त न हुआ कि पुत्र का विवाह देख लेता जबकि उस का एक ही पुत्र था। विवाह का समस्त सामान उसने एकत्र कर लिया था और कुछ दिनों में ही इस शुभ कार्य को पूर्ण करने के लिए तैयार था कि मृत्यु के फ़रिश्ते ने आ पकड़ा। यह कथन मौलवी सनाउल्लाह साहिब का यथोचित है, क्योंकि हमारी जमाअत के कुछ लोगों ने उसे बार-बार यह कह कर दोषी किया था कि तेरे बारे में लगभग तेरह वर्ष से मसीह मौऊद को यह इल्हाम हो चुका है कि **إِنَّ شَانِكَ هُوَ الْأَبْتَرُ** अर्थात् तेरे निन्दक शत्रु सा'दुल्लाह की नस्ल को काट दिया जाएगा, फिर तू अपने पुत्र का क्यों किसी स्थान पर विवाह नहीं

करता ताकि नस्ल जारी हो। अतः अनुमान के निकट है कि इन बार-बार की भर्त्सना को सुनकर सा'दुल्लाह ने किसी स्थान पर अपने पुत्र की सगाई कर दी हो, किन्तु विवाह की अभी तैयारी हो रही थी कि सा'दुल्लाह की परलोक की ओर तैयारी हो गई। अतः सा'दुल्लाह का विवाह का नाम लेते ही मर जाना यह भी एक असफलता है। अतः इसमें क्या सन्देह हो सकता है कि वह मेरी भविष्यवाणी के अनुसार असफल मरा। और निःसन्देह यह एक अपमानजनक मृत्यु है कि वह भविष्यवाणी के इस अर्थ को अपने प्रयास से दूर न कर सका कि भविष्य में उसकी नस्ल नहीं चलेगी और न इस भविष्यवाणी को अपनी शक्ति द्वारा दूर कर सका कि मेरे जीवन में ही उसकी मृत्यु होगी और मेरी प्रत्येक उन्नति को देखकर मरेगा।

और मौलवी सनाउल्लाह साहिब का अपने अखबार 8 फ़रवरी 1907 ई. में अब्तर की भविष्यवाणी का खण्डन करने के लिए यह बहाना प्रस्तुत करना कि सा'दुल्लाह एक लड़का छोड़ गया है फिर उसे अब्तर (अर्थात् आगे वंश नहीं चलेगा) क्योंकि कह सकते हैं। यह उसका ऐसा वर्णन है जिस से समझा जाता है कि या तो उसने धोखा खाया या जान-बूझ कर लोगों को धोखा देना चाहता है क्योंकि प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि खुदा तआला ने जो कुछ अपनी वट्टी के द्वारा मुझ पर प्रकट किया है कि वह सा'दुल्लाह की वर्तमान अवस्था के बारे में वर्णन नहीं तथा प्रत्येक जानता है कि भविष्यवाणी के समय सा'दुल्लाह का पुत्र 14 या 15 वर्ष की आयु का मौजूद था तथा पुत्र के मौजूद होने के बावजूद खुदा तआला ने अपनी भविष्यवाणी में उसका नाम अब्तर रखा था और कहा था कि **إِنَّ شَأْنَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ** अर्थात् खुदा ने मुझे सम्बोधित करते हुए कहा कि तेरा निन्दक ही अब्तर होगा न कि तू। चूँकि सा'दुल्लाह अपने लेखों में बार-बार मेरे बारे में यह प्रकट करता था कि यह व्यक्ति झूठ गढ़ने वाला है शीघ्र तबाह हो जाएगा और उसका कुछ भी शेष नहीं रहेगा। अतः खुदा तआला ने उसके इन शब्दों के मुकाबले पर जो मात्र चपलता और अहंकार से भरे हुए थे यह कहा कि अन्ततः वह स्वयं तबाह हो जाएगा, उस का कुछ शेष नहीं रहेगा। अतः भविष्यवाणी

के अर्थ भविष्यवाणी को दृष्टिगत रखकर करने चाहिए। भविष्यवाणी ने मौजूदा लड़के को न होने जैसा ठहरा कर नस्ल को समाप्त करने का वादा दिया है और यह संकेत किया है कि इस लड़के का होना या न होना समान है। अतः यहां शब्दकोश इत्यादि का अन्तर के अर्थ के बारे में हवाला देना मात्र अश्लील बातें करना एवं मूर्खता है। इस मुकद्दमा का यह रूप तो नहीं है कि भविष्यवाणी के पश्चात् लड़का पैदा हो गया अपितु वह लड़का जो अब मौजूद है भविष्यवाणी के समय चौदह या पन्द्रह वर्ष का था और अब उन्तीस या तीस वर्ष का होगा। अतः जबकि भविष्यवाणी के समय में यह लड़का मौजूद था तो एक बुद्धिमान स्पष्ट तौर पर समझ सकता है कि इस भविष्यवाणी का अर्थ यह है कि यह लड़का न होने जैसा है और इसके पश्चात् वंश की समाप्ति है और यही खुदा तआला की ओर से मुझे समझाया गया था। मुल्हम (जिसे इल्हाम हुआ) से अधिक कोई इल्हाम के अर्थ नहीं समझ सकता और न किसी को उसके विपरीत कहने का अधिकार है। अतः जबकि खुदा तआला ने इस भविष्यवाणी के यही अर्थ स्पष्ट किए कि यह लड़का न होने जैसा है और इसके पश्चात् सा'दुल्लाह का वंश नहीं चलेगा और इसी पर सा'दुल्लाह के वंश की समाप्ति हो जाएगी। फिर यह कितनी हठधर्मी है कि यह कहना कि सा'दुल्लाह अपनी मृत्यु के पश्चात् लड़का छोड़ गया।

हे मूर्ख ! यह लड़का तो भविष्यवाणी के समय मौजूद था और अरबी भाषा-शैली को पूर्ण प्रयास के साथ देखने से ज्ञात होगा कि अन्तर के शब्द में यह शर्त नहीं है कि किसी सन्तान वाले व्यक्ति की ही इस अवस्था में मृत्यु हो कि जब उसके जीवन में उसकी सन्तान की मृत्यु हो जाए अपितु नस्ल (वंश) की जड़ कट जाना शर्त है जैसा कि 'बतर' के अर्थ अरबी शब्दकोष में यह लिखते हैं - الْبَتْرُ - إِسْتِيفَالُ الشَّيْءِ قَطْعًا अर्थात् 'बतर' किसी वस्तु को जड़ से काट देने को कहते हैं। अतः इस से बिल्कुल स्पष्ट है कि यह भविष्यवाणी भावी नस्ल (वंश) के लिए थी, अर्थात् यह कि मौजूदा लड़के से भावी वंश (नस्ल) नहीं चलेगा। जैसा कि हम आगे स्पष्टतापूर्वक वर्णन करेंगे। अतः जिस व्यक्ति की प्रकृति में लेशमात्र भी

बुद्धि और लज्जा है वह समझ सकता है कि खुदा तआला का किसी के बारे में यह भविष्यवाणी करना कि अमुक व्यक्ति का वंश समाप्त हो जाएगा। इस भविष्यवाणी के लिए यह आवश्यक नहीं कि उसके जीवन में वह समस्त सन्तान मर जाए क्योंकि यदि यही शर्त हो तो फिर ऐसी स्थिति में ऐसी नस्ल समाप्ति का क्या नाम रखना चाहिए कि एक मनुष्य एक या दो लड़के छोड़कर मर जाए और उसके पश्चात् किसी समय वे लड़के भी मृत्यु पा जाएं तथा कुछ नस्ल शेष न रहे। क्या ऐसी परिस्थिति में अरबी भाषा शैली में 'अबतर' शब्द के अतिरिक्त कोई अन्य शब्द भी मौजूद है और क्या यह कहना वैध होगा कि ऐसे व्यक्ति की नस्ल की समाप्ति नहीं और शब्द استیصال الشئ قطعاً उस पर अनिवार्य नहीं आता। अतः स्पष्ट है कि ऐसा विचार मूर्खता और पागलपन है। और अरबी भाषा में इस प्रकार से नस्ल समाप्ति के लिए 'अबतर' शब्द के अतिरिक्त अन्य कोई शब्द निर्धारित नहीं। अरब के लोग उस व्यक्ति को बहरहाल अबतर ही कहते हैं जिसकी सन्तान उसके जीवन में या उसकी मृत्यु के पश्चात् अपनी मृत्यु के कारण उसको निःसन्तान की संज्ञा दे अपितु प्रत्येक देश में ऐसे व्यक्ति का नाम बहरहाल अबतर ही है जिसकी नस्ल शेष न रहे और नस्ल की समाप्ति करके पुकारा जाए। अरबी शब्दकोश के विद्वानों में से किसी ने यह वर्णन नहीं किया कि अबतर होने के लिए अनिवार्य तौर पर यह शर्त है कि एक व्यक्ति के यहां सन्तान होकर उसके जीवन में ही मृत्यु पा जाए और यदि किसी की सन्तान की उसके जीवन में मृत्यु न हो किन्तु उसके मृत्योपरान्त मृत्यु पाकर नस्ल समाप्त कर दे तो क्या अरब की भाषा में ऐसे व्यक्ति को किसी अन्य नाम की संज्ञा देते हैं अपितु जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं इस शब्द के मूल तत्त्व में बहुत विशालता है क्योंकि अरबी में 'बतर' केवल जड़ काट देने को कहते हैं।

स्पष्ट हो कि अरब की भाषा में अबतर का शब्द एक विशाल शब्द है।
'लिसानुलअरब' में लिखा है :-

البتر استیصال الشئ قطعاً۔ البتر قطع الذنب ونحوه۔ الابتر المقطوع

الذنب - والابتتر من الحيات - الذى يقال له الشيطان - لا تبصره حامل الا اسقطت - وفي الحديث كل امرئ نى بال لا يبدء فيه بحمد الله فهو ابتتر - والابتتر الذى لا عقب له وبه فسر قوله تعالى اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ - نزلت في العاص ابن وائل وكان دخل على النبی صلی الله علیه وسلم وهو جالس فقال هذا الابتتر ائى هذا الذى لا عقب له فقال الله جل ثناؤه - ان شائنك يا محمد هو الابتتر ائى المنقطع العقب وجائز ان تكون هو المنقطع عنه كل خیر -

وفي حديث ابن عباس قال لما قدم ابن اشرف مكة - قالت له قريش انت خير اهل المدينة وسيدهم قال نعم قالوا الا ترى هذا الصنير الا ابتتر عن قومه يزعم انه خير منا ونحن اهل الحجيج واهل السدانه واهل السقاية قال اَنْتُمْ خَيْرٌ مِنْهُ - فانزلت اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ -

والابتتر المعدم - والابتتر الخاس والابتتر هو الذى لا عروة له من المزداد والدلاء -

अनुवाद - बतर कहते हैं एक वस्तु का जड़ से काट देना। दूसरे अर्थ बतर के यह हैं कि पूंछ इत्यादि को काट देना (1) अब्तर उसे कहते हैं जिसकी पूंछ काटी गई हो। (2) सांपों के प्रकार में से एक प्रकार के सांपों का नाम अब्तर है। इस प्रकार के सांप को शैतान कहते हैं यदि गर्भवती स्त्री उसे देखे तो उसका गर्भपात हो जाता है। (3) हदीस में है कि प्रत्येक शानदार बात जिसे खुदा की स्तुति एवं प्रशंसा से आरंभ न किया जाए वह अब्तर है। (4) अब्तर उसे भी कहते हैं जो अक्रब न रखता हो अर्थात् उसका कोई बेटा न हो या बेटे का बेटा न हो। लिसानुलअरब में लिखा गया है कि अक्रब वलद को भी कहते हैं और वलदुल वलद को भी कहते हैं। अतः अर्थों के अनुसार जिसका बेटा नहीं वह भी अब्तर है और जिस के बेटे के आगे बेटा नहीं वह भी अब्तर है किन्तु जिसके कई बेटों में से किसी बेटे की नस्ल चल जाए उसे अब्तर नहीं कह सकते। अतः जिस व्यक्ति

की मृत्यु हो जाए और ऐसा कोई बच्चा न छोड़े, उसका नाम भी अब्तर है तथा इसके अनुसार खुदा तआला के इस कथन की व्याख्या की गई है कि

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ^①

यह आयत आसी बिन वायल के पक्ष में उतरी थी वह एक दिन आंजूरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैठे हुए थे। अतः आस बिन वायल ने आंजूरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर संकेत करके कहा कि यह अब्तर है अर्थात् इसका कोई लड़का नहीं है और न लड़के का लड़का। तब खुदा तआला ने आंजूरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करके कहा कि हे मुहम्मद! जो तेरा बुरा कहने वाला है वही अब्तर है अर्थात् प्रारब्ध यों है कि जिस सन्तान पर वह गर्व करता है अन्ततः उसकी सन्तान समाप्त हो जाएगी चाहे उसके जीवन में अथवा उसकी मृत्योपरान्त और नस्ल का क्रम समाप्त हो जाएगा। यह तो स्पष्ट है कि आस बिन वायल सन्तान रखता था क्योंकि यदि वह अब्तर अर्थात् निःसन्तान होता तो यह अनुचित बात थी कि आप अब्तर होने के बावजूद आंजूरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम अब्तर रखता। अतः खुदा तआला की ओर से यह भविष्यवाणी थी कि परिणामस्वरूप उसकी नस्ल कट जाएगी चाहे उसके जीवन में हो या मृत्योपरान्त। अतः ऐसा ही हुआ परंतु ज्ञात होता है कि वह संतान छोड़ कर मर गया था लेकिन उसके बाद उसकी संतान भी मर गई। क्योंकि यदि सन्तान उसके सामने मरती तो उसकी चर्चा अवश्य की जाती। शेष अनुवाद यह है कि इस स्थान पर अब्तर के यह अर्थ भी वैध हैं कि अब्तर उसे कहते हैं कि प्रत्येक भलाई से वंचित हो और इब्ने अब्बास की हदीस में है कि जब इब्ने अशरफ़ मक्का में आया तो उसे कुरैश ने कहा कि तू सब मदीना वालों से श्रेष्ठ और उनका सरदार है। उसने कहा कि हां मैं ऐसा ही हूं। तब कुरैश ने कहा कि क्या तू उस व्यक्ति की ओर नहीं देखता (अर्थात् आंजूरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर) यह एक कमजोर, निर्बल तथा

संज्ञाहीन व्यक्ति है, न इसका कोई बेटा, और न कोई भाई, और न कोई मित्रों की जमाअत उसके साथ है अपितु एकमात्र अकेला है और क्रौम में से काटा हुआ है अर्थात् क्रौम ने धार्मिक विरोध के कारण इसे अपनी जमाअत से बहिष्कृत कर दिया है और फ़त्वा दे दिया है कि इसके साथ कोई मेल-मिलाप न रखे और न कोई इसके साथ सहानुभूति का व्यवहार करे तथा इसके बावजूद कि यह व्यक्ति कुछ भी सम्मान नहीं रखता तथा इसे कोई भी जानता तक नहीं कि कौन है फिर भी यह समझता है कि हम से उत्तम है परन्तु हम एक सम्माननीय जमाअत हैं। समस्त हज करने वाले हम में से हैं और हम उनके सरदार हैं तथा काबा के अभिभावक एवं सेवक भी हम ही हैं और हाजियों को पानी पिलाने का गौरव भी हमें प्राप्त है किन्तु यह व्यक्ति तो किसी गिनती में नहीं। जब ये समस्त बातें इब्ने अशरफ़ ने सुनीं तो उस दुर्भाग्यशाली दुष्ट ने उत्तर दिया कि वास्तव में तुम इस व्यक्ति से जो पैगम्बरी (अवतार होने का) का दावा करता है श्रेष्ठ हो। तब ख़ुदा तआला ने उसके लिए और कुरैश की उस समस्त जमाअत के लिए जो अब्तर कहती थी कहा कि -

إِنَّ شَأْنَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ^①

अर्थात् इब्ने अशरफ़ ने जो आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अब्तर कहा और कुरैश के काफ़िरों ने भी अब्तर कहा यह स्वयं अब्तर हैं अर्थात् इनकी सन्तान का क्रम कट जाएगा और प्रत्येक भलाई एवं कल्याण से वंचित मरेंगे। इस बात को तो आज तक कोई सिद्ध नहीं कर सका कि वे समस्त कुरैश के लोग जो आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अब्तर कहते थे उनके जीवन में ही उनके सब लड़के मृत्युप्राप्त हो चुके थे और उनकी सन्तान नहीं थी क्योंकि यदि उनकी सन्तान न होती तो वे लोग आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कदापि अब्तर न कहते। यह बात कोई बुद्धिमान स्वीकार नहीं कर सकता कि एक व्यक्ति स्वयं अब्तर हो वह दूसरे को अब्तर कहे। अतः स्वीकार करना पड़ता है कि उनकी सन्तान मौजूद थी और यह दूसरी बात कि भविष्यवाणी के अनुसार उन

लोगों की सन्तान उनके जीवन में ही मृत्यु को प्राप्त हो चुकी थी। यह बात भी अनुमान के अनुरूप नहीं और बुद्धि इसे कदापि स्वीकार नहीं कर सकती, क्योंकि ऐसा कहने वाले न एक न दो अपितु सैकड़ों धृष्ट और मलिन स्वभाव व्यक्ति थे जिनकी सन्तान की संख्या हजारों तक पहुंची थी। यदि उनके जीवन में ही उनकी सारी सन्तान मर जाती तो देश में एक हाहाकार मच जाता, क्योंकि चमत्कार के तौर पर हजारों बच्चों का मर जाना और फिर निःसन्तान होने की स्थिति में उनके पिताओं की मृत्यु का हो जाना यह ऐसा चमत्कार नहीं था जो गुप्त रह सकता तथा अवश्य था कि हदीसों एवं इतिहास की पुस्तकों में इस का वर्णन होता। अतः इस से निश्चित तौर पर सिद्ध होता है कि उनके अधिकांश लोग सन्तान छोड़ कर मर गए थे और बाद में भविष्यवाणी के अनुसार शनैः शनैः उनकी सन्तान समाप्त हो गई। अतः पवित्र कुरआन की यह भविष्यवाणी जो कुरैश के काफ़िरों के बारे में थी अर्थात् *إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ* यह बिल्कुल उसी प्रकार की भविष्यवाणी है जो मैंने खुदा तआला से इल्हाम पाकर सा 'दुल्लाह लुधियानवी के बारे में भी की थी। अतः इसी प्रकार वह प्रकट होगी। जिसके कान सुनने के हों सुने। शेष अनुवाद लिसानुलअरब का यह है कि अब्तर दरिद्र को भी कहते हैं और उस व्यक्ति को भी जो घाटे में हो और उन वस्तुओं को अब्तर कहते हैं जो मशक और डोल इत्यादि में से जो दस्ता न रखते हों।

इस सम्पूर्ण जांच से सिद्ध है कि प्रथम तो अब्तर का शब्द पुरुष सन्तान न होने के लिए विशिष्ट नहीं है बल्कि प्रत्येक वंचित और निराश जो असफल एवं घाटा पहुंचाने वाला है उसे भी अब्तर कहते हैं जैसा कि सा 'दुल्लाह अपने कार्यों में निराश गया और मेरे मुकाबले पर उसकी जो कुछ अभिलाषा थी उसे सब में असफलता हुई जैसा कि हम आगे चल कर वर्णन करेंगे। इसके अतिरिक्त उपरोक्त जांच-पड़ताल के अनुसार सिद्ध हो गया कि अब्तर होने के लिए यह आवश्यक नहीं कि मनुष्य ऐसी अवस्था में मरे जबकि उसकी कोई सन्तान न हो अपितु यदि बाद में भी उसकी सन्तान का क्रम समाप्त हो जाए और पोते से आगे न चले तब भी वह अब्तर

कहलाता है। जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं कि कुरैश के सैकड़ों मलिन प्रकृति रखने वाले लोगों ने आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम अब्तर रखा था और वे लोग सन्तान वाले थे तथा इस्लामी इतिहास में सिद्ध नहीं किया गया कि उनके जीवन में ही उनके बेटे और पोते मृत्यु पा गए थे अपितु बाद में शनैः शनैः उनकी सन्तान समाप्त हो गई थी। अतः वह भविष्यवाणी जो खुदा तआला की ओर से मुझ पर प्रकट हुई उसका भी यही उद्देश्य था कि अन्ततः सा'दुल्लाह की सन्तान समाप्त हो जाएगी। अतः उसके लक्षण भी प्रकट हो गए कि भविष्यवाणी पर बारह वर्ष की अवधि गुजर जाने के बावजूद भी सा'दुल्लाह के घर में भविष्यवाणी के पश्चात् लड़का न हुआ और न उसके लड़के की सन्तान हुई। क्या इस घटना से भविष्यवाणी के प्रभाव की कुछ भी गंध नहीं आती कि भविष्यवाणी के पश्चात् लगभग बारह वर्ष तक सा'दुल्लाह जीवित रहा और उसकी पत्नी मौजूद थी किन्तु फिर भी सन्तान का होना ऐसा रुक गया जैसा कि एक बाढ़ के आगे बांध लगाया जाता है और लड़का जो भविष्यवाणी से पूर्व पन्द्रह वर्ष की आयु का मौजूद था वह भी तीस वर्ष तक पहुंच गया परन्तु विवाह तक नौबत न आई और सा'दुल्लाह एक शक्तिशाली युवा था तथा इस योग्य था कि भविष्यवाणी के पश्चात् उसके घर में कई लड़के पैदा हो जाते, परन्तु भविष्यवाणी के पश्चात् मृत्यु के दिन तक उसके घर में कोई जीवित रहने वाला लड़का पैदा नहीं हुआ और न उसके लड़के के घर में कोई सन्तान हुई अपितु वह अब तक विवाह से वंचित है तथा सुना है कि उसकी आयु तीस वर्ष या इससे अधिक है। अतः भविष्यवाणी ने अपनी सच्चाई को प्रकट कर दिया कि भविष्यवाणी के पश्चात् खुदा तआला ने सा'दुल्लाह के घर में सन्तानोत्पत्ति रोक दी। प्रत्येक व्यक्ति जो अपने अन्दर कुछ लज्जा और शर्म का तत्त्व रखता है वह समझ सकता है कि भविष्यवाणी के साथ ही भावी बारह वर्षों तक सन्तान का क्रम समाप्त हो जाना तथा उसी अवस्था में सा'दुल्लाह का मर जाना यह ऐसी बात नहीं है कि जिसकी अवहेलना की जाए। जिस अवस्था में जिसकी अवहेलना की जाए। जिस अवस्था में दुर्भाग्यशाली सा'दुल्लाह के इन वाक्यों के पश्चात् जो उसने

मेरे बारे में कहे अर्थात् यह कि जैसे मैं अपनी समस्त सन्तान सहित तबाह हो जाऊंगा और मेरा कुछ भी शेष नहीं रहेगा और जमाअत अस्त-व्यस्त हो जाएगी। खुदा ने उसके बारे में यह इल्हाम किया कि **ان شئت هو الا بتر** अर्थात् तू अब्तर नहीं होगा अपितु तुझे अपशब्द निकालने वाला ही अब्तर रहेगा। अतः देखना चाहिए कि इस भविष्यवाणी का परिणाम क्या हुआ। बिल्कुल स्पष्ट है कि परिणाम यह हुआ कि दुर्भाग्यशाली सा 'दुल्लाह अब्तर के शब्द के प्रत्येक अर्थ की दृष्टि से जो शब्दकोष में दिए गए हैं खुदा के आक्रोश एवं प्रकोप का पात्र बन गया। अपने इरादे में असफल और निराश रहा। जैसा कि अब्तर के शब्द के एक यह भी अर्थ हैं और अभी हम यह अर्थ भी लिख चुके हैं। दूसरे यह अर्थ भी उस पर चरितार्थ हुए कि अन्ततः पादरियों का नौकर होकर जो इस्लाम धर्म को अपमानित करने में दिन-रात तत्पर रहते हैं अपमानित जीवन अपनाया और वह भलाई और बरकत जो एक स्वाभिमानी इस्लाम के भाग में आती है उस से वंचित हो गया। यह उसका परिणाम था कि केवल चपलता और अवसरवादी होने के कारण सच्चाई के विरोध पर कटिबद्ध था। इसलिए उस पर यह प्रत्यागमन पड़ा कि मेरी आज्ञाकारिता का जुआ न उठाया, किन्तु पादरियों की आज्ञाकारिता का जुआ उठा लिया। अतः इन अर्थों की दृष्टि से भी वह अब्तर ठहरा फिर जैसा कि वर्णन कर चुका हूं, इन अर्थों की दृष्टि से भी अब्तर हुआ कि उस समय से कि उसके बारे में खुदा तआला ने कहा कि **هُوَ الْاَبْتَرُ** **شَئْنُكَ هُوَ الْاَبْتَرُ** मानो उसी क्षण से खुदा तआला ने उसकी पत्नी को बांझ कर दिया। उसे यह इल्हाम खुले-खुले शब्दों में सुनाया गया था कि अब मृत्यु के दिन तक तेरे घर में सन्तान न होगी और न आगे सन्तान का क्रम चलेगा। उसने निश्चय ही इस इल्हाम के खण्डन के लिए सन्तान प्राप्त करने के उद्देश्य से बहुत प्रयास किया होगा किन्तु वह प्रयास व्यर्थ गया, अन्ततः निराश होकर मरा तथा अब्तर के प्रत्येक अर्थ उस पर चरितार्थ हो गए तथा दूसरी ओर जो मेरे बारे में वह बार-बार बद्दुआएं करता था कि यह व्यक्ति झूठ गढ़ने वाला है, मरेगा, और सन्तान भी मरेगी और जमाअत अस्त-व्यस्त हो जाएगी। इसका परिणाम यह हुआ कि इस इल्हाम के

पश्चात् अर्थात् इल्हाम **إِنْ شَأْنُكَ هُوَ الْأَبْتَرُ** के पश्चात् मेरे घर में तीन लड़के पैदा हुए और तीन लाख से अधिक जमाअत हो गई और कई लाख रुपया आया और कई ईसाई और हिन्दू मेरी दावत से मुसलमान हुए। अतः क्या यह निशान नहीं? तथा क्या यह भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई तथा यह कहना कि सा'दुल्लाह के लड़के की अब्दुरहीम की सुपुत्री से मंगनी हो गई है तथा विवाह हो जाएगा और सन्तान भी होगी यह एक ख्याली पुलाव है तथा मात्र एक गप है^① जो उपहास योग्य है और इसका उत्तर भी यही है कि खुदा के वादे टल नहीं सकते। यह बात तो उस समय प्रस्तुत करनी चाहिए कि जब विवाह हो जाए और सन्तान भी हो जाए। व्यावहारिक तौर पर जो ईमानदारी की यही मांग है कि इस बात पर ध्यानपूर्वक विचार करें कि जैसे कि पवित्र कुर्आन की यह भविष्यवाणी पूरी हुई कि **إِنْ شَأْنُكَ هُوَ الْأَبْتَرُ** वैसे ही यह भविष्यवाणी भी प्रकट हो गई जिसे खुदा तआला ने मेरे द्वारा प्रकट की क्योंकि जैसा कि वर्णन कर चुका हूं उसी दिन से जबकि खुदा तआला ने उसके बारे में मुझे यह सूचना दी कि **إِنْ شَأْنُكَ هُوَ الْأَبْتَرُ** जिस पर आज तक बारह वर्ष गुज़र गए उसी समय से सा'दुल्लाह पर सन्तान का द्वार बन्द किया गया और उसकी बद्दुआओं को उसी के मुंह पर मार कर इस इल्हाम के पश्चात् खुदा तआला ने मुझे तीन लड़के

① यह इसी प्रकार की आशा है जैसा कि अब्दुल हक़ ग़ज़नवी फिर अमृतसरी ने मुबाहला के पश्चात् अपने बारे में मुबाहला का यह प्रभाव प्रकट किया था कि मेरा भाई मर गया है और उसकी पत्नी से मैंने निकाह किया है और उसे गर्भ हो गया है और अब उसे लड़का पैदा होगा और वह मुबाहला का प्रभाव समझा जाएगा किन्तु उस गर्भ का परिणाम यह हुआ कि कुछ भी पैदा न हुआ और वह अब तक चौदह वर्ष गुज़रने के बावजूद निराशा और अपमान का जीवन भुगत रहा है तथा इसके विपरीत मुबाहला के पश्चात् मेरे घर में कई लड़के पैदा हुए और कई लाख लोगों ने बैअत की तथा कई लाख रुपया आया और विश्व के किनारों तक सम्मान के साथ मेरी ख्याति हो गई और मुबाहला के पश्चात् अधिकतर शत्रु मर गए और मेरे हाथ पर हज़ारों निशान प्रकट हुए। इसी से।

दिए तथा करोड़ों लोगों में मुझे सम्मान के साथ ख्याति प्रदान की और इतनी अधिक आर्थिक सफलताएं और नक़द आए तथा अनाज तथा नाना प्रकार के उपहार मुझे दिए गए कि यदि वे सब एकत्र किए जाते तो उन से कई कमरे भर सकते थे। सा 'दुल्लाह' चाहता था कि मैं अकेला रह जाऊं, कोई मेरे साथ न हो। अतः ख़ुदा तआला ने इस कामना में उसे असफल रख कर कई लाख लोग मेरे साथ कर दिए। वह चाहता था कि लोग मेरी सहायता न करें किन्तु ख़ुदा तआला ने उसके जीवन में ही उसे दिखा दिया कि एक संसार मेरी सहायता के लिए मेरी ओर आकृष्ट हो गया और ख़ुदा तआला ने मेरी वह आर्थिक सहायता की कि सैकड़ों वर्ष में किसी की ऐसी सहायता नहीं हुई और वह चाहता था कि मुझे कोई सम्मान प्राप्त न हो परन्तु ख़ुदा ने प्रत्येक स्तर के हजारों लोगों की गर्दन मेरी ओर झुका दीं। वह चाहता था कि मैं उसके जीवन में ही मर जाऊं और मेरी सन्तान भी मर जाए परन्तु ख़ुदा तआला ने मेरे जीवन में ही उसे मृत्यु दी और इल्हाम के दिन के पश्चात् मुझे तीन और लड़के प्रदान किए। अतः यह मृत्यु उसकी बड़ी असफलता और अपमान के साथ हुई और मैंने यही भविष्यवाणी की थी जो ख़ुदा तआला की कृपा से पूरी हो गई। और वह भविष्यवाणी जिस में मैंने लिखा था कि असफलता और अपमान के साथ वह मेरे सामने मरेगा। वह 'अंजाम-ए-आथम' में अरबी शेरों में है और वह यह है :-

(१) وَمِنَ اللَّيَامِ أَرَىٰ رُجِيلًا فَاسِقًا غَوْلًا لَّعِينًا نُّطْفَةَ السُّفْهَاءِ ①

अनुवाद - (१) और कृपणों में से एक पापी व्यक्ति को देखता हूं कि एक धिक्कृत शैतान है जो मूर्खों का बीज है।

(२) شَكْسٌ خَبِيثٌ مُّفْسِدٌ وَمُزَوَّرٌ نَحْسٌ يُسَمَّى السَّعْدُ فِي الْجَهْلَاءِ

(२) वह गाली देने वाला, बहुत बड़ा पापी, उपद्रवी और झूठ को चमका कर दिखाने वाला है, अशुभ है जिसका नाम मूर्खों ने सा 'दुल्लाह' रखा है।

(३) يَا لَا عَنِي إِنَّ الْمُهَيِّمِينَ يَنْظُرُونَ خَفَقَهُ رَبٌّ قَادِرٌ مَوْلَانِي

(३) हे मुझे लानत करने वाले ख़ुदा तुझे देख रहा है। उस ख़ुदा के प्रकोप से

① मैं लिख चुका हूं कि ये कुछ शेर उस समय उचित नीयत के साथ लिखे गए जबकि दुर्भाग्यशाली सा 'दुल्लाह' की गालियां बहुत बढ़ गई थीं। इसी से।

डर जो मेरा शक्तिमान स्वामी है।

(२) اِنِّى اَرَاكَ تَمِيْسُ بِالْخِيْلَاءِ اُنْسِيَتْ يَوْمَ الطَّعْنَةِ النِّجْلَاءِ

(4) मैं तुझे देखता हूँ कि तू गर्व एवं अहंकार के साथ चलता है। क्या तुझे वह दिन स्मरण नहीं आता कि जब तू घाव करने वाली तारुन से मरेगा।

(५) لَا تَتَّبِعْ اَهْوَاءَ نَفْسِكَ شَقْوَةً يُلْقِيْكَ حُبُّ النَّفْسِ فِي الْخَوَقَاءِ

(5) अपनी काम-वासना संबंधी इच्छाओं का दुर्भाग्य के कारण अनुसरण मत कर। तुझे तेरे नफ्स का प्रेम कुएं में डालेगा।

(६) فَرَسٌ خَبِيْثٌ خَفَّ ذُرَى صَهْوَاتِهِ خَفَّ اِنْ تَزَلَّكَ عَدُوْزِيْ عَدُوْءٍ

(6) तेरा अहंकार एक दुष्ट घोड़ा है उसकी पीठ की ऊंचाई से तू भय कर और तू इस बात से डर कि उसका सीधा न चलना तुझे पृथ्वी पर गिरा दे।

(७) اِنَّ السُّمُوْمَ لَشَرٌّ مَا فِى الْعَالَمِ شَرُّ السُّمُوْمِ عِدَاوَةُ الصُّلَحَاءِ

(7) जो कुछ संसार में है उन सब से निकृष्टतम जहर हैं और जहरों से अधिक निकृष्टतम सुधारकों की शत्रुता है।

(८) اِذِيْتَنِيْ حُبًّا فَلَسْتُ بِصَادِقٍ اِنْ لَمْ تَمُتْ بِالْخِزْيِ يَا ابْنَ بَغَاءٍ

(8) तूने अपनी दुष्टता से मुझे बहुत कष्ट दिया है। अतः मैं सच्चा नहीं हूंगा यदि अपमान के साथ तेरी मृत्यु न हो।

(९) اَللّٰهُ يُخْزِيْ حِزْبَكُمْ وَيُعِزِّنِيْ حَتّٰى يَجِيْءَ النَّاسُ تَحْتَ لِوَاِئِيْ

(9) केवल तेरे अपमान की कोई सीमा नहीं खुदा तुझे तेरे गिरोह सहित अपमानित करेगा और मुझे सम्मान प्रदान करेगा, यहां तक कि लोग मेरे झण्डे के नीचे आ जाएंगे।

(१०) يَا رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا بِكَرَامَةٍ يَا مَنْ يَرِىْ قَلْبِيْ وَلُبَّ لِحَائِيْ

(10) हे मेरे खुदा मुझ में और सा'दुल्लाह में निर्णय कर अर्थात् जो झूठा है सच्चे के सामने उसे मृत्यु दे। हे वह सर्वज्ञ और सर्वज्ञाता जो मेरे हृदय की और मेरे अन्तःकरण की गुप्त बातों को देख रहा है।

(११) يَا مَنْ اَرٰى اَبْوَابَهُ مَفْتُوحَةً لِلْسَّائِلِيْنَ فَلَا تَرُدُّ دُعَائِيْ

(11) हे मेरे खुदा ! मैं दुआ करने वालों के लिए तेरी दया के द्वार खुले देखता हूँ। अतः यह जो मैंने सा'दुल्लाह के बारे में दुआ की है उसे स्वीकार कर और अस्वीकार न कर अर्थात् मेरे जीवन में ही उसे अपमान की मृत्यु दे।^①

और जैसा कि मैंने इन समस्त शे'रों के नीचे प्रत्येक शे'र का अनुवाद कर दिया है उनके पढ़ने से स्पष्ट है कि मैंने सा'दुल्लाह से इन शे'रों में मुबाहला किया था और जैसा कि उसने अपनी पुस्तक 'शिहाब-ए-साक्रिब' में मुबाहला के तौर पर अपने जीवन में मेरी मृत्यु की कामना की थी। उसके मुकाबले पर मैंने भी अपने खुदा से यह चाहा था कि हम दोनों में से जो झूठा है सच्चे के जीवन में ही उसकी मृत्यु हो और इसी कारण मैंने आठवें शे'र में यह लिखा है कि हे सा'दुल्लाह तूने मुझे बहुत कष्ट दिया है। अतः यदि अपमान के साथ तेरी मृत्यु न हो अर्थात् यदि तू इस मुबाहला के अनुसार मेरे जीवन में ही निराश रह कर मर न जाए तो फिर मैं झूठा हूँ और चौथे शे'र में स्पष्ट तौर पर यह संकेत भी कर दिया गया है कि सा'दुल्लाह की मृत्यु प्लेग के न्यूमोनिया से होगी। क्योंकि तअनः का शब्द ताऊन (प्लेग) की ओर संकेत करता है और नज्जा अरबी भाषा में चौड़े घाव को कहते हैं और प्लेग के न्यूमोनिया का भी यही रूप होता है कि फेफड़ा घायल होकर फट जाता है और उसमें चौड़ा घाव हो जाता है और अद्भुत यह है कि जिस युग में यह भविष्यवाणी की गई उस युग में इस देश में प्लेग का नामो निशान न था। अतः यह उस शक्तिमान सर्वज्ञ के सूक्ष्म से सूक्ष्मतर ज्ञान का एक नमूना है कि उसने सा'दुल्लाह की इस प्रकार की मृत्यु की उस समय सूचना दी जबकि यह पूरा देश ताऊन से पवित्र था।

और यह जो उपरोक्त शे'रों में खुदा तआला ने यह भविष्यवाणी की है कि मेरे

① नोट - सा'दुल्लाह की मृत्यु केवल एक निशान नहीं अपितु तीन निशान हैं (1) उसकी मृत्यु के बारे में मेरी भविष्यवाणी (2) मेरी मृत्यु के बारे में बतौर मुबाहला उसकी भविष्यवाणी कि जैसे मैं उसके जीवन में ही मर जाऊंगा (3) उसकी मृत्यु के बारे में मेरी दुआ जो स्वीकार हो गई। इसी से।

जीवन में ही सा'दुल्लाह की मृत्यु अपमान और बदनामी के साथ होगी। यह भविष्यवाणी पूर्णरूप से प्रकट हो गई और प्लेग के न्यूमोनिया ने कुछ घंटों में ही उसका अन्त कर दिया। जनवरी 1907 ई. के प्रथम सप्ताह ही में वह इस संसार से गुजर गया किन्तु यहां स्वाभाविक तौर पर प्रश्न उठता है कि ऐसी भविष्यवाणी क्यों की गई थी और क्यों उसकी गालियों पर धैर्य न किया गया। इसका उत्तर यह है कि इस भविष्यवाणी से चार वर्ष पूर्व सा'दुल्लाह ने मेरी मृत्यु के बारे में और सम्पूर्ण जमाअत के मुर्तद और अस्त-व्यस्त होने के बारे में अपनी पुस्तक 'शिहाब-ए-साक्रिब' में भविष्यवाणी प्रकाशित की थी और उसमें उसने स्पष्ट तौर पर लिखा था कि यह व्यक्ति महाझूठा और खुदा पर झूठ बांधने वाला है इसलिए वह अपमान की मृत्यु मरेगा और उसकी जमाअत मुर्तद और अस्त-व्यस्त हो जाएगी तथा बहुत अश्लील शब्दों के साथ मेरी तबाही को सूचना दी थी। इसलिए खुदा तआला के स्वाभिमान ने जो वह सच्चों के लिए रखता है उसकी भविष्यवाणी को उसी पर उल्टा दिया। दुर्भाग्यशाली सा'दुल्लाह ने अपनी पुस्तक में जिसका नाम उसने रखा है - 'शिहाब-ए-साक्रिब' बर मसीह काज़िब' जिसके अर्थ हैं कि उस झूठे मसीह पर अग्नि पड़ेगी और उसे समाप्त करेगी।^① मेरे बारे में यह भविष्यवाणी की थी जो फ़ारसी भाषा में शे'र हैं वे ये हैं -

اخذ یمین و قطع وتین است بهر تو
 بے رونقی و سلسلہ ہائے مزوری
 اکنون باصطلاح شمانام ابتلا است
 آخر بروز حشر و بایں دار خاسری

अनुवाद - इन शे'रों का अनुवाद यह है कि वह अपनी कथित पुस्तक में मुझे सम्बोधित करके लिखता है कि खुदा की ओर से तेरे लिए प्रारब्ध हो चुका है कि खुदा तुझे पकड़ेगा और तेरी प्राणधमनी काट देगा। तब मेरी मृत्यु के पश्चात् तेरा यह झूठा सिलसिला तबाह हो जाएगा। यद्यपि तुम लोग कहते हो कि परीक्षाएं भी

① ताऊन भी एक अग्नि है जिस अग्नि से सा'दुल्लाह की मृत्यु हुई। इसी से।

आया करती हैं किन्तु अन्ततः तू हश्र (प्रलय के दिन मुर्दों का जीवित हो उठना) के दिन एवं इस संसार में अनिष्ट करने वाला और असफल मरेगा। तत्पश्चात् आयत **وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا** लिख कर कहता है कि तू हर स्थान पर अपमानित होगा तथा इस लोक में तथा परलोक में तेरे लिए सम्मान नहीं।

उसके इन वाक्यों से स्पष्ट है कि वह मेरे बारे में क्या अभिलाषा रखता था जिसे वह हज़ारों उत्कण्ठाओं के साथ अपने हृदय में ले गया। यह स्थान न्यायकर्ताओं के लिए बहुत विचार करने योग्य है कि यह दो पक्षीय भविष्यवाणियां मुबाहला के तौर पर थीं अर्थात् उसने मेरी मृत्यु की सूचना दी थी जिसे वह विचार करता था कि उसके जीवन में ही मेरी मृत्यु नितान्त निराशा में होगी और मेरी मृत्यु के लिए वह बहुत दुआएं करता था और उसे विश्वास था कि ऐसा ही होगा। दूसरी ओर उसकी भविष्यवाणी से चार वर्ष पश्चात् मुझे खुदा ने सूचना दी कि वह मेरे जीवन में ही अपमान की मृत्यु से मरेगा और ताऊन के एक प्रकार से मृत्यु होगी। और मैं अपनी भविष्यवाणी की पुष्टि के लिए उसकी मृत्यु के बारे में दुआएं करता था। अन्ततः खुदा ने मुझे सच्चा किया और वह मेरी भविष्यवाणी के अनुसार मेरे जीवन में ही जनवरी के प्रथम सप्ताह में ही मृत्यु पा गया और जिन उत्कण्ठाओं और अपमानों के साथ उसकी मृत्यु हुई उनका कौन अनुमान लगा सकता है? और यह उत्कंठा और अपमान कुछ कम नहीं कि जिसकी वह मृत्यु चाहता था और जिसके लिए वह अपनी भविष्यवाणी प्रकाशित कर चुका था उसको न केवल जीवित छोड़ गया अपितु लाखों लोगों को उसके अधीन देख गया। वह जमाअत जिसकी बरबादी और तबाही के लिए उसने भविष्यवाणी की थी उसकी असाधारण तथा चमत्कारिक उन्नति को उसने स्वयं अपनी आंखों से देख लिया। फिर केवल इतना ही नहीं अपितु यह भी दुआएं करता था कि **إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ** के विपरीत अपनी बहुत सी सन्तान देख लेगा, किन्तु उसकी सन्तान पैदा होकर मरती गई और यह एक हृदय-विदारक दुःख था जो उसने बार-बार देखा और **إِنَّ شَانِئَكَ** के पश्चात् उसके घर में कोई लड़का पैदा न हुआ और केवल वह

पुत्र रहा जो भविष्यवाणी से पूर्व पैदा हो चुका था और बड़ी आयु तक पहुंच गया और अब तक शादी-विवाह का नाम तक नहीं और कहां यह कि सन्तान हो।

इस उत्कंठा पर उसके ये शेर पर्याप्त हैं जो उसकी एक में हैं जिनका शीर्षक 'क्राजिउल जालात' शीर्षक है और वे ये हैं :-

جگر گوشہ ہا دادی اے بے نیاز
ولے چند زالاں ہا گرفتگی تو باز
دل من بنعم البدل شادکن
بطف از غم و غصہ آزاد کن
ز ازواج و اولاد اے ذو المنن
بود ہر یکے قرۃ العین من
جگر پار ہائے کہ رفتند پیش
زمجوری شان دلم ریش ریش

इन दर्द भरे शेरों पर दृष्टि डाल कर प्रत्येक व्यक्ति विचार कर सकता है कि सन्तान न होने और मर जाने से उसके हृदय में कितनी उत्कंठाएं भरी हुई थीं जिनसे वह मुक्ति न पा सका और जैसा कि उसकी पुस्तक से सिद्ध होता है कि सोलह वर्ष तक अपनी सन्तान की वृद्धि के लिए तथा मेरी मृत्यु और विनाश के लिए वह दुआएं करता रहा। अन्ततः जनवरी 1907 ई. के प्रथम सप्ताह में ही उन समस्त दुआओं से निराश रह कर कुछ घंटों में ही लुधियाना में प्लेग के न्यूमोनिया से मर गया। वह नहीं चाहता था कि मेरे जीवन में उसकी मृत्यु हो अपितु यह चाहता था कि उसके जीवन में मेरी मृत्यु हो। इस बारे में उसने भविष्यवाणी भी प्रकाशित की और वह नहीं चाहता था कि मेरे यहां सन्तान हो या मेरी जमाअत उन्नति करे तथा अपनी सन्तान की वृद्धि चाहता था और वह नहीं चाहता था कि मेरी जमाअत की कोई सहायता करे। यदि इन समस्त इच्छाओं से असफल रह कर इस अपमान के

साथ मर गया कि उसकी कोई इच्छा पूर्ण न हुई^① और मैंने उसे बार-बार सूचना दी थी कि इल्हाम إِنَّ شَأْنَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ में अब्तर से खुदा तआला का अभिप्राय यही है कि भविष्य में सन्तान का क्रम उस पर बन्द होगा और उसका पुत्र भी अब्तर (निःसन्तान) ही मरेगा। अतः उसने देख लिया कि इसके बावजूद कि भविष्यवाणी के समय से बारह वर्ष तक वह जीवित रहा तथा दुआएं भी करता रहा परन्तु उस लड़के के अतिरिक्त जो भविष्यवाणी के समय लगभग पन्द्रह वर्ष का था, और उसके घर कोई सन्तान न हुई। यह उत्कंठा भी साथ ले गया कि बेटे का विवाह न कर सका। अतः भविष्यवाणी के अनुसार यह समस्त अपमानों का संग्रह उसे प्राप्त हुआ और इसी सा 'दुल्लाह के बारे में तीन हजार रुपए का इनामी विज्ञापन जो पांच (5) अक्टूबर 1894 ई. के पुस्तक 'अन्वारुल इस्लाम' के साथ पृष्ठ - 12 पर संलग्न है प्रकाशित हुआ। खुदा तआला से इल्हाम पा कर निम्नलिखित इबारात मैंने लिखी थी और वह यह है :-

हक्र (सत्य) से लड़ता रह। अन्ततः हे मुरदार तू देखेगा कि तेरा क्या अंजाम होगा। हे खुदा के शत्रु तू मुझ से नहीं खुदा से लड़ा रहा है। खुदा की क्रसम मुझे उसी समय 29 सितम्बर 1894 ई. को तेरे बारे में यह इल्हाम हुआ है إِنَّ شَأْنَكَ

① अब देखना चाहिए कि उसकी असफलता, निराशा, उत्कंठा और अपमान की मृत्यु से इस भविष्यवाणी के अर्थ किस प्रकार हो गए कि खुदा उसे अपमान और बदनामी की मृत्यु देगा। जैसा कि इस घटना से बारह वर्ष पूर्व उसके बारे में “अंजाम-ए-आथम” में यह भविष्यवाणी की गई थी -

أَذَيْتَنِي خُبْرًا فَلَسْتُ بِصَادِقٍ ان لم تمت بالحزى يا ابن بغاء

अर्थात् तूने हे सा 'दुल्लाह अपनी स्वाभाविक दुष्टता से मुझे बहुत कष्ट दिया है। अतः मैं इस दशा में सच्चा नहीं हूंगा कि जब अपमान के साथ तेरी मृत्यु न हो। अतः इस से अधिक और क्या अपमान होगा कि वह मेरी मृत्यु चाहता था किन्तु मेरे जीवन में मर गया और मेरी असफलता चाहता था किन्तु मेरे उत्थान और उन्नति को देख गया। इसी से

هُوَ الْأَبْتَرُ इस इल्हामी इबारत का अनुवाद यह है कि सा 'दुल्लाह जो तुझे अब्तर कहता है और यह दावा करता है कि तेरी औलाद (सन्तान) का तथा अन्य बरकतों का सिलसिला कट जाएगा ऐसा कदापि नहीं होगा अपितु वह स्वयं पुरुष सन्तान से वंचित रहेगा।

स्मरण रहे कि यह वाक्य إِنَّ شَأْنَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ अरबी भाषा में बिना मुकाबले के नहीं आता अर्थात् इस वाक्य के लिए आवश्यक है कि पहले किसी ने अब्तर कहा हो फिर उसके मुकाबले पर उसको अब्तर कहा जाए। अतः यह वाक्य इस बात पर साक्षी है कि सा 'दुल्लाह मुझे अब्तर कहता था और मेरे बारे में चाहता था कि मैं प्रत्येक भलाई और बरकत से वंचित रह कर उसके सामने मृत्यु पा जाऊं और मेरी नस्ल भी बन्द हो जाए। अतः उस ने जो कुछ ख़ुदा से मेरे लिए चाहा ख़ुदा ने उसके लिए कर दिया। मैंने उसके अब्तर (सन्तान रहित) और असफल मरने के लिए पहल नहीं की और नितान्त स्पष्ट तौर पर अपनी पुस्तक 'शिहाब-ए-साक्रिब' में मेरी मृत्यु के बारे में भविष्यवाणी प्रकाशित की और मेरे हृदय को दुःख दिया और दुःख देने में चरमसीमा तक पहुंच गया। तब चार वर्ष के पश्चात मैंने उसके लिए दुआ की तो ख़ुदा ने मुझे उसकी मृत्यु की सूचना दी तथा कहा कि सा 'दुल्लाह जो तेरे अब्तर रहने की भविष्यवाणी करता है वह स्वयं अब्तर रहेगा किन्तु मैं तेरी नस्ल को प्रलय तक स्थापित रखूंगा और तू बरकतों से वंचित नहीं होगा और मैं तुझे यहां तक बरकत दूंगा कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे और एक संसार को तेरी ओर लौटाऊंगा किन्तु सा 'दुल्लाह भलाई और बरकत से वंचित रह कर तेरी आंखों के सामने अपमान की मृत्यु से मरेगा। अतः ऐसा ही प्रकट हुआ। यह ख़ुदा की भविष्यवाणियां जो टल नहीं सकतीं। यदि ये बातें केवल मौखिक होतीं तो कौन विरोधी आज मेरी इस भविष्यवाणी को मानता, परन्तु ये समस्त बातें आज से बारह वर्ष पूर्व मेरी पुस्तकों और विज्ञापनों में प्रकाशित हो चुकी हैं जिन से किसी विरोधी को विमुख होने का स्थान नहीं किन्तु वही जो लज्जा और शर्म को त्याग कर अबूजहल की भांति प्रकाशमान दिन का

रात्रि कहता है और सूर्य को जो चमक रहा है प्रकाश रहित ठहराता है। इसी प्रकार यदि सा 'दुल्लाह मेरी मृत्यु और अपमान तथा मेरी जमाअत के विनाश के बारे में अपनी पुस्तक 'शिहाब-ए-साक्रिब' में भविष्यवाणी प्रकाशित न करता तो इस समय मेरी बात कौन स्वीकार कर सकता था, परन्तु खुदा का आभार है कि दोनों ओर से मुबाहला के रूप में भविष्यवाणियां प्रकाशित हो गईं और प्रकाशमान दिन के समान स्पष्ट हो गया कि अन्ततः खुदा तआला ने किस के पक्ष में फैसला किया।

और यह भी स्मरण रहे कि यद्यपि सा 'दुल्लाह के बारे में मेरी पुस्तकों में कुछ कठोर शब्द देखोगे और आश्चर्य करोगे कि उसके बारे में इतनी कठोरता क्यों की गई, किन्तु यह आश्चर्य उस समय तुरन्त दूर हो जाएगा जब उसकी गन्दी पद्य (नज़्म) तथा गद्य को देखोगे। वह दुर्भाग्यशाली गालियां देने एवं बुरा कहने में इतना अग्रसर हो गया था कि मुझे कदापि आशा नहीं कि अबूजहल ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में ये गालियां दीं हों अपितु मैं विश्वास के साथ कहता हूं कि संसार में जितने खुदा के नबी आए हैं उन सब की तुलना में कोई ऐसी गन्दी भाषा प्रयोग करने वाला शत्रु सिद्ध नहीं होता जैसा कि सा 'दुल्लाह था। उसने विरोध और शत्रुता के किसी पहलू में कोई कमी नहीं छोड़ी थी और निचली से निचली कौमों को भी गालियों का वह गन्दा ढंग याद नहीं होगा जो उसे याद था। कठोर से कठोरतम शब्द और अश्लील से अश्लीलतम गालियां इस तीव्रता और निर्लज्जता से उसके मुख से निकलती थीं कि जब तक कोई व्यक्ति अपनी मां के पेट से ही दुष्प्रकृति लेकर जन्म न ले, ऐसी प्रकृति का मनुष्य नहीं हो सकता। ऐसे मनुष्यों से सांपों के बच्चे भी अच्छे होते हैं। मैंने उसकी गालियों पर बहुत धैर्य किया और स्वयं को रोका, किन्तु जब वह सीमा से बढ़ गया और उसकी आन्तरिक गन्दगी का पुल टूट गया तब मैंने सुधारणा से उसके लिए वे शब्द प्रयोग किए जो उसके यथायोग्य थे, यद्यपि वे शब्द जैसा कि उपरोक्त शब्दों में लिखे हैं प्रत्यक्ष तौर पर कुछ कठोर हैं किन्तु वे बुराई के प्रकारों में से नहीं हैं अपितु घटनाओं के अनुकूल हैं और बिल्कुल आवश्यकता के समय लिखे गए हैं।

प्रत्येक नबी सहनशील था किन्तु उन सब की घटनाओं के सम्बन्ध में अपने शत्रुओं के बारे में ऐसे शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है। अतः इंजील में एक सीमा तक नम्र शिक्षा का दावा किया गया है तथापि उन्हीं इंजीलों में फ़कीहों, फ़रीसियों तथा यहूदियों के उलेमा के बारे में ये शब्द भी मौजूद हैं कि वे धोखेबाज़ हैं, कपटी हैं, उपद्रवी हैं, सांपों के बच्चे हैं, भेड़िए हैं, अपवित्र प्रकृति रखने वाले तथा आन्तरिक तौर पर खराब हैं तथा वैश्याएं उन से पहले स्वर्ग में जाएंगी। इसी प्रकार कुर्आन करीम में 'जनीम' इत्यादि शब्द मौजूद हैं। अतः इस से स्पष्ट है कि जो शब्द उचित स्थान पर चरितार्थ हो वह बुराई में सम्मिलित नहीं तथा किसी नबी ने कठोर शब्दों के प्रयोग में पहल नहीं की अपितु जिस समय दुष्प्रकृति रखने वाले काफ़िरो की गालियां चरम सीमा तक पहुंच गईं तब खुदा की आज्ञा से या उसकी वह्यी से उन्होंने उन शब्दों का प्रयोग किया।

इसी प्रकार समस्त विरोधियों के बारे में मेरा ही नियम रहा है। कोई सिद्ध नहीं कर सकता कि मैंने किसी विरोधी के बारे में उसकी गलियों से पूर्व स्वयं पहल की हो। मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने जब साहस के साथ मुंह खोलकर मेरा नाम दज्जाल रखा और मुझ पर कुफ़्र का फ़त्वा लिखवा कर पंजाब और हिन्दुस्तान के सैकड़ों मौलवियों से मुझे गालियां दिलवाई और मुझे यहूदियों और ईसाइयों से अधिक निकृष्ट ठहराया और मेरा नाम महाझूठा उपद्रवी, दज्जाल, खुदा पर झूठ बांधने वाला धोखेबाज़, ठग, पापी, बदचलन और बेईमान रखा। तब खुदा ने मेरे हृदय में डाला कि सुधारणा के साथ इन लेखों का निवारण करूं। मैं स्वयं के आवेग से किसी का शत्रु नहीं और मैं चाहता हूं कि प्रत्येक मनुष्य से भलाई करूं परन्तु जब कोई सीमा का अतिक्रमण करे तो मैं क्या करूं। मेरा न्याय खुदा के पास है। इन सब मौलवी लोगों ने मुझे दुःख दिया और सीमा से बढ़कर दुःख दिया तथा प्रत्येक बात में उपहास का लक्ष्य बनाया। अतः मैं इसके अतिरिक्त क्या कहूं कि -

يَحْسَرَةُ عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ^①

स्मरण रहे सा 'दुल्लाह मेरे मुकाबले पर दो बार मुबाहला का निशान बन चुका है। पहले तो उन्हें अरबी शेरों में जो 'अंजाम-ए-आथम' में लिख चुका हूँ मुबाहला के तौर पर मैंने दुआ की है कि खुदा झूठे को मृत्यु दे। अतः उन मुबाहलों के शेरों में से एक शेर यह है -

يَا رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا بِكَرَامَةٍ يَا مَنْ يَرَى قَلْبِي وَلُبَّ لِحَائِي

अर्थात् हे खुदा तू मुझ में और सा 'दुल्लाह में निर्णय कर, तू मेरे हृदय की दशा जानता है। और फिर सल्लल्लाहु के संबंध में दूसरा शेर यह है -

اَذِيْتَنِي خُبْرًا فَلَسْتُ بِصَادِقٍ اِنْ لَّمْ تَمُتْ بِالْخُرِّيْ يَا ابْنَ بَغَاءٍ

अर्थात् तूने हे सा 'दुल्लाह दुष्टता से मुझे दुःख दिया है अतः मैं झूठा हूँगा यदि मेरे सामने अपमान के साथ तेरी मृत्यु न हो।

फिर दूसरी बार जो मैंने सा 'दुल्लाह को मुबाहला का निशाना बनाया उसका वर्णन मेरी पुस्तक 'अंजाम-ए-आथम' के पृष्ठ 67 में है और मुबाहला के निमंत्रण में और भी कई मौलवी सम्मिलित हैं जिन के नामों की तालिका 'अंजाम-ए-आथम' के पृष्ठ 69 से 72 तक उपरोक्त पुस्तक में उल्लेख है और इस मुबाहला के निमंत्रण में भूमिका की इबारत पृष्ठ 67, 'अंजाम-ए-आथम' पर यह है :-

“गवाह रह हे पृथ्वी! और हे आकाश! कि खुदा की ला'नत उस व्यक्ति पर कि इस पुस्तक के पहुंचने के पश्चात् न मुबाहला के लिए उपस्थित हो और न काफिर कहने और अपमान करने से रुके और न उपहास करने वालों की सभाओं से पृथक रहे। तथा हे मोमिनो ! खुदा के लिए तुम सब कहो कि आमीन।”

और पुस्तक 'अंजाम-ए-आथम' जिस में कट्टर शत्रुओं को मुबाहला के लिए आमंत्रित किया गया है और उसमें ऐसे लोगों की तालिका बनाई गई है उस तालिका के पृष्ठ 70 की प्रथम पंक्ति को ही देखो कि प्रथम पंक्ति के आरंभ में ही उस अभागे सा 'दुल्लाह का नाम लिखा है। अतः लिखा है -

सा 'दुल्लाह नव मुस्लिम शिक्षक लुधियाना

इस मुबाहला पर आज के दिन तक बारह वर्ष और तीन माह और कई दिन

गुजर चुके हैं। तत्पश्चात् अधिकांश लोगों ने मौन धारण कर लिया और जो गालियां देने से नहीं रुके, उनमें से बहुत कम होंगे जिन्होंने मौत का स्वाद नहीं चखा, या किसी अपमान में ग्रस्त नहीं हुए। अतः नजीर हुसैन देहलवी जो इन सब का नेता था जो मुबाहला के निमंत्रण में सर्वप्रथम बुलाया गया है। अपने होनहार पुत्र की मृत्यु देखकर अब्तर होने की अवस्था में संसार से कूच कर गया। रशीद अहमद गंगोही जिसका मुबाहला के निमंत्रण के पृष्ठ 69 में लिखा है। मुबाहला का निमंत्रण और बद-दुआ के पश्चात् अंधा हो गया और फिर सांप के काटने से मर गया। तथा मौलवी अब्दुल अजीज़ लुधियानवी, मौलवी मुहम्मद लुधियानवी जिनका वर्णन भी इसी पृष्ठ 69 में है, मुबाहला के निमंत्रण के पश्चात् इस संसार से कूच कर गए। इसी प्रकार मौलवी गुलाम रसूल उर्फ रसल बाबा जिसका वर्णन दा'वत-ए-मुबाहला के पृष्ठ 70 में है। मुबाहला का निमंत्रण तथा उपरोक्त बद-दुआ के पश्चात् अमृतसर में ताऊन से मर गया। ऐसा ही मौलवी गुलाम दस्तगीर कसूरी जिसका वर्णन इसी पुस्तक अंजाम-ए-आथम के पृष्ठ 70 में है, जिसने स्वयं भी अपना मुबाहला अपनी पुस्तक 'फ़तहा रहमानी' में प्रकाशित किया था। वह पुस्तक लिखने के एक माह पश्चात् मृत्यु का शिकार हो गया। उसकी मृत्यु का यही कारण नहीं कि मैंने 'अंजाम-ए-आथम' के पृष्ठ 67 में अर्थात् उसकी सत्रहवीं पंक्ति में उस पर तथा अन्य विरोधियों पर जो चपलताओं से न रुकें और न मुबाहला करें बद-दुआ की थी तथा उन पर ख़ुदा का अज़ाब चाहा था अपितु उसका अपना मुबाहला भी उसकी मृत्यु का कारण हो गया, क्योंकि उसने मेरा अपना वर्णन करके ख़ुदा तआला से अत्याचारी का समूल विनाश चाहा था। अतः इसके कुछ ही दिन पश्चात् उसका समूल विनाश हो गया और इसी पृष्ठ 70 में मौलवी असगर अली का नाम लिखा है वह भी उस समय तक गालियां देने से नहीं रुका जब तक ख़ुदा तआला के प्रकोप से उसकी एक आंख निकल गई। इसी प्रकार इस मुबाहला की तालिका में मौलवी अब्दुल मजीद देहलवी का वर्णन है जो फरवरी 1907 ई. में देहली में हैज़ा से

मृत्यु का शिकार हुआ।^① इसी प्रकार अन्य बहुत से लोग थे जो उलेमा या सज्जादानशीन कहलाते थे तथा इस मुबाहले के निमंत्रण के पश्चात् बुराई करने और गाली-गलौज से नहीं रुकते थे। इसलिए खुदा तआला ने कुछ को तो मौत का प्याला पिला दिया और कुछ नाना प्रकार के अपमानों में फंस गए और कुछ संसार के छल-प्रपंच तथा संसार प्राप्ति के गन्दे कारोबार में इस सीमा तक लिप्त हुए कि उन से ईमान की मधुरता छीन ली गई। एक भी इस बद-दुआ के प्रभाव से सुरक्षित न रहा। चूंकि सा 'दुल्लाह अपनी गालियों में सीमा से अधिक बढ़ गया था इसलिए उसे न केवल असफलता की मृत्यु का सामना करना पड़ा अपितु प्रत्येक अपमान से उसे भाग मिला तथा जीवन-पर्यन्त नौकरी करके फिर भी उसकी तृप्ति न हुई। अन्ततः मृत्यु के निकट आकर ईसाइयों के स्कूल में नौकरी कर ली तथा उन समस्त अपमानों के अतिरिक्त जो उसे प्राप्त हुए यह अन्तिम अपमान भी उसे देखना पड़ा कि पादरियों का सम्प्रदाय इस्लाम धर्म का शत्रु है जिन के स्कूलों में इस्लाम के विरुद्ध प्रवचन देना एक शर्त है और प्रतिदिन या हर सप्ताह हज़रत ईसा की खुदाई के बारे में स्कूल में पथभ्रष्ट करने वाली बातें सुनाना उनका नियम है। उसने स्वीकार कर लिया कि उनकी नौकरी करे और चूंकि अरबी भाषा में 'अब्तर' मोदिय को कहते हैं अर्थात् ऐसे दरिद्र को जो अपना समस्त एकत्र धन खो बैठे। इस प्रकार के अब्तर होने का चरितार्थ भी स्वयं को सिद्ध कर दिया

① अब्दुल मजीद, जब मैं पहले देहली गया था स्वयं मेरे मकान पर आया था और कहता था कि ये इल्हाम शैतानी हैं और मुझे मुसैलिमा कज़्ज़ाब से उपमा दी और कहा कि यदि तौबा न करो तो खुदा पर झूठ बांधने का परिणाम भुगतोगे मैंने कहा कि यदि मैं खुदा पर झूठ बांधता हूं तो मैं उसका दण्ड पाऊंगा अन्यथा जो व्यक्ति मुझे झूठ बांधने वाला कहता है वह दण्ड से सुरक्षित नहीं रह सकता। अन्ततः अब्दुल मजीद मेरे जीवन में ही अपनी गालियों वाले मुबाहला के पश्चात् मृत्यु पा गया और उन दिनों में उसने मेरे मुकाबले पर मुझे झूठा कहने के बारे में कठोर शब्दों के साथ एक विज्ञापन भी प्रकाशित किया था और संभवतः एक-एक पैसे पर बेचा था। इसी से।

क्योंकि यदि उस धन की बरकत प्राप्त होती तो वह अपने अन्तिम दिनों में पादरियों के दरवाजे पर भीख मांगने का काम ग्रहण न करता। जो लोग अपने कालेजों और स्कूलों में अनिवार्यतः इस्लाम के विरुद्ध शिक्षा देते हैं किसी सच्चे मुसलमान का आचरण नहीं कि उनकी नौकरी करे।

खेद कि यह सा 'दुल्लाह नामक व्यक्ति जो मृत्यु पा गया है वह मेरे कुछ शास्त्रार्थ के भाषण भी सुन चुका था और उसे मेरी पुस्तकें देखने का भी बहुत अवसर प्राप्त हुआ था किन्तु द्वेष और ईर्ष्या एक ऐसा रोग है कि वह उनसे कुछ लाभ प्राप्त न कर सका। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का मृत्यु पाना कोई संदिग्ध बात न थी। ख़ुदा तआला पवित्र कुर्आन में वर्णन कर चुका और उसका रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मे'राज की रात में उसे मृत्यु प्राप्त नबियों में देख चुका था। दूसरी ओर कुर्आन और हदीस से यह भी सिद्ध है कि इस्लाम के सब खलीफ़े इसी उम्मत में से आएंगे अपितु हदीसों में यह भी आ चुका है कि उतरने वाला इसी उम्मत में से है, फिर भी वह भाग्यहीन समझ न सका तथा पहली पुस्तकों और सही हदीसों में अन्तिम मसीह का बड़ा निशान यह दिया गया था कि वह दज्जाल के प्रकट होने के समय आएगा तथा पवित्र कुर्आन ने प्रकट कर दिया कि वह दज्जाल^① पादरियों

① दज्जाल के अर्थ इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कि जो व्यक्ति धोखा देने वाला, गुमराह करने वाला तथा ख़ुदा के कलाम में परिवर्तन करने वाला हो उसे दज्जाल कहते हैं। अतः स्पष्ट है कि पादरी लोग इस कार्य में सबसे बढ़ कर हैं क्योंकि दूसरों का दजल एवं धोखा तो अधम स्तर का है परन्तु इन लोगों का दजल इतना अधिक है कि मनुष्य को अकारण ख़ुदा बनाने के लिए करोड़ों रुपया व्यय कर रहे हैं तथा लाखों पत्रिकाएं और पुस्तकें संसार में प्रकाशित की हैं तथा इसी उद्देश्य से पृथ्वी के किनारों तक यात्रा करते हैं। अतः इसी कारण वे बहुत बड़े दज्जाल हैं। ख़ुदा तआला की भविष्यवाणी के अनुसार किसी दूसरे दज्जाल को क्रदम रखने का स्थान नहीं, क्योंकि लिखा है कि दज्जाल गिरजे से निकलेगा तथा जिस क्रौम में से होगा वह क्रौम समस्त विश्व में राज्य करेगी और प्रलय एक उनकी शक्ति और ताक़त रहेगी। फिर जब कि

का सम्प्रदाय है जिन का दिन-रात अक्षरान्तरण और परिवर्तन करना ही कार्य है क्योंकि दज्जाल के यही अर्थ हैं जो अक्षरान्तरण एवं परिवर्तन करके सत्य को छिपाने वाला हो। इसी की ओर सूरह फ़ातिहा संकेत करती है। इसी प्रकार पवित्र कुर्आन इस आयत से

وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ^①

सिद्ध होता है कि दज्जाल ईसाइयों के अतिरिक्त कोई पृथक् वर्ग नहीं होगा, क्योंकि जब कि विजय और शासन प्रलय तक ईसाइयों के लिए प्रारब्ध है या मुसलमानों के लिए जो वास्तविक अनुयायी हैं तो फिर कौन ईमानदार यह विचार कर सकता है कि एक और व्यक्ति जो हज़रत ईसा का विरोधी है और उन्हें नबी नहीं जानता, समस्त संसार पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेगा। ऐसा विचार तो पवित्र कुर्आन के स्पष्ट आदेश के विरुद्ध है। इसी प्रकार गिरजे वाली हदीस जो सही मुस्लिम में है अर्थात् यह कि गिरजे में से दज्जाल निकलेगा इस कथित आयत की समर्थक है और घटनाएं भी यही प्रकट कर रही हैं, क्योंकि जिस विकट उपद्रव की सूचना दी गई थी अन्ततः वह पादरियों के हाथ से प्रकट हुआ। मनुष्य की बुद्धिमत्ता का एक यह भी लक्षण है कि घटनाओं पर भी दृष्टि करे और विचार कर देखे कि लक्षण एवं निशान पैदा हुए हैं वे किस पहलू का समर्थन करते हैं। ख़ुदा तआला ने इस संसार को एक दिन नियुक्त करके आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग को अस्त्र के समय से उपमा दी है फिर जब आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का युग अस्त्र हुआ तो फिर अब तेरह सौ चौबीस वर्ष के पश्चात् उस युग का क्या नाम रखना चाहिए। क्या यह समय अस्त होने के निकट नहीं, फिर जब अस्त होने के निकट हुआ तो मसीह के उतरने का यदि यह समय नहीं तो फिर इसके पश्चात् तो कोई समय नहीं।

यह स्थिति है तो कौन सी पृथ्वी शेष रही जिसमें हमारे विरोधियों का काल्पनिक दज्जाल प्रकट होगा। इसी से।

① आले इमरान - 56

इसी प्रकार सही हदीसों में जो कुछ (हदीसों) उनकी सही बुखारी में पाई जाती हैं आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग को अस्त्र से उपमा दी है। अतः इससे स्वीकार करना पड़ता है कि हमारा युग प्रलय के निकट का युग है। फिर दूसरी हदीसों से भी ज्ञात होता है कि दुनिया की उम्र सात हजार साल बताई गई है और जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है -

إِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ^①

अर्थात् ख़ुदा के निकट एक दिन तुम्हारे हजार वर्ष के बराबर है। अतः जबकि ख़ुदा तआला के कलाम से ज्ञात होता है कि दिन सात हैं। अतः इस से यह संकेत निकलता है कि मानव नस्ल की आयु सात हजार वर्ष है जैसा कि ख़ुदा ने मुझ पर प्रकट किया है कि सूरह अलअस्त्र के जुमल विद्या (अर्थात् अबजद अक्षरों की निर्धारित संख्या के अनुसार) की दृष्टि से जितने अंक ज्ञात होते हैं मानव-नस्ल का उतना ही युग आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक युग तक चन्द्रमा के हिसाब से गुज़र चुका था क्योंकि ख़ुदा ने क्रमरी (चन्द्रमा का) हिसाब रखा है तथा इस हिसाब से हमारी मानव-नस्ल की आयु इस समय तक छः हजार वर्ष तक समाप्त हो चुकी है और अब हम सातवें हजार में हैं। यह अवश्य था कि आदम का समरूप जिसे दूसरे शब्दों में **मसीह मौऊद** कहते हैं छठे हजार के अन्त में पैदा हो जो जुमा (शुक्रवार) के दिन के स्थान पर है जिसमें आदम पैदा हुआ और इसी प्रकार ख़ुदा ने मुझे पैदा किया। अतः इसके अनुसार छठे हजार में मेरी पैदायश हुई और यह विचित्र संयोग हुआ कि मैं साधारण दिनों की दृष्टि से भी जुमा के दिन पैदा हुआ था और जैसा कि आदम नर और मादा पैदा हुए थे मैं भी जुड़वां पैदा हुआ था। मेरे साथ एक लड़की थी जो पहले पैदा हुई और उसके पश्चात् मैं पैदा हुआ। ये तो वे बातें हैं जो मेरी जीवनी पर दृष्टि डाल कर सत्याभिलाषी को स्पष्ट प्रमाण देती हैं किन्तु इसके अतिरिक्त हजारों अन्य निशान हैं जिनमें से बतौर नमूना हम लिख चुके हैं।

① सूरह अलहज - 48

स्मरण रहे कि मेरे निशानों को सुनकर मौलवी सनाउल्लाह साहिब की आदत है कि झूठी आदत के जोश से इन्कार के लिए कच्चे बहाने प्रस्तुत किया करते हैं। अतः यहां भी उन्होंने यही आदत दिखाई और केवल झूठ के तौर पर अपने अखबार अहले हदीस 8 फरवरी 1907 ई. में मेरे बारे में यह लिख दिया है कि मौलवी अब्दुल करीम के स्वस्थ होने के बारे में उन्हें जो इल्हाम हुआ था कि वह अवश्य स्वस्थ हो जाएगा किन्तु अन्ततः वह मृत्यु पा गया। इस स्वयं बनाए हुए झूठ का इसके अतिरिक्त हम क्या उत्तर दें कि झूठों पर खुदा की ला 'नत। मौलवी सनाउल्लाह साहिब हमें बता दें कि यदि स्वर्गीय मौलवी अब्दुल करीम साहिब के स्वस्थ होने के बारे में उपरोक्त इल्हाम हो चुका है तो फिर ये निम्नलिखित इल्हाम जो अखबार बद्र और अलहकम में प्रकाशित हो चुके हैं किस के बारे में थे? अर्थात् कफ़न में लपेटा गया। 47 वर्ष की आयु इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन, उसने अच्छा होना ही नहीं था। ان المنيا لا تطيش سها مها अर्थात् मौतों के तीर टल नहीं सकते।

स्पष्ट हो कि यह समस्त इल्हाम मौलवी अब्दुल करीम साहिब के बारे में थे। हां एक स्वप्न में उन्हें देखा था कि जैसे वह स्वस्थ हैं परन्तु स्वप्न ताबीर चाहते हैं ताबीर की पुस्तकों को देख लो। स्वप्नों की ताबीर में कभी मृत्यु से अभिप्राय स्वास्थ्य और कभी स्वास्थ्य से अभिप्राय मृत्यु होती है और कई बार स्वप्न में एक व्यक्ति की मृत्यु देखी जाती है और उसकी ताबीर आयु में वृद्धि होती है। यह दशा है उन मौलवियों की जो बड़े ईमानदार कहलाते हैं। झूठ बोलने से निकृष्ट कार्य संसार में और कोई नहीं। ऐसे झूठ को खुदा ने रिज्स (अपवित्रता) के साथ उपमा दी है किन्तु ये लोग रिज्स से नहीं बचते। हमने इतनी स्पष्टता से सा 'दुल्लाह का मरना भविष्यवाणी के अनुसार सिद्ध करके लिखा है किन्तु क्या मौलवी सनाउल्लाह साहिब मान लेंगे? नहीं अपितु प्रयास करेंगे कि किस प्रकार खण्डन करें। इन लोगों का खुदा तआला से युद्ध है। नहीं देखते कि यदि यह योजना मनुष्य की होती तो ये बरकतें उसके साथ न होतीं। क्या कोई ईमानदार महा प्रतापी खुदा के बारे में

इन कार्यों को सम्बद्ध कर सकता है कि एक व्यक्ति को वह इल्हाम के दावे के पश्चात् तीस-बत्तीस वर्ष की छूट दे और दिन-प्रतिदिन उसकी जमाअत को उन्नति प्रदान करे तथा ऐसे समय में जबकि उसके साथ एक व्यक्ति भी नहीं था उसे यह शुभ सन्देश दिया कि तेरी जमाअत में लाखों लोग सम्मिलित किए जाएंगे और कई लाख रुपया और लोग तुझे भिन्न-भिन्न के उपहार देंगे और हज़ारों लोग दूर-दूर से तेरे पास आएंगे यहां तक कि वे मार्ग गहरे हो जाएंगे और जिन मार्गों से वे आएंगे उन में गढ़े पड़ जाएंगे। तुझे चाहिए कि तू उनकी अधिकता के कारण थक न जाए तथा उन से दुर्व्यवहार न करे, ख़ुदा तुझे समस्त संसार में प्रसिद्धि देगा और तेरे लिए बड़े-बड़े निशान दिखाएगा और ख़ुदा तुझे नहीं छोड़ेगा जब तक वह हिदायत और गुमराही में अन्तर करके न दिखाए, शत्रु ज़ोर लगाएंगे और भिन्न-भिन्न प्रकार के छल-प्रपंच तथा योजनाएं बनाएंगे किन्तु ख़ुदा उन्हें असफल रखेगा। ख़ुदा प्रत्येक क़दम में तेरे साथ होगा और प्रत्येक मैदान में तुझे विजय प्रदान करेगा, और तेरे हाथ पर अपने प्रकाश को पूरा करेगा। संसार में एक नज़ीर (डराने वाला) आया परन्तु संसार ने उसे स्वीकार न किया किन्तु ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट करेगा। मैं अपनी चमकार दिखाऊंगा और अपनी कुदरत के साथ तुझे उठाऊंगा, मैं तुझे शत्रुओं के प्रत्येक आक्रमण से बचाऊंगा यद्यपि लोग तुझे न बचाएं। यद्यपि लोग तेरे बचाने की कुछ परवाह न करें परन्तु मैं तुझे अवश्य बचाऊंगा।

यह उस युग के इल्हाम हैं जिस पर तीस वर्ष से अधिक समय गुज़र चुका है और ये समस्त इल्हाम **बराहीन अहमदिया** में प्रकाशित हो चुके हैं जिन के प्रकाशित होने पर अब छब्बीस वर्ष से अधिक समय गुज़र गया और यह वह युग था जिसमें मुझे कोई भी नहीं जानता था। न कोई सहयोगी था न ही विरोधी क्योंकि मैं उस युग में कुछ वस्तु भी न था और लोगों में से एक व्यक्ति था और एक अज्ञात कोने में गुप्त जीवन व्यतीत कर रहा था। तत्पश्चात् शनैः शनैः उन्नति हुई और जैसा कि ख़ुदा तआला ने तीस-बत्तीस वर्ष पूर्व भविष्यवाणी की थी, वे सब

बातें प्रकट हो गईं और अब तक कई लाख लोग क़ादियान में आकर बैअत के क्रम में प्रवेश कर चुके हैं। वास्तव में लोग बैअत करने के लिए क़ादियान इतनी अधिक संख्या में आए कि यदि मुझे यह इल्हाम स्मरण न होता -

وَلَا تُصْعِرْ لِحَلْقِ اللَّهِ وَلَا تُسَلِّمَنَّ النَّاسَ

तो मैं उनकी मुलाक़ातों से थक जाता और जैसा कि शर्त है मैं सद्व्यवहार का पालन न कर पाता परन्तु यह ख़ुदा तआला की कृपा और उसकी दया है कि उसने इन घटनाओं से तीस-बत्तीस वर्ष पूर्व मुझे सूचना दे दी तथा डाकखानों के रजिस्ट्रों से छान-बीन हो सकती है कि अब तक आर्थिक सफलताओं में कई लाख रुपया आ चुका है और इससे अधिक वह रुपया है जो लोग स्वयं आकर देते हैं तथा कुछ लोग पत्रों द्वारा नोट भेज देते हैं और लगभग तीन हजार के निकट इस जमाअत की प्रत्येक मद का व्यय है जिस से स्पष्ट है कि उन दिनों में आय भी उतनी ही है। हालांकि जिस युग में इन आर्थिक सफलताओं की भविष्यवाणी बराहीन अहमदिया में प्रकाशित हुई थी उस युग में कोई व्यक्ति एक पैसा वार्षिक भी नहीं देता था और न कोई आशा थी और इस भविष्यवाणी पर तीस-बत्तीस वर्ष गुज़र गए तथा उस युग की है जबकि वर्ष में एक पैसा भी किसी ओर से नहीं आता था और न कोई मेरी जमाअत में सम्मिलित था अपितु मैं उस बीज की भांति था जो पृथ्वी के अन्दर गुप्त पड़ा हो। जैसा कि बराहीन अहमदिया में जिस के प्रकाशित होने पर छब्बीस वर्ष गुज़र गए, ख़ुदा तआला ने मेरे बारे में यह साक्ष्य दी है और वह इल्हाम यह है -

رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْوَارِثِينَ

अर्थात् दुआ कर कि हे ख़ुदा! मुझे अकेला मत छोड़। इस से स्पष्ट है कि मैं उस समय जबकि यह भविष्यवाणी की गई अकेला था और फिर दूसरा इल्हाम बराहीन अहमदिया में मेरे बारे में यह है -

كَزْرَعٍ أَخْرَجَ شَطْأً

अर्थात् मैं उस बीज की भांति था जो पृथ्वी में बोया गया और न केवल ये

इल्हाम हैं अपितु इस बस्ती के समस्त लोग और अन्य हजारों लोग जानते हैं कि उस युग में वास्तव में मैं उस मुर्दे के समान था जो क्रब्र में सैकड़ों वर्ष से दफ़न हो तथा कोई न जानता हो कि यह किस की क्रब्र है। तत्पश्चात् ख़ुदा तआला की कुदरत ने वे जल्वे दिखाए कि जो उसकी हस्ती को सिद्ध करते हैं।

और फिर ख़ुदा तआला ने इसी पर बस नहीं की बल्कि मेरी सैकड़ों दुआएं स्वीकार कीं जिनमें से उदाहरण स्वरूप इस पुस्तक में उल्लेख है। प्रत्येक ने मुझ पर जो मुकद्दमा किया, उसमें मैं ने ही विजय पाई तथा विजय से पूर्व मुझे सूचना दी गई कि तेरा शत्रु पराजित होगा तथा प्रत्येक ने जो मुझ से मुबाहला किया अन्ततः ख़ुदा ने या तो उसे मृत्यु के घाट उतारा था या उसे अपमान एवं आजीविका में तंगी का जीवन प्राप्त हुआ या उसकी नस्ल को समाप्त किया गया और प्रत्येक जो मेरी मृत्यु का इच्छुक रहा और गालियां दीं अन्ततः वह स्वयं ही मौत का शिकार हो गया तथा ख़ुदा ने मेरे समर्थन में इतने निशान दिखाए कि वे गणना से बाहर हैं। अब कोई ख़ुदा से डरने वाला जिसके हृदय में ख़ुदा की श्रेष्ठता है और कोई बुद्धिमान जिसे कुछ लज्जा तथा शर्म है यह बताए कि क्या यह बात ख़ुदा तआला के नियम में से है कि एक व्यक्ति जिसे वह जानता है कि वह झूठ बांधने वाला है तथा ख़ुदा तआला पर झूठ बोलता है उस से ख़ुदा तआला ऐसे व्यवहार करे? मैं सच-सच कहता हूं कि जब इल्हाम का क्रम आरंभ हुआ तो उस युग में मैं जवान था, अब मैं वृद्ध हुआ और आयु सत्तर वर्ष के निकट पहुंच गई तथा उस युग पर लगभग पैंतीस वर्ष गुज़र गए परन्तु मेरा ख़ुदा मुझ से एक दिन भी पृथक नहीं हुआ। उसने अपनी भविष्यवाणियों के अनुसार एक संसार को मेरी ओर झुका दिया। मैं निर्धन तथा दरिद्र था, उसने मुझे लाखों रुपए प्रदान किए तथा मुझे एक दीर्घ अवधि पूर्व आर्थिक सफलताओं की सूचना दी और प्रत्येक मुबाहला में मुझे विजय दी और मेरी सैकड़ों दुआएं स्वीकार कीं और मुझे वे नेमतें दीं कि जिन्हें मैं गिन नहीं सकता। अतः क्या यह संभव है कि ख़ुदा तआला इतनी कृपा एवं उपकार एक व्यक्ति पर करे, हालांकि वह जानता है कि वह उस पर झूठ

बांधता है जबकि मैं अपने विरोधियों की दृष्टि में तीस-बत्तीस वर्ष से खुदा तआला पर झूठ बांध रहा हूँ और प्रतिदिन रात्रि को अपनी ओर से एक कलाम बनाता हूँ और प्रातः काल कहता हूँ कि यह खुदा का कलाम है और फिर उसके बदले में खुदा तआला का मुझ से यह व्यवहार है कि वे जो अपने विचार में मोमिन कहलाते हैं उन पर मुझे विजय देता है और मुबाहला के समय में उन्हें मेरे मुकाबले पर मृत्यु के घाट उतारता है या अपमान की मार से कुचल देता है तथा अपनी भविष्यवाणियों के अनुसार एक संसार को मेरी ओर खींच रहा है और हजारों निशान दिखाता है तथा प्रत्येक मैदान में प्रत्येक पहलू तथा प्रत्येक संकट के समय में मेरी सहायता करता है कि जब तक उसकी दृष्टि में कोई सच्चा नहीं उसकी ऐसी सहायता वह कभी नहीं करता और न उसके लिए ऐसे निशान प्रकट करता है।^① फिर भी यदि मौलवी सनाउल्लाह साहिब जो आजकल उपहास, अपहास एवं अपमान करने में दूसरे उलेमा से बढ़े हुए हैं इस गन्दे ढंग को नहीं छोड़ते तो मैं प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करूँगा यदि वह मुझ से मुबाहला का निवेदन करें, परन्तु यह मुबाहला अमृतसर में नहीं होगा। अभी तक मुझे वह समय भूला नहीं जब मैं एक सभा में इस्लाम की विशेषताएं वर्णन करने के लिए खड़ा हुआ तथा प्रत्येक को मालूम है कि उस समय वहां के अहले हदीस ने मेरे साथ क्या व्यवहार किया और किस प्रकार शोर करके तथा पूर्ण रूप से मूर्खता का प्रदर्शन करके मेरा भाषण बन्द करा दिया और जब मैं सवार हुआ तो मेरी ओर ईंटें तथा पत्थर फेंके और

① यह विचित्र बात है कि चौदहवीं सदी के सिर पर मेरे लोगों के अतिरिक्त जितने लोगों ने मुजद्दिद होने के दावे किए थे जैसा कि नवाब सिद्दीक हसन खान भोपाल और मौलवी अब्दुल हयी लखनऊ वे सब सदी के प्रारंभिक दिनों में ही मृत्यु पा गए और खुदा तआला की कृपा से मैंने अब तक सदी का चौथा मार्ग अपने जीवन में देख लिया है और नवाब सिद्दीक हसन खान साहिब अपनी पुस्तक हुजजुल किरामा में लिखते हैं कि सच्चा मुजद्दिद वही होता है कि जो सदी का चतुर्थ भाग पाले। अतः हे विरोधियो! किसी बात में तो न्याय से काम लो। अन्ततः मामला तो खुदा से है। इसी से।

अधिकारियों की भी कुछ परवाह न की। अतः मुबाहला के लिए ऐसा स्थान अनुकूल नहीं, हां क्रादियान अनुकूल है और यहां मैं स्वयं मौलवी सनाउल्लाह साहिब के सम्मान एवं प्राण का उत्तरदायी हूं और आने-जाने का कुल व्यय जो अमृतसर से क्रादियान तक का होगा मैं ही दे दूंगा किन्तु यह शर्त होगी कि दो घंटे तक पहले मैं अपनी सच्चाई के प्रमाण उनको सुनाऊंगा।

और यदि वह क्रादियान में आना पसन्द न करें तो मुबाहला इस प्रकार भी हो सकता है कि इस पुस्तक 'हक्रीकृतुल वह्यी' में जो कुछ मैंने अपनी सच्चाई सिद्ध करने के तर्क लिखे हैं उनके बारे में मुबाहला से पूर्व मौलवी सनाउल्लाह साहिब की परीक्षा कर लूंगा और वे मात्र दस प्रश्न होंगे कि पुस्तक 'हक्रीकृतुलवह्यी' के भिन्न-भिन्न स्थानों से उनसे पूछे जाएंगे ताकि मालूम हो कि उन्होंने ध्यानपूर्वक पुस्तक को देख लिया है। अतः यदि उन्होंने उन प्रश्नों का उत्तर पुस्तक के अनुसार दे दिया तो दोनों पक्षों की ओर से लिखित मुबाहला प्रकाशित हो जाएगा। यदि इस ढंग पर वह सहमत हों तो पुस्तक 'हक्रीकृतुल वह्यी' की एक प्रति मैं उन्हें भेज दूंगा तथा इस से प्रतिदिन के झगड़े का फ़ैसला हो जाएगा और उनका अधिकार होगा कि पुस्तक पहुंचने के पश्चात् उपरोक्त परीक्षा की तैयारी के लिए एक दो सप्ताह तक मुझ से छूट मांग लें।

मैं सच-सच कहता हूं कि वह तथा उनके अन्य भाई उलेमा मुझे झूठा कहने के समय खुदा तआला की शरीअत की कुछ भी परवाह नहीं करते अपितु अपनी ओर से एक नई शरीअत बनाते हैं। क्या मौलवी कहला कर उनको यह भी ज्ञात नहीं कि अज़ाब की भविष्यवाणियों का विलम्ब वैध है और जिस किसी के पक्ष में खुदा तआला अज़ाब की भविष्यवाणी करे और वह तौबा एवं विनय करे, और उद्दण्डता का प्रदर्शन न करे तो वह भविष्यवाणी टल सकती है। जिस प्रकार कि क्रौम की विनम्रता और गिड़गिड़ाने से यूनस नबी की भविष्यवाणी टल गई, जिस से यूनस नबी को बड़ी आजमायश का सामना करना पड़ा और वह भविष्यवाणी के टल जाने से शोक्रगस्त हुआ। इसलिए खुदा ने उसे मछली के पेट में डाल दिया और

जब खुदा तआला के ऐसे व्यवहार पर सन्देह करने से एक मान्य नबी प्रकोप का पात्र हुआ और उसकी नौबत मृत्यु के निकट तक पहुंची तो फिर उन लोगों की क्या दशा होगी कि केवल इन्कार ही नहीं अपितु हजारों उद्दण्डताओं तथा असभ्यताओं के साथ खुदा तआला के ऐसे व्यवहार से इन्कार करते हैं और नितान्त धृष्टतापूर्वक बार-बार कहते हैं कि आथम के बारे में भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई और शर्त की चर्चा भी नहीं करते। क्या यही ईमानदारी है, क्या यही सत्यनिष्ठा है? यूनुस नबी की भविष्यवाणी में तो कोई शर्त भी नहीं थी फिर खुदा ने क्रौम का विनय तथा विलाप देख कर अज़ाब को टाल दिया। इसी प्रकार मौलवी सनाउल्लाह साहिब अहमद बेग के दामाद की बार-बार चर्चा करते हैं कि भविष्यवाणी के अनुसार उसकी मृत्यु नहीं हुई और उन्हें ज्ञात है कि वह भविष्यवाणी दो भागों पर आधारित थी। एक भाग अहमद बेग के बारे में था। अतः अहमद बेग बिल्कुल भविष्यवाणी के अनुसार निर्धारित अवधि के अन्दर मर गया। अतः खेद है कि सनाउल्लाह तथा दूसरे विरोधी अहमद बेग की मृत्यु की चर्चा भी नहीं करते तथा दूसरे भाग की चर्चा करते हैं अर्थात् यह कि उसका दामाद अब तक जीवित है।^①

यह है ईमानदारी उन लोगों की कि जो सच्चाई प्रकट हो गई उसे छिपाते हैं और जिस की अभी प्रतीक्षा है उसे आपत्ति के रूप में प्रस्तुत कर देते हैं और भली भांति जानते हैं कि अहमद बेग और उसके दामाद की भी भविष्यवाणी आथम की भविष्यवाणी के समान सशर्त थी और शर्त के शब्द जो प्रकाशित हो चुके हैं ये हैं :-

اَيَّتْهَا الْمَرْأَةُ تُوْبِيْ تُوْبِيْ فَإِنَّ الْبَلَاءَ عَلَى عَقِبِكَ

हे स्त्री तौबा कर, तौबा कर क्योंकि आसमानी संकट तेरी पुत्री तथा पुत्री की

① स्मरण रहे कि मौलवी सनाउल्लाह ने केवल इन भविष्यवाणियों पर आपत्ति ही नहीं जताई अपितु केवल झूठे तौर पर जो गन्दगी खाने के समान है मेरी भविष्यवाणियों पर अन्य आक्रमण भी किए हैं परन्तु चूंकि खुदा तआला ताज़ा से ताज़ा उत्तर दे रहा है इसलिए उसके बनाए हुए झूठों की कुछ भी परवाह नहीं। इसी से।

पुत्री पर है। यह खुदा का कलाम है जो पहले से प्रकाशित हो चुका है, फिर जबकि अहमद बेग की मृत्यु ने जो इस भविष्यवाणी का एक भाग था उसके परिजनों के हृदयों में बहुत भय पैदा कर दिया और उन्होंने सोचा कि दूसरा भाग भी खतरे के स्थान में है क्योंकि इस भविष्यवाणी की समय सीमा के अन्दर एक टांग टूट चुकी थी, तब उनके हृदय भयभीत हो गए। अतः दान-पुण्य किया और पश्चाताप एवं क्षमायाचना में व्यस्त रहे तो खुदा तआला ने इस भविष्यवाणी में भी विलम्ब डाल दिया और जैसा कि मैं अभी वर्णन कर चुका हूँ इन लोगों के भय का कारण यह था कि यह भविष्यवाणी ने केवल अहमद बेग के दामाद के बारे में भी थी और उस भविष्यवाणी का प्रथम लक्ष्य वही था अपितु व्यक्तिगत तौर पर वही पहले थे फिर जब अहमद बेग समय सीमा के अन्दर मर गया और बड़ी स्पष्टता से उसके बारे में भविष्यवाणी पूरी हो गई तब उसके परिजनों के हृदय अत्यधिक भय से भर गए तथा इतने रोए कि उनकी चीखें इस बस्ती के किनारों तक जाती थीं और बार-बार भविष्यवाणी की चर्चा करते थे और जहां तक उन से संभव था तौबा और क्षमा-याचना तथा दान आदि में व्यस्त रहे तब दयालु खुदा ने इस भविष्यवाणी में विलम्ब डाल दिया।^①

अतः यह कितनी अधिक निर्लज्जता है कि इस बात का ज्ञान होने के बावजूद

① ये लोग यह भी कहते हैं कि इस भविष्यवाणी के पूर्ण होने के लिए प्रयास किया गया। इस से ज्ञात होता है कि ये लोग तो कुर्आन करीम से अनभिज्ञ हैं या फिर अन्दर ही अन्दर मुर्तद होने का लिबास पहन लिया है। हे मूर्खों! खुदा ने भविष्यवाणियों को पूरा करने के लिए प्रयासों को अवैध नहीं किया। क्या तुम्हें वह हदीस भी याद नहीं जिसमें लिखा है कि हज़रत उमर रज़ि. ने एक भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए एक सहाबी को सोने के कड़े पहना दिए थे और यह भी हदीस है कि यदि कोई स्वप्न देखा और उसे स्वयं पूरा कर सकते हो तो अपने प्रयास द्वारा उस स्वप्न को सच्चा कर दो। इसी से।)

कि अज़ाब की भविष्यवाणियां टल सकती हैं और सदैव टलती रहती हैं,^① फिर भी शोर मचाना कि भविष्यवाणी पूर्ण नहीं हुई। ज्ञात होता है कि इन लोगों को खुदा तआला पर ईमान नहीं। उदण्डता एवं इन्कार की एक सीमा है। सीमा से बढ़ना खुदा तआला के अज़ाब की निशानी है। मुझे बार-बार आश्चर्य होता है कि ताऊन सिर पर है तथा भीषण भूकम्पों का खुदा तआला ने वादा दिया है तथा प्रलय के लक्षण प्रकट है फिर मालमू नहीं कि ये लोग क्यों नहीं डरते।^② इसी कारण मुझे आज यह लिखना पड़ा कि यदि मौलवी सनाउल्लाह अमृतसरी अपनी उदण्डताओं को नहीं छोड़ता तो इसका यह उपचार है कि मुबाहला का निवेदन करे। यह भी उसका दुर्भाग्य है कि कुछ विरोधाभासी हदीसों पर गर्व करके खुदा तआला के

① मैं खुदा तआला की क़सम खाकर वर्णन करता हूं कि इस बारे में स्वयं अपने बारे में तथा अपने मित्रों के बारे में अनुभव रखता हूं कि प्रातः एक संकट आने की भविष्यवाणी खुदा ने की और सायं को वह दुआ की अधिकता के कारण टल गई तथा मुझे यह शुभसन्देश दिया गया कि हमने उस संकट को टाल दिया। अतः यदि मुझे झुठलाने के लिए शत्रुओं के पास ये ही तर्क हैं तो इसके सैकड़ों उदाहरण स्वयं मेरी एवं मेरे परिजनों की जीवनी में विद्यमान हैं। आश्चर्य कि हमारे विरोधी उन समस्त वृत्तान्तों को भी भूल जाते हैं जो स्वयं तफ़्सीरों और हदीसों में पढ़ते हैं। अतः उन की तफ़्सीरों में लिखा है कि बनी इस्राईल में एक बादशाह था तथा उस समय के रसूल ने उसके बारे में यह भविष्यवाणी की थी कि पन्द्रह दिन के अन्दर उसकी मृत्यु हो जाएगी। वह इस भविष्यवाणी को सुन कर बहुत रोया और इतना रोया कि उस रसूल पर दोबारा वह्यी उतरी कि हमने उसके पन्द्रह दिन पन्द्रह वर्ष में परिवर्तित कर दिए। यह भविष्यवाणी अब तक बाइबल में भी मौजूद है जिसका मन चाहे देख ले। इसी से।

② आज 28 फ़रवरी 1907 ई. प्रातः जुमेरात (वीरवार) के दिन यह इल्हाम हुआ- 'भीषण भूकम्प आया और आज वर्षा भी होगी। खुश आमदी नेक आमदी।' इसी से।

ताज़ा निशानों से इन्कार करता है^① और अज़ाब की भविष्यवाणियों को प्रजा को धोखा देने के लिए बार-बार प्रस्तुत करता है और स्वयं जानता है कि कभी अज़ाब की भविष्यवाणी को टाल देना ख़ुदा के नियम में से है। इस बात को कौन नहीं जानता कि दान-पुण्य करने, विनय और दुआ से संकट टल सकता है इस पर समस्त नबियों की सहमति है। फिर यदि संकट वाली भविष्यवाणी टल नहीं सकती तो फिर संकट टलने के क्या अर्थ हुए? स्मरण रहे कि जिस प्रकार की मसीह मौजूद और महदी मा'हूद के बारे में भविष्यवाणियां हैं सदैव से ख़ुदा का नियम यही है कि ऐसी भविष्यवाणियां परीक्षा एवं आजमायश से रिक्त नहीं होतीं और उनमें संक्षिप्तता होती है। इसी कारण घटना पूर्व उनकी वास्तविकता समझने में

① स्मरण रहे कि यह दावा कि हदीसों से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का आकाश से उतरना सिद्ध है सर्वथा असत्य है क्योंकि सही हदीस से सिद्ध है कि आने वाला मसीह इसी उम्मत में से होगा। अतः इस कष्ट की क्या आवश्यकता है कि हज़रत ईसा को आकाश से उतार कर उम्मत में सम्मिलित किया जाए और नुबुव्वत से निलंबित किया जाए। क्या ख़ुदा तआला इल्यास नबी के समान इसी उम्मत में से ईसा पैदा नहीं कर सकता, जबकि उसके लिए एक उदाहरण मौजूद है तो इतने कष्ट उठाने की क्या आवश्यकता है और फिर उन्हीं हदीसों में यह भी लिखा है कि आंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मे'राज की रात्रि में हज़रत ईसा को मृत्यु प्राप्त अंबिया में देखा और हज़रत यहया के पास बैठे देखा तो अब उनके मृत्यु प्राप्त होने में क्या सन्देह रहा। फिर दूसरी ओर कुर्आन करीम स्पष्ट तौर पर उनकी मृत्यु की साक्ष्य देता है। क्या आयत **فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي** उनकी मृत्यु पर ठोस प्रमाण नहीं। शारीरिक रफ़ा पर क्यों बल देते हैं। क्या आध्यात्मिक रफ़ा नहीं हुआ करता? आयत तो स्वयं कहती है कि रफ़ा आध्यात्मिक है, क्योंकि तवफ़्फ़ा के पश्चात् इसका वर्णन है तथा यह आपत्ति क्यों खड़ी करते हैं कि इसके साथ महदी भी आना चाहिए था। क्या यह हदीस स्मरण नहीं रही कि 'ला महदी इल्ला ईसा'। इसी से।

धोखा लग सकता है तथा उनके अर्थ अन्त में जाकर खुलते हैं। यही कारण है कि यहूदियों को भविष्यवाणी के मौजूद होने के बावजूद जो आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में भी थी यह सौभाग्य प्राप्त न हुआ कि ईमान ले आएँ। यदि इस भविष्यवाणी में यह स्पष्ट होता कि उस अन्तिम रसूल का नाम मुहम्मद^स होगा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और उसके पिता का नाम अब्दुल्लाह होगा और उसका जन्म स्थान मक्का होगा और उसका प्रवास स्थल मदीना होगा और वह मूसा नबी से इतने समयोपरान्त पैदा होगा तथा बनी इस्राईल में से होगा (न कि बनी इस्राईल में से) तो भाग्यहीन यहूदी इन्कार करके नर्क में न जाते और यदि हजरत ईसा के बारे में भविष्यवाणी में स्पष्टतापूर्वक वर्णन किया जाता कि वह इल्यास नबी जिसका उन से पूर्व आकाश से उतरना आवश्यक है वह यह्या ज़करिया का बेटा होगा और आकाश से कोई नहीं उतरेगा तो फिर भाग्यहीन यहूदी हजरत ईसा का इन्कार करके क्यों नर्क में जाते। अतः जब कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में जो भविष्यवाणी थी वह भी परीक्षा से रिक्त नहीं थी, जिसके बारे में व्याख्या नितान्त लाभप्रद थी और सामान्य प्रजा के लिए अत्यन्त आवश्यक थी, जबकि इस भविष्यवाणी के समझने में भी लोगों ने ठोकरें खाईं तो फिर दूसरी भविष्यवाणियों के समझने में ग़लती करना अनुमान के अनुकूल है तथा इसी प्रकार हजरत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में भविष्यवाणी थी वह भी परीक्षा से रिक्त नहीं थी तो फिर मसीह मौऊद एवं महदी मसऊद के बारे में भविष्यवाणी परीक्षा से रिक्त क्योंकर हो सकती है। क्या जैसा कि समझा जाता था और जैसा कि यहूदियों के उलेमा का विचार था और आज तक है इल्यास नबी दोबारा हजरत ईसा से पूर्व संसार में आ गया? फिर किस प्रकार हजरत ईसा के दोबारा आने की आशा रखी जाती है। ईमानदारों का यही लक्षण है कि जब एक अवसर में ऐसा विचार झूठा सिद्ध हो गया तो फिर चाहिए कि जीवन पर्यन्त उसका नाम^① लें। इल्यास के दोबारा आने के बारे

① नक़ल असल के मुताबिक। यहां नाम न लें पढ़ना चाहिए। लिपिक की भूल है। 'न' रह गया है। (शम्स)

में यहूदियों की आशाएं कहां पूरी हो गईं कि अब मुसलमानों की आशाएं पूरी हो जाएंगी। لا يلدغ المؤمن من جحر واحد مرتين (अर्थात् मोमिन एक बात में दो बार धोखा नहीं खाता - अनुवादक) सच तो यह है कि ऐसी महान भविष्यवाणियों की वास्तविकता को वह युग खोलता है जो उनके प्रकट होने का युग होता है और इससे पहले संयमी और मुत्तक्री लोग ख़ुदा तआला की भविष्यवाणियों पर ईमान तो लाते हैं किन्तु उनके विवरणों को ख़ुदा के सुपुर्द कर देते हैं तथा जो लोग अपनी ओर से समय से पूर्व हस्तक्षेप करते हैं और उस पर आग्रह करते हैं वही ठोकर खाते हैं।

(4) ख़ुदा तआला के निशानों में से जो मेरे समर्थन में प्रकट हुए एक निशान नवाब सिद्दीक़ हसन खान वज़ीर रियासत भोपाल के बारे में है और वह यह है कि नवाब सिद्दीक़ हसन खान ने अपनी कुछ पुस्तकों में लिखा था कि जब महदी मा'हूद पैदा होगा तो अन्य धर्मों के बादशाह गिरफ़्तार करके उसके सामने प्रस्तुत किए जाएंगे तथा यह चर्चा करते-करते यह भी वर्णन कर दिया कि चूंकि इस देश में ब्रिटेन का शासन है इसलिए मालूम होता है कि महदी के प्रकट होने के समय इस देश का ईसाई बादशाह इसी प्रकार महदी के सम्मुख प्रस्तुत किया जाएगा। ये शब्द थे जो उन्होंने अपनी पुस्तक में प्रकाशित किए थे जो अब तक उनकी पुस्तकों में मौजूद हैं और यही विद्रोह का कारण समझे गए तथा यह उनकी ग़लती थी कि उन्होंने ऐसा लिखा, क्योंकि ऐसे खूनी महदी के बारे में कोई सही हदीस सिद्ध नहीं अपितु हदीसविदों की सहमति है कि ग़ाज़ी महदी के बारे में जितनी भी हदीसें हैं कोई भी उनमें प्रतिप्रश्न से रिक्त नहीं। सभी संदिग्ध एवं सही के स्तर से गिरी हुई हैं यद्यपि मसीह मौऊद के आने के लिए बहुत सी हदीसें मौजूद हैं तथा उनके साथ ये शब्द भी मौजूद हैं कि वह जिहाद नहीं करेगा और काफ़िरों के साथ कोई लड़ाई नहीं करेगा तथा उसकी विजय केवल आकाशीय निशानों से होगी। इसलिए सही बुखारी में मसीह मौऊद के बारे में हदीस يَضْعُ الْحَرْبُ मौजूद है अर्थात् जब मसीह मौऊद आएगा तो युद्ध और जिहाद की रस्म को उठा देगा तथा कोई युद्ध नहीं करेगा और केवल आकाशीय निशानों तथा ख़ुदा के अधिकार से इस्लाम धर्म को

पृथ्वी पर फैलाएगा।^① अतः मेरे समय में संसार में अब ये लक्षण मौजूद भी हो रहे हैं तथा यही सच है और मैं जो खुदा तआला की ओर से मसीह मौऊद हूं खुदा ने मुझे यह आदेश नहीं दिया कि मैं जिहाद करूं और धर्म के लिए युद्ध करूं अपितु मुझे यह आदेश दिया है कि मैं नमी करूं और धर्म-प्रसार के लिए खुदा से सहायता मांगूं तथा आकाशीय निशान और आकाशीय आक्रमणों की विनती करूं। मुझे उस शक्तिशाली खुदा ने वादा दिया है कि मेरे लिए बड़े-बड़े निशान दिखाए जाएंगे तथा किसी क्रौम को शक्ति नहीं होगी कि मेरे खुदा के सामने जो आकाश से मेरी सहायता करता है अपने मिथ्या खुदाओं का कोई निशान प्रकट कर सकें। अतः मेरा खुदा अब तक मेरे समर्थन में सैकड़ों निशान प्रकट कर चुका है।

अतः नवाब सिद्दीक हसन खान का यह विचार सही नहीं था कि महदी के युग में लोगों को जबरदस्ती मुसलमान किया जाएगा। खुदा तआला का कथन है कि

لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ^②

अर्थात् इस्लाम धर्म में जबरदस्ती नहीं है। हां ईसाई लोग एक युग में लोगों को जबरदस्ती ईसाई बनाते थे किन्तु जब से इस्लाम प्रकट हुआ वह जबरदस्ती का विरोधी है। जबरदस्ती करना उन लोगों का कार्य है जिनके पास आकाशीय निशान नहीं किन्तु इस्लाम तो आकाशीय निशानों का सागर है। किसी नबी से इतने चमत्कार प्रकट नहीं हुए जितने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से, क्योंकि पहले नबियों के चमत्कार उनकी मृत्यु के साथ ही मर गए, परन्तु हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चमत्कार अब तक प्रकट हो रहे हैं और प्रलय तक प्रकट होते रहेंगे। जो कुछ मेरे समर्थन में प्रकट होता है वास्तव में वह सब

① यह बात अनुमान के अनुकूल भी है कि जब मसीह के नफ़स अर्थात् उसके ध्यान से काफ़िर स्वयं मरते जाएंगे तो फिर ऐसे चमत्कार के होते हुए तलवार उठाना सर्वथा अनुचित है। स्पष्ट है कि जब खुदा तआला शत्रुओं को मारता जाएगा तो फिर तलवार उठाने की आवश्यकता ही क्या है। इसी से।

② अल बकरह - 257

आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चमत्कार हैं किन्तु कहां हैं वे पादरी और यहूदी अथवा अन्य क्रौमें जो उन निशानों के मुकाबले पर निशान दिखा सकती हैं। कदापि नहीं! कदापि नहीं!! कदापि नहीं!!! यद्यपि प्रयास करते-करते मर भी जाएं तब भी एक निशान नहीं दिखा सकते क्योंकि उनके कृत्रिम खुदा हैं, वे सच्चे खुदा के अनुयायी नहीं हैं। इस्लाम चमत्कारों का सागर है, उसने कभी बल प्रयोग नहीं किया और न उसे बल प्रयोग की कुछ आवश्यकता है।

पहली लड़ाइयों का आधार केवल यह था कि कुरैश ने मक्का में आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बहुत भारी अत्याचार किए और बहुत से सहाबा को क्रतल कर दिया गया था तथा आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्का से निकाल दिया था। अतः वे अपनी अत्यन्त चपलता और अत्याचार के कारण इस योग्य हो गए थे कि उनको इन अपराधों का दण्ड दिया जाए। इसलिए जिन लोगों ने तलवार उठाई थी वे तलवार से ही मारे गए। हां नितान्त दया से एक छूट उनको दी गई कि यदि वे इस्लाम स्वीकार लें तो उनके अपराध क्षमा कर दिए जाएंगे और यह ज़बरदस्ती नहीं है अपितु उनकी इच्छा पर छोड़ा गया था तथा कौन सिद्ध कर सकता है कि उनके इन अपराधों और चपलताओं से पूर्व उन पर तलवार उठाई गई थी।^① वे नादान पादरी तथा आर्य जिन्हें अकारण इस्लाम से एक शत्रुता है। केवल झूठ बनाकर ऐसी बातें मुख पर लाते हैं और मूर्ख मौलवी केवल अपनी अनभिज्ञता से उनकी सहायता करते हैं। यह कदापि सही नहीं है कि इस्लाम तलवार के बल पर फैला है अपितु पूर्णतम शिक्षा के बल पर फैला है तथा निशानों

① तलवार कदापि नहीं उठाई गई अपितु तेरह वर्ष तक निरन्तर काफ़िरों के भिन्न-भिन्न प्रकार के अत्याचार एवं रक्तपात पर धैर्य से काम लिया गया। तत्पश्चात् जब वे लोग सीमा से बढ़ गए तब उनका मुकाबला करने की आज्ञा दी गई। अतः यह युद्ध केवल प्रतिरक्षात्मक युद्ध तथा अपराधी प्रकृति रखने वालों को केवल दण्ड देने के उद्देश्य से था ताकि पृथ्वी को रक्तपात करने वाले उपद्रवियों से पवित्र किया जाए। इसी से।

के बल पर फैला है। इस्लाम की तुलना में यदि ईसाई धर्म को रखा जाए तो स्पष्ट दिखाई देगा कि इस्लाम एक ऐसा खुदा प्रस्तुत करता है जो अपनी समस्त कुदरतों, श्रेष्ठताओं एवं पवित्रताओं में पूर्ण है तथा अद्वितीय एवं अनुपम। ईसाई धर्म एक ऐसा खुदा प्रस्तुत करता है जो मखलूक, कमजोर तथा असहाय है जो यहूदियों के हाथ से नाना प्रकार के कष्ट उठाता रहा और एक घंटे में बंधक बना कर हवालात में डाल दिया गया और फिर ईसाइयों की अस्थानुसार सलीब दिया गया। ऐसा खुदा दूसरे मुश्रिकों के कृत्रिम खुदाओं की अपेक्षा क्या अन्तर रखता है तथा बुद्धि कब स्वीकार कर सकती है कि दया का सम्पूर्ण आधार खुदा को फांसी देने पर है। जब एक बार खुदा मर गया तो फिर उसके जीवन से अमन जाता रहा। इस बात पर क्या तर्क है कि वह फिर नहीं मरेगा? जो खुदा होकर मर भी सकता है उसकी उपासना करना व्यर्थ है, वह किसे बचाएगा जबकि स्वयं को नहीं बचा सका। मक्का के मूर्ति पूजकों की भी यही दशा थी तथा बुद्धि इस बात को क्योंकर स्वीकार कर सकती है कि एक मूर्ति अपने हाथ से बनाकर उसकी पूजा की जाए। मसीहियों का खुदा मुश्रिकों की मूर्तियों से अधिक कोई शक्ति प्रदर्शित नहीं कर सका तथा इस्लाम का खुदा उन सब पर विजयी है -

يارغالب شوکه تاغالب شوی

हमारे खुदा के महान चमत्कारों ने जो जीवित खुदा है बतौर पर्यवेक्षण लोगों को विश्वास दिलाया कि खुदा वही खुदा है जो इस्लाम का खुदा है। अतः आज तक जो-जो चमत्कार इस्लाम का खुदा प्रकट करता रहा है तथा कोई व्यक्ति उसकी तुलना में कोई चमत्कार नहीं दिखा सकता।

परन्तु चूंकि नवाब सिद्दीक हसन खान के हृदय में शुष्क वहावियत का तत्व था इसलिए उन्होंने अन्य क्रौमों को केवल महदी की तलवार से डराया और अन्ततः पकड़े गए और नवाब होने से निलंबित किए गए तथा बड़े विनयपूर्वक मुझे पत्र लिखा कि मैं उनके लिए दुआ करूं। तब मैंने उसे दयनीय समझकर उसके लिए दुआ की तो खुदा तआला ने मुझे सम्बोधित करके कहा कि 'सिर कुचलने

से उसे बचा लिया गया' मैंने यह सूचना पत्र द्वारा उन्हें दे दी तथा कई अन्य लोगों को भी जो उन दिनों में विरोधी थे यही सूचना दी। अतः उन सब में से एक हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ ज़िलेदार नहर वर्तमान पेन्शनर निवासी अमृतसर तथा मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी हैं। अन्ततः कुछ समयोपरान्त उनके बारे में सरकार का आदेश आ गया कि सिद्दीक़ हसन खान की नवाब की उपाधि क़ायम रहे, जैसे यह समझा गया कि जो कुछ उसने वर्णन किया एक प्राचीन धार्मिक विचार है जो उनके हृदय में था विद्रोह की नीयत नहीं थी।^①

(5) पांचवां निशान एक भविष्यवाणी है जो पत्रिका रीव्यू आफ़ रिलीजनज़ माह मई 1906 ई. के टाइटल पेज के अन्तिम पृष्ठ के प्रथम भाग में लिखी है और वही भविष्यवाणी अख़बार बद्र, जिल्द-5, संख्या 19 दिनांक 10 मई 1906 ई. में लिखी है तथा ऐसा ही वही भविष्यवाणी अख़बार 'अलहकम' दिनांक 5 मई 1906 ई. तथा 'अलहकम' दिनांक 10 मई 1906 ई. में व्याख्या सहित प्रकाशित हो चुकी है तथा बाद में जिस प्रकार वह पूर्ण हुई उस का उल्लेख करेंगे तथा वह भविष्यवाणी व्याख्या सहित यह है :-

“इल्हाम 5 मई 1906 ई. फिर बहार आई तो आए सलज के आने के दिन।” सलज का शब्द अरबी है। इसके अर्थ यह हैं कि वह बर्फ़ जो आकाश से पड़ती है और सर्दी के भीषण होने का कारण हो जाती है और वर्षा उसकी अनिवार्यताओं में से होती है उसको अरबी में सलज कहते हैं। इन अर्थों के आधार पर इस भविष्यवाणी के यह अर्थ विदित होते हैं कि बसन्त के दिनों में हमारे देश में ख़ुदा तआला असाधारण तौर पर ये संकट उतारेगा और बर्फ़ तथा उसके साधनों से भीषण सर्दी

① नवाब सिद्दीक़ हसन खान पर जो यह परीक्षा आई वह भी मेरी एक भविष्यवाणी का परिणाम है जो बराहीन अहमदिया में लिखी है। उन्होंने मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया को फाड़कर वापस भेज दिया था। मैंने दुआ की थी कि इनका सम्मान छिन्न-भिन्न कर दिया जाए। अतः ऐसा ही प्रकट हुआ (पुस्तक बराहीन अहमदिया) इसी से।

और वर्षा की अधिकता प्रकट होगी (अर्थात् संसार के किसी भू-भाग में जो बर्फ पड़ेगी वह भीषण सर्दी का कारण हो जाएगी) अरबी में इसके दूसरे अर्थ “हृदय की सन्तुष्टि” प्राप्त करना है अर्थात् मनुष्य को किसी बात में ऐसे तर्क एवं साक्ष्यों प्राप्त हो जाएं कि जिस से उसका हृदय सन्तुष्ट हो जाए। इसी कारण कहते हैं कि अमुक लेख हृदय के सलज होने का कारण हो गया अर्थात् ऐसे अकाट्य तर्क वर्णन किए गए जिन से पूर्णतया सन्तुष्टि हो गई तथा यह शब्द कभी प्रसन्नता और आराम पर भी प्रयोग किया जाता है जो हार्दिक सन्तुष्टि के पश्चात् पैदा होता है। यह तो स्पष्ट है कि जब मनुष्य का हृदय किसी बात में पूर्ण सन्तोष और आराम पा लेता है तो उसके साधनों में से है कि प्रसन्नता और आराम अवश्य होता है। निष्कर्ष यह कि यह भविष्यवाणी उन पहलुओं पर आधारित है। इस भविष्यवाणी पर विचार करने से मस्तिष्क इस बात को महसूस करता है कि यदि खुदा तआला के निकट यहां सलज के दूसरे अर्थ हैं अर्थात् यह कि प्रत्येक सन्देह एवं संशय का निवारण करना तथा पूर्ण सन्तुष्टि प्राप्त करना तो इस स्थान पर इस वाक्य से यह अभिप्राय भी होगा कि चूंकि बीते दिनों में भूकम्पों के बारे में टेढ़ा स्वभाव रखने वाले लोगों ने सन्देहों को भी जन्म दिया था तथा हृदय का सलज अर्थात् पूर्ण सन्तुष्टि से वंचित रह गए थे। इसलिए बसन्त की ऋतु में एक ऐसा निशान प्रकट होगा जिस से हृदय सलज हो जाएगा तथा पहले सन्देह एवं संशय पूर्णतया दूर हो जाएंगे और समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो जाएगा। इस इल्हाम पर अधिक विचार करने से यही अनुमान के अनुकूल विदित होता है कि बसन्त के दिनों तक न केवल एक निशान अपितु कई निशान प्रकट हो जाएंगे और जब बसन्त ऋतु आएगी तो इतने निरन्तर निशानों के कारण हृदयों पर प्रभाव होगा कि विरोधियों के मुख बन्द हो जाएंगे तथा सत्याभिलाषियों के हृदय पूर्ण सांत्वना पाएंगे। यह वर्णन इस आधार पर है कि जब सलज के अर्थ सन्तुष्टि पाना तथा सन्देह एवं शंकाओं से मुक्ति पाना समझे जाएं परन्तु यदि बर्फ और वर्षा के अर्थ हुए तो खुदा तआला कोई अन्य आकाशीय संकट उतारेगा। उचित बात को अल्लाह ही अधिक जानता है।”

यह भविष्यवाणी जो व्याख्या सहित पत्रिका रीव्यू आफ़ रिलीजन्ज़, अख़बार 'बद्र' तथा 'अलहकम' में उसके प्रकट होने से नौ माह पूर्व लिखी गई थी और प्रकट होने के लिए बसन्त ऋतु निर्धारित की गई थी बड़ी स्पष्टता से पूरी हो गई अर्थात् जब बिल्कुल बसन्त ऋतु आई और बाग़ फलों एवं नूतन कलियों से भर गए, तब खुदा तआला ने अपना वादा इस प्रकार से पूरा किया कि कश्मीर, यूरोप तथा अमरीका के देशों में अत्यधिक वृष्टि हुई जिसका विवरण अभी हम खुदा ने चाहा तो कुछ अखबारों के सन्दर्भ से लिखेंगे, परन्तु इस देश में भविष्यवाणी के आशय के अनुसार देश के उस विशेष भाग में वह भीषण सर्दी और अत्यधिक वर्षा हुई कि देश फ़रियाद कर उठा तथा साथ ही उस देश के कुछ भाग में इतनी बर्फ पड़ी कि लोग स्तब्ध रह गए कि क्या होने वाला है। अतः आज ही 25 फ़रवरी 1907 ई. को एक पत्र हाजी उमर डार साहिब के नाम (जो कश्मीर निवासी हैं तथा इस समय मेरे पास क़ादियान में हैं, उनके पुत्र अब्दुर्हमान की ओर से) कश्मीर से आया है कि इन दिनों में इतनी बर्फ पड़ी है कि पृथ्वी पर तीन गज़ ऊपर तक खड़ी हो गई तथा प्रतिदिन बादल ने संसार को परिधि में लिया हुआ है। यह वह बात है कि कश्मीर के रहने वाले इस से हैरान हैं कि बसन्त ऋतु में इतनी अधिक बर्फ का गिरना विलक्षण है और इस देश में जितनी वर्षा हुई उसकी साक्ष्य कुछ अखबारों के हवाले से नीचे लिखते हैं :-

प्रथम अख़बार-ए-आम लाहौर 21 फरवरी 1907 ई. से संक्षिप्त तौर पर लिखा जाता है। अतः कथित अख़बार के दूसरे पृष्ठ में वर्षा की ये परिस्थितियाँ लिखी हैं :-

“लाहौर में यह स्थिति है कि दो सप्ताह से अधिक समय से बादल पीछे लग रहे हैं तथा लोगों को प्रसन्न करने के स्थान पर परेशान कर रहे हैं। दो दिन तक आकाश वर्षा से रिक्त था और प्रतीत होता था कि कदाचित अब बस करेगा परन्तु रविवार और सोमवार की मध्यरात्रि के पिछले अर्ध भाग में वर्षा इतने वेग एवं अधिकता से हुई कि लोग बिस्तरों पर लेटे हुए तौबा शान्ति-शान्ति पुकारते थे तथा हैरान थे कहीं खुदा न करे वर्षा की दया कष्ट में परिवर्तित न हो जाए। उसके साथ

बिजली भी बहुत चमकी तथा आंखों को चुंधिया देती थी तथा उसके साथ बिजली की कड़क हृदयों को दहलाती थी और कुछ समझ में नहीं आता था कि खुदा की क्या इच्छा है। यह मौसम और यह वर्षा खेती के लिए लाभप्रद और शुभ अवश्य है परन्तु उसकी कोई सीमा है। कहावत प्रसिद्ध है कि अधिकता प्रत्येक अच्छी वस्तु को भी खराब कर देती है, कहीं ऐसा न हो कि जिस वर्षा को लोग अप्रत्याशित समझते हैं और लाख-लाख आभार प्रकट करते हैं वह दया की बजाए कष्ट न बन जाए तथा फसलों की जड़ों को उखाड़ कर मिटा दे और निचली भूमि की खेतियां दरिया में न डूब जाएं तथा समस्त आशाओं पर पानी फिर जाए। सब लोग हैरत के मारे मौन हैं और कहते हैं कि न मालूम प्रतिपालक खुदा की इच्छा क्या है, कौन व्यक्ति दम मारने का साहस कर सकता है। मनुष्य सोचता कुछ है तथा सामने कुछ और ही आता है। आश्चर्य की बात है कि कुछ दिन पूर्व चिड़िया की तरह के छोटे-छोटे पक्षी बड़ी रुचि से पानी में नहाते हुए देखे गए। सर्दियों की तीव्रता तथा जाड़ों की कठोरता के बावजूद ये जीव पानी में इस प्रकार नहाते थे कि देखकर आश्चर्य होता था कि उनके अन्दर इतनी गर्मी कैसे पैदा हो गई है तथा अनुभवी लोग इससे वर्षा की अधिकता का परिणाम निकालते थे। अतः यह विचार निश्चित रूप से उचित सिद्ध हुआ है। बादल इस समय तक यथावत् मंडलाते हैं। अब तो सब लोग चाहते हैं कि वर्षा बन्द हो और धूप का रूप दिखाई दे। वर्षा की कमी से तो केवल गैर नहर वाली फसलों की हानि होने का विचार है, हालांकि इस मौसम में निरन्तर वर्षा से नहर वाली तथा नहरहीन दोनों प्रकार की फसलों की हानि का भय होता है। अब कोई जिला नहीं है जहां अधिक वर्षा की आवश्यकता वर्णन की जाए।^① सरकारी रिपोर्ट में बताया गया है कि जिला गुड़गांव में गत

① इस से सिद्ध है कि यह वर्षा एक विश्वव्यापी वर्षा थी तथा इसमें विलक्षण बात केवल यही न थी कि बसन्त के मौसम में इतनी वर्षा हुई कि बरसात को भी पीछे छोड़ दिया अपितु यह दूसरी विलक्षण बात यही थी कि बसन्त ऋतु के बावजूद सामान्यतया पूरे देश में वर्षा हो गई। जबकि बरसात के दिनों में भी कभी ऐसा नहीं हुआ। इसी से।

सप्ताह कुछ भागों में ओले पड़ने से फसलों की एक सीमा तक क्षति अवश्य हुई। आज रात्रि की वर्षा में गर्जन और कड़क भी थी परन्तु बादलों का जोर यथावत् दृष्टिगोचर हो रहा है। इतनी वर्षा शहर के मकानों के लिए भी क्षतिग्रस्त होने का बहुत भय है। सड़कों के परखचे उड़ गए हैं, कंकड़ की सड़कें कीचड़ से दलदल हो रही हैं, मैदानों में जल ही जल दिखाई देता है, समस्त पेड़-पौधे स्नान किए दुल्हन के समान सुन्दर और हरे-भरे दिखाई देते हैं जैसे कि नवीन लिबास पहनाए गए हैं। इन दिनों में ऐसी वर्षा बहुत वर्षों के पश्चात् प्राप्त हुई है (इस वाक्य में इस अखबार ने साक्ष्य दी कि यह वर्षा असाधारण है) सच यह है कि ग्रीष्म ऋतु के बरसात के दिनों में भी ऐसी वर्षाएं बहुत कम देखी गई हैं, उस प्रतिपालक परमात्मा के अद्भुत चमत्कार हैं कि यह ऋतु और यह दशा।”

स्पष्ट हो कि एक हिन्दू सज्जन का अखबार है जो लाहौर से निकलता है और केवल खुदा तआला ने मेरी भविष्यवाणी की साक्ष्य के लिए उसकी कलम और मुख से यह सच्चा-सच्चा वर्णन निकाला है।

फिर इसी अखबार-ए-आम 26 फरवरी 1907 ई. में यह सूचना अखबार के पृष्ठ 6 में लिखी है :-

“यद्यपि इस वर्ष शरद ऋतु कुछ सुस्त दिखाई देती थी और यह आशा समाप्त हो गई थी परन्तु जनवरी के अन्तिम दिनों में (अर्थात् बसन्त ऋतु) अपना रंग जमाया और रंगारंग के दांत दिखाने आरंभ कर दिए। इस महीने में शरद ऋतु ने ऐसी आश्चर्यजनक परिस्थितियां कभी नहीं दिखाई थीं। जनवरी के अन्त से इस समय तक यह नौबत हुई कि लोग शरण मांग उठे, कभी वर्षा तो कभी बर्फ-वृष्टि और कभी ओलावृष्टि। फिर बादलों का झुंड हर समय बुर्का ओढ़े दिखाई देता है, सूर्य एवं धूप देखने के लिए लोग तरस रहे हैं, कोई दिन खाली नहीं जाता कि बर्फ न गिरती हो या ओले न पड़ते हों और यदि यह न हो तो वर्षा तो अवश्य होती है तथा किसी समय धुआंधार बादलों के कारण दिन के समय अंधकार हो जाता है और प्रकाश के बिना कार्य नहीं होता तथा सर्दी की वह अवस्था है कि रात्रि के

समय यदि किसी स्थान पर पानी पड़ा रह गया तो प्रातःकाल जम जाता है। आज कल पानी गर्म किए बिना पिया नहीं जाता तथा इस समय शिमला के चारों ओर बर्फ के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देता। समस्त वृक्ष तथा मकान बर्फ की चादर ओढ़े हुए हैं और बहुत सख्त सर्दी है।

फिर इसी अखबार में है कि -

“इस देश में वर्षा सार्वजनिक है, जिन स्थानों में वर्षा की शिकायत रहती थी वहां भी हो गई।”

अखबार ‘जासूस’ आगरा 15, फरवरी 1907 ई. के पृष्ठ 4 में लिखता है कि :-

“6 फरवरी 1907 ई. को सायंकाल कानपुर में बहुत वर्षा हुई, बिजली का तूफान आया और ऐसी ओला वृष्टि हुई कि रेल बन्द हो गई।”

और अखबार ‘अहले हदीस’ अमृतसर 26, फरवरी 1907 ई. मुताबिक 8 मुहर्रमुलहराम 1325 हिज्री के पृष्ठ 11 में लिखा है कि इस सप्ताह में इस क्षेत्र अपितु पूरे पंजाब में वर्षा का क्रम निरन्तर रहा। 19 की रात को भीषण ओलावृष्टि हुई। कृष्ण जी क्रादियानी को इल्हाम हुआ है आसमान टूट पड़ा - कहा कि कुछ मालूम नहीं कि क्या होने वाला है।”

यह खुदा के इल्हाम पर उपहास है -

وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ^①

बहरहाल हमारे इस विरोधी ने साक्ष्य दी कि इस सप्ताह में समस्त पंजाब में वर्षा का क्रम निरन्तर जारी रहा है और प्रत्येक को ज्ञात है कि 22 फरवरी बिल्कुल बसन्त का मौसम है और उसने यह भी साक्ष्य दी कि उपरोक्त इल्हाम पूरा हुआ।

और पत्रिका हिकमत लाहौर 15, फरवरी 1907 में लिखा है कि - दारजिलिंग में प्रतिदिन वर्षा हो रही है और बिजली का तूफान आया।

अखबार नय्यर-ए-आज़म मुरादाबाद के पृष्ठ 19, फरवरी 1907 ई. में लिखा है कि :-

“एक सप्ताह तक वर्षा होती रही और ओले भी गिरे।”

पर्चा अखबार आज़ाद का पर्चा अम्बाला दिनांक 16 फरवरी 1907 ई. के पृष्ठ एक में लिखा है कि देहली में दस दिन तक निरन्तर वर्षा हो रही है तथा ओले भी पड़े।

पैसा अखबार लाहौर - दिनांक 23 फरवरी 1907 ई. के पृष्ठ 21 में लिखा है कि निरन्तर और वर्षा की अधिकता से बंगाल की गन्ने की फ़सल को हानि पहुंची। पैसा अखबार 29, फरवरी 1907 ई. में भी लिखा गया है कि मद्रास में अपेक्षाकृत अधिक वर्षा हुई।

पब्लिक मैगज़ीन - अमृतसर 1907 ई. पृष्ठ 11 में लिखा है कि अमृतसर में सर्दी कमाल जोबन पर है तथा वर्षा का क्रम शुरू है।

समाचार - अखबार लाहौर 26 फ़रवरी 1907 ई. में लिखा है कि वर्षा से लोग तंग आ गए हैं।

रोज़ाना पैसा अखबार - 15 फ़रवरी 1907 ई. पृष्ठ 5 आरा चार दिन से दया-वृष्टि की निरन्तर झड़ी लगी हुई है। सर्वथा बरसात की स्थिति दिखाई देती है। प्रजा घबरा रही है तथा धूप को तरस रही है।

रोज़ाना पैसा अखबार - 8 फरवरी 1907 ई. पृष्ठ 8 में लिखा है - कई दिन से वर्षा हो रही थी, कल दोबारा जोर से पानी पड़ा। सर्दी बढ़ गई तथा ठण्डी हवा चल रही है, सड़कों की दशा तबाह है।

ये अखबार हैं जो हमने इस भविष्यवाणी के पूर्ण होने के लिए जो इस देश में वर्षा इत्यादि होने पर आधारित थी उनके साक्षी लिखे हैं और यदि हम चाहते तो और पचास-साठ अखबार इस भविष्यवाणी की पुष्टि के लिए प्रस्तुत कर सकते थे परन्तु मैं जानता हूँ कि इतने अखबारों की साक्ष्य पर्याप्त है तथा देश स्वयं जानता है कि इस बसन्त ऋतु में ये असाधारण वर्षा है जिनका ज्ञान खुदा तआला के अतिरिक्त और किसी को भी नहीं था अपितु वर्षाओं और तूफान इत्यादि की भविष्यवाणी करने वाले जो सरकार की ओर से नियुक्त हैं जो इस कार्य के लिए

बड़े भारी वेतन पाते हैं वे भविष्यवाणी कर चुके थे कि साधारण वर्षा से अधिक नहीं होगी। अतः पर्चा अखबार सिविल एण्ड मिलिट्री गज़ट लाहौर दिनांक 16 दिसम्बर 1906 ई. में उस राय को देखो जो उन्होंने भावी मौसम के लिए प्रकट की है।

और इस भविष्यवाणी का वर्षा एवं सर्दी के बारे में प्रकटन केवल इस दृष्टि से प्रकटन में नहीं आया कि असाधारण वर्षा तथा असाधारण सर्दी बसन्त ऋतु में पड़ गई अपितु एक अन्य पहलू से भी भविष्यवाणी प्रकट हुई कि इस बसन्त में सामान्य तौर पर देश के समस्त भागों में वर्षा हो गई और जिन जिलों में लोग वर्षा के लिए हमेशा तरसते थे वहां भी हो गई। अतः प्रत्येक व्यक्ति जो बुद्धि और लज्जा, न्याय और खुदा तआला के भय से काम लेगा वह निःसंकोच इस बात का इकरार करेगा कि यह बात विलक्षण और असाधारण थी जिसकी खुदा तआला ने पहले से सूचना दी थी तथा इस देश में ऐसी परिस्थितियों को समय से पूर्व प्रकट करने के लिए अंग्रेज़ी सरकार में एक स्टाफ़ नियुक्त था और ज्योतिषी भी थे परन्तु किसी ने उन्हें यह सूचना नहीं दी कि बसन्त ऋतु में ये असाधारण वर्षाएं होंगी और बर्फ पड़ेगी। केवल उस खुदा ने ही सूचना दी जिसने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सब नबियों के अन्त में भेजा ताकि समस्त क़ौमों को आप के झंडे के नीचे एकत्र करे।

यह भाग तो अत्यधिक वर्षाओं से सम्बन्धित है। अब हम उस भाग का वर्णन करते हैं जो बर्फ़ गिरने के संबंध में किसी सीमा तक हम पूर्व में भी उल्लेख कर चुके हैं ताकि ज्ञात हो कि यह भविष्यवाणी इस देश से विशिष्ट नहीं रही वरन् अन्य देशों में भी उसने विलक्षण रूप प्रदर्शित किया है और वह यह है -

अखबार **वकील** अमृतसर दिनांक 7 फ़रवरी 1907 ई. पृष्ठ 2 में जो 23, जुलहज्ज 1324 हिज्री के अनुसार है यूरोप की ऋतु सम्बन्धी परिस्थितियों के सम्बन्ध में निम्नलिखित दशा का उल्लेख किया है :-

“कुछ यूरोपीय देशों में इस वर्ष सर्दी की इतनी भयंकरता वर्णन की जाती है कि

गत वर्षों में उसका कदाचित ही कोई उदाहरण मिले। अतः बैल्जियम में तापमान शून्य से भी अधिक नीचे चला गया है। बर्लिन में बर्फ बनने के बिन्दु से तेरह डिग्री नीचे वर्णन किया जाता है। अस्ट्रिया, हंगरी में शून्य से बीस डिग्री नीचे। इस भयंकर शीत से कई लोग भी मर चुके हैं। यूरोप महाद्वीप की कुछ रेलवे-लाइनों के यातायात में विघ्न पड़ गया है क्योंकि इंजनों के नल पानी जम जाने से फट गए। डैन्यूब और उड़ीसा की बन्दरगाहें बर्फानी हो रही हैं, रूस और ब्रिटेन में तापमान इतना गिर गया है कि इस से पूर्व कई वर्ष तक नौबत यहां तक नहीं पहुँची थी। रोम और नेपल्स के बीच ट्रेनों पर इतनी बर्फ वृष्टि हुई है कि खुदा की पनाह। कुस्तुनतुनिया में कई फुट बर्फ पड़ी, बासफोरस नहर में जहाजों और स्टीमर्स का यातायात स्थगित हो गया है। चैनल में आज-कल जो जहाज इधर-उधर से पहुँचते हैं वे बिल्कुल बर्फ से ढके होते हैं। पैरिस के बाजारों में गरीब और निर्धन लोग सड़ों से ठिठुर-ठिठुर कर मृत्यु का शिकार हो रहे हैं, इटली की झीलों और नहरों जमी हुई हैं। क्या विज्ञान और पार्थिव एवं अंतरिक्ष के वैज्ञानिक इस बात का कोई सन्तोषजनक उत्तर दे सकते हैं कि प्रकृति का यह महान कारखाना अनादिकाल से अनश्वरकाल के लिए एक निर्धारित नियम का पाबन्द है। तथा कोई श्रेष्ठ से श्रेष्ठ सर्वशक्तिमान तथा मात्र इच्छा से व्यवस्था करने वाले अस्तित्व का उस पर अधिकार नहीं तो प्रकृति की दैनिक परिस्थितियों में कभी-कभी नियम (दिनचर्या) के विपरीत घटनाएँ क्यों प्रकट होती हैं और क्या ऐसी घटनाओं से यह परिणाम नहीं निकलता कि इस्लाम ही संसार में एक ऐसा धर्म है जिसकी आस्थाओं को स्वीकार करके मनुष्य किसी भी परिस्थिति में ठोकर नहीं खा सकता^① अन्यथा नास्तिक तो एक ओर रहे अधिकतर वर्तमान धर्मों के अनुयायी भी ऐसे अवसरों पर

① ऐसी असाधारण घटनाओं से मात्र यही परिणाम नहीं निकलता कि इस्लाम सच्चा है अपितु स्पष्ट तौर पर यह परिणाम भी निकलता है कि जिस व्यक्ति ने मसीह मौऊद होने के दावे के साथ समय से पूर्व ऐसी असाधारण एवं विश्वव्यापी घटना की सूचना दी वह सच्चा और खुदा की ओर से है। इसी से

अपनी आस्थाओं के औचित्य का कोई सन्तोषजनक प्रमाण नहीं दे सकते।”

फिर अखबार नूर अफ़शां दिनांक 22 फरवरी 1907 ई. में लिखा है कि हांगकांग में इतनी तीव्र वर्षा हुई कि दस मिनट के अन्दर बन्दरगाह के आस-पास लगभग एक सौ चीनी तबाह हुए और अखबार नूर अफ़शां 23, फरवरी 1907 ई. में लिखा है कि स्थान ‘आर्मी न्यूज़’ इस सप्ताह में इतनी भीषण वर्षा हुई कि बरसात को भी पीछे छोड़ दिया और दो तीन बार बड़ी तीव्रता से ओला वृष्टि भी हुई।^①

हम इस से पूर्व उल्लेख कर चुके हैं कि यह भविष्यवाणी घटित होने से नौ माह पूर्व अर्थात् 5 मई 1906 ई. को अखबारों में प्रकाशित हो चुकी थी फिर नौ माह के पश्चात् ऐसी स्पष्टता के साथ प्रकट हुई कि पंजाब और हिन्दुस्तान, यूरोप और अमरीका के समस्त अखबारों में उसकी चश्मदीद गवाह हो गई। अतः प्रत्येक बुद्धिमान विचार कर सकता है कि किसी मनुष्य को यह सूक्ष्म से सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त नहीं और न किसी झूठ गढ़ने वाले का यह वश चलता है कि वह झूठ गढ़ने के तौर पर खुदा की कुदरत को स्वयं दिखाए। यह कितना महान निशान है जैसा कि शक्तिशाली खुदा ने दो गत बसंतों के बारे में दो भूकम्पों की सूचना दी थी अर्थात् 1905 ई. और 1906 ई. में। इसी प्रकार तीसरी बार फिर बसन्त के बारे में यह सूचना दी कि भावी बसन्त ऋतु में 1907 ई. में आएगा। भीषण वर्षाएं होंगी और सर्दी बहुत पड़ेगी तथा बर्फ पड़ेगी। अतः ऐसा ही प्रकट हो गया तथा यह

① हम नूर अफ़शां के एडीटर से पूछते हैं कि क्या किसी इंजील के अनुयायी ने भी यह महान भविष्यवाणी की थी जो समस्त देश अपितु सम्पूर्ण विश्व पर दायरे के समान छा गई हो। यदि यह भविष्यवाणी खुदा की ओर से नहीं थी तो फिर किस ऐसे व्यक्ति की ओर से थी जो शक्ति-प्रदर्शन में खुदा के बराबर था। अतः जबकि आने वाले मसीह मौऊद ने खुदा की गवाही अपने लिए प्रस्तुत कर दी तो फिर अब भी उसे स्वीकार न करना क्या यह उन यहूदियों का गुण है या नहीं जिन्होंने मसीह अलैहिस्सलाम के चमत्कार देखकर भी उस से शत्रुता की और जो चाहा उस से बर्ताव किया। इसी से

भविष्यवाणी बड़ी शान और प्रताप के साथ पूर्ण हो गई। इस पर खुदा की प्रशंसा।

इस भविष्यवाणी के साथ एक और भविष्यवाणी थी जो पत्रिका रीव्यू आफ़ रैलीजन्ज़ और बद्र, अलहकम में उन्हीं दिनों में छप चुकी और वह यह है :-

देख मैं तेरे लिए आसमान से बरसाऊंगा और पृथ्वी से निकालूंगा सहन में नदियां चलेंगी, पर वे जो तेरे विरोधी हैं पकड़े जाएंगे -

يَاتِيكَ مِنْ كُلِّ فِجٍّ عَمِيقٍ - يَاتُونَ مِنْ كُلِّ فِجٍّ عَمِيقٍ وَأُلْقَى بِهِ الرِّعْبُ
الْعَظِيمُ - وَيَلِكُلُّ هَمَزَةً لَمَزَةً - سَاكِرْمَكْ اِكْرَامًا عَجَبًا

आसमान टूट पड़ा। ये समस्त भविष्यवाणियां वर्षा के बारे में हैं और इसके साथ यह भी बताया गया है कि वर्षा की अधिकता शत्रुओं के लिए हानिकारक होगी। कदाचित इसका अर्थ यह है कि वर्षा की अधिकता ताऊन और भिन्न-भिन्न प्रकार के रोगों को जन्म देगी^① और कुछ खेतियों की भी हानि होगी और फिर अरबी इल्हाम के अर्थ यह हैं कि इन निशानों के प्रकट होने के पश्चात् नए सिरे से लोगों की प्रवृत्ति होगी, वे प्रत्येक मार्ग से आएंगे यहां तक कि मार्ग गहरे हो जाएंगे और बहुत से उपहार, नक़द और वस्तुएं लोग दूर-दूर से भेजेंगे और शत्रुओं पर एक बड़ा दबदबा स्थापित होगा उस समय चुगली करने वालों और दोषारोपण करने वालों पर लानत बरसेगी और मैं तुझे एक अद्भुत सम्मान दूंगा। इतनी वर्षाएं होंगी कि जैसे आसमान टूट पड़ेगा।

(5) पांचवां निशान - जो इन दिनों में प्रकट हुआ वह एक दुआ का स्वीकार होना है जो वास्तव में मुर्दों को जीवित करने में सम्मिलित है। इस संक्षेप का विस्तार यह है कि अब्दुलकरीम पुत्र अब्दुर्हमान निवासी हैदराबाद दकन हमारे स्कूल में एक लड़का विद्यार्थी है भाग्य से उसे एक पागल कुत्ते ने काट लिया। हमने उसे उपचार हेतु कसौली भेज दिया। कुछ दिनों तक उसका कसौली में उपचार होता रहा फिर वह क़ादियान वापस आया। थोड़े दिन गुज़रने के पश्चात् उसमें वे पागलपन के लक्षण प्रकट हुए जो पागल कुत्ते के काटने के पश्चात् प्रकट हुआ करते हैं और पानी से डरने

① कदाचित इस वाक्य का अर्थ यह हो कि इन निशानों के पश्चात् समस्त शत्रु पूर्णरूप से निरुत्तर और मौन हो जाएंगे। इसी से।

लगा तथा भयावह स्थिति पैदा हो गई। तब उस घर से दूर असहाय के लिए मेरा हृदय बहुत व्याकुल हुआ और दुआ के लिए एक विशेष ध्यान पैदा हो गया। प्रत्येक व्यक्ति जानता था कि वह बेचारा कुछ घंटों के पश्चात् मर जाएगा। विवश होकर उसे बोर्डिंग से बाहर निकालकर एक पृथक मकान में दूसरों से अलग बड़ी सावधानी से रखा गया और कसौली के अंग्रेज डाक्टरों की ओर तार भेज दिया और पूछा गया कि इस स्थिति में उसका कोई उपचार भी है या नहीं उस ओर से तार द्वारा उत्तर प्राप्त हुआ कि अब इसका कोई उपचार नहीं किन्तु उस गरीब और घर से दूर बच्चे के लिए मेरे हृदय में बहुत ध्यान पैदा हो गया और मेरे मित्रों ने भी उसके लिए दुआ करने के लिए बहुत ही आग्रह किया क्योंकि इस घर से दूर होने की स्थिति में वह लड़का दया योग्य था तथा हृदय में यह भय पैदा हुआ कि यदि वह मर गया तो एक बुरे रूप में उसकी मृत्यु शत्रुओं के उपहास का कारण होगी। तब मेरा हृदय उसके लिए दर्द और व्याकुलता से भर गया और ख़ुदा की ओर बहुत तल्लीनता पैदा हुई जो अपने अधिकार से पैदा नहीं होती अपितु केवल ख़ुदा की ओर से पैदा होती है और यदि पैदा हो जाए तो ख़ुदा तआला की आज्ञा से वह प्रभाव दिखाती है कि निकट है कि उस से मुर्दा जीवित हो जाए। निष्कर्ष यह कि उसके लिए ख़ुदा के प्रताप की अवस्था उपलब्ध हो गई और जब वह ध्यान चरमसीमा तक पहुँच गया और दर्द ने मेरे हृदय पर पूर्ण रूप से अधिकार जमा लिया तब उस रोगी पर जो वास्तव में मुर्दा था इस ध्यान के लक्षण प्रकट होने आरंभ हो गए और या तो वह पानी से डरता और प्रकाश से भागता था और या सहसा तबियत ने स्वास्थ्य की ओर मुख किया और उसने कहा कि अब मुझे पानी से डर नहीं लगता। तब उसे पानी दिया गया तो उसने बिना किसी भय के पी लिया अपितु पानी से वुजू करके नमाज़ भी पढ़ ली और पूरी रात सोता रहा और भयावह और पशुवत स्थिति जाती रही, यहां तक कि कुछ दिन तक पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया। मेरे हृदय में तुरन्त डाला गया कि इसमें जो पागलपन की स्थिति पैदा हो गई थी यह इसलिए नहीं थी कि वह पागलपन उसे तबाह करे अपितु इसलिए थी कि ताकि ख़ुदा तआला का निशान प्रकट हो। अनुभवी लोग कहते हैं कि संसार में ऐसा कभी

देखने में नहीं आया कि ऐसी स्थिति में कि जब किसी को पागल कुत्ते ने काटा हो और पागलपन के लक्षण प्रकट हो गए हों फिर कोई व्यक्ति इस स्थिति से बच सके। और इससे अधिक इस बात का और क्या प्रमाण हो सकता है कि कसौली में इस कला के निपुण सरकार की ओर से कुत्ते के काटे के उपचार के लिए डाक्टर नियुक्त हैं उन्होंने हमारे तार के उत्तर में स्पष्ट लिख दिया कि अब कोई उपचार नहीं हो सकता।

यहां यह लिखना रह गया कि जब मैंने उस लड़के के लिए दुआ की तो खुदा ने मेरे हृदय में इल्का किया कि अमुक औषधि देनी चाहिए। अतः मैंने कुछ बार वह औषधि रोगी को दी अन्ततः रोगी अच्छा हो गया या यों कहे कि मुर्दा जीवित हो गया और जो कसौली के डाक्टरों की ओर से हमारे तार का उत्तर आया था हम नीचे वह उत्तर अनुवाद सहित लिख देते हैं। और वह यह है :-

To Station

From Station

Batala

Kasauli

To Person

From Person

Sher ali

Pasteur

Kadian

Sorry nothing can be done for Abdul Karim

(अनुवाद)

स्थान

स्थान से

बटाला

कसौली

की ओर

की ओर से

शेर अली क़ादियान

पास्चर

सॉरी नथिंग केन बी डन फॉर अब्दुल करीम

खेद कि अब्दुल करीम के लिए कुछ भी नहीं किया जा सकता तथा कुत्ता काटने के उपचार कार्यालय से एक मुसलमान ने आश्चर्य चकित होकर कसौली से एक कार्ड भेजा है जिसमें लिखा है कि “बहुत खेद था कि अब्दुल करीम जिसे पागल

कुत्ते ने काटा था उस से प्रभाव ग्रस्त हो गया परन्तु इस बात के सुनने से बड़ी प्रसन्नता हुई कि दुआ के माध्यम से स्वस्थ हो गया। स्वस्थ होने की ऐसी घटना कभी नहीं सुनी। यह खुदा की कृपा और महापुरुषों की दुआ का प्रभाव है खुदा का धन्यवाद और प्रशंसा। लेखक अब्दुल्लाह - कसौली

(5) **पांचवां निशान** - एक व्यक्ति का मुबाहला है अर्थात् उसने अपने तौर पर मेरे बारे में खुदा तआला से निर्णय चाहा और बहुत सी न की गई तथा अनकही बातें मेरी ओर सम्बद्ध करके खुदा तआला से न्याय - याचक हुआ। अतः वह इस याचना के कुछ दिन पश्चात् ही ताऊनग्रस्त होकर इस संसार से कूच कर गया।

विवरण उसका यह है कि एक अब्दुल क्रादिर नामक व्यक्ति निवासी तालिबपुर पंडोरी जिला गुरदासपुर था और तबीब (वैद्य) के नाम से प्रसिद्ध था। उसे मुझ से बहुत वैर और शत्रुता थी और मुझे सदैव गन्दी गालियां देता था। अतः जब ये गालियां चरमसीमा को पहुँच गईं तब उसने मुबाहले के तौर पर एक कविता लिखी। उसका वह भाग यहां हम छोड़ देते हैं जिसमें उसने बहुत कष्टदायक पापपूर्ण बातें मुझ से सम्बद्ध की हैं और सा 'दुल्लाह लुधियानवी के रूप में मेरे चरित्र पर भी आरोप लगाए हैं और बड़े गन्दे शब्द प्रयोग किए हैं। उन शेरों को छोड़कर उसके शेष कुछ शेर हम यहां लिख देते हैं किन्तु उसके बहुत अश्लील शेरों से इस पुस्तक को पवित्र रखते हैं। हम उसका समस्त लेख जिसके प्रारंभ में दो शेर मेरे भी लिखे हैं और कुछ उसका अपना लेख जो दोष से भरपूर पद्य और कुछ गद्य है वह सब नीचे लिखी जाती है। और वह यह है -

इब्ने मरयम मर चुका हक की क्रसम

दाखिले जन्नत हुआ है मुहतरम^①

① चूंकि यह व्यक्ति ज्ञानहीन है इसलिए मेरे शेरों के लिखने में भी गलती की है यह पद जिस पर मैंने निशान लगाया है जो मेरे शेर का पद है, उसने गलती की है क्योंकि वह लिखता है - दाखिले जन्नत हुआ है मुहतरम हालांकि यह पद इस प्रकार है -

‘दाखिले जन्नत हुआ वह मुहतरम’ इसी से

इब्ने मरयम के जिक्र को छोड़ो
उस से बेहतर गुलाम अहमद है^①

① अधिकतर नादान इस शेर को पढ़कर उन्माद प्रकट करते हैं जैसा कि इस मुबाहला करने वाले ने प्रकट किया, किन्तु इसका अर्थ केवल यह है कि उम्मत मुहम्मदिया का मसीह उम्मत मूसविया के मसीह से श्रेष्ठतर है। क्योंकि हमारा नबी मूसा से श्रेष्ठ है। बात यह है कि खुदा की युक्ति का उद्देश्य यह था कि जैसे कि मूसवी खलीफों में से हजरत ईसा अलैहिस्सलाम खातमुलखुलफ़ा है उसी प्रकार आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खलीफों में से एक खातमुलखुलफ़ा अन्तिम युग में पैदा होगा (जो यह विनीत है) ताकि इस्राईली और इस्माईली सिलसिले परस्पर समान हों। अतः जबकि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हजरत मूसा से श्रेष्ठ हैं तो इससे अनिवार्य हो जाता है कि आपकी उम्मत का खातमुलखुलफ़ा हजरत मूसा के खातमुलखुलफ़ा से श्रेष्ठ हो। सत्य यही है जिस के कान सुनने के हैं सुने। खेद है कि हमारे विरोधी बार-बार यह तो कहते हैं कि अन्तिम युग में मुसलमानों का एक वर्ग यहूदी गुणों वाला हो जाएगा और जैसा कि दुर्भाग्यशाली यहूदी खुदा के नबियों को अस्वीकार करते और भविष्यवाणियों का इन्कार करते थे वे भी करेंगे, किन्तु यह उनके मुख से नहीं निकलता कि जिस प्रकार दोनों सिलसिलों को दो नबियों की समानता के कारण प्रथम भाग में समानता है, इसी प्रकार खातमुलखुलफ़ा के पैदा होने के पश्चात् अन्त में भी समानता हो जाएगी। यहूदी भी कहते हैं कि अन्तिम युग का मसीह प्रथम मसीह से श्रेष्ठ होगा किन्तु ये लोग नहीं कहते। इससे स्पष्ट है कि ये लोग आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की श्रेष्ठता एवं महानता को कुछ महत्त्व नहीं देते। यह विचार करने योग्य है कि जिस व्यक्ति के हृदय में मेरे इस शेर के एक पद के कारण मुबाहले का जोश उठा था, खुदा ने मेरे जीवन में ही उसे तबाह कर दिया। अतः इस पद की सच्चाई पर उसकी मृत्यु पर्याप्त साक्षी है। इसी से।

इसका उत्तर पवित्र कुर्आन के अनुसार

مَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ (अन्सि - 158)

छठे पारे में ध्यान से देखो जिसको मिर्ज़ा साहिब भली भांति जानते हैं किन्तु मन के लोभ के कारण उस का पालन नहीं करते।

इब्ने मरयम जिन्दा है हक़ की क़सम
 सूरते मलकी बफ़लक़ मुहतरम
 ज़िक़ व फ़ख़्र उनका है कुर्आन से सबूत
 झूठ कहते हैं गुलाम अहमदी
 लोगो साबित कर लो तुम कुर्आन से
 दीन क्यों खोते हो तुम बुहतान से
 झूठ का बाज़ार थोड़े रोज़ है
 बाद इसके हसरते दिलसोज़ है
 अब भी मिर्ज़ाइयो ज़रा हक़ से डरो
 ज़िन्दगी में जल्दतर तौबा करो
 दीने मुहम्मद की करो तुम पैरवी
 हाथ आवे दो जहां में खुसरवी
 जब ख़ुदा का क्रहर हो तुम पर नुज़ूल
 फिर न मिर्ज़ा महदी होगा न रसूल
 भूल जाएंगे यह सब क़ाला व क़ौल
 हैं दलाइल सब शरीअत से फ़ुज़ूल
 सिर्फ़ उसकी अक़ल का तूमार है
 ऐश व इशरत के लिए यह कार है
 जो तरीका उस ने है जारी किया
 किस पयम्बर या वली ने यह कहा

औरतें बेगाना को हमराह लिया
 बाग़ में ले जा के उस ने यह कहा
 छोड़ दो मुंह खुले अपने तुम निसा
 हाथ में ले हाथ करते चहचहा
 और करते काम हैं वह नारवा
 फिर ये लोगों ने उसे महदी कहा
 या इलाही जल्दतर इन्साफ़ कर
 झूठ का दुनिया से मतला' साफ़ कर।

ये शे'र हैं जिनमें से बहुत गन्दे शे'र मैंने निकाल दिए हैं क्योंकि वे बहुत गन्दे और अश्लीलता से भरे हुए थे, किन्तु जैसा कि इन शे'रों के लेखक ने खुदा के समक्ष दुआ की थी कि वह इन्साफ़ करे और झूठ को मिटा दे। अतः खुदा ने शीघ्र ही इन्साफ़ कर दिया और उन शे'रों के लिखने के कुछ दिन पश्चात् ही अर्थात् इन शे'रों के लिखने के पश्चात् वह व्यक्ति अब्दुल क़ादिर ताऊन से मर गया। मुझे उसके एक शिष्य के द्वारा उसका हस्ताक्षरित लेख मिल गया। वह न केवल अकेला ताऊन से तबाह हुआ अपितु उसके कुछ और भी परिजन ताऊन से मृत्यु का शिकार हो गए। एक दामाद भी मर गया। अतः इस प्रकार से उसके शे'र के अनुसार असत्य का उदय स्थल साफ़ हो गया।

खेद कि ये लोग झूठ बोलते हैं और स्वयं उद्दण्ड होकर आरोप लगाते तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई हुई शरीअत की दृष्टि से झूठा आरोप लगाने पर दण्डयोग्य ठहरते हैं फिर भी कुछ परवाह नहीं करते। ये हैं उलेमा और प्रकाण्ड विद्वान अर्थात् इस युग के इन लोगों में कुछ ऐसी चपलता और लापरवाही है कि जब एक व्यक्ति खुदा तआला से ऐसा न्याय मांग कर मृत्यु का शिकार हो जाता है तो दूसरा उसकी कुछ परवाह नहीं करता और उसका स्थानापन्न होकर उद्दण्डता और गालियां देना आरंभ कर देता है अपितु उस से भी आगे बढ़ जाता है। अतः अब तक उनमें से बीसियों मुबाहलों द्वारा तबाह हो चुके हैं। यदि मैं सब की दशाओं को लिखूं तो पुस्तक के कई भाग इस चर्चा में भर जाएं। मेरे बहुत से

मित्रों ने पत्र लिखे कि अमुक व्यक्ति एक पक्षीय मुबाहला करके कुछ दिनों में ही तबाह हो गया और अमुक व्यक्ति ने हमारी जमाअत में से किसी के साथ मुबाहला किया तो सुबह होते ही संसार से कूच कर गया और कुछ लोगों ने स्वयं आकर ऐसे अद्भुत निशान वर्णन किए। अतः कल 28 फरवरी 1907 ई. को भी कुछ मेहमानों ने मुबाहले की परिस्थितियां वर्णन कीं परन्तु मैंने इसलिए कि पुस्तक बहुत बढ़ गई है और वे घटनाएं भी केवल मौखिक हैं उनका उल्लेख अनावश्यक समझा। मालूम नहीं कि खुदा तआला का क्या इरादा है कि उनमें से कोई भी यह नहीं सोचता कि ये खुदा के समर्थन क्यों हो रहे हैं, क्या झूठों, दज्जालों और पापियों के यही निशान हैं कि उनके समक्ष मुबाहले की स्थिति में खुदा मोमिनों और संयमियों को तबाह करता जाए। अन्ततः स्मरण रहे कि, शे'रों के लेखक के हस्तलिखित शे'रों का चित्र लेकर इस पुस्तक के साथ संलग्न कर दिया गया है ताकि विरोधियों पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो, यदि किसी को इन्कार हो कि ये उसके शे'र नहीं हैं तो उसके इस लेख के चित्र को उसके अन्य लेखों से मिला सकता है। मूल भी मेरे पास सुरक्षित है जिसका मन चाहे देख ले और जिस व्यक्ति के द्वारा मुझे यह लेख प्राप्त हुआ है वह उसका शिष्य है और उस का नाम शेख मुहम्मद पुत्र अली मुहम्मद निवासी डेहरी वाला, ज़िला-गुरदासपुर है।

खुदा तआला की कुदरत है कि अधिकतर मुबाहला करने वाले ताऊन से ही मेरे तथा अधिकांश कट्टर विरोधियों का न्याय ताऊन ने ही किया। बराहीन अहमदिया में खुदा ने ताऊन और भूकम्प का उस युग में वर्णन किया था कि जबकि इन अज़ाबों का इस देश में नाम व निशान न था। जैसा कि बराहीन अहमदिया में मृत्यु की यह भविष्यवाणी है कि -

لا يصدق السَّفِيه الاسيغه الهالك - انى امر الله فلا تستعجلوه

अर्थात् कमीना मनुष्य मृत्यु के निशान के अतिरिक्त अन्य किसी निशान की पुष्टि नहीं करता। उन्हें कह दे कि वह निशान भी आने वाला है अतः तुम मुझ से शीघ्रता न करो। अतः मृत्यु के निशान से यही ताऊन का निशान अभिप्राय था। इसी प्रकार

अन्य स्थान पर बराहीन अहमदिया में कहता है -

الرَّحْمَنُ عَلَّمَ الْقُرْآنَ - لَتَنذَرُ قَوْمًا مَا أَنذَرَا بَاءَهُمْ وَلَتَسْتَبِينَ
سَبِيلَ الْمُجْرِمِينَ - قُلْ إِنِّي أَمَرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ

अर्थात् वह खुदा है जिसने तुझे कुर्आन सिखाया और सही अर्थों से अवगत किया ताकि तू आने वाले अज़ाब से उन लोगों को डराए जिन के बाप-दादे नहीं डराए गए और ताकि अपराधियों का मार्ग स्पष्ट हो जाए अर्थात् ज्ञात हो जाए कि कौन अपराधी और कौन सत्य का अभिलाषी है।

इसी प्रकार अल्लाह तआला ने एक अन्य स्थान पर कहा है जिसका उल्लेख बराहीन अहमदिया में है और वह यह है -

“दुनिया में एक नज़ीर (डराने वाला) आया पर दुनिया ने उसे स्वीकार न किया परन्तु खुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली आक्रमणों द्वारा उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।”

स्पष्ट है कि नज़ीर का शब्द खुदा तआला उसी भेजे हुए के लिए प्रयोग करता है जिसके समर्थन में यह प्रारब्ध होता है कि उसके इन्कार करने वालों पर कोई अज़ाब उतरेगा क्योंकि नज़ीर डराने वाले को कहते हैं और वही नबी डराने वाला कहलाता है जिसके समय में कोई अज़ाब उतरना प्रारब्ध होता है। अतः आज से छब्बीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में मेरा नाम जो नज़ीर रखा गया है उसमें स्पष्ट संकेत था कि मेरे समय में अज़ाब उतरेगा। अतः इस भविष्यवाणी के अनुसार ताऊन और भूकम्पों का अज़ाब आ चुका। कुछ नादान लोग कहते हैं कि यूरोप और अमरीका के अधिकतर लोग तो आप के नाम से भी अपरिचित हैं फिर वे लोग भूकम्पों और ज्वालामुखी पर्वतों से क्यों तबाह हुए? इसका उत्तर यह है कि वे लोग अपने पापों की अधिकता तथा दुष्कर्मों के कारण इस योग्य हो चुके थे कि संसार में उन पर अज़ाब उतारा जाए। अतः खुदा तआला ने अपनी सुन्नत के अनुसार एक नबी के आने तक वह अज़ाब स्थगित रखा और जब वह नबी आ गया तथा उस क्रौम को हज़ारों विज्ञापनों और पत्रिकाओं द्वारा निमंत्रण दिया गया

तब वह समय आ गया कि उनको उनके अपराधों का दण्ड दिया जाए। यह बात सर्वथा गलत है कि यूरोप और अमरीका के लोग मेरे नाम से भी अनभिज्ञ हैं। यह बात किसी न्यायप्रिय व्यक्ति से गुप्त नहीं कि लगभग बीस वर्ष का समय गुजर गया है जब कि मैंने सोलह हजार प्रचार-विज्ञापन अंग्रेजी भाषा में छपवाकर तथा उस में अपने दावे और तर्कों एवं प्रमाणों का वर्णन करते हुए यूरोप और अमरीका में बांटे थे। तत्पश्चात् विभिन्न विज्ञापनों का समय-समय पर वितरण होता रहा है और फिर कई वर्षों से अंग्रेजी पत्रिका रीव्यू आफ़ रैलीजेन्ज़ यूरोप और अमरीका में भेजा जाता है तथा यूरोप के अखबारों में अनेकों बार मेरे दावे की चर्चा हुई है और जो बद दुआ डोई^① पर की गई थी उसकी चर्चा भी यूरोप के अखबारों में हुई थी, फिर इस सीमा तक निरन्तर प्रकाशित होने के बावजूद कि चौबीस वर्ष से अधिक हो रहे हैं कौन स्वीकार करेगा कि वे लोग मेरे नाम से भी अपरिचित हैं अपितु कुछ तो उनमें से मेरी जमाअत में प्रवेश कर चुके हैं।

इसके अतिरिक्त सब जानते हैं कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के तूफान ने उन लोगों को भी तबाह कर दिया था जिन लोगों को हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के नाम की सूचना भी नहीं थी। अतः वास्तविकता यह है कि जैसा कि अल्लाह तआला ने पवित्र कुर्आन में कहा है -

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا^②

खुदा तआला संसार में अज़ाब नहीं उतारता जब तक उस से पूर्व कोई रसूल नहीं भेजता। यही खुदा का नियम है। स्पष्ट है कि यूरोप और अमरीका में कोई रसूल पैदा नहीं हुआ। अतः उस पर जो अज़ाब आया, केवल मेरे दावे के पश्चात् आया।

① यह अमरीका के एक झूठे और इल्यास नबी होने के दावेदार का नाम है जो आज-कल आर्थिक हानियों के अतिरिक्त पक्षाघात से रोग ग्रस्त होकर मृत्यु के निकट है। इसी से।

② बनी इस्राईल - 16

(6) छठा निशान - हकीम हाफ़िज़ मुहम्मद दीन की मृत्यु है जो मुबाहले के पश्चात् हुई। उसका विवरण यह है कि एक व्यक्ति ननकर गांव का निवासी था जो रेलवे स्टेशन काहना लाहौर के साथ है। उसने अपनी पुस्तक में मेरे बारे में कई शब्द बतौर मुबाहला के प्रयोग किए थे तथा झूठे के लिए खुदा के प्रकोप और ला'नत की विनती की थी और फिर उस विनती के पश्चात् जो उसने अपनी पुस्तक में कई स्थानों में की है। उस पुस्तक का नाम उसने “फ़ैसला कुर्आनी तथा तकज़ीब क़ादियानी” रखा है। एक वर्ष तीन माह के पश्चात् मर गया।^①

अतः वह पृष्ठ-76 और पृष्ठ-78 और पृष्ठ-85 में ये आयतें बतौर मुबाहला के लिखता है :-

وَيْلٌ لِّكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ
وَيْلٌ لِّلْمُكْذِبِينَ
لُعْنَتُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِينَ

ये आयतें हैं जो उसने लिखी हैं। अतः एक आयत में तो उस व्यक्ति पर ला'नत की गई है जो झूठ बोलता और खुदा पर झूठ गढ़ता है तथा दूसरी आयत में उस व्यक्ति पर ला'नत की गई है जो सच्चे को झुठलाता है। अतः यही मुबाहला है। तीसरी आयत में सामान्यतया झूठे पर ला'नत की है। जैसा कि मैं ने लिखा है कि जब यह व्यक्ति इस पुस्तक को प्रकाशित कर चुका तो एक वर्ष तीन माह के पश्चात् मर गया। अतः प्रत्येक बुद्धिमान विचार कर सकता है कि इस्लाम में मुबाहला एक निर्णायक बात ठहराई गई है। अतः जब कि मुझे हकीम हाफ़िज़

① उसकी यह पुस्तक इस्लामी स्टीम प्रेस लाहौर में छपी थी, हकीम चननदीन के प्रबन्धन के अन्तर्गत।

② अल जासियः - 8

③ अलमुतफ़्फ़ीन - 11

④ आले इमरान - 62

मुहम्मद दीन ने अपनी इस पुस्तक में झूठ गढ़ने वाला ठहराया और मेरा नाम अफ़्फ़ाक, असीम (घोर मिथ्यावादी, महा पापी) रखा तथा फिर अपनी पुस्तक के पृष्ठ-63 में मेरे बारे में यह आयत लिखी -

وَيْلٌ لِّكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ يَسْمَعُ آيَاتِ اللَّهِ تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ① ثُمَّ يُصِرُّ
مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا ② فَبِئْسَ بَعْذَابٌ لِّئِيمٍ ③

अर्थात् लानत है झूठ गढ़ने वाले पापी पर जो खुदा की आयतों को सुनता है फिर अहंकार के मार्ग से इन्कार पर आग्रह करता है जैसे कुछ भी नहीं सुना। अतः उसे पीड़ादायक अज़ाब का शुभ सन्देश दे। अतः यह व्यक्ति मुहम्मद दीन ये आयतें लिख कर यह संकेत करता है कि जैसे मैं झूठ गढ़ने वाला और पापी हूँ और उसके जीवन में ही पीड़ादायक अज़ाब में ग्रस्त हो जाऊंगा। किन्तु खुदा तआला ने उसकी मृत्यु से निर्णय कर दिया कि कौन झूठ गढ़ने वाला पापी है।

(7) सातवां निशान - 28 फ़रवरी 1907 की सुबह को यह इल्हाम हुआ - सख्त भूकम्प आया और आज वर्षा भी होगी। खुश आमदी नेक आमदी। अतः यह भविष्यवाणी प्रातः ही घटना पूर्व ही सारी जमाअत को सुना दी गई और जब यह भविष्यवाणी सुनाई गई वर्षा का नामोनिशान न था और आकाश पर लेशमात्र भी बादल न था और सूर्य अपनी तीव्रता प्रदर्शित कर रहा था तथा कोई नहीं जानता था कि आज वर्षा भी होगी और फिर वर्षा के पश्चात् भूकम्प की भी सूचना दी गई थी। फिर जुहर की नमाज़ के पश्चात् (दोपहर के पश्चात्) यकायक बादल आया और वर्षा हुई और रात को भी कुछ वर्षा हुई और उस रात को जिसके अगले दिन दिनांक 3 मार्च 1907 ई. थी, भूकम्प आया जिसकी सूचनाएं सामान्यतः मुझे मिल गई। अतः इस भविष्यवाणी के दोनों पहलू तीन दिन में पूर्ण हो गए।

इस लेख के पश्चात् 5 मार्च 1907 ई. की डाक में दो पत्र मिले। एक पत्र

① यह शब्द कुर्आन की आयत का उस व्यक्ति ने कुर्आन के ज्ञान के अभाव के कारण ग़लत लिखा है सही इस प्रकार है - يَسْمَعُ آيَاتِ اللَّهِ تُتْلَىٰ عَلَيْهِ - इसी से।

② अल जासिय: 8, 9

बिरादरम मिर्जा नियाज बेग साहिब रईस कलानौर की ओर से था, जिसमें लिखा था कि दो और तीन मार्च की मध्यरात्रि में भूकम्प का सख्त धक्का महसूस हुआ और इस से पूर्व वर्षा भी हुई और ओले भी पड़े और वह इल्हाम कि **आसमान टूट पड़ा** सारा ही पूर्ण हो गया।

इसी डाक में एक पत्र बिरादरम मियां नवाब खान साहिब तहसीलदार गुजरात का मुझे प्राप्त हुआ। जिसमें लिखा था कि दूसरी और तीसरी मार्च 1907 ई. की मध्यरात्रि थी उसमें साढ़े नौ बजे रात्रि को भूकम्प का एक बड़ा धक्का महसूस हुआ जो नितान्त भयानक था।

अखबार सिविल एण्ड मिलिट्री गजट लाहौर दिनांक 5 मार्च 1907 ई. में इस भूकम्प के बारे में निम्नलिखित सूचना है -

“सप्ताह की शाम भूकम्प का एक तीव्र धक्का महसूस हुआ जो कुछ सेकण्ड तक रहा उसका केन्द्र उत्तर-पूरब में था।”

अखबार-ए-आम लाहौर दिनांक 6 मार्च 1907 ई. में लिखा है कि श्रीनगर (कश्मीर) में शनिवार की रात को 9:30 बजे एक तीव्र भूकम्प महसूस हुआ। उत्तर-पूरब में कुछ सेकण्ड रहा।

अब हमें कोई बताए कि क्या किसी मनुष्य को यह शक्ति प्राप्त है कि यह भविष्यवाणी अपनी ओर से प्रकाशित करे कि आज वर्षा होगी, तत्पश्चात् भूकम्प आएगा तथा ऐसे समय में सूचना दी जबकि धूप निकली हुई थी और वर्षा का कोई लक्षण न था और फिर उसी प्रकार घटित हो जाए। यदि यह प्रश्न किया जाए कि इसका प्रमाण क्या है तो चश्मदीद तौर पर देखने वाले आदरणीय गवाहों के नाम नीचे लिखे जाते हैं, जिन्हें यह भविष्यवाणी उस समय सुनाई गई थी अर्थात् 28 फरवरी 1907 ई. को प्रातः काल जबकि धूप स्पष्ट तौर पर निकली हुई थी और आकाश पर सूर्य चमक रहा था और बादल का कोई लक्षण न था।

सख्त भूकम्प वाली भविष्यवाणी दिनांक 28 फरवरी 1907 ई. के घटना पूर्व सुनने के गवाह -

मुहम्मद सादिक एडीटर अखबार बद्र क्रादियान, धर्मपत्नी मुहम्मद सादिक, ख्वाजा अली मुहम्मद नसीब अहमदी क्लर्क अखबार बद्र, मास्टर शेर अली, गुलाम अहमद क्लर्क पत्रिका “तशहीजुल अज्जहान”, गुलाम मुहम्मद टीचर लोअर तालीमुल इस्लाम हाई स्कूल क्रादियान, मौलवी मुहम्मद अहसन बक्रलम ख़ुद, उबैदुल्लाह बिस्मिल अहमदी उफ़िया अन्हो - मैंने अपने कानों से यह भविष्यवाणी सुनी, मुहम्मद सरवर उफ़िया अन्हो, गुलाम क्रादिर, काजी अमीर हुसैन - मैंने भी सुना है, गुलाम नबी बक्रलम ख़ुद, मामून खान जिमनास्टिक इन्सटक्टर, हाकिम अली चक पनियाड़ हाल क्रादियान, हाफ़िज़ मुहम्मद इब्राहीम मुहाजिर क्रादियान, मुहम्मदुद्दीन बक्रलम ख़ुद विद्यार्थी एम.ए. कालिज अलीगढ़ हाल - क्रादियान, खाकसार फकीरुल्लाह नायब नाज़िम मैगज़ीन, अब्दुरहीम सेकण्ड क्लर्क मैगज़ीन, खाकसार अहमद अली नम्बरदार निवासी बाज़ीद चक हाल क्रादियान, मुहम्मदुद्दीन, मुहम्मद हसन अहमदी दफ़्तरी, (सय्यद महदी हुसैन मुहाजिर - मैं इस पर साक्षी हूँ), अब्दुल मुह्यी अरब लेखक लुगातुल कुर्आन, मुहम्मद जी ऐबटाबादी, सय्यद गुलाम हुसैन कश्मीरी, सय्यद नासिर शाह साहिब ओवर सीयर कश्मीर, मुहम्मद इस्हाक़, गुलाम मुहम्मद, दौलत अली स्टूडेंट - निःसन्देह 28 फ़रवरी को मैंने हुज़ूर का इल्हाम सुना कि भूकम्प आया और आज वर्षा भी होगी, खादिम कुतुबुद्दीन, हकीम मुहम्मद हुसैन कातिब अखबार बद्र, शैख अब्दुरहीम दफ़्तरी बद्र, सय्यद अहमद नूर काबुली, सुल्तान मुहम्मद स्टूडेंट अफ़ग़ान, हज़रत नूर काबुली, अब्दुल्लाह अफ़ग़ान, हाजी शहाबुद्दीन, फ़ज़लुद्दीन हकीम, ख़लीफ़ा रजब दीन लाहौरी बक्रलम ख़ुद, हाजी फ़ज़ल हुसैन शाहजहांपुरी, शैख महबूबुर्रहमान बनारसी, लुत्फ़ुर्रहमान, शैख अहमद मैसूरी, मुहम्मद सुलेमान मुंगेरी, अब्दुस्सत्तार खां काबुली मुहाजिर, शेख मुहम्मद इस्माईल सरसावी टीचर, सय्यद नासिर नवाब, अब्दुरऊफ़, फख़रुद्दीन स्टूडेंट तालीमुल इस्लाम स्कूल, मुन्शी करम अली कातिब रीव्यू आफ़ रिलीजंज़, सय्यद तसव्वुर हुसैन बरेलवी, अकबर शाह खान नजीबाबादी, गुलाम हसन नानबाई

बोर्डिंग, गुलाम मुहम्मद अफ़ग़ान मुहाजिर - 'भूकम्प आया और आज वर्षा भी होगी खुश आमदी, नेक आमदी' मैंने सुना (हकीम हाजी मौलवी) नूरुद्दीन। मैंने 28 फरवरी 1907 ई. को यह इल्हाम सुना था - भूकम्प आया, आज वर्षा भी होगी, खुश आमदी नेक आमदी, हकीम मुहम्मद ज़मान - मैंने सुना और उसी दिन मन्सूरी पत्र लिख दिया, अब्दुरहीम फोर्थ मास्टर, गुलाम मुहम्मद विद्यार्थी बी.ए., एम.ए. कालिज अलीगढ़, शेख गुलाम अहमद, खाकसार यार मुहम्मद बी.ओ.एल., बरकत अली खान, कुदरतुल्लाह खान मुहाजिर, शेख अब्दुल अजीज़ नौ-मुस्लिम, अहमद दीन सुनार, अब्दुल्लाह निवासी शूपियां कश्मीर हाल क़ादियान। मैंने यह इल्हाम उसी दिन सुबह 7 बजे सुना और उसी दिन वर्षा भी हुई और भूकम्प भी तीसरे दिन आया। **महमूद अहमद** - मैंने प्रातः 28 फरवरी 1907 ई. को यह भविष्यवाणी सुनी) अमीर अहमद पुत्र मौलवी सरदार अली निवासी म्यानी - मैंने प्रातः 28 फरवरी 1907 ई. को यह भविष्यवाणी सुनी मुहम्मद अशरफ़ क्लर्क दफ़्तर सदर अंजुमन, शेख अब्दुल्लाह वैद्य बोर्डिंग हाउस, मौलवी अजीमुल्लाह नाभा वाले, अब्दुल ग़फ़्फ़ार खान अफ़ग़ान देश खोस्त हाल क़ादियान, अब्दुल ग़नी स्टूडेंट, दीन मुहम्मद मिस्त्री, मौलवी मुहम्मद फ़ज़ल अहमदी चंगवी, करीम बख़्श नम्बरदार रायपुर, साहिबज़ादा मंज़ूर मुहम्मद लुधियानवी, गुलाम हुसैन पुत्र मुहम्मद यूसुफ़ अपील लेखक, अब्दुल ग़नी - फ़ैज़ अहमद, मुहम्मद इस्माईल, अब्दुल हक़, अब्दुरहमान, फ़ज़लुद्दीन, मंज़ूरअली, मिर्ज़ा बरकत अली बेग, मिस्त्री अब्दुरहमान, वलीउल्लाह शाह, हबीबुल्लाह शाह, फ़ख़रुद्दीन, गौहरदीन, ख़्वाजा अब्दुरहमान, मलिक अब्दुरहमान, मुहम्मद यह्या, अब्दुस्सत्तार अब्दुल अजीज़, बशीर अहमद, अब्दुल्लाह जट, अब्दुरहमान लुधियानवी, मुहम्मद इस्माईल, अली अहमद, हयात खान, इस्हाक दीन मुहम्मद इब्राहीम, बरकतुल्लाह, अब्दुरहमान, सय्यद अल्ताफ़ हुसैन, अब्दुरहमान दातवी, मुमताज़ अली, अब्दुल करीम, अब्दुल जब्बार, अहमद दीन, महमूद, अब्दुल हक़, उबैदुल्लाह, अब्दुरहमान, अब्दुल्लाह करीम बख़्श खान सामां, नूर मुहम्मद

फर्राश, गुलाम मुहम्मद इस पुस्तक के लिपिक।

स्मरण रहे कि इस भविष्यवाणी में कि भीषण भूकम्प आएगा और आज वर्षा भी होगी एक रहस्य है और वह यह है कि भूकम्प पृथ्वी से संबंधित है और वर्षा आकाश से आती है। अतः यह एक ऐसी भविष्यवाणी है कि इसमें पृथ्वी और आकाश दोनों एकत्र कर दिए गए हैं ताकि भविष्यवाणी दोनों पहलूओं से पूर्ण हो क्योंकि यह बात मानव शक्ति से बाहर है कि वह अपनी ओर से ऐसी भविष्यवाणी करे जिसमें पृथ्वी और आकाश दोनों सम्मिलित कर दिए जाएं अपितु स्वयं यह बात मानव-शक्ति से बाहर है कि बिल्कुल धूप के समय जब कि वर्षा का अन्त हो चुका हो यह भविष्यवाणी करे कि आज वर्षा होगी और फिर वर्षा हो जाए।

हे पाठको! अब हम नमूने के तौर पर अपने दावे के संबंध में वे समस्त निशान लिख चुके हैं^① जिन्हें लिखने के लिए हमने प्रण किया था और प्रतापी खुदा का सैकड़ों बार आभार कि उसने मात्र अपनी कृपा से मेरे समर्थन में ये निशान दिखाए। मुझ में शक्ति नहीं थी कि पृथ्वी या आकाश से एक कण भी अपनी साक्ष्य में कुछ प्रस्तुत कर सकता, परन्तु उसने जो पृथ्वी और आकाश का स्वामी है जिसकी आज्ञाकारिता का जुआ इस संसार का कण-कण उठा रहा है मेरे समर्थन में निशानों का एक दरिया बहा दिया और वह समर्थन प्रदर्शित किया जो मेरी कल्पना तक में न था। मैं इक्रार करता हूं कि मैं इस योग्य न था कि मेरा यह सम्मान किया जाए किन्तु खुदा ने मात्र अपनी असीम दया से मेरे लिए ये चमत्कार प्रकट किए। मुझे खेद है कि मैं उसके मार्ग में वह आज्ञाकारिता और संयम का हक अदा नहीं कर सका जो मेरी मनोकामना थी और उसके धर्म की वह सेवा नहीं कर सका जो मेरी

① 9 मार्च 1907 ई. लन्दन से तार द्वारा सूचना आई है जो सिविल अखबार में प्रकाशित हो गई कि डोई जिसने अमरीका में पैगम्बर होने का दावा किया था, जिसके बारे में मैंने भविष्यवाणी की थी कि वह अपने दावे में झूठा है खुदा उसे नहीं छोड़ेगा। वह लक्वा का शिकार होकर मर गया। इस पर खुदा का आभार बहुत बड़ा निशान प्रकट हुआ। इसी से।

अभिलाषा थी। मैं इस दर्द को साथ ले जाऊंगा कि जो कुछ मुझे करना चाहिए था मैं कर नहीं सका परन्तु उस कृपालु खुदा ने मेरे लिए और मेरे सत्यापन के लिए अपनी कुदरत के वे अद्भुत कार्य दिखाए जो अपने विशेष भेजे और चुने हुए लोगों के लिए दिखाता है। मैं भली-भांति जानता हूँ कि मैं इस मान-सम्मान के योग्य न था जो मेरे खुदा ने मेरे साथ किया। मुझे जब अपनी अपूर्ण स्थिति का विचार आता है तो मुझे इक्रार करना पड़ता है कि मैं कीड़ा हूँ न कि आदमी और मुर्दा हूँ न कि जीवित। किन्तु उसकी क्या अद्भुत कुदरत है कि मुझ जैसा तुच्छ व्यक्ति उसे पसन्द आ गया और प्रिय लोग जो अपने कर्मों से किसी श्रेणी तक पहुँचते हैं परन्तु मैं तो कुछ भी नहीं था, यह खुदा की दया दृष्टि की कैसी विचित्र शान है? कि मुझ जैसे व्यक्ति को उसने स्वीकार किया। मैं इस दया का धन्यवाद अदा नहीं कर सकता। संसार में हजारों लोग हैं जो खुदा से इल्हाम पाने का दावा करते हैं किन्तु केवल खुदा से वार्तालाप का दावा कुछ वस्तु नहीं है जब तक उस के साथ जो खुदा का समझा गया है। खुदा का कर्म अर्थात् चमत्कार न हो। जब से संसार की उत्पत्ति हुई है खुदा का कथन उसके कर्म से पहचाना गया है अन्यथा कौन ज्ञात कर सकता है कि वह एक कथन जो प्रस्तुत किया गया है वह खुदा का कथन है या शैतान का ? या हृदय का भ्रम है। खुदा का कथन और उसका कर्म परस्पर समवाय हैं अर्थात् जिस पर वास्तव में खुदा का कथन उतरता है उसके समर्थन में खुदा का कर्म भी प्रकट होता है अर्थात् उसकी भविष्यवाणियों के द्वारा प्रकृति के चमत्कार इतनी अधिक मात्रा में प्रकट होते हैं कि खुदा का चेहरा दिखाई दे जाता है ताकि सिद्ध हो जाए कि उसका इल्हाम खुदा का कथन है।

खेद इस युग में जगह-जगह ऐसे ऐसे लोग बहुत हो गए हैं जिन्हें मुल्हम कहलाने का शौक है और उसके बिना कि वे अपने आप को परखें और अपनी स्थिति को देखें। जो कुछ उनके मुँह पर जारी हो उसे खुदा की वाणी होने का विश्वास कर लेते हैं हालांकि यह बात सिद्ध हो चुकी बात है कि वह मुँह जिस पर खुदा की वाणी जारी हो सकती है उसी पर शैतान की वाणी भी जारी हो सकती

है और हृदय में आई हुई बात भी हो सकती है। अतः कोई वाणी जो मुँह पर जारी हो इस योग्य कदापि नहीं कि उसे ख़ुदा का कलाम कहा जाए जब तक दो साक्ष्यें उसका ख़ुदा की ओर से होना सिद्ध न करें।

प्रथम - यह साक्ष्य कि ऐसा व्यक्ति यह दावा करता है कि मुझे पर ख़ुदा की वाणी उतरती है उसकी ऐसी अवस्था होनी चाहिए जिस से ज्ञात हो कि वह इस योग्य है कि उस पर ख़ुदा तआला की वाणी (कलाम) उतर सकती है क्योंकि जो व्यक्ति जिससे निकट होता है उसकी आवाज़ सुनता है। अतः जो व्यक्ति शैतान से निकट है वह शैतान की आवाज़ सुनता है और जो ख़ुदा तआला से निकट है वह उसकी आवाज़ को। केवल इस स्थिति में किसी को ख़ुदा की ओर से इल्हाम पाने वाला कह सकते हैं जबकि वह वास्तव में ख़ुदा की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अपनी प्रसन्नता त्याग देता है और उसे पूर्ण रूप से प्रसन्न करने के लिए अपने लिए एक कटु मृत्यु स्वीकार कर लेता है और उसे प्रत्येक वस्तु पर प्राथमिकता देता है और ख़ुदा तआला उसके हृदय की ओर देखता है तो उसे समस्त संसार से पृथक् और अपनी प्रसन्नता में मुग्ध पाता है और वास्तव में उसके अस्तित्व का प्रत्येक कण ख़ुदा तआला के मार्ग में न्योछावर हो जाता है और यदि परीक्षा ली जाए तो उसे कोई वस्तु भी ख़ुदा तआला से नहीं रोक सकती। न दौलत, न धन, न स्त्री न पुत्र न सम्मान.... अपितु वह अपने अस्तित्व का भ्रम मिटा देता है और उस पर ख़ुदा का ऐसा प्रेम आधिपत्य जमा लेता है कि यदि उसके टुकड़े-टुकड़े किए जाएं या उसकी सन्तान को ज़िन्ह किया जाए या उसे अग्नि में डाला जाए और उस पर प्रत्येक दुःशीलता डाली जाए तब भी वह अपने ख़ुदा को नहीं छोड़ता और संकट के किसी भी आक्रमण से वह अपने ख़ुदा से पृथक् नहीं होता, सत्यनिष्ठ और वफादार होता है तथा समस्त संसार एवं संसार के बादशाहों को एक निर्जीव कीड़े के समान समझता है। यदि उसे यह भी सुनाया जाए कि तू नर्क में जाएगा तब भी वह अपने वास्तविक प्रियतम का दामन नहीं छोड़ता क्योंकि ख़ुदा का प्रेम उसका स्वर्ग हो जाता है और वह स्वयं नहीं समझ सकता कि मुझे ख़ुदा

से क्यों ऐसा संबंध है क्योंकि कोई असफलता तथा कोई परीक्षा इस संबंध को कम नहीं कर सकती। अतः इस स्थिति में कह सकते हैं कि वह खुदा से निकट है न कि शैतान से। ऐसे लोग खुदा के वली हैं और खुदा उन से प्रेम करता है और वे खुदा से। उन्हीं पर खुदा तआला का कलाम उतरता है और वे लोग

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ^①

में सम्मिलित हैं।

द्वितीय साक्ष्य - खुदा से इल्हाम पाने वाले के लिए यह आवश्यक है कि उस कलाम के साथ जो उस पर उतरता है खुदा तआला का कर्म भी हो क्योंकि जैसा कि जब सूर्य उदय होता है तो उसके साथ सूर्य की तीव्र किरणें भी होनी आवश्यक हैं। इसी प्रकार खुदा का कलाम कभी अकेला नहीं उतरता अपितु उसके साथ खुदा का कर्म भी होता है। अर्थात् नाना प्रकार के चमत्कार और विभिन्न प्रकार के समर्थन एवं बरकतें साथ होती हैं अन्यथा कमजोर मनुष्य क्योंकर समझ सकता है कि यह खुदा का कलाम है। अतः जिस व्यक्ति ने खुदा का कलाम उतरने का दावा किया और उसके साथ वे खुले-खुले चमत्कार और समर्थन सम्मिलित नहीं उसे खुदा से डरना चाहिए और ऐसा दावा त्याग देना चाहिए। फिर यह दावा केवल इतनी बात से सच्चा नहीं ठहर सकता कि वे एक दो निशान जो सच हो गए हैं प्रस्तुत करे अपितु खुदा के कम से कम दो-तीन सौ निशान चाहिए जो उसे सच्चा सिद्ध करें। फिर इसके अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि वह कलाम पवित्र कुर्आन के विपरीत न हो।

यह बात प्रत्येक के लिए विचारणीय है कि मसीह मौऊद के समय में किसी पथभ्रष्ट सम्प्रदाय का प्रभुत्व होगा तथा इसके अतिरिक्त मसीह मौऊद का क्या कार्य होगा। सही बुखारी जो पवित्र कुर्आन के पश्चात् सर्वाधिक प्रमाणित पुस्तक कहलाती है उसमें कहीं वर्णन नहीं कि मसीह मौऊद दज्जाल का वध करने के लिए प्रकट होगा अपितु उसमें मसीह मौऊद का केवल यह कार्य लिखा है कि वह

सलीब को तोड़ेगा और सूअर का वध करेगा। इससे स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता है कि मसीह मौऊद पादरियों के प्रभुत्व, आतंक और प्रताप के समय प्रकट होगा अर्थात् जब उनका छल, अक्षरांतरण और खुदाई ग्रन्थों की इबारतों में परिवर्तन चरमसीमा को पहुंच जाएगा और वे परिवर्तन किए गए ग्रन्थों को प्रकाशित करने में एड़ी-चोटी का जोर लगाएंगे तब मसीह मौऊद प्रकट होगा और उसका मूल उद्देश्य सलीब तोड़ना होगा परन्तु सही मुस्लिम में दज्जाल के वध का वर्णन है तथा लिखा है कि मसीह मौऊद दज्जाल का वध करेगा और इसी उद्देश्य के लिए प्रकट होगा परन्तु साथ ही यह भी लिखा है कि दज्जाल का गिर्जा से अर्थात् कलीसिया से निकलेगा। प्रत्यक्षतः इन दोनों पुस्तकों में अर्थात् बुखारी और मुस्लिम में कड़ा विरोधाभास है क्योंकि सही बुखारी तो मसीह मौऊद के प्रकट होने का मूल उद्देश्य सलीब का तोड़ना ठहराती है किन्तु सही मुस्लिम मूल उद्देश्य जिसके लिए वह अवतरित होगा दज्जाल का वध बताती है। कदाचित यह उत्तर दिया जाए कि मसीह मौऊद के प्रकटन के समय में पृथ्वी के एक भाग पर दज्जाल का प्रभुत्व होगा और पृथ्वी के दूसरे भाग में सलीब के पुजारियों का आधिपत्य होगा जैसे कि दो बादशाहतें पृथक-पृथक होती हैं किन्तु यह उत्तर सही नहीं है क्योंकि यह बात प्रमाणित है कि दज्जाल मक्का और मदीना के अतिरिक्त समस्त पृथ्वी पर फिर जाएगा अर्थात् प्रत्येक स्थान पर उसका अधिकार हो जाएगा जैसा कि सही हदीसें इसकी साक्षी हैं। अतः क्या नऊजुबिल्लाह सलीब का प्रभुत्व मक्का और मदीना में होगा क्योंकि बहरहाल मसीह मौऊद के समय में पृथ्वी के किसी भाग में सलीब का प्रभुत्व भी स्वीकार कर लेना चाहिए। अतः जबकि मक्का और मदीना के अतिरिक्त समस्त पृथ्वी पर और प्रत्येक स्थान पर दज्जाल का प्रभुत्व हो गया होगा तो सलीबी प्रभुत्व के लिए केवल मक्का और मदीना की धरती रह गई। ये तो वे हदीसें हैं जो दज्जाल के प्रभुत्व का वर्णन करती हैं। दूसरी ओर ऐसी हदीसें भी हैं जो यह बताती हैं कि मसीह मौऊद के समय में लगभग समस्त पृथ्वी पर ईसाई सरकार शक्ति और प्रभुत्व रखती होगी और वास्तव में हदीस 'यकसिरुस्सलीब'

(अर्थात् वह सूली को तोड़ेगा) में भी इसी ओर संकेत है^① और आयत:

مِّنْ كُلِّ حَذَبٍ يُّسْلَوْنَ^②

भी यही उच्च स्वर में बता रही है। अतः इस स्थिति में यह व्याख्या या स्पष्टीकरण विश्वसनीय न रहा कि इस युग में पृथ्वी के कुछ भाग पर ईसाइयों का प्रभुत्व होगा और कुछ भाग में दज्जाल का परन्तु कदाचित् उत्तर में यह कहा जाएगा कि प्रथम ईसाइयों का प्रभुत्व होगा फिर दज्जाल आकर सलीब को तोड़ेगा, फिर मसीह आकर दज्जाल का वध करेगा। किन्तु यह ऐसा कथन है कि आज तक मुसलमानों के सम्प्रदायों में से किसी सम्प्रदाय की यह आस्था नहीं है अपितु सही बुखारी में तो यही लिखा है कि सलीब को मसीह मौऊद तोड़ेगा न कि दज्जाल।

इस विवाद के निर्णय के लिए जब हम हदीसों को देखते हैं तो वही सही मुस्लिम जो दज्जाल की चर्चा करती है, इस बात की गवाही देती है कि कथित दज्जाल गिर्जे में से निकलेगा अर्थात् ईसाइयों में पैदा होगा। अतः इस स्थिति में सही मुस्लिम पादरियों को दज्जाल ठहराती है और इसके समर्थन में घटनाएं भी साक्ष्य दे रही हैं कि वह अन्तिम उपद्रव जो प्रकट हुआ जिस से कई लाख मुसलमान मुर्तद हो गए वह केवल ईसाइयत का उपद्रव है जो हमारी आंखों के सामने है। अतः इस से प्रकट होता है कि यह मतभेद केवल शाब्दिक है अर्थात् सही बुखारी में जिस उपद्रव का नाम सलीबी उपद्रव रखा है और मसीह मौऊद को सलीब तोड़ने वाला ठहराया है। सही मुस्लिम में इसी उपद्रव का नाम दज्जाल का उपद्रव रखा है और सलीब तोड़ने के दज्जाल का वध करने के तौर पर ठहराया है।

जब हम अधिक व्याख्या के लिए पवित्र कुर्आन की ओर आते हैं जो प्रत्येक विवाद का निर्णय करने वाला (हकम) है तो हमें ज्ञात होता है कि उसमें दज्जाल का नाम तक नहीं, हां ईसाइयत के उपद्रव को वह बहुत बड़ा वर्णन करता है जो

① हदीसों से भी प्रकट होता है कि मसीह मौऊद के समय ईसाई क्रौम बड़ी अधिकता के साथ संसार में फैल जाएगी। इसी से।

② अल अंबिया - 97

इस्लाम के समस्त सिद्धान्तों का शत्रु है और कहता है निकट है कि उस से आकाश फट जाएं और पृथ्वी टुकड़े-टुकड़े हो जाए तथा उसी वर्ग को खुदा के कलाम का अक्षरान्तरण एवं परिवर्तन करने वाला ठहराता है और जिस कार्य में दजल (धोखा) के भाव का उल्लेख है वह कार्य इसी वर्ग की ओर सम्बद्ध करता है तथा सूरह फ़ातिहा में मुसलमानों को यह शिक्षा देता है कि वे ईसाइयत के उपद्रव से खुदा की शरण मांगें जैसा कि وَلَا الْمَسَالِينَ के अर्थ समस्त व्याख्याकारों ने यही किए हैं। अतः पवित्र कुर्आन के इस फैसले से स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि हदीसों में जिस उपद्रव से डराया गया है वह सलीबी उपद्रव है। इसमें क्या सन्देह है कि जब थोड़े से दजल (धोखे) की कार्यवाही से मनुष्य दज्जाल कहला सकता है तो जिस सम्प्रदाय ने सम्पूर्ण शरीअत और शिक्षा को परिवर्तित कर दिया है क्या कारण कि उन्हें दज्जाल का नाम न दिया जाए ? और जबकि खुदा तआला ने ईसाइयों के दजल की स्वयं साक्ष्य दी है तो क्या कारण कि उन्हें दज्जाल का नाम न दिया जाए? हां आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में वे महा दज्जाल नहीं कहला सकते थे क्योंकि अभी बेईमानी तथा किसी के माल को हड़पना चरम सीमा को नहीं पहुंचा था केवल दज्जाल होने की नींव पड़ी थी किन्तु इसके पश्चात् हमारे युग में जब कि छापने की मशीनें भी निकल आईं तो पादरियों ने अक्षरान्तरण और परिवर्तन को चरम सीमा तक पहुंचा दिया और करोड़ों रुपया व्यय करके उन अक्षरान्तरित पुस्तकों को प्रकाशित किया और लोगों को मुर्तद करने में कोई कमी शेष न रखी। तब खुदा का लिखा पूरा हुआ जैसा कि घटनाएं प्रकट कर रही हैं तथा महा दज्जाल के नाम के पात्र हो गए तथा जब तक सच्चाई का विरोध तथा अक्षरान्तरण एवं परिवर्तन करने में उन से बढ़कर कोई प्रकट न हो तब तक प्रत्येक को स्वीकार करना पड़ेगा कि यह सम्प्रदाय दज्जाल-ए-अकबर है जिस के प्रकट होने के बारे में भविष्यवाणी थी। यहूदी भी धार्मिक ग्रन्थों में परिवर्तन करते थे परन्तु वे तो ऐसे अपमानों का निशाना हुए कि जैसे मर गए। केवल इसी सम्प्रदाय ने उन्नति की और अपनी समस्त शक्तियों को दजल और पुस्तकों के अक्षरान्तरण में

व्यय कर दिया और न केवल इतना वरन् यह चाहा कि समस्त विश्व को स्वयं जैसा बना लें तथा सांसारिक शक्ति और वैभव के कारण उन्हें प्रत्येक सामान भी मिल गया, उन्होंने दजल और अक्षरान्तरण में वह कौशल दिखाया जिसका उदाहरण संसार के प्रारंभ से आज तक प्राप्त नहीं हो सकता और प्रयास किया कि लोग भागीदार रहित एक खुदा से विमुख हो कर इब्ने मरयम को खुदा मान लें तथा हमारे युग में उनका यह कार्य अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया तथा उन्होंने खुदा तआला के ग्रन्थों में इतने परिवर्तन किए कि जैसे वे स्वयं ही निर्मित हैं। इसलिए ऐसे लोगों पर दज्जाल का शब्द बोला गया अर्थात् खुदा के ग्रन्थों में पूर्ण स्तर का अक्षरान्तरण करने वाले तथा असत्य को सत्य करके दिखाने वाले। हदीसों में प्रायः कथित दज्जाल के बारे में खुरूज का शब्द है तथा मसीह मौऊद के बारे में नुज़ूल का शब्द है और ये दोनों शब्द आमने-सामने हैं जिसका तात्पर्य यह है कि मसीह मौऊद खुदा तआला की ओर से आएगा और खुदा उसके साथ होगा परन्तु दज्जाल अपने छल-प्रपंच और सांसारिक सामानों के साथ उन्नति करेगा। हां जैसा कि पवित्र कुर्आन में ईसाइयत के उपद्रव की चर्चा है वैसा ही याजूज और माजूज की चर्चा है तथा इस आयत में कि -

هُم مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ^①

उनके प्रभुत्व की ओर संकेत है कि समस्त संसार पर उनका प्रभुत्व हो जाएगा अब यदि दज्जाल और ईसाइयत तथा याजूज और माजूज तीन पृथक क्रौमों में समझी जाएं जो मसीह के समय प्रकट होंगी तो और भी विरोधाभास बढ़ जाता है परन्तु बाइबल से निश्चित तौर पर यह बात समझ आती है कि याजूज और माजूज का उपद्रव भी वास्तव में ईसाइयत का उपद्रव है क्योंकि बाइबल ने उसे याजूज के नाम से पुकारा है। अतः वास्तव में एक ही क्रौम को विभिन्न परिस्थितियों की दृष्टि से तीन नामों से बुलाया गया है।

यह कहना कि पवित्र कुर्आन में मसीह मौऊद की कहीं चर्चा नहीं यह सर्वथा

① अल अंबिया - 97

गलती है क्योंकि जिस स्थिति में अल्लाह तआला ने पवित्र कुर्आन में बड़ा फ़िल्ता (उपद्रव) ईसा को उपास्य बनाने का फ़िल्ता ठहराया है और उसके लिए बईद (डरावे) के तौर पर यह भविष्यवाणी की है कि निकट है कि उससे पृथ्वी और आकाश फट जाएं तथा उसी युग के बारे में प्लेग तथा भूकम्पों इत्यादि घटनाओं की भविष्यवाणी भी की है और स्पष्ट तौर पर कह दिया है कि अन्तिम युग में जबकि आकाश और पृथ्वी में भिन्न-भिन्न प्रकार की भयंकर घटनाएं प्रकट होंगी वे ईसा की उपासना के दण्ड स्वरूप प्रकट होंगी, फिर दूसरी ओर यह भी कहा -

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا^①

अतः इससे मसीह मौऊद की भविष्यवाणी स्पष्ट रूप से कुर्आन से साबित होती है क्योंकि जो व्यक्ति ध्यानपूर्वक और ईमानदारी से कुर्आन शरीफ़ पढ़ेगा उस उस पर स्पष्ट होगा कि कलियुग के जीवन प्रकोपों के समय जब विश्व के अधिकतर भू-भाग उथल-पुथल कर दिए जाएंगे और महामारी पड़ेगी और हर तरफ़ से मौत का बाज़ार गर्म होगा उस समय एक रसूल का आना ज़रूरी हो जाएगा कि खुदा तआला ने फ़रमाया है -

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا

अर्थात् हम किसी क्रौम पर अज़ाब नहीं भेजते जब तक अज़ाब से पूर्व रसूल न भेज दें। फिर जिस स्थिति में छोटे-छोटे अज़ाबों के समय में रसूल आए हैं जैसा कि युग की पिछली घटनाओं से सिद्ध है तो फिर क्योंकर संभव है कि इस महा अज़ाब के समय में जो अन्तिम युग का अज़ाब है और समस्त संसार पर व्याप्त होने वाला है जिसके बारे में समस्त नबियों ने भविष्यवाणी की थी, खुदा की ओर से रसूल प्रकट न हो, इस से तो स्पष्ट तौर पर खुदा तआला की वाणी का झूठा होना अनिवार्य आता है। अतः वही रसूल मसीह मौऊद है क्योंकि जबकि उन अज़ाबों का मूल कारण ईसाइयत का उपद्रव है जिस से कोई इन्कार नहीं कर सकता तो अवश्य था कि इस उपद्रव के अनुकूल तथा उसके निवारण के उद्देश्य से रसूल प्रकट हो। अतः उसी रसूल को दूसरे शब्दों में मसीह मौऊद कहते हैं।

① बनी इस्राईल - 16

अतः इस से सिद्ध हुआ कि पवित्र कुर्आन में मसीह मौऊद की चर्चा है और यही सिद्ध करना था। प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि यदि पवित्र कुर्आन की दृष्टि से ईसाइयत के उपद्रव के समय अज़ाब का आना आवश्यक है तो मसीह मौऊद का आना भी आवश्यक है तथा स्पष्ट है कि यह अज़ाब ईसाइयत के उपद्रव के चरमसीमा पर पहुंचने के समय आना पवित्र कुर्आन से सिद्ध है। इसलिए मसीह मौऊद का आना भी पवित्र कुर्आन से सिद्ध है। इसी प्रकार सामान्यतः पवित्र कुर्आन से सिद्ध है कि खुदा तआला का कथन है कि जब हम किसी क्रौम पर अज़ाब लाना चाहते हैं तो उनके हृदयों में पाप एवं बुराइयों की इच्छा पैदा कर देते हैं, तब वे काम-इच्छाओं की पूर्ति तथा अश्लीलता के कार्यों में सीमा से बढ़ जाते हैं तब उस समय उन पर अज़ाब आता है। स्पष्ट है कि ये बातें भी यूरोप में चरमसीमा तक पहुंच गई हैं जो स्वाभाविक तौर पर अज़ाब की मांग करती हैं और अज़ाब रसूल के होने की मांग करता है और वही रसूल मसीह मौऊद है। अतः आश्चर्य है उस क्रौम पर जो कहती है कि मसीह मौऊद की पवित्र कुर्आन में चर्चा नहीं। इसके अतिरिक्त पवित्र कुर्आन की यह आयत भी -

كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ①

यही चाहती है कि इस उम्मत के लिए चौदहवीं सदी में ईसा का समरूप प्रकट हो, जैसा कि हज़रत ईसा हज़रत मूसा से चौदहवीं सदी में प्रकट हुए थे ताकि दोनों मसीहों (समरूपों) के प्रथम और अन्तिम में समरूपता हो। इस प्रकार पवित्र कुर्आन में यह भी भविष्यवाणी है कि -

وَإِنْ مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَمَةِ
أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا ②

अर्थात् ऐसी कोई बस्ती नहीं जिसे हम प्रलय से पूर्व तबाह न करेंगे या उस पर कठोर अज़ाब नहीं उतारेंगे अर्थात् अन्तिम युग में एक कठोर अज़ाब उतरेगा। दूसरी

① अन्नूर - 56

② बनी इस्राईल - 59

ओर यह कहा -

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا^①

अतः इस से भी अन्तिम युग में एक रसूल का आना प्रकट होता है और वही मसीह मौऊद है।

यही भविष्यवाणी सूरह फ़ातिहा में भी मौजूद है क्योंकि सूरह फ़ातिहा में खुदा तआला ने ईसाइयों का नाम الصّालِّين रखा है। इसमें यह संकेत है कि यद्यपि संसार के सैकड़ों सम्प्रदायों में पथभ्रष्टता मौजूद है परन्तु ईसाइयों की पथभ्रष्टता चरम सीमा तक पहुंच जाएगी जैसे संसार में पथभ्रष्ट सम्प्रदाय वही है और जब किसी क्रौम की पथ-भ्रष्टता चरमोत्कर्ष तक पहुंचती है और वह अपने पापों से नहीं रुकती तो खुदा का नियम इसी प्रकार से जारी है कि उन पर अज़ाब उतरता है। अतः इससे भी मसीह मौऊद का आना आवश्यक ठहरता है अर्थात् आयत -

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا

के अनुसार।

यह विचित्र बात है कि जैसा कि हदीसों में मसीह मौऊद के बारे में भविष्यवाणी है ऐसी ही एक फ़ारसी व्यक्ति के बारे में भविष्यवाणी है कि वह अन्तिम युग में कि वह नष्ट हो चुके ईमान को पुनः स्थापित करेगा जैसा कि लिखा है -

لَوْ كَانَ الْإِيمَانُ مُعَلَّقًا بِالشُّرَيَّا لَنَالَهُ رَجُلٌ مِّنْ فَارِسَ

अर्थात् यदि ईमान सुरैया पर चला जाता तब भी एक फ़ारसी व्यक्ति उसे वापस ले आता। अतः स्पष्ट है कि फ़ारसी व्यक्ति को इस हदीस में इतनी श्रेष्ठता दी गई है और उसका कार्य इतना विशेष दिखाया गया है कि यह कहना पड़ता है कि वह फ़ारसी व्यक्ति मसीह मौऊद से अधिक श्रेष्ठ है क्योंकि विरोधियों के कथनानुसार मसीह मौऊद केवल दज्जाल का वध करेगा परन्तु फ़ारसी व्यक्ति ईमान को सुरैया से वापस लाएगा जैसा कि एक अन्य हदीस में भी यह वर्णन है कि अन्तिम युग में पवित्र कुर्आन आकाश पर उठाया जाएगा। लोग कुर्आन पढ़ेंगे परन्तु वह उन के

① बनी इस्राईल - 16

कंठ से नीचे नहीं उतरेगा। अतः वही युग फ़ारसी व्यक्ति का तथा वही युग मसीह मौऊद का है किन्तु जिस स्थिति में फ़ारसी व्यक्ति यह विशेष सेवा करेगा, ईमान को आकाश से वापस लाएगा तो फिर उसकी तुलना में मसीह मौऊद की कोई धार्मिक सेवा सिद्ध नहीं हो सकती क्योंकि दज्जाल का वध करना केवल उपद्रव का निवारण है जो मोक्ष का आधार नहीं परन्तु आकाश से ईमान को वापस लाना और लोगों को पूर्ण मोमिन बनाना यह भलाई पहुंचाना है जो मोक्ष का आधार है और भलाई पहुंचाने से उपद्रव के निराकरण की कुछ तुलना नहीं। इसके अतिरिक्त स्पष्ट है कि जो व्यक्ति भलाई पहुंचाएगा वह सुरैया से ईमान को वापस लाएगा उसके बारे में कोई बुद्धिमान सोच नहीं सकता कि वह उपद्रव का निवारण करने पर समर्थ नहीं होगा। अतः यह सोच बिल्कुल अनुचित है कि अन्तिम युग में कि भलाई का प्रसार एक फ़ारसी व्यक्ति करेगा किन्तु उपद्रव का निवारण मसीह मौऊद करेगा, जिसको आकाश पर चढ़ने की शक्ति है क्या वह पृथ्वी के उपद्रव का निवारण नहीं कर सकता?

अतः इस युग के मुसलमानों की यह गलती खेदनीय है कि मसीह मौऊद तथा फ़ारसी व्यक्ति को दो भिन्न-भिन्न व्यक्ति समझते हैं और आज से छब्बीस वर्ष पूर्व ख़ुदा तआला ने बराहीन अहमदिया में इस रहस्य को खोल दिया है, क्योंकि एक ओर तो मुझे मसीह मौऊद ठहराया है और मेरा नाम ईसा रखा है। जैसा कि बराहीन अहमदिया में कहा है -

يَا عِيسَى إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا

और दूसरी ओर मुझे फ़ारसी व्यक्ति ठहरा कर बार-बार इसी नाम से पुकारा है जैसा कि कहा है -

إِنَّ الَّذِينَ صَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ رَدُّ عَلَيْهِمْ رَجُلٌ مِّنْ فَارِسٍ شَكَرَ اللَّهَ سَخِيهٖ

अर्थात् ईसाई तथा उनके अन्य भाई जो लोगों को इस्लाम धर्म से रोकते हैं उस फ़ारसी व्यक्ति अर्थात् इस ख़ाकसार ने उनका खण्डन लिखा है ख़ुदा उसकी इस सेवा का आभारी है तथा स्पष्ट है कि यह कार्य अर्थात् ईसाइयों का मुकाबला करना

यह मसीह मौऊद की मूल सेवा है। इसलिए यदि फ़ारसी व्यक्ति मसीह मौऊद नहीं तो क्यों मसीह मौऊद के पद का कार्य फ़ारसी व्यक्ति के सुपुर्द किया गया। इस से सिद्ध है कि फ़ारसी व्यक्ति और मसीह मौऊद एक ही व्यक्ति के नाम हैं जैसा कि पवित्र कुर्आन में इसी की ओर संकेत किया है और वह यह है -

وَالْآخِرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ ①

अर्थात् आंज़रत के सहाबा में से एक और सम्प्रदाय है जो अभी प्रकट नहीं हुआ। यह तो स्पष्ट है कि अस्हाब (सहाबा) वही कहलाते हैं जो नबी के समय में हों और ईमान की अवस्था में उसकी संगत से सम्मानित हुए हों और शिक्षा एवं प्रशिक्षण पाएं। अतः इस से यह सिद्ध होता है कि आने वाली क्रौम में एक नबी होगा जो आंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िल्ल (प्रतिरूप) होगा। इसलिए उसके अस्हाब आंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अस्हाब कहलाएंगे और जिस प्रकार सहाबा रज़ि. ने अपने तौर पर ख़ुदा के मार्ग में धार्मिक सेवाएं की थीं वे अपने तौर पर करेंगे। बहरहाल यह आयत अन्तिम युग में एक नबी के प्रकट होने के बारे में एक भविष्यवाणी है अन्यथा कोई कारण नहीं कि ऐसे लोगों का नाम रसूलुल्लाह के अस्हाब रखा जाए जो आंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद पैदा होने वाले थे जिन्होंने आंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नहीं देखा। उपरोक्त आयत में यह तो नहीं कहा कि وَالْآخِرِينَ مِنْ وَالْأُمَّةِ अपितु यह कहा और प्रत्येक जानता है कि मिन्हुम का सर्वनाम अस्हाब रज़ि की ओर जाता है। इसलिए मिन्हुम में वही सम्प्रदाय सम्मिलित हो सकता है जिसमें ऐसा रसूल मौजूद हो जो आंज़रत का ज़िल्ल (प्रतिरूप) है। ख़ुदा तआला ने आज से छब्बीस वर्ष पूर्व मेरा नाम बराहीन अहमदिया में मुहम्मद और अहमद रखा है तथा मुझे आंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बुरूज़ (ज़िल्ल) ठहराया है। इसी कारण बराहीन अहमदिया में लोगों को सम्बोधित करके कह दिया है -

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ

कल बरके में मुहम्मद वल्लि अल्ले अलैहि वसल्लम व तबारक मन एल्लम व तल्लम तथा कहा है

- और यदि कोई यह कहे कि किस प्रकार ज्ञात हुआ कि हदीस

لَوْ كَانَ الْإِيمَانُ مُعَلَّقًا بِالشُّرَيَّا لَنَالَهُ رَجُلٌ مِنْ فَارِسٍ

तथा कहा है इस खाकसार के पक्ष में है तथा क्यों वैध नहीं कि मुहम्मद की उम्मत में से किसी और के पक्ष में हो। तो इसका उत्तर यह है कि बराहीन अहमदिया में बार-बार इस हदीस का चरितार्थ खुदा की वह्यी ने मुझे ठहराया है और स्पष्ट रूप से वर्णन किया है कि वह मेरे पक्ष में है और मैं खुदा तआला की कसम खाकर कहता हूं कि यह खुदा तआला की वाणी है जो मुझ पर उतरी -

وَمَنْ يَنْكُرْهُ فَلْيَبَارِزْ لِلْمُبَاهَلَةِ وَلَعَنَهُ اللَّهُ عَلَى

مَنْ كَذَّبَ الْحَقُّ أَوْ افْتَرَى عَلَى حُضْرَةِ الْعِزَّةِ -

और यह दावा उम्मत-ए-मुहम्मदिया में से आज तक किसी और ने कदापि नहीं किया कि खुदा तआला ने मेरा यह नाम रखा है तथा खुदा तआला की वह्यी से केवल मैं इस नाम का पात्र हूं और यह कहना कि नबी होने का दावा किया है कितनी मूर्खता और अज्ञानता है और कितना सत्य से बाहर जाना है। हे नादानो ! मेरा अभिप्राय नुबुव्वत से यह नहीं है कि मैं नऊजुबिल्लाह आंहज्जरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुकाबले पर खड़ा होकर नबी होने का दावा करता हूं या कोई नवीन शरीअत लाया हूं। मेरा अभिप्राय नुबुव्वत से केवल खुदा से अत्यधिक वार्तालाप एवं संबोधन का पाना है जो आंहज्जरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण से प्राप्त है। जबकि वार्तालाप एवं संबोधन को आप भी मानते हैं। अतः यह केवल शाब्दिक विवाद हुआ अर्थात् आप लोग जिस बात का नाम वार्तालाप एवं सम्बोधन रखते हैं मैं उसी की अधिकता का नाम खुदा के आदेशानुसार नुबुव्वत रखता हूं।

ولكل من يصطلح

मैं उस खुदा की कसम खाता हूं कि जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं कि उसी ने

मुझे भेजा है और उसी ने मेरा नाम नबी रखा है और उसी ने मुझे मसीह मौऊद के नाम से पुकारा है और उस ने मेरी सच्चाई के लिए बड़े-बड़े निशान प्रकट किए जो तीन लाख तक पहुंचते हैं जिनमें से नमूने के तौर पर कुछ इस पुस्तक में लिखे गए हैं। यदि उसके चमत्कारिक कार्य और स्पष्ट निशान जो हज़ारों तक पहुंच गए हैं मेरी सच्चाई पर साक्ष्य न देते तो मैं उसके वार्तालाप को किसी पर प्रकट न करता और न निश्चित रूप से कह सकता कि यह उसका कलाम है। उसने अपने कथनों के समर्थन में वे कार्य दिखाए जिन्होंने उसका चेहरा दिखाने के लिए एक स्वच्छ और पावन दर्पण का कार्य किया।

महान विजय

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अमरीका का झूठा नबी डाक्टर जॉन इलैक्ज़न्डर डोई मेरी भविष्यवाणी के अनुसार मृत्यु का शिकार हुआ

196.^① एक सौ छियानवे वां निशान - स्पष्ट हो कि यह व्यक्ति जिसका नाम शीर्षक में लिखा गया है इस्लाम का अत्यन्त कट्टर शत्रु था तथा इसके अतिरिक्त उसने नबी होने का झूठा दावा किया तथा समस्त नबियों के सरदार, समस्त सच्चों में सर्वाधिक सत्यनिष्ठ, रसूलों में सर्वश्रेष्ठ, पवित्रात्माओं के इमाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झूठा और ख़ुदा पर झूठ बांधने वाला समझता था तथा अपनी अन्तः मलिनता से गन्दी गालियां तथा अश्लील शब्दों से आप (स) को याद करता था। अतः इस्लाम धर्म से ईर्ष्या के कारण उसके अन्दर बहुत ही गन्दी आदतें मौजूद थीं और जिस प्रकार कि सूअरों के आगे मोतियों का कुछ महत्त्व नहीं इसी प्रकार वह इस्लाम के एकेश्वरवाद को बहुत ही तिरस्कार से देखता था और उसको समूल मिटाना चाहता था तथा हज़रत ईसा को ख़ुदा जानता था और तीन ख़ुदाओं की आस्था को समस्त संसार में प्रसारित करने के लिए इतना जोश रखता था कि मैंने इसके बावजूद कि पादरियों की सैकड़ों पुस्तकें देखीं किन्तु ऐसा जोश किसी में न पाया। अतः उसके अखबार 'लीवज़ आफ़ हीलिंग' दिनांक 19 दिसम्बर 1903 ई. और 14 फरवरी 1907 ई. में ये वाक्य हैं -

① इस परिशिष्ट में भूल से निशानों की संख्या एक से आरंभ की गई थी जो 189 से आरंभ होनी अनिवार्य थी। अतः इस स्थान तक पिछले आठ निशान मिला कर (जिसमें नं. 5 भूल से दो बार लिखा गया है) निशानों की संख्या 196 तक पहुंची इसलिए यहां निशान की संख्या 196 लिखी गई है। इसी से।

"मैं खुदा से दुआ करता हूँ कि वह दिन शीघ्र आए कि इस्लाम दुनिया से मिट जाए। हे खुदा तू ऐसा ही कर। हे खुदा इस्लाम का विनाश कर दे"

और फिर अपने पर्चा अखबार 12 दिसम्बर 1903 ई० में स्वयं को सच्चा रसूल और सच्चा व्यक्ति ठहरा कर कहता है कि "यदि मैं सच्चा नबी नहीं हूँ तो फिर समस्त पृथ्वी पर कोई ऐसा नबी नहीं जो खुदा का नबी हो।" इसके अतिरिक्त वह अत्यंत अधर्मी था और कहता था कि मुझ को इल्हाम हो चुका है कि पच्चीस वर्ष तक यसू मसीह आसमान से उतर आएगा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को वास्तव में खुदा समझता था और इसके साथ मेरे दिल को दुखाने वाली एक यह बात थी जैसा कि मैं लिख चुका हूँ कि वह हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का घोर शत्रु था और मैं इसका पर्चा अखबार लीव्ज़ आफ हीलिंग लेता था और उसके अपशब्दों पर हमेशा मुझे सूचना मिलती थी। जब उसकी उद्दंडता चरम सीमा तक पहुँच गई तो मैंने अंग्रेज़ी में एक पत्र उसकी ओर भेजा और मुबाहला के लिए उस से निवेदन किया ताकि खुदा तआला हम दोनों में से जो झूठा है उसको सच्चे के जीवन में नष्ट करे। यह निवेदन दो बार अर्थात् 1902 ई० और फिर 1903 ई० में उसकी ओर भेजा था और अमरीका के कुछ विख्यात अखबारों में भी प्रकाशित किया गया था जिनके नाम हाशिए में दर्ज हैं★ ।

★ हाशिया :-

संख्या	नाम अखबार दिनांक सहित	लेख का सारांश
1	शिकागो इंटर प्रेटर अखबार 28 जून 1903 ई०	विषय "क्या डोई इस मुक़ाबले में निकलेगा।" दोनों तस्वीरों साथ साथ दे कर लिखता है कि मिर्ज़ा साहिब कहते हैं डोई झूठा है और मैं दुआ करने वाला हूँ कि वह उसका मेरी जीवन में विनाश कर दे और फिर कहते हैं कि झूठे और सच्चे में निर्णय का यह ढंग है कि खुदा से दुआ की जाए कि दोनों में से जो झूठा है वह सच्चे के जीवन में हलाक हो जाए।

और इस मुबाहले में मैंने झूठे पर बद्दुआ की थी★ और खुदा तआला से यह चाहा था कि खुदा तआला झूठे का झूठ अपने फैसले से खोल दे। और मेरे मुबाहले का यह लेख जैसा कि अभी लिख चुका हूँ अमरीका के कुछ दैनिक और

शेष हाशिया :

2	टेलीग्राफ 5 जुलाई 1903 ई०	मिर्जा गुलाम अहमद साहिब पंजाब से डोई को चेलेंग भेजते हैं कि हे वह व्यक्ति जो नबुव्वत का दावा करने वाला है आ और मेरे साथ मुबाहला कर। हमारा मुकाबला दुआ से होगा और हम दोनों खुदा से दुआ करेंगे कि हम में से जो व्यक्ति झूठा है वह पहले हलाक हो।
3	अरगूनाट सेंट फ्रांसिस्को 1 दिसंबर 1902 ई०	विषय अंग्रेजी और अरबी (अर्थात ईसाइयत और इस्लाम) का मुकाबला दुआ। मिर्जा साहिब के लेख का सारांश जो डोई को लिखा है वह यह है कि तुम एक जमाअत के लीडर हो और मेरे भी बहुत से भक्त हैं। अतः इस बात का फैसला कि दोनों में से खुदा की ओर से कौन है, हम में इस प्रकार हो सकता है कि हम में से प्रत्येक अपने खुदा से दुआ करे और जिस की दुआ स्वीकार हो वह सच्चे खुदा की ओर से समझा जाए। दुआ यह होगी कि हम में से जो झूठा है खुदा उसे पहले हलाक करे। निस्संदेह यह एक बुद्धि संगत और निष्पक्ष सुझाव है।

★ 23 अगस्त 1903 ई. को मेरे द्वारा डोई के खिलाफ अंग्रेजी में यह विज्ञापन प्रकाशित हुआ था जिसमें यह कहा गया था कि मैं लगभग 90 वर्ष का हूँ और डोई जैसा कि उसने वर्णन किया है 50 वर्ष का युवा है परन्तु मैंने अपनी बड़ी आयु की कुछ परवाह नहीं की क्योंकि इस मुबाहले का निर्णय आयु द्वारा नहीं होगा अपितु खुदा जो शासकों का शासक है वह इसका निर्णय करेगा। और यदि डोई मुकाबले से भाग गया तब भी निश्चित समझो कि इसके सेहून (शहर) पर शीघ्र विपत्ति आने वाली है। अब मैं इस लेख को इस प्रार्थना पर समाप्त करता हूँ कि हे सर्वशक्तिमान और सम्पूर्ण खुदा जो सदैव नबियों (अवतारों) पर प्रकट होता रहा है और होता रहेगा इसका निर्णय जल्द कर और डोई का झूठ लोगों पर प्रकट कर दे। और मुझे विश्वास है कि जो कुछ तूने अपनी वह्यी से मुझे वचन दिया है वह वचन अवश्य पूर्ण होगा। हे क्रादिर खुदा मेरी प्रार्थना सुन ले। समस्त शक्तियां तेरे पास हैं।

प्रसिद्ध समाचार पत्रों में स्पष्टता से प्रकाशित हो गया था। और यह समाचार पत्र अमरीका के ईसाइयों की थीं जिन का मुझ से कोई संबंध न था और समाचार पत्रों में प्रकाशित करवाने की आवश्यकता मुझे इसलिए हुई कि डाक्टर डोई झूठे नबी ने मुझे सीधे उत्तर न दिया था अंततः मैंने वह मुबाहले का लेख अमरीका के उन प्रसिद्ध समाचार पत्रों में जो दैनिक (रोजाना) हैं और अधिकता से दुनिया में जाते

शेष हाशिया :

4	लिट्रेरी डाइजेस्ट न्यूयार्क 20 जून 1903 ई०	मेरी तस्वीर दे कर मुबाहला का विस्तृत वर्णन करता है अर्थात यह दोनों पक्ष अर्थात डोई और हम दुआ करें कि झूठा सच्चे के जीवन में और उसके सामने हलाक हो।
5	न्यूयार्क मेल एन्ड एक्सप्रेस 28 जून 1903 ई०	शीर्षक मुबाहले या दुआ का मुकाबला इस शीर्षक के नीचे इसी मुबाहले का वर्णन करता है।
6	हेरल्ड रोचेस्टर 25 जून 1903 ई०	डोई को मुबाहले के लिए बुलाया गया है और फिर मुबाहले का वर्णन करता है।
7	रिकार्ड बोस्टन 27 जून 1903 ई०	मुबाहले का वर्णन है।
8	एडवरटाइज़ बोस्टन 25 जून 1903 ई०	उपरोक्त अनुसार
9	पायलाट बोस्टन 27 जून 1903 ई०	" " "
10	पाथ फाइंड वाशिंगटन 27 जून 1903 ई०	" " "
11	दोस्टर सपाई 28 जून 1903 ई०	फिर 28 जून के पन्ने में दोनों तस्वीरें दे कर " " विस्तृत वर्णन किया है।
12	दोस्टर सपाई 28 जून 1903 ई०	" " "

हैं प्रकाशित करवा दिया। यह खुदा की कृपा है कि बावजूद यह कि अमरीका के समाचार पत्रों के संपादक ईसाई थी और इस्लाम के विरुद्ध थे फिर भी उन्होंने अत्यंत जोरदार तरीके से मेरे मुबाहले के विज्ञापन को ऐसी अधिकता से प्रकाशित कर दिया कि अमरीका और यूरोप में इसकी धूम मच गई और हिंदुस्तान तक इस मुबाहले की खबर हो गई। और मेरे मुबाहले के विज्ञापन का सारांश यह था कि

शेष हाशिया :

13	डेमोक्रेट करोनिकल रोचेस्टर 25 जून 1903 ई०	मुबाहले के बाद दोनों तस्वीरें भी दीं हैं और मेरी तस्वीर के नीचे यह शब्द हैं- मिर्जा गुलाम अहमद
14	शिकागो का एक अखबार दिनांक और नाम फट गया।	हिंदुस्तान का मसीह जिसने डोई को दुआ के मुकाबले के लिए चेलेंज दिया है।
15	बर्लिंगटन फ्री प्रेस 27 जून 1903 ई०	मुबाहले का वर्णन है।
16	शिकागो इंद्राविशन 28 जून 1903 ई०	" " " "
17	अलबनी प्रेस 25 जून 1903 ई०	मुबाहले का वर्णन है।
18	जेक्सल टाइमज़ 28 जून 1903 ई०	" " " "
19	बाल्टी मूर अमरीकन 25 जून 1903 ई०	" " " "
20	बफ्लू टाइमज़ 25 जून 1903 ई०	" " " "
21	न्यूयार्क मेल 25 जून 1903 ई०	" " " "
22	बोस्टन रिकार्ड 27 जून 1903 ई०	" " " "

इस्लाम सच्चा है और ईसाई धर्म की आस्था झूठी है और मैं खुदा तआला की ओर से वही मसीह हूँ जो अंतिम युग में आने वाला था और नबियों के ग्रन्थों में इसका वादा था और इसी प्रकार मैंने इस में लिखा था कि डाक्टर डोई अपने रसूल होने के दावे और तीन खुदाओं की आस्था में झूठा है यदि वह मुझ से मुबाहला करे तो मेरे जीवन में ही बहुत निराशा और दुःख के साथ मरेगा। और यदि मुबाहला भी न करे तब भी वह खुदा के अज्ञाब से बच नहीं सकता। इसके उत्तर में अभागे डोई ने दिसम्बर 1903 ई० के किसी पत्र में और इसी प्रकार 26 सितम्बर 1903 ई० इत्यादि के अपने पत्रों में अपनी ओर से यह यह कुछ पंक्तियाँ अंग्रेजी में प्रकाशित कीं जिन का अनुवाद निम्नलिखित है :-

“हिन्दुस्तान में एक मूर्ख मुहम्मदी मसीह है जो मुझे बार-बार लिखता है कि

शेष हाशिया :

23	डेजर्ट इंग्लिश न्यूज़ 27 जून 1903 ई०	मुबाहले का वर्णन है।
24	हेलीना रिकार्ड 1 जुलाई 1903 ई०	" " " "
25	ग्रूमशायर गेज़ेट 17 जुलाई 1903 ई०	" " " "
26	नोनेटन क्रोनिकल 17 जुलाई 1903 ई०	" " " "
27	ट्यूस्टन क्रानिकल 3 जुलाई 1903 ई०	" " " "
28	सोएना न्यूज़ 29 जून 1903 ई०	" " " "
29	रिचमंड न्यूज़ 1 जुलाई 1903 ई०	" " " "
30	गलासगो हिरल्ड 27 अक्टूबर 1903 ई०	" " " "

यसू मसीह की क़ब्र कश्मीर में है और लोग मुझे कहते हैं कि तू इसका उत्तर क्यों नहीं देता और यह कि तू क्यों इस व्यक्ति का उत्तर नहीं देता किन्तु क्या तुम विचार करते हो कि मैं इन मच्छरों और मक्खियों का उत्तर दूंगा। यदि मैं इन पर अपना पांव रखूं तो मैं इनको कुचल कर मार डालूंगा।”

और फिर 19 दिसम्बर 1902 ई. के अखबार में लिखता है कि —

“मेरा काम यह है कि मैं पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से लोगों को एकत्र करूं और मसीहियों को इस शहर और दूसरे शहरों में आबाद करूं यहां तक कि वह दिन आ जाए कि मुहम्मदी धर्म संसार से मिटाया जाए। हे ख़ुदा हमें वह समय दिखा।”

निष्कर्ष यह कि यह व्यक्ति मेरे मुबाहला के लेख के पश्चात् जो यूरोप और अमरीका तथा इस देश में प्रकाशित हो चुका था अपितु समस्त संसार में प्रकाशित हो चुका था उद्दण्डता में दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया और इस ओर मुझे यह प्रतीक्षा थी कि मैंने जो कुछ अपने बारे में तथा उसके बारे में ख़ुदा तआला से फैसला चाहा है तो अवश्य ख़ुदा तआला सच्चा फैसला करेगा और ख़ुदा तआला का

शेष हाशिया :

31	नियुयार्क कमर्शियल एडवरटाइज़ 26 अक्टूबर 1903 ई०	यदि डोई सांकेतिक रूप से या स्पष्ट रूप से इस चेलेंज को स्वीकार करेगा तो बड़े दुःख और निराशा के साथ हलाक होगा और यदि वह इस चेलेंज को स्वीकार नहीं करेगा तब भी उसके सैहून नगर पर सख्त आपदा आएगी।
32	दी मोर्निंग टेलीग्राफ़ आफ़ न्यूयार्क 28 अक्टूबर 1903 ई०	मुबाहले और डोई पर बद्दुआ करने का वर्णन है।

ये केवल वे अखबार हैं जो हम तक पहुँचे हैं इस अधिकता से ज्ञात होता है कि सैंकड़ों अखबारों में इसका वर्णन हुआ होगा। इसी से।

फ़ैसला सच्चे और झूठे में अन्तर करके दिखा देगा।^①

और मैं इस बारे में हमेशा खुदा तआला से दुआ करता था तथा झूठे की मृत्यु चाहता था। अतः कई बार खुदा तआला ने मुझे सूचना दी कि —

तू विजयी^② होगा और शत्रु को मृत्यु दी जाएगी। फिर डोई के मरने से लगभग पन्द्रह दिन पूर्व खुदा तआला ने अपने कलाम के द्वारा मुझे मेरी विजय की सूचना दी जिसे मैं उस पुस्तक जिसका नाम “क्रादियान के आर्य और हम” के टाइटल पृष्ठ के दूसरे पृष्ठ में डोई की मृत्यु से लगभग दो सप्ताह पूर्व प्रकाशित कर चुका हूँ और वह यह है —

ताज़ा निशान की भविष्यवाणी

खुदा तआला कहता है कि मैं एक ताज़ा निशान प्रकट करूँगा जिसमें महान विजय होगी वह समस्त संसार के लिए एक निशान होगा (अर्थात् उसका प्रकटन केवल हिन्दुस्तान तक सीमित नहीं होगा) और खुदा के हाथों से तथा आकाश से होगा। चाहिए

① **हाशिया :-** इस विज्ञापन के पृष्ठ 3 को पढ़ो जिसका सारांश यह है कि 23 अगस्त 1903 ई० को अंग्रेज़ी भाषा में मैंने डोई के मुकाबले पर एक विज्ञापन प्रकाशित किया था और खुदा तआला से इल्हाम पा कर यह लिखा था कि बेशक डोई मेरे साथ मुबाहला करे या न करे वह खुदा के अज़ाब से नहीं बचेगा और खुदा झूठे और सच्चे में फैसला कर के दिखा देगा। इसी से

② 9 फ़रवरी 1907 ई. को मुझे यह इल्हाम हुआ कि **إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَى** अर्थात् विजय तेरी ही होगी और फिर उसी तिथि को मुझे यह इल्हाम हुआ **الْعِيدُ الْآخِرُ تَنَالُ مِنْهُ فَتَحًا عَظِيمًا** अर्थात् तुझे खुशी का एक और निशान मिलेगा, जिससे तेरी एक बड़ी विजय होगी जिसमें यह बोध कराया गया कि पूरबी देशों में तो सअदुल्लाह लुधियानवी मेरी भविष्यवाणी और मुबाहला के पश्चात् जनवरी के पहले सप्ताह में ही निमोनिया प्लेग से मर गया। यह तो पहला निशान था तथा दूसरा निशान इससे बहुत ही बड़ा होगा जिसमें महान विजय होगी। अतः वह डोई की मृत्यु है जो पश्चिमी देशों में प्रकट हुई। देखो अख़बार बद्र 14 फ़रवरी 1907 ई.। इस से खुदा तआला का वह इल्हाम पूर्ण हुआ कि मैं दो निशान दिखाऊँगा। इसी से।

कि प्रत्येक आंख उस की प्रतीक्षा करे क्योंकि खुदा उसे शीघ्र प्रकट करेगा ताकि वह यह साक्ष्य दे कि यह विनीत जिसे सारी क्रौमें गालियां दे रही हैं उसकी ओर से है। मुबारक है वह जो उस से लाभ प्राप्त करे।

विज्ञापक

मिर्जा गुलाम अहमद मसीह मौऊद

प्रसारित 20 फ़रवरी 1907 ई.

अब स्पष्ट है कि ऐसा निशान (जो महान विजय का कारण है) जो समस्त संसार एशिया और अमरीका तथा यूरोप और हिन्दुस्तान के लिए एक खुला-खुला निशान हो सकता है वह यही डोई के मरने का निशान है^① क्योंकि मेरी भविष्यवाणियों से जो अन्य निशान प्रकट हुए हैं वे तो पंजाब और हिन्दुस्तान तक ही सीमित थे, अमरीका और यूरोप के किसी व्यक्ति को उनके प्रकट होने की सूचना न थी परन्तु यह निशान पंजाब से भविष्यवाणी के तौर पर प्रकट होकर अमरीका में जाकर ऐसे व्यक्ति के बारे में पूरा हुआ जिसे अमरीका और यूरोप का प्रत्येक व्यक्ति जानता था तथा उसके मरने के साथ ही तार के माध्यम से उस देश के अंग्रेजी अखबारों को सूचना दी गई। अतः पायनीयर ने (जो इलाहाबाद से निकलता है) 11, मार्च 1907 ई. के पर्व में और सिविल एण्ड मिलिट्री गज़ट ने (जो लाहोर से निकलता है) पर्व

① **हाशिया** - डोई इस भविष्यवाणी के पश्चात् इतनी शीघ्र मर गया कि अभी इसे प्रकाशित हुए पन्द्रह दिन ही हुए थे कि डोई का अन्त हो गया। अतः एक सत्याभिलाषी के लिए यह ठोस तर्क है कि यह भविष्यवाणी विशेषतः डोई के बारे में थी क्योंकि प्रथम तो इस भविष्यवाणी में यह लिखा है कि वह महान विजय का निशान समस्त संसार के लिए होगा तथा दूसरे यह लिखा है कि वह शीघ्र ही प्रकट होने वाला है। अतः इससे अधिक निकट और क्या होगा कि इस भविष्यवाणी के पश्चात् अभागा डोई अपने जीवन के बीस दिन भी पूरे न कर सका और मिट्टी में जा मिला। जिन पादरी लोगों ने आथम के बारे में शोर मचाया था अब उन्हें डोई की मृत्यु पर अवश्य विचार करना चाहिए। इसी से।

12 मार्च 1907 ई. और इण्डियन डेली टेलीग्राफ़ ने (जो लखनऊ से निकलता है) पर्चा 12 मार्च 1907 ई. में इस सूचना को प्रकाशित किया है। अतः इस प्रकार से लगभग समस्त संसार में यह सूचना प्रकाशित की गई तथा स्वयं यह व्यक्ति अपनी सांसारिक हैसियत एवं प्रतिष्ठा की दृष्टि से ऐसा था कि तेजस्वी नवाबों एवं राजकुमारों की भांति माना जाता था। अतः विब ने जो अमरीका में मुसलमान हो गया है मेरी ओर उसके बारे में एक पत्र लिखा था कि डाक्टर डोई इस देश में नितान्त सम्मानपूर्वक एवं राजकुमारों के समान जीवनयापन करता है और इस आदर-सम्मान और प्रसिद्धि के बावजूद जो उसे अमरीका और यूरोप में प्राप्त थी खुदा तआला की कृपा से यह हुआ कि उसके मुकाबले पर मेरे मुबाहला का लेख अमरीका के बड़े-बड़े प्रसिद्ध दैनिक अखबारों ने प्रकाशित कर दिया और सम्पूर्ण अमरीका एवं यूरोप में प्रसिद्ध कर दिया। फिर इस सार्वजनिक प्रकाशन के पश्चात् उसके बारे में भविष्यवाणी में जिस विनाश और मृत्यु की सूचना दी गई थी वह ऐसी स्पष्टता से पूरी हुई कि जिससे बढ़कर सर्वांगपूर्ण तौर पर प्रकट होने की कल्पना नहीं की जा सकती। उसके जीवन के प्रत्येक पहलू पर आपदा पड़ी। उसका बेईमान होना सिद्ध हुआ और वह मदिरा को अपनी शिक्षा में अवैध ठहराता था किन्तु उसका मदिरापान करना सिद्ध हो गया, वह अपने बसाए हुए शहर सैहून से बड़ी उत्कंठा के साथ निकाला गया जिसे उसने कई लाख रुपए व्यय करके बसाया था तथा सात करोड़ नक़द राशि से जो उसके क़ब्जे में थी उससे हाथ धोना पड़ा। और उसकी पत्नी और उसका बेटा उसके दुश्मन हो गए और उसके बाप ने विज्ञापन दिया कि वह अवैध पुत्र है। इस प्रकार वह क्रौम में अवैध पुत्र सिद्ध हुआ और यह दावा कि मैं बीमारों को चमत्कार से ठीक करता हूँ उसका यह समस्त बड़बोलापन झूठा सिद्ध हुआ और प्रत्येक अपमान उसको मिला और अंततः उस पर फालिज गिरा और एक तख्ते के समान कुछ लोग उसको उठाकर ले जाते रहे और फिर बहुत दुखों के कारण पागल हो गया और होश में न रहा। और यह दावा उसका कि मेरी अभी बहुत आयु है और मैं दिन प्रतिदिन जवान होता जाता हूँ और लोग बूढ़े होते जाते हैं केवल झूठ सिद्ध हुआ। अंततः मार्च 1907

ई० के पहले सप्ताह में ही बड़ी निराशा और कष्ट और दुख के साथ मर गया।

स्पष्ट है कि इससे बढ़कर और क्या चमत्कार होगा क्योंकि मेरा वास्तविक कार्य सलीब को तोड़ना है अतः उसके मरने से एक बड़ा भाग सलीब का टूट गया क्योंकि वह समस्त दुनिया से बढ़कर सलीब का समर्थक था जो अवतार होने का दावा करता था और कहता था कि मेरी दुआ से समस्त मुसलमान मर जाएंगे और इस्लाम मिट जाएगा और खाना क्राबा **वीरान** हो जाएगा। अतः खुदा तआला ने मेरे हाथ पर उसको हलाक किया। मैं जानता हूँ कि उसकी मौत से सूअर के वध वाली भविष्यवाणी बड़ी स्पष्टता से पूर्ण हो गई। क्योंकि ऐसे व्यक्ति से अधिक हानिकारक कौन हो सकता है कि जिसने झूठे तौर पर अवतार होने का दावा किया और सूअर के समान झूठ का गंद खाया। और जैसा कि वह स्वयं लिखता है कि उसके साथ एक लाख के लगभग ऐसे लोग हो गए थे जो बड़े धनी थे अपितु सच यह है कि मुसैलमा कज्जाब और अस्वद अंसी का अस्तित्व इसके मुकाबले में कुछ भी चीज़ न था। न उसके समान उनकी प्रसिद्धि थी और न उसके समान करोड़ों रुपए के वे स्वामी थे। अतः मैं क्रसम खा सकता हूँ कि यह वही सूअर था जिस के वध की आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूचना दी थी की **मसीह मौऊद** के हाथ से मारा जाएगा।★ यदि मैं उसको मुबाहले के लिए न बुलाता और यदि मैं उस पर बददुआ न करता और उसकी हलाकत की भविष्यवाणी प्रकाशित न करता तो उसका मरना इस्लाम की सच्चाई के लिए कोई दलील न ठहरता परन्तु चूंकि मैंने सैंकड़ों अखबारों में पहले से प्रकाशित करवा दिया था ★ कि वह मेरे जीवन में ही हलाक होगा। मैं

★ समस्त प्रशंसाएं अल्लाह के लिए कि आज न केवल मेरी भविष्यवाणी अपितु आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी स्पष्ट रूप से पूर्ण हो गई। इसी से

★ अमरीका के एक अखबार ने अच्छा लतीफ़ा लिखा है कि डोई मुबाहले के निवेदन को तो अवश्य स्वीकार करेगा परन्तु कुछ परिवर्तन के बाद और वह यह कि डोई कहेगा कि मैं इस प्रकार का मुबाहला तो स्वीकार नहीं करता कि झूठा सच्चे के सामने नष्ट हो जाए। हाँ यह स्वीकार करता हूँ कि गालियाँ देने में मुकाबला किया जाए फिर जो व्यक्ति गालियाँ देने में बढ़ कर निकलेगा और प्रथम रहेगा उसको सच्चा समझा जाए। इसी से

मसीह मौऊद हूँ और डोई झूठा है और बार बार लिखा कि इस पर दलील यह है कि वह मेरे जीवन में अपमान और निराशा के साथ हलाक हो जाएगा अतः वह मेरे जीवन में ही हलाक हो गया। इस से अधिक स्पष्ट चमत्कार जो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी को सच करता है और क्या होगा? अब वही इस से इंकार करेगा जो सच्चाई का दुश्मन होगा। والسلام على من اتبع الهدى

वस्सलाम

प्रकाशक

मिर्जा गुलाम अहमद मसीह मौऊद क़ादियान से

ज़िला गुरदासपुर, पंजाब

7 अप्रैल 1907 ई०

आसमाँ बारद निशां अलवक्त मी गोयद ज़मीन ई दो शाहिद अज़ पए तस्दीक़-ए-मन इस्तादः अंद

(अनुवादः आसमान निशान बरसाता है और ज़मीन 'अलवक्त' कहती है यह दो गवाह भी
हमारे सत्यापन के लिए खड़े हो गए हैं।)

रौशन निशान

निशान नम्बर-197

पर्चा अखबार बद्र दिनांक 14 मार्च 1907 ई० 28 मुहर्रम 1325 हिजरी में एक इल्हाम प्रकाशित हुआ था जो 7 मार्च 1907 ई० को खुदा तआला की ओर से मुझ पर भविष्यवाणी के रूप में प्रकट किया गया था और उसके बारे में जो समझ दी गई थी वह भी इसी पर्चे 14 मार्च में दर्ज कर दी गई थी और वह इल्हाम यह है जो बताए गए अखबार के पृष्ठ 3 के प्रथम कॉलम में दर्ज किया गया है **पच्चीस दिन या यह कि पच्चीस दिन तक** अर्थात् 7 मार्च 1907 ई० से पच्चीसवें दिन या यह कि पच्चीस दिन तक जो 31 मार्च होती है कोई नई घटना घटित होने वाली है और इस इल्हाम में जो समझ दी गई थी वह इसी कॉलम में निम्नलिखित पंक्तियों में दर्ज है और वह यह है :-

इल्हाम में यह संकेत है कि 7 मार्च 1907 ई० से पच्चीस दिन पूरे होने पर या 7 मार्च से पच्चीस दिन तक कोई नई घटना प्रदर्शित होगी और अवश्य है कि खुदाई प्रारब्ध इस घटना को रोके रखे जब तक कि 7 मार्च 1907 ई० से पच्चीस दिन गुज़र न जाएं या यह कि 7 मार्च से पच्चीस दिन तक यह घटना प्रकट हो जाएगी। यदि केवल पच्चीस दिन के अनुसार अर्थ किए जाएँ तो इस प्रकार ज़रूरी है कि इस घटना के प्रकटन की प्रथम अप्रैल से आशा रखी जाए क्योंकि खुदाई इल्हाम के अनुसार सातवीं मार्च पच्चीसवें दिन की गणना में सम्मिलित है। इस

★ इस बाद में वर्णित व्याख्या जो अंडरलाइन कर दी गई है केवल अनुमान के तौर पर है खुदा की ओर से जो समझाया गया है वह केवल इतना है कि 7 मार्च 1907 ई० से 25 दिन पूरे होने तक या 7 मार्च से 25 दिन तक जो 31 मार्च तक समाप्त हो जाते हैं, कोई नई घटना प्रकट होगी। इसी से

अवस्था में पच्चीस दिन मार्च के 31वें दिन तक पूर्ण हो जाते हैं परन्तु यह प्रश्न कि वह घटना क्या है जिसकी भविष्यवाणी की गई है इसका हम इस समय कोई उत्तर नहीं दे सकते सिवाए इसके कि यह कहें कि कोई भयावह या अचंभित घटना है कि प्रकटन के बाद की भविष्यवाणी के रूप में सिद्ध हो जाएगा। देखो पर्चा अखबार बद्र 14 मार्च 1907 ई० प्रथम और द्वितीय कॉलम।

इसके बाद यह भविष्यवाणी जिस रूप में प्रकटन में आई वह यह है कि ठीक ठीक 31 मार्च 1907 ई० को जिस पर 7 मार्च से 25 दिन समाप्त होते हैं एक बड़ा शोला आग का जिस से दिल कापं उठे, आकाश पर प्रदर्शित हुआ और एक भयावह चमक के साथ सात सौ मील की दूरी तक (जो अब तक मालूम हो चुका है यह इस से भी अधिक) निरंतर पृथ्वी पर गिरता हुआ देखा गया और ऐसे भयानक ढंग से गिरा कि खुदा की हज़ारों मखलूक उसको देख कर हैरान हो गई और कुछ बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर पड़े और जब उनके मुंह में पानी डाला गया तब उनको होश आया। अधिकतर लोगों का यही बयान है कि वह आग का एक गोला था जो अत्यंत भयानक और असमान्य रूप में प्रकट हुआ और ऐसा दिखाई देता था कि वह ज़मीन पर गिरा और फिर धुआं हो कर आसमान पर चढ़ गया। कुछ का यह भी बयान है कि पूँछ के समान उसके एक भाग में धुआं था और अधिकतर लोगों का बयान है कि वह एक भयानक आग थी जो उत्तर की ओर से आई और दक्षिण को गई और कुछ कहते हैं कि दक्षिण की ओर से आई और उत्तर की ओर गई और लगभग शाम के साढ़े पांच बजे इस घटना का समय था और कुछ का बयान है कि आकाश पर पश्चिम की ओर से एक बड़ा सा अंगारा प्रकट हुआ और फिर पूर्व की ओर अत्यंत स्पष्ट और भयानक रूप में दूर तक चला गया और पृथ्वी के इतने निकट आ जाता था कि हर जगह देखने वालों का यही विचार था कि अब गिरा अब गिरा। बड़ी बड़ी आयु के लोगों ने यह गवाही दी कि इस प्रकार की भीषण और भयावह घटना उन्होंने ने कभी नहीं देखी और जहाँ जहाँ से हमारे पास पत्र पहुंचे हैं जिन का सारांश हम ने गवाहियों के तौर पर प्रत्येक स्थान के बारे में इस लेख के साथ

सम्मिलित कर दिया है वे बहुत से स्थान हैं उन में से कश्मीर, रावलपिंडी, पिंडी घेप, जेहलम, गुजरात, गुजरांवाला, सियालकोट, वजीराबाद, अमृतसर, लाहौर, फीरोजपुर, जालंधर, बसी सरहिंद, पटियाला, कांगड़ा, भेरह, खुशाब इत्यादि हैं। और एक साहिब खुदा बख्श नामक रावलपिंडी से लिखते हैं कि यह आग का निशान हिंदुस्तान में भी देखा गया है। अतः यह कहना बिल्कुल सही है कि चेतावनी के तौर पर इन देशों में खुदा तआला की ओर से आग बरसी है जैसा कि मैंने प्रकाशित किया था कि 'आसमाँ ऐ गाफ़िलो अब आग बरसाने को है' अतः खुदा ने यह भविष्यवाणी पूरी की। यद्यपि इस से कोई हानि नहीं हुई केवल कुछ लोग बेहोश हो गए परन्तु यह अग्नि वर्षा भविष्य में किसी बड़े अज़ाब की ख़बर दे रही है। हे सुनने वालों! सावधान हो जाओ बाद में पछताओगे यह एक निशान उन निशानों में से है जिनकी खुदा ने मुझे ख़बर दी और फ़रमाया था कि मैं साठ या सत्तर और निशान दिखलाऊंगा और अंतिम निशान यह होगा कि ज़मीन को तहस-नहस कर दिया जाएगा और एक ही पल में लाखों इंसान मर जाएंगे। क्योंकि लोगों ने उसके प्यारे को स्वीकार न किया। भयावह ज़लजले आएंगे और भयानक रूप से मौते होंगी और नए-नए रूप में अज़ाब आएंगे। यहाँ तक कि इंसान कहेगा कि यह क्या होने वाला है। यह सब कुछ इसलिए होगा कि ज़मीन मर गई और इंसानों ने खुदा के निशान देखे और फिर उनको स्वीकार न किया। वे उन कीड़ों से भी दुष्ट हो गए जो गंद में होते हैं और खुदा के अस्तित्व पर उनका ईमान न रहा इसलिए खुदा फ़रमाता है कि मैं एक भयावह रूप दिखाऊँगा और भयानक निशान दिखाऊँगा और लाखों को ज़मीन पर से मिटा दूँगा परन्तु कौन है जो हम पर ईमान लाया और किसने हमारी यह बातें स्वीकार की।

आज से 26 वर्ष पहले प्रतिष्ठावान एवं प्रतापवान खुदा 'बराहीन अहमदिया' में फ़रमा चुका है "मैं अपनी चमकार दिखलाऊँगा और अपनी कुदरत नुमाई से तुझको उठाऊँगा दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने उसको स्वीकार न किया परन्तु खुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े ज़ोरदार हमलों

से उसकी सच्चाई ज़ाहिर कर देगा।" अतः उन हमलों में से यह आग के शोले भी हैं जिनकी इस देश में वर्षा हुई। यह इसी प्रकार के निशान है जैसा के मूसा नबी ने फिरऔन के सामने दिखाए थे अपितु वे निशान जो प्रदर्शित होने वाले हैं वे मूसा नबी के निशानों से बढ़कर होंगे। इसलिए खुदा मेरा नाम मूसा रखकर फ़रमाता है एक मूसा है कि मैं उसको ज़ाहिर करूंगा और लोगों के सामने उसको सम्मान दूंगा परन्तु जिसने मेरा गुनाह किया है मैं उसको घसीटूंगा और उसको नर्क दिखलाऊंगा अर्थात् ईसा इब्ने मरियम के प्रकटन से तो लोग कुछ भी बाख़बर न हुए अब मैं अपने इस बंदे को मूसा★की विशेषताओं में प्रदर्शित करूंगा और फिरऔन और हामान को वह दिन दिखाऊंगा जिससे वे डरते थे। अतः हे प्यारो! दीर्घकाल तक मैं मसीह इब्ने मरियम के रूप में दुख उठाता रहा और जो कुछ क्रौम ने करना चाहा मेरे साथ किया अब खुदा मेरा नाम मूसा रखता है जिस से समझा जाता है कि विरोधियों

★ यह इल्हाम 15 मार्च 1907 ई० जो 22 मार्च को अखबार बद्र में प्रकाशित हो चुका है और बाद में भी। इसकी पंक्तियाँ यह हैं: "एक मूसा है मैं उसे ज़ाहिर करूंगा और लोगों के सामने उसको सम्मान दूंगा।"

بلجت آيات تلك ظهرت بعضها خلف بعض اجر الاثيم واريه
الجحيم. اني اثرتك واخترتك.

मेरे निशान स्पष्ट होंगे, कुछ निशान दूसरों के बाद दिखाई देंगे, ताकि इस मूसा के सम्मान को प्रदर्शित किया जा सके। लेकिन जिसने भी मेरा गुनाह किया है, मैं उसे घसीटूंगा और उसे नर्क दिखलाऊंगा। मैंने तुझ को चुन लिया और अपना लिया। मुझे तेरी आजिज़ाना राहें (विनम्रता) पसंद आई। मेरा दुश्मन मर गया। ان الله مع الصادقين (निस्संदेह अल्लाह सत्य के साथ है)। खुदा सच्चा के साथ है। यह भविष्यवाणी स्पष्ट रूप से बाबू इलाही बख़्श अकाउंटेंट के बारे में है जो 7 अप्रैल 1907 ई० को प्लेग से मर गया था, क्योंकि उसने मूसा होने का दावा किया था अतः खुदा फ़रमाता है कि मूसा इस युग में एक ही है जिसको मैंने मूसा बनाया। लेकिन वह व्यक्ति जो अपने आप मूसा बन गया वह हलाक हो जाएगा ताकि सच्चे और झूठे के बीच अंतर स्पष्ट हो जाए। अतः प्लेग जो नर्क का नमूना है उस में कथित बाबू ग्रस्त हो कर इस नश्वर संसार को दिनांक 7 अप्रैल 1907 ई० में छोड़ गया। अतः हे बुद्धि और विवेक रखने वालो इब्रत हासिल करो। इसी से

का नाम उसने फिराउन रखा है और यह नाम आज से नहीं अपितु इस बात पर 26 वर्ष गुजरे हैं जब के खुदा तआला ने बराहीने अहमदिया में मेरा नाम मूसा रखकर फ़रमाया अंता मिन्नी बेमंज़ेलतिही मूसा और फिर इसी बराहीने अहमदिया में मेरा नाम मूसा रख कर फ़रमाया वलम्मा तजल्ला रब्बुहू लिलजब्ले जअलहू दक्का व खर्रा मूसा साइक्का परंतु चूंकि खुदा ने आरंभ नरमी से किया और अपनी बुर्दबारी (धीरज) को पूर्ण रूप से दिखा दिया इसलिए मेरा नाम इब्ने मरियम रखा गया क्योंकि इब्ने मरियम अपनी क्रौम से निराश रहा और उसको बहुत दुख दिया गया और सताया गया और अदालतों की ओर उसको खींचा गया और उसका नाम काफ़िर और मक्कार और लानती और दज्जाल रखा गया और न केवल इसी पर बस किया गया अपितु यह इच्छा की गई कि उसका वध कर दिया जाए परंतु क्योंकि वह खुदा का प्रिय था और उन लोगों में से था जिनके साथ खुदा होता है इसलिए वह दुष्ट क्रौम उसके नूर को नष्ट न कर सकी। अतः खुदा ने जो हर कार्य सौम्यता से करता है इस युग के लिए सबसे पहले मेरा नाम ईसा इब्ने मरियम रखा क्योंकि आवश्यक था कि मैं आरंभिक युग में इब्ने मरियम के समान क्रौम के हाथों दुःख उठाऊँ और काफ़िर, लानती और दज्जाल कहलाऊँ और अदालतों में खींचा जाऊँ तो मेरे लिए इब्ने मरियम होना प्रथम पड़ाव था परन्तु मैं खुदा के दफ़्तर में केवल ईसा इब्ने मरियम के नाम से नामित नहीं अपितु और भी मेरे नाम हैं जो आज से छब्बीस वर्ष पहले खुदा तआला ने मेरे हाथ से लिखवा दिए थे और संसार में कोई नबी नहीं गुजरा जिसका नाम मुझे नहीं दिया गया। अतः जैसा कि बराहीने अहमदिया में खुदा ने फ़रमाया है मैं आदम हूँ, मैं नूह हूँ, मैं इब्राहीम हूँ, मैं इसहाक हूँ, मैं याकूब हूँ, मैं इस्माईल हूँ, मैं मूसा हूँ, मैं दाऊद हूँ, मैं ईसा इब्ने मरियम हूँ, मैं मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हूँ अर्थात् बुरुज़ी (प्रतिरूपी) तौर पर जैसा कि खुदा ने इसी किताब में ये सब नाम मुझे दिए और मेरे बारे में جرى الله في حلال الانبياء फ़रमाया अर्थात् खुदा का रसूल नबियों के रूप में। इसलिए हर नबी की शान मुझमें पाई जानी आवश्यक है और हर एक

नबी की विशेषता का मेरे द्वारा प्रकटन हो। लेकिन ख़ुदा ने यही पसंद किया कि सबसे पहले इब्ने मरयम की विशेषताएँ मुझे में ज़ाहिर करे। अतः मैंने अपनी क्रौम से वे समस्त दुःख पाए जो इब्ने मरयम ने यहूदियों से पाए अपितु समस्त क्रौमों से पाए। यह सब कुछ हुआ परन्तु ख़ुदा ने सलीब को तोड़ने के लिए मेरा नाम मसीह कायम रखा ताकि जिस सलीब ने मसीह को तोड़ा था और उसको घायल किया था दूसरे समय में मसीह उसको तोड़े परन्तु आसमानी निशानों के साथ न कि इंसानी हाथों के साथ। क्योंकि ख़ुदा के नबी पराजित नहीं रह सकते अतः सना ईसवी की बीसवीं सदी में फिर ख़ुदा ने इरादा किया कि सलीब को मसीह के हाथ से पराजित करे परन्तु जैसा कि मैं अभी वर्णन कर चुका हूँ मुझे और नाम भी दिए गए हैं और प्रत्येक नबी का मुझे नाम दिया गया है। अतः जो हिन्द देश में कृष्ण नाम का एक नबी गुजरा है जिसको रूद्र गोपाल भी कहते हैं (अर्थात् विनाश करने वाला और पालन-पोषण करने वाला) उसका नाम भी मुझे दिया गया है अतः जैसा कि आर्य क्रौम के लोग कृष्ण के प्रकटन की इन दिनों में प्रतीक्षा करते हैं वह कृष्ण मैं ही हूँ। और यह दावा केवल मेरी ओर से नहीं अपितु ख़ुदा तआला ने बार बार मुझ पर प्रदर्शित किया है कि जो कृष्ण अंतिम युग में ज़ाहिर होने वाला था वह तू ही है आर्यों का बादशाह। और बादशाहत से अभिप्राय केवल आकाशीय बादशाहत है ऐसे शब्द ख़ुदा तआला की वाणी में आ जाते हैं परन्तु अर्थ आध्यात्मिक होते हैं। अतः मैं इसी के सत्यापन के लिए कि वही कृष्ण आर्यों का बादशाह मैं हूँ देहली के एक विज्ञापन को जो बालम कुंड नाम के एक पंडित ने इन दिनों में प्रकाशित किया है, अनुवाद सहित फुटनोट में लिखता हूँ, जिस से ज्ञात होगा कि आर्यवर्त के विद्वान पंडित भी कृष्ण अवतार का समय यही ठहराते हैं।★ और इस युग में उसके आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं भले ही

★ हाशिया :- श्री निष्कलंक भगवान का अवतार

(श्री हनुमान जी की जय)

संसारी पुरुषों को विदित हो कि आज कल जैसे जैसे उपद्रव हमारे देश में हो रहे हैं

वे मुझे अभी तक नहीं पहचानते हैं लेकिन वह समय आ रहा है अपितु निकट है कि वे मुझे पहचानेंगे क्योंकि खुदा का हाथ उन्हें दिखाएगा कि **आने वाला यही है।**

फिर मैं अपने उद्देश्य का उल्लेख करता हूँ और लिखता हूँ कि चूंकि मैं अंतिम खलीफ़ा हूँ इसलिए जैसा कि सभी नबी लिख चुके हैं, मेरे समय में नाना प्रकार के चमत्कारी निशान और प्रकोपीय अभिव्यक्तियों का प्रकटन आवश्यक था, इसलिए जरूरी था कि मैं उस समय तक जीवित रहूँ कि जब तक प्रकोपीय निशान और कुदरत की विचित्र घटनाएं जाहिर न हो जाएँ। जब से संसार की उत्पत्ति हुई

शेष हाशिया :- वह सबको मालूम ही हैं मसलन स्त्रियों का बेवा होना और साथ ही उन बुरी बातों का भी होना जिनको बच्चा बच्चा जानता है और घी और गल्ला इत्यादि का इस क्रूर कम होना और अलावा इसके सैंकड़ों किस्म की मुसीबतें हमारे आर्यावर्त पर आई हुई हैं कि जिनका जिक्र बयान से बाहर है ये आप लोगों पर खूब रौशन है कि जो ताक़त आपके पिता व दादा में थी वह अब आप में कहाँ और आप में जो हौसला, ताक़त और बुद्धि है वह आपकी सन्तान में है या कुछ आइन्दा हो जाने की उम्मीद है। बस ऐ सज्जनो! यदि आप लोगों को इस महाकष्ट से छुटने की इच्छा है और निराकार और साकार की एकता और परमात्मा में प्रेम और भक्ति बढ़ाने की इच्छा है तो श्री निष्कलंक जी महाराज का अवश्य स्मरण व ध्यान कीजिए क्योंकि ईश्वर परमात्मा हमेशा भक्तों के बस में होते हैं। उन को अपने भक्तों को सुख देने की ही इच्छा अर्थात् खाहिश रहती है वह अवश्य प्रकट हो कर शीघ्र ही इन सब उपद्रवों और दुष्टों का नाश करेंगे। यदि किसी सज्जन को ये ख्याल हो कि अभी कलयुग का प्रथम चरण ही है और महाराज जी का जन्म कलयुग के अंत में लिखा है तो आप विचार कीजिए कि इस से अधिक और क्या कलयुग प्रतीत होगा कि स्त्रियाँ अपने पतियों को छोड़कर दूसरों पर निगाह रखें। और औलाद अपने मातापिता की वफ़ादारी में न रहें। और मातापिता अपनी औलाद को औलाद की तरह न समझें। यहां तक कि आज कल सब ही चीजें अपने अपने धर्मों से फिरी हुई हैं। अब कोई साहिब यह कहें कि अभी शास्त्र द्वारा वक्त नहीं विदित होता है तो भई प्यारे भक्तो! नरसी जी का भात भरना भी पहले किसी शास्त्री जी की समझ में नहीं आया था कि श्रीकृष्ण चन्द्र महाराज ऐसा भात देंगे और इसी तरह सैंकड़ों भक्तों के कार काज सिद्ध कर दिए जैसा कि पृथ्वीलाद भक्त के उभारने को कहीं समय और तिथि नहीं लिखी थी जब नरसिंह जी प्रकट हो चुके और दैत राज को मार

है यह युग किसी ने नहीं देखा।

यह खुदा के फ़रिश्तों और शैतानों के बीच अंतिम लड़ाई है, और वास्तव में यह आग का गोला भी जो जगह-जगह नज़र आया है, इसी लड़ाई की ओर संकेत है, क्योंकि यद्यपि इस से पहले सामान्य रूप से उल्का पिण्ड टूट जाते थे लेकिन दुनिया ने आज तक यह भयानक दृश्य नहीं देखा था। भयानक अंगारे इतने बरसाए गए कि कुछ लोग उनको देखकर बेहोश हो गए। यह बात स्पष्ट रूप से बताती है कि अब बड़े बड़े शैतानों के विनाश का समय आ गया है। अतः कुछ दिनों में

शेष हाशिया :- चुके तब ही तो मालूम हुआ कि नारायण जी ने अपने भक्त के उधारने के वास्ते अवतार लिया है। इस कारण से उन कलगी भगवान महाराज का प्रकट होना मानो संसार के सुख का मूल होगा। जिस तरह भगवान सूरज नारायण का उदय होना सब दुनयवी कारोबार व दीगर मखलूक़ात के सुख का मूल होता है क्योंकि आँखों से दिखलाई तब ही देता है जबकि अंधेरा दूर होता है। प्यारे मित्रो सच्ची परस्ती और भक्ति का तजुर्बा ईश्वर के दर्शन ही करने का है जैसा कि श्री शिवजी महाराज ने कहा है उग जग में सब रहित वैरागी, प्रेम से प्रभु प्रघटीं जमी आगी। अपने शास्त्रों के सच्चे तजुर्बा को सच्ची प्रीत से प्रतीत करो कि कहाँ पैदा हुए। हे बुद्धि वालो ग़ौर से सोचो कि (दिवस तहान जहान भानू प्रकाशो) सँभल वही है जहां निष्कलंक जी प्रकट हों। हे सज्जनो! महात्माओ! पंडितो! मेरे इस थोड़े लिखे को बहुत जानो क्योंकि अक़लमंदों को इशारा ही काफ़ी होता है। अब ईश्वर महाराज से यही प्रार्थना है कि आप जल्दी प्रकट हो कर अपने भक्तों को बचाओ और इस माया रूपी जाल से निकालो। वर्ना संसार सब कुछ गया हुआ ही है अगर मेरी इस में कोई ग़ैर मुनासिब बात या भूल होवे अपना बच्चा समझ कर क्षमा करें।

प्रकाशक बालमुकुंद जी कूँचा पाती राम दिल्ली

(प्रकाशन निज़ाम प्रेस देहली)

इस विज्ञापन का अनुवाद इस प्रकार है

निर्दोष (मासूम) भगवान का अवतार

अर्थात्

मासूम खलीफ़तुल्लाह

संसार वालों को स्पष्ट हो कि आज कल जैसी जैसी बुराइयाँ हमारे देश में हो रही हैं वह सबको ज्ञात ही हैं जैसे कि स्त्रियों का विधवा होना और साथ ही उन बुरी बातों का भी होना

दुनिया स्वयं ही देख लेगी कि इन ज्वलंत अंगारों के अर्थ कैसे प्रकट होते हैं।

अब इससे पहले कि मैं इस अंगारे के बारे में अन्य लोगों की गवाही प्रस्तुत करूं, मैं वह बयान लिखता हूं कि जो अखबार अंग्रेजी सिविल एंड मिलिट्री गजट लाहौर ने पर्चा 3 अप्रैल 1907 ई० में इस गोले के बारे में लिखा था और वह यह है :-

कई संवाददाताओं ने हमें इस उल्का पिण्ड के बारे में पत्र लिखे हैं जो रविवार को लगभग 4:45 बजे देखा गया था। यह बहुत उज्ज्वल था और जब इसे लाहौर में गिरते हुए देखा गया, तो धुएं की तरह इसके पीछे एक बहुत लंबी दोहरी धारा

शेष हाशिया :- जिन को बच्चा बच्चा भी जानता है और अनाज और घी इत्यादि का इतना महंगा होना और इसके अतिरिक्त सैकड़ों प्रकार की आपदाएं हमारे आर्य वर्त (हिंदुस्तान) पर आई हुई हैं कि जिसका वर्णन बयान से बाहर है। यह आप लोगों पर अच्छी तरह से रौशन है कि जो शक्ति आप के बाप दादों में थी वह अब आप में कहाँ और आप में जो जो साहस, शक्ति और बुद्धि है वह आप की सन्तान में है? या भविष्य में कुछ हो जाने की आशा है! अतः हे मित्रो! यदि आप लोगों को इस महान दर्द से मुक्ति पाने की इच्छा है तो निर्दोष खलीफ़तुल्लाह महाराज का अवश्य ख्याल और ध्यान करो क्योंकि अल्लाह तआला हमेशा अपने सच्चे बन्दों के समर्थक होते हैं उनको अपने चुने हुए बन्दों को हमेशा सुख पहुँचाने की ही इच्छा होती है और वह इसी युग में प्रकट हो कर समस्त बुराइयों और अभद्रता को हलाक करेंगे। यदि किसी मित्र को यह विचार हो कि अभी कलयुग (झूठ और बुराई का युग) का पहला ही दौर है और महाराज का जन्म कलयुग के अंत में लिखा है तो आप स्वयं विचार करें कि इस से अधिक और क्या कलयुग होगा कि स्त्रियाँ अपने पतियों को छोड़ कर दूसरे पर नज़रें रखती हैं और सन्तान अपने माता-पिता का आज्ञापालन न करें और माता-पिता अपनी सन्तान को सन्तान के समान न समझें यहाँ तक कि समस्त चीज़ें अपने अपने धर्म से फिरी हुई हैं। अब कोई साहिब यह कहे कि अभी शास्त्र के अनुसार समय ज्ञात नहीं होता तो इसका उत्तर यह है कि भाई प्यारे मित्रो! नरसी जी (एक प्रतिष्ठित खुदा का बन्दा) का प्रकटन भी पहले किसी विद्वान की समझ में नहीं आया था कि श्री कृष्ण जी महाराज ऐसे प्रकट होंगे और इसी प्रकार सैकड़ों खुदा के बन्दों की सहायता और समर्थन किया गया जैसा कि पृथ्वीलाद भक्त का समर्थन और सहायता का कोई समय और दिन लिखा नहीं गया था परन्तु जब नरसिंह जी प्रदर्शित हो चुके और दैत राज को मार चुके तब पता चला कि अल्लाह तआला अपने चुने हुए बंदे के समर्थन हेतु प्रकट हुआ है इसी प्रकार

थी। रावलपिंडी में, यह दक्षिण-पूर्व में दिखा। उस समय धूप अत्यंत तेज थी। हमारे कुछ संवाददाता यह पूछते हैं कि क्या कभी इस से पहले भी कोई ऐसा उल्का पिण्ड देखा गया है जो इन परिस्थितियों में दिखाई दिया हो। कुछ लिखते हैं कि यदि सूर्यास्त के बाद यह घटना देखी जाती, तो इसकी चमक वास्तव में अद्वितीय होती। (सिविल एन्ड मिलिट्री गज़ट लाहौर 3 अप्रैल 1907 ई०)

इसी प्रकार अखबार आर्मी न्यूज़ लुधियाना ने 6 अप्रैल 1907 ई० के पृष्ठ 11 कॉलम 3 में इसी उल्का पिण्ड के बारे में लिखा है और वह यह है कि गिरने वाला उल्का 31 मार्च 1907 ई० को दोपहर के करीब लगभग तीन बजे के बाद आकाश से आया था, जिसे मैं निम्न में लिखता हूँ :-

स्थान पंजाना तहसील पसरूर में, गाँव के दक्षिण-पश्चिम में लगभग 1/2 मील की दूरी पर, एक तारा टूटा, जो कि आसमान से टूटते ही आग का रूप लेकर

शेष हाशिया :- कल्कि भगवान महाराज का प्रकटन है और वह समस्त दुनिया के लिए आराम का कारण हुआ है और इसी से काम काज चलता है क्योंकि आँखों से उसी समय दिखाई देता है जब अँधेरा दूर हो जाए। प्यारे मित्रो! सच्ची उपासना और खुदा से मुहब्बत तभी होती है जब अल्लाह तआला को इन्सान मानो देख ले जैसा कि शिव जी महाराज ने कहा है " आग समस्त दुनिया में रहती है और जिस प्रकार रगड़ से वह उत्पन्न होती है इसी प्रकार परमेश्वर की अवस्था है। जब इंसान उस से मुहब्बत करता है तो उसका प्रकटन होता है।" अपनी पुस्तकों के सच्चे अनुभव को सच्चे विश्वास से मान लो और जो कोई यह प्रश्न करे कि वह कहाँ पैदा हुए हैं तो इसका उत्तर यह है कि हे बुद्धिमानो! ध्यान दो कि उसके प्रकटन का वह स्थान है जहाँ सूर्य का प्रकटन होता है (अर्थात् पूर्व में) संभल (वह स्थान जहाँ उस अवतार का प्रकटन माना गया है) वही है जहाँ वह अल्लाह के खलीफ़ा प्रदर्शित हों। मित्रो! सम्माननीयो! पंडितो! मेरे इस थोड़े लेख को बहुत जानो क्योंकि बुद्धिमानों को इशारा ही काफी है। अब खुदा तआला से दुआ है कि आप शीघ्र अपना प्रकटन कर के अपने मित्रों को बचाएं और इस संसार के जाल से मुक्ति दिलवाएं अन्यथा दुनिया बिगड़ चुकी है। यदि इस में कोई बात अनुचित हो या भूल हुई हो तो आप क्षमा करें।

प्रकाशक बालमुकुंद जी कूँचा पाती राम दिल्ली

(प्रकाशन निज़ाम प्रेस देहली)

लगभग 25 गज लंबाई में जंगल से गाँवों की ओर बढ़ा। गाँव से $1/4$ मील की दूरी पर, एक हिन्दुओं का शमशान है इसमें एक कीकर का पेड़ है। इस पेड़ पर लगभग दस गज ऊपर वह आग 5 मिनट तक लहराती रही, फिर यह सफ़ेद रंग में परिवर्तित हो कर इतनी मोटी हो गई जैसा कि एक मोटा बांस होता है। 5 मिनट के बाद वह आग तीन टुकड़ों में विभाजित हो गई, जिसके टूटने की आवाज़ कई तोपों की आवाज़ के समान थी जिस से समस्त जंगल और गाँवों से गूँज उठा। और वह आग उसी शमशान में अचानक पेड़ से गायब हो गई। इसके बाद शाम के करीब साढ़े चार बजे का समय था फिर एक तारा उस गाँव के उत्तर में $3/4$ मील की दूरी पर जंगल में टूटा। उसका आकार भी पहले जैसा था, लेकिन उसकी आवाज़ टूटते ही इतनी हुई जैसे एक तोप चलती है। सबकी निगाहें इन्हीं की ओर जमी हुई थीं। मैं स्वयं उस समय गाँव से बाहर $1/4$ मील की दूरी पर उत्तर में खड़ा था। जैसे ही आवाज़ आई, मैंने देखा कि आग के समान बिजली चमक रही है, और गाँवों की ओर बढ़ रही है। गाँवों के पास एक पोखर है। मैंने इसे स्वयं वहाँ तक जाते देखा लेकिन बाद में मुझे लोगों से पता चला कि यह गाँवों में आ कर धुँएँ में बदल कर कुछ तो गाँवों में गायब हो गई और कुछ आगे बढ़ गई। इसके बाद शाम का समय था। सूर्य डूबने की तैयारी कर रहा था। तब एक गोल रूप की आग स्थान रंधावा (जो पनवना के उत्तर-पश्चिम में स्थित है) की ओर से आता हुआ में दिखाई दिया और गाँवों को पार कर गया। और सुना गया है कि यह गोल आग भी एक तारा था, जिसकी 6 मील तक तो यही ख़बर है कि हमारे भी आगे से आया और यह ज्ञात नहीं है कि यह आगे कहां तक गया। ऐसा सुनने में आया है कि स्थान जोधाला पिसरूर तहसील में जो कि पंवाना से चार मील दूर है वहां एक चारे के खेत में इस का कुछ भाग गिर गया, जिससे खेत का चारा जल गया लेकिन यह ख़बर विश्वसनीय नहीं यह ज्ञात नहीं कि यह खुदा का कौन सा रंग है।

फिर इसी अख़बार आर्मी न्यूज में इसी स्थान पर लिखा है कि यह घटना

31 मार्च 1907 ई० को जिला जेहलम, तहसील पिण्ड दादन खां, गाँव चक शादी में दिन के समय में लगभग 12 बजे आसमान पर लगभग चार फुट लंबे दो फुट गोल लाल रंग के दूरी 1/2 मील पर दो आग के गोले गिरे और गिरते ही लुप्त हो गए।

पत्रों का नक्शा जो भविष्यवाणियों के बारे में गवाहियों के तौर पर पच्चीस दिन (जो एक भयानक, चौंका देने वाले आकाशीय गोले का निशान प्रदर्शित होने पर आधारित था जो 31 मार्च 1907 ई० को अस्त्र के समय प्रदर्शित हुआ) प्राप्त हुए।

संख्या	पत्रों के भेजने की तारीख	भेजने वाले का नाम	स्थान का नाम	तहसील का नाम	जिला	पत्र के विषय का संक्षेप
1	31 मार्च 1907 ई०	सय्यद अहमद अली शाह सफ़ेद पोश	मालूमही	पिसरूर	सियालकोट	आज 4 बजे शाम दिनांक 31 मार्च 1907 ई० निशाने आसमानी देखा था दक्षिण की ओर से उत्तर की ओर को छोटा सा टुकड़ा आग का मालूम होता है। लगभग दो फुट मुरब्बा जमीन से 1/4 मील ऊँचा, उसके पीछे हरी, लाल, गुलाबी तीन रंग की धुंध के समान और वह धुंध बादलों के रंग के समान हो कर कम हो जाती है और बारिश के समान उसकी तेज आवाज सुनी जाती थी। उस अंगार को पुरुष और स्त्री हिन्दू और ईसाई और मुसलमान इत्यादि सब ने देखा। दो मील गाँव से लगभग उत्तर की ओर गया। आवाज दो तोपों के समान उस में से आई या जैसे दो गोले। फिर देखते देखते लुप्त हो गया। हुजूर की पच्चीस दिन वाली भविष्यवाणी जो 7 मार्च को की गई थी पूरी हो गई क्योंकि 31 मार्च को यह चौंकाने वाला दृश्य देखा गया।

2		सय्यद अब्दुल सत्तार शाह हॉस्पिटल असिस्टेंस	रईया		सियालकोट	इतवार के दिन शाम के साढ़े चार बजे एक आकाशीय निशान अर्थात अंगारा जो बहुत बड़े आकार का था देखा गया जो दक्षिण की ओर से आता और उत्तर की ओर जाता था। हमारे घर के साथ लगे हुए वृक्षों में से गुज़रा। सवा गज़ के लगभग लम्बा आग के समान चमकता अत्यंत भयानक दिखाई दिया। स्त्रियाँ देख कर बहुत डर गईं। वृक्षों पर सफ़ेद चमक थी और हमारी ओर आग के समान था। देखते ही देखते बदल के समान बिलकुल सफ़ेद हो गया फिर धीरे धीरे बहुत ऊँचाई पर चला गया। सोमवार के दिन दूर दूर से ख़बर आई कि बहुत लोगों ने देखा भयानक और डरावना था। यहाँ तक कि एक गाँव में बहुत से व्यक्ति बेहोश हो गए और उनके मूँह में पानी डाला गया तब होश आई। जिस जिस गाँव में देखा गया सब को यही मालूम हुआ कि उनके निकट ही गिरा है 25 दिन वाला इल्हाम पूरा हुआ जिस में लिखा था कि 7 मार्च से 25 दिन तक या पच्चीसवें दिन कोई चौंकाने वाली घटना घटेगी।

3	31 मार्च 1907 ई०	उमरुद्दीन चौधरी		मियांनवाली	सियालकोट	7 मार्च 1907 ई० वाली भविष्यवाणी जिसके प्रकटन के लिए पच्चीस दिन या पच्चीस दिन तक की शर्त थी और जिस में लिखा था कि घटना चौंकाने वाली और भयानक होगी। आज अल्लाह के फ़ज़ल से वह भविष्य-वाणी पूरी हो गई। विनीत कुछ भाइयों के साथ अर्थात् जयान नम्बरदार। फ़ज़ल इलाही ज़मींदार, अली बख़्श ज़मींदार तथा कुछ और लोग मस्जिद के पास बैठे देख रहे थे। अस्त्र का समय था आकाश से एक आग का अंगारा एक मीनार के आकार की आतिशबाज़ी हमारे गाँव से पूर्वी और उत्तरी ओर गिर पड़ा। इतनी तेज़ आग थी कि देखने वालों ने आँखों पर हाथ रख लिए। एक धुएं की धार आसमान पर कुछ समय तक रही। इस भयानक और चौंकाने वाली घटना से सभी आश्चर्यचकित थे। खुदा तआला अपने मामूर पर जो ख़बर प्रदर्शित करता है वह समय पर पूरी हो जाती है।

4	31 मार्च 1907ई०	इनायतुल्लाह रंगेज		चूंडा	सियालकोट	आप को मुबारक हो। अल्लाह का निशान जो 7 मार्च से पच्चीस दिन तक पूरा होने वाला था वह प्रकट हो गया है। 31 मार्च को दिन के चार बजे के समय निम्नानुसार लोगों ने वर्णन किया कि आकाश से एक बहुत प्रकाशमयी लाट निकली फिर देखते ही वह धूआं हो गया फिर बादल बन कर गिरा। गंगा राम अरोड़ा, दीनानाथ, बग्गा खत्री, ठाकुर दास, रहीम बख्श नीलारी, मुंशी डाकखाना चूंडा अब्दुल्लाह ठेकेदार और मैंने स्वयं धुएं की अवस्था में निशान उतरते हुए देखा और मेरा पत्र पहुँचाने वाले राम ने भी देखा था।
5	1 अप्रैल 1907ई०	नबी बख्श पुत्र भोला शाह फ़कीर		बूटर	" "	एक शोला हुजूर की भविष्यवाणी के अनुसार 31 मार्च 1907 ई० को इतवार के दिन चार बजे के समय जो आग का शोला मालूम होता था लगभग दो गज से अधिक लम्बा जिस के तीन रंग लाल, हरा और पीला थे पश्चिम की ओर से निकल कर पूर्व की ओर जा कर लुप्त हो गया। लुप्त होने पर एक बड़ा धूआं उठा, तोप जैसी आवाज़ भी सुनाई दी।

6	" "	बरकत अली सेक्रेटरी मियुन्सिपल कमेटी		क्रिला सोभा सिंह	" "	कल पांच बजे के करीब एक आसमानी रहस्य देखा गया दूर दराज तक इसकी प्रसिद्धि भी होगी यह एक आकाशीय निशान है जो खुदा तआला की भविष्यवाणी के अनुसार 25 दिन के अन्दर प्रदर्शित हुआ। क्योंकि 7 मार्च 1907 ई० से जब यह भविष्यवाणी की गई 31 मार्च तक 25 दिन पूरे हो गए थे। अतः भविष्यवाणी के अनुसार यह चौंकाने वाली घटना 31 मार्च को प्रकट हुआ। अलहम्दोलिल्लाह
7	" "	मुहम्मद अली शाह सय्यद अध्यापक		सय्यदानवाली	" "	31 मार्च 5 बजे के करीब एक भयानक और आग का शोला दक्षिण से पूर्व की ओर तेजी से जाता हुआ दिखाई दिया। अलहम्दोलिल्लाह वह भविष्य- वाणी पूरी हो गई जिस में लिखा था कि 7 मार्च 1907 ई० से पच्चीस दिन तक या पच्चीसवें दिन कोई चौंकाने वाली घटना प्रकट होगी।
8	" "	मुहम्मदुद्दीन अपील नवीस		सियालकोट	" "	कल लगभग साढ़े तीन बजे शोला आकाश से आता हुआ दिखाई दिया। ज़मीन और आसमान के मध्य एक स्तंभ देर तक दिखाई दिया। और खुदा ने वह भविष्यवाणी पूर्ण की जिसमें लिखा था कि 31 मार्च तक या मार्च के इक्की- सवें दिन कोई चौंका देने वाली घटना प्रकट होगी।

9	" "	सय्यद मुहम्मद कलर्क नेहर विभाग	" "	" " " "	" "	कल अस्त्र के समय उल्का टूटा। खुदा ने वह भविष्यवा- णी पूरी की जिस में बताया गया था कि अवश्य 31 मार्च को या 31 मार्च तक कोई चौंकाने वाली घटना सामने आएगी।
10	" "	मुहम्मद रमजान		गोलीकी	गुजरात	आग के अंगारे से 31 मार्च वाली भविष्यवाणी पूरी हुई।
11	" "	अता इलाही बाबू		लाला मूसा	" "	चौंकाने वाली घटना आसमानी अंगारे ने 31 मार्च वाली भविष्यवाणी पूरी कर दी।
12	31 मार्च 1907 ई.	मियां साहिब दीन इमाम मस्जिद		तिहाल	" "	31 मार्च 1907 ई० को दिन के चार बजे के लगभग आप के इल्हाम के अनुसार एक आश्चर्यचकित करने वाली घटना सामने आई अर्थात् आसमान पर एक अंगारा प्रकट हुआ जिसको देखते ही हजारों आदमी आश्चर्य में पड़ गए।
13	1 अप्रैल 1907 ई०	कर्मदीन अध्यापक		ढंगा	" "	खास ढंगा और ढंगा के आस पास एक आग का शोला जमीन पर गिरा। शोले की गति आसमान पर उत्तर पूर्व की ओर थी। यह घटना 31 मार्च की है इस से हुजूर की भविष्यवाणी बड़ी स्पष्टता से पूर्ण हो गई क्योंकि 31 मार्च तक भविष्यवाणी की अवधि थी।

14	" "	मुहम्मद फ़ज़ल अर्रहमान		हीलान	" "	31 मार्च शाम के चार बजे आग के गोले जो आदमी के सिर के समान थे और दो या अढ़ाई गज की उनकी दुमें थीं अत्यंत ज्वलंत आकाश से पृथ्वी की ओर गिरते हुए दिखाई दिए। अत्यंत भयानक और चौंकाने वाला दृश्य था बहुत से व्यक्ति भय के कारण स्तब्ध रह गए और बहुत से बेहोशी की अवस्था में चले गए जो देर बाद होश में आए। और इस से हुजूर की भविष्यवाणी स्पष्ट रूप से पूर्ण हो गई।
15	" "	निज़ामुद्दीन		अद्रहमा	शाहपुर	31 मार्च अस्त्र के समय आकाश बिलकुल साफ़ था सहसा एक शोला आकाश पर प्रदर्शित हुआ और आग के चिन्गारे गिरते हुए दिखाई दिए। क्योंकि पहले से हुजूर प्रकाशित कर चुके थे कि 31 मार्च या 31 मार्च तक कोई चौंकाने वाली घटना प्रकटन में आएगी इसलिए यह भविष्यवाणी ऐसी स्पष्ट है कि कोई इस को रद्द नहीं कर सकता।
16	" "	गुलाम मुहम्मद जट		गोलीके	गुजरात	31 मार्च को आकाश पर भयानक शोला देखा गया भविष्यवाणी स्पष्टता से पूर्ण हुई।
17	" "	नूरुद्दीन		खारियां	" "	मुबारक हो 31 मार्च वाली भविष्यवाणी आग का भयानक शोला, स्पष्ट रूप से प्रकट हो गई।

18	" "	मीरां बख्श अध्यापक		शेखपुरा	" "	31 मार्च 1907 ई० को अस्त्र के समय एक आग का गोला आकाश से गिरा। सब को उत्तर पूर्व की ओर से दिखाई दिया। 31 मार्च वाली भविष्यवाणी स्पष्टता से पूर्ण हुई।
19	" "	गुलाम क्रादिर		हंबुजल	" "	" "
20	" "	मुहमदुद्दीन अध्यापक		किकराली	" "	31 मार्च को नमाज़े ज़ोहर के बाद भयानक और आश्चर्यचकित करने वाला आग का शोला हजारों लोगों ने देखा। इस से पच्चीस दिन वाली भविष्यवाणी अत्यंत स्पष्टता से पूर्ण हो गई।
21	" "	गुलाम रसूल		लंगाह	" "	" "
22	" "	अहमद दीन मूर		शादीवाल	" "	31 मार्च को एक भयानक आग का दृश्य दिखाई दिया और इस गाँव के लोगों ने इस अवस्था को देख कर रात को समस्त गाँव में ढिंडोरा पिटवाया कि दिन को समस्त लोग एक खुले मैदान में इकट्ठे हो कर नफ़िल (नमाज़) पढ़ें और इस प्रकार 31 मार्च की भविष्यवाणी के समस्त लोग गवाह हुए हैं।
23	1 अप्रैल 1907 ई०	सुल्तान अली नम्बरदार		खोखर	गुजरात	31 मार्च को आग का अत्यंत भयानक दृश्य आकाश पर देखा गया सुबहान अल्लाह कैसी सफाई से भविष्यवाणी पूरी हुई।

24	" "	शेख इलाही बख्श पुस्तक व्यापारी		गुजरात	गुजरात	31 मार्च 1907 ई० समय दिन के 3 बजे एक आग का टुकड़ा ज़मीन की ओर गिरता हुआ दिखाई दिया। शहर में चर्चा हुई। लाल वारी, मुईनुद्दीन पुर, जलालपुर इत्यादि से पूछने पर पता चला कि यह घटना सब जगह हुई और 31 मार्च वाली भविष्यवाणी स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हुई।
25	31 मार्च 1907ई०	चौधरी मुहम्मद अब्दुल्लाह खान नम्बरदार		बेहलूलपुर चक 127	लाएलपुर	खुशखबरी और मुबारकबादी हो कि आकाशीय शोले से 31 मार्च वाली भविष्यवाणी पूरी हो गई।
26	" "	" "		" "	" "	दोबारा कार्ड के माध्यम से लिखा कि 31 मार्च वाली भविष्यवाणी पूरी हो गई।
27	" "	अब्दुल मजीद		माधोपुर	कांगड़ा	बश्रह सदर " "
28	1 अप्रैल 1907ई०	अब्दुल करीम हेड गार्ड		कीने	कांगड़ा	एक चौंकाने वाले और भयानक अंगारे ने जो आकाश पर प्रदर्शित हुआ। 31 मार्च वाली भविष्यवाणी की सच्चाई स्पष्ट रूप से प्रदर्शित कर दी।
29	2 अप्रैल 1907 ई०	सय्यद मुहम्मद शाह नवाज़		फ़िरोज़पुर छावनी	फ़िरोज़पुर	31 मार्च वाली भविष्यवाणी इस अंगारे ने सिद्ध कर दी जो 31 मार्च को देखा गया।

30	" "	मौलवी मुहम्मद फ़ज़ल चंगवी		चंगा	रावलपिंडी	31 मार्च वाली भविष्यवाणी उस शोले के प्रकट होने से जो 31 मार्च को देखा गया बड़ी स्पष्टता से सिद्ध हुई। सौ सौ वर्ष के बूढ़े कहते हैं कि हम ने ऐसी घटना कभी नहीं देखी।
31	" "	वारिस अली खान		कौरम गूजर	" "	जिस निशान का 31 मार्च को पूरा होने के वादा दिया गया था वह आकाशीय शोले से पूरा हो गया जो बहुत डराने वाला और चौंकाने वाला था जो देखने और सुनने से उच्चतर था।
32	" "	अब्दुल मजीद खान नाएब मोहतमिम अस्तबल		कपूरथला	कपूरथला	जो एक आश्चर्यचकित करने वाली घटना की खबर दी गई थी कि 31 मार्च 1907 ई० को प्रदर्शित होगा, वह भविष्यवाणी एक आकाशीय शोले के उत्पन्न होने से पूरी हो गई जो 31 मार्च को आकाश पर प्रकट हुआ। बहुत से व्यक्ति उसको देख कर बेहोश हो गए और कुछ सज्दे में गिर गए।
33	" "	इनयातुल्लाह अहमदी		भूचाल कलां	जेहलम	मुबारक हो कि वह निशान जिसकी 31 मार्च को प्रदर्शित होने की खबर दी गई थी एक आकाशीय शोले के प्रकटन से पूरा हो गया जिसका एक आश्चर्यपूर्ण दृश्य था।
34	1 अप्रैल 1907 ई०	हयात मुहम्मद पोलिस कांस्टेबल		जेहलम	जेहलम	इस बात से बड़ी प्रसन्नता हुई कि जिस निशान के बारे में यह खबर दी गई थी कि 31 मार्च या मार्च के इकत्तीसवें दिन पूरा होगा वह निशान आकाशीय शोले के प्रकटन से जाहिर हो गया।

35	" "	कर्मदाद अहमदी		दवालमियाल	जेहलम	हुजूर को हजार मुबारक 31 मार्च वाली भविष्यवाणी पूर्ण स्पष्टता से पूरी हुई। शाम के निकट 31 मार्च को आकाश पर एक भयावह आग दिखाई दी जिसने ईमान में वृद्धि की।
36	31 मार्च	मुहम्मद जान शेख		वज्जीराबाद	गुजरांवाला	हुजूर को मुबारक हो। 31 मार्च में जो एक चौंकाने वाली घटना की खबर दी गई थी वह घटना 31 मार्च को प्रकटन में आ गई। और एक आश्चर्य में डालने वाली आग आकाश पर देखी गई।
37	1 अप्रैल 1907 ई०	जीवन खान भट्टी		" "	" "	मुबारक हो 31 मार्च वाली भवि- ष्यवाणी पूरी हुई हजारों व्यक्तियों ने 31 मार्च को आकाशीय शोला देखा।
38	3 अप्रैल 1907 ई.	फ़ज़ल इलाही ओवेर्सियर डाक लाइन		गुरदासपुर	गुरदासपुर	31 मार्च वाली भविष्यवाणी पूरी हो गई और इस सितारे की चमक से एक व्यक्ति गुरदासपुर के तालाब में जो साथ की तहसील है डूब गया। बाजारों और गाँव गाँव में इस इल्हाम का चर्चा है।
39	2 सदर	शेख रहीम बख्श पुस्तक व्यापारी		जम्मू	जम्मू	बड़ी स्पष्टता से 31 मार्च वाली भविष्यवाणी पूरी हो गई आकाशीय शोले को एक दुनिया ने देखा।
40	31 मार्च	शेख मुहम्मद तैमूर छात्र		" "	" "	खुदा का शुक्र है कि 31 मार्च वाली भविष्यवाणी बड़ी स्पष्टता से पूरी हुई और जैसा कि बयान किया गया था 31 मार्च को एक भयानक और चौंकाने वाला शोला आकाश पर प्रकट हुआ।

41	1 अप्रैल 1907 ई०	रहमतुल्लाह अहमदी		बंगा	होशियारपुर	31 मार्च को न केवल अग्नि का गोला दिखाई दिया अपितु कुछ स्थानों पर काली बूंदों की वर्षा हुई। भविष्यवाणी पूरी हो गई मुबारक हो।
42	2 अप्रैल 1907 ई.	सय्यद अमीर अली शाह साहिब		जलालाबाद	फीरोज़पुर	31 मार्च को आकाश पर एक भयानक आग दिखाई दी जिसको हजारों इंसानों ने देखा खुदा की भविष्यवाणी जैसा कि बयान किया गया था, पूरी हो गई।
43	1 अप्रैल 1907 ई.	निजामुद्दीन		जूड़ा	लाहौर	मुबारक हो हुजूर की भविष्यवाणी बड़ी स्पष्टता से पूरी हो गई। 31 मार्च को जिस में एक भयानक और आश्चर्यपूर्ण घटना के प्रकटन के बारे में खबर दी गई थी आग का शोला प्रकट हुआ। जो अत्यंत भयानक था।
44	2 अप्रैल 1907 ई०	मुहम्मद इस्माईल		बेदादपुर	" "	मुबारक हो वह भविष्यवाणी पूरी हो गई जिस के बारे में यह खबर दी गई थी कि 31 मार्च को एक भयानक और आश्चर्यपूर्ण घटना प्रकटन में आएगी। अतः वह घटना यही थी कि आकाश पर एक शोला देखा गया।
45	1 अप्रैल 1907 ई०	मुहम्मद अली अध्यापक		तलवंडी मूसा खान	सियालकोट	31 मार्च के बारे में जो भविष्य-वाणी थी स्पष्टता से पूरी हो गई हर एक जबान इक्रार करती है कि आकाशीय शोला जो 31 मार्च को प्रकटन में आया उस से भविष्यवाणी की सच्चाई सिद्ध हो गई।
46	5 अप्रैल 1907 ई.		सय्यद कासिम शाह	मुईनुद्दीनपुर	गुजरात	तस्दीक बश्रह सदर " "
47	3 अप्रैल 1907 ई.		अब्दुल्लाह हकीम	राहूं	जालंधर	" आसमां ऐ गाफिलो अब आग बरसाने को है

48	3 अप्रैल 1907 ई.		अब्दुल अजीज़	दरगाही वाला	गुजरांवाला	" "
49	3 अप्रैल 1907 ई.		मियां मुहम्मद दीन	सियालकोट	" "	" "
50	3 अप्रैल 1907 ई.		गुलाम अहमद	किर्याम	" "	" "
51	3 अप्रैल 1907 ई.		मुहम्मद हुसैन क्लार्क	आदवारे	गुजरांवाला	" "
52			इनायत - उल्लाह	कुंजाह	गुजरात	" "

अखबार सिविल एन्ड मिलिट्री गज़ट लाहौर से अनुवाद दिनांक 6 अप्रैल 1907 ई०

एक अँगरेज़ संवादाता सिविल एन्ड मिलिट्री गज़ट की ओर लिखता है कि जनाब इतवार की शाम को चार या पांच बजे के मध्य मैंने डलहोज़ी से उत्तरी ओर एक ऐसा ही उल्का देखा जैसा आप के अखबार दिनांक 3 अप्रैल से ज्ञात होता है कि इसी दिन और इसी समय लाहौर में देखा गया था एक हाथी की सूंड के अकार का धुएँ का स्तंभ जिस का बारीक भाग नीचे की ओर था, डलहोज़ी से कोई बीस मील की दूरी पर गिरता हुआ दिखाई दिया। उसकी ऊँचाई डलहोज़ी से बुलंद थी और उसकी चमक से पहाड़ की बर्फ पीले रंग की हो गई थी। यह घटना ऐसी आश्चर्यचकित थी कि मैं दूरबीन ले कर उसे अधिक बल से देखने लगा। पहले मैंने सोचा कि जंगल में कहीं आग लग गई है और यह उसका धूँआ है परन्तु तुरंत मुझे यह विचार आ गया कि इस मौसम में जंगल में आग नहीं लग सकती और इसके अतिरिक्त जंगल की आग का धुआं केवल एक स्थान से नहीं उठा करता अपितु बहुत स्थानों से उठता है यह कुदरत के दृश्य पंजाब में तीन स्थानों पर हुए जिस से यह परिणाम निकलता है कि वह शोला एक न था अपितु बहुत से शोलों

की बौछार थी और प्रत्येक उल्का के साथ बहुत से छोटे टुकड़े थे जो किसी ने नहीं देखे (2) बहुत से पत्रों से जो हमारे पास आए हैं ज्ञात होता है कि गुजरे हुए इतवार को आग का शोला पटियाला से जेहलम तक देखा गया था। एक संवादाता लिखता है कि जम्मू में उसके साथ एक तोप जैसी आवाज़ थी, कपूरथला से एक साहिब लिखते हैं कि ज़मीन से आकाश तक एक आग का स्तंभ दिखाई देता था जिस से उस घटना पर रौशनी पड़ती है जो याक़ूब की सीढ़ी के बारे में कही जाती है। रय्या में 4 व्यक्ति भयभीत हो कर बेहोश हो गए।

चमकता हुआ निशान

नंबर 198

बाबु इलाही बख़्श अकाउंटेंट पेंशेनर लाहौर झूठा मूसा मर गया

पाठकगण! आप लोगों को ज्ञात होगा कि एक व्यक्ति इलाही बख़्श नामी जो लाहौर में अकाउंटेंट था वह इस ज़माने में जबकि मैं ने ख़ुदा तआला से वह्यी पा कर इस बात को ज़ाहिर किया कि मैं मसीह मौऊद हूँ मेरे विरुद्ध हो कर इस बात का मुद्दई हुआ कि मैं मूसा हूँ। इस बात का विवरण यह है कि इलाही बख़्श लम्बे समय से मेरे साथ श्रद्धा भाव रखता था और बहुत बार क़ादियान में आया करता था। और मुझे ख़ुदा तआला की ओर से सच्चा मुल्हम (ख़ुदा से इल्हाम पाने वाला) समझता था और सेवा करता था। कई बार ऐसा संयोग हुआ कि प्रातः काल नमाज़ के बाद अमृतसर में मैं सोया हुआ था और मेरे मूँह पर चादर थी। तब एक व्यक्ति आया और उसने मेरे पाँव दबाने आरंभ कर दिए। जब मैंने चादर उठा कर देखा तो वही इलाही बख़्श था। इस लेख से उद्देश्य यह है कि इस सीमा तक उसका शिष्टाचार पहुँच गया था कि किसी प्रकार की सेवा से वह पीछे नहीं हटता था और अत्यंत विनम्रता से स्वयं को सामान्य सेवकों की भांति समझता था और अपने सामर्थ्य अनुसार धन के द्वारा सेवा करने में भी पीछे नहीं हटता

था। जब तक खुदा ने चाहा वह इसी श्रद्धा भाव की अवस्था में रहा और मुझे बहुत आशा थी कि वह अपने श्रद्धा भाव में बहुत उन्नति करेगा। और जब मैं क़ादियान से किसी आयोजन के लिए लुधियाना, अंबाला या किसी और स्थान पर जाता था तो सामर्थ्य और समय होने की शर्त पर उसी स्थान पर पहुँचता था और अधिकतर उसका मित्र मुंशी अब्दुल हक़ अकाउंटेंट भी उसके साथ होता था। फिर उसको कुछ समय के बाद यह विचार आया कि मुझ को इल्हाम होता है और यही एक **विषैला बीज** था जो प्रारब्ध ने उस में बो दिया। फिर इस के बाद अंदर ही अंदर उसके श्रद्धा भाव में कुछ परिवर्तन होता गया और फिर जिस युग में खुदा तआला ने मुझे लोगों से बैअत लेने के लिए मामूर किया और लगभग चालीस आदमी या कुछ अधिक बैअत में दाखिल हुए और सामान्य रूप से खुदा तआला के आदेशानुसार प्रत्येक को सुनाया कि जो व्यक्ति श्रद्धा रखता है वह बैअत में दाखिल हो तब इस बात को सुनते ही इलाही बख़्श का दिल बिगड़ गया और वह कुछ समय पश्चात अपने मित्र मुंशी अब्दुल हक़ से साथ क़ादियान में मेरे पास आया, इस उद्देश्य से कि ताकि मुझे अपने इल्हाम सुनाए और अब की बार उसके स्वभाव में इतनी अधिक कठोरता थी कि मानो वह कोई और ही था इलाही बख़्श नहीं था। उसने बेबाकी से अपने इल्हाम सुनाने आरंभ किए और वे एक छोटी सी नोटबुक में लिखे हुए थे जो उसकी जेब में थी। उसने सुनाया कि स्वप्न में मैंने देखा है कि आप मुझे कहते हैं कि मेरी बैअत करो। उस स्वप्न के कारण वह सिर से पाँऊँ तक घमंड और अहंकार से भर गया और समझा कि मैं ऐसा प्रतिष्ठित हूँ कि मुझे बैअत की आवश्यकता नहीं अपितु उन को मेरी बैअत करनी चाहिए परन्तु वास्तव में यह शैतानी विचार था जो उसकी ठोकर का कारण हुआ। बात यह है कि जब मनुष्य के हृदय में घमंड और इंकार छुपा हुआ होता है तो वही इंकार काल्पनिक रूप से स्वप्न में प्रदर्शित हो जाता है और एक अज्ञानी समझता है कि यह खुदा की ओर से है यद्यपि वह इंकार केवल अपने छुपे हुए विचारों से उत्पन्न होता है खुदा से उसका कोई संबंध नहीं होता। अतः सैंकड़ों मूर्ख सिर्फ इस मानसिक विचार से

तबाह हो जाते हैं। अतः इलाही बख्श ने अत्यंत शोखी और साहस से वह स्वप्न मुझ को सुनाया और मुझ को उसकी मूर्खता पर खेद होता था क्योंकि मैं निस्संदेह जानता था कि जो स्वप्न वह मुझ को सुना रहा है वह केवल मानसिक विचार है परन्तु चूंकि मैंने उसके हृदय में अहंकार महसूस किया और घमंड और स्वार्थ के चिन्ह देखे और उसकी बातों में चालाकी पाई गई इसलिए मैंने उसको नसीहत के तौर पर कुछ कहना व्यर्थ समझा। यह खेद का स्थान है कि अधिकतर लोग प्रत्येक बात को जो तंद्रा अवस्था में उनकी ज़बान पर जारी होती है ख़ुदा की वाणी ठहराते हैं और इसी प्रकार कुरआने करीम की आयत

(बनी इस्राईल : 37) وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ

के नीचे स्वयं को दाखिल कर देते हैं और याद रखना चाहिए कि यदि कोई बात ज़बान पर जारी हो और अल्लाह के कथनों और रसूल के कथनों के विरुद्ध भी न हो तब भी वह ख़ुदा की वाणी नहीं कहला सकती जब तक ख़ुदा तआला का काम उस पर गवाही न दे क्योंकि दुष्ट शैतान जो मनुष्य का दुश्मन है जिस प्रकार दूसरे तरीकों से मनुष्य को हलाक करना चाहता है उसी प्रकार उस गुमराह का एक यह भी तरीका है कि अपने विचार मनुष्य के हृदय में डाल कर उसको यह विश्वास दिलाता है कि जैसे वह ख़ुदा की वाणी है और ऐसे व्यक्ति का परिणाम अंततः तबाही होता है।

अतः जिस पर कोई वाणी अवतरित हो जब तक तीन चिन्ह उस में न पाई जाएं उसको ख़ुदा की वाणी कहना स्वयं को हलाकत में डालना है।

प्रथम : वह बात कुरआने करीम के विरुद्ध न हो परन्तु यह चिन्ह बिना तीसरे चिन्ह के जो नीचे लिखा जाएगा, व्यर्थ है अपितु यदि तीसरा चिन्ह न हो तो केवल इस चिन्ह से कुछ भी सिद्ध नहीं हो सकता।

द्वितीय : वह वाणी ऐसे व्यक्ति पर अवतरित हो जिसकी अन्तरआत्मा अच्छी तरह से पवित्र हो चुकी हो और वह उन अमर लोगों में सम्मिलित हो जो निजी इच्छाओं से पूर्णतः पृथक हो गए हैं और उनके अस्तित्व पर ऐसी मौत आ चुकी

है जिसके द्वारा वह खुदा के निकट और शैतान से दूर हो गए हैं क्योंकि जो व्यक्ति जिसके निकट है उसी की आवाज़ सुनता है अतः जो शैतान के निकट है वह शैतान की आवाज़ सुनता है और जो खुदा के निकट है वह खुदा की आवाज़ सुनता है और अंतिम प्रयास मनुष्य का खुद को पवित्र करना है और इस पर समस्त प्रयास समाप्त हो जाता है और दूसरे शब्दों में यह एक मौत है जो समस्त आंतरिक कमज़ोरियों को जला देती है। फिर जब मनुष्य अपनी साधना समाप्त कर लेता है तो खुदा की क्रिया की बारी आती है तब खुदा अपने उस बन्दे को जो अपने अस्तित्व की इच्छाओं को मार कर फ़ना के दर्जे तक पहुँच चुका है, आध्यात्म ज्ञान और प्रेम के जीवन से दोबारा जीवित करता है और अपने विलक्षण निशानों से आध्यात्मिक चमत्कारों की उसको यात्रा करवाता है और स्वयं से प्रेम करवाने का आकर्षण जो इस संसार से परे है उसके हृदय में भर देता है जिस को दुनिया समझ नहीं सकती। इस अवस्था में भी कहा जाता है कि उसको नया जीवन प्राप्त हो गया जिसके बाद मौत नहीं।

अतः यह नया जीवन पूर्ण आध्यात्म ज्ञान और पूर्ण प्रेम से मिलता है और पूर्ण आध्यात्म ज्ञान खुदा के विलक्षण निशानों से प्राप्त होता है और जब मनुष्य इस सीमा तक पहुँच जाता है तब उसको खुदा का सच्चा वार्तालाप प्राप्त होता है। परन्तु यह चिन्ह भी बिना तीसरे दर्जे के संतोषजनक नहीं क्योंकि पूर्ण पवित्रता एक गुप्त बात है इसलिए प्रत्येक व्यर्थ बात करने वाला ऐसा दावा कर सकता है।

तीसरा चिन्ह सच्चे इल्हाम पाने वाले का यह है कि जिस बात को वह खुदा की ओर संबद्ध करता है खुदा के निरंतर कार्य उस पर गवाही दें अर्थात् उसके समर्थन में इतने निशान प्रदर्शित हों कि सद्बुद्धि इस बात को वर्जित समझे कि इतने अधिक निशानों के बाद फिर भी वह खुदा की वाणी नहीं। और यह चिन्ह वास्तव में समस्त चिन्हों से बढ़ कर है क्योंकि संभव है कि कोई बात जो किसी की ज़बान पर जारी हो या किसी ने इल्हाम के दावे में प्रस्तुत किया हो वह अपने अर्थों के अनुसार कुरआने करीम के वर्णन के विरुद्ध न हो अपितु उसके अनुसार

हो परन्तु फिर भी वह किसी झूठे का बनाया हुआ झूठ हो क्योंकि एक बुद्धिमान जो मुसलमान है परन्तु झूठा है अवश्य इस बात का सम्मान रख लेगा कि कुरआने करीम के बारे में कोई बात इल्हाम के दावे के रूप में प्रस्तुत न करे अन्यथा अकारण लोगों के ऐतराजों का निशाना हो जाएगा। और इसी प्रकार यह भी संभव है कि वह वाणी उसका अपना मानसिक विचार हो अर्थात् मन की ओर से एक बात ज़बान पर जारी हो जैसे कुछ बच्चे दिन के समय जो पुस्तकें पढ़ते हैं रात को कई बार वही शब्द उनकी ज़बान पर जारी होते हैं। अतः किसी बात को जो इल्हाम के दावे के रूप में प्रस्तुत की गई हो कुरआने मजीद के अनुसार होना इस बात पर अकाट्य तर्क नहीं है कि वह अवश्य ख़ुदा की वाणी है। क्या संभव नहीं कि एक वाणी अपने अर्थों की दृष्टि से ख़ुदा की वाणी के विरुद्ध भी न हो और फिर वह किसी झूठे का झूठ भी हो क्योंकि एक झूठा बड़ी आसानी से यह कार्रवाई कर सकता है कि वह कुरआने करीम की शिक्षा अनुसार एक बात प्रस्तुत करे और कहे कि यह ख़ुदा की वाणी है जो मुझ पर अवतरित हुई है और या ऐसा कलाम (वाणी) स्वयं निर्मित हो सकता है या शैतानी कलाम हो सकता है।

ऐसा ही यह दूसरी शर्त भी अर्थात् यह कि जो इल्हाम का दावा करे वह अस्तित्व को पवित्र कर चुका हो, संतोषजनक नहीं अपितु एक गुप्त बात है और बहुत से अपवित्र स्वभाव के लोग इस बात का दावा कर सकते हैं कि हमारा नफ़स (अस्तित्व) पवित्र हो चुका है और हम ख़ुदा से सच्चा प्रेम रखते हैं। अतः यह बात भी कोई आसान बात नहीं है कि इस में अति शीघ्र सच्चे और झूठे में निर्णय किया जाए। यही कारण है कि कई दुष्ट आचरण के लोगों ने उन प्रतिष्ठित लोगों पर जो नफ़स को पवित्र कर चुके थे अपवित्र लांछन लगाए हैं जैसा कि आजकल के पादरी हमारे सय्यदो मौला आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर लांछन लगाते हैं और नऊज़ुबिल्लाह (हम अल्लाह की शरण चाहते हैं) कहते हैं कि आप तामसिक इच्छाओं का अनुसरण करते थे जैसा कि उनकी हज़ारों पत्रिकाओं और अख़बारों और पुस्तकों में ऐसे लांछन पाओगे। ऐसा ही यहूदी लोग

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर भिन्न-भिन्न प्रकार के लांछन लगाते हैं। अतः थोड़ा समय हुआ कि मैंने एक यहूदी की पुस्तक देखी जिसमें न केवल यह अपवित्र आरोप था कि नऊजुबिल्लाह हज़रत ईसा का जन्म अवैध रूप से हुआ है अपितु आप के चाल-चलन पर भी अत्यन्त गंदे आरोप लगाए थे और जो आपकी सेवा में कुछ स्त्रियाँ रहती थीं उनका बहुत बुरे ढंग से वर्णन किया था। अतः जबकि दुष्ट चरित्र शत्रुओं ने ऐसे पवित्र आचरण और पवित्र लोगों को लोभी ठहरा दिया और नफ़स की पवित्रता से रिक्त समझा तो इससे प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि नफ़स की पवित्रता का दर्जा शत्रुओं पर प्रदर्शित हो जाना कितना कठिन है। अतः आर्य लोग ख़ुदा तआला के समस्त नबियों को केवल धूर्त और लोभी ठहराते हैं और उनका समय धूर्तता और छल-कपट का समय ठहराते हैं।

परंतु यह तीसरा चिन्ह जो इल्हाम और वह्यी के साथ जो एक कथन है उसके साथ ख़ुदा की एक क्रिया भी हो। यह ऐसा पूर्ण चिन्ह है कि कोई इसको तोड़ नहीं सकता। यही चिन्ह है जिससे ख़ुदा के सच्चे नबी झूठों पर विजयी होते रहे हैं क्योंकि जो व्यक्ति दावा करे कि मुझ पर ख़ुदा की वाणी अवतरित होती है फिर उसके साथ सैकड़ों निशान प्रदर्शित हों और हज़ारों प्रकार की ख़ुदा की सहायता और उसका समर्थन साथ हो और उसके दुश्मनों पर ख़ुदा के स्पष्ट हमले हों फिर किस का साहस है कि ऐसे व्यक्ति को झूठा कह सके। परंतु खेद कि दुनिया में बहुत से ऐसे लोग भी हैं कि इस बला में फस जाते हैं कि कोई स्वयं निर्मित बात अथवा शैतानी बात उनके समक्ष आ जाती है तो उसको ख़ुदा की वाणी समझ लेते हैं और क्रियात्मक गवाही की कुछ परवाह नहीं रखते।

हां यह भी संभव है कि किसी को कभी कोई सच्चा स्वप्न आ जाए या सच्चा इल्हाम हो जाए परंतु वह केवल इतने से मामूर मिनल्लाह (अल्लाह का अवतार-अनुवादक) नहीं कहला सकता और न यह कह सकते हैं कि वह नफ़स के अंधकारों से पवित्र है अपितु इतने अधिक रोया (सच्चे स्वप्न) और इल्हामों में लगभग समस्त दुनिया सम्मिलित है और यह कुछ भी चीज़ नहीं और यह तत्व

कभी-कभी स्वपन या इल्हाम होने का केवल इसलिए मनुष्यों के स्वभाव में रखा गया है ताकि एक बुद्धिमान व्यक्ति खुदा के चुने हुए रसूलों से द्वेष न रख सके और समझ सके कि वह्यी और इल्हाम का हर एक मनुष्य के स्वभाव में बीज डाला गया है फिर इसकी पूर्ण उन्नति से इनकार करना मूर्खता है।

लेकिन वे लोग जो खुदा के निकट मुलहम और मुकल्लम (जिस से खुदा का वार्तालाप हो) कहलाते हैं और मुकालमा और मुखातबा (अर्थात् खुदा से वार्तालाप करने) का सौभाग्य रखते हैं और सृष्टि को सद्मार्ग की ओर बुलाने के लिए अवतरित होते हैं उनके समर्थन में खुदा तआला के निशान बारिश के समान बरसते हैं और दुनिया उसका मुक्राबला नहीं कर सकती और खुदा की करनी अपनी अधिकता के साथ गवाही देती है कि जो कलाम वे प्रस्तुत करते हैं वह खुदा का कलाम है। यदि इल्हाम का दावा करने वाले इस चिन्ह को दृष्टिगत रखते तो वे इस उपद्रव से बच जाते।

ऐसा ही यदि इलाही बख्श इस मामले में कुछ सोचता कि उसके समर्थन में खुदा तआला के निशान कितने अधिक प्रदर्शित हुए और कितना अधिक उसका समर्थन और सहायता हुई और सामान्य लोगों पर उसको क्या श्रेष्ठता दी गई है तो वह इस बला में ग्रसित न होता। अब बड़े खेद से कहना पड़ता है कि वह अपनी मौत के बाद एक पहाड़ झूठ का छोड़ गया। मेरे बारे में वह यह इल्हाम प्रस्तुत करता था कि मेरे जीवन में यह व्यक्ति प्लेग से मारा जाएगा और उसकी समस्त जमाअत बिखर जाएगी अतः उसने देख लिया कि वह स्वयं प्लेग से मारा गया और उसका दावा था कि वह नहीं मरेगा जब तक वह मेरा इस्तीसाल ल कर ले परन्तु उसने अपनी आँखों से देख लिया कि उसके झूठे इल्हाम के बाद कई लाख तक मेरी जमाअत पहुँच गई। जब ऐसे इल्हाम उसने प्रकाशित करने आरंभ किए उस समय तो मेरी जमाअत चालीस व्यक्तियों से अधिक न थी और बाद में चार लाख तक पहुँच गई और वह नहीं मरा जब तक उसने अपनी पराजय प्रत्येक ओर से न देख ली और मेरी सफलता न देख ली और वह अपने झूठे

इल्हामों के द्वारा प्रत्येक मुकद्दमे में जो मेरे पर दाएर होता था यही विचार करता था कि मैं दंडित हो कर भयानक अज़ाब में पड़ जाऊँगा। और ऐसे ही उसको इल्हाम होते थे जिन को वह अपने दोस्तों में प्रकाशित करता था परन्तु खुदा तआला प्रत्येक मुकद्दमे में मुझे सम्मानपूर्वक बरी करता गया। और अत्यंत अपमान के साथ उसको मौत आई। अतः इसमें कोई संदेह नहीं कि जब उसको प्लेग हो गई और मौत को उसने अपने सामने देख लिया। तब उसने अपने समस्त इल्हामों को शैतानी विचार समझा होगा और उस समय उसको अपने बारे में याद आया होगा कि मैं ग़लती पर था। यह बात बिल्कुल बुद्धि के विपरीत और समझ से परे है कि वह इतनी ठोकरें खा कर और वह प्लेग जो मेरी ओर संबद्ध करता था उसमें खुद को ग्रस्त देख कर मेरी सफलताओं को अपने अंतिम क्षणों में कल्पना में ला कर फिर भी वह अपनी पहली अवस्था में स्थापित रहा हो। जब उसको याद आता होगा कि मैंने मूसा होने का दावा किया था और अपनी पुस्तक का नाम असा-ए-मूसा रखा था और यह आशा की थी कि यह असा (डंडा) उस व्यक्ति को हलाक कर देगा जो मसीह मौऊद का दावा करता है और जब उसको याद आता होगा कि मैंने उस व्यक्ति के बार में जो मसीह मौऊद का दावा करता है अपनी पुस्तक असा-ए-मूसा में भविष्यवाणी की थी कि वह मेरे जीवन में प्लेग से मरेगा और जब उसको याद आता होगा कि मैंने इसी पुस्तक में भविष्यवाणी की थी कि मैं नहीं मरूँगा जब तक अपने इस शत्रु को नष्ट न कर लूँ। तो प्रत्येक व्यक्ति सोच सकता है कि इस अवस्था में जबकि प्लेग ने उसको पकड़ा कि कितनी अधिक पीड़ा और निराशा उसको होती होगी। कौन विश्वास कर सकता है कि इतने अपमान के बाद और उसकी यह बात खुल जाने के कि उसके समस्त इल्हाम झूठे निकले फिर भी प्लेग होने के समय उसको अपने मूसा होने पर विश्वास था? नहीं नहीं कदापि नहीं अपितु प्लेग ने उसके समस्त विचारों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया होगा और सूचित कर दिया होगा कि वह ग़लती पर था। अतः इस घटना से बहुत पहले मेरे खुदा ने प्रदर्शित किया था कि वह उन दुष्ट

विचारों पर स्थापित नहीं रहेगा और अंततः उन विचारों को छोड़ देगा। अतः इस में संदेह नहीं कि जब उसको अचानक प्लेग और असमय मौत का दृश्य प्रस्तुत हुआ जिसको वह अच्छी तरह जानता था कि यह असमय और मेरे दावे के विरुद्ध है तो निस्संदेह उस दृश्य ने उसको याद दिलाया होगा कि उसके समस्त इल्हाम शैतानी थे। इस अवस्था में लाइलाज निराशा के साथ उसने समझ लिया होगा कि मैं गलती पर था और जो कुछ मैंने समझा वह खुदा तआला की ओर से नहीं था। और आगे चल कर हम वर्णन करेंगे कि ऐसा समझना उसके लिए आवश्यक था क्योंकि इस मौत के दृश्य से उसकी इल्हामी बातें अचानक ऐसे झूठे सिद्ध हुए जैसे अचानक एक दीवार गिरती है। यह उसके लिए समझ से दूर था कि मैं इस प्लेग से बच जाऊँगा क्योंकि 7 अप्रैल 1907 ई० को जिस दिन वह मरा और इस से पहले ऐसी तेज और हलाक करने वाली प्लेग लाहौर में थी कि किसी किसी दिन दो-दो सौ से अधिक लोग मरते थे और उसका एक प्रिय उस से एक दिन पहले प्लेग से मर गया था जिसके जनाजे पर वह जा कर वह प्लेग खरीद लाया। अतः इस हलाक करने वाली बीमारी में कौन कह सकता है कि मैं बच जाऊँगा अपितु हजारों लोग प्लेग में ग्रस्त होते ही वारिसों के लिए वसीयत लिखा देते हैं। अतः प्लेग में ग्रस्त होने के साथ ही उसका मूसा होने का दावा ठंडा पड़ गया। और उसने हजारों मरते हुए व्यक्तियों को याद कर के और विशेष रूप से याकूब की मृत्यु को कल्पना में ला कर अवश्य समझ लिया कि मैं अवश्य मरूँगा ऐसी अवस्था में क्योंकि वह इस बात पर स्थापित रह सकता था कि मैं मूसा हूँ। अतः यह खुदा की कृपा है कि वह अपनी झूठी आस्थाओं को साथ नहीं ले गया और खुदा ने उसका गला पकड़ कर उस से रुजू (अपनी बात से लौटना) करवाया और उन लोगों में दाखिल हो गया जिनके बारे में खुदा तआला फ़रमाता है :

وَإِنْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ

(अन्निसा : 160)

अब सर्वप्रथम मैं यह लिखूँगा कि जिन इल्हामों को उसने अपनी पुस्तक

असा-ए-मूसा में लिखा है वह सब के सब झूठे सिद्ध हुए और बाद में इस बात का सबूत दिया जाएगा कि वह मेरी भविष्यवाणी के अनुसार मरा है और उसकी मृत्यु मेरी सच्चाई पर एक निशान है अपितु उसकी मौत ने मेरी सच्चाई पर मुहर कर दी है। और मैं इस वर्णन को दो अध्यायों पर बांटता हूँ।



अध्याय प्रथम

**इस बात का वर्णन कि इलाही बख्श के वे समस्त इल्हाम
जो मेरे मुक्काबले पर उसने प्रकाशित किए थे (अपने बारे में
या मेरे बारे में) वे सब के सब झूठे निकले।**

यह तो प्रत्येक व्यक्ति को मालूम है कि बाबू इलाही बख्श ने अपना नाम मूसा रखा था और मुझ को फिरऔन ठहराया था और मेरे मुक्काबले पर अपनी पुस्तक का नाम असा-ए-मूसा (मूसा का डण्डा) रखा था मानो दिल में यह सोचा था कि इस असा (डंडा) के साथ इस फिरऔन को मैं नष्ट करूंगा और एक पत्र भी मेरे नाम भेजा था जिस में धमकी दी गई थी और वर्णन किया गया था कि खुदा ने मेरे पर प्रदर्शित किया है कि यह व्यक्ति झूठा है और इस मूसा के हाथ से उसका दमन होगा। ऐसी बहुत सी मौखिक भविष्यवाणियाँ उनकी हैं जो केवल अपने मित्रों या मिलने जुलने वालों पर उसने प्रदर्शित की थीं और सब का सारांश यही है कि मानो मैं उसके जीवन में ही नष्ट हो जाऊँगा और वह मुझ पर विजयी हो जाएगा और मैं उसके समक्ष अपमानित हो जाऊँगा और वह दुनिया में बड़ी उन्नति प्राप्त करेगा।★ और मूसा नबी के समान लाखों इंसानों का सरदार बन जाएगा

★**हाशिया :-** मुझे अपने मित्र फ़ाज़िल श्रीमान मौलवी नुरुद्दीन साहब के लेख से जमाअत ग़ज़नवी सुम्मा अमृतसरी के एक बुजुर्ग अब्दुल वाहिद का एक स्वप्न बाबू इलाही बख्श के बारे में मालूम हुआ है जिस को मैं अपने शब्दों में नहीं लिखता अपितु उपरोक्त मौलवी साहिब का असल लेख निम्न में लिख देता हूँ और वह यह है :

और खेद कि मैंने बहुत से प्रयास किए कि ताकि उसके गुप्त इल्हामों का मुझे पता लग जाए परन्तु वह केवल उसके मित्रों की सीमा तक ही सिमित रहे और कोई लिखित चीज जो दस्तावेज के रूप में हो मुझ को न मिली परन्तु जितना अधिक पुस्तक में उसने प्रकाशित किए हैं एक न्यायप्रिय स्वभाव के लिए पर्याप्त हैं और यद्यपि कुछ बेहूदा और अत्यंत व्यर्थ इल्हाम उसके जो एक छोटी सी नोटबुक में लिखता जाता था मुझ को नहीं मिले परन्तु जितनी संख्या में मिल गए हैं वह उसका झूठ स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त भंडार है और जो छुपाए गए हैं उनके मिलने की आशा नहीं अपितु विश्वास है कि वे समस्त बेहूदा इल्हाम जो स्वभाविक जोश से मेरे बारे में किए गए थे उसके साथ ही दफ़न किए गए होंगे।

वह इल्हाम जो मेरे बारे में इलाही बख़्श ने असा-ए-मूसा में लिखे हैं जिनके बारे में वह अपनी उपरोक्त पुस्तक में दावा करता है कि वे खुदा तआल की ओर से हैं इन सब में से उसका वह फर्जी इल्हाम है जो उसकी पुस्तक असा-ए-मूसा के पृष्ठ 79 में दर्ज है और वह यह है

سلام لك تغلبون۔ يحل عليه غضب فقد هوى۔ فتدبر۔

(अनुवाद) तेरे लिए सलाम है तुम विजयी हो जाओगे और उस पर अर्थात् इस विनीत पर क्रोध अवतरित होगा और वह अवश्य नष्ट हो जाएगा अर्थात् तुम जीवित रह कर उसकी मृत्यु और विनाश देखोगे अतः सोच लो।

इस इल्हाम के अर्थ जैसा कि स्वयं इलाही बख़्श ने अपनी पुस्तक में कई स्थानों पर दूसरे इल्हामों के द्वारा इस की व्याख्या की है यह हैं कि मानो उसके

हजरत मौलाना अलइमाम अलैकुम अस्सलातो वल बरकात वस्सलाम। मुझे प्रिय अब्दुल वाहिद अलगज़नवी ने पत्र लिखा था। हमारी जमाअत के लोगों ने देखा है। इलाही बख़्श एक ऊंचे मीनार पर खड़ा है और लोग उसके नीचे हैं इसलिए अब उसकी उन्नति होगी। और बहुत शब्द थे जो मुझे याद नहीं रहे क्योंकि मैं पत्रों को सामान्य रूप से पढ़ता हूँ और फिर सुरक्षित नहीं रखता। मैंने इलाही बख़्श के मरने पर अब्दुल वाहिद को इस विषय का पत्र लिख दिया है तो उत्तर अब तक नहीं आया जितना विषय भली प्रकार से याद है यह है।

शहादत बिल्लाह अलअज़ीम। सेवा में प्रस्तुत है। नूरुद्दीन।

जीवन में ही मुझ पर अज़ाब होगा और मैं हलाक हो जाऊँगा परन्तु इसके विपरीत वह स्वयं मेरे जीवन में हलाक हो गया। और हर एक को मालूम है कि खुदा तआला की समस्त पुस्तकों में प्लेग को खुदा के प्रकोप की मौत ठहराया गया है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के समय प्लेग बनी इस्राईल पर पड़ी जो खुदा के क्रोध के अधिकारी थे। इस ताऊन (प्लेग) की विवृत घटना तौरत में मौजूद है। और फिर ताऊन हज़रत ईसा के बाद यहूदियों पर पड़ी थी जिन पर इंजील में क्रोध प्रकट होने का वादा दिया गया था और इसी ताऊन (प्लेग) का नाम कुरआने शरीफ़ में रिज्ज़ मिनस्समाए रखा है जैसा कि अल्लाह तआला कुरआने शरीफ़ में फ़रमाता है

فَأَنزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ۔

(अलबक्रह-60)

अर्थात् हम ने अत्याचारियों पर ताऊन (प्लेग) का अज़ाब भेजा क्योंकि वे पापी थे। यह तो अल्लाह तआला ने कहीं नहीं फ़रमाया कि

انزلنا عليهم رجزاً من السماء بما كانوا يومنون۔

अर्थात् इसलिए हम ने उन पर ताऊन (प्लेग) भेजी कि वे मोमिन थे अतः मोमिन किसी अवस्था में प्लेग का अधिकारी नहीं हो सकता अपितु यह काफ़िर और पापी के लिए विशिष्ट है। इसी कारणवश जब से दुनिया उत्पन्न हुई है खुदा का कोई नबी प्लेग से नहीं मरा। हाँ ऐसे मोमिन जो गुनाह से रिक्त नहीं होते कभी वे भी इस बीमारी से ग्रसित हो कर मर जाते हैं और उनकी यह मौत उनके गुनाहों को दूर करने वाली हो जाती है और उनके लिए यह एक प्रकार की शाहदत है। परन्तु किसी ने कभी नहीं सुना होगा कि मूसा हो कर फिर उसको प्लेग हो गया हो और ऐसा व्यक्ति बड़ा दुष्ट और अपवित्र और पापी होगा जिस की यह आस्था हो कि अल्लाह का कोई नबी या खलीफ़ा प्लेग से मरा हो। अतः यदि यह ऐसी शहादत होती जो प्रशंसा योग्य है और जिस पर कोई आपत्ति नहीं तो पहले अधिकारी उसके नबी और रसूल होते हैं परन्तु जैसा कि अभी हमने वर्णन किया

है जब से दुनिया उत्पन्न हुई है कोई सिद्ध नहीं कर सकता कि कभी कोई नबी या रसूल और प्रथम श्रेणी का कोई प्रतिष्ठित जो खुदा तआला से वार्तालाप का सौभाग्य रखता था इस दुष्ट बीमारी में ग्रसित हो कर मर गया हो। अपितु प्रथम अधिकारी इस बीमारी के आरंभ से वही लोग रहे हैं जो भिन्न-भिन्न प्रकार के पापों और दुराचारों में लिप्त थे या काफ़िर और बेईमान थे। और बुद्धि कदापि नहीं मान सकती कि वह बीमारी जो हमेशा से खुदा ने गुनाहों के दंड स्वरूप रखी है उसमें खुदा के नबी और रसूल और मुलहम भी सम्मिलित हो जाएँ। तौरैत और इंजील और कुरआन तीनों पूर्ण सहमती के साथ वर्णन कर रहे हैं कि हमेशा ताऊन कुफ़्फ़ार को सज़ा देने के लिए अवतरित होती रही है और खुदा ने हमेशा से लाखों कुफ़्फ़ार और पापियों और दुराचारियों का इसी प्लेग के द्वारा विनाश किया जैसा कि खुदा की पुस्तकों और इतिहास से प्रदर्शित है। और खुदा इस से श्रेष्ठ है कि अपने पवित्र लोगों को इस अज़ाब में कुफ़्फ़ार के साथ सम्मिलित करे और जो बला हमेशा से कुफ़्फ़ार के अज़ाब के लिए निर्धारित है और जिसके माध्यम से हमेशा नबियों के समय में हज़ारों पापी और दुराचारी मरते रहे हैं वही बला अपने प्रतिष्ठित नबियों पर डाल दे। अतः जिस प्रकार खुदा का वह अज़ाब जो लूत की क्रौम पर आया था किसी नबी की मौत इसके द्वारा कदापि नहीं हुई अपितु प्रत्येक अज़ाब जो क्रौमों की हलाकत के लिए आ चुका है कोई नबी उस अज़ाब से नहीं मरा। ऐसा ही प्लेग जो कफ़्फ़ारा के लिए एक विशिष्ट अज़ाब है किसी चुने हुए पर नहीं आ सकता। और यदि कोई इस विपरीत दावा करे और यह कहे कि कोई नबी गुज़रे हुए नबियों में से प्लेग से भी हलाक हुआ था तो यह उसका अधिकार है। किसी मूंहफ़ट या गुस्ताख़ की हम ज़बान तो बंद नहीं कर सकते परन्तु अल्लाह की किताब से यही सिद्ध होता है कि ताऊन रिज्ज़ (खुदा के दंड का एक रूप-अनुवादक) है हमेशा काफ़िरों पर उतरती है। हाँ नर्क विशेष रूप से काफ़िरों के लिए विशिष्ट है फिर भी कुछ गुनेहगार मोमिन जो नर्क में डाले जाएंगे वह केवल पवित्र करने के लिए नर्क में डाले जाएंगे परन्तु खुदा के वादे के अनुसार जो

أُولَئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ है चुने हुए लोग इस नर्क से दूर रखे जाएंगे। इसी प्रकार ताऊन भी एक नर्क है काफ़िर इस में अज़ाब देने के लिए डाले जाते हैं। और ऐसे मोमिन जिन को मासूम नहीं कह सकते और गुनाहों से पवित्र नहीं हैं उनके लिए यह ताऊन पवित्र करने का माध्यम है जिसको खुदा ने नर्क के नाम से पुकारा है। अतः ताऊन तुच्छ मोमिनों के लिए हो सकती है जो पवित्र होने के मोहताज हैं परन्तु वे लोग जो खुदा के सानिध्य और प्रेम में उच्च श्रेणी पर हैं वे कदापि इस नर्क में दाखिल नहीं हो सकते। फिर आश्चर्य कि वह व्यक्ति कि जो अपना यह इल्हाम प्रस्तुत करता है कि बाद अज़ खुदा बुजुर्ग तूई किस्सा मुख्तसर जिस इल्हाम का मुंशी अब्दुल हक़ भी गवाह है और कई और लोग गवाह हैं फिर क्योंकि हो सकता है कि ऐसा व्यक्ति जो खुदा के बाद वही प्रतिष्ठित है और वही इस ज़माने का मूसा है वह खुदा के प्रकोपित अज़ाब से जो ताऊन से हलाक हो जाए। क्या कोई बुद्धिमान इस बात को स्वीकार कर सकता है?

यदि कोई यह कहे कि बाबू इलाही बख़्श ताऊन से नहीं मरा तो हम इसका सिवाए इस बात के क्या उत्तर दें कि लानतुल्लाहे अलल कज़ेबीन (अर्थात् झूठों पर अल्लाह की लानत हो)। लाहौर से आए पत्र से मालूम हुआ कि इलाही बख़्श, याक़ूब पुत्र मुहम्मद इस्हाक़ के जनाज़े पर गया और याक़ूब ताऊन (प्लेग) से मरा था। अतः इलाही बख़्श उसी स्थान से ताऊन ख़रीद लाया और पीसा अख़बार दिनांक 10 अप्रैल में यह पंक्ति है : इन्तेकाल पुर मलाल (अर्थात् अफ़सोसनाक मौत) खेद है कि मौलवी इलाही बख़्श साहब पेंशनर अकाउंटेंट ने सोमवार 8 [★] अप्रैल को केवल एक दिन बुख़ार से पीड़ित रह कर अब्दुल हक़ साहिब के मकान में मौत हुई। अब एक बुद्धिमान समझ सकता है कि उन दिनों में किस तेज़ी से लाहौर में ताऊन फैली हुई थी और अब तक है और हज़ारों इन्सान केवल इसी बुख़ार से हलाक हो गए और सिवाए ताऊन के कौन सा बुख़ार है जो सिर्फ

★ यह दिनांक अख़बार में ठीक दर्ज नहीं हुई अपितु 7 तारीख़ शाम के 6 बजे की यह घटना है।

एक दिन में ही मार सकता है। याद रहे कि ताऊन के लिए तेज़ बुखार होना अनिवार्य बात है जो एक दो दिन में ही काम तमाम कर देता है। अतः जबकि इलाही बख्श की मौत के समय ताऊन लाहौर में ज़ोर से फैल रही थी और वह भी ताऊन से पीड़ित मृत का जनाज़ा पढ़ने गया था और वहीं बेहोश हो गया था तो क्या किसी जिन्न के भूत-प्रेत से यह अवस्था हो गई थी। स्पष्ट है कि ताऊन के दिन थे और लाहौर में ताऊन ज़ोर पर थी इस से कौन इंकार कर सकता है कि इन दिनों सैंकड़ों लोग लाहौर में ताऊन के बुखार से मर चुके हैं और अब तक यही अवस्था है कुछ को गिल्टी निकलती है कुछ को नहीं। और कुछ नियोमुनिया और प्लेग से मरते हैं और कुछ मूर्छा रोग के कारण अचानक मर जाते हैं तो फिर अकारण बेचारे इलाही बख्श पर यह झूठ बांधना कि वह प्लेग से नहीं मरा कितनी बेबाकी है। क्या याक़ूब प्लेग से नहीं मरा था? हमें प्रमाणित डाक्टरों के द्वारा मालूम हुआ है कि इलाही बख्श को सख्त प्रकार की प्लेग हुई थी जिस ने एक दिन में ही उसका काम तमाम कर दिया। अतः हम इस स्थान पर गवाही के तौर पर डॉक्टर मिर्ज़ा याक़ूब बेग साहब असिस्टेंट सर्जन का पत्र नीचे दर्ज कर देते हैं और वह यह है :

हज़रत सय्यदी व मौलाई व इमामी हुज्जतुल्लाह अलमसीह अलमौऊद सल्महुल्लाहो तआला

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू

अलहम्दोलिल्लाह कि हुज़ूर की भविष्यवाणी पूर्ण हुई और शत्रु मर गया। हुज़ूर को मुबारक हो। इलाही बख्श को प्लेग के समस्त चिन्ह प्रदर्शित हो चुके थे और प्रमाणित माध्यमों से पता चला है कि उसकी बाईं जांघ के अंत में अर्थात् कंज रान में एक गिल्टी भी निकली थी इसलिए इसमें कुछ संदेह नहीं कि उसकी मौत प्लेग से हुई। बाक़ी खैरियत है।

विनीत याक़ूब बेग लाहौर से

फिर यदि यह प्रश्न हो कि इलाही बख्श के मित्रों में से किस ने इस बात को

प्रकाशित किया है कि वह प्लेग से मर गया तो हम नीचे पर्चा अहले हदीस दिनांक 11 अप्रैल 1907 ई० की इलाही बख्श के प्लेग के बारे में गवाही नक़ल करते हैं और वह यह है :

खेद मुंशी इलाही बख्श साहब लाहौरी लेखक असा-ए-मूसा प्लेग से शहीद हो गए।

देखो पर्चा-ए-अहले हदीस 11 अप्रैल 1907 ई०

फिर अपना एक और इल्हाम इलाही बख्श से अपनी पुस्तक असा-ए-मूसा के पृष्ठ 79 में मेरे बारे में लिखा है और वह यह है **"इन्नी मुहीनुन लिमन अरादा इहानतका"** (अर्थात् निस्संदेह मैं अपमानित करूंगा उसे जो तुझे अपमानित करने का इरादा करेगा-अनुवादक) यद्यपि यह वाक्य अशुद्ध व्याकरण से भरा हुआ है कि "मन" के शब्द पर "लाम" लगाया गया है। परन्तु इसके अर्थ इलाही बख्श ने ये किए हैं कि मानो मैं उसके मुक़ाबले पर अपमानित किया जाऊँगा और उसकी सच्चाई प्रदर्शित होगी। वास्तव में बहुत समय पहले से ख़ुदा ने मुझे यह इल्हाम किया था कि : **"इन्नी मुहीनुन मन अरादा इहानतका"** और इलाही बख्श कई बार मेरे मूँह से यह इल्हाम सुन चुका था और ख़ुदा ने दिखला दिया था कि प्रत्येक व्यक्ति जिसने मेरा मुक़ाबला किया उसका क्या परिणाम हुआ। अतः इस इल्हाम में इलाही बख्श की ओर से केवल एक "लाम" है जो लाभ पहुँचाने के लिए आता है परन्तु इस स्थान पर ग़लत है और इसके उद्देश्य के विरुद्ध है और इस अवस्था में इस इल्हाम के यह अर्थ हुए कि हे इलाही बख्श! मैं तेरा अपमान करूंगा उस व्यक्ति के समर्थन में जो तेरा अपमान चाहता है। और यदि यह मान लिया जाए कि जैसा कि इलाही बख्श का अर्थ है कि उसका अपमान करने से ख़ुदा मेरा अपमान करेगा तो यह अर्थ स्पष्ट रूप से ग़लत सिद्ध हुए क्योंकि मैं वर्षों से प्रकाशित कर रहा हूँ कि इलाही बख्श अपने आप को मूसा बनाने और मुझे झुठलाने में झूठा है ख़ुदा उसको निराश करेगा। और बहुत समय हुआ कि मैं अपना यह इल्हाम प्रकाशित कर चुका हूँ। इस अवस्था में साफ़ जाहिर

है कि ख़ुदा ने मेरे समक्ष इलाही बख़्श को प्लेग की मौत दे कर अपमानित किया और वह अपने समस्त दावों में असफल रहा। और ख़ुदा ने लाखों इंसानों को मेरी जमाअत में सम्मिलित करके मुझे सम्मान दिया। अतः यदि इलाही बख़्श को यह इल्हाम ख़ुदा तआला की ओर से ही हुआ था कि जो व्यक्ति तेरा अपमान करता है मैं उसको अपमानित करूंगा तो अवश्य था कि वह इल्हाम पूर्ण हो जाता। हालाँकि इलाही बख़्श की असमय मौत जो मेरे जीवन में ही हुई उसके झूठे होने पर मुहर लगा गई। वह दावा करता था कि यह व्यक्ति फिरऔन है और मैं मूसा हूँ और मेरे जीवन में ही यह हलाक होगा और प्लेग से मरेगा और उसका समस्त सिलसिला तबाह हो जाएगा और ख़ुदा का प्रकोप उस पर आएगा और उसका कुछ भी शेष नहीं रहेगा लेकिन इस के विरुद्ध ख़ुदा ने मुझे पूर्ण उन्नति दी और पूर्ण सम्मान और दुनिया के हर कोने में पूर्ण प्रसिद्धि दी और मेरे जीवन में इस व्यर्थ बोलने वाले और असभ्य और तीव्र स्वभाव और मूंह फटे दुश्मन को प्लेग से हलाक किया। तो क्या अब भी उसका नाम मूसा रखोगे? यह कैसा मूसा था कि जिसको वह फिरऔन कहता था उसी के सामने प्लेग की अपमानित मौत से वह हलाक हो गया। यह विचित्र बात है कि जिस व्यक्ति को वह फिरऔन ठहराता था उसने अपना यह इल्हाम प्रकाशित किया था कि **"इन्नी उहाफ़िज़ो कुल्ला मन फ़िद्दार"** अर्थात् ख़ुदा फ़रमाता है कि जो लोग इस घर की चारदीवारी के अन्दर हैं सब को मैं ताऊन (प्लेग) से बचाऊँगा। अतः ग्यारह वर्ष से प्लेग के बड़े बड़े हमले इस क्षेत्र में हो रहे हैं लेकिन ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से हमारे घर का एक कुत्ता भी प्लेग से नहीं मरा परन्तु जो अपने आप को मूसा कहता था स्वयं वह प्लेग से मर गया और केवल यही नहीं अपितु वे समस्त इल्हाम उसके झूठे निकले और उसके अपमान का कारण बने जो मेरी मौत और प्लेग और नाकामी के बारे में उसने प्रकाशित किए थे। अतः कहाँ गया यह इल्हाम कि **"इन्नी मुहीनुन लिमन अरादा इहानतका"** यह परिणाम उन लोगों का होता है जो स्वयं निर्मित बात का नाम इल्हाम रख लेते हैं और ख़ुदा की क्रिया की गवाही से अपने

इल्हामों की परीक्षा नहीं करते।

स्मरण रहे कि जब तक इल्हाम के समर्थन में खुदा तआला के विलक्षण निशान बारिश के समान अवतरित न हों जो सामान्य नियमों से बढ़े हुए हों तब तक अपने इल्हामों को खुदा का इल्हाम समझना नर्क का मार्ग अपनाना है और अपमानित मौत खरीदना है क्योंकि इल्हाम केवल कथन है और कथन में शैतान भी सम्मिलित हो सकता है और इंसान भी झूठ गढ़ते हुए ऐसा कथन वर्णन कर सकता है और मानसिक कथन भी हो सकता है। अतः अत्यंत मूर्खता है कि मनुष्य केवल इस बात पर भरोसा कर के कि उसकी ज़बान पर कुछ जारी होता है ऐसे वाक्यों को खुदा की वाणी समझ ले अपितु खुदा के कथन के साथ खुदा की क्रियात्मक गवाही भी अनिवार्य है और गवाही भी ज़बरदस्त गवाही होनी चाहिए क्योंकि यह दावा कि खुदा मुझ से वार्तालाप और संबोधन करता है यह कुछ छोटा सा दावा नहीं और यदि मुद्दई इस दावे का खुदा तआला की ओर से न हो तो एक दुनिया उसके द्वारा हलाक हो सकती है। अतः ऐसे व्यक्ति के कथनी दावे के लिए खुदा तआला की ऐसी क्रियात्मक गवाही दरकार है जिस को वह बहुत पहले से अपने समस्त नबियों और सच्चे रसूलों के समर्थन में देता रहा है। और उस हल्की और तुच्छ बात को खुदा की क्रियात्मक गवाही नहीं ठहरा सकते जो सामान्य मनुष्यों की जीवनी से मिलता जुलता हो। उदाहरण स्वरूप कोई स्वप्न में देखता है कि मेरे घर में या किसी के घर में लड़का पैदा होगा और संयोगवश लड़का ही पैदा हो जाता है या देखता है कि अमुक व्यक्ति मर जाएगा और संयोगवश वह मर भी जाता है या देखता है कि अमुक व्यक्ति अमुक कार्य में असफल रहेगा और संयोगवश वह असफल ही रह जाता है, ऐसे स्वप्नों में समस्त दुनिया सम्मिलित है अपितु काफिरों और अधर्मियों को भी इस से भाग प्राप्त है। अतः यदि सामान्य रूप से किसी व्यक्ति को ऐसा स्वप्न आए और वह स्वप्न या इल्हाम गुणवत्ता या मात्रा में कोई विशेषता न रखता हो तो वह इस बात पर तर्क नहीं हो सकती कि वह व्यक्ति खुदा तआला की ओर से है अपितु जैसा कि हम लिख चुके हैं ऐसे

स्वप्न अधर्मियों और दुराचारियों को भी आ सकते हैं। अतः ऐसे स्वप्नों और इल्हामों पर घमंडी नहीं होना चाहिए अपितु अपने लिए इसको आजमाइश समझना चाहिए। और सच्चे मामूर (अवतार) के लिए यह शर्त है कि ऐसी बातें जो खुदा का निशान कहला सकते हैं गुणवत्ता और मात्रा में इस सीमा तक पहुँच गए हों कि सामान्य लोगों में से कोई व्यक्ति उसका मुकाबला न कर सके और ऐसे व्यक्ति के साथ स्पष्ट रूप से खुदा तआला का हाथ चलता हुआ दिखाई दे और उसके विलक्षण समर्थन में निशान बारिश के समान बरसते हुए महसूस हों जिन से ज्ञात हो कि प्रत्येक मार्ग विशेषता के साथ में खुदा उसका सहायक है। अतः बड़ी अलामत यही है कि वह आकाशीय निशान और वह सहायता और समर्थन इस सीमा तक पहुँच जाए कि ज़मीन पर कोई उसका मुकाबला न कर सके और चाहे वह एक ही निशान हो परन्तु ऐसा अद्वितीय और अद्भुत हो कि उसको देख कर समस्त दुश्मन मुर्दे के समान पड़ जाएँ और उसका उदाहरण प्रस्तुत न कर सकें और या इतनी अधिकता से वे निशान हों कि अधिकता के कारण किसी को सामर्थ्य न हो कि वह अधिकता अपने निशानों में या किसी और झूठे के निशानों में दिखा सके। इसी का नाम खुदा की गवाही है जैसा कि पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को संबोधित करके फ़रमाता है :

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا ۖ قُلْ كَفَىٰ بِاللّٰهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَ
بَيْنَكُمْ ۚ وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ (सुरह अर-रअद - 44)

अर्थात् जो लोग कहते हैं कि तू खुदा का रसूल नहीं उनको कह दे कि तुम में और मुझ में खुदा बतौर गवाह काफी है और इसी प्रकार वह जिसको किताब का ज्ञान है।

अब हम इलाही बख़्श के शेष इल्हाम जो उसकी पुस्तक असाए-ए-मूसा में मेरे बारे में दर्ज हैं इस स्थान पर पाठकों के विचार करने और न्याय के लिए दर्ज कर देते हैं। अतः वह अपनी पुस्तक के पृष्ठ 79 में मेरे बारे में यह इल्हाम लिखता

है "उड़ जाएंगे जबाने खलक को नकारा-ए-खुदा समझो।" अर्थात् हजारों विरोधी जो उनकी मौत की इच्छा रखते हैं ऐसा ही हो जाएगा। फिर उपरोक्त पुस्तक के पृष्ठ 80 में लिखता है "अल्लाहुम्मा अफतह बैनना व बैना क्रौमिना बिल हक्रे व अन्ता खैरुल फ़ातेहीन " और उसको भी मेरे बारे में ठहराता है जिसका अर्थ है कि हे खुदा! हम में और हमारी क्रौम में सच्चा-सच्चा निर्णय कर। अतः अलहम्दोलिल्लाह वह निर्णय 7 अप्रैल 1907 को हो गया और मियां इलाही बख्श मुझे हजारों गालियां निकाल कर और झूठा, उपद्रवी, दज्जाल, और झूठ गढ़ने वाला कह कर और मेरे बारे में खुदा के प्रकोप और प्लेग के वादे दे कर स्वयं उपरोक्त तारीख में केवल एक ही दिन में इस नश्वर दुनिया को छोड़ गया। अतः हे देखने वालो! विचार करो। देखो हमारी फिरऔनियत अंततः विजयी हो गई। मूसा को प्लेग ने ऐसा दबाया कि न छोड़ा जब तक उसकी जान न निकल गई।

फिर बाबू इलाही बख्श इसी पुस्तक के पृष्ठ 80 में अपने इल्हाम में मुझे प्लेग की धमकी देता है जैसा कि इल्हाम यह है "रिज्ज़म् मिनस्समाए अलल क्ररयता अल्लती कानत हाज़ेरातुन.....वलाहुम अज़ाबुन अलीम। वला यज़ीदुज्ज़ालिमीना इल्ला तबारन।" अर्थात् प्लेग आएगी और वह अपनी जमाअत के साथ प्लेग से ग्रस्त हो जाएगा और खुदा उन अत्याचारियों पर मौत भेजेगा। यह हैं इलाही बख्श के इल्हाम जिन से वह अपने कुछ मित्रों को प्रसन्न करता था परन्तु अब उनके मित्र विशेष रूप से मुंशी अब्दुल हक्र साहब खुदा से डर कर गवाही दे सकते हैं कि अंततः किस व्यक्ति★ पर प्लेग आई।

★**हाशिया :-** यदि कोई यह संदेह करे कि ये समस्त इल्हाम जो असा-ए-मूसा में बाबू इलाही बख्श ने लिखे हैं किस प्रकार ज्ञात हो कि वह इस लेखक के लिए लिखे गए हैं तो स्पष्ट हो कि बाबू इलाही बख्श ने यह पुस्तक असा-ए-मूसा विशेष रूप से मुझ पर विरोधी हमले करने के उद्देश्य से लिखी है और मुझे झुटलाने और अपमानित करने के अतिरिक्त इस किताब के लेखन का कोई और उद्देश्य नहीं और बाबू साहब हमेशा गुप्त रूप से मेरे बारे में अपने मित्रों में ऐसे-ऐसे इल्हाम प्रसिद्ध करते थे जिनका सारांश यह था कि मानो मैं झूठा और काफ़िर और फिरऔन हूं और वह मूसा है और मैं शीघ्र ही उनके द्वारा और उनके इल्हाम के अनुसार खुदा

फिर मुझ पर अज़ाब आने के बारे में उनका एक और इल्हाम है जो उसकी पुस्तक के पृष्ठ 83 में मौजूद है और वह यह है "सनसिमुहू अलल खुरतूमें। मा रमैता इज़ रमैता वला किन्नल्लाहा रमा" (अनुवाद) इस झूठे को अर्थात् इस झूठे की नाक पर मूँह पर हम आग का दाग लगाएंगे अर्थात् उसको प्लेग से हलाक करेंगे या यह कि नर्क की आग में डालेंगे। यह तीर जो तूने (हे इलाही बख्श) चलाया यह तूने नहीं चलाया अपितु खुदा ने चलाया।" फिर पृष्ठ 9 पंक्ति 13 में यह इल्हाम लिखा है "मत्ताअलमुस्लेमीना बेतूले हयातेका व बेतूले बक्राएका। यनफ़उल मुस्लेमीना बेतूले हयातेका व बेतूले बक्राएका... ☆ फिर इसके बाद यह पंक्ति है और जो सेवा मेरे सपुर्द हुई है जब तक पूरी न हो तब तक मैं कदापि न मरूंगा। बाबू इलाही बख्श साहब की पुस्तक असा-ए-मूसा को देखने के बाद ज्ञात होगा कि वह इस पुस्तक के लेखन से छः वर्ष के बाद मृत्यु को प्राप्त हो गए। अब न्यायवान स्वयं समझ सकते हैं कि क्या लंबे जीवन और लम्बी आयु

शेष हाशिया - के अज़ाब में गिरफ्तार हो जाऊंगा और इस स्थान पर यह भी याद रहे कि जैसा कि किताब असा-ए-मूसा के पृष्ठ 2, 4, 6, 7, 8, 9 में दर्ज है बाबू इलाही बख्श के साथ उनके विरोधी इल्हाम के बारे में मेरा पत्राचार हुआ था और असा-ए-मूसा के पृष्ठ 2 के पत्र में मैंने बाबू साहब से निवेदन किया था कि जितना आप मेरे बारे में झुठलाने के इल्हाम प्रसिद्ध करते हैं और केवल मौखिक रूप से अपने मित्रों को सुनाते हैं वह क्रसम खाकर प्रकाशित कर दें ताकि यदि आपके वे इल्हाम झूठे और गढ़े हुए हैं तो खुदा तआला झूठ का बदला दे। इस पत्र का उत्तर उन्होंने वह दिया कि जो उनकी पुस्तक के पृष्ठ 4 में दर्ज है जिसका सारांश यह है कि क्रसम खाने की कोई आवश्यकता नहीं। यदि मैंने खुदा पर झूठ गढ़ा है तो वह बिना क्रसम के भी मुझे दंड देगा और मैं इल्हाम प्रकाशित कर दूंगा। फिर इसके उत्तर में पृष्ठ 7 में मेरी ओर से यह पंक्ति है। ताकी वे लोग जो मुझे महा झूठे का नाम देते हैं और वे लोग जो मुझे मसीह मौऊद मानते हैं उन में अल्लाह तआला स्वयं निर्णय करे। इसी से

☆ अनुवाद:- खुदा तआला तेरी आयु को लम्बी कर के और दुनिया में एक लम्बी अवधि तक तुझे रख कर तेरी बहुत लम्बी आयु से मुसलमानों को बहुत लाभ पहुंचाएगा लेकिन इसके बाद बाबू इलाही बख्श केवल छः वर्ष तक जीवित रहे। यह है लम्बी आयु का इल्हाम। इसी से

के यही अर्थ हैं कि केवल छः वर्ष में इस से पहले की वह अपनी किसी सफलता को देखें प्लेग की बीमारी से उनका समापन हो जाए और बड़ी निराशा के साथ मेरे जीवन में ही असफल मरें। हम इस समय उनके बारे में केवल उनके दोस्तों की राय पूछते हैं और हम सभ्यतापूर्वक कहते हैं कि क्या यह सही है कि जैसा कि उन्होंने अपने इल्हाम के अनुसार यह दावा किया था कि जो सेवा मेरे सपुर्द हुई है जब तक पूरी न हो मैं कदापि न मरूंगा। क्या वह सेवा पूरी हो गई है? क्या उनके प्रयासों और उनके आरोपों से जो पूरी असा-ए-मूसा पुस्तक में मुझ पर लगाई गई मेरा एक बाल भी बीका हो गया है? और पाठक इसकी भी हमें अनुमति दें कि वह इल्हाम जो मेरे बारे में बाबू इलाही बख्श साहब ने किया था कि "सनसिमुहू अलल खुरतूमे " क्या यह सच नहीं कि वह उलट कर उन्हीं पर पड़ गया और कुदरत के हाथ ने ऐसे तौर पर उनकी नाक पर प्लेग की आग का दाग लगाया कि उनका समापन ही कर दिया और "मा रमैता" का तीर जो उन्होंने मेरी ओर अपने इल्हाम के अनुसार चलाया था अंततः वह उन्हीं को लग गया।

इलाही बख्श के कैसे थे ये तीर
कि आखिर हो गया उनका वह नखचीर
उसी पर उस की लानत की पड़ी मार
कोई हमको तो समझावे यह असरार
तकब्बुर से नहीं मिलता वह दिलदार
मिले जो खाक से उसको मिले यार
कोई उस पाक से जो दिल लगावे
करे पाक आप को, तब उसको पावे
पसंद आती है उसको खाकसारी
तजल्लुल ही रह -ए- दरगाह बारी
अजब नादाँ है वह मगरूर -व- गुमराह
कि अपने नफ्स को छोड़ा है बेराह

बदी पर गैर की हर दम नज़र है
मगर अपनी बदी से बेखबर है

और फिर पुस्तक असा-ए-मूसा के पृष्ठ 152 में बाबू इलाही बख्श साहिब मेरे बारे में यह इल्हाम प्रकाशित करते हैं *فيمت وهو كافر فذلت اليه لعانه واُزلفت الجنة* (फयमुत वहुवा काफ़िरुन। रुद्दत इलैहि लआनुहू। व उज़लिफ़तिल जन्नतु लिलमुत्तक़ीन) यह सातवें रमज़ान 1317 हिजरी की घटना है (अनुवाद) यह व्यक्ति काफ़िर मरेगा और उसका मेरे साथ परस्पर लानत करना अर्थात् मुबाहला करना उसी की ओर उस का बुरा प्रभाव लौटाया जाएगा और संयमियों के लिए स्वर्ग निकट है। इस इल्हाम का सारंश यह है कि बाबू इलाही बख्श साहब संयमी हैं और मैं काफ़िर हूँ और जो मेरा उनके साथ परस्पर "अल्लाह की झूठों पर लानत हो" अर्थात् मुबाहला हुआ था वह लानत उनके इल्हाम के कारण मुझ पर पड़ेगी और वह प्रत्येक बात में सफल हो जाएंगे।

स्पष्ट हो कि "लिआन" अरबी भाषा में "मुलाइना" को कहते हैं। लिसानुल अरब (अरबी भाषा शब्दकोश - अनुवादक) में लिखा है "अल्लेअना वलमुलाइना: अल्लाआने बैना असनैने फ़सायदन" अर्थात् लिआन और मुलाइना जो दो शब्द हैं इन दोनों के अर्थ यह हैं कि दो व्यक्ति या उन से अधिक एक दूसरे पर लानत भेजें। फिर इसी पुस्तक लिसानुल अरब में लिआन के यह भी अर्थ लिखे हैं कि "अल्लाआने अलइबआदे वत्तरदो मिनल ख़ैर" अर्थात् शब्दकोश के यह अर्थ हैं कि प्रत्येक नेकी और धन और बरकत और बेहतरी से किसी को वंचित किया जाए। फिर दूसरे अर्थ शब्दकोश के यह लिखे हैं कि "इल्ला बुआदा मिनल्लाहे वमिनल खलक़े" अर्थात् लानत के यह अर्थ हैं कि जनाबे इलाही से धुतकारा जाए और स्वीकार्यता से वंचित रहे। और मख़लूक की नज़र से भी गिर जाए और प्रतिष्ठा और सम्मान भी जाता रहे। अतः खुदा के निकट लानत का शब्द समस्त निराशाओं और धुत्कारे हुए और तिरस्कृत के अर्थों पर निर्भर है और प्रत्येक प्रकार की बरकत से वंचित और तिरस्कृत और धुतकारा हुआ रहना इस की अनिवार्य

वस्तुओं में से है और जिस व्यक्ति पर खुदा की लानत पड़ जाए उसका परिणाम विनाश और मौत है इसी कारणवश आहंजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यदि नजरान के ईसाई मुझ से मुबाहला (शास्त्रार्थ) करते (जो झूठों पर खुदा की लानत के साथ किया जाता है) तो इतनी अधिक मौत और हलाकत उन पर आती कि उनके वृक्षों के पक्षी भी मर जाते।

अब बाबू इलाही बख्श साहब के इल्हाम का अर्थ जिसमें मुलाइना का वर्णन है प्रत्येक न्यायप्रिय स्वभाव वाला समझ सकता है क्योंकि इल्हाम का यह अर्थ है कि वह मुलाइना जो मुझ में और बाबू साहिब में घटित हुआ था जिस का वर्णन असा-ए-मूसा पुस्तक के पृष्ठ 2 और 7 में भी है और वर्णित पुस्तक के दूसरे स्थान पर भी वर्णित है इसका दुष्प्रभाव मुझ पर ही पड़ेगा और मैं उनके जीवन में हलाक और तबाह हो जाऊंगा यद्यपि खुदा तआला के इरादे ने इसके विरुद्ध प्रदर्शित किया और न केवल यह हुआ कि बाबू साहब मेरे जीवन में ही प्लेग से मर गए अपितु अपनी प्रत्येक इच्छा और इरादे से असफल रह कर इस संसार से गुजर गए। और दूसरी ओर प्रत्येक पहलू से खुदा ने मुझे सफल किया। अतः हजारों बार धन्यवाद का यह स्थान है कि लगभग चार लाख मनुष्य अब तक मेरे हाथ पर अपने गुनाहों से और कुफ़्र से तौबा कर चुके हैं और खुदा ने मुझे वह सम्मान दिया है कि समस्त दुनिया में अर्थात् यूरोप और एशिया में स्वीकार्यता के साथ मुझे प्रसिद्ध कर दिया। अतः वह डाक्टर डोई जो अमरीका और यूरोप की दृष्टि में बादशाहों के समान अपना वैभव और सम्मान रखता था उसको खुदा ने मेरे मुबाहला और मेरी दुआ से हलाक किया और एक दुनिया को मेरी ओर झुका दिया। और यह घटना दुनिया के समस्त नामी अखबारों में प्रसिद्धि प्राप्त कर एक विश्वव्यापी प्रसिद्धि के रूप में प्रत्येक सामान्य और विशिष्ट की ज़बान पर चढ़ गया और मैं देखता हूँ कि जिन लोगों ने मेरे साथ बैअत की, हजारों उन में संयमी हो गए और उनके कर्मों में एक स्पष्ट परिवर्तन उत्पन्न हो गया और खुदा ने सांसारिक हैसियत वे बरकतें मुझे प्रदान कीं कि खुदा के बन्दों ने आज तक कई

लाख रुपया और नाना प्रकार के तोहफे विनम्रता और श्रद्धा भावना से मुझे दिए★ और दे रहे हैं और खुदा तआला की नाना प्रकार की रहमतों का एक दरिया जारी हो रहा है और इसके अतिरिक्त हजारों निशान खुदा तआला ने मेरे समर्थन में प्रदर्शित किए हैं और कोई महीना कम गुज़रता होगा कि कोई निशान प्रदर्शित न हुआ हो और खुदा तआला ने स्वयं शत्रुओं के मुकाबले में तलवार खींच कर मेरे लिए उनका मुकाबला किया जिसने मुझ पर किसी अदालत में मुकद्दमा किया अंततः पराजय और अपमान उसको प्राप्त हुआ और जिसने मेरे साथ मुबाहला किया अंततः वह स्वयं हलाक हुआ अथवा अपमानित किया गया। अतः यह खुदा की सहायताएं इसी पुस्तक **हकीक़तुल वह्यी** में उदाहरणस्वरूप वर्णन की गई हैं। अब मुझे न्याय करने वाले बताएं कि बाबू इलाही बख्श साहब का यह इल्हाम कि मेरे और उनके मध्य लानत का परिणाम यह होगा कि हर एक तबाही और बर्बादी मुझे ही मिलेगी और वह अपनी समस्त आशाओं में सफल हो जाएंगे। क्या यह इल्हाम सच्चा निकला? और क्या इस मुबाहला का परिणाम उनके पक्ष में हुआ या मेरे पक्ष में? और लानत का दुष्प्रभाव मेरी ओर लौटाया गया या उनकी ओर। पाठकगण खुदा के लिए इस स्थान पर ठहर कर कुछ विचार करें ताकि खुदा उन्हें उत्तम प्रतिफल प्रदान करे अन्यथा खुदा तआला अपना समर्थन और अपने निशानों को अभी समाप्त नहीं कर चुका। और मुझे उसके नाम की क्रसम है कि वह बस नहीं करेगा जब तक मेरी सच्चाई दुनिया के समक्ष प्रकट न कर दे। अतः हे समस्त लोगो जो मेरी आवाज़ सुनते हो! खुदा से डरो और सीमा से न बढ़ो। यदि यह योजना मनुष्य की होती तो खुदा मुझे कब का नष्ट

★जैसा कि छब्बीस वर्ष से यह भविष्यवाणी है कि "यातीका मिन कुल्ले फ़ज्जिन अमीक़, व यातूना मिन कुल्ले फ़ज्जिन अमीक़, यन्सुरुका रिजालन नूही इलैहिम मिनस्समाए वला तुसइर् लिखल्किल्लाह वला तसअम मिनन्नास" अतः खुदा की अजीब कृपा है कि एक ओर तो वह पुराने ज़माने की भविष्यवाणी पूरी हुई और दूसरी ओर लाखों रुपये की आमदनी हुई और कई लाख लोग मुरीद हो गए।

कर देता और इस समस्त कारोबार का नाम व निशान न रहता। परन्तु तुमने देखा कि खुदा तआला की कैसी सहायता मेरे साथ हो रही है और इतने अधिक निशान प्रदर्शित हुए जिनकी गणना नहीं की जा सकती। देखो कितने अधिक शत्रु हैं जो मेरे साथ मुबाहला कर के हलाक हो गए। हे खुदा के बन्दो! कुछ तो विचार करो क्या खुदा तआला झूठों के साथ ऐसा मामला करता है?

कुछ अज्ञानी कहते हैं कि आथम अपनी निर्धारित अवधि में नहीं मरा लेकिन वे जानते हैं कि मर तो गया और मैं अब तक जीवित हूँ और वर्इद की भविष्यवाणियां जिन में किसी पर अज्ञाब आने का वादा होता है उनका अवधि के अन्दर पूरा होना अनिवार्य नहीं अपितु यदि व्यक्ति जिस को डराया गया है वह तौबा करे या लौटे तो उनका पूरा होना भी आवश्यक नहीं होता और ऐसी भविष्यवाणियां अर्थात् अज्ञाब की भविष्यवाणियां दुआ और तौबा और सदक्रा व खैरात से टल भी सकती हैं और टलती रही हैं और इस बात का गवाह पवित्र कुरआन और पहली पुस्तकें हैं। और स्मरण रहे कि वर्इद की भविष्यवाणी का अर्थ अज्ञाब की भविष्यवाणी है और जब खुदा तआला की इच्छा होती है कि किसी के दुष्ट कर्मों से खुदा तआला उस पर कोई बला भेजता है तो अल्लाह का नियम इसी प्रकार है कि उस बला को तौबा और क्षमा और दान इत्यादि से अधिकतर रद्द कर देता है और जब कोई बला में गिरफ्तार हो कर खुदा तआला की ओर लौटता है तो अधिकांश उस पर दया की जाती है जिस प्रकार कि युनुस अलैहिस्सलाम नबी की क्रौम की बला टाल दी गई। समस्त दुनिया जानती है कि तौबा और क्षमा और सदक्रा व खैरात से बला टल सकती है और वर्इद अर्थात् अज्ञाब की भविष्यवाणी की वास्तविकता सिवाए इसके और क्या है कि वह भी एक बला होती है कि अल्लाह के किसी मामूर (खुदा की ओर से भेजा गया) के माध्यम से इसकी सूचना दी जाती है।

फिर अगर यह बात सत्य है कि बला तौबा और क्षमा और सदक्रा व खैरात से टल सकती है तो फिर ऐसी भविष्यवाणी क्यों नहीं टल सकती जिसकी

खबर किसी अल्लाह की ओर से भेजे हुए (मामूर मिनल्लाह) के द्वारा दी गई हो और इसके अतिरिक्त उसके अज्ञानी शत्रु नहीं जानते कि यद्यपि अज्जाब की भविष्यवाणी में किसी शर्त की आवश्यकता नहीं होती वह केवल तौबा और इस्तिगफार (खुदा से अपने पापों की क्षमा चाहना) से टल सकती है परंतु फिर भी आथम और अहमद बेग और उसके दामाद के बारे में शर्ती भविष्यवाणियां थीं अर्थात् यह लिखा गया था कि इस मुसीबत इस शर्त पर आएगी कि वे लोग उद्दण्डता पर अडिग रहें और रुजू (लौटना) न करें। अतः आथम ने अपनी खामोशी और न क्रसम खाने और नालिश करने और इस्लाम पर कोई शब्द न कहने से सिद्ध कर दिया कि उसने उद्दण्डता की प्रवृत्ति को छोड़ दिया है और इसी प्रकार उसने साठ या सत्तर आदमियों के समक्ष बिलकुल मुबाहसा (शात्रार्थ) के समय ज़बान निकालकर और दोनों हाथ कानों पर रख कर अपने रुजू (लौटने) का इक्रार कर दिया जिस से कोई इनकार नहीं कर सकता और उस समय उपस्थितगण न केवल मुसलमान थे अपितु लगभग आधे ईसाई थे और प्रमाणित गवाहियों से यह भी सिद्ध हुआ कि वह 15 महीने तक रोता रहा तो क्या अब तक उसका रुजू सिद्ध न हुआ?

और अहमद बेग के दामाद के बारे में इतना वर्णन करना पर्याप्त है कि वह भविष्यवाणी दो पहलू रखती थी एक पहलू अहमद बेग के बारे में था और दूसरा पहलू उसके दमाद के बारे में था। अतः अहमद बेग और उसके मरने के सदमे ने उसके निकटवर्तियों के घमंड और अकड़ को तोड़ दिया और वह निर्धारित अवधि के अंदर मर गया। बेगानों और अपरिचितों को क्या खबर है कि उसकी मौत के कारण उसके दूसरे निकटवर्तियों पर क्या मुसीबत आई और इस मुसीबत ने उनको क्या सबक दिया और किस दुख ने उनको घेर लिया। अंततः यह परिणाम हुआ कि मिर्जा मेहमूद जिनके घर में यह रिश्ता हुआ था और जो समस्त परिवार का मुखिया था हमारे सिलसिला-ए-बैअत में दाखिल हो गया। अब यदि उन समस्त बातों को सुनकर भी कोई बकवास से न रुके तो उसका इलाज हम

क्या करें। ऐसे काले दिल को जो लज्जा और शर्म से खाली है हम किस प्रकार क्रायल कर सकते हैं और उसकी शत्रुता की बीमारी का क्या इलाज कर सकते हैं सिवाय इसके कि खुदा ही उसका इलाज करे।

क्या तज़रों और तौबा से नहीं टलता अज़ाब
 किस की यह तालीम है दिखलाओ तुम मुझ को शताब
 ऐ अज़ीज़ो! इस कदर क्यों हो गए तुम बेहया
 कलिमा गो हो, कुछ तो लाज़िम है तुम्हें खौफ़-ए-खुदा

यह इल्हाम बाबू साहब का जिसमें वह मेरे बारे में लिखते हैं कि वह व्यक्ति काफ़िर मरेगा और लानत का दुष्परिणाम उसी की ओर उल्टाया जाएगा। इसके आरंभ पर उसी पृष्ठ 152 में यह उनकी पंक्ति है- उस रात मिर्ज़ा साहब के अंजाम और उनके मिशन के अंतर्गत ग़रीब मुसलमानों के बारे में यह इल्हाम हुआ है।

और फिर पृष्ठ 172 में उनका यह इल्हाम है- यह सुंदर और प्रसन्नता की बात है कि इस बात का निर्णय हो जाए कि सत्य मिर्ज़ा साहब की ओर है।

फिर पृष्ठ 173 असा-ए-मूसा में उनका एक इल्हाम उनकी तमहीदी पंक्ति के साथ यह है। और विनीत को इल्हाम के द्वारा यह दुआ भी सिखाई जाती है "अल्लाहुम्मा अफ़ता बैनना व बैना कौमिना बिल हक्के व अंता ख़ैरुल फ़ातिहीन" इसके अर्थ वह यह करते हैं कि मुझ में और उनमें अर्थात् इस विनीत में खुदा तआला निर्णय करे। अब जो निर्णय हो गया वह किसी से छुपा हुआ नहीं। विचित्र बात है कि उनकी समस्त पुस्तकें इन्हीं इल्हामों से भरी हुई हैं कि उनके जीवन में मेरा समूल विनाश हो जाएगा और समस्त जमाअत बिखर जाएगी और मुबाहला का दुष्प्रभाव मेरे पर पड़ेगा और वह नहीं मरेंगे जब तक मेरा पतन न देख लें और फिर उनके मित्र कहते हैं कि जब वह प्लेग से ग्रसित हुए तो उनको यह इल्हाम हुआ कि "अर्रहील" अर्थात् अब तू संसार से चला जाएगा। कौन व्यक्ति है कि इस जानलेवा बीमारी के समय उसका हृदय "अर्रहील" (अर्थात् अब तू इस संसार से कूच करने वाला है) नहीं बोलता। "ताऊन" के अर्थ स्वयं अरबी भाषा में मौत

है। पाठकगण स्वयं सोच लें हम कुछ नहीं कहते कि पहले तो बाबू इलाही बख्श का इन इल्हामों पर जोर देना कि मेरी आयु बड़ी लंबी होगी जैसा के दीर्घ जीवन और देर तक रहना उनके इल्हाम में दर्ज है और फिर यह कि उनकी दीर्घ आयु से मोमिनों को बहुत से लाभ प्राप्त होंगे और फिर यह इल्हाम कि वह नहीं मरेंगे जब तक ताऊन से मेरी मौत न देख लें और मेरी पूर्ण रूप से तबाही का दर्शन न कर लें। और फिर यह इल्हाम कि उनके दुनिया में भी बड़े-बड़े उरूज (उन्नतियां) होंगे और एक दुनिया उनकी ओर लौटेगी और वह बागीचों के मालिक होंगे और उनके द्वारा इस्लाम की बड़ी तरक्की होगी। यह तो पहले इल्हाम थे जिनसे उनकी पुस्तक असा-ए-मूसा भरी पड़ी है फिर जब वह प्लेग में ग्रसित हो गए और प्रतिदिन सैकड़ों व्यक्तियों की मौत देख कर उस बीमारी का परिणाम सामने आ गया तब उस समय बाबू साहब को "अर्हील" का इल्हाम हुआ जो असा-ए-मूसा के समय इल्हामों पर पानी फेरता है परंतु यदि कल्पना स्वरूप इसको इल्हाम भी समझा जाए तो यह रहमत का इल्हाम नहीं अपितु क्रोध का इल्हाम है जो अत्यंत सख्त असफलता पर आधारित है और इसी प्रकार पहले इल्हामों का झूठ प्रदर्शित करता है और ऐसा इल्हाम कुछ हैरानी का स्थान नहीं क्योंकि अधिकतर लोग जब किसी जानलेवा बीमारी से ग्रसित हो जाते हैं और जान बचने से निराशा होती है तो उस समय ऐसे स्वप्न और ख्वाबें आया करती हैं। मोमिन और गैर मोमिन सब इसमें सम्मिलित हैं। अतः इस अवस्था में इल्हाम के अर्थ होंगे कि हे इलाही बख्श तू तो अपनी दीर्घ आयु क्ररार देता था और अपने विरोधी पक्ष की तबाही चाहता था और अपनी स्वयं निर्मित बात को खुदा का इल्हाम समझकर यह कहता था कि मेरा विरोधी मेरे जीवन में प्लेग से मरेगा परंतु हम तुझे आदेश देते हैं कि तू इस संसार से चला जाए।

अतः मुझे इस इल्हाम की सच्चाई पर बहस करने की आवश्यकता नहीं। संभव है कि हुआ हो जिसमें क्रोध के रूप में यह चेतावनी हो कि अब तेरा दुनिया से चले जाना ही बेहतर है क्योंकि तूने सच्चाई को स्वीकार नहीं किया।

इन लोगों की बुद्धि पर मुझे आश्चर्य होता है कि इलाही बख्श की ओर "अर्हील" का इल्हाम संबद्ध करके उसके समस्त इल्हामों का बेड़ा गार्क कर देते हैं और नहीं सोचते कि वह समस्त इल्हाम उसके कहां गए जिन पर भरोसा करके वह मुझे काफिर और दज्जाल कहता था और अपना नाम मूसा रखता था।

असल बात यह है कि वह समस्त इल्हाम उस के अज्गास-ए-अहलाम (अर्थात् परीशान-ख्वाबें या ऐसे स्वप्न जिनका स्वप्न-फल ठीक न बताया जा सके - अनुवादक) और स्वयं निर्मित थे और इसी प्रकार शैतानी विचार थे। इसलिए वह पूर्ण न हो सके अपितु उस के अपमान और बेइज्जती का कारण हुए। हां संभव है कि "अर्हील" खुदा तआला की ओर से इल्हाम हो क्योंकि यह वाक्य डरावे और चेतावनी के रूप में है और ऐसे इल्हाम का दावा यदि फिरऔन भी करता तो हमें इंकार नहीं था क्योंकि यह प्रमाणित बात है कि बिना किसी अंतर के एकेश्वरवादी और मुश्रिक (अधर्मी) और नेक और पापी और सच्चे और झूठे के हर एक को ऐसे इल्हाम उसके अंतिम समय में हो सकते हैं और इसी की ओर यह आयत संकेत करती है :

وَإِنْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ (अन्सि : 160)

अर्थात् ऐसा कोई अहले किताब नहीं जो अपनी मृत्यु से पहले आंखझरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान न लाए और तफ़ासीरों में लिखा है अहले किताब को यह इल्हाम उस समय होता है जब वह प्राण निकलने की अवस्था में होते हैं या मृत्यु का समय बहुत निकट होता है और अब प्रदर्शित है कि वह तभी ईमान लाते हैं जब उनको खुदा की ओर से इल्हाम होता है कि अमुक रसूल सच्चा है परंतु इस इल्हाम से वह खुदा के चुने हुए नहीं ठहर सकते और खुदा तआला की सुन्नत इसी तरह जारी है कि मृत्यु के निकट अधिकतर लोगों को कोई ख्वाब या स्वप्न या इल्हाम हो जाता है इसमें किसी धर्म की विशेषता नहीं और न नेक और पवित्र होने की शर्त है।

फिर बाबू इलाही बख्श साहब अपनी पुस्तक असा-ए-मूसा के पृष्ठ 180 में

लिखते हैं कि नाव का मल्लाह बनने का इल्हाम भी विनीत को होता है और नाव की तैयारी का आदेश भी इल्हाम के रूप में हो कर फिर इल्हाम हुआ "बिस्मिल्लाहे मजरीहा व मुर्साहा इन्ना रब्बी लगफूररहीम" फिर इल्हाम हुआ "इन्नल्लजीना जलमू इन्नहुम लमुगरकून" जिसके प्रदर्शन की खुदा की कृपा से दृढ़ उम्मीद★ है यह भी इल्हाम बहुत बार हुआ है "साउरीहीम आयाती फ़ला तस्ताजेलून।" (अर्थात अतः जरूर हम उन्हें निशान दिखाएंगे परन्तु जल्दी न करो - अनुवादक)

इस इल्हाम के यह अर्थ है कि वही नाविक हैं जो पार उतारेंगे और उनकी नाव में बैठने वाले मुक्ति प्राप्त करेंगे फिर मेरी ओर संकेत कर के फ़रमाते हैं कि जो लोग इस नाव में सवार नहीं हुए अर्थात यह विनीत, वे अत्याचारी हैं और डुबोए जाएंगे और फ़रमाते हैं कि यह भी कई बार मुझे इल्हाम हुआ है कि खुदा फ़रमाता है कि मैं अपने निशान उन विरोधियों को दिखलाऊंगा वह मुझसे जल्दी न करें।

अब पाठकगण सोच सकते हैं कि प्लेग की मौत ने ये समस्त इल्हाम झूठे सिद्ध कर दिए हैं। क्या ऐसे लोगों को मल्लाह कह सकते हैं कि जो आप ही डूब जाएं जिस अवस्था में दूसरों को डुबाने का वचन था जो उनके विरोधी हैं अर्थात यही विनीत, तो फिर यह कैसे मल्लाह और कैसी उनकी नाव थी और यह किस प्रकार का इल्हाम था जो उल्टा उन्हीं पर पड़ गया।

फिर बाबू साहब अपनी किताब के पृष्ठ 186 में लिखते हैं- जिस सेवा पर मिर्जा साहब गर्व करते हैं उसकी गुणवत्ता तो इल्हाम "कुल हल उनब्बेओकुम बिल अखसरीना आमालन" में गुजर चुकी है अर्थात उनके समस्त कर्म झूठे और

★ एक ओर तो बाबू इलाही बख़्श साहब लिखते हैं कि मैं अपने इल्हामों को यक़ीनी नहीं समझता संभव है कि शैतानी हों फिर ऐसे इल्हामों पर दृढ़ उम्मीद भी है आश्चर्य कि इन समस्त बातों के साथ सीमा से बढ़कर दरिंदगी अपनाई और आश्चर्य कि दूसरों के डूबने के लिए तो इल्हाम हुआ परंतु आप ही इस इल्हाम के चरितार्थ हो गए और बाबू साहब का यह इल्हाम कि शीघ्र ही मैं अपने निशान दिखलाऊंगा मुझसे जल्दी मत करो। अतः हम जानते हैं कि यह इल्हाम बाबू साहब की मौत से पूरा हो गया। चाहे उनकी मौत उनके लिए निशान नहीं परंतु हमारे लिए निशान है। इसी से

घाटे में पड़े हुए हैं और पृष्ठ 201 में मेरे बारे में लिखते हैं कि मिर्जा साहब जल्दी न करें दृढ़ उम्मीद और पूर्ण विश्वास है कि अल्लाह की सुन्नत के अनुसार "सरकश मुतमरिद हम चूं मन दीगरे नेस्त" (अनुवाद- मेरे समान उद्दंड और हद से बढ़ने वाला और कोई नहीं) कहने वाले को इंशाअल्लाह अवश्य नाकामी और पराजय होगी।

अब पाठकगण इसका उत्तर दें कि यह वाक्य तो मुंशी साहब का मेरे बारे में था परंतु क्या खुदा ने उनके कथन के अनुसार असफलता और पराजय की अवस्था में मुझे मौत दी या बाबू इलाही बख्श साहब को? मैं इससे अधिक कहना नहीं चाहता क्योंकि अब वह संसार से जा चुके हैं।★

फिर पृष्ठ 202 में मुंशी इलाही बख्श साहब लिखते हैं बलअम ने प्रथम बद्दुआ करने से इनकार किया फिर उसकी क्रौम ने उपहार देकर उसको झगड़े में डाला। अतः उसकी मौत के यही कारण थे। फिर जिस व्यक्ति के हालात बलअम के हालात से मिलते हैं जो हक्र मारता और झूठे दावे करता है उस व्यक्ति के लिए यह घटना प्रेरणादायक है। यह सारांश है उनके भाषणों का परंतु खेद कि बाबू साहब का इस ओर ध्यान न हुआ कि जो व्यक्ति बिना पूर्ण खोज के आपत्ति करता है और ऐसे व्यक्ति को जो खुदा के निकट लाचार और बरी है (जिसने वास्तव में किसी का हक्र नहीं मारा और न कोई झूठा दावा किया) बिना किसी ठोस सबूत के झूठा क्रार देता है और दज्जाल ठहराता है और खुदा के निशान जो बारिश के समान उसके समर्थन में बरस रहे हैं उनकी भी परवाह नहीं करता। क्या ऐसे व्यक्ति के लिए भी कोई दंड है या नहीं परंतु अब इन बातों को लम्बा खींचने की आवश्यकता नहीं क्योंकि अब बाबू साहब अपने मुबाहला और मुलाइना के बाद इस झूठ और बदजुबानी का परिणाम देख चुके हैं।

★ कुछ अज्ञानी मेरा वर्णन करके कहते हैं यदि इलाही बख्श असफल मर गया तो आप की मुरादें कौन सी पूरी हो गई हैं परंतु वे नहीं सोचते कि मैं तो अब तक जीवित हूं और मेरी मुरादें प्रतिदिन पूरी हो रही हैं लेकिन बाबू साहब तो मर चुके हैं और उनका असा-ए-मूसा टूटकर उन्हीं पर पड़ा। इसी से

फिर बाबू साहब का एक और इल्हाम है जो उनकी पुस्तक के पृष्ठ 224 में दर्ज है और वह है "ان يقولون الا كذباً اتبع هواه و كان امره فرطاً" (इन यकुलूना इल्ला कज़िबन इत्तिबा हवाहू व काना अमरूहू फ़रता) अर्थात् जो दावा यह व्यक्ति करता है उसका झूठा दावा है और अपनी तामसिक इच्छाओं का अनुसरण करता है और वह सीमा से बढ़ गया है अर्थात् अब उसके विनाश के दिन आ गए हैं। इस इल्हाम का उत्तर भी पढ़ने वाले स्वयं ही समझ लें।

परंतु अब बाबू साहब के समर्थक बताएं कि ख़ुदा तआला का वह मामला जो वह अपने शवत नियमानुसार झूठों के साथ किया करता है वह उसने मेरे साथ किया या बाबू साहब के साथ? पवित्र कुरआन की शिक्षा के अनुसार कि जो ख़ुदा की ओर से होने का झूठा दावा करता है वह असफल रह कर हलाक होता है। तो क्या यह सच नहीं कि यही परिणाम बाबू साहब का हुआ?

फिर बाबू साहब अपनी पुस्तक के पृष्ठ 319 में मेरे बारे में यह इल्हाम लिखते हैं "سينالهم غضب على غضب جعلته كالرميم كالعهن المنفوش" अर्थात् उस व्यक्ति पर क्रोध पर क्रोध आएगा और मैं गली सड़ी हड्डी के समान उसको कर दूंगा और कुछ रूई के समान जो धुनी जाती है। इस इल्हाम को भी पाठक आप ही सोच लें कि यह एक किस पर चरितार्थ हुआ।

फिर पृष्ठ 437 में मेरे बारे में यह इल्हाम है "ثم امانة فأفبره" (सुम्मा अमातहू फअब्रहु) अर्थात् ख़ुदा उसको मारेगा फिर कब्र में डालेगा।

और फिर पुस्तक असा-ए-मूसा के पृष्ठ 441 में बाबू साहब का यह इल्हाम मेरे बारे में है "يميز الخبيث من الطيب جعلناه هباءً منثوراً - سلام عليكم كتب على نفسه" जिसका प्रदर्शन इंशाअल्लाह निर्धारित समय पर होगा अर्थात् अल्लाह तआला दुष्ट को पवित्र से अलग करके दिखलाएगा अर्थात् कोई ऐसा चमत्कार कुदरत का दिखाएगा कि सिद्ध हो जाएगा कि सच्चा कौन है और झूठा कौन है और इस व्यक्ति को हम (अर्थात् मुझ को) पुरानी धूल के समान कर देंगे अर्थात् विनाश कर देंगे परंतु हे इलाही बख्श! तुम पर सलामती है तुम्हारे लिए ख़ुदा ने

रहमत लिखी है तुम विनाश से बचोगे★ अब सोचने वाले सोच लें कि अंततः परिणाम क्या हुआ? क्या वह तबाही जो मेरे बारे में बाबू साहब का इल्हाम बताता है वह उन्हीं पर आई है या नहीं?

फिर इसी पृष्ठ में लिखते हैं कि उनको इल्हाम हुआ "يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا" अर्थात् हे आग ठंडी हो जा और सलामती हो जा। हमें नहीं मालूम कि कौन सी आग उन पर ठंडी हो गई। केवल प्लेग की आग उन पर आई हुई थी अतः वह तो ठंडी न हुई और उनका काम एक दिन में समाप्त कर गई। सैंकड़ों लोग लाहौर में प्लेग से ग्रसित होकर अंततः स्वस्थ हो गए परंतु यह मुलहम साहब ठीक न हो सके और असमय मौत ने हज़ारों हसरतों के साथ इस दुनिया से खाना करा दिया। अब वह तो इस संसार को छोड़ गए केवल उनके दोस्तों के लिए केवल खुदा के लिए लिखना पड़ा है क्योंकि बाबू साहब की मौत के बाद मुझ को यह इल्हाम हुआ था "فَتَنَّا بَعْضَهُمْ مِنْ بَعْضٍ" (फ़तन्ना बाअज़ुहुम मिम् बअज़िन) अर्थात् हमने इलाही बख्श की मौत से उनके दोस्तों की परीक्षा लेनी चाही है कि क्या वे अब भी समझते हैं या नहीं। यह स्पष्ट है कि बाबू इलाही बख्श साहब मेरे मुकाबले पर बड़ी कठोरता के साथ खड़े हुए थे और कोई पहलू उन्होंने अपमान और तिरस्कृत का नहीं छोड़ा था और लोगों को उन्होंने अपनी पुस्तक से भटकाया था और प्रतिदिन मेरी मौत और तबाही की प्रतीक्षा करते थे और अपने दोस्तों को सैंकड़ों इल्हाम इस प्रकार के सुनाया करते थे और विशेषकर प्लेग से मेरी मौत अपनी पुस्तक में प्रकाशित की थी। फिर यह क्या हुआ कि वह स्वयं प्लेग से असफलता के साथ मर गए और हर प्रकार से खुदा ने मेरी सहायता की और पवित्र कुरआन में स्पष्ट रूप से लिखा है कि :

★ यह अच्छा बचना है कि मरे भी तो प्लेग से मरे। बाबू साहब के दोस्तो! सच कहो कि क्या तुम्हारी यही मुराद थी कि बाबू साहब मेरे जीवन में ही, जिसकी मौत और तबाही की प्रतीक्षा करते थे प्लेग से मर जाएं? उनके सैंकड़ों इल्हामों से जो मेरे विनाश के बारे में थे मेरा क्या नुकसान हुआ। यह क्या बात हो गई कि उनके इल्हामों की बिजली उन्हीं पर गिर गई। क्या कोई है जो इसका उत्तर दे? इसी से

كَتَبَ اللَّهُ لَا غَلِبَ أَنا وَرُسُلِي (अलमुजादला : 22)

अर्थात् खुदा तआला का यह अटल वचन है कि जो लोग उस की ओर से आते हैं वे विरोधी पक्ष पर विजयी हो जाते हैं। अतः इस में क्या भेद है कि बाबू साहब मेरे मुक़ाबले पर विजयी न हो सके और एक बड़ा प्लेग का तूफ़ान जो इस देश में उठा था और उस तूफ़ान से बढ़कर था जो मूसा और फिरऔन के समक्ष प्रकट हुआ था अपितु उस से बहुत ही बड़ा था, उस तूफ़ान में बाबू साहब मूसा कहलाने के बावजूद डूब गए और जिस को फिरऔन कहते थे उसको खुदा ने अपनी कृपा और दया से मुक्ति दी। मैं निस्संदेह समझता हूँ कि उस समय उनके मुँह से यह शब्द अवश्य निकले होंगे कि

أَمَنْتُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا الَّذِي أَمَنْتُ بِهِ بَنُوءَا إِسْرَائِيلَ

(यूनस : 91)

फिर मैं पूछता हूँ कि खुदा ने सूरः फ़ातिहा में जो उम्मुल किताब है मनुष्यों के तीन दर्जे रखे हैं। (1) मुनअम अलैहिम (जो पुरस्कृत किए गए-अनुवादक) (2) मगज़ूबे अलैहिम (जिन पर खुदा का रोष प्रकट हुआ- अनुवादक) (3) ज़ाल्लीन (जो पथभ्रष्ट हुए- अनुवादक)। अतः अब सोच कर बताएं कि बाबू इलाही बख़्श साहब को खुदा तआला ने किस दर्जे में सम्मिलित किया है। यदि आप के निकट वह मुनअम अलैहिम में सम्मिलित हैं तो यह सबूत आपके ज़िम्मे है कि मुनअम अलैहिम का जो दर्जा पवित्र कुरआन से सिद्ध है उस दर्जे वालों को कभी ताऊन (प्लेग) भी हुई हो। और फिर इसके साथ यह भी सिद्ध करो कि उन पर क्या इनाम हुआ और इनाम वह होना चाहिए जो दुनिया के सामने एक मान्य बात हो, ईसाइयों के कफ़रा के समान न हो अर्थात् केवल अपना ख़याल न हो। और यदि मगज़ूबे अलैहिम में सम्मिलित हैं तो यह ज्ञानगम्य है क्योंकि पवित्र कुरआन और तौरात से सिद्ध है कि प्लेग खुदा के प्रकोप की निशानी है और जो प्रथम श्रेणी के मोमिन (सिद्ध पुरुष) और चयनित होते हैं उनको कभी प्लेग नहीं हुई जैसे अंबिया और सिद्दीक और कोई सिद्ध नहीं कर सकता कि इस दर्जे के लोगों को कभी प्लेग हुई है क्योंकि यह अज़ाब जो कुफ़र और फासिकों और गुनाहों में

बढ़ने वालों को दंड देने के लिए आता है उस में खुदा के चुने हुए बन्दे अर्थात (नबी, सिद्दीक) कदापि कदापि सम्मिलित नहीं किए जाते। अतः जो स्वयं को खुदा का ऐसा प्रिय ठहराता है कि असा-ए-मूसा में यह इल्हाम लिखा है-

"قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُونِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ" ऐसा प्रिय प्लेग से क्यों ग्रसित हो गया। यहूदियों के बारे में आया है :

لَمْ يُعَذِّبْكُمْ بِذُنُوبِكُمْ (अलमाईद: -19)

हां गुनहगार मोमिन जो प्रथम श्रेणी में सम्मिलित नहीं और गुनाहों तथा कमजोरियों से खाली नहीं उसको कभी परखने और पवित्र करने के उद्देश्य से प्लेग हो सकती है। परंतु खुदा की ओर से जो मूसा बनकर आया है उसको तो नहीं हो सकती। अपितु पूर्ण मोमिन इस आयत के नीचे हैं कि

أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ (अलअंबिया : 102)

और यदि आप मुंशी इलाही बख्श साहब को जाल्लीन (पथभ्रष्ट) के दर्जे में दाखिल करते हैं तब तो यह भाषण उनके लिए अत्यंत बौद्धिक है क्योंकि व्यवहारिक रूप से उन्होंने सच्चाई को छोड़ दिया और फिर इतनी अधिक बदजुबानी और शेखी और भड़काने में चरम को पहुंच गए कि क्या मजाल के कोई बात भी सुन सकें। जिस व्यक्ति ने मेरा वर्णन उनके समक्ष प्रस्तुत किया, प्रथम तो मुझे उन्होंने दस, बीस गालियां सुना दीं और फिर जान बूझ कर सच्ची बात से इंकार कर दिया परंतु अंततः खुदा तआला प्रत्येक हृदय को जानता है अतः वास्तव में उनके साथ जो खुदा तआला ने एक मामला किया है वह बुद्धिजीवियों के लिए प्रेरणा योग्य है और मेरा हृदय जानता है कि उन्होंने मुझे बहुत ही दुख दिया था।

ता दिले मर्दे खुदा नामद बदर्द

हीच क्रौमे रा खुदा रुस्वा न करद

अनुवाद:- जब तक किसी क्रौम ने अल्लाह वालेक का दिल नहीं दुखाया, तब तक अल्लाह ने उस क्रौम को नुकसान नहीं पहुँचाया है। (अनुवादक)

भला आप लोग खुदा तआला का भय दृष्टिगत रख कर यह तो बताएं कि

क्या आप लोगों की यही मुराद थी और सचमुच आप की यही आशा थी कि इलाही बख्श तो असफलता के साथ प्लेग से मर जाए और वह उसका विरोधी जिसके लिए उसने हजारों इंसानों में प्रसिद्धि दे दी थी कि वह प्लेग से मरेगा खुदा उसको इस बीमारी से बचाए और उसको स्पष्ट उन्नतियां प्रदान करे और सैकड़ों निशान उसके लिए दिखाए यहां तक कि इलाही बख्श की मौत को भी उसके निशानों में से एक निशान कर दे। क्या वह इल्हाम जो बाबू इलाही बख्श साहब को हुआ था कि "यमीजुल खबीसा मिनतयब्बे" अर्थात् खुदा पवित्र और अपवित्र में अंतर करके दिखा देगा। क्या इसके यही अर्थ हैं कि बाबू इलाही बख्श प्लेग से हलाक हो कर अपने निकटवर्तियों को हसरत का दाग दे जाएगा। मुंशी अब्दुल हक साहब और उनके दोस्तों पर वह दिन कैसा कठोर और कड़वा था जब उनके घर में बाबू साहब जो उनके मुर्शिद (मार्गदर्शक) थे उनके समस्त दावों के विरुद्ध मर कर एक सख्त मुसीबत में उनको छोड़ गए और प्लेग के तत्व से घर को भी भर गए। अब भी खुदा तआला उनके मित्रों को कुछ बुद्धि दे ताकि वह सच्चाई को पहचान लें।

फिर पृष्ठ 294 में एक और इल्हाम उनका है और वह यह है "قل جاء الحق وزهق الباطل ان الباطل كان زهوقا۔ قل لَسْتُ مُرْسَلًا ذَرَهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّى يَأْتِيَ الْيَوْمُ مِمَّ هُمْ الَّذِي كَانُوا يَعِدُونَ (कुल जाअलहक्को व ज़हाकल बातिल इन्ना बातिला काना ज़हूका, कुल लस्ता मुर्सलन जर्हुम यखुजू व यलअबू हत्ता यलाकू यौमेहीम अल्लजी कानू यौअदून) अर्थात् सच्चाई आई और झूठ भाग गया और अपने विरोधियों को अर्थात् इस विनीत को कह दे कि तू खुदा की ओर से नहीं और उनको छोड़ दे ताकि वे कुछ दिन खेल-कूद में रहे जब तक कि प्लेग की मौत का वचन जो दिया गया है वह वचन का दिन न आ जाए। सुबहान अल्लाह यह कैसे इल्हाम हैं, यह कैसा हक था कि झूठ के सामने से भाग गया और इल्हाम को झूठा कर गया और यह कैसा प्लेग का वादा था जो गलती खा कर स्वयं मुलहम (जिस पर इल्हाम हो) पर ही पड़ गया। कोई न्यायवान बताए कि

यह इल्हाम यदि शैतानी नहीं थे तो और क्या थे। यदि खुदा अपने प्यारों को हमेशा प्लेग से बचाता रहा है तो बेचारा इलाही बख्श जिसको यह इल्हाम हुआ था कि "बाद अज़ खुदा बुजुर्ग तू ई किस्सा मुख्तसर" और यह इल्हाम हुआ था "قل ان كنتم تحبون الله فاتبعوني يحببكم الله" (कुल इन कुन्तुम तुहिब्बूनल्लाह फ़ततबेऊनी योहबिबकुमुल्लाह) उसको इस अल्लाह की सुन्नत से क्यों वंचित रखा गया। जो व्यक्ति खुदा के बाद सब से प्रतिष्ठित है और फिर खुदा का ऐसा प्यारा है कि उसके अनुसरण से व्यक्ति खुदा का प्रिय बन जाता है उस पर क्यों यह आकाशीय आपदा आई जो सामान्य रूप से झूठे और मक्कारों पर आया करती है। क्या अभी वह समय नहीं आया कि न्यायवान लोग इस बात को समझ लें कि बाबू इलाही बख्श का ऐसी असफलता के साथ दुनिया से चले जाना और फिर प्लेग से मरना और फिर समस्त इल्हामों के उद्देश्य के विरुद्ध चले जाना एक निर्णायक बात है। और यदि नफ़रत करने वाले लोग अभी समझ नहीं सकते तो निस्संदेह स्मरण रखें कि खुदा तआला किसी से पराजित नहीं हो सकता वह कोई और निशान दिखाएगा परंतु खेद उन लोगों पर जो खुदा के सैकड़ों निशान जो प्रकाशमयी दिन के समान प्रदर्शित होते जाते हैं, उनसे तो कुछ लाभ प्राप्त नहीं करते और केवल दो तीन ऐसी भविष्यवाणियां जो वर्णित विषय के बारे में पूरी हो गई हैं या आधा भाग उनका पूरा हो चुका है और वे वईद (दंड) की भविष्यवाणियाँ हैं और अल्लाह के नियमानुसार उन पर कोई आपत्ति नहीं। बार बार उन्हीं को प्रस्तुत करते हैं क्या यह ईमानदारी है कि दस हजार निशानों से मुहं फेरना और यदि किसी निशान की वास्तविकता समझ न आए तो उस पर जोर देना और यदि यही बात है तो उन लोगों का ईमान आज भी नहीं और कल भी नहीं क्योंकि खुदा तआला का कोई मामला मेरे साथ ऐसा नहीं जिस में कोई नबी सम्मिलित न हो और कोई ऐतराज़ मुझ पर ऐसा नहीं कि किसी और नबी पर वही ऐतराज़ न होता हो। अतः ऐसे लोग जो मुझ पर ऐतराज़ करते समय यह भी नहीं सोचते कि यही ऐतराज़ कई और नबियों पर भी चरितार्थ होता है वे अत्यंत गंभीर स्थिति में हैं और उनके

बारे में डर है कि कहीं निरीश्वरवादी हो कर न मरें।★

स्मरण रहे कि जिस हठ और शेखी के साथ बाबू इलाही बख्श ने मेरे साथ मुक्राबला किया और मेरी प्लेग से मौत और हर प्रकार की मेरी असफलता की खबरें दीं यदि यह मामला इसी प्रकार घटित हो जाता और मैं इलाही बख्श के जीवन में मर जाता तो न मालूम कि बाबू इलाही बख्श के मित्र किन किन लानतों के साथ मुझे याद करते और किस उच्च सम्मान और शिखर पर उनको चढ़ा देते परन्तु अब एक व्यक्ति भी उन में से नहीं बोलता और चाहते हैं कि खुदा का यह निशान गायब हो जाए और उन को भलि भान्ति मालूम है कि बाबू साहब मुबाहला और मेरी भविष्यवाणी का निशाना हो गए हैं यदि वह नरमी अपनाते तो शायद कुछ दिन और बच जाते। परन्तु उनके स्वयं निर्मित इल्हाम उनके लिए प्राणघातक विष हो गए। उनको खबर न थी कि खुदा का सच्चा वार्तालाप मौत के पश्चात प्राप्त होता है। जो व्यक्ति अपनी समस्त तामसिक इच्छाओं और लोभ लालसाओं और प्रत्येक प्रकार की तेजी और शेखी के जोश से पवित्र हो जाता है और उस पर खुदा के लिए एक मौत आ जाती है, वही जीवित किया जाता है और खुदा का वार्तालाप फ़ानियों (खुदा के मार्ग में खुद को नष्ट करने वालों) के लिए एक पुरस्कार होता है। प्रत्येक दावा करने वाले को यह देखना चाहिए कि वास्तव में वह फानी हो चुका है या अभी तामसिक इच्छाओं में लिप्त है।

हज़ार नुक्ताएँ बारीक तर्जें मौ ई जासत

न हर कि सर बतरा शुद कलंदरी दानद

अनुवाद: यहाँ बाल से बारीक हजारों भेद हैं ऐसा नहीं कि जो भी सिर मुंडवा ले वह कलंदरी समझ ले।

फिर बाबू इलाही बख्श साहब अपनी पुस्तक असा-ए-मूसा के पृष्ठ 69 में फरमाते हैं विनीत को मानवीय कमजोरी के कारण यह विचार आया कि शायद

★ कुछ शरारती महा झूठे कहते हैं कि यदि मिर्जा से निशान प्रदर्शित होते हैं तो मुसैलमा कज्जाब से भी निशान प्रदर्शित हुए हैं उनके उत्तर में केवल यही कहना पर्याप्त है कि झूठों पर अल्लाह की लानत हो। इसी से

मिर्जा साहब की नाराज़गी से कुछ हानि हो। इस पर निम्नलिखित इल्हाम में सुरक्षा और सलामती का ढारस बन्धाया गया "वल्लाहो खैरा हाफिज़न वहुवा अर्हमुरहिमीन★ फ़सलामा लका" अर्थात् तेरा खुदा रक्षक होगा और तेरे लिए सलामती रहेगी कोई खुदा का प्रकोप तुझ पर नहीं आएगा यह है इल्हाम बाबू साहब का जिसने उनको ढारस दिया कि विरोधी पक्ष अर्थात् इस पीड़ित विनीत की बददुआ से उनको कोई हानि नहीं होगी वह सलामत रहेंगे। ज्ञात होता है कि इसी इल्हाम ने उनको बदज़ुबानी और गालियाँ देने में चालाक कर दिया। फिर इसके बाद उनकी बदज़ुबानी ऐसी बढ़ गई जैसे किसी दरिया का पुल टूट कर इर्द-गिर्द की बस्तियों का विनाश कर देता है।

खेद कि सैंकड़ों निशान उनके जीवन में पूरे हुए परन्तु किसी निशान से उन्होंने लाभ प्राप्त न किया और प्रत्येक निशान के देखने के बाद या किसी से उसका हाल सुनने के बाद बार बार उनका यही उत्तर था कि आथम अवधि के अंदर नहीं मरा। अहमद बेग का दामाद अब तक जीवित है यद्यपि इल्हाम था कि अहमद बेग की लड़की का निकाह आसमान पर पड़ा गया है और उनके मार्गदर्शन के लिए बार बार पुस्तकों में लिखा गया कि डिप्टी आथम तो अवश्य मर चुका है अवधि के अंदर मरा या अवधि के बाहर परन्तु अंततः मर तो गया और यह भविष्यवाणी शर्त थी अर्थात् मरना उसका इस शर्त पर था कि जब सच्चाई की ओर वह न लौटे परन्तु आथम ने जलसा मुबाहसा में ही अपना लौटना प्रदर्शित कर दिया जब उसको कहा गया कि यह भविष्यवाणी इस लिए की गई है कि तुम ने अपनी पुस्तक "अन्दरूना बाईबल" में आंज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम दज्जाल रखा है तब उसने साठ या सत्तर व्यक्तियों के समक्ष जिन में लगभग आधे ईसाई थे अत्यंत भय और विनम्रता की हालत बना कर ज़बान मुंह से निकाली और दोनों हाथ कानों पर रखे और वर्णन किया कि मैंने आंज़रत सल्लल्लाहो अलैहि

★ खेद कि इनका कोई मित्र भी इस बात को नहीं सोचता कि जबकि खुदा तआला का वादा था कि वह उनकी सहायता करेगा और मेरा नाराज़ होना उनको कुछ लाभ नहीं पहुंचाएगा तो फिर यह क्या बात हुई कि प्लेग ने बाबू साहब को आ पकड़ा। कहाँ गई वह सुरक्षा जिसका वादा था। इसी से

वसल्लम को कदापि दज्जाल नहीं कहा और फिर विश्वसनीय सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि वह पन्द्रह महीने तक रोता रहा और खुदा तआला ने भी मुझे अपने इल्हाम के द्वारा ख़बर दी कि इस भविष्यवाणी के माध्यम से उसको सख्त सदमा पहुंचा और वह पागलों जैसा हो गया है और उसके हृदय में इस्लाम की महानता बैठ गई और उसने शेखी और बदजुबानी बिलकुल छोड़ दी और इन सब बातों के बावजूद ईसाई धर्म पर स्थापित रहने के प्रमाण स्वरूप उसने क्रसम नहीं खाई हालांकि इस क्रसम पर चार हजार रुपया नक़द उसको मिलता था और ईसाई धर्म में क्रसम खाना न केवल वैध अपितु कुछ अवस्थाओं में अनिवार्य लिखा है और इस बात को छुपाना केवल बेईमानी और शरारत है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने स्वयं क्रसम खाई, पोलूस ने क्रसम खाई, पितरस ने क्रसम खाई। अतः यह समस्त तर्क आथम के लौटने पर तर्क हैं और एक न्यायवान के लिए पर्याप्त हैं और यदि उसके लौटने पर कोई तर्क भी न होता तब भी मेरे लिए यह पर्याप्त था कि खुदा ने उसके लौटने की मुझे ख़बर दी और इसके साथ वह मेरे अंतिम विज्ञापन से छः महीने गुज़रने के बाद मर गया। अतः जबकि भविष्यवाणी शर्त के साथ थी और शर्त के चिन्ह प्रदर्शित हो गए थे तो फिर किसी खुदा से डरने वाले व्यक्ति का कार्य नहीं है कि लज्जा और शर्म को छोड़ कर फिर भी आपत्ति करने से न रुके हालांकि यह मुद्दा प्रमाणित है कि वईद अर्थात् अज़ाब की भविष्यवाणियों में किसी शर्त की भी आवश्यकता नहीं वह टल सकती हैं क्योंकि वह एक मुजरिम के लिए दंड देने का वादा है और खुदा वास्तविक बादशाह है वह किसी की तौबा और इस्तिग़फ़ार (पापों की क्षमा चाहना) से अपने अज़ाब को माफ़ कर सकता है जैसा कि यूनूस नबी की क्रौम को माफ़ कर दिया। इसी पर समस्त नबियों की सहमती है जैसा की अल्लाह तआला स्वयं कहता है :

إِنَّ يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۖ وَإِنْ يَكُ صَادِقًا يُصِيبْكُمْ بَعْضُ الَّذِي
يَعِدُّكُمْ۔ (अलमो'मिन-29)

अर्थात् यदि यह नबी झूठा है तो झूठ बोलने का अज़ाब उस पर आएगा और

यदि सच्चा है तो कुछ अज़ाब जिन का वह वादा देता है तुम पर आ जाएंगे।

अब देखो खुदा ने "कुछ" का शब्द इस स्थान पर प्रयोग किया न कि कुल का जिसके यह अर्थ हैं कि इस नबी ने अज़ाब की जितनी भविष्यवाणियाँ की हैं उन में से कुछ तो अवश्य पूरी हो जाएंगी चाहे कुछ विलंब में रह जाएंगी। अतः कुरआन की आयतों से यह सिद्ध है कि अज़ाब की भविष्यवाणी का पूरा होना अनिवार्य नहीं हाँ इस आयत से यह समझा जाता है कि झूठा मुद्दई किसी भी प्रकार अज़ाब से बच नहीं सकता। क्योंकि उसके लिए यह अटल आदेश है कि

(अलमोमिन - 29) **وَإِنَّ يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ**

अतः यदि झूठे मुद्दई के लिए कोई अज़ाब की भविष्यवाणी हो तो वह टल नहीं सकती।

हाय खेद! कुछ समझ नहीं आता कैसी निर्लज्जता है कि एक ओर तो ये लोग इक्रार करते हैं कि सदका खैरात और दुआ इत्यादि से विपत्ति टल जाती है और दूसरी ओर इस बात पर जोर देते हैं कि जिस विपत्ति की सूचना रसूल को दी जाए कि अमुक क्रौम और अमुक व्यक्ति पर आएगी वह विपत्ति सदका व खैरात या तौबा और इस्तिग़फ़ार से टल नहीं सकती। आश्चर्य है इन लोगों की बुद्धि पर कैसे पड़े पड़ गए कि अपनी बात में विरोधाभास इकट्ठा कर लेते हैं। यह भी कहते हैं कि तौबा और इस्तिग़फ़ार से विपत्ति टल सकती है और यह भी कहते हैं कि नहीं टल सकती और फिर जबकि खुदा ने अपने इलहाल के द्वारा मुझे सूचना दे दी कि आथम ने अवश्य रुजू (लौटना) किया था और आथम की बातों और उसके व्यवहार से उसके चिन्ह भी प्रदर्शित हो गए थे तो फिर इन शरारतों से न रुकना क्या यही उन लोगों का संयम है कम से कम "ज़बान को बन्द ही कर लिया होता।★ भला मैं पूछता हूँ कि यदि यह घटना

★ जिन लोगों को खुदा का भय नहीं है वे ऐसी आलोचनाएं करते हैं जिनके कारण आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी उनके ऐतराज़ के अंतर्गत आ जाते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि जमात-ए-अहमदिया के कुछ लोग भी प्लेग से मरे हैं इन्हीं में से डाक्टर अब्दुल हकीम खान भी

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर संबद्ध होती और आप वह्यी के माध्यम से कहते कि अमुक व्यक्ति जिस पर अज़ाब नाज़िल होना था गुप्त रूप से अपनी शेखियों से रुक गया है तो फिर क्या आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस कथन को यह लोग स्वीकार करते या रद्द कर देते। और यदि स्वीकार न करते तो फिर क्या खुदा ने निकट दंड के योग्य ठहरते या न ठहरते? अतः जिस अवस्था में खुदा तआला ने आथम के लिए यह शर्त निर्धारित कर दी थी और उसने मुझे अपनी वह्यी के माध्यम से बता दिया था कि आथम अपनी शरारत और शेखी पर डटा न रहा। अतः संयम का अधिकार यह था कि इस बहस को लपेट कर रख देते और सकारात्मकता से विचार करते और सोचते कि

शेष हाशिया- है जो बहुत खुश हो कर लिखता है कि सनोर में अमुक-अमुक अहमदी प्लेग से मर गया है। हम ऐसे घृणा रखने वालों का यह उत्तर देते हैं कि हमारी जमाअत में से कुछ लोगों का प्लेग से मरना भी ऐसा ही है जैसा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कुछ सहाबा लड़ाइयों में शहीद होते थे। यह बात तो कुरआन की आयतों से सिद्ध है कि वे लड़ाइयाँ तो केवल काफ़िरों पर अज़ाब भेजने के लिए थीं जैसा कि अल्लाह तआला ने पवित्र कुरआन में फ़रमाया है कि यदि चाहूँ तो उन काफ़िरों पर आकाश से अज़ाब नाज़िल करूँ और या ज़मीन से उनके लिए अज़ाब पैदा करूँ और या कुछ को कुछ की लड़ाई का स्वाद चखाऊँ। परन्तु इन सबके बावजूद उन लड़ाइयों में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा भी शहीद होते रहे परन्तु अंतिम परिणाम यह था कि काफ़िर घटते गए और मुसलमान बढ़ते गए और वे लड़ाइयाँ मुसलमानों के लिए नितांत बरकत का कारण हो गईं और काफ़िरों को जड़ से उखाड़ दिया। इसी प्रकार मैं कहता हूँ और बड़े दावे और ज़ोर से कहता हूँ कि यदि एक व्यक्ति हमारी जमाअत में से प्लेग से मरता है तो उसके फ़लस्वरूप सौ व्यक्ति या अधिक हमारी जमाअत में सम्मिलित होते हैं और यह प्लेग हमारी जमाअत को बढ़ाती जाती है और हमारे विरोधियों का विनाश करती जाती है। हर एक महीने में कम से कम पांच सौ लोग और कभी हजार, दो हजार लोग प्लेग के द्वारा हमारी जमाअत में सम्मिलित होता है। अतः हमारे लिए प्लेग रहमत है और हमारे विरोधियों के लिए विपत्ति है और यदि दस पन्द्रह वर्ष तक हमारे देश में ऐसी ही प्लेग रही तो मैं विश्वास रखता हूँ कि सारा देश अहमदी जमाअत से भर जाएगा। यह बात प्रमाणित है कि प्लेग हमारी जमाअत को बढ़ाती जाती है और हमारे विरोधियों को घटाती जाती है। और यदि इसके विरुद्ध सिद्ध हो तो मैं खुदा तआला की

संभवतः यही बात सच हो। फिर जिस अवस्था में केवल खुदा की वही ने ही मुझे यह सूचना नहीं दी अपितु जैसा कि मैं अभी लिख चुका हूँ कि स्वयं आथम ने भी ऐसे ही चिन्ह प्रदर्शित किए तो प्रत्येक संयमी व्यक्ति के लिए यही उचित था कि इस विषय में बात न करता और खुदा से डरता।

रहा मामला अहमद बेग के दामाद का, तो हम कई बार लिख चुके हैं कि वह भविष्यवाणी दो भागों पर आधारित थी। एक भाग अहमद बेग की मौत के बारे में था। दूसरा भाग उसके दामाद की मौत के बारे में था और भविष्यवाणी शर्ती थी। अतः अहमद बेग शर्त पूरी न करने के कारण अवधि के अंदर मर गया और उसके दामाद ने और ऐसा ही उसके संबंधियों ने शर्त पूरी करके इसका लाभ उठा लिया। यह तो अनिवार्य बात थी कि अहमद बेग की मौत से इन के दिलों में भय उत्पन्न हो जाता क्योंकि भविष्यवाणी में दोनों भागीदार थे और जब दोनों भागीदारों में से एक पर मौत आ गई तो मानवीय स्वभाव की एक अनिवार्य विशेषता थी कि जो व्यक्ति इस भविष्यवाणी का दूसरा निशाना था उसको और

शेष हाशिया- क्रसम खा कर कहता हूँ कि ऐसा सिद्ध करने वाले को मैं हजार रुपया नक़द देने के लिए तैयार हूँ। कौन है कि इस मुकाबले के लिए खड़ा हो और हम से हजार रुपया ले? खेद है कि यह विरोधी लोग ऐसे अंधे हो गए हैं उनको ज्ञात नहीं कि वास्तव में प्लेग हमारी दोस्त और उनकी दुश्मन है। जितनी अधिक हमारी उन्नति प्लेग के माध्यम से तीन चार वर्ष में हुई है वह दूसरे रूप में पचास वर्ष में भी असंभव थी। अतः मुबारक वह खुदा है जिसने दुनिया में प्लेग को भेजा ताकि इसके माध्यम से हम बढ़ें और फलें-फूलें और हमारे शत्रुओं का विनाश हो। यही कारण है कि खुदा ने प्लेग के अस्तित्व से पहले इल्हाम के माध्यम से मुझे खबर दी कि दुनिया में प्लेग आएगी और हमारे शत्रुओं का इस से विनाश होता जाएगा परन्तु इसके माध्यम से हमारी संख्या में वृद्धि होगी। अतः इस से बढ़कर अंधा और कौन व्यक्ति है जो कुछ अहमदी लोगों का प्लेग से मरना प्रस्तुत करता है और इस बात से अब तक बेखबर है कि इस समय तक कई लाख इन्सानों को प्लेग ने हमारी जमाअत में सम्मिलित कर दिया और प्रतिदिन सम्मिलित कर रही है। अतः मुबारक है यह प्लेग जो हमारी संख्या को बढ़ा रही है और वास्तव में हमारी जमाअत का प्लेग से कोई नहीं मरा क्योंकि एक के बदले हम ने सौ या उस से अधिक प्राप्त कर लिया। इसी से

उसके प्रियों को मौत का भय पड़ जाता जैसा कि एक ही भोजन जिसे दो व्यक्तियों ने मिल कर खाया था एक उन में से मर जाए तो अवश्य दूसरे को भी अपनी मौत की चिंता हो जाती है। अतः इसी प्रकार अहमद बेग की मौत ने वह भय शेष बचे हुए व्यक्ति और उसके निकटवर्तियों पर डाला कि वे भय के कारण मृत के समान हो गए। परिणाम यह हुआ कि वह प्रतिष्ठित खानदान जो इस काम के आरम्भ करने वाले थे बैअत के सिलसिले में सम्मिलित हो गए।

यह बात कि इल्हाम में यह भी था कि उस स्त्री का निकाह आकाश पर मेरे साथ पढ़ा गया है, यह ठीक है परन्तु जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं इस निकाह के प्रकटन के लिए जो आकाश पर पढ़ा गया खुदा की ओर से एक शर्त भी थी जो उसी समय प्रकाशित की गई थी **ايتها المرأة توبى توبى فان البلاء على عقبك** (अय्यतुहल मराअतो तूबी तूबी फ़इन्नल बलाआ अला अक्रबेकी) अतः जब उन लोगों ने इस शर्त को पूर्ण कर दिया तो निकाह टूट गया या विलम्ब में पड़ गया। क्या आपको खबर नहीं कि **"يمحو الله ما يشاء ويثبت"** निकाह आकाश पर पढ़ा गया या अर्श पर परन्तु अंततः वह समस्त कारवाई शर्ती थी शैतानी विचारों से पृथक् हो कर इस को सोचना चाहिए क्या युनुस अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी निकाह पढ़ने से कुछ कम थी जिस में बताया गया था कि आकाश पर यह निर्णय हो चुका है कि चालीस दिन तक इस क्रौम पर अज़ाब नाज़िल होगा परन्तु अज़ाब नाज़िल न हुआ यद्यपि इसमें किसी शर्त का उल्लेख नहीं था। अतः वह खुदा जिस ने अपना ऐसा अटल निर्णय टाल दिया क्या उस पर कठिन था कि इस निकाह को भी तोड़े या किसी और समय पर डाल दे।

अतः निर्लज्ज लोग इन ऐतराज़ों के समय नहीं सोचते कि ऐसे ऐतराज़ समस्त नबियों पर पड़ते हैं। नमाज़ें भी पहले पचास नमाज़ें निर्धारित हो कर पांच रह गईं और तौरात पढ़ कर देखो सैंकड़ों बार खुदा के निर्धारित किए हुए अज़ाब हज़रत मूसा की शिफ़ाअत से समाप्त कर दिए गए ऐसा ही यूनुस की क्रौम पर आकाश पर जो विनाश का आदेश लिखा गया था वह आदेश उनकी तौबा से

समाप्त कर दिया गया और समस्त क्रौम को अज़ाब से बचा लिया गया। और बजाए इसके स्वयं हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम बड़ी समस्या में पड़ गए क्योंकि उनके मन में यह विचार आया कि भविष्यवाणी अटल थी और अज़ाब देने का ख़ुदा का इरादा अटल था। अफ़सोस कि यह लोग यूनुस के किस्सा से भी कोई सबक नहीं सीखते उसने नबी होकर केवल इस विचार से बहुत मुसीबत उठाई कि ख़ुदा का अटल इरादा जो आसमान पर तय हो चुका था कैसे रद्द हो गया और ख़ुदा ने तौबा करने पर एक लाख लोगों की जान को बचा लिया और यूनुस अलैहिस्सलाम की इच्छा की कुछ भी परवाह न की।

वे कैसे मूर्ख लोग हैं जिनकी यह आस्था है कि ख़ुदा अपने इरादों को परिवर्तित नहीं कर सकता और वईद अर्थात् अज़ाब की भविष्यवाणी को टाल नहीं सकता। परन्तु हमारी यह आस्था है कि वह टाल सकता है और हमेशा टालता रहा है और हमेशा टालता रहेगा और हम ऐसे ख़ुदा पर ईमान ही नहीं लाते कि जो बला को तौबा और इस्तिग़फ़ार से रद्द न कर सके और पश्चाताप करने वालों के लिए अपने इरादों को परिवर्तित न कर सके वह हमेशा परिवर्तित करता रहेगा यहाँ तक कि पहली आकाशीय पुस्तकों में लिखा है कि एक बादशाह की केवल पन्द्रह दिन की आयु रह गई थी ख़ुदा ने उसके पश्चाताप और दुआ से बजाए पन्द्रह दिन के पन्द्रह साल कर दिए यही हमारा निजी अनुभव है एक भयानक भविष्यवाणी होती है और दुआ से टल जाती है। अतः उन लोगों का फ़र्ज़ ख़ुदा इन बातों पर समर्थ नहीं तो हम उसको नहीं मानते। हम उस ख़ुदा को मानते हैं जिसकी विशेषता पवित्र कुरआन में यह लिखी है :

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (अलबक्रह : 107)

अनुवाद :- क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह हर बात पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है?

और वईद अर्थात् अज़ाब की भविष्यवाणी टलने के बारे में समस्त नबी सहमत हैं। रही वादे की भविष्यवाणी जिस के बारे में यह आदेश है कि :

إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ (आले इमरान : 10)

अनुवाद :- निस्संदेह अल्लाह वचन भंग नहीं करता।

इसके बारे में हमारी यह आस्था है कि खुदा इस वादे के विपरीत नहीं करता जो उसके ज्ञानानुसार है परन्तु यदि मनुष्य अपनी गलती से एक बात को खुदा का वादा समझ ले जैसा कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने समझ लिया था ऐसा वादे के विपरीत वैध है क्योंकि वास्तव में वह खुदा का वादा नहीं अपितु मानवीय गलती ने अकारण उसको वादा ठहराया है इसी के बारे में सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी फ़रमाते हैं "क्रद यूअद वला यूफ़ा" अर्थात् कभी खुदा तआला वदा करता है और उसको पूरा नहीं करता। इस कथन के भी यही अर्थ हैं कि उस वादे के साथ गुप्त रूप से कई शर्तें होती हैं★ और खुदा तआला पर अनिवार्य नहीं कि समस्त शर्तें प्रकट करे अतः इस स्थान पर एक कच्चा व्यक्ति ठोकर खा कर इनकारी हो जाता है और पूर्ण व्यक्ति अपनी मूर्खता का इक्रार करता है। यही कारण है कि आंज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बदर की लड़ाई के समय बावजूद यह कि विजय का वादा था बहुत रो-रो कर दुआ करते रहे और खुदा के समक्ष विनम्रता से ये दुआएं मांगी कि **اللَّهُمَّ إِنَّ أَهْلَكَ هَذِهِ الْعَصَابَةَ لَنْ تُعْبِدَ فِي الْأَرْضِ أَبَدًا** * क्योंकि

★ यह अल्लाह की आदत हमेशा से जारी है कि उसकी भविष्यवाणियों में कोई भाग मुतशाबिहात (जिसका अर्थ स्पष्ट न हो- अनुवादक) का होता है और कोई स्पष्टता का और कभी कुछ भविष्यवानियाँ केवल मुतशाबिहात के रूप में होती हैं और एक मूर्ख व्यक्ति केवल मुतशाबिहात पर दृष्टि रख कर भविष्यवाणी को झुठलाता है यद्यपि यदि कोई भविष्यवाणी जो मुतशाबिहात में से है मुलहम (जिसको इल्हाम होता है -अनुवादक) के विचारानुसार प्रकटन में न आए तो यह नहीं कहना चाहिए कि वह झूठी निकली अपितु यह कहना चाहिए कि मुलहम के अपने विचार में गलती हुई जैसा कि हदीस "ज़हबा वह्ली" इस पर गवाह है हाँ की भविष्यवाणियों में मुतशाबिहात कम होते हैं और स्पष्टता अधिक। परन्तु होते अवश्य हैं ताकि खुदा इस से नेक और झूठे को आजमाए और खुदा के नबी स्पष्ट (इल्हामों) की अधिकता से पहचाने जाते हैं। यह ऐसा नहीं कि उनकी भविष्यवानियाँ मुतशाबिहात से बिलकुल पवित्र होती हैं। इसी से

* अर्थात् हे मेरे खुदा यदि तूने इस गिरोह का विनाश कर दिया तो फिर ज़मीन पर कोई तेरी परस्तिश नहीं करेगा। इसी से

आप इस बात से डरते थे कि संभवतः इस वादे में कोई गुप्त शर्तें हों जो पूरी न हो सकें। "हर कि आरिफ़ तर सत तरसां तर" (जो अधिक जानकार है वही अधिक डरता है- अनुवादक)

ऐसा ही बाबू साहब का एक यह भी ऐतराज़ था कि लड़का पैदा होने की भविष्यवाणी की थी परन्तु लड़की पैदा हुई। लेकिन वह जानते हैं कि लड़की का अस्तित्व न होने के बराबर था क्योंकि इसके बाद वह मर गई और उसके बाद एक लड़का भी मर गया। फिर इसके बाद ख़ुदा ने निरन्तर चार लड़के दिए जो उसकी कृपा से अब तक जीवित हैं। अतः ख़ुदा के ज्ञान में मरने वाले की ओर वह भविष्यवाणी संबद्ध नहीं हो सकती और ख़ुदा के निकट वह न होने के समान है और ख़ुदा की भविष्यवाणी एक जीने वाले लड़के के बारे में थी। ख़ुदा का ऐसा कोई इल्हाम नहीं कि वह आयु पाने वाला लड़का प्रथम गर्भ से ही पैदा होगा और यदि कोई इज्तेहादी* ख़्याल हो तो इस पर ऐतराज़ करना उन लोगों का कार्य है जो नबी के अपने इज्तेहाद को अनिवार्य घटित होने वाला समझते हैं। आश्चर्य है कि ये लोग कैसे अपने झूठ से एक ऐतराज़ बना लेते हैं। सच तो यह है कि जब व्यक्ति को झूठ बोलने को जायज़ समझता है तो लज्जा और ख़ुदा का भय भी कम हो जाता है। पाठक स्मरण रखें कि मेरी ओर से कभी कोई ऐसी भविष्यवाणी प्रकाशित नहीं हुई जिसके इल्हामी शब्दों में यह विवरण किया गया हो कि इसी गर्भ से लड़का पैदा होगा। रहा इज्तेहाद तो मैं इस बात का स्वयं समर्थक हूँ कि संसार में कोई ऐसा नबी नहीं आया जिसने कभी इज्तेहादी ग़लती नहीं की। जब वह नबी जो समस्त नबियों से श्रेष्ठ था इज्तेहादी ग़लती से बच न सका। अतः हुदेबिया कि यात्रा इज्तेहादी ग़लती थी। यमामा को हिजरत करने का स्थान ठहराना इज्तेहादी ग़लती थी तो फिर दूसरों पर की ऐतराज़। एक नबी अपने इज्तेहाद में ग़लती कर सकता है परन्तु ख़ुदा की वही में ग़लती नहीं होती। हाँ उसके समझने में यदि वह

*इज्तेहाद :- जहाँ कुरआन और हदीस का आदेश स्पष्ट न हो वहाँ अपनी राय से उचित रास्ता निकालना - अनुवादक।

शरीयत के आदेशों से संबंधित न हों किसी नबी से गलती हो सकती है जैसा कि मलाकी नबी इस रहस्य को समझ न सका कि इल्यास नबी का दोबारा आकाश से उतरना वास्तविकता पर आधारित नहीं अपितु रूपक के तौर पर है और कोई इस्राईली नबी तौरात की भविष्यवाणी से यह समझ न सका कि अंतिम नबी बनी-इस्माईल में से है। ऐसा ही हजरत ईसा ने भी इज्तेहादी गलती से स्वयं के बादशाह बनने पर विश्वास कर लिया और वस्त्र बेच कर हथियार भी खरीदे गए। यहूदा अस्करयूती को स्वर्ग का एक तख्त भी दिया गया। फिर इसी युग में आकाश से वापस आने का भी पक्का वादा दिया। अंततः वे समस्त भविष्यवाणियाँ गलत निकलीं। अतः जिस बात में समस्त नबी सम्मिलित हैं और एक भी उनमें से बहार नहीं उस को ऐतराज के रूप में प्रस्तुत करना किसी संयमी का कार्य नहीं।

खुदा तआला ने यह इज्तेहादी गलती नबियों के लिए इस कारणवश निर्धारित कर रखी है ताकि वे ईश्वर न ठहराएं जाएं परन्तु इस से उनके पूर्ण तर्कों में कोई अंतर नहीं आता। क्योंकि चमत्कारों की अधिकता से उनकी वास्तविकता सिद्ध हो जाती है। खुदा के सच्चे नबी, मुसैलमा कज्जाब या विभिन्न झूठे दावे करने वालों से केवल इज्तेहादी गलती से जो उनकी किसी भविष्यवाणी में हो, समान नहीं हो सकते क्योंकि उन में सच्चाई का नूर और बरकतें तथा चमत्कार और खुदाई समर्थन इतने अधिक होते हैं कि उनकी सच्चाई की तेज धार विरोधी को टुकड़े-टुकड़े कर देती है और उनके हजारों निशान एक जोरदार दरिया के समान मौजें मारते हैं।

हाँ यदि यह ऐतराज हो कि इस स्थान पर वे चमत्कार कहाँ हैं तो मैं केवल यही उत्तर नहीं दूंगा कि मैं चमत्कार दिखा सकता हूँ अपितु खुदा की कृपा और दया से मेरा यह उत्तर है कि उसने मेरा दावा सिद्ध करने के लिए इतने अधिक चमत्कार दिखाए हैं कि ऐसे बहुत ही कम नबी आए हैं जिन्होंने इतने अधिक चमत्कार दिखाए हों। अपितु सच तो यह है कि उसने (खुदा ने) इतने अधिक चमत्कारों का दरिया चला दिया है कि हमारे नबी आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम के अतिरिक्त शेष समस्त नबियों में इनका प्रमाण इस अधिकता के साथ निश्चित रूप से असंभव है और खुदा ने अपनी हुज्जत पूरी कर दी है अब चाहे कोई स्वीकार करे या न करे।

यह तो विरोधियों के वे ऐतराज हैं जिन को बाबू इलाही बख्श साहब ने बार-बार अपनी पुस्तक असा-ए-मूसा में लिख कर अपने जानकारी बड़ा सवाब प्राप्त कर लिया है जिसकी वास्तविकता मरणोपरांत उन पर स्पष्ट हो गई होगी।

लेकिन सामान्य लाभ हेतु मैं यहाँ वर्णन करता हूँ कि मेरे निशानों के बारे में उन विरोधियों के ऐतराज तीन प्रकारों से बाहर नहीं हैं :

(1) प्रथम केवल झूठ और लांछन हैं जो खुदा तआला के प्रकोप से निडर हो कर मुझ पर किए हैं और अत्यंत शरारत और बेबाकी से प्रसिद्धि दे दी है कि अमुक भविष्यवाणी जो अमुक व्यक्ति के बारे में थी पूरी नहीं हुई। यद्यपि जिस भविष्यवाणी को उसकी ओर संबद्ध करते हैं कदापि उसके बारे में वह भविष्यवाणी नहीं की गई थी जैसा कि भविष्यवाणी **کلب یموت علی کلب** जो मौलवी मुहम्मद हुसैन की ओर स्वयं संबद्ध कर देते हैं। अतः इस का उत्तर सिवाए इसके क्या कहें कि "लानतुल्लाहे अलल काज़ेबीन"।

(2) द्वितीय यह कि किसी व्यक्ति के बारे में निश्चित रूप से एक भविष्यवाणी तो है परन्तु वह भविष्यवाणी डरावे और अज़ाब के रूप में थी और अपनी शर्त के अनुसार पूर्ण हो गई या किसी समय उसका प्रकटन हो जाएगा।

(3) तृतीय यह है कि केवल एक इज्तेहादी मामला है और उसको खुदा का कलाम ठहरा कर फिर ऐतराज करते हैं कि यह भविष्यवाणी थी जो पूरी नहीं हुई जब यह हाल है तो ज़ाहिर है कि कोई नबी उनकी ज़बान से बच नहीं सकता।

मैं बार-बार कहता हूँ कि यदि ये पूर्व और पश्चिम के समस्त विरोधी एकत्र हो जाएं तो मुझ पर कोई ऐसा ऐतराज नहीं कर सकते कि जिस ऐतराज में पिछले नबियों में से कोई नबी सम्मिलित न हुआ हो। अपनी चालाकियों के कारण हमेशा अपमानित होते हैं और फिर भी नहीं रुकते। और खुदा तआला मेरे लिए

इस अधिकता से निशान दिखा रहा है कि यदि नूह अलैहिस्सलाम के युग में वे निशान दिखाए जाते तो वे लोग न डूबते। परन्तु मैं इन लोगों का किस से उदाहरण दूँ वे उस अड़ियल व्यक्ति के समान हैं जो प्रकाशित दिन को देख कर भी इसी बात पर अडिग रहता है कि रात है दिन नहीं। ख़ुदा तआला ने उनको समय से पहले ताऊन (प्लेग) की सूचना दी और फ़रमाया **الامراض تشاع والنفوس تضاع** परन्तु उन्होंने इस निशान की कुछ भी परवाह न की। फिर ख़ुदा ने एक असाधारण भूकंप की ख़बर दी जो इस देश में अप्रैल 1905 ई. को आने वाला था, और वह आया और सैंकड़ों लोगों को मार दिया परन्तु इन लोगों ने उसकी भी कुछ परवाह न की फिर ख़ुदा ने फ़रमाया कि वसंत में एक और भूकंप आएगा। अतः वह भी आया परन्तु उन लोगों ने उसको भी अनदेखा किया। फिर ख़ुदा ने एक आग के शोले की सूचना दी थी जो 31 मार्च 1907 ई० को प्रकट हुआ और लगभग हजार मील तक विचित्र रूप में देखा गया। लेकिन इन लोगों ने उस से भी कुछ सीख प्राप्त न की। फिर ख़ुदा ने यह भविष्यवाणी की कि वसंत के मौसम में भीषण वर्षाएं होंगी भीषण बर्फ और ओले पड़ेंगे और कड़ाके की ठण्ड हो गई परन्तु इन लोगों ने इस महान निशान की ओर नज़र उठा कर भी न देखा। फिर ख़ुदा ने इसी मार्च 1907 ई० में एक और भूकंप की सूचना दी जो पेशावर के कुछ भागों में और डेरा इस्माईल खान में बड़े जोर से आया परन्तु उसको भी नकार दिया। ऐसा ही ख़ुदा ने दूसरे देशों के बारे में भी बड़े भूकंपों की सूचना दी और वे समस्त भविष्यवाणियाँ प्रकटन में आ गई परन्तु इन लोगों ने उन से भी नेकी की प्रेरणा प्राप्त न की। अब इन लोगों का मुक़ाबला ख़ुदा तआला के साथ है यदि यह समस्त निशान वास्तव में ख़ुदा तआला की ओर से हैं और एक मामूर बन्दे के समर्थन में हैं तो वह नहीं रुकेगा जब तक उनके स्वीकार करने के लिए गर्दन न झुका दे और यदि (ये निशान) ख़ुदा तआला की ओर से नहीं हैं तो ये लोग विजयी हो जाएँगे।

फिर पृष्ठ 78 में बाबू इलाही बख़्श साहब अपना यह इल्हाम प्रस्तुत करते

हैं "ला तस्तवी बेआयातिल्लाहे" और उसी स्थान पर अपनी ओर से इसके यह अर्थ करते हैं कि ज्ञात होता है कि जो आयतें (निशान) प्रतिष्ठित एवं प्रतापी खुदा ने विनीत के लिए रखे हैं उनकी बराबरी मिर्जा साहब की जमाअत को नसीब नहीं। अब प्रत्येक न्यायवान समझ सकता है कि इस ओर से तो अब तक सैंकड़ों निशान प्रदर्शित हो चुके हैं परन्तु बाबू साहब के फर्जी निशानों का कुछ पता नहीं। संभवतः आप के निकट आप का प्लेग से मरना ही एक निशान हो।

फिर पृष्ठ 83 असा-ए-मूसा में आप लिखते हैं कि जब मिर्जा साहिब की ओर से विनीत को निशान दिखाने के लिए कहा गया तो इल्हाम हुआ يريدون ليطفؤا نور الله بافواهمم والله متم نوره ولو كره الكافرون जो और का चाहे बुरा उसका बुरा हो जाएगा। अर्थात् यह लोग चाहते हैं कि खुदा के नूर को अपने मूंह की फूँकों से बुझा दें परन्तु खुदा तो उसको नहीं छोड़ेगा जब तक इसको पूरा न कर ले। जो और का चाहे बुरा उसका बुरा हो जाएगा।

अब कोई बता सकता है कि मियां इलाही बख्श के हाथ से कौन सा नूर पूरा हुआ और बाबू साहब का इल्हाम कि जो और का चाहे बुरा उसका बुरा हो जाएगा, बड़ी स्पष्टता से पूरा हो गया क्योंकि वह चाहते थे कि मैं प्लेग से मर जाऊँ और इसी आधार पर उन्होंने इल्हाम भी प्रकाशित किया था। अंततः वह प्लेग से स्वयं मर गए। बाबू साहब के दोस्तों को इस स्थान पर कुछ विचार करना चाहिए। क्या यही इल्हाम हैं जिनके पूरा होने तक बाबू साहब का जीवित रहना अनिवार्य था।

फिर बाबू साहब अपनी पुस्तक असा-ए-मूसा के पृष्ठ 124 में निम्नलिखित पंक्ति लिखते हैं :

विचार करें कि जिस पर वह रहीम और करीम ऐसी कृपा और दया करे उसके लिए यदि इमाम का विरोध करना हानिकारक है तो ऐसे इल्हाम क्यों हों। हाँ यदि उस सामर्थ्यवान अहकमुल हाकेमीन गियासुल मुस्तगीसीन व हादीयल मुजल्लीन का इस बेचारे और बेगुनाह विनीत मुल्हम को इल्हाम द्वारा ही नष्ट

और विनाश करने का इरादा है तो इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन।

मेरा कथन : स्पष्ट हो कि बाबू इलाही बख्श अपने व्यर्थ इल्हामों के द्वारा हलाक तो हो गए लेकिन यह बात ग़लत है कि ख़ुदा तआला का यह इरादा था कि उन्हीं के इल्हामों के माध्यम से उनका विनाश करे। ख़ुदा तआला किसी का विनाश करना नहीं चाहता परन्तु लोग अपनी शेखी और दुस्साहस से स्वयं अपना विनाश कर लेते हैं। क्या सद्बुद्धि इस बात को स्वीकार कर सकती है कि एक ख़ुदा का मामूर सदी के आरंभ में पैदा हो और लोगों को सद्मार्ग की ओर बुलाए और उस से ख़ुदा तआला इल्हाम व कलाम (वार्तालाप) करे और उसके समर्थन में हज़ारों निशान प्रदर्शित करे और फिर एक व्यक्ति उसको स्वीकार न करे और कहे कि मुझे स्वयं इल्हाम होता है और अपने इल्हाम के ख़ुदा की ओर से होने के बारे में कोई स्पष्ट तर्क प्रस्तुत न करे परन्तु इंकार और कष्ट और गाली देने से भी न रुके। तो ऐसे व्यक्ति का यदि तबाह हो जाए तो अपनी शेखी से तबाह होगा क्योंकि उसने बिना प्रमाण के स्पष्ट सबूतों से मुख फेर लिया। और जबकि बाबू साहब के पास ख़ुदा तआला की क्रियात्मक गवाही और उनके इल्हाम के ख़ुदा की ओर से होने की ज़बरदस्त गवाही मौजूद न थी तो ऐसे मुद्दई के मुकाबले पर शेखी के साथ खड़ा होना जिसके मुल्हम होने पर ख़ुदा की क्रियात्मक गवाही न एक न दो अपितु हज़ारों ज़बरदस्त गवाहियाँ हैं क्या यह ईमानदारी और संयम का कार्य था? अतः इसी चालाकी और दुःसाहस के कारण बाबू साहब का प्लेग से विनाश हो गया अन्यथा ख़ुदा के चुने हुए प्लेग से नहीं मरते। और जिस अवस्था में शैतानी इल्हाम भी होते हैं और मन के विचार भी, तो फिर किसी कथन को क्योंकि ख़ुदा की ओर संबद्ध कर सकते हैं जब तक कि उसके साथ ख़ुदा तआला की ज़बरदस्त क्रियात्मक गवाही न हो। एक ख़ुदा का कथन है और एक ख़ुदा की क्रिया है और जब तक ख़ुदा के कथन पर ख़ुदा की क्रिया गवाही न दे ऐसा इल्हाम शैतानी कहलाएगा और गवाही से भावार्थ ऐसे आकाशीय निशान हैं कि जो मनुष्यों की सामान्य अवस्थाओं से बहुत बढ़ कर हैं। अन्यथा यह बात

निशान में सम्मिलित नहीं हो सकती कि किसी को संयोगवश कोई सच्चा स्वप्न आ जाए या यदा-कदा कभी कोई सच्चा इल्हाम हो जाए क्योंकि यह तो खुदा तआला की ओर से समस्त सृष्टि को बीज के रूप में दिया गया है। अपितु निशान से अभिप्राय वे असंख्य मात्रा में निशान हैं जो वर्षा के समान बरस कर और अद्वितीयता की श्रेणी तक पहुँच कर खुदा के कथन पर निश्चित और यकीनी गवाही दे दें कि वह खुदा का कथन है न मनुष्य का क्योंकि कुछ मामूली स्वप्नों या कुछ मामूली इल्हामों पर भरोसा करके जो समस्त दुनिया को हुआ करते हैं यह दावा प्रस्तुत कर देना कि मैं खुदा की ओर से मुल्हम हूँ इस से बढ़ कर कोई मूर्खता नहीं। और खुदा तआला पर यह आरोप नहीं आ सकता कि इल्हाम दे कर क्यों उसने असफलता से विनाश किया अपितु यह आरोप स्वयं उसी अज्ञानी पर आता है जिसने ने स्वयं निर्मित बात को इल्हाम समझ लिया। आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखो कि जब आप पर फ़रिश्ता जिबरईल प्रकट हुआ तो आप ने तुरन्त विश्वास न किया कि यह खुदा की ओर से है अपितु हज़रत खदीजा के पास डरते-डरते आए और फ़रमाया कि "खशीतु अला नफ़सी" अर्थात् मुझे अपने नफ़स के बारे में बड़ा अनुमान हुआ है कि कोई शैतानी छल न हो। लेकिन जो लोग बिना नफ़स को पवित्र किए शीघ्रता से वली बनने की इच्छा करते हैं वे जल्दी से शैतान के धोखे में आ जाते हैं। अतः सोचना चाहिए कि यदि बाबू साहब के इल्हाम शैतानी इल्हाम नहीं तो खुदा की ज़बरदस्त क्रिया ने उनकी क्यों गवाही न दी। खेद कि वह स्वयं तो मर गए परन्तु घोर अपमान और निराशा का टीका अपने दोस्तों के मूँह पर लगा गए और इसी प्रकार बाबू साहब से पहले हज़ारों मनुष्यों का ऐसे इल्हामों से विनाश हो चुका है। खेद कि दुनिया के लोग सोने को तो परख लेते हैं ताकि ऐसा न हो कि खोटा निकले परन्तु अपने इल्हामों को नहीं परखते कि क्या खुदा की ओर से हैं या शैतान की ओर से। फिर खुदा तआला की क्या ग़लती है। जो व्यक्ति बिना खुदा की गवाही के केवल कथन पर इतराएगा यही अपमान उसको एक दिन अवश्य देखना पड़ेगा और न केवल

असफलता का अपमान और न केवल यह कि मुबाहला कर के विरोधी पक्ष के मुकाबले पर मौत का अपमान अपितु प्लेग का अपमान भी देखेगा जिसके बारे में सहीह हदीस में लिखा है कि "अत्ताऊनो वख़्जुल जिन्ना" अर्थात् ताऊन (प्लेग) शैतान का डंडा है। अतः प्लेग से यह भी सिद्ध हुआ कि बाबू साहब शैतानी विध्वंस के प्रभावाधीन थे।

फिर बाबू इलाही बख़्श साहब ने अपनी पुस्तक के पृष्ठ 4 में मेरे और अपने मध्य हुए परस्पर पत्राचार को छाप दिया है उसको पढ़ कर प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि मैंने बाबू साहब से इस बात का आग्रह किया था कि जो मुझ पर उन्होंने इल्हाम के आधार पर आरोप लगाए हैं कि यह व्यक्ति झूठा है और झूठ गढ़ने वाला है अर्थात् जो कुछ इल्हाम का दावा करता है यह सब इसका झूठ है और सीमा से बढ़ गया है। मुंशी साहब मेरे इस झूठ को जो उन्हें अपने इल्हाम के माध्यम से ज्ञात हुआ है प्रकाशित कर दें ताकि फैसला हो जाए क्योंकि अल्लाह तआला पवित्र कुरआन में फ़रमाता है

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ

(अल-अनआम : 22)

अर्थात् उस से बड़ा अत्याचारी कौन है कि खुदा पर झूठ बांधे या खुदा के कलाम को झुठलाए। इसके उत्तर में बाबू साहब ने अपनी पुस्तक के पृष्ठ 4 में ऐसे इल्हामों के प्रकाशित करने का वादा दिया है। फिर इसी पुस्तक के पृष्ठ 7 में मेरा अंतिम उत्तर छपा है जिसकी यह इबारत है। मैं केवल खुदा तआला से समस्या का समाधान चाहूँगा ताकि वे लोग जो मुझे झूठे और महाझूठे का नाम देते हैं और वे लोग जो मेरे मसीह होने का सत्यापन करते हैं उन में अल्लाह तआला स्वयं निर्णय करे। फिर पुस्तक के पृष्ठ 9 में बाबू साहब लिखते हैं कि अब मैं जनसामान्य के लाभ हेतु वे समस्त इल्हाम विवरण सहित प्रकाशित कर दूँगा। अतः पुस्तक असा-ए-मूसा के पृष्ठ 19 से अंत तक बाबू साहब ने अपने वे समस्त इल्हाम प्रकाशित कर दिए हैं और कुछ इल्हामों को गुप्त भी रखा है

जो मुझे दण्डित करने के बारे में थे। फिर भी जितने पुस्तक में प्रकाशित हो गए हैं कुछ में उन्होंने मेरा नाम महाझूठा रखा है और कुछ में झूठ गढ़ने वाला और कुछ में दज्जाल और कुछ में मलऊन और कुछ में गद्दार और कुछ में अत्याचारी और कुछ में काफ़िर। इसी प्रकार उनके इल्हामों ने मुझे बहुत से नाम प्रदान किए हैं परन्तु ख़ुदा ने केवल एक नाम से ही निर्णय कर दिया अर्थात् कज्ज़ाब जिसके अर्थ यह है कि मैंने मानो ख़ुदा तआला पर सीमा से बढ़ कर झूठ बोला और अपने झूठ को ख़ुदा की ओर संबद्ध कर दिया है। जो लोग असा-ए-मूसा का पृष्ठ 4 और पृष्ठ 7 पढ़ेंगे उनको ज्ञात होगा कि यह जो आरोप बाबू साहब ने मुझ पर लगाया है उसका निर्णय मैंने ख़ुदा तआला से चाहा है और झूठे पर ख़ुदा की लानत की है। फिर इस के अतिरिक्त स्वयं पवित्र क़ुरआन में ख़ुदा तआला का यह वादा है कि जो उस पर झूठ बांधेगा वह दंड से नहीं बचेगा। और जो व्यक्ति ख़ुदा के कलाम को झुठलाए वह भी दंड से नहीं बचेगा। अतः इस समस्त लेख से प्रदर्शित है कि 6 अप्रैल 1907 ई०[☆] को बाबू इलाही बख्श साहब का प्लेग से मरना वास्तव में यह ख़ुदा तआला का एक निर्णय था जो अंततः उसकी अदालत से लागू हो गया। अब जो चाहे स्वीकार करे या न करे। परन्तु हदीस के अनुसार "मन आदा ली वलीयन फ़क्रद आजनतुहु लिल हरबे" बाबू साहब ने इस लड़ाई का परिणाम देख लिया है अब उनके दोस्त कहते हैं कि वह शहीद हो गए। परन्तु मेरी दुआ है कि समस्त उपद्रवी और सत्य के विरोधी ऐसे ही शहीद हो जाएं।

आमीन सुम्मा आमीन

☆ लिपिक की गलती है 7 अप्रैल 1907 ई. होना चाहिए जिसका सत्यापन इसी पुस्तक के पृष्ठ 540 और 544 से होता है। (उर्दू)

द्वितीय अध्याय

उन इल्हामों का वर्णन जो बाबू इलाही बख्श साहब अकाउंटेंट के बारे में खुदा तआला ने मुझ पर प्रकट किए

जब बाबू इलाही बख्श साहब ने पुस्तक असा-ए-मूसा लिखी तो इस लेखन का कारण यही था कि उन्होंने मुझे फिरऔन करार दिया और स्वयं को मूसा ठहराया और बार-बार लिखा कि मुझे खुदा की ओर से इल्हाम होते हैं कि यह व्यक्ति कज्जाब और दज्जाल और झूठ गढ़ने वाला है। तब मैंने उनकी पुस्तक पढ़ कर अपनी पुस्तक अरबईन नंबर 4 के हाशिया पर निम्नलिखित पंक्तियाँ लिखीं जिस में एक भविष्यवाणी और दुआ है और वह यह है :

खेद है कि उन्होंने (अर्थात् बाबू इलाही बख्श साहब ने) आयत **وَيُلْكَئُ كُلُّ** (अलहुमजा : 2) में वर्णित तबाही के वादे से कुछ भी भय नहीं किया और न उन्होंने आयत **لَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ** (बनी इस्राईल- 37) की कुछ परवाह की। वह बार-बार मेरे बारे में लिखते हैं कि मैंने उनको सांतवना दे दी कि मैं आप के झूठे आरोपों के कारण किसी मानवीय अदालत में आप पर नालिश नहीं करूंगा, तो मैं कहता हूँ कि मैं न केवल मानवीय अदालत में नालिश नहीं करूँगा अपितु मैं खुदा की अदालत में भी नालिश नहीं करता परन्तु चूंकि आप ने मुझ पर बिल्कुल झूठे और लज्जाजनक आरोप लगाए हैं और मुझे अकारण कष्ट पहुंचाया है। इसलिए मैं कदापि विश्वास नहीं रखता कि मैं उस समय से पूर्व मरूँ जब तक कि मेरा सामर्थ्यवान खुदा इन झूठे आरोपों से मुझे बरी करके आप का झूठा होना सिद्ध न करे। "अला इन्ना लानतल्लाहे अलल काजेबीन" इसी के सम्बन्ध में मुझे निश्चित और ठोस तौर पर 6 दिसम्बर सन् 1900 ई. जुमेरात के दिन यह इल्हाम हुआ

बर मकान फ़लक शुदा या रब। गर उम्मीदे दहम मदार अजब।
(अनुवाद: मेरी दुआ आसमान तक पहुँच गई है इसलिए यदि मैं तुझे (कुबूलियत की) उम्मीद दिलाऊँ तो आश्चर्य न कर। अनुवादक)

'बाद ग्यारह इंशाअल्लाह तआला'

परन्तु एक निशान मेरे निर्दोष होने के लिए इस अवधि में प्रकट होगा कि आप को अत्यन्त लज्जित करेगा। खुदा के कलाम पर न हंसो, पर्वत टल जाते हैं, सागर सूख सकते हैं, मौसम बदल जाते हैं परन्तु खुदा का कलाम नहीं बदलता जब तक पूरा न हो जाए।

इसी प्रकार मेरी पुस्तक अरबईन नंबर 4 पृष्ठ 19 में बाबू इलाही बख्श साहब के बारे में यह इल्हाम है :

يريدون ان يروا طمثك والله يريد ان يريك انعامه الانعامات المتواترة
انت منى بمنزلة اولادى الله وليك وربك فقلنا يانار كوفى بردا-

अर्थात् बाबू इलाही बख्श चाहता है कि तेरा मासिक धर्म (अर्थात् अपवित्रता प्रकट करे - अनुवादक) देखे या किसी गंदगी या अपवित्रता से अवगत हो परन्तु खुदा तआला तुझे अपने ईनाम दिखाएगा जो निरंतरता से होंगे। और तुझ में मासिक धर्म नहीं अपितु वह बच्चा हो गया है ऐसा बच्चा जो खुदा तआला का लड़का है। अर्थात् मासिक धर्म एक अपवित्र चीज़ है परन्तु बच्चे का शरीर इसी से तैयार होता है। इसी प्रकार जब मनुष्य खुदा का हो जाता है तो जितनी भी स्वाभाविक अपवित्रता और गंद होता है जो मनुष्य की फितरत से लगा होता है उसी से एक आध्यात्मिक शरीर तैयार होता है। यह **طمث** मानवीय उन्नतियों का परिणाम है। इसी आधार पर सूफ़ियों का कथन है कि यदि गुनाह न होता तो मनुष्य कोई उन्नति न कर सकता। आदम की उन्नतियों का भी यही कारण हुआ। इसी करणवश प्रत्येक नबी आन्तरिक कमज़ोरियों पर दृष्टि करके इस्तिग़फ़ार में व्यस्त रहा है और वही भय उन्नतियों का कारण होता रहा है खुदा फ़रमाता है (अलबक्रह : 223) **إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ** अतः प्रत्येक इब्ने आदम अपने अंदर एक मासिक धर्म की अपवित्रता रखता है परन्तु वह जो सच्चे दिल से खुदा की ओर झुकता है उसका वही मासिक धर्म (का रक्त) एक पवित्र लड़के का शरीर तैयार कर देता है। इसी आधार पर खुदा

में लीन होने वाले अल्लाह के लड़के कहलाते हैं परन्तु यह नहीं कि वे वास्तव में खुदा के बेटे हैं क्योंकि यह तो कुफ्र की बात है और खुदा बेटों से पवित्र है अपितु वे उपमा स्वरूप इसलिए खुदा के बेटे कहलाते हैं कि वे बच्चे के समान हार्दिक जोश से खुदा को याद करते रहते हैं। इसी मर्तबा (स्थान) की ओर पवित्र कुरआन में संकेत करके फ़रमाया गया है :

فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا (अलबक्रह : 201)

अर्थात् खुदा को ऐसे प्रेम और हार्दिक जोश से याद करो जैसा कि बच्चा अपने पिता को याद करता है। इसी आधार पर प्रत्येक क्रौम की पुस्तकों में "अब" या "पिता" के नाम से खुदा को पुकारा गया है। और खुदा तआला को उपमा स्वरूप मां से भी समानता है और वह यह कि जैसा कि मां अपने पेट में बच्चे की परवरिश करती है ऐसा ही खुदा तआला के प्रिय बन्दे खुदा की गोद में परवरिश पाते हैं और एक गंदे स्वभाव से पवित्र शरीर उन्हें प्राप्त होता है। अतः सूफ़ी लोग वलियों को जो खुदा तआला का बच्चा कहते हैं यह केवल एक उपमा है अन्यथा खुदा के कोई बच्चे नहीं वह لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ (सुरह इखलास : 3) है।

और यह जो उपरोक्त लिखित इल्हामों में यह वाक्य है " फ़कुलना या नारो कूनी बर्दन" इस वाक्य का यह भाव है कि जो कुछ बाबू इलाही बख़्श ने अपनी पुस्तक से लोगों में उपद्रव की आग भड़का दी है हम उस आग को ठंडी कर देंगे। अतः बाबू इलाही बख़्श की मौत ने इन समस्त भविष्यवाणियों को पूरा कर दिया। अलहम्दोलिल्लाह अला ज़ालिक।

दूसरी भविष्यवाणी बाबू इलाही बख़्श साहब की मौत के बारे में वह है जो 15 मार्च 1907 ई० में खुदा तआला की ओर से होकर बदर और अलहकम (अख़बारों) में प्रकाशित हो चुकी है और वह यह है :

एक मूसा है मैं उसको प्रकट करूंगा और लोगों के समक्ष उसको सम्मान दूंगा परन्तु जिसने मेरा गुनाह किया है मैं उसको घसीटूंगा और उसको नर्क दिखाऊंगा मेरे निशान चमक उठेंगे। मेरा शत्रु तबाह हो गया

अर्थात् तबाह हो जाएगा। हुन उसदा लेखा खुदा नाल जा पेया है। (अर्थात् अब उसका पाला खुदा से पड़ा है - अनुवादक)

खुदा ने इस स्थान पर मेरा नाम मूसा रखा जैसा कि आज से छब्बीस वर्ष पहले बराहीन-ए-अहमदिया के कई स्थानों में मेरा नाम मूसा रखा गया। इल्हाम का सारांश यह है कि इस ज़माने में मूसा एक ही है दो नहीं हैं और वह जो दूसरा मूसा होने का दावा करता है वह झूठा है और फिर फ़रमाया कि वह जो मेरी ओर से मूसा है समय आ गया है कि मैं उसको प्रदर्शित करूँ और लोगों में उसको सम्मान दूँ। और जिसने मेरा गुनाह किया है अर्थात् केवल झूठ बोल कर मूसा बना है मैं उसको घसीटूँगा अर्थात् अपमान दिखाऊँगा और अपमान की मौत दूँगा और उसको नर्क दिखाऊँगा अर्थात् वह प्लेग से ग्रसित हो कर मरेगा।

यह भविष्यवाणी खुदा तआला की ओर से पूर्ण विवरण सहित थी क्योंकि उस ज़माने में मेरे मुकाबले पर मूसा का दावा करने वाला केवल बाबू इलाही बख़्श था जिसका खुदा ने प्लेग से विनाश किया और उनकी बीमारी और मौत से पहले सामान्य रूप से अख़बार बदर और अलहकम के माध्यम से हजारों लोगों में यह इल्हाम प्रकाशित किया गया। अंततः ऐसा ही प्रकटन में आया। स्मरण रहे कि मेरे समस्त इल्हामों में नर्क से अभिप्राय ताऊन (प्लेग) है। अतः यह महान भविष्यवाणी थी जिस में समय से पहले बताया गया था कि बाबू इलाही बख़्श साहब प्लेग से मृत्यु को प्राप्त होंगे। उदाहरणस्वरूप वर्णन करता हूँ कि मेरे इल्हामों में नर्क से अभिप्राय प्लेग है जैसा कि एक समय पूर्व एक इल्हाम मुझे हो चुका है और वह सविस्तार बदर और अलहकम में प्रकाशित हो चुका है और वह यह है :

"याती अला जहन्नम ज़मानुन् लैसा फ़ीहा अहदन्" इसकी व्याख्या यह की गई है कि एक ज़माना प्लेग पर ऐसा आएगा कि इस देश में एक भी न होगा कि इसमें ग्रस्त हो अर्थात् सामान्य रूप से खुदा इस विपत्ति से लोगों को मुक्ति दे देगा। और फिर एक और इल्हाम है जिस में आग से अभिप्राय ताऊन

(प्लेग) है और वह भी बहुत समय पहले प्रकाशित हो चुका है और वह यह है "आग से हमें मत डराओ आग हमारी गुलाम बल्कि गुलामों की गुलाम है" अर्थात् मैं क्या जो लोग मुझ से सच्ची और पूर्ण मुहब्बत रखते हैं वे भी प्लेग से सुरक्षित रहेंगे।

अंततः एक न्यायवान व्यक्ति के लिए बाबू इलाही बख्श साहब के मामले में दो बातें बहुत ध्यान देने योग्य हैं।

प्रथम यह बात विचारयोग्य है कि जब बाबू इलाही बख्श साहब मुझ से विमुख हो कर मेरे विरुद्ध और मुझे झुठलाने में अपने मित्रों को अपने इल्हाम सुनाने लगे तो उस समय मेरी ओर से इस बात के निर्णय के लिए क्या निवेदन हुआ था। अतः वह निवेदन बाबू साहब की पुस्तक असा-ए-मूसा के पृष्ठ 5,6 में दर्ज है जिसको पढ़ कर पाठकगण मालूम कर सकते हैं कि वह निवेदन वास्तव में मुबाहला (शास्त्रार्थ) के रूप में था या यों कहो कि वह सच्चे दिल से ख़ुदा से निर्णय की एक दुआ थी जिसके वह पंक्ति जो भाव के बारे में है निम्न में लिखी जाती है और वह यह है :

"चूंकि मुझे आकाशीय निर्णय अपेक्षित है अर्थात् यह उद्देश्य है कि ताकि लोग ऐसे व्यक्ति को पहचान कर जिसका अस्तित्व वास्तव में उनके लिए लाभदायक है सद्मार्ग पर स्थापित हो जाएँ और ताकि लोग ऐसे व्यक्ति को पहचान लें जो वास्तव में ख़ुदा तआला की ओर से इमाम है और अभी तक यह किस को मालूम है कि वह कौन है, केवल ख़ुदा को मालूम है या उनको जिनको ख़ुदा की ओर से विवेक प्रदान किया गया इसलिए यह प्रबंध किया गया है (अर्थात् यह कि बाबू साहिब अपने वे समस्त इल्हाम जो मेरे झुठलाने के बारे में हैं प्रकाशित कर दें) अतः यदि मुंशी साहब के इल्हाम वास्तव में ख़ुदा तआला की ओर से हैं तो वे इल्हाम जो मेरे बारे में उनको हुए हैं अपनी सच्चाई का कोई चमत्कार प्रदर्शित करेंगे (अर्थात् अवश्य उन के बाद मुझ पर कोई तबाही और विनाश आएगा) और इस प्रकार यह सृष्टि जो दया योग्य है झूठे और महाझूठे से मुक्ति पा लेगी।

(अर्थात जबकि बाबू साहब मुझ को झूठा समझते हैं कि मानो मैंने मसीह मौऊद का दावा कर के खुदा पर झूठ बाँधा है तो मैं तबाह हो जाऊँगा) और यदि खुदा तआला के ज्ञान में कोई ऐसी बात है जो इस दुष्ट विचार के विरुद्ध है तो वह बात स्पष्ट हो जाएगी (अर्थात यदि खुदा तआला के ज्ञान में वास्तव में मैं मसीह मौऊद हूँ तो खुदा मेरे लिए कोई गवाही देगा) और मैं वादा करता हूँ कि नऊज़बिल्लाह मेरी ओर से न आप पर कोई नालिश होगी और न किसी प्रकार का कोई अकारण हमला आप के वैभव और सम्मान पर होगा। केवल खुदा तआला से समस्या का समाधान चाहूँगा (अर्थात यह चाहूँगा कि यदि मैं झूठा नहीं हूँ और मुझ पर यह जूता और अत्याचारपूर्ण हमला है तो मेरी बरीय्यत हो। बाबू साहब को झुठलाने के लिए खुदा स्वयं कोई बात अवतरित करे क्योंकि बरीय्यत की इच्छा करना नबियों की सुन्नत है जैसा कि हज़रत यूसुफ़ ने इच्छा की।" और सच्चे को बारी कर देना खुदा की हमेशा से सुन्नत है।★

यह मेरा वह पत्र है जो बाबू साहब की पुस्तक असा-ए-मूसा के पृष्ठ 5,6,7 में दर्ज है। अब स्पष्ट है कि इस पत्र में भी मैंने खुदा तआला से निर्णय चाहा था फिर इसके बाद जो निर्णय खुदा तआला ने किया वह स्पष्ट है कि एक ओर खुदा तआला से प्रत्येक पहलू से मुझे उन्नति दी और दूसरी ओर बाबू इलाही बख्श साहब को बिल्कुल असफलता की अवस्था में दुनिया से उठा लिया और वह सैंकड़ों निराशाओं के साथ प्लेग की बीमारी से गुज़र गए। क्या उनका दिल चाहता था कि वह प्लेग से मर जाएं और फिर मेरे जीवन में, परन्तु खुदा ने ऐसा किया।

★ आज से छब्बीस वर्ष पूर्व मेरी पुस्तक बारहीन-ए-अहमदिया में यह इल्हाम प्रकाशित हो चुका है मेरे बारे में खुदा संकेत करके फ़रमाता है कि जैसे पहले मूसा पर झूठे आरोप लगाए गए थे इस मूसा पर भी अर्थात इस विनीत पर भी झूठे आरोप लगाए जाएंगे परन्तु खुदा उसको बरी करेगा। इल्हाम की पंक्ति यह है "फ़बरहुल्लाह मिम्मा क़ालू वक़ाना इन्दल्लाहे वजीहा" क्या बाबू साहब की मृत्यु से यह भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। इसी से

दूसरी बात न्यायवानों के लिए विचारयोग्य यह है कि बाबू इलाही बख्श साहब ने मेरे मुक्राबले पर जो एक वर्ष के इल्हामों का भंडार उसके पास था सब अपनी पुस्तक असा-ए-मूसा में प्रकाशित कर दिया जिन का सारांश यही है कि मानों मैं असफल और निराश रह कर अंततः बाबू साहब के जीवन में ही प्लेग से मर जाऊँगा और बड़ी-बड़ी तबाहियाँ मुझ पर आएँगी और लानत और मुबाहला का दुष्प्रभाव मुझ पर पड़ कर मेरा विनाश कर देगा इसके विपरीत बाबू साहब की बड़ी-बड़ी उन्नति होगी और खुदा तआला उनको एक दीर्घ आयु प्रदान करेगा और वे मेरे समस्त विनाश स्वयं अपनी आँखों से देखेंगे। और संपत्तियाँ और बाग उनको दिए जाएँगे और एक दुनिया उनकी ओर आकर्षित होगी। यह इल्हाम लगभग एक वर्ष के हैं जो मेरे विरोध में बाबू साहब ने प्रकाशित किए लेकिन इसके पश्चात् जो बाबू साहब की मृत्यु तक लगभग 6 वर्ष के इल्हाम थे वे किसी कारणवश गुप्त रखे गए हैं। अन्यथा स्पष्ट है कि जिस व्यक्ति के एक वर्ष के इल्हाम इतने अधिक हैं छः वर्ष के कितने अधिक होंगे। परन्तु अब इन इल्हामों के प्रकाशित होने के बारे में बिलकुल निराशा है क्योंकि जैसा कि मैं हमेशा सुनता रहा वे सब मेरी असफलता और अज्ञात में डाले जाने के बारे में थे। अब जबकि खुदा ने निर्णय कर दिया तो उनके मित्र ऐसे इल्हामों को क्यों प्रकाशित करने लगे निस्संदेह वे बिना किसी देरी के तुरंत आग में रख कर जला दिए होंगे। और यदि वे नहीं जलाए गए तो मुंशी अब्दुल हक साहब जो उनके घनिष्ठ मित्र थे क्रसम खा कर वर्णन करें कि क्या पुस्तक असा-ए-मूसा के बाद इल्हामों का सिलसिला बिलकुल बंद हो गया था। यहाँ तक कि छः वर्ष तक एक इल्हाम भी न हुआ। काश यदि वे शेष बचे हुए इल्हाम भी प्रकाशित किए जाते तो वास्तविकता और भी खुल जाती। जिन लोगों को केवल निजी विचारों से मेरे साथ बैर है वे ऐसा मार्ग कदापि नहीं अपनाएँगे जिस से वास्तविकता प्रदर्शित हो जाए परन्तु खुदा नहीं छोड़ेगा जब तक सच्चाई प्रदर्शित न करे। यदि मैं झूठा और महाझूठा हूँ तो मेरा भी ऐसे ही अंत होगा जैसा कि बाबू इलाही बख्श का अंत

हुआ। लेकिन यदि प्रतिष्ठित और महाप्रतापी ख़ुदा मेरे साथ है तो ऐसी अवस्था में मेरा विनाश नहीं करेगा कि मेरे आगे भी लानत हो और पीछे भी क्योंकि सच्चों के साथ उसकी हमेशा से यही सुन्नत है कि वह उनको व्यर्थ नहीं करता यद्यपि लोग सच्चे के दरमियानी समय में अपनी अज्ञानता से उस पर ऐतराज करें और उसके बारे में कई आलोचनाएँ करें परन्तु अंततः सच्चे की बरीयत ख़ुदा तआला प्रकट कर देता है। इस अंधी दुनिया ने किस नबी को अपनी आलोचना से पृथक् रखा है। यहूदी अब तक कहते हैं कि हज़रत ईसा की एक भी भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई बादशाही का दावा किया परन्तु बादशाही नसीब न हुई। यहूदा असकरयूती को स्वर्ग का तख़्त दिया अंतता वह वचन भी सही न निकला। इस ज़माने में ही लौट आना बताया गया था वह बात भी ग़लत साबित हुई। यह ऐतराज हैं यहूदियों और नास्तिकों के जो हज़रत ईसा की भविष्यवाणियों पर करते हैं और ईसाई आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर करते हैं। अतः अनिवार्य था कि मुझ पर भी किए जाते लेकिन ख़ुदा ने मेरे हज़ारों निशानों से मेरा वह समर्थन किया है कि बहुत ही कम नबी गुज़रे हैं जिन का इस प्रकार समर्थन किया गया। लेकिन फिर भी जिन के दिलों पर मोहरें हैं वह ख़ुदा के निशानों से कुछ भी फाड़दा नहीं उठाते।★

बाबू इलाही बख़्श के मित्रों के लिए यह स्पष्ट निशान था कि बाबू साहब तो अपनी पुस्तक असा-ए-मूसा में मेरे बारे में बार-बार यही इल्हाम प्रदर्शित कर गए कि मैं उनके जीवन में ही प्लेग के अज़ाब से मरूंगा और विनाश और तबाही मुझे प्राप्त होगी परन्तु उनके इल्हामों के विरुद्ध ख़ुदा ने मेरे साथ मामला किया

★ ख़ुदा तआला ने हज़ारों ज़बरदस्त निशान दिखा कर शत्रुओं के मूंह पर चांटे मारे हैं परन्तु अजीब निर्लज्ज मूंह हैं कि इतने चांटे खा कर फिर सामने आते हैं यदि एक लाख निशान देखें तो इस से भी लाभान्वित न हों और यदि एक बात समझ न आए तो शोर मचा देते हैं वास्तव में उनके दिल प्रत्येक नबी के अवज्ञाकारी हैं क्योंकि कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जो इन के विवेकानुसार हो। इसी से

और अपनी भविष्यवाणियों से उसने मुझे सांत्वना दी कि वह मुझे विजयी करेगा और मेरी सच्चाई प्रदर्शित कर देगा। यह अजीब बात है कि जब बाबू इलाही बख़्श अपनी पुस्तक असा-ए-मूसा में अपने इल्हामों के माध्यम से मेरे बारे में कठोर से कठोर शब्दों में प्रकाशित कर चुके हैं कि यह व्यक्ति ख़ुदा तआला के दरबार से धुतकारा गया है और ख़ुदा कहता है कि मैं उसका प्लेग से विनाश करूंगा और वह तबाह और अपमानित और असफल हो कर मरेगा तब ख़ुदा ने जो अपने बन्दों के लिए स्वाभिमानी है, छः वर्षों तक बराबर उनके इल्हामों के विरुद्ध मुझ पर अपने सांत्वना भरे इल्हाम किए और केवल इतना ही नहीं अपितु साथ-साथ ज़बरदस्त निशान दिखाता रहा और ख़ुदा तआला के समर्थन और सहायता की भविष्यवाणियां वास्तव में दो भागों पर सम्मिलित हैं। एक तो वे निशान हैं जो मेरी पुस्तक बराहीन-ए-अहमदिया में दर्ज हैं और कुछ इसके बाद मेरी दूसरी पुस्तकों में दर्ज हो कर प्रकाशित हुईं। और ये भविष्यवाणियाँ बाबू साहब की पुस्तक असा-ए-मूसा के अस्तित्व से वर्षों पहले की हैं। और दूसरा भाग भविष्यवाणियों का वह है जो पुस्तक असा-ए-मूसा के बाद बाबू साहब की मौत तक प्रकाशित होती रहीं और बाबू साहब तो असा-ए-मूसा को लिख कर फिर अपने इल्हामों को प्रकाशित करने से रुक गए परंतु इन छः वर्षों में जो असा-ए-मूसा के बाद आज तक गुज़रे सैकड़ों भविष्यवाणियां ख़ुदा तआला से मुझ को मिलीं जो रिव्यु ऑफ़ रिलीजन पत्रिका और अख़बार बदर और अख़बार अल-हक़म क़ादियान में, प्रकाशित होती गईं और ऐसा ही मेरी पुस्तकों में जो समय-समय पर असा-ए-मूसा के बाद लिखी गईं और ऐसा ही मेरी पुस्तक हकीक़तुल वह्यी में भी दर्ज हुईं। अतः यह 6 वर्ष भी जो असा-ए-मूसा के लेखन से बाबू साहब की मौत तक होते हैं ख़ाली नहीं गए और वर्षा के समान ख़ुदा के इल्हाम बरसते रहे। इन ख़ुदाई इल्हामों का सारांश यही है कि ख़ुदा तआला मुझे संबोधित करके फ़रमाता है कि मैं तुझे अपने इनामों से मालामाल करूंगा और बहुत से तेरे दुश्मन तेरे सामने नष्ट किए जाएंगे और उनके घर वीरान कर दिए जाएंगे और वे निराशा

और असफलता से मरेंगे और जो तुझे अपमानित करने का प्रयास करता है मैं उसको अपमानित करूंगा क्योंकि मैंने यही लिख छोड़ा है कि अंततः मेरे रसूल विजयी हो जाते हैं और मैं तेरे घर के समस्त लोगों को प्लेग और भूकंप के सदमे से बचाऊंगा।★

और तू देखेगा कि मैं मुजरिमों के साथ क्या करता हूँ। मैं वह तक्रदीर उतारूंगा जिससे तू राज़ी हो जाएगा और अंततः तुझे ही विजय प्राप्त होगी और मैं बड़े-बड़े हमलों के साथ तेरी सच्चाई प्रदर्शित करूंगा। मैं तेरे शत्रुओं के साथ स्वयं लड़ाई करूंगा। मैं तेरे साथ खड़ा हो जाऊंगा और उसकी भर्त्सना करूंगा जो तेरी भर्त्सना करता है। यह लोग तो चाहते हैं कि ख़ुदा के नूर को बुझा दें परंतु ख़ुदा अपने गिरोह को विजयी करेगा। तू तनिक भी भय न कर मैं तुझे विजयी दूंगा। हम आकाश से कई रहस्य उतारेंगे और तेरे विरोधियों को टुकड़े-टुकड़े कर देंगे और फिरऔन और हामान और उनके लश्कर को हम वे बातें दिखाएंगे जिन से वे डरते थे। अतः तू दुख न कर ख़ुदा उनकी घात में है। ख़ुदा तुझे नहीं छोड़ेगा और न तुझ से अलग होगा जब तक कि वह पवित्र और अपवित्र में अंतर करके न दिखलाए। दुनिया में कोई नबी ऐसा नहीं भेजा गया जिसके शत्रुओं को ख़ुदा ने अपमानित न किया। हम तुझे शत्रुओं के उपद्रवों से मुक्ति देंगे। हम तुझे विजयी करेंगे और मैं चमत्कारिक रूप से दुनिया में तेरा सम्मान प्रदर्शित करूंगा। मैं तुझे आराम दूंगा और तेरा उन्मूलन नहीं करूंगा और तुझसे एक बड़ी क्रौम बनाऊंगा और तेरे लिए मैं बड़े-बड़े निशान दिखाऊंगा और उन इमारतों को ध्वस्त कर दूंगा जो विरोधियों ने बनाई अर्थात् उनके षड़यंत्रों को टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा। तू वह प्रतिष्ठित मसीह है जिसके समय को व्यर्थ नहीं किया जाएगा। तेरे जैसा मोती व्यर्थ नहीं हो सकता। तेरे लिए आकाश पर पद है और इसी प्रकार उनकी दृष्टि में जो देखते हैं। ख़ुदा तुझे विरोधियों के उपद्रव से

★ इस इल्हाम का अर्थ यह है कि जो लोग घर की चारदीवारी के अंदर हैं और प्लेग के समय इस घर में रहते हैं चाहे छोटे बच्चे हैं चाहे सेवक हैं सबको प्लेग से बचाया जाएगा। इसी से

बचाएगा और तेरी सारी इच्छाएं पूरी करेगा और खुदा उन पर हमला करेगा जो तुझ पर हमला करते हैं क्योंकि वह सीमा से बढ़ गए। खुदा तलवार खींचकर उतरेगा ताकि शत्रुओं और उसके उपकरणों को काट दे। रहीम खुदा की ओर से तुझ पर सलाम वह तुझ में और मुजरिमों में अंतर करके दिखला देगा। उनको कह दे कि मैं सच्चा हूँ अतः तुम मेरे निशानों की प्रतीक्षा करो। तर्क स्थापित हो जाएगा और स्पष्ट विजय होगी। हम वह बोझ उतार देंगे जिसने तेरी कमर तोड़ दी और अत्याचारियों की जड़ काट दी जाएगी। वह चाहते हैं कि तेरा कार्य अधूरा रहे परंतु खुदा नहीं चाहता सिवाए इसके तेरा कार्य पूरा करके छोड़े। खुदा तेरे आगे-आगे चलेगा और उसको अपना दुश्मन ठहराएगा जो तेरा दुश्मन है। जिस पर तेरा क्रोध होगा मेरा भी उसी पर क्रोध होगा और जिससे तू प्रेम करेगा मैं भी उसी से प्रेम करूंगा। खुदा के स्वीकार्य बन्दों में स्वीकार्यता के नमूने और चिन्ह होते हैं और अंततः उनका सम्मान बादशाह और ताकतवर लोग करते हैं। और वह सलामती के शहजादे कहलाते हैं। मैं चौदह जानवरों★ का विनाश करूंगा क्योंकि वह सीमा से बढ़ गए थे। मेरी विजय होगी और मेरा प्रभुत्व होगा। परन्तु जो अस्तित्व लोगों के लिए उपयोगी है मैं उसको देर तक रखूंगा। तुझे ऐसी विजय दी जाएगी जिसकी प्रशंसा होगी और झूठे का खुदा शत्रु है उसको नर्क में पहुंचाया जाएगा। एक मूसा है मैं उसको प्रदर्शित करूंगा और लोगों के समक्ष उसको सम्मान दूंगा। लेकिन जिसने मेरा गुनाह किया है मैं उसको घसीटूंगा और उसको नर्क दिखाऊंगा। मेरे शत्रु का विनाश हो गया और अब उसका मामला खुदा से जा पड़ा अर्थात् हलाक हो जाएगा। हे चन्द्रमा और हे सूर्य तू मुझ से है और मैं तुझ से, शीघ्र ही खुदा तुझे पुरुस्कृत करेगा कि तू राजी हो जाएगा।

★ बाबू इलाही बख्श साहब ग्यारह जानवरों के विनाश के बाद प्लेग के साथ हलाक किए गए जैसा कि इस इल्हामी शेअर में है "बर मकाम फलक शुदा या रब+गर उम्मीदे दहम मदारे अजब। बाद ग्यारह।" इससे सिद्ध हुआ कि बाबू साहब का बारवां नंबर था और उनके बाद दो और हैं ताकि चौदह पूरे हो जाएं। इसी से

ये वे इल्हाम हैं जो असा-ए-मूसा के इल्हाम प्रकाशित होने के बाद मुझे खुदा तआला की ओर से इस छः वर्ष की अवधि में हुए। जब से पुस्तक असा-ए-मूसा का लेखन हो कर प्रकाशन हुआ है। उसी समय से ये इल्हाम आरंभ हुए और यह समस्त इल्हाम बाबू साहब की मौत से पहले के हैं। अब पाठकगण असा-ए-मूसा के इल्हाम और उन इल्हामों का मुकाबला कर के स्वयं ही बताएं कि अंततः यह इल्हाम सच्चे हुए या बाबू इलाही बख्श साहब के इल्हाम सच्चे हुए? एक न्यायवान के लिए तो यह मुकाबला पर्याप्त है। इसी से सच्चा झूठा ज्ञात हो जाता है और यदि नीयत में शुद्धता नहीं तो ऐसे व्यक्ति का खुदा स्वयं निर्णय करेगा।

निशान नंबर 199, 200, 201 क्रादियान के आर्यों ने केवल मुझे दुःख देने और अपशब्द कहने के लिए एक अखबार क्रादियान में निकाला था जिस का नाम शुभ चिन्तक रखा था और इसके एडिटर और प्रबन्धक तीन व्यक्ति थे। एक का नाम सोमराज, दूसरे का नाम अछर चंद, तीसरे का नाम भगत राम था। इन तीनों की मृत्यु से खुदा के तीन निशान प्रदर्शित हुए यह तीनों अत्यंत हानिकारक और अत्याचारी थे।

जिस व्यक्ति ने उनके अखबार शुभ चिन्तक के कुछ पर्चे देखे होंगे वह इस बात का इक्रार करेगा कि यह समस्त पर्चे अपशब्दों और गंद और झूठ से भरे हुए हैं। अतः उपरोक्त अखबार के पर्चा 22 अप्रैल 1906 ई० में मेरे बारे में लिखा है कि यह व्यक्ति स्वार्थी है, मतलबी है, झूठा है, कपटी है इसी कारणवश अपवित्र और दुष्ट स्वप्न इसको आते हैं।

फिर पर्चा 15 मई 1906 ई० में लिखा है। क्रादियानी मसीह के इल्हामों तथा भविष्यवाणियों की वास्तविकता का भेद खोलने का जिम्मा उठाने वाला एक ही पर्चा शुभ चिन्तक है। मिर्जा क्रादियानी दुष्ट आचरण, प्रसिद्धि चाहने वाला, लालची है।

और फिर पर्चा 22 मई 1906 ई० में मेरे बारे में लिखता है "कम्बख्त

कामचोर, छल और कपट और झूठ में कुशल। और फिर पर्चा 22 दिसंबर 1906 ई० में लिखता है हम उनकी चालाकियों का रहस्य अवश्य खोलेंगे और हमें आशा भी है कि हम अपने इरादे में अवश्य सफल होंगे। और पर्चा 22 दिसंबर 1906 ई० में लिखा है "मिर्जा कपटी और झूठ बोलने वाला है मिर्जा की जमाअत के लोग दुराचारी और दुष्ट हैं। अतः उनका प्रत्येक पर्चा अपवित्र गालियों से भरा हुआ निकलता रहा है। मैंने कई बार खुदा के समक्ष दुआएं कीं कि खुदा इस अखबार के कर्मचारियों का विनाश करके इस उपद्रव को बीच से उठा दे अतः कई बार मुझे यह खबर दी गई कि खुदा तआला उनका उन्मूलन करेगा। अधिकांश मेरे लिए यह बात अप्रिय थी कि क्योंकि यह लोग क्रादियान में रहते हैं इसलिए उनके निकट रहने के कारण उनके झूठ को सच के रूप में देखा जाता था। अतः स्वयं उन्होंने भी अपने अखबार 1 मार्च 1907 ई० में केवल धोखा देने के लिए यह प्रकाशित किया है कि हम ने.....पन्द्रह वर्ष तक निरंतर उनके साथ रह कर उनकी अवस्था पर विचार किया तो इतने विचार के बाद हमें यही ज्ञात हुआ कि यह व्यक्ति वास्तव में कपटी, स्वार्थी, एश्वर्य प्रिय, अभद्र ज़बान इत्यादि इत्यादि है।" अब जाहिर है कि जो लोग पन्द्रह वर्ष के पड़ोसी होने का दावा कर के यह गवाही देते हैं कि यह व्यक्ति वास्तव में कपटी और झूठ बोलने वाला है ऐसे लोगों की गवाही का कितना अधिक दिलों पर प्रभाव पड़ सकता है। फिर इसी पर्चे में लिखा है कि निशान तो हम ने इस अवधि तक कोई नहीं देखा लेकिन यह देखा है कि यह व्यक्ति प्रतिदिन झूठे इल्हाम बनाता है एक अद्भुत मूर्ख है।

अतः यही कारण था कि मुझे इन लोगों के बारे में बद्दुआएं करनी पड़ी। अततः मैंने एक पुस्तक लिखी जिसका नाम है **क्रादियान के आर्य और हम** इस पुस्तक के विषय का सारांश यह है कि क्रादियान के दो आर्य जिन में से एक का नाम शरमपत और दूसरे का नाम है मलावामल। ये दोनों बहुत समय तक मेरे पास आते रहे हैं और बहुत आकाशीय निशान हैं जो उन्होंने स्वयं अपनी आँखों से देखे हैं और वे मेरे उन समस्त निशानों के गवाह हैं जिनके अस्तित्व

से शुभ चिन्तक के एडिटर और प्रबन्धक बिलकुल इनकारी हो कर मुझ को कपटी और झूठा ठहराते हैं। यदि मैं ऐसा ही झूठा और कपटी हूँ तो ये दोनों क्रसम खालें कि हम ने निशान नहीं देखे। तो आज तक उन्होंने क्रसम नहीं खाई परन्तु इन तीनों के बारे में अर्थात् सोमराज और अछरचंद और भगताराम के बारे में जो कुछ मुझे खुदा से ज्ञात हुआ मैंने इस पुस्तक में लिख दिया। अतः इसके अतिरिक्त एक दुआ है जो इसी पुस्तक के टाइटल पेज के दूसरे पृष्ठ में लिखी गई और वे शेअर ये हैं :-

मौत - ए - लेखु बड़ी करामत है
 पर समझते नहीं यह शामत है
 मेरे मालिक तू उनको खुद समझा
 आसमां से फिर एक निशान दिखला

इस शेअर का सारांश अर्थ यह है कि खुदा तआला से माँगा गया है कि लेखराम की मृत्यु के समान खुदा क्रादियान के आर्यों पर अज़ाब के रूप में कोई निशान प्रदर्शित करे। फिर इसी पुस्तक के पृष्ठ 21, 22 में मैंने यह भविष्यवाणी उन लोगों के लिए की कि ये लोग उन नबियों को झुठलाने में जिनकी सच्चाई सूर्य के समान चमकती है सीमा से बढ़ गए हैं। खुदा जो अपने बन्दों के लिए स्वाभिमानी है अवश्य इसका निर्णय करेगा। वह अवश्य अपने प्रिय नबियों के लिए कोई हाथ दिखाएगा.....खुदा उनका और हमारा फैसला करे। और फिर इसी पुस्तक के पृष्ठ 53 से 54 तक भविष्यवाणी के रूप में अखबार शुभ चिन्तक के एडिटर इत्यादि के बारे में ये शेअर हैं :-

कहने को वेद वाले, पर दिल हैं सब के काले
 पर्दा उठा के देखो उनमें भरा यही है
 फ़ित्रत के हैं दरिंदे मुर्दार हैं न जिंदे
 हर दम ज़बां के गंदे क्रहर-ए-खुदा यही है

दीन-ए-खुदा के आगे कुछ बन न आई आखिर
 सब गालियों पर उतरे दिल में उठा यही है
 शर्म-ओ-हया नहीं है आँखों में उन के हरगिज़
 वह बढ़ चुके हैं हद से अब इन्तेहा यही है
 हमने है जिसको माना क्रादिर है वह तवाना
 उस ने है कुछ दिखाना उस से रजा यही★ है

यह भविष्यवाणी सोमराज इत्यादि प्रबन्धक शुभ चिन्तक के बारे में है।

फिर इसी पुस्तक के पृष्ठ 61 में कुछ शेअर भविष्यवाणी के रूप में हैं

और वह ये हैं :-

ऐ आर्यों यह क्या है क्यों दिल बिगड़ गया
 इन शोखियों को छोड़ो राह-ए-हया यही है
 मुझ को हो क्यों सताते सौ इफ़तरा बनाते
 बेहतर था बाज़ आते दूर अज़ बला यही है

★मुंशी अल्लाह दत्ता पूर्व पोस्ट मास्टर क्रादियान वर्तमान क्लर्क डाकखाना अमृतसर हेड ऑफिस, बनाम शेख याकूब अली एडिटर अखबार अल-हकम निम्नलिखित पत्र अमृतसर से लिखते हैं और वह हमारी जमाअत में सम्मिलित नहीं हैं अपितु हमारे विरोधियों की जमाअत में से हैं और पत्र का विषय यह है :- लाला अच्छरचंद वर्मा आर्य क्रादियान की प्लेग से मौत का सुन कर मुझे उस समय का वर्तालाप याद आया कि जो मेरे सामने आपके और लाला अच्छरचंद के मध्य हुआ था जो बिल्कुल ठीक सिद्ध हुआ और वह इस प्रकार था कि एक दिन लाला अच्छरचंद और आप के मध्य हज़रत मिर्ज़ा साहब के बारे में बात-चीत हो रही थी। और बात-चीत के समय आप ने कहा था कि हज़रत मिर्ज़ा साहब का प्लेग से सुरक्षित रहना एक निशान है और कोई व्यक्ति नहीं कह सकता कि मैं प्लेग से सुरक्षित रहूँगा। इस पर लाला अछरचंद ने कहा था कि लो मैं भी मिर्ज़ा साहब के समान दावा करता हूँ कि मैं प्लेग से नहीं मरूँगा। जिस पर अब मैंने उसको कहा था कि तू अवश्य प्लेग से मरेगा। अतः ऐसा ही हुआ। वस्सलाम 24 अप्रैल 1907 ई०।

जिसकी दुआ से आखिर, लेखू (पंडित लेखराम) मरा था कट कर
 मातम पड़ा था घर-घर वह मीरजा यही है
 अच्छा नहीं सताना पाकों का दिल दुखाना
 गुस्ताख होते जाना इस की जजा यही है

अर्थात् जो आर्य लेखराम के समान बदजुबानी से नहीं रुकता वह भी
 अजाब से बच नहीं सकता।

यह हैं भविष्यवाणियां जो उस समय की गई जब अखबार शुभ चिन्तक
 के एडिटर और प्रबन्धक गालियाँ देने में सीमा पार कर गए और खुदा ने मुझ पर
 प्रदर्शित किया कि अब वे हलाक होने को हैं। अतः अधिकांश वे इल्हाम अखबार
 बदर और अल-हकम में भी प्रकाशित हो गए। तब इसके पश्चात् उन अभागों
 के दंड का समय आ गया और ये तीन व्यक्ति थे एक नाम था सोमराज, दूसरे
 का नाम अछरचंद था और तीसरे का नाम भगतराम था। अतः खुदा के प्रकोपीय
 तमांचे ने तीन दिन के भीतर ही उनका काम तमाम कर दिया और तीनों प्लेग
 के शिकार हो गए। और उनकी विपत्ति उनकी सन्तान और परिवार वालों पर भी
 पड़ी। अतः सोमराज न मरा जब तक उसने अपनी प्रिय सन्तान की मौत प्लेग से
 न देख ली। यह सजा है शरारतों और शेखियों की। परन्तु मैं अभी विश्वास नहीं
 कर सकता कि उन लोगों के शेष बचे हुए दोस्त जो क्रादियान में उपस्थित हैं,
 शरारतों से रुक जाएंगे। प्रतिष्ठित नबियों की रूहें इनकी बदजुबानी और अपमान
 के कारण अपने समर्थ खुदा के समक्ष फ़रियाद कर रही हैं। अतः वे पवित्र आत्माएं
 निस्संदेह यह सम्मान रखती हैं कि खुदा का स्वाभिमान उनके लिए भड़के। इसलिए
 निश्चित रूप से समझो कि यह क्रौम अपने हाथ से विनाश का बीज बो रही है।
 याद रहे कि अपवित्र स्वभाव के लोग कदापि फल-फूल नहीं सकते और जो वृक्ष
 सूखा भी हो और फिर विषैला भी वह क्योंकि सुरक्षित रखने के योग्य ठहर सकता
 है अपितु वह सर्वप्रथम काटा जाएगा। और यह न समझो कि इन तीनों का प्लेग
 से मरना एक निशान है अपितु यह तीन निशान हैं। और अब हम प्रतीक्षक हैं कि

अब उनका उत्तराधिकारी क्रादियान में कौन होता है और कब वह उनके समान मेरे बारे में अखबार में प्रकाशित करता है कि यह व्यक्ति कपटी और झूठा है और झूठा है और हम ने उसका कोई निशान नहीं देखा।

हे क्रादियान के आर्यों! खुदा तआला के क्रोध से डरो और झूठ बोलने पर अडिग न हो जाओ। वह एक पल में अत्याचारी और गुस्ताख व्यक्ति का विनाश कर सकता है। वे महान निशान जो तुम ने देखे यदि कोई सदस्वभाव आर्य देखता तो स्वीकार कर लेता। कौन मनुष्य यह भविष्यवाणी कर सकता है कि उसकी गुमनामी और बेबसी के समय के बाद उस पर एक ऐसा समय भी आने वाला है कि लाखों मनुष्य उसके अनुयायी हो जाएंगे और विरोधियों के छल से वह भविष्यवाणी नहीं टलेगी। और कौन दरिद्रता के समय यह खबर दे सकता है कि उस पर एक ऐसा समय भी आने वाला है कि एक दुनिया तोहफों और धन के साथ उसकी ओर लौटेगी और खुदा उनके हृदयों में इल्हाम करेगा कि पूरी सच्चाई और श्रद्धा से उसकी सहायता करें और उसके मार्ग में फ़िदा हों। अतः हे आर्यों! तुम्हें ज्ञात है कि मेरी गुमनामी और दरिद्रता के समय में जबकि मैं दुनिया की दृष्टि से गुप्त था, खुदा ने बराहीन-ए-अहमदिया में यही खबरें दी थीं जो अब मैंने लिखीं और उसने मुझे संबोधित कर के कहा था कि प्रत्येक ओर से दुनिया तेरी ओर लौटेगी और लाखों लोग सेवा के लिए उपस्थित हो जाएंगे और इतनी अधिकता से लोग आएंगे कि संभव है कि तू उनसे मिलते मिलते थक जाए या अशिष्टता करे और उनके आने से मार्ग गहरे हो जाएंगे। और एक युग तेरी ओर उलट आएगा और शत्रु जोर लगाएंगे कि ऐसा न हो परन्तु खुदा अपनी बात को पूरा करेगा। अतः तुम सर्वप्रथम इस भविष्यवाणी के गवाह थे परन्तु जान बूझ कर अपनी गवाही को छुपाया।

हे निर्भय और कठोर हृदय क्रौम! क्या तुमने इस महान भविष्यवाणी को बराहीन-ए-अहमदिया में नहीं पढ़ा और क्या तुम इसके गवाह नहीं हो कि वास्तव में यह भविष्यवाणियाँ उस समय की हैं कि जबकि कोई बुद्धि यह राय प्रदर्शित

नहीं कर सकती थी कि ऐसा कभी हो जाएगा और क्या तुम कह सकते हो कि दुनिया में कोई मनुष्य ऐसी भविष्यवाणी ऐसी गुमनामी के समय में कर सकता है। यदि संसार में इसका कोई और भी उदाहरण है तो प्रस्तुत करो। अन्यथा निस्संदेह समझो कि खुदा की सुन्नत तुम पर पूर्ण हो चुकी अब तुम किसी ओर भाग नहीं सकते। जो व्यक्ति खुदा के निशानों को अपमान से देखता है वह प्रथम श्रेणी का दुष्ट स्वभाव और अपवित्र प्रकृति का होता है और नहीं मरता जब तक कोई दूसरा प्रकोपीय निशान न देख ले। अतः तुम शेखियों से रुक जाओ ऐसा न हो कि खुदा का क्रोध तुम पर आ जाए और तुम्हारा विनाश हो जाए। वह सामर्थ्यवान खुदा मनुष्य से थक नहीं सकता। मैं देख रहा हूँ कि वह कोई और निशान दिखाएगा क्योंकि दुनिया ने उसके निशानों को स्वीकार नहीं किया और व्यंग्य और उपहास किया। ज़मीन की विचित्र अवस्था है मानो मर गई। कोई व्यक्ति तक्रवा (संयम) की दृष्टि से नहीं देखता कि कहाँ तक वास्तविकता स्पष्ट हो गई है। झुठलाने की ओर झुक गए हैं और खुदा के निशानों से कोई लाभ प्राप्त नहीं करते। प्रत्येक के हाथ में केवल कहानियाँ हैं और खुदा के चमकते हुए निशानों पर उन कहानियों को प्राथमिकता देते हैं। इसलिए मैं देखता हूँ कि दुनिया के यह चिन्ह रद्दी हैं। नहीं मालूम कि क्या होने वाला है हृदय कठोर हो गए हैं और आँखें अंधी हो गईं और खुदा का भय कम होता रहा परन्तु मेरे खुदा ने मुझे खबर दी है कि इसके बाद और निशान हैं जो क्रयामत का नमूना हैं। काश लोग समझते और आने वाले प्रकोप से बच जाते। खुदा ने कहा कि एक ओर क्रयामत बरपा हुई अर्थात् होगी। 27 अप्रैल 1907 ई० थी, जब यह इल्हाम हुआ।

निशाँ को देखकर इनकार कब तक पेश जाएगा
 अरे इक और झूठों पर क्रयामत आने वाली है
 ये क्या आदत है क्यों सच्ची गवाही को छुपाता है
 तेरी इक रोज़ ऐ गुस्ताख़ शामत आने वाली है

तेरे मकरों से ऐ जाहिल मेरा नुक्सां नहीं हरगिज
कि यह जां आग में पड़ कर सलामत आने वाली है

अगर तेरा भी कुछ दीं है बदल दे जो मैं कहता हूँ
कि इज्जत मुझको और तुझ पर मलामत आने वाली है

बहुत बढ़ बढ़ के बातें की हैं तूने और छुपाया हक
मगर ये याद रख इक दिन नदामत आने वाली है

खुदा रुसवा करेगा तुमको मैं ऐजाज पाऊंगा
सुनो ऐ मुनकिरो! अब ये करामत आने वाली है

खुदा जाहिर करेगा इस निशाँ पुर रोअब व पुर हैबत
दिलों में इस निशाँ से इस्तिक्रामत आने वाली है

खुदा के पाक बन्दे दूसरों पर होते हैं गालिब
मेरी खातिर खुदा से यह अलामत आने वाली है

निशान नंबर 202 - मेरे एक मित्र सय्यद नासिर शाह साहब ओवर्सियर इस चिंता और संदेह में पड़ गए थे कि वह गिलगित में भेजे गए थे और वह यात्रा की कठिनाइयों और तकलीफों को सहन नहीं कर सकते थे। अंततः वह छुट्टी ले कर दुआ करवाने के लिए मेरे पास आए ताकि वह जम्मू में नियुक्त हों और गिलगित में न जाएं और यह बात देखने में असंभव थी क्योंकि गिलगित में उनका तबादला हो चुका था इसलिए वह अत्यंत बेचैन थे। मैंने एक रात उनके लिए

और इसी प्रकार कई और दुआएं कीं और इस्लाम के वैभव के लिए भी दुआ की और नमाज़-ए-तहज्जुद में भी दुआएं करता रहा। तब थोड़ी सी तंद्रावस्था के साथ ख़ुदा ने मुझे ख़बर दी कि समस्त दुआएं कुबूल हो गईं जिन में इस्लाम की दृढ़ता और वैभव भी है। इस ढंग में मुझे सूचना दी गई कि सय्यद नासिर शाह का स्थानांतरण स्थगित किया गया। मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि ख़ुदा ने उनके बारे में मेरी दुआ स्वीकार की और इसी प्रकार इस कारणवश भी प्रसन्नता हुई कि ख़ुदा की कृपा और दया के बड़े निशान ये हैं कि वह दुआ स्वीकार करे। तुरंत मैंने उनको सूचना दे दी कि तुम्हारे बारे में मेरी दुआ स्वीकार हो गई। फिर इसके पश्चात् संभवतः तीसरे दिन या चौथे दिन रियासत के किसी कार्यकर्ता का उन्हें पत्र आ गया कि आपका तबादला स्थगित किया गया तब वह कुछ दिन बाद मुझ से विदा ले कर जम्मू चले गए और जम्मू में जा कर वह पत्र भेजा जो नीचे दर्ज किया जाता है और वह यह है :-

बहुज़ूर अक्रदस हज़रत पीरो मुर्शद मसीह मौऊद व महदी मा'हूद दाम ज़िल्लुकुम (अल्लाह आपको लंबी आयु दे)

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू

मैं हुज़ूर की सेवा में बधाई प्रस्तुत करता हूँ कि विनीत का नियुक्ति विशेष जम्मू नंबर प्रथम सबडवीज़न में हो गया है आदेश आ चुके हैं। और अब यह विनीत गिलगित नहीं जाएगा। अलहम्दोलिल्लाहे रब्बिलआलमीन कि हुज़ूर की दुआएं ख़ुदा ने स्वीकार कीं और हुज़ूर की दुआ के कारण ख़ुदा ने लम्बी यात्रा से इस विनीत को मुक्ति प्रदान की। जनाब-ए-आली यह विनीत के लिए बड़ा चमत्कार प्रकट हुआ है। मेरे प्रिय मसीह और महदी मेरे प्राण और संपत्ति आप पर न्योछावर हों। मुझे अधिक प्रसन्नता यह प्राप्त हुई कि हुज़ूर का वह इल्हाम पूरा हुआ कि आज जो दुआएं स्वीकार हुईं उन में इस्लाम की दृढ़ता और वैभव भी है और हुज़ूर ने मुझे कहा था कि उन दुआओं में से यह दुआ भी थी कि तुम्हारा गिलगित का तबादला स्थगित रह जाए और जम्मू में नियुक्ति हो जिसकी

स्वीकार्यता की सूचना प्राप्त हो गई है। अतः ख़ुदा का धन्यवाद है कि ख़ुदा के कथनानुसार प्रकटन में आ गया। अलहम्दोलिल्लाह! अलहम्दोलिल्लाह!!

विनीत सय्यद नासिर शाह ओवर्सियर सब डवीज़नल अफ़सर जम्मू

दिनांक 11 अप्रैल 1907 ई०

निशान नंबर 203 - 13 अप्रैल 1907 ई० से कुछ दिन पहले मुझे यह इल्हाम हुआ कि **اردت زمان الزلزة** अतः यह इल्हाम बदर और अल-हकम में समय से पहले प्रकाशित कर दिया गया था और इस इल्हाम का अर्थ यह था कि अब मैं फिर भूकम्पों का युग लाऊंगा। अतः इसके बाद एक भूकंप तो पंजाब में आया जिसके बारे में खैराबाद ज़िला पेशावर से मुझे सूचना मिली कि वह सख्त भूकंप और प्रलय का नमूना था। ऐसा ही लारेंसपुर तथा अन्य बहुत से स्थानों से इस भूकंप की सूचना मिली और बहुत से दोस्तों ने पत्र लिखे और अख़बार सिविल एंड मिलिट्री में भी इस की ख़बर प्रकाशित की गई।

फिर अंग्रेज़ी अख़बारों के माध्यम से ज्ञात हुआ कि ऐसा ही इस इल्हाम के बाद अमरीका और यूरोप के कुछ भागों में तीन भयंकर भूकंप आए। और कुछ शहर तबाह हो गए परन्तु क्योंकि भविष्यवाणी में व्यापकता है इसलिए समझा जाता है कि इसी पर समाप्त नहीं होगा अपितु और भूकंप भी आएँगे क्योंकि ख़ुदा फ़रमाता है कि वह युग आ गया है कि मैं फिर भूकंपों को ज़मीन पर प्रदर्शित करूंगा। अतः इन भूकंपों का प्रतीक्षक रहना चाहिए। ख़ुदा की बातें टल नहीं सकतीं।

निशान नंबर 204 - मौलवी अब्दुल हमीद निवासी देहली ने अपनी पुस्तक "बियानुं लिन्नासे" में मेरा वर्णन कर के और मुक्राबले पर स्वयं को रख कर मुबाहला के रूप में बद्दुआ की थी ताकि झूठा सच्चे के जीवन में फ़ना हो। अतः वह मेरे जीवन में अचानक मौत से मर गया। यह सीख प्राप्त करने के स्थान है।

निशान नंबर 205 - फिर एक और व्यक्ति अबुल हसन नामक★ ने मेरे खण्डन में एक पुस्तक बनाई थी जिसका नाम है "बिजली आसमानी बर सरे दज्जाले क्रादियानी" जिसके कई स्थानों पर झूठे की मौत के लिए बद्दुआ

★ इस व्यक्ति का नाम मुहम्मद जान है अलमारुफ़ मौलवी अबुल हसन। लेखक शरह सहीह बुखारी अलमारुफ़ ब फ़ैजुल बारी निवासी पंज ग्राई तहसील पिसरूर जिला सियालकोट। इस जिले में यह एक प्रसिद्ध मौलवी था वह अपनी पुस्तक 'बिजली आसमानी' के पृष्ठ नंबर 3 पंक्ति 17 और पंक्ति 18 के शेअर में लिखता है कि मैं दुआ करता हूँ कि मिर्जा का खुदा उन्मूलन करे और उसका कुछ भी शेष न रहे और वह मर जाए। और फिर इस पुस्तक के पृष्ठ 100 पंक्ति 15 में इस पुस्तक के द्वितीय भाग (अर्थात बिजली) आसमानी का वादा कर के यह शेअर मेरे बारे में लिखता है "नबियाँ ताई इस मुतनब्बी लाईयां बड़ियाँ सिल्लां, दूज्जे हिस्से अंदर देखीं मेरीयाँ उस्दीयाँ गल्लां" अभी इस अभागे मौलवी ने द्वितीय भाग अपनी पुस्तक बिजली आसमानी का तैयार नहीं किया था कि प्लेग की बिजली उस पर पड़ गई। उन्नीस दिन तक गरगोर की अवस्था में रहा अंततः बड़े दुःख के बाद जान दी और फिर पृष्ठ 100 पंक्ति 19 में यह मौलवी साहब मेरे बारे में यह भविष्यवाणी करते हैं "तौबा कर जल्दी ऐ मुल्हिद मौत नेड़े है आई। अज कल मर दुनिया तों गाफ़िल होना है तूं राही अर्थात जल्दी तौबा कर कि तेरी मौत निकट आ गई है और हे अज्ञानी आज कल ही तू मर जाएगा और दुनिया से यात्रा करेगा। संभवतः यह मौलवी साहब का इल्हाम है या स्वप्न परन्तु दो वर्ष की अवधि गुजरी है कि यह मौलवी साहब स्वयं ही प्लेग से मर गए और देखने वालों ने वर्णन किया है कि उन्नीस दिन तक प्लेग से ग्रसित रह कर चीखें मारते रहे और अत्यंत दर्दनाक अवस्था में जान दी और फिर यह मौलवी साहब भविष्यवाणी के रूप में इसी पुस्तक बिजली आसमानी के पृष्ठ 107 में ये कुछ शेअर लिखते हैं “ मिर्जा मोया खुशियो मैंनू रातें नींद न आई मिर्जा गुजर गया। मिर्जा मोया बेशक जानो मैं हुन नुसरत पाई मिर्जा गुजर गया। अर्थात निस्संदेह मिर्जा गुजर जाएगा और मैं विजयी हूँगा। और फिर पृष्ठ 107 के शेअर में लिखता है कि प्लेग के फैलने की खबर मिर्जा ने दी थी वह भी प्रकटन में न आई। परन्तु मौलवी साहब को मालूम न था कि स्वयं प्लेग से मरेंगे। खुदा की कुदरत है कि उन्हीं पर बिजली आसमानी गिरी। इसी से

है अपितु जाली रूप से मेरी मृत्यु का घटित होना सिद्ध कर के पंजाबी भाषा में एक सियापा लिखा है मानो मैं मर गया हूँ और वह मौलवी मेरा सियापा मेरी मौत के बाद करता है अंततः परिणाम यह हुआ कि कथित मौलवी इस पुस्तक को प्रकाशित करने के बाद स्वयं प्लेग से मर गया। फिर एक और व्यक्ति अबुल हसन अब्दुल करीम नामक ने दोबारा इस पुस्तक को छपवाया वह भी वर्तमान के प्लेग के दिनों में प्लेग का शिकार हो गया। आश्चर्य कि इन समस्त निशानों के बावजूद कोई सोचता नहीं कि जिस व्यक्ति के साथ खुदा का इतना अधिक समर्थन है वह क्योंकर झूठा हो सकता है?

हे इस पुस्तक के पाठक! खुदा से डर। और एक बार आरंभ से अंत तक इस पुस्तक को देख और उस सामर्थ्यवान खुदा से निवेदन कर कि वह तेरे हृदय को सच्चाई के लिए खोल दे और खुदा की दया से निराश न हो।

मर्दे मैदां बाश व हाल मा बबीं
 नुसरते आन जुलजलाले मा बबीं
 ताना हाबे इम्तेहान नामर्दी अस्त
 इम्तेहान कुन पस माले मा बबीं

अनुवाद - मर्द-ए-मैदान बन और हमारी स्थिति देख, साथ ही हमारे इस प्रतापी (खुदा) की मदद देख। बिना परीक्षा लिए निंदा करना नामर्दी है। हमारी परीक्षा ले और फिर हमारा परिणाम तथा अंजाम देख।

हे प्रिय! खुदा के बन्दों के बारे में जल्दबाजी करते हुए बदज़न्नी (कुधारणा) करना वैध नहीं। जिन लोगों ने पहले प्रतिष्ठित लोगों के बारे में बदज़न्नी की उन्होंने क्या हासिल किया। और यह विचार भी अपने हृदयों में से निकल दो कि जब तक मसीह मौऊद व महदी मौ'हूद की वे समस्त निशानियाँ (जो केवल काल्पनिक रिवायतों के आधार पर तुम्हारे दिलों में हैं) पूरी न हो लें तब तक स्वीकार करना कदापि वैध नहीं। यह कथन उन यहूदियों के कथन के समान है जिन्होंने न हज़रत ईसा को स्वीकार किया और न हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम को। क्योंकि जो कुछ अपनी रिवायतों के आधार पर निशानियाँ ठहराई थीं वे सब पूरी न हुईं। अतः क्या तुम समझते हो कि तुम्हारी वे कथित निशानियाँ पूरी हो जाएंगी? नहीं अपितु ऐसी भविष्यवाणियों में एक गुप्त परीक्षा भी होती है और खुदा तुम्हें आजमाता है कि तुम उसके निशानों को सम्मानपूर्वक देखते हो या नहीं। समस्त रिवायतें कब सच्ची हो सकती हैं बहुत सी झूठी बातें मिल जाती हैं उन पर संपूर्ण रूप से आधारित होना हानिकारक बात है।★

यह तो बताओ कि किस नबी के बारे में निर्धारित की हुई निशानियाँ पूरी हो गईं जो पहली क्रौम ने निर्धारित कर रखी थीं। अतः खुदा से डरो और पिछले इंकार करने वालों के समान खुदा के रसूल को इस आधार पर रद्द न करो कि तुम ने उसमें वे समस्त निर्धारित की हुई निशानियाँ न पाई और निस्संदेह याद रखो कि यह बात किसी को भी नसीब नहीं हुई कि उनकी समस्त निर्धारित की हुई निशानियाँ आने वाले नबी में पाई जाएं इसीलिए उन्होंने ठोकरें खाई और नर्क में पड़े अन्यथा समस्त निशानियाँ देख कर फिर इंकार करना मनुष्य के स्वभाव में सम्मिलित नहीं। कोई न कोई बात ठोकर खाने की होती है जिस से अभाग मनुष्य ठोकर खाता है। यहूदियों का विचार था कि आने वाला मसीह एक बादशाह के रूप में आएगा और उस से पहले इल्यास नबी दोबारा आकाश से उतरेगा। अतः इसी कारणवश आज तक उन्होंने हज़रत ईसा को स्वीकार नहीं

★ हम इन निशानों को 205 पर समाप्त कर चुके थे कि एक और पुस्तक हमें मिली जिसने इन निशानों को 206 तक पहुंचा दिया। इस पुस्तक का नाम दुर्गे मुहम्मदी है और लेखक का नाम इमदाद अली है। इस व्यक्ति ने अपनी पुस्तक के पृष्ठ 7 में मेरे बारे में यह शेअर लिखा है : "अल्लाह अजीहे पैगम्बर ताई जल्द बजल्द सम्हाले। जिस काज़िब ने दुनिया अंदर बहुतीरे चिल्ले चाले।" अर्थात् इस व्यक्ति को खुदा जल्दी मौत दे। फिर पृष्ठ 8 में मेरे बारे में "लानतुल्लाहे अलल काज़ेबीन" लिखता है और पुस्तक का दूसरा भाग बनाने का वादा करता है और अभी दूसरे भाग तक नहीं पहुंचा कि प्लेग से पकड़ा गया और अपने गोश्त को अपने दांतों से काटता था। अंततः उसी अवस्था में मर गया। यह हैं मौलवी साहिबान जो मुझे झूठा ठहराते हैं। अतः हे देखने वालो! विचार करो। इसी से

किया क्योंकि न तो उन से पहले इल्यास नबी आकाश से उतरे और न हज़रत ईसा बादशाह हुए, प्रयास तो किया गया परन्तु इस में असफल रहे और फिर हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में यहूदियों के विद्वानों अपितु उनके समस्त नबियों ने भी यही समझ रखा था कि वह ज़माने का अंतिम नबी बनी इस्राईल में से पैदा होगा। परन्तु ऐसा प्रकटन में न आया अपितु वह नबी बनी इस्माईल में से पैदा हो गया। तब लाखों यहूदी स्वीकार्यता के सौभाग्य से वंचित रह गए। यदि ख़ुदा चाहता तो ऐसी स्पष्टता से निशानियाँ बता देता कि यहूदी ठोकर न खाते परन्तु जबकि आंज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए यह स्पष्टता नहीं की गई तो फिर और किस के लिए की जाती। अतः याद रखो कि ऐसी भविष्यवाणियों में परीक्षा भी उद्देश्य होती है। जो लोग सदबुद्धि रखते हैं वे इस परीक्षा में तबाह नहीं होते और रिवायतों को केवल एक अनुमान का भंडार समझ लेते हैं और यह भी समझ लेते हैं कि यदि कोई रिवायत या सहीह हदीस भी हो तब भी उसके अर्थ करने में ग़लती हो सकती है। अतः वह पहचानने का समस्त आधार ख़ुदा की सहायता और ख़ुदा के समर्थन और ख़ुदा के निशानों और गवाहियों को क्ररार देते हैं और जितनी निशानियाँ रिवायतों के माध्यम से प्राप्त हो गई हैं उनको काफी समझते हैं और शेष रिवायतों को एक रद्दी सामान की तरह फेंक देते हैं। यही मार्ग सदस्वभाव यहूदियों ने अपनाया था जो मुसलमान हो गए थे और सच्चों का यही तरीका हमेशा से चला आया है और यदि सच्चों और ख़ुदा से डरने वालों का यह तरीका न होता तो यहूदियों और ईसाइयों में से एक व्यक्ति भी आंज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान न ला सकता और न कोई यहूदी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को स्वीकार कर पाता। इस देश में बहुत से यहूदी रहते हैं उनको पूछ कर देख लो कि क्यों वे लोग हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और आंज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान नहीं लाए? आखिर वे पागल तो नहीं हैं कोई कारण तो उनके पास है। अतः तुम याद रखो कि उनकी ओर से तुम यही उत्तर पाओगे कि वे निशानियाँ

जो उनकी रिवायतों और हदीसों में लिखी थीं पूरी नहीं हुई और इस प्रकार वे इस ज़िद्द पर अडिग रह कर नर्क वासी होते गए और होते जाते हैं। अब जबकि सिद्ध हुआ कि समस्त निर्धारित निशानियों का पूरा होना, ईमान की शर्त ठहराना नर्क का मार्ग है जिसके करण कई लाख यहूदी नर्क में जा पड़े तो इस मार्ग को तुम क्यों अपनाते हो। मोमिन को चाहिए कि दूसरे की परिस्थिति से सीख प्राप्त करे। क्या तुम आश्चर्य करते हो कि जिस अज़ाब में ख़ुदा तआला ने यहूदियों को डाला था वही परीक्षा तुम्हारी भी की गई हो। ख़ुदा तआला फ़रमाता है :

أَحْسَبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ

(अलअनकबूत - 3)

निस्संदेह समझो कि यह कारोबार ख़ुदा का है न कि मनुष्य का। अतः स्वीकार करने में सबसे प्रथम श्रेणी में हो जाओ और ख़ुदा से न लड़ो कि उसने ऐसा क्यों किया और यदि तुम तक्वा की दृष्टि से देखो तो तुम समझ सकते हो कि जितना तुमने विरोधी रिवायतों को दृढ़ता से पकड़ लिया है बुद्धि और न्याय तुम पर यह अनिवार्य नहीं करता कि तुम अवश्य ऐसा करो। क्योंकि वह सब अनुमानों का ढेर है कि जो झूठ की संभावना भी रखता है और स्पष्टीकरण योग्य भी है। अतः अपने प्राणों पर दया करो विश्वास के पहलु को क्यों छोड़ते हो। क्या अनुमान विश्वास के बराबर हो सकती है। क्या संभव नहीं कि वे रवायतें ठीक न हों जिनको तुम सही समझते हो। क्या वह विपत्ति जो यहूदियों के समस्त निशानियों पर ज़िद्द करने से उनके सम्मुख आई वह तुम्हारे सम्मुख नहीं आ सकती? अतः तुम उनकी कमज़ोरियों से लाभ प्राप्त कर लो। स्मरण रखो कि पवित्र क़ुरआन की आयतों से निश्चित रूप से कहीं सिद्ध नहीं होता कि हज़रत ईसा जीवित आकाश पर बैठे हैं अपितु उनकी मृत्यु सिद्ध होती है। अतः जिसको क़ुरआन मारता है उसको तुम जीवित क्यों करते हो। नबी आकाश पर जीवित तो हैं परन्तु सबका जीवन समान है ईसा के लिए कोई निराला जीवन नहीं। और हमारे नबी आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सर्वाधिक आसमानी जीवन रखते हैं और सूरः नूर को ध्यान से

पढ़ो उसमें यही पाओगे कि आने वाले खलीफ़े सब इसी उम्मत में से हैं और जबकि यहूद इस उम्मत में से भी पैदा होने वाले हैं तो तुम क्यों आश्चर्य करते हो कि मसीह मौऊद भी इसी उम्मत में से हो और मुझे कब इच्छा थी कि मैं मसीह मौऊद बनता और यदि मुझे यह इच्छा होती तो मैं बराहीन-ए-अहमदिया में अपनी पहली आस्था के आधार पर क्यों लिखता कि मसीह आकाश से आएगा यद्यपि उस बराहीन में खुदा ने मेरा नाम ईसा रखा है। अतः तुम समझ सकते हो कि मैंने पहली आस्था को नहीं छोड़ा था जब तक खुदा ने रौशन निशानों और खुले-खुले इल्हामों के साथ नहीं छोड़ा। अतः मैं विश्वास को छोड़ कर तुम्हारी कल्पित रवायतों को क्योंकर स्वीकार कर सकता हूँ और बसीरत (अन्तर्दृष्टि) को छोड़ कर काल्पनिक ढकोसले क्योंकर स्वीकार कर सकता हूँ जिनका झूठा होना खुदा ने मुझ पर प्रदर्शित कर दिया जैसा कि यहूदियों की रिवायतों और हदीसों का झूठा होना खुदा ने हज़रत ईसा और आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर प्रदर्शित किया। अतः वह बसीरत (अन्तर्दृष्टि) जो ज़बरदस्त निशानों के साथ दिया गया है मैं उसको क्योंकर छोड़ सकता हूँ। खुदा ने मुझ पर प्रदर्शित कर दिया है कि वह समस्त रिवायतें ठीक नहीं थीं कुछ तो सही थीं जो पवित्र कुरआन के अनुसार हैं और कुछ रद्दी और मनगढ़त बातों का भंडार था जिस का ग़लत होना स्पष्ट हो गया और कुछ सही हदीसों को समझने में गलतियां थीं। यदि ऐसा न होता तो मसीह मौऊद का नाम “हक़म” (निर्णायक) क्यों रखा जाता। क्योंकि यदि मसीह मौऊद पर अनिवार्य है कि वह प्रकट हो कर समस्त रिवायतों को मान ले तो फिर किन अर्थों से वह हक़म कहला सकता है। प्रत्येक वृक्ष अपने फलों से पहचाना जाता है और प्रत्येक सेवक का सम्मान उसके स्वामी के उपकारों से मालूम हो सकता है और प्रत्येक सुगंध अपनी गवाही स्वयं देती है। अतः क्यों मुझ से जल्दी करते हो और क्यों ज़बान की अपवित्रता को सीमा पार पहुँचते हो। धैर्य रखो और संयम से काम लो। यदि मैं सच्चा नहीं और चोरों और बटमारों के समान हूँ तो कब तक यह चोरी और बटमारी बची रह सकती है।

آنکه آید از خدا آید بدو نصرت دوان
 خدمت او می کند شمس و قمر چون چاکران
 صادقان را از خدا نورے عنایت می شود
 عشق آن یار ازل می تابد اندر روئے شان
 از پئے همدردی دنیا مصیبت می کشند
 خادمان بے اجرت اند و پرده پوشان جهان
 از گروه اہل نخوت لا اوبالی مے زیند
 بادشاہان دو عالم بے نیاز از حاسدان
 دل سپردن دلستان را سیرت ایشان بود
 جان دهند از بہر آن دلداری وقت امتحان

अनुवाद :- जो खुदा की ओर से आता है उसे दैवीय सहायता प्राप्त होती है चन्द्रमा और सूर्य सेवकों की भांति उसकी सेवा करते हैं।

सत्यवादियों को खुदा की ओर से प्रकाश प्राप्त होता है और उस खुदा का प्रेम उनके चेहरों पर छलकता है।

वह दुनिया की सहानुभूति के लिए कष्ट सहते हैं, वे बिना वेतन के सेवक हैं और दुनिया के पर्दापोश (अर्थात् उनके दोष उजागर नहीं करते) हैं।

वह अभिमानी लोगों की परवाह किए बिना जीवन व्यतीत करते हैं वह दोनों लोकों के बादशाह हैं और ईर्ष्यालुओं से उदासीन हैं।

अपना हृदय प्रेमी के हवाले कर देना उनकी आदत है और परीक्षा के घड़ी में वह उस प्रियतम के लिए अपनी जान दे देते हैं

अब हम निशानों को इसी संख्या पर समाप्त कर के दुआ करते हैं कि खुदा तआला बहुत सी रूहें ऐसी पैदा करे कि इन निशानों से लाभान्वित हों और सच्चाई के मार्ग को अपनाएं और ईर्ष्या और द्वेष को छोड़ दें। हे मेरे सामर्थ्यवान

खुदा! मेरी विनम्र दुआएं सुन ले और इस क्रौम के कान और दिल खोल दे और हमें वह शक्ति दिखा कि झूठे उपास्यों की उपासना दुनिया से समाप्त हो जाए और ज़मीन पर तेरी उपासना निष्ठा पूर्वक की जाए और ज़मीन तेरे सच्चे और एकेश्वरवादी भक्तों से ऐसी भर जाए जैसा कि समुद्र पानी से भरा हुआ है और तेरे रसूल करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की महानता और सच्चाई दिलों में बैठ जाए। आमीन

हे मेरे सामर्थ्यवान खुदा मुझे दुनिया में यह परिवर्तन दिखा और मेरी दुआएं स्वीकार कर कि प्रत्येक सामर्थ्य और शक्ति तुझ को है। हे सामर्थ्यवान खुदा ऐसा ही कर। आमीन सुम्मा अमीन

समाप्त

इस पुस्तक को समाप्त करने के बाद एक और निशान मुबाहला (शास्त्रार्थ) के रूप में और दूसरा निशान भविष्यवाणी के रूप में प्रदर्शित हुआ जिन से 208 नंबर निशानों का पूरा होता है। अतः इन निशानों के लिए 2 पृष्ठ और बढ़ाने पड़े।

وهذا من فضل ربّي انّ ربّي ذو الفضل العظيم وله الحمد في الاولى والاخرة
وهو المولى الكريم

मुबाहले (शास्त्रार्थ) के द्वारा निर्णय का एक और ताज़ा निशान

निशान : 207- निम्न में वह मुबाहला दर्ज किया जाता है जो हमारी जमाअत के एक सदस्य मुंशी महताब अली साहब ने फैजुल्लाह खान बिन ज़फ़रुद्दीन अहमद पूर्व अध्यापक ओरिएण्टल कालिज लाहौर के साथ 12 जून 1906 ई० को किया था। और जिसका परिणाम यह हुआ कि फैजुल्लाह खान अपनी इच्छा के अनुसार प्लेग की बीमारी में ग्रसित हो कर 13 अप्रैल 1907 ई० मुताबिक संवत प्रथम वैसाख 1963..... में न केवल स्वयं ही मरा अपितु अपने कुछ रिश्तेदारों को भी ले डूबा।

इस स्थान पर इस बात का वर्णन भी लाभ से रिक्त नहीं होगा कि इस व्यक्ति फैजुल्लाह खान का पिता क्राज़ी ज़फ़रुद्दीन भी हमारे सिलसिले का कठोर विरोधी था और जब उसने इस सिलसिले के विरुद्ध एक अरबी कविता लिखनी आरंभ की★ तो अभी उसे पूरा न कर पाया था और प्रारूप उसके घर में था छापने तक नौबत न पहुंची थी कि वह मर गया। अब इस मुबाहले की तहरीर की लिखावट दोनों पक्षों की नक़ल की जाती है। दोनों पक्षों की हस्ताक्षर सहित तहरीरें हमारे पास मौजूद हैं।

फ़ैजुल्लाह खान के तहरीरी हस्ताक्षर सहित

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

अलहमदोलिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुरो मा इस्महू शईऊं फ़िल अर्जे वला फ़िस्समाए व

★ एक क़सीदः मैंने अरबी में लिखा था जिस का नाम "एजाजे अहमदी" रखा था और इल्हामी तौर पर बताया गया था कि इसका कोई मुकाबला नहीं कर सकेगा और यदि सामर्थ्य भी रखता होगा तो खुदा कोई रोक डाल देगा। अतः क्राज़ी ज़फ़रुद्दीन जो अपने स्वभाव में इंकार और घृणा का तत्व और स्वार्थपरता रखता था उसने इस क़सीदे का उत्तर लिखना आरंभ किया ताकि खुदा के आदेश को झुठलाए। अतः अभी वह लिख ही रहा था कि मौत के फ़रिश्ते ने उसका काम तमाम कर दिया। इसी से

हुवा समीउन् अलीम

खुदा की प्रशंसा और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद के पश्चात मैं क्राजी फ़ैजुल्लाह खान बिन क्राजी ज़फ़रुद्दीन अहमद मरहूम एक मुसलमान हनफ़ी सुन्नते नबविय्या का पूर्ण आज्ञाकारी इस बात का समर्थक हूँ कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु के बाद जो कि ख़ातमुन्नबि-य्यीन हो चुके हैं, वह्यी का उतरना धर्म और कुरआन और हदीस के विरुद्ध है। और मिर्ज़ा साहब के इस दावे को रद्द करता हूँ कि वह मसीह के समरूप हैं और मुंशी महताब अली साहब ख़ल्फ़ुरशीद मुंशी करीम बख़्श साहब निवासी शहर जालंधर जो कि मिर्ज़ा साहब के अनुसरण में हैं, दावा करते हैं कि जो व्यक्ति उनके इस दावे को रद्द करे उस पर खुदा का अज़ाब प्रकट होगा। अतः मैं यह दुआ करता हूँ कि हम दोनों पक्षों में से जो व्यक्ति झूठा है उस पर खुदा का अज़ाब आए जैसे कि मौत या प्लेग की बीमारी या मुक़द्दमे में गिरफ़्तारी। और मैं सुन्नते नबविय्या के अनुसार एक वर्ष की अवधि ठहराता हूँ और यह शर्त करता हूँ कि यह अज़ाब मेरे या मुंशी महताब अली के बिना किसी और निकटवर्ती व्यक्ति पर हो, तो यह शर्त में सम्मिलित न होगा। व अख़िरुद्दावाना अनिल हम्दोलिल्लाहे रब्बिलआलमीन व सल्लल्लाहो तआला अल्ला ख़ैरे खुलकेहि मुहम्मदिन व आलेहि व असहाबेहि अजमईन बेरहम-तेका या अर्हमुरहिमीन।

क्राजी फ़ैजुल्लाह खान निवासी जंडियाला बाग़वाला ज़िला गुजरांवाला दिनांक 12

जून 1906 ई०

मुंशी महताब अली की तहरीर, हस्ताक्षर सहित

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

मैं हज़रत अक़दस मिर्ज़ा गुलाम अहमद को सच्चा समझता हूँ और उनका प्रत्येक दावा जो धर्म के बारे में है बिना किसी संदेह और शक के सही मानता हूँ परन्तु

मेरे मुक़ाबले पर क़ाज़ी फ़ैज़ुल्लाह बिन क़ाज़ी ज़फ़रुद्दीन अहमद मरहूम विश्वास के साथ कहता है कि मिर्ज़ा साहब झूठा और उनका दावा स्वयं निर्मित है। इसलिए मैं क़ाज़ी साहब के मुक़ाबले में मुबाहला (शास्त्रार्थ) करता हूँ और पूरा-पूरा और पूर्ण विश्वास मुझे है कि जो दोनों में से झूठा होगा अल्लाह तआला उस पर दर्दनाक अज़ाब भेजेगा। ज़मीन आसमान टल जाएंगे लेकिन यह अज़ाब नहीं टलेगा और वह अपनी चमक दिखा कर रहेगा। क्योंकि अल्लाह तआला का सदैव से यह कानून जारी है और झूठ और सच में अंतर करने का अंतिम और सर्वोच्च तरीका है। अतः खुदा से मेरी दुआ है कि वह शीघ्र परिणाम उत्पन्न करे। हे खुदा! हे खुदा! तेरे लिए कोई बात अनहोनी नहीं। यदि तू चाहे तो एक पल में अज़ाब भेज सकता है लेकिन मैं सुन्नते नबविय्या के अनुसार एक वर्ष की अवधि निर्धारित करता हूँ और वह अज़ाब केवल मुझ विनीत पर और या क़ाज़ी साहब पर आना चाहिए जैसे कि मौत या प्लेग या किसी मुक़द्दमे में गिरफ़्तार हो जाना यही शर्त है और किसी निकटवर्ती और अपने किसी संबंधी पर कोई अज़ाब आना या उसका मर जाना शर्त में सम्मिलित न होगा और वह अज़ाब केवल हम दोनों से विशिष्ट समझा जाएगा। (सूरह जिन्न 27-28)

विनीत महताब अली निवासी जालंधर दिनांक 12 जून 1906 ई०

इन आमने-सामने की तहरीरों के बाद जैसा कि हम लिख चुके हैं परिणाम यह हुआ कि क़ाज़ी फ़ैज़ुल्लाह खान प्लेग की बीमारी से जैसा कि झूठे के लिए बद्दुआ की गई थी और इसी प्रकार वर्ष के भीतर जैसा कि शर्त थी जम्मू में हलाक हो गया और पवित्र कुरआन की आयत के अनुसार

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ (आले इमरान : 146)

महताब अली को खुदा ने प्लेग से बचा लिया क्योंकि वह अपने दावे में सच्चा था। और फ़ैज़ुल्लाह खान प्लेग का शिकार हो गया क्योंकि वह अपने दावे में झूठा था।★

★ स्मरण रखने योग्य बिंदु :- अल्लाह तआला पवित्र कुरआन में फ़रमाता है :-

فَلَا يُظْهِرُ عَلَى غَيْبَةٍ أَحَدًا إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ مِنْ رَسُولٍ (सूरह जिन्न 27-28)

इस आयत से निश्चित रूप से यह समझा जाता है कि खुली-खुली भविष्यवाणियाँ जो संख्या

खुदा की ओर से जो भविष्यवाणी किसी अत्याचारी के लिए होती है अंततः वह पूरी हो जाती है।

निशान 208 :- इस पंजाब देश में जब दयानन्द संस्थापक आर्य धर्म ने अपने विचार फैलाए और अधम स्वभाव हिन्दुओं को हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपमान और ऐसे ही दूसरे नबियों के अपमान पर चलाक कर दिया और स्वयं भी कलम पकड़ते ही अपनी शैतानी पुस्तकों में हर स्थान पर खुदा के पवित्र और खुदा के चयनित नबियों की अपमान और निंदा आरंभ की। और विशेष रूप से अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में बहुत कुछ झूठ के गंद को प्रयोग किया और प्रतिष्ठित पैगंबर को गालियाँ दीं तब मुझे उसके बारे में इल्हाम हुआ कि खुदा तआला ऐसे कपटी को शीघ्र ही इस संसार से उठा लेगा। और यह भी इल्हाम हुआ "सयहजमुल जमअ व यौलूना अद्दुबर" अर्थात् आर्य धर्म का परिणाम यह होगा कि

शेष हाशिया- मैं अधिक और स्पष्टता में प्रथम श्रेणी की हों, केवल खुदा के चयनित लोगों को होती हैं दूसरे व्यक्ति इन में सम्मिलित नहीं होते। और जो इस श्रेणी तक इल्हाम नहीं वह दूसरों को भी हो सकते हैं और उनमें से अधिकतर व्यर्थ और संदेहपूर्ण इल्हाम होते हैं। अतः इसी मुकाबले से (खुदा के) चयनित लोग पहचाने जाते हैं। याद रहे कि इस आयत के अनुसार इस बात की संभावना पाई जाती है कि वे इल्हामी भविष्यवाणियाँ जो इस आयत के उद्देश्य के अनुसार स्पष्ट न हों और इसी प्रकार अपनी संख्या में मनुष्यों की समान्य अवस्था से बढ़ कर न हों और संदेहों का भाग उन पर अधिक हो ऐसी इल्हामी भविष्यवाणियाँ और ऐसे इल्हाम उन लोगों को भी हो सकते हैं जो खुदा के चयनित नहीं हैं और समान्य मनुष्यों में से हैं। अतः चयनित लोगों को पहचानने के लिए पवित्र कुरआन में भी यही गुणवत्ता है कि उनकी इल्हामी भविष्यवाणियों में संदेहों का भाग कम हो और अपनी अधिकता पर नहीं है। जैसे उदाहरण स्वरूप हम वर्णन करते हैं कि बराहीन -ए-अहमदिया की यह भविष्यवाणी कि "यातीका मिन कुल्ले फ़ज्जिन अमीक्र, व यातूना मिन कुल्ले फ़ज्जिन अमीक्र" जिस पर छब्बीस वर्ष गुज़र चुके हैं ऐसे स्पष्ट रूप से पूरी हुई है कि न एक बार अपितु लाखों बार उसने अपनी सच्चाई सिद्ध कर दी है जिस में समर्थन और सहायता भरी हई है। अतः ऐसी भविष्यवाणी केवल खुदा के किसी विशेष चयनित के, दूसरों से कदापि प्रकटन में नहीं आ सकती। यदि आ सकती है तो कोई इस का उदाहरण प्रस्तुत करे। इसी से

खुदा उनको पराजित करेगा और अंततः वे आर्य धर्म से भागेंगे और पीठ फेर लेंगे और अंततः समाप्त हो जाएंगे। यह इल्हाम बहुत समय पहले का है जिस पर लगभग तीस वर्ष की अवधि गुज़री है जिस से इस स्थान के एक आर्य अर्थात् लाला शराम्पत को सूचना दी गई थी और उसको स्पष्ट रूप से कहा गया था कि उनका बदजुबान पंडित दयानन्द शीघ्र ही मर जाएगा। अतः अभी एक वर्ष नहीं गुज़रा था कि खुदा तआला ने इस बदजुबान पंडित से धर्म को मुक्ति दी और वह अजमेर में मर गया और शराम्पत के लिए यह एक बड़ा निशान था लेकिन उसने न केवल इसी निशान के लाभ से अपने आप को वंचित रखा अपितु और भी कई बड़े-बड़े निशान देखे परन्तु फिर भी अभाग्य से इस्लाम स्वीकार न किया मैंने एक अलग पुस्तक में जिस का नाम है **"क्रादियान के आर्य और हम"** इन समस्त निशानों को लिखा है जिनका गवाह न केवल शराम्पत है अपितु क्रादियान के और हिन्दू भी चश्मदीद गवाह हैं। खेद कि इन लोगों ने उन निशानों से कुछ लाभ प्राप्त न किया। अपितु शेखी और चालाकी दिखाई और शरारत में बहुत बढ़ गए यहाँ तक कि सोमराज और अछरमल और भगताराम ने क्रादियान में एक अखबार निकाला और उसका नाम 'शुभ चिन्तक' रखा और उसमें गालियाँ देना और अपशब्द बोलना अपना कर्तव्य समझा। परन्तु खुदा ने एक लम्बे समय से कई बार मुझे खबर दे रखी थी कि आर्य समाज की आयु अब अंत पर है। अतः मैंने अपनी पुस्तक "तज्किरतुशहादतैन" के पृष्ठ 66 में जो 16 अक्टूबर 1903 ई० में प्रकाशित हुई थी खुदा से इल्हाम पा कर निम्नलिखित भविष्यवाणी जो पृष्ठ 66 की पंक्ति 7,8 में है, प्रकाशित की थी और वह यह है **"वह धर्म (अर्थात् आर्यधर्म) मुर्दा है इससे मत डरो। अभी तुम में से लाखों और करोड़ों लोग जीवित होंगे कि इस आर्य धर्म का विनाश होते देख लेंगे।"**

इसी प्रकार मैंने अपनी पुस्तक नसीम-ए-दावत के पृष्ठ 4,5 में जो आर्यों के मुक्राबले पर 28 फ़रवरी 1903 ई० को लिखी गई, निम्नलिखित भविष्यवाणी आर्यों के लिए की थी और वह यह है :

"हर एक उत्तेजना केवल क्रौम और समाज के लिए दिखाते हैं। खुदा की

महानता उन लोगों के दिलों में नहीं। क्रादियान के आर्य समझते हैं कि हम प्लेग के पंजे से मुक्ति प्राप्त कर गए हैं परन्तु क्या यह बद्जुबानियाँ और असभ्यताएं बेकार जाएंगी? सुनो हे अज्ञानियो! हमारा और उन सत्यनिष्ठों का अनुभव, जो हम से पहले गुजर चुके हैं, गवाही देता है कि ख़ुदा के पवित्र रसूलों के अपमान का परिणाम अच्छा नहीं होता। हर एक पवित्र स्वभाव जानता है कि ख़ुदा के पास हर एक बुराई और डींगें मारने का दण्ड उपलब्ध है।

और फिर मैंने अपनी पुस्तक "क्रादियान के आर्य और हम" में जो 20 फ़रवरी 1907 ई० को प्रकाशित हुई है इसके पृष्ठ 21,22 में यह भविष्यवाणी प्रकाशित की थी " ये लोग उन नबियों को झुठलाने में जिनकी सच्चाई सूर्य के समान चमकती है सीमा से बढ़ गए हैं। ख़ुदा जो अपने बन्दों के लिए स्वाभिमानी है इस का अवश्य फैसला करेगा। वह अवश्य अपने प्यारे नबियों के लिए कोई हाथ दिखाएगा।" फिर मैंने इसी पुस्तक क्रादियान के आर्य और हम की नज़्म में अर्थात् पृष्ठ 54 में यह भविष्यवाणी की है :

शर्मो हया नहीं है आखों में उनकी हरगिज़
वे बढ़ चुके हैं हद से अब इन्तिहा यही है

हमने है जिसको माना क्रादिर है वह तवाना
उसने है कुछ दिखाना उस से रज़ा यही है

इस भविष्यवाणी का भावार्थ यही है कि ख़ुदा इन लोगों को कोई हाथ दिखाएगा। फिर इसी पुस्तक के टाइटल पेज के पृष्ठ 2 में यह शेर हैं :

मेरे मालिक तू इनको ख़ुद समझा
आसमां से फिर इक निशां दिखला

इस दुआ का भावार्थ यही है कि निशान के रूप में कोई और विपत्ति आयी पर आए।

यह भविष्यवाणियाँ हैं जो आर्य समाज के लिए की गई थीं। अतः एक

बुद्धिमान समझ सकता है कि वे कैसे स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हो चुकी हैं। और आर्य समाज का अमांगलिक तारा प्रदर्शित हो गया। अतः उनके अनुसार क्रादियान के आर्य समाज के उत्तेजित मेंबर अखबार शुभ चिन्तक को चलाते थे प्लेग के एक ही तमाचे से सब के सब हलाक हो गए जैसा कि पुस्तक "नसीम-ए-दावत" में उनका प्लेग से विनाश होना पांच वर्ष पहले बताया गया था और दूसरे स्थानों के आर्य पंजाब के आर्यों में से जो गिरोह के सरदार कहलाते थे जिनके वैभव और प्रताप के कारण आर्य लोग हैरान हो गए थे अधिकतर उनके अपने बागी विचारों से दण्डित हो गए और कुछ इस सरकार के राज्य से बाहर निकले गए। खेद कि इन लोगों ने अंग्रेजी शासन के हज़ारों उपकार देख कर फिर नामक हरामी की और बगावत के शब्दों से अत्यंत दुष्टता दिखाई। परन्तु अवश्य था कि वे भविष्यवाणियाँ पूरी होतीं जो आज से पांच वर्ष पूर्व उन लोगों के पतन और विनाश के बारे में बताई गई थीं। अब निस्संदेह समझो कि आर्य समाजियों का अंत है। और जैसा कि खुदा ने दावा किया था वह पूरा हुआ। क्या मनुष्य का सामर्थ्य है कि समय से पहले ऐसी भविष्यवाणियाँ कर सके? अतः उस खुदा का हज़ार-हज़ार धन्यवाद है और समस्त प्रशंसाएं और वैभव उसी के लिए प्रमाणित है जो इस्लाम के समर्थन में ऐसे बड़े-बड़े निशान प्रदर्शित करता है। वस्सलाम अला मन्तबा अलहुदा।

मैं इतना अधिक लिख चुका था कि आज 12 मई 1907 ई० दिन रविवार को एक व्यक्ति मुझको कश्फ़ी रूप में दिखाया गया परन्तु मैं उसका चेहरा भूल गया केवल यह याद रहा कि वह एक घोर शत्रु है कि अपने भाषणों और लेखों में गालियाँ देता है और अत्यंत गाली गलौज करता है। इसके बाद इल्हाम हुआ "बुराई का बदला बुराई है उसको प्लेग हो गई" अर्थात् हो जाएगी। अतः मैं विश्वास करता हूँ कि शीघ्र या कुछ देर से तुम सुनोगे कि कोई ऐसा सख्त दुश्मन प्लेग का शिकार हो जाएगा। यदि ऐसा कोई दुश्मन जिस पर तुम्हारे दिल बोल उठें कि यह इल्हाम का पात्र हो सकता है प्लेग में ग्रसित न हुआ तो तुम्हारा अधिकार है कि तुम झुठलाओ। इसके बाद मुझे दिखाया गया कि देश में बहुत लापरवाही और पाप और शेखी फैल

गई है और लोग झुठलाने से रुकने वाले नहीं जब तक खुदा अपना शक्तिशाली हाथ न दिखा दे। इसके बाद इल्हाम हुआ "उसका परिणाम सख्त प्लेग है जो देश में फैलेगी। कई निशान प्रदर्शित होंगे। कई घोर शत्रुओं के घर वीरान हो जाएंगे। वे संसार को छोड़ जाएंगे। उन शहरों को देख कर रोना आएगा वे क्रयामत के दिन होंगे ज़बरदस्त निशानों के साथ उन्नति होगी। एक भयावह निशान अर्थात् उन में से एक भयावह निशान होगा। संभवतः वही भूकंप हो जिसका वादा है या आकाश से कोई और निशान प्रदर्शित हो या प्लेग क्रयामत का नमूना दिखाए। फिर खुदा तआला मुझे संबोधित कर के फ़रमाता है कि मेरी रहमत तुझ को लग जाएगी अल्लाह रहम करेगा। اَعْيُنًا अर्थात् हम इतने अधिक निशान दिखाएंगे कि तू देखते-देखते थक जाएगा।

और फिर 13 मई 1907 ई० दिन सोमवार को इल्हाम हुआ

سننچيك-سنعليك-سنكرمك اكرامًا عجبا-

अर्थात् हम जल्द ही तुझे को दुश्मनों की दुष्टता से मुक्ति देंगे और हम उन पर तुझे विजयी कर देंगे। और हम तुझे एक विचित्र रूप से प्रतिष्ठा देंगे। और वास्तव में वे लोग जो खुदा तआला की ओर से आते हैं केवल खुदा के निशानों से पहचाने जाते हैं यदि खुदा अपने हाथों से निर्णय न करे तो केवल बातों से कोई निर्णय नहीं हो सकता।

समाप्त

15 मई 1907 ई०

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

घोषणा इस्लाम के उलमा की सेवा में

अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ (अल-अनआम - 22)

अर्थात उस व्यक्ति से अधिक अत्याचारी और कौन हो सकता है जो ख़ुदा पर झूठ बांधे या ख़ुदा की आयतों और निशानों से इनकारी हो।

प्रत्येक को मालूम है कि मेरे इस दावे पर कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से भेजा गया हूँ और उसके मुकालमा (वार्तालाप) और मुखातबा (संबोधन) का सौभाग्य मुझे प्राप्त है छब्बीस वर्ष के लगभग अवधि गुज़र गई है। और इस अवधि में बावजूद यह कि मेरे सिलसिले को समाप्त करने के लिए प्रत्येक शत्रु ने नाखूनों तक जोर लगाया और मुझे अधिकारियों की ओर भी खींचा परन्तु मैं उनके प्रत्येक हमले के समय सुरक्षित रहा। आश्चर्य है कि बावजूद सैंकड़ों असफलताओं के जो मेरे समूल विनाश के बारे में हुईं उनको अब तक यह बात समझ नहीं आई कि एक गुप्त हाथ मेरे साथ है जो उनके हाथ से मुझे बचाता है। मुझे वे कज्जाब, दज्जाल और झूठा तो कहते हैं परन्तु इस बात का उत्तर नहीं देते कि इस संसार में कौन सा ऐसा कज्जाब गुज़रा है जिसको ख़ुदा शत्रुओं के भयंकर हमलों से छब्बीस वर्ष तक बचाता रहा यहाँ तक कि उसने अपनी विशेष कृपा से सदी के चतुर्थ भाग तक उसको सलामत रखा और उन्नति पर उन्नति प्रदान की और एक व्यक्ति से लाखों मनुष्य उसके अनुकरण में कर दिए और किसी शत्रु का बस न चला और भविष्य में उन्नतियों की ख़बर नहीं और कौन सा दुनिया में ऐसा कज्जाब गुज़रा है जिसके मुक़ाबले पर प्रत्येक मोमिन मुबाहला के समय मौत या किसी और प्रकार की तबाही से अज़ाब का निशाना हो और कौन सा ऐसा कज्जाब गुज़रा है जिसके लिए तथा जिसकी भविष्यवाणी के अनुसार रमज़ान में सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण हुआ और

ज़मीन में एक विश्वव्यापी प्लेग फैल गई। क्या किसी और महदी का निशान मिलता है जिसने सूर्य और चन्द्र ग्रहण से पन्द्रह वर्ष पहले इसके घटित होने की ख़बर दी थी और प्लेग से छब्बीस वर्ष पहले और फिर बारह वर्ष पहले और फिर तीन वर्ष पहले देश में इसके फैलने की तीन बार सूचना दी थी।

अब इस समय इस लेखन से मेरा उद्देश्य यह है कि मैंने अपनी पुस्तक हकीक़तुल वह्यी में पर्याप्त रूप से हर प्रकार का सबूत अपने दावे के बारे में लिख दिया है और बावजूद इसके कि मैं इन दिनों में भिन्न-भिन्न प्रकार के शारीरिक बिमारियों और बिमारियों के निरंतर दौरे और कमज़ोरी और शक्तिहीनता के इस योग्य न था कि इतना अधिक कठोर परिश्रम कर सकूँ फिर भी मैंने मानवता की सहानुभूति के लिए यह समस्त परिश्रम उठाया। इसलिए मैं अपनी प्रिय क्रौम के बड़े उलमा और मशाएख़ और उन सबको जो इस पुस्तक को पढ़ सकते हैं खुदा तआला की क़सम देता हूँ कि यदि उनको यह पुस्तक पहुंचे तो अवश्य आरंभ से अंत तक इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ लें और मैं फिर उनको उस एक खुदा की दोबारा क़सम देता हूँ जिसके हाथ में प्रत्येक के प्राण हैं कि वे अपने समय और कार्यों का हनन भी कर के एक बार ध्यान और सोच-विचार से इस पुस्तक को आरंभ से अंत तक पढ़ लें। और फिर मैं तीसरी बार उस ग़य्यूर (स्वाभिमान) खुदा की उनको क़सम देता हूँ जो उस व्यक्ति को पकड़ता है जो उसकी क़समों की परवाह नहीं करता कि अवश्य ऐसे लोग जिनको यह पुस्तक पहुंचे और वे इसको पढ़ सकते हों चाहे वे मौलवी हैं या माशाएख़, आरंभ से अंत तक एक बार इस पुस्तक को अवश्य पढ़ लें और मैं इंशाअल्लाह कुछ को तो यह पुस्तक स्वयं भेज दूंगा और कुछ के बारे में मैं वादा करता हूँ कि यदि वे क़सम खा कर लिखें कि क़ीमत देने का सामर्थ्य नहीं तो मैं बशर्ते सामर्थ्य न होने के और बशर्ते पुस्तक मौजूद होने के अवश्य उनको इस शर्त से पुस्तक भेज दूंगा कि वे खुदा तआला की क़सम खा कर मेरी ओर लिखें कि वह आरंभ से अंत तक अवश्य पुस्तक को पढ़ेंगे और इसी प्रकार यह कि वे असमर्थ हैं क़ीमत देने

की शक्ति नहीं रखते और मैं दुआ करता हूँ कि जिस व्यक्ति को यह पुस्तक पहुंचे और वह खुदा तआला की क्रसम से लापरवाह रह कर और खुदा की क्रसम को अपमान से देख कर पुस्तक को आरंभ से अंत तक न पढ़े और या कुछ भाग पढ़ कर छोड़ दे और फिर अपशब्दों से न रुके खुदा ऐसे लोगों को दुनिया और आख़रत में तबाह और अपमानित करेगा। अमीन

परन्तु जो व्यक्ति आरंभ से अंत तक पुस्तक को पढ़े और भलि प्रकार से समझे उसका मामला खुदा के साथ है अब मैं इस घोषणा को समाप्त करता हूँ। वस्सलाम अला मनित्तबा अलहुदा

विज्ञापन दाता

मिर्ज़ा गुलाम अहमद मसीह मौऊद

स्थान क़ादियान- 15 मार्च 1907 ई०

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुहू व नुसल्ली

आर्य साहिबों की सेवा में

कोई बुद्धिमान इस से इंकार नहीं कर सकता कि जो ख़ुदा की ओर से शरीअत है उसके आरंभ से दो ही टुकड़े होते आए हैं।

(1) बड़ा और पहला टुकड़ा यह है कि ख़ुदा तआला को उसकी समस्त पूर्ण विशेषताओं के साथ भागीदार रहित मान लिया जाए और उसके अस्तित्व और विशेषताओं में किसी को भागीदार न बनाया जाए और इस बात पर ईमान लाया जाए कि वह समस्त वदान्यता का स्रोत है और स्रोत है समस्त प्रकाश का और रचियता है समस्त अस्तित्वों का और सामर्थ्यवान है प्रत्येक ऐसी बात पर जो उसकी महानता और वैभव और प्रताप के योग्य है और उसकी पूर्ण विशेषताओं के विपरीत नहीं और प्रथम है प्रत्येक उपस्थित से और समस्त सृष्टि उसी की ओर लौटने वाली है और संकलनकर्ता है समस्त पूर्ण विशेषताओं का और पवित्र है इस से कि किसी समय इसकी विशेषताएँ निरस्त हो जाएँ या यह कि किसी समय निरस्त थीं। वह हमेशा से रचियता हमेशा से पालनहार और हमेशा से सामर्थ्यवान है। किसी को ज्ञान नहीं कि पहले उसने क्या किया और भविष्य में क्या करेगा उसकी शक्तियों तक कोई पहुँच नहीं सकता और वह अपने अस्तित्व में अकेला है और अपनी विशेषताओं में और कार्यों में और उसके समान कोई भी किसी विशेष विशेषता से विशिष्ट नहीं। और प्रत्येक बुराई और ग़लती से पवित्र है और दूर होते हुए भी निकट है और निकट होते हुए भी दूर है। वह सर्वश्रेष्ठ और उच्चतर है परन्तु नहीं कह सकते कि उसके नीचे कोई और भी है। वह अत्यंत सूक्ष्म है परन्तु नहीं कह सकते कि वह प्रदर्शित नहीं वह अपने प्रदर्शन में सर्वाधिक है परन्तु नहीं कह सकते कि वह सूक्ष्मतर नहीं वह सूर्य

में चमक रहा है और चांद में इसके प्रकाश हैं परन्तु नहीं कह सकते कि वह सूर्य है अथवा चांद है अपितु यह समस्त वस्तुएं उसकी रचना हैं और काफ़िर है वह व्यक्ति जो उसको खुदा कहे वह अत्यंत सूक्ष्म है फिर भी सब वस्तुओं से अधिक प्रदर्शित है। प्रत्येक रूह को उसी से शक्तियां और विशेषताएं प्राप्त हुई हैं। प्रत्येक तत्व ने उसी से विशेषताएं प्राप्त की हैं और यदि वे विशेषताएं और शक्तियाँ छीन ली जाएँ तो फिर न रूह कोई चीज़ है और न तत्व कुछ वास्तविकता रखता है इसलिए मनुष्य की आध्यात्मिकता का अंतिम बिंदु यही है कि ये समस्त चीज़ें उसके हाथ से निकलीं हुई हैं और उसी ने उनके स्वभाव में अपने प्रेम का नमक छिड़का है। यदि यह न होता तो खुदा से प्रेम असंभव था क्योंकि दोनों पक्षों में कोई संबंध न था। बच्चा मां से इसी कारणवश प्रेम करता है कि उसके गर्भ से निकला है और मां भी इसी कारणवश उस से प्रेम करती है कि उसके दिल का टुकड़ा है। अतः क्योंकि प्रत्येक रूह खुदा के हाथ से निकली है इसलिए उस वास्तविक प्रियतम की चाह में है फिर ग़लती से कोई मूर्ती पूजा करता है, कोई सूर्य को पूजता है कोई चन्द्रमा के समक्ष झुकता है कोई जल का उपासक है कोई मनुष्य को खुदा समझता है। अतः इस ग़लती का कारण भी उस वास्तविक महबूब की तलब है जो मनुष्य के स्वभाव में है जिस प्रकार बच्चा कभी मां की चाह में धोखा खा कर किसी दूसरी स्त्री से चिमट जाता है इसी प्रकार समस्त भौतिकवादी धोखा कर दूसरी चीज़ों की ओर झुक गए हैं खुदा की शरीअत इन ग़लतियों को दूर करने आई है और खुदा की शरीअत ही है जो पूरी शक्ति के साथ इन ग़लतियों को दूर कर सकती है और ग़लतियों को वही शरीअत दूर करेगी जो प्रकाशमयी निशानों के साथ उस वास्तविक प्रियतम का चेहरा दिखा देगी क्योंकि यदि कोई शरीअत ताज़ा निशान दिखाने पर सामर्थ्यवान नहीं तो वह भी एक मूर्ती को प्रस्तुत करती है न कि खुदा को। वह खुदा या परमेश्वर नहीं हो सकता जो अपने प्रकटन के लिए हमारे तर्क का मोहताज है यदि खुदा ऐसा ही निर्जीव और सामर्थ्य के चिन्हों से वंचित है जैसा कि मूर्ती तो ऐसे खुदा को कौन बुद्धिमान स्वीकार कर सकता है अतः सच्ची और पूर्ण शरीअत वही है जो जीवित खुदा को उसकी सामर्थ्य और

निशानों के साथ दिखाती है और वही है जिसके माध्यम से मनुष्य शरीर के दूसरे भाग में भी पूर्ण हो सकता है और शरीर का वह दूसरा टुकड़ा यह है कि मनुष्य उन समस्त गुणों से बचे जिन कि जड़ मानवता पर अत्याचार है जैसे व्यभिचार करना, चोरी करना, झूठी गवाही देना और प्रत्येक प्रकार का विश्वासघात करना और नेकी करने वाले के साथ बुराई करना और मानवता से सहानुभूति का हक पूर्ण न करना। अतः शरीर के इस दूसरे भाग को प्राप्त करना भी प्रथम भाग की प्राप्ति पर आधारित है। और अभी हम लिख चुके हैं कि प्रथम भाग अर्थात् ख़ुदा को पहचानना किसी प्रकार संभव नहीं जब तक ख़ुदा को उसकी ताज़ा कुदरतों और ताज़ा निशानों के साथ पहचाना न जाए अन्यथा बिना इसके ख़ुदा की उपासना भी एक मूर्ती पूजा है। क्योंकि ख़ुदा केवल एक मूर्ती के समान है जो प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता और न कोई सामर्थ्य दिखा सकता है तो उसमें और एक मूर्ती में क्या अंतर है। जीवित ख़ुदा के चिन्ह चाहिए। और यदि वह हमारे प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता और न कोई सामर्थ्य दिखा सकता है तो क्योंकि ज्ञात हो कि वह उपस्थित है। केवल अपनी स्वयं निर्मित बातों से क्योंकि उसका अस्तित्व सिद्ध हो जबकि प्रत्येक मनुष्य अपना जीवन सिद्ध करने में स्वयं जिम्मेदार है तो फिर क्या कारण है कि ख़ुदा अपना जीवन सिद्ध नहीं कर सकता। क्या मनुष्य ख़ुदा से भी अधिक कमज़ोर है या क्या उसकी कुदरत आगे नहीं अपितु पीछे रह गई है। और अब यदि उसमें बोलने की शक्ति नहीं रही तो इस पर क्या तर्क है कि पहले वह शक्ति मौजूद थी और यदि वह इस ज़माने में बोल नहीं सकता तो इस पर क्या तर्क है कि वह इस ज़माने में सुन सकता है और दुआएं स्वीकार कर सकता है और यदि किसी ज़माने में उसने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया है तो अब क्यों प्रदर्शित नहीं कर सकता ताकि नास्तिकों के मुंह में मिट्टी पड़े। अतः हे प्रियो! वह सामर्थ्यवान ख़ुदा जिसकी हम सब को आवश्यकता है वह इस्लाम ने प्रस्तुत किया है इस्लाम ख़ुदा की कुदरतों को ऐसे ही प्रस्तुत करता है जैसा कि वे पहले प्रकटन में आई थीं याद रखो और अच्छी तरह से याद रखो कि बिना इसके कि ख़ुदा की कुदरतें और ख़ुदा के चमकते हुए निशान प्रदर्शित हों कोई

व्यक्ति ख़ुदा पर ईमान नहीं ला सकता यह समस्त झूठी कहानियाँ हैं कि हम परमेश्वर पर ईमान लाए हैं ख़ुदा को पहचानने के लिए उसके निशान हैं और यदि निशान नहीं तो ख़ुदा भी नहीं। इसलिए मैंने उदाहरणस्वरूप केवल सहानुभूति के लिए पुस्तक हकीक़तुल वह्यी को लिखा है और मैं आप लोगों को उस परमेश्वर की क्रसम देता हूँ जिस पर ईमान लाना आप अपनी ज़बान से प्रदर्शित करते हैं कि एक बार आरंभ से अंत तक मेरी पुस्तक को पढ़ो और उन निशानों पर ध्यान दो जो इसमें लिखे गए हैं फिर अपने धर्म में इसकी उदाहरण न देखो तो ख़ुदा से डर कर उस धर्म को छोड़ दो और इस्लाम को स्वीकार करो। वह धर्म किस काम का है और क्या लाभ देगा जो जीवित ख़ुदा तक जीवित निशानों के साथ मार्गदर्शन नहीं कर सकता। फिर मैं आप लोगों को उसी परमेश्वर की दोबारा क्रसम देता हूँ कि अवश्य एक बार मेरी पुस्तक हकीक़तुल वह्यी को आरंभ से अंत तक पढ़ो और सच कहो कि क्या आप लोग अपने धर्म की पाबंदी से उस जीवित ख़ुदा को पहचान सकते हैं। फिर मैं तीसरी बार उसी परमेश्वर की क्रसम देता हूँ कि दुनिया समाप्त होने को है और ख़ुदा का प्रकोप प्रत्येक ओर प्रदर्शित है एक बार आरंभ से अंत तक मेरी पुस्तक हकीक़तुल वह्यी को अवश्य पढ़ लो। ख़ुदा तुम्हे हिदायत दे। मौत का विश्वास नहीं। ख़ुदा वही ख़ुदा है जो जीवित ख़ुदा है। वस्सलाम अला मनित्तबा अलहुदा

प्रकाशक

मिर्ज़ा गुलाम अहमद मसीह मौऊद क़ादियानी

मुद्रित मैगज़ीन प्रेस क़ादियान

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

सच्चाई की ओर निमन्त्रण

قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَنِ وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَبْدِينَ - (अज्जुखरुफ़- 82)

इनको कह दे कि यदि ख़ुदा का कोई बेटा होता तो मैं सर्वप्रथम उसकी उपासना करता।

पादरी साहबों की सेवा में यह विज्ञापन अत्यंत विनम्रता और विनीतता और सभ्यतापूर्वक लिखा जाता है कि यदि यह सच होता कि हज़रत ईसा मसीह अलैहि-स्सलाम वास्तव में ख़ुदा का बेटा होता या ख़ुदा होता तो सर्वप्रथम मैं उसकी उपासना करता और मैं समस्त देश में उसकी ख़ुदाई का प्रकाशन करता और यद्यपि मैं दुःख उठाता और मारा जाता और क़त्ल किया जाता और उसके मार्ग में टुकड़े-टुकड़े किया जाता तब भी मैं इस निमन्त्रण और घोषणा से नहीं रुकता। लेकिन हे प्रियो! ख़ुदा तुम पर दया करे और तुम्हारी आंखे खोले। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ख़ुदा नहीं वह केवल एक नबी हैं एक कण इस से अधिक नहीं और ख़ुदा की क़सम मैं वह सच्ची मुहब्बत उस से रखता हूँ जो तुम्हें कदपि नहीं और जिस नूर के साथ मैं उसे पहचानता हूँ तुम कदापि उसे पहचान नहीं सकते। इस में कुछ संदेह नहीं कि वह ख़ुदा का एक प्यारा और चयनित नबी था जिन पर ख़ुदा की एक विशेष कृपा होती है और जो ख़ुदा के हाथ से पवित्र किए जाते हैं परन्तु ख़ुदा नहीं था न ख़ुदा का बेटा। मैंने यह बातें अपनी ओर से नहीं कीं अपितु वह ख़ुदा जो ज़मीन और असमान का रचियता है मुझ पर प्रदर्शित हुआ और उसी ने इस अंतिम ज़माने के लिए मुझे मसीह मौऊद किया। उसने मुझे बताया कि सत्य यही है कि यसू इब्ने मरियम न ख़ुदा है न ख़ुदा का बेटा है और उसी ने मुझ से संबोधित होते हुए यह बताया कि वह नबी जिसने क़ुरआन प्रस्तुत किया और लोगों को इस्लाम की ओर बुलाया वह सच्चा नबी

है। और वही है जिसके क्रदमों के नीचे निजात है और सिवाए उसके अनुसरण के कदापि कदापि किसी को कोई नूर प्राप्त नहीं होगा और जब मेरे खुदा ने उस नबी की प्रतिष्ठा और महानता और मूल्य मुझ पर प्रदर्शित किया तो मैं काँप उठा और मेरे शरीर पर घबराहट छा गई क्योंकि जैसा कि हजरत ईसा मसीह की प्रशंसा में लोग सीमा से बढ़ गए यहाँ तक कि उनको खुदा बना दिया। इसी प्रकार इस पवित्र नबी का लोगों ने मूल्य न समझा जैसा कि समझने का हक़ था और जैसा कि चाहिए लोगों को अब तक उसकी महानताएं ज्ञात नहीं वही एक नबी है जिसने एकेश्वरवाद का बीज ऐसे रूप में बोया जो आज तक व्यर्थ नहीं हुआ। वही एक नबी है जो ऐसे समय में आया जब समस्त दुनिया बिगड़ गई थी और ऐसे समय में गया जब एक समुद्र के समान एकेश्वरवाद को दुनिया में फैला गया और वही एक नबी है जिसके लिए प्रत्येक ज़माने में खुदा अपना स्वाभिमान दिखाता रहा है और उसके सत्यापन और समर्थन के लिए हजारों चमत्कार प्रदर्शित करता रहा है। इसी प्रकार इस ज़माने में भी इस पवित्र नबी का बहुत अपमान किया गया इसलिए खुदा के स्वाभिमान ने जोश मारा और समस्त गुज़रे हुए ज़मानों से अधिक जोश मारा और मुझे उसने मसीह मौऊद कर के भेजा ताकि मैं उसकी नुबूत के लिए समस्त दुनिया में गवाही दूं यदि मैं बिना तर्क दावा करता हूँ तो झूठा हूँ लेकिन यदि खुदा अपने निशानों के साथ इस रूप से मेरी गवाही देता है कि इस ज़माने में पूर्व से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक उसका उदाहरण नहीं तो न्याय और खुदा के प्रेम की मांग यही है कि मुझे मेरी इस समस्त शिक्षा के साथ स्वीकार करें। खुदा ने मेरे लिए वे निशान दिखाए कि यदि वे उन क्रौमों के समय निशान दिखाए जाते जो जल और अग्नि और वायु से नष्ट की गई तो वे नष्ट न होती परन्तु इस ज़माने के लोगों को मैं किस से समानता दूं वे उस अभागे के सामान हैं जिसकी आँखें भी हैं पर देखता नहीं और कान भी पर सुनता नहीं और बुद्धि भी है परन्तु समझता नहीं। मैं उनके लिए रोता हूँ और वे मुझ पर हँसते हैं और मैं उनको जीवन का पानी देता हूँ और वे मुझ पर आग बरसाते हैं। खुदा मुझ पर न केवल मेरे कथन से प्रदर्शित हुआ है अपितु अपनी क्रिया से भी उसने मुझ पर

प्रकटन किया और मेरे लिए वे कार्य दिखाए और दिखाएगा कि जब तक किसी पर खुदा की विशेष कृपा न हो उसके लिए ये कार्य नहीं दिखाए जाते। लोगों ने मुझे छोड़ दिया लेकिन खुदा ने मुझे स्वीकार किया। कौन है जो इस निशानों के दिखाने में मेरे मुकाबले पर आ सकता है। मैं प्रदर्शित हुआ हूँ ताकि खुदा मेरे माध्यम से प्रदर्शित हो। वह एक गुप्त खजाना के समान था परन्तु अब उसने मुझे भेज कर इरादा किया है कि समस्त नास्तिकों और बेईमानों का मूंह बंद करे जो कहते हैं खुदा नहीं परन्तु हे प्रियो! तुम जो खुदा की चाह में लगे हुए हो मैं तुम्हें खुशखबरी देता हूँ कि सच्चा खुदा वही है जिसने कुरआन भेजा। वही है जिसने मुझ पर प्रकटन किया और जो हर पल मेरे साथ है।

हे पादरी साहिबो!

मैं आप लोगों को उस खुदा की क्रसम देता हूँ जिसने मसीह को भेजा और उस प्रेम को याद दिलाता हूँ और क्रसम देता हूँ जो लोग अपने विचार में हज़रत यसू मसीह इब्ने मरियम से रखते हैं कि एक बार अवश्य मेरी पुस्तक **हक्रीक्रतुल वह्यी** को आरंभ से अंत तक शब्दशः पढ़ लें और यदि कोई साहब ज्ञान रखने वाले नेक नियत से मेरी पुस्तक हक्रीक्रतुल वह्यी इस शर्त के साथ मांगेंगे और क्रसम खाएंगे कि हम इस पुस्तक को आरंभ से अंत तक ध्यानपूर्वक देखेंगे तो मैं वह पुस्तक मुफ्त उनको भेज दूंगा और यदि इस से सांत्वना नहीं होगी तो मैं आशा रखता हूँ कि खुदा और कोई निशान दिखाएगा क्योंकि उसका वादा है कि मैं इस ज़माने पर अपनी हुज्जत (समझाने का अंतिम प्रयास) पूर्ण करूंगा। अब मैं समाप्त करता हूँ और दुआ करता हूँ कि खुदा सत्याभिलाशी के साथ हो। आमीन

विनीत

मिर्ज़ा गुलाम अहमद मसीह मौऊद, क़ादियान ज़िला गुरदासपुर

20 मार्च 1907 ई०

मुद्रित मैगज़ीन प्रेस क़ादियान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
نَحْمَدُ اللَّهَ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ

رَبَّنَا إِنَّا جِئْنَاكَ مَظْلُومِينَ فَافْرِقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ - آمين

अल्लाह के नाम के साथ जो असीम कृपा करने वाला, बिना मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। हम महान और सर्वश्रेष्ठ अल्लाह की प्रशंसा करते और उसके रसूल पर दरूद भेजते हैं।

हे हमारे रब ! हम तेरे समक्ष पीड़ित बन कर आए हैं। अतः तू हमारे और अत्याचारी क्रौम के मध्य अन्तर कर। आमीन

-----* आमीन *-----

तत्पश्चात् अल्लाह तुम पर दया करे। जान लो कि मैंने इस पुस्तक को दो भागों और दो अध्यायों में विभाजित किया है और इसका उद्देश्य शत्रुओं पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण करना है और मैंने इसे आंसुओं के पानी और हृदय के जोश से लिखा है तथा सृष्टि के पालनहार पर भरोसा करते हुए इसे एक उपसंहार पर समाप्त किया है।^①

इस्तिफ़ता का प्रथम अध्याय

हे इस्लाम के उलेमा और सृष्टि में से सर्वश्रेष्ठ अस्तित्व (मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के धर्म के धर्मशास्त्रियो ! मुझे एक ऐसे व्यक्ति के बारे में फ़त्वा दो जिसने यह दावा किया है कि वह कृपालु ख़ुदा की ओर से है और वह अल्लाह की किताब और उसके दयालु और उपकारी रसूल पर ईमान

① हमने इस पुस्तक को अपनी किताब हकीक़तुल वही के साथ सम्मिलित किया है और इसे उस पुस्तक का परिशिष्ट बनाया है और हमने इसकी कुछ प्रतियां अलग भी प्रकाशित की हैं।

लाता है। और अल्लाह ने उसके लिए अदभुत कार्य दिखाए तथा खोलकर स्पष्ट कर देने वाले निशान और सहायता के चमत्कार प्रकट किए।

और वह ऐसे युग में प्रकट हुआ जो धार्मिक दृष्टि से एक निर्वस्त्र के समान है तथा इस्लाम के सीने पर एक बरछी के समान (अन्दर घुसा हुआ) है और समय के उलेमा एक ऐसे व्यक्ति के समान हैं जिसकी दोनों टांगें उसका साथ नहीं दे रहीं और जिसमें पादरी लोग एक ऐसे बहादुर योद्धा के समान बाहर निकल आए हैं जिसके पास दो तीर हैं। एक तीर वह जिसे वे अपनी धोखेबाज़ियों और भांति-भांति के आरोपों के साथ इस्लाम को घायल करने के लिए धार देते हैं और दूसरा तीर वह है जिसे वे लोगों को ईसाइयत में सम्मिलित करने के लिए चलाते हैं। तुम इन (पादरियों) को एक तहस-नहस करने वाले और तबाही फैलाने वाले भेड़िए के समान या सामान लूटने वाले चोर के समान पाओगे। उनके पास केवल रिवायतें हैं तथा वह कुछ है जिसे बुद्धि स्वीकार नहीं करती। उनके धर्म का स्तम्भ केवल कफ़्रारे की लकड़ी है और इससे तामसिक वृत्ति के लिए प्रत्येक द्वार खोल दिया गया है। फिर क्या इस से बढ़कर कोई भयानक अश्लील और शुभ स्वभावों के लिए अत्यधिक अस्वीकारणीय आस्था हो सकती है?

इसके अतिरिक्त वे (पादरी) अल्लाह के धर्म तथा जनता में सर्वश्रेष्ठ (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को गालियां देते हैं और यह इस्लाम पर नितान्त कठिन संकट है और ऐसा धर्म जो मात्र एक लकड़ी पर स्थापित हो उसकी छान-बीन की कोई आवश्यकता नहीं और न बुद्धि उसकी पुष्टि की ओर मार्ग-दर्शन करती है अपितु पवित्र स्वभाव इससे घृणा करता और ऐसी बातों से भागता है और तीन ख़ुदाओं की आस्था रखने वाले धर्म को तीन तलाक़ें देता है। रहा (हज़रत) ईसा^{अ.} के (आसमान पर) चढ़ने और उरतने का विषय तो इसे बुद्धि और अल्लाह की किताब कुर्आन झुठलाती है और वह मात्र एक लोरी के समान है जिससे बच्चों को सुलाया जाता है या गुड़ियाँ हैं जिन से लड़कियाँ और लड़के खेलते हैं। जिस पर न तो कोई तर्क स्थापित हुआ है और न किसी प्रमाण ने उसकी गवाही दी। अतः सारांश यह कि यह दावेदार उस युग में प्रकट हुआ जिसमें फ़ित्नो

और बिदअतों की अधिकता थी और इस्लाम पर कमज़ोरी की हालत थी।

तथा इस दावे से पूर्व उसकी परिस्थितियों में झूठ गढ़ने की किसी आदत का अंश मात्र भी नहीं पाया गया न बुढ़ापे के युग में और न जवानी की अवस्था में। और उसके काम में भी कोई ऐसी बात नहीं पाई गई जो नबियों में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत के विरुद्ध हो अपितु वह उन समस्त आदेशों और भविष्यवाणियों पर ईमान रखता है जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लेकर आए थे और हर उस बात पर ईमान रखता है जो समस्त संयमियों के सरदार हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सिद्ध है। और वह ईमान रखता है कि आप कामेच्छाओं के उपचारक हैं। आप^स ने समस्त पापों के घावों का उपचार और इलाज किया और आप^स इसलिए आए ताकि आप समस्त विश्व का सुधार करें और अन्तिम उम्मत का संबंध पूर्वकालीन उम्मतों से जोड़ें और यदि तू उसके कर्मों के नमूने का खोज करने वाला है तो उसमें अवश्य मुस्तफ़ा^स का नमूना पाएगा। हिदायत के समस्त मार्गों में वह आपका अनुसरण करता है। शत्रुओं ने पूर्ण प्रयत्न किया और मुसीबत की तरह उस पर टूट पड़े और उसके मामले की पूरी छान-बीन की ताकि उसके किसी ऐसे कथन पर सूचना पाएं जिसमें उम्मत मुस्लिमा का विरोध हो तथा द्वेष और शत्रुता के कारण वे उसके जीवन चरित्र के अध्ययन में जुट गए, परन्तु अपनी अत्यधिक शत्रुता के बावजूद वे प्रतिप्रश्न और आलोचना एवं तिरस्कार के लिए कोई मार्ग न पा सके और न ही उन्होंने कोई ऐसी कार्य-पद्धति पाई जिसे खुदगर्जी और इच्छाओं पर चरितार्थ किया जा सके। और वह (दावेदार) अपने प्रारंभिक युग में अज्ञातावस्था में छुपा हुआ था। न वह पहचाना जाता था और न उसकी चर्चा ही की जाती थी और न उससे कोई उम्मीद की जाती थी और न ही उस से भय होता था तथा उस पर दोषारोपण किया जाता तथा उसका आदर न किया जाता तथा उसे उन वस्तुओं में नहीं गिना जाता था जिन की चर्चा सामान्य और विशेष लोगों में होती है। अपितु उसके बारे में यह विचार किया जाता था कि उसकी कोई हैसियत नहीं और बुद्धिमानों की सभाओं में उसकी चर्चा से बचा जाता था। उस युग में उसके रब्ब ने उसे खुशखबरी दी कि

वह उसके साथ है और यह कि उसने उसे चुन लिया है और उसे (अपने) प्रियजनों में सम्मिलित किया है और यह कि वह उसकी चर्चा को अवश्य बुलन्द करेगा और उसकी शान बहुत बढ़ाएगा और उसे महान प्रभुत्व प्रदान करेगा। अतः लोगों में उसे प्रसिद्धि दी जाएगी तथा पृथ्वी के पूरब और पश्चिम में वह सुन्दर चर्चा एवं प्रशंसा के साथ याद किया जाएगा। आसमान के रबब के आदेश से उसकी बड़ाई समस्त विश्व में फैला दी जाएगी और प्रतापी ख़ुदा की ओर से उसकी सहायता की जाएगी तथा ठाठें मारते हुए समुद्र की भांति समूह के समूह उसके पास प्रचुरता के साथ गहरे मार्ग से आएंगे। निकट है कि उनकी इस प्रचुरता से वह उकता जाए और उन्हें देखने से उसका सीना तंग हो और (निकट है) कि उसे वह वस्तु भयभीत करे जो एक दरिद्र बाल बच्चों वाले व्यक्ति को सन्तान की अधिकता तथा दायित्वों की अदायगी और आर्थिक कमी के समय डराती है।

और लोग अपने देश वासियों को छोड़ देंगे और उसकी बस्ती को उस आकर्षण के कारण जो अल्लाह ने उनके हृदयों में उसके लिए रख दी है अपना देश बनाएंगे और वे उससे मिलने के लिए अपने मित्रों की मुलाक़ात को त्याग देंगे तथा उसकी संगत के लिए कलेजे जल रहे होंगे और उसके दर्शन से हृदयों में आर्द्रता (रिक्कत) उत्पन्न होगी और अल्लाह के बन्दे पूर्ण सच्चाई और शुद्धता और वफ़ादारी के साथ उसके पीछे तीव्रता से दौड़ेंगे, उसके लिए भांति भांति के संकटों को प्राथमिकता देंगे। उनमें से कुछ लोग ऐसे होंगे जिन्हें अस्हाबुस्सुफ़ः कहा जाएगा जो उसके कुछ कमरों में फ़क़ीरों के समान जीवन व्यतीत करेंगे। उनकी इच्छाएं पिघल जाएंगी और उनके हृदय पानी के समान बहने लगेंगे। उनके सत्य को पहचानने तथा आकाशीय प्रकाशों को देखने के कारण तू उनकी आंखें आंसुओं से बहती हुई देखेगा। वे कहेंगे - हे हमारे रबब ! निश्चय ही हमने एक मुनादी करने वाले को सुना जो ईमान की मुनादी कर रहा था। और वह वलियों की तरह अत्यधिक बेसुधी और मादकता में रोएंगे तथा इसलिए कि अल्लाह तआला ने उन्हें उनके अभीष्ट से मिला दिया। वे कृतज्ञ होंगे और उनकी रूहें ख़ुदा की चौखट पर सज्दह कर रही होंगी। इस प्रकार उस ख़ुदा के बन्दे के लिए हर ओर

से उपहार, तोहफ़े, धन और नाना प्रकार की वस्तुएं आएंगी और उसका रूब उससे महान बरकत और विजय प्राप्त करने वाली रूह और बहुत बड़ी आकर्षण शक्ति प्रदान करेगा जैसा कि प्रारंभ ही से उसके लिए निर्धारित था। लोग उसके द्वार की ओर दौड़े चले आएंगे और बादशाह उसके कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे तथा बादशाहों और अमीरों के समूह उसके दरबार में बार-बार उपस्थित होंगे और प्रत्येक क्रौम में से लोग उससे शत्रुता करने के लिए उठ खड़े होंगे तथा हर ओर से उसे जड़ से उखाड़ने का प्रयत्न करेंगे और उसके प्रकाश को बुझाने के लिए वे हर प्रकार की योजनाएं बनाएंगे ताकि उसके प्रकाश को बुझा दें ताकि उसके प्रभुत्व पर पर्दा डालें और उसकी प्रतिष्ठा घटाएं तथा उसके तर्क को खोटा ठहराएं या उसका वध कर दें या सूली पर लटका दें या उसे देश से निष्कासित कर दें या धूल से अटा हुआ भिक्षु बना दें। या वे चुगलखोरी करते हुए उसे शासकों के पास घसीट कर ले जाएं। चुगली और बात को कुछ आरोपों और झूठ गढ़ने के साथ सुसज्जित करके प्रस्तुत करते हुए या उसे कष्ट दें, ऐसा कष्ट जो कष्टों के समस्त प्रकारों में से अधिक कष्टदायक हो परन्तु इसके बावजूद अल्लाह अपनी आकाशीय कृपा के द्वारा उसे उनके गन्दे षडयन्त्रों को उन्हीं पर उलटा देगा और उन्हें अपमानित करेगा, जिस पर वे असफल और निराश लौटेंगे ऐसे तौर पर कि मानो वे जीवितों में नहीं तथा जिन ने'मतों और इनामों का उस से वादा किया है अल्लाह उसे पूर्ण करेगा और अल्लाह तआला अपने बन्दे के लिए अपने वादों और शत्रुओं के लिए अपने अज़ाब के वादों के विपरीत नहीं करेगा।

यह अल्लाह तआला की उन भविष्यवाणियों में से है जो इस बन्दे को उनके घटित होने से पूर्व ही वही की गई। जिन्हें देशों, जन साधारण तथा अमीर वर्ग के लोगों में लिखकर और छाप कर प्रसारित कर दिया गया था तथा उन्हें विभिन्न देशों और क्रौमों को भेज दिया गया था। इस प्रकार प्रत्येक क्रौम को उसका मानो साक्षी बना दिया गया और ये भविष्यवाणियां हमारे इस युग से छब्बीस वर्ष पूर्व प्रकाशित कर दी गई थीं। उस समय उन ख़बरों के परिणाम का नामो निशान तो दूर कोई विद्वान उनके घटित होने को असंभव समझता था अपितु प्रत्येक व्यक्ति

उन पर हंसी उड़ाता और उन्हें मनगढ़त समझता तथा तामसिक-इच्छाओं के कारण उन्हें मानसिक विचारों में से समझता या उन्हें खुदा तआला की ओर से नहीं अपितु शैतानी भ्रमों में से विचार करता था जबकि ये सब ख़बरें बराहीन अहमदिया के विभिन्न स्थानों में लिखी हैं जो इस विनीत की उर्दू पुस्तकों में से हैं तथा जिस व्यक्ति को इन ख़बरों के बारे में कोई सन्देह या संशय हो तो उसे चाहिए कि वह इस पुस्तक (बराहीन अहमदिया) की ओर आए और उसे सही नीयत के साथ पढ़े तथा खुदा से डरे तथा उन ख़बरों की श्रेष्ठता एवं उनकी महत्ता तथा उनके तर्कों की बुलन्दी पर विचार करे और उस समय पर भी कितने समय पूर्व (ये प्रकाशित की गई) उनकी आभा और चमक-दमक पर विचार करे। क्या किसी व्यक्ति को यह शक्ति प्राप्त है कि वह समस्त वस्तुओं के जानने वाले खुदा से ज्ञान प्राप्त किए बिना ऐसी सूचनाएं दे सके। ये बहुत सी सूचनाएं हैं जिनमें से कुछ की हमने चर्चा की है तथा कुछ की नहीं की। इतनी भविष्यवाणियां उन संयमी लोगों के लिए पर्याप्त हैं जो अल्लाह तआला से डरते हैं और वे जब सत्य को पा जाएं तो उन के हृदय कांप जाते हैं। और वे अभागों के समान उस से नहीं गुज़र जाते और वे यह दुआ करते हैं कि हे हमारे रब्ब ! हम ईमान ले आए हैं। अतः तू हमें अपने मोमिन बन्दों और गवाहों में लिख ले।

फिर तुम जान लो अल्लाह तुम पर दया करे। इन ख़बरों का समय वह है जिसमें उनके प्रकट होने का कोई लक्षण न था, न उनका प्रकाश फैला था और न ही उनकी गुप्त बातों तक पहुँचने का कोई द्वार था अपितु यह मामला लोगों की आंखों तथा विचारों से छुपा हुआ था और यह विनीत गुमनामी में छुपा हुआ था। उसे केवल वे थोड़े से लोग जानते थे जो प्रारंभ से उसके पिता से परिचित थे। यदि तुम चाहो तो इस बस्ती के निवासियों से जिसका नाम क़ादियान है तथा उसके आस-पास के मुसलमानों, मुश्रिकों तथा शत्रुओं की बस्तियों के रहने वालों से भी पूछ लो। ऐसे समय में अल्लाह तआला उससे सम्बोधित हुआ और फ़रमाया : तू मुझ से ऐसा है जैसा मेरा एकेश्वरवाद और एकत्व। अतः वह समय आ रहा है कि तेरी सहायता की जाएगी और संसार में प्रसिद्ध किया जाएगा। वह सहायता

प्रत्येक दूर के मार्ग से तुझे पहुंचेगी और ऐसे मार्गों से पहुंचेगी कि वे मार्ग लोगों की अत्यधिक आवाजाही से जो तेरी ओर आएंगे गहरे हो जाएंगे। तेरी सहायता वे लोग करेंगे जिन के हृदयों में हम इल्हाम करेंगे। जब खुदा की सहायता आएगी और युग हमारी ओर लौटेगा तब कहा जाएगा कि क्या यह व्यक्ति जो भेजा गया, सत्य पर न था और चाहिए कि तू खुदा की सृष्टि के मिलने के समय उकता न पाए और चाहिए कि तू लोगों की बहुत अधिक मुलाकात से थक न जाए तथा तुझ पर अनिवार्य है कि अपने मकानों को विशाल करे। तुझ से प्रेम करने वाले आएंगे उन के उतरने के लिए गुंजायश हो। यह अल्लाह तआला की ओर से वे भविष्यवाणियां हैं जिन पर उसकी वही से इस समय तक छब्बीस वर्ष का समय गुजर गया है और इसमें बुद्धिमानों के लिए बहुत बड़ा निशान है।

तत्पश्चात् अल्लाह ने अपने उस बन्दे का समर्थन किया जैसा कि विभिन्न प्रकार के इनाम तथा भांति-भांति की ने'मतों का उसका वादा था जिसके परिणामस्वरूप सत्याभिलाषी समूह के समूह उसके पास धन, उपहार और हर वह वस्तु जो उन्हें प्राप्त थी लेकर आए यहां तक कि अब उनके लिए स्थान तंग हो गया और निकट था कि मुलाकात की अधिकता के कारण वह उकता जाए ताकि अल्लाह ने जो कहा था वह सच्चा और उचित सिद्ध हो और अल्लाह तआला से बढ़कर और कौन वादा पूरा कर सकता है। और किसी शत्रु को यह सामर्थ्य न हुआ कि अल्लाह तआला ने जो सहायता और इनामों के उतारने का वादा किया है उसे रोक सके, यहां तक कि वह प्रारब्ध उतरा जिसे उन्होंने रोकना चाहा था और वह वादा पूरा हो गया जिसे उन्होंने झुठलाया था और उस बन्दे को आकाश से खिलाफ़त की उपाधि दी गई। इसमें हर उस व्यक्ति के लिए जो सत्य का अभिलाषी है तथा द्वेष और शत्रुता त्याग कर आया है बहुत बड़ा निशान है। अतः हे संयम धारण करने वालो ! वर्णन करो तुम्हें प्रतिफल दिया जाएगा। क्या यह अल्लाह का कार्य है या किसी ऐसे मनुष्य का मनगढ़त कथन जिसने झूठ गढ़ने के पाप दुस्साहस किया है ताकि वह रसूलों में गिना जाए। क्या ऐसे अपराधियों के लिए अल्लाह के अज़ाब से इस संसार में कोई अमन है या उन्हें अज़ाब दिया जाता है?

फिर हे धर्मशास्त्रियो ! मैं तुम से दूसरी बार फ़त्वा चाहता हूँ। अतः अल्लाह का संयम धारण करो और ऐसे मर्दों के समान मुझे फ़त्वा दो जो अल्लाह से डरते हैं और अन्याय नहीं करते। हे जवानो ! एक व्यक्ति जिसने दावा किया है कि मैं अल्लाह की ओर से हूँ। फिर उसके इन्कार करने वालों ने उससे मुबाहला किया ताकि कदाचित वे विजयी हो जाएं, परन्तु अल्लाह ने उन्हें तबाह और अपमानित किया तथा उनकी युक्तियों को झूठा कर दिया। और यदि तुम चाहो तो इस पुस्तक में उन के वृत्तान्त और अल्लाह ने उनसे जो व्यवहार किया है उसे पढ़ो (और विचार करो कि) क्या यह इन्कार करने वालों पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण नहीं हुआ?^①

अल्लाह ने प्रत्येक रणभूमि में उसकी सहायता की और उसे उसके शत्रुओं पर विजयी किया और घटना से पूर्व उसकी सूचना दी। अतः हे बुद्धिमानो! क्या यह उसकी सच्चाई का निशान नहीं? क्या तुम्हारी अक़लें वैध ठहराती हैं कि वह पवित्र

① जिन लोगों ने मुबाहला किया और मुबाहले के पश्चात् वे तबाह हो गए उन्हीं में से एक व्यक्ति गुलाम दस्तगीर क्रसूरी नामक है। इसी प्रकार उन में से मौलवी चिराग़दीन जम्मूनी तथा एक अन्य व्यक्ति मौलवी अब्दुर रहमान मोहियुद्दीन लख्खे और एक अन्य व्यक्ति मौलवी इस्माईल अलीगढ़ी और मौलवी फ़क़ीर मिर्ज़ा दुलम्याली तथा लेखराम पेशावरी है। इस प्रकार और बहुत से लोग हैं जिनमें से अधिकांश तो मर गए तथा उनमें से कुछ अपमानित और कुछ समाप्ति और तंगी में डाल दिए गए। हमने उनकी विस्तृत चर्चा अपनी पुस्तक 'हकीकतुल वह्यी' में कर दी है। यह चर्चा का सारांश है उन लोगों के लिए जो सत्याभिलाषी हैं और उनमें से एक वह व्यक्ति भी है जो इस माह अर्थात् जुलका 'दा में मरा और उसका नाम सा 'दुल्लाह था परन्तु उसका सौभाग्य से कोई संबंध नहीं था और मुझे सूचना दी गई थी कि वह मेरी मृत्यु से पूर्व बदनामी और निराशा से मरेगा और अल्लाह उसकी नस्ल को काट देगा। अतः वह इसी प्रकार असफल और निराश मरा। यह प्रतिफल है उन लोगों का जो अल्लाह से युद्ध करते तथा जुल्म और अत्याचार से उसके रसूलों का इन्कार करते हैं। इसी से।

ख़ुदा जो केवल और केवल नेकों को पसन्द करता है और मात्र नेकियों के कारण किसी को अपना सानिध्य प्रदान करता है वह किसी पापी और झूठ बनाने वाले व्यक्ति से प्रेम करे और हमारे नबी अलैहिस्सलाम की आयु से भी अधिक आयु दे और उस से शत्रुता करने वालों से शत्रुता और उससे मित्रता रखने वालों से मित्रता करे और उसके लिए निशान उतारे और उसे समर्थनों से सम्मानित करे तथा चमत्कारों के साथ उसकी सहायता करे और उसे अपनी बरकतों से विशिष्ट करे और हर मैदान में उसके शत्रुओं के विरुद्ध उसे विजयी करे और हानि पहुंचाने वाले स्थानों और कष्टों के अवसरों से उसे सुरक्षित रखे तथा जो व्यक्ति उससे मुबाहला करे वह उसे अपनी अप्रसन्नता से तबाह या अपमानित करे और उसके लिए तलवार से लैस होकर आसमानी तलवार से उसके शत्रु का वध करे। इसके बावजूद कि वह जानता है कि यह अल्लाह पर झूठ बांध रहा है और फिर उस झूठ के साथ-साथ वह उन कपोल कल्पित बातों को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करता है ताकि वह ज्ञान न रखने वालों को पथभ्रष्ट करे ऐसे व्यक्ति के बारे में तुम्हारी क्या राय है। क्या अल्लाह ने उसके झूठ बांधने के बावजूद उसकी सहायता की है या वह वास्तव में अल्लाह की ओर से है और वह उन लोगों में से है जो सच्चे हैं? और क्या झूठे स्वप्न देखने वाले मुक्ति पाएंगे जो कहते हैं कि हमारी ओर वही की गई है? हालांकि उनको कुछ भी वही नहीं की गई और वे तो सरासर झूठ बोलते हैं।

अतः हे उलेमा ! मैं तुम से तीसरी बार फ़त्वा मांगता हूँ कि यह व्यक्ति जिसकी तुम ने चर्चा सुनी और उन उपकारों की भी चर्चा सुनी जो अल्लाह ने उस पर किए। उसे अल्लाह ने इन के अतिरिक्त और भी कई निशान प्रदान किए ताकि लोग उसे पहचान सकें। इन निशानों में से एक निशान उल्का पिण्ड हैं जो उसके समर्थन में दो बार टूट कर गिरे। और उसकी सच्चाई पर चन्द्रमा और सूर्य ने गवाही दिया, जब उन्हें रमज़ान में ग्रहण लगा और इसकी सूचना कुर्आन ने भी दी थी जब उसने अन्तिम युग के लक्षणों में इन दोनों का वर्णन किया। फिर हदीस में विस्तारपूर्वक वर्णन किया कि कुर्आन में संक्षिप्त तौर पर था। निश्चय ही अल्लाह ने इन दोनों निशानों की सूचना

इस विनीत को भी दी जैसा कि बराहीन अहमदिया में भी उन के प्रकट होने से पूर्व लिखा हुआ है। हे प्रियजनो ! इसमें निश्चय ही हर उस व्यक्ति के लिए निशान है जिसके दो नेत्र हैं। अतः स्पष्ट तौर पर वर्णन करो ताकि तुम्हें प्रतिफल मिले। क्या यह अल्लाह का कार्य है या किसी मनुष्य की कृत्रिम बातें?

इन समस्त निशानों में से एक यह भी है कि अल्लाह ने उसे सुदूर क्षेत्रों और इस देश में बड़े भूकम्पों की उनके प्रकटन और लक्षणों से भी पूर्व सूचना दी। अतः तुम सुन चुके हो कि जो (भूकम्प) इस देश और संसार के अन्य भागों में आए। तुम जानते हो कि मानवजाति पर इन दुर्घटनाओं के सख्त अंधकार इस प्रकार उतरे कि सूर्य उदय तो आबादियों पर हुआ परन्तु अस्त इस स्थिति में हुआ कि वे आबादियां अपनी छतों के बल गिर चुकी थीं और छतें अपने रहने वालों पर गिरी हुई थीं तथा घर मुर्दों और शोक से भरे हुए थे और मज्लिसें महलों से क़ब्रिस्तान में परिवर्तित हो गईं और मज्लिसें पृथ्वी के नीचे चली गईं तथा यह बात प्रकट हो गई कि यह जीवन मात्र एक धोखे के समान है या फिर समुद्रों के बुलबुलों की तरह। जो उनमें से बच गए तो उनके हृदयों को बेचैनी ने दाग दिया और आघात ने उनके दामन फाड़ दिए।

और उनके वे महल ध्वस्त हो गए जिनमें उतरने के लिए एक दूसरे से मुकाबला करते और उनमें ठहरने पर स्वाभिमान प्रकट करते थे। भूकम्पों की यह श्रृंखला न कटी न समाप्त हुई अपितु जिस भूकम्प के आने की प्रतीक्षा की जा रही थी वह पहले भूकम्पों से तीव्र होगा। इसमें संयम धारण करने वाली क्रौम के लिए एक मार्ग-दर्शन है अतः हे न्याय करने वालो ! स्पष्ट तौर पर वर्णन करो ताकि प्रतिफल दिए जाओ। क्या ये अल्लाह के निशान हैं या ऐसी बातों में से हैं जिन्हें कपट करने वाले गढ़ते हैं। मोमिन वे मर्द होते हैं कि जब वे बोलते हैं तो सच कहते हैं और जब उन्हें शासक बनाया जाता है तो न्याय करते हैं और अत्याचार नहीं करते परन्तु वे लोग जो लोगों से ऐसे डरते हैं जैसे अल्लाह से डरना चाहिए और सच को छुपाते हैं मानो सच उनकी नाक काट रहा है या उन्हें बन्धक बनाया जा रहा है। ये पुरुषों के लिबास में स्त्रियां और मोमिनों के लिबास में काफ़िर हैं।

और उन निशानों में से एक निशान यह भी है कि अल्लाह ने उस बन्दे को न केवल इस देश में वरन् समस्त क्षेत्रों में प्लेग प्रकट होने की सूचना दी और फ़रमाया - “बीमारियां फैलेंगी और जानें जाएंगी।” अतः तुम ने देख लिया कि प्लेग ने इस प्रकार चीर-फाड़ कर रख दिया है जिस प्रकार दरिन्दे चीर-फाड़ करते हैं। और तुमने देख लिया कि प्लेग ने इस देश पर कैसा आक्रमण किया और तुमने देख लिया कि लोगों में किस बहुतात से मौतें हुईं और इस समय तक प्लेग जंगली जानवरों की तरह आक्रमण कर रही है और प्रतिदिन चक्कर लगा कर (लोगों को) पकड़ में लेती है और प्रतिवर्ष पिछले वर्ष की अपेक्षा प्लेग अपने रूप में और अधिक भयावह दिखाती है। तत्पश्चात् इसके पीछे बड़े-बड़े भूकम्प आए और ये समस्त भविष्यवाणियां अपने प्रकट होने से पूर्व सुदूर क्षेत्रों में प्रकाशित कर दी गई थीं। इसमें निश्चय ही प्रत्येक देखने वाले के लिए बड़ा निशान है। और अल्लाह ने उसे एक और भूकम्प की सूचना दी है जो महा-प्रलय का नमूना होगा तथा हम नहीं जानते कि उसके पश्चात् अल्लाह क्या प्रकट करेगा। निश्चय ही इसमें बुद्धिमानों के लिए भय का स्थान है। अतः हे जवाबो ! स्पष्ट तौर पर वर्णन करो तुम्हें प्रतिफल दिया जाएगा। क्या यह अल्लाह का कार्य है या किसी मनुष्य का स्वयं बनाया हुआ कलाम?

और निश्चय ही अल्लाह ने इस युग के लिए मौतें और इनाम निर्धारित कर रखे हैं। अतः जो लोग ईमान लाए और ईमान के साथ अत्याचार को नहीं मिलाया उन्हें कृपालु ख़ुदा की अनुकम्पाएं दी जाएंगी। और जिन लोगों ने न तो तौबा की और न क्षमायाचना की और न ही उनके हृदयों का संयम तथा क्षेत्रों पर आने वाले संकटों का भय इस बन्दे तक ले आया और उन्होंने बहुत बड़ी उद्दण्डता की और नशेबाजों के समान संसार पर झुके रहे। यही लोग अत्यधिक मौतों का स्वाद चखेंगे क्योंकि वे अवज्ञा में सीमा से बढ़ गए। आकाश उनके सरो पर गिरेगा और पृथ्वी उनके पैरों के नीचे से फट जाएगी और प्रत्येक व्यक्ति अपना प्रतिफल लेगा। उस समय प्रतिफल और दण्ड के स्वामी ख़ुदा का वादा पूरा होगा।

और इसके लिए एक निशान यह भी है कि अल्लाह ने उसे यह शुभ सन्देश

दिया है कि प्लेग उसके घर में प्रवेश नहीं करेगी और भूकम्प उसे और उसके सहायकों को तबाह नहीं करेंगे और अल्लाह उसके घर से इन दोनों की बुराई को दूर रखेगा और वह इन दोनों के तीर निषंग (तरकश) से नहीं निकालेगा और न चलाएगा और न ही उनको पंख लगाएगा और न ही काटेगा। फिर अल्लाह समस्त लोकों के प्रतिपालक की कृपा से ऐसा ही घटित हुआ और यह विनीत और उसके साथी उस की दया के कारण अमनपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं तथा इन भूकम्पों और प्लेग की आहट तक नहीं सुनते और वह घबराहट और चीखने-चिल्लाने से सुरक्षित रखे गए हैं। जबकि तुम देख रहे हो कि प्लेग किस प्रकार हमारे इस क्षेत्र और (अन्य) क्षेत्रों में तबाही फैला रही है और गली-कूचों तथा बाजारों में चक्कर लगा रही है और इसी प्रकार भूकम्प हैं कि आते समय घर वालों से आज्ञा नहीं लेते और न तबाह करने और क्षति पहुंचाने के समय फ़त्वा पूछते हैं और देश पर इन भूकम्पों के संकट आए हुए हैं इस विनीत की बस्ती में उसके घर के दाएं-बाएं और उनके निकट और पड़ोस में बहुत से लोग प्लेग से मर चुके हैं जबकि उसके घर में मनुष्य तो दूर एक चुहिया तक नहीं मरी। इसमें निश्चय ही हर उस व्यक्ति के लिए जिसकी दो आंखें हों एक बड़ा निशान है और ख़ुदा की क्रसम यदि तुम उन निशानों की गणना करो जो इस विनीत के समर्थन के लिए आकाश से उतरे हैं तो कदापि नहीं गिन सकोगे तथा इस विनीत के लिए ऐसी नाना प्रकार की ने'मते' सुसज्जित की गई हैं जिन्हें न तो ख़ुदा की प्रजा ने देखा और न उनका स्वाद चखा। निश्चय ही इसमें एक स्पष्ट तर्क है उन लोगों के लिए जो सोच-विचार से काम लेते हैं और झुठलाने में शीघ्रता नहीं करते और विचार करते हैं।

उसके लिए एक और निशान यह है कि अल्लाह उसकी दुआ सुनता है और उसका रोना और गिड़गिड़ाना व्यर्थ नहीं करता। हमने अपनी पुस्तक "हक्रीकृतुल वह्यी" में दुआओं की स्वीकारिता के बहुत से नमूने लिख दिए हैं तथा अपने रब्ब के समक्ष विनयपूर्वक ध्यान करने के समय इस विनीत पर अल्लाह तआला ने जो कृपा की उसे भी (लिखा है) अतः हमें उनकी पुनरावृत्ति की आवश्यकता नहीं। अब जो कोई भी सन्देह ग्रस्त हो उसे चाहिए कि इस

पुस्तक (हकीक़तुल वह्यी) को पढ़े।

उसके लिए एक निशान यह भी है कि ख़ुदा ने अपनी ओर से उसके वाक्यों को अरबी भाषा में सत्ता और नीति की अनिवार्यता के साथ सुबोधता प्रदान की है यद्यपि कि वह अरब नहीं और न ही उसे उनकी भाषा से यथायोग्य परिचय था और न ही उसने साहित्य की पुस्तकों के संकलन का अध्ययन किया था और न ही वह उन लोगों में से था कि जिन्हें सरसता की छातियों से दूध पिलाया गया हो किन्तु फिर भी किसी मनुष्य के लिए संभव न हुआ कि वह इस रणभूमि में उसका मुक़ाबला कर सके अपितु वह अपमान के भय से उसके निकट तक नहीं फटके और यह ख़ुदा की प्रदत्त सरसता वह शरबत है जिसका लोगों में से किसी ने घूट तक नहीं पिया था अपितु वह उसके रब्ब ने उसे पिलाया तो उसने मनुष्यों के प्रतिपालक के हाथों से पिया। फिर तुम किधर जा रहे हो? न सोच-विचार करते हो और न संयम से काम लेते हो। क्या तुम यह कहते हो कि यह शायर है हालांकि शायर लोग तो केवल व्यर्थ बातें करते हैं और वे हर घाटी में भटकते फिरते हैं। क्या तुमने कभी कोई ऐसा शायर देखा है जो सच्चाई और वास्तविकताओं (का दामन) नहीं छोड़ता और केवल अध्यात्म ज्ञानों एवं सूक्ष्म बातों की चर्चा करता है और पूर्ण रूप से नीतिगत बातचीत करता है और मात्र ऐसा कलाम करता है जो अध्यात्म के रहस्यों से भरा हो वरन् शायर लोग तो निरर्थक बातें करने वालों के समान जो निरुद्देश्य बातें करते हैं जब कि तुम मेरे इस कलाम को अध्यात्मिक रहस्यों और ख़ुदा के अध्यात्म ज्ञानों से परिपूर्ण पाओगे। इसके अतिरिक्त (यह कलाम) अपनी बनावट की दृष्टि से बड़ा उत्तम तथा शब्दों की दृष्टि से उच्च स्तरीय है। इसमें तुम कोई निरुद्देश्य बात नहीं पाओगे। तुम्हें क्या हो गया है कि सोच-विचार नहीं करते? और ख़ुदा की क़सम ! यह कलाम कुर्आनी सरसता का प्रतिबिम्ब है ताकि वह विचार करने वालों के लिए एक निशान हो। क्या तुम कहते हो कि यह चोर है। अतः यदि तुम सच्चे हो तो इन जैसे चोरी किए पृष्ठों को (ही) प्रस्तुत करो जिन में सत्य और नीति की ऐसी निरन्तरता हो।

क्या तुम में कोई ऐसा साहित्यकार है जो ऐसा कलाम प्रस्तुत कर सके जैसा

उसने प्रस्तुत किया है यदि तुम ऐसा न कर सको और तुम कदापि ऐसा नहीं कर सकोगे तो फिर जान लो कि यह कलाम देखने वालों के लिए अन्य निशानों के समान एक निशान है।

सारांश यह कि अल्लाह ने अपने इस बन्दे (विनीत) के लिए प्रत्येक निशान उतारा और उसकी हर प्रकार से सहायता की तथा उसमें सच्चों के समक्ष लक्षण और रसूलों की समस्त निशानियां एकत्र कर दीं और कृपालुता रूपी आचरण सिखा कर और शुभ कर्मों का सामर्थ्य प्रदान करके उसका उत्तम प्रशिक्षण किया और से अपनी उस सुन्नत के अन्तर्गत रखा जो नबियों के लिए जारी है। अतः जिसने उस पर आक्रमण किया उसने उन सब नबियों पर और हर उस व्यक्ति पर आक्रमण किया जो अल्लाह की ओर से आया। इसके अतिरिक्त यह कि अल्लाह तआला ने उसे खतरों के समय पर उसकी सुरक्षा का विश्वास दिलाया और समस्त परिस्थितियों में दृढ़ता और स्थायित्व प्रदान किया और उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचने वालों के षड्यन्त्र के समय उसकी सहायता की तथा उद्दण्डों की उद्दण्डता तथा क्षति पहुंचाने वालों की क्षति और आक्रमणकारियों के आक्रमण से उसकी प्रतिरक्षा की और उसे तंगी के बाद समृद्धि और गर्मी के पश्चात् छाया प्रदान की।

अतः हे संयमियों के समूह! विचार करो क्या कोई सदबुद्धि यह स्वीकार करती है कि पवित्र अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति की जिसे वह झूठा जानता हो ऐसे पुरुस्कारों और प्रतिष्ठताओं द्वारा उसका समर्थन करेगा? और क्या इस बारे में रब्बुल आलमीन (समस्त जगत के पालनहार) का कोई कथन मौजूद है और क्या तुम इस जगत में इसका कोई उदाहरण पाते हो?

क्या बुद्धि निश्चित रूप से यह निर्णय कर सकती है कि यह सभी बातें एक झूठे में एकत्र हों जो सुबह-शाम अल्लाह की ओर झूठी बातें सम्बद्ध करता है और बेशर्म होकर अपने इस झूठ पर (तौबा) प्रायश्चित्त नहीं करता लेकिन फिर भी अल्लाह उसे छब्बीस साल तक छूट देता है और उसे अपने ग़ैब (परोक्ष की बातों) पर सूचित करता है और हर ओर से तथा दुश्मनों के मुक्राबले पर मुबाहले में उसकी मदद करता है? ऐसा कदापि नहीं हो सकता अपितु यह तो ऐसी बात

है कि इसे कहने वाला सर्वशक्तिमान ख़ुदा पर विश्वास नहीं रखता। ध्यान से सुनो ऐसे लोगों पर अल्लाह की लानत है जो अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं और उन लोगों पर भी जो अल्लाह के रसूलों का इन्कार करते हैं जबकि उन्होंने सच्चाई के निशान देखे होते हैं परन्तु फिर भी जानबूझ कर उन्होंने अपने उन देखे हुए निशानों को झुठलाया। क्या वह नहीं देखते के झूठे की सच्चे के समान सहायता नहीं की जाती। यदि उसकी सहायता की जाती तो मामला संदिग्ध हो जाता और सच्चाई झूठ के साथ खलत मलत हो जाती और उन लोगों के मध्य जिन्हें ख़ुदा की ओर से वही की जाती है और उनमें जो ख़ुदा पर झूठ बांधते हैं कोई अन्तर शेष न रहता। सुनो अल्लाह की फटकार है उस व्यक्ति पर जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा या सच्चों को झुठलाया तथा हर वह व्यक्ति जिसने सच्चे को झुठलाया या झूठ गढ़ लिया, अल्लाह उन्हें अग्नि में इकट्ठा करेगा जो उनके लिए तैयार की गई है तथा जिससे वे बाहर नहीं निकल सकेंगे। अल्लाह उनसे पूछेगा कि तुम पृथ्वी में गिनती के कितने वर्ष रहे? तो वे कहेंगे हम एक दिन या दिन का कुछ भाग रहे। अतः गणना करने वालों से पूछ। वह कहेगा तुम नहीं रहे परन्तु बहुत थोड़ा (उचित होता) यदि तुम ज्ञान रखते। और झुठलाने वाले कहेंगे : हमें क्या हुआ है कि हम उन लोगों को नहीं देख रहे जिन्हें हम दुष्टों में से समझते थे और जिनकी हम झूठ गढ़ने वालों में गणना करते थे। अतः उस दिन अल्लाह उन्हें यह बताएगा कि वे तो स्वर्ग में हैं और तुम भड़कते हुए नर्क में एक लम्बे समय तक रहोगे। वहां वे नर्क की कुचलियों के नीचे अल्लाह के रसूलों की पुष्टि करेंगे। अतः खेद है झुठलाने वालों पर।

और जब उन्हें कहा जाता है कि ख़ुदा की किताब की ओर आओ कि वह हमारे और तुम्हारे मध्य फैसला करे तो वे कहते हैं - नहीं अपितु हम तो अपने पूर्वजों का अनुसरण करेंगे। वास्तव में उन्होंने ख़ुदा के ग्रन्थों को अपनी पीठ के पीछे डाल रखा है। तू उन्हें देखता है कि वे अन्य (ग्रन्थों) पर जमे बैठे हैं, वे उस से दूर भागते हैं जो उनकी ओर भेजा गया है। हालांकि वह अल्लाह की ओर से हक़म (मध्यस्थ) है। अल्लाह उस की सच्चाई की गवाही देता है और वह उत्तम

साक्षी है और वह सदी के आरम्भ पर आया तथा खुदा ने उसके लिए अपने निशान उतारे जो रोगी को स्वस्थ करते हैं और तर्क-वितर्क को सीमित करते हैं और सीमा से अतिक्रमण करने वाली क्रौम को निशान कुछ भी लाभ नहीं देते।

हे बुद्धिमानो ! वह ठीक आवश्यकता के समय और काफ़िरों द्वारा इस्लाम पर संकट आ पड़ने और रमज़ान में कथित सूर्य और चन्द्र ग्रहण के अवसर पर आया है और उसने बुद्धिमत्तापूर्वक सत्य की ओर बुलाया है और हर उस निशान से उसका समर्थन किया गया जिससे चुने हुए और प्रिय बन्दों का समर्थन किया जाता है और फिर समय ने भी यह मांग की कि वह आए और काफ़िरों को तर्कों के माध्यम से निरुत्तर करे और उनकी स्वयं निर्मित इमारत को ध्वस्त कर दे।

वह युग को और युग उसे बुला रहा है। फिर वे लोग सीमा से बढ़ गए और उसके तिरस्कार के लिए अपनी लोलुपता को तीव्र करते हैं और उसकी ओर उपहास करते हुए देखते हैं और वह मसीह मौऊद और मार्ग-दर्शन के स्पष्ट तर्कों से सलीब को तोड़ने वाला है। जैसे पूर्व मसीह नासरी के सलीब ने तोड़ डाला था अब इस्लाम की किरणों के लिए सर पर चढ़े सूर्य का समय है और वह मसीह मौऊद सब से अधिक ज्ञान रखने वाले अल्लाह के आदेश से बिल्कुल दोपहर के समय आया ताकि खुदा अन्धकार के पश्चात् प्रजा पर उसका पूर्ण प्रकाश प्रकट करे। अतः उसकी सच्चाई समुद्र की भांति मौजें मार रही है और बाढ़ की भांति तीव्र है और ये योजनाएं कृपालु खुदा की ओर से इस अन्तिम युग में उसके लिए निर्धारित थीं। अतः जैसा कि उपकारी खुदा ने निर्धारित किया था वे प्रकट हो गईं। और अल्लाह ने हिन्दुस्तान पर अपनी दृष्टि डाली और उसे इस ख़िलाफ़त के विश्राम स्थल के योग्य पाया, क्योंकि यह (देश) सृष्टि के प्रारंभ में प्रथम आदम के उतरने का स्थान था।^①

① हमने यहां शब्द आदम को 'अल' के साथ व्यक्तिवाचक संज्ञा बनाया है परन्तु वास्तव में वह यहां नकरह की तरह ही प्रयोग किया गया है और आदम शब्द मेरे निकट इब्रानी शब्दों में से नहीं। हां दोनों भाषाओं में एक स्थान पर आना संभव है जो इस (इब्रानी) और अरबी में प्रचुरता के साथ मौजूद है और हमने 'मिननुरहमान' में स्पष्ट तौर पर वर्णन किया है कि अरबी समस्त भाषाओं की जननी है और हर भाषा समय बीतने के साथ साथ उससे निकली है। (इसी से)

इसलिए अल्लाह ने समानता का दर्शाने के लिए अन्तिम युग के आदम को इस देश (हिन्द) में अवतरित किया ताकि अन्तिम को प्रथम से मिला दे और निमंत्रण के चक्र को पूर्ण किया जाए जैसा कि सत्य और दूरदर्शिता की मांग थी। अतः अब युग घूम पर अपने रूप पर आ गया जिसकी ओर सृष्टि में सर्वोत्तम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने संकेत किया था और इस प्रकार इस शुभ देश (हिन्द) में अन्तिम बिन्दु प्रथम बिन्दु से मिल गया और सूर्य पूरब से उदय हो गया तथा खुदा के पवित्र ग्रन्थों में ऐसा ही लिखा था ताकि इस से वे लोग सन्तोष पाएं जिनके आंसू अंधकार को देखकर थमते नहीं थे। अतः उनके गालों से प्रसन्नता प्रकट होती है और वे इस से खुश हो जाते हैं। अल्लाह ने उनके मार्ग से सन्देह के कांटे दूर कर दिए हैं। अब वे शान्तिपूर्वक चल रहे हैं और उन्हें जंगलों से बागों की ओर स्थानांतरित कर दिया गया है और वे अन्धकारमय गुफ़ा से जगत के प्रतिपालक के प्रकाशों की ओर निकल पड़े हैं। अतः वे देखने लगे हैं और वे जंगलों से निकल कर रक्षा करने वाले रब्ब के क़िले में आ गए तथा उनके हृदयों में ईमान के दीपक प्रकाशित कर दिए गए और वे अमन की इस शरण स्थली में प्रवेश कर गए कि शैतान की सन्तानें जिसके समीप भी नहीं जा सकतीं।

और वे लोग जो सांसारिक जीवन से प्रेम करते हैं उनके हृदयों पर मुहर लगा दी गई अतः वे नहीं समझते और रात ने अपने दामन उन पर फैला दिए और अंधकार ने अपनी डोरें फैला दीं। अतः वे उनके अंधकारों में भटक रहे हैं।

हे जवानो ! मैं तुम से एक बार पुनः पूछता हूं ताकि उस व्यक्ति पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो जाए जिस ने सत्य का इन्कार किया या वह व्यक्ति पुण्य प्राप्त करे जिस ने सच बोला तथा संयम और ईमान की रक्षा की और शैतानी मार्गों का अनुसरण नहीं किया। तुम मुझे ऐसे व्यक्ति के बारे में फ़त्वा दो जो यह कहता है कि मैं अल्लाह का भेजा हुआ हूं और अल्लाह की ओर से प्रतिदिन उसकी सहायता की जाती है और उसका सम्मान किया जाता है और अपमान नहीं किया जाता और अल्लाह प्रत्येक कर्म पथ में उसके साथ होता है, वह उसकी आवश्यकताएं शीघ्र पूर्ण करता है और उसके अन्न, उसकी आयु, उसकी जमाअत और उसके

गिरोह में बरकत रख देता है और लोगों में उसकी सहायता और स्वीकारिता इतनी बढ़ाता है कि प्रारंभ में उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी तथा उसका नाम बुलन्द करता है और सम्पूर्ण संसार में फैलाता और पृथ्वी के चारों ओर तथा किनारों तक पहुँचता है और वह उसकी शान बुलन्द करता और उसके तर्कों को श्रेष्ठता प्रदान करता है। और उसे प्रत्येक मैदान में खुली-खुली विजय प्रदान करता है और उसकी कीर्तियों को (लोगों की) जीभों पर जारी करता है तथा संकटों के समय उसकी दुआ स्वीकार करता है और उसके शत्रुओं को लज्जित करता है तथा उस पर समझाने के प्रयास को पूर्ण करता है यहां तक कि उन ने'मतों पर ईर्ष्या की जाती है और जो उससे मुबाहला करे वह उसे तबाह करता है और जो उसका अनादर करे उसे अपमानित करता है और (अपने) इस बन्दे की सुन्दर चर्चा को फैला देता है और उसे प्रत्येक बदनामी से सुरक्षित रखता है और उसके बारे में जो कथनीय बातें की जाएं वह उसे उनसे बरी ठहराता है और अद्भुत तौर पर उस की प्रत्येक स्थान पर सहायता करता है और कुछ कमीने लोग, उसके बारे में जो गन्दी बातें करते हैं वह उसे उन से पवित्र ठहराता है।

वह उसकी सच्चाई पर ऐसे निशानों से गवाही प्रस्तुत करता है जो केवल सदात्माओं को प्रदान किए जाते हैं और ऐसे समर्थनों से जो केवल सच्चों को दिए जाते हैं और वह उसकी आयु और उसकी सांसें और उसके वाक्यों, उसके तर्कों तथा उसके निशानों में बरकत रख देता है। बहुत से लोग उसके प्रवचनों और ध्यान से उसकी ओर खिंचे चले आते हैं और वह उसे अपने नेक लोगों का प्रियतम बना देता है और निष्कपट लोगों की सेनाएं उसके चारों ओर इकट्ठी कर देता है। और वह उसे ऐसी खेती के समान प्रकट करता है जिसने अपनी कोंपल निकाली हो जबकि उसके साथ लोगों में से एक सदस्य भी न था। फिर वह उसे ऐसा मोटे तने वाला वृक्ष बना देता है जिसकी छाया और फलों के नीचे बहुत से लोग शरण लेते हैं।

वह उसके द्वारा हृदयों की पृथ्वी को जीवित करता है। अतः वह हरी-भरी हो जाती है और वह उसके तर्कों द्वारा चेहरों को ताजगी प्रदान करता है। अतः उनके

चेहरे लाल हो जाते हैं और वह उसके द्वारा अंधी आंखों, बहरे कानों और आवरणों में लिपटे हुए हृदयों को खोल देता है। हे प्रिय जनो ! तुमने यही देखा है और तुमने मेरी जमाअत के कुछ लोगों को देखा कि उन्होंने किस प्रकार दृढ़ता का प्रदर्शन किया यहां तक कि उनमें से कुछ इस सिलसिले के लिए मार गए और कुछ पत्थरों से मार दिए गए और कुछ ने शुद्ध की हुई मदिरा की तरह शहीद होने का प्याला पिया और मस्त होकर प्राण दे दिए। इसमें निश्चय ही उस व्यक्ति के लिए एक बड़ा निशान है जिसकी दो आंखें हैं। खुदा की सौगंध ! इस खुदा के बन्दे ने जवानी के आरम्भ से लेकर अब तक कृपालु खुदा की रंग-बिरंगी अनुकंपाओं को देखा है जब उस से कोई एक नेमत उतरने में विलम्ब हुआ तो दूसरी नेमत उतर गई। तथा जब भी उसे किसी शत्रु की ओर से कोई कष्ट पहुंचा तो हर बार उसे अल्लाह ने दूर कर दिया और उसने हर मैदान में विजय प्राप्त की यहां तक कि वह समय आ गया कि उसे अल्लाह की सहायता पहुंची और सत्य स्पष्ट हो गया और सन्देह जाता रहा। और लोगों के समूह के समूह उसकी ओर प्रवृत्त हुए और जिन लोगों ने यह पूछा कि यह तुझे कहां से प्राप्त हुआ तो खुदा ने उन्हें दिखा दिया कि ये सब कुछ उसी की ओर से है। और जिन्होंने उसको बदनाम करना चाहा अल्लाह ने उन्हें बदनामी और तबाही दिखा दी और उन पर फरसा रख दिया। फिर जब भी उन्होंने सर उठाया तो खुदा के हाथों उन पर वह फरसा मारा गया। ऐसा इसलिए हुआ ताकि उन्हें ऐसे हृदय प्राप्त हों जिनके द्वारा वे समझ सकें और ऐसे कान हों जिनसे वे सुन सकें। ताकि वे जागें या (उनकी) ज्ञानेन्द्रियां तेज हों। उनमें से कितने ही हैं जिन्होंने मुबाहला किया जिसके परिणामस्वरूप उन पर अपमान की मार मारी गई या वे तबाह किए गए या उनकी नस्ल काट दी गई ताकि खुदा उन्हें असावधानी की निद्रा से जगाए।

जब उन्होंने कोई षड्यंत्र रचा तो खुदा ने अपने बन्दे की प्रतिरक्षा की, यद्यपि उनकी (वह) युक्ति पर्वतों को (उनके स्थान) से हटा देने वाली थी और खुदा ने प्रत्येक षड्यंत्र करने वाले पर कोई न कोई अज़ाब उतारा। और जिसने उसके बन्दे के लिए बद्-दुआ की तो अल्लाह ने उसकी बद्दुआ उसी पर उल्टा दी और

काफ़िरों की दुआ व्यर्थ ही जाती है।

और मुबाहले के समय कमजोरों पर मेहरबानी करते हुए और वास्तविक हाल से अपरिचित लोगों पर मेहरबानी करते हुए उस (अल्लाह) ने उनके सरदारों को मार दिया और इस प्रकार उसने उपद्रव को दूर किया तथा मामला निपटा दिया और यों उनमें से कोई ऐसा व्यक्ति शेष न रहा जिसे मुबाहला करने की मजाल हो। और अल्लाह ने उन्हें वे निशान दिखाए जो उनके बाप-दादों को नहीं दिखाए गए थे ताकि अपराधियों के मार्ग स्पष्ट हो जाएं और ताकि अल्लाह हिदायत पाने वाले तथा गुमराह के मध्य अन्तर कर दे और अल्लाह ने उनके ज्ञान, संयम और उनकी कुर्बानी, इबादत और संयम के दावों का झूठा कर दिया। और कर्मों में से जो वे छुपाते हैं वह उसके लोगों पर प्रकट कर दिया और उन का लिबास उतार दिया। इस प्रकार उनका दुब्लापन प्रकट हो गया।

और वे लोग जो अल्लाह से डरे और उनके दिल थरथराए अल्लाह ने उन्हें सुरक्षा दी तो वे बवाल से बचाए गए। और बहुत से ऐसे अत्याचार करने वाले हैं जो इस बन्दे को अधिकारियों के पास घसीट कर ले गए ताकि उसे कैद में डाला जाए या उसे फांसी के तख्ते पर लटकाया जाए या उसे देश से निष्कासित कर दिया जाए।

फिर तुम जानते हो कि संकटों के समय इस मैदान में और आखिर में अल्लाह ने जो फैसला किया और अल्लाह के अपने इस बन्दे पर जिन इनामों और उपकारों का हमने वर्णन किया है वे सब इनाम प्रतापी ख़ुदा की सूचना देने पर घटना घटने से पूर्व प्रकाशित कर दिए गए थे। अतः क्या तुम आकाश के नीचे झूठ गढ़ने वालों में इसका उदाहरण जानते हो? (यदि जानकारी है) तो उसे प्रस्तुत करो और तर्क-वितर्क को त्याग दो और निःसन्देह लोगों ने उस पर हर प्रकार के अत्याचार किए और उस पर अन्याय और अत्याचार किया और उन्होंने उसे पर्वतों के समान घेर लिया। तब उसके पास ख़ुदा की ओर से खुली-खुली विजय आई और ऊंचों को नीचा कर दिया और जो बाण उन्होंने चलाए थे उन्हें उन्हीं पर उल्टा दिया गया तो वे उनकी खोपड़ी और गर्दन पर लगे और ख़ुदा ने पूर्ण तौर पर अपनी सहायता

दिखाई। कमीने लोग पूरी तैयारी के साथ उसके शत्रुओं की सहायता के लिए आए तो ख़ुदा के आदेश से उन्हें पराजय का मुख देखना पड़ा और ख़ुदा का बोल-बाला रहा और जिन पर उनका भरोसा था वे सब व्यर्थ गए और उसने (अर्थात् ख़ुदा ने) अपने बन्दे की प्रत्येक मामले में और हर प्रकार से और हर परिस्थिति में सफलता और सहायता की और विजय प्रदान की और अत्यन्त सक्रिय रब्ब की ओर से प्रताप और रोब दिया गया। यदि तू बैअत कर्ताओं की उन फौजों को देखता जो सम्पूर्ण विश्व पर फैल गई हैं तथा उन सेनाओं को भी देखता जो ख़ुदा ने अपने बन्दे के लिए इकट्ठी की हैं। जो ख़ुदा की प्रसन्नता चाहती हैं और उन उपहारों एवं मालों को देखता जो दूर और निकटवर्ती देशों से उसके पास आते हैं तो तू अवश्य यह पुकार उठता कि यह सब कुछ मात्र ख़ुदा की कृपा और उसका समर्थन एवं सहायता और उसकी ओर से सम्मान बढ़ाने और उसकी बड़ाई को प्रकट करने के तौर पर है।

फिर इन समर्थनों और निशानों को देखने के बावजूद लोगों ने उसका इन्कार किया और हर प्रकार की युक्तियां कीं ताकि उसे हानि पहुंचे, परन्तु ख़ुदा ने प्रत्येक उद्दण्ड दज्जाल और हर उस व्यक्ति से जो युद्ध करने के लिए उसके मुकाबले में आने वाला था सम्मान और सुरक्षा प्रदान करते हुए उसको स्वीकृति दी। उन्होंने जब भी उसके जीवन को गन्दा करना चाहा तो ख़ुदा ने उसके शोकों को प्रसन्नताओं में परिवर्तित कर दिया और ने'मतें प्रदान करने वाले ख़ुदा के आदेश से उसका जीवन पहले से कहीं अधिक समृद्ध हो गया तथा उन्होंने चाहा कि उसके दोष उजागर हों तो उसकी अच्छाइयों और विशेषताओं के साथ उसकी स्तुति की गई तथा उन्होंने उसके लिए जीविका में तंगी चाही तो फलों के गिरने की तरह हर ओर से उसके पास उपहार और धन-सम्पत्तियां आईं। और उन्होंने चाहा कि वे उसका अपमान और अपयश देखें किन्तु ख़ुदा ने उसका असाधारण आदर किया और उन्नति प्रदान की। आश्चर्य का पराकाष्ठा यह है कि वे गालियां देते और बुरा-भला कहते हैं हालांकि वे वास्तविकता से लापरवाह हैं। जब उन्हें कहा जाए कि उसी प्रकार ईमान लाओ जिस प्रकार दूसरे लोग ईमान लाए हैं तो कहते हैं कि क्या हम इस प्रकार

ईमान लाएं जिस प्रकार मूर्ख (लोग) ईमान लाए हैं। स्मरण रखो वे स्वयं ही मूर्ख हैं परन्तु वे इस बात की समझ नहीं रखते। वे अल्लाह के कर्म और उसके अपने बन्दे से व्यवहार पर विचार नहीं करते। क्या झूठ गढ़ने वालों का यह बदला हुआ करता है ? निश्चय ही जो लोग झूठ गढ़ते हैं, इस लोक और परलोक में उन पर लानत की गई है तथा उनकी सहायता नहीं की जाती। उनके लिए संसार में कोई भाग नहीं सिवाए बहुत थोड़ा, फिर वे खुदा के अज़ाब से मर जाते हैं जो उन्हें ऊपर से और उनके क्रदमों के नीचे से तथा दाएं-बाएं से आ लिपटता है और जो कर्म वे करते थे उन्हें उनका पूरा-पूरा प्रतिफल दिया जाएगा। और कोई सच्चा नबी अवतरित नहीं हुआ किन्तु खुदा ने उसके कारण ईमान न लाने वाली क्रौम को अपमानित किया। वे उसकी मृत्यु की प्रतीक्षा करते हैं जबकि तबाह करने वाले ही तबाह किए जाते हैं।

क्या अल्लाह उनकी योजनाओं और उनकी दुआओं से उस व्यक्ति को तबाह करेगा जिसे वह सच्चा जानता है? मूल बात यह है कि वे अन्धी क्रौम हैं। हे न्याय करने वालो ! तुम उस बन्दे और उसके शत्रुओं के बारे में क्या कहते हो? क्या तुम ने अल्लाह पर किसी ऐसे झूठ बांधने वाले को देखा है कि जब उसने किसी मोमिन से मुबाहला किया तो अल्लाह ने मोमिन के मुकाबले पर उसकी सहायता की हो? और जिसने उसका विरोध किया और उससे मुबाहला किया उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया हो? हे बुद्धिमानो ! स्पष्ट तौर पर बताओ तुम्हें प्रतिफल दिया जाएगा। क्या तुमने किसी ऐसे बन्दे को देखा है जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा फिर अल्लाह उसका हो गया और जब कभी भी उसके लिए षड्यंत्र तैयार किया गया तो अल्लाह ने उसके लिए कृपा, दया और आजीविका के द्वार खोल दिए और उस पर इस प्रकार से इनाम किए जैसे रसूलों पर किए जाते हैं और उस पर हर भलाई और बरकत के द्वार खोल दिए और शत्रुओं से उसके मान-सम्मान और प्राणों की रक्षा की तथा उसने अपने निशानों एवं कियात्मक गवाही से उसे उनके आरोपों से पवित्र ठहराया और उसने उसे शत्रुओं (की उद्दण्डता) से सुरक्षित रखा तथा प्रत्येक आक्रमणकारी पर उसने आक्रमण किया।

और जिसने उससे शत्रुता की अल्लाह उससे युद्ध करने के लिए रणभूमि में उतर आया और उसने अपने बन्दे की ऐसे सहायता की जैसे निष्कपट पुरुषों की की जाती है। हे प्रियजनों ! इसके बारे में मुझे फ़त्वा दो और मुझे कोई ऐसा झूठ और गढ़ने वाला दिखाओ जिस पर अल्लाह ने इस बन्दे के समान इनाम एवं उपकार किया हो तथा अल्लाह का संयम धारण करो जिस की ओर तुम लौटाए जाओगे।

फिर हे उलमा तथा विद्वानों ! मैं तुम से पुनः फ़त्वा मांगता हूँ। अतः तुम सच ही कहो और अल्लाह से डरो कि जिसके हाथ में प्रतिफल और दण्ड है। तुम जानते हो नेक लोग झूठ नहीं बोला करते और सत्य को छुपाना उनकी प्रकृति नहीं होती। सत्य बात को वही व्यक्ति छुपाता है जिसके लिए दुर्भाग्य निर्धारित हो चुका हो।

हे प्रिय सज्जनों! हे युग के प्राचार्यों! और हे समय के विद्वानों! और हे देशों और बड़े-बड़े नगरों के प्रकाण्ड ज्ञानियो! मुझे फ़त्वा दो ऐसे व्यक्ति के बारे में जिस ने ख़ुदा की ओर से आने का दावा किया हो और उसके लिए ख़ुदा की सहायता प्रकाशमान सूर्य के समान प्रकट हुई और उसकी सच्चाई के प्रकाश अंधकार में चौदहवीं के चन्द्रमा की भांति प्रदर्शित हुए हैं। और ख़ुदा ने उसके लिए प्रकाशमान निशान दिखाए और हर उस मामले में जिसका इस बन्दे ने फैसला किया वह (अल्लाह) उसकी सहायता के लिए उठ खड़ा हुआ।

और अल्लाह ने मित्रों और शत्रुओं के बारे में उसकी दुआएं स्वीकार कीं और यह बन्दा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथनों के अतिरिक्त कुछ नहीं कहता और हिदायत के मार्ग से एक क़दम भी बाहर नहीं निकालता और वह कहता है कि अल्लाह ने अपनी वही में मेरा नाम नबी रखा है और इसी प्रकार इससे पूर्व हमारे रसूल (मुहम्मद) मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की (मुबारक) जीभ से मुझे यह नाम प्रदान किया गया।^①

① यदि कोई कहने वाला यह कहे कि इस उम्मत में से कोई नबी कैसे हो सकता है जबकि अल्लाह ने नुबुव्वत पर मुहर लगा दी है? तो उत्तर यह है कि अल्लाह तआला ने इस व्यक्ति का

और नुबुव्वत से उसका अभिप्राय केवल अल्लाह का बहुत अधिकता के साथ बात करना और प्रचुरता से वह्यी करना है और वह कहता है कि नुबुव्वत से हमारा अभिप्राय वह नहीं जो पूर्व ग्रन्थों में लिया गया है अपितु यह वह पद है जो हमारे नबी संसार में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण के बिना नहीं दिया जाता और प्रत्येक वह व्यक्ति जिसे यह पद प्राप्त हो जाए तो अल्लाह उस व्यक्ति से बड़ी प्रचुरता और नितान्त शुद्धता से वार्तालाप करता है और शरीअत अपनी हालत पर यथावत् रहती है। न उसमें से कोई आदेश कम होता है और न किसी निर्देश में अधिकता होती है। वह कहता है कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत का एक सदस्य हूँ तथा इसके बावजूद अल्लाह ने मुहम्मदी नुबुव्वत के वरदान के अन्तर्गत मेरा नाम नबी रखा है और अल्लाह ने मेरी ओर वह्यी की जो भी वह्यी की। अतः मेरी नुबुव्वत उसी की नुबुव्वत है और मेरे जुब्बे (अन्दर) में केवल आप^स के ही प्रकाश और रश्मियाँ हैं और यदि आप^स न होते तो मैं कोई ऐसी चीज़ न था जिसकी चर्चा की जाती या जिसका नाम लिया जाता।

शेष हाशिया: नाम नबी केवल और केवल इसलिए रखा ताकि वह हमारे सय्यद व मौला, संसार में सर्वोत्तम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत के कमाल को सिद्ध करे क्योंकि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत का कमाल उम्मत के कमाल के प्रमाण के बिना सिद्ध नहीं होता इसके अभाव में यह केवल दावा है जिस पर विद्वानों के निकट कोई तर्क नहीं। किसी मनुष्य पर नुबुव्वत के समाप्त होने के इसके अतिरिक्त कोई अर्थ नहीं कि उस मनुष्य पर नुबुव्वत की विशेषताएं अपने चरम को पहुंचें और नबी की दानशीलता की विशेषता नुबुव्वत की महान विशेषताओं में से है और यह विशेषता उम्मत में मौजूद नमूने के अभाव में सिद्ध नहीं हो सकती। इसके साथ-साथ मैंने बारम्बार कहा है कि मेरी नुबुव्वत से अल्लाह का अभिप्राय केवल वार्तालाप और सम्बोधन की प्रचुरता है (इसके अतिरिक्त कुछ नहीं) और यह अहले सुन्नत के बुजुर्गों के निकट मान्य है। अतः यह विवाद केवल शाब्दिक विवाद है। इसलिए हे बुद्धिमान और मनीषी लोगो ! जल्दबाजी से काम न लो। खुदा की लानत हो उस व्यक्ति पर जो लेशमात्र भी इसके विपरीत दावा करे और उसके साथ समस्त लोगों और फ़रिश्तों की लानत भी हो। इसी से।

और हर नबी अपनी दानशीलता से पहचाना जाता है। अतः क्या शान होगी हमारे नबी^स की जो समस्त नबियों से श्रेष्ठ और दानशीलता में उन सब (नबियों) से बढ़े हुए हैं और पद में उन सबसे उत्तम और श्रेष्ठ हैं।

और वह धर्म क्या धर्म है जिसका प्रकाश किसी हृदय को प्रकाशित नहीं करता और जिसका पीना प्यास की तृप्ति नहीं करता और उसका सीने में प्रवेश करना कोई प्रभाव पैदा नहीं करता और उसकी किसी ऐसी विशेषता से प्रशंसा नहीं की जाती जिसका प्रकटन समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करे और **वह धर्म ही क्या है** जो मोमिन और ऐसे व्यक्ति में अन्तर न करे जिसने कुफ़्र और अवज्ञा को धारण किया और उसमें प्रवेश करने वाला उस धर्म से निकलने वाले जैसा हो और उनके मध्य कोई अन्तर दृष्टिगोचर न हो। वह धर्म किस काम का है जो किसी जीवित व्यक्ति को उसकी इच्छाओं की दृष्टि से न मारे और न उसे दूसरा जीवन प्रदान करे। और जो कोई ख़ुदा का हो जाता है तो ख़ुदा उसका हो जाता है। उसका यही नियम पहली उम्मतों में जारी रहा है और वह नबी जिसमें वरदान की विशेषता न हो उसकी सच्चाई पर कोई तर्क स्थापित नहीं हो सकती और न ही उसके पास आने वाला उसे पहचान सकता है। उसका उदाहरण ऐसे चरवाहे के समान है जो अपनी भेड़-बकरियों पर पत्ते नहीं झाड़ता और न उन्हें पानी पिलाता है बल्कि उन्हें पानी और चरागाह से दूर रखता है।

और तुम जानते हो कि हमारा धर्म एक **जीवित धर्म** है और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुर्दे जीवित करते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आकाश से बरसने वाली वर्षा के समान महान बरकतें लेकर आए और किसी धर्म की मजाल नहीं कि वह इन उच्च विशेषताओं में उसके साथ मुकाबला कर सके और उस प्रकाशमान धर्म के अतिरिक्त कोई धर्म नहीं जो मनुष्य से उसके पर्दों का भार उतार दे और उसे अल्लाह के महल और उसके द्वार तक पहुंचाए। जो इस्लाम की इन विशेषताओं में सन्देह करे वह मात्र अंधा है। और लोगों ने इस बन्दे पर एक ही म्यान से अपनी तलवारें निकाल लीं परन्तु (फिर यों हुआ कि) सृष्टि के प्रतिपालक ने भी उनका मुकाबला किया। अतः उसने कुछ का सिर काट

दिया, कुछ को अपमानित किया और कुछ के अपने अज़ाब के वादे के अनुसार उस दिन तक जो उनके लिए प्रारब्ध किया गया था छूट दी। उन्होंने क्रसम खा रखी थी कि वे उस से झूठ और अन्याय के अतिरिक्त कोई व्यवहार उचित नहीं रखेंगे। इन (विरोधियों) के गिरोह संयम के मार्गों से हट गए और सत्य के मार्ग से दूर जा पड़े जैसे उसमें कोई शेर है जो चीर-फाड़ कर रहा है या सांप है जो डस रहा है या कोई अन्य आपदा सामने आ गई।

उन्होंने चाहा कि इस बन्दे का वध कर दिया जाए या बंधक बना लिया जाए या देश से निष्कासित कर दिया जाए ताकि वे बाद में यह कह सकें कि यह व्यक्ति झूठा था इसलिए अल्लाह ने उसे तबाह कर दिया या अपमानित और बदनाम कर दिया। किन्तु खुदा ने उसकी पृथ्वी से और ऊंचे आकाशों से सहायता पर सहायता की और जब उसने खुदा से विजय मांगी तो प्रत्येक अहंकारी असफल हो गया। अल्लाह ने उसको प्रत्येक संकट के समय अपने समक्ष गिड़गिड़ाने और ध्यान करने का सामर्थ्य प्रदान की। अतः जब उसने दुआ मांगी तो उसने उसे स्वीकारिता प्रदान की और उसकी दुआ में प्रभाव रख दिया तथा जिसने भी उसके विरुद्ध दुआ की वह मिट गया। अतः उसकी दुआ से बहुत से लोग प्लेग का निशान बने और उन्होंने भयंकर मृत्यु का स्वाद चखा जबकि वे इस विनीत की मृत्यु के अभिलाषी थे और कहते थे कि अल्लाह ने हमें वह्यी के द्वारा इसकी मृत्यु की सूचना दी है। इसमें निश्चित रूप से बुद्धिमानों के लिए बहुत बड़ा निशान है तथा अल्लाह ने उसके घर को शान्ति वाला हरम बना दिया, जिसने उसमें प्रवेश किया वह प्लेग से सुरक्षित हो गया और उसे थोड़ा सा भी कष्ट नहीं पहुंचा जबकि उसके आस-पास के लोग उचक लिए जाते हैं। निश्चय ही इसमें प्रत्येक वह व्यक्ति जिसके पास देखने वाली आंख है कुदरत का हाथ देखता है और उसने उसे सदाचारियों को लाभ पहुंचाने के लिए शुभ कर्म उन के प्रतिफल सहित प्रदान किए मानो वे ऐसे बाग हैं जिनके मध्य नहरें बह रही हैं। और उस (अल्लाह) ने उसके लिए पृथ्वी में मान्यता रख दी। अतः प्रजा उसकी ओर दिन-रात दौड़ी चली आ रही है और अल्लाह बड़ी प्रचुरता के साथ ऐसे प्रतिभावान लोगों को उसकी ओर खींच

लाया जो पवित्रात्मा, नेक स्वभाव, शुद्ध हृदय और सागर के समान खुले सीनों वाले थे। और अल्लाह ने उनके अन्दर परस्पर प्रेम और दया पैदा कर दी और उनके सीनों से हर प्रकार का घमंड और अहंकार निकाल दिया और उसने उसे इन बातों की ऐसे समय में सूचना दी जिस समय यह बन्दा कोई उल्लेखनीय चीज़ न था और यह सहायता एक गुप्त रहस्य था, उसने उसे सत्य की लाठी प्रदान की जिस से वह शत्रुओं को अपमानित करता है। अतः उस लाठी ने परस्पर गुप्त परामर्श द्वारा निर्मित योजना के बनाए हुए सांपों को निगल लिया और उस (ख़ुदा) ने वादा किया कि वह हर उस व्यक्ति को जो इस (दावेदार) को अपमानित करने का इरादा करेगा उसे अपमानित करेगा। अतः जिसने अनादर किया और अभिमान किया उसे अपयश ने अपनी पकड़ में ले लिया। वे बिना किसी ज्ञान के झुठलाते रहे जबकि उनके हृदय सांसारिक इच्छाओं के कारण लापरवाही की अवस्था में थे और वे ख़ुदा के सिलसिले को क्रोधपूर्वक देखते थे और ख़ुदा के बन्दों को अपनी झूठी बनाई हुई बातों से कष्ट पहुंचाते थे।

वे स्वयं सत्य के घर में प्रवेश नहीं करते अपितु उसे भी रोकते हैं जो उसमें प्रवेश करने का इच्छुक हो और इन्कारी न हो। अतः अल्लाह उन पर क्रोधित हुआ और उसने उनके लिए अग्नि का लिबास तैयार किया और उन पर हसरत की अग्नि भड़काई अतः न तो उनमें उसे सहन करने की शक्ति रही और न ही वे व्याकुलता और बेचैनी का ताप अपने आप से दूर कर सके चाहे वे अपने दाएं-बाएं देखें, उन्हें कोई व्यक्ति ऐसा न मिल सका जो उन्हें अल्लाह की नाराज़गी और तबाही से मुक्ति प्रदान करे। अतः उनका अंजाम घाटा ही घाटा तथा अपमान और अवनति है। और उन्होंने जो तीर इस बन्दे पर चलाए वे चूक गए और अल्लाह ने उसे उनकी बुराई से बचाया और उसे अमन की शरण स्थली में और शान्ति कुंज में दाखिल किया। उन्होंने इस उद्देश्य से अपने तरकश खाली कर दिए कि वह अटल तक्रदीर को टाल दें और चाहा कि वह उतरने वाले प्रकाशों को अपने मुख की फूँकों से बुझाएं और वे एक चट्टान के समान उस पर गिरे और उसे पृथ्वी में गाढ़ने की इच्छा की या यह चाहा कि उस पर पर्वत टूटें ताकि उसका

नाम व निशान तक शेष न रहे, परन्तु अल्लाह ने अपने पास से उसकी विजय वाली सहायता की। ताकि अल्लाह उसे उनके लिए अफ़सोस का कारण बनाए और निस्सन्देह अल्लाह काफ़िरों को मोमिनों पर प्रभुत्व नहीं देता और अल्लाह ने उनके बारे में उसे जो दुर्भाग्य की ख़बर दी थी वह (उसे) अपने आप से दूर न कर सके और अल्लाह ने अपने इस मामूर बन्दे को ख़ुशख़बरी दी कि वह (हमेशा) उसकी सुरक्षा और अमान में होगा और दुष्ट लोगों में से जो उसके साथ शत्रुता करेगा वह उसे कोई हानि नहीं पहुंचा सकेगा और वह क्षमा करने वाले ख़ुदा की कृपा की छाया के नीचे जीवन व्यतीत करेगा। तो इसी प्रकार अल्लाह तआला ने उसे बचाए रखा और अपने दरबार में उसे मान्यता दी और वह उसके शत्रुओं के मुकाबले पर एक काटने वाली तलवार के समान हो गया और हर मैदान में एक दोस्त की तरह उसकी सहायता की और उसे तंगी से समृद्धि की ओर ले गया। और उसके लिए पृथ्वी को एक हरी भरी घाटी की तरह या फलों से ख़ूब लदे हुए एक बाग़ की तरह बना दिया और उसके वचनों में बरकत रख दी और उसे उसके मैल से पवित्र एवं साफ़ किया और उसके दीप का प्रकाश पृथ्वी के किनारों तक पहुंचाया। जिसके परिणामस्वरूप बहुत ने नेक लोगों ने उसकी ओर ध्यान दिया और उन्होंने अल्लाह तआला के लिए अपने देश छोड़ दिए और क्षमा करने वाले ख़ुदा की दया की आशा में उसी की बस्ती को अपना देश बनाया। इस पर शत्रु अपनी आन्तरिक ईर्ष्या के कारण उत्तेजित हो गए और हर प्रकार की युक्तियां कीं परन्तु उनकी प्रत्येक युक्ति धूल के समान उड़ गई। उन्होंने हर तरकश से तीर निकाला परन्तु उनका भाग ख़ुदा की ओर से तबाही के अतिरिक्त कुछ न निकला और वे उसके विरुद्ध एकमत हो गए और एक ही धनुष से उस पर तीर बरसाए परन्तु वह अल्लाह तआला की कृपा लेकर लौटा और समस्त संसार में उसका सम्मान बढ़ गया। इस प्रकार अल्लाह ने अपने बन्दे की सहायता की और अपना वादा सच्चा कर दिखाया और स्वयं अपने पास से उसके लिए बहुत से सहायक उपलब्ध किए और उसे शुभ सन्देश दिया कि वह उसे शत्रुओं के हाथों से सुरक्षित रखेगा और जो उस पर आक्रमण करेगा वह उस पर आक्रमणकारी होगा और इस

प्रकार उसने अपना वादा पूरा किया और उसे हर प्रकार की हानि से सुरक्षित रखा।

और अल्लाह ने उसे प्रत्येक प्रकार के मैल से पवित्र और साफ करके उसे चुना और (उसको) शुद्ध किया तथा अपना रहस्यज्ञ बना कर अपना सानिध्यप्राप्त बनाया और उसकी ओर वही की जो भी वही की और उसे अपनी ओर से मार्गदर्शन और हिदायत का ढंग सिखाया तथा उसके लिए पृथ्वी से और उच्चतम आकाशों से प्रत्येक निशान एकत्र किया और उसके शत्रुओं की दुष्टता को उससे दूर किया और उसके हर मामले की नींव संयम पर रखी और अस्त व्यस्त परिस्थिति के पश्चात् उसके समस्त मामलों को सुलझा दिया। और उसके चलाए हुए बाण को ठीक उसके लक्ष्य तक पहुंचाया और उसने संसार को उसके लिए दासी के समान बना दिया जबकि वह उसके पास किसी लोभ या लालच के बिना आती है और उसने उस पर प्रत्येक ने'मत के द्वार खोल दिए और उसे हर कष्ट से शरण दी और उसका पोषण किया और अपनी ओर से उसे सिखाया तथा उच्च अध्यात्मज्ञान प्रदान किए। वह निर्धारित समय पर तुम्हारे पास आया। अतः तुम इस व्यक्ति के बारे में क्या कहते हो क्या वह सच्चा है या झूठा? और इस फज़ल का स्रोत कहाँ है अल्लाह ने उसे दिया जो दिया। क्या शैतान इन महान बातों पर समर्थ है? साफ साफ कहो तुम्हें प्रतिफल दिया जाएगा और उस निर्णय के दिन से डरो जो हर गुप्त बात को प्रकट कर देगा।

दूसरा अध्याय

आदरणीय सय्यदो ! अल्लाह सौभाग्य के मार्गों की ओर तुम्हारा मार्गदर्शन करे। ध्यान से सुनो कि मैं ही फ़त्वा मांगने वाला हूँ और मैं ही दावेदार हूँ। मैं किसी पर्दे के पीछे रह कर बात नहीं करता अपितु मैं महादानी ख़ुदा की ओर से विवेक पर स्थापित हूँ। ख़ुदा ने मुझे इस सदी के आरंभ में अवतरित किया है ताकि मैं धर्म का नवीनीकरण करूँ। और मिल्लत का चेहरा प्रकाशित करूँ, सलीब को तोड़ूँ, ईसाइयत की अग्नि बुझाऊँ और सृष्टि के सर्वोत्तम पुरुष (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सुन्नत स्थापित करूँ और जो ख़राबी पैदा हो गई है उसका सुधार करूँ और जिन (शिष्टाचार की) बहुत कमी है उन्हें जारी करूँ और यह

कि मैं मसीह मौऊद और महदी मा'हूद हूँ। अल्लाह ने मुझ पर वह्यी और इल्हाम का उपकार किया और उसने मेरे साथ इस प्रकार वार्तालाप किया जैसे उसने सम्माननीय रसूलों से किया था और मेरी सच्चाई की ऐसे निशानों से गवाही दी जिन्हें तुम देख रहे हो और ऐसे प्रकाशों से मेरी मुंह दिखाई की जिन्हें तुम पहचानते हो। मैं तुम्हें यह नहीं कहता कि तुम किसी प्रमाण के बिना मुझे स्वीकार करो और बिना किसी स्पष्ट प्रमाण के मुझ पर ईमान ले आओ अपितु मैं तुम्हारे मध्य यह घोषणा कर रहा हूँ कि तुम न्याय से काम लेते हुए अल्लाह के लिए खड़े हो जाओ। फिर जो निशान और प्रमाण और गवाहियाँ अल्लाह ने मेरे लिए उतारी हैं उन पर दृष्टि डालो।

हे इन्कार करने वालों के गिरोह ! यदि तुम मेरे निशानों को नेक लोगों के साथ अल्लाह के बर्ताव और पूर्व नबियों में उसकी गुजरी हुई सुन्नत के अनुसार न पाओ तो बेशक मेरा इन्कार कर दो और मुझे स्वीकार न करो। किन्तु यदि तुम मेरे निशानों को उन निशानों के समान पाओ जो पहलों में गुजर चुके हैं तो फिर ईमान की मांग है कि तुम मुझे स्वीकार करो और तुम इन निशानों से मुख फेरते हुए न गुजर जाओ। क्या तुम अल्लाह की दया पर आश्चर्य करते हो हालांकि उस (दया) का समय आ गया है और तुम देख रहे हो कि मिल्लत (इस्लामिया) का मांस घुल गया है और उसकी हड्डियाँ प्रकट हो चुकी हैं, उसके शत्रु बड़े बना दिए गए हैं और उसके सेवक छोटे। तुम्हें क्या हो गया है कि खुदा के निशानों को देखते हो फिर इन्कार कर देते हो और अपनी आंखों के सामने सत्य का सूर्य देखते हो परन्तु फिर भी विश्वास नहीं करते।

हे लोगो ! तुम पर अल्लाह की ओर से समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो गया, फिर किस ओर भाग रहे हो? और निश्चय ही उसके निशान हर ओर से प्रकट हो चुके हैं और इस्लाम गरीबी के गहरी गुफा में उतर गया है और उसके आदेश निलंबन का शिकार हो गए हैं और प्रत्येक आपदा और मुसीबतें उस पर आ पड़ी हैं और हर संकट ने उस (पर आक्रमण) के लिए अपनी कुचलियाँ प्रकट कर दी हैं तथा हर अशुभ बात ने उस पर अपना द्वार खोल दिया है। छटा हज़ार जिसमें मसीह

के प्रकट होने का वादा किया गया था वह गुज़र चुका है फिर तुम्हारा क्या विचार है कि क्या अल्लाह ने अपने वादे का उल्लंघन किया है या उसे पूरा किया है?

क्या तुम नहीं देखते कि समस्त देश इस मिल्लत (इस्लामिया) के विरुद्ध कैसे सहमत हो गए हैं और उन्होंने संयुक्त होकर उन दरिन्दों के समान इस पर आक्रमण कर दिया है जो वृक्षों के एक ही झुंड से बाहर निकल आते हैं तथा इस्लाम एक अकेला धिक्कृत व्यक्ति के समान हो गया है और प्रत्येक दुष्ट व्यक्ति का निशाना बन गया है तथा ग़ैरों की ईद है और हमारा चन्द्रमा जुलका'दा (परेशानियों) का है। हम कांपते और भयभीत व्यक्तियों के समान काफ़िरों से पराजित हुए बैठे हैं और वे हमारे धर्म पर कटाक्ष कर रहे हैं परन्तु (उनका यह कटाक्ष) भाला मारने की तरह नहीं (अपितु उससे कहीं अधिक है) ऐसे समय में मेरे रब्ब ने मुझे शताब्दी के सिर पर अवतरित किया क्या तुम विचार करते हो कि उसने बिना आवश्यकता के भेज दिया है? ख़ुदा की सौगंध मैं देख रहा हूँ कि यह युग की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। और सौभाग्य एक भगोड़े दास के समान मुख फेर के चला गया है। इस्लाम एक ऐसे व्यक्ति के समान था जिसकी बनावट उत्तम और चेहरा सुन्दर था परन्तु अब तो उसके चेहरे पर बिदअतों की स्याही और रिवाजों के घाव देखेगा। इस्लाम का स्वस्थ शरीर निर्बल, उसका निर्मल झरना गन्दे पानी और उसका प्रकाश अंधकारों में और उसके महल वीरानों में परिवर्तित हो गए हैं और वह एक ऐसे घर के समान हो गया जिसके निवासी उसमें नहीं हैं या वह ऐसा शहद का छत्ता है जिसमें केवल उसकी मक्खियां रह गई हैं। तुम यह कैसे विचार करते हो कि अल्लाह ने अल्लाह ने इस युग में कोई मुजद्दि नहीं भेजा जबकि यह समय (आकाशीय) दस्तरख़्वान के अवतरित होने का समय था। न कि इस (दस्तरख़्वान) के उठाए जाने का और तुम यह कैसे विचार करते हो कि दयालु ख़ुदा ने उन बिदअतों के समूह और बुराइयों एवं दुष्कर्मों की बाढ़ के समय सृष्टि का सुधार न चाहा अपितु मुसलमानों में उन्हीं में से एक दज्जाल को अधिकार दे दिया ताकि वह उन्हें पथभ्रष्टताओं के विष से तबाह करे। क्या ईसाइयों का छल-कपट पथभ्रष्ट करने में कुछ कम या अपूर्ण था कि ख़ुदा ने उस दज्जाल के द्वारा

उसे पूर्ण कर दिया।

अल्लाह की सौगंध ! यह बुद्धि और विवेक के झरने से निकली हुई राय नहीं अपितु यह आवाज़ गंधे की आवाज़ से भी बुरी आवाज़ है और ऊंटनी के (छोटे) बच्चे की आवाज़ से भी अधिक कमज़ोर है। इसके बावजूद एक ऐसे व्यक्ति के समर्थन के लिए निरन्तर निशान कैसे उतर गए। जिस व्यक्ति के बारे में खुदा जानता है कि झूठ बनाने वाला है। हे इन्कार करने वालों की जमाअत ! क्या तुम में हृदयों के संयम की थोड़ी सी भी हरकत शेष नहीं रही। किसी बन्दे के लिए यह संभव नहीं कि वह खुदा पर झूठ बांधे फिर भी खुदा उसकी ऐसी सहायता करे जिस प्रकार मान्य बन्दों की सहायता करता है। इस प्रकार तो संसार में अमन उठ जाएगा और मामला संदिग्ध और ईमान लड़खड़ा जाएगा और इसमें (सत्य) के अभिलाषियों के लिए बड़ी परीक्षा है। क्या तुम सोचते हो कि एक व्यक्ति हर रात और हर दिन तथा प्रातः और सायं अल्लाह पर झूठ बांधता है और कहता है कि मुझ पर वह्यी की जाती है हालांकि उसकी ओर कुछ भी वह्यी नहीं किया गया, फिर भी उसका रब्ब उसकी ऐसी सहायता करता है जैसी सहायता वह सच्चों की करता है। क्या सद्बुद्धि यह बात स्वीकार कर सकती है? तुम्हें क्या हो गया है कि तुम संयमियों के समान सोच-विचार नहीं करते क्या तुम्हारे लिए दज्जाल ही रह गए हैं तथा मुजद्दिद और सुधारक कहाँ गए? जबकि कुफ़्र के कीड़े धर्म को खा गए हैं। क्या तुम देखते नहीं?

क्या तुम नहीं देखते कि ईसाइयों के उलेमा किस प्रकार मूर्खों को धोखा दे रहे हैं और कथनों तथा कर्मों को मनमोहक रूप में प्रस्तुत करते हैं ताकि वे (उनकी ओर) प्रवृत्त हों। हे बुद्धिमानो ! अल्लाह ने तुम्हारे लिए उनके विरुद्ध एक प्रमाण उतारा फिर तुम उसके प्रमाण से क्यों लाभ नहीं उठाते।

और अल्लाह की क्रसम ! यदि उनके पहले और पिछले और उनके विशेष और सामान्य, उनके पुरुष और उनकी स्त्रियाँ एकत्र हो जाएं तो भी उस प्रकार का एक निशान प्रस्तुत नहीं कर सकते जैसे निशान हमारे रब्ब ने हमें प्रदान किए हैं चाहे परस्पर सहायक हों और इसका कारण यह है कि वे असत्य पर हैं और हम सत्य

पर तथा हमारा खुदा जीवित और उनका खुदा मुर्दा है और वह उनका चीत्कार और आवाज़ें नहीं सुनता और हमारा नबी वह नबी है जिसकी सच्चाई के निशान हम अपने इस युग में देख रहे हैं और उन (ईसाइयों) के हाथ में गन्दगी के ढेर पर उगी हुई हरियाली के अतिरिक्त कुछ नहीं। अतः हे लापरवाहो ! तुम अमन के किले से किस ओर भाग रहो हो।

हमारा नबी खातमुल अंबिया है आपके बाद कोई नबी नहीं सिवाए उसके जो आपके प्रकाश से प्रकाशित किया गया हो और उसका प्रकटन आप^स के प्रकटन का प्रतिबिम्ब हो। अतः अनुसरण के पश्चात् वह्यी का मिलना हमारा अधिकार और हमारा स्वामित्व है और वह हमारी प्रकृति की खोई हुई पूंजी है जिसे हमने उस अनुकरणीय नबी (के दान) से पाया है। इस प्रकार वह हमें खरीदे बिना मुफ्त दी गई। पूर्ण मोमिन वह है जिसे यह ने'मत (वह्यी) दान के तौर पर प्रदान की गई और जिसे उसमें से कोई भी भाग न दिया गया उसके बुरे अंजाम का भय है।

यह हमारा धर्म है जिसके फल हम हर पल देख रहे हैं तथा उसके प्रकाशों का अवलोकन कर रहे हैं और जो ईसाइयों का धर्म है तो (वास्तव में) वह एक ऐसे घर के समान है जिसका अंधकार लोगों को भयभीत करता है। क्या इस (ईसाइयत) में कोई निशान है जिसे हम देख सकें और अल्लाह की सौगंध यदि इस्लाम धर्म न होता तो समस्त लोकों के प्रतिपालक को पहचानना कठिन हो जाता। गुप्त अध्यात्म ज्ञान केवल इस इस्लाम धर्म से प्रकट हुए हैं और यह धर्म एक ऐसे वृक्ष के समान है जो अपने फल हर समय देता है और उनके खाने वालों को दा'वत देता जो बुद्धिमानों में से हैं और ईसाई धर्म वह एक ऐसे वृक्ष के समान है जिसे पृथ्वी से उखाड़ दिया गया हो और तेज़ आंधियों ने उसे उसके स्थान से हटा दिया हो और फिर चोर उचक्कों ने उसके अवशेष शेष न रहने दिए हों तथा उनके धर्म में केवल पुस्तकीय क्रिस्से हैं और अवलोकनों का अभाव है। यह बात स्पष्ट है कि मात्र क्रिस्से विश्वास प्रदान नहीं करते और उनमें वह शक्ति नहीं होती जो समस्त लोकों के रब्ब की ओर खींच कर लाए (आकर्षण शक्ति) केवल दृष्टिगोचर निशानों और मौजूद चमत्कारों में होती है। तथा इस से हृदय परिवर्तित हो जाते और लोग पवित्र

होते और समस्त दोष दूर हो जाते हैं और यह इस्लाम और हमारे नबी सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण से विशेष्य हैं और मैं इस पर साक्षियों में से हूँ अपितु मैं उन्हीं लोगों में से हूँ और अनुभवी लोगों में से हूँ और इससे हम इन्कार करने वालों पर समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करते हैं। वह धर्म क्या वस्तु है जो उस घर के समान हो जिसके चिन्ह मिट चुके हों या उस बाग़ के समान है जिसके वृक्ष जड़ से उखाड़ दिए हों। कोई बुद्धिमान ऐसे धर्म पर प्रसन्न नहीं होगा जो ऐसे घर के समान हो जो वीरान हो चुका हो या ऐसे सूटे की तरह हो जो टूट चुका हो या उस स्त्री के समान हो जो बांझ हो गई हो या उस आंख के समान हो जो अंधी हो गई हो। अतः समस्त प्रशंसाएं अल्लाह तआला के लिए हैं कि इस्लाम एक जीवित धर्म है जो मुर्दों को जीवित करता है और बंजर धरती को हरियाली देता है जीवन को शोभा प्रदान करता है और खुदा की सौगंध ! मुझे ऐसे लोगों पर बहुत आश्चर्य है जो कहते हैं कि हम इस्लाम के सम्प्रदायों में से हैं परन्तु इसके बावजूद इस धर्म के वरदानों और हमारे नबी सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वरदानों और सर्वज्ञ खुदा के वार्तालाप से इन्कार करते हैं। उन्हें क्या हो गया है कि अपनी नींद से नहीं जागते और अपनी बुद्धिमत्ता की आंखें नहीं खोलते।

अतः मैं उनकी इस प्रकार की दशा से अल्लाह की शरण चाहता हूँ और मुझे उन पर और उनके कथनों पर बड़ा आश्चर्य होता है। निश्चय ही मैं उनमें खुदा की ओर से मामूर के तौर पर खड़ा हूँ परन्तु वे ईमान नहीं लाते और मैं अल्लाह की ओर बुलाता हूँ परन्तु वे नहीं आते और वे यों गुज़र जाते हैं जैसे उन्होंने सुना ही नहीं, हालांकि वे सुन रहे होते हैं। क्या उन तक उन लोगों के वृत्तान्त नहीं पहुंचे जो अपने रसूलों को झुठलाया करते थे और रुकते नहीं थे। क्या उनके लिए कुर्आन में मुक्ति मौजूद है जिसे वे दृढ़तापूर्वक थामे हुए हैं। अल्लाह की क्रसम ! मैं (कृपालु) खुदा की ओर से हूँ। मेरा रब्ब मुझे वार्तालाप करता ओर कृपा तथा उपकार के साथ मेरी ओर वह्यी करता है मैंने उसे ढूंढा तो उसे पाया और मैंने उसे खोजा तो वह मुझे मिल गया और एक मृत्यु के पश्चात् मुझे जीवन प्रदान किया

गया और नश्वर वस्तुओं को छोड़ देने के पश्चात् मैंने सत्य को पाया। निश्चय ही हमारा रब्ब अभिलाषियों को नष्ट नहीं करता और जिसने विश्वास को तलाश किया वह उसे सन्देहों में पड़ा नहीं रहने देता। तुमने हर प्रकार की युक्तियों को आजमा कर देखा। यदि ख़ुदा की कृपा और उसकी दया न होती तो मैं अवश्य तबाह होने वालों में से होता।

और मेरे रब्ब ने मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया “तू हमारी आंखों के सामने है” फिर उसने हर मैदान और युक्ति करने वालों की प्रत्येक युक्ति के अवसर पर अपने इस वादे को पूरा किया और मेरी सहायता की और मुझे अपने पास शरण दी। तुम में से प्रत्येक व्यक्ति ने मुझ पर आक्रमण किया किन्तु कोई मनुष्य मुझ पर विजयी न हो सका तब वे सब के सब असफल लौटे। जिसे अल्लाह ने मिलाने का आदेश दिया था उसे तुम ने काटा तथा तुमने लोगों में यह प्रसिद्ध कर दिया कि ये लोग मुसलमानों में से नहीं हैं और तुम ने चाहा कि हम बे यारो मददगार हो जाएं, परन्तु अल्लाह ने तुम्हारी ये इच्छाएं तुम पर उल्टा दीं और हमारे नाम को संसार में फैला दिया क्या ख़ुदा पर झूठ बांधने वालों का यही दण्ड है?

हे लोगो ! तुम्हारे दो रंग हैं एक हृदय का रंग और दूसरा जीभ का रंग है। जीभों पर तो ईमान है और हृदय में कुफ़्र है। तुमने कथनों को कृपालु ख़ुदा के लिए और कर्मों को शैतान के लिए बना रखा है। अतः कुर्आन के मार्ग-दर्शन से तुम्हारा क्या काम? तुम ख़ुदा की किताब में तो पढ़ते हो कि ईसा^{अ.} ने मृत्यु का प्याला चखा फिर तुम उसे भौतिक शरीर के साथ आकाशों पर भी चढ़ाते हो। अतः आयतों पर तुम्हारे ईमान लाने की वास्तविकता मुझे समझ नहीं आती।

तुम अपनी नमाज़ों में तिलावत करते हो कि ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा गए जबकि शारीरिक रफ़ा और जीवन नहीं^① (पढ़ते) फिर नमाज़ के बाद मेहराब के

① और यह जो अल्लाह तआला ने **يُعِيسَىٰ إِبْنِ مَرْيَمَ وَرَافِعَكَ إِلَيْنَا** कहा है तो इसके अर्थ रूह के साथ शरीर का उठाया जाना नहीं है। इस का तर्क यह है कि "रफ़ा" से पूर्व "तवफ़फ़ा" का वर्णन है और यह "रफ़ा" मृत्योपरांत हर मोमिन का अधिकार है और यह कुर्आन हदीसों तथा रिवायतों से सिद्ध है तथा यहूदी ईसा^{अ.} के रफ़ा का इन्कार करते थे और कहते थे कि ईसा का

खंभे के पास चौकड़ी मार कर अपना मुख साथियों की ओर करते हुए यह भी कहते हो कि जो उनकी (हज़रत ईसा^{अ.} की) मृत्यु की आस्था रखे वे काफ़िर हैं और उसका दण्ड नर्क है और उसे काफ़िर कहना वैध हो जाता है। ये हैं तुम्हारी नमाज़ें और ये हैं तुम्हारे वाक्य। तुम कुर्आन में **فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي** "फलम्मा तवःफ़ैतनी" पढ़ते हो और उस पर ईमान लाते हो फिर तुम इसके अर्थों को समझते हुए पीठ पीछे डाल देते हो। क्या तुम अल्लाह की किताब में ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु के उपरान्त उनके उतरने का वर्णन पाते हो? अतः हे बुद्धिमानो ! फ़लम्मा तवःफ़ैतनी के क्या अर्थ हुए?

क्या तुम ईमान लाने के पश्चात् अल्लाह की किताब का इन्कार करते हो? और अल्लाह से नहीं डरते और अपने भाई-बन्धुओं की प्रसन्नता चाहते हो। क्या तुम उस व्यक्ति से शत्रुता करते हो जो इस सदी के सिर पर भेजा गया और वह तुम में से है और इस उम्मत का सदस्य है और वह यथा समय तथा ईसाइयत के उपद्रवों के अवसर पर आया। उसने अल्लाह के ग्रन्थों के खुले-खुले सत्य और बुद्धिमत्ता के साथ पा लिया और खुदा ने प्रकाशमान निशानों के साथ उसकी सच्चाई की गवाही दी। तुम्हें क्या हो गया है कि खुदा की रहमत को उसके उतरने के पश्चात् तुम रद्द कर रहे हो और तुम कृतज्ञों में से नहीं बनते। तुम्हारी रात ने इस्लाम को ढक लिया और तुम्हारी जारी बाढ़ तीव्रता से उस की ओर बढ़ी तथा तुम समझते हो कि तुम अच्छा कार्य कर रहे हो। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम समय और उसकी आपदाओं तथा कुफ़्र के तूफ़ान और उसके आक्रमणों की ओर नहीं देखते? क्या तुम में विवेक रखने वाला कोई पुरुष नहीं। खुदा की सौगंध ! हमें बहुत आश्चर्य हुआ और हमें हैरत में डाल दिया उसने जो तुम कहते हो और जो तुम करते हो तथा जो तुम काफ़िरो के मुकाबले में योजनाएं बनाते हो और ईसाइयों के उत्तर में

मोमिनो के समान रफ़ा नहीं होगा और न वह जीवित किए जाएंगे। कारण यह कि वे उसे काफ़िर ठहराते थे और मोमिनो में से नहीं समझते थे। इसलिए खुदा ने इस आयत और अन्य आयतों में उनका खण्डन किया **بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ** कि अल्लाह ने उसका अपनी ओर रफ़ा किया और यह कि यहूदी झूठों में से हैं। इसी से।

जो तुमने तैयारी की है तुम स्वयं अपने हाथों से अपनी जड़ काट रहे हो।

और अपने कथनों के द्वारा धर्म के शत्रुओं की सहायता कर रहे हो। खुदा ने इस तूफान के समय एक बन्दे को अवतरित किया है और तुम हो कि उसको काफ़िर कह रहे हो और उसे ईमान की परिधि से बहिष्कृत कर रहे हो जबकि वह चमकते हुए प्रकाश और सुन्दर अध्यात्म ज्ञानों के साथ आया है ताकि इस्लाम की सच्चाई पर खुदा का प्रमाण हो और ताकि धर्म का सूर्य अंधकार से बाहर निकल आए और ताकि अल्लाह तआला उससे क्षति और कठिन समय को दूर करे और ताकि वह इस्लाम की छाया को लम्बा करे और उसके फलों को बढ़ाए तथा उसके प्रकाश खुदा की प्रजा को दिखाए और ताकि लोग देख लें कि वह (इस्लाम) प्रत्येक दूसरे धर्म से गुणवत्ता और संख्या, सुधार एवं औचित्य में बढ़कर है। फिर भी तुम उसका इन्कार कर रहे हो अपितु तुम प्रथम श्रेणी के शत्रु हो। हम ने तो यह सोचा था कि तुम युग के चुने हुए तथा प्रयासों के लिए जारी झरना हो, परन्तु प्रकट यह हुआ कि तुम गन्दा पानी हो और उस गंदलेपन में समस्त संसार में तुम जैसा कोई उदाहरण नहीं पाया जाता। अतः तुम ने झगड़ा किया और बहुत झगड़ा किया यहां तक कि पहले समस्त लोगों से आगे निकल गए और तुम ने सीमाओं का अतिक्रमण किया, समझौते को भंग किया और मुसलमानों को काफ़िर ठहराया।

क्या तुम्हें यह मालूम नहीं कि मैं अज्ञात कोने में छुपा हुआ एक बन्दा था जो सम्मान और मान्यता से इतना दूर था कि मेरी ओर संकेत तक नहीं किया जाता था तथा मुझ से किसी लाभ या हानि की आशा नहीं रखी जाती थी और न ही मैं प्रसिद्ध लोगों में से था। फिर मेरे रब्ब ने मेरी ओर व्हयी की और कहा कि मैंने तुझे चुना। अतः तू कह कि मैं खुदा की ओर से मामूर हूं और मैं सर्वप्रथम ईमान लाने वाला हूं और उस (अल्लाह) ने कहा कि “तू मुझ से ऐसा है जैसा कि मेरा एकेश्वरवाद और अद्वेय होना। अतः वह समय आता है कि तू सहायता दिया जाएगा और संसार में प्रसिद्ध किया जाएगा तथा इतनी बहुतायत से लोग तेरी ओर आएंगे कि जिन मार्गों पर वे चलेंगे वे गहरे हो जाएंगे। तेरी सहायता वे लोग करेंगे कि जिन के हृदयों में हम अपनी ओर से इल्हाम करेंगे। हर दूर के मार्ग से

तेरे पास उपहार आएंगे” यह है जो मेरे रब्ब ने कहा। फिर तुम देखते हो कि उसने किस प्रकार सहायता करके दिखाई। लोग मेरे पास समूह के समूह आए और मुझे उपहार इतनी अधिक मात्रा में भेजे गए जैसे कि वह एक सागर है जो हर पल ठाठें मार रहा है। यह अल्लाह के निशान हैं जिनके प्रकाश को तुम देख नहीं रहे।

और तुम उनके प्रकट होने के पश्चात् भी इन्कार कर रहे हो। तुम मेरे मामले में क्यों विचार नहीं करते। मेरे रब्ब के ख़बर देने से पूर्व क्या तुम ने मेरा नाम भी कभी सुना था और मैं लोगों में से ऐसे साधारण व्यक्ति के समान गुप्त था जो विशेष और सामान्य लोगों में कभी जिसकी चर्चा न हुई हो और मुझ पर एक लम्बा समय गुज़रा कि मैं कोई उल्लेखनीय चीज़ न था और मैं एक ऐसे व्यक्ति के समान जीवन व्यतीत कर रहा था कि जिसे लोग छोड़ चुके हों और मेरी बस्ती यात्रियों के आने से बहुत दूर और दर्शनार्थियों की दृष्टि में बहुत तुच्छ स्थान था जिसके टीलों के निशान मिट चुके थे और जहां ठहरना अप्रिय था, जिसकी बरकतें कम हो गई थीं और जिसके कष्ट और कठिनाइयां बढ़ गई थीं और जो लोग वहां (क्रादियान में) रहते थे वे जानवरों के समान थे और वे अपने बाह्य अपमान के कारण निन्दा करने वालों को निमंत्रण दे रहे थे। वे नहीं जानते थे कि इस्लाम क्या है तथा कुर्आन क्या है और आदेश क्या हैं। अतः यह अल्लाह के अद्भुत प्रारब्ध में से है कि उसने मुझे इस निर्जन स्थान में अवतरित किया ताकि मैं धर्म के शत्रुओं के लिए बिरछा के समान बन जाऊं।

और उसने मुझे मेरे अज्ञातवास के समय और मेरी मान्यता के दिनों में शुभ सन्देश दिया कि मैं अति शीघ्र प्रजा के ध्यान का केन्द्र बन जाऊंगा और काफ़िरों के आक्रमण के सामने एक दृढ़ दीवार बन जाऊंगा और मैं अध्यक्ष के पद पर बिठाया जाऊंगा और मैं हृदयों के लिए सीना बना दिया जाऊंगा, वे सुदूर से मेरे पास समूह के समूह उपहार और बहुमूल्य तुहफे लेकर आएंगे। यह आकाशीय वह्यी है। जो ख़ुदा तआला की ओर से है, कोई मनगढ़त बात नहीं और न ही हृदय की इच्छा से यह कलाम बनाया गया है अपितु ये मेरे महान और श्रेष्ठतम ख़ुदा का वादा था जो उसके प्रादुर्भाव से पूर्व ही समस्त संसार को लिखा गया

और प्रकाशित किया गया तथा उसे शहरों और बस्तियों में भेज दिया गया फिर वह दोपहर के सूर्य के समान प्रकट हो गया। तुम देखते हो कि लोगों के समूह मेरे पास इतने उपहार लेकर आते हैं जो गिनती से बाहर हैं। क्या इसमें बुद्धिमानों के लिए निशान नहीं? और यदि तू मुझे झूठा समझता है तो प्रजा के सामने मेरा रहस्य खोल और मेरा पर्दा फाड़ दे। इस बस्ती के निवासियों से पूछ। कदाचित्त तुझे शत्रु की ओर से सहायता मिल जाए। मैंने तो तुझे यह बात बता दी है ताकि तू छान-बीन करके सही मार्ग प्राप्त कर ले।

अतः यदि तुझे ख़ुदा का भय नहीं तो फिर अपनी डगर पर चलता जा, अल्लाह तेरे स्थान पर किसी अन्य को ले आएगा और यदि तू उस से डरता है तो फिर तर्क बिल्कुल स्पष्ट है और मामला आसान है। इस्लाम पतझड़ के थपेड़े खाए है। अतः अब देख क्या बसन्त ऋतु और रुचिकर प्रातः की समीर का समय नहीं आया? और तू देखता है कि हमारे इस युग में हृदय दुर्भिक्ष का शिकार हो गए हैं और वर्षा की शुभसूचना लाने वाली हवाओं ने उसे छोड़ दिया है। फिर ख़ुदा की दया अपनी मूसलाधार वर्षा के साथ आई और दुर्भिक्ष का निवारण किया तथा कमाल कर दिया और अल्लाह ने इस युग में चाहा कि वह उन कांटों को दूर करे जो इस्लाम के पैरों को घायल कर रहे हैं और वह उसके मार्ग में आने वाले प्रत्येक कांटेदार वृक्ष को काट दे और पृथ्वी को दुष्टों से पवित्र करे। अतः तू स्वीकार कर या न कर। मैं ही बसन्त ऋतु की वर्षा हूँ तथा मैंने स्वार्थपरायणता से दावा नहीं किया अपितु मैं बिना किसी नमूने के सृष्टि करने वाले ख़ुदा की ओर से भेजा गया हूँ ताकि मैं संसार को उसकी मूर्तियों से और लोगों को कामवासनाओं तथा उनके शैतान से पवित्र करूँ। क्या तू उस विपत्ति को नहीं देखता जो इस मिल्लत पर आ पड़ी है तथा किस प्रकार एक ख़राबी पर ख़राबियों की बढ़ोतरी हो गई है।

और संक्रामक रोग घर वालों से निकल कर पड़ोसियों तक जा पहुंचा है तथा मृत्यु ने मरने वाले को उसी प्रकार पुकारा जैसे उसे निमंत्रण दिया था और धर्म मानव-पुजारियों के कदमों में रोंद दिया गया है और शत्रुओं ने उस पर अजगर के समान आक्रमण किया यहां तक कि वह एक ऐसी बस्ती के समान हो गया जिसे

बाढ़ ने तबाह और बर्बाद कर दिया हो या उस पृथ्वी के समान जिन पर घोड़े चढ़ दौड़े हों। इस अवसर पर अल्लाह ने यह देखा कि पृथ्वी वीरान हो गई है और लोगों के विचार बिगड़ गए हैं और उनमें केवल सांसारिक इच्छाएं तथा लोभ एवं लालच शेष रह गए हैं तथा सांसारिक लोग उस पर झुक गए हैं। अतः ऐसे समय में खुदा ने तुम्हारे मध्य मुझे धर्म के नवीनीकरण तथा मिल्लत के सुधारने और संभालने के लिए खड़ा किया। अतः विचार करो। खुदा तुम पर दया करे। क्या मैं तुम्हारे पास झूठ बनाने वालों के समान असमय आ गया हूं ? या कि मैं शैतानों की छीना-झपटी के समय तुम्हारी सहायता के लिए आ पहुंचा हूं। जान लो खुदा तुम्हारा मार्ग-दर्शन करे कि यह मामला खुदा के मृत्यु देने तथा प्रारब्ध से है तथा यह प्रकाश किसी अंधकार से नहीं अपितु उस पूर्ण चन्द्रमा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है। कितने ही भेड़िए हैं जिन्होंने खुदा के बन्दों को चीर फाड़ दिया। क्या तुम विचार नहीं करते?

और कितने ही चोर-उचक्के हैं जिन्होंने धर्म के मालों को लूट लिया है। क्या तुम देखते नहीं? तुम्हारा क्या विचार है, क्या अब भी दयालु खुदा की सहायता का समय नहीं आया। नहीं, कदापि नहीं अपितु खुदा की कृपा और उपकार के दिन आ गए हैं। मैं स्पष्ट प्रमाण के बिना तुम्हारी ओर नहीं आया जबकि मेरे पास खुदा की ओर से आने वाली गवाहियाँ मौजूद हैं जो विश्वास पर विश्वास को बढ़ाती हैं और मैं अपनी क्रौम के जीवित लोगों में एक मुर्दे के समान था और घर में भी बेघर था, लोगों की निगाहों से गुप्त और अज्ञात। स्वयं क़ादियान की बस्ती में कुछ लोगों के अतिरिक्त मुझे कोई न जानता था और मैं अज्ञातवास में जीवन व्यतीत कर रहा था। पुरुषों और स्त्रियों में से कोई भी मेरे पास नहीं आता था। मैं युग के लोगों में गुप्त था। मैं किसी भी देश में नहीं गया और न ही मैंने संसार के देशों की यात्राएं की थीं। न अरब देखा था, न इराक़ की ओर गया था तथा खुदा की सौगन्ध ! मैं आर्थिक दृष्टि से समृद्ध भी न था। मैंने युग की (छाती) से दूध नहीं पिया। हां एक बांझ के स्तन से जिससे पूर्ण रूप से दूध की आशा नहीं की जा सकती। मैंने केवल ऐसे जानवर की पीठ पर सवारी की जिसमें ठाठ-बाट का कोई लक्षण न था।

अतः मेरे रब्ब ने उस युग में मुझे शुभ सन्देश दिया कि वह बहुत शीघ्र समस्त अभियानों में मेरे लिए पर्याप्त होगा और मुझ पर बुलन्दियों की प्रत्येक नेमत का द्वार खोल देगा और जैसा कि मैंने वर्णन किया है कि यह समय बड़ी तंगी और भिन्न-भिन्न प्रकार की आवश्यकताओं का था (ऐसे समय में) मेरे रब्ब ने मेरे समस्त मामलों और मेरे मार्गों में सुविधा और आसानी पैदा करने की तथा मेरी समस्त आवश्यकताओं का स्वयं अभिभावक होने की मुझे शुभ सूचना दी। अतः उस समय तथा अमन से दूर युग में मुझे आदेश दिया गया कि एक ऐसी अंगूठी बनाई जाए जिसमें उन भविष्यवाणियों के निशान हों ताकि वह उन (शुभ सन्देशों) के प्रकट होने के समय सत्याभिलाषियों के लिए निशान हों ताकि वह उन (शुभ सन्देशों) के प्रकट होने के समय सत्याभिलाषियों के लिए एक निशान और शत्रुओं पर प्रमाण हो। हे बुद्धिमानो^① ! यह अंगूठी मौजूद है और यह उसका निशान है फिर ख़ुदा ने अपने वादे के अनुसार किया तथा उसकी कृपा का बादल जैसे गरजा वैसे ही बरसा तथा ख़ुदा ने छोटे से बीज को ऊंचे वृक्ष और पके हुए फल बना दिया तथा इससे इन्कार की कोई गुंजायश नहीं।

चाहे काफ़िरों के समस्त समुदाय परस्पर सहमत हो जाएं क्योंकि गवाहों की गवाही ने प्रत्येक इन्कार करने वाले के मुंह को काला कर दिया है। दोपहर के सूर्य का इन्कार कैसे संभव हो सकता है जब मेरे रब्ब की बात पूर्ण हुई तथा ख़ुदा ने मेरी थैली को भर दिया तो लोग मेरे द्वार पर दौड़े चले आए और मैं एक बूंद से सागर तथा कण से बड़े-बड़े पर्वतों के समान हो गया और छोटे पौधों से फलों से लदे वृक्ष तथा एक कीड़े से रणभूमि का महान योद्धा बन गया। निश्चय ही इसमें विवेक रखने वालों के लिए बहुत बड़ा निशान है। इसी प्रकार मेरे रब्ब ने मेरे प्रारंभ में ही मेरी दीर्घ-आयु का शुभ सन्देश दिया था तथा फ़रमाया था कि “तू दूर की नस्ल देखेगा।” अतः मेरे रब्ब ने इतनी लम्बी आयु प्रदान की कि मैंने

① इस अंगूठी को बने हुए तीस वर्ष से अधिक समय हो चुका है और वह अब तक ख़ुदा की कृपा एवं दया से नष्ट नहीं हुई तथा उस समय मेरे सम्मान का कोई निशान तथा मेरी ख्याति की कोई चर्चा तक न थी तथा मैं अज्ञातवास में सम्मान एवं मान्यता से वंचित था। इसी से।

अपनी नस्ल और नस्ल की नस्ल देखी तथा उसने मुझे निपुत्र के नहीं रखा। जिक की कोई सन्तान नहीं रखा और यह निशान एक सदप्रवृत्ति मनुष्य के लिए पर्याप्त है। अतः हे विद्वानो ! मुहद्दिसो ! तथा धर्माचार्यो ! मुझे फ़त्वा दो, क्या तुम्हारी अक्लें वैध ठहराती हैं कि ख़ुदा एक ऐसे व्यक्ति के साथ जिसे वह जानता है कि वह उस पर झूठ बांधता तथा उसकी आंखों के सामने झूठ बोलता है। इन समस्त मामलों में यह व्यवहार करे।

और क्या तुम्हें अल्लाह की सुन्नत में कहीं यह मिलता है कि वह किसी झूठ गढ़ने वाले को एक लम्बी आयु तक बड़ी प्रचुरता के साथ अपनी परोक्ष की बातों से सूचित करता रहे और सच्चे नबियों के समान उस पर अपनी प्रत्येक नेमत पूर्ण कर दे तथा उसे हर मैदान में स्पष्ट मान और सम्मान से सहायता दे और उस झूठ बांधने के बावजूद उसे इतनी छूट दे कि वह जवानी से बढ़ापे तक जा पहुंचे और हजारों मित्र उस से मिला दे तथा वह उसकी तो सहायता करे और उसे कष्ट देने वाले शत्रुओं को ऐसे धिक्कार दे जैसे कुत्तों को धिक्कारा जाता है और उसे वह कुछ दे जो उसके किसी समकालीन को न दिया गया हो और जो भी उस से मुबाहला करे वह उसे उसकी आंखों के सामने अंत कर दे या उसे लज्जित एवं अपमानित करे तथा जो व्यक्ति संसार पर झुका हुआ हो और उसके सौन्दर्य से प्रेम करने वाला हो, झूठ बनाने वाला तथा झूठा हो क्या तुमने उसकी सहायता (मेरी) इस सहायता के समान देखी है? इस मेरी मदद की तरह तुमने अल्लाह की मदद उसके लिए देखी है? तुम्हें क्या हो गया है तुम संयमियों के समान विचार नहीं करते। अल्लाह तुम्हारा मार्ग-दर्शन करे। तुम कब तक ख़ुदा के समर्थित बन्दों को काफ़िर ठहराते रहोगे? तुम मुझे झुठलाते हो तथा मैं नहीं जानता कि तुम मुझे किसी कारण से झुठलाते हो !

क्या मैंने अल्लाह की किताब का इन्कार किया है या उसका जो रसूल लेकर आए? या तुमने अल्लाह के निशानों को नहीं देखा जिसके कारण तुम सन्देह कर रहे हो या मैं तुम्हारे पास असमय आया हूं। अतः तुमने कहा यह आया है जैसे झूठे आया करते हैं। तुम्हें क्या हो गया है कि न तो तुम सत्य को पहचानते हो

और न उसे देखते हो। पहले उम्मतों के झूठ गढ़ने वालों और खुदा पर झूठ बांधने वाली नश्वर सृष्टि पर दृष्टि दौड़ाओ, कि अल्लाह ने किस प्रकार उनके झूठ गढ़ने के कारण उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया, उन्हें तबाह किया तथा उनका नामोनिशान तक शेष न रहने दिया और उनके निशान मिटा दिए, उनके सहायकों का विनाश कर दिया इसलिए कि वे झूठे थे और सच्चों से मुकाबला करते थे और यदि सत्य और असत्य के मध्य खुदा की ओर से पृथक्ता न होती तो शान्ति उठ जाती तथा अपवित्र और पवित्र तथा निर्जन और आबादियां समान हो जाते तथा मान्य और धिक्कृत लोगों के मध्य अन्तर न रहता।

खुदा तुम पर दया करे ! तुम जान लो कि झूठ गढ़ने की आयु थोड़ी होती है तथा झूठ गढ़ने वाला अपनी आयु के आखिर में अपमानित होता है। इसके अतिरिक्त झूठ गढ़ने वाले लोग निराश्रय और और निःसहाय होते हैं। अंतर्दामी रब्ब उनकी सहायता नहीं करता और न ही अल्लाह उनके पक्ष में गवाही देता है और न उनके तुणीर में तीर होते हैं।

केवल बातें ही उनकी पूंजी होती हैं न उनका समर्थन किया जाता है और न उन्हें मान्य पुरुषों के समान बरकत दी जाती है और खुदा का नियम यही है कि जब झुठलाने वालों में से कोई किसी सच्चे का मुकाबला करता और उससे युद्ध करने के लिए खड़ा होता है अथवा मुबाहले की नीयत से उससे पंजा लड़ाता है तो खुदा उसे अनादर और अपयश के साथ पृथ्वी पर पटक देता है। खुदा का नियम इसी प्रकार से जारी है ताकि वह सच्चों और झूठ गढ़ने वालों के मध्य अन्तर कर दे क्योंकि खुदा की ओर से झूठों की सहायता नहीं की जाती और न अल्लाह की रूह से उनका समर्थन किया जाता है और न उन्हें आकाशीय प्रकाश प्राप्त होता है और न सदाचारियों का व्यंजनों से भरा थाल उन्हें प्रस्तुत किया जाता है, वे संसार के कुत्ते होते हैं। तू उन्हें उस पर झुके हुए पाएगा तथा तू उनके सीनों को इस (संसार) की लालसा से भरा हुआ पाएगा तथा वे स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देने वाले हैं और अन्ततः वे अपमानित किए जाते हैं। तब एक अन्तर करने वाला अस्तित्व पहचाना जाएगा जो अपवित्र को पवित्र लोगों से पृथक् करेगा और वे

लोग जो अपने प्रतिपालक के निकट सच्चे ठहरते तो खुदा ने उनके ध्यान की बागडोर को संसार से फेर दिया तथा उनके हृदयों को अपनी ओर झुका लिया।

अतः उन्होंने उसके लिए काला दिन और लाल मृत्यु (अर्थात् शहीद होने की मृत्यु) को चुन लिया तथा अपना बाह्य और आन्तरिक उसको दे दिया और अपने सामर्थ्य तथा शक्ति से उसकी ओर दौड़े चले आए तथा अपने प्रेम के संस्कार अदा किए और अपने प्रेम का तवाफ़ (परिक्रमा) पूर्ण किया। ये लोग इस संसार में तथा प्रतिफल और दण्ड के दिन अपमानित नहीं किए जाएंगे तथा वे सम्मान और ऊंचाई के महलों में निवास करेंगे। शत्रुओं के मुकाबले पर अपनी कोई ग़लती नहीं देखेंगे तथा खुदा उन्हें हर पराजय से सुरक्षित रखेगा और उन्हें क्षमा करेगा तथा हर ठोकर के समय उन्हें ऊंचा करेगा अतः वे सुरक्षित जीवन व्यतीत करेंगे। उनके और झूठ गढ़ने वालों के मध्य वही अन्तर है जो दोपहर के सूर्य और अंधेरी रात के मध्य अथवा शुद्ध दूध और नितान्त खट्टे सिरके के मध्य होता है। देखने वालों के लिए उनके मस्तक का प्रकाश प्रकट होता है। उन्होंने संसार रूपी स्त्री और उसके सौन्दर्य को अलविदा कह दिया और परलोक को अपनाया और उसकी सन्तुष्टि का आनन्द प्राप्त किया। अपनी इच्छाओं का परित्याग करने के पश्चात् वे खुदा के साथ अपने संबंध के परिणामस्वरूप आराम प्राप्त हुए तथा खुदा की चौखट पर गिर गए और संसार से पृथक् होकर उसकी ओर दौड़कर आ गए और संसार में से मोटे कपड़े और रद्दी सब्जी पर सन्तुष्ट हो गए।

अतः उसके परिणामस्वरूप अल्लाह ने उनकी आत्माओं को उत्तम भोजनों के साथ-साथ चमकदार लिबास प्रदान किए तथा जो कुछ उन्होंने छोड़ा था उनकी ओर दोबारा लौटा दिया गया। अल्लाह अपने निष्कपट लोगों के साथ ऐसा ही किया करता है। अल्लाह ने उन पर दृष्टि डाली तो उन्हें पवित्र एवं शुद्ध पाया तथा उसने देखा कि वे उसे उसके ग़ैर पर प्राथमिकता देते हैं तो उसने उन्हें ग़ैरों पर प्राथमिकता दी तथा उसने देखा कि वे उसके हैं तो वह उनका हो गया और उसने उन्हें प्रकाशों के उतरने का स्थल बना दिया। इसी प्रकार उसका यही नियम पहलों से पिछलों तक जारी है तथा उनके लिए बहुत से कुएं खोदे जाते हैं, किन्तु खुदा

स्वयं अपने हाथों से उन्हें बाहर निकाल लेता है और उन्हें विपत्ति इसलिए नहीं पहुंचती कि वे तबाह किए जाएं अपितु इसलिए कि ख़ुदा उसके द्वारा चमत्कार दिखाए तथा कोई आपदा उन पर इसलिए नहीं उतरती कि वे तबाह किए जाएं अपितु इसलिए कि ताकि ख़ुदा उसके द्वारा यह सिद्ध करे कि यह समर्थित लोगों में से हैं। यही वे लोग हैं जिन के उनके प्रिय (ख़ुदा) ने चुन लिया है। अल्लाह किसी क्रौम को उस समय तक अपमानित नहीं करता जब तक उन निष्कपट लोगों के हृदय उन दुष्ट लोगों के कष्टों से पीड़ाग्रस्त न हो जाएं।

सृष्टि में ख़ुदा का यही नियम जारी है और जब वे ख़ुदा की ओर ध्यान करते हैं तो उनकी (दुआ) सुनी जाती है और वे जब विजय की दुआ करते हैं तो हर कृपण अत्याचारी निराश और असफल हो जाता है, वह ख़ुदा की चादर के नीचे जीवन व्यतीत करते हैं। तू उन्हें जीवित देखता है, हालांकि वे ख़ुदा में लीन हैं। क्या तू विचार करता है कि ऐसे लोग केवल पूर्व युग में ही हो चुके हैं और यह कि ख़ुदा पिछलों में उन जैसे लोग पैदा करना नहीं चाहता। तुझ पर अफ़सोस ऐसा विचार सरासर ग़लती है। हे (भाई) ख़ुदा तेरा भला करे, तू समस्त जगत के प्रतिपालक ख़ुदा के नियमों से बहुत दूर जा पड़ा। यदि उन (रसूलों) का अस्तित्व न होता तो पृथ्वी तथा उसमें बसने वालों में एक उपद्रव फैल जाता। यही कारण है कि क्रयामत तक के लिए उनका अस्तित्व अनिवार्य और आवश्यक हो गया।

मेरे प्रतिपालक ने मुझे इसलिए भेजा ताकि वह काफ़िरों के हाथों को तुम तक पहुंचने से रोके और तुम्हें अध्यात्म प्रकाशों के पात्र बनने के लिए तैयार करे। अतः क्या हो गया है कि तुम धन्यवाद नहीं करते अपितु हिदायत से विमुख हो रहे हो। क्या तुम समझते हो कि तुम्हें निरंकुश छोड़ दिया जाएगा। प्रत्येक आज के लिए एक कल है। मैं अपनी स्वार्थपरायणता के लिए तुम्हारे पास नहीं आया। और न मुझे प्रकट होने की रुचि थी अपितु मैं चाहता था कि क्रब्र वालों के समान गुप्त जीवन व्यतीत करूं, परन्तु मेरे रब्ब ने मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझे बाहर निकाला तथा ख्याति एवं उत्थान से मेरे दूर भागने के बावजूद उसने समस्त विश्व में मेरा नाम प्रकाशित किया। आयु का एक भाग मैंने एक गुप्त रहस्य के समान या एक

भयभीत साही के समान या मिट्टी में सड़ी-गली हड्डी या खजूर की गुठली के तुच्छ रेशे के समान गुज़ारा। फिर मेरे रब्ब ने मुझे वह कुछ दिया जो शत्रुओं को क्रोधित कर रहा है और प्रकाशमान वह्यी से उसने मुझ पर उपकार किया जिस पर मूर्ख भड़क उठे और अत्याचार किया तथा उनमें से हर एक, दूसरे से अधिक उद्दण्ड था। उनकी ओर से मेरे विरुद्ध चक्रवात तथा अत्यन्त तीव्र आंधियां आईं। अतः हे बुद्धिमानो ! तुमने उनका अंजाम देख लिया। तत्पश्चात् मैं तुम्हें अल्लाह की ओर बुलाता हूँ। यदि तुम स्वीकार करो तो अल्लाह तुम्हारे लिए पर्याप्त है और यदि इन्कार करोगे तो अल्लाह ही तुम्हारा हिसाब लेने वाला है। सलामती हो उस पर जिस ने हिदायत का अनुसरण किया। हे जवानो ! खुदा तुम पर दया करे तुम संसार में एक महान क्रान्ति देख रहे हो तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के निशानों का अवलोकन कर रहे हो। इस युग में सबसे अधिक दुर्भाग्यशाली लोग मुसलमान हैं जिन का संसार छीन लिया गया। और उनमें से बहुत से धर्म से विमुख हो रहे हैं। कोई विपत्ति नहीं आती परन्तु उन्हीं पर, कोई विपत्ति तबाह नहीं करती परन्तु उन्हीं लोगों को, कोई बिदअत पैदा नहीं होती परन्तु वह उनमें प्रवेश कर जाती है तथा संसार ने अपनी धन-सम्पत्ति को उनके आगे प्रस्तुत नहीं किया किन्तु उसके द्वारा उनकी आंखें फट गईं। हम उनके युवाओं को देखते हैं कि उन्होंने इस्लामी मिल्लत के आचरण को त्याग दिया है और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत के निशान मिटा दिए हैं, ईसाइयों का लिबास पहनने के साथ साथ दाढ़ियां मूंडते और मूछों को लम्बा करते हैं। अतः वे इस युग में आकाश के बीच सर्वाधिक दुर्भाग्यशाली हैं जिन्हें पृथ्वी ने शरण दी है। अल्लाह की कृपा जब भी आती है उससे मुख फेर लेते हैं और अल्लाह की दया जब भी आती है तो उससे भाग जाते हैं तथा खुदा के भोजन का थाल जब भी निकट आता है तो उस से पृथक् हो जाते हैं तथा अन्य मार्गों का अनुसरण करते हैं। वे अग्नि की गर्मी एवं ज्वाला से भयभीत नहीं होते परन्तु इस संसार की कटुता से भयभीत होते हैं तथा उन्होंने इस समस्त मार्ग को रेंद दिया है जिस के आधे भाग तक भी शैतान नहीं पहुंचा। अतः वे दुष्ट धिक्कृत लोग शैतान से भी आगे निकल गए हैं तथा उनमें कुछ ऐसे

लोग हैं जो कहते हैं कि केवल हम ही विद्वान हैं। जबकि बातें मूर्खों जैसी करते हैं। ज्ञान और हिदायत के बिना लोगों को पथभ्रष्ट करते हैं और जो सत्य खुल कर प्रकट हो चुका है उससे मुंह फेर लेते हैं वे समस्त रसूलों में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तो मिट्टी में दफ़्न करते हैं परन्तु ईसा को ऊंचे आकाशों पर चढ़ाते हैं। यह तो फिर बहुत ही दोषपूर्ण बंटवारा है। वे देखते हुए भी नहीं देखते, वे सत्य को देखते हैं परन्तु फिर भी जान-बूझ कर अंधे बन जाते हैं और उस सत्य को छुपाते हैं जो प्रकाशमान सूर्य के समान प्रकट हो गया। क्या वे खुदा की सहायता नहीं देखते कि वह किस प्रकार आई। खुदा उन्हें प्रतिवर्ष ऐसे महान निशान दिखाता है जिन्हें वे पसन्द नहीं करते।^①

① मैं बार-बार लिख चुका हूँ कि खुदा के महान निशानों में से एक वह भविष्यवाणी है जिसमें मुझे जमाअत की बहुतात, लोगों का समूहों के रूप में मेरी ओर प्रवृत्त होने तथा उनके इस सिलसिले में प्रवेश करने की सूचना दी गई है और यह वह्यी उस युग की है जब मैं एक अज्ञात व्यक्ति था जिसे कोई न जानता था न विशेष लोगों में से और न सामान्य लोगों में से। तत्पश्चात् मेरी जमाअत इस सीमा तक बढ़ी कि उसकी पूर्ण और सही संख्या परोक्ष और वर्तमान के ज्ञाता खुदा के अतिरिक्त कोई नहीं जानता। वे इस देश तथा अन्य देशों में फैल गए हैं उस मूसलाधार वर्षा के समान जो देश के सभी क्षेत्रों में बरसती है। अतः सोच-विचार करो। क्या ये महान निशानों में से नहीं? और मेरी बात का समर्थन उस पत्र ने भी किया है जो मुझे आज अन्तिम जनवरी 1907 ई. को मिस्र देश से पहुंचा है। मैं न्यायप्रिय लोगों को दिखाने के लिए उनकी दो पंक्तियों का उल्लेख करता हूँ जो ये हैं :- प्रतिष्ठावान तथा सम्मान योग्य मसीह मौऊद मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी, हिन्दी, पंजाबी की ओर सलाम का उपहार प्रस्तुत करने के पश्चात् निवेदन है कि आप के अनुयायियों की संख्या हमारे देश में बहुत अधिक मात्रा में है जो संख्या की अधिकता में रेत के कणों तथा कंकरियों के समान है और प्रत्येक आप की आस्था पर अमल करने वाला और आपके सहायकों का अनुसरण करने वाला है।

(लेखक :- अहमद जुहरी बदरुद्दीन, इस्कन्दरिया 19, दिसम्बर 1906 ई. (इसी से

फिर वे ऐसे गुज़र जाते हैं जैसे उन्होंने देखा ही नहीं और वे संयम के मार्गों से दूर हो रहे हैं मानो एक शेर है जो उन मार्गों में चीर-फाड़ कर रहा हो या उन्हें अन्य आपदाएं पकड़ में ले रही हों। क्या वे सोचते हैं कि उनसे पूछ-ताछ नहीं की जाएगी और वे भूली-बिसरी वस्तु के समान छोड़ दिए जाएंगे, क्या वे मेरे रब्ब के निशानों को नहीं देखते या उन्होंने उसके समान किसी झूठ गढ़ने वाले के साथ खुदा का मामला देखा है। उन्हें क्या हो गया है कि वे कष्ट पहुंचाने, गालियां एवं तिरस्कार की आदत को नहीं त्यागते? क्या उन्होंने क्रसमें खाई और शपथ उठाई हैं और उस का प्रण कर रखा है? हालांकि अल्लाह सुनता और देखता है। उन पर खेद उन्होंने संयम की सीमा का अतिक्रमण किया और उनके हृदयों पर मुहर लगा दी गई। अतः उन्होंने अन्धेपन को प्रमुखता दी, वे सृष्टि से डरते हैं किन्तु अल्लाह से नहीं डरते। वे नर्क की गर्मी तथा उसकी ज्वाला से नहीं डरते, उन्हें धर्म के घर की चाबियां दी गईं परन्तु वे न तो स्वयं उसमें प्रविष्ट हुए और न उन्होंने पसन्द किया कि अन्य गिरोह ही उसमें प्रवेश करें। क्या उनसे यह आशा की जा सकती है कि अपने समय के सुधारक पर ईमान लाएं अपितु वे तो उसे महा झूठा कहते हैं जो संसार को पथभ्रष्ट कर रहा है तथा स्वयं को मुसलमानों के रूप में प्रकट करता है तथा अल्लाह और उसके रसूल (मुहम्मद) मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान नहीं रखता। उन्होंने मेरा सीना चीर कर तो नहीं देखा फिर उन्हें किस बात ने मेरे गुप्त कुफ़्र पर सूचित किया? उन्होंने ऐसे ऐसे निशान देखे कि यदि उन निशानों को पूर्व युगों की तबाह होने वाली क्रौमें देख लेतीं तो उन्हें इस संसार तथा अगले संसार में अज़ाब न दिया जाता। अतः यह उनका दुर्भाग्य है उन पर सूर्य उदय हुआ और भली भांति प्रकाशमान हो गया और वे गुफ़ा में छुपे बैठे हैं तथा वे अंधकार को प्राथमिकता देते हैं, वे ग़बन करने वाले और ईमानदार तथा प्रकाशमान दिन और अन्धकारमय रात में अन्तर नहीं करते। वे उस प्रकाश को जो प्रतापवान् खुदा की ओर से उतरा है बुझाना चाहते हैं और अल्लाह अपनी बात पर प्रभुत्व रखता है चाहे उन की युक्ति ऐसी हो जिस से पर्वत टल जाएं। क्या वे समझते हैं कि वे ऐसे लोग हैं जिन को पतन नहीं। अल्लाह अतिशीघ्र उन की युक्ति को खंडित कर

देगा यद्यपि उनकी युक्ति ऐसे दूध के समान हो जो कंठ से बड़ी तेज़ी से नीचे उतर जाता हो और रोम-रोम में समा जाने वाला हो या वह किसी अन्य भोजन की भांति बहुत उत्तम और मधुर हो। क्या वे खुदा के निर्णय का खण्डन करने की शक्ति रखते हैं? वह विजयी रहता है तथा पराजित नहीं होता और वह आकाश से पृथ्वी के पाताल तक आदेश जारी करता है। अतः क्या कोई ऐसा जवान है जो उससे डरे तथा उद्दण्डता न करे और क्या कोई ऐसा सुशील मनुष्य है जो उसकी आज्ञा का पालन करे और इन्कार न करे। क्या वे अपने पहले बाप-दादों की विचारधाराओं पर भरोसा किए बैठे हैं जबकि उनके विचारों में कोई दृढ़ता नहीं थी। तू उनको इसमें परस्पर मतभेद करने वाला पाएगा तथा उनके विचारों (की यात्रा) उनकी मतों को हर पल फेंकती रही। अतः उसे दृढ़ता प्राप्त न हुई और न कोई स्थिरता, तथा हरपल परिवर्तित होती रही है और खुदा की क्रसम मैं सच्चा हूं और उन्होंने बिना किसी ज्ञान और स्पष्ट तर्क के उस चीज़ का इन्कार कर दिया जो मैं लाया हूं और यदि वे सच्चे हैं तो मैं स्वयं को ज़िन्ह करने के लिए प्रस्तुत करता हूं। इससे बढ़कर क्या हो सकता है? वे केवल अनुमान से बात करते हैं तथा सत्य से अवगत नहीं। वे कहते हैं कि ये भूकम्प और प्लेग केवल इन लोगों के दुर्भाग्य के कारण आए हैं और ये दुर्भाग्यशाली लोग हैं। इनकी बातों पर दृष्टि डाल ! कि वे कैसी व्यर्थ बातें कर रहे हैं। हे किताब और रसूल के शत्रुओ तुम किस कारण अपशकुन कर रहे हो, क्या अज़ाब इसलिए आया है कि अल्लाह ने अपने बन्दे को रसूल बना कर भेजा ताकि वह उसके द्वारा अपने समझाने के प्रयास को पूर्ण करे और ताकि लापरवाह लोगों को सावधान करे।

तबही है तुम पर और तुम्हारी सोच पर तथा खुदा ने इन बातों के प्रकट होने से पूर्व सूचना दी थी फिर तुम अल्लाह और उसके रसूलों से उपहास करते हो। तुम जो कुछ भी करते हो खुदा उसे देख रहा है। तुम कुफ़्र की रातों तथा उनके अंधकारों को देखते हो और एक मुर्सल की आवश्यकता और उसके लक्षणों को महसूस करते हो फिर भी तुम मुख फेर रहे हो मानो तुम अंधी क्रौम हो। जब इस्लाम का उदय हुआ और खुदा ने इरादा किया कि वह अपने महान निशानों के

द्वारा शिर्क को मिटाए तो उसके निशानों के बारे में षड्यंत्र करना तुम्हारा आचरण बन गया कि कदाचित्त लोग सत्य की ओर न लौटें जबकि निःसन्देह तुम सूरह नूर में पढ़ते हो कि समस्त ख़लीफ़े इसी उम्मत में से आएंगे फिर तुम ईसा की खोज में लगे हुए हो जो बनी इस्राईल में से है और जो इन (उम्मत के ख़लीफ़ों) के संबंध में कहा गया है उसे भूल जाते हो। तुम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस में **امامكم منكم** (इमामुकुम मिन्कुम अर्थात् तुम्हारा इमाम तुम्हीं में से होगा) के शब्दों को पढ़ते हो फिर भी अज्ञानियों जैसा आचरण धारण करते हो। क्या तुम उस व्यक्ति का इन्कार करते हो जो कृपालु ख़ुदा की ओर से खुले-खुले निशान और प्रमाण लेकर आया है। तुम काफ़िरों को देखते हो कि उन्होंने तुम्हारे धर्म को जो समस्त धर्मों से उत्तम है किस प्रकार घायल किया है।

और उन्होंने यह इरादा कर रखा है कि तुम धर्म से फिर जाओ और उनकी तरह शैतान का गिरोह बन जाओ। ख़ुदा तुम पर दया करे। जान लो कि ख़ुदा के स्वाभिमान ने इस युग में यह मांग की है कि वह अपने बन्दे को भेजे और अपना वादा पूरा करे और अपने गिरोह पर अत्याचार करने वालों के गिरोह से मुक्ति दिलाए। अतः मैं ही वह बन्दा हूँ जिसे मामूर (अवतरित) किया गया है और यह समय वही समय है जो पहले से लिखा हुआ था। अतः क्या तुम ईमान लाते हो। सत्य स्पष्ट हो गया है और समय निर्धारित हो गया है। अतः तुम्हें क्या हो गया है कि तुम नहीं समझते। खेद तुम पर कि तुम सर्वप्रथम मेरा इन्कार करने वाले बन गए, हालांकि इससे पूर्व तुम प्रतीक्षा कर रहे थे। क्या तुम नहीं देखते कि शिर्क पृथ्वी के सभी किनारों और देश के कोने-कोने में फैल चुका है। क्या तुम सब कुछ समझ कर उसका इन्कार कर रहे हो जो अल्लाह ने उतारा है।

हे क्रौम के विद्वानो !

तुम नींद के प्यालों की ओर न जाओ जबकि ख़ुदा तुम्हें बड़ी बड़ी बलाओं के द्वारा जगा रहा है और तुम्हें बड़ी-बड़ी मुसीबतों से अवगत कर रहा है। अतः सदाचारियों वाला भय कहां गया और महाप्रकोपी ख़ुदा की याद में बहने वाले आंसुओं का पानी कहां गया है? तुम धर्म के पात्र थे फिर उनसे कुफ़्र छलका

अपितु बहने लगा। अतः मुझे आश्चर्य हुआ कि तुम्हारी मनोवृत्ति के पक्षी ने न बच्चे निकाले और न ही अण्डे दिए। हे अपव्ययी लोगो ! क्या तुम इसलिए पैदा किए गए हो कि साफ-सुथरे थालों में अग्नि पर भुने हुए गोश्त के साथ रोटियां खाओ जबकि अल्लाह तआला फ़रमाता है - “मैंने जिन्नों और मनुष्यों को केवल अपनी उपासना के लिए पैदा किया है” तथा यह नहीं फ़रमाया कि केवल खाने के लिए पैदा किया है। क्या ख़ूब, सुब्हान अल्लाह ! क्या ढंग है जो तुम ने धारण किया है और क्या मार्ग है जो तुम ने चुना है। क्या तुम रहते संसार तक जीवित रहोगे और मरोगे नहीं? और अनन्त तक हमेशा इस संसार के फल चुनते रहोगे? और तबाह नहीं होगे। संसार का अन्त आ गया अतः तुम क्यों नहीं जागते जबकि तुम्हारे इस देश पर प्लेग का संक्रामक रोग तथा अन्य आपदाओं ने डेरे डाल दिए हैं। क्या तुम सोचते नहीं? शीत ऋतु हो या ग्रीष्म ऋतु ये (विपत्तियां) तुम्हारे साथ हैं तथा तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेंगी। क्या तुम विवेक से काम नहीं लेते ? क्या तुम्हें नज़र की कमज़ोरी का रोग लग गया है या तुम हो ही अंधे। तुम्हारे समक्ष भांति-भांति के संकट प्रकट हो चुके, यहां तक कि स्वयं तुम पर, तुम्हारी सन्तान, तुम्हारी स्त्रियां और तुम्हारे परिजनों एवं स्वजनों पर भी आ गए हैं। तथा प्रतिवर्ष तुम्हारे परिजन मर कर तुम से बिछड़ रहे हैं। अतः तुम्हारे वश में रोने-गिड़गिड़ाने तथा चीत्कार के अतिरिक्त कुछ नहीं और ख़ुदा किसी क्रौम को उस समय तक अज़ाब में नहीं डालता जब तक वह रसूल न भेजे ताकि वह समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण करे और मामले का निर्णय कर दिया जाए तथा अल्लाह ने अपनी किताब में ऐसा ही कहा है। पहली उम्मतों में भी उसका नियम इसी प्रकार जारी रहा है फिर तुम्हें क्या हो गया है कि तुम उस इमाम को नहीं पहचानते जो तुम्हारी ओर भेजा गया है और उस बुलाने वाले का अनुसरण नहीं करते जो तुम में खड़ा किया गया है? क्या तुम झुठलाने वाले तथा इन्कार करने वाले का अंजाम नहीं जानते ? क्या तुम इस बात पर प्रसन्न हो कि मूर्खता की मृत्यु मरो फिर आखिरत में तुम से पूछ-ताछ हो? तुम्हारा मार्ग-दर्शन तो पवित्र कथन की ओर किया जा रहा है फिर न जाने तुम क्यों पवित्र और शुद्ध

वस्तु को छोड़ते हुए मैली वस्तु को प्रमुखता देते हो। जो तुम्हारे पास आया उसे तो तुम छोड़ते हो और मुर्दे को ऊंचे आकाशों से बुला रहे हो तथा गाली-गलौज करते हो और जो मुंह में आए कहते चले जाते हो तथा उस दिन से नहीं डरते जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति प्रतिफल एवं दण्ड कि लिए उपस्थित किया जाएगा। नबी अपमानित नहीं होता परन्तु अपने देश में। बेशक गालियों से काम लो, अल्लाह तो सुनता और देखता है।

हे मेरी क्रौम ! तुम जानबूझ कर क्यों अंधे बनते हो जबकि तुम देखते हो, और जानबूझ कर क्यों मूर्ख बनते हो हालांकि तुम जानते हो। क्या तुम्हें उन लोगों का अंजाम मालूम नहीं जो उपहास किया करते थे? तुम भिड़ के समान डंक मारते हो और तुम उस व्यक्ति को कष्ट पहुंचाते हो जिसने दीपक के समान प्रकाश की पगड़ी पहनी हुई है और चौदहवीं के चन्द्रमा को देखकर भोंकते हो और सदाचारी लोग चौदहवीं के चन्द्रमा के प्रकाश से लाभान्वित हो रहे हैं जबकि तुम अंधकार में हो। लोग मेरी ओर आए जबकि तुम मुझ से भाग रहे हो और कितने ही ऐसे उपहास करने वाले हैं जिन्होंने मेरी मृत्यु की भविष्यवाणी की मानो उन्हें सर्वज्ञ ख़ुदा से इल्हाम हुआ है और उन्होंने इस पर आग्रह किया और लोगों में इसकी प्रसिद्धि की। अतः तब मामला इसके विपरीत रहा। ख़ुदा ने उनके इस परिहास को वास्तविकता बना कर उन्हीं पर उल्टा दिया और वे अपने इल्हाम के पश्चात् बहुत शीघ्र मर गए तथा उन्होंने अपने पशुओं के लिए लज्जा और अपमान की सूखी घास छोड़ी।

कुछ कष्ट देने वालों ने मुझे केवल इसलिए कष्ट दिया ताकि उनके द्वारा अल्लाह कुछ निशान प्रकट करे तथा हमने उनके क्रिस्से 'हक्रीकृतुल वह्यी' में वर्णन कर दिए हैं ताकि वे सत्याभिलाषी पुरुषों और स्त्रियों के लिए ज्ञान वर्धक हों।

इस समय सर्वाधिक निकट उस व्यक्ति की घटना है जो जीक्रा 'दा में मरा और वह व्यक्ति मुझ पर लानतें डाला करता और मुझे गालियां दिया करता था, उसका नाम सा'दुल्लाह था तथा उसकी गालियां भाले के समान थीं और जब उसकी गाली-गलौज चरम सीमा को पहुंच गई और वह कष्ट देने में दूसरों से आगे बढ़

गया तो मेरे रब्ब ने मुझे उसकी मृत्यु तथा उसकी बदनामी और उसके वंश का अन्त होने के बारे में जिसका उसने फैसला कर दिया था वह्यी की तथा उसने कहा - “तेरा शत्रु बे-औलाद रहेगा”। अतः मैंने उस वह्यी को लोगों में प्रकाशित कर दिया जो मेरे महान और श्रेष्ठतम रब्ब ने की थी। तत्पश्चात् अल्लाह ने मेरे इल्हाम को सत्य कर दिखाया तब मैंने इरादा किया कि मैं अपनी बातों में इसका विवरण वर्णन करूँ तथा उसे प्रकाशित करूँ जो उपद्रवियों के साथ तथा कृपालु ख़ुदा के बन्दों के शत्रुओं के साथ ख़ुदा ने व्यवहार किया परन्तु एक वकील ने जो मेरी जमाअत से था मुझे इस से रोका और मेरे प्रकाशित करने के इरादे के बारे में मुझे डराया और कहा कि यदि आपने इसे प्रकाशित किया तो आप शासकों के क्रोध से बच न सकेंगे तथा कानून आपको अपराध की ओर खींच ले जाएगा तथा छूटने का कोई उपाय न होगा तथा मुक्ति का कोई मार्ग शेष न रहेगा। तथा आपदाएं आपको क्रर्ज लेने वालों के चिपटने की तरह चिपट जाएंगी तथा बड़ी दौड़-धूप के पश्चात् जो परिणाम निकलेगा वह मालूम है तथा सरकार अपराधियों को छोड़ने वाली नहीं। अतः सावधानी से काम लेने वालों के समान उस वह्यी को गुप्त पर्दे में रखने ही में भलाई है। इस पर मैंने कहा - मैं इल्हाम को श्रेष्ठता देना ही सही समझता हूँ और मेरे निकट उसका गुप्त रखना पाप और नीच लोगों की प्रकृतियों में से है तथा सृष्टि के स्रष्टा के अतिरिक्त किसी की मजाल नहीं कि वह हानि पहुंचा सके। तत्पश्चात् मुझे शासकों की धमकी की परवाह नहीं और हम अपने रब्ब को पुकारते हैं जो कृपा का मूल स्रोत है और यदि वह दुआ स्वीकार न करे तो हम तुच्छ जीवन पर प्रसन्न हैं। ख़ुदा की सौगंध वह इस दुष्ट (सा'दुल्लाह) को मुझ पर हावी नहीं करेगा। वह उस पर विपत्ति उतारेगा तथा अपनी शरण के अभिलाषी को मुक्ति देगा। अतः एक निषठावान ने जो धार्मिक ज्ञान में प्रकाण्ड विद्वान है मेरी बात को सुना। इस से मेरा अभिप्राय हमारे प्रिय मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब हैं तो उनकी जीभ पर رُبَّ أَشْعَثَ أَغْبَرٍ वाली हदीस जारी हुई तथा मेरी और उनकी इस बात से हृदय सन्तुष्ट हो गए।

और उन्होंने उस असाधारण सावधानी बरतने वाले को ग़लत ठहराया और

उन्होंने उसके भय के आधार को कमजोर ठहराया। अतः मैंने सा'दुल्लाह के विरुद्ध तीन दिन तक दुआ की और सर्वज्ञ रब्ब से उसकी मृत्यु की मनोकामना की। जिस पर मुझे वह्यी हुई - “कई ऐसे बिखरे बालों वाले और धूल में धूसरित लोग हैं कि यदि वे अल्लाह पर (किसी बात के लिए) क्रसम खाएं तो वह उसे अवश्य पूरी करता है।” तात्पर्य यह कि ख़ुदा तआला तुझ से उसकी बुराई को दूर रखेगा। अतः अल्लाह की क्रसम मुझ पर अभी कुछ रातें ही गुज़री थीं कि मुझे उसकी मौत की ख़बर मिली। अतः अल्लाह तआला की प्रशंसा कि उसने अपने कोड़े उस शत्रु पर बरसाए।

हे लोगो ! मैं अपने रब्ब की ओर से एक व्यंजनों से भरा थाल लेकर आया हूँ ताकि मैं प्रत्येक दरिद्र और मुहताज को भोजन कराऊँ। अतः है कोई तुम में से जो इस ने'मत के थाल को ले और प्राण घातक भूख से सुरक्षित हो जाए। तथा जिसे यह भोजन अनुकूल न लगा तो वह उन लोगों में से है जिन्हें दुर्भाग्यशाली कहा जाता है तथा जिसने उसे खाया तो उसके लिए बहुत बड़ा प्रतिफल है तत्पश्चात् बहुत बड़ी कृपा है। अल्लाह चाहता है कि वह तुम से भार उतारे और वह तुम्हें सूखाग्रस्त धरती से ने'मत एवं समृद्धिक क्षेत्र की ओर स्थानांतरित कर दे। तथा तुम्हें उन अन्धकारों से मुक्ति दे जिन में तीव्र हवाएं चलती हैं और वह तुम्हें ऐसे महलों में पहुंचा दे जिनमें दीपक प्रकाशित किए गए हैं और वह (चाहता है कि तुम्हें) पाप और झूठ से पवित्र करे ताकि तुम उस व्यक्ति के समान हो जाओ जो हज्जे मबरूर (अदा करके) लौटा हो परन्तु तुम इस बात पर प्रसन्न हो गए हो कि तुम्हारे शरीर पापों के मैल से गन्दे हो जाएं और यह कि तुम सदैव के लिए ख़ुदा के दरबार से दूर हो जाओ। मैंने तुम्हारे सामने अमृत प्रस्तुत किया है, परन्तु तुम ने मृत्यु के प्याले को प्राथमिकता दी तथा मैंने तुम्हें प्राचीन घर (क्राबा) की ओर बुलाया परन्तु तुम मूर्तियों की ओर भागे और हम तुम्हारे लिए हर प्रकार की बेचैनी और व्याकुलता सहन करते हैं और हम तुम्हारे लिए शोक के अन्धकारों में इस प्रकार दुआ करते हैं जैसे हम इशा की नमाज़ अदा कर रहे हों। निश्चय ही सब मामला ख़ुदा के हाथ में है वह जो चाहता है करता है और निर्णय करना

उसी के अधिकार में है। वह दिन आता है जब यह पत्थर मोम होगा ! लोगो की बातों की ओर ध्यान न दो, वे तो सुरक्षा के मार्गों से विमुख हो चुके। और यदि तुम्हें आश्चर्य है तो उनकी इस बात से बढ़कर आश्चर्य वाली कोई बात नहीं कि ईसा पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर जीवित हैं। फिर भी इसके बावजूद मुर्दों से जा मिला है और उनके साथ स्वर्गों में प्रवेश कर गया है। वे कहते हैं कि वह अन्तिम युग में मुर्दों की संगत त्याग देगा और किसी देश में उतरेगा और चालीस वर्ष तक ठहरा रहेगा फिर वह उस स्थान से कूच करेगा और हमेशा के लिए मुर्दों से जा मिलेगा। यह उनकी आस्थाओं का सार और उनकी व्यर्थ बातों का आशय है। अतः हम इस बयान से स्तब्ध रह गए हैं। मुझे मालूम नहीं कि क्या इच्छाओं ने उन्हें इसकी ओर खींचा है या वे पागल हो गए हैं। उन्हें क्या हो गया है कि एक युग बीत जाने तथा कुर्आन करीम को पढ़ने के बावजूद वे अब तक सत्य की ओर मार्ग-दर्शन नहीं पा सके?? मुझे समझ नहीं आता कि यह पागलपन किस प्रकार का है जबकि इस पर सैकड़ों वर्ष बीत गए। अतः खुदा की क़सम ! कुर्आन के विरोधी एवं ईमान की जड़ काटने वाली बात पर उनकी हठधर्मी ने आश्चर्य में डाल दिया है जबकि सदी के सर पर हर प्रकार की बिदअत के प्रभुत्व तथा काफ़िरों के प्रभुत्व पा जाने के पश्चात् अल्लाह का हक़म सत्य और नीति लेकर उनके पास आया। अतः मुझे आश्चर्य होता है कि उन्होंने किस कारण इसका इन्कार किया है। हालांकि वह युग को पुकार रहा है और युग उसे पुकार रहा है।

और खुदा की क़सम ! मैं ही मसीह मौऊद हूँ तथा मेरे रब्ब ने मुझे स्पष्ट तर्क प्रदान किया है तथा मैं अपने रब्ब की ओर से बुद्धिमत्ता पर स्थापित हूँ और यदि पर्दा उठ भी जाए तो मेरे विश्वास में कोई बढ़ोतरी न हो। खुदा ने लोगों को अवज्ञाकारी और युग को घोर अन्धकारमय रात्रि के समान पाया तो उसने मुझे भेजा ताकि वे तौबा करें। हम उन्हें नसीहत कैसे करें जबकि वे लोग सुनते ही नहीं और वे सत्य के मार्ग से हटते जाते हैं। उन्होंने खुदा के व्यंजनों के थाल और उसकी रोटी से पलायन किया और बिखर गए और थाल अपने स्थान पर रखा रह गया और उन्होंने संसार की घी से चुपड़ी रोटियों को प्राथमिकता दी और उसके लिए उनके

मुख से लार टपकी और उनके होठों ने उसका स्वाद चखा। अतः मेरी सच्चाई के प्रकट करने में कम से कम यह होगा कि जिन संकटों का मैंने वादा किया है उनमें से कुछ संकट उन्हें पहुंच कर रहेंगे। उन्हें क्या हो गया है कि वे प्रतीक्षा नहीं करते। वे कहते हैं कि ईसा जीवित है और ये कुर्आन एवं हदीस से उनके ज्ञान की कमी के कारण है। अतः वे ईसा की मृत्यु का बड़ी सख्ती से इन्कार तथा उसके जीवित होने पर हठ कर रहे हैं। यदि तू उन लोगों में से है जो कुर्आन करीम पर ईमान लाते हैं तथा इन्कार नहीं करते तो तू इस से बच।

तू उन लोगों जैसा न बन जिन्होंने ख़ुदा के कलाम को पीठ पीछे डाल दिया है और वे परवाह नहीं करते तथा कहते हैं कि मुसलमानों की उसके जीवित रहने पर सर्वसम्मति है। कदापि नहीं। वास्तव में वे झूठ बोल रहे हैं। जब उन में मौ'तज़िला (मुसलमानों का एक सम्प्रदाय) मौजूद हैं तो फिर सर्वसम्मति कैसी? जब उनसे कहा जाए कि क्या तुम अपने रब्ब के आदेश *فَلَمَّا تَوْفَّيْتَنِي* पर विचार नहीं करते या क्या तुम उस पर ईमान नहीं लाते? तो उनके पास इस का उत्तर इसके अतिरिक्त कुछ नहीं होता कि वे अल्लाह की आयतों में परिवर्तन करें और कहें कि तवफ़्फ़ा के अर्थ आत्मा का पार्थिव शरीर के साथ उठाया जाना है। तू देख कि वे किस प्रकार सदमार्ग से हट रहे हैं जबकि वे जानते हैं कि यह कथन वह कथन है जो ईसा प्रलय (क्रयामत) के दिन ख़ुदा तआला के दरबार में उत्तर देते हुए कहेंगे जब ख़ुदा उनसे उम्मत की पथभ्रष्टता के संबंध में पूछेगा और यही तुम कुर्आन में पढ़ते हो। ख़ुदा की क्रसम ! मुझे उनकी दशा, बुद्धि और विवेक पर बड़ा आश्चर्य है। क्या वे नहीं जानते कि किसी मनुष्य के लिए संभव नहीं कि वह अपनी रूह निकाले जाने और मुर्दों के जीवित होने (प्रलय) के दिन उपस्थित हो। उन्हें क्या हो गया है कि वे विचार नहीं करते। सहाबा ने सृष्टि में सर्वोत्तम इन्सान सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पृथ्वी में दफ़न किया और आप^स का मज़ार अब तक मदीना में मौजूद है। अतः यह कहना अपमान होगा कि ईसा की मृत्यु नहीं हुई तथा यह बहुत बड़ा शिर्क है जो शुभ कर्मों को खा जाता है और यह है भी बुद्धि के विपरीत। अपितु वह (ईसा) अपने दूसरे (रसूल) भाइयों के समान मृत्यु को प्राप्त हो गए

और अपने समकालीन लोगों के समान मृत्यु प्राप्त हो गए तथा उनके जीवित रहने की आस्था मुसलमानों में ईसाई धर्म से आई है तथा उन्होंने केवल इसी विशेषता के कारण उसे उपास्य बना लिया है। फिर ईसाइयों ने धन-दौलत खर्च करके इस आस्था को समस्त देहातों और शहरों में प्रकाशित किया क्योंकि उनमें कोई भी समीक्षक और पारखी नहीं था और वे जो मुसलमानों में से पहले गुज़र चुके हैं उनसे यह बात केवल ठोकर तथा भूल के कारण हुई है। अतः अनजाने में भूल के कारण वे अल्लाह के निकट निर्दोष क्रौम हैं। उन्होंने यह भूल मात्र भोलेपन के कारण की है। ख़ुदा अच्छी नीयत के साथ प्रत्येक सत्याभिलाशी को जो किसी बेईमानी के बिना यथासंभव अनुसंधान का हक़ अदा करता है, क्षमा कर देता है सिवाए उन लोगों के जिन के पास इमामे हक़म, हिदायत के खुले-खुले प्रमाण लेकर आया तथा उसने हिदायत (मार्ग-दर्शन) को पथभ्रष्टता से पृथक कर दिया और जो गुप्त था उसे प्रकट कर दिया।

फिर भी उन्होंने उसकी बात से मुख फेरा और सत्य के मार्गों को धारण न किया अपितु उसे रोका जिसने उन्हें अपनाया तथा उन्होंने उसकी रक्षा की और वे शत्रुओं के समान शत्रुता और उपद्रव की अवस्था में मर गए तथा इस पर प्रसन्न हुए और उन्होंने आने वाले को भुला दिया। क्या वे इसका इन्कार कर देंगे जिस से ख़ुदा ने डराया है तथा जब निर्धारित मृत्यु आएगी तो वह अपने मृत्यु के स्थान से आगे नहीं जा सकेंगे और हर व्यक्ति जो अपनी तामसिक वृत्ति से प्रेरित होकर कार्य कर चुका होगा उसे देख लेगा तथा जो व्यक्ति ख़ुदा के समक्ष शुद्ध हृदय के साथ उपस्थित होगा वह नर्क की आग से बचाया जाएगा और विमुख होने वाले पापी के लिए नर्क है जिसमें न वह मरेगा और न जीवित रहेगा। हम इसी प्रतीक्षा में सुबह और शाम गुज़ारते हैं तथा अपनी दृष्टि को प्रतिक्षण प्रारब्ध की ओर दौड़ाते हैं। निश्चय ही अल्लाह के अज़ाब ने तुम्हारे द्वार को खटखटाया है तथा उसने तुम्हारी कुचलियां तोड़ दी हैं तो फिर क्या तुम देखते नहीं? तुम जंगल में मृत्यु के शेर के निकट पहुंच गए हो। अतः हे लापरवाहो ! तुम उसके लिए मुक्ति का क़िला तैयार करो और स्वयं अपने हाथों से स्वयं को तबाह न करो। तुम्हारा जीवन ईमान और

धर्म से सम्बद्ध है न कि रोटियों और झरने के बहने वाले पानी से। और जब धर्म चला जाए तो फिर कोई जीवन नहीं और जिसका धर्म नष्ट हो गया तो वह मुर्दों के समान है। और तुम देख रहे हो कि कुफ़्र ने इस्लाम की पसलियां तोड़ दी हैं और लोगों की ज़बान पर अब उसका केवल नाम ही शेष रह गया है। खुदा की क्रसम ! यह शेर (अर्थात् इस्लाम) कुत्तों से घायल हो गया है तथा शिकार करने की बजाए पराजय पर प्रसन्न हो गया है और नौका में तबाह होने वालों के स्थान पर जा बैठा है। यही कारण है कि तुम्हें हर ओर से दुख और कटु जीवन मिला तथा आपदाओं ने तुम्हें अपना मित्र चुन लिया है जैसे उन (आपदाओं) ने तुम्हारे आंगनों को विस्तृत पाया और तुम प्रतिदिन उन आपदाओं के नीचे टुकड़े-टुकड़े किए जाते हो। तुम देख रहे हो कि तुम पर निरन्तर विपत्तियां उतर रही हैं तथा तुम्हें अस्त-व्यस्त कर रही हैं तथा कोई विपत्ति तुम पर नहीं आती परन्तु वह अपने समान पहली विपत्ति से बड़ी होती है किन्तु तुम फिर भी भय नहीं करते।

और तुमने देखा जो विपत्तियां उतर चुकीं, कुछ विपत्तियां उनके पश्चात् भी शीघ्र उतरने वाली हैं। अतः तुम अपने स्रष्टा की ओर लौटो ताकि तुम सफल हो जाओ। तुम से तौबा की आशा कैसे रखी जा सकती है जबकि जो निशान भी तुम्हारी ओर आता है तुम उस से मुख मोड़ लेते हो। जिन बातों का तुम उपहास उड़ा रहे थे उसकी सूचनाएं शीघ्र ही तुम्हारे पास आएंगी और आपदाओं में से (एक आपदा) यह भी है कि एक क्रौम तुम्हें सोने-चांदी का लालच देकर कुफ़्र की ओर बुला रही है और वह हर जाने वाले को सोना प्रस्तुत कर रहे हैं इस विचार से कि कदाचित इस प्रकार वे ईसाई हो जाएं। निश्चय ही वे धनवान हैं और तुम कंगाल। उन पर संसार के द्वार खोले गए हैं और तुम दिन-रात दरिद्रता में सुबह-शाम करते हो। यह फ़ित्ना हर फ़ित्ने से बड़ा और यह विपत्ति हर विपत्ति से कठिनतम है। तुम उनकी रोटियों के मुहताज हो और वे मुहताज नहीं वह तुम्हारे देश पर उतरे और उनके राजाओं ने उस पर अधिकार कर लिया। इसलिए (इस से) प्रभावित होना एक अनिवार्य बात है जैसा कि तुम देख रहे हो। फिर एक संकट यह भी है कि तुम्हारे धनाढ्य लोग धर्म का उपहास करते हैं और तुम्हारे फ़क़ीर लोग संसार पर

गिरे पड़ते हैं। अतः हमें आंख की ठंडक न तुम से मिलती है और न उनसे। हम उनमें से प्रत्येक से निराश हैं, हमने उन दोनों सदस्यों (पक्षों) पर दृष्टि डाली तो हमें इस (चिन्ता की दशा) ने आ लिया जो एक रोगी को मृत्यु के लक्षण प्रकट होने पर रोकती है तथा किसी काफ़िर की हिम्मत नहीं थी कि वह तुम्हें पराजित करता। परन्तु तुम्हारे पापों ने तुम्हें पराजित किया है। तुमने खुदा को त्याग दिया इसी प्रकार तुम्हें भी त्याग दिया जाएगा। खुदा ने तुम्हारे हृदयों पर दृष्टि डाली तो उसने उनमें संयम न पाया। जिसके परिणामस्वरूप उसने तुम पर अवज्ञाकारी क्रौम सिर पर सवार कर की और तुम्हें अज़ाब देने के लिए उन्हें भाले दिए। अतः क्या तुम रुक जाओगे? खुदा किसी क्रौम की हालत नहीं बदलता जब तक वह अपनी हालत स्वयं न बदले। क्या तुम (अपने अन्दर) परिवर्तन करोगे? यदि तुम धन्यवाद करो और ईमान लाओ तो अल्लाह को तुम्हें अज़ाब देने की क्या आवश्यकता है? अतः क्या तुम ईमान लाओगे?

क्या तुम इस स्थायी पाप के साथ स्वयं को जीवित समझते हो? एक नौजवान के लिए चौपायों के समान जीवन व्यतीत करने से मृत्यु कहीं उत्तम है क्यों सावधान नहीं होते? ईसाइयत प्रतिदिन तुम्हें ऐसे खाती है जैसे आग ईंधन को खाती है। ताकि खुदा ने जो तुम्हारे लिए निर्धारित किया है और लिख छोड़ा है वह पूर्ण हो। खुदा की क्रसम ! यह विपत्ति सब विपत्तियों से बड़ी और यह भूकम्प सब भूकम्पों से बढ़कर है। हे पापियो ! जो अज़ाब तुम पर उतरा है वह मात्र तुम्हारे पापों के कारण उतरा है। यह शारीरिक आपदाएं केवल शरीर को तबाह करती हैं। तथा जो आध्यात्मिक आपदाएं हैं वे शरीर, आत्मा तथा ईमान को एक साथ तबाह करती हैं। अतः यदि तुम बुद्धिमान हो तो अपने शत्रुओं को बुरा-भला मत कहो। बल्कि अपने आप को बुरा भला कहो। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम आकाश की ओर नहीं देखते और (केवल) सांसारिक बन गए हो। अल्लाह ने तुम्हारे सामने धर्म का ताज़ा दूध प्रस्तुत किया परन्तु तुम हो कि उसे पसन्द नहीं करते हो। फिर एक क्रौम ने तुम्हें सुअर का मांस प्रस्तुत किया। अतः तुम बड़े मज़े लेकर उसे खाते हो और जो उनके धर्म से निकल कर तुम्हारे धर्म में प्रवेश करता है वह दोगले

वालों के समान प्रवेश करता है और लालची बन कर बाजारों में घूमता तथा पैसे मांगता है। वे (ईसाई) बढ़े जा रहे हैं और तुम घटते जा रहे हो। हे मूर्खों ! यह जीवन कब तक रहेगा !! तुम संसार के धन पर झुक गए हो तथा यह नहीं देखते कि तुम (यह धन) कहां से एकत्र कर रहे हो? तुम भोजन के थाल को तो देखते हो किन्तु गुमराह करने वाले बेईमानों को नहीं देखते मानो तुम अंधी क्रौम हो। तुम इशा की नमाज़ छोड़कर अपने समान्तर विचार वालों के साथ के साथ मटके के मटके उंडेलते हो तथा आलसियों की भांति जीवन व्यतीत करते हो तथा तुम धर्म को उंगली से भी स्पर्श नहीं करते और न तुम धर्म के लिए दर्द रखते हो। फिर इस पर भी तुम यह कहते हो कि हमने (धर्म के लिए) पूर्ण प्रयास कर लिया है और अब हम निवृत्त हैं। युवाओ! विचार करो कि क्या यह समय निकट नहीं आ गया था कि ख़ुदा इस आबाद संसार में इमाम भेजे। तुम अल्लाह से किए हुए प्रण को भंग करते हो तथा जिनके बारे में अल्लाह ने आदेश दिया था कि उन्हें दृढ़ किया जाए काटते हो और पृथ्वी में उपद्रव फैलाते हो। ख़ुदा की क्रसम ! (इमाम के आने का) समय यही समय है। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम उसे स्वीकार नहीं करते।

ख़ुदा की क्रसम ! मैं इस मामले में प्रत्येक मुहताज का (इसी प्रकार) का'बा हूं जैसे हाजियों का मक्का में क़ाबा है, और मैं ही वह हजरे अस्वद हूं जिसके लिए समस्त पृथ्वी ग्रह में स्वीकारिता रख दी गई है तथा जिसे छू कर लोग बरकत प्राप्त करते हैं।^① ख़ुदा की फटकार उन लोगों पर जो यह कहते हैं कि यह (इमाम) संसार का अभिलाषी है, हालांकि हम संसार से बिल्कुल पृथक् हैं तथा मैं इसलिए आया हूं ताकि लोगों को एकेश्वरवाद तथा नमाज़ पर स्थापित करूं न कि इसलिए कि नाना प्रकार के उपहार प्रदान करूं।

जो मेरे हृदय में है अल्लाह उसे भली भांति जानता है तथा अपने निशानों से इस बात की गवाही देता है कि वे झूठ हैं। मेरा दावा अपनी ओर से गढ़ी हुई बात नहीं अपितु मैं सत्य लेकर आया हूं और सत्य के साथ भेजा गया हूं। तुम्हें क्या हो

① यह सारांश है उसका जो अल्लाह ने मेरी ओर की। यह दयालु अल्लाह की ओर से रूपक है।

स्वप्न विद्या में हजरे अस्वद से अभिप्राय, धर्माचार्य और दूरदर्शी व्यक्ति होता है। इसी से।

गया है कि तुम मुझे नहीं पहचानते।

हे मुसलमानो ! मैं ही तुम्हारी खोई हुई पूंजी हूँ, तुम्हें गुमराह करने वाला नहीं। अतः क्या कोई है तुम में जो मेरी दावत स्वीकार करे तथा मेरी बातों पर सदभावना से विचार करे। हे अभिमानियो ! क्या तुम में कोई एक भी समझदार व्यक्ति नहीं ? हे प्रिय जवानो ! यदि मैं इस युग में अवतरित न किया जाता तो सलीब वाले (ईसाई) धर्म (इस्लाम) को रोंद डालते और यह (ईसाइयत की) तीव्र और भयंकर बाढ़ सिरों तक पहुंच गई है तथा उसने लोगों को तबाह कर दिया है। क्या तुम पादरियों को नहीं जानते कि किस प्रकार गुमराह कर रहे हैं और मैं ऐसी गुमराही के समय में भेजा गया हूँ जिसने सम्पूर्ण पृथ्वी अपवित्र कर दी है तथा उसमें बसने वालों को तबाह कर दिया है। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम समझते नहीं। खुदा की क़सम ! संसार में तुम्हारी दशा से अधिक विचित्रतम कोई अन्य दशा नहीं। तुम्हारा मुझे से मुख मोड़ना तथा विमुख होना कितना लम्बा हो गया।

तुमने तो निशानों को देखा और तुम्हें खुले-खुले निशान प्रदान किए गए, किन्तु तुम ने उन सब को कंकड़ियों की भांति फेंक दिया और तुम्हारे लिए नेकियों के द्वार खोले गए परन्तु तुम ने अपने द्वार बन्द कर लिए ताकि वे (नेकियां) तुम्हारे आंगनों में प्रवेश न कर जाएं। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम खुदा की वर्जित सीमाओं से बच कर नहीं रहते और झुठलाने में शीघ्रता करते हो। अल्लाह तलवार चलाने वाला है और उसने सीमा से अतिक्रमण करने वालों के लिए अपनी तलवार को सूंत लिया है।

मैं ही मसीह मौऊद हूँ और तुम मुझे झुठलाते और गालियां देते हो और यह भी कहते हो कि (मेरा) यह दावा झूठा है तथा ऐसा कथन है कि जिसका पहले लोगों ने विरोध किया है। ज्ञान और कृपा के वादों के बावजूद तुम्हारी बात ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया है। क्या जान बूझकर तुम वह बात कह रहे हो जो कुर्आन के विपरीत है। सहाबा के पश्चात् सर्वसहमति का दावा एक झूठा दावा तथा निकृष्टतम झूठ है, जिस पर केवल अत्याचारी लोग ही आग्रह करते हैं। कैसी सर्वसहमति, क्या तुम भूल जाते हो जो मौ'तज़िला ने कहा? क्या तुम विचार

करते हो कि वे मुसलमानों में से नहीं और केवल तुम ही मुसलमान हो। अतः सिद्ध हुआ कि तुम्हारा कथन एक (सर्वसम्मत) कथन नहीं। अपितु उसमें तुमने मतभेद किया है इसलिए अब अल्लाह ही इस बारे में निर्णय करेगा जिसमें तुम परस्पर मतभेद किया करते थे। मेरे पास मेरे रब्ब की गवाहियाँ और निशानियाँ हैं जिन्हें तुम ने देखा है। क्या तुम (अब भी) इन्कार करते हो। जो लोग मुझे से पूर्व गुज़रे हैं उन पर कोई पाप नहीं, वे मुक्त हैं। हां यद्यपि वे लोग जिन तक मेरा निमंत्रण पहुंचा और उन्होंने मुझे पहचान लिया और स्वयं मैंने भी उन्हें अपना परिचय कराया और जिन लोगों पर मेरे समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो चुका है। इसके बावजूद उन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया और मुझे कष्ट पहुंचाया। ये ऐसे लोग हैं जिन पर अल्लाह का अज़ाब अनिवार्य हो गया, क्योंकि वे अल्लाह से नहीं डरते और उसकी आयतों तथा उसके रसूलों से उपहास करते हैं। मैं स्पष्ट निशान के बिना तो उनके पास नहीं आया अपितु मेरे रब्ब ने उन्हें निशान पर निशान एवं चमत्कार पर चमत्कार दिखाया तथा समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण कर दिया गया, विवाद और झगड़े का निर्णय कर दिया गया, फिर भी वे इन्कार पर हठ कर रहे हैं। क्या वे अल्लाह से इस कारण युद्ध करते हैं कि उसने मुझे मसीह मौऊद तथा महदी-ए-मा'हूद बनाया जबकि आदेश और निर्णय का अधिकार उसी को है।

इस पर जो वह करता है पूछा नहीं जाता यद्यपि उनसे पूछताछ होगी। उनमें से कुछ इस झगड़े से लज्जा और भय के कारण पृथक् हो गए और वे तौबा करते हुए मेरी ओर लौटे, किन्तु उनमें से अधिकतर अत्याचारी हैं।

क्या वे ईसा के जीवित रहने पर आग्रह करते हैं जिस पर सभी सहाबा ने सहमति जताई तथा उन लोगों के मार्ग के विरुद्ध चलते हैं जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की संगत पाई तथा उनमें से प्रत्येक ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से लाभ पाया तथा शिक्षा प्राप्त की तथा उनकी सर्वसहमति ईसा की मृत्यु पर थी। यह सर्वसहमति रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात् सब से पहली (सर्वसहमति) थी। उलेमा इस बात को जानते हैं। क्या तुम

अल्लाह का आदेश ^① قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ भूल गए और क्या तुम जान-बूझ कर कुफ़्र धारण करते हो तथा सहाबा में से प्रत्येक सहाबी ने इसी सर्वसहमति पर मृत्यु पाई तत्पश्चात् तुम विभिन्न गिरोह बन गए और तुम में फूट की वायु चलने लगी। तुम्हें मसीह के जीवित होने का कोई प्रमाण नहीं दिया गया, केवल गुमान से काम लेते हो। अल्लाह तआला ने ईसा की ज़बान से فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي فَلَامَّا تَوَفَّيْتَنِي^② फरमाया है।

अतः फिर भी तुम अल्लाह तआला के उस कथन पर विचार नहीं करते और न ही उसकी ओर ध्यान देते हो। क्या तुम अधिक जानते हो या अल्लाह? या तुम वह कुछ कहते हो जो तुम नहीं जानते।

फिर तुम जान लो कि किसी अर्थ के लिए बनाए गए शब्द का यह अधिकार है कि उसके समस्त लोगों में बिना किसी विशिष्टता एवं निर्धारण के वे बनाए हुए अर्थ पाए जाएं, किन्तु तुम "तवफ़्फ़ा" के लिए अपने बनाए हुए अर्थ में केवल ईसा को विशेष्य करते हो तथा कहते हो कि समस्त संसार में इस अर्थ में उस का कोई भागीदार नहीं। जैसे (तवफ़्फ़ा का) यह अर्थ केवल इब्ने मरयम के जन्म के समय पैदा हुआ तथा इस अर्थ का अस्तित्व न तो इस से पूर्व था और न भविष्य में प्रतिफल एवं दण्ड के दिन तक होगा। हे युवा पुरुष ! कल्पना कर ले कि ईसा पैदा न होता और न ही उसे ख़ुदा की ओर से कोई अस्तित्व दिया जाता तो यह शब्द (तवफ़्फ़ा) आभूषण से वंचित एक स्त्री के समान होता। अतः विचार कर तथा हम पर दांत न पीस और क्षमा करने वाले ख़ुदा से डर ! क्या तू समझता है कि यह अर्थ वह क़ालीन है जिस पर केवल इब्ने मरयम ने क़दम रखा या वह मार्ग जिसका मार्ग-दर्शन केवल उस आदरणीय बादशाह (ईसा) ने किया। यदि हम यह भी मान लें कि आयत "فَلَامَّا تَوَفَّيْتَنِي" में "तवफ़्फ़ा" के अर्थ केवल पार्थिव शरीर के साथ आकाशों की ओर रफ़ा ही हैं। तो फिर भी यह आयत हज़रत ईसा के पृथ्वी पर उतरने को झुठलाती है और शत्रुओं का उद्देश्य पूरा नहीं होता

① आले इमरान - 145

② अलमाइदह - 118

अपितु न उतरने का मामला ज्यों का त्यों शेष रहता है जैसा कि बुद्धिमानों से गुप्त नहीं क्योंकि हज़रत ईसा इन शब्दों में हिसाब के दिनों को उत्तर देंगे अर्थात् आप अलैहिस्सलाम **فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي** उस दिन कहेंगे जब सृष्टि उठाई जाएगी और वे उपस्थित किए जाएंगे। जैसा कि तुम पवित्र कुर्आन में पढ़ते हो। हे बुद्धिमानो ! मसीह के उत्तर का सारांश यह है कि हज़रत ईसा^{अ.} कहेंगे कि मैंने अपनी उम्मत को एकेश्वरवाद और स्वाभिमानी ख़ुदा पर ईमान लाने की अवस्था में छोड़ा था फिर मैं उनसे प्रलय के दिन तक पृथक् रहा और मुर्दों को हिसाब के लिए उठाए जाने के दिन तक संसार की ओर वापस नहीं गया। इसलिए मैं नहीं जानता कि उन्होंने मेरे पश्चात् कैसे-कैसे शिर्क, पाप और दुष्कर्म किए। और मैं भर्त्सनीय नहीं हूँ। यदि प्रलय से पूर्व संसार की ओर आप^{अ.} का वापस आना निश्चित बात होती तो इससे यह अनिवार्य होता है कि ख़ुदा तआला के प्रश्न करने पर आप^{अ.} (ईसा) बहुत बुरा झूठ बोलेंगे और यह व्यापक तौर पर असत्य है। इसलिए निःसन्देह (आप^{अ.} का) उतरना भी असत्य है।

अतः हे जवानो! जाग जाओ। तुम कुर्आन की शिक्षा से कितने दूर हो। (वास्तविकता यह है) कि हज़रत ईसा भी अपने अन्य नबी भ्राताओं के समान मृत्यु पा गए हैं तथा उनमें सम्मिलित हो गए हैं जैसा कि तुम समस्त नबियों से श्रेष्ठ नबी की हदीसों में पढ़ते हो। क्या तुम ने जगत के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस में पढ़ा है कि आप^{स.} आकाश में मरने वालों से पृथक् एक कमरे में रहते हैं ? कदापि नहीं अपितु वह मृत्यु प्राप्त हैं और प्रलय के लिए उठाए जाने तक संसार की ओर लौट कर नहीं आएंगे। जिस व्यक्ति ने इस के विरुद्ध जानबूझ कर कुछ और कहा तो वह उन लोगों में से है जो कुर्आन का इन्कार करते हैं सिवाए उन लोगों के जो मुझ से पूर्व गुज़र चुके हैं। अतः वे लोग अपने रब्ब के निकट असमर्थ हैं। कुर्आन गवाही देता है कि आप (ईसा^{अ.}) प्रलय के दिन कहेंगे कि मुझे अपनी उम्मत के विमुख हो जाने का बिल्कुल ज्ञान नहीं और न ही मुझे इस बात का ज्ञान है कि उन्होंने सृष्टि के रब्ब को छोड़ कर मुझे उपास्य बना लिया है। आप स्वयं को ईसाइयों के बिगड़ने और उनके पथ भ्रष्टता में पड़ने के

बारे में ज्ञान रखने से दोषरहित ठहराएंगे। यदि उन्होंने प्रलय से पूर्व उतरना होता तो आप^{अ.} की शान की मांग थी कि आप खुदा के समक्ष सत्य बात कहते।

जैसा कि यह सदाचारियों का ढंग अपितु रसूल और इमाम का लिबास है। फिर यह कैसे सोचा जा सकता है कि आप^{स.} झूठ बोलें और गवाही छुपाने के अपराधी होंगे और यह कहेंगे कि हे मेरे रब ! मैं संसार की ओर वापस नहीं गया और न मुझे मेरी उम्मत की परिस्थितियों का कुछ ज्ञान है और मुझे मालूम नहीं कि उन्होंने मेरे बाद क्या किया। अतः यह ऐसा झूठ है जिस से शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और कंपकपी छा जाती है।^① और यदि हम कल्पना कर लें कि वह ऐसी बातें कहेगा और प्रतापवान खुदा के प्रश्न करने पर संसार में अपने वापस जाने के युग को जान बूझ कर छुपाएगा और अपनी उम्मत के कुफ़्र पर अवगत होने की वास्तविकता और उनकी पथभ्रष्टता के मार्ग पर आग्रह करने को गुप्त रखेगा तो निःसन्देह अल्लाह उससे कहेगा कि हे ईसा ! तुझे क्या हो गया है कि तू मेरे सम्मान और प्रताप से नहीं डरता।

और मेरे प्रश्न करने पर मेरे समक्ष झूठ बोलता है। क्या तू अपनी वापसी के समय संसार में नहीं गया था और क्या तू अपनी उम्मत के शिर्क से अवगत नहीं है? क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने तुझे उपास्य बना लिया वे समस्त देशों में फैल गए और उत्तम घोड़ों के समान हर ऊंचाई से दौड़े चले आए और

① इमाम बुखरी ने मुगीरा बिन नो'मान से रिवायत की है कि वह कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के कुछ लोग (प्रलय के दिन) लाए जाएंगे और उन्हें पकड़ कर बाई ओर ले जाया जाएगा तो मैं कहूंगा - हे मेरे रब ! ये मेरे सहाबा हैं तो कहा जाएगा कि तू नहीं जानता कि इन्होंने तेरे बाद क्या कुछ किया तो मैं वही कुछ कहूंगा जो एक नेक बन्दे (अर्थात् ईसा) ने कहा कि मैं उन पर निगरान था जब तक मैं उन में रहा। फिर जब तू ने मुझे मृत्यु दे दी तो तू ही उन पर निगरान रहा। इसी प्रकार तवफ़्फ़ा के अर्थ के बारे में इमाम बुखरी ने इब्ने अब्बास^{रजि.} से रिवायत की है। इब्ने अब्बास^{रजि.} कहते हैं कि मुतवफ़्फ़ीका के अर्थ 'मुमीतुका' अर्थात् "मैं तुझे मृत्यु दूंगा" के हैं। इसी से।

तूने उनसे युद्ध किया है और अपने प्रयास और शक्ति से उन की सलीब तोड़ दी है। फिर अब तू अपने उतरने से इन्कार कर रहा है। तेरे झूठ और झूठ बांधने ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया है।

अतः कलाम का सारांश यह कि तुम्हारा "रफ़ा" ईसा के बारे में कथन मिथ्या और धर्म के लिए हानिप्रद है जैसे यह (धर्म का) वध करने वाला है और तुम कहते हो कि رَفَعَ "रफ़ा" का शब्द कुर्आन में मौजूद है। हां मौजूद तो है परन्तु उसके साथ متَوَفِّيكَ "मुतवफ़्फ़ीका" के शब्द से प्रमाणित हैं अपितु आयत के समस्त शब्द आध्यात्मिक "रफ़ा" पर साक्षी हैं। क्या तुम किताब के कुछ भाग पर ईमान लाते हो और कुछ का इन्कार करते हो। क्या यह तुम्हारा इस्लाम है या कुफ़्र और वैर? या तुम खुदा की किताब को यहूदियों के समान परिवर्तित करना चाहते हो। क्या तुम नहीं देखते कि متَوَفِّيكَ "मुतवफ़्फ़ीका" का शब्द रफ़ा के शब्द से पहले आया है और कुर्आन में मौजूद है? फिर क्या कारण है कि तुम क्रम का ध्यान नहीं रखते। और उसे अपनाते हो जो तुम्हारे लिए हानिकारक है और तुम उससे मुख फेरते हो जो तुम्हें लाभ पहुंचाता है और सीमाओं का उल्लंघन करते हो। क्या अल्लाह ने तुम्हें कुर्आन के अर्थ में परिवर्तन करने से मना नहीं किया? और क्या यह नहीं कहा कि तुम शैतान के मार्गों का अनुसरण न करो? और अल्लाह की क्रसम ! हां अल्लाह की क्रसम !! तुम्हें केवल और केवल द्वेष और शत्रुता ने सत्य से हटाया है और तुमने बहुत बड़े बिगाड़ को यों समझा है कि जैसे उसी से बिगाड़ दूर होगा। तुम मुझे कहते हो कि तूने मुसलमानों को झुठलाया और सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन का विरोध किया है। क्या खूब सुब्हान अल्लाह ! तुम जल्दी में अपने फ़त्वों को कैसे भूल गए जबकि हमने ने तो कभी काफ़िर कहने में शीघ्रता नहीं की और न तिरस्कार में पहल की। क्या तुम ने इस देश और उसके चारों ओर तथा गली कूचों और बाजारों में हमें काफ़िर ठहराने का प्रचार नहीं किया? क्या तुम फ़त्वों के पर्चों को और वह जो तुम अत्यन्त निर्लज्जता से कह चुके हो और कह रहे हो भूल गए हो? और तुमने पूर्ण प्रयास किया कि हमारी आस्था का खण्डन कर दो तथा हमारे इरादे को समाप्त

कर दो और इसी प्रकार तुमने बीस अपितु बीस वर्ष से भी अधिक समय से, हर प्रकार की योजनाएं बनाई और हर प्रकार के फ़िल्ने पैदा किए और मेरे संबंध में गाली-गलौज में से जो चाहा कह दिया।

फिर तुमने उसको ग़ैरों और मित्रों में प्रकाशित किया जैसे तुम पकड़ और हिसाब से छुटकारा पा चुके हो, किन्तु अल्लाह ने उस प्रकाश को पूर्ण किया जिसे तुम बुझाना चाहते थे और उस समुद्र को भर दिया जिसके पानी सूखने की तुम आशा करते थे और तुमने हमारे लिए दुर्भिक्षग्रस्त पृथ्वी की दुआ दी परन्तु अल्लाह ने हमें रब्बाह^① और हरी भरी एवं सींची हुई घाटी और बाग़ में शरण दी और हमें वे ने'मतें, उपकार और बरकतें प्रदान कीं जिन्हें न तुमने और न ही तुम्हारे बाप-दादों ने देखा था। क्या यह झूठ गढ़ने का इनाम है? क्या तुमने किसी युग में भी ऐसा होने की सूचना पाई है?

अल्लाह तुम पर दया करे। तुम्हें ज्ञात हो कि मेरे दावे की सच्चाई और ईसा की मृत्यु कोई ऐसी बात नहीं थी जिसे समझना कठिन हो परन्तु तुम्हारी मनोवृत्ति ने तुम्हें अपने इमाम को झूठा कहने पर उकसाया।

अतः तुम्हारे हृदय टेढ़े हो गए और तुम ने वैसा न सोचा जो यथोचित था और मैं तुम्हारे पास निशानों, प्रमाणों और स्पष्ट तर्कों को लेकर आया तथा ख़ुदा ने मुझ पर वह बात स्पष्ट कर दी जो इब्ने मरयम के बारे में उसने तुम पर गुप्त रखी हुई थी और यह उस ख़ुदा की कृपा है कि उसने मुझे वह बात समझा दी जिससे

① अल्लाह तआला ने *وَأَوَيْنَاهُمَا إِلَى رِبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ* (और हमने उन दोनों को एक ऊंचे स्थान की ओर शरण दी जो अमन और झरनों वाला था) के शब्द पवित्र कुर्आन में कहे हैं और जब अल्लाह ने मुझे ईसा का समरूप बनाया तो उसने बर्तानिया के शासन को मेरे लिए अमन और आराम का रब्बाह और अच्छा ठिकाना बना दिया। अतः सब प्रशंसा ख़ुदा के लिए है जो पीड़ितों की शरणस्थली है और समस्त नीतियां और हिकमतें ख़ुदा ही की हैं, किसी की क्या मजाल कि वह ऐसे व्यक्ति को कष्ट दे सके जिसे ख़ुदा सुरक्षित रखे और ख़ुदा ही सबसे अच्छी सुरक्षा करने वाला है। इसी से।

उसने न तो तुम्हें अवगत किया और न ही समझाया। क्या तुम समझते हो कि गुफा वाले और शिलालेखों वाले हमारे अद्भुत निशानों में से थे^① खुदा ने सदियों तक हमें तुम्हारी आंखों से ओझल रखा और उन पर पर्दे डाले रखे। अतः तुम आकाश से मसीह के उतरने की प्रतीक्षा करते रहे और अल्लाह ने तुम्हारी चिन्ताओं तथा सोचों को उस प्रकाशमान वास्तविकता से हटाए रखा ताकि वह तुम पर यह प्रकट कर दे कि तुम उस (खुदा) के रहस्यों एवं भेदों को समझने से असमर्थ हो और यह अल्लाह का नियम है ताकि वह तुम्हें विचारों को प्रकट करने के समय शिष्टाचार सिखाए।

यह मामला तुम पर केवल आजमायश के कारण संदिग्ध रहा कि अल्लाह इसके द्वारा तुम्हारी परीक्षा ले। अतः उसने इस गोपनीयता के बाद उसे प्रकट कर दिया।

इससे बढ़कर और पाप क्या हो सकता है कि कुर्आन करीम में अल्लाह ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु की सूचना देता है और इस बात की भी सूचना देता है कि प्रलय के दिन ईसा^अ अपनी उम्मत के कुफ़्र तथा उसके बारे में ज्ञान न होने से पूर्व अपनी मृत्यु का इक्रार करेंगे जैसा पहले वर्णन हो चुका है तथा (हमारे) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि मैंने उसे मै'राज की रात मृत्यु प्राप्त लोगों में यह्या के पास देखा, फिर भी तुम उसे शरीर के साथ आकाश की ओर उठाते हो। हमने इससे विचित्रतम कोई बात नहीं देखी। तुम क्यों बात नहीं समझते। मेरा कथन, निर्णायक कथन है। अतः इससे तुम कदापि भाग न सकोगे। तुम उस (मसीह) के जीवन पर आग्रह करते हो किन्तु इस पर कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं करते, ^② وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا और अल्लाह से बढ़कर कौन सच्ची बात कह सकता है

① यह वह वह्यी है जो मेरे रब्ब ने मुझे कुर्आनी शब्दों में की और इस तरह मेरे रब्ब ने मुझे उसी प्रकार गुप्त रखा जिस प्रकार उसने अस्हाब-ए-कहफ़ को गुप्त रखा था और यह खुदा के नियमों में से है कि वह अपने कुछ रहस्य लोगों की नज़रों से गुप्त रखता है ताकि उन्हें ज्ञात हो कि उनका ज्ञान सीमित है और ताकि अल्लाह तआला अपने बन्दों को आजमाए और उनमें से मोमिनों और अपराधियों के अन्तर को दिखा दे।

② अन्निसा - 123

और इसके अतिरिक्त तुम्हारा उत्तर कोई नहीं कि तुम कहो कि हमारे पूर्वज इसी आस्था पर थे, यद्यपि तुम्हारे पूर्वज सद्मार्ग से हटे हुए थे। और उन लोगों के विचारों की क्या हैसियत है जो सहाबा के बाद प्रकट हुए अपितु तीन सदियों के पश्चात्। उनका कोई अधिकार न था कि अल्लाह की दी हुई ख़बरों को उनके घटित होने से पूर्व ही व्याख्याएं करने लगे अपितु अच्छी सभ्यता की मांग थी कि वे उन (ख़बरों) के स्रोतों के मार्गों का मामला ख़ुदा के सुपुर्द कर देते। उम्मत के प्रतिष्ठित लोगों का आचरण यही रहा है कि वे परोक्ष की सूचनाओं का वर्णन करते समय किसी एक अर्थ पर आग्रह नहीं करते थे अपितु वे उन पर ईमान लाते थे तथा उनके विवरण को वास्तविकता का ज्ञान रखने वाले (ख़ुदा) के सुपुर्द कर देते थे। यही पद्धति संयमियों और बुद्धिमानों के निकट सुरक्षित पद्धति है। तत्पश्चात् ऐसे उत्तराधिकारी हुए जिन्होंने अपने ज्ञान और आध्यात्म ज्ञान की सीमाओं का उल्लंघन किया और जो — لا تقف مالىس لك به علم — कहा गया है अर्थात् जिस बात का तुझे ज्ञान नहीं उसका अनुसरण न कर, को भूल गए तथा प्रत्येक स्थान पर पिस्सुओं की भांति उछल-कूद की तथा ऐसी बात पर आग्रह किया जिसको उन्होंने पूर्ण रूप से अपनी परिधि में नहीं लिया था। हाय अफ़सोस ! उन पर और उन के साहस पर कि मिल्लत (इस्लामिया) को उनसे ऐसा आघात पहुंचा है कि ईसाइयत की ओर से पहुंचने वाले आघात के समान है तथा मिल्लत के लिए केवल अकाल के समान हैं।

वे ईसा को पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठाते हैं तथा ख़ुदा के आदेश **قُلْ سُبْحَانَ رَبِّي** पर विचार नहीं करते^① अपितु वे शत्रुता और बैर में बढ़ते

① मेरा अभिप्राय **قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيَ هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا رَسُولًا** (बनी इस्राईल-94) की आयत है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह आयत किसी मनुष्य के पार्थिव शरीर सहित आकाश पर चढ़ने के निषेध पर एक स्पष्ट तर्क है तथा केवल मूर्ख ही इसका इन्कार करते हैं। ख़ुदा के आदेश **قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيَ** में आयत **فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ** (अलआराफ़-26) की ओर संकेत है क्योंकि किसी मनुष्य का आकाश की ओर रफ़ा ऐसी बात है जो उस प्रतिज्ञा को तोड़ती है और ख़ुदा का अस्तित्व इस से पवित्र है कि वह अपनी प्रतिज्ञा भंग करे। अतः हे बुद्धिमानो ! विचार करो। इसी से।

चले जा रहे हैं। हे युवाओ ! तुम इन (कथित) आयतों के मुकाबले पर कहां खड़े हो और तुम संदिग्ध बात का अनुसरण क्यों करते हो और जो दृढ़ और अटल निशान हैं उन्हें छोड़ रहे हो। क्या तुम नहीं जानते कि काफ़िरों ने इस आयत (قُلْ سُبْحَانَ رَبِّي) में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो समस्त नबियों में सर्वश्रेष्ठ तथा समस्त वलियों में सर्वोत्तम हैं से आकाश पर चढ़ने के चमत्कार की मांग की थी, जिसका ख़ुदा ने उन्हें यह उत्तर दिया था कि किसी मनुष्य का आकाश की ओर अपने शरीर के साथ ख़ुदा की ओर रफ़ा का नियम नहीं अपितु यह उसके वादों और उसके नियम के विरुद्ध है। यदि कष्ट कल्पना के तौर पर मान लिया जाए कि ईसा अलैहिस्सलाम अपने पार्थिव शरीर के साथ दूसरे आकाश पर उठाए गए थे तो इस आयत में इस निषेध के क्या अर्थ होंगे? क्या ईसा अलैहिस्सलाम ख़ुदा के निकट मनुष्य न था?

अतः फिर उसके ऊंचे आकाशों की ओर उठाए जाने की कौन सी इतनी अधिक आवश्यकता आ पड़ी थी? क्या पृथ्वी उस पर तंग पड़ गई थी अथवा यहूदियों के हाथों से बचने के लिए उसके लिए पृथ्वी पर कोई भागने का स्थान न रहा था कि उसे छुपाने के लिए आकाश पर उठाया गया?

हे लोगो ! सद्मार्ग की सीमाओं का उल्लंघन न करो और सीधी डंडी से तोलो और ख़ुदा की सौगंध ! इस्लाम के जीवन के लिए ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु उसके जीवन से अच्छी है। तथा इस्लाम धर्म की सम्पूर्ण विजय उसकी मृत्यु में है। क्या तुम अच्छाई को बुराई में परिवर्तित करना चाहते हो तथा लाभ-हानि के मध्य अन्तर नहीं करते। ख़ुदा की क्रसम! इस धर्म (इस्लाम) का जीवन और इब्ने मरयम का जीवन कदापि इकट्ठे नहीं हो सकते। तुम देख चुके हो कि उनके जीवन ने अब तक क्या बनाया और क्या बिगाड़ा तथा तुम देख रहे हो कि उनके जीवन ने ईसाइयों की कैसी सहायता की तथा उन्हें आगे बढ़ाया तथा सुदृढ़ धर्म को घायल किया। जब उस (मसीह के जीवित होने की आस्था) की हानि बिल्कुल हमारे सामने सिद्ध हो चुकी है तो फिर हमारे बाद के युग में उससे भलाई की क्योंकि आशा की जा सकती है और जब हम ने एक लम्बे समय तक उनके जीवन की

हानियों का अनुभव कर लिया है तो उसके पश्चात् इस आस्था से किस भलाई की आशा की जा सकती है।

बुद्धिमान वह है जो अनुभवों से मुख नहीं फेरता और अल्लाह हिक्मत के मार्गों की ओर मार्ग-दर्शन करता है तथा अपने बन्दों पर दया करता है तथा उन्हें पथ भ्रष्टता के द्वारों से बचाता है। निःसन्देह ईसा अलैहिस्सलाम का जीवन और उसके उतरने की आस्था गुमराह करने वालों के द्वारों में से एक द्वार है तथा नाना प्रकार की विपत्तियों के अतिरिक्त उससे कोई आशा नहीं रखी जा सकती। अल्लाह के कामों में ऐसी नीतियां होती हैं जिन्हें तुम नहीं जानते तथा ऐसे हित होते हैं जिन्हें तुम छू भी नहीं सकते अल्लाह तुम पर दया करे। विचार तो करो कि ईसा के जीवित होने की आस्था जैसा कि अब तक तुम उस पर हठ कर रहे हो। फिर युग के अन्त में उनके उतरने की आस्था ऐसी बात है जिसने तुम्हें लेशमात्र भी लाभ नहीं पहुंचाया और न उसने हमारे उस धर्म का समर्थन किया है जो सब धर्मों से उत्तम है अपितु ईसाई धर्म का समर्थन किया है तथा मुसलमानों के समूह के समूह सलीबी धर्म में सम्मिलित किए हैं। हे मुसलमानों के गिरोह ! मुझे ज्ञात नहीं कि तुम ने उसके उतरने की क्या आवश्यकता महसूस की। उसके जीवित रहने की आस्था तुम्हें हानि पहुंचाती है, लाभ नहीं। क्या तुम्हें गत वर्षों में इसकी हानि दिखाई नहीं दी, क्या गुजरे हुए युग में इस आस्था ने तुम्हें कोई लाभ पहुंचाया? नहीं, अपितु तुम्हें विनाश में बढ़ाया और पुरुष तथा स्त्रियां धर्म से विमुख हुए। अतः हे युवाओ ! इसके पश्चात् उससे किस भलाई की आशा की जा सकती है। तुम देख चुके हो कि ईसाइयत को स्वीकार करने वाले पादरियों की ओर से उनसे जालों के द्वारा खींचे गए। यह वह चोर है जिसने उन्हें गुमराही के कुएं में फेंक दिया, हालांकि वे इस मिल्लत (इस्लामिया) की नस्ल एवं औलाद में से थे और फिर वे सांपों या जंगल के दरिन्दों की भांति हो गए तथा उन्होंने इस्लाम से शत्रुता की और उसे गधे जैसी अप्रिय आवाज़ के साथ बुरा भला कहा तथा अपने निकट संबंधियों और माता-पिता को चीखते चिल्लाते हुए छोड़ दिया और सृष्टि में सर्वोत्तम आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बुरा भला कहने तथा पिछली पुस्तकों में से सर्वोत्कृष्ट पुस्तक

(कुर्आन करीम) का अपमान करने में अपना जीवन समर्पित कर दिया तथा उन्होंने कहा - कि यह तो कवियों जैसी वाणी है और कौन व्यक्ति उससे लाभान्वित हो रहा है उन्होंने हमारे धर्म को उपहास का लक्ष्य बनाया तथा उसकी चर्चा केवल बुराई के रूप में करते हैं और कहा कि यदि तुम इस इस्लाम धर्म की अवस्था में मरे तो निश्चय ही अग्नि में प्रवेश करोगे खुदा तुम्हें सद्मार्ग अपनाने का सामर्थ्य प्रदान करे और अज़ाब के मार्गों से बचाए।

तुम्हें ज्ञात हो कि यह उपद्रव (ईसाइयत) जिसे तुम साधारण बात समझते हो, खुदा के निकट बहुत बड़ा उपद्रव है और इस उपद्रव ने तुम में से बहुत से लोगों को तबाह किया और उन्हें नर्काग्नि में प्रविष्ट कर दिया है तथा यही कारण है कि अल्लाह तआला ने अपनी पुस्तक कुर्आन करीम में कई स्थानों पर इस (उपद्रव) का वर्णन किया है और इसी आस्था की ओर आकाश का फटना और पर्वतों का टुकड़े-टुकड़े होकर गिरना तथा महाप्रकोप के लक्षणों का प्रकटन सम्बद्ध किया है खुदा की क्रसम ! मैं इस बात से बहुत हैरान हूँ कि मुसलमानों ने ऐसे कथन के द्वारा जो अल्लाह तआला के कथन के विपरीत हैं ईसाइयों की सहायता की तथा उन्होंने कहा कि ईसा अपने भौतिक शरीर के साथ आकाश की ओर उठाया गया और वह भविष्य में किसी समय पृथ्वी पर उतरेगा। यह ईसाइयों के निकट मसीह को उपास्य बनाने पर सबसे बड़ा तर्क है और इसी तर्क द्वारा वे बहुत से अनाड़ी लोगों को पथभ्रष्ट करते हैं। वास्तविकता यह है कि वह मृत्यु पा चुका और मुर्दों से जा मिला, इस बात पर किताब और सुन्नत में बहुत से तर्क हैं, कुर्आन ने उसकी मृत्यु का वर्णन अनेक स्थानों पर किया है तथा हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें मे'राज की रात में यह्या के पास दूसरे आकाश पर मुर्दों में देखा। और इस गवाही से बड़ी और महान गवाही क्या हो सकती है, किन्तु इसके बावजूद फिर भी मूर्ख लोग मेरी इस बात को सुन कर मुझ पर आक्रमण करते हैं और कहते हैं कि यदि तलवार होती तो हम तुझे अवश्य मार देते जबकि अल्लाह की तलवार उस गिरोह की तलवारों से कहीं अधिक तीव्र है। क्या उनमें से कुछ लोगों ने मुबाहले के समय अल्लाह की तलवार की चोट का अवलोकन

नहीं किया? और कुर्आन में ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु का वर्णन कई बार हुआ है और इस बात का भी वर्णन हुआ है कि आप को एक उच्च स्थान पर शरण दी जो अत्यन्त शान्तिपूर्ण तथा झरनों वाला था तथा अन्य प्रमाणों से यह सिद्ध हो गया है कि यह निश्चित तौर पर कश्मीर में है तथा वहां ईसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र मिली है और यह कहानी प्राचीन पुस्तकों में मौजूद है जिसे स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं। सत्य खुलकर स्पष्ट हो गया तथा प्रत्येक प्रकार की प्रशंसा का अल्लाह ही अधिकारी है जो समस्त लोकों का रब्ब है। कश्मीर के रहने वालों ने गवाही दी है कि वह बनी इस्राईल के एक नबी की क़ब्र है जिसने अपनी क़ौम के कष्ट पहुंचाने के पश्चात् इस प्रदेश की ओर प्रवास किया था तथा इस घटना पर संभवतः दो हजार वर्ष का समय गुज़र चुका है। अतः सारांश यह कि ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु स्पष्ट प्रमाण द्वारा प्रमाणित है।

और इसका इन्कार केवल वही व्यक्ति करता है जो कुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों का इन्कारी है और यदि अल्लाह की इच्छा होती तो वह अवश्य ऐसे इन्कारी को उसकी समझ प्रदान करता, परन्तु वह जिसे चाहे पथभ्रष्ट ठहराता है और वे सब उसी की ओर लौटाए जाएंगे। वे केवल भ्रम का अनुसरण करते हैं और हम उनके हाथों में कोई ऐसा प्रमाण नहीं देखते जिसे वे दृढ़ता से पकड़े हुए हों तथा ठोस एवं अत्यन्त स्पष्ट आदेशों की तुलना में भ्रमपूर्ण कथनों को पकड़े रहना बेईमानी है तथा संयम के मार्ग से बाहर जाना है। अतः उन लोगों के लिए जो नहीं रुकते विनाश है। ऐसे लोग जो विचार नहीं करते वे कहेंगे कि ईसा अलैहिस्सलाम प्रलय की निशानी है और समस्त अहले किताब अपनी मृत्यु से पूर्व इस पर अवश्य ईमान लाएंगे। यह वह कथन जो उन्होंने अपने पूर्वजों से सुना हुआ है परन्तु बुद्धिमानों के समान उन्होंने इस पर विचार नहीं किया। उन्हें क्या हो गया कि वे नहीं जानते कि निशान से अभिप्राय उनका चमत्कार के तौर पर बिना बाप के पैदा होना है तथा कोई बुद्धिमान इसका इन्कार नहीं करता। शेष रहा समस्त अहले किताब का ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाना जैसा कि उन्होंने कथित आयत के अर्थों से समझा है तो तुम उनके ईमान की वास्तविकता को भलीभांति

जानते हो जिस का वर्णन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

और तुम जानते हो कि बहुत से यहूदी मर गए, परन्तु वे ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान नहीं लाए। अतः तुम व्यापक तौर पर झूठी आस्था के लिए खुदा की वाणी में परिवर्तन न करो जबकि अल्लाह ने (स्पष्ट तौर पर) यह फ़रमा दिया है कि “हमने उनके मध्य प्रलय के दिन तक शत्रुता और बैर डाल दिया।” फिर ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने के पश्चात् शत्रुता कैसी? क्या तुम्हारे सिर में थोड़ी सी भी बुद्धि शेष नहीं, क्या इस आयत में उस व्यक्ति का खण्डन नहीं जो यह सोचता है कि यहूदियों के समस्त सम्प्रदाय ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाएंगे। फिर क्या कारण है कि तुम इस स्पष्ट आदेश का विरोध कर रहे हो जो बिल्कुल व्यापक और स्पष्ट है। फिर तुम्हारे हाथ में वह कौन सी आयत शेष रह गई है जिसे तुम दृढ़तापूर्वक पकड़े हुए हो। मुझे तुम्हारी दशा पर आश्चर्य है कि किस तर्क के आधार पर तुम विवाद कर रहे हो जबकि अल्लाह ने कुर्आन में अनेक बार ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु का वर्णन किया है फिर तुम क्यों नसीहत प्राप्त नहीं करते तथा समस्त संसारों के प्रतिपालक के कलाम में विरोधाभास असंभव है। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम उचित तर्कों से शत्रुता रखते हो और पुस्तकों से किए गए तर्कों को झुठलाते हो तथा हम तुम्हारे समक्ष खुदा का कलाम प्रस्तुत करते हैं परन्तु तुम मुख फेर कर गुज़र जाते हो।

और तुम जानते हो कि बिना किसी अपवाद के मसीह मौऊद का उतरना ऐसी बात है जिस पर हम और तुम किसी मतभेद के बिना ईमान रखते हैं। अतः हमारे और तुम्हारे मध्य मूल विवाद इब्ने मरयम के आकाश से उतरने के संबंध में है। इसलिए अल्लाह ने अपने प्रकाशमान ग्रन्थों में उसकी मृत्यु की सूचना देकर इस विवाद का निर्णय कर दिया। अतः जिसे अल्लाह हिदायत देना चाहता है तो वह उसके सीने को कुर्आन के वर्णन करने के लिए खोल देता है तथा कुर्आन करीम के पश्चात् हमारे और तुम्हारे निकट वह कौन सी ऐसी पुस्तक है जिसे दृढ़ता से पकड़ा जा सकता है? खेद है तुम पर कि न तो तुम शास्त्रार्थ के लिए उपस्थित होते हो और न मुबाहले के लिए आते हो। हां दूर से आक्रमण कर रहे हो तथा

हमारे पास अल्लाह की किताब और उसके रसूल की सुन्नत से बहुत से प्रमाण मौजूद हैं। अतः हम उन लोगों के सामने उन्हें कैसे प्रस्तुत करें जो मुख फेर रहे हैं। क्या वे नहीं जानते कि बिदअत करने वाले तथा काफ़िर खुदा से समर्थित नहीं होते और न ही वे सहायता दिए जाते हैं और न ही अल्लाह के यहां उन्हें मान्यता प्राप्त होती है और न ही वे सदाचारी लोगों के समान प्राथमिकता दिए जाते हैं। वे कौन सा पाप मेरी ओर सम्बद्ध करते हैं सिवाए इसके कि मैंने उन्हें ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु की सूचना दी।

जबकि उनसे पूर्व समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं। क्या वे इस प्रमाणित सर्वसम्मति से मुख फेर लेंगे जो कुरआन करीम की स्पष्ट और खुली-खुली आयत पर आधारित है या वे स्वयं निर्णय करने वाले हैं। अल्लाह की क्रसम ! ईसा^{अ.} मृत्यु पा चुके हैं। वे खुली-खुली सच्चाई से दुश्मनी रखते हैं और वह कुछ कह रहे हैं जो कुरआन के विरुद्ध है तथा वे अल्लाह से डरते नहीं। उन्हें ईसा^{अ.} की मृत्यु के बारे में जिस कठिनाई का सामना है। वास्तव में वे हद से आगे बढ़ने वाले लोग हैं। वे उसे (अर्थात् ईसा^{अ.} को) ऐसी विशेषता से विशिष्ट कर रहे हैं जो मनुष्यों में से किसी व्यक्ति में नहीं पाई जाती। वे जान बूझ कर ईसाइयों का समर्थन करते हैं तथा अल्लाह का स्वाभिमान यह कैसे सहन कर सकता है कि कोई व्यक्ति ऐसी विशेषता के साथ विशिष्ट किया जाए जिसमें संसार के आरंभ से उसके अन्त तक उसका कोई भागीदार न हो। इससे बढ़कर कौन सी आस्था कुफ़्र के अधिक निकट है। काश वे विचार करते क्योंकि ऐसी विशिष्टता शिर्क का आधार है। हे मूर्खों ! शिर्क से बड़ा कौन सा पाप है और जब ईसाइयों ने कहा - कि ईसा^{अ.} बिना बाप पैदा होने के कारण खुदा का बेटा है और वे इस आस्था को दृढ़ता से पकड़े हुए हैं तो अल्लाह ने इस कथन के द्वारा उन्हें उत्तर में फ़रमाया कि- **إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ ط خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ①** “अल्लाह के निकट ईसा की स्थिति आदम की स्थिति के समान है जिसे उसने मिट्टी से पैदा किया फिर उसे कहा कि ‘हो जा’ तो वह हो गया।” परन्तु हम ईसा

के रफ़ा और उसके उतरने की विशेषता का उत्तर कुर्आन में नहीं पाते जबकि वे सलीबियों (ईसाइयों) के यहां ईसा के ख़ुदा होने पर समस्त तर्कों में से सबसे बड़ा तर्क है। यदि हमारे रहमान ख़ुदा के ज्ञान में ईसा^अ के आकाश पर चढ़ने और वहां से उतरने की बात उचित होती तो अनिवार्य था कि अल्लाह तआला कुर्आन करीम में भी ईसा^अ के समरूप का भी वर्णन करता। जिस प्रकार उसने हज़रत आदम का वर्णन किया है ताकि वह इस प्रकार ईसाइयों के तर्क को ग़लत सिद्ध करे। निःसन्देह इस तर्क का उत्तर छोड़ देने में यह आशय मौजूद है कि यह क्रिस्सा असत्य और निराधार है और मात्र अनुचित बातों के समान है। क्या तुम जानते हो कि वह कौन सा युक्ति थी जिसने ख़ुदा तआला को इस उत्तर से रोका, हालांकि यह ख़ुदा पर अनिवार्य था कि वह उत्तर देता और ईसाइयों के इस विचार का पूर्णतया उन्मूलन करता और ईसाई उलेमा ऐसे लोग हैं जो प्रतिदिन अपने झूठ में बढ़ते जा रहे हैं तथा अपने घमण्ड और धृष्टता के कारण सत्य की ओर ध्यान नहीं देते और मैंने इस्लाम के समर्थन के लिए उन पर अल्लाह की ओर से समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण कर दिया है।

और इस बारे में मैंने बहुत सी पुस्तकें लिखीं और लोगों के लाभ के लिए सुदूर देशों तक उनको फैला दिया है, फिर जब हमारे मध्य यह बहस लम्बी खिंची और मैंने एक व्यक्ति भी ऐसा नहीं पाया जो इस्लाम की ओर झुकाव प्रकट करे तो मैं समझ गया कि यह मामला उपकारी ख़ुदा की सहायता का मुहताज है और मैं स्वयं तो कुछ भी नहीं हूँ। यहां तक कि कृपालु ख़ुदा की दया मुझे थाम ले तो मैं उसका दया का भिखारी बन कर ख़ुदा की चौखट पर गिर गया और मैं मात्र मुर्दे के समान था, तब मेरे रब्ब ने दो बातों से मुझे ज़िन्दा किया और आंखों को रौशन किया और फ़रमाया - अर्थात् “हे अहमद ख़ुदा ने तुझ में बरकत रख दी। वह ख़ुदा कृपालु है जिसने तुझे कुर्आन सिखाया है ताकि तू उन लोगों को डराए जिनके बाप-दादा नहीं डराए गए और ताकि ख़ुदा के समझाने का अन्तिम प्रयास पूरा हो जाए और अपराधियों का मार्ग स्पष्ट हो जाए। उनको कह दे कि मैं ख़ुदा की ओर से अवतरित हूँ और सर्वप्रथम मैं इस बात पर ईमान

लाने वाला हूं।^① और उसने मुझे शुभ सन्देश दिया कि इस्लाम धर्म का उत्थान किया जाएगा और उस का प्रचार किया जाएगा और तुझ जैसा मोती नष्ट नहीं हो सकता और यह प्रथम वही है जो शक्तिशाली और सहायक खुदा की ओर से इस विनीत को की गई और मेरे रब्ब ने मुझे शुभ सन्देश दिया कि वह मेरे लिए

① मुसलमानों में से मेरे शत्रु मेरा नाम महा काफ़िर रखते हैं। उनके खण्डन में अल्लाह का कथन जो मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया में आ चुका है - “कह मैं मामूर हूं और मैं इस बारे में समस्त मोमिनों में से बढ़कर हूं।” और उन्होंने कहा कि इस व्यक्ति को मुसलमानों के कब्रिस्तान में दफ़न न किया जाए। परन्तु इसके खण्डन में रसूलुल्लाह का कथन आ चुका है कि - “मसीह मौऊद मेरी कब्र में दफ़न किया जाएगा और क्रियामत के दिन मेरे साथ ही उठाया जाएगा” यह उन काफ़िर कहने वालों को उत्तर दिया गया है जो मुझे नारकी समझते हैं और यदि तू सन्देश में ग्रस्त है तो मुफ़्तियों से पूछ ले। और आलम-ए-बर्ज़ख़ के अद्भुत कार्यों में से यह भी है कि कुछ लोग उनकी मृत्यु के पश्चात् नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कब्र मुबारक के निकट किए जाते हैं जिसके नीचे जन्नत है और कुछ लोग उस कब्र से दूर किए जाते हैं। अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे बारे में यह सूचना दी है कि मैं सानिध्य प्राप्त लोगों में से हूं, और यह उस व्यक्ति के आरोप का खण्डन है जिसने कहा कि यह व्यक्ति नारकियों में से है और यह ऐसा दफ़न करना होगा जिसे अल्लाह तआला अध्यात्मिक रूप में पूर्ण करेगा और यह ऐसी बात है जिसके खुदा तआला की किताब और उसके रसूल के आदेशों में संकेत पाए जाते हैं और जिस पर आध्यात्मिकता से संबंध रखने वाले एक वर्ग की इस पर सर्वसम्मति है।

इसी प्रकार उन्होंने कहा कि इस व्यक्ति की जमाअत के लोग काफ़िर हैं मोमिन नहीं। अतः उनके मृत्यु प्राप्त लोगों को मुसलमानों के कब्रिस्तान में दफ़न न करो, क्योंकि यह निकृष्टतम काफ़िर हैं। तो मेरे रब्ब ने मुझे वही की और पृथ्वी के एक भाग की ओर संकेत करके फ़रमाया - यह ऐसा भाग है जिसके नीचे स्वर्ग है जो इसमें दफ़न किया जाएगा वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा और वह अमन दिए जाने वाले लोगों में से होगा। अतः यदि शत्रुओं की बातें न होतीं तो इन इनामों का अस्तित्व भी न होता। अतः उन के क्रोध ने खुदा तआला की दया को जोश दिलाया। समस्त प्रकार की प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं जो समस्त संसारों का प्रतिपालक है। इसी से।

प्रकाशमान निशान प्रकट करेगा तथा निरन्तर समर्थनों द्वारा मेरी सहायता करेगा।

ताकि वह शक्तिशाली तर्कों तथा चमकदार निशानों से सत्य को सत्य और असत्य को असत्य सिद्ध कर दे। फिर इसके पश्चात् मैंने पादरियों, ईसाइयों तथा ईसाइयत में प्रवेश करने वालों तथा उन के अतिरिक्त ब्राह्मणों एवं अनेकेश्वरवादियों को आमन्त्रित किया और उन्हें कहा कि अल्लाह के निशानों तथा उसकी सहायता के द्वारा सत्य को परखो ताकि यह स्पष्ट हो जाए कि कौन ख़ुदा की ओर से सहायता प्राप्त होगा और कौन उसके प्रकोप का पात्र होगा परन्तु वह हथियारबन्द योद्धाओं के समान इस मुकाबले के लिए न निकले और अपने घरों में छुप गए। ख़ुदा की क्रसम ! यदि वे मैदान में आते तो मेरा रब्ब सटीक निशाने पर तीर बरसाता और उनमें से प्रत्येक असफल और निराश होकर लौटता और ख़ुदा की क्रसम ! यदि तू छानबीन करता तो देख लेता कि इस्लाम निशानों का भण्डार और उनका शहर है और तू इसमें ऐसा प्रकाश पाता जो प्रत्येक व्यक्ति को उसका आराम-चैन प्रदान करता। अतः खेद है कि ऐसे लोगों पर जो इसके छुपे हुए खज़ानों का इन्कार करते हैं और इसके खज़ानों की ओर कुछ ध्यान नहीं देते और इस्लाम को सड़ी-गली हड्डियों के समान समझते हैं, महान नेमतों से परिपूर्ण नहीं समझते। यह ऐसे लोग हैं जो इस बात पर ईमान नहीं लाते कि हमारे सय्यिद व मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात् अल्लाह किसी से वार्तालाप करता है।

और वे कहते हैं कि संसार के गौरव हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात् ख़ुदा ने बोलना बन्द कर दिया है मानो वर्तमान युग में अल्लाह बोलने की विशेषता खो बैठा है और केवल सुनने की विशेषता शेष रह गई है और संभवतः यह सुनने की विशेषता भी भविष्य में जाती रहे और जब बात करने और दुआएं सुनने की विशेषता समाप्त हो गई तो शेष विशेषताओं के बचे रहने की भी आशा नहीं रखी जा सकती। मेरा अभिप्राय यह है कि इस अवस्था में समस्त विशेषताओं से विश्वास उठ जाएगा। अतः जिसने ख़ुदा तआला की विशेषताओं में से किसी एक विशेषता के शाश्वत होने का इन्कार किया तो मानो उसने सम्पूर्ण

विशेषता के अनश्वर होने का इन्कार कर दिया और नास्तिकता की ओर झुक गया। अतः हे बुद्धिमानो ! तुम ऐसे व्यक्ति के बारे में क्या कहते हो, क्या वह मुसलमान है या वह इस्लाम से दूर हो गया है?

क्या तुम विचार करते हो कि इस्लाम कुछ गिने-चुने किस्सों से अभिप्राय है और इसमें ऐसे निशान मौजूद नहीं जो दिखाई देते हों। क्या हमारे रब्ब ने हमारे सय्यिद व मौला संसार के गौरव सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु के पश्चात् हम से मुख मोड़ लिया है? फिर कौन सी वस्तु इस मिल्लत की सच्चाई को सिद्ध करती है, क्या अल्लाह अपने उस इनाम के वादे को भूल गया जिसका उसने सूरह फ़ातिहः में वर्णन किया है अर्थात् इस उम्मत को पहली उम्मतों के नबियों के समान बनाना?

क्या हमें कुर्आन में सर्वश्रेष्ठ उम्मत नहीं ठहराया गया। फिर किस वस्तु ने कुर्आन करीम के विरुद्ध हमें सब से निकृष्ट उम्मत बना दिया। क्या बुद्धि उचित ठहराती है कि हम तो ख़ुदा को पहचानने के लिए पूर्ण प्रयास करें, परन्तु फिर भी उसके मुख्य मार्गों को प्राप्त न कर सकें और हम दयारूपी दिलों को ठंडक पहुँचाने वाली रहमत के लिए मरें, परन्तु फिर भी हम उसके झोंकों से वंचित रहें। क्या यही इस उम्मत की पराकाष्ठा की सीमा है? जब कि संसार दिन-प्रतिदिन अपने अन्त की ओर बढ़ता जा रहा है। अतः जान लो कि जिस प्रकार यह विचार करना बुद्धिमत्ता की दृष्टि से असत्य है उसी प्रकार पवित्र ग्रन्थों पर छानबीन की दृष्टि डालने के अनुसार भी असत्य है।

क्या अज्ञानता की मृत्यु से बढ़कर भी कोई मृत्यु है और उस अंधेपन से अधिक कष्टदायक और क्या वस्तु है कि जिसमें महा वदान्य ख़ुदा के चेहरे का दर्शन न हो। यदि यह उम्मत गूंगों और बहरों के समान होती तो प्रेमी इस शोक से मर जाते जो प्रियतम से मिलने के लिए अपने अस्तित्वों को घुला देते हैं और उनकी संसार में कोई अन्य इच्छा नहीं होती, इसके अतिरिक्त कि उन्हें अपना यह अभीष्ट मिल जाए कि यह कैसे हो सकता है कि उनका प्रियतम ख़ुदा उन प्रेमियों को व्याकुलता एवं बेचैनी की ज्वाला और प्रतीक्षाग्नि में पड़ा रहने दे।

और यदि ऐसे होता तो यह क्रौम समस्त दुर्भाग्यशाली क्रौमो से अधिक

दुर्भाग्यशाली होती कि न उन का प्रातः चमकदार होता और न उनका चीत्कार सुना जाता और वे रोने-चिल्लाने की अवस्था में मर जाते। ऐसा कदापि नहीं अपितु अल्लाह सबसे अधिक दया करने वाला है। उसने भूख पैदा की तो उसके साथ ही उसने भूखे के लिए भोजन भी उत्पन्न किया। प्यास पैदा की तो प्यासे के लिए पानी भी उत्पन्न किया और अध्यात्म ज्ञान के अभिलाषियों के लिए भी उसका यही नियम है। मैंने स्वयं अपनी आंखों से देखा है फिर यह कैसे संभव है कि मैं देखने के पश्चात् उस का इन्कार करूं तथा मैंने स्वयं अनुभव किया है फिर उस अनुभव के पश्चात् मैं उसमें क्योंकि सन्देह कर सकता हूं।

हमारे लिए आवश्यक है कि हम लोगों को पूर्ण विवेक के साथ उस ओर बुलाएं जिसे हमने पाया है। इसलिए प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो एक ख़ुदा पर ईमान रखता है और एकेश्वरवाद के कलिमा पर नाक-भोंह नहीं चढ़ाता। अनिवार्य है कि वह पुराने कपड़ों पर सन्तुष्ट न हो (अपितु) धर्म के गौरवपूर्ण लिबास का अभिलाषी हो तथा बाह्य एवं आन्तरिक लिबास की पूर्णता के लिए प्रेरणा दिखाए तथा पूर्ण निष्ठा एवं विनयपूर्वक कृपालु रब्ब का द्वार खटखटाए। वह (अल्लाह) बहुत दानी है वह लोगों के मांगने से उकताता नहीं।

और उसके खजाने सीमा और अनुमान से बाहर हैं। अतः जो अधिक मांगेगा अधिक इनाम पाएगा। इसलिए ईमान की एक सुन्दरता यह भी है कि मनुष्य अल्लाह के दान से निराश न हो और उसके द्वार को प्रेमियों पर बन्द न सोचे। हे लोगो ! तुम निश्चय ही ख़ुदा की ने'मतों तथा उसकी कृपाओं के मुहताज हो। अतः यह दुर्भाग्य होगा कि उसके द्वारा प्रदत्त ने'मतों को अस्वीकार कर दो। उस भूखे व्यक्ति से अधिक दुर्भाग्यशाली और कौन हो सकता है जो मृत्यु के निकट हो और जब उसे स्वादिष्ट भोजन और अच्छी रोटी प्रस्तुत की जाए तो वह उसे अस्वीकार कर दे तथा उसे न ले तथा उस पर दृष्टि तक न डाले जबकि वह भूख का मारा हुआ और दुर्दशा की स्थिति में हो परन्तु इसके बावजूद वह उसकी इच्छा न करे।

हे भाइयो ! कृपालु ख़ुदा तुम पर दया करे। जान लो कि मैं तुम्हारे लिए आकाश से एक भोजन लाया हूं और ख़ुदा ने इस सदी के सर पर तुम्हारी मनोकामनाओं को

पूर्ण किया और तुम उनके पूर्ण होने की दुआ किया करते थे। अतः उसने तुम पर अपनी ने'मतों के द्वार खोल लिए। क्या तुम उन (ने'मतों) को स्वीकार करोगे? मुझे ज्ञात है कि तुम मुझ से कदापि प्रसन्न नहीं होगे जब तक कि मैं तुम्हारी आस्थाओं का अनुसरण न करूं और मैं अपने रब्ब की वह्यी कैसे छोड़ दूं।

और तुम्हारी इच्छाओं का अनुसरण करूं जबकि अल्लाह अपने बन्दों पर प्रभुत्व रखता है तथा तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे।

और मुझे निशान बरकतें तथा हर प्रकार की सहायता और समर्थन प्रदान किए गए हैं और झूठों के लिए यह द्वार खोला नहीं जाता चाहे परिश्रम से उनके स्नायुयों के अतिरिक्त कुछ शेष न रहे। क्या तुम समझते हो कि अल्लाह बेईमानों और पापियों से प्रेम करता है। मैं उसके दरबार से तुम्हारी सहायता के लिए ऐसे शेर की तरह आया हूं जो अपनी कछार से निकलता और अपनी कुचलियां प्रकट करके आक्रमण करता है। अतः तुम मुझे पादरियों, नास्तिकों और मुश्रिकों में कोई व्यक्ति भी ऐसा दिखाओ जो इस रणभूमि में मेरा मुकाबला करे और महाप्रकोपी ख़ुदा के निशानों के साथ मुझ से युद्ध करे। ख़ुदा की क्रसम वे सब मेरा शिकार हैं और अल्लाह ने उन पर भागने का मार्ग बन्द कर दिया है। न तो उन्हें कोई जंगल शरण देगा और न समुद्रों में से कोई समुद्र। हम उन की ओर तीव्र गति से चलने वालों के समान तीव्रतापूर्वक दूरियां तय करते आ रहे हैं और ख़ुदा ने चाहा तो हम उन तक विजयी, सफल और कामयाब होकर पहुंचेंगे।^①

और वे तुम पर विजयी नहीं हो सकते थे परन्तु तुम रक्षा करने वालों को छोड़ कर जंगल की ओर चले गए हो और शरणदाताओं की शरण को छोड़कर जंगल की ओर निकल गए हो और तुमने ज्ञान रूपी भोजन समाप्त कर दिया और तुम एक कंगाल वंचित के समान हो गए और तुम ने स्वयं को एक ऐसे वृद्ध मनुष्य की तरह बना लिया जिसकी न कोई राय होती है और न बुद्धि या फिर ऐसे चौपाए

① मेरे रब्ब ने मेरी ओर वह्यी की और फ़रमाया - कि इस रात की तुम्हारी समस्त दुआएं मैं स्वीकार करूंगा और उनमें से एक दुआ इस्लाम की शक्ति और प्रतिष्ठा के बारे में है और यह 16 मार्च 1907 ई. की रात थी। इसी से।

के समान जो हरी घास के अतिरिक्त कुछ नहीं जानता। तुम उस शस्त्र को स्वीकार नहीं करते जो आकाश से अल्लाह की ओर से उतरा है। रहे सांसारिक शस्त्र तो वे इन शत्रुओं के मुकाबले में कोई चीज़ नहीं। अतः अब तुम्हारे रहने का स्थान चटियल मैदान और ऐसे जंगल हैं जहां पानी नहीं। तुम जान-बूझ कर ऐसे जारी झरनों को छोड़ रहे हो जो प्यासे को तृप्त करते हैं, तुम जंगलों को प्राथमिकता देते हो और विनाशकारियों से नहीं डरते। दोपहर की गर्मी ने (तुम्हारे) शरीरों को पिघला दिया है तुम्हें क्या हो गया है कि तुम उस विशाल छाया के नीचे शरण नहीं लेते जो तुम्हें भीषण गर्मी से बचाए और तुम्हें मीठे पानी की ओर ले जाए और तुम्हें क़ब्रों के गड्ढों से दूर रखे। नबुव्वत के मुद्दई की सच्चाई का सब से बड़ा तर्क पथभ्रष्टता से भरपूर युग का होना है।

और यदि तुम्हें मेरे मामले में सन्देह हो तो धैर्य से काम लो, यहां तक कि अल्लाह हमारे मध्य निर्णय कर दे तथा वही निर्णय करने वालों में सबसे उत्तम निर्णय करने वाला है। क्या तुम्हारे लिए यह पर्याप्त नहीं कि शत्रुओं से मुबाहला होने के पश्चात् अल्लाह ने हमें स्पष्ट विजय प्रदान की। उन्होंने कहा कि अल्लाह की ओर से हमें विजय प्राप्त होगी परन्तु अल्लाह ने तर्क द्वारा परास्त होने वाले को तबाह कर दिया और तुम ने योजना बनाई और अल्लाह ने भी योजना बनाई और अल्लाह समस्त योजना बनाने वालों से उत्तम योजना बनाने वाला है। तुम देख रहे हो कि शत्रु तुम्हारे चारों ओर किस प्रकार डेरे डाले हुए है और तुम पर किस प्रकार संकट आ रहा है तथा तुम अपनी कमजोरी के कारण उनके समक्ष अपमान से नतमस्तक हो तथा कामवासना की इच्छाओं ने तुम्हें उनकी ओर खींचा है तथा उन्होंने ऐसे-ऐसे बहाने बनाए हैं जो दृष्टि एवं विवेक को आश्चर्यचकित कर देते हैं।

क्या कारण है कि तुम उस चक्रवात को देख नहीं पाते जिसने वृक्षों को जड़ों से उखाड़ दिया है। वे ऐसे लोग हैं जो तुम्हें धर्म से विमुख और पथ-भ्रष्ट करना चाहते हैं और तुम से बुराई करने में कोई कमी नहीं करते। वे समस्त संसार पर प्रभुत्व प्राप्त कर चुके हैं तथा उन्होंने उन्हें दासों एवं दासियों की भांति बना लिया है। और निकट है कि वे अपने तीर आकाश की ओर फेंकें। खुदा की क्रसम

! तुम उनका मुकाबला नहीं कर सकते तथा उनके निकट केवल एक कण के समान हो। अब बताओ कि मुझे तुम से क्रोधित होना चाहिए या नहीं। तुम इस समय क्यों सो रहे हो? क्या तुम आखिरत (परलोक) की तुलना में भौतिक जीवन पर प्रसन्न हो गए हो, जिसके कारण तुम बेहोश की भांति बोझिल बन कर पृथ्वी की ओर झुके जाते हो तथा किस चीज़ ने तुम्हें सुला दिया है और तुम घाटे का लक्ष्य बन गए हो। हे जवानो ! तुम्हारे पास कौन सी शक्ति शेष रह गई है। खुदा की क्रसम ! हमारे उपकारी प्रतिपालक के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं रहा। मैं नहीं जानता कि तुम ने क्या किया और भविष्य में तुम संसाधनों से क्या कर लोगे और तुम्हारी बुद्धि जो मात्र एक मक्खी के समान है तुम्हारी क्या सहायता करेगी और इन कपड़ों के साथ तुम किस सौन्दर्य को प्रकट कर रहे हो। जब मैं तुम्हारे मध्य खड़ा हुआ तथा मैंने कहा कि मैं कृपालु खुदा की ओर से हूँ तो तुम आक्रोश से भड़क उठे तथा कहने लगे कि यह व्यक्ति झूठ गढ़ने वाला है और मुझे धुत्कारे हुए शैतान की तरह समझने लगे तथा तुम ने समय को नहीं देखा कि क्या यह समय ऐसे दज्जाल को चाहता है जो गुमराही फैलाए या ऐसे सुधारक का जो धर्म को जीवित करे। और जो नष्ट हो चुका है वह उसे दोबारा तुम्हारे पास लौटाए तथा मैं अल्लाह को उस बात पर साक्षी बनाता हूँ जो मेरे हृदय में है। खुदा की क्रसम! मैं उसी की ओर से हूँ और मैंने कोई कार्य अपने छल-प्रपंच से नहीं किया। जब तुमने जान बूझ कर मुझे काफ़िर कहा तथा तिरस्कार किया तो तुमने अन्याय किया। तुमने उन संकटों पर दृष्टि नहीं डाली जो उन दिनों इस्लाम पर ढाए गए। अतः हम निरन्तर बहते आंसुओं के साथ तुम पर वैसा ही रोते हैं जैसा तुम हम पर हंसते और उपहास करते हो। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम स्वयं अपने बारे में सोच-विचार नहीं करते और न इस्लाम की कमज़ोरी पर दृष्टि डालते हो। क्या तुम्हारा दज्जालों से दिल नहीं भरा और इस भयानक समय और डरावने युग में एक और दज्जाल की अभिलाषा करते हो। हालांकि मैं तुम्हारे पास शताब्दी (हिज़्री सदी) के आरम्भ में तथा वास्तविक आवश्यकता के समय आया हूँ तथा सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण, भूकम्पों एवं प्लेग ने मेरी सच्चाई पर गवाही दी। इसलिए मुझे आश्चर्य

होता है कि तुम निशानों को देखते हो, इसके बावजूद बदगुमानियां दूर नहीं होतीं। हे विद्वानो ! क्या यही तुम्हारा विवेक है? वास्तविकता यह है कि तुम्हारे और तुम्हारे संयम के मध्य वह अभिमान बाधा बन गया है जिसे तुम छुपाते और गुप्त रखते हो। और तुम्हारी आंखें अंधी हो गई हैं। अतः वे शत्रुओं के उपद्रवों को नहीं देखतीं तथा तुम मेरा नाम दज्जाल रखते हो और तुम विवेक से काम नहीं लेते। तुम फ़त्वा देते हो कि मैं काफ़िर अपितु हर उस व्यक्ति से बड़ा काफ़िर हूं जिसने नबियों का इन्कार किया।

वाह रे तुम्हारा यह फ़त्वा ! सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि ईसाई और मुश्रिक जो धर्म को जड़ से उखाड़ना चाहते हैं वे तो तुम्हारे निकट दज्जाल नहीं और मैं दज्जाल हूं अपितु सब से बड़ा उपद्रवी हूं। अतः हम केवल समस्त संसारों के ख़ुदा के समक्ष आर्तनाद करते हैं। फिर मैं तुम्हारे निकट काफ़िर ठहरा तो फिर यह कैसे आशा की जा सकती है कि काफ़िरों की नसीहत तुम्हें लाभ पहुंचाए, परन्तु मैंने चाहा कि अल्लाह के मार्ग में पहुँचाए कष्टों का वर्णन करूं इसलिए हमारा यह कलाम का सिलसिला इन वर्णनों की ओर चल निकला।

अल्लाह तुम पर दया करे ! तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अन्याय एवं अत्याचार को नहीं त्यागते और न ही तुम सर्वज्ञ तथा प्रतिफल एवं दण्ड के स्वामी ख़ुदा से डरते हो। हे लोगो ! हम ख़ुदा की ओर से उसके निर्धारित समय पर आए हैं और उसी के बुलाने से हम बोलते हैं, हम तुम्हें सच्चाई का सन्देश पहुंचाते हैं परन्तु तुम्हारी ओर से हमें ला'नत मिलती है। मैं नहीं जानता कि यह क्या कमीनगी है। कि तुम यहूदियों के कंधे से कंधा मिलाकर चले यहां तक कि जूते से जूता रगड़ खाने लगा और तुम्हारे कथन उनके कथनों के समान हो गए। वे (यहूदी) अपनी कृपणता के कारण अल्लाह के नबी ईसा^अ का नाम दज्जाल रखते थे, ठीक उसी प्रकार तुम्हारी ओर से मुझे उसी नाम की संज्ञा दी गई। अतः इस प्रकार तुम कथनों और कर्मों में उनके समान हो गए। यदि सरकार की तलवार न होती तो मैं तुम्हारी ओर से वही कुछ देखता जो ईसा^अ ने इन्कार करने वालों की ओर से देखा। इसलिए हम चाटुकारिता से नहीं अपितु उपकार के आधार स्वरूप इस सरकार के

कृतज्ञ हैं और खुदा की क्रसम ! हमने इस की छत्र छाया में ऐसा अमन पाया जिस की इस युग में किसी इस्लामी शासन से आशा नहीं की जा सकती। इसलिए हमारे निकट यह उचित नहीं कि उनके विरुद्ध जिहाद के नाम पर तलवार उठाई जाए। समस्त मुसलमानों पर अवैध है कि वे उन से युद्ध करें तथा विद्रोह एवं उपद्रव के लिए खड़े हों, क्योंकि उन्होंने हम पर नाना प्रकार के उपकार किए तथा उपकार का बदला उपकार ही होता है। निःसन्देह उन की सरकार हमारे लिए शान्ति कुंज हैं तथा इसके कारण ही हम युग के लोगों के अत्याचार से बचाए गए तथा इसके साथ-साथ हम यह नहीं छुपाते कि हम पादरियों के विरोधी हैं अपितु हम उनके प्रथम श्रेणी के विरोधी हैं।

इसका कारण यह है कि वे एक कमज़ोर असहाय व्यक्ति को समस्त संसारों का प्रतिपालक ठहराते हैं। उन्होंने आकाशों तथा पृथ्वी के स्रष्टा को त्याग दिया है और अल्लाह जानता है कि वे झूठे, झूठ गढ़ने वाले, दज्जाल एवं आदेशों में अक्षरांतरण करने वाले हैं तथा हम जानते हैं कि सरकार उनके साथ नहीं और न ही वह उन्हें इस बात पर उकसाती है और न ही वे सहयोगियों में से है अपितु वह केवल मौखिक तौर पर ईसाई हैं जिन्होंने अपनी ओर से कुछ नियम बना लिए हैं ओर इंजील को अपनी पीठ पीछे डाला हुआ है। फिर हम कैसे कह सकते हैं कि वे ईसाई हैं अपितु वह कोई अन्य क्रौम हैं और उन्होंने दूसरी विचारधाराएं धारण की हुई हैं और वे इंजीलों को नहीं पढ़ते और न उसके आदेशों का पालन करते हैं और न ही उनकी ओर ध्यान देते हैं। हम विवादों के समय उनमें न्याय एवं इन्साफ़ पाते हैं तथा मैंने कुछ विवादों (मुकद्दमों) में स्वयं उनमें से कुछ को परखा है और मैंने उन्हें देखा है कि वे प्यार की दृष्टि से हमारे अधिक निकट हैं तथा वे अन्याय नहीं चाहते और न ही वे (उसका) संकल्प करते हैं तथा उनकी छत्र-छाया में रात उस दिन की अपेक्षा अधिक उत्तम है जो हम ने मुश्रिकों की छत्र-छाया में पाया। इसलिए हम पर उनका धन्यवाद अनिवार्य है और यदि हम धन्यवाद न करें तो हम पापी होंगे।

अतः सारांश यह है कि हम ने इस सरकार को उपकारियों में से पाया तथा

ख़ुदा की किताब (कुर्आन) ने हम पर अनिवार्य कर दिया है कि हम इनके कृतज्ञ हों। इस कारण हम उनका आभार प्रकट करते हैं और उनकी भलाई चाहते हैं तथा ख़ुदा से दुआ करते हैं कि वह उनका इस्लाम की ओर मार्ग-दर्शन करे और उस बन्दे की बन्दगी से उन्हें मुक्ति प्रदान करे जो कष्ट और दुःख सहन करने में उन जैसा ही बन्दा था और अल्लाह अपने धर्म के लिए उनकी आंखें खोले और उन्हें सर्वोत्तम धर्म की ओर आकर्षित करे और उन्हें धर्म तथा संसार में प्रत्येक हानि से सुरक्षित रखे। यह हमारी दुआ है तथा उपकार का बदला उपकार ही है तथा नेकी के बदले में बुराई केवल वही व्यक्ति करता है जिसका हृदय पापी हो और वह शैतानों के समान हो गया हो। अतः हम अत्याचारियों का मार्ग नहीं चाहते और इस पुस्तक में हमारा संबोधन उन ईसाई विद्वानों और पादरियों की ओर नहीं, परन्तु जिन्होंने इस्लाम को गालियां निकालने तथा हमारे सरदार एवं स्वामी लोगों में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपमान अपना धार्मिक कर्तव्य समझ रखा है। अतः हम ख़ुदा की ओर से उनको रोकने और दूर हटाने के लिए खड़े हुए हैं। और वह (ख़ुदा) अपने धर्म का सहायक है और वही सबसे अच्छा सहायक है। और मेरे रब्ब ने अपने धर्म की सहायता के लिए मुझे ऐसे कलाम से संबोधित किया जिस में मैं बहुत बड़ा वादा पाता हूँ तथा उसने फ़रमाया - अर्थात् “तू उन्हें ख़ुदा के दिनों का शुभ सन्देश दे और उन्हें ख़ूब नसीहत कर”। अतः हम पूर्ण सन्तुष्टि और विश्वास के साथ यह जानते हैं कि वह अल्लाह अपने धर्म की सहायता करेगा और उसे शत्रुओं से बचाएगा तथा आकाश से उसे समस्त धर्मों पर विजय प्रदान करेगा परन्तु वह विजय युद्ध और जिहाद से नहीं अपितु शक्तिशाली निशानों के द्वारा तथा ऐसे हाथ से होगा जो शत्रुओं की खोपड़ियां तोड़ देगा तथा हमने उसकी किताब में ऐसा ही पाया है। फिर मेरे रब्ब ने मुझे उस जैसी वह्यी की और यह वह्यी का सारांश है। अतः अल्लाह अपने वादे के विरुद्ध नहीं करेगा और अत्याचारी अपने अत्याचार का पूरा-पूरा बदला पाएंगे और इस प्रकार इस युग में लक्षण प्रकट हुए तथा हमारा रब्ब संसार वालों के लिए आक्रोशमय चमक के साथ प्रकट हुआ। अतः उस ने अपने प्रकोपी निशान समस्त देशों में

दिखाए तथा बहुत से लोगों को प्लेग ने तबाह कर दिया और उनमें से बहुतों को भूकम्पों ने जड़ों से उखाड़ दिया तथा मौतों ने उन्हें आ लिया। और वे जो रात तक महलों में सो रहे थे, आज तू उन्हें क़ब्रों में मुर्दा पड़े हुए देख रहा है। सभाएं उनसे सुनसान हो गईं तथा महल वीरान हो गए और वे ऐसे घर में उतरे जिसने उन्हें (इस योग्य) न छोड़ा कि वे अपने भाइयों के पास वापस जा सकें तथा अपने पड़ोसियों से अपने घर वापस छीन सकें। तू लोगों को देखता है कि उन्हें इस विपत्ति से बच निकलने की शक्ति नहीं तथा आकाश के नीचे उनके लिए भागने का कोई मार्ग शेष नहीं रहा और जैसा कि विरोधियों का विचार है इस विपत्ति को भाग्य और संयोग पर चरितार्थ नहीं किया जा सकता। अतः सौभाग्यशाली वही है जिसने उन निशानों को पहचाना और उन पथरीली घाटियों में प्रवेश किया।

अल्लाह तुम पर दया करे ! तुम जान लो कि ये संकट उन प्रारब्धों में से हैं जिन्हें न तुमने इस युग से पूर्व देखा और न ही तुम्हारे पूर्वजों ने देखा और ये निशान केवल उस व्यक्ति के लिए हैं जिसे उपकारी ख़ुदा की ओर से तुम्हारे मध्य इसलिए अवतरित किया गया ताकि अल्लाह अपने धर्म का नवीनीकरण करे तथा उसके तर्कों को प्रकट कर दे और उसके बाग़ों को हरा भरा करे। और उसके वृक्षों को पवित्र फलों से लाद दे तथा उसकी जलाने योग्य टहनियों को हरी भरी शाखाओं के समान बना दे तथा ऐसा इसलिए होता है कि लोग अल्लाह के सुदृढ़ धर्म को पहचान लें और अपने दयालु रब्ब की ओर पूर्ण रूप से प्रवृत्त हों और वह कृपालु स्वभाव रखने वाले व्यक्ति के समान संसार से घृणा करें। और जब धर्म का प्रातःकाल उदय हुआ और उसने तर्कों की किरणें दिखाई तो उनमें से अधिकांश लोगों ने अपनी आंखें नीची कर लीं ताकि वे न देखें और उन्होंने जान बूझ कर अल्लाह के सन्देश को पसन्द न किया। खेद है उन पर कि वे भलाई से भागते हैं और हानि की ओर प्रवृत्त होते हैं। निश्चय ही द्वार खुलने का समय आ गया है। अतः कौन है जो बारम्बार खटखटाए? तथा जिसकी आंख है उसके लिए (अध्यात्म ज्ञान का) झरना जारी हो गया है। ख़ुदा क्षमा करने वाला और दयालु है जो उसके पास सच्चे हृदय के साथ आए वह उसे वापस नहीं लौटाता और जब

अभिलाषा में बढ़ता जाता है वह उसे कृपादृष्टि में बढ़ाता जाता है। विचित्र बात यह है कि क्रौम ने भौतिक कंगाली को अध्यात्मिक दुर्दशा के साथ मिला दिया है। फिर भी वे यह समझते हैं कि वह कृपालु खुदा की ओर से अवतरित होने वाले सुधारक के मुहताज नहीं तथा उन पर समस्त द्वार बन्द कर दिए गए हैं,

फिर भी वे यह समझते हैं कि उन्हें प्रत्येक प्रकार की ने'मतें दी गई हैं और इस बात पर प्रसन्न हैं कि पशुओं का सा जीवन व्यतीत करें और अल्लाह तआला की ने'मतों तथा इनामों से मुख फेर लें। हमें उनकी कायरता एवं दुर्दशा पर आश्चर्य होता है और हम उनके सुधार के लिए उस समय तक खुदा से याचना करते रहेंगे जब तक उन्हें सफलता प्राप्त न हो जाए और हमने उनके लिए दुआ हेतु अपने अधिकतर समय विशेष तौर पर सुबह के समय समर्पित कर दिए हैं और वह आंख भी जो इन चिन्ताओं से बन्द नहीं होती (समर्पित कर दी है) और खुदा की क्रसम! मैंने प्लेग के दिन आरंभ होने से पूर्व ही इन लोगों को उसके युग की सूचना दे दी थी और मैंने कोई बात नहीं कही थी परन्तु जब मेरे रब्ब ने मुझे उसके गुप्त रहस्य से सूचित किया और उसके बताने का आदेश दिया। तत्पश्चात् प्लेग ने उन्हें अपनी पकड़ में ले लिया तथा उन पर मौतें उतरीं और इसकी यह सूचना उस समय दी गई जब डाक्टरों की राय की उस तक कोई पहुंच न थी तथा किसी बुद्धिमान ने इस के संबंध में कुछ भी नहीं कहा था फिर वैसे ही घटित हुआ जैसे मेरे रब्ब ने मुझे सूचित किया था और यह आकाश के रब्ब की ओर से एक महान निशान था परन्तु लोगों ने इसकी ओर ध्यान न दिया। और किसी व्यक्ति ने अपनी आंखों से आंसुओं का पानी न बहाया और न उन्होंने पश्चाताप तथा शुभ कर्म करने के लिए कोई त्वरित क्रदम उठाया अपितु वे पाप और बुराई में और बढ़ गए तथा उन्होंने मुझे झुठलाया और मुझे काफ़िर ठहरा दिया तथा कहा कि यह कमीना दज्जाल है तथा मेरे एकान्तवास में केवल मेरे दयालु रब्ब ने मुझ से हमदर्दी की और वे सब मेरे विरुद्ध हो गए और कर्जदार के चिपटने की तरह वह मुझ से चिपट गए और अपने पुराने द्वेष के कारण उन्होंने मुझे नहीं पहचाना और हम असहाबे कहफ़ के समान उनकी दृष्टि से छुपे रहे और उन्होंने अत्याचार और दुष्टता करते हुए

अल्लाह के निशानों का इन्कार कर दिया^① जबकि उनके हृदय उन पर विश्वास कर चुके थे। अतः यह उन के लिए संभव न रहा कि वह कठोरता और बुराई के प्रदर्शन के पश्चात् लौट सकें और खुदा की क्रसम ! निशान मूसलाधार वर्षा की भांति आकाश से उतरे, दीपक प्रकाशित हुए परन्तु फिर भी उनके अंधकार दूर न हुए। डराने तथा प्रचुरता के साथ सतर्क करने के बावजूद उनकी बुराइयां कम न हुईं। वे सूखी लकड़ियों पर जमकर बैठे रहे तथा ऊंचे विशाल वृक्षों, पके हुए फलों तथा खिले हुए फूलों से विमुखता की।

और अल्लाह की क्रसम मैं नहीं जानता कि इन खुले-खुले निशानों के होते हुए उन्होंने मुझ से क्यों मुख फेर लिया जबकि अल्लाह ने उन पर तथा अंधकारों में पड़े हुए हर उस व्यक्ति पर अपना समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण कर दिया था, और जब उनकी ओर से मुझे वह भय लगा जो अकेले व्यक्ति को डराता है तो मेरे रब्ब की सहायता और समर्थन समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण होने तक मुझे दिया जाता रहा तथा निरन्तरता से यह सहायता जारी रही। ये निशान उस सीमा तक जा पहुंचे कि जिनकी गणना करने की मुझ में शक्ति नहीं थी, परन्तु मैंने उचित समझा कि इन निशानों में से एक निशान इस पुस्तक के अन्त में लिख दूं ताकि कदाचित् खुदा इस पुस्तक के माध्यम से किसी नेक स्वभाव व्यक्ति को लाभ पहुंचा दे और लोगों को ज्ञान हो जाए कि अल्लाह की सहायता पृथ्वी के पूरब और पश्चिम को अपनी परिधि में लिए हुए है तथा उसकी ख्याति सदाचारी लोगों तथा बिच्छू स्वभाव लोगों में इतनी सार्वजनिक है कि उन निशानों की किरणें अमरीकी देशों तक जो समस्त देशों से दूर हैं पहुंचीं।

प्रकाशमान निशानों तथा महान तर्कों पर आधारित अल्लाह ने जो वही भी मुझे की वह मेरे लिए नहीं अपितु इस्लाम की पुष्टि के लिए है और मैं तो केवल सेवकों में से एक सेवक हूं। इन्कार करने वालों की दशा मेरे लिए आश्चर्यजनक है।

उन्होंने झूठा कहने पर हठ किया यहां तक कि वे आतंक से कम लेने वालों में प्रथम श्रेणी पर हो गए तथा (उनमें से) प्रत्येक ने अपना पूर्ण प्रयास किया और

① अन्नमल - 15

जो उसके सामर्थ्य में था उसे व्यय कर दिया ताकि वह आकाश से उतरने वाले प्रकाश को बुझा दे, किन्तु अल्लाह ने अपना प्रकाश बढ़ाया तथा उनके प्रयास धूल के समान थे। हमने उनके उपद्रव को लहरें मारते हुए समुद्र और भीषण बाढ़ के समान देखा, परन्तु इस मामले का परिणाम हमारी विजय और उनकी पराजय, हमारा सम्मान और उनका अपमान था। यदि यह कारोबार ख़ुदा के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता तो वे (विरोधी) मुझे टुकड़े-टुकड़े कर देते और जीवित लोगों से मेरा निशान मिटा देते, परन्तु ख़ुदा का हाथ मुझे शत्रुओं की उद्दण्डता से बचाता रहा, यहां तक कि मेरे निशान दूर देशों तक पहुंच गए और यह केवल लोगों के प्रतिपालक का कार्य था और अब हम उस महान निशान का उल्लेख करते हैं जो अमरीका के देशों में प्रकट हुआ, और हमारा सूर्य पूर्व से उदय हुआ यहां तक कि उस सूर्य ने पश्चिम के लोगों को नितान्त सुन्दर ढंग से अपनी चमक दिखाई। अतः यह अल्लाह की कृपा एवं उसकी दया है और उसका उपकार है तथा शुभ सन्देश है उन लोगों के लिए जो उसे पहचानते हैं तथा मुबारक है उन लोगों के लिए जो उसे स्वीकार करते हैं।

उस मुबाहले का वर्णन जिसकी ओर मैंने डोई को बुलाया, उसके विरुद्ध दुआ और लोगों में उसके प्रचार के पश्चात् इस रणभूमि में ख़ुदा के व्यवहार का विवरण

अल्लाह तुम पर दया करे जान लो कि अल्लाह तआला की सहायता से बहुत से नमूनों तथा मेरी सच्चाई की गवाहियों में से एक वह निशान है जिसे अल्लाह तआला ने डोई नामक व्यक्ति को तबाह करके मेरे समर्थन में प्रकट किया तथा इस शानदार निशान और महान चमत्कार का विवरण यह है। डोई नामक व्यक्ति अमरीका के धनाढ्य ईसाइयों एवं अहंकारी पादरियों में से एक था तथा उसके साथ लगभग एक लाख मुरीद (अनुयायी) थे। वह ईसाइयों की पद्धति पर दासों तथा दासियों के समान उसके आज्ञाकारी थे, उसे अपनी क्रौम तथा अन्य लोगों में इतनी अधिक ख्याति प्राप्त थी कि उस की चर्चा विश्व के किनारों तक फैल गई थी और उसके जादू ने ईसाइयों की एक बहुत बड़ी जमाअत को वशीभूत कर रखा था और वह इब्ने मरयम के ख़ुदा होने के इक्कार के साथ साथ अपने रसूल और नबी होने का दावेदार भी था तथा वह हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बुरा-भला कहता और गालियां देता था। और वह उच्च स्थानों एवं उच्च पदों का दावेदार था तथा स्वयं को प्रत्येक व्यक्ति से अधिक महान एवं श्रेष्ठ समझता था और वह दिन-प्रतिदिन प्रसिद्धि, धन तथा अनुयायियों की संख्या में बढ़ रहा था और वह भिखारियों के समान होने के पश्चात् राजाओं के समान जीवन व्यतीत करने लगा। उसके ख़ुदा पर झूठ गढ़ने के बावजूद उसकी उन्नति को मुसलमानों में से देखने वाला यदि कमज़ोर (आस्था वाला) होता तो वह गुमराह हो जाता और हानि उठाता, और यदि वह विद्वान होता तो भी लड़खड़ाने से सुरक्षित न रहता और यह इसलिए कि वह (डोई) इस्लाम का शत्रु था और हमारे नबी लोगों में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियां दिया करता था। इसके बावजूद वह ख्याति और समृद्धि में उच्च स्थान तक उन्नति करता रहा तथा वह यह कहता था कि मैं शीघ्र ही प्रत्येक मुसलमान का वध करूंगा और किसी एकेश्वरवादी

मोमिन को नहीं छोड़ूंगा। और वह (डोई) ऐसे लोगों में से था जो कहते हैं परन्तु करते नहीं, उसने पृथ्वी में फिरऔन के समान उद्दण्डता की और मृत्यु को भूल गया, उसने दिन को लोगों का धन लूटने और रात को मदिरापान के लिए विशिष्ट कर रखा था। अनाड़ी ईसाई और अल्पबुद्धि मसीही उसके पास एकत्र हो गए और गुमराही के जाम पीते रहे और अपनी अज्ञानता के कारण उसके रसूल होने के दावे की पुष्टि करते रहे। हालांकि वह संसार का दास था न कि आज़ाद और वह ऐसी सीप था जिसमें मोती न हो तथा उसके साथ-साथ वह अपने समय का शैतान और अपने शैतान का साथी था किन्तु अल्लाह ने उसे उस समय तक छूट दी जब तक कि मैंने उसे मुबाहले के लिए बुलाया और उसके विरुद्ध खुदा के दरबार में दुआ की। मैं उस (डोई) के अस्तित्व में पिशाच की दुर्गन्ध पाता था, मैंने उसे शैतान का वशीभूत किया हुआ तथा कृपालु खुदा के बन्दों का शत्रु पाया। उसने पृथ्वी को अपवित्र किया और संसार के लोगों की सांसों को अपनी नाना प्रकार की दूषित एवं निरर्थक बातों से अपवित्र कर दिया। मैंने इस युग में उस के समान कोई चतुर एवं उद्दण्ड शैतान नहीं देखा। वह तीन खुदाओं की आस्था का दीवाना तथा एकेश्वरवाद का शत्रु और दूषित धर्म का कट्टर अनुयायी था वह उस धर्म की बुराइयों को नेकी के समान और उसके दोषों को ऐश्वर्य के साधनों के समान देखता था। अमीरों तथा धनवान लोगों में से अज्ञानी लोग उसके पास एकत्र हो गए थे और उन्होंने उसकी ऐसे धन से सहायता की जो केवल बादशाहों और शासकों के खज़ानों में पाया जाता है। उसके पास ढेरों-ढेर धन लाया जाता यहां तक कि यह कहा जाने लगा कि वह बादशाह है जो बादशाहों के समान प्रतिष्ठा एवं प्रताप से जीवन व्यतीत करता है। और जब उसका धन अत्यधिक बढ़ गया तो वह अपनी तामसिक वृत्ति का आज्ञाकारी हो गया तथा उसने उसे पवित्र न किया। उसने शैतान के बहकावे में आकर नबी और रसूल होने का दावा कर दिया तथा झूठ और झूठ गढ़ने तथा लांछन लगाने से स्वयं को न रोका तथा उसने यह विचार कर लिया कि वह ऐसी बात है जिसके बारे में उस से पूछताछ नहीं होगी और वह अपना जीवन ऐश्वर्य और समृद्धि में व्यतीत करता रहेगा तथा श्रेष्ठता एवं सम्मान

में वृद्धि करता चला जाएगा अपितु उसके साथ वह अहंकार के मार्ग पर भी चल पड़ा और खुदा के अज़ाब से न डरा। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि झूठा अन्ततः पकड़ा जाता है और उसे उन्नति से रोक दिया जाता है तथा खुदा का स्वाभिमान उसे शेरों के समान चीर-फाड़ डालता है और वह तबाही का दिन तथा कथित विनाश को देख लेता है। विजयी और नितान्त प्रेम करने वाले खुदा की किताब (कुर्आन करीम) में है कि “वे लोग जो खुदा पर झूठ बांधते हैं वे बहुत कम समय ही जीवित रहते हैं और फिर वे पकड़े जाते हैं तथा खुदा की ला'नत इस लोक में भी और परलोक में भी उनका पीछा करती है, वे अपमान और बदनामी का स्वाद चखते हैं तथा उनका मान नहीं किया जाता। क्या तुझे पहले युग के झूठ गढ़ने वालों के अंजाम की सूचना नहीं पहुंची? और निश्चय ही अल्लाह को झूठ गढ़ने वालों के अंजाम की कुछ परवाह नहीं। वह अपनी तलवार उनके लिए खींचता है और उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर देता है।

और जब उनकी तबाही का दिन निकट आ गया तो मैंने उसको मुबाहले के लिए आमंत्रित किया और उसे लिखा कि तेरा दावा झूठा है और तू इस तुच्छ संसार के मुरदार के लिए मात्र झूठा और खुदा पर झूठ बांधने वाला है तथा ईसा^{अ.} केवल एक नबी है तथा तू केवल खुदा तआला की ओर झूठा कथन सम्बद्ध करने वाला, झूठ गढ़ने वाला तथा साधारण व्यक्ति है तथा स्वयं गुमराह एवं गुमराह करने वाले सम्प्रदाय से है। अतः अल्लाह तआला से डर जो तेरे झूठ को देख रहा है और मैं तुझे इस्लाम और सच्चे धर्म की ओर तथा प्रतापी और सम्मान वाले खुदा की ओर तौबा (पश्चाताप) करने के लिए आमंत्रित करता हूं। यदि तू इस निमंत्रण से पीठ फेरता और विमुख होता है तो आओ हम मुबाहला करें और सत्य को त्यागने वाले और झूठ के द्वारा रसूल और नबी का दावा करने वाले पर खुदा की ला'नत डालें। इस प्रकार खुदा मेरे और तेरे मध्य फैसला कर देगा और सच्चे के जीवन में झूठे को तबाह कर देगा ताकि लोग यह जान लें कि कौन सच्चा है तथा कौन झूठा और ताकि इस फैसले के पश्चात् विवाद समाप्त हो जाए।

और अल्लाह की क़सम ! मैं ही वह मसीह मौऊद हूं जिसका अन्तिम युग में

तथा गुमराही के फैल जाने के दिनों में आने का वादा दिया गया था तथा निश्चय ही ईसा मृत्यु पा चुका है तथा तीन ख़ुदाओं की आस्था रखने वाला धर्म झूठा है और तू नबी होने के दावे में ख़ुदा पर झूठ बोल रहा है और नुबुव्वत का क्रम तो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात् समाप्त हो गया और कुर्आन करीम जो समस्त पूर्व ग्रन्थों से उत्तम है, के पश्चात् कोई और पुस्तक नहीं और न मुहम्मदी शरीअत के पश्चात् कोई अन्य शरीअत है। हां लोगों में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक कथन से मेरा नाम नबी रखा गया तथा यह आप की पूर्ण अनुसरण की बरकतों के कारण एक प्रतिबिम्ब संबंधी बात है तथा मैं स्वयं में कोई विशेषता नहीं पाता और मैंने जो कुछ पाया उस पवित्र हस्ती से पाया। मेरी नुबुव्वत से अल्लाह का अभिप्राय ख़ुदा से मात्र वार्तालाप और सम्बोधन की प्रचुरता है। अल्लाह की ला'नत हो उस पर जो इससे अधिक का इरादा करे या वह स्वयं को कुछ चीज़ समझे या जो हुजूर की दासता से अपनी गर्दन को बाहर निकालता हो। निश्चय ही हमारे रसूल ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं। आप पर रसूलों का सिलसिला समाप्त हो गया। अतः किसी को भी यह अधिकार नहीं पहुंचता कि वह हमारे पवित्र रसूल के बाद स्थायी नुबुव्वत का दावा करे सिवाए वार्तालाप की अधिकता के और कुछ शेष नहीं रहा और वह भी अनुसरण की शर्त के साथ है न कि लोगों में सर्वश्रेष्ठ के अनुसरण के बिना। ख़ुदा की क्रसम ! मुझे यह स्थान केवल और केवल मुस्तफ़ा की किरणों के अनुसरण रूपी प्रकाशों से प्राप्त हुआ है।

और अल्लाह की ओर से मुझे वास्तविक तौर पर नबी का नाम दिया गया है। इस प्रकार यहां अल्लाह और उसके रसूल का स्वाभिमान जोश में नहीं आता, क्योंकि मेरा पोषण नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के परो के नीचे किया जा रहा है और मेरा यह क़दम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दमों के नीचे है फिर यह बात भी है कि मैंने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा अपितु मैंने उसी वह्यी का अनुसरण किया है जो मेरे रब्ब की ओर से मुझे की गई है। इसके पश्चात् मैं लोगों की धमकियों से नहीं डरता और प्रलय के दिन प्रत्येक व्यक्ति से उसके कर्म के बारे में पूछा जाएगा और अल्लाह से कोई छुपी गुप्त नहीं।

और मैंने उस झूठे (डोई) से कहा कि यदि तू मेरे इस मुबाहले के निमंत्रण के पश्चात् भी मुबाहला नहीं करेगा और साथ यह भी कहा कि जिस नुबुव्वत का तूने अल्लाह पर झूठ बांधते हुए दावा किया है उससे पश्चाताप नहीं करेगा तो यह न समझना इस बहाने से तू बच जाएगा अपितु खुदा अत्यन्त अपमान के साथ कठोर अज़ाब से तुझे तबाह करेगा। और तुझे बदनाम करेगा और तुझे झूठ गढ़ने का स्वाद चखाएगा और वह (डोई) मेरी मृत्यु की प्रतीक्षा करता था तथा मैं उसकी मृत्यु की। मेरा भरोसा अल्लाह पर था जो सत्य का सहायक है और इस मिल्लत (इस्लामिया) का समर्थक है।

तत्पश्चात् मैंने उसकी ओर लिखे हुए अपने लेख को अमरीकी देशों में पूर्ण रूप से प्रकाशित कर दिया था। उसकी ओर लिखे गए मेरे लेख अमरीका के अधिकांश समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए तथा मेरा यह विचार है कि मेरे इस प्रचार को हजारों अखबारों ने प्रकाशित किया तथा यह प्रकाशन इतनी अधिक संख्या में हुआ कि मैं उसकी गणना नहीं कर सकता और कागज़ के पृष्ठों में इतनी गुंजायश नहीं कि उसको लिख सकूँ। हां वे अमरीकी समाचार पत्र जो मुझे भेजे गए और जिन में मेरा प्रचार और मेरे मुबाहले का निमंत्रण और डोई के विरुद्ध खुदा के निर्णय के लिए मेरी दुआ का वर्णन था। अतः मैंने उचित समझा कि उनमें से कुछ अखबारों के नाम हाशिए में लिख दूँ ताकि लोगों को ज्ञात हो जाए कि यह मुबाहले का मामला कोई ढकी-छुपी या गुप्त बात न थी अपितु पृथ्वी के पूर्व-पश्चिम तथा संसार के चारों ओर पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण इस को प्रचारित किया गया और इसे प्रकाशित करने का कारण यह था कि डोई प्रसिद्धि में राजाओं के समान था।

और अमरीका तथा यूरोप के बड़े-छोटे वर्गों में कोई सदस्य ऐसा न था जो उसे पूर्ण रूप से न जानता हो तथा उन देशों के रहने वालों की दृष्टि में उसकी श्रेष्ठता और प्रतिष्ठा राजाओं के समान थी। इसके अतिरिक्त वह बहुत यात्रा करने वाला व्यक्ति था तथा अपने प्रवचन से लोगों को शिकारी के समान शिकार करता था। यही कारण था कि अखबार वालों में से किसी ने इस लेख को प्रकाशित करने से कभी इन्कार न किया जो उसे उसके संबंध में मुबाहले के लिए भेजा जाता अपितु

इस कुशती के परिणाम को देखने की तीव्र इच्छा ने उन्हें इसे प्रकाशित करने पर तत्पर किया तथा जिन अखबारों में मेरा मुबाहले का निमंत्रण तथा डोई के विरुद्ध मेरी दुआ प्रकाशित हुई वे बहुत से अमरीकी अखबार हैं, परन्तु हम बतौर नमूना उनमें से कुछ एक का वर्णन इस हाशिए में करते हैं।^①

① हाशिया और उसका हिन्दी अनुवाद अगले पृष्ठों में देखें।

क्रम संख्या	समाचार पत्र का नाम तथा तिथि	लेख के सारांश का अनुवाद
1	शिकागो इन्टरप्रेटर 8 जून 1903 ई.	मिर्जा गुलाम अहमद पंजाब के निवासी हैं और वह डोई को मुबाहला का निमंत्रण देते हैं। क्या विचार किया जा सकता है कि वह (डोई) इस मैदान में निकलेगा? मिर्जा साहिब लिखते हैं कि डोई नुबुव्वत के दावे में झूठ गढ़ने वाला तथा बहुत झूठा है और मैं खुदा से दुआ करता हूँ कि वह उसे तबाह करे और उसका समूल विनाश करे और वह (मिर्जा साहिब) कहते हैं कि मैं सत्य पर हूँ और डोई असत्य पर है। इसलिए अल्लाह हमारे मध्य यों निर्णय करेगा कि वह झूठे को तबाह करेगा तथा सच्चे के जीवन में ही उसका समूल विनाश करेगा। मिर्जा गुलाम अहमद कहते हैं कि मैं ही मसीह मौऊद हूँ तथा सत्य केवल इस्लाम में है।
2	टेलीग्राफ़ 5 जुलाई 1903 ई.	शब्दों के साधारण परिवर्तन से उपरोक्त लेख के अनुसार
3	अर्गुनाट - सैन फ़ान्सिसको 1, दिसम्बर 1902	शब्दों के साधारण परिवर्तन से उपरोक्त लेख के अनुसार, इसके अतिरिक्त एडीटर कहता है कि निर्णय का यह ढंग बुद्धि-संगत तथा न्याय पर आधारित है तथा निश्चय ही जिस व्यक्ति की दुआ स्वीकार होगी वही निःसन्देह सत्य पर होगा।
4	लिट्रेरी डायजेस्ट न्यूयार्क 20 जून 1903 ई.	डोई को मेरे मुबाहले के निमंत्रण का विस्तृत वर्णन किया गया है तथा मेरे और उसके चित्रों की कापी प्रकाशित की है। शेष वर्णन उपरोक्त लेख के अनुसार है।
5	न्यूयार्क मेल एण्ड एक्सप्रेस 28 जून 1903	“दो दावेदारों के मध्य मुकाबला” के शीर्षक से वर्णन किया है और डोई के विरुद्ध मेरी दुआ का उल्लेख किया है। तत्पश्चात् यह लिखा है कि निर्णायक बात यही है कि झूठा सच्चे के जीवन में तबाह होगा। शेष वर्णन उपरोक्त लेख के अनुसार है।
6	हेराल्ड रोचेस्टर 25 जून 1903	इस अखबार ने इस बात का वर्णन किया है कि डोई को मुबाहले के लिए बुलाया गया है फिर उसने विस्तार से उपरोक्त वर्णन की चर्चा की है।
7	रिकार्ड बोस्टन 27 जून 1903 ई.	उपरोक्त वर्णन के अनुसार उल्लेख है।
8	एडवरटाइज़र 25 जून 1903 ई.	उपरोक्त वर्णन के अनुसार उल्लेख है।
9	पायलेट बोस्टन 27 जून 1903	मेरी और डोई की चर्चा की है तत्पश्चात् मुबाहले के निमंत्रण का वर्णन किया है।
10	पाथफाइन्डर, वाशिंगटन 27 जून 1903 ई.	उपरोक्त लेख के अनुसार वर्णन है।

क्रम संख्या	समाचार पत्र का नाम तथा तिथि	लेख के सारांश का अनुवाद
11	इन्टर ओशन शिकागो 27 जून 1903 ई.	// //
12	डैमोक्रेट क्रानीकल रोचस्टर 25 जून 1903	मुबाहले की चर्चा का शीर्षक और शेष उपरोक्त लेख के अनुसार
13	शिकागो	// //
14	बरलिंगटन फ्री प्रेस 27 जून 1903 ई.	// //
15	रोस्टर स्पाई 28 जून 1903 ई.	// //
16	शिकागो इन्टर ओशन 28 जून 1903 ई.	// //
17	अलबनी प्रेस 25 जून 1903 ई.	// //
18	जैकसनविल टाइम्स 28 जून 1903 ई.	// //
19	बाल्टीमोर अमरीकन 25 जून 1903 ई.	// //
20	बफ़लो टाइम्स 25 जून 1903 ई.	// //
21	न्यूयार्क मेल 25 जून 1903 ई.	मुबाहले के वर्णन की चर्चा है
22	बोस्टन रिकार्ड 27 जून 1903 ई.	// //
23	डेजर्ट इंगलिश न्यूज़ 27 जून 1903 ई.	// //
24	हैलीना रिकार्ड 1 जुलाई 1903 ई.	// //
25	ग्रूमशाइर गज़ट 17 जुलाई 1903 ई.	// //
26	नौनीटन क्रानीकल 17 जुलाई 1903 ई.	// //
27	ह्यूस्टन क्रानीकल 3 जुलाई 1903 ई.	// //
28	सोना न्यूज़ 29 जून 1903 ई.	// //
29	रिचमण्ड न्यूज़ 1 जुलाई 1903 ई.	// //
30	ग्लासगो हैराल्ड 27 अक्टूबर 1903 ई.	// //
31	न्यूयार्क कमर्शियल एडवरटाइज़र 26 अक्टूबर 1903 ई.	// //
32	दी मारनिंग टेलीग्राम 28 अक्टूबर 1903 ई.	मुबाहले के निमंत्रण का वर्णन है तथा डोई की चर्चा है

और सारांश यह कि डोई एक नितान्त अधम व्यक्ति, हृदय की दृष्टि से ला'नती और भ्रम पैदा करने वाला, शैतान का समरूप था और वइ इस्लाम

का शत्रु अपितु समस्त शत्रुओं में से निकृष्टतम व्यक्ति था। वह चाहता था कि इस्लाम को इस प्रकार जड़ से उखाड़ दे कि आकाश के नीचे उसका नाम-निशान तक शेष न रहे। उसने अपने ला'नती अख़बार में कई बार मुसलमानों एवं पवित्र मिल्लत के लिए बद्दुआ की और कहा कि हे अल्लाह तू समस्त मुसलमानों को तबाह कर दे और देशों में से किसी देश में उन का एक सदस्य भी शेष न रहने दे और मुझे उनका पतन और विनाश दिखा और सम्पूर्ण विश्व में तस्लीस (तीन ख़ुदाओं की आस्था) को फैला दे। इसके अतिरिक्त उसने कहा कि मेरी यह इच्छा है कि मैं समस्त मुसलमानों की मृत्यु और इस्लाम धर्म के उन्मूलन को अपनी आंखों से देखूं और यह मेरे जीवन की सबसे बड़ी अभिलाषा है। इस उद्देश्य से बढ़कर मेरी कोई अभिलाषा नहीं है। ये सब वाक्य उसके उन अंग्रेज़ी अख़बारों में पाए जाते हैं जो हमारे पास मौजूद हैं और जो इन समाचार पत्रों को पढ़ेगा उसे ये सब बातें बिना किसी सन्देह के ज्ञात हो जाएंगी। अतः हे विचार करने वाले तेरे लिए ये वाक्य उस झूठे की दुष्टता का अनुमान लगाने के लिए पर्याप्त हैं।

और इसी कारण नबी करीम^{स.अ.व.} ने उसे सुअर के नाम से नामित किया, क्योंकि उस दुष्ट और अपवित्र को पवित्र बातें बुरी लगती थीं तथा शिर्क की अपवित्रता और झूठी बातें उसे प्रसन्न करती थीं। दर्शकों ने उसकी बातों में इस्लाम के घोर अपमान को देख लिया है और गवाहों ने प्रत्येक ला'नती से अधिक उसके ला'नती होने की गवाही दी है, यहां तक कि वह लोगों के मध्य गाली-गलौज में एक उदाहरण बन गया। वह केवल रोकने और मना करने से रुकने वाला नहीं था। जब मैंने उससे मुबाहला किया और उसे मुबाहले के लिए आमंत्रित किया ताकि झूठे की मृत्यु के द्वारा ख़ुदा की ओर से सच्चे की सच्चाई प्रकट हो तो अमरीकियों में से एक ने कहा और उसकी बात उसके अख़बार में प्रकाशित हो चुकी है। उसने डोई के मामले और उसके चरित्र के संबंध में एक लतीफ़े और मनोविनोद के रूप में बात की है। उस (अमरीकी) ने लिखा कि डोई उस मुबाहला के मामले को इस मुकाबले की शर्तों में

परिवर्तन के पश्चात् ही स्वीकार करेगा और वह कहेगा कि मैं इस प्रकार का मुबाहला स्वीकार नहीं करता। हां मुझ से गाली-गलौज में मुकाबला कर लो। अतः जब गाली-गलौज की अधिकता और कठोरता में अपने प्रतिद्वन्दी से आगे बढ़ गया तो वह सच्चा और उसका प्रतिद्वन्दी बिना किसी सन्देह के झूठा होगा।

यह बात उस अखबार के एडीटर ने कही, जिसने डोई के आचरण की पूर्ण रूप से खोज की है तथा उस डोई के मुख से जो कुछ निकलता है उसका उसने विश्लेषण किया और स्वाद चखा है। ऐसी ही बात दूसरे बहुत से अखबारों के एडीटर्स ने भी कही है। ये सब अमरीका के सम्मानित एवं प्रतिष्ठित लोगों में से हैं फिर इसके अतिरिक्त मुबाहले के समय मैंने स्वयं उसके आचरण का विश्लेषण किया है। उसे जब मेरा यह पत्र मिला तो वह बहुत क्रोधित हुआ और अहंकार एवं अभिमान से भड़क उठा और जंगल के भेड़ियों के समान कुचलियां दिखाई और कहा कि मैं इस व्यक्ति को मच्छर अपितु मच्छर से भी निकृष्ट समझता हूं और मुझे इस मच्छर ने निमंत्रण नहीं दिया अपितु अपनी मृत्यु को बुलाया है। उसने यह बात अपने अखबार में प्रकाशित की और तुम्हारे लिए यह बात उस के अहंकार एवं अभिमान का अनुमान लगाने के लिए पर्याप्त है। यह उसका अहंकार ही था जिसने मुझे अल्लाह तआला पर भरोसा करते हुए दुआ और गिड़गिड़ाने पर तत्पर किया।

मेरे मुबाहले के निमंत्रण से पूर्व यह व्यक्ति बड़ी दौलत का मालिक था। मैं उसके विरुद्ध यह दुआ करता था कि अल्लाह उसे अपमान, दुर्दशा और उत्कंठा के साथ तबाह करे। मेरी इस दुआ से पूर्व उसे राजाओं के समान रोब, शक्ति और प्रताप तथा ऐसी महान ख्याति प्राप्त थी जिसने घरे के समान सम्पूर्ण पृथ्वी को अपनी परिधि में लिया हुआ था तथा वह उच्च और श्रेष्ठ इमारतों और नितान्त सुदृढ़ महलों का स्वामी था तथा उसने जीवन भर किसी संकट का मुख न देखा था और अपने समूह को प्रतिदिन बढ़ते हुए देखा था और संसार की प्रत्येक संभावित ने 'मत एवं ऐश्वर्य उसे प्राप्त था और वह तंगी तथा कठिनाई से अनभिज्ञ

था, उत्तम रेशम का लिबास पहनता था, तीव्रगामी और कुशल सवारियों पर सवार होता था तथा मौतों के बाण से पूर्णतः असावधान होकर वह यही समझता था कि वह लम्बी आयु पाएगा और वह उन लोगों जैसा जीवन व्यतीत करता था जिन के सामने लोग सज्दह करते और उनकी उपासना करते और उन्हें श्रेष्ठता की दृष्टि से देखा जाता है। रातें नर्म और आरामदायक बिस्तरों पर व्यतीत करता था, परन्तु जब ख़ुदा ने अपना प्रारब्ध उतारा ताकि वह उसकी पुष्टि करे जो मैंने उसके जीवन के अंजाम के बारे में कहा था तो उसके ऐश्वर्य और खुशियों का युग पलट गया तथा अल्लाह ने उसे शोक और पीड़ा का दर्द दिखाया तथा अपने ही सांपों से वह बुरी तरह डसा गया अर्थात् अपने ही दुष्कर्मों एवं दुराचारों के सांपों से।

और उत्तम चाल वाली सवारी^①, बेढंगीचाल वाली सवारी^② में बदल गई। रेशम के वस्त्र (खुरदरी) ऊन में बदल गए। इसी प्रकार दूसरे मामलों ने भी ऐसा पलटा खाया कि जिस बस्ती को उसने अमूल्य खज़ाने व्यय करके बनाया था उसी बस्ती से वह बाहर निकाल दिया गया और जिन महलों को उसने अपने खज़ाने खर्च करके अत्यन्त सुदृढ़ निर्माण किया था उनसे उसे वंचित कर दिया गया अपितु अल्लाह ने इसी पर बस नहीं की अपितु अपना प्रारब्ध उस पर उतार दिया और उसकी प्रतिष्ठा, वैभव, मान-सम्मान के समस्त कारणों को समाप्त कर दिया और उसके अधिकार में जो कुछ भी था वह किसी अन्य व्यक्ति की ओर हस्तांतरित हो गया। उसके अभिमान एवं अहंकार की हवाओं ने दुर्दशा के इतने अंधकार एकत्र कर दिए कि वह अपने पहले धन से निराश हो गया और उसने युग की बांझ छाती का दूध पिया और कंगाली के चौपाए की पीठ पर सवारी की। तत्पश्चात् उसके कुछ वारिसों ने कर्ज मांगने वालों के समान उसकी गिरफ्त की। उसने अपनी पत्नी, मित्रों और पुत्रों की ओर से बड़ा अपमान देखा। यहां तक कि स्वयं उसके पिता ने अमरीका के कुछ अखबारों में प्रकाशित किया

① अलहिमलाज - ऐसी सवारी जो चलने में तीव्र और अच्छी गति रखती हो - 12

② अलक्रतूफ़ - ऐसी सवारी जो छोटे-छोटे क़दम उठाती हो और गति में सुस्त हो - 12

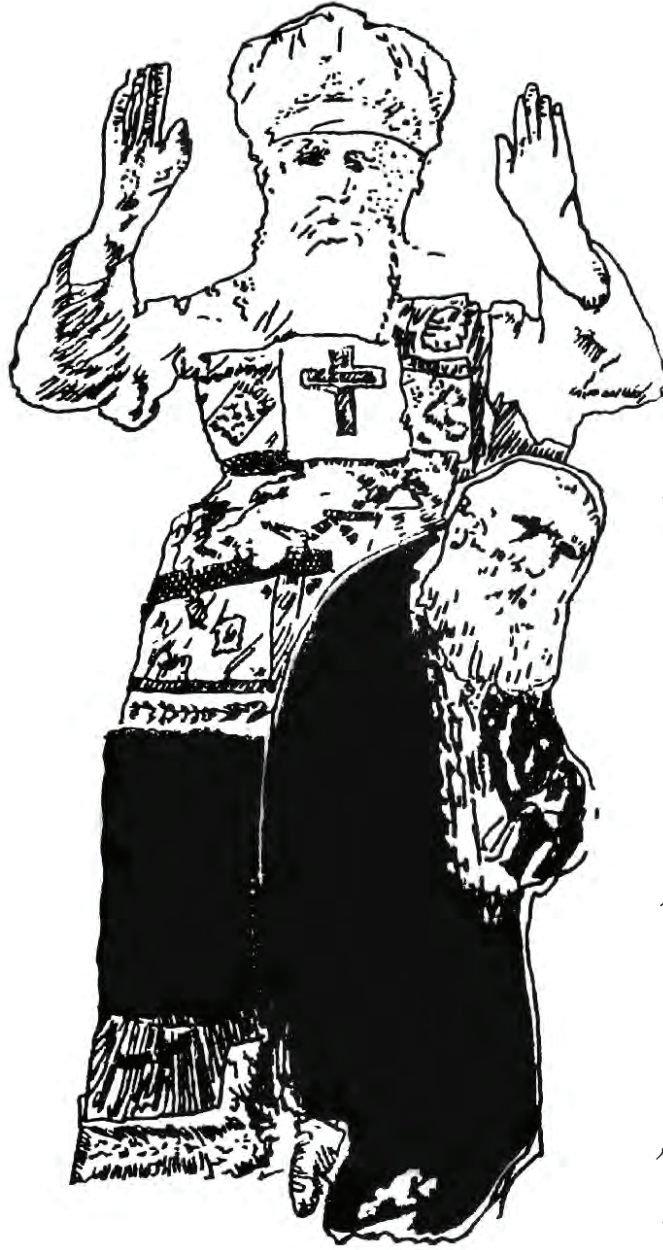
कि वह (डोई) हरामी और नाजायज़ सन्तान है तथा उसके वीर्य से नहीं। इस प्रकार पतन और क्रान्ति की आंधियों ने उसे जड़ से उखाड़ दिया और युग ने समस्त प्रकार के अपमान उसके अस्तित्व में पूर्ण कर दिए जिस से वह धूल में दबी जीर्ण हड्डी के समान हो गया या उस सांप के डसे हुए के समान जो विनाश का लक्ष्य बन गया हो। समस्त उपरोक्त प्रतिष्ठा और वैभव के बावजूद वह ऐसा अजनबी बन गया जो परिचित न हो। उसके जितने अनुयायी थे वे बिखर गए और उसके हाथ में नक्रद राशि तथा जागीर एवं सम्पत्ति में से कुछ भी शेष न रहा तथा वह एक दुर्दशाग्रस्त मुहताज तथा लज्जित एवं अधम व्यक्ति के समान हो गया, उसके हौज़ और बाग़ और उसका मकान अशुभ हो गया और उसका दीपक बुझ गया, उसकी चीख-पुकार बुलन्द हुई, बाग़ और उनके झरने तथा घोड़े और उनकी सवारी उससे छिन गए^① तथा नर्म और पथरीली भूमि उस पर तंग हो गई तथा बस्तियां और घाटियां उसकी शत्रु हो गईं और वे ख़जाने उससे छिन लिए गए जिनकी चाबियों का वह स्वामी था। उसने शत्रुओं की ओर से लड़ाई-झगड़े और कष्ट देखे और फिर हर प्रकार की बदनामी और अपमान के पश्चात् उसे सर से पैर तक लक़्वा हो गया।

① प्रथम संस्करण में इस स्थान पर पृष्ठ-71 समाप्त होता है और अगले पृष्ठ-72, 73 पर हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और डाक्टर डोई के चित्र हैं जो आप अगले पृष्ठों में देख सकते हैं।
(प्रकाशक)



हमारे हजरत मसीह मौऊद मिर्जा गुलाम अहमद क़ादियानी अलौहिस्सलाम
(आपके फ़ैज़ में वृद्धि हो)

यह रेखा चित्र डाक्टर अलेक्जेंडर डोई का है जब वह स्वस्थ था।



यह रूप रेखा डाक्टर अलेक्जेंडर डोई की लकवे के पश्चात् की है।

ताकि यह लक्वा उसे अपवित्र जीवन से समाप्ति की ओर ले जाए। उसे लोगों की गर्दनों पर बैठा कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता और जब उसे शौच की आवश्यकता होती है तो वह लोगों के हाथों एनीमा कराने का मुहताज होता, फिर वह पागल हो गया जिस के परिणामस्वरूप उसको बोल-चाल, बड़बड़ाहट और उठने-बैठने में बेचैनी होने लगी और यह उसकी अत्यन्त बदनामी थी। फिर नाना प्रकार की उतकंठाओं के साथ उसे मृत्यु ने आ लिया और उसकी मृत्यु दिनांक 9 मार्च 1907 को हुई और उसकी विशेषताओं का वर्णन करके मातम करने वाली स्त्रियां न थीं और न उस पर कोई रोने वाला था।

और उसकी मृत्यु की सूचना सुनने से पूर्व, मेरे रब्ब ने मेरी ओर वह्यी की और फ़रमाया - **إِنِّي نَعَيْتُ - إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّادِقِينَ** अर्थात् मैंने एक झूठे की मृत्यु की सूचना दी अल्लाह सच्चों के साथ है।” तब मैं समझ गया कि अल्लाह ने मुझ से मुबाहला करने वालों में से मेरे शत्रु और मेरे धर्म (इस्लाम) के शत्रु की मृत्यु की सूचना दी है। इस स्पष्ट वह्यी के पश्चात् मैं प्रतीक्षक रहा तथा इस भविष्यवाणी के घटित होने से पूर्व उसे अखबार बद्र और अलहकम में प्रकाशित कर दिया गया था ताकि यह अपने प्रकट होने के समय मोमिनों के ईमान में वृद्धि का कारण हो।

फिर जब हमारे रब्ब का वादा आ गया तो अचानक डोई मर गया और असत्य भाग गया और सत्य विजयी हो गया। अतः समस्त प्रशंसाएं समस्त संसारों के प्रतिपालक अल्लाह के लिए हैं और खुदा की क्रसम ! यदि मुझे स्वर्ग, मोतियों अथवा याकूत का पर्वत भी दिया जाता तो वह मुझे कदापि प्रसन्न न करता जैसा इस उपद्रवी और झूठे की मृत्यु की सूचना ने प्रसन्न कर दिया। क्या कोई ऐसा न्यायप्रिय है जो दानशील खुदा की ओर से आने वाली इस महान विजय को देखे और इस पर विचार करे। यह वह कष्टदायक अज़ाब है जो उस दुष्ट शत्रु पर आया। और रही मेरी बात तो मुबाहले के पश्चात् अल्लाह ने मेरे प्रत्येक उद्देश्य को सच्चा सिद्ध कर दिया और उसने समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए बहुत से निशान दिखाए और सदाचारियों की एक बहुत बड़ी फौज मेरी ओर खींच लाया तथा सोने-चांदी के ढेरों के ढेर मेरे पास ले आया तथा बिदअत करने वालों और काफ़िरों में से प्रत्येक मुबाहला करने वाले पर

मुझे महान विजय प्रदान की। मेरे लिए इतने चमकदार निशान उतारे जिन्हें मैं गिन नहीं सकता और न लिखने की शक्ति रखता हूँ। अतः तुम अमरीका के निवासियों से पूछो कि मेरी दुआ के पश्चात् अल्लाह ने डोई से कैसा व्यवहार किया।

आओ मैं तुम्हें अपने प्रतिपालक एवं स्वामी के निशान दिखाऊँ।

وآخر دعوانا أن الحمد لله رب العالمين-

विज्ञापन दाता

मिर्ज़ा गुलाम अहमद

मसीह मौऊद

स्थान - क्रादियान

ज़िला - गुरदासपुर - पंजाब

15 अप्रैल 1907 ई.



पृष्ठ 75 से संबंधित हाशिया

पंक्ति संख्या - 10

अल्लाह ने बार-बार मुझे डोई की मृत्यु की सूचना दी और ये शुभ सन्देश बड़ी प्रचुरता के साथ हैं और ये सब की सब उसकी मृत्यु से पूर्व तथा आपदाएं आने से पूर्व पहले बदर नामक अख़बार फिर एक अन्य अख़बार अलहक़म में प्रकाशित कर दी गई थीं। विचार करने वाले को चाहिए कि वह इन दोनों अख़बारों को देखे। इन समस्त इल्हामों में से एक वह है जो 25 दिसम्बर 1902 ई. को मेरी ओर से बतौर हिकायत (किस्से कहानी) कहानी वर्णन किया गया और वह यह है :

إِنِّي صَادِقٌ صَادِقٌ وَسَيَشْهَدُ اللَّهُ لِي अर्थात् मैं सच्चा हूँ, सच्चा हूँ और शीघ्र ही खुदा तआला मेरी गवाही देगा। इन समस्त इल्हामों में से एक वह है जो 2 फ़रवरी 1903 ई. को मुझे हुआ जो यह है - “हम तुझे विजयी करेंगे, मैं तुझे सम्मान प्रदान करूंगा ऐसा सम्मान जिससे लोग आश्चर्य में पड़ेंगे, तेरी दुआ सुनी गई, मैं फौजों के साथ अचानक तेरे पास आऊंगा, तेरी दुआ स्वीकार है।” और 26 नवम्बर 1903 ई. को यह वह्यी हुई - لَكَ الْفَتْحُ وَلَكَ الْغَلْبَةُ अर्थात् तेरे लिए विजय है और तेरे लिए प्रभुत्व मुक़द्दर है। 17 दिसम्बर 1903 ई. को यह वह्यी हुई - “तू अल्लाह की ओर से सहायता देखेगा और निश्चय ही अल्लाह उन लोगों के साथ है जो संयमी और सदाचारी हैं।” और 12 जून 1904 ई. को मुझे यह वह्यी की गई - “खुदा ने लिख छोड़ा है कि मैं और मेरे रसूल विजयी रहेंगे, तुझ जैसा मोती नष्ट नहीं होगा।” तुझ पर घाटे का दिन नहीं आएगा और 17 दिसम्बर 1905 ई. को मुझे यह वह्यी की गई - तेरा रब्ब कहता है एक बात आकाश से उतरेगी जिस से तू प्रसन्न हो जाएगा। यह हमारी ओर से दया है और यह निर्णय हो चुकी बात है जो प्रारंभ से मुक़द्दर थी तथा 20 मार्च 1906 ई. को मुझे वह्यी की गई - “الْمُرَادُ حَاصِلٌ” अर्थात् मनोकामना पूर्ण होने वाली है।

और 9 अप्रैल 1906 को मुझे यह वह्यी की गई कि अल्लाह तआला की ओर से

सहायता और स्पष्ट विजय आने वाली है तथा विमुख होने वाले उसके अज़ाब से बच नहीं सकेंगे तथा 12 अप्रैल 1906 ई. को मुझे यह वह्यी की गई - “अल्लाह तआला ने इरादा किया है कि तुझे महमूद के स्थान पर अवतरित करे अर्थात् ऐसी विजय के स्थान पर जहां तेरी प्रशंसा की जाएगी तथा उर्दू में वह्यी हुई कि मैं कलीसिया की शक्ति को मिटते हुए देखता हूं अर्थात् मैं वह निशान देख रहा हूं जो ईसाइयों की कलीसिया की शक्ति को तोड़ देगा। 7 जून 1908 ई. को उर्दू में वह्यी हुई “दो निशान प्रकट होंगे, मैं तुझे वह दिखाऊंगा तो तुझे प्रसन्न कर देगा।” 20 जनवरी 1906 ई. को यह इल्हाम हुआ - “और कहेंगे कि तू खुदा का पैगाम्बर नहीं। तू कह मेरी सच्चाई पर अल्लाह गवाही दे रहा है और वे लोग गवाही देते हैं जो खुदा की किताब का ज्ञान रखते हैं।” और 10 जुलाई 1906 ई. को यह इल्हाम हुआ — “देख मैं आकाश से तेरे लिए बरसाऊंगा और पृथ्वी से उगाऊंगा परन्तु जो तेरे विरोधी हैं पकड़े जाएंगे।” और 23 अगस्त 1906 ई. को उर्दू में यह इल्हाम हुआ — “आजकल में कोई निशान प्रकट होगा ताकि अल्लाह हमारे मध्य निर्णय कर दे।” और 27 सितम्बर 1906 ई. को उर्दू में यह इल्हाम हुआ — “हे मुज़ाफ़्फ़र तुझ पर सलाम हो कि खुदा ने तेरी दुआ सुन ली, मेरे निशान प्रकट हो गए और शुभ सन्देश दे उन लोगों को जो ईमान लाए कि निःसन्देह उन के लिए विजय है।” और 20 अक्टूबर 1906 ई. को उर्दू में वह्यी हुई — “झूठे का खुदा शत्रु है, वह उसे नर्क में पहुंचाएगा, अधम व्यक्ति का बेड़ा गर्क हो गया, तेरे रब्ब की पकड़ बहुत सख्त है।” तथा 1 फ़रवरी 1907 ई. को उर्दू में वह्यी हुई - “रोशन निशान” और “और हमारी विजय हुई।” और 17 फ़रवरी 1907 ई. को वह्यी हुई - एक और ईद है जिसमें तू एक बड़ी विजय पाएगा, मुझे छोड़ ताकि मैं उस व्यक्ति का वध करूं जो तुझे कष्ट देता है, शत्रुओं के लिए अज़ाब चारों ओर से है और चारों ओर से घेरे हुए है और जब लोग कोई निशान देखते हैं तो कहते हैं कि यह एक साधारण और पुराना जादू है।” और 17 मार्च 1907 ई. को वह्यी हुई उसका शव कफ़न में लपेट कर लाए हैं। मैं एक झूठे की मृत्यु की सूचना देता हूं। सात मार्च से अन्त तक अर्थात् उस व्यक्ति डोई की मृत्यु की उस निर्धारित समय तक प्रसिद्धि कर दी जाएगी। खुदा सच्चों के साथ है। इसी से।

समाप्ति

मेरे हृदय में यह विचार आया कि मैं इस पुस्तक में अपनी और अपने पूर्वजों की जीवनी में से लिखूँ ताकि उसके द्वारा मैं अपने मामले से लोगों को परिचित कराऊँ। कदाचित (इस प्रकार) अल्लाह उन्हें लाभ पहुंचाए और गुमराही दूर करने के लिए उनकी शक्ति में वृद्धि करे और संभवतः वे मूल वास्तविकता पर विचार करें तथा न्याय और इन्साफ़ की ओर प्रवृत्त हों।

अल्लाह तुम पर दया करे। जान लो कि मैं गुलाम अहमद इब्ने मिर्ज़ा गुलाम मुर्तज़ा हूँ और मिर्ज़ा गुलाम मुर्तज़ा इब्ने मिर्ज़ा अता मुहम्मद और मिर्ज़ा अता मुहम्मद इब्ने मिर्ज़ा गुल मुहम्मद और मिर्ज़ा गुल मुहम्मद इब्ने मिर्ज़ा फ़ैज़ मुहम्मद और मिर्ज़ा फ़ैज़ मुहम्मद इब्ने मिर्ज़ा मुहम्मद क़ायम और मिर्ज़ा मुहम्मद क़ायम इब्ने मिर्ज़ा मुहम्मद असलम और मिर्ज़ा मुहम्मद असलम इब्ने मिर्ज़ा दिलावर बेग और मिर्ज़ा दिलावर बेग इब्ने मिर्ज़ा इलाहदीन और मिर्ज़ा इलाहदीन इब्ने मिर्ज़ा जा'फ़र बेग और मिर्ज़ा जा'फ़र बेग इब्ने मिर्ज़ा मुहम्मद बेग और मिर्ज़ा मुहम्मद बेग इब्ने मिर्ज़ा मुहम्मद अब्दुल बाक़ी और मिर्ज़ा मुहम्मद अब्दुल बाक़ी इब्ने मिर्ज़ा मुहम्मद सुल्तान और मिर्ज़ा मुहम्मद सुल्तान इब्ने मिर्ज़ा हादी बेग।

फिर तुम जान लो कि मेरा निवास स्थान इस्लामपुर नामक एक बस्ती है जो आजकल क़ादियान के नाम से प्रसिद्ध है। यह बस्ती पंजाब में रावी और ब्यास नदियों के मध्य स्थित है जो पंजाब की राजधानी लाहौर के उत्तर पूर्व की ओर है और मैंने अपने पूर्वजों की जीवनी की पुस्तकों में पढ़ा और अपने पिता से सुना है कि मेरे पूर्वज मुग़लों की नस्ल से थे, किन्तु अल्लाह तआला ने मेरी ओर वही की है कि वह फ़ारसी नस्ल के थे और तुर्की क्रौम में से नहीं थे तथा इसके साथ ही मेरे रब ने मुझे यह भी बताया है कि मेरी कुछ नानियां बनी फ़ातिमा और अहले बैत-ए-नबवी^स में से थीं और अल्लाह ने पूर्ण दूरदर्शिता और हित से (मेरे पूर्वजों में) हज़रत इस्हाक़^अ और हज़रत इस्माईल^अ की नस्ल को इकट्ठा कर दिया।

और मैंने अपने पिताश्री से सुना है तथा अपने उन बुजुर्गों की कुछ जीवनियों में पढ़ा है कि वे हिन्दुस्तान की ओर कूच करने से पूर्व समरकन्द में निवास रखते

थे और वे इस देश के अमीरों और शासकों में से थे तथा मिल्लत के सहायकों तथा उसके समर्थकों में से थे।

फिर यात्रा ने उन्हें सुदूर प्रदेशों में ला फेंका तथा यात्रा के बहाव से अपने यहां तक आ पहुँचे कि जब उनके क्रदम क़ादियान नामक इस बस्ती पर पड़े और उन्होंने इसको मुबारक क्षेत्र और इस पृथ्वी को अच्छा पाया और उन्हें इसकी जलवायु और इसके हरे भरे खेत अच्छे लगे तो उन्होंने यहीं अपने डेरे डाल दिए। वे देहाती क्षेत्रों को शहरी क्षेत्रों पर प्राथमिकता देते थे और अल्लाह की ओर से उन्हें जागीरें तथा जायदादें दी गईं तथा वे बस्तियों और शहरों के स्वामी बन गए। फिर जब इस समृद्धि पर एक युग बीत गया और मुगल शासन पर अल्लाह का प्रारब्ध उतरा तो अल्लाह ने उन (मेरे पूर्वजों) को क्षेत्रों के हुक्मरान में से बना दिया और मामला यहां तक पहुंचा कि वे इस क्षेत्र के स्वयं स्वतन्त्र बादशाह के समान हो गए तथा हर ओर से शासन की बागडोर उनके हाथ में थी अल्लाह ने अपनी कृपा एवं दया से उनकी प्रत्येक इच्छा को पूर्ण किया। ताज़ा ने 'मत, समृद्धि तथा मान-सम्मान का एक लम्बा जीवन व्यतीत करने के पश्चात् अल्लाह ने अपने सूक्ष्म से सूक्ष्म हितों तथा बारीक से बारीक नीतियों के अन्तर्गत उन पर एक एक ऐसी क्रौम को अधिकार दे दिया जिसे खालसा (सिख) कहा जाता है।

यह सिख क्रौम बड़ी कठोर हृदय वाली थी। सुशील लोगों का सम्मान न करते थे तथा असहायों और कमजोरों पर दया नहीं करते थे। जब भी किसी बस्ती में प्रवेश किया तो उसे उन्होंने तबाह कर दिया और उसके सम्मानीय लोगों को अपमानित किया। उनके अत्याचार से इस्लाम के बड़े-बड़े प्रतिष्ठित उलेमा तुच्छ समझे जाने लगे। वे (सिख) इस्लाम के शत्रु और आहंज़रत की उम्मत के सब से बड़े शत्रु थे। अतः उस युग में मेरे पूर्वजों पर इन दुष्ट लोगों के हाथों संकटों के इतने पहाड़ टूटे कि वे अपने रियासत के केन्द्र से निकाल दिए गए और उन काफ़िरों के हाथों उनकी धन-सम्पत्तियां छीन ली गईं और उन्हें शक्तिशाली लोगों की ओर से धक्के दिए गए और लम्बी छांवों से निकाल कर धूप में डाल दिए गए तथा कई वर्षों तक परदेश में रहे और उन्हें अत्याचारियों द्वारा कठोर कष्ट दिए गए तथा दयावानों में सर्वाधिक दयालु

ख़ुदा के अतिरिक्त उन पर किसी ने भी दया न की। फिर ख़ुदा ने अंग्रेज़ी सरकार के युग में मेरे पिता श्री को कुछ गांव वापस लौटाए। अतः उन्होंने इस खोई हुई संपत्तियों के समुद्र में से एक बूंद अपितु इससे भी बहुत कम पाया।

अतः सारांश यह है कि मेरे पूर्वज विफलता और निराशा की कड़वी अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हुए।

तत्पश्चात् वह एक फलों से लदे हुए वृक्ष के समान थे और ऐसे समयोपरान्त जो सुसज्जित कुंवारियों के समान था। मैंने उनके क्रिस्सों को ऐसा नसीहत का स्थान पाया जिस का वर्णन करने से आंसू बहने लगते हैं तथा उनकी कल्पना करके बहते हुए आंसू थमने का नाम नहीं लेते और जब मैंने ये परिस्थितियां देखीं तो मुझ पर आर्द्रता छा गई और मैं रो पड़ा और मैंने अपने हृदय में यह सोचा कि यह संसार एक बेवफ़ा मात्र है जिसका परिणाम कटुता, विफलता और विनाश के अतिरिक्त कुछ नहीं। इस संसार रूपी घर में मुझे अपनी तंगी से अत्यन्त कष्ट में डाला तथा मेरे हृदय में यह डाला गया कि मैं उसकी चमक दमक को पसन्द न करूं। अतः ख़ुदा ने संसार के प्रेम तथा उसके सौन्दर्य के दर्शन तथा उसके वृक्षों और फलों पर झुक जाने को मुझ से दूर कर दिया। और मैं गुमनाम रहने को पसन्द करता और अकेले कोने में पड़े रहने को प्राथमिकता देता था और मैं सभाओं, स्वयं को बड़ा समझने और दिखावों के अवसरों से दूर भागता था परन्तु ख़ुदा ने मुझे मेरी कुटिया से निकाला और मुझे लोगों में ख्याति प्रदान की जबकि मैं अपनी ख्याति को पसन्द न करता था और उसने मुझे अन्तिम युग का ख़लीफ़ा और इस समय का इमाम बनाया और बहुत से वाक्यों के साथ मुझ से वार्तालाप किया जिन में से कुछ हम यहां वर्णन करते हैं और हम उन पर उसी प्रकार ईमान रखते हैं जिस प्रकार कि हम ब्रह्माण्ड के स्रष्टा ख़ुदा की किताबों पर ईमान रखते हैं और वह ये हैं^① —

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हे अहमद ख़ुदा ने तुझ में बरकत रख दी है। जो कुछ तूने चलाया वह तूने नहीं

① अधिकतर इल्हाम अरबी भाषा में हुए हैं और कुछ उर्दू में हैं, यहाँ केवल उनका हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रकाशक।

चलाया अपितु खुदा ने चलाया।

खुदा ने तुझे कुर्आन सिखाया अर्थात् उसके सही अर्थ तुझ पर प्रकट किए ताकि तू उन लोगों को डराए जिनके पूर्वज डराए नहीं गए और ताकि अपराधियों का मार्ग स्पष्ट हो जाए अर्थात् ज्ञात हो जाए कि कौन तुझ से नाराज़ होता है।

कह मैं खुदा की ओर से मामूर हूँ और मैं सर्वप्रथम ईमान लाने वाला हूँ। कह सत्य आया और असत्य भाग गया और असत्य भागने वाला ही था।

प्रत्येक बरकत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर से है। अतः बहुत मुबारक वह है जिसने शिक्षा दी और जिसने शिक्षा पाई।

और कहेंगे कि यह वह्यी नहीं है ये वाक्य तो अपनी ओर से बनाए हैं उन्हें कह वह खुदा है जिसने ये वाक्य उतारे फिर उन्हें खेल-कूद के विचारों में छोड़ दे।

उनको कह यदि ये वाक्य मेरे बनाए हुए हैं और खुदा का कलाम नहीं तो फिर मैं कठोर दण्ड का पात्र हूँ।

और उस मनुष्य से अधिक अत्याचारी कौन है जिसने खुदा पर झूठ बांधा और इफ़्तिरा किया।

खुदा वह खुदा है जिसने अपना रसूल और अपना चुना हुआ अपने मार्ग दर्शन और सच्चे धर्म के साथ भेजा ताकि इस धर्म को प्रत्येक प्रकार के धर्म पर विजयी करे।

खुदा की बातें पूरी हो कर रहती हैं कोई उन्हें परिवर्तित नहीं कर सकता।

और लोग कहेंगे कि यह स्थान तुझे कहां से प्राप्त हुआ। यह जो इल्हाम करके वर्णन किया जाता है यह तो मनुष्य का कथन है तथा दूसरों की सहायता से रचा गया है।

हे लोगो ! क्या तुम छल में जान-बूझ पर फंसते हो? यह व्यक्ति जो कुछ तुम्हें वादा देता है उसका होना कब संभव है फिर ऐसे व्यक्ति का वादा जो अधम और तुच्छ है, यह तो मूर्ख है या दीवाना है यह तो निरर्थक बातें करता है।

उनको कह कि मेरे पास खुदा की गवाही है। अतः क्या तुम स्वीकार करोगे या नहीं।

फिर उनको कह कि मेरे पास खुदा की गवाही है। अतः क्या तुम ईमान लाओगे या नहीं।

और मैं इस से पूर्व एक समय तक तुम में ही रहता रहा हूँ। क्या तुम समझते नहीं। यह पद तेरे रब्ब की दया से है वह अपनी ने'मत तुझ पर पूर्ण करेगा। अतः तू शुभ सन्देश दे और खुदा की कृपा से तू पागल नहीं है। आकाश पर तेरी एक श्रेणी एवं पद है और इसी प्रकार लोगों की दृष्टि में जो देखते हैं।

और तेरे लिए हम निशान दिखाएंगे और जो इमारतें बनाते हैं हम ध्वस्त कर देंगे। उस खुदा की प्रशंसा है जिसने तुझे मसीह इब्ने मरयम बनाया। वह उन कार्यों से पूछा नहीं जाता जो करता है और लोग अपने कार्यों से पूछे जाते हैं।

और उन्होंने कहा कि क्या तू ऐसे व्यक्ति को खलीफ़ा बनाता है जो पृथ्वी पर फ़साद करता है। उसने कहा कि उसके संबंध में जो कुछ मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते मैं उस व्यक्ति को अपमानित करूंगा जो तुझे अपमानित करने का इरादा करेगा।

मेरे सानिध्य में मेरे रसूल किसी शत्रु से नहीं डरा करते।

खुदा ने लिख छोड़ा है कि मैं और मेरे रसूल विजयी रहेंगे और वह पराजित होने के पश्चात् शीघ्र विजयी हो जाएंगे।

खुदा उनके साथ है जो संयम धारण करते हैं और वे जो शुभ कर्म करते हैं।

प्रलय के समान एक भूकम्प आने वाला है जो तुम्हें दिखाऊंगा और मैं प्रत्येक को जो इस घर में है की रक्षा करूंगा।

हे अपराधियो ! आज तुम अलग हो जाओ। सत्य आया और असत्य भाग गया। यह वही है जिसके बारे में तुम जल्दी करते हो।

यह वह शुभ सन्देश है जो नबियों को मिला था।

तू खुदा की ओर से खुले-खुले तर्क के साथ प्रकट हुआ है। वे लोग जो तुझ पर उपहास करते हैं उनके लिए हम पर्याप्त हैं।

क्या मैं तुम्हें बताऊं कि किन लोगों पर शैतान उतरा करते हैं। प्रत्येक झूठे दुराचारी पर शैतान उतरते हैं।

और तू खुदा की दया से निराश न हो। सावधान हो कि खुदा की दया निकट है।

सावधान हो कि ख़ुदा की सहायता निकट है।

वह सहायता प्रत्येक दूर के मार्ग से तुझे पहुंचेगी और ऐसे मार्गों से पहुंचेगी कि वे मार्ग लोगों के अत्यधिक चलने के कारण जो तेरी ओर आएंगे गहरे हो जाएंगे।

लोग तेरी ओर इतनी अधिकता के साथ आएंगे कि जिन मार्गों पर वे चलेंगे वे गहरे हो जाएंगे।

ख़ुदा अपनी ओर से तेरी सहायता करेगा।

तेरी सहायता वे लोग करेंगे जिनके हृदयों में हम अपनी ओर से इल्हाम करेंगे।

ख़ुदा की बातें टल नहीं सकतीं।

तेरा रब्ब फ़रमाता है - आकाश से एक ऐसी बात उतरेगी जिस से तू प्रसन्न हो जाएगा।

हम तुझे एक खुली-खुली विजय प्रदान करेंगे। वली की विजय एक बड़ी विजय है तथा हमने उसे एक ऐसा सानिध्य प्रदान किया कि अपना राज़दार बना दिया।

वह समस्त लोगों से अधिक बहादुर है। और यदि ईमान सुरैया से लटका होता तो वह वहीं जाकर उसे ले लेता।

ख़ुदा उसके तर्क को प्रकाशित करेगा।

मैं एक गुप्त खज़ाना था। अतः मैंने चाहा कि प्रकट किया जाऊं।

हे चन्द्र और हे सूर्य तू मुझ से प्रकट हुआ और मैं तुझ से।

जब ख़ुदा की सहायता आएगी और समय हमारी ओर लौटेगा तब कहा जाएगा कि क्या यह व्यक्ति जो भेजा गया सत्य पर न था।

और चाहिए कि तू ख़ुदा की प्रजा से मिलने के समय नाक-भों न चढ़ा और चाहिए कि तू लोगों की मुलाक़ात की अधिकता से थक न जाए और तुझ पर अनिवार्य है कि अपने मकान को विशाल करे ताकि लोग जो बड़ी संख्या में आएंगे उनके उतरने के लिए पर्याप्त स्थान हो।

और ईमान वालों को शुभ सन्देश दे कि ख़ुदा के समक्ष उन का क्रदम सत्य पर है।

और जो कुछ तेरे रब्ब की ओर से तुझ पर वह्यी उतारी गई है वह उन लोगों को सुना जो तेरी जमाअत में सम्मिलित होंगे।

सुफ़्फ़ा के रहने वाले और तू क्या जानता है कि क्या हैं सुफ़्फ़ा के रहने वाले।

तू देखेगा कि उनकी आंखों से आंसू जारी होंगे वे तुझ पर दरूद भेजेंगे और कहेंगे कि हे हमारे ख़ुदा ! हमने एक मुनादी करने वाले की आवाज़ सुनी है जो ईमान की ओर बुलाता है।

और ख़ुदा की ओर बुलाता है और एक चमकता हुआ दीपक है।

हे अहमद ! तेरी बातों में रहमत जारी की गई।

तू मेरी आंखों के सामने है।

मैंने तेरा नाम मुतवक्किल (ख़ुदा पर पूर्ण विश्वास रखने वाला) रखा है।

ख़ुदा तेरे नाम को बुलन्द करेगा तथा अपनी ने'मत लोक और परलोक में तुझ पर पूर्ण करेगा।

हे अहमद तू बरकत दिया गया और तुझे जो कुछ बरकत दी गई वह तेरा ही अधिकार था।

तेरी शान अद्भुत है और तेरा प्रतिफल निकट है।

आकाश और पृथ्वी तेरे साथ हैं जैसे कि वे मेरे साथ हैं।

तू मेरे दरबार में सम्माननीय है मैंने तुझे अपने लिए चुना।

पवित्र ख़ुदा बड़ी बरकतों वाला और बड़ा महान है वह तेरी महानता को बढ़ाएगा।

तेरे बाप-दादों का नामोनिशान समाप्त हो जाएगा और तेरे पश्चात् ख़ानदान का सिलसिला तुझ से आरंभ होगा।

और ख़ुदा ऐसा नहीं कि तुझे छोड़ दे जब तक कि पवित्र और अपवित्र में अन्तर करके न दिखा दे।

और जब ख़ुदा तआला की सहायता और विजय आएगी और ख़ुदा का वादा पूरा होगा तब कहा जाएगा कि यह वही बात है जिसके लिए तुम जल्दी करते थे।

मैंने इरादा किया कि अपना ख़लीफ़ा बनाऊं। अतः मैंने इस आदम को पैदा किया।

वह ख़ुदा से समीप हुआ फिर प्रजा की ओर झुका तथा ख़ुदा और प्रजा के मध्य

ऐसा हो गया जैसा कि दो धनुषों के मध्य की प्रत्यंचा होती है।

धर्म को जीवित करेगा और शरीअत को स्थापित करेगा।

हे आदम ! तू और तेरे मित्र स्वर्ग में प्रवेश करो।

हे मरयम तू और तेरा दोस्त स्वर्ग में प्रवेश कर।

हे अहमद ! तू और तेरा दोस्त स्वर्ग में प्रवेश कर।

तुझे सहायता दी जाएगी और विरोधी कहेंगे कि अब भागने का स्थान नहीं।

वे लोग जो काफ़िर हुए और ख़ुदा के मार्ग में बाधक हुए उनका एक फारसी नस्ल के व्यक्ति ने खण्डन किया।

ख़ुदा उसके प्रयास का कृतज्ञ है।

क्या ये लोग कहते हैं कि हम एक शक्तिशाली जमाअत तबाह करने वाले हैं। ये सब लोग भाग जाएंगे और पीठ फेर लेंगे।

तू हमारे निकट आज अधिकार रखने वाला अमीन है तथा तुझ पर मेरी दया संसार और धर्म (दोनों) में है और तू उन लोगों में से है जिनके साथ ख़ुदा की सहायता होती है।

ख़ुदा तेरी प्रशंसा करता है और तेरी ओर चल रहा है।

वह पवित्र हस्ति रखने वाला वही ख़ुदा है जिसने एक रात में तुझे भ्रमण करा दिया। उसने उस आदम को पैदा किया और फिर उसे सम्मान प्रदान किया।

यह ख़ुदा का रसूल है समस्त नबियों के रूप में अर्थात् प्रत्येक नबी का एक विशेष गुण उसमें मौजूद हैं।

तुझे खुशख़बरी हो हे मेरे अहमद।

तू मेरी मनोकामना और मेरे साथ है।

तेरा रहस्य मेरा रहस्य है।

मैं तेरी सहायता करूंगा मैं तेरा संरक्षक रहूंगा।

मैं लोगों के लिए तुझे इमाम बनाऊंगा तू उनका पथ-प्रदर्शक होगा और वे तेरे अनुयायी होंगे।

क्या उन लोगों को आश्चर्य हुआ। तू कह दे ख़ुदा बहुत अद्भुत है।

वह अपने कार्यों से पूछा नहीं जाता और लोग पूछे जाते हैं।

और ये दिन हम लोगों में फेरते रहते हैं।

और वे कहेंगे कि यह तो केवल एक बनावट है।

कह यदि तुम ख़ुदा से प्रेम रखते हो तो आओ मेरा अनुसरण करो ताकि ख़ुदा भी तुम से प्रेम रखे।

जब ख़ुदा तआला मोमिन की सहायता करता है तो पृथ्वी पर उसके कई द्वेष रखने वाले नियुक्त कर देता है।

और उसकी कृपा को कोई रद्द नहीं कर सकता।

अतः नर्क उनके वादे का स्थान है।

तू कह ख़ुदा ने यह कलाम उतारा है। फिर उन्हें खेल-कूद के विचारों में छोड़ दे।

और जब उन्हें कहा जाए कि ईमान लाओ, जैसा कि लोग ईमान लाए। कहते हैं क्या हम मूर्खों के समान ईमान लाएं। सावधान हो कि वास्तव में वही लोग मूर्ख हैं, परन्तु अपनी मूर्खता पर अवगत नहीं।

और जब उनको कहा जाए कि पृथ्वी पर फ़साद मत करो। कहते हैं कि हम तो सुधार करने वाले हैं।

तू कह कि तुम्हारे पास ख़ुदा का प्रकाश आया है। अतः यदि मोमिन हो तो इन्कार मत करो।

क्या तू उन लोगों से कुछ^① कर मांगता है। अतः वे उस चट्टी के कारण ईमान लाने का भार उठा नहीं सकते।

अपितु हमने उनको सत्य दिया और वे सत्य लेने से घृणा करते हैं।

लोगों के साथ नमी और दया के साथ व्यवहार कर।

तू उनमें मूसा के समान है तथा उनकी बातों पर धैर्य कर।

क्या तू स्वयं को इसलिए तबाह करेगा कि वे क्यों ईमान नहीं लाते।

इस बात के पीछे मत पड़, जिसका तुझे ज्ञान नहीं।

① 'मिन' का शब्द कुर्आन करीम में नहीं है। हां इल्हाम में "मिन" का शब्द आया है। इसी से।

और उन लोगों के बारे में जो अत्याचारी हैं मुझ से बात न कर, क्योंकि वे सब डुबो दिए जाएंगे।

और हमारी आंखों के सामने और हमारे संकेत से नौका तैयार कर।

वे लोग जो तेरे हाथ में हाथ देते हैं वे खुदा के हाथ में हाथ देते हैं। यह खुदा का हाथ है जो उनके हाथों पर है।

और स्मरण कर वह समय जब तुझ से वह व्यक्ति छल करने लगा जिसने तुझे काफ़िर ठहराया और कहा कि हे हामान ! मेरे लिए आग भड़का ताकि मैं मूसा के खुदा पर सूचना पाऊं तथा मैं उसे झूठा समझता हूँ।

तबाह हो गए दोनों हाथ अबू लहब के और वह स्वयं भी तबाह हो गया।

उसे नहीं चाहिए था कि इस मामले में हस्तक्षेप करता परन्तु डरते, डरते।

और तुझे जो कुछ शोक पहुंचेगा वह तो खुदा की ओर से है।

यहां एक उपद्रव फैलेगा।

अतः धैर्य से काम ले जैसा कि दृढ़ संकल्प नबियों ने धैर्य से काम लिया।

वह उपद्रव खुदा तआला की ओर से होगा ताकि वह तुझ से प्रेम करे वह उस खुदा का प्रेम है जो बहुत प्रभुत्वशाली और प्रतिष्ठावान है।

दो बकरियां ज़िन्ह की जाएंगी और प्रत्येक जो पृथ्वी पर है अन्ततः वह समाप्त होगा। तुम कुछ शोक न करो और न ही संताप करो।

क्या खुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं।

क्या तू नहीं जानता कि खुदा प्रत्येक बात पर समर्थ है।

और तुझे उन्होंने उपहास का लक्ष्य बना रखा है।

वे उपहास के मार्ग से कहते हैं क्या यही है जिसे खुदा ने अवतरित किया है?

उनको कह कि मैं तो एक मनुष्य हूँ मेरी ओर यह वह्यी हुई है कि तुम्हारा खुदा एक खुदा है और सम्पूर्ण भलाई और नेकी कुर्आन में है किसी अन्य किताब में नहीं। इसके रहस्यों तक वही पहुंचते हैं जो पवित्र हृदय हैं।

वह हिदायत वास्तव में खुदा की हिदायत ही है।

और कहेंगे कि यह खुदा की वह्यी किसी बड़े व्यक्ति पर क्यों नहीं उतरी जो दो

शहरों में से किसी एक शहर का निवासी है।

और कहेंगे कि तुझे यह पद कहां से प्राप्त हो गया।

यह तो वह छल है जो तुम लोगों ने मिलकर बनाया। ये लोग तेरी ओर देखते हैं परन्तु तू उन्हें दिखाई नहीं देता।

उनको कह कि यदि तुम खुदा से प्रेम करते हो तो आओ मेरा अनुसरण करो ताकि खुदा भी तुम से प्रेम करे।

खुदा आया है ताकि तुम पर दया करे। और यदि तुम फिर उद्दण्डता की ओर जाओगे तो हम भी अज़ाब देने की ओर लौटेंगे।

और हमने नर्क को काफ़ि़रों के लिए कारावास बनाया है।

और हमने तुझे सम्पूर्ण विश्व पर साक्षात् दया बनाकर भेजा है।

उनको यह कह कि तुम अपने स्थानों पर अपने तौर पर कार्य करो और मैं अपने तौर पर कार्य कर रहा हूँ। फिर थोड़े समयोपरान्त तुम देख लोगे कि खुदा किसकी सहायता करता है।

कोई कर्म बिना संयम के लेशमात्र भी स्वीकार नहीं हो सकता।

खुदा उनके साथ होता है जो संयम धारण करते हैं और उनके साथ जो शुभ कर्मों में व्यस्त हैं।

कह यदि मैंने झूठ गढ़ लिया है तो मेरी गर्दन पर मेरा पाप है।

और मैं इससे पूर्व एक अवधि तक तुम ही में रहता था। क्या तुम्हें समझ नहीं? क्या खुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं है।

और हम उन लोगों के लिए एक निशान और दया का एक नमूना बनाएंगे और यह आरंभ में निर्धारित था।

यह वही निशान है जिसमें तुम सन्देह करते थे।

तुझ पर सलाम, तू मुबारक किया गया।

तू इस लोक और परलोक में मुबारक है।

तेरे द्वारा (आध्यात्मिक एवं भौतिक) रोगियों पर बरकत उतरेगी।

प्रसन्नचित्त होकर चल कि तेरा समय निकट आ पहुंचा है और मुहम्मदी गिरोह का

पाँव एक बहुत ऊँचे मीनार पर दृढ़ता से स्थापित हो गया है।^① पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा नबियों का सरदार। खुदा तेरे सब कार्य ठीक कर देगा और तेरी समस्त मनोकामनाएं तुझे देगा।

सर्वशक्तिमान खुदा इस ओर ध्यान देगा। इस निशान का उद्देश्य यह है कि कुर्आन करीम खुदा की किताब और मेरे मुख की बातें हैं।

हे ईसा ! मैं तुझे मृत्यु दूंगा और तुझे अपनी ओर उठाऊंगा और मैं तेरे अनुयायियों का तेरे इन्कार करने वालों पर प्रलय तक प्रभुत्व रखूंगा।

उनमें से एक प्रथम गिरोह हुआ और एक पिछला।

मैं अपनी झलक दिखाऊंगा। अपने शक्ति-प्रदर्शन से तुझे उठाऊंगा।

दुनिया में एक नज़ीर (डराने वाला) आया परन्तु दुनिया ने उसे स्वीकार न किया, परन्तु खुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली आक्रमणों से उसकी सच्चाई को प्रकट करेगा।❀

तू मुझ से ऐसा है जैसा कि मेरा एकेश्वरवाद और अद्वय होना

अतः वह समय आता है कि तू सहायता किया जाएगा और संसार में प्रसिद्ध किया जाएगा।

तू मुझ से मेरे अर्श के समान है।

तू मुझ से मेरे बेटे के समान है।^②

① मूल इल्हाम फ़ारसी भाषा में है

بخرام که وقت تو نزدیک رسید
و پائے محمدیاں بر منار بلند تر محکم افتاد

❀ मूल इल्हाम उर्दू में है। खुदा तआला इस बात से पवित्र है कि उस का कोई बेटा हो, परन्तु यह बतौर रूपक है जैसे कि खुदा तआला का यह कथन **فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ** (अलबक्रह-201) (तुम अल्लाह को वैसे ही स्मरण करो जैसे तुम अपने बापों को स्मरण करते हो) कुर्आन में बड़ी प्रचुरता में रूपक हैं। विद्वानों एवं अध्यात्म ज्ञानियों के निकट इन पर कोई आपत्ति नहीं। इसलिए यह कथन कोई अपरिचित कथन नहीं है और तू ऐसे रूपकों के उदाहरण

तू मुझ से उस अत्यन्त सानिध्य के समान है जिसे संसार नहीं जान सकता।
हम तुम्हारे मित्र और अभिभावक हैं लोक और परलोक में।
जिस से तू क्रोधित हो मैं क्रोधित होता हूँ। और जिससे तू प्रेम करे मैं भी प्रेम करता हूँ।

और जो व्यक्ति मेरे दोस्त से शत्रुता रखे मैं लड़ने के लिए उसे चेतावनी देता हूँ।
मैं इस रसूल के साथ खड़ा हूँगा और उस व्यक्ति की निन्दा करूँगा जो उसकी निन्दा करे।

और मैं तुम्हें वह वस्तु दूँगा जो सदैव रहेगी।
समृद्धि तुझे मिलेगी। इस इब्राहीम पर सलाम।^①
हमने उससे शुद्ध रूप से मित्रता की और शोक से मुक्ति प्रदान की।
हम इस बात में अद्वय हैं अतः तुम इस इब्राहीम के सदृश्य इबादत का स्थान बनाओ अर्थात् इस नमूने पर चलो।

हमने उसे क़ादियान के निकट उतारा है।
और हमने उसे सत्य के साथ उतारा है और वास्तविक आवश्यकता अनुसार वह उतरा।

ख़ुदा और उसके रसूल की भविष्यवाणी पूरी हुई और ख़ुदा का इरादा पूरा होना ही था।

उस ख़ुदा की प्रशंसा है जिसने तुझे मसीह इब्ने मरयम बनाया है।
वह अपने कार्यों के बारे में पूछा नहीं जाता और लोग पूछे जाते हैं।
ख़ुदा ने तुझे प्रत्येक चीज़ में से चुन लिया।

ख़ुदा की पुस्तकों और उन आध्यात्मिक लोगों के प्रवचनों में पाएगा जिन्हें सूफ़ी कहा जाता है।
अतः हे बुद्धिमानो ! हमारे बारे में जल्दी न करो। इसी से।

① मेरे रब्ब ने मेरा नाम इब्राहीम रखा। इसी प्रकार आदम से लेकर हज़रत ख़ातमुल मुरसलीन तथा ख़ैरुल अस्फ़िया (मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) तक जितने भी नबी हैं उन सब के नाम मुझे दिए गए। इसका वर्णन मैंने अपनी पुस्तक बराहीन अहमदिया में किया हुआ है।
सत्याभिलाषी को चाहिए कि वह उसकी ओर प्रवृत्त हो। इसी से

आकाश से कई सिंहासन उतरे किन्तु तेरा सिंहासन सबसे ऊपर बिछाया गया।^①
 वह इरादा करेंगे कि खुदा के प्रकाश को बुझा दें।
 सावधान ! अन्ततः खुदा की जमाअत ही विजयी होगी।
 कुछ भय न कर तू ही विजयी होगा।
 कुछ भय न कर। मेरे रसूल मेरे सानिध्य में किसी से नहीं डरते।
 शत्रु इरादा करेंगे कि अपने मुख की फूँकों से खुदा के प्रकाश को बुझा दें तथा
 खुदा अपने प्रकाश को पूरा करेगा यद्यपि काफ़िर घृणा ही करें।
 हम आकाश से तुझ पर कई रहस्यपूर्ण बातें उतारेंगे।
 और शत्रुओं की योजनाओं को चूर-चूर कर देंगे।
 और फिरऔन एवं हामान तथा उनकी सेनाओं को वह हाथ दिखाएंगे जिससे वे
 डरते हैं।
 अतः उनकी बातों से कोई शोक न कर तेरा खुदा उन की घात में है।
 कोई नबी नहीं भेजा गया जिसके आने के साथ खुदा ने उन लोगों को अपमापित
 नहीं किया जो उस पर ईमान नहीं लाए थे।
 हम तुझे मुक्ति देंगे, हम तुझे विजयी करेंगे।
 और मैं तुझे ऐसा सम्मान प्रदान करूंगा जिससे लोग आश्चर्य में पड़ेंगे। मैं तुझे
 आराम दूंगा और तेरा नाम नहीं मिटाऊंगा और तुझ से एक बड़ी क्रौम पैदा करूंगा
 तथा तेरे लिए हम बड़े-बड़े निशान दिखाएंगे और हम उन इमारतों को ध्वस्त कर देंगे
 जो निर्माण की जाती हैं।
 तू वह महान मसीह है जिसका समय नष्ट नहीं किया जाएगा। तुझ जैसा मोती
 नष्ट नहीं हो सकता।
 आकाश पर तेरा पद बड़ा है तथा उन लोगों की दृष्टि मैं जिन को आंखें दी गई हैं।
 खुदा प्रकृति का एक चमत्कार तेरे लिए प्रकट करेगा। उससे इन्कार करने वाले
 लोग सज्दों में गिर पड़ेंगे और अपनी ठोढ़ियों के बल गिर जाएंगे यह कहते हुए कि हे
 हमारे खुदा हमारे पाप क्षमा कर, हम ग़लती पर थे और फिर तुझे सम्बोधित करते हुए

① मूल इल्हाम उर्दू में है।

कहेंगे - ख़ुदा की क़सम ख़ुदा ने हम सबमें से तुझे चुन लिया और हमारी ग़लती थी जो हम विमुख रहे। तब कहा जाएगा कि आज जो तुम ईमान लाए तुम पर कोई डांट डपट नहीं, ख़ुदा ने तुम्हारे पाप क्षमा कर दिए और वह सब दयालुओं में सर्वाधिक दयालु है।

ख़ुदा तुझे शत्रुओं की शत्रुता से बचाएगा और उस व्यक्ति पर आक्रमण करेगा जो तुझ पर आक्रमण करता है, क्योंकि वे लोग सीमोल्लंघन कर चुके हैं और अवज्ञा के मार्गों पर कदम रखा है।

क्या ख़ुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं है।

हे पर्वतो और हे पक्षियो ! मेरे इस बन्दे के साथ तल्लीनता और गिड़गिड़ाकर मुझे स्मरण करो।

तुम सब पर उस ख़ुदा का सलाम जो दयालु है।

और हे अपराधियो ! आज तुम अलग हो जाओ।

मैं और रूहुल कुदुस तेरे साथ हैं और तेरे घर वालों के साथ।

डर मत ! मेरे सानिध्य में मेरे रसूल डरा नहीं करते।

ख़ुदा का वादा आया और पृथ्वी पर एक पांव मारा और छिद्र का सुधार किया। अतः मुबारक है वह जिसने पाया और देखा और कुछ ने हिदायत पाई और कुछ दण्ड के पात्र हो गए।

और कहेंगे कि यह ख़ुदा का चुना हुआ नहीं। तू कह दे मेरी सच्चाई पर ख़ुदा गवाही दे रहा है और वे लोग गवाही देते हैं जो ख़ुदा की किताब का ज्ञान रखते हैं।

ख़ुदा एक कठिन समय में तुम्हारी सहायता करेगा।

दयालु ख़ुदा का आदेश है उसके ख़लीफ़ा के लिए जिसकी आकाशीय बादशाहत है। उसे विशाल देश दिया जाएगा और उसके लिए ख़जाने खोले जाएंगे। यह ख़ुदा की कृपा और तुम्हारी आंखों में अद्भुत।

तू कह हे इन्कार करने वालो ! मैं सच्चों में से हूँ।

अतः तुम एक समय तक मेरे निशानों की प्रतीक्षा करो।

हम शीघ्र ही उन को अपने निशान उन के आस-पास और उनके अपने लोगों

में दिखाएंगे। उस दिन समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण होगा और खुली-खुली विजय हो जाएगी।

ख़ुदा उस दिन तुम्हारे मध्य निर्णय कर देगा।

ख़ुदा उस व्यक्ति को सफल नहीं करता जो सीमा ने निकला हुआ और बहुत झूठा है।

और हम तेरा वह भार उठा लेंगे जिसने तेरी कमर तोड़ दी और हम उस क्रौम को जड़ से काट देंगे जो एक सच बात पर ईमान नहीं लाते।

उनको कह कि तुम अपने तौर पर अपनी सफलता के लिए काम में व्यस्त रहो और मैं भी काम में व्यस्त हूँ फिर देखोगे कि किस के कार्य में स्वीकारिता पैदा होती है।

ख़ुदा उनके साथ होगा जो संयम धारण करते हैं और उनके साथ जो शुभ कर्मों में व्यस्त हैं।

क्या तुझे आने वाले भूकम्पों का समाचार नहीं मिला?

स्मरण कर जबकि पृथ्वी बड़ी सख्ती के साथ हिलाई जाएगी और पृथ्वी जो कुछ उसके अन्दर है बाहर फेंक देगी और मनुष्य कहेगा कि पृथ्वी को क्या हो गया कि यह असाधारण विपत्ति उसमें पैदा हो गई। उस दिन पृथ्वी अपनी बातें वर्णन करेगी कि उस पर क्या गुज़रा। ख़ुदा उसके लिए अपने रसूल पर वह्यी उतारेगा कि यह संकट सामने आया है।

क्या लोग विचार करते हैं कि यह भूकम्प नहीं आएगा? अवश्य आएगा और ऐसे समय आएगा कि वे बिल्कुल असावधान होंगे और प्रत्येक अपने सांसारिक कार्य में व्यस्त होगा कि भूकम्प उन्हें पकड़ लेगा।

तुझ से पूछते हैं कि क्या ऐसे भूकम्प का आना सच है?

तू कह कि ख़ुदा की क्रसम इस भूकम्प का आना सत्य है और ख़ुदा से विमुख होने वाले किसी स्थान में उससे बच नहीं सकते अर्थात् कोई स्थान उनको शरण नहीं दे सकता अपितु यदि घर के द्वार में भी खड़े हैं तो सामर्थ्य न पाएंगे कि उससे बाहर हो जाएं परन्तु अपने कर्म से।

एक चक्की चलेगी और मृत्यु उतरेगी।

जो लोग अहले किताब और मुश्किलों में से सत्य के इन्कारी हो गए वे उस महान निशान के अतिरिक्त रुकने वाले न थे।

यदि खुदा ऐसा न करता तो संसार में अंधेरा पड़ जाता।

मैं तुझे प्रलय का भूकम्प दिखाऊंगा।

खुदा तुझे प्रलय वाला भूकम्प दिखाएगा।

उस दिन कहा जाएगा कि आज किस की सत्ता है। क्या उस खुदा की सत्ता नहीं जो सब पर प्रभुत्व रखने वाला है।

मैं उस भूकम्प के निशान की चमक पांच बार दिखाऊंगा।^①

(और) यदि चाहूं तो उस दिन संसार का अन्त कर दूंगा।

मैं प्रत्येक को जो तेरे घर में होगा उसकी रक्षा करूंगा।

मैं तुझे कुदरत का वह चमत्कार दिखाऊंगा जिस से तू प्रसन्न हो जाएगा।

अपने मित्रों को कह दे कि अद्भुत से अद्भुत काम दिखाने का समय आ गया है।

मैं तुझे एक महान विजय प्रदान करूंगा जो खुली खुली विजय होगी ताकि तेरा खुदा तेरे समस्त गुनाह क्षमा कर दे जो पहले हैं और पिछले हैं।

मैं तौबा स्वीकार करने वाला हूं जो व्यक्ति तेरे पास आएगा वह जैसे मेरे पास लाएगा।

तुम पर सलाम, तुम पवित्र हो, हम तेरी प्रशंसा करते हैं और तुझ पर दरूद भेजते हैं अर्श से फर्श तक तुझ पर दरूद है।

मैं तेरे लिए उतरा हूं और तेरे लिए अपने निशान दिखाऊंगा, देश में रोग फैलेंगे और बहुत से लोग नष्ट होंगे।

अल्लाह तआला किसी क्रौम की दशा नहीं बदलता जब तक वे उस वस्तु को न बदलें जो उनके अन्दर है।

① मूल इल्हाम उर्दू भाषा में है - “चमक दिखलाऊंगा तुम को इस निशान की पांच बार अगर चाहूं तो उस दिन खातिमा।”

वह इस क्रादियान को किसी सीमा तक विपत्ति के पश्चात् अपनी शरण में ले लेगा।

यदि मुझे तेरे सम्मान का ध्यान न होता तो इस पूरे गांव को मैं तबाह कर देता।

मैं प्रत्येक को जो इस घर की चारदीवारी के अन्दर है बचा लूंगा। कोई उनमें से प्लेग या भूकम्प से नहीं मरेगा।

खुदा ऐसा नहीं कि जिन में तू है उनको अज़ाब दे।

हमारे प्रेम का घर अमन का घर है।^①

भूकम्प आया और तीव्रता से आया पृथ्वी उथल-पुथल कर दी।^②

उस दिन आकाश से एक खुला-खुला धुंआ उतरेगा।

और उस दिन पृथ्वी पर भयानक आकाल पड़ जाएगा अर्थात् भीषण दुर्भिक्ष के लक्षण प्रकट होंगे।

मैं इसके पश्चात् कि विरोधी तेरा अपमान करें तुझे सम्मान दूंगा और तेरा मान करूंगा।

वे इरादा करेंगे कि तेरा काम अपूर्ण रहे। और खुदा नहीं चाहता कि तुझे छोड़ दे जब तक तेरे समस्त कार्य पूर्ण न करे।

मैं कृपालु हूं। तुझे हर बात में सुविधा दूंगा।

प्रत्येक ओर से तुझे बरकतें दिखाऊंगा मेरी दया तेरे तीन अंगों पर उतरी है। एक आंखें तथा दो और अंग हैं अर्थात् उन्हें सुरक्षित रखूंगा।

जवानी के नूर तेरी ओर लौटेंगे।

तू अपनी एक दूर की नस्ल को देख लेगा।

हम एक लड़के की तुझे खुशखबरी देते हैं जिसके साथ सच्चाई का प्रकटन होगा जैसे आकाश से खुदा उतरेगा। हम एक लड़के की तुझे खुशखबरी देते हैं जो तेरा पोता होगा।

खुदा ने प्रत्येक आरोप से तुझे पवित्र किया और तुझ से सहमति की और तुझे वे

① असल इल्हाम फ़ारसी भाषा में है *امن است در مکان محبت سرائے*।

② असल इल्हाम उर्दू भाषा में है जो ऊपर दे दिया गया है।

अध्यात्म ज्ञान सिखाए जिनका तुझे ज्ञान न था।

वह करीम है, वह तेरे आगे-आगे चला और वह तेरे शत्रुओं का शत्रु हुआ। और वे कहेंगे कि यह तो एक बनावट है।

हे आरोप लगाने वाले क्या तू नहीं जानता कि ख़ुदा प्रत्येक बात पर समर्थ है। अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपनी रूह डालता है अर्थात् नुबुव्वत का पद उसे प्रदान करता है।

यह तो समस्त बरकत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से है। अतः बहुत बरकतों वाला है जिस ने इस बन्दे को शिक्षा दी और बहुत बरकत वाला है वह जिसने शिक्षा पाई।

“ख़ुदा की चाहत और ख़ुदा की मुहर ने कितना बड़ा काम किया।”^①

मैं तेरे साथ हूँ और तेरे घर वालों के साथ और हर उस व्यक्ति के साथ जो तुझ से प्रेम करता है।

“तेरे लिए मेरा नाम चमका”^②

और “तुझ पर अध्यात्म जगत खोला गया”^③

आज तेरी दृष्टि तेज़ है।

ख़ुदा तेरी आयु लम्बी करेगा।

अस्सी वर्ष या इस पर पांच चार अधिक या पांच चार कम।

(उर्दू इल्हाम) मैं तुझे बहुत बरकत दूंगा, यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे।

(उर्दू इल्हाम) “तेरे लिए मेरा नाम चमका”

मैं तुझे इन निशानों के अतिरिक्त जो तुझे दिखा चुका हूँ पचास या साठ निशान और दिखाऊंगा।

ख़ुदा के मान्य लोगों में स्वीकारिता के नमूने और लक्षण होते हैं और उनका

① असल इल्हाम उर्दू भाषा में है।

② असल इल्हाम उर्दू भाषा में है।

③ असल इल्हाम उर्दू भाषा में है।

सम्मान बादशाह और बड़े प्रतापी करते हैं और वे अमन के शहजादे कहलाते हैं। तेरे आगे फ़रिश्तों की तलवार खिंची हुई है (हे शत्रु !) परन्तु तूने समय को न पहचाना, न देखा, न जाना। ख़ुदा के ब्राह्मण अवतार से मुकाबला करना अच्छा नहीं।

हे ख़ुदा सच्चे और झूठे में अन्तर करके दिखा। तू प्रत्येक सुधारक और सच्चे को जानता है।

हे ख़ुदा प्रत्येक वस्तु तेरी सेवक है।

हे मेरे ख़ुदा ! उद्दण्ड की उद्दण्डता से मुझे सुरक्षित रख और मेरी सहायता कर तथा मुझ पर दया कर।

हे शत्रु ! तू जो तबाह करने का इरादा रखता है ख़ुदा तुझे तबाह करे और तेरी बुराई से मुझे सुरक्षित रखे। भूकम्प आया। उठो नमाज़ें पढ़ें और प्रलय का नमूना देखें।

ख़ुदा तुझे विजयी करेगा और लोगों में तेरी प्रशंसा फैलाएगा।

यदि मैं तुझे पैदा न करता तो आकाशों को पैदा न करता।

मुझ से मांगों मैं तुम्हें दूंगा।

(फ़ारसी इल्हाम) तेरा हाथ है और तेरी दुआ और ख़ुदा की ओर से दया है।^①

भूकम्प का धक्का, जिससे इमारत का एक भाग मिट जाएगा। स्थायी निवास-स्थान तथा अस्थायी निवास-स्थान सब मिट जाएंगे।

इसके पश्चात् एक और भूकम्प आएगा।

②“ फिर बहार आई ख़ुदा की बात फिर पूरी हुई”

③“ फिर बहार आई तो आए सल्ज के आने के दिन” (बहार जब दोबारा आएगी तो फिर एक और भूकम्प आएगा फिर जब तीसरी बार बहार आएगी तो उस समय संतोष के दिन आ जाएंगे तथा उस समय तक ख़ुदा कई निशान प्रकट करेगा)

हे प्रतिष्ठावान ख़ुदा ! भूकम्प के प्रकटन में कुछ विलम्ब कर दे।

ख़ुदा प्रलयरूपी भूकम्प को प्रकट करने में एक निश्चित समय तक विलम्ब कर देगा। तब तू एक अद्भुत सहायता देखेगा।

① असल इल्हाम फ़ारसी भाषा में है। دست تو دعای تر رحم ز خدا

② ③ यह लिपिक की भूल है। ये दोनों इल्हाम उर्दू में हैं जिन का अरबी अनुवाद दिया गया है।

और तेरे विरोधी ठोढ़ियों के बल गिरेंगे यह कहते हुए कि हे ख़ुदा ! हमें क्षमा कर और हमारे पाप क्षमा कर कि हम ग़लती पर थे तथा पृथ्वी कहेगी कि हे ख़ुदा के नबी मैं तुझे नहीं पहचानती थी।

हे ग़लती करने वालो ! आज तुम पर कोई डांट-डपट नहीं। ख़ुदा तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और वह सर्वाधिक दयावान है।

लोगों के साथ नमी और आदर से व्यवहार करो। तू मुझ से मूसा के स्थान पर है। तुझ पर मूसा के युग की भांति एक युग आएगा। हमने तुम्हारी ओर एक रसूल भेजा है उसी रसूल के समान जो फिरऔन की ओर भेजा गया था।

(उर्दू इल्हाम) “आकाश से बहुत दूध उतरा है। सुरक्षित रखो।”^①

मैंने तुझे चुन लिया और अपनाया।

(उर्दू इल्हाम) “तेरे प्रसन्न जीवन का सामान हो गया।”^②

ख़ुदा प्रत्येक वस्तु से उत्तम है मेरे सानिध्य में एक नेकी है जो एक पर्वत से अधिक है।

(उर्दू इल्हाम) मेरे बहुत से सलाम तुझ पर हों।^③

हमने प्रचुरता के साथ तुझे दिया है।

ख़ुदा उनके साथ है जो सद्मार्ग धारण करते हैं। और जो सच्चे हैं। ख़ुदा उनके साथ है जो संयम धारण करते हैं और सदाचारी हैं।

ख़ुदा ने इरादा किया है कि तुझे वह स्थान प्रदान करे जिसमें तू प्रशंसा किया जाएगा।

(उर्दू इल्हाम) “दो निशान प्रकट होंगे”^④

और हे अपराधियो ! आज तुम पृथक हो जाओ।

ख़ुदा के निशानों की बिजली उनकी आंखें उचक कर ले जाएगी। यह वही बात

① असल इल्हाम उर्दू भाषा में है जिसके शब्द दे दिए गए हैं।

② असल इल्हाम उर्दू भाषा में है जिसके शब्द दे दिए गए हैं।

③ असल इल्हाम उर्दू भाषा में है जिसके शब्द दे दिए गए हैं।

④ असल इल्हाम उर्दू भाषा में है जिसके शब्द दे दिए गए हैं।

हैं जिसके लिए (तुम) जल्दी करते थे।

हे अहमद ! तेरे होठों पर दया जारी है।

तेरा कलाम खुदा की ओर से सुबोध किया गया है।

(फ़ारसी इल्हाम का अनुवाद) तेरे कलाम में एक चीज़ है जिसमें कवियों को हस्तक्षेप नहीं।^①

हे मेरे खुदा ! मुझे वह सिखा जो तेरे निकट उत्तम है।

खुदा तुझे शत्रुओं से बचाएगा और आक्रमणकारियों पर आक्रमण कर देगा। उन्होंने उनके पास जो कुछ शस्त्र थे सब प्रकट कर दिए।

मैं मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी को अन्तिम समय^② में सूचना दे दूंगा कि तू सत्य पर नहीं है।

खुदा बहुत नर्मी करने वाला और दयालु है। हमने तेरे लिए लोहे को नर्म कर दिया। मैं सेनाओं के साथ अचानक आऊंगा। मैं रसूल के साथ होकर उत्तर दूंगा। अपने इरादे को कभी छोड़^③ भी दूंगा और कभी इरादा पूरा करूंगा।

और कहेंगे कि तुझे यह पद कहां से प्राप्त हुआ? कह अद्भुत चमत्कारों वाले खुदा से।

मेरे पास आयल^④ आया और उसने मुझे चुन लिया और अपनी उंगली को

① असल इल्हाम फ़ारसी भाषा में है شعراء را در آن دخل نیست

② यह वह्यी मेरे रब्ब ने एक ऐसे व्यक्ति के बारे में मुझे की जिसने मेरा विरोध किया और मुझे काफ़िर ठहराया वह हिन्दुस्तान के उलेमा में से है जिसका नाम अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी है। इसी से।

③ पवित्र खुदा की हस्ती ग़लती से शुद्ध है इसलिए उसका कथन اخطی मात्र रूपक के तौर पर आया है। जैसा कि हदीसों में अल्लाह तआला के बारे में تردّد का शब्द प्रयोग किया गया है। इसी से।

④ 'अलआयल' से अभिप्राय जिब्राईल अलैहिस्सलाम हैं और मेरे रब्ब ने मुझे इसे इसी प्रकार समझाया है जब الاول और الایاب (बार-बार लौटकर आना) जिब्राईल

घुमाया और यह संकेत किया कि खुदा का वादा आ गया। अतः मुबारक वह जो उसे पाए और देखे।

भांति-भांति के रोग फैलाए जाएंगे और कई विपत्तियों से प्राणों की क्षति होगी।

मैं अपने रसूल के साथ खड़ा हूंगा। मैं इफ़्तार करूंगा और रोज़ा भी रखूंगा^① और एक निर्धारित समय तक मैं इस पृथ्वी से पृथक नहीं हूंगा।

और तेरे लिए अपने आने के प्रकाश प्रदान करूंगा तथा तेरी ओर का संकल्प करूंगा।

और तुझे वह चीज़ दूंगा जो तेरे साथ हमेशा रहेगी।

हम पृथ्वी के वारिस होंगे और किनारों से उसे खाते आएंगे। कई लोग क़ब्रों की ओर स्थानांतरित होंगे।

उस दिन खुदा की ओर से खुली-खुली विजय होगी।

मेरा रब्ब ज़बरदस्त कुदरत वाला है। और वह दृढ़ और विजयी है। उस का क्रोध पृथ्वी पर उतरेगा।

मैं सच्चा हूँ, मैं सच्चा हूँ और खुदा मेरी गवाही देगा।

(उर्दू इल्हाम) “हे अजर अमर खुदा ! बेड़ियों को पकड़ कर आ।”^②

पृथ्वी बावजूद विस्तृत होने के मुझ पर तंग हो गई है।

हे मेरे खुदा मैं पराजित हूँ। शत्रुओं से मेरा प्रतिकार ले। अतः उन्हें पीस डाल।

(उर्दू इल्हाम) “जीवन के फैशन से दूर जा पड़े हैं”^③

अलैहिस्सलाम की विशेषताओं में से है तो खुदा के कलाम में उसे **آل** के नाम से पुकारा गया। इसी से।

① इसमें ताऊन के अज़ाब की ओर संकेत है कि वह अपने एक समय तक प्रकट होगा फिर उसमें कुछ समय के लिए विलम्ब होगा इस प्रकार जैसे अल्लाह रोज़ा इफ़्तार भी करता है और रोज़ा रखता भी है। इसी से।

② देखिए तज़किरह पृष्ठ- 382, 560

③ देखिए तज़किरह पृष्ठ - 426, 560

तू जिस बात का इरादा करता है वह तेरे आदेश से तुरन्त हो जाती है।

(उर्दू इल्हाम^①) हे मेरे बन्दे ! चूँकि तू मेरे पास बार-बार आता है इसलिए अब तू स्वयं देख ले कि तुझ पर दया दृष्टि हुई या नहीं।

हमने चौदह चौपायों को मार दिया क्योंकि वह अवज्ञा में सीमा पार कर गए थे।

(फ़ारसी इल्हाम) अनाड़ी का अंजाम नर्क है। अनाड़ी का अन्त अच्छा बहुत कम होता है।^②

“मेरी विजय हुई मेरा प्रभुत्व हुआ”^③

मैं ख़ुदा की ओर से ख़लीफ़ा किया गया हूँ अतः तुम मेरी ओर आ जाओ। मैं ख़ुदा की चरागाह हूँ।

और मुझे खोए हुए यूसुफ़ की सुगंध आ रही है यदि तुम यह न कहो कि यह व्यक्ति बहक रहा है।

क्या तूने नहीं देखा कि तेरे रब्ब ने अस्हाबे फ़ील के साथ क्या किया। क्या उसने उनके छल को उलटा कर उन्हीं पर नहीं मारा।

हमने तुझे क्षमा किया।

ख़ुदा ने बद्र में अर्थात् चौदहवीं सदी में तुम्हें अपमान में पाकर तुम्हारी सहायता की।

और कहेंगे कि यह तो एक बनावट है उनको कह दे कि यदि यह कारोबार ख़ुदा के अतिरिक्त किसी और का होता तो इसमें तुम बहुत मतभेद देखते।

① असल इल्हाम फ़ारसी भाषा में है। लिपिक से भूल से उर्दू लिखा गया है इल्हाम के शब्द ये हैं (देखिए तज़किरह पृष्ठ - 560) *تو در منزل ما چو بار بار آئی - خدا ابر رحمت بارید یانی* (चतुर्थ संस्करण प्रकाशित 2004 ई.)

② असल इल्हाम फ़ारसी भाषा में है ऊपर अनुवाद दे दिया गया है। फ़ारसी इल्हाम के शब्द ये हैं *سر انجام جاہل جہنم بود کہ جاہل کو عاقبت کم بود*

③ असल में यह उर्दू इल्हाम है जिसका अरबी में अनुवाद किया गया है। उर्दू इल्हाम के शब्द ऊपर दिए गए हैं (देखिए तज़किरह पृष्ठ 414, चतुर्थ संस्करण)

उनको कह कि मेरे पास ख़ुदा की गवाही है। अतः क्या तुम ईमान लाओगे या नहीं।

नबियों का चन्द्रमा आएगा और तेरा काम पूरा हो जाएगा। और आज हे अपराधियो ! तुम अलग हो जाओ।

(उर्दू इल्हाम) “भूकम्प आया और तीव्रता से आया। पृथ्वी उथल-पुथल कर दी।”^①

यह वही वादा है जिसकी तुम जल्दी करते थे।

मैं प्रत्येक को जो इस घर में है उस भूकम्प से बचा लूंगा। नौका है और आराम है। मैं तेरे साथ और तेरे अनुयायियों के साथ हूँ मैं वही इरादा करूंगा जो तुम्हारा इरादा है।

उस ख़ुदा की प्रशंसा है जिसने दामादी और वंश की दृष्टि से तुझ पर उपकार किया। उस ख़ुदा की प्रशंसा है जिसने मेरा शोक दूर किया और मुझे वह चीज़ दी जो इस युग के लोगों में से किसी को नहीं दी गई।

हे सरदार ! तू ख़ुदा का भेजा हुआ है सद्मार्ग पर, उस ख़ुदा की ओर से जो विजयी और दया करने वाला है। मैंने इरादा किया कि इस युग में अपना ख़लीफ़ा नियुक्त करूँ। अतः मैंने इस आदम को पैदा किया, वह धर्म को जीवित करेगा और शरीअत को स्थापित करेगा।

(फ़ारसी इल्हाम) जब मसीहुस्सुलतान का युग आरंभ किया गया तो मुसलमानों को जो केवल नाम के मुसलमान थे नए सिरे से मुसलमान बनाने लगे।^②

आकाश और पृथ्वी एक गठरी के समान बंधे हुए थे हमने उन दोनों को खोल दिया अर्थात् पृथ्वी ने अपनी पूर्ण शक्ति प्रदर्शित की और आकाश ने भी।

अब तेरी मृत्यु का समय निकट आ गया। अर्श वाला तुझे बुलाता है और हम तेरे

① असल में उर्दू इल्हाम है जो दे दिया गया है

② असल में यह फ़ारसी इल्हाम है जिसके शब्द ये हैं -

چو دَور خسروی آغاز کردند
مسلمان را مسلمان باز کردند

लिए कोई अपमानित करने वाली बात नहीं छोड़ेंगे।

तेरे रब्ब का वादा कम रह गया है और हम तेरे लिए कोई अपमानजनक बात शेष नहीं छोड़ेंगे।

(उर्दू इल्हाम) “बहुत थोड़े दिन रह गए हैं, उस दिन खुदा की ओर से सब पर उदासीनता छा जाएगी। यह होगा, यह होगा फिर तेरी घटना होगी। प्रकृति के समस्त चमत्कार प्रदर्शित करने के पश्चात् तुम्हारी घटना आएगी।”^①

तेरा समय आ गया है और हम तेरे लिए प्रकाशमान निशान छोड़ेंगे।

तेरा समय आ गया है और हम तेरे लिए खुले निशान शेष रखेंगे।

हे मेरे खुदा ! इस्लाम पर मुझे मृत्यु दे और नेक लोगों के साथ मुझे मिला दे।
आमीन



① वास्तव में उर्दू इल्हाम है। इल्हाम के शब्द ऊपर दे दिए गए हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

عِلْمِي مِنَ الرَّحْمَنِ ذِي الْأَلَاءِ بِاللَّهِ حُزْتُ الْفَضْلَ لَا بِدَهَاءِ
मेरा ज्ञान दयालु ख़ुदा की ओर से है जो नेमतों वाला है। मैंने ख़ुदा के द्वारा उसकी कृपा को प्राप्त किया है न कि बुद्धि द्वारा।

كَيْفَ الْوُصُولُ إِلَى مَدَارِجِ شُكْرِهِ نَشَى عَلَيْهِ وَلَيْسَ حَوْلَ ثَنَائِي
हम उसका धन्यवाद कैसे अदा कर सकते हैं कि हम उसकी प्रशंसा करते हैं और प्रशंसा की शक्ति नहीं।

اللَّهُ مَوْلَانَا وَكَافَلَ أَمْرَنَا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا وَبَعْدَ فَنَاءِ
ख़ुदा हमारा स्वामी है और हमारे कार्य का अभिभावक है इस संसार में भी और मृत्योपरान्त भी।

لَوْلَا عَنَائَتُهُ بَزَمْنِ تَطَلُّي كَادَتْ تُعَفِّينِي سَيُولُ بَكَائِي
यदि मेरी निरन्तर जिज्ञासा के दौर में उसकी कृपा न होती तो निकट था कि रोने और गिड़गिड़ाने की बाढ़ें मुझे मिटा देतीं।

بَشَرَى لَنَا إِنَّا وَجَدْنَا مُوْنَسًا رَبًّا رَحِيمًا كَشَفَتْ الْغَمَاءِ
हमारे लिए खुशखबरी है कि हमने प्रेम करने वाला हमदर्द पा लिया है जो दयालु रब्ब है और दुःख तथा संकट का दूर करने वाला है।

أُعْطِيتُ مِنَ الْإِلْفِ مَعَارِفَ لُبِّهَا أُنْزِلْتُ مِنْ حِبِّ بَدَارِ ضِيَاءِ
मुझे प्रियतम की ओर से अध्यात्म ज्ञानों का मग़ज़ (सार) दिया गया है और मैं अपने प्रियतम की ओर से प्रकाश स्थल पर उतारा गया हूँ।

نَتَلَوُضِيَاءَ الْحَقِّ عِنْدَ وَضُوْحِهِ لَسْنَا بِمُبْتَاعِ الدُّجَى بِرَاءِ
हम सत्य के प्रकाश का उसके प्रकट होते ही अनुसरण करते हैं। चन्द्रमा उदय होने के पश्चात् हम अन्धकार के क्रेता नहीं।

نَفْسِي نَأَتْ عَنْ كُلِّ مَا هُوَ مَظْلَمٌ فَأَنْخْتُ عِنْدَ مَنْوَرِي وَجُنَائِي

नोट:- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह क़सीदा अपनी पुस्तक अंजाम-ए-आथम रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-11 पृष्ठ 266-282 में दर्ज फ़रमाया है। और फिर अलहस्तफ़ता में कुछ पद्यों के परिवर्तन के साथ दोबार दर्ज फ़रमाया है।

मेरा हृदय हर अन्धकारमय वस्तु से दूर है। अतः मैंने अपनी शक्तिशाली ऊंटनी को अपने प्रकाशित करने वाले के पास बैठा दिया।

غَلَبْتُ عَلَى نَفْسِي مَحَبَّةً وَجْهَهُ حَتَّى رَمَيْتُ النَفْسَ بِالْإِغَاءِ
मेरे दिल में उस हस्ती (अल्लाह) का प्रेम भर गया है यहां तक कि मैंने अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं को बेकार करके निकाल फेंका।

لَمَّا رَأَيْتُ النَفْسَ سَدَّتْ مُهْجَتِي أَلْقَيْتُهَا كَالْمَيْتِ فِي الْبَيْدَاءِ
और जब मैंने देखा कि दिल मेरी आत्मा के मार्ग में बाधक है तो मैंने उसे इस प्रकार फेंक दिया जैसा कि कोई मुर्दा वन में (पड़ा हो)।

اللَّهُ كَهْفُ الْأَرْضِ وَالْخُضْرَاءِ رَبُّ رَحِيمٌ مُلْجَأُ الْأَشْيَاءِ
अल्लाह ही पृथ्वी और आकाश की शरण है। वह दयालु भी है और प्रतिपालक भी है और समस्त वस्तुओं की शरण स्थली।

بَرٌّ عَطُوفٌ مَأْمَنُ الْغُرَمَاءِ ذُو رَحْمَةٍ وَ تَبَرُّعٍ وَ عَطَاءِ
वह सद्व्यवहार करने वाला मेहरबान, संकटग्रस्त लोगों के लिए शान्ति-स्थल। वह दया, उपकार और क्षमा करने वाला है।

أَحَدٌ قَدِيمٌ قَائِمٌ بِوُجُودِهِ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَا شَرَكَاءَ
वह अकेला, अनादि तथा बिना सहारे के स्वयं स्थापित और अनश्वर है। न उसने कोई बेटा बनाया है और न ही (अपने) भागीदार।

وَلَهُ التَّقَرُّدُ فِي الْمَحَامِدِ كُلِّهَا وَلَهُ عِلَاءٌ فَوْقَ كُلِّ عِلَاءٍ
और उसे समस्त विशेषताओं में एकत्व प्राप्त है तथा उसे प्रत्येक ऊंचाई से बढ़कर ऊंचाई प्राप्त है।

الْعَاقِلُونَ بِعَالَمِينَ يَرُونَهُ وَالْعَارِفُونَ بِهِ رَأَوْا الْأَشْيَاءَ
बुद्धिमान लोग तो सांसारिक माध्यमों के द्वारा उसे देखते हैं और आध्यात्म ज्ञान ने उसके माध्यम से वस्तुओं को देखा है।

هَذَا هُوَ الْمَعْبُودُ حَقًّا لِلْوَرَى فَرْدٌ وَحِيدٌ مَبْدَأُ الْأَضْوَاءِ
यही सृष्टि के लिए सच्चा उपास्य है। वह एक, अकेला और अद्वितीय है। वह सब प्रकाशों का स्रोत है।

هَذَا هُوَ الْحَبُّ الَّذِي آثَرْتُهُ رَبُّ الْوَرَى عَيْنُ الْهَدْيِ مُوَلَّائِي

यही वह प्रियतम है जिसे मैंने (सब पर) प्राथमिकता दी है। सृष्टि का प्रतिपालक, हिदायत का उदगम और मेरा स्वामी है।

هَاجَتْ غَمَامَةً حُبَّهُ فَكَأَنَّهُا رَكَبَ عَلَى عُجْبُورَةِ الْكَدَوَاءِ
उसके प्रेम का बादल उठा। अतः जैसे वह बादल उत्तरी वायु की तीव्रगामी ऊंटनी पर सवारों के समान है।

نَدَعُوهُ فِي وَقْتِ الْكَرُوبِ تَضَرَّعًا نَرْضَى بِهِ فِي شِدَّةٍ وَ رَخَاءٍ
बेचैनी के समय हम उसे विनयपूर्वक पुकारते हैं और सख्ती तथा नमी में उसी पर प्रसन्न हैं।

حَوَجَاءُ أَلْفَتِهِ أَثَارَتِ حُرَّتِي فَفَدَى جَنَانِي صَوْلَةَ الْحَوَجَاءِ*
उस के प्रेम के गोले ने मेरी धूल उड़ा दी। अतः मेरा हृदय उस गोले पर मुग्ध हो गया।

أَعْطَى فَمَا بَقِيَتْ أَمَانِي بَعْدَهُ غَمَرَتْ أَيْادِي الْفَيْضِ وَجَهَ رَجَائِي
उसने मुझे इतना दिया कि उसके पश्चात् कोई इच्छा शेष नहीं रही। उसके वरदान रूपी उपकार (की प्रचुरता) मेरी आशा की अन्तिम बुलन्दी पर भी छा गई।

إِنَّا غُمَسْنَا مِنْ عُنَايَةِ رَبِّنَا فِي النُّورِ بَعْدَ تَمَرُّقِ الْأَهْوَاءِ
लोभ एवं लालच के टुकड़े-टुकड़े हो जाने के बाद हम अपने रब्ब की कृपा से प्रकाश में ओत-प्रोत किए गए हैं।

إِنَّ الْمَحَبَّةَ خُيِّرَتْ فِي مُهْجَتِي وَأَرَى الْوَدَادَ يَلُوحُ فِي أَهْبَائِي
निश्चय ही प्रेम मेरी आत्मा में भर दिया गया है और मैं देखता हूँ कि प्रेम मेरे अस्तित्व में कण-कण में चमक रहा है।

إِنِّي شَرِبْتُ كَوُوسَ مَوْتٍ لِلْهُدَى فَوَجَدْتُ بَعْدَ الْمَوْتِ عَيْنَ بَقَاءٍ
मैंने हिदायत (सन्मार्ग) के लिए मृत्यु के प्याले लिए। अतः मृत्यु के पश्चात् मैंने अनश्वरता का झरना पा लिया।

إِنِّي أَزْبْتُ مِنَ الْوَدَادِ وَنَارِهِ فَأَرَى الْغُرُوبَ يَسِيلُ مِنْ إِهْرَائِي
मैं प्रेम और उस की अग्नि से पिघलाया गया हूँ और मैं देख रहा हूँ कि मेरे आंसू पिघल जाने के कारण जारी हैं।

الدمع يجرى كالسيول صابئةً والقلب يُشَوِّى من خيال لقاء
 प्रेम के कारण आंसू सैलाब के समान जारी हैं और हृदय मुलाक्रात के विचार से
 भुना हुआ है।

وأرى الوداد أنارَ باطنَ باطني وأرى التعشُّقَ لآخٍ في سيمائي
 और मैं देखता हूँ कि प्रेम ने मेरे अन्तःकरण की गहराई को प्रकाशित कर दिया है
 और मैं देखता हूँ कि प्रेम मेरे चेहरे पर प्रकट है।

الخلقُ يَبْغُونَ اللَّذائَةَ فِي الْهَوَىٰ وَوَجَدْتُهَا فِي حُرْقَةٍ وَ صَلَاءٍ
 लोग तो लोभ-लालच में आनन्द की खोज करते हैं और मैंने उसे तपन और जलने
 में पाया है।

الله مقصدُ مُهْجَتِي وَ أَرِيدُهُ فِي كُلِّ رَشْحِ الْقَلَمِ وَ الْإِمْلَاءِ
 अल्लाह मेरे प्राण का अभीष्ट है और मैं उसे चाहता हूँ, कलम की हर (स्याही) बूंद
 और हर इबारत में।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اشْرَبُوا مِنْ قُرْبَتِي قَدْ مُلِئْتُ مِنْ نَوْرِ الْمَفِيزِ سِقَائِي
 हे लोगो ! मेरे मुश्कीज़ से पियो, क्योंकि वास्तविक वदान्य के प्रकाश से मेरा
 मुश्कीज़ा भरा गया है।

قَوْمٌ أَطَاعُونِي بِصَدَقِ طَوِيَّةٍ وَالْآخَرُونَ تَكَبَّرُوا لَغَطَاءِ
 एक क्रौम ने सच्ची नीयत से मेरा अनुकरण किया है और दूसरों ने सांसारिक इच्छाओं
 के पर्दे के कारण अहंकार किया है।

حَسَدُوا فَسَبُّوا حَاسِدِينَ وَلَمِيزُوا حَسَدْتُ لِنَائِمٍ كُلِّ ذِي نِعْمَةٍ
 उन्होंने द्वेष किया। अतः द्वेष करते हुए गालियां दीं और ऐसा ही होता रहा है कि
 कमीनों ने हर ने'मत वाले से द्वेष किया है।

مَنْ أَنْكَرَ الْحَقَّ الْمُبِينُ فَإِنَّهُ كَلْبٌ وَعَقَبَ الْكَلْبُ سِرْبُ ضِرَاءِ
 जिसने खुले-खुले सच का इन्कार किया तो वह कुत्ता है ऐसी हालत में है कि उस
 कुत्ते के पीछे शिकारी कुत्तों का एक गिरोह चला आ रहा है।

أَذُوا وَسَبُّونِي وَقَالُوا كَافِرٌ فَالْيَوْمَ نَقْضِي دَيْنَهُمْ بَرَبَاءِ
 उन्होंने मुझे कष्ट दिया, गालियां दीं और कहा कि यह काफ़िर है। आज हम उनका
 कर्ज़ा सूद समेत अदा कर रहे हैं।

والله نحن المسلمون بفضلِهِ لَكِنْ نَزَى جَهْلُ عَلَى الْعُلَمَاءِ
ख़ुदा की क्रसम ! हम उसकी कृपा से मुसलमान हैं परन्तु असभ्यता उलेमा के सिर
पर सवार हो गई है।

نَخْتَارُ آثَارَ النَّبِيِّ وَأَمْرَهُ نَقْفُو كِتَابَ اللَّهِ لَا الْآرَاءِ
हम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पड़चिन्हों और आपके आदेश का
पालन कर रहे हैं हम ख़ुदा की किताब का अनुसरण करते हैं न कि अन्य रायों का।
إِنَّا بَرَاءٌ فِي مَنَاجِ دِينِهِ مِنْ كُلِّ زَنْدِيقٍ عَدُوٍّ دَهَاءِ
हम उसके धर्म के मार्गों में प्रत्येक नास्तिक और बुद्धि के शत्रु से विमुख हैं।

إِنَّا نَطِيعُ مُحَمَّدًا خَيْرَ الْوَرَى نُورُ الْمُهَيْمِنِ دَافِعُ الظُّلَمَاءِ
हम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुसरण करते हैं जो सृष्टि में सर्वोत्तम
हैं ख़ुदा का प्रकाश हैं और अंधकारों को दूर करने वाले हैं।

أَفَنَحْنُ مِنْ قَوْمِ النَّصَارَى أَكْفَرُ وَيْلٌ لَكُمْ وَلِهَذِهِ الْآرَاءِ
तो क्या हम नसारा क्रौम से अधिक काफ़िर हैं। खेद है तुम पर और तुम्हारे इन
विचारों पर।

يَا شَيْخَ أَرْضِ الْخَبْثِ أَرْضِ بَطَالَةٍ كَفَرْتَنِي بِالْبَغْضِ وَالشُّحْنَاءِ
हे बटाला की कुटिल पृथ्वी के शैख ! तूने द्वेष और शत्रुता से मुझे काफ़िर कहा है।
أَذِيئَنِي فَأَخْشَ الْعَوَاقِبَ بَعْدَهُ وَالتَّارَ قَدْ تَبَدُّو مِنْ الْإِيرَاءِ
तूने मुझे कष्ट दिया है। अतः अब तू इसके बाद अंजाम से डर और अग्नि सुलगाने
से प्रायः भड़क ही उठती है।

تَبَّتْ يَدَاكَ تَبَعْتَ كُلَّ مَفَاسِدٍ زَلَّتْ بِكَ الْقَدَمَانِ فِي الْأَنْحَاءِ
तेरे दोनों हाथ टूट जाएं। तूने हर प्रकार के उपद्रव का अनुसरण किया विभिन्न क्षेत्रों
में तेरे कदम डगमगाए।

أَوْدَى شَبَابُكَ وَالنَّوَابِ أَخْرَفْتُ فَالْوَقْتُ وَقْتُ الْعَجْزِ لَا الْخِيَلَاءِ
तेरी जवानी व्यर्थ हो गई और घटनाओं ने तेरी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है अतः यह समय
विनम्रता का है न कि अहंकार का।

تَبَغَى تَبَارَى وَالِدَوَائِرِ مِنْ هَوَى فَعَلَيْكَ يَسْقُطُ حَجَرٌ كُلُّ بَلَاءِ
तू नफ़्स की इच्छा से मेरी तबाही और मेरे लिए विपत्तियां चाहता है। अतः तुझ पर
हर संकट का पत्थर पड़ रहा है और पड़ेगा।

إِنِّي مِنَ الْمَوْلَى فَكَيْفَ أُتَبَّرُ فَاحْشِ الْغُيُورَ وَلَا تَمُتْ بِجَفَاءٍ
मैं तो खुदा की ओर से हूँ। अतः मैं किस प्रकार तबाह हो सकता हूँ तू स्वाभिमानी
खुदा से डर और (अपने) जुल्म से तबाह न हो।

أَفْتَضِرِبَنَّ عَلَى الصَّفَاةِ زُجَاجَةً لَا تَنْتَهَرُ* وَاطْلُبْ طَرِيقَ بَقَاءٍ
क्या तू पत्थर पर शीशे को मार रहा है? आत्महत्या न कर और जीवन का मार्ग खोज।
أَتُرَكُّ سَبِيلَ شَرَارَةٍ وَخَبَائِثٍ هَوْنٌ عَلَيْكَ وَلَا تَمُتْ بَعْنَاءٍ
तू बुराई और कुटिलता का मार्ग त्याग दे। होश से काम ले और कठिन परिश्रम से
तबाह न हो।

تُبِ أَيُّهَا الْغَالِي وَتَأْتِي سَاعَةٌ تَمْسِي تَغُصُّ يَمِينُكَ الشَّلَاءَ
हे अतिशयोक्ति करने वाले ! तौबा कर। जबकि वह समय आ रहा है कि तू अपने
लक्वा ग्रस्त दाएं हाथ को दांतों से काटने लगेगा।

يَا لَيْتَ مَا وَلَدْتُ كَمِثْلِكَ حَامِلٌ خَفَّاشَ ظُلُمَاتٍ عَدُوٌّ ضِيَاءٍ
काश कि कोई मां तेरे समान अंधेरों के चमगादड़ और प्रकाश के शत्रु को जन्म न
देती।

تَسْعَى لِتَأْخُذَنِي الْحَكُومَةُ مُجْرَمًا وَيْلٌ لِّكَ مَزُورٌ وَشَاءَ
तू प्रयत्न कर रहा है कि सरकार मुझे अपराधी समझ कर गिरफ्तार कर ले। हर कपटी
और चुगली करने वाले पर फटकार है।

لَوْ كُنْتُ أُعْطِيتُ الْوِلَايَةَ لَعَفْتُهُ مَا لِي وَدُنْيَاكُمْ؟ كَفَانِ كِسَائِي
यदि मुझे शासन भी दिया जाता तो मैं उसे पसन्द न करता। मेरा तुम्हारे संसार से क्या
संबंध है? मेरे लिए तो मेरी कमली ही पर्याप्त है।

مَتَنَا بِمَوْتٍ لَا يَرَاهُ عَدُوُّنَا بَعْدَتْ جَنَازَتُنَا مِنَ الْأَحْيَاءِ
हम तो ऐसी मृत्यु मर गए हैं जिसकी वास्तविकता हमारा शत्रु नहीं जानता और हमारा
जनाजा जीवितों (की दृष्टि) से दूर पड़ा हुआ है।

تُغَرِّى بِقَوْلٍ مُفْتَرًى وَتَخَرِّصُ حَمَامَنَا الظَّانِينَ كَالْجُهْلَاءِ؟
तू झूठ गढ़ने और अटकलों से उकसा रहा है हमारे उन शासकों को जो अपरिचितों
के समान कुधारणा रखते हैं।

يَا أَيُّهَا الْأَعْمَى أَتُنْكِرُ قَادِرًا يَحْمِي أَحَبَّتَهُ مِنَ الْإِبْوَاءِ

हे अन्धे ! क्या तू उस सामर्थ्यवान का इन्कार करता है जो अपने पास स्थान देकर अपने प्रेमियों की सहायता करता है।

أَنسَيْتَ كَيْفَ حَمَى الْقَدِيرُ كَلِيمَهُ أَوْ مَا سَمِعْتَ مَالَ شَمْسٍ جِرَاءٍ
क्या तू भूल गया है कि किस प्रकार सामर्थ्यवान ख़ुदा ने अपने मूसा कलीम की सहायता की और क्या तूने ग़ारे हिरा के सूर्य के अंजाम को नहीं सुना?

نَحْوَالسَّمَاءِ وَأَمْرَهَا لَا تَنْظُرُنَّ فِي الْأَرْضِ دُسْتُ عَيْنُكَ الْعُمَيَّاءِ
तेरी दृष्टि आकाश और उसके आदेश की ओर कदापि नहीं जाएगी क्योंकि तेरी अंधी आंख तो पृथ्वी में धंसी हुई है।

غَرَّتْكَ أَقْوَالٌ بِغَيْرِ بَصِيرَةٍ سَتَرْتُ عَلَيْكَ حَقِيقَةَ الْأَنْبَاءِ
तुझे प्रतिभा न होने के कारण कुछ बातों ने धोखा दिया है तथा तुझ पर भावी सूचनाओं की वास्तविकता गुप्त हो गई है।

أَدْخَلْتَ حَزْبَكَ فِي قَلْبٍ ضَالَةٍ أَفْهَذِهِ مِنْ سِيرَةِ الصَّلَحَاءِ
तूने अपने गिरोह को पथभ्रष्टता के कुंए में डाल दिया है। क्या नेकों का जीवन चरित्र ऐसा ही होता है?

جَاوَزْتَ بِالتَّكْفِيرِ مِنْ حَدِّ التَّقَى أَشَقَقْتُ قَلْبِي أَوْ رَأَيْتَ خَفَائِي
तू कुफ़र के फ़त्वे लगाकर संयम की सीमा से गुज़र गया है। क्या तूने मेरा हृदय फाड़ कर देखा है या मेरे अन्तःकरण को देख लिया है?

كَمَلُ بُخْبُثِكَ كُلُّ كَيْدٍ تَقْصُدُ وَاللَّهُ يَكْفِي الْعَبْدَ لِلْإِرْزَاءِ
हर छल जो तू करना चाहता है उसे अपनी कुटिलता से चरम सीमा तक पहुंचा दे और अपने बन्दे को शरण देने के लिए अल्लाह ही पर्याप्त है।

تَأْتِيكَ آيَاتِي فَتَعْرِفْ وَجْهَهَا فَاصْبِرْ وَلَا لِتَتْرُكْ طَرِيقَ حَيَاةٍ
मेरे निशान तेरे पास आएंगे। तो तू उनकी वास्तविकता को पहचान लेगा। अतः धैर्य रख और लज्जा का ढंग न छोड़।

إِنِّي كَتَبْتُ الْكِتَابَ مِثْلَ خَوَارِقٍ أَنْظُرْ أَعْنَدَكَ مَا يَصُوبُ كَمَائِي
मैंने चमत्कारों के रंग में पुस्तकें लिखी हैं। देख क्या तेरे पास ऐसा पानी है जो मेरे पानी की तरह बरसे?

إِنْ كُنْتَ تَقْدِرُ يَا خَصِيمَ قَدَرْتِي فَاكْتُبْ كَمْثَلِي قَاعِدًا بِحِذَائِي

हे मेरे प्रतिद्वन्दी ! यदि तू मेरी तरह शक्ति रखता है तो मेरी तरह मेरे सामने बैठ कर लिख।

مَا كُنْتَ تَرْضَى أَنْ تُسَمَّى جَاهِلًا فَالآنَ كَيْفَ قَعَدْتَ كَاللَّكْنَاءِ

तू तो असभ्य कहलाने पर राज़ी न था। अतः अब तू अनर्गल भाषी स्त्री के समान कैसे बैठ गया है?

قَدْ قُلْتَ لِلْصَّفْهَاءِ إِنَّ كِتَابَهُ عَفْصٌ يُهَيِّجُ الْقَوَّعَ مِنْ إِصْغَاءِ

तूने मूर्खों से कहा कि इसकी पुस्तक स्वादहीन है जिसके सुनने से उल्टी आती है।

مَا قُلْتَ كَالْأَدْبَاءِ قُلْ لِي بَعْدَمَا ظَهَرْتُ عَلَيْكَ رَسَائِلِي كَقِيَاءِ

मुझे बता कि तूने साहित्यकारों की तरह क्या कहा है उसके बाद कि तुझे मेरी पुस्तकें उल्टी (कै) की तरह दिखाई दें।

قَدْ قُلْتَ إِنِّي بَاسِلٌ مَتَوَغْلٌ سَمَّيْتَنِي صَيْدًا مِنَ الْخِيَلِ

तूने दावा किया है कि मैं बहादुर हूँ और ज्ञान में महारत रखता हूँ तथा अहंकार से तूने मेरा नाम शिकार रखा था।

الْيَوْمَ مَتَى قَدْ هَرَبْتَ كَأَرْنبٍ خَوْفًا مِنَ الْإِخْرَاءِ وَالْإِعْرَاءِ

आज तो तू मेरे मुकाबले में खरगोश की तरह भागा है बदनामी और नंगा होने के डर से।

فَكَرَّرُ أَمَّا هَذَا التَّخَوُّفُ آيَةٌ رَعْبًا مِنَ الرَّحْمَنِ لِلْإِدْرَاءِ

सोच कि क्या तेरा यह भयभीत होकर डरना तुझे समझाने के लिए दयालु ख़ुदा की ओर से निशान नहीं है।

كَيْفَ النِّضَالُ وَأَنْتَ تَهْرُبُ خَشْيَةً أَنْظُرْ إِلَى ذَلٍّ مِنْ اسْتِعْلَاءِ

तू मुझ से किस प्रकार मुकाबला कर सकता है जबकि तू मुझे से डर कर भाग रहा है। देख (निगरान) उस अपमान की ओर जो अहंकार के कारण तुझे पहुंचा है।

إِنَّ الْمَهْيَمِينَ لَا يَحِبُّ تَكَبُّرًا مِنْ خَلْقِهِ الضَّعْفَاءِ دُودَ فَنَاءِ

निःसन्देह मुहयमिन ख़ुदा अहंकार को पसन्द नहीं करता अपनी कमजोर सृष्टि की ओर से, जो फ़ना का कीड़ा है।

عُفِّرْتَ مِنْ سَهْمٍ أَصَابَكَ فَاجئًا أَصْبَحْتَ كَالْأَمْوَاتِ فِي الْجَهْرَاءِ

तू धूल धूसरित कर दिया गया है उस तीर से जो तुझे अचानक आ लगा है तू बीहड़ में मुर्दों की तरह हो गया है।

الآن أين فررت يا ابنَ تَصَلِّفٍ قد كنتَ تحسبنا من الجهلاء
हे डींगे मारने वाले ! अब तू कहां भाग गया है? तू तो हमें असभ्यों में से समझा करता था।

يا مَنْ أهاجَ الفتنَ قُمْ لِنُضالِنا كُنَّا نَعُدُّكَ نَوْجَةَ الْخُثُوءِ
हे वह व्यक्ति जिस ने फ़ित्ने फैलाए? हमारे मुकाबले के लिए उठ। हम तो तुझे धूल वाली पृथ्वी का तूफान समझते हैं।

نَطَقَ كَمُوْلِيَّ الْاَنْسِرَةَ جَنْبَةً قَوْلِي كَقَوْلِ النَّخْلِ فِي الْخُلْفَاءِ
मेरा बोलना उस बाग के समान है जिसकी घाटियों में दूसरी बार वर्षा हुई हो और मेरा कथन खजूर के गुच्छे की तरह है जो उपजाऊ पृथ्वी में हो।

مُرِّقَتْ لَكُنْ لَا بِضَرْبِ هَرَاوَةٍ بل بالسيفِ الجارِياتِ كَمَاءٍ
तू टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया है परन्तु डन्डे की चोट से नहीं अपितु तलवारों से जो बहते पानी के समान (तीव्र) थीं।

إِنْ كُنْتَ تَحْسَدُنِي فَإِنِّي بِاسِلٌ أُصِلِي فَوَادَ الْحَاسِدِ الْخَطَاءِ
यदि तू मुझ से ईर्ष्या करता है तो मैं वह बहादुर व्यक्ति हूँ जो ईर्ष्यालु ग़लती करने वाले के हृदय को जलाता हूँ।

كَذَّبْتَنِي كَقَرَّتَنِي حَقَّرْتَنِي وَأَرَدْتَ أَنْ أُسْفِيَ كَمَثَلِ عَفَاءٍ
तूने मुझे झुठलाया, मुझे काफ़िर कहा और मुझे तिरस्कृत समझा तथा तूने इरादा किया है कि मैं मिट्टी की भांति उड़ा दिया जाऊँ।

هَذَا إِرَادَتُكَ الْقَدِيمَةُ مِنْ هَوَى وَاللَّهُ كَهْفِي مُهْلِكُ الْأَعْدَاءِ
यह लोभ-लालच के कारण तेरा पुराना इरादा है और अल्लाह मेरी शरण है जो शत्रुओं को मारने वाला है।

إِنِّي لَشَرُّ النَّاسِ إِنْ لَمْ يَأْتِنِي نَصْرٌ مِنَ الرَّحْمَنِ لِلْإِعْلَاءِ
मैं सब से बुरी सृष्टि हूँगा यदि कृपालु खुदा की सहायता मुझे विजयी बनाने के लिए न आए।

مَا كَانَ أَمْرِي فِي يَدَيْكَ وَإِنَّهُ رَبُّ قَدِيرٌ حَافِظُ الضَّعْفَاءِ

तेरे हाथ में तो कोई अधिकार नहीं तथा खुदा की यह शान है कि वह शक्तिशाली रब्ब कमजोरों का रक्षक है।

الكبر قد ألقاك في درك اللظى إِنَّ التَّكْبَرَ أَرْدَا الْأَشْيَاءَ

अभिमान ने तुझे नर्क के निचले वर्ग में डाल दिया है। निश्चय ही अभिमान प्रत्येक वस्तु से निकृष्ट है।

خَفَّ قَهْرُ رَبِّي ذِي الْجَلَالِ إِلَى مَنِي تَقْفُو هَوَاكَ وَتَنْزُؤُنْ كُظْبَاءَ

प्रतापी खुदा के प्रकोप से डर। तू कब तक अपनी इच्छा का अनुसरण करेगा और मृगों की तरह झलांगे मारता रहेगा।

تَبَغَى زَوَائِي وَالْمَهْمِينَ حَافِظِي عَادَيْتُ رَبًّا قَادِرًا بِمِرَائِي

तू मेरा पतन चाहता है जबकि निरीक्षक खुदा मेरा रक्षक है। मुझ से झगड़ा करने में तूने शक्तिमान रब्ब की शत्रुता मोल ले ली।

إِنَّ الْمُقَرَّبَ لَا يَضَاءُ بَفْتَنَةٍ وَالْأَجْرُ يُكْتَبُ عِنْدَ كُلِّ بَلَاءٍ

(खुदा का) सानिध्य प्राप्त किसी फ़ित्ने से व्यर्थ नहीं होता। हर संकट के समय उसका प्रतिफल लिखा जाता है।

مَا خَابَ مَنْ خَافَ الْمَهْمِينَ رَبَّهُ إِنَّ الْمَهْمِينَ طَالِبُ الطُّلْبَاءِ

जो अपने मुहैमिन रब्ब (निगरान) से डरे वह असफल नहीं होता क्योंकि निश्चय ही निगरान खुदा तो अपने अभिलाषियों का अभिलाषी है।

هَلْ تَطْمَعُ الدُّنْيَا مَذَلَّةً صَادِقٍ هَيْئَاتِ ذَاكَ تَخِيلُ السُّفَهَاءِ

क्या संसार सच्चे के अपमान की इच्छा रखता है? ऐसा कदापि नहीं हो सकता। यह तो मूर्खों का विचार है।

إِنَّ الْعَوَاقِبَ لِلَّذِي هُوَ صَالِحٌ وَالْكَرَّةَ الْأُولَى لِأَهْلِ جَفَاءِ

लड़ाई का अंजाम सदाचारी के पक्ष में ही निकलता है यद्यपि प्रथम आक्रमण अत्याचारियों का होता है।

شَهِدْتُ عَلَيْهِ، خَصِيمِ، سُنَّةَ رَبِّنَا فِي الْأَنْبِيَاءِ وَ زَمْرَةَ الصُّلَحَاءِ

हे प्रतिद्वन्दी ! इसी बात पर हमारे रब्ब की सुन्नत साक्षी है जो नबियों और वलियों के गिरोह में (जारी) है।

مُتَّ بِالْتَّغِيْظِ وَاللَّظَى يَا حَاسِدِي إِنَّا نَمُوتُ بَعْرَةً قُعْسَاءِ

हे मेरे ईर्ष्यालु ! तू क्रोध और अग्नि की लपट में मर जा, हम तो क्रायम और हमेशा के सम्मान के साथ मरेंगे।

إِنَّا نَرَى كُلَّ الْعَالِي مِنْ رَبَّنَا وَالْخَلْقُ يَأْتِينَا لِبَغْيِ ضِيَاءِ

हम तो यही पाते हैं कि समस्त बुलन्दियां हमारे रब्ब ही से मिलती हैं और सृष्टि आध्यात्म ज्ञान के लिए हमारे पास आती है।

هَمِيذَكْرُونَكَ لَا عَيْنٍ وَذِكْرُنَا فِي الصَّالِحَاتِ يُعَدُّ بَعْدَ فَنَاءِ

(हे ईर्ष्यालु) लोग तेरी चर्चा तो ला'नत से करेंगे और शुभ कार्यों के बारे में हमारी चर्चा मरने के बाद भी होती रहेगी।

هَلْ تَهْدِمَنَّ الْقَصْرَ قَصْرَ إِلَهِنَا هَلْ تُحْرِقَنَّ مَا صَنَعَهُ بَنَائِي

क्या तू उस महल को गिरा देगा जो हमारे उपास्य का महल है? क्या तू उस वस्तु को जला डालेगा जिसे मेरे निर्माता (खुदा) ने बनाया है?

يَرْجُونَ عَثْرَةَ جَدَّنَا حَسَدًا وَنَذُوقُ نَعْمَائِي عَلَى نَعْمَاءِ

हमारे ईर्ष्यालु चाहते हैं कि हमारा भाग्य बिगड़ जाए जबकि हम ने'मत पर ने'मत चख रहे हैं।

لَا تَحْسِبَنَّ أَمْرِي كَأَمْرِ غُفْمَةٍ جَاءَتْ بِكَ الْآيَاتِ مِثْلَ ذُكَا

मेरे काम को संदिग्ध काम की तरह न समझ, तेरे पास तो सूर्य के समान चमकदार निशान आ चुके हैं।

جَاءَتْ خِيَارُ النَّاسِ شَوْقًا بَعْدَمَا شَمُّوا رِيَّاحَ الْمِسْكِ مِنْ تَلْقَائِي

सदाचारी व्यक्ति मेरे पास शौक्र से आए हैं इसके बाद कि मेरी ओर से उन्होंने कस्तूरी की सुगन्ध सूंघी।

طَارُوا إِلَى بَالْفَةِ وَإِرَادَةٍ كَالطَّيْرِ إِذْ يَأْوِي إِلَى الدَّفْوَاءِ

वे मेरी ओर प्रेम और श्रद्धा से उड़कर आए हैं उस पक्षी के समान जो बड़े वृक्ष पर शरण लेता है।

لَفَظْتُ إِلَى بِلَادُنَا أَكْبَادَهَا مَا بَقِيَ إِلَّا فَضْلَةُ الْفَضْلَاءِ

हमारे देश ने हमारी ओर अपने जिगर के टुकड़ों को फेंक दिया है और अब विद्वानों में से केवल बचे खुचे ही शेष रह गए हैं।

أَوْ مِنْ رَجَالِ اللَّهِ أَخْفَى سُرُّهُمْ يَأْتُونَنِي مِنْ بَعْدِ كَالشَّهْدَاءِ

या वे खुदा के योद्धा शेष रह गए हैं जिन की परिस्थितियां गुप्त हैं और वे इनके बाद मेरे पास गवाहों के समान आएंगे।

ظَهَرَتْ مِنَ الرَّحْمَنِ آيَاتُ الْهُدَى سَجَدْتُ لَهَا أَمْرٌ مِنَ الْعُرْفَاءِ
कृपालु खुदा की ओर से हिदायत के निशान प्रकट हो गए और उन निशानों के कारण वलियों के गिरोह (खुदा के समक्ष) नत मस्तक हो गए।

أَمَّا اللَّئَامُ فَيَنْكَرُونَ شِقَاوَةً لَا يَهْتَدُونَ بِهَذِهِ الْأَصْوَاءِ
परन्तु अभागे लोग अपने दुर्भाग्य के कारण इन्कार कर रहे हैं। वे इन प्रकाशों से मार्ग-दर्शन नहीं पा रहे।

هَمٌّ يَأْكُلُونَ الْجَيْفَ مِثْلَ كَلَابِنَا هُمْ يَشْرَهُونَ كَأَنْتَرِ الصَّحْرَائِ
वे हमारे कुत्तों की भांति मुरदार रखा रहे हैं। वे मरुस्थल के गिद्धों की तरह (मुरदार के) लालची हैं।

خَشَّوْا وَلَا تَخْشَى الرِّجَالُ شَجَاعَةً فِي نَائِبَاتِ الدَّهْرِ وَالْهَيْجَاءِ
उन्होंने (मुझे) डराया हालांकि वीर पुरुष वीरता के कारण समय की घटनाओं और लड़ाई में भयभीत नहीं होते।

لَمَّا رَأَيْتُ كَمَالَ لَطْفٍ مِهْمَنِ غَابَ الْبَلَاءُ فَمَا أَحْسُ بِلَائِي
जब मैंने अपने संरक्षक खुदा की अत्यधिक मेहरबानी को देखा तो संकट जाता रहा। अतः मैं अपना कोई संकट महसूस नहीं करता।

مَا خَابَ مِثْلِي مُؤْمِنٌ بَلْ خَصُمُنَا قَدْ خَابَ بِالتَّكْفِيرِ وَالْإِفْتَاءِ
मुझ जैसा मोमिन असफल नहीं रहा अपितु हमारा शत्रु काफ़िर कहने और फ़त्वे लगाने में विफल हो गया।

الْغَمُّ يُبِيدُو* نَاجِزِهِ تَغِيظًا أَنْظُرْ إِلَى ذِي لَوْثَةٍ عَجْمَاءِ
असह्य व्यक्ति क्रोध से अपने दांत पीसता है (तू) उस मूर्ख चौपाए की ओर देखा।
قَدْ أَسْخَطَ الْمَوْلَى لِإِرْضَى غَيْرُهُ وَاللَّهُ كَانَ أَحَقَّ لِلْإِرْضَاءِ
उसने अपने स्वामी को नाराज़ कर दिया ताकि उसके ग़ैर को प्रसन्न करे और खुदा का प्रसन्न किया जाना अधिक उचित और सही है।

كَسَّرْتُ ظَرْفَ عُلُومِهِمْ كَزَجَاجَةٍ فَتَطَايَرُوا كَتَطَايِرِ الْوَقْعَاءِ
मैंने उनकी विद्याओं के बरतन को शीशे की तरह तोड़ दिया। अतः वे धूल के उड़ने की तरह उड़ गए।

قد كفروا من قال إني مسلمٌ لمقالة ابن بطالةٍ وغواءٍ
 उन्होंने उस व्यक्ति को काफ़िर ठहराया जो कहता है कि मैं मुसलमान हूँ उनकी यह
 बात (शैख) बटालवी के कथन और उसके चीखने-चिल्लाने के कारण है।
 خوف المهيم من ما أرى في قلبهم فارت غيون تمرّد و إباءٍ
 मैं उनके हृदयों में संरक्षक ख़ुदा का भय नहीं देखता अपितु (उनकी) उद्दण्डता और
 इन्कार के झरनों ने जोश मारा है।
 قد كنتُ آمل أنهم يخشونه فاليوم قد مالوا إلى الأهواءِ
 मैं आशा करता था कि वे उससे डरेंगे परन्तु आज तो वे लोभ और लालच की ओर
 झुक गए हैं।
 نضوا الثياب ثياب تقوى كلهم ما بقي إلا لبسة الإغواءِ
 उन सबने संयम के लिबास उतार फेंके और उन पर बहकाने के लिबास के अतिरिक्त
 कुछ शेष नहीं रहा।
 هل من عفيف زاهدٍ في حزبهم أو صالحٍ يخشى زمان جزاءٍ
 क्या उनके गिरोह में कोई संयमी और परहेज़गार शेष है? या ऐसा सदाचारी जो
 प्रतिफल और दण्ड के दिन से डरता हो।
 والله ما أدري تقيًا خائفًا في فرقة قاموا لهم بنائي
 ख़ुदा की क्रसम ! मैं उस गिरोह में कोई डरने वाला संयमी नहीं पाता जो मेरी इमारत
 को गिराने के लिए उठ खड़ा हो।
 ما إن أرى غير العمائم واللّحي أو أثقًا زاغت من الخيلاءِ
 मैं पगड़ियों और दाढ़ियों या ऐसी नाकों के अतिरिक्त जो अभिमान से टेढ़ी हो गई हैं
 और कुछ नहीं देखता।
 لا ضير إن ردّوا كلامي نخوةً فسینجعن في آخرین ندائی
 कोई हानि नहीं यदि उन्होंने मेरे कलाम को अहंकार से रद्द कर दिया है अतः शीघ्र ही
 दूसरों में मेरी आवाज़ अवश्य प्रभावी होकर रहेगी।
 لا تنظرن عجبًا إلى افتائهم غشّ تلا غشًا بقع عماءِ
 उनके फ़त्वों को आश्चर्य से न देख, एक कमीना अंधेपन की धूल के कारण (दूसरे)
 कमीने का अनुसरण कर रहा है।

قد صار شيطان رجيم جَبَّهُمْ يَمْسِي وَيُضْحِي بَيْنَهُمْ لِقَاءِ
तिरस्कृत शैतान उनका प्रियतम बन गया है वह उनके मध्य मुलाक्रात के लिए सुबह-
शाम आता है।

أَعْمَى قُلُوبَ الْحَاسِدِينَ شُرُورُهُمْ أَعْرَى بَوَاطِنَهُمْ لِبَاسُ رِيَاءِ
ईर्ष्यालुओं के हृदयों को उनकी उद्दण्डताओं ने अंधा कर दिया है और उनके अन्तःकरण
को दिखावे के लिबास ने नंगा कर दिया है।

آذَوْا فِي سُبُلِ الْمَهْمِينَ لَا نَرَى شَيْئًا أَلَدَّ لَنَا مِنَ الْإِيذَاءِ
उन्होंने दुख दिया और संरक्षक खुदा के मार्ग में हम किसी वस्तु को दुख पाने से अधिक
आनंदित नहीं समझते।

مَا إِنْ أَرَى أَثْقَالَهُمْ كَجَدِيدَةٍ إِنْ طَلَحَ السَّيْحَ وَالْأَعْبَاءِ
मैं उनके भारों को कोई नए भार नहीं पाता। मैं यात्राओं तथा बोझों का अभ्यस्त हूँ।

نَفْسِي كَعُسْبُرَةٍ فَأُخْنِقَ صَلْبُهَا مِنْ حَمَلِ إِيذَاءِ الْوَرَى وَجَفَاءِ
मेरी मनोवृत्ति ऊंटनी के समान है। अतः उसकी पीठ कमजोर कर दी गई है। सृष्टि के
अन्याय और कष्ट सहन करने से।

هَذَا وَرَبِّ الصَّادِقِينَ لِأَجْتَنِي نَعَمَ الْجَنَّا مِنْ نَخْلَةِ الْأَلَاءِ
इस बात को पल्ले बांध ले और सच्चों के रब्ब की क्रसम है कि मैं ने 'मतों की खजूर
से अच्छे मेवे चुनता हूँ।

إِنَّ اللَّئَامَ يَحْقِرُونَ وَذَمُّهُمْ مَا زَادَنِي إِلَّا مَقَامَ سَنَاءِ
कमीने लोग तो मेरा तिरस्कार करते हैं। उनकी निन्दा मुझे केवल बुलन्दी के स्थान में
बढ़ाती है।

زَمَعُ الْإِنْسَانِ يَحْمَلُونَ كَثَلٍ يُوْذُونَنِي بِتَحَوُّبٍ وَمُؤَاءِ
कमीने लोग लोमड़ी की तरह मुझे घूरते हैं और मुझे लोमड़ी और बिल्ली की आवाज
निकाल कर कष्ट देते हैं।

وَاللَّهِ لَيْسَ طَرِيقُهُمْ نَهْجَ الْهُدَى بَلْ مُنْيَةٌ نَشَأَتْ مِنَ الْأَهْوَاءِ

खुदा की क्रसम ! उन की पद्धति हिदायत की पद्धति नहीं अपितु एक ऐसी इच्छा है
जो लोभ और लालच से पैदा हुई है।

أَعْرَضْتُ عَنْ هَٰذِيَانِهِم بِتَصَامُومٍ وَحَسِبْتُ أَنَّ الشَّرَّ تَحْتَ مِرَاءٍ

मैंने उनकी अनर्गल बातों से बहरा बन कर मुंह फेर लिया और मैंने जान लिया कि बहस-मुबाहसे के पीछे उपद्रव (छुपा हुआ) है।

أَنَا صَبَرْنَا عِنْدَ إِذَاءِ الْعَدَا فَعَلُوا كَمِثْلِ الدُّخِّ مِنْ إِغْضَائِي

हमने शत्रुओं के कष्ट पहुंचाने के समय धैर्य किया तो मेरे अनदेखा करने के कारण उन्होंने धुएं की तरह बुलन्दी को प्रकट किया।

مَا بَقِيَ فِيهِمْ عَقَّةٌ وَزَهَادَةٌ لَا ذَرَّةٌ مِنْ عَيْشَةٍ خَشْنَاءٍ

उनमें कोई पवित्रता और संयम शेष नहीं रहा और न ही पराक्रम वाले जीवन का कोई अंश शेष है।

مَالُوَالِ الدُّنْيَا الدُّنْيَا مِنْ هَوًى فَرَّوْا مِنَ الْبَاسَاءِ وَالضَّرَاءِ

वे लोभ- लालच के कारण तुच्छ संसार की ओर झुक गए हैं तथा कष्टों और कठिनाइयों से भाग निकले हैं।

صَالُوا مِنَ الْأَوْبَاشِ حَزْبَ أَرَاذِلٍ فَكَأَنَّهُمْ كَالْخِثْيِ لِلْإِحْمَاءِ

आवारा लोगों में ऐ नीच लोगों के गिरोह ने आक्रमण किया जैसे कि वे ओपलों के समान हैं जो गर्मी प्राप्त करने के लिए होते हैं।

لَمَّا كَتَبْتُ الْكُتُبَ عِنْدَ غُلُوِّهِمْ بِبَلَاغَةٍ وَ عَذُوبَةٍ وَ صَفَاءٍ

और जब मैंने उनकी अतिशयोक्ति के समय पुस्तकें लिखीं जो सरसता, मधुरता और स्पष्ट से भरी थीं।

قَالُوا قَرَأْنَا لَيْسَ قَوْلًا جَيِّدًا أَوْ قَوْلٌ عَرَبِيٌّ مِنَ الْأَدْبَاءِ

उन्होंने कहा हमने पढ़ ली हैं (यह) ये कोई अच्छी बात नहीं हैं यह साहित्यकारों में से किसी अरब के माहिर का कथन है।

عَرَبٌ أَقَامَ بَيْتَهُ مُتَسَتِّرًا أَمَلَى الْكِتَابَ بِبَكْرَةٍ وَمَسَاءٍ

एक अरब (साहित्यकार) है जो उसके घर में गुप्त तौर पर ठहरा हुआ है और वही सुबह-शाम पुस्तक लिखवाता है।

أَنْظُرْ إِلَى أَقْوَالِهِمْ وَتَنَاقُضٍ سَلَبَ الْعِنَادُ إِصَابَةَ الْآرَاءِ
तू उनकी बातों और (उनके) विरोधाभास को देख। शत्रुता ने उनसे उचित राय छीन ली है।

طَوَّرًا إِلَى عَرَبٍ عَزَوْهُ وَتَارَةً قَالُوا كَلَامَ فَاسِدِ الْإِمْلَاءِ
कभी तूने मेरे कलम को किसी अरब की ओर सम्बद्ध किया और कभी यह कहा कि इस कलाम की इबारत खराब है।

هَذَا مِنْ الرَّحْمَنِ يَا حِزْبَ الْعِدَا لَا فِعْلَ شَامِيٍّ وَلَا رَفَقَائِي
हे शत्रुओं के गिरोह ! यह तो कृपालु खुदा की ओर से है। न यह किसी का कार्य है और न मेरे मित्रों का।

أَعْلَى الْمَهِيْمُنْ شَأْنُنَا وَعِلْمُونَا نَبْنِي مَنَازِلَنَا عَلَى الْجَوَازِ
निगरान खुदा ने हमारी शान और ज्ञानों को बुलन्द कर दिया है इसलिए हम अपने घर मिथुन ग्रह पर बना रहे हैं।

خَلُّوا مَقَامَ الْمَوْلَوِيَّةِ بَعْدَهُ وَتَسْتَرُّوا فِي غَيْهِبِ الْخَوَافِ
अब इसके पश्चात् मौलवियत का स्थान छोड़ दो और अंधे कुएं के अन्धकार में छुप जाओ।

قَدْ حُدِّدْتُ كَالْمَرْهَفَاتِ قَرِيحَتِي فَفَهِمْتُ مَا لَمْ يَفْهَمُوا أَعْدَائِي
मेरी तबियत तलवारों के समान तेज कर दी गई है। अतः मैं वह बात समझा हूँ जिसे मेरे शत्रु नहीं समझते।

هَذَا كِتَابِي حَازَ كُلَّ بَلَاغَةٍ بَهَرَ الْعُقُولَ بِنُصْرَةٍ وَبِهَاءٍ
यह मेरी पुस्तक है जिसने हर प्रकार की सुबोधता को अपने अन्दर एकत्र कर लिया है तथा उसने ताजगी और खूबी से अक़लों को आश्चर्य चकित कर दिया है।

اللَّهُ أَعْطَانِي حَدَائِقَ عِلْمِهِ لَوْلَا الْعَنَاءُ كُنْتُ كَالسَّفَهَاءِ
अल्लाह ने मुझे अपने ज्ञान रूपी बाग प्रदान किए हैं। यदि अल्लाह की कृपा न होती तो मैं भी मूर्खों के समान होता।

إِنِّي دَعَوْتُ اللَّهَ رَبًّا مُحْسِنًا فَأَرَى عِيُونَ الْعِلْمِ بَعْدَ دَعَائِي
मैंने अपने अल्लाह, उपकारी से निवेदन किया। तो उसने मेरी दुआ के पश्चात् (मुझे) ज्ञान के झरने दिखा दिए।

إِنَّ الْمَهِيْمَنَ لَا يُعِزُّ بِنَخْوَةٍ إِنَّ رُمْتَ اعْزَازًا فَكُنْ كَعَفَاءِ

निस्सन्देह खुदा संरक्षक अभिमान पर सम्मान नहीं देता। यदि तू सम्मान प्राप्त करना चाहता है तो धूल की तरह हो जा।

وَاللّٰهُ قَدْ فَرَّطَتْ فِيْ أَمْرِ هَوًى وَأَيِّتْ كَالْمُسْتَعْجَلِ الْخَطَّاءِ

खुदा की क्रसम ! तूने लोभ-लालच के कारण मेरे मामले में लापरवाही की है और जल्दबाज़ दोषी के समान इन्कार कर दिया है।

الْحُرُّ لَا يَسْتَعْجِلُنْ بَلْ إِنَّهُ يَرْنُو بِإِمْعَانٍ وَكَشَفِ غَطَاءِ

द्वेष से स्वतंत्र (मनुष्य) जल्दबाज़ी नहीं किया करता। वह गहरी दृष्टि से तथा पर्दा उठाकर देखता है।

يَخْشَى الْكِرَامُ دَعَاءَ أَهْلِ كِرَامَةٍ رُحْمًا عَلَى الْأَزْوَاجِ وَالْأَبْنَاءِ

सुशील लोग अपनी पत्नी और बच्चों पर दया करते हुए अहले करामत की दुआ से डरते हैं।

عِنْدِيْ دَعَاءُ خَاطِفٍ كَصَوَاعِقٍ فَحَذَارِ ثُمَّ حَذَارِ مِنْ أَرْجَائِيْ

मेरी दुआ ऐसा तीर है जो बिजलियों के समान तीव्रता से अपने निशाने पर जा लगता है।

(अतः विरोध के तौर पर) मेरे निकट आने से बचो और फिर बचो।

وَاللّٰهُ إِنِّي لَا أُرِيدُ إِمَامَةً هَذَا خِيَالُكَ مِنْ طَرِيقِ خَطَاءِ

खुदा की क्रसम ! मेरा इमाम बनने का स्वयं कोई इरादा नहीं। तेरा यह विचार ग़लती से पैदा हुआ है।

إِنَّا نُرِيدُ اللّٰهَ رَاحَةً رَوْحِنَا لَا سُودْدًا وَرِيَاسَةً وَعِلَاءِ

निःसन्देह हम तो केवल अल्लाह को चाहते हैं जो हमारी रूह का चैन है हम किसी सरदारी, हुकूमत और प्रभुत्व को नहीं चाहते।

إِنَّا تَوَكَّلْنَا عَلَى خَلْقِنَا مَعْطَى الْجَزِيلِ وَوَاهِبِ النِّعْمَاءِ

हमने अपने पैदा करने वाले पर भरोसा किया है जो बहुत देने वाला और ने'मत प्रदान करने वाला है।

مَنْ كَانَ لِلرَّحْمَنِ كَانَ مَكْرَمًا لَا زَالَ أَهْلَ الْمَجْدِ وَالْآلَاءِ

जो खुदा का हो गया वह बुजुर्ग बन जाता है तथा वह हमेशा बुजुर्गी और ने'मतों वाला बना रहता है।

إِنَّ الْعَدَا يُؤْذُونَنِي بِخَبَاثَةٍ يُؤْذُونَ بِالْبَهْتَانِ قَلْبَ بَرَاءِ
निःसन्देह शत्रु कुटिलता से मुझे कष्ट दे रहे हैं वे आरोप लगा कर एक निर्दोष मनुष्य के हृदय को कष्ट पहुंचा रहे हैं।

هُمْ يُذْعِرُونَ صِيحَةً وَنَعْدَهُمْ فِي زُمْرٍ مَوْتِي لَا مِنَ الْأَحْيَاءِ
वे चीख-पुकार करके हमें डराते हैं जबकि हम उन्हें मुर्दों के वर्ग में गिनते हैं न कि जीवितों में।

كَيْفَ التَّخَوُّفُ بَعْدَ قُرْبِ مُشْجِعٍ مِنْ هَذِهِ الْأَصْوَاتِ وَالضُّوْءِ
साहस प्रदान करने वाले (खुदा) के सानिध्य के बाद उन आवाजों तथा कोलाहलों से डर कैसे हो सकता है?

يَسْعَى الْخَبِيثُ لِيُطْفِئَ أَنْوَارَنَا وَالشَّمْسُ لَا تَخْفَى مِنَ الْإِخْفَاءِ
कुटिल प्रयास करता है कि हमारे प्रकाशों को बुझा दे और सूर्य तो छुपाने से छुप नहीं सकता।

إِنَّ الْمُهَيْمِنَ قَدْ أَتَمَّ نَوَالَهُ فَضْلًا عَلَى فَصْرَتٍ مِنْ نُحْلَاءِ
निःसन्देह निगिरान खुदा ने अपने दान को चरम सीमा तक पहुंचा दिया है मुझ पर कृपा करते हुए। अतः मैं दान करने वालों में से हो गया।

نُعْطِي الْعُلُومَ لِدَفْعِ مَتْرَبَةِ الْوَرَى طَالَتْ أَيْادِينَا عَلَى الْفُقَرَاءِ
सृष्टि की दरिद्रता दूर करने के लिए हम ज्ञान रूपी माल देते हैं और मुहताजों पर हमारे उपकार बहुत अधिक हो गए हैं।

إِنْ شِئْتَ لَيْسَتْ أَرْضُنَا بِبَعِيدَةٍ مِنْ أَرْضِكَ الْمَنْحُوسَةِ الصَّيْدَاءِ
यदि तू भी कुछ लेना चाहता है जो हमारी पृथ्वी कुछ दूर नहीं है। तेरी उस पृथ्वी से जो मनहूस, सपाट और पथरीली है।

صَعِبٌ عَلَيْكَ زَمَانٌ سُوْلٍ مُحَاسِبٍ إِنَّ مَتَّ يَا خَصْمِي عَلَى الشَّحْنَاءِ
हिसाब लेने वाले (खुदा) के प्रश्नों का समय तुझ पर कठिन होगा हे मेरे शत्रु ! यदि तू द्वेष में मर गया।

مَا جِئْتُ مِنْ غَيْرِ الْضَّرُورَةِ عَابَثًا قَدْ جِئْتُ مِثْلَ الْمُزْنِ فِي الرَّمْضَاءِ
मैं अनावश्यक और निरुद्देश्य नहीं आया अपितु मैं तपती हुई पृथ्वी पर वर्षा करने वाले बादल के समान आया हूँ।

عَيْنُ جَرْتٍ لِعَطَاشٍ قَوْمٌ أَضْجَرُوا أَوْ مَائُ نَقَعٍ طَافِحٍ لظِمَاءٍ
प्यास के कारण बेचैन लोगों के लिए एक झरना जारी हो गया और प्यासों के लिए बहुत सा स्वच्छ पानी जारी हो गया है।

إِنِّي بِأَفْضَالِ الْمُهَيْمِنِ صَادِقٌ قَدْ جِئْتُ عِنْدَ ضَرُورَةٍ وَوَبَاءٍ
निःसन्देह मैं निगरान खुदा की कृपाओं से सच्चा हूँ और मैं आवश्यकता और संक्रामक रोग के समय आया हूँ।

ثُمَّ اللَّئَامُ يَكْذِبُونَ بِخَبْثِهِمْ لَا يَقْبَلُونَ جَوَائِزِي وَ عَطَائِي
फिर भी कमीने लोग अपनी कुटिलता के कारण मुझे झुठलाते हैं और मेरे दान-पुण्य को स्वीकार नहीं करते।

كَلِمُ اللَّئَامِ أَسَنُّ مَذْرُوبَةٍ وَصَدُورِهِمْ كَالْحَرَّةِ الرَّجُلَاءِ
कमीनों की बातें तेज़ भाले हैं और उनके सीने सख्त पथरीली पृथ्वी के समान हैं।

وَصَدُورِهِمْ كَالْحَرَّةِ الرَّجُلَاءِ وَنَبِيِّهِ وَطَوَائِفِ الصَّالِحَاءِ
जो व्यक्ति सदात्मा पुरुष से लड़ाई करता है वह अपने प्रतिपालक और उसके नबी और वलियों के गिरोहों से युद्ध करता है।

وَاللّٰهُ لَا أَدْرِي وُجُوهَ كُشَاحَةٍ مِنْ غَيْرِ أَنَّ الْبَخْلَ فَارَ كَمَاءٍ
खुदा की कसम ! मैं उनकी शत्रुता के कारण नहीं जानता, इसके अतिरिक्त कि कंजूसी ने उनमें (झरने के) पानी के समान जोश मारा है।

مَا كُنْتُ أَحْسَبُ أَنَّهُمْ بَعْدَ أَوْتِي يَذَرُونَ حُكْمَ شَرِيعَةٍ غَرَاءٍ
मुझे यह विचार नहीं था कि वे मेरी शत्रुता में प्रकाशमान शरीअत के आदेश को भी त्याग देंगे।

عَادِيَتْهُمْ لِلّٰهِ حِينَ تَلَاعَبُوا بِالذِّينِ صَوَالِينِ مِنْ غُلُوءٍ
मैं खुदा के लिए उनका शत्रु हुआ जब वे धर्म से खेलने लगे और जब सीमा से बढ़कर आक्रमण करने लगे।

رُبِّيْتُ مِنْ دَرِّ النَّبِيِّ وَعَيْنِهِ أُعْطِيتُ نُورًا مِنْ سَرَاجِ حِرَاءٍ
मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूध और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झरने से पला हूँ और गारे हिरा के सूर्य से मुझे प्रकाश प्रदान किया गया है।

الشمس أُمُّ وَالْهَلَالُ سَلِيلُهَا يَنُمُو وَ يَنشَأُ مِنْ ضِيَاءِ ذُكَا
 सूर्य मां है और हिलाल उसका बेटा जो सूर्य के प्रकाश से पोषण पाता है।
 إِنِّي طَلَعْتُ كَمَثَلِ بَدْرِ فَانْظُرُوا لَا خَيْرَ فِي مَنْ كَانَ كَالْكَهْمَاءِ
 निःसन्देह मैं बद्र के समान उदय हुआ। अतः तुम देखो। उस व्यक्ति में कोई भलाई नहीं
 जो कमजोर दृष्टि वाली स्त्री के समान हो।
 يَا رَبِّ أَيْدِنَا بِفَضْلِكَ وَانْتَقِمْ مِمَّنْ يَدْعُ الْحَقَّ كَالْغُثَاءِ
 हे मेरे रब हमारा समर्थन कर अपनी कृपा से और उस व्यक्ति से प्रतिशोध ले जो सत्य
 को तिनकों के समान फटकारता है।
 يَا رَبِّ قَوْمِي غَلَسُوا بِجَهَالَةٍ فَارْحَمْ وَأَنْزِلْهُمْ بَدَارِ ضِيَاءِ
 हे हमारे रब ! मेरी क्रौम असभ्यता के कारण अंधकार में चली गई है। अतः तू दया
 कर और उन्हें प्रकाश के घर में उतार।
 يَا لَأَيِّمَى إِنْ الْعَوَاقِبَ لِلتَّقَى فَارْبَأْ مَالِ الْأُمْرِ كَالْعُقَلَاءِ
 हे मुझे भर्त्सना करने वाले ! अंजाम संयमियों के पक्ष में हुआ करता है अतः तू बुद्धिमानों
 की तरह अंजाम के बारे में सोच-विचार कर।
 اللَّهُ أَيْدِنِي وَصَافَا رَحْمَةً وَ أَمْدِنِي بِالنَّعْمِ وَالْآلَاءِ
 अल्लाह ने मेरा समर्थन किया है और अपनी दया से मित्र बनाया है और मुझे भिन्न-भिन्न
 प्रकार की ने'मतों से सहायता प्रदान की है।
 فَخَرَجْتُ مِنْ وَهْدِ الضَّلَالَةِ وَالشَّقَا وَدَخَلْتُ دَارَ الرُّشْدِ وَالْإِدْرَاءِ
 अतः मैं दुर्भाग्य और पथ-भ्रष्टता के गढ़े से निकल गया हूँ और मैं हिदायत और शिक्षा
 देने के घर में प्रवेश कर गया हूँ।
 وَاللَّهُ إِنْ النَّاسَ سَقَطَ كُلُّهُمْ إِلَّا الَّذِي أَعْطَاهُ نَعْمَ لِقَاءِ
 और अल्लाह की क्रसम ! सब के सब लोग व्यर्थ वस्तु हैं उस व्यक्ति के अतिरिक्त
 जिसे खुदा ने अपने दर्शन की ने'मत दी हो।
 إِنَّ الَّذِي أَرَوَى الْمُهَيْمُنُ قَلْبُهُ تَأْتِيهِ أَفْوَاجُ كَمَثَلِ ظُمَاءِ
 वह व्यक्ति जिसके हृदय को निगरान खुदा ने सींच दिया हो उसके पास फौजों की फौजें
 प्यासों के समान आती हैं।

رَبِّ السَّمَاءِ يُعِزُّهُ بِعَنَایَةِ تَعْنُو لَهُ أَعْنَاقُ أَهْلِ دِهَاءِ
 आकाश का स्वामी अपनी कृपा से उसे सम्मान देता है तथा बुद्धिमानों की गर्दनें उसके
 आगे झुक जाती हैं।
 الْأَرْضُ تُجْعَلُ مِثْلَ غُلْمَانٍ لَهُ تَأْتِي لَهُ الْأَفْلاكُ كَالْخِدْمَاءِ
 पृथ्वी उसके लिए दासों के समान बना दी जाती है और आकाश उसके लिए सेवकों
 के समान हो जाते हैं।
 مَنْ ذَا الَّذِي يُخْزِي عَزِيزَ جَنَابِهِ الْأَرْضُ لَا تُفْنِي شَمُوسَ سَمَاءِ
 वह कौन है जो ख़ुदा के प्रिय को अपमानित करे। आकाश के सूर्यो को पृथ्वी फ़ना नहीं
 कर सकती।
 الْخَلْقُ دُودٌ كُلُّهُمْ إِلَّا الَّذِي زَكَاهُ فَضْلُ اللَّهِ مِنْ أَهْوَاءِ
 सारी प्रजा कीड़े की हैसियत रखती है सिवाए उस व्यक्ति के जिसे अल्लाह की कृपा ने
 लोभ-लालच से पवित्र कर दिया हो।
 فَانْهَضْ لَهُ إِنْ كُنْتَ تَعْرِفُ قَدْرَهُ فَانْهَضْ لَهُ إِنْ كُنْتَ تَعْرِفُ قَدْرَهُ
 अतः तू उस व्यक्ति के लिए उठ यदि तू उसके महत्त्व को जानता है और मनोवृत्ति को
 कुरबान करने और दौड़ाने से आगे निकल जा।
 إِنْ كُنْتَ تَقْصِدُ ذُلَّهُ فَتُحَقِّقْ وَتَخْشَأَنَّ كَالْكَلْبِ يَوْمَ جَزَاءِ
 यदि तू उसका अपमान चाहता है तो तू स्वयं तिरस्कृत किया जाएगा और कुत्ते के समान
 प्रतिफल के लिए चौखट से धुत्कार दिया जाएगा।
 غَلِبْتُ عَلَيْكَ شَقَاوَةً فَتُحَقِّقْ مَنْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ مِنْ كَرَمَاءِ
 तुझ पर दुर्भाग्य ने विजय प्राप्त कर ली है। अतः तू उस व्यक्ति को तुच्छ समझता है जो
 अल्लाह के निकट सम्मानित लोगों में से है।
 صَعِبَ عَلَيْكَ سَرَا جَنَاوُضِيَاؤُنَا تَمْشِي كَمْشَى اللَّصِّ فِي اللَّيْلِ
 हमारा दीपक और हमारा प्रकाश तुझ पर कठिन है तू अंधेरी रात में चोरों के समान चल
 रहा है।
 تَهْذِي وَأَيُّمُ اللَّهِ مَالِكُ حِيلَةٍ يَوْمَ النُّشُورِ وَعِنْدَ وَقْتِ قَضَاءِ
 तू बकवास कर रहा है और ख़ुदा की क़सम प्रलय के दिन तथा फैसले के समय तेरे
 लिए कोई बहाना न होगा।

برق من المولى نريك وميضه فاصبر كصبر العاقل الرّثاء

यह स्वामी की ओर से बिजली है जिसकी चमक हम तुझे दिखाएंगे। अतः तू ध्यान से देखने वाले बुद्धिमान के समान धैर्य कर।

وأرى تغيطكم يفور كلجة موج كموج البحر أو هوجاء

और मैं देखता हूँ कि तुम्हारा क्रोध गहरे पानी की तरह जोश मार रहा है उसकी लहर समुद्र की लहर या तीव्र वायु के समान है।

والله يكفى من كماء نضالنا جلد من الفتیان للأعداء

खुदा की क्रसम ! हमारे लड़ाकू बहादुरों में से एक दिलेर युवा मर्द ही समस्त शत्रुओं के लिए पर्याप्त होगा।

إنّا على وقت النوائب نصبر نزعى الزمان بشدة و رخاء

निःसन्देह संकटों का समय आने पर हम धैर्य करते हैं हम दरिद्रता तथा समृद्धि की स्थिति में समय गुज़ार देते हैं।

فتن الزمان ولدن عند ظهوركم والسيل لا يخلو من الغناء

तुम्हारे प्रकट होते ही युग के फ़िल्ले पैदा हो गए और फ़िल्लों की बाढ़ कूड़ा-कर्कट से खाली नहीं होती।

عفنا لقياكم ولا أستكره لو حل بيتى عايل البيداء

हम तुम्हारे मुक़ाबले से नफ़रत करते हैं, हालांकि मैं नहीं करता यद्यपि मेरे घर में जंगल का भेड़िया ही उतर पड़े।

اليوم أنصحكم وكيف نصاحتي قومًا أضاعوا الدين للشحناء

आज मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ तथा मेरी नसीहत से वह क्रौम कैसे लाभ प्राप्त कर सकती है जिसने धर्म को वैर के कारण नष्ट कर दिया।

قلنا تعالوا للنضال وناضلوا فتكنسوا كالظبي في الأفلاء

हमने कहा कि मुक़ाबले के लिए आओ और मुक़ाबला करो परन्तु वे छुप गए जिस प्रकार मृग जंगलों में छुप जाता है।

لا يبصرون ولا يرون حقيقة و تهالكوا في بخلهم و رياء

वह विवेक से काम नहीं लेते और न वास्तविक स्थिति को देखते हैं तथा अपनी कंजूसी और दिखावे में मर चुके हैं।

هل في جماعتهم بصيرٌ ينظرُ نحوى كمثل مبصرٍ رثاءٍ
क्या उनकी जमाअत में कोई विवेकवान है जो मेरी ओर एक विचार करने वाले मर्मज्ञ के समान देखे।

ما ناضلوني ثم قالوا جاهلٌ أنظرُ إلى إيداءهم وجفاءٍ
उन्होंने मुझ से मुकाबला तो न किया और कह दिया कि अनपढ़ है उनके कष्ट और अत्याचार को देख।

دعوى الكُماة يلوح عند تقابلٍ حدُّ الطُّبَاتِ ينيرُ في الهيجاءِ
बहादुरों का दावा मुकाबले पर ही प्रकट होता है। तलवारों की धार युद्ध में ही चमकती है।

رجلٌ بطنٍ بَطَالَةٍ بَطَالَةٌ تعلَى * عداوته كرعِدٍ طخاءٍ
एक व्यक्ति जो बटाला में रहता है बहुत ही बेकार है। उसकी शत्रुता बादल की गरज की तरह जोश मारती है।

لا يحضر المضمَارُ من خوفٍ عَرَا يهذى كَنَسْوَانٍ بحجب خفاءٍ
उस भय के कारण जो उसे लगा हुआ है, वह मैदान में नहीं आया वह गुप्त पर्दों में स्त्रियों के समान गालियां दे रहा है।

قد آثر الدنيا وجيفةً دَشَّتْهَا و الموت خيرٌ من حياة غطاءٍ
उसने संसार और उसके जंगल के मुरदार को पसन्द कर लिया धोखे और अन्धकार के जीवन से तो मर जाना ही अच्छा है।

يا صيدَ أسياقي إلى ما تأبُرُ لا تُنجِيكَ سيرةُ الأطلاءِ
हे मेरी तलवार के शिकार ! तू कब तक उछल-कूद करेगा? मृग के बच्चों का आचरण तुझे मुक्ति नहीं देगा।

نجستَ أرضَ بَطَالَةٍ منحوسةٍ أرضٌ محربةٌ من الجرباءِ

तूने बटाला की मन्हूस पृथ्वी को जो गिरगिटों की रणभूमि है अपवित्र कर दिया है।

إني أريدك في النضال كصائدٍ لا يركنُ أحدٌ إلى إرزاءٍ
मैं तुझे मुकाबले में शिकारी की तरह चाहता हूँ। अतः चाहिए कि कोई तुझे शरण देने की ओर प्रवृत्त न हो।

صدر القناة ينوش صدرك ضربُهُ ويريك مُرَّاني بحارَ دماءٍ

भाले की नोक का यह हाल है कि उसकी चोट तेरे सीने को चीर देगी और मेरे लचकदार सुदृढ़ भाले तुझे खून के दरिया दिखा देंगे।

جاشت إليك النفس من كلماتنا خوفًا فكيف الحال عند مرَّائي

मेरे वाक्यों से भय के मारे तेरे प्राण होठों तक पहुंच गए हैं तो मुझ से शास्त्रार्थ के समय तेरी क्या दशा होगी?

أعطيتُ لُسْنًا كاللقوع مُرَّوِيًّا وفصيلُها تأثيرها ببهاءٍ

मैं भाषा के ऐसे मुहावरे दिया गया हूं जो बहुत दूध देने वाली ऊंटनी के समान तृप्त करने वाले हैं और उस का बच्चा उसका सुन्दर प्रभावकारी है।

إن شئتَ كَذَلِّ الموائد حاسدًا البدر لا يغسو بلَغِي ضراءٍ

यदि तू चाहे तो प्रत्येक छल ईर्ष्या करते हुए कर गुज़र। चौदहवीं का चन्द्रमा कुत्तों के शोर से प्रकाशहीन नहीं हो जाता।

كذبتَ صديقًا وجُرْتَ تعمَّدًا ولئن سطا فيُريك قعرَ عفاءٍ

तूने एक सच्चे को झुठलाया और जान बूझ कर अन्याय किया है और यदि वह तुझ पर आक्रमण कर दे तो तुझे पृथ्वी की गहराई दिखा देगा।

ما شمرَ أنفى مرغمًا في مشهدٍ وأثرتُ نَقَعَ الموت في الأعداءِ

मेरी नाक ने किसी युद्ध में अपमान की गंध नहीं सूंघी और मैंने शत्रुओं में मौत की धूल उड़ा दी है।

والله أخطأتم لنكبةً بختكم باريتم ابن كريمة فجاء

ख़ुदा की क्रसम ! तुमने अपने दुर्भाग्य के कारण ग़लती की है कि उस व्यक्ति से लड़ाई ठानी है जो लड़ाई का धनी और अचानक आक्रमण करने वाला है।

إني بحقدك كلَّ يوم أرفعُ أنلى على الشحنة والبغضاء

मैं तेरी शत्रुता के कारण प्रतिदिन उच्च श्रेणी पा रहा हूं तथा तुम्हारे वैर और द्वेष के बावजूद उन्नति कर रहा हूं।

لنناثرِئاء السماء وسُمكه لندّ إيمانًا إلى الغبراء

हमने आसमान के सुरैया तथा उसकी ऊंचाई को पा लिया है ताकि हम ईमान को पृथ्वी की ओर लौटाएं।

أَنْظُرْ إِلَى الْفِتَنِ الَّتِي نِيرَانُهَا تَجْرَى دَمَوْعًا بِلَ عَيُونِ دَمَاءٍ
 इन फ़ित्लों की ओर देखो जिनकी आगें आंसू जारी करती हैं वरन् रक्त के झरने।
 فَأَقَامَنِي الرَّحْمَنُ عِنْدَ دَخَانِهَا لِفَلَاحٍ مُدْلَجِينَ فِي اللَّيْلِ
 उन फ़ित्लों के धुएं के समय कृपालु ख़ुदा ने मुझे खड़ा किया है अंधेरी रात में चलने
 वालों को मोक्ष प्राप्त करने के लिए।
 وَقَدْ اقْتَضَتْ زَفَرَاتُ مَرْضَى مُقَدِّمِي فَحَضَرْتُ حَمَلًا كُئُوسَ شِفَاءٍ
 रोगियों की आहों ने मेरे आगमन की मांग की तो मैं उनके लिए रोग से मुक्ति के
 प्याले उठाए हुए उपस्थित हो गया।
 لَمَّا أَتَيْتُ الْقَوْمَ سَبُّوا كَالْعِدَا وَتَخَيَّرُوا سُبُلَ الشَّقَا بِإِبَاءٍ
 जब मैं क्रौम के पास आया तो उसने मुझे शत्रुओं के समान गालियां दीं और इन्कार
 के कारण दुर्भाग्य का मार्ग धारण किया।
 قَالُوا كَذُوبٌ كَيْدُبَانٌ كَاذِبٌ بَلْ كَافِرٌ وَ مَزُورٌ وَ مُرَائِي
 उन्होंने कहा यह झूठा है और बहुत झूठा है और साक्षात झूठ है अपितु काफ़िर है,
 कपटी है तथा दिखावा करने वाला है।
 مَنْ مُخْبِرٌ عَنِ ذَلَّتِي وَمَصِيبَتِي مَوْلَايَ خَشَعَتِ الرِّسْلُ بِحَرِّ عَطَاءٍ
 कोई है जो मेरे अपमान और कष्ट की सूचना दे मेरे स्वामी और खातमूरुसुल को जो
 क्षमा का समुद्र है।
 يَا طَيِّبَ الْأَخْلَاقِ وَالْأَسْمَاءِ أَفَأَنْتَ تُبْعِدُنَا مِنَ الْآلَاءِ
 हे पवित्र आचरण और पवित्र नामों वाले नबी ! क्या तू हमें अपनी ने'मतों से दूर
 रखेगा?
 أَنْتَ الَّذِي شَغَفَ الْجَنَانُ مَحَبَّةً أَنْتَ الَّذِي كَالرُّوحِ فِي حَوْبَائِي
 तू वह है जिसका प्रेम हृदय में घर कर गया है। तू वह है जो मेरे शरीर में आत्मा के
 समान है।
 أَنْتَ الَّذِي قَدْ جَذَبَ قَلْبِي نَحْوَهُ أَنْتَ الَّذِي قَدْ قَامَ لِلْإِصْبَاءِ
 तू वह है कि जिसकी ओर मेरा हृदय खिंचा हुआ है। तू वह है जो मेरा प्रियतम होने
 के लिए खड़ा है।

أَنْتَ الَّذِي بَوَدَّاهُ وَبَحَّبَهُ أُبَيِّدْتَ بِالْإِلَهَامِ وَ الْإِلْقَاءِ
तू वह है कि जिसके प्रेम और मित्रता के कारण मैं इस्लाम और खुदा के इल्का से
समर्थित हूँ।

أَنْتَ الَّذِي أَعْطَى الشَّرِيعَةَ نَجَّاهُ رِقَابَ النَّاسِ مِنْ أَعْبَاءِ
و ا لَهْدِ ي

तू वह है जिसने शरीअत और हिदायत दी है और लोगों की गर्दनों को भारों से मुक्ति
प्रदान की है।

هِيَاهُ كَيْفَ نَفَرْنَا مِنْكَ كَمُفْسِدٍ رُوحِي فَذَنْكَ بِلُوعَةٍ وَ وَفَاءِ
हम तुझ से उपद्रवी के समान कैसे भाग सकते हैं कि यह असंभव है मेरे तो प्राण भी
आप पर प्रेमाग्नि और वफ़ादारी से न्यौछावर हैं।

أَمَنْتُ بِالْقُرْآنِ صُحُفِ الْهِنَا وَبِكُلِّ مَا أَخْبَرْتَ مِنْ أَنْبَاءِ
मैं अपने उपास्य के ग्रन्थों (अर्थात्) कुर्आन पर ईमान लाया हूँ और उन समस्त परोक्ष
की ख़बरों पर भी जिनकी तूने ख़बर दी।

يَا سَيِّدِي يَا مُوَلَّ الضُّعَفَاءِ جُنَّاتِكَ مَظْلُومِينَ مِنْ جُهَلَاءِ
हे मेरे सरदार ! हे कमजोरों की शरण स्थली ! हम तेरे पास असभ्य लोगों के
(अत्याचार से) पीड़ित होकर आए हैं।

إِنَّ الْمَحَبَّةَ لَا تَضَاءُ وَتَشْتَرَى إِنَّا نَحْبُكَ يَا ذُكَايَ سَخَاءِ
प्रेम व्यर्थ नहीं जाता वरन् उसका मूल्य पड़ता है। हे दानशीलता के सूर्य ! निश्चय ही
हम तुझ से प्रेम करते हैं।

يَا شَمْسَنَا نَظُرْ رَحْمَةً وَتَحَنُّنًا يَسْعَى إِلَيْكَ الْخَلْقُ لِلْإِرْكَاءِ
हे हमारे सूर्य ! मेहरबानी और दया-दृष्टि डालिए। प्रजा आपकी शरण के लिए दौड़ी
आ रही है।

أَنْتَ الَّذِي هُوَ عَيْنُ كُلِّ سَعَادَةٍ تَهْوِي إِلَيْكَ قُلُوبُ أَهْلِ صَفَاءِ
तू ही है जो हर सौभाग्य का झरना है। नेक लोगों के हृदय तेरी ओर झुक रहे हैं।

أَنْتَ الَّذِي هُوَ مَبْدَأُ الْأَنْوَارِ نَوَّرْتَ وَجْهَ الْمُدُنِ وَ الْبَيْدَاءِ
तू ही है जो प्रकाशों का स्रोत है। तूने शहरों और वनों के चेहरों को प्रकाशमान कर
दिया है।

إِنِّي أَرَىٰ فِي وَجْهِكَ الْمَتَهَلِّلِ شَأْنًا يَفُوقُ شَيْوْنَ* وَجْهِ ذُكَاٍ
 में तेरे प्रकाशमान चेहरे में ऐसी शान देख रहा हूं जो सूर्य के चेहरे की शानों से भी
 बढ़कर है।

شَمْسُ الْهُدَى طَلَعَتْ لَنَا مِنْ مَكَّةَ عَيْنِ الْنَدَا نَبَعَتْ لَنَا بِحَرَاءِ
 हमारे लिए मक्का से हिदायत का सूर्य उदय हुआ और हमारे लिए क्षमा का झरना
 गारे हिरा से फूटा।

صَاهَتْ أَيْاءُ الشَّمْسِ بِعَضْ ضِيَاءِهِ فَإِذَا رَأَيْتُ فَهَاجَ مِنْهُ بَكَائِي
 सूर्य का प्रकाश आप सल्लल्लाहो अलहि वसल्लम के प्रकाश से कुछ ही समानता रखता
 है। जब मैंने (आपको) देखा तो उस से मेरे रोने और गिड़गिड़ाने में जोश आ गया।

نَسَى كَفْثِيَانِ بَدِينِ مُحَمَّدٍ لَسْنَا كَرَجُلٍ فَاقِدِ الْأَعْضَاءِ
 हम युवाओं के समान मुहम्मद के धर्म के लिए प्रयासरत हैं। हम ऐसे व्यक्ति के
 समान नहीं जो शक्तिहीन हो।

أَعْلَى الْمُهَيْمِنِ هَمَّنَا فِي دِينِهِ نَبِيٍّ مَنَّا زِلْنَا عَلَى الْجَوَزَاءِ
 निरीक्षक खुदा ने हमारे साहसों को अपने धर्म के संबंध में बुलन्द कर दिया है। हम
 अपने घर ऊंचे स्थान पर बना रहे हैं।

إِنَّا جُعِلْنَا كَالسِّيُوفِ فَنَدَمْنَا رَأْسَ اللَّئَامِ وَهَامَةَ الْأَعْدَاءِ
 हमें तलवारों के समान बना दिया गया है। अतः हम कमीने लोगों के सिर और शत्रुओं
 की खोपड़ी फोड़ देते हैं।

وَمِنَ اللَّئَامِ أَرَىٰ رُجَيْلًا فَاسِقًا غَوْلًا لَعِينًا نُظْفَةَ السُّفَهَاءِ
 और कमीनों में से मैं एक पापी मनुष्य को देख रहा हूं कि वह लानती छलावा और
 मूर्खों का बीज है।

شَكْسٌ خَبِيثٌ مُفْسِدٌ وَمَرْوَرٌ نَحْسٌ يُسَعَّى السَّعْدُ فِي الْجُهْلَاءِ
 वह बुरे आचरण वाला, बड़ा उपद्रवी और झूठा है, मनहूस है जो असभ्य लोगों में
 सा 'दुल्लाह कहलाता है।

مَا فَارَقَ الْكَفَرَ الَّذِي هُوَ ارْثُهُ ضَاهِي أَبَاهُ وَأُمُّهُ بِعَمَاءِ
 उसने उस कुफ़र को नहीं छोड़ा जो उसने अपने बाप-दादों से पाया है और अन्धेपन में
 अपने माता-पिता के समान हो गया है।

قد كان من دود الهؤود وزرعهم من عبدة الأضنام كالآباء
वह हुनूद का तलछट था और उन्हीं की खेती में से था। बाप-दादों के समान मूर्ति
पूजकों में से था।

فالآن قد غلبت عليه شقاوة كانت مُميدة أمه العمياء
अब उस पर दुर्भाग्य ने प्रभुत्व जमा लिया है और यही दुर्भाग्य उसकी मां की तबाही
का कारण हुआ था।

إني أراه مُكذِّبًا ومُكفِّرًا ومحقِّرًا بالسَّبِّ والإِزراءِ
मैं उसे झुठलाने वाला, काफ़िर कहने वाला और गाली-गलौज के साथ तिरस्कार
करने वाला और दोषारोपण करने वाला पाता हूँ।

يُوْزِي فما نشكو وما نتأسفُ كُلُّبٌ فيغلي قلبه لِعِواءِ
वह कष्ट देता है। अतः हम न शिकायत करते हैं और न खेद। वह एक कुत्ता है
उसका हृदय भोंकने के लिए उत्तेजित हो रहा है।

كحل العناد جفونه بعجاجة فالآن من يُحويه من إقذاء
शत्रुता ने उसकी पलकों में धूल का सुर्मा डाल दिया है अब उसकी आंख में तिनका
पड़ जाने से कौन रोक सकता है?

يا لاعنى إن المهيم ينظر خف قهر رب قادر مولائي
हे मुझे ला'नत करने वाले ! निःसन्देह निरीक्षक खुदा देख रहा है तू मेरे स्वामी,
शक्तिमान प्रतिपालक के आक्रोश से डर।

الحق لا يصلى بنار خديعة ألى من الخفّاش خسر ذكاء
सत्य को छल-कपट की अग्नि से जलाया नहीं जा सकता। चमगादड़ से सूर्य को
हानि कैसे पहुंच सकती है?

إني أراك تَمِيس بالخِيلاء أنسيت يوم الطعنة الثَّجَلَاءِ
मैं देखता हूँ कि तू गर्व से मटक-मटक कर चल रहा है। क्या तूने चौड़े घाव के लगने
के दिवस को भुला दिया है।

لا تَتَّبِعْ أهوائِ نفسك شقوةً يلقىك حُبُّ النفس في الخوقاءِ
तू दुर्भाग्य से अपनी मनोवृत्ति की इच्छाओं का अनुसरण न कर। मनोवृत्ति का प्रेम तुझे
कुएं में डाल देगा।

فَرَسٌ خَبِيبٌ خَفَفَ ذُرَى صِهْوَاتِهِ خَفَ أَنْ تَزَلَّكَ عَدُوٌّ ذِي عُدَوَاءِ
मनोवृत्ति एक कुटित घोड़ा है उसकी पीठ पर सवार होने से डर कि तुझे इधर-उधर
दौड़ने वाले की दौड़ गिरा न दे।
إِنَّ السُّمُومَ لَشَرٌّ مَا فِي الْعَالَمِ وَمِنَ السُّمُومِ عَدَاوَةُ الصُّلَحَاءِ
निःसन्देह समस्त संसार में सबसे बुरी वस्तु विष है तथा सदात्मा लोगों की शत्रुता भी
विषों में से एक विष है।
أَذَيْتَنِي خَبْثًا فَلَسْتُ بِصَادِقٍ إِنَّ لِمِ تَمُتَ بِالْخَزَى يَا ابْنَ بَغَاءِ*
तूने कुटिलता से मुझे कष्ट पहुंचाया है। अतः हे उद्दण्ड ! यदि तू बदनामी से न मरा
तो मैं सच्चा नहीं।
اللَّهُ يُخْزِي حَزْبَكُمْ وَيُعِزِّنِي حَتَّى يَجِيئَ النَّاسُ تَحْتَ لِيَوَائِي
अल्लाह तुम्हारे गिरोह को अपमानित करेगा और मुझे सम्मान देगा यहां तक कि सब
लोग मेरे झण्डे के नीचे आ जाएंगे।
يَا رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا بِكَرَامَةٍ يَا مَنْ يَرَى قَلْبِي وَلُبَّ لِحَائِي
हे हमारे रब ! हमारे मध्य दया दृष्टि से फ़ैसला कर दे। हे वह हस्ती ! जो मेरे हृदय
और मेरे अन्तःकरण को जानती है।
يَا مَنْ أَرَى أَبْوَابَهُ مَفْتُوحَةً لِلسَّائِلِينَ فَلَا تَرُدُّ دَعَائِي
हे वह हस्ती जिसके दरवाज़े मेरे मांगने वालों के लिए खुले पाता हूं। अतः मेरी दुआ
को रद्द न करना।

* फिर इसके पश्चात् उस दुश्मन (सा'दुल्लाह लुधियानवी) का अंजाम यह हुआ कि वह नाकाम होकर तारुन (प्लेग) से मर गया। अतः हे विवेकवानो ! सीख प्राप्त करो।

भूकंप के बारे में भविष्यवाणी

(जो पुस्तक चश्म-ए-मसीही में दर्ज हो चुकी है)

दोस्तो ! जागो के अब फिर जलजला आने को है
 फिर खुदा कुदरत को अपनी जल्द दिखलाने को है
 वह जो माहे फ़रवरी में तुम ने देखा जलजला
 तुम यक्रीं समझो के वह इक ज़ज़्र समझाने को है
 आँख के पानी से यारो ! कुछ करो इसका इलाज
 आसमाँ ए गाफ़िलो अब आग बरसाने को है
 क्यों न आवें जलजले तक्रवा की रह गुम हो गई
 इक मुसलमाँ भी मुसलमाँ सिर्फ कहलाने को है
 किस ने माना मुझ को डर कर किस ने छोड़ा बुगज़ो कीं
 जिन्दगी अपनी तो उन से गालियाँ खाने को है
 काफ़िरो दज्जाल और फ़ासिक हमें सब कहते हैं
 कौन ईमाँ सिद्क और इख़्लास से लाने को है
 जिसको देखो बदगुमानी में ही हद से बढ़ गया
 गर कोई पूछे तो सौ सौ ऐब बतलाने को है
 छोड़ते हैं दीं को और दुनिया से करते हैं प्यार
 सौ करें वाअज़ो नसीहत कौन पछताने को है
 हाथ से जाता है दिल, दीं की मुसीबत देख कर
 पर खुदा का हाथ अब इस दिल को ठहराने को है

इसलिए अब ग़ैरत उस की कुछ तुम्हें दिखलाएगी
हर तरफ़ ये आफ़त-ए-जाँ हाथ फैलाने को^① है
मौत की रह से मिलेगी अब तो दीं को कुछ मदद
वरना दीं ए दोस्तो ! इक रोज़ मर जाने को है
या तो इक आलम था कुर्बा उस पे या आए ये दिन
एक अब्दुल अब्द भी इस दीं के झुठलाने को है
(प्रकाशित 9 मार्च 1906 ई)

① अर्थात् हर एक देश में भूकंप आएंगे और प्लेग फूटेगी और विभिन्न प्रकार के मौत के कारण पैदा होंगे।

भूकंप के बारे में भविष्यवाणी

फिर चले आते हैं यारो जलजला आने के दिन
 जलजला क्या इस जहाँ से कूच कर जाने के दिन
 तुम तो हो आराम में, पर अपना क्रिस्सा क्या कहें
 फिरते हैं आँखों के आगे सख्त घबराने के दिन
 क्यों ग़ज़ब भड़का खुदा का? मुझ से पूछो गाफ़िलो
 हो गए हैं उसका मूजिब मेरे झुठलाने के दिन
 ग़ैर क्या जाने कि ग़ैरत उस की क्या दिखलाएगी
 खुद बताएगा उन्हें वह यार बतलाने के दिन
 वह चमक दिखलाएगा अपने निशाँ की पन्ज बार¹
 ये खुदा का क्रौल है समझोगे समझाने के दिन
 तालिबो ! तुम को मुबारक हो कि अब नज़दीक हैं
 उस मेरे महबूब के, चेहरा के दिखलाने के दिन
 वह घड़ी आती है जब ईसा पुकारेंगे मुझे
 अब तो थोड़े रह गए दज्जाल कहलाने के दिन
 ऐ मेरे प्यारे! यही मेरी दुआ है रोज़ व शब
 गोद में तेरी हों हम उस खूने दिल खाने के दिन
 किरमें खाकी हूँ मेरे प्यारे, न आदम जाद हूँ
 फ़ज़ल का पानी पिला उस आग बरसाने के दिन

1 खुदा ताला के असल शब्द जो मुझ पर उतरे वह यह हैं: "चमक दिखलाऊंगा तुमको इस निशाँ की पंज बार" अर्थात् पाँच बार असामान्य तौर पर भूकंप आएगा जो अपनी तीव्रता में कोई उदाहरण नहीं रखता होगा।

ऐ मेरे यारे यगाना ! ऐ मेरी जाँ की पनाह
कर वह दिन अपने करम से दीं के फैलाने के दिन
फिर बहारे दीं को दिखला ऐ मेरे प्यारे क़दीर
कब तलक देखेंगे हम लोगों के बहकाने के दिन
दिन चढ़ा है दुश्मनाने दीं का हम पर रात है
ऐ मेरे सूरज दिखा इस दीं के चमकाने के दिन
दिल घुटा जाता है हर दम जाँ भी है ज़ेरो ज़बर
इक नज़र फ़र्मा कि जल्द आएँ तेरे आने के दिन
चेहरा दिखला कर मुझे कर दीजिए ग़म से रिहा
कब तलक लम्बे चले जाएंगे तरसाने के दिन
कुछ ख़बर ले तेरे कूचा में ये किस का शोर है
क्या मेरे दिलदार तू आएगा मर जाने के दिन
डूबने को है ये कश्ती, आ मेरे ऐ ना ख़ुदा
आ गए इस बाग़ पर ऐ यार मुरझाने के दिन
तेरे हाथों से मेरे प्यारे अगर कुछ हो तो हो
वरना दीं मय्यत है और ये दिन हैं दफ़नाने के दिन
इक निशां दिखला कि अब दीं हो गया है बे निशाँ
दिल चला है हाथ से ला जल्द ठहराने के दिन
मेरे दिल की आग ने आख़िर दिखाया कुछ असर
आ गए हैं अब ज़मीं पर आग भड़काने के दिन
जब से मेरे होश, ग़म से दीं के, हैं जाते रहे
तौर दुनिया के भी बदले ऐसे दीवाने के दिन
चाँद और सूरज ने दिखलाए हैं दो दाग़े कुसूफ़
फिर ज़मीं भी हो गई बेताब थराने के दिन
कौन रोता है कि जिस से आसमाँ भी रो पड़ा
लरज़ह आया इस ज़मीं पर उस के चिल्लाने के दिन

सब्र की ताक़त जो थी मुझ में वह प्यारे अब नहीं
मेरे दिलबर अब दिखा इस दिल के बहलाने के दिन
दोस्तो उस यार ने दीं की मुसीबत देख ली
आएंगे इस बाग के अब जल्द लहराने के दिन
इक बड़ी मुद्दत से दीं को कुफ़्र था खाता रहा
अब यकीं समझो कि आए कुफ़्र को खाने के दिन
दिन बहुत हैं सख़्त और ख़ौफ़ो ख़तर दरपेश है
पर यही हैं दोस्तो! उस यार के पाने के दिन
दीं की नुसरत के लिए इक आसमाँ पर शोर है
अब गया वक्ते खिज़ाँ आए हैं फल लाने के दिन
छोड़ दो वह राग जिसको आसमाँ गाता नहीं
अब तो हैं ए दिल के अन्धो ! दीं के गुन गाने के दिन
खिदमत-ए-दीं का तो खो बैठे हो बुग़ज़ो कीं से वक़््त
अब न जाएं हाथ से लोगो ! ये पछताने के दिन

(प्रकाशित : पैसा अख़बार 31 मार्च 1906 ई)

पारिभाषिक शब्दावली

- अर्श- सिंहासन। वह स्थान जहाँ पर अल्लाह का अधिष्ठान है।
- अहले किताब- यहूदी और ईसाई जो तौरात नामक ग्रंथ को ईशवाणी मानते हैं।
- अज़ाब - अल्लाह की अवज्ञा करने पर मिलने वाला दंड। ईशप्रकोप, कष्ट, विपत्ति।
- अलैहिस्सलाम- उनपर अल्लाह की कृपा हो। नबियों, रसूलों और अवतारों के नामों के बाद यह वाक्य कहा जाता है।
- आयत- पवित्र कुर्आन की पंक्ति अथवा वाक्य।
- इब्ने मरियम- मरियम का पुत्र (अर्थात् ईसा मसीह अलैहिस्सलाम)
- इस्त्राईल- अल्लाह का वीर या सैनिक। हज़रत याकूब अलै. का एक गुणवाचक नाम, जिस के कारण उनके वंशज को बनी इस्त्राईल (अर्थात् इस्त्राईल की संतान) कहा जाता है। फ़िलिस्तीन का एक भू-भाग जिस में यहूदियों ने अपना राज्य स्थापित करके उस का नाम इस्त्राईल रखा है।
- ईमान- अर्थात् विश्वास और स्वीकार करना। जैसे अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करना।
- उम्मत- संप्रदाय। किसी नबी या रसूल के अनुयायियों का समूह उसकी उम्मत कहलाता है।
- उम्मती नबी- किसी नबी की शिक्षाओं को आगे फैलाने के लिये उसके अनुयायियों में से किसी का नबी पद प्राप्त करना।
- उलमा- इस्लामी धर्मज्ञ।
- क्रयामत- महाप्रलय। मृत्यु के बाद अल्लाह के समक्ष उपस्थित होने का दिन
- कश्फ़- जागृत अवस्था में कोई अदृष्ट विषय देखना। स्वप्न और कश्फ़ में यह अंतर है कि स्वप्न सोते में देखा जाता है और कश्फ़ जागते में देखा जाता है। दिव्य-दर्शन। योगनिद्रा, तन्द्रावस्था।

- कलाम - इल्हाम या ईशवाणी।
- काफ़िर - सच्चाई का इन्कार करने वाला। इस्लाम धर्म का अस्वीकारी।
- क्रिब्ला - आमने-सामने। जिसकी ओर मुँह करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं।
ख़ाना काबा मुसलमानों का क्रिब्ला है जिसकी ओर सारे संसार के मुसलमान मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं।
- कुफ़्र- सच्चाई का इन्कार, इस्लाम का इन्कार करना।
- ख़लीफ़ा- उत्तराधिकारी। अधिनायक। नबी और रसूलों के बाद उनका स्थान लेने वाला और उनके काम को चलाने वाला।
- ख़िलाफ़त- नबी और रसूल के बाद उनके कामों को आगे चलाने वाली व्यवस्था, जिसका प्रमुख ख़लीफ़ा कहलाता है।
- ज़ैफ़ हदीस- (अर्थात् कमज़ोर) वह हदीस जिसके रावी (हदीस बताने वाले) की ईमानदारी के बारे में कि सी को आपत्ति हो या उसकी स्मरण शक्ति बहुत कमज़ोर हो।
- ज़िब्रील - ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता।
- ज़िहाद - प्रबल उद्यम करना। स्वयं को सुधारने के लिये या धर्मप्रचार के लिये प्रयत्न करना। सत्यधर्म की रक्षा के लिये प्रतिरक्षात्मक युद्ध करना।
- तक्रवा - निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करना और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखना। संयम, धर्मपरायणता।
- ताबयीन- अनुगमन कारी। वे मुसलमान जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्ल. को तो नहीं देखा परंतु हज़रत मुहम्मद सल्ल. के साहाबियों को देखा।
- तबअ ताबयीन -ताबयीन के अनुगामी। जिन्होंने केवल ताबयीन को देखा।
- तौरात - यहूदियों का धर्मग्रंथ।
- दज्जाल- झूठा, धोखेबाज, अंत्ययुग में लोगों को धर्मभ्रष्ट कराने के लिए उत्पन्न होने वाला एक समूह।
- दुरूद व सलाम -हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए की जाने वाली दुआ।

- नबी- लोगों को सन्मार्ग पर लाने के लिए अल्लाह की ओर से आया हुआ व्यक्ति, जिसे अदृष्ट विषयों से अवगत कराया जाता है। अवतार।
- नुबुव्वत - नबी बनने की क्रिया। अवतारत्व।
- नूर- अध्यात्म प्रकाश, ज्योति।
- नेमत - अल्लाह की देन।
- पैग़म्बर - अल्लाह का संदेशवाहक, नबी, रसूल।
- बनी इस्राईल- इस्राईल की संतान। (इस्राईल शब्द भी देखें)
- बैअत- बिक जाना, धर्मगुरु के हाथ पर हाथ रख कर उसका आनुगत्य स्वीकार करना।
- मजरूह हदीस-वह जिसमें, हदीस बताने वाले (रावी) के शब्दों और कार्यों पर भरोसा नहीं किया जा सकता है और इसके बारे में जिरह की गई है।
- मुश्रिक - शिर्क करने वाला। अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को उपास्य मान कर उसे अल्लाह का समकक्ष ठहराने वाला व्यक्ति।
- मुनाफ़िक़- कपटाचारी। वह व्यक्ति जो ईमान लाने का प्रदर्शन तो करे परंतु दिल से उसको अस्वीकार करने वाला हो।
- मुत्तक़ी - निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करने वाला और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखने वाला व्यक्ति, धर्मपरायण।
- मुबाहल:- एक दूसरे को शाप देना। इस्लामी धर्मविधान के अनुसार किसी विवादित धार्मिक विषय को अल्लाह पर छोड़ते हुए एक दूसरे को शाप देना कि जो झूठा है उस पर अल्लाह की लानत हो।
- मे'राज - आध्यात्मिक उत्थान। अल्लाह की ओर हज़रत मुहम्मद सल्ल. की अलौकिक यात्रा जो सशरीर नहीं हुई।
- मोमिन - अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करने वाला निष्ठावान् व्यक्ति।
- मौजूअ हदीस- झूठी हदीस, जिसे रावी (हदीस बताने वाले) ने झूठ बोलकर आंहुज़रत स०अ० व० की ओर सम्बद्ध कर दिया हो।

- याजूज-माजूज- अंत्ययुग में उत्पन्न होने वाली दो महाशक्तियाँ।
- रसूल- अल्लाह का भेजा हुआ अवतार, दूत।
- रज़ियल्लाहु अन्हु- अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के पुरुष सहाबियों के लिए प्रयुक्त होता है। अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ।
- रहिमहुल्लाहु- उन पर अल्लाह की कृपा हो। यह वाक्य दिवंगत महापुरुषों के नाम के साथ प्रयुक्त होता है।
- रूह- आत्मा।
- रूह-उल-कुदुस-पवित्रात्मा। ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता।
- रूह-उल-अमीन-जिब्रील, जो ईशवाणी लाने वाले फ़रिश्ता हैं।
- ला'नत - अभिशाप, अमंगल कामना।
- वह्यी - अल्लाह की ओर से प्रकाशित होने वाला संदेश, ईशवाणी। ईश्वरीय ग्रन्थों का अवतरण वह्यी के द्वारा होता है। पवित्र कुर्आन हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर वह्यी के द्वारा ही उतरा है।
- शरीयत - इस्लामी धर्मविधान।
- शर्क- अल्लाह के बदले दूसरे को उपास्य मानना, किसी को अल्लाह का समकक्ष ठहराना।
- सलाम - शांति और आशीर्वाद सूचक अभिवादन।
- सलीब - सूली, जिस पर लटका कर मृत्युदंड दिया जाता था।
- सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- उनपर अल्लाह की कृपा और शांति अवतरित हो। हज़रत मुहम्मद स० के नाम के साथ यह वाक्य कहा जाता है।
- सहाबी - हज़रत मुहम्मद सल्ल. के वे अनुगामी जिन्हें आपकी संगति प्राप्त हुई।
- सूर: / सूरत- पवित्र कुर्आन का अध्याय। पवित्र कुर्आन में 114 अध्याय हैं।
- हज़रत - श्रद्धेय व्यक्तियों के नाम से पूर्व सम्मानार्थ लगाया जाने वाला शब्द।
- हदीस - हज़रत मुहम्मद सल्ल. के कथन जिन्हें कुछ वर्षों के पश्चात इकट्ठा करके ग्रंथबद्ध किया गया। इन में से छः विश्वसनीय हदीस ग्रंथों को

सहा- ईसित्ता कहा जाता है। इनके अतिरिक्त और भी हदीस के ग्रंथ हैं।

हिजरत - देशांतरण। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के मक्का से मदीना जाने की घटना हिजरत के नाम से प्रसिद्ध है।

हिदायत- सन्मार्ग प्राप्ति।

